पारा नं- 16 से 30
पेज नं- 497 से 992

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانطَلَقَا
حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ
أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ
أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَأَرَدْنَا
أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ

का—ल अ—लम् अक़ुल् ल—क इन्न—क लन् तस्तती—अ मअि—य स़ब्रा(75)का—ल इन् स—अल्तु—क अन् शैइम् बअ्—दहा फ़ला तुस़ाहिब्नी क़द ब—लग्—त मिल्लदुन्नी अुज़्रा(76)फ़न्त—लक़ा हत्ता इज़ा अ—तया अह्—ल क़र्—यति निस्तत्—अमा अह्—लहा फ़—अबौ अंय्यु—ज़य्यिफ़ू हुमा फ़—व—जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्—ज़ फ़—अक़ा—महू क़ा—ल लौ शिअ्—त लत्त—ख़ज़्—त अ़लैहि अज्रा (77)क़ा—ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि—क सउ—नब्बिउ—क बि—तअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ् अ़लैहि स़ब्रा(78)अम्मस्सफ़ी—नतु फ़कानत् लि—मसाकी—न यअ्मलू—न फ़िल्बह़्रि फ़—अरत्तु अन् अअ़ी—बहा व का—न वरा—अहुम् मलि—कुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्—ल सफ़ी—नतिन् ग़स्बा(79)व अम्मल्ग़ुलामु फ़का—न अ—बवाहु मुअ्मिनैनि फ़—ख़शीना अंय्युर् हि—क़हुमा तुग़्यानंव् व कुफ़्रा(80)फ़—अरद्ना अंय्युब्दि—लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम् मिन्हु ज़कातंव् व अक़्र—ब रुह़्मा(81)व अम्मल् जिदारु फ़का—न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्मदी—नति व का—न तह़्तहू कन्ज़ुल् लहुमा व का—न अबूहुमा स़ालिह़न् फ़—अरा—द रब्बु—क

कहा (फ़्र159) मैंने आपसे न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे।(75) (फ़्र160) कहा इसके बाद मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी तरफ़ से तुम्हारा उज़्र पूरा हो चुका।(76) फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक गांव वालों के पास आए (फ़्र161) उन दहक़ानियों से खाना मांगा तो उन्होंने उन्हें दावत देनी क़ुबूल न की (फ़्र162) फिर दोनों ने उस गाँव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दा ने (फ़्र163) उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते।(77) (फ़्र164) कहा यह (फ़्र165) मेरी और आपकी जुदाई है अब मैं आपको उन बातों का फेर बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका।(78) (फ़्र166) वह जो कश्ती थी वह कुछ मोहताजों की थी (फ़्र167) कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उनके पीछे एक बादशाह था (फ़्र168) कि हर साबित कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता।(79) (फ़्र169) और वह जो लड़का था उसके माँ बाप मुसलमान थे तो हमें डर हुआ कि वह उनको सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे।(80) (फ़्र170) तो हमने चाहा कि उन दोनों का रब उससे बेहतर (फ़्र171) सुथरा और उससे ज़्यादा मेहरबानी के क़रीब अ़ता करे।(81) (फ़्र172) रही वह दीवार वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी (फ़्र173) और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था (फ़्र174) और उनका बाप नेक आदमी था (फ़्र175) तो आपके रब ने

(फ़्र159) हज़रत ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा (फ़्र160) इसके जवाब में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़्र161) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उस गाँव से मुराद अन्ताकिया है वहां इन हज़रात ने (फ़्र162) और मेज़बानी पर आमादा न हुए हज़रत क़तादा से मरवी है कि वह बस्ती बहुत बदतर है जहां मेहमानों की मेज़बानी न की जाये (फ़्र163) यानी हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने अपना दस्ते मुबारक लगा कर अपनी करामत से (फ़्र164) क्योंकि यह हमारी तो हाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी कुछ मदारात नहीं की ऐसी हालत में उनका काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था उस पर हज़रत ख़िज़्र ने। (फ़्र165) वक़्त या उस मर्तबा का इन्कार (फ़्र166) और उनके अन्दर जो राज़ थे उनका इज़्हार कर दूंगा। (फ़्र167) जो दस भाई थे उन में पांच तो अपाहिज थे जो कुछ नहीं कर सकते थे और पांच तन्दुरुस्त थे जो। (फ़्र168) कि उन्हें वापसी में उसकी तरफ़ गुज़रना होता उस बादशाह का नाम जलन्दी था कश्ती वालों को उसका हाल मालूम न था और उसका तरीक़ा यह था। (फ़्र169) और अगर ऐबदार होती छोड़ देता इस लिए मैंने उस कश्ती को ऐबदार कर दिया कि वह उन ग़रीबों के लिए बच रहे (फ़्र170) और वह उसकी मुहब्बत में दीन से फिर जायें और गुमराह हो जायें और हज़रत ख़िज़्र का यह अन्देशा इस सबब से था कि वह ब-इअ़्लामे इलाही उसके हाले बातिन को जानते थे हदीस मुस्लिम में है कि **(बक़िया सफ़्हा 522 पर)**

أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ

قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰى إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ

فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ

إِلٰى رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنٰى وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰى إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ

الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰى إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ

अंय्यब्लुग़ा अशुद्–दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्–ज़हुमा रह्मतम् मिर् रब्बि–क व मा फ़–अ़ल्तुहू अ़न् अम्री ज़ालि–क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अ़लैहि सब्रा(82)व यस्अलू–न–क अ़न् ज़िल्क़रनैनि क़ुल् स–अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा(83)इन्ना मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स–बबा(84)फ़–अत्ब–अ़ स–बबा(85)हत्ता इज़ा ब–ल–ग़ मग़्रिबश् शम्सि व–ज–दहा तग़्रुबु फ़ी अ़ैनिन् हमि–अतिंव् व व–ज–द अ़िन्दहा क़ौमन् क़ुल्ना याज़ल् क़रनैनि इम्मा अन् तु–अ़ज़्ज़ि –ब व इम्मा अन् तत्तख़ि–ज़ फ़ीहिम् हुस्ना(86)क़ा–ल अम्मा मन् ज़–ल–म फ़सौ–फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्–म युरद्दु इला रब्बिही फ़यु–अ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा(87)व अम्मा मन् आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् फ़–लहू जज़ा–अ निल्हुस्ना व स–नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा(88)सुम्–म अत्–ब–अ़ स–बबा(89)हत्ता इज़ा ब–ल–ग़ मत्लिअ़श् शम्सि व–ज–दहा तत्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल् लम् नज्अ़ल् लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा(90)कज़ालि–क व क़द् अहत्ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा(91)सुम्–म अत्ब–अ़ स–बबा(92)हत्ता इज़ा ब–ल–ग़ बैनस् सद्दैनि व–ज–द मिन्

चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें (फ़176) और अपना ख़ज़ाना निकालें आपके रब की रहमत से और यह कुछ मैंने अपने हुक्म से न किया (फ़177) यह फेर है उन बातों का जिस पर आप से सब्र न हो सका।(82) (फ़178) (रुकूअ़ 1) और तुम से (फ़179) ज़ुलक़रनैन को पूछते हैं (फ़180) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें उसका मज़कूर पढ़ कर सुनाता हूं।(83) बेशक हमने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अ़ता फ़रमाया।(84) (फ़181) तो वह एक सामान के पीछे चला।(85) (फ़182) यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक सियाह कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया (फ़183) और वहां (फ़184) एक क़ौम मिली (फ़185) हमने फ़रमाया ऐ ज़ुलक़रनैन या तो तू उन्हें सज़ा दे (फ़186) या उनके साथ भलाई इख़्तियार करे।(86) (फ़187) अ़र्ज़ की कि वह जिसने ज़ुल्म किया (फ़188) उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे (फ़189) फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा (फ़190) वह उसे बुरी मार देगा।(87) और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उसका बदला भलाई है (फ़191) और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम कहेंगे। (88) (फ़192) फिर एक सामान के पीछे चला।(89) (फ़193) यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी क़ौम पर निकलता पाया जिनके लिए हमने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी।(90) (फ़194) बात यही है और जो कुछ उसके पास था (फ़195) सबको हमारा इल्म मुहीत है।(91) (फ़196) फिर एक सामान के पीछे चला।(92) (फ़197) यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा उनसे उधर कुछ

(फ़176) और उनकी अ़क़्ल कामिल हो जाये और वह क़वी व तवाना हो जायें (फ़177) बल्कि ब–अमूरे इलाही व इल्हामे ख़ुदावन्दी किया (फ़178) बाज़े लोग वली को नबी पर फ़ज़ीलत देकर गुमराह हो गए और उन्होंने यह ख़्याल किया कि हज़रत मूसा को हज़रत ख़िज़्र से इल्म हासिल करने का हुक्म दिया गया बावजूदे कि हज़रत ख़िज़्र वली हैं और दर हक़ीक़त वली को नबी पर फ़ज़ीलत देना कुफ़्रे जली है और हज़रत ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि बाज़ का गुमान है तो यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हक़ में इब्तेला है इलावा बरीं यह कि अहले किताब इसके क़ाइल हैं कि यह हज़रत मूसा पैग़म्बर बनी इसराईल का वाक़िआ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से मर्तबए विलायत पर पहुंचता है तो यह नामुमकिन है कि वह नबी से बढ़ जाये (मदारिक) अक्सर **(बक़िया सफ़हा 522 पर)**

دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ

سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ

حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ﴿١٠٠﴾

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْۤ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا

दूनिहिमा क़ौमल् ला यकादू–न यफ़्क़हू–न क़ौला(93)क़ालू याज़ल्–क़र्नैनि इन्–न यअ्जू–ज व मअ्जू–ज मुफ़्सिदू–न फ़िलअर्ज़ि फ़–हल् नज्अलु ल–क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्अ–ल बै–नना व बै–नहुम् सददा(94)क़ा–ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़–अइ़ीनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्अ़ल् बै–नकुम् व बै–नहुम् रदमा(95)आतूनी ज़ु–ब–रल् ह़दीदि ह़त्ता इज़ा सावा बैनस् स–दफ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू ह़त्ता इज़ा ज–अ़–लहू नारन् क़ा–ल आतूनी उफ़्रिग् अ़लैहि क़ित्रा(96)फ़–मस्ताअू अंय्यज़्–हरूहु व मस्तताअू लहू नक़्बा(97)क़ा–ल हाज़ा रह़्मतुम् मिर्–रब्बी फ़–इज़ा जा–अ वअ़्दु रब्बी ज–अ़–लहू दक्का–अ व का–न वअ़्दु रब्बी ह़क़्क़ा(98)व त–रक्ना बअ्–ज़हुम् यौ–मइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्ज़िंव् व नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि फ़–ज–मअ्नाहुम् जम्अंव्(99)व अ़–रज़्ना जहन्न–म यौ–मइज़िल् लिल्काफ़िरी–न अ़र्ज़ा(100)अल्लज़ी–न कानत् अअ्युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीअू–न सम्आ(101)अ–फ़–ह़सिबल्लज़ी–न क–फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया–अ इन्ना अअ्तदना

ऐसे लोग पाए कि कोई बात समझते मालूम न होते थे।(93) (फ़198) उन्होंने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन बेशक याजूज माजूज (फ़199) ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिए कुछ माल मुक़र्रर कर दें इस पर कि आप हममें और उनमें एक दीवार बना दें।(94) (फ़200) कहा वह जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है (फ़201) तो मेरी मदद ताक़त से करो (फ़202) मैं तुम में और उन में एक मज़बूत आड़ बना दूं।(95) (फ़203) मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ (फ़204) यहां तक कि वह जब दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धौंको यहां तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं उस पर गला हुआ तांबा उंडेल दूं।(96) तो याजूज व माजूज इस पर न चढ़ सके और न उसमें सुराख़ कर सके।(97) कहा (फ़205) यह मेरे रब की रहमत है फिर जब मेरे रब का वादा आएगा (फ़206) उसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है।(98) (फ़207) और उस दिन हम उन्हें छोड़ेंगे कि उनका एक गरोह दूसरे पर रेला देगा और सूर फूंका जाएगा (फ़208) तो हम उन सबको (फ़209) इकट्ठा कर लायेंगे।(99) और हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लायेंगे।(100) (फ़210) वह जिनकी आँखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा था (फ़211) और हक़ बात सुन न सकते थे।(101) (फ़212) (रुकूअ़ 1) तो क्या काफ़िर यह समझते हैं कि मेरे बन्दों को (फ़213) मेरे सिवा हिमायती बना लेंगे (फ़214) बेशक हमने काफ़िरों की मेहमानी को

(फ़198) क्योंकि उनकी ज़बान अ़जीबो ग़रीब थी उनके साथ इशारा वग़ैरह की मदद से ब-मशक़्क़त बात की जा सकती थी (फ़199) यह याफ़स बिन नूह अ़लैहिस्सलाम की औलाद से फ़सादी गरोह हैं इनकी तादाद बहुत ज़्यादा है, ज़मीन में फ़साद करते थे रबीअ़ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियां और सब्ज़े सब खा जाते थे कुछ न छोड़ते थे और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों वहशी जानवरों सांपों बिच्छूओं तक को खा जाते थे हज़रत ज़ुलक़रनैन से लोगों ने उनकी शिकायत की कि वह (फ़200) ताकि वह हम तक न पहुंच सकें और हम उनके शर व ईज़ा से महफ़ूज़ रहें (फ़201) यानी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास माल कसीर और हर क़िस्म का सामान मौजूद है तुम से कुछ लेने की हाजत नहीं (फ़202) और जो काम मैं बताऊँ वह अन्जाम दो (फ़203) उन लोगों ने अ़र्ज़ किया फिर हमारे मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़िदमत है फ़रमाया। (फ़204) और बुनियाद खुदवाई जब पानी तक पहुंची तो उसमें पत्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन (बक़िया सफ़्हा 523 पर)

جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ
الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ
عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

जहन्न–म लिल्काफ़िरी–न नुज़ुला(102)क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल् अख़्सरी–न अअ्माला(103) अल्लज़ी–न ज़ल्–ल सअ्युहुम् फ़िल्हयातिद् दुन्या व हुम् यह्–सबू–न अन्नहुम् युह्सिनू–न सुन्आ(104) उलाइ–कल्लज़ी–न क–फ़रू बि–आयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़–हबितत् अअ्–मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल् क़िया–मति वज़्ना(105)ज़ालि–क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क–फ़रू वत्त–ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा(106) इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल् फ़िर्दौसि नुज़ुला(107)ख़ालिदी–न फ़ीहा ला यब्ग़ू–न अ़न्हा हि–वला(108)क़ुल् लौ कानल् बह्रु मिदादल् लि–कलिमाति रब्बी ल–नफ़िदल् बह्रु क़ब्–ल अन् तन्फ़–द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म–ददा(109)क़ुल् इन्नमा अना ब–शरुम् मिस्लुकुम् यूहा इलय्–य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़मन् का–न यर्जू लिक़ा–अ रब्बिही फ़ल्यअ्मल् अ़–म–लन् सालिहंव् व ला युश्रिक् बिअ़िबा–दति रब्बिही अ–हदा(110)

जहन्नम तैयार कर रखी है।(102) तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किनके हैं।(103) (फ़215) उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई (फ़216) और वह इस ख़्याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।(104) यह लोग जिन्होंने अपने रब की आयतें और उसका मिलना न माना (फ़217) तो उनका किया धरा सब अकारत है तो हम उनके लिए क़ियामत के दिन कोई तौल न क़ाइम करेंगे।(105) (फ़218) यह उनका बदला है जहन्नम उस पर कि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई।(106) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उनकी मेहमानी है।(107) (फ़219) वह हमेशा उनमें रहेंगे उनसे जगह बदलना न चाहेंगे।(108) (फ़220) तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिए स्याही हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगरचे हम वैसा ही और उसकी मदद को ले आयें।(109) (फ़221) तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं (फ़222) मुझे 'वही़' आती है कि तुम्हारा मअ़बूद एक ही मअ़बूद है (फ़223) तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।(110) (फ़224) (रुकूअ़ 3)

(फ़215) यानी वह कौन लोग हैं जो अ़मल करके थके और मशक़्क़तें उठाईं और यह उम्मीद करते रहे कि इन आमाल पर फ़ज़्ल व नवाल से नवाज़े जायेंगे मगर बजाए इसके हलाकत व बरबादी में पड़े हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया वह यहूद व नसारा हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वह राहिब लोग हैं जो सवामेअ़ में उज़लत गुज़ीन रहते थे। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह लोग अहले हरूरा यानी ख़वारिज हैं। (फ़216) और अ़मल बातिल हो गए (फ़217) रसूल व क़ुरआन पर ईमान न लाये और बअ़्स व हिसाब व सवाब के मुन्किर रहे (फ़218) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बाज़े लोग ऐसे आमाल लायेंगे जो उनके ख़्यालों में मक्का मुकर्रमा के पहाड़ों से ज़्यादा बड़े होंगे लेकिन जब वह तौले जायेंगे तो उन में वज़न कुछ न होगा (फ़219) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह से मांगो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वह जन्नतों में सब के दर्मियान और सब से बुलन्द है और उस पर अ़र्शे रहमान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं हज़रत कअ़ब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सब से आला है उसमें नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐश करेंगे (फ़220) जिस तरह दुनिया में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो उससे और आला व अरफ़अ़ की तलब रखता है **(बक़िया सफ़हा 523 पर)**

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَیْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ
بِدُعَآىِٕكَ رَبِّ شَقِیًّا ۝ وَاِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ وَكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ۝ یَّرِثُنِیْ وَیَرِثُ مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِیًّا ۝ یٰزَكَرِیَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ٱسْمُهٗ یَحْیٰی ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ
الْكِبَرِ عِتِیًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَیَّ هَیِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَیْـًٔا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً ۚ قَالَ اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

सूरतु मरय-म

(मक्की है इस 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

काफ़् हा–या–अ़ैन्–साद(1)ज़िक्रु रह्–मति रब्बि–क अ़ब्दहू ज़–करिय्या(2)इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या(3)का–ल रब्बि इन्नी व–ह–नल् अ़ज़्मु मिन्नी वश्त–अ़–लर्रासु शैबंव् व लम् अकुम् बिदुआ़इ–क रब्बि शक़िय्या(4)व इन्नी ख़िफ़्तुल् मवालि–य मिंव् वराई व का–नतिम्र–अती आ़क़िरन् फ़–हब्ली मिल्लदुन्–क वलिय्या(5)यरिसुनी व यरिसु मिन् आलि यअ़्कू–ब वज्–अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या(6)या ज़–करिय्या इन्ना नुबश्शिरु–क बिग़ुलामि निस्मुहू यह़्या लम् नज्–अ़ल् लहू मिन् क़ब्लु समिय्या(7)का–ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव् व का–नतिम्र–अती आ़क़िरंव् व क़द् ब–लग़्तु मिनल् कि–बरि अ़तिय्या(8)क़ा–ल कज़ालि–क का–ल रब्बु–क हु–व अ़लय्–य हय्यिनुंव् व क़द् ख़–लक़्तु–क मिन् क़ब्लु व लम तकु शैआ(9)क़ा–ल रब्बिज् अ़ल् ली आ–य–तन् क़ा–ल आ–यतु–क अल्ला तकुल्लिमन्ना–स

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला।(फ़1)

काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद।(1)यह मज़कूर है तेरे रब की उस रहमत का जो उसने अपने बन्दा ज़करिया पर की।(2) जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा।(3) (फ़2) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई (फ़3) और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा (फ़4) और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी नामुराद न रहा।(4)(फ़5) और मुझे अपने बाद अपने क़राबत वालों का डर है (फ़6) और मेरी औरत बांझ है तू मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले।(5) (फ़7) वह मेरा जा-नशीन हो और औलादे याक़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर।(6) (फ़8) ऐ ज़करिया हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यह्या है इसके पहले हमने इस नाम का कोई न किया।(7) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां से होगा मेरी औरत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की हालत को पहुंच गया।(8)(फ़9) फ़रमाया ऐसा ही है (फ़10) तेरे रब ने फ़रमाया वह मुझे आसान है और मैंने तो इस से पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ भी न था।(9) (फ़11) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे दे (फ़12) फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तू तीन रात दिन लोगों से

(फ़1) सूरह मरयम मक्की है इसमें छः रुकूअ़ अठानवे आयतें सात सो अस्सी कलिमे हैं। (फ़2) क्योंकि अख़्फ़ा रिया से दूर और इख़्लास से मामूर होता है नीज़ यह भी फ़ाइदा था कि पीराना साली की उम्र में जब कि सिन शरीफ़ ७५ या ८० बरस का था औलाद का तलब करना एहतेमाल रखता था कि अवाम इस पर मलामत करें इस लिए भी इस दुआ़ का अख़्फ़ा मुनासिब था एक क़ौल यह भी है कि ज़ोअ़फ़े पीरी के बाइस हज़रत की आवाज़ भी ज़ईफ़ हो गई थी। (मदारिक ख़ाज़िन) (फ़3) यानी पीराना साली का ज़ोअ़फ़ ग़ायत को पहुंच गया हड्डी जो निहायत मज़बूत उ़ज़्व है उस में कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी आज़ा व क़वा का हाल मुहताजे बयान ही नहीं। (फ़4) कि तमाम सर सफ़ेद हो गया। (फ़5) हमेशा तूने मेरी दुआ़ क़बूल की और मुझे मुस्तजाबुद्दावात किया। (फ़6) चचाज़ाद वग़ैरह का कि वह शरीर लोग हैं कहीं मेरे बाद दीन में रुख़ना अन्दाज़ी न करें जैसा कि **(बक़िया सफ़हा 523 पर)**

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّ حَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَ زَكٰوةً ؕ وَ كَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَ لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٤ وَ سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ يَمُوْتُ وَ يَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥ وَ اذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ
مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝١٦ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝١٧ قَالَتْ اِنِّىْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ
تَقِيًّا ۝١٨ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝١٩ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّ لَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّ لَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝٢٠ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ
وَ لِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَ رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَ كَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝٢١ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝٢٢ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ

सला–स लयालिन् सविय्या(10)फ़–ख़–र–ज अ़ला क़ौमिही मिनल् मिह़्राबि फ़औहा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्र–तंव् व अ़शिय्या(11)या यह़्या ख़ुज़िल्किता–ब बिक़ुव्वतिन् व आतैनाहुल्–हुक्–म सबिय्या(12)व ह़नानम् मिल्लदुन्ना व ज़कातन् व का–न तक़िय्या(13)व बर्रम् बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या(14)व सलामुन् अ़लैहि यौ–म वुलि–द व यौ–म यमूतु व यौ–म युब्–असु ह़य्या(15)वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्य–म इज़िन्–त–ब–जत् मिन् अह्लिहा मकानन् शर्क़िय्या(16) फ़त्त–ख़–जत् मिन् दूनिहिम् ह़िजाबन् फ़–अर्सल्ना इलैहा रू–ह़ना फ़–त–मस़्स़–ल लहा ब–श–रन् सविय्या(17)क़ालत् इन्नी अऊ़ज़ु बिर्रह़्मानि मिन्–क इन् कुन्–त तक़िय्या(18)क़ा–ल इन्नमा अना रसूलु रब्बिकि लि–अ–ह–ब लकि गुलामन् ज़किय्या(19)क़ालत् अन्ना यकूनु ली गुलामुंव् व लम् यम्सस्नी ब–शरुंव् व लम् अकु बग़िय्या(20)क़ा–ल कज़ालिकि क़ा–ल रब्बुकि हुव अ़–लय्–य हय्यिनुन् व लि–नज्–अ़–लहू आ–यतल् लिन्नासि व रह़्–म–तम् मिन्ना व का–न अम्रम् मक़्ज़िय्या (21)फ़–ह़–म–लत्हु फ़न्त–ब–ज़त् बिही मकानन् क़सिय्या(22)फ़–अजा–अहल् मख़ाज़ु इला जिज़्अ़िन् नख़्–लति क़ालत् यालै–तनी

कलाम न करे भला चंगा होकर।(10) (फ़13) तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया (फ़14) तो उन्हें इशारा से कहा कि सुबह व शाम तस्बीह़ करते रहो।(11) (फ़15) ऐ यह़्या किताब (फ़16) मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी।(12) (फ़17) और अपनी तरफ़ से मेहरबानी (फ़18) और सुथराई (फ़19) और कमाल डर वाला था।(13) (फ़20) और अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और ज़बरदस्त व नाफ़रमान न था।(14) (फ़21) और सलामती है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाएगा।(15) (फ़22) (रुकूअ़ 4) और किताब में मरयम को याद करो (फ़23) जब अपने घर वालों से पूरब की तरफ़ एक जगह अलग गई।(16) (फ़24) तो उनसे उधर (फ़25) एक पर्दा कर लिया तो उसकी तरफ़ हमने अपना रूहानी भेजा (फ़26) वह उसके सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुआ।(17) बोली मैं तुम से रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तुझे ख़ुदा का डर है।(18) बोला मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूं कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूं।(19) बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ न लगाया न मैं बदकार हूं।(20) कहा यूं ही है (फ़27) तेरे रब ने फ़रमाया है कि यह (फ़28) मुझे आसान है और इस लिए कि हम उसे लोगों के वास्ते निशानी (फ़29) करें और अपनी तरफ़ से एक रहमत (फ़30) और यह काम ठहर चुका है।(21) (फ़31) अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिए हुए एक दूर जगह चली गई।(22) (फ़32) फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया (फ़33) बोली हाय किसी तरह

(फ़13) सही सालिम होकर बग़ैर किसी बीमारी के और बग़ैर गूंगा होने के चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उन अय्याम में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए जब अल्लाह का ज़िक्र करना चाहते ज़बान खुल जाती। (फ़14) जो उसकी नमाज़ की जगह थी और लोग पसे मेहराब इन्तेज़ार में थे कि आप उनके लिए दरवाज़ा खोलें तो वह दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें जब हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम बाहर आये तो आपका रंग बदला हुआ था गुफ़्तगू नहीं फ़रमा सकते थे यह हाल देख (बक़िया सफ़हा 524 पर)

مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا

جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا

يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾ قَالَ

اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا

شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ

मितु क़ब्–ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम् मन्सिय्या(23)फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्–ज़नी क़द् ज–अ़–ल रब्बुकि तह्–तकि सरिय्या(24)व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अिन् नख़्–लति तुसाक़ित् अ़लैकि रु–त–बन् जनिय्या(25)फ़कुली वश्–रबी व क़र्री अ़ैनन् फ़इम्मा त–रयिन्–न मिनल् ब–शरि अ–ह़–दन् फ़क़ूली इन्नी न–ज़रतु लिर्रह़्मानि सौमन् फ़–लन् उकल्लिमल् यौ–म इन्सिय्या(26)फ़–अ–तत् बिही क़ौ–महा तह़्मिलुहू क़ालू या मर्–यमु लक़द् जिअ्ति शैअन् फ़रिय्या(27)या उख़्–त हारू–न मा का–न अबूकिम्र–अ सौइंव् व मा कानत् उम्मुकि बग़िय्या(28)फ़–अशारत् इलैहि क़ालू कै–फ़ नुकल्लिमु मन् का–न फ़िल्मह्दि स़बिय्या(29)क़ा–ल इन्नी अ़ब्दुल्लाहि आता–नियल् किता–ब व ज–अ़–लनी नबिय्या(30)व ज–अ़–लनी मुबा–रकन् ऐ–न मा कुन्तु व औस़ानी बिस्स़लाति वज़्ज़काति मा दुम्तु ह़य्या(31)व बर्रम् बिवालि–दती व लम् यज्–अ़्ल्नी जब्बारन् शक़िय्या(32)वस्सलामु अ़–लय्–य यौ–म वुलित्तु व यौ–म अमूतु व यौ–म उब्–अ़सु ह़य्या(33)ज़ालि–क अ़ीसब्नु मर्य–म क़ौलल् ह़क़्क़िल् लज़ी फ़ीहि यम्तरून(34)मा का–न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि–ज मिंव्

मैं इस से पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती।(23) तो उसे (फ़ा34) उसके तले से पुकारा कि ग़म न खा (फ़ा35) बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है।(24) (फ़ा36) और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी।(25) (फ़ा37) तो खा और पी और आँख ठंडी रख (फ़ा38) फिर अगर तू किसी आदमी को देखे (फ़ा39) तो कह देना मैंने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी।(26) (फ़ा40) तो उसे गोद में ले अपनी क़ौम के पास आई (फ़ा41) बोले ऐ मरयम बेशक तूने बहुत बड़ी बात की।(27) ऐ हारून की बहन (फ़ा42) तेरा बाप (फ़ा43) बुरा आदमी न था और न तेरी माँ (फ़ा44) बदकार।(28) इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया (फ़ा45) वह बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है।(29) (फ़ा46) बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा (फ़ा47) उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।(30) (फ़ा48) और उसने मुझे मुबारक किया (फ़ा49) मैं कहीं हूं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूँ।(31) और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला (फ़ा50) और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया।(32) और वही सलामती मुझ पर (फ़ा51) जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।(33) (फ़ा52) यह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात जिसमें शक करते हैं।(34) (फ़ा53) अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए

(फ़ा34) जिबरील ने वादी के नशेब से (फ़ा35) अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों की बद गोई करने का (फ़ा36) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने या हज़रत जिबरील ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो आबे शीरीं का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का दरख़्त सरसब्ज़ हो गया फल लाया वह फल पुख़्ता और रसीदा हो गए और हज़रत मरयम से कहा गया। (फ़ा37) जो ज़च्चा के लिए बेहतरीन ग़िज़ा हैं। (फ़ा38) अपने फ़रज़न्द ईसा से (फ़ा39) कि तुझ से बच्चे को दरियाफ़्त करता है (फ़ा40) पहले ज़माना में बोलने और कलाम करने का भी रोज़ा होता था जैसा कि हमारी शरीअ़त में खाने और पीने का रोज़ा होता है हमारी शरीअ़त में चुप रहने का रोज़ मन्सूख़ हो गया हज़रत मरयम को सुकूत की नज़र मानने का इस लिए हुक्म दिया गया ताकि कलाम हज़रते ईसा फ़रमाएं और उनका कलाम हुज्जते क़विय्या हो जिससे तोहमत ज़ाइल हो जाये इससे चन्द मसले मालूम **(बक़िया सफ़हा 524 पर)**

وَلَدٍ سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۳۵﴾ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَیْنِهِمْ
فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَ اَبْصِرْ یَوْمَ یَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْیَوْمَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۳۸﴾ وَ اَنْذِرْهُمْ یَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِیَ
الْاَمْرُ وَ هُمْ فِیْ غَفْلَةٍ وَّ هُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَ مَنْ عَلَیْهَا وَ اِلَیْنَا یُرْجَعُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِبْرٰهِیْمَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّیْقًا نَّبِیًّا ﴿۴۱﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ یٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا یَسْمَعُ وَ لَا یُبْصِرُ وَ لَا یُغْنِیْ عَنْكَ شَیْــٴًـا ﴿۴۲﴾ یٰۤاَبَتِ اِنِّیْ قَدْ جَآءَنِیْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ یَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِیْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِیًّا ﴿۴۳﴾
یٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّیْطٰنَ اِنَّ الشَّیْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِیًّا ﴿۴۴﴾ یٰۤاَبَتِ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّیْطٰنِ وَلِیًّا ﴿۴۵﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ

व लदिन् सुब्हा–नहू इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़इन्नमा यकूलु लहू कुन् फ़–यकून(35)व इन्नल्ला–ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम(36)फ़ख़्त–ल–फ़ल् अह्ज़ाबु मिम् बैनिहिम् फ़वैलुल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू मिम् मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम(37)अस्मिअ् बिहिम् व अब्सिर् यौ–म यअ्तू–नना लाकिनिज़् ज़ालिमूनल् यौ–म फ़ी ज़लालिम् मुबीन(38)व अन्ज़िरहुम् यौमल् हस्–रति इज़् कुज़ियल् अम्रु व हुम् फ़ी ग़फ़्–लतिंव् व हुम् ला युअ्मिनून(39)इन्ना नह्नु नरिसुल् अर्–ज़ व मन् अ़लैहा व इलैना युर्–जअू न(40)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इब्राही–म इन्नहू का–न सिद्दीक़न् नबिय्या(41)इज़् क़ा–ल लि–अबीहि या–अ–बति लि–म तअ्बुदु मा ला यस्मअु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अ़न्–क शैआ(42)या अ–बति इन्नी क़द् जा–अनी मिनल् अ़िल्मि मा लम् यअ्ति–क फ़त्तबिअ्नी अह्दि–क सिरातन् सविय्या(43)या अ–बति ला तअ्बुदिश्शैता–न इन्नश्शैता–न का–न लिर्रह्मानि अ़सिय्या(44)या अ–बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य–मस्स–क अ़जाबुम् मिनर्रह्मानि फ़– तकू–न लिश्शैतानि वलिय्या(45)क़ा–ल अ–राग़िबुन् अन्–त

पाकी है उसको (फ़ा54) जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूं ही कि उससे फ़रमाता है होजा वह फ़ौरन हो जाता है।(35) और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा (फ़ा55) तो उसकी बन्दगी करो यह राह सीधी है।(36) फिर जमाअ़तें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं (फ़ा56) तो ख़राबी है काफ़िरों के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से।(37) (फ़ा57) कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे (फ़ा58) मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।(38) (फ़ा59) और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का (फ़ा60) जब काम हो चुकेगा (फ़ा61) और वह ग़फ़लत में हैं (फ़ा62) और वह नहीं मानते।(39) बेशक ज़मीन और जो कुछ उस पर है सबके वारिस हम होंगे (फ़ा63) और वह हमारी ही तरफ़ फिरेंगे।(40) (फ़ा64) (रुकूअ़ 5) और किताब में (फ़ा65) इब्राहीम को याद करो बेशक वह सिद्दीक़ (फ़ा66) था(41) (नबी) ग़ैब की ख़बरें बताता जब अपने बाप से बोला (फ़ा67) ऐ मेरे बाप क्यों ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए। (42)(फ़ा68) ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास (फ़ा69) वह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ (फ़ा70) मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं।(43) (फ़ा71) ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन (फ़ा72) बेशक शैतान रहमान का ना-फ़रमान है।(44) ऐ मेरे बाप मैं डरता हूं कि तुझे रहमान का कोई अ़ज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का रफ़ीक़ हो जाए।(45) (फ़ा73) बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से

(फ़ा54) उससे (फ़ा55) और उसके सिवा कोई रब नहीं (फ़ा56) और हज़रत ईसा के बाब में नसारा के कई फ़िरक़े हो गए एक याकूबिया एक नस्तूरिया एक मलकानिया याकूबिया कहता था कि वह अल्लाह है ज़मीन पर उतर आया था फिर आसमान पर चढ़ गया नस्तूरिया का क़ौल है कि वह ख़ुदा का बेटा है जब तक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया और तीसरा फ़िरक़ा यह कहता था कि वह अल्लाह के बन्दे हैं मख़्लूक़ हैं नबी हैं यह मोमिन था (मदारिक) (फ़ा57) बड़े दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़ा58) और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़ा न देगा जब उन्होंने दुनिया में दलाइले हक़ को नहीं देखा और अल्लाह के मवाईद को नहीं सुना बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यह कलाम बतरीक़े तहदीद है कि उस रोज़ ऐसी हौलनाक बातें सुनें और देखेंगे जिन से दिल फट जायें (फ़ा59) न हक़ देखें न हक़ सुनें बहरे अन्धे बने हुए हैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को इलाह और मअ़बूद ठहराते हैं बावजूदे कि उन्होंने बसराहत अपने बन्दा होने का एलान फ़रमाया (फ़ा60) हदीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वह महरूम किये तो उन्हें नदामत व हसरत होगी कि काश वह **(बक़िया सफ़्हा 525 पर)**

عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿۴۶﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ﴿۴۷﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖؗ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿۴۸﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ﴿۴۹﴾
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ﴿۵۰﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿۵۱﴾ وَنَادَیْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ﴿۵۲﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِیًّا ﴿۵۳﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ ؗ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿۵۴﴾ وَكَانَ
یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِیًّا ﴿۵۵﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِدْرِیْسَ ؗ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّیْقًا نَّبِیًّا ﴿۵۶﴾ ۗ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا ﴿۵۷﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ

अ़न् आलि–हती या इब्राहीमु ल–इल्लम् तन्तहि ल–अरजु–मन्न–क वह्जुरनी मलिय्या(46)क़ा–ल सलामुन् अ़लै–क स–अस्तग़्फ़िरु ल–क रब्बी इन्नहू का–न बी ह़फ़िय्या(47)व अअ़्–तज़िलुकुम् व मा तदअू–न मिन् दूनिल्लाहि व अदअू रब्बी अ़सा अल्ला अकू–न बिदुआइ रब्बी शक़िय्या(48) फ़–लम्मअ़्–त–ज़–लहुम् व मा यअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि व हब्ना लहू इस्ह़ा–क़ व यअ़्कू–ब व कुल्लन् ज–अ़ल्ना नबिय्या(49)व व–हब्ना लहुम् मिर्रह़्मतिना व ज–अ़ल्ना लहुम् लिसा–न स़िदक़िन् अ़लिय्या(50)वज़्कुर् फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का–न मुख़्–ल–स़ंव् व का–न रसूलन् नबिय्या(51)व नादैनाहु मिन् जानिबित्तूरिल् ऐ–मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या(52)व व–हब्ना लहू मिर्रह़्मतिना अख़ाहु हारू–न नबिय्या(53)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इस्माअ़ी–ल इन्नहू का–न सा़दिक़ल् वअ़्दि व का–न रसूलन् नबिय्या(54)व का–न यअ्मुरु अह्–लहू बिस्स़लाति वज़्ज़काति व का–न अ़िन्–द रब्बिही मरज़िय्या(55)वज़्कुर् फ़िल्किताबि इदरी–स इन्नहू का–न स़िद्दीक़न् नबिय्या(56)व र–फ़अ़्नाहु मकानन् अ़लिय्या(57)उलाइ–कल् लज़ी–न

मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू (फ़74) बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझसे ज़माना दराज़ तक बे इलाक़ा हो जा।(46) (फ़75) कहा बस तुझे सलाम है (फ़76) क़रीब है कि मैं तेरे लिए अपने रब से माफ़ी मांगूंगा(47) (फ़77) बेशक वह मुझ पर मेहरबान है। और मैं एक किनारे हो जाऊंगा (फ़78) तुम से और उन सबसे जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा (फ़79) क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बदबख़्त न हूं।(48) (फ़80) फिर जब उनसे और अल्लाह के सिवा उनके मअ़बूदों से किनारा कर गया (फ़81) हमने उसे इसहाक़ (फ़82) और याक़ूब (फ़83) अ़ता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।(49) और हमने उन्हें अपनी रहमत अ़ता की (फ़84) और उनके लिए सच्ची बुलन्द नामवरी रखी।(50) (फ़85) (रुकूअ़ 6) और किताब में मूसा को याद करो बेशक वह चुना हुआ था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला।(51) और उसे हमने तूर की दाहिनी जानिब से निदा फ़रमाई (फ़86) और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया।(52) (फ़87) और अपनी रहमत से उसका भाई हारून अ़ता किया (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला, नबी)।(53) (फ़88) और किताब में इसमाईल को याद करो (फ़89) बेशक वह वादे का सच्चा था (फ़90) और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता।(54) और अपने घर वालों को (फ़91) नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और अपने रब को पसन्द था।(55) (फ़92) और किताब में इदरीस को याद करो (फ़93) बेशक वह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता।(56) और हमने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया।(57) (फ़94) यह हैं जिन पर

(फ़74) बुतों की मुख़ालफ़त और उनको बुरा कहने और उनके उयूब बयान करने से (फ़75) ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अमन में रहे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने (फ़76) यह सलामे मुतारकत था (फ़77) कि वह तुझे तौफ़ीक़े तौबा व ईमान देकर तेरी मग़फ़िरत करे (फ़78) शहरे बाबुल से शाम की तरफ़ हिजरत करके। (फ़79) जिसने मुझे पैदा किया और मुझ पर एहसान फ़रमाये (फ़80) इसमें तअ़रीज़ है कि जैसे तुम बुतों की पूजा करके बद–नसीब हुए ख़ुदा के परिस्तार के लिए यह बात नहीं उसकी बन्दगी करने वाला शक़ी व महरूम नहीं होता (फ़81) अर्ज़े मुक़द्दसा की तरफ़ हिजरत करके (फ़82) फ़रज़न्द (फ़83) फ़रज़न्द के फ़रज़न्द यानी पोते फ़ाइदा इसमें इशारा है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की उम्र **(बक़िया सफ़हा 525 पर)**

أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۝ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا
سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ

अन्–अ़–मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन् नबिय्यी–न मिन् ज़ुर्रिय्यति आ–द–म व मिम्मन् ह़–मल्ना म–अ़ नूहिन् व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही–म व इस्राई–ल व मिम्मन् हदैना वज्तबैना इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुर्रह़्मानि ख़र्रू सुज्जदंव् व बुकिय्या(58)फ़–ख़–ल–फ़ मिम् बअ़्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाउस्सला–त वत्त–बउ़श् श–हवाति फ़सौ–फ़ यल्क़ौ–न ग़य्या(59)इल्ला मन् ता–ब व आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् फ़उलाइ–क यद्ख़ुलूनल् जन्न–त व ला युज़्लमू–न शैआ(60)जन्नाति अ़दनि निल्लती व–अ़–दर्रह़्मानु अ़िबा–दहू बिल्ग़ैबि इन्नहू का–न वअ़्दुहू मअ्तिय्या(61)ला यस्मअ़ू–न फ़ीहा लग़्वन् इल्ला सलामन् व लहुम् रिज़्क़ुहुम् फ़ीहा बुक्र–तंव् व अ़शिय्या(62)तिल्कल् जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अ़िबादिना मन् का–न तक़िय्या(63)व मा न–त–नज़्ज़लु इल्ला बि–अम्रि रब्बि–क लहू मा बै–न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै–न ज़ालि–क व मा का–न रब्बु–क नसिय्या(64)रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा फ़अ़्बुद्हु वस्तबिर् लिअ़िबा–दतिही हल् तअ़्–लमु लहू समिय्या(65)व यक़ूलुल् इन्सानु

अल्ला ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से (फ़95) और उनमें जिनको हम ने नूह के साथ सवार किया था (फ़96) और इब्राहीम (फ़97) और याक़ूब की औलाद से (फ़98) और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया (फ़99) जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते।(58) (फ़100) तो उन के बाद उनकी जगह वह ना-ख़ल्फ़ आए (फ़101) जिन्होंने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए (फ़102) तो अ़न्क़रीब वह दोज़ख़ में ग़य का जंगल पायेंगे।(59) (फ़103) मगर जो तायब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो यह लोग जन्नत में जायेंगे और उनहें कुछ नक़सान न दिया जाएगा।(60) (फ़104) बसने के बाग़ जिन का वादा रहमान ने अपने (फ़105) बन्दों से ग़ैब में किया (फ़106) बेशक उसका वादा आने वाला है।(61) वह उसमें कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम (फ़107) और उन्हें उसमें उनका रिज़्क़ है सुबह व शाम।(62) (फ़108) यह वह बाग़ है जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे जो परहेज़गार है। (और जिबरईल ने महबूब से अ़र्ज़ की) (63) (फ़109) हम फ़रिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे और जो उसके दर्मियान है (फ़110) और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं।(64) (फ़111) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उसकी बन्दगी पर साबित रहो क्या उसके नाम का दूसरा जानते हो।(65) (फ़112) (रुकूअ़ 7) और आदमी कहता है

(फ़95) यानी हज़रत इदरीस व हज़रत नूह। (फ़96) यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पोते और आपके फ़रज़न्दे साम के फ़रज़न्द हैं। (फ़97) की औलाद से हज़रत इसमाईल व हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब (फ़98) हज़रत मूसा और हज़रत हारून और हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा सलवातुल्लाहि अ़लैहिम व सलामुहू। (फ़99) शरह शरीअ़त व कशफ़े हक़ीक़त के लिए (फ़100) अल्लाह तआ़ला ने इन आयात में ख़बर दी कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम अल्लाह तआ़ला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे मसला इस से साबित हुआ कि क़ुरआने पाक बख़ुशूअ़ क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तहब है। (फ़101) मिस्ले यहूद व नसारा वग़ैरह के (फ़102) और बजाए ताअ़ते इलाही के मआ़सी को इख़्तियार किया। (फ़103) हज़रत इब्ने (बक़िया सफ़हा 526 पर)

ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

अ–इज़ा मा मित्तु लसौ–फ़ उख़्रजु ह़य्या(66)अ–व ला यज़्कुरुल् इन्सानु अन्ना ख़–लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ(67)फ़–व रब्बि–क ल–नह़्शुरन्नहुम् वश्शयाती–न सुम्–म लनुह़्ज़िरन्नहुम् ह़ौ–ल जहन्न–म जिसिय्या(68)सुम्–म ल–नन्ज़ि अ़न्–न मिन् कुल्लि शी–अ़तिन् अय्युहुम् अशद्दु अ़लर्रह़्मानि अ़ितिय्या(69)सुम्–म ल–नह़्नु अअ़्–लमु बिल्लज़ी–न हुम् औला बिहा सि़लिय्या(70) व इम् मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा का–न अ़ला रब्बि–क ह़त्मम् मक़्ज़िय्या(71)सुम्–म नु–नज्जिल् लज़ीनत् त–क़व् व न–ज़रुज़्ज़ालिमी–न फ़ीहा जिसिय्या(72)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आया–तुना बय्यिनातिन् क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू लिल्लज़ी–न आ–मनू अय्युल् फ़रीक़ैनि ख़ैरुम् मक़ामंव् व अह़्सनु नदिय्या(73)व कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिन् क़रनिन् हुम् अह्–सनु असासंव् व रिअ्या(74)क़ुल् मन् का–न फ़िज़्ज़ला–लति फ़ल्–यम्दुद् लहुर्रह़्मानु मद्दा ह़त्ता इज़ा रऔ मा यू–अ़दू–न इम्मल् अ़ज़ा–ब व इम्मस्सा–अ़–त फ़–स–यअ़्लमू–न मन् हु–व शर्रुम् मकानंव् व अज़्–अ़फ़ु जुन्दा(75)व यज़ीदुल्लाहुल् लज़ी–नह्–तदौ हुदन् वल्बाक़ियातुस् सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्–द

क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अन्क़रीब जिला कर निकाला जाऊंगा।(66) (फ़113) और क्या आदमी को याद नहीं कि हमने इससे पहले उसे बनाया और वह कुछ न था।(67) (फ़114) तो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें (फ़115) और शैतानों सबको घेर लायेंगे (फ़116) और उन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे।(68) फिर हम (फ़117) हर गरोह से निकालेंगे जो उनमें रहमान पर सबसे ज़्यादा बेबाक होगा।(69) (फ़118) फिर हम ख़ूब जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़्यादा लायक़ हैं।(70) और तुम में कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख़ पर न हो (फ़119) तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर यह ज़रूर ठहरी हुई बात है।(71) (फ़120) फिर हम डर वालों को बचा लेंगे (फ़121) और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।(72) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं(फ़122)काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कौन से गरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है।(73) (फ़123) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दीं (फ़124) कि वह उनसे भी सामान और नुमूद में बेहतर थे।(74) तुम फ़रमाओ जो गुमराही में हो तो उसे रहमान ख़ूब ढील दे (फ़125) यहां तक कि जब वह देखें वह चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है या तो अ़ज़ाब (फ़126) या क़ियामत (फ़127) तो अब जान लेंगे कि किसका बुरा दर्जा है और किसकी फ़ौज कमज़ोर।(75) (फ़128) और जिन्होंने हिदायत पाई (फ़129) अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा (फ़130) और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का (फ़131) तेरे रब के यहां सब से बेहतर

(फ़113) इन्सान से यहां मुराद वह कुफ़्फ़ार हैं जो मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने के मुन्किर थे जैसे कि उबय बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा उन्हीं लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और यही इसका शाने नुज़ूल है। (फ़114) तो जिस ने मअ़्दूम को मौजूद फ़रमाया उसकी क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा कर देना क्या तअ़ज्जुब। (फ़115) यानी मुन्किरीने बअ़्स को। (फ़116) यानी कुफ़्फ़ार को उनके गुमराह करने वाले शयातीन के साथ इस तरह कि हर काफ़िर शैतान के साथ एक ज़न्जीर में जकड़ा होगा (फ़117) कुफ़्फ़ार के (फ़118) यानी दुख़ूले नार में जो सब से ज़्यादा सरकश और कुफ़्र में अशद होगा वह मुक़द्दम किया जाएगा बाज़ रिवायात में है कि कुफ़्फ़ार सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़न्जीरों में जकड़े तौक़ डाले हुए हाज़िर किये जायेंगे फिर जो कुफ़्र व सरकशी में अशद होंगे वह पहले जहन्नम में दाख़िल किये जायेंगे। (फ़119) नेक हो या **(बक़िया सफ़हा 526 पर)**

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ مَّرَدًّا ۝ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ۝ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا

يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝ وَّ نَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ۝ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ

وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ۝ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى

الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۝ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ۝ لَقَدْ جِئْتُمْ

شَيْئًا اِدًّا ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۝ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ۝ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ۝ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

وُدًّا ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

रब्बि–क स़वाबंव् व ख़ैरुम् म–रद्दा(76)अ–फ़–रऐ–तल्लज़ी क–फ़–र बि–आयातिना व क़ा–ल लऊ–त–यन्–न मालंव् व व–लदा(77)अत्त–ल–अ़ल् ग़ै–ब अमित्त–ख़–ज़ अ़िन्दर्रह़्मानि अ़ह्–दा(78) कल्ला स–नक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल् अ़ज़ाबि मद्दा(79)व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा(80)वत्त–ख़जू मिन् दूनिल्लाहि आलि–ह–तल् लि–यकूनू लहुम् अ़िज़्ज़ा(81) कल्ला स–यक्फ़ुरू–न बिअ़िबा–दतिहिम् व यकूनू–न अ़लैहिम् ज़िद्दा(82)अ–लम् त–र अन्ना अर्सल्नश् शयाती–न अ़–लल्काफ़िरी–न तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा(83)फ़ला तअ़–जल् अ़लैहिम् इन्नमा नअ़ुद्दु लहुम् अ़द्दा(84)यौ–म नह़्शुरुल् मुत्तक़ी–न इलर्रह़्मानि वफ़्दा(85)व नसूक़ुल् मुज्रिमी–न इला जहन्न–म विर्दा(86)ला यम्लिकू–नश्शफ़ा–अ़–त इल्ला मनित्त–ख़–ज़ अ़िन्दर्रह़्मानि अ़ह्दा(87)व क़ालुत्त–ख़–ज़र्रह़्मानु व–लदा(88)ल–क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा(89)तकादुस्समावातु य–त–फ़त्तर्–न मिन्हु व तन्–शक़्क़ुल् अर्ज़ु व तख़िर्रुल् जिबालु हद्दा(90)अन् दऔ लिर्रह़्मानि व लदा(91)व मा यम्बग़ी लिर्रह़्मानि अंय्यत्तख़ि–ज व लदा(92)इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह़्मानि अ़ब्दा(93)ल–क़द् अह़्साहुम् व अ़द्दहुम् अ़द्दा(94)व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल् क़िया–मति फ़र्दा(95)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति स–यज्अ़लु लहुमुर्रह़्मानु वुद्दा(96)फ़इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि–क लितु–बश्शि–र बिहिल् मुत्तक़ी–न व तुन्ज़ि–र बिही क़ौमल् लुद्दा(97)व कम् अह्लक्ना क़ब्–लहुम् मिन् क़र्निन् हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ–ह़दिन् औ तस्मअ़ु लहुम् रिक्ज़ा(98)

सवाब और सब से भला अन्जाम।(76) (फ़ा132) तो क्या तुमने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुनकिर हुआ और कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे।(77) (फ़ा133) क्या ग़ैब को झांक आया है (फ़ा134) या रहमान के पास कोई क़रार रखा है।(78) हरगिज़ नहीं (फ़ा135) अब हम लिख रखेंगे जो वह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अ़ज़ाब देंगे।(79) और जो चीज़ें कह रहा है (फ़ा136) उनके हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा।(80) (फ़ा137) और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिये (फ़ा138) कि वह उन्हें ज़ोर दें।(81) (फ़ा139) हरगिज़ नहीं (फ़ा140) कोई दम जाता है कि वह (फ़ा141) उनकी बन्दगी से मुनकिर होंगे और उनके मुख़ालिफ़ हो जायेंगे।(82) (फ़ा142) (रुकूअ़ 8) क्या तुमने न देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान भेजे (फ़ा143) कि वह उन्हें ख़ूब उछालते हैं।(83) (फ़ा144) तो तुम उन पर जल्दी न करो हम तो उनकी गिनती पूरी करते हैं।(84) (फ़ा145) जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जायेंगे मेहमान बना कर।(85) (फ़ा146) और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हाँकेंगे प्यासे।(86) (फ़ा147) लोग शफ़ाअ़त के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास क़रार रखा है।(87) (फ़ा148) और काफ़िर बोले (फ़ा149) रहमान ने औलाद इख़्तियार की।(88) बेशक तुम

हद की भारी बात लाए।(89) (फ़ा150) क़रीब है कि आसमान इससे फट पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जायें ढह कर।(90) (फ़ा151) इस पर कि उन्होंने रहमान के लिए औलाद बताई।(91) और रहमान के लिए लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे।(92) (फ़ा152) आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब उसके हुज़ूर बन्दे होकर हाज़िर होंगे।(93) (फ़ा153) बेशक वह उनका शुमार जानता है और उनको एक एक कर के गिन रखा है।(94) (फ़ा154) और उनमें हर एक रोज़े क़ियामत उसके हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा।(95) (फ़ा155) बेशक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अन्क़रीब उनके लिए रहमान मुहब्बत कर देगा।(96) (फ़ा156) तो हमने यह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम उससे डर वालों को ख़ुशख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इससे डर सुनाओ।(97) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाईं (फ़ा157) क्या तुम उनमें किसी को देखते हो या उनकी भनक (ज़रा भी आवाज़) सुनते हो।(98) (फ़ा158) (रुकूअ़ 9)

(फ़ा132) बख़िलाफ़े आमाल कुफ़्फ़ार के कि वह सब निकम्मे और बातिल हैं। (फ़ा133) शाने नुज़ूलः बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत ख़ब्बाब बिन इरत का ज़मानए जाहिलियत में आ़स बिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था वह उसके पास तक़ाज़े को गए तो आ़स ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ न अदा करूंगा जब तक कि तुम सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फिर न जाओ और कुफ़्र न इख़्तियार करो हज़रत ख़ब्बाब ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता यहां तक कि तू मरे और मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठे वह कहने लगा कि क्या मैं मरने के बाद फिर उठूंगा हज़रत ख़ब्बाब ने कहा हां, आ़स ने कहा तो फिर मुझे छोड़िये यहां तक कि मैं मर जाऊँ और मरने के बाद फिर ज़िन्दा हूं और मुझे माल व औलाद मिले जब ही आपका क़र्ज़ अदा करूंगा इस पर यह आयाते करीमा नाज़िल हुईं (फ़ा134) और उसने लौहे महफ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में उसको माल व औलाद मिलेगी। (फ़ा135) ऐसा नहीं है तो (फ़ा136) यानी माल व औलाद इन सब से उसकी मिल्क और उसका तसर्रुफ़ उसके हलाक होने से उठ जाएगा और (फ़ा137) कि न उसके पास माल होगा न औलाद और उसका यह दावा करना झूठा हो जाएगा (फ़ा138) यानी मुशरिकों ने बुतों को मअ़बूद बनाया और उनकी इबादत करने लगे इस उम्मीद पर (फ़ा139) और उनकी मदद करें और उन्हें अ़ज़ाब से बचायें (फ़ा140) ऐसा हो ही नहीं सकता (फ़ा141) बुत जिन्हें यह पूजते थे (फ़ा142) उन्हें झुठलायेंगे और उन पर लानत करेंगे अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़बान देगा और वह कहेंगे या रब इन्हें अ़ज़ाब कर (फ़ा143) यानी शयातीन को उन पर छोड़ दिया और मुसल्लत कर दिया (फ़ा144) और मआ़सी पर उभारते हैं। (फ़ा145) आमाल की जज़ा के लिए या सांसों की फ़ना के लिए या दिनों महीनों और बरसों की इस मीआ़द के लिए जो उनके अ़ज़ाब के वास्ते मुक़र्रर है (फ़ा146) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि मोमिनीन मुत्तक़ीन हश्र में अपनी क़ब्रों से सवार करके उठाये जायेंगे और उनकी सवारियों पर तलाई मुरस्सअ़ ज़ीनें और पालान होंगे (फ़ा147) ज़िल्लत व इहानत के साथ ब-सबब उनके कुफ़्र के (फ़ा148) यानी जिन्हें शफ़ाअ़त का इज़्न मिल चुका है वही शफ़ाअ़त करेंगे या यह माना हैं कि शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिनीन की होगी और वही उससे फ़ाइदा उठायेंगे हदीस शरीफ़ में है जो ईमान लाया जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा उसके लिए अल्लाह के नज़दीक अहद है। (फ़ा149) यानी यहूदी व नसरानी व मुशरिकीन जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहते थे कि (फ़ा150) और इन्तेहा दर्जा का बातिल व निहायत सख़्त व शनीअ़ कलिमा तुमने मुंह से निकाला। (फ़ा151) यानी यह कलिमा ऐसी बे अदबी व गुस्ताख़ी का है कि अगर अल्लाह तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाये तो उस पर तमाम जहान का निज़ाम दरहम व बरहम कर दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार ने जब यह गुस्ताख़ी की और ऐसा बे बाकाना कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्न व इन्स के सिवा आसमान ज़मीन पहाड़ वग़ैरह तमाम ख़ल्क़ परेशानी से बेचैन हो गई और क़रीब हलाकत के पहुंच गई मलाइका को ग़ज़ब हुआ और जहन्नम को जोश आया फिर अल्लाह तआ़ला ने अपनी तन्ज़ीह बयान फ़रमाई (फ़ा152) वह इससे पाक है और उसके लिए औलाद होना मुहाल है। मुमकिन नहीं। (फ़ा153) बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जमा हो ही नहीं सकता और औलाद ममलूक नहीं होती तो जो ममलूक है हरगिज़ औलाद नहीं (फ़ा154) सब उसके इल्म में महसूर व मुहात हैं। और हर एक के अनफ़ास अय्यामे आसार और तमाम अहवाल और जुमला उमूर उसके शुमार में हैं उसपर कुछ मख़्फ़ी नहीं सब उसकी तदबीर व क़ुदरत के तहत में हैं (फ़ा155) बग़ैर माल व औलाद और मुईन व नासिर के (फ़ा156) यानी अपना महबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उनकी मुहब्बत डाल देगा बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को महबूब करता है तो जिबरील से फ़रमाता है कि फ़लाना मेरा महबूब है जिबरील उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर हज़रत जिबरील आसमानों में निदा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ को महबूब रखता है सब उसको महबूब रखें तो आसमान वाले उसको महबूब रखते हैं फिर ज़मीन में उसकी मक़बूलियत आ़म कर दी जाती है। मसला इससे मालूम हुआ कि मोमिनीन सालिहीन व औलियाए कामिलीन की मक़बूलियते आ़म्मा उनकी महबूबियत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत सुल्तान निज़ामुद्दीन देहलवी और हज़रत सुल्तान सय्यद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और दीगर हज़रात औलियाए कामिलीन की आम मक़बूलियतें उनकी महबूबियत की दलील हैं। (फ़ा157) तकज़ीबे अम्बिया की वजह से कितनी बहुत सी उम्मतें हलाक कीं। (फ़ा158) वह सब नेस्तो नाबूद कर दिये गए इसी तरह यह लोग अगर वही तरीक़ा इख़्तियार करेंगे तो उनका भी वही अंजाम होगा

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝
اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّىْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ۝ اِنِّىْۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝ اِنَّنِىْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

सूरतु ताहा

(मक्की है इसमें 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहूमानिर्रहीम

ताहा(1)मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल् कुरआ–न लितश्का(2)इल्ला तज़्कि–र–तल् लिमंय्यख़्शा(3)तन्ज़ीलम् मिम्मन् ख़–ल–क़ल् अर्–ज़ वस्समावातिल् उुला(4)अर्रह्मानु अ़–लल् अ़र्शिस्तवा(5)लहू मा फ़िस् समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा व मा तह्तस्सरा(6)व इन् तज्हर् बिल्क़ौलि फ़इन्नहू यअ्–लमुस् सिर्–र व अख़्फ़ा(7)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व लहुल् अस्माउल् हुस्ना(8)व हल् अता–क ह़दीसु मूसा(9)इज़् रआ नारन् फ़का–ल लि–अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल् ल– अ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि–क़–बसिन् औ अजिदु अ़–लन्नारि हुदा(10)फ़–लम्मा अताहा नूदि–य या मूसा(11)इन्नी अना रब्बु–क फ़ख़्लअ् नअ़्लै–क इन्न–क बिल्वादिल् मुक़द्दसि तुवा(12)व अनख़्तरतु–क फ़स्तमिअ् लिमा यूहा(13)इन्ननी अनल्लाहु ला इला–ह इल्ला अना फ़अ़्बुदनी व अक़िमिस्सला–त लिज़िक्री(14)इन्नस्सा–अ़–त आति–यतुन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

ताहा(1) ऐ महबूब हमने तुम पर यह कुरआन इस लिए न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो।(2) (फ़2) हां उसको नसीहत जो डर रखता हो।(3) (फ़3) उसका उतारा हुआ जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमान बनाए।(4) वह बड़ी मेहर वाला उसने अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है।(5) उसका है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है।(6) (फ़4) और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वह तो भेद को जानता है और उसे जो उससे भी ज़्यादा छुपा है।(7) (फ़5) अल्लाह कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम।(8) (फ़6) और कुछ तुम्हें मूसा की ख़बर आई।(9) (फ़7) जब उसने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं तुम्हारे लिए उसमें से कोई चिंगारी लाऊँ या आग पर रास्ता पाऊँ।(10) फिर जब आग के पास आया (फ़8) निदा फ़रमाई गई कि ऐ मूसा।(11) बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल (फ़9) बेशक तू पाक जंगल तुवा में है।(12) (फ़10) और मैंने तुझे पसन्द किया (फ़11) अब कान लगा कर सुन जो तुझे 'वह़ी' होती है।(13) बेशक मैं ही हूं अल्ला कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम रख।(14) (फ़12) बेशक क़ियामत आने वाली है

(फ़1) सूरह ताहा मक्की है इसमें आठ रुकूअ़ 135 आयतें और 1641 कलिमे और 5242 हरफ़ हैं (फ़2) और तमाम शब के क़ियाम की तकलीफ़ उठाओ शाने नुज़ूल सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इबादत में बहुत जहद फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर बहुक्मे इलाही अर्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राहत दीजिये उसका भी वही हक़ है एक क़ौल यह भी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों के कुफ़्र और उनके ईमान **(बक़िया सफ़हा 526 पर)**

اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿۱۵﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿۱۸﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿۱۹﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿۲۰﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ٚ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿۲۱﴾ وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿۲۲﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿۲۳﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿۲۵﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿۲۶﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿۲۷﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿۲۸﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿۳۱﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿۳۲﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿۳۳﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿۳۴﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿۳۷﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ

अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम् बिमा तस्आ(15)फ़ला यसुद्दन्न–क अ़न्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्त–ब–अ़ हवाहु फ़–तर्दा(16)व मा तिल्–क बि–यमीनि–क या मूसा(17)क़ा–ल हि–य अ़सा–य अ–त–वक्कउ अ़लैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला ग़–नमी व लि–य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (18)क़ा–ल अल्क़िहा या मूसा(19)फ़–अल्क़ाहा फ़इज़ा हि–य ह़य्यतुन् तस्आ(20)क़ा–ल ख़ुज़्हा व ला त–ख़फ़् सनुई़दुहा सी–र–त–हल् ऊला(21)वज़्मुम् य–द–क इला जनाहि़–क तख़्रुज् बैज़ा–अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ–य–तन् उख़्रा(22)लिनुरि–य–क मिन् आयातिनल् कुब्रा(23)इज़्हब् इला फ़िर्औ़–न इन्नहू त़ग़ा(24)क़ा–ल रब्बिश्रह़्ली स़द्री(25)व यस्सिर् ली अम्री(26)वह़्लुल् अ़ुक़्द–तम् मिल् लिसानी(27)यफ़्–क़हू क़ौली(28)वज्अ़ल् ली वज़ी–रम् मिन् अह़्ली(29)हारू–न अख़ि(30)श्दुद् बिही अज़्री(31)व अश्रिक्हु फ़ी अम्री(32)कै नुसब्बि–ह़–क कसीरंव्(33)व नज़्कु–र–क कसीरा(34)इन्न–क कुन्–त बिना बस़ीरा(35)क़ा–ल क़द् ऊती–त सुअ्–ल–क या मूसा(36)व–ल–क़द् मनन्ना अ़लै–क मर्रतन् उख़्रा(37)इज़् औहैना इला उम्मि–क

क़रीब था कि मैं उसे सबसे छुपाऊँ (फ़13) कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए।(15) (फ़14) तो हरगिज़ तुझे (फ़15) उसके मानने से वह बाज़ न रखे जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला (फ़16) फिर तू हलाक होजाए।(16) और यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा।(17) (फ़17) अ़र्ज़ की यह मेरा अ़सा है (फ़18) मैं इस पर तकिया लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और मेरे इसमें और काम हैं।(18) (फ़19) फ़रमाया उसे डाल दे ऐ मूसा।(19) तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वह दौड़ता हुआ सांप हो गया।(20) (फ़20) फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली तरह कर देंगे।(21) (फ़21) और अपना हाथ अपने बाजू से मिला (फ़22) ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मर्ज़ के(22) (फ़23) एक और निशानी। (फ़24) कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियाँ दिखायें।(23) फ़िरऔ़न के पास जा (फ़25) उसने सर उठाया।(24) (फ़26) (रुकूअ़ 10) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए मेरा सीना खोल दे।(25) (फ़27) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर।(26) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे।(27) (फ़28) कि वह मेरी बात समझें।(28) और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे।(29) (फ़29) वह कौन मेरा भाई हारून।(30) उससे मेरी कमर मज़बूत कर।(31) और उसे मेरे काम में शरीक कर।(32) (फ़30) कि हम ब-कसरत तेरी पाकी बोलें।(33) और ब-कसरत तेरी याद करें।(34) (फ़31) बेशक तू हमें देख रहा है।(35) (फ़32) फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग तुझे अ़ता हुई।(36) और बेशक हमने (फ़33) तुझ पर एक बार और एहसान फ़रमाया।(37) जब हमने तेरी मां को इल्हाम किया

(फ़13) और बन्दों को उसके आने की ख़बर न दूं और उसके आने की ख़बर न दी जाती अगर उस ख़बर देने में यह हिकमत न होती। (फ़14) और उसके ख़ौफ़ से मआ़सी तर्क करे नेकियां ज़्यादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे। (फ़15) ऐ उम्मते मूसा ख़िताब बज़ाहिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को है और मुराद इससे आपकी उम्मत है। (मदारिक) (फ़16) अगर तू उसका कहना माने और क़ियामत पर ईमान न लाये तो (फ़17) इस सवाल की हिकमत यह है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अपने अ़सा को देख लें और यह बात क़ल्ब में ख़ूब रासेख़ हो जाये कि यह अ़सा है ताकि जिस वक़्त वह सांप की शक्ल में हो तो आपकी ख़ातिर मुबारक पर कोई परेशानी न हो या यह हिकमत है कि हज़रत मूसा (बक़िया सफ़हा 527 पर)

مَا يُوْحٰىٓ ۝ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى
عَيْنِىْ ۝ اِذْ تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ
فُتُوْنًا ۬ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ۝ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ۝ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ۝ اِذْهَبَآ
اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ
اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝ اِنَّا قَدْ

मा यूहा(38)अनिक़्ज़ फ़ीहि फ़ित्ताबूति फ़क़्ज़ि फ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्युल्क़िहिल्–यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अ़दुव्वुल्ली व अ़दुव्वुल्लहू व अल्क़ैतु अ़लै–क महब्बतम् मिन्नी व लितुस्न–अ़ अ़ला अ़ैनी (39)इज़् तम्शी उख़्तु–क फ़–तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला मय्यक्फ़ुलुहू फ़–र जअ्ना–क इला उम्मि–क कै त–क़र्–र अ़ैनुहा व ला तह़्ज़न् व क़–तल्–त नफ़्सन् फ़–नज्जैना–क मिनल् ग़म्मि व फ़–तन्ना–क फ़ुतूनन् फ़–लबिस्–त सिनी–न फ़ी अह्लि मद्–य–न सुम्–म जिअ्–त अ़ला क़–दरिंय् या मूसा(40)वस्तनअ़्तु–क लिनफ़्सी(41)इज़्–हब् अन्–त व अख़ू–क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री(42)इज़्–हबा इला फ़िरऔ़–न इन्नहू तग़ा(43)फ़क़ूला लहू क़ौलल् लय्यिनल् ल–अ़ल्लहू य–त–ज़क्करु औ यख़्शा(44)क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु–त अ़लैना औ अंय्यत्ग़ा(45)क़ा–ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म–अ़कुमा अस्मअ़ु व अरा(46)फ़अतियाहु फ़क़ूला इन्ना रसूला रब्बि–क फ़–अर्सिल् म–अ़ना बनी इस्राई–ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम् क़द जिअ्ना–क बिआ–यतिम् मिर्रब्बि–क वस्सलामु अ़ला मनित्त–ब–अ़ल्हुदा(47)इन्ना क़द

जो इल्हाम करना था।(38) (फ़ा34) कि उस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में (फ़ा35) डाल दे तो दरिया उसे किनारे पर डाले कि उसे वह उठा ले जो मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन (फ़ा36) और मैंने तुझ पर अपनी तरफ़ की मुहब्बत डाली (फ़ा37) और इस लिए कि तू मेरी निगाह के सामने तैयार हो।(39) (फ़ा38) तेरी बहन चली (फ़ा39) फिर कहा क्या मैं तुम्हें वह लोग बता दूं जो उस बच्चे की परवरिश करें (फ़ा40) तो हम तुझे तेरी माँ के पास फेर लाए कि उसकी आँख (फ़ा41) ठंडी हो और ग़म न करे (फ़ा42) और तूने एक जान को क़त्ल किया (फ़ा43) तो हमने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया (फ़ा44) तो तू कई बरस मदयन वालों में रहा (फ़ा45) फिर तू एक ठहराए वादा पर हाज़िर हुआ ऐ मूसा।(40)(फ़ा46) और मैंने तुझे ख़ास अपने लिए बनाया।(41) (फ़ा47) तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां (फ़ा48) लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना।(42) दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उसने सर उठाया।(43) तो उससे नरम बात कहना (फ़ा49) इस उम्मीद पर कि वह ध्यान करे या कुछ डरे।(44) (फ़ा50) दोनों ने अ़र्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या शरारत से पेश आए।(45) फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं (फ़ा51) सुनता और देखता।(46) (फ़ा52) तो उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम तेरे रब के भेजे हुए हैं तो औलादे याक़ूब को हमारे साथ छोड़ दे (फ़ा53) और उन्हें तकलीफ़ न दे (फ़ा54) बेशक हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लाए हैं (फ़ा55) और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे।(47) (फ़ा56) बेशक हमारी

(फ़ा34) दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रीआ से जबकि उन्हें आपकी विलादत के वक़्त फ़िरऔ़न की तरफ़ से आपको क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुआ (फ़ा35) यानी नील में (फ़ा36) यानी फ़िरऔ़न चुनान्चे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उसमें रूई बिछाई और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को उसमें रख कर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उसकी दरज़ें रौग़ने क़ीर से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक़ के अन्दर पानी में पहुंचे फिर उस सन्दूक़ को दरियाए नील में बहा दिया उस दरिया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔ़न के महल में गुज़रती थी फ़िरऔ़न मअ़ अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारा पर बैठा था नहर में सन्दूक़ आता देख कर उसने ग़ुलामों और कनीज़ों को उसके **(बक़िया सफ़हा 527 पर)**

أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾
قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾
وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٥٧﴾ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾

ऊहि–य इलैना अन्नल्अज़ा–ब अ़ला मन् कज़्ज़–ब व त–वल्ला(48)क़ा–ल फ़–मर् रब्बुकुमा या मूसा (49)क़ा–ल रब्बुनल्लज़ी अअ़्ता कुल्–ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्–म हदा(50)क़ा–ल फ़मा बालुल् क़ुरूनिल् ऊला(51)क़ा–ल अ़िल्मुहा अ़िन्–द रब्बी फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला यन्–स(52)ल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल् अर्–ज़ मह्दंव् व स–ल–क लकुम् फ़ीहा सुबुलंव् व अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अख़्रज्ना बिही अज़्वाजम् मिन् नबातिन् शत्ता(53)कुलू वर्औअन्आ़–मकुम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयातिल् लिउलिन्नुहा(54)मिन्हा ख़–लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम् व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् ता–र–तन् उख़्रा(55)व ल–क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़–कज़्ज़–ब व अबा(56)क़ा–ल अजिअ्–तना लितुख़्रि–जना मिन् अरज़िना बिसिह्रि–क या मूसा(57)फ़–ल–नअ्ति–यन्न–क बिसिह्रिम् मिस्लिही फ़ज्अ़ल् बै–नना व बै–न–क मौअ़िदल् ला नुख़लिफ़ुहू नह्नु व ला अन्–त मकानन् सुवा(58)क़ा–ल मौअ़िदुकुम् यौमुज़् ज़ी–नति व अंय्युह़्श–रन्नासु ज़ुहा(59)फ़–त–वल्ला फ़िरऔनु फ़–ज–म–अ़ कै–दहू सुम्–म अता(60)

तरफ़ 'वही' हुई है कि अ़ज़ाब उस पर है जो झुठलाए (फ़ा57) और मुंह फेरे।(48) (फ़ा58) बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा।(49) कहा हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके लायक़ सूरत दी (फ़ा59) फिर राह दिखाई।(50) (फ़ा60) बोला (फ़ा61) अगली संगतों का क्या हाल है।(51) (फ़ा62) कहा उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है (फ़ा63) मेरा रब न बहके न भूले।(52) वह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिए उसमें चलती राहें रखीं और आसमान से पानी उतारा (फ़ा64) तो हमने उससे तरह तरह के सब्ज़े के जोड़े निकाले।(53) (फ़ा65) तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ (फ़ा66) बेशक उसमें निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को।(54) (रुकूअ़ 11) हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया (फ़ा67) और उसी में तुम्हें फिर ले जायेंगे (फ़ा68) और उसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।(55) (फ़ा69) और बेशक हमने उसे (फ़ा70) अपनी सब निशानियाँ (फ़ा71) दिखाईं तो उसने झुठलाया और न माना।(56) (फ़ा72) बोला क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा।(57) (फ़ा73) तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लायेंगे (फ़ा74) तो हममें और अपने में एक वादा ठहरा दो जिससे न हम बदला लें न तुम हमवार जगह हो।(58) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है (फ़ा75) और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किये जायें।(59) (फ़ा76) तो फ़िरऔ़न फिरा और अपने दाँव इकट्ठे किये (फ़ा77) फिर आया।(60) (फ़ा78)

(फ़ा57) हमारी नबुव्वत को और उन अहकाम को जो हम लाये (फ़ा58) हमारी हिदायत से हज़रत मूसा व हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम ने फ़िरऔ़न को यह पैग़ाम पहुंचा दिया तो वह (फ़ा59) हाथ को इसके लाइक़ ऐसी कि किसी चीज़ को पकड़ सके पाँव को इसके क़ाबिल कि चल सके ज़बान को इसके मुनासिब कि बोल सके आंख को इसके मुवाफ़िक़ कि देख सके कान को ऐसी कि सुन सके (फ़ा60) और उसकी मअ़्रेफ़त दी कि दुनिया की ज़िन्दगानी और आख़िरत की सआ़दत के लिए अल्लाह की अ़ता की हुई निअ़्मतों को किस तरह काम में लाया जाये (फ़ा61) फ़िरऔ़न (फ़ा62) यानी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं मिस्ले क़ौमे नूह व आ़द व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअ़्स बादलमौत यानी मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाये जाने के मुन्किर थे इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा63) यानी लौहे महफ़ूज़ में उनके तमाम अहवाल मकतूब हैं रोज़े क़ियामत उन्हें उन आमाल पर जज़ा दी जाएगी। (फ़ा65) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का कलाम तो यहां **(बक़िया सफ़हा 528 पर)**

قَالَ لَهُمْ مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾

قَالُوٓا إِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيدٰنِ أَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ

أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾ قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ

مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا

صَنَعُوا كَيْدُ سٰحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوٓا آمَنَّا بِرَبِّ هٰرُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ

क़ा–ल लहुम् मूसा वै–लकुम् ला तफ़्तरू अ़–लल्लाहि कज़िबन् फ़युस्हि–तकुम् बि–अ़ज़ाबिन् व क़द् ख़ा–ब मनिफ़्तरा(61)फ़–तना–ज़ऊ अम्र हुम् बै–नहुम् व अ–सर्रुन्नज्वा(62)क़ालू इन् हाज़ानि लसाहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़् हबा बि–तरी–क़तिकुमुल् मुस्ला(63)फ़–अज्मिअू कै–दकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् व क़द् अफ़्–ल–हल्यौ–म मनिस्तअ्ला(64) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि–य व इम्मा अन् नकू–न अव्व–ल मन् अल्क़ा(65)क़ा–ल बल् अल्क़ू फ़इज़ा हिबालुहुम् व अ़िसिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ़(66) फ़औ–ज–स फ़ी नफ़्सिही ख़ी–फ़–तम् मूसा(67)क़ुल्ना ला त–ख़फ़् इन्न–क अन्तल् अअ्ला(68)व अल्क़ि मा फ़ी यमीनि–क तल्क़फ़् मा स़–नअू इन्नमा स–नअू कैदु साहिरिन् व ला युफ़्लिहुस्साहिरु हैसु अता(69)फ़उल्क़ि–यस् स–ह–रतु सुज्ज–दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू–न व मूसा(70)क़ा–ल आमन्तुम् लहू क़ब्–ल अन् आ–ज़–न लकुम् इन्नहू

उनसे मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूठ न बांधो (फ़ा79) कि वह तुम्हें अ़ज़ाब से हलाक कर दे और बेशक नामुराद रहा जिसने झूठ बांधा।(61) (फ़ा80) तो अपने मुआमले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए (फ़ा81) और छुप कर मशवरत की।(62) बोले बेशक यह दोनों (फ़ा82) ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जायें।(63) तो अपना दाँव पक्का कर लो फिर परा बांध कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा।(64) बोले (फ़ा83) ऐ मूसा या तो तुम डालो (फ़ा84) या हम पहले डालें।(65) (फ़ा85) मूसा ने कहा बल्कि तुम ही डालो (फ़ा86) जभी उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनके जादू के ज़ोर से उनके ख़्याल में दौड़ती मालूम हुईं।(66) (फ़ा87) तो अपने जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया।(67) हमने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है।(68) और डाल तो दे जो तेरे दाहिने हाथ में है (फ़ा88) वह उनकी बनावटों को निगल जाएगा वह जो बनाकर लाए हैं वह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे।(69) (फ़ा89) तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है।(70) (फ़ा90) फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वह

(फ़ा79) किसी को उसका शरीक करके (फ़ा80) अल्लाह तआ़ला पर। (फ़ा81) यानी जादूगर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का यह कलाम सुन कर आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए बाज़ कहने लगे कि यह भी हमारी मिस्ल जादूगर हैं बाज़ ने कहा कि यह बातें ही जादूगरों की नहीं वह अल्लाह पर झूठ बांधने को मना करते हैं। (फ़ा82) यानी हज़रत मूसा व हज़रत हारून। (फ़ा83) जादूगर (फ़ा84) पहले अपना अ़सा (फ़ा85) अपने सामान से इब्तेदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की राय मुबारक पर छोड़ा और उसकी बरकत से आख़िर कार अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (फ़ा86) यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इस लिए फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वह सब ज़ाहिर कर चुकें उसके बाद आप मोअ्जेज़ा दिखायें और हक़ बातिल को मिटाये और मोअ्जेज़ा सेहर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इबरत हासिल हो चुनांचे जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वग़ैरह जो सामान लाये थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी। (फ़ा87) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा कि ज़मीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी से मसहूर हो गए कहीं ऐसा न हो कि बाज़ मोअ्जेज़ा देखने से पहले ही उसके गरविदा हो जायें और मोअ्जेज़ा न देखें। (फ़ा88) यानी अपना अ़सा (फ़ा89) फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपना अ़सा डाला वह जादूगरों के तमाम अज़दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उसके ख़ौफ़ से घबरा **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾ قَالُوا

لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا

وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿٧٣﴾ إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾ وَمَن يَأْتِهِ

مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٧٧﴾ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ

ल–कबीरु कुमुल्लज़ी अ़ल्ल–म–कुमुस् सिह्–र फ़–लउ कत्तिअ़न्–न ऐदि–यकुम् व अरजु–लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव् व लउ–सल्लि–बन्नकुम् फ़ी जुज़ूअ़िन् नख़्लि व ल–तअ़्–लमुन्–न अय्युना अ–शद्दु अ़ज़ाबंव् व अब्क़ा(71)क़ालू लन् नुअ़्सि–र–क अ़ला मा जा–अना मिनल् बय्यिनाति वल्लज़ी फ़–त–रना फ़क़्ज़ि मा अन्–त क़ाज़िन् इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल् हयातद्दुन्या(72)इन्ना आमन्ना बि–रब्बिना लियग्फ़ि–र लना ख़तायाना व मा अक्रह्–तना अ़लैहि मिनस्सिह्रि वल्लाहु ख़ैरुंव् व अब्क़ा (73)इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़इन्–न लहू जहन्न–म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या (74)व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़उलाइ–क लहुमुद् द–रजातुल् अ़ुला(75) जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व ज़ालि–क जज़ाउ मन् त–ज़क्का (76)व लक़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह्रि य–ब–सल् ला तख़ाफ़ु द–र–कंव् व ला तख़्शा(77)फ़–अत्ब–अ़हुम् फ़िरऔनु बिजुनूदिही

तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम सब को जादू सिखाया (फ़ा91) तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा (फ़ा92) और तुम्हें खजूर के डुंड पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किसका अ़ज़ाब सख़्त और देरपा है।(71) (फ़ा93) बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे उन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं (फ़ा94) हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तू तो कर चुक जो तुझे करना है (फ़ा95) तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा।(72) (फ़ा96) बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़तायें बख़्श दे और वह जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर (फ़ा97) और अल्लाह बेहतर है (फ़ा98) और सब से ज़्यादा बाक़ी रहने वाला।(73) (फ़ा90) बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम (फ़ा100) होकर आए तो ज़रूर उसके लिए जहन्नम है जिस में न मरे (फ़ा101) न जिये।(74) (फ़ा102) और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों (फ़ा103) तो उन्हीं के दर्जे ऊंचे।(75) बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा उनमें रहें और यह सिला है उसका जो पाक हुआ।(76) (फ़ा104) (रुकूअ़ 12) और बेशक हमने मूसा को 'वह़ी' की (फ़ा105) कि रातों रात मेरे बन्दों को ले चल (फ़ा106) और उनके लिए दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे (फ़ा107) तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न ख़तरा।(77) (फ़ा108) तो उनके पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर लेकर (फ़ा109)

(फ़ा91) यानी जादू में वह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ायक़ है। (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा92) यानी दाहिने हाथ और बायें पाँव (फ़ा93) इससे फ़िरऔन मलऊन की मुराद यह थी कि उसका अ़ज़ाब सख़्त तर है या रब्बुल आ़लमीन का, फ़िरऔन का यह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वह जादूगर (फ़ा94) यदे बैज़ा और असाए मूसा बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि उनका इस्तेदलाल यह था कि अगर तू हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ़्जेज़ा को भी सहर कहता है तो बता वह रस्से और लाठियां कहां गईं बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उसमें अपने मनाज़िल का देखना है। (फ़ा95) हमें उसकी कुछ परवाह नहीं। (फ़ा96) आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुनिया ज़ाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है तू मेहरबान भी हो तो बक़ाए दवाम नहीं दे सकता फिर ज़िन्दगानी देना और उसकी राहतों के ज़वाल का क्या ग़म बिलखुसूस इसको जो जानता है कि आख़िरत में आमाले दुनिया की जज़ा मिलेगी। (फ़ा97) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔन ने जब जादूगरों को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिए बुलाया था तो (बक़िया सफ़हा 529 पर)

فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ۝ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۝ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ
هَوَىٰ ۝ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝ وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ
إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ
أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ۝ قَالُوا مَا

फ़–ग़शि–यहुम् मिनल् यम्मि मा ग़शि–यहुम्(78)व अ–ज़ल्–ल फ़िर्औनु क़ौ–महू व मा हदा(79) या–बनी इस्राई–ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अ़दुव्विकुम् व वा–अ़द्नाकुम् जानिबत् तूरिल् ऐ–म–न व नज़्ज़ल्ना अ़लैकुमुल् मन्–न वस्सल्वा(80)कुलू मिन् तय्यिबाति मा र–ज़क़्नाकुम् वला तत्ग़ौ फ़ीहि फ़–यहिल्–ल अ़लैकुम् ग़–ज़बी व मंय्यह्लिल् अ़लैहि ग़–ज़बी फ़–क़द् हवा(81)व इन्नी ल–ग़फ़्फ़ारुल् लिमन् ता–ब व आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् सुम्मह्तदा(82)व मा अअ्–ज–ल–क अ़न् क़ौमि–क या मूसा(83)क़ा–ल हुम् उलाइ अ़ला अ–सरी व अ़जिल्तु इलै–क रब्बि लि–तर्ज़ा(84) क़ा–ल फ़इन्ना क़द् फ़तन्ना क़ौ–म–क मिम् बअ़्दि–क व अ–ज़ल्ल–हुमुस् समिरिय्यु(85)फ़–र–ज–अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा–न असिफ़न् क़ा–ल या क़ौमि अलम् यअ़िद्कुम् रब्बुकुम् वअ़्दन् ह़–स–नन् अ–फ़ता–ल अ़लैकुमुल् अ़ह्दु अम् अरत्तुम् अंय्यहिल्–ल अ़लैकुम् ग़–ज़बुम् मिर्रब्बिकुम् फ़–अख़्लफ़्तुम् मौअ़िदी(86)क़ालू मा

तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया।(78) (फ़110) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई।(79) (फ़111) ऐ बनी इसराईल बेशक हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन (फ़112) से नजात दी और तुम्हें तूर की दाहिनी तरफ़ का वादा दिया (फ़113) और तुम पर मन और सलवा उतारा।(80) (फ़114) खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दी और उसमें ज़्यादती न करो (फ़115) कि तुम पर मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वह गिरा।(81) (फ़116) और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिसने तौबा की (फ़117) और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।(82) (फ़118) और तूने अपनी क़ौम से क्यों जल्दी की ऐ मूसा।(83) (फ़119) अ़र्ज़ की कि वह यह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी तरफ़ मैं जल्दी करके हाज़िर हुआ कि तू राज़ी हो।(84) (फ़120) फ़रमाया तो हमने तेरे आने के बाद तेरी क़ौम को (फ़121) बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया।(85) (फ़122) तो मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा (फ़123) ग़ुस्सा में भरा अफ़सोस करता (फ़124) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा न किया था (फ़125) क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुमने मेरा वादा ख़िलाफ़ किया।(86) (फ़126) बोले हमने

(फ़110) वह ग़र्क़ हो गए और पानी उनके सरों से ऊंचा हो गया। (फ़111) उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने और एहसान का ज़िक्र किया और फ़रमाया। (फ़112) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम (फ़113) कि हम मूसा अ़लैहिस्सलाम को वहां तौरेत अ़ता फ़रमायेंगे जिस पर अ़मल किया जाये। (फ़114) तीह में और फ़रमाया (फ़115) नाशुक्री और कुफ़राने निअ़्मत करके उन निअ़्मतों को मआ़सी और गुनाहों में ख़र्च करके या एक दूसरे पर ज़ुल्म करके (फ़116) जहन्नम में और हलाक हुआ (फ़117) शिर्क से (फ़118) ता दमे आख़िर (फ़119) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब करके तौरेत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए फिर कलामे परवरदिगार के शौक़ में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया व मा अअ्–ज–ल–क तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़120) यानी तेरी रज़ा और ज़्यादा हो मसला इस आयत से इज्तेहाद का जवाज़ साबित हुआ (मदारिक) (फ़121) जिन्हें आप ने हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के साथ छोड़ा है। (फ़122) गो–साला परस्ती की दावत देकर मसला इस आयत में इज़्लाल यानी गुमराह करने की निस्बत सामरी की तरफ़ फ़रमाई गई क्योंकि वह उसका सबब व बाइस हुआ इससे साबित हुआ कि किसी चीज़ को सबब की तरफ़ निस्बत करना जाइज़ है इसी तरह कह सकते **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ

فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ

قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا

مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ

अख़्लफ़्ना मौअि–द–क बि–मल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम् मिन् ज़ी–नतिल्क़ौमि फ़–क़–ज़फ़्नाहा फ़–कज़ालि–क अल्क़स्सामिरिय्यु(87)फ़–अख़्र–ज लहुम् अिज्लन् ज–स–दल्लहू ख़ुवारुन् फ़क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़–नसिय(88)अ–फ़ला यरौ–न अल्ला यर्जिअु इलैहिम् क़ौलंव् व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्–रंव् व ला नफ़्आ(89)व ल–क़द् क़ा–ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्–न रब्बकुमुर्–रह्मानु फ़त्तबिअूनी व अतीअू अम्री(90) क़ालू लन् नब्–र–ह् अ़लैहि आ़किफ़ी–न ह़त्ता यरजि–अ इलैना मूसा(91)क़ा–ल या हारूनु मा म–न–अ–क इज़् रऐ–तहुम् ज़ल्लू(92)अल्ला तत्तबि–अ़नि अ–फ़–अ़सै–त अम्री(93)क़ा–ल यब्नउम्–म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह़्–यती व ला बि–रअ्सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू–ल फ़र्रक़्–त बै–न बनी इस्राई–ल व लम् तरक़ुब् क़ौली(94)क़ा–ल फ़मा ख़त्बु–क या सामिरिय्यु(95)क़ा–ल बसुर्तु बिमा लीम् यब्सुरू बिही फ़–क़–बज़्तु क़ब्ज़–तम् मिन् अ–स–रिर्रसूलि फ़–नबज़्तुहा व कज़ालि–क सव्व–लत् ली

आपका वादा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए उस क़ौम के गहने के (फ़127) तो हमने उन्हें (फ़128) डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने डाला।(87) (फ़129) तो उसने उनके लिए एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़ गाय की तरह बोलता (फ़130) तो बोले (फ़131) यह है तुम्हारा मअ़बूद और मूसा का मअ़बूद मूसा तो भूल गए।(88) (फ़132) तो क्या नहीं देखते कि वह (फ़133) उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उनके किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता।(89) (फ़134) (रुकूअ़ 13) और बेशक उनसे हारून ने इससे पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूं ही है कि तुम इसके सबब फ़ितने में पड़े (फ़135) और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो।(90) बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे रहेंगे (फ़136) जब तक हमारे पास मूसा लौट के आयें।(91) (फ़137) मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुमने उन्हें गुमराह होते देखा था।(92) कि मेरे पीछे आते (फ़138) तो क्या तुमने मेरा हुक्म न माना।(93) कहा ऐ मेरे माँ जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और न मेरे सर के बाल मुझे यह डर हुआ कि तुम कहोगे तुमने बनी इसराईल में तफ़रक़ा डाल दिया और तुमने मेरी बात का इन्तेज़ार न किया।(94) (फ़139) मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामरी।(95) (फ़140) बोला मैंने वह देखा जो लोगों ने न देखा (फ़141) तो एक मुट्ठी भर ली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया (फ़142) और मेरे जी को यही

(फ़127) यानी क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आ़रियत के तौर पर मांग लिए थे। (फ़128) सामरी के हुक्म से आग में (फ़129) उन ज़ेवरों को जो उसके पास थे और उस ख़ाक को जो हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम के घोड़े के क़दम के नीचे से उसने हासिल की थी। (फ़130) यह बछड़ा सामरी ने बनाया और उसमें कुछ सुराख़ इस तरह रखे कि जब उनमें हवा दाख़िल हो तो उससे बछड़े की आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा हो एक क़ौल यह भी है कि वह अस्पे जिबरील की ख़ाक ज़ेरे क़दम डालने से ज़िन्दा होकर बछड़े की तरह बोलता था। (फ़131) सामरी और उसके मुत्तबेईन (फ़132) यानी मूसा मअ़्बूद को भूल गए और उसको यहां छोड़ कर उसकी जुस्तजू में तूर पर चले गए (मआ़ज़ल्लाह) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि नसी का फ़ाइल सामरी है और माना यह हैं कि सामरी ने जो बछड़े को मअ़बूद बनाया वह अपने रब को भूल गया या वह हुदूसे अजसाम से इस्तेदलाल करना भूल गया। (फ़133) बछड़ा (फ़134) ख़िताब से भी आ़जिज़ और नफ़ा व ज़रर से भी वह किस तरह मअ़्बूद हो सकता है। (फ़135) तो उसे न पूजो। (फ़136) गोसाला परस्ती पर क़ाइम **(बक़िया सफ़हा 529 पर)**

نَفۡسِيۡ ۝ قَالَ فَاذۡهَبۡ فَاِنَّ لَكَ فِي الۡحَيٰوةِ اَنۡ تَقُوۡلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَاِنَّ لَكَ مَوۡعِدًا لَّنۡ تُخۡلَفَهٗ ۚ وَانۡظُرۡ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِيۡ ظَلۡتَ عَلَيۡهِ عَاكِفًا ؕ
لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنۡسِفَنَّهٗ فِي الۡيَمِّ نَسۡفًا ۝ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيۡءٍ عِلۡمًا ۝ كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ مَا قَدۡ سَبَقَ ۚ وَقَدۡ
اٰتَيۡنٰكَ مِنۡ لَّدُنَّا ذِكۡرًا ۝ مَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡهُ فَاِنَّهٗ يَحۡمِلُ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وِزۡرًا ۝ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ حِمۡلًا ۝ يَّوۡمَ يُنۡفَخُ فِي الصُّوۡرِ وَنَحۡشُرُ
الۡمُجۡرِمِيۡنَ يَوۡمَئِذٍ زُرۡقًا ۝ يَّتَخَافَتُوۡنَ بَيۡنَهُمۡ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا عَشۡرًا ۝ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَقُوۡلُوۡنَ اِذۡ يَقُوۡلُ اَمۡثَلُهُمۡ طَرِيۡقَةً اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا يَوۡمًا ۝
وَيَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الۡجِبَالِ فَقُلۡ يَنۡسِفُهَا رَبِّيۡ نَسۡفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفۡصَفًا ۝ لَّا تَرٰى فِيۡهَا عِوَجًا وَّلَاۤ اَمۡتًا ۝ يَوۡمَئِذٍ يَّتَّبِعُوۡنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ

नफ़्सी(96)का–ल फ़ज़्हब् फ़इन्–न ल–क फ़िल्हयाति अन् तकू–ल ला मिसा–स व इन्–न ल–क मौअिदल् लन् तुख़्ल–फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहिकल् लज़ी ज़ल्–त अ़लैहि आकिफ़न् ल–नुहर्रि क़न्नहू सुम्–म ल–नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा(97)इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला हु–व वसि–अ कुल्–ल शैइन् अ़िल्मा(98)कज़ालि–क नकुस्सु अ़लै–क मिन् अम्बाइ मा क़द् स–ब–क़ व क़द् आतैना–क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा(99)मन् अअ्–र–ज़ अ़न्हु फ़–इन्नहू यह्मिलु यौमल्क़िया–मति विज़्रा(100)ख़ालिदी–न फ़ीहि व सा–अ लहुम् यौमल्क़िया–मति हिम्ला(101)यौ–म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह्शुरुल् मुज्रिमी–न यौ–मइज़िन् ज़ुर्क़ंय्(102)य–तख़ा फ़तू–न बै–नहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अ़श्रा(103)नह्नु अअ्–लमु बिमा यक़ूलू–न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरी–क़तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा(104)व यस्अलू–न–क अ़निल्–जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा(105)फ़–य–ज़रुहा क़ाअ़न् सफ़्–स–फ़(106)ल्ला तरा फ़ीहा अ़ि–वजंव् व ला अम्ता(107)यौ– मइज़िंय्यत्तबिअूनद् दाअ़ि–य ला अ़ि–व–ज लहू

भला लगा।(96) (फ़143) कहा तू चलता बन (फ़144) कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह है कि (फ़145) तू कहे छू न जा (फ़146) और बेशक तेरे लिए एक वादा का वक़्त है (फ़147) जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मअ़बूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे रहा (फ़148) क़सम है हम ज़रूर इसे जलायेंगे फिर रेज़ा-रेज़ा करके दरिया में बहायेंगे।(97) (फ़149) तुम्हारा मअ़बूद तो वही अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उसका इल्म मुहीत है।(98) हम ऐसा ही तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते है। और हमने तुमको अपने पास से एक ज़िक्र अ़ता फ़रमाया।(99) (फ़150) जो उससे मुंह फेरे (फ़151) तो बेशक वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा।(100) (फ़152) वह हमेशा उसमें रहेंगे (फ़153) और वह क़ियामत के दिन उनके हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा।(101) जिस दिन सूर फूंका जाएगा (फ़154) और हम उस दिन मुजरिमों को (फ़155) उठायेंगे नीली आँखें।(102) (फ़156) आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुनिया में न रहे मगर दस रात।(103) (फ़157) हम ख़ूब जानते हैं जो वह (फ़158) कहेंगे जबकि उनमें सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे।(104) (फ़159) (रुकूअ़ 14) और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं (फ़160) तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा-रेज़ा कर के उड़ा देगा।(105) तो ज़मीन को पट पर हमवार करके छोड़ेगा।(106) कि तू उसमें नीचा ऊंचा कुछ न देखे।(107) उस दिन पुकारने वाले के पीछे दौड़ेंगे (फ़161) उसमें कजी न होगी (फ़162)

(फ़143) और यह फ़ेअ़्ल मैं ने अपनी ही हवाए नफ़्स से किया कोई दूसरा इसका बाइस व मुहर्रिक न था इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़144) दूर हो जा। (फ़145) जब तुझ से कोई मिलना चाहे जो तेरे हाल से वाक़िफ़ न हो तो उससे (फ़146) यानी सब से अलाहिदा रहना न तुझ से कोई छूए न तू किसी से छूए लोगों से मिलना उसके लिए कुल्ली तौर पर ममनूअ़ क़रार दिया गया और मुलाक़ात मुकालमत ख़रीद व फ़रोख़्त हर एक के साथ हराम कर दी गई और अगर इत्तेफ़ाक़न कोई उससे छू जाता तो वह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते वह जंगल में यही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वहशियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तलख़ी व वहशत में गुज़ारता था। (फ़147) यानी अ़ज़ाब के वादे का आख़िरत में बाद इस अ़ज़ाबे दुनिया के तेरे शिर्क व फ़साद अंगेज़ी पर। (फ़148) और (बक़िया सफ़हा 529 पर)

وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿۱۰۸﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿۱۰۹﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ
ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿۱۱۲﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿۱۱۳﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ؗ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿۱۱۵﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿۱۱۷﴾

व ख़-श-अतिल् अस्वातु लिर्रह्मानि फ़ला तस्मअु इल्ला हम्सा(108)यौ-मइज़िल् ला तन्फ़अुश् शफ़ा-अतु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला(109)यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अिल्मा(110)व अ-नतिल् वुजूहु लिल्हय्यिल् क़य्यूमि व क़द् ख़ा-ब मन् ह-म-ल ज़ुल्मा(111)व मंय्यअ्-मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव् व ला हज़्मा(112)व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु कुरआनन् अ-रबिय्यंव् व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्-वअ़ीदि ल-अ़ल्लहुम् यत्तकू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा(113)फ़-तआ़लल्लाहुल् मलिकुल्हक़्क़ु व ला तअ्-जल् बिल्कुरआनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै-क वह्युहू व कुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा(114)व ल-क़द् अ़हिद्ना इला आ-द-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा(115)व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स अबा(116)फ़क़ुल्ना या आ-दमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल् ल-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रि जन्नकुमा मिनल्जन्नति फ़-तश्क़ा(117)

और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर (फ़ा163) पस्त होकर रह जायेंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत आहिस्ता आवाज़।(108) (फ़ा164) उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उसकी जिसे रहमान ने (फ़ा165) इज़्न दे दिया है और उसकी बात पसन्द फ़रमाई।(109) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे (फ़ा166) और उनका इल्म उसे नहीं घेर सकता।(110) (फ़ा167) और सब मुंह झुक जायेंगे उस ज़िन्दा क़ाइम रखने वाले के हुज़ूर (फ़ा168) और बेशक नामुराद रहा जिसने ज़ुल्म का बोझ लिया।(111) (फ़ा169) और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो न उसे ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का।(112) (फ़ा170) और यूं ही हमने उसे अ़रबी क़ुरआन उतारा और उसमें तरह तरह से अ़ज़ाब के वादे दिये (फ़ा171) कि कहीं उन्हें डर हो या उनके दिल में कुछ सोच पैदा करे।(113) (फ़ा172) तो सब से बुलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह (फ़ा173) और क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' तुम्हें पूरी न होले (फ़ा174) और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़्यादा दे।(114) और बेशक हमने आदम को इससे पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था (फ़ा175) तो वह भूल गया और हमने उसका क़स्द न पाया।(115) (रुकूअ़ 15) और जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दा में गिरे मगर इबलीस उसने न माना।(116) तो हमने फ़रमाया ऐ आदम बेशक यह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है (फ़ा176) तो ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक़्क़त में पड़े।(117) (फ़ा177)

(फ़ा163) हैबत व जलाल से (फ़ा164) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया ऐसी कि उस में सिर्फ़ लबों की जुम्बिश होगी। (फ़ा165) शफ़ाअ़त करने का (फ़ा166) यानी तमाम माज़ियात व मुस्तक़बिलात और जुमला उमूरे दुनिया व आख़िरत यानी अल्लाह तआ़ला का इल्म बन्दों के ज़ात व सिफ़ात और जुमला हालात को मुहीत है (फ़ा167) यानी तमाम कायनात का इल्म ज़ाते इलाही का इहाता नहीं कर सकता उसकी ज़ात का इदराक उलूमे कायनात की रसाई से बरतर है वह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे कुदरत व शुयूने हिकमत से पहचाना जाता है। शेअ़्र- कुजा दरिया बद ऊरा अक़्ल चालाक+कि ऊ बाला तर अस्त अज़ हदे इदराक नज़र कुन अन्दर अस्मा व सिफ़ातश+कि वाक़िफ़ नेस्त कस अज़ कुनः ज़ातश। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के माना यह बयान किये हैं कि उलूमे ख़ल्क़ मालूमाते इलाहिया का इहाता नहीं कर सकते बज़ाहिर यह इबारतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब-आसानी समझ लेते हैं कि फ़र्क़ सिर्फ़ तअ़्बीर का है (फ़ा168) और हर एक शाने इज्ज़ व नियाज़ के साथ हाज़िर होगा किसी में सरकशी न रहेगी अल्लाह तआ़ला के क़हर व हुकूमत का (बक़िया सफ़हा 530 पर)

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ

اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا

يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَإِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ أَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ

أَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

इन्–न ल–क अल्ला तजू–अ़ फ़ीहा व ला तअ़्रा(118)व अन्न–क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा (119)फ़–वस्–व–स इलैहिश्शैतानु क़ा–ल या आ–दमु हल् अदुल्लु–क अ़ला श–ज–रतिल् खुल्दि व मुल्किल् ला यबला(120)फ़–अ–कला मिन्हा फ़–ब–दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव् व रक़िल् जन्नति व अ़सा आ–दमु रब्बहू फ़–ग़वा(121)सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता–ब अ़लैहि व हदा(122)क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म् बअ़्जुकुम् लिबअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् फ़इम्मा यअ्ति–यन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़–मनित् त–ब–अ़ हुदा–य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा(123)व मन् अअ़्र–ज़ अन् ज़िक्री फ़इन्–न लहू मअ़ी–श–तन् ज़न्कंव् व नह़्शुरुहू यौमलक़िया–मति अअ़्मा(124)क़ा–ल रब्बि लि–म ह़–शर्–तनी अअ़्मा व क़द् कुन्तु बसीरा(125)क़ा–ल कज़ालि–क अ–तत्–क आयातुना फ़–नसी–तहा व कज़ालिकल् यौ–म तुन्सा(126)व कजालि–क नज्ज़ी मन् अस्–र–फ़ व लम् युअ्मिम् बिआयाति रब्बिही व ल–अ़ज़ाबुल् आख़िरति अ–शद्दु व अब्क़ा(127)अ–फ़ लम् यह्दि लहुम्

बेशक तेरे लिए जन्नत में यह है कि न तू भूखा हो और न नंगा हो।(118) और यह कि तुझे न उसमें प्यास लगे न धूप।(119) (फ़ा178) तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूं हमेशा जीने का पेड़ (फ़ा179) और वह बादशाही कि पुरानी न पड़े।(120) (फ़ा180) तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उन पर उनकी शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं (फ़ा181) और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे (फ़ा182) और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़ज़िश वाक़ेअ़ हुई तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई।(121) (फ़ा183) फिर उसके रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रहमत से रुजूअ़ फ़रमाई और अपने कुर्बे ख़ास की राह दिखाई।(122) फ़रमाया तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो (फ़ा184) जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ वह न बहके (फ़ा185) न बदबख़्त हो।(123) (फ़ा186) और जिसने मेरी याद से मुंह फेरा (फ़ा187) तो बेशक उस के लिए तंग ज़िन्दगानी है (फ़ा188) और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठायेंगे।(124) कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तूने क्यों अन्धा उठाया मैं तो अंखियारा था।(125) (फ़ा189) फ़रमाएगा यूं ही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं (फ़ा190) तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा।(126) (फ़ा191) और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त तर और सब से देरपा है।(127) तो क्या उन्हें उससे राह न मिली कि

(फ़ा178) हर तरह का ऐश व राहत जन्नत में मौजूद है कसब व मेहनत से बिल्कुल अमन है (फ़ा179) जिसको खाकर खाने वाले को दाइमी ज़िन्दगी हासिल हो जाती है (फ़ा180) और उसमें ज़वाल न आये (फ़ा181) यानी बहिश्ती लिबास उनके जिस्म से उतर गए। (फ़ा182) सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिए (फ़ा183) और उस दरख़्त के खाने से दाइमी हयात न मिली फिर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तौबा व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हुए और बारगाहे इलाही में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वसीला से दुआ़ की। (फ़ा184) यानी किताब और रसूल। (फ़ा185) यानी दुनिया में (फ़ा186) आख़िरत में क्योंकि आख़िरत की बद-बख़्ती दुनिया में तरीक़े हक़ से बहकने का नतीजा है तो जो कोई किताबे इलाही और रसूले बरहक़ का इत्तेबाअ़. करे और उनके हुक्म के मुताबिक़ चले वह दुनिया में बहकने से और आख़िरत में उसके अ़ज़ाब व **(बक़िया सफ़हा 530 पर)**

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَٰكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿١٢٨﴾ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا

وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ ءَانَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ

تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾ وَأْمُرْ أَهْلَكَ

بِالصَّلَوٰةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّهِۦٓ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي

الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَٰبُ الصِّرَٰطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिनल्कुरूनि यम्शू–न फ़ी मसाकिनिहिम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिउलिन्नुहा(128)व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर्रब्बि–क लका–न लिज़ामंव् व अ–जलुम् मुसम्–म(129)फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि–क क़ब्–ल तुलूअ़िश् शम्सि व क़ब्–ल ग़ुरूबिहा व मिन् आनाइल् लैलि फ़–सब्बिह् व अत्राफ़न् नहारि ल–अ़ल्ल–क तर्ज़ा (130)व ला तमुद्–दन्–न अ़ैनै–क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़ह्–र–तल् हयातिद् दुन्या लि–नफ़्ति–नहुम् फ़ीहि व रिज़्क़ु रब्बि–क ख़ैरुंव् व अब्क़ा(131)वअ्मुर् अह्–ल–क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा ला नस्–अलु–क रिज़्क़न् नह्नु नरज़ुक़ु–क वल्आक़ि–बतु लित्तक़्वा(132)व क़ालू लौला यअ्तीना बिआ–यतिम् मिर्रब्बिही अ–व लम् तअ्तिहिम् बय्यि–नतु मा फ़िस्सुहुफ़िल् ऊला (133)व लौ अन्ना अह्–लक्नाहुम् बि–अ़ज़ाबिम् मिन् क़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौला अर्सल्–त इलैना रसूलन् फ़–नत्तबि–अ़ आयाति–क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्–ल व नख़्ज़ा(134)क़ुल् कुल्लुम् मु–त–रब्बिसुन् फ़–त–रब्बसू फ़–स–तअ़्लमू–न मन् अस्हाबुस् सिरातिस्सविय्यि व मनिह्तदा(135)

हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलक कर दीं (फ़192) कि यह उनके बसने की जगह चलते फिरते हैं (फ़193) बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों को।(128) (फ़194) (रुकूअ़ 16) और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती (फ़195) तो ज़रूर अ़ज़ाब उन्हें (फ़196) लिपट जाता और अगर न होता एक वादा ठहराया हुआ।(129) (फ़197) तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले (फ़198) और उसके डूबने से पहले (फ़199) और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो (फ़200) और दिन के किनारों पर (फ़201) इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो।(130) (फ़202) और ऐ सुनने वाले अपनी आँखें न फैला उसकी तरफ़ जो हमने काफ़िरों के जोड़ों को बरतने के लिए दी है जीती दुनिया की ताज़गी (फ़203) कि हम उन्हें उसके सबब फ़ितना में डालें (फ़204) और तेरे रब का रिज़्क़ (फ़205) सब से अच्छा और सब से देरपा है।(131) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद उस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते (फ़206) हम तुझे रोज़ी देंगे (फ़207) और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिए।(132) और काफ़िर बोले यह (फ़208) अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते (फ़209) और क्या उन्हें इसका बयान न आया जो अगले सहीफ़ों में है।(133) (फ़210) और अगर हम उन्हें किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो (फ़211) ज़रूर कहते ऐ हमारे रब तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इसके कि ज़लील व रुसवा होते।(134) तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं (फ़212) तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे (फ़213) कि कौन है सीधी राह वाले और किसने हिदायत पाई।(135) (रुकूअ़ 17)

(फ़192) जो रसूलों को नहीं मानती थीं (फ़193) यानी क़ुरैश अपने सफ़रों में उनके दयार पर गुज़रते हैं और उनकी हलाकत के निशान देखते हैं (फ़194) जो इबरत हासिल करें और समझें कि अम्बिया की तकज़ीब और उनकी मुख़ालफ़त का अन्जाम बुरा है (फ़195) यानी यह कि उम्मते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़ज़ाब में ताख़ीर की जाएगी (फ़196) **(बक़िया सफ़हा 530 पर)**

(बक़िया सफ़हा 497 का) यह लड़का काफ़िर ही पैदा हुआ था इमाम सुबकी ने फ़रमाया कि हाले बातिन जान कर बच्चे को क़त्ल कर देना हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के साथ ख़ास है उन्हें इसकी इजाज़त थी। अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे हाल पर मुत्तलअ़ हो तो उसको क़त्ल जाइज़ नहीं है किताब अ़राइस में है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र से फ़रमाया कि तुम ने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो यह उन्हें गिराँ गुज़रा और उन्होंने उस लड़के का कन्धा तोड़ कर उसका गोश्त चीरा तो उसके अन्दर लिखा हुआ था काफ़िर है कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा। (जुमल) (फ़171) बच्चा गुनाहों और नजासतों से पाक और (फ़172) जो वालिदैन के साथ तरीक़े अदब व हुस्ने सुलूक और मवद्दत और मुहब्बत रखता हो मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक बेटी अ़ता की जो एक नबी के निकाह में आई और उससे नबी पैदा हुए जिनके हाथ पर अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को हिदायत दी बन्दे को चाहिए कि अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहे इसी में बेहतरी होती है (फ़173) जिनके नाम असरम और सरीम थे (फ़174) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना चांदी मदफ़ून था हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उसमें सोने की एक तख़्ती थी उस पर एक तरफ़ लिखा था उसका हाल अ़जीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उसको ख़ुशी किस तरह होती है उसका हाल अ़जीब है जो क़ज़ा व क़दर का यक़ीन रखे उसको गुस्सा कैसे आता है उसका हाल अ़जीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वह क्यो तअ़ब में पड़ता है उसका हाल अ़जीब है जिसे हिसाब का यक़ीन हो वह कैसे ग़ाफ़िल रहता है उसका हाल अ़जीब है जिसको दुनिया के ज़वाल व तग़य्युर का यक़ीन हो वह कैसे मुतमइन होता है और उसके साथ लिखा था ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह और दूसरी जानिब उस लौह पर लिखा था मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं मैं यकता हूं मेरा कोई शरीक नहीं मैं ने ख़ैरो शर पैदा की उसके लिए ख़ुशी जिसे मैंने ख़ैर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर ख़ैर जारी की उसके लिए तबाही जिसको शर के लिए पैदा किया और उसके हाथों पर शर जारी की (फ़175) उसका नाम काशेह था और यह शख़्स परहेज़गार था हज़रत मुहम्मद इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला बन्दे की नेकी से उसकी औलाद को और उसकी औलाद की औलाद को और उसके कुम्बा वालों को और उसके मुहल्लादारों को अपनी हिफ़ाज़त में रखता है। (सुब्हानल्लाह)

(बक़िया सफ़हा 498 का) उलमा इस पर हैं कि मशाइख़े सूफ़िया व असहाबे इरफ़ान का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं शैख़ अबू अ़मर बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि हज़रत ख़िज़्र जम्हूर उलमा व सालेहीन के नज़दीक ज़िन्दा हैं यह भी कहा गया है कि हज़रत ख़िज़्र व इलियास दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल ज़मानए हज में मिलते हैं यह भी मन्क़ूल है कि हज़रत ख़िज़्र ने चश्मए हयात में ग़ुस्ल फ़रमाया और उसका पानी पिया वल्लाहु तआ़ला आ़लम (ख़ाज़िन) (फ़179) अबू जहल वग़ैरह कुफ़्फ़ारे मक्का या यहूद ब-तरीक़े इम्तेहान (फ़180) ज़ुलक़रनैन का नाम इस्कन्दर है यह हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई हैं उन्होंने इस्कन्दरिया बनाया और उसका नाम अपने नाम पर रखा हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम उनके वज़ीर और साहबे लवा थे दुनिया में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो तमाम दुनिया पर हुकमरान थे दो मोमिन हज़रत ज़ुलक़रनैन और हज़रत सुलैमान अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिमुस्सलाम और दो काफ़िर नमरूद और बख़्त नसर और अ़न्क़रीब एक पांचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिनका इस्मे मुबारक हज़रत इमाम महदी है उनकी हुकूमत तमाम रूए ज़मीन पर होगी ज़ुलक़रनैन की नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वह न नबी थे न फ़रिश्ते अल्लाह से मुहब्बत करने वाले बन्दे थे अल्लाह ने उन्हें महबूब बनाया। (फ़181) जिस चीज़ की ख़ल्क़ को हाजत होती है और जो कुछ बादशाहें को दयार व अमसार फ़तह करने और दुश्मनों के मुहारबा में दरकार होता है वह सब इनायत किया। (फ़182) सबब वह चीज़ है जो मक़सूद तक पहुंचने का ज़रीआ़ हो ख़्वाह वह इल्म हो या क़ुदरत तो ज़ुलक़रनैन ने जिस मक़सद का इरादा किया उसी का सबब इख़्तियार किया (फ़183) ज़ुलक़रनैन ने किताबों में देखा था कि औलादे साम में से एक शख़्स चश्मए हयात से पानी पियेगा और उसको मौत न आएगी यह देख कर वह चश्मए हयात की तलब में मग़रिब व मशरिक़ की तरफ़ रवाना हुए और आपके साथ हज़रत ख़िज़्र भी थे वह तो चश्मए हयात तक पहुंच गए और उन्होंने पी भी लिया मगर ज़ुलक़रनैन के मुक़द्दर में न था उन्होंने न पाया उस सफ़र में जानिबे मग़रिब रवाना हुए तो जहां तक आबादी है वह सब मनाज़िल क़तअ़ कर डाले और सम्ते मग़रिब में वहां पहुंचे जहां आबादी का नाम व निशान बाक़ी न रहा वहां उन्हें आफ़ताब वक़्ते ग़ुरूब ऐसा नज़र आया गोया कि वह सियाह चश्मा में डूबता है जैसा कि दरियाई सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मालूम होता है। (फ़184) उस चश्मा के पास (फ़185) जो शिकार किये हुए जानवरों के चमड़े पहने थे उसके सिवा उनके बदन पर और कोई लिबास न था और दरियाई मुर्दा जानवर उनकी ग़िज़ा थे यह लोग काफ़िर थे। (फ़186) और उनमें से जो इस्लाम में दाख़िल न हो उसको क़त्ल कर दे। (फ़187) और उन्हें अहकामे शरअ़ की तालीम दे अगर वह ईमान लायें। (फ़188) यानी कुफ़्र व शिर्क इख़्तियार किया ईमान न लाया (फ़189) क़त्ल करेंगे यह तो उसकी दुनियवी सज़ा है (फ़190) क़ियामत में (फ़191) यानी जन्नत (फ़192) और उसको ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उस पर सहल हों दुशवार न हों अब ज़ुलक़रनैन की निस्बत इरशाद फ़रमाया जाता है कि वह (फ़193) जानिबे मशरिक़ में (फ़194) उस मक़ाम पर जिसके और आफ़ताब के दर्मियान कोई चीज़ पहाड़, दरख़्त वग़ैरह हाइल न थी न वहां कोई इमारत क़ाइम हो सकती थी और वहां के लोगों का यह हाल था कि तुलूअ़े आफ़ताब के वक़्त ग़ारों में घुस जाते थे और ज़वाल के बाद निकल कर अपना काम काज करते थे (फ़195) फ़ौज लश्कर आलात हरब सामाने सल्तनत और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया सल्तनत व मुल्कदारी की क़ाबिलियत और उमूरे ममलिकत के सर-अन्जाम की लियाक़त (फ़196) मुफ़स्सिरीन ने कज़लक के माना में यह भी कहा है कि मुराद यह है कि ज़ुलक़रनैन ने जैसा मग़रबी क़ौम के साथ सुलूक किया

था ऐसा ही अहले मशरिक़ के साथ भी किया क्योंकि यह लोग भी उनकी तरह काफ़िर थे तो जो उन में से ईमान लाये उनके साथ एहसान किया और जो कुफ़्र पर मुसिर रहे उनको तअ्ज़ीब की (फ़ा197) जानिबे शुमाल में (ख़ाज़िन)

(बक़िया सफ़्हा 499 का) कर उनके दर्मियान लकड़ी और कोयला भरवा दिया और आग दे दी इस तरह यह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊँची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दर्मियान कोई जगह न छोड़ी गई ऊपर से पिघलाया हुआ तांबा दीवार में पिला दिया गया यह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया। (फ़ा205) ज़ुलक़रनैन ने कि (फ़ा206) और याजूज माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आ पहुंचेगा क़रीब क़ियामत। (फ़ा207) हदीस शरीफ़ में है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब उसके तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उनमें कोई कहता है अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे, दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वह बहुक्मे इलाही पहले से ज़्यादा मज़बूत हो जाती है जब उनके ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में कहने वाला कहेगा कि अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे इन्शाअल्लाह, इन्शाअल्लाह कहने का यह समरा होगा कि उस दिन की मेहनत रायगाँ न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार इतनी टूटी मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे अब वह निकल आयेंगे और ज़मीन में फ़साद उठायेंगे क़त्ल व ग़ारत करेंगे और चश्मों का पानी पी जायेंगे जानवरों दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आयेंगे उनको खा जायेंगे मक्का मुकर्रमा मदीना तय्येबा और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल न हो सकेंगे अल्लाह तआला ब-दुआए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन्हें हलाक करेगा इस तरह कि उनकी गर्दनों में कीड़े पैदा होंगे जो उनकी हलाकत का सबब होंगे (फ़ा208) इससे साबित होता है कि याजूज व माजूज का निकलना क़ुर्बे क़ियामत के अलामात में से है (फ़ा209) यानी तमाम ख़ल्क़ को अज़ाब व सवाब के लिए रोज़े क़ियामत (फ़ा210) कि उसको साफ़ देखें (फ़ा211) और वह आयाते इलाहिया और क़ुरआन व हिदायत व बयान और दलाइल क़ुदरत व ईमान से अन्धे बने रहे और उन में से किसी चीज़ को वह न देख सके (फ़ा212) अपनी बद-बख़्ती से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदावत रखने के बाइस (फ़ा213) मिस्ल हज़रत ईसा व हज़रत उज़ैर व मलायका के (फ़ा214) और उससे कुछ नफ़ा पायेंगे यह गुमान फ़ासिद है बल्कि वह बन्दे उन से बेज़ार हैं और बेशक हम उनके इस शिर्क पर अज़ाब करेंगे।

(बक़िया सफ़्हा 500 का) यह बात वहां न होगी क्योंकि वह जानते होंगे कि फ़ज़्ले इलाही से उन्हें बहुत आला व अरफ़अ् मकान व मकानत हासिल है। (फ़ा221) यानी अगर अल्लाह तआला के इल्म व हिकमत के कलिमात लिखे जायें और उनके लिए तमाम समुन्दरों का पानी सियाही बना दिया जाये और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वह कलिमात ख़त्म न हों और यह तमाम पानी ख़त्म हो जाये और इतना ही और भी ख़त्म होजाये मुद्दआ यह है कि उसके इल्म व हिकमत की निहायत नहीं। शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आपका ख़्याल है कि हमें हिकमत दी गई और आपकी किताब में है कि जिसे हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई एक क़ौल यह है कि जब आयत व मा ऊतीतुम् मिनल्-इल्मि इल्ला क़लीला नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरेत का इल्म दिया गया और उसमें हर शय का इल्म है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई मुद्दआ यह है कि कुल शय का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़तरे को समुन्दर से हो (फ़ा222) कि मुझ पर बशरी अअ्राज़ व अमराज़ तारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आपका मिस्ल नहीं कि अल्लाह तआला ने आप को हुस्न व सूरत में भी सब से आला व बाला किया और हक़ीक़त व रूह व बातिन के ऐतबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आला हैं जैसा कि शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ में है और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने शरह मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के अजसाम व ज़वाहिर तो हदे बशरियत पर छोड़े गए और उनके अरवाह व बवातिन बशरियत से बाला और मलए आला से मुतअल्लिक़ हैं शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने सूरह वज़्ज़ुहा की तफ़सीर में फ़रमाया कि आपकी बशरियत का वुजूद असलन न रहे और ग़लबए अनवारे हक़ आप पर अलद्दवाम हासिल हो बहरहाल आपकी ज़ात व कमालात में आपका कोई भी मिस्ल नहीं इस आयते करीमा में आपको अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिया के बयान का इज़्हार तवाज़ोअ् के लिए हुक्म फ़रमाया गया यही फ़रमाया है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने (ख़ाज़िन) मसला किसी को जाइज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्योंकि जो कलिमात असहाबे इज़्ज़त व अज़मत ब-तरीक़े तवाज़ोअ् फ़रमाते हैं उनका कहना दूसरों के लिए रवा नहीं होता दोयम यह कि जिसको अल्लाह तआला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ अता फ़रमाए हों उसके इन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आम से ज़िक्र करना जो हर कह व मह में पाया जाये उन कमालात के न मानने का मुशअिर है सोयम यह कि क़ुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का तरीक़ा बताया गया है कि वह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और उसी से गुमराही में मुब्तला हुए फिर उसके बाद आयते यूहा इलैय्य में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मख़्सूस बिलइल्म और मुकर्रम इन्दल्लाह होने का बयान है। (फ़ा223) उसका कोई शरीक नहीं। (फ़ा224) शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिसको शिर्के असग़र कहते हैं मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरह कहफ़ की पहली दस आयतें हिफ़्ज़ करे अल्लाह तआला उसको फ़ित्नए दज्जाल से महफ़ूज़ रखेगा यह भी हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरह कहफ़ को पढ़े वह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहेगा।

(बक़िया सफ़्हा 501 का) बनी इसराईल से मुशाहिदा में आ चुका है (फ़ा7) और मेरे इल्म का हामिल हो। (फ़ा8) कि तू अपने फ़ज़्ल से उसको नबुव्वत अता फ़रमाए अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की यह दुआ क़बूल फ़रमाई और इरशाद

फ़रमाया। (फ़9) यह सवाल इस्तिबआद नहीं बल्कि मक़सूद यह दरियाफ़्त करना है कि अ़ताए फ़रज़न्द किस तरीक़ा पर होगा क्या दोबारा जवानी मरहमत होगी या इसी हाल में फ़रज़न्द अ़ता किया जाएगा (फ़10) तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है (फ़11) तो जो मअ़्दूम के मौजूद करने पर क़ादिर है उससे बुढ़ापे में औलाद अ़ता फ़रमाना क्या अ़जब (फ़12) जिससे मुझे अपनी बीबी के हामिला होने की मअ़्रेफ़त हो।

(बक़िया सफ़हा 502 का) कर लोगों ने दरियाफ़्त किया क्या हाल है। (फ़15) और हस्बे आदत फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ें अदा करते रहो अब हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आपकी बीवी साहिबा हामिला हो गईं और हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम की विलादत से दो साल बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया। (फ़16) यानी तौरेत को (फ़17) जबकि आपकी उम्र शरीफ़ तीन साल की थी उस वक़्त में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपको अक़्ले कामिल अ़ता फ़रमाई और आप की तरफ़ वही की हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का यही क़ौल है और इतनी सी उम्र में फ़हम व फ़रासत और कमाले अक़्ल व दानिश ख़वारिक़े आ़दात में से है और जब ब-करमेही तआ़ला यह हासिल हो तो इस हाल में नबुव्वत मिलना कुछ भी बईद नहीं लिहाज़ा इस आयत में हुक्म से नबुव्वत मुराद है यही क़ौल सही है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इससे हिकमत यानी फ़हमे तौरेत और फ़िक़्ह फ़िद्दीन भी मुराद ली है। (ख़ाज़िन व मदारिक कबीर) मन्क़ूल है कि इस कम सिनी के ज़माना में बच्चों ने आपको खेल के लिए बुलाया तो आपने फ़रमाया मा लिल्लुअ़बि ख़ुलिक़्ना हम खेल के लिए पैदा नहीं किये गए। (फ़18) अ़ता की और उनके दिल में रिक़्क़त व रहमत रखी कि लोगों पर मेहरबानी करें। (फ़19) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से यहां ताअ़त व इख़्लास मुराद है। (फ़20) और आप ख़ौफ़े इलाही से बहुत गिरया व ज़ारी करते थे यहां तक कि आपके रुख़सार मुबारक पर आंसूओं से निशान बन गए थे (फ़21) यानी आप निहायत मुतवाज़ेअ़ और ख़लीक़ थे और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुतीअ़् (फ़22) कि यह तीनों दिन बहुत अन्देशा नाक हैं क्योंकि उनमें आदमी वह देखता है जो इससे पहले उसने नहीं देखा इस लिए उन तीनों मौक़ों पर निहायत वहशत होती है अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम का इकराम फ़रमाया कि उन्हें उन तीनों मौक़ों पर अमन व सलामती अ़ता की (फ़23) यानी ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ुरआने करीम में हज़रत मरयम का वाक़िआ़ पढ़ कर उन लोगों को सुनाये ताकि उन्हें उनका हाल मालूम हो (फ़24) अपने मकान में या बैतुल मुक़द्दस की शरक़ी जानिब में लोगों से जुदा होकर इबादत के लिए ख़लवत में बैठें (फ़25) यानी अपने और घर वालों के दर्मियान (फ़26) जिबरील अ़लैहिस्सलाम (फ़27) यही मन्ज़ूरे इलाही है कि तुम्हें बग़ैर मर्द के छूए ही लड़का इनायत फ़रमाए। (फ़28) यानी बग़ैर बाप के बेटा देना (फ़29) और अपनी क़ुदरत की बुरहान (फ़30) उनके लिए जो उसके दीन का इत्तेबाअ़् करें उस पर ईमान लायें (फ़31) इल्मे इलाही में अब न रद्द हो सकता है न बदल सकता है जब हज़रत मरयम को इत्मीनान हो गया और उनकी परेशानी जाती रही तो हज़रत जिबरील ने उनके गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वह ब-क़ुदरते इलाही फ़िलहाल हामिला हो गईं उस वक़्त हज़रत मरयम की उम्र तेरह साल या दस साल की थी (फ़32) अपने घर वालों से और वह जगह बैते लहम थी। वहब का क़ौल है कि सब से पहले जिस शख़्स को हज़रत मरयम के हमल का इल्म हुआ वह उनका चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार है जो मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस का ख़ादिम था और बहुत बड़ा आबिद शख़्स था उसको जब मालूम हुआ कि मरयम हामला हैं तो निहायत हैरत हुई जब चाहता था कि उन पर तोहमत लगाये तो उनकी इबादत व तक़वा और हर वक़्त का हाज़िर रहना किसी वक़्त ग़ाइब न होना याद कर के ख़ामोश हो जाता था और जब हमल का ख़्याल करता था तो उनको बुरी समझना मुश्किल मालूम होता था बिलआख़िर उसने हज़रत मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है हर चन्द चाहता हूं कि ज़बान पर न लाऊँ मगर अब सब्र नहीं होता है आप इजाज़त दीजिये कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी रफ़अ़ हो। हज़रत मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो तो उसने कहा कि ऐ मरयम मुझे बताओ कि क्या खेती बग़ैर तुख़्म और दरख़्त बग़ैर बारिश के और बच्चा बग़ैर बाप के हो सकता है। हज़रत मरयम ने फ़रमाया कि हां तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो सब से पहले खेती पैदा की बग़ैर तुख़्म ही के पैदा की और दरख़्त अपनी क़ुदरत से बग़ैर बारिश के उगाये क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआ़ला पानी की मदद के बग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं यूसुफ़ ने कहा मैं यह तो नहीं कहता बेशक मैं इसका क़ाइल हूं कि अल्लाह हर शय पर क़ादिर है जिसे कुन फ़रमाये वह हो जाती है हज़रत मरयम ने कहा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम और उनकी बीबी को बग़ैर मां बाप के पैदा किया हज़रत मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबहा रफ़अ़ हो गया और हज़रत मरयम हमल के सबब से ज़ईफ़ हो गईं थीं इस लिए वह ख़िदमत मस्जिद में उनकी नियाबत अन्जाम देने लगा अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मरयम को इल्हाम किया कि वह अपनी क़ौम से अलाहिदा चली जायें इस लिए वह बैते लेहम में चली गईं। (फ़33) जिस का दरख़्त जंगल में ख़ुश्क हो गया था वक़्त तेज़ सर्दी का था आप उस दरख़्त की ज़ड में आईं ताकि उससे टेक लगायें और फ़ज़ीहत के अन्देशा से।

(बक़िया सफ़हा 503 का) हुए मसलाः सफ़िया के जवाब में सुकूत व अअ़्राज़ चाहिए -जवाबे जाहिलां बाशद ख़मूशी मसला कलाम को अफ़ज़ल शख़्स की तरफ़ तफ़वीज़ करना औला है हज़रत मरयम ने यह भी इशारा से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी (फ़41) जब लोगों ने हज़रत मरयम को देखा कि उनकी गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्योंकि वह सालेहीन के घराने के लोग थे (फ़42) और हारून या तो हज़रत मरयम के भाई का नाम था या बनी इसराईल में और निहायत बुज़ुर्ग और सालेह शख़्स का नाम था जिनके तक़वा और परहेज़गारी से तश्बीह देने के लिए उन लोगों ने हज़रत मरयम को हारून की बहन कहा या हज़रत हारून बिरादरे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ही की तरफ़ निस्बत की बावजूदे कि उनका ज़माना बहुत बईद था और हज़ार बरस का अर्सा हो चुका था मगर चूंकि यह उनकी नसल से थीं इस लिए हारून की बहन

कह दिया जैसा कि अरबों का मुहावरा है कि वह तमीमी को या अख़ातमीम कहते हैं (फ़43) यानी इमरान (फ़44) हन्ना (फ़45) कि जो कुछ कहना है ख़ुद उनसे कहो इस पर क़ौम के लोगों को ग़ुस्सा आया और (फ़46) यह गुफ़्तगू सुनकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बायें हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुतवज्जह हुए और दाहिने दस्ते मुबारक से इशारा कर के कलाम शुरू किया (फ़47) पहले अपने बन्दा होने का इक़रार फ़रमाया ताकि कोई उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्योंकि आप की निस्बत यह तोहमत लगाई जाने वाली थी और यह तोहमत अल्लाह तबारक व तआ़ला पर लगती थी इस लिए मन्सबे रिसालत का इक़्तेज़ा यही था कि वालिदा की बराअ़त बयान करने से पहले उस तोहमत को रफ़अ़ फ़रमा दें जो अल्लाह तआ़ला के जनाबे पाक में लगाई जाएगी और उसी से वह तोहमत भी रफ़अ़ हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस मर्तबए अ़ज़ीमा के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है बिलयक़ीन उसकी विलादत और उसकी सरिश्त निहायत पाक व ताहिर है। (फ़48) किताब से इन्जील मुराद है हसन का क़ौल है कि आप बतने वालिदा ही में थे कि आप को तौरेत का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आपको नबुव्वत अ़ता कर दी गई और इस हालत में आपका कलाम फ़रमाना आपका मोअ़जेज़ा है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत के माना में यह भी बयान किया है कि यह नबुव्वत और किताब के मिलने की ख़बर थी जो अ़न्क़रीब आपको मिलने वाली थी। (फ़49) यानी लोगों के लिए नफ़ा पहुंचाने वाला और ख़ैर की तालीम देने वाला और अल्लाह तआ़ला और उसकी तौहीद की दावत देने वाला। (फ़50) बनाया (फ़51) जो हज़रत यहया पर हुई (फ़52) जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह कलाम फ़रमाया तो लोगों को हज़रत मरयम की बराअ़त व तहारत का यक़ीन हो गया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम इतना फ़रमा कर ख़ामोश हो गए और उसके बाद कलाम न किया जब तक कि उस उम्र को पहुंचे जिस में बच्चे बोलने लगते हैं (ख़ाज़िन) (फ़53) कि यहूद तो उन्हें साहिरे कज़्ज़ाब कहते हैं (मआ़ज़ल्लाह) और नसारा उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं तआ़-लल्लाहु अ़म्मा यक़ूलू-न उलूव्वन् कबीरा इसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी तन्ज़ीह बयान फ़रमाता है

(बक़िया सफ़हा 504 का) दुनिया में ईमान ले आये होते। (फ़61) और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे ऐसा सख़्त दिन दरपेश है। (फ़62) और उस दिन के लिए कुछ फ़िक्र नहीं करते। (फ़63) यानी सब फ़ना हो जायेंगे हम ही बाक़ी रहेंगे। (फ़64) हम उन्हें उनके आमाल की जज़ा देंगे। (फ़65) यानी क़ुरआन में (फ़66) यानी कसीरुस्सिद्क़ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि सिद्दीक़ के माना हैं कसीरुत्तसदीक़ जो अल्लाह तआ़ला और उसकी वहदानियत और उसके अम्बिया और उसके रसूलों की और मरने के बाद उठने की तस्दीक़ करे और अहकामे इलाहिया बजा लाये। (फ़67) यानी आज़र बुत-परस्त से। (फ़68) यानी इबादत मअ़बूद की ग़ायत ताज़ीम है उसका वही मुस्तहिक़ हो सकता है जो साहबे औसाफ़े कमाल और वली निअ़म हो न कि बुत जैसी नाकरा मख़्लूक़ मुद्दआ़ यह है कि अल्लाह वाहिद ला शरीक लहू के सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं। (फ़69) मेरे रब की तरफ़ से मअ़रेफ़ते इलाही का (फ़70) मेरा दीन क़बूल कर (फ़71) जिस से तू क़ुर्बे इलाही की मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंच सके। (फ़72) और उसकी फ़रमांबरदारी करके कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला न हो। (फ़73) और लानत व अ़ज़ाब में उसका साथी हो इस नसीहत लुत्फ़ आमेज़ और हिदायते दिलपज़ीर से आज़र ने नफ़ा न उठाया और उसके जवाब में

(बक़िया सफ़हा 505 का) शरीफ़ इतनी दराज़ हुई कि आपने अपने पोते हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को देखा इस आयत में यह बताया गया कि अल्लाह के लिए हिजरत करने और अपने घर बार छोड़ने की यह जज़ा मिली कि अल्लाह तआ़ला ने बेटे और पोते अ़ता फ़रमाये (फ़84) कि अमवाल व औलाद बकसरत इनायत किये (फ़85) कि हर दीन वाले मुसलमान हों ख़्वाह यहूदी ख़्वाह नसरानी सब उनकी सना करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उनकी आल पर दुरूद पढ़ा जाता है (फ़86) तूर एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र व मदयन के दर्मियान है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मदयन से आते हुए तूर की उस जानिब से जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के दाहिनी तरफ़ थी एक दरख़्त से निदा दी गई या मूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुलुआ़लमीन ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूं तमाम जहानों का पालने वाला (फ़87) मर्तबए क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया हिजाब मुरतफ़अ़ कि यहां तक कि आपने सरीरे अक़लाम सुनी और आपकी क़दरो मन्ज़िलत बुलन्द की गई और आप से अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़रमाया। (फ़88) जबकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि या रब मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से यह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को आपकी दुआ़ से नबी किया हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बड़े थे (फ़89) जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जद् हैं (फ़90) अम्बिया सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं एक मर्तबा किसी मक़ाम पर आपसे कोई शख़्स कह गया था कि आप यहीं ठहरे रहिये जब तक मैं वापस आऊँ आप उस जगह उसके इन्तेज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे आपने सब्र का वादा किया था ज़बह के मौक़ा पर इस शान से उसको वफ़ा फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह (फ़91) और अपनी क़ौम जुरहम को जिनकी तरफ़ आप मबऊस थे (फ़92) ब-सबब अपने ताअ़त व आमाल व सब्र व इस्तेक़लाल व अहवाल व ख़िसाल के (फ़93) आपका नाम अख़्नूख़ है आप हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वालिद के दादा हैं हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बाद आप ही पहले रसूल हैं आप के वालिद हज़रत शीस बिन आदम अ़लैहिस्सलाम हैं सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वह आप ही हैं कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की इब्तेदा भी आप ही से हुई आप से पहले लोग खालें पहनते थे सब से पहले हथियार बनाने वाले तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं यह सब काम आप ही से शुरू हुए अल्लाह तआ़ला ने आप पर

तीस सहीफ़े नाज़िल किये और कुतुबे इलाहिया की कसरते दर्स के बाइस आपका नाम इदरीस हुआ (फ़ा94) दुनिया में उन्हें उलूमे मर्तबत अ़ता किया या यह माना हैं कि आसमान पर उठा लिया और यही सही तर है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शबे मेअ्‌राज हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम को आसमाने चहारुम पर देखा हज़रत कअ्‌ब अहबार वग़ैरह से मरवी है कि हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है तुम मेरी रूह क़ब्ज़ करके दिखाओ उन्होंने इस हुक्म की तअ़मील की और रूह क़ब्ज़ करके उसी वक़्त आपकी तरफ़ लौटा दी आप ज़िन्दा होगए फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़्यादा हो चुनान्चे यह भी किया गया जहन्नम देख कर आपने मालिक दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं उस पर गुज़रना चाहता हूं चुनांचे ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे फिर आपने मलकुलमौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ वह आपको जन्नत में ले गए आप दरवाज़े खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुए थोड़ी देर इन्तेज़ार करके मलकुल मौत ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये फ़रमाया अब मैं यहां से कहीं न जाऊँगा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तिल्-मौत वह मैं चख ही चुका हूं और यह फ़रमाया है व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है व मा हुम्-मिन्हा बिमुख़्रजीन कि वह जन्नत से निकाले न जायेंगे अब मुझे जन्नत से चलने के लिए क्यों कहते हो अल्लाह तआ़ला ने मलकुल-मौत को वही फ़रमाई कि हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वह मेरे इज़्न से जन्नत में दाख़िल हुए उन्हें छोड़ दो वह जन्नत ही में रहेंगे चुनान्चे आप वहां ज़िन्दा हैं।

(बक़िया सफ़हा 506 का) अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया ग़य जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी से जहन्नम के वादी भी पनाह मांगते हैं यह उन लोगों के लिए है जो ज़िना के आ़दी और उस पर मुसिर हों और जुआ शराब के आ़दी हों और जो सूद ख़्वार सूद के ख़ूगर हों और जो वालिदैन की नाफ़रमानी करने वाले हों और जो झूठी गवाही देने वाले हों। (फ़ा104) और उनके आमाल की जज़ा में कुछ भी कमी न की जायेगी (फ़ा105) ईमानदार सालेह व ताइब (फ़ा106) यानी इस हाल में कि जन्नत उन से ग़ाइब है उनकी नज़र के सामने नहीं या इस हाल में कि वह जन्नत से ग़ाइब हैं इसका मुशाहदा नहीं करते (फ़ा107) मलायका का या आपस में एक दूसरे का (फ़ा108) यानी अ़लद्दवाम क्योंकि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं अहले जन्नत हमेशा नूर ही में रहेंगे या मुराद यह है कि दुनिया के दिन की मिक़दार में दो मर्तबा बहिश्ती निअ़्मतें उनके सामने पेश की जायेंगी (फ़ा109) **शाने नुज़ूलः** बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिबरील से फ़रमाया ऐ जिबरील तुम जितना हमारे पास आया करते हो उससे ज़्यादा क्यों नहीं आते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा110) यानी तमाम अमाकिन का वही मालिक है हम एक मकान से दूसरे मकान की तरफ़ नक़्लो हरकत करने में उसके हुक्म व मशियत के ताबेअ़ हैं वह हर हरकत व सुकून का जानने वाला और ग़फ़लत व निस्यान से पाक है (फ़ा111) जब चाहे हमें आपकी ख़िदमत में भेजे। (फ़ा112) यानी किसी को उसके साथ इस्मी शिरकत भी नहीं और उसकी वहदानियत इतनी ज़ाहिर है कि मुशरिकीन ने भी अपने किसी मअ़्बूद का नाम अल्लाह नहीं रखा

(बक़िया सफ़हा 507 का) बद मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उनका गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। हसन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है। (फ़ा120) यानी वुरूदे जहन्नम क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है (फ़ा121) यानी ईमानदारों को। (फ़ा122) मिस्ल नज़र बिन हारिस वग़ैरह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बनाव व सिंगार करके बालों में तेल डाल कर कंघियां करके उमदा लिबास पहन कर फ़ख़्र व तकब्बुर के साथ ग़रीब फ़क़ीर। (फ़ा123) मुद्दआ़ यह है कि जब आयात नाज़िल की जाती हैं और दलाइल व बराहीन पेश किये जाते हैं तो कुफ़्फ़ार उनमें तो फ़िक्र नहीं करते और उन से फ़ाइदा नहीं उठाते और बजाए उसके दौलत व माल और लिबास व मकान पर फ़ख़्र व तकब्बुर करते हैं। (फ़ा124) उम्मतें हलाक कर दीं। (फ़ा125) दुनिया में उसकी उम्र दराज़ करके और उसको उसकी गुमराही व तुग़ियान में छोड़ कर। (फ़ा126) दुनिया का क़त्ल व गिरिफ़्तारी (फ़ा127) जो तरह तरह की रुसवाई और अ़ज़ाब पर मुश्तमिल है। (फ़ा128) कुफ़्फ़ार की शैतानी फ़ौज या मुसलमानों का मुल्की लश्कर उसमें मुशरिकीन के इस क़ौल का रद्द है जो उन्होंने कहा था कि कौन से गरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है। (फ़ा129) और ईमान से मुशर्रफ़ हुए (फ़ा130) इस पर इस्तेक़ामत अ़ता फ़रमा कर और मज़ीद बसीरत व तौफ़ीक़ देकर। (फ़ा131) ताअ़तें और आख़िरत के तमाम आमाल और पंजगाना नमाज़ें और अल्लाह की तस्बीह व तहमीद और उसका ज़िक्र और तमाम आमाले सालिहा यह सब बाक़ियात सालिहात हैं कि मोमिन के लिए बाक़ी रहते हैं और काम आते हैं।

(बक़िया सफ़हा 510 का) से महरूम रहने पर बहुत ज़्यादा मुतअस्सिफ़ व मुतहस्सिर रहते थे और ख़ातिरे मुबारक पर इस सबब से रन्ज व मलाल रहा करता था इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्ज व मलाल की कोफ़्त न उठायें क़ुरआन पाक आपकी मशक़्क़त के लिए नाज़िल नहीं किया गया है। (फ़ा3) वह इससे नफ़ा उठाएगा और हिदायत पाएगा (फ़ा4) जो सातों ज़मीनों के नीचे है मुराद है कि कायनात में जो कुछ है अर्श व समावात ज़मीन व तहतुस्सरा कुछ हो कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है (फ़ा5) सिर्र यानी भेद वह है जिसको आदमी रखता और छुपाता है और उससे ज़्यादा पोशीदा वह है जिसको इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उससे उसका इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुआ न उस तक ख़्याल पहुंचा एक क़ौल यह

है कि भेद से मुराद वह है जिसको इन्सानों से छुपाता है और उससे ज़्यादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है एक क़ौल यह है कि भेद बन्दा का वह है जिसे बन्दा खुद जानता है और अल्लाह तआला जानता है उससे ज़्यादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिनको अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह अफ़आल से परहेज़ करना चाहिए वह ज़ाहिर हों या बातिना क्योंकि अल्लाह तआला से कुछ छुपा नहीं और उसमें नेक आमाल पर तरग़ीब भी है कि ताअत ज़ाहिर हो या बातिन अल्लाह से छुपी नहीं वह जज़ा अता फ़रमाएगा तफ़सीर बैज़ावी में क़ौल से ज़िक्रे इलाही और दुआ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में उस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्र व दुआ में जहर अल्लाह तआला को सुनाने के लिए नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासेख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मश्ग़ूली से रोकने और बाज़ रखने के लिए है (फ़ा6) वह वाहिद बिज़्ज़ात है और असमा व सिफ़ात इबारात हैं और ज़ाहिर है कि तअद्दुद इबारात तअद्दुद माना को मुक़तज़ी नहीं (फ़ा7) हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के अहवाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम जो दर्जए उलिया पाते हैं वह अदाए फ़राइज़े नबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मुशक़्क़तें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं यहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के उस सफ़र का वाक़िआ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मदयन से मिस्र की तरफ़ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इजाज़त लेकर अपनी वालिदा माजिदा से मिलने के लिए रवाना हुए थे आपके अहले बैत हमराह थे और आपने बादशाहाने शाम के अन्देशा से सड़क छोड़ कर जंगल में क़तए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई बीबी साहिबा हामिला थीं चलते चलते तूर के ग़रबी जानिब पहुंचे यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरू हुआ यह रात अंधेरी थी बरफ़ पड़ रहा था सर्दी शिद्दत की थी आपको दूर से आग मालूम हुई (फ़ा8) वहां एक दरख़्त सर सब्ज़ व शादाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रौशन था जितना उसके क़रीब जाते हैं दूर होता है जब ठहर जाते हैं क़रीब होता है उस वक़्त आपको (फ़ा9) कि उसमें तवाज़ोअ़ और बुक़्क़अए मुअज़्ज़मा का एहतेराम और वादीए मुक़द्दस की ख़ाक से हुसूले बरकत का मौक़ा है। (फ़ा10) तुवा वादी मुक़द्दस का नाम है जहां यह वाक़िआ पेश आया। (फ़ा11) तेरी क़ौम में से नबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाया यह निदा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने हर जुज़्वे बदन से सुनी और क़ुव्वते सामेआ ऐसी आम हुई कि तमाम जिस्मे अक़दस कान बन गया सुबहानल्लाह। (फ़ा12) ताकि तू उसमें मुझे याद करे और मेरी याद में इख़्लास और मेरी रज़ा मक़सूद हो कोई दूसरी ग़रज़ न हो इसी तरह रिया का दख़ल न हो या यह माना हैं कि तू मेरी नमाज़ क़ाइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रहमत से याद फ़रमाऊँ फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि ईमान के बाद आज़म फ़राइज़ नमाज़ है।

(बक़िया सफ़हा 511 का) अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मानूस किया जाये ताकि हैबत मकालमत का असर कम हो (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा18) उस असा में ऊपर की जानिब दो शाख़ें थीं और उसका नाम नबआ था। (फ़ा19) मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूज़ी जानवरों को दफ़अ़ करने और आदाअ़ से मुहारबा में काम लेने वग़ैरह के उन फ़वाइद का ज़िक्र करना बतरीक़े शुक्र निअमे इलाहिया था अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से। (फ़ा20) और क़ुदरते इलाही दिखाई गई कि जो असा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वह ऐसा हैबतनाक अज़दहा बन गया यह हाल देख कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़ौफ़ हुआ तो अल्लाह तआला ने उन से (फ़ा21) यह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा हत्ता कि आपने अपना दस्ते मुबारक उसके मुंह में डाल दिया और वह आपके हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक़ असा बन गया अब उसके बाद एक और मोअ़जेज़ा अता फ़रमाया जिसकी निस्बत इरशाद फ़रमाया (फ़ा22) यानी कफ़े दस्ते रास्त बायें बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो आफ़ताब की तरह चमकता निगाहों को ख़ीरा करता और (फ़ा23) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आफ़ताब की तरह नूर ज़ाहिर होता था और यह मोअ़जेज़ा आपके आज़म मोअ़जेज़ात में से है जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बग़ल के नीचे रख कर बाज़ू से मिलाते तो वह दस्ते अक़दस हालते साबिक़ा पर आ जाता (फ़ा24) आपके सिद्क़े नबुव्वत की असा के बाद उस निशानी को भी लीजिये (फ़ा25) रसूल होकर (फ़ा26) और कुफ़्र में हद से गुज़र गया और उलूहियत का दावा करने लगा (फ़ा27) और उसे तहम्मुले रिसालत के लिए वसीअ़ फ़रमा दे। (फ़ा28) जो खुर्द-साली में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और उसका वाक़िआ यह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔन की गोद में थे आपने उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसके मुंह पर ज़ोर से तमांचा मारा इस पर उसे गुस्सा आया और उसने आपके क़त्ल का इरादा किया आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह यह नादान बच्चा है क्या समझे तू चाहे तो तजरबा करले उस तजरबा के लिए एक तश्त में आग और एक तश्त में याक़ूत सुर्ख़ आपके सामने पेश किये गए आपने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़रिश्ता ने आपका हाथ अंगारा पर रख दिया और वह अंगारा आपके मुंह में दे दिया इससे ज़बान मुबारक जल गई और लुकनत पैदा हो गई उसके लिए आपने यह दुआ की (फ़ा29) जो मेरा मुआविन व मोअ़तमिद हो (फ़ा30) यानी अम्रे नबुव्वत व तबलीग़े रियासत में (फ़ा31) नमाज़ों में भी और ख़ारिजे नमाज़ भी (फ़ा32) हमारे अहवाल का आलिम है हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इस दरख़्वास्त पर अल्लाह तआला ने (फ़ा33) इससे क़ब्ल

(बक़िया सफ़हा 512 का) निकालने का हुक्म दिया वह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया खोला तो उसमें एक नूरानी शक्ल फ़रज़न्द जिसकी पेशानी से वजाहत व इक़बाल के आसार नमूदार थे नज़र आया देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हुई कि वह वारफ़्ता हो गया और अक़्ल व हवास बजा न रहे अपने इख़्तियार से बाहर हो गया उसकी निस्बत अल्लाह

तबारक व तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा37) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें महबूब बनाया और ख़ल्क़ का महबूब कर दिया और जिसको अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी महबूबियत से नवाज़ता है क़ुलूब में उसकी मुहब्बत पैदा हो जाती है जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ यही हाल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का था जो आपको देखता था उसी के दिल में आपकी मुहब्बत पैदा हो जाती थी क़तादा ने कहा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की आंखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर देखने वाले के दिल में मुहब्बत जोश मारने लगती थी (फ़ा38) यानी मेरी हिफ़ाज़त व निगहबानी में परवरिश पाए (फ़ा39) जिसका नाम मरयम था ताकि वह आपके हाल का तजस्सुस करे और मालूम करे कि सन्दूक़ कहां पहुंचा आप किसके हाथ आए जब उसने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔ़न के पास पहुंचा और वहां दूध पिलाने के लिए दाईयां हाज़िर की गईं और आपने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आपकी बहन ने (फ़ा40) उन लोगों ने उसको मन्ज़ूर किया वह अपनी वालिदा को ले गईं आपने उनका दूध क़बूल फ़रमाया। (फ़ा41) आपके दीदार से (फ़ा42) यानी ग़मे फ़िराक़ दूर हो उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के एक और वाक़िआ़ का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा43) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़िरऔ़न की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था वह मर गया कहा गया है कि उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल की थी इस वाक़िआ़ पर आपको फ़िरऔ़न की तरफ़ से अन्देशा हुआ (फ़ा44) मेहनतों में डाल कर और उनसे ख़लासी अ़ता फ़रमा कर। (फ़ा45) मदयन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फ़ासिला पर यहां हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम रहते थे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम मिस्र से मदयन आये और कई बरस तक हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास इक़ामत फ़रमाई और उनकी साहबज़ादी सफ़ूरा के साथ आपका निकाह हुआ (फ़ा46) यानी अपनी उम्र के चालीसवें साल और यह वह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वही की जाती है (फ़ा47) अपनी वही और रिसालत के लिए ताकि तू मेरे इरादा और मेरी मुहब्बत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ाइम रहे और मेरी और मेरी ख़ल्क़ के दर्मियान ख़िताब पहुंचाने वाला हो (फ़ा48) यानी मोअ़जेज़ात (फ़ा49) यानी उसको ब-नर्मी नसीहत फ़रमाना और नर्मी का हुक्म इस लिए था कि उसने बचपन में आपकी ख़िदमत की थी और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नर्मी से मुराद यह है कि आप उससे वादा करें कि अगर वह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उसकी सल्तनत बाक़ी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें ता दमे मर्ग बाक़ी रहेंगी और बाद मौत के दुख़ूले जन्नत मुयस्सर आएगा जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔ़न से यह वादा किये तो उसको यह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वह किसी काम पर बग़ैर मशवरा हामान के क़तई फ़ैसला नहीं करता था हामान मौजूद न था जब वह आया तो फ़िरऔ़न ने उसको यह ख़बर दी और कहा कि मैं चाहता हूं कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं हामान कहने लगा मैं तो तुझको आक़िल व दाना समझता था तू रब है बन्दा बनना चाहता है तू मअ़बूद है आ़बिद बनने की ख़्वाहिश करता है फ़िरऔ़न ने कहा तूने ठीक कहा और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम मिस्र में थे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म किया कि वह हज़रत हारून के पास आयें और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को वही की कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से मिलें चुनान्चे वह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वही उन्हें हुई थी उसकी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को इत्तलाअ़ दी। (फ़ा50) यानी आपकी तालीम व नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिए ताकि आप के लिए अज्र और उस पर इलज़ामे हुज्जत और क़तअ़े उज़्र हो जाये और हक़ीक़त में होना तो वही है जो तक़दीरे इलाही है। (फ़ा51) अपनी मदद से (फ़ा52) उसके क़ौलो फ़ेअ़्ल को (फ़ा५३) और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे (फ़ा54) मेहनत व मशक़्क़त के सख़्त काम लेकर (फ़ा55) यानी मोअ़्जेज़े जो हमारे सिद्क़े नबुव्वत की दलील हैं फ़िरऔ़न ने कहा वह क्या हैं तो आपने मोअ़्जेज़ा यदे बैज़ा दिखाया (फ़ा56) यानी दोनों जहान में उसके लिए सलामती है वह अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा

(बक़िया सफ़हा 513 का) तमाम हो गया अब अल्लाह तआ़ला अहले मक्का को ख़िताब करके उसकी ततमीम फ़रमाता है। (फ़ा65) यानी क़िस्म क़िस्म के सब्ज़े मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुश्बूओं शक्लों के बाज़ आदमियों के लिए बाज़ जानवरों के लिए। (फ़ा66) यह अमर इबाहत और तज़कीरे नेअ़्मत के लिए है यानी हमने यह सब्ज़े निकाले तुम्हारे लिए उनका खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह करके। (फ़ा67) तुम्हारे जद्दे आला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उससे पैदा करके। (फ़ा68) तुम्हारी मौत व दफ़न के वक़्त। (फ़ा69) रोज़े क़ियामत (फ़ा70) यानी फ़िरऔ़न को। (फ़ा71) यानी कुल आयाते तिसअ़् जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अ़ता फ़रमाई थीं। (फ़ा72) और इन आयात को सहर बताया और क़बूले हक़ से इन्कार किया और (फ़ा73) यानी हमें मिस्र से निकाल कर ख़ुद उस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ। (फ़ा74) और जादू में हमारा तुम्हारा मुक़ाबला होगा। (फ़ा75) उस मेला से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उनकी ईद थी और उसमें वह ज़ीनतें कर करके जमा होते थे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह दिन आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम का था और इस साल यह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ़. हुई थी उस रोज़ को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस लिए मुअ़य्यन फ़रमाया कि यह रोज़ उन की ग़ायत शौकत का दिन था उसको मुक़र्रर करना अपने कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है नीज़ उसमें यह भी हिकमत थी कि हक़ का ज़ुहूर और बातिन की रुसवाई के लिए ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जबकि अतराफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुजतमअ़् हों (फ़ा76) ताकि ख़ूब रौशनी फैल जाये और देखने वाले बइत्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए (फ़ा77) कसीरुत्तादाद जादूगरों को जमा किया (फ़ा78) वादा के दिन उन सब को लेकर

(बकिया सफ़हा 514 का) गए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया यह देख कर जादूगरों को यक़ीन हुआ कि यह मोअ्जेज़ा है जिससे सेहर मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेबकारी उसके सामने क़ाइम नहीं रह सकती। (फ़ा90) सुबहानल्लाह क्या अ़जीब हाल था जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुहूद के लिए रस्सियां और अ़सा डाले थे अभी मोअ्.जेज़ा देख कर उन्होंने शुक्र व सुजूद के लिए सर झुका दिये और गर्दनें डाल दीं मन्क़ूल है कि उस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और उन्होंने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये।

(बकिया सफ़हा 515 का) जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा था कि हम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को सोता हुआ देखना चाहते हैं चुनान्चे इसकी कोशिश की गई और उन्हें ऐसा मौक़ा बहम पहुंचा दिया गया उन्होंने देखा कि हज़रत ख़्वाब में हैं और अ़साए शरीफ़ पहरा दे रहा है यह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्योंकि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उसका जादू काम नहीं करता मगर फ़िरऔन ने उन्हें जादू करने पर मजबूर किया उसकी मग़फ़िरत के वह अल्लाह तआ़ला से तालिब और उम्मीदवार हैं (फ़ा98) फ़रमांबरदारों को सवाब देने में (फ़ा99) बलिहाज़ अ़ज़ाब करने के नाफ़रमानों पर (फ़ा100) यानी काफ़िर मिस्ल फ़िरऔन के (फ़ा101) कि मर कर ही उससे छूट सके (फ़ा102) ऐसा जीना जिससे कुछ नफ़ा उठा सके (फ़ा103) यानी जिनका ईमान पर ख़ात्मा हुआ हो और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में नेक अमल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाये हों (फ़ा104) कुफ़्र की नजासत और मआ़सी की गन्दगी से। (फ़ा105) जबकि फ़िरऔन मोअ्जेज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुआ और बनी इसराईल पर ज़ुल्म व सितम और ज़्यादा करने लगा (फ़ा106) मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फ़िरऔनी लश्कर पीछे से आये तो अन्देशा न कर (फ़ा107) अपना अ़सा मार कर। (फ़ा108) दरिया में ग़र्क़ होने का मूसा अ़लैहिस्सलाम हुक्मे इलाही पाकर शब के अव्वल वक़्त सत्तर हज़ार बनी इसराईल को हमराह लेकर मिस्र से रवाना हो गए (फ़ा109) जिन में छः लाख क़िबती थे।

(बकिया सफ़हा 516 का) हैं कि मां बाप ने परवरिश की दीनी पेशवाओं ने हिदायत की औलिया ने हाजत-रवाई फ़रमाई बुज़ुर्गों ने बला दफ़अ्. की। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि उमूरे ज़ाहिर में मन्शा व सबब की तरफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगरचे हक़ीक़त में उनका मूजिद अल्लाह तआ़ला है और क़ुरआने करीम में ऐसी निस्बतें बकसरत वारिद हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा123) चालीस दिन पूरे करके तौरेत लेकर (फ़ा124) उनके हाल पर। (फ़ा125) कि वह तुम्हें तौरेत अ़ता फ़रमाएगा जिस में हिदायत है नूर है हज़ार सूरतें हैं हर सूरत में हज़ार आयतें हैं (फ़ा126) और ऐसा नाक़िस काम किया कि गो-साला को पूजने लगे तुम्हारा वादा तो मुझ से यह था कि मेरे हुक्म की इताअ़त करोगे और मेरे दीन पर क़ायम रहोगे।

(बकिया सफ़हा 517 का) रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे। (फ़ा137) इस पर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम उनसे अलाहिदा हो गए और उनके साथ बारह हज़ार वह लोग जिन्होंने बछड़े की परस्तिश न की थी जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ लाये तो आपने उनके शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे तब आपने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया यह फ़ित्ना की आवाज़ है जब क़रीब पहुंचे और हज़रत हारून को देखा तो ग़ैरते दीनी से जो आपकी सरिश्त थी जोश में आकर उनके सर के बाल दाहिने हाथ में और दाढ़ी बायें में पकड़ी और (फ़ा138) और मुझे ख़बर दे देते यानी जब उन्होंने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यों नहीं आ मिले कि तुम्हारा उन से जुदा होना भी उनके हक़ में एक ज़जर होता। (फ़ा139) यह सुनकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए चुनान्चे (फ़ा140) तूने ऐसा क्यों किया इसकी वजह बता (फ़ा141) यानी मैंने हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम को देखा और उनको पहचान लिया वह अस्पे हयात पर सवार थे मेरे दिल में यह बात आई कि मैं उनके घोड़े के निशाने क़दम की ख़ाक ले लूं (फ़ा142) उस बछड़े में जिसको बनाया था।

(बकिया सफ़हा 518 का) उसकी इबादत पर क़ाइम रहा (फ़ा149) चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलम ने ऐसा किया और जब आप सामरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराईल से मुख़ातबा फ़रमा कर दीने हक़ का बयान फ़रमाया और इरशाद किया (फ़ा150) यानी क़ुरआने पाक कि वह ज़िक्रे अ़ज़ीम है और जो इसकी तरफ़ मुतवज्जह हो उसके लिए इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया के ऐसे हालात का ज़िक्र व बयान है जो फ़िक्र करने और इबरत हासिल करने के लायक़ हैं (फ़ा151) यानी क़ुरआन से और इस पर ईमान न लाये और उसकी हिदायतों से फ़ायदा न उठाये (फ़ा152) गुनाहों का बारे गिरां (फ़ा153) यानी उस गुनाह के अ़ज़ाब में। (फ़ा154) लोगों को महशर में हाज़िर करने के लिए मुराद इससे नफ़ख़ए सानिया है (फ़ा155) यानी काफ़िरों को इस हाल में (फ़ा156) और काले मुंह (फ़ा157) आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दगानीए दुनिया की मुद्दत बहुत क़लील मालूम होगी। (फ़ा158) आपस में एक दूसरे से (फ़ा159) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुनिया में रहने की मिक़्दार भूल जायेंगे। (फ़ा160) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि क़बीला सक़ीफ़ के एक आदमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा161) जो उन्हें रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ की तरफ़ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रहमान के हुज़ूर पेश होने को और यह पुकारने वाले हज़रत इसराफ़ील होंगे। (फ़ा162) और उस दावत से कोई इनहेराफ़ न कर सकेगा।

(बक़िया सफ़हा 519 का) ज़ुहूरे ताम होगा (फ़ा169) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया जिसने शिर्क किया टोटे में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन ज़ुल्म है और जो उस ज़ुल्म का ज़ेरबार होकर मौक़फ़े क़ियामत में आये उससे बढ़ कर नामुराद कौन (फ़ा170) **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि ताअ़त और नेक आमाल सब की क़बूलियत ईमान के साथ मशरूत है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अमल बेकार। (फ़ा171) फ़रायज़ के छोड़ने और ममनूआ़त का इरतेकाब करने पर। (फ़ा172) जिससे उन्हें नेकियों की रग़बत और बदियों से नफ़रत हो और वह पन्द व नसीहत हासिल करें। (फ़ा173) जो असल मालिक है और तमाम बादशाह उसके मोहताज। (फ़ा174) **शाने नुज़ूलः** जब हज़रत जिबरील क़ुरआने करीम लेकर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम उनके साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाये इस पर यह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया गया कि आप मशक़्क़त न उठायें और सूरह क़ियामा में अल्लाह तआ़ला ने खुद ज़िम्मा लेकर आपकी और ज़्यादा तसल्ली फ़रमा दी। (फ़ा175) कि शजरे ममनूआ़ के पास न जायें (फ़ा176) इससे मालूम हुआ कि साहबे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उसकी ताज़ीम व एहतेराम बजा लाने से एअ़राज़ करना दलील हसद व अ़दावत है इस आयत में शैतान का हज़रत आदम को सजदा न करना आपके साथ उसकी दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया। (फ़ा177) और अपनी ग़िज़ा और ख़ुराक के लिए ज़मीन जोतने खेती करने दाना निकालने पीसने पकाने की मेहनत में मुब्तला हो और चूंकि औरत का नफ़क़ा मर्द के ज़िम्मा है इस लिए इस तमाम मेहनत की निस्बत सिर्फ़ आदम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ फ़रमाई गई।

(बक़िया सफ़हा 520 का) वबाल से नजात पायेगा। (फ़ा187) और मेरी हिदायत से रूगरदानी की (फ़ा188) दुनिया में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या उन सब में दुनिया की तंग ज़िन्दगानी यह है कि हिदायत का इत्तेबाअ़ न करने से अ़मले बद और हराम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से महरूम होकर गिरिफ़्तारे हिर्स हो जाये और कसरते माल व अस्बाब से भी उसको फ़राग़े ख़ातिर और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो दिल हर चीज़ की तलब में आवारा हो और हिर्स के ग़मों से कि यह नहीं वह नहीं हाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिने मुतवक्किल की तरह उसको सुकून व फ़राग़ हासिल ही न हो जिसको हयाते तय्येबा कहते हैं *क़ा-ल तआ़ला फ़-ल-नुहयि-यन्नहू हयातन् तय्यि-बतन्* और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी यह है कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ कि काफ़िर पर निन्नानवे अज़्दहे उसकी क़ब्र में मुसल्लत किये जाते हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया **शाने नुज़ूलः** यह आयत असवद बिन अब्दुलउज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के हक़ में नाज़िल हुई और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिससे एक तरफ़ की पसलियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब हैं जहां ज़क़्क़ूम (थोहड़) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उनके पीप खाने पीने को दी जाएगी और दीन में तंग ज़िन्दगानी यह है कि नेकी की राहें तंग हो जायें और आदमी कसबे हराम में मुब्तला हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उसमें कुछ भलाई नहीं और यह तंग ज़िन्दगानी है। (तफ़सीर कबीर व ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह) (फ़ा189) दुनिया में (फ़ा190) तो उन पर ईमान न लाया और (फ़ा191) जहन्नम की आग में जला करेगा

(बक़िया सफ़हा 521 का) दुनिया ही में (फ़ा197) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा198) इससे नमाज़े फ़ज्र मुराद है (फ़ा199) इससे ज़ुहर व अस्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़ आख़ीर में आफ़्ताब के ज़वाल व ग़ुरूब के दर्मियान वाक़ेअ़ हैं (फ़ा200) यानी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो (फ़ा201) फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ें इनकी ताकीदन तकरार फ़रमाई गई और बाज़ मुफ़स्सिरीन क़बल ग़ुरूब से नमाज़े अस्र और अतराफ़े निहार से ज़ुहर मुराद लेते हैं उनकी तौजीह यह है कि नमाज़े ज़ुहर ज़वाल के बाद है और उस वक़्त दिन के निस्फ़े अव्वल और निस्फ़े आख़िर के अतराफ़ मिलते निस्फ़े अव्वल की इन्तेहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तेदा (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा202) अल्लाह के फ़ज़्ल व अ़ता और उसके इनाम व इकराम से तुम्हें उम्मत के हक़ में शफ़ीअ़ बना कर तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उसने फ़रमाया है व ल-सौ-फ़ युअ़ती-क रब्बु-क फ़तरज़ा। (फ़ा203) यानी असनाफ़ व अक़साम कुफ़्फ़ार यहूद व नसारा वग़ैरह को जो दुनियवी साज़ो सामान दिया है मोमिन को चाहिए कि उसको इस्तेहसान व एअ़्जाब की नज़र से न देखे हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नाफ़रमानों के तुमतराक़ न देखो लेकिन यह देखो कि गुनाह और मअ़सियत की ज़िल्लत किस तरह उनकी गर्दनों से नमूदार है। (फ़ा204) इस तरह कि जितनी उन पर नेअ़्मत ज़्यादा हो उतनी ही उनकी सरकशी और उनका तुग़ियान बढ़े और वह सज़ाए आख़िरत के सज़ावार हों। (फ़ा205) यानी जन्नत और उसकी निअ़्मतें (फ़ा206) और उसका मुकल्लफ़ नहीं करते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने अहल की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो बल्कि। (फ़ा207) और उन्हें भी तू रोज़ी के ग़म में न पड़ अपने दिल को अमरे आख़िरत के लिए फ़ारिग़ रख कि जो अल्लाह के काम में होता है अल्लाह उसकी कार-साज़ी करता है। (फ़ा208) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा209) जो उनकी सेहते नबुव्वत पर दलालत करे बावजूदेकि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मोअ़जेज़ात का मुतवातिर ज़हूर हो रहा था फिर कुफ़्फ़ार इन सब से अन्धे बने और उन्होंने हुज़ूर की निस्बत यह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते उसके जवाब में अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है (फ़ा210) यानी क़ुरआन और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बशारत और आपकी नबुव्वत व बेअ़सत का ज़िक्र यह कैसे आज़म आयात हैं उनके होते हुए और किसी निशानी की तलब करने का क्या मौक़ा है (फ़ा211) रोज़े क़ियामत शाने नुज़ूल मुशरिकीन ने कहा था कि हम ज़माना के हवादिस और इन्क़लाब का इन्तेज़ार करते हैं कि कब मुसलमानों पर आयें और उनका क़िस्सा तमाम हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसलमानों की तबाही व बरबादी का इन्तेज़ार कर रहे हो और मुसलमान तुम्हारे उक़ूबत व अ़ज़ाब का इन्तेज़ार कर रहे हैं (फ़ा212) जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत क़ायम होगी।

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُعْرِضُونَ ○ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ○ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى

الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ○ قَالَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ○ مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا ۖ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ○

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ ۖ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ○

सूरत अम्बियाइ

मक्की है इसमें 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्त–र–ब लिन्नासि ह़िसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़लतिम् मुअ़्रिज़ू–न(1)मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिर्रब्बिहिम् मुह़्दसिन् इल्लस्त–मअूहु व हुम् यल्–अ़बून(2)लाहि–यतन् क़ुलूबुहुम् व अ–सर्रुन् नज्वल् लज़ी–न ज–लमू हल् हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् अ–फ़–तअ्तूनस् सिह्–र व अन्तुम् तुब्सिरून(3)क़ा–ल रब्बी यअ़्–लमुल् क़ौ–ल फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअुल् अ़लीम(4)बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह़्लामिम् बलिफ़्तराहु बल् हु–व शाअ़िरुन् फ़ल्यअ्तिना बिआ–यतिन् कमा उर्सिलल् अव्वलून(5)मा आ–म–नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्–यतिन् अह़्लक्नाहा अ–फ़हुम् युअ्मिनून(6)व मा अर्सल्ना क़ब्–ल–क इल्ला रिजालन् नूह़ी इलैहिम् फ़स्–अलू अह़्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्–लमून(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

लोगों का हिसाब नज़दीक और वह ग़फ़लत में मुंह फेरे हैं।(1) (फ़2) जब उनके रब के पास से उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए।(2) (फ़3) उनके दिल खेल में पड़े हैं (फ़4) और ज़ालिमों ने आपस में खुफ़िया मश्वरत की (फ़5) कि यह कौन हैं एक तुम्ही जैसे आदमी तो हैं (फ़6) क्या जादू के पास जाते हो देख भाल कर।(3) नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आसमानों और ज़मीन में हर बात को और वही है सुनता जानता।(4) (फ़7) बल्कि बोले परेशान ख़्वाबें हैं (फ़8) बल्कि उनकी गढ़त है(फ़9) बल्कि यह शायर हैं (फ़10) तो हमारे पास कोई निशानी लायें जैसे अगले भेजे गए थे।(5) (फ़11) इनसे पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हमने हलाक किया तो क्या यह ईमान लायेंगे।(6) (फ़12) और हमने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम 'वह़ी' करते (फ़13) तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो।(7) (फ़14)

(फ़1) सूरत अम्बिया मक्की है इस में सात रुकूअ़ और एक सौ बारह आयतें और 1186 कलिमे और 4890 हरफ़ हैं (फ़2) यानी हिसाबे आमाल का वक़्त रोज़े क़ियामत क़रीब आगया और लोग अभी तक ग़फ़लत में हैं शाने नुज़ूल यह आयत मुन्किरीने बअ़्स के हक़ में नाज़िल हुई जो मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और रोज़े क़ियामत को गुज़रे हुए ज़माना के ऐतबार से क़रीब फ़रमाया गया क्योंकि जितने दिन गुज़रते जाते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है। (फ़3) न उससे पन्द पज़ीर हों न इबरत हासिल करें न आने वाले वक़्त के लिए कुछ तैयारी करें। (फ़4) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं। (फ़5) और उसके इख़्फ़ा में बहुत मुबालग़ा किया मगर अल्लाह तआ़ला ने उनका राज़ फ़ाश कर दिया और बयान फ़रमा दिया कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत यह कहते हैं। (फ़6) यह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब यह बात लोगों के ज़ेहन नशीन कर दी जाएगी कि वह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान नहीं लाएगा हुज़ूर के ज़माना के कुफ़्फ़ार ने यह बात कही और उसको छुपाया लेकिन आज कल के बाज़ बेबाक यह कलिमा एलान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते कुफ़्फ़ार यह मक़ूला कहते वक़्त जानते थे कि उनकी बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्योंकि लोग रात दिन मोअ़्जेज़ात देखते हैं वह किस तरह बावर कर सकेंगे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी तरह बशर हैं इस (बक़िया सफ़हा 556 पर)

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا

هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ

دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۤ

اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

व मा ज–अ़ल्नाहुम् ज–स–दंल् ला यअ्कुलूनत्–तआ–म व मा कानू ख़ालिदीन(8)सुम्–म स– दक़्नाहुमुल् वअ्–द फ़–अन्जैनाहुम् व मन् नशाउ व अह्लक्नल् मुस्रिफ़ीन(9)ल–क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम् अ–फ़ला तअ्क़िलून(10)व कम् क़–सम्ना मिन् क़र्–यतिन् कानत् ज़ालि–म–तंव् व अन्शअ्ना बअ्–दहा क़ौमन् आ–ख़रीन(11)फ़–लम्मा अ–हस्सू बअ्–सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून (12)ला तर्कुज़ू वर्जिऊ इला मा उत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् ल–अ़ल्लकुम् तुस्अलून(13)क़ालू या वै–लना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(14)फ़मा ज़ालत् तिल्–क दअ्वाहुम् ह़त्ता ज–अ़ल्नाहुम् ह़सीदन् ख़ामिदीन(15)व मा ख़–लक़्–नस्समा–अ वल्–अर्–ज़ व मा बै–नहुमा लाअ़िबीन(16)लौ अ–रद्ना अन् नत्तख़ि–ज लह्वल् लत्–त– ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअ़िलीन(17)बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्ह़क़्क़ि अ़–लल्बातिलि फ़–यद–मग़ुहू फ़इज़ा हु–व ज़ाहिक़ुन् व लकुमुल्वैलु मिम्मा तसिफ़ून(18)व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि

और हमने उन्हें (फ़15) ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खायें (फ़16) और न वह दुनिया में हमेशा रहें।(8) फिर हमने अपना वादा उन्हें सच्चा कर दिखाया (फ़17) तो उन्हें नजात दी और जिनको चाही (फ़18) और हद से बढ़ने वालों को (फ़19) हलाक कर दिया।(9) बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ (फ़20) एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है (फ़21) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(10) (फ़22) (रुकूअ़ 1)और कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं कि वह सितमगार थीं (फ़23) और उनके बाद और क़ौम पैदा की।(11) तो जब उन्होंने (फ़24) हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वह उससे भागने लगे।(12) (फ़25) न भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की तरफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ़ शायद तुम से पूछना हो।(13) (फ़26) बोले हाय ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे।(14) (फ़27) तो वह यही पुकारते रहे यहां तक कि हमने उन्हें कर दिया काटे हुए बुझे हुए।(15) (फ़28) और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके दर्मियान है अ़बस न बनाए।(16) (फ़29) अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते (फ़30) तो अपने पास से इख़्तियार करते अगर हमें करना होता।(17)(फ़31)बल्कि हम हक़ को बातिल पर फेंक मारते हैं तो वह उसका भेजा निकाल देता है तो जभी वह मिट कर रह जाता है (फ़32) और तुम्हारी ख़राबी है (फ़33) उन बातों से जो बनाते हो। (18) (फ़34) और उसी के हैं जितने आसमानों

(फ़15) यानी अम्बिया को (फ़16) तो उन पर खाने पीने का एतेराज़ करना और यह कहना कि *मा-लिहाज़र्-रसूलि या कुलुत्-तआ़म* महज़ बेजा है तमाम अम्बिया का यही हाल था वह सब खाते भी थे पीते भी थे (फ़17) उनके दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें नजात देने का (फ़18) यानी ईमानदारों को जिन्होंने अम्बिया की तस्दीक़ की। (फ़19) जो अम्बिया की तकज़ीब करते थे। (फ़20) ऐ गरोहे क़ुरैश। (फ़21) अगर तुम इस पर अमल करो या यह माना हैं कि वह किताब तुम्हारी ज़बान में है या यह कि इसमें तुम्हारे लिए नसीहत है या यह कि इसमें तुम्हारे दीन और दुनियवी उमूर और हवाइज का बयान है। (फ़22) कि ईमान लाकर इस इ़ज़्ज़त व करामत और सआ़दत को हासिल करो। (फ़23) यानी काफ़िर थीं। (फ़24) यानी उन ज़ालिमों ने। (फ़25) शाने नुज़ूलः मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि सरज़मीने यमन में एक बस्ती है जिसका नाम हसूर है वहां के रहने वाले अ़रब थे उन्होंने अपने नबी की तकज़ीब की और उनको क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर बुख़्त नसर को मुसल्लत किया उसने उन्हें क़त्ल किया और गिरिफ़्तार किया और उसका यह अमल जारी रहा तो यह लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो मलाइका ने उनसे बतरीक़े तन्ज़ कहा (जो अगली आयत में है)। (फ़26) कि तुम पर क्या गुज़री **(बक़िया सफ़्हा 556 पर)**

وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ

व मन् अिन्दहू ला यस्तक्बिरू–न अन् अिबा–दतिही व ला यस्तह्सिरून(19)युसब्बिहूनल् लै–ल वन्नहा–र ला यफ़्तुरून(20)अमित्त–ख़ज़ू आलि–हतम् मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून(21)लौ का–न फ़ीहिमा आलि–हतुन् इल्लल्लाहु ल–फ़–स–दता फ़सुब्हानल्लाहि रब्बिल् अर्शि अम्मा यसिफ़ून(22)ला युस्अलु अम्मा यफ़्अलु व हुम् युस्अलून(23)अमित्त–ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि–ह–तन् क़ुल् हातू बुर्हा–नकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्–मअि–य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली बल् अक्सरुहुम् ला यअ्–लमूनल् हक़्–क़ फ़हुम् मुअ्रिज़ून(24)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला–ह इल्ला अना फ़अ्बुदून(25)व क़ालुत्त–ख़–ज़र्–रह्मानु व–ल–दन् सुब्हा– नहू बल् अिबादुम् मुक्रमून(26)ला यस्बिक़ू–नहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ्–मलून(27) यअ्–लमु मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अून इल्ला लि–मनिर्तज़ा व हुम् मिन् ख़श्–यतिही मुश्फ़िक़ून(28)व मंय्यक़ुल्

और ज़मीन में हैं (फ़ा35) और उसके पास वाले (फ़ा36) उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें।(19) रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते।(20) (फ़ा37) क्या उन्होंने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा बना लिए हैं (फ़ा38) कि वह कुछ पैदा करते हैं।(21) (फ़ा39) अगर आसमान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वह (फ़ा40) तबाह हो जाते (फ़ा41) तो पाकी है अल्लाह अर्श के मालिक को उन बातों से जो यह बनाते हैं।(22) (फ़ा42) उससे नहीं पूछा जाता जो वह करे (फ़ा43) और इन सब से सवाल होगा।(23) (फ़ा44) क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ (फ़ा45) अपनी दलील लाओ (फ़ा46) यह क़ुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है (फ़ा47) और मुझसे अगलों का तज़किरा (फ़ा48) बल्कि उनमें अक्सर हक़ को नहीं जानते तो वह रूगरदाँ हैं।(24) (फ़ा49) और हमने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर यह कि हम उसकी तरफ़ 'वही' फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मअ्बूद नहीं तो मुझी को पूजो।(25) और बोले रहमान ने बेटा इख़्तियार किया (फ़ा50) पाक है वह (फ़ा51) बल्कि बन्दे हैं इज़्ज़त वाले।(26) (फ़ा52) बात में उससे सबक़त नहीं करते और वह उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं।(27) वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है (फ़ा53) और शफ़ाअ़त नहीं करते मगर उसके लिए जिसे वह पसन्द फ़रमाए (फ़ा54) और वह उसके ख़ौफ़ से डर रहे हैं।(28) और उनमें जो कोई कहे

(फ़ा35) वह सब का मालिक है और सब उसके ममलूक तो कोई उसकी औलाद कैसे हो सकता है ममलूक होने और औलाद होने में मुनाफ़ात है (फ़ा36) उसके मुक़र्रबीन जिन्हें उसके करम से उसके हुज़ूर क़ुर्ब व मन्ज़िलत हासिल है (फ़ा37) हर वक़्त उसकी तस्बीह में रहते हैं हज़रत कअ्ब अहबार ने फ़रमाया कि मलाइका के लिए तस्बीह ऐसी है जैसी कि बनी आदम के लिए सांस लेना। (फ़ा38) जवाहिरे अरज़िया से मिस्ल सोने चांदी पत्थर वग़ैरह के (फ़ा39) ऐसा तो नहीं है और न यह हो सकता है कि ख़ुद बे जान हो और वह किसी को जान दे सके तो फिर उसको मअ्बूद ठहराना और इलाह क़रार देना कितना खुला बातिल है इलाह वही है जो हर मुमकिन पर क़ादिर हो जो क़ादिर नहीं वह इलाह कैसा। (फ़ा40) आसमान व ज़मीन (फ़ा41) क्योंकि अगर ख़ुदा से वह ख़ुदा मुराद लिए जायें जिनकी ख़ुदाई के बुत परस्त मोअ्तक़िद हैं तो फ़साद आ़लम का लुज़ूम ज़ाहिर है क्योंकि वह जमादात हैं तदबीरे आ़लम पर असलन क़ुदरत नहीं रखते और अगर तअ्मीम की जाये तो भी लुज़ूमे फ़साद यक़ीनी है क्योंकि अगर दो ख़ुदा फ़र्ज़ किये जायें तो दो हाल से ख़ाली नहीं या वह दोनों मुत्तफ़िक़ होंगे या मुख़्तलिफ़ अगर शय वाहिद **(बक़िया सफ़हा 556 पर)**

يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ښ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَھٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ

मिन्हुम् इन्नी इलाहुम् मिन् दूनिही फ़ज़ालि–क नज्ज़ीहि जहन्न–म कज़ालि–क नज्ज़िज़्–ज़ालिमीन (29)अ–व लम् य–रल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नस्–समावाति वल्अर्–ज़ का–नता रत्क़न् फ़–फ़–तक़्नाहुमा व ज–अ़ल्ना मिनल्माइ कुल्–ल शैइन् हय्यिन् अ–फ़ला युअ्मिनून(30)व ज–अ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि–य अन् तमी–द बिहिम् व ज–अ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल् ल–अ़ल्लहुम् यह्–तदून(31)व ज–अ़ल्नस्समा–अ सक़्फ़म् मह़्फ़ूज़ंव् व हुम् अन् आयातिहा मुअ्रिज़ून(32)व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ल्लै–ल वन्नहा–र वश्शम्–स वल्क़–म–र कुल्लुन् फ़ी फ़–लकिंय्यस्बहून(33)व मा ज–अ़ल्ना लि–ब–शरिम् मिन् क़ब्लिकल् ख़ुल्–द अ–फ़इम् मित्–त फ़हुमुल्–ख़ालिदून(34) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ–क़तुल् मौति व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्ख़ैरि फ़ित्–न–तन् व इलैना तुर्–जअून(35) व इज़ा रआ–कल्लज़ी–न क–फ़रू इंय्यत्तख़िज़ू–न–क इल्ला हुज़ुवन् अहाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि–ह–तकुम् व हुम् बिज़िक्रिर् रह़्मानि

कि मैं अल्लाह के सिवा मअ़बूद हूं (फ़55) तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को।(29) (रुकूअ़ 2) क्या काफ़िरों ने यह ख़्याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला (फ़56) और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई (फ़57) तो क्या वह ईमान न लायेंगे।(30) और ज़मीन में हमने लंगर डाले (फ़58) कि उन्हें लेकर न काँपे और हमने उसमें कुशादा राहें रखीं कि कहीं वह राह पायें।(31) (फ़59) और हमने आसमान को छत बनाया निगाह रखी गई (फ़60) और वह (फ़61) उसकी निशानियों से रूगरदाँ हैं।(32) (फ़62)और वही है जिसने बनाए रात (फ़63) और दिन (फ़64) और सूरज और चाँद हर एक एक घेरे में पैर रहा है।(33) (फ़65) और हमने तुमसे पहले किसी आदमी के लिए दुनिया में हमेशगी न बनाई (फ़66) तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो यह हमेशा रहेंगे।(34) (फ़67) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़माइश करते हैं बुराई और भलाई से (फ़68) जांचने को (फ़69) और हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौट कर आना है।(35) (फ़70) और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा (फ़71) क्या यह हैं वह जो तुम्हारे ख़ुदाओं को बुरा कहते हैं और वह (फ़72) रहमान ही की याद से

(फ़55) यह कहने वाला इबलीस है जो अपने इबादत की दावत देता है फ़रिश्तों में और कोई ऐसा नहीं जो यह कलिमा कहे। (फ़56) बन्द होना या तो यह है कि एक दूसरे से मिला हुआ था उनमें फ़सल पैदा करके उन्हें खोला या यह माना हैं कि आसमान बन्द था बईं माना कि उससे बारिश नहीं होती थी ज़मीन बन्द थी बईं माना कि उससे रोएदगी पैदा नहीं होती थी तो आसमान का खोलना यह है कि उससे बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना यह है कि उससे सब्ज़ा पैदा होने लगा। (फ़57) यानी पानी को जानदारों की हयात का सबब किया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा माना यह हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुआ है और बाज़ों ने कहा इससे नुत्फ़ा मुराद है। (फ़58) मज़बूत पहाड़ों के (फ़59) अपने सफ़रों में और जिन मक़ामात का क़स्द करें वहां तक पहुंच सकें (फ़60) गिरने से (फ़61) यानी कुफ़्फ़ार (फ़62) यानी आसमानी कायनात सूरज चांद सितारे और अपने अपने अफ़लाक में उनकी हरकतों की कैफ़ियत और अपने अपने मतालेअ़ से उनके तुलूअ़ और गुरूब और उनके अ़जाइबे अहवाल जो सानेअ़ आलम के वुजूद और उसकी वहदत और उसके कमाले क़ुदरत व हिकमत पर दलालत करते हैं कुफ़्फ़ार इन सब से एअ़राज़ करते हैं और इन दलाइल से फ़ाइदा नहीं उठाते। (फ़63) तारीक कि उसमें आराम करें (फ़64) रौशन कि उसमें मआ़श वग़ैरह के काम अन्जाम दें। (फ़65) जिस तरह कि तैराक पानी में (फ़66) **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दुश्मन अपने ज़लाल व इनाद से कहते थे कि हम हवादिसे ज़माना का इन्तेज़ार कर रहे हैं अ़न्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला **(बक़िया सफ़हा 556 पर)**

هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ

كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ

يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ

हुम् काफ़िरून(36)ख़ुलिक़ल् इन्सानु मिन् अ़-जलिन् सउरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ्जिलून(37)व यक़ूलू-न मता हाज़ल् वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(38)लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहिहिमुन्ना-र व ला अन् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून(39)बल् तअ्तीहिम् बग़्त-तन् फ़-तब्-हतुहुम् फ़ला यस्त-तीऊ-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून(40)व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम् मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(41)क़ुल् मंय्यक्लउकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्-रह्मानि बल् हुम् अ़न् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्रिज़ून(42)अम् लहुम् आलि-हतुन् तम्नअुहुम् मिन् दूनिना ला यस्ततीऊ-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्हबून(43)बल् मत्तअ्ना हाउलाइ व आबा-अहुम् हत्ता ता-ल अ़लैहिमुल् अ़ुमुरु अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल् अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा अ-फ़हुमुल् ग़ालिबून(44)क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह्यि

मुन्किर हैं।(36) (फ़ा73) आदमी जल्द बाज़ बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊँगा मुझ से जल्दी न करो। (37) (फ़ा74) और कहते हैं कब होगा यह वादा (फ़ा75) अगर तुम सच्चे हो।(38) किसी तरह जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे अपने मुंहों से आग (फ़ा76) और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद हो।(39) (फ़ा77) बल्कि वह उन पर अचानक आ पड़ेगी (फ़ा78) तो उन्हें बे हवास कर देगी फिर न वह उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत दी जाएगी।(40) (फ़ा79) और बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ ठट्ठा किया गया (फ़ा80) तो मसख़रगी करने वालों का ठट्ठा उन्हीं को ले बैठा।(41) (फ़ा81) (रुकूअ़ 3) तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है रहमान से (फ़ा82) बल्कि वह अपने रब की याद से मुँह फेरे हैं।(42) (फ़ा83) क्या उनके कुछ ख़ुदा हैं (फ़ा84) जो उनको हम से बचाते हैं (फ़ा85) वह अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते (फ़ा86) और न हमारी तरफ़ से उनकी यारी हो।(43) बल्कि हमने उनको (फ़ा87) और उनके बाप दादा को बरतावा दिया (फ़ा88) यहां तक कि ज़िन्दगी उन पर दराज़ हुई (फ़ा89) तो क्या नहीं देखते कि हम (फ़ा90) ज़मीन को उसके किनारों से घटाते आ रहे हैं (फ़ा91) तो क्या यह ग़ालिब होंगे।(44) (फ़ा92) तुम फ़रमाओ कि मैं तुमको सिर्फ़ 'वही' से डराता हूं (फ़ा93)

(फ़ा73) कहते हैं कि हम रहमान को जानते ही नहीं इस जहल व ज़लाल में मुब्तला होने के बावजूद आपके साथ तमस्ख़ुर करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उनका अपना हाल है। (फ़ा74) **शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्द अ़ज़ाब नाज़िल कराइये इस आयत में फ़रमाया गया कि अब तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा यानी जो वादे अ़ज़ाब के दिये गए हैं उनका वक़्त क़रीब आ गया है चुनांचे रोज़े बद्र वह मन्ज़र उनके नज़र के सामने आ गया। (फ़ा75) अ़ज़ाब का या क़ियामत का यह उनके इस्तेअ्.जाल का बयान है। (फ़ा76) दोज़ख़ की (फ़ा77) अगर वह यह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ाइम न रहते और अ़ज़ाब में जल्दी न करते। (फ़ा78) क़ियामत (फ़ा79) तौबा व मअ्.ज़रत की (फ़ा80) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा81) और वह अपने इस्तेहज़ा और मसख़रगी के वबाल व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए इस में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आपके साथ इस्तेहज़ा करने वालों का भी यही अन्जाम होना है। (फ़ा82) यानी उसके अ़ज़ाब से (फ़ा83) जब ऐसा है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही का क्या ख़ौफ़ हो और वह अपनी हिफ़ाज़त करने वाले को क्या पहचानें। (फ़ा84) हमारे सिवा उनके ख़्याल में (फ़ा85) और हमारे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ إِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ
الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۚ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۚ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ أَنْزَلْنٰهُ ۚ أَفَأَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ إِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ أَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ

व ला यस्मअुस् सुम्मुद्दुआ–अ इज़ा मा युन्ज़रून(45)व लइम् मस्सत्हुम् नफ़्हतुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बि–क ल–यकूलुन्–न या वै–लना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(46)व न–ज़अुल् मवाज़ीनल् क़िस्–त लियौमिल् क़िया–मति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन् व इन् का–न मिस्क़ा–ल ह़ब्बतिम् मिन् ख़र्–दलिन् अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीन(47)व ल–क़द् आतैना मूसा व हारूनल् फ़ुर्क़ा–न व ज़ियाअंव् व ज़िक्रल् लिल्मुत्तक़ीन(48)अ़ल्लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्सा–अ़ति मुश्फ़िक़ून(49)व हाज़ा ज़िक्रुम् मुबा–रकुन् अन्ज़ल्नाहु अ–फ़–अन्तुम् लहू मुन्किरून(50)व ल–क़द् आतैना इब्राही–म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन(51)इज़् क़ा–ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित् तमासीलुल् लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून(52)क़ालू व–जद्ना आबा–अना लहा आ़बिदीन(53)क़ा–ल ल–क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम् मुबीन(54)क़ालू अजिअ्–तना बिल्ह़क़्क़ि अम् अन्–त मिनल्लाअ़िबीन(55)क़ा–ल बर्रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति

और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जयें।(45) (फ़94) और अगर उन्हें तुम्हारे रब के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाय ख़राबी हमारी, बेशक हम ज़ालिम थे।(46) (फ़95) और हम अ़द्ल की तराजूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ (फ़96) राई के दाना के बराबर हो तो हम उसे ले आयेंगे और हम काफ़ी हैं हिसाब को।(47) और बेशक हमने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया (फ़97) और उजाला (फ़98) और परहेज़गारों को नसीहत।(48) (फ़99) वह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत का अन्देशा लगा हुआ है।(49) और यह है बरकत वाला ज़िक्र कि हमने उतारा (फ़100) तो क्या तुम इसके मुन्किर हो।(50) (रुकूअ़ 4) और बेशक हमने इब्राहीम को (फ़101) पहले ही से उसकी नेक राह अ़ता कर दीं और हम उससे ख़बरदार थे।(51) (फ़102) जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा यह मूरतें क्या हैं (फ़103) जिनके आगे तुम आसन मारे हो।(52) (फ़104) बोले हमने अपने बाप दादा को इनकी पूजा करते पाया।(53) (फ़105) कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो।(54) बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो।(55) (फ़106) कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो रब है आसमानों

(फ़94) यानी काफ़िर हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़ा न उठाने में बहरे की तरह हैं (फ़95) नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाये। (फ़96) आमाल में से (फ़97) यानी तौरेत अ़ता की जो हक़ व बातिल में तफ़रक़ा करने वाली है। (फ़98) यानी रौशनी है कि उससे नजात की राह मालूम होती है (फ़99) जिससे वह पन्द पज़ीर होते हैं और दीनी उमूर का इल्म हासिल करते हैं (फ़100) अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर यानी क़ुरआन पाक यह कसीरुल ख़ैर है और ईमान लाने वालों के लिए इसमें बड़ी बरकतें हैं (फ़101) उनकी इब्तेदाई उम्र में बालिग़ होने के। (फ़102) कि वह हिदायत व नबुव्वत के अहल हैं (फ़103) यानी बुत जो दरिन्दों परिन्दों और इन्सानों की सूरतों के बने हुए हैं (फ़104) और उनकी इबादत में मश्ग़ूल हो (फ़105) तो हम भी उनकी इक़्तेदा में वैसा ही करने लगे। (फ़106) चूंकि उन्हें अपने तरीक़ा का गुमराही होना बहुत बईद मालूम होता था और उसका इन्कार करना वह बहुत बड़ी बात जानते थे इस लिए उन्होंने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से यह कहा कि क्या आप यह बात वाक़ेई तौर पर हमें बता रहे हैं या बतरीक़े खेल के फ़रमाते हैं उसके जवाब में आपने हज़रत मलिके अल्लाम की रबूबियत का इस्बात फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप खेल के तरीक़े पर कलाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि हक़ का इज़हार फ़रमाते हैं चुनांचे आपने।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِیْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰی ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ ۝ وَتَاللّٰهِ لَاَكِیْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِیْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ
جُذٰذًا اِلَّا كَبِیْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَیْهِ یَرْجِعُوْنَ ۝ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًی یَّذْكُرُهُمْ یُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِیْمُ ۝ قَالُوْا
فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤی اَعْیُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَشْهَدُوْنَ ۝ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۝ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِیْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا
یَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤی اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰی رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ یَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُكُمْ شَیْـًٔا وَّلَا یَضُرُّكُمْ ۝ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ

वल्अर्ज़िल् लज़ी फ़–त–रहुन्–न व अना अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन(56)व तल्लाहि ल–अकीदन्–न अस्ना–मकुम् बअ़्–द अन् तुवल्लू मुदबिरीन(57)फ़–ज–अ़–लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल् लहुम् ल–अ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअू़न(58)क़ालू मन् फ़–अ़–ल हाज़ा बिआलि–हतिना इन्नहू लमिनज़्–ज़ालिमीन(59)क़ालू समिअ़्ना फ़–तंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम(60)क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला अअ़्युनिन्नासि ल–अ़ल्लहुम् यश्हदून(61)क़ालू अ–अन्–त फ़–अ़ल्–त हाज़ा बि–आलि–हतिना या इब्राहीम(62)क़ा–ल बल् फ़–अ़–लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून(63)फ़–र–जअू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़् ज़ालिमून(64)सुम्–म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम् ल–क़द् अ़लिम्–त मा हाउलाइ यन्तिक़ून(65)क़ा–ल अ–फ़–तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुकुम् शैअंव् व ला यजुर्रुकुम्(66)उफ़्फ़िल् लकुम् व लिमा तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि अ–फ़ला तअ़्क़िलून(67)क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि–ह–तकुम्

और ज़मीन का जिसने उन्हें पैदा किया और मैं उस पर गवाहों में से हूं।(56) और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बाद इसके कि तुम फिर जाओ पीठ देकर।(57) (फ़107) तो उन सब को (फ़108) चूरा कर दिया मगर एक को जो इन सबका बड़ा था (फ़109) कि शायद वह उससे कुछ पूछें।(58) (फ़110) बोले किसने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया बेशक वह ज़ालिम है।(59) उनमें के कुछ बोले हमने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं।(60) (फ़111) बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वह गवाही दें।(61) (फ़112) बोले क्या तुमने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया ऐ इब्राहीम।(62) (फ़113) फ़रमाया बल्कि उनके उस बड़े ने किया होगा (फ़114) तो उनसे पूछो अगर बोलते हों।(63) (फ़115) तो अपने जी की तरफ़ पलटे (फ़116) और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो।(64) (फ़117) फिर अपने सरों के बल औंधाए गए (फ़118) कि तुम्हें ख़ूब मालूम है यह बोलते नहीं(65) (फ़119) कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे (फ़120) और न नुक़सान पहुंचाए।(66) (फ़121) तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(67) (फ़122) बोले इनको जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो

(फ़107) अपने मेले को वाक़िआ़ यह है कि उस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था जंगल में जाते थे और शाम तक वहां लह्व व लइब में मश्गूल रहते थे वापसी के वक़्त बुत ख़ाना में आते थे और बुतों की पूजा करते थे उसके बाद अपने मकानों को वापस जाते थे जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उनकी एक जमाअ़त से बुतों के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है आप वहां चलें देखें कि हमारे दीन और तरीक़े में क्या बहार है और कैसे लुत्फ़ आते हैं जब वह मेले का दिन आया और आप से उस मेले में चलने को कहा गया तो आप उज़्र करके रह गए वह लोग रवाना हो गए जब उनके बाक़ी मांदा और कमज़ोर लोग आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे गुज़रे तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा उसको बाज़ लोगों ने सुना और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बुत ख़ाना की तरफ़ लौटे (फ़108) यानी बुतों को तोड़ कर (फ़109) छोड़ दिया और बसूला उसके कांधे पर रख दिया (फ़110) यानी बड़े बुत से कि उन छोटे बुतों का क्या हाल है यह क्यों टूटे और बसूला तेरी गर्दन पर कैसा रखा है और उन्हें इसका इज्ज़ ज़ाहिर हो और उन्हें होश आये कि ऐसे आजिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते या यह माना हैं कि वह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से दरियाफ़्त करें और आपको हुज्जत क़ाइम करने का मौक़ा मिले चुनान्चे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुत ख़ाने में पहुंचे और **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

إِن كُنتُمْ فَٰعِلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يَٰنَارُ كُونِى بَرْدًا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٦٩﴾ وَأَرَادُوا۟ بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنَٰهُ وَلُوطًا إِلَى
ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا فِيهَا لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا
وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾ وَلُوطًا ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَرْيَةِ ٱلَّتِى
كَانَت تَّعْمَلُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَٰسِقِينَ ﴿٧٤﴾ وَأَدْخَلْنَٰهُ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُۥ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾ وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ فَنَجَّيْنَٰهُ
وَأَهْلَهُۥ مِنَ ٱلْكَرْبِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ

इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन(68)कुल्ना यानारु कूनी बर्-दंव् व सलामन् अ़ला इब्राहीम(69)व अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अ़ल्नाहुमुल् अख़्सरीन(70)व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्अर्ज़िल् लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़-लमीन(71)व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब नाफ़ि-ल-तन् व कुल्लन् ज-अ़ल्ना सालिहीन (72)व ज-अ़ल्नाहुम् अइम्मतंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ़्-लल्-ख़ैराति व इक़ामस्-सलाति व ईताअज़्-ज़काति व कानू लना आ़बिदीन(73)व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव् व अ़िल्मंव् व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल् लती कानत् तअ़्-मलुल् ख़बाइ-स इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन (74)व अद्ख़ल्नाहु फ़ी रह्मतिना इन्नहू मिनस् सालिहीन(75)व नूहन् इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्त-जब्ना लहू फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल् अ़ज़ीम(76)व न-सर्नाहु मिनल् क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन(77)व दावू-द व सुलैमा-न

अगर तुम्हें करना है।(68) (फ़123) हमने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।(69) (फ़124) और उन्होंने उसका बुरा चाहा तो हमने उन्हें सब से बढ़कर ज़ियांकार कर दिया।(70) (फ़125) और हमने उसे और लूत को (फ़126) नजात बख़्शी (फ़127) उस ज़मीन की तरफ़ (फ़128) जिस में हमने जहान वालों के लिए बरकत रखी।(71) (फ़129) और हमने उसे इसहाक़ अ़ता फ़रमाया (फ़130) और याक़ूब पोता और हमने उन सब को अपने क़ुर्बे ख़ास का सज़ावार किया।(72) और हमने उन्हें इमाम किया कि (फ़131) हमारे हुक्म से बुलाते हैं और हमने उन्हें 'वही' भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने की और वह हमारी बन्दगी करते थे।(73) और लूत को हमने हुकूमत और इल्म दिया और उसे उस बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी (फ़132) बेशक वह बुरे लोग बे हुक्म थे।(74) और हमने उसे (फ़133) अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है।(75) (रुकूअ़ 5) और नूह को जब इससे पहले उसने हमें पुकारा तो हमने उसकी दुआ़ क़बूल की और उसे और उसके घर वालों को बड़ी सख़्ती से नजात दी।(76) (फ़134) और हमने उन लोगों पर उसको मदद दी जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं बेशक वह बुरे लोग थे तो हमने उन सबको डुबो दिया।(77) और दाऊद और सुलैमान

(फ़123) नमरूद और उसकी क़ौम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्होंने आपको एक मकान में क़ैद कर दिया और क़रिया कोसा में एक इमारत बनाई और एक महीना तक बकोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जमा कीं और एक अ़ज़ीम आग जलाई जिसकी तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परिन्दे जल जाते थे और एक मुन्जनीक़ (गोफन) खड़ी की और आपको बांध कर उस में रख कर आग में फेंका उस वक़्त आपकी ज़बाने मुबारक पर था हस्बि-यल्लाहु व निअ़्मल् वकीलु जिबरील अमीन ने आप से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है आपने फ़रमाया तुम से नहीं जिबरील ने अ़र्ज़ किया तो अपने रब से सवाल कीजिये फ़रमाया सवाल करने से उसका मेरे हाल को जानना मेरे लिए किफ़ायत करता है (फ़124) तो आग ने सिवा आपकी बन्दिश के और कुछ न जलाया और आग की गर्मी ज़ाइल हो गई और रौशनी बाक़ी रही (फ़125) कि उनकी मुराद पूरी न हुई और सई नाकाम रही और अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उनके गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उसकी हलाकत का सबब हुआ (फ़126) जो उनके भतीजे उनके भाई हारान के फ़रज़न्द थे नमरूद और उसकी क़ौम से (फ़127) और इराक़ से (फ़128) रवाना किया (फ़129) उस ज़मीन से ज़मीने शाम मुराद है उसकी बरकत यह है कि यहां कसरत से अम्बिया हुए और तमाम जहान में उनके दीनी बरकात पहुंचे और सरसब्ज़ी व शादाबी के ऐतबार से भी यह ख़ित्ता दूसरे ख़ित्तों **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ۝ فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ ۚ وَكُلًّا آتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوُودَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُم مِّن بَأْسِكُمْ ۖ فَهَلْ أَنتُمْ شَاكِرُونَ ۝ وَلِسُلَيْمَانَ
الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمِينَ ۝ وَمِنَ الشَّيَاطِينِ مَن يَغُوصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا
دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ۝ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِن
ضُرٍّ ۖ وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرَىٰ لِلْعَابِدِينَ ۝ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ ۝

इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न–फ़–शत् फ़ीहि ग़–नमुल् क़ौमि व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन(78) फ़–फ़ह्–हम्नाहा सुलैमा–न व कुल्लन् आतैना हुक्मंव् व अ़िल्मंव् व सख़्ख़रना म–अ़ दावूदल् जिबा–ल युसब्बिह्–न वत्तै–र व कुन्ना फ़ाअ़िलीन(79)व अ़ल्लम्नाहु सन्–अ़–त लबूसिल् लकुम् लितुह्सि–नकुम् मिम् बअ्सिकुम् फ़–हल् अन्तुम् शाकिरून(80)व लिसुलैमानर् री–ह आ़सि–फ़तन् तज्री बिअम्रिही इलल् अर्ज़िल् लती बारक्ना फ़ीहा व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन(81)व मिनश् शयातीनि मंय्यग़ूसू–न लहू व यअ्–मलू–न अ़–मलन् दू–न ज़ालि–क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन (82)व अय्यू–ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनि–यज़्ज़ुर्रु व अन्–त अर्हमुर् राहिमीन(83)फ़स्त –जब्ना लहू फ़–क–शफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव् व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम् म–अ़हुम् रह़्–म–तम् मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्आ़बिदीन(84)व इस्माअ़ी–ल व इदरी–स व ज़ल्किफ़्लि कुल्लुम् मिनस्–साबिरीन(85)

को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते थे जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियां छुटीं (फ़135) और हम उनके हुक्म के वक़्त हाज़िर थे।(78) हमने वह मुआ़मला सुलैमान को समझा दिया (फ़136) और दोनों को हुकूमत और इल्म अ़ता किया (फ़137) और दाऊद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते और परिन्दे (फ़138) और यह हमारे काम थे।(79) और हमने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आँच से बचाए (फ़139) तो क्या तुम शुक्र करोगे।(80) और सुलैमान के लिए तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि उसके हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिसमें हमने बरकत रखी (फ़140) और हमको हर चीज़ मालूम है।(81) और शैतानों में से वह जो उसके लिए ग़ोता लगाते (फ़141) और उसके सिवा और काम करते (फ़142) और हम उन्हें रोके हुए थे।(82) (फ़143) और अय्यूब को (याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा (फ़144) कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला है।(83) तो हमने उसकी दुआ़ सुन ली तो हमने दूर कर दी जो तकलीफ़ उसे थी (फ़145) और हमने उसे उसके घर वाले और उनके साथ उतने ही और अ़ता किये (फ़146) अपने पास से रहमत फ़रमा कर और बन्दगी वालों के लिए नसीहत।(84) (फ़147) और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को (याद करो) वह सब सब्र वाले थे।(85) (फ़148)

(फ़135) उनके साथ कोई चराने वाला न था वह खेती खा गईं यह मुक़द्दमा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ आपने तजवीज़ की कि बकरियां खेती वाले को दे दी जायें बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़सान के बराबर थी। (फ़136) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के समाने जब यह मुआ़मला पेश हुआ तो आपने फ़रमाया कि फ़रीक़ैन के लिए इससे ज़्यादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है उस वक़्त हज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने आप पर लाज़िम किया कि वह सूरत बयान फ़रमायें हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यह तजवीज़ पेश की कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती उस हालत को पहुंचे जिस हालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरह से नफ़ा उठाये और खेती उस हालत पर पहुंच जाने के बाद खेती वाले को खेती दे दी जाये बकरी वाले को उसकी बकरियां वापस कर दी जावें यह तजवीज़ हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने पसन्द फ़रमाई इस मुआ़मला में यह दोनों हुक्म इज्तेहादी थे और उस शरीअ़त के मुताबिक़ थे हमारी शरीअ़त में हुक्म यह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर जो नुक़सानात करे उसका ज़िमान लाज़िम नहीं मुजाहिद का क़ौल है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने जो फ़ैसला किया था वह इस **(बक़िया सफ़हा 557 पर)**

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖۗ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ زَكَرِيَّاۤ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَ وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَ يَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝ وَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَ جَعَلْنٰهَا وَ ابْنَهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖؗ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَ تَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ

व अद्-ख़ल्नाहुम् फ़ी रह़्मतिना इन्नहुम् मिनस् सालिहीन(86)व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न्-न अल्लन् नक़्दि-र अ़लैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति अल्-ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन(87)फ़स्-त-जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनलग़म्मि व कज़ालि-क नुन्जिल् मुअ्मिनीन(88)व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला त-ज़र्नी फ़र्- दंव् व अन्-त ख़ैरुल् वारिसीन (89)फ़स्त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू यह़्या व अस्लह़्ना लहू ज़ौ-जहू इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति व यद्अू-नना र-ग़-बंव् व र-ह-बन् व कानू लना ख़ाशिअ़ीन(90)वल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-न-फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूह़िना व ज-अ़ल्नाहा वब्-नहा आ-यतल् लिल्आ़-लमीन(91)इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव् वाहि़-द-तंव् व अना रब्बुकुम् फ़अ्बुदून(92)व त-क़त्तअूअम्-रहुम् बै-नहुम् कुल्लुन् इलैना राजिअून(93)फ़-मंय्यअ्मल् मिनस्-सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़्रा-न

और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं।(86) और ज़ुन्नून को (याद करो) (फ़ा149) जब चला गुस्सा में भरा (फ़ा150) तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे (फ़ा151) तो अन्धेरियों में पुकारा (फ़ा152) कोई मअ़बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझको बेशक मुझ से बेजा हुआ।(87) (फ़ा153) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे ग़म से नजात बख़्शी (फ़ा154) और ऐसी ही नजात देंगे मुसलमानों को।(88) (फ़ा155) और ज़करिया को जब उसने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ (फ़ा156) और तू सबसे बेहतर और वारिस।(89) (फ़ा157) तो हमने उसकी दुआ़ क़बूल की और उसे (फ़ा158) यह्या अता फ़रमाया और उसके लिए उसकी बीबी संवारी (फ़ा159) बेशक वह (फ़ा160) भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं।(90)और उस औरत को जिसने अपनी पारसाई निगाह रखी (फ़ा161) तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकी (फ़ा162) और उसे और उसके बेटे को सारे जहान के लिए निशानी बनाया।(91) (फ़ा163) बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है (फ़ा164) और मैं तुम्हारा रब हूं (फ़ा165) तो मेरी इबादत करो।(92)और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिए(फ़ा166) सब को हमारी तरफ़ फिरना है।(93)(फ़ा167)(रुकूअ़ 6) तो जो कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की

(फ़ा149) यानी हज़रत यूनुस इब्ने मत्ता को। (फ़ा150) अपनी क़ौम से जिसने उनकी दावत न क़बूल की थी और नसीहत न मानी थी और कुफ़्र पर क़ाइम रही थी आपने गुमान किया कि यह हिजरत आपके लिए जायज़ है क्योंकि इसका सबब सिर्फ़ कुफ़्र और अहले कुफ़्र के साथ बुग़्ज़ और अल्लाह के लिए ग़ज़ब करना है लेकिन आपने इस हिजरत में हुक्मे इलाही का इन्तेज़ार न किया। (फ़ा151) तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मछली के पेट में डाला। (फ़ा152) कई क़िस्म की अंधेरियां थीं दरिया की अंधेरी रात की अंधेरी मछली के पेट की अंधेरी उन अंधेरियों में हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार से इस तरह दुआ़ की कि- (फ़ा153) कि मैं अपनी क़ौम से क़बल तेरा इज़्न पाने के जुदा हुआ हदीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ़ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाता है। (फ़ा154) और मछली को हुक्म दिया तो उसने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को दरिया के किनारे पर पहुंचा दिया। (फ़ा155) मुसीबतों और तकलीफ़ों से जब वह हम से फ़रियाद करें और दुआ़ करें (फ़ा156) यानी बे औलाद बल्कि वारिस अ़ता फ़रमा (फ़ा157) ख़ल्क़ की फ़ना के बाद बाक़ी रहने वाला मुद्दआ यह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तो भी कुछ ग़म नहीं क्योंकि तू बेहतर वारिस है (फ़ा158) फ़रज़न्दे सईद (फ़ा159) जो बांझ थी उसको क़ाबिले विलादत किया (फ़ा160) यानी अम्बिया मज़कूरीन (फ़ा161) पूरे तौर पर कि किसी तरह कोई बशर उसकी पारसाई को छू न सका मुराद इससे हज़रत मरयम हैं। (फ़ा162) और उसके पेट **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ

فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ۭ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاۗءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۭ كَمَا

लिसअ्यिही व इन्ना लहू कातिबून(94)व ह़रामुन् अ़ला क़र्यतिन् अह–लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून (95)ह़त्ता इज़ा फुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह़–दबिंय्यन्सिलून(96)वक़्त– र–बल् वअ्दुल् ह़क्कु फइज़ा हि–य शाख़ि–सतुन् अब्सारुल्लज़ी–न क–फ़रू या वै–लना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ्–लतिम् मिन् हाजा बल् कुन्ना ज़ालिमीन(97)इन्नकुम् व मा तअ्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि ह़–सबु जहन्न –म अन्तुम् लहा वारिदून(98)लौ का–न हाउलाइ आलि–ह–तम् मा व–रदूहा व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून (99)लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव् व हुम् फ़ीहा ला यस्मअून(100)इन्नल्लज़ी–न स–ब–क़त् लहुम् मिन्नल् हुस्ना उलाइ–क अ़न्हा मुब्अदून(101)ला यस्मअू–न ह़सी–सहा व हुम् फ़ी मश्–तहत् अन्फुसुहुम् ख़ालिदून(102)ला यह़्जुनुहुमुल् फ़–ज़अुल् अक्बरु व त–त–लक़्क़ाहुमुल् मलाइ–कतु हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तू–अदून(103)यौ–म नत्विस् समा–अ क–त़य्यिस् सिजिल्लि लिल्कुतुबि कमा

बे क़दरी नहीं और हम उसे लिख रहे हैं।(94) और हराम है उस बस्ती पर जिसे हमने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आयें।(95) (फ़ा168) यहां तक कि जब खोले जायेंगे याजूज व माजूज (फ़ा169) और वह हर बुलन्दी से ढुलकते होंगे।(96) और क़रीब आया सच्चा वादा (फ़ा170) तो जभी आँखें फट कर रह जायेंगी काफ़िरों की (फ़ा171) कि हाय हमारी ख़राबी बेशक हम (फ़ा172) इससे ग़फ़लत में थे। बल्कि हम ज़ालिम थे।(97) (फ़ा173) बेशक तुम (फ़ा174) और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो (फ़ा175) सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उसमें जाना(98) अगर यह (फ़ा176) ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सबको हमेशा उसमें रहना।(99) (फ़ा177) वह उसमें रेकेंगे (फ़ा178) और वह उसमें कुछ न सुनेंगे।(100) (फ़ा179) बेशक वह जिनके लिए हमारा वादा भलाई का हो चुका वह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।(101) (फ़ा180) वह उसकी भनक न सुनेंगे (फ़ा181) और वह अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में (फ़ा182) हमेशा रहेंगे।(102) उन्हें ग़म में न डालेगी वह सबसे बड़ी घबराहट (फ़ा183) और फ़रिश्ते उनकी पेशवाई को आयेंगे (फ़ा184) कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा था।(103) जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे जैसे सिजिल फ़रिश्ता (फ़ा185) नामए आमाल को लपेटता है हमने

(फ़ा168) दुनिया की तरफ़ तलाफ़ी आमाल व तदारुके अहवाल के लिए यानी इस लिए कि उनका वापस आना नामुमकिन है मुफ़स्सिरीन ने इसके यह माना भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हम ने हलाक किया उनका शिर्क व कुफ़्र से वापस आना मुहाल है यह माना इस तक़दीर पर हैं जबकि ला को ज़ाइदा क़रार दिया जाये और अगर ला ज़ायदा न हो तो माना यह होंगे कि दारे आख़िरत में उनका हयात की तरफ़ न लौटना नामुमकिन है इस में मुन्किरीने बअ्.स का इबताल है और ऊपर जो *कुल्लुन् इलैना राजिऊ–न* और *ला कुफ़रा–न लि–सअ्यिही* फ़रमाया गया इकसी ताकीद है। (तफ़सीर कबीर वग़ैरह) (फ़ा169) क़रीब क़ियामत और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं (फ़ा170) यानी क़ियामत (फ़ा171) उस दिन के हौल और दहशत से और कहेंगे (फ़ा172) दुनिया के अन्दर (फ़ा173) कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुठलाते थे। (फ़ा174) ऐ मुशरिको (फ़ा175) यानी तुम्हारे बुत (फ़ा176) बुत जैसा कि तुम्हारा गुमान है (फ़ा177) बुतों को भी और उनके पूजने वालों को भी। (फ़ा178) और अ़ज़ाब की शिद्दत से चीख़ेंगे और दहाड़ेंगे। (फ़ा179) जहन्नम के शिद्दते जोश की वजह से हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जब जहन्नम में वह लोग रह जायेंगे जिन्हें उसमें हमेशा रहना है तो वह आग के ताबूतों में बन्द किये जायेंगे वह ताबूत और ताबूतों में फिर वह ताबूत और ताबूतों में और उन ताबूतों पर आग की मेख़ें जड़ दी जायेंगी तो वह कुछ न सुनेंगे और न कोई उनमें किसी को देखेगा। (फ़ा180) इसमें ईमान वालों के लिए बशारत है हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने यह आयत पढ़ कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में से हूं और अबू बकर और उमर और उसमान और **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

بَدَأْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ۝ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝

बदअ्ना अव्व–ल ख़ल्क़िन् नुई़दुहू वअ्दन् अ़लैना इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन(104)व ल–क़द क– तब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम् बअ्दिज़् ज़िक्रि अन्नल् अर्–ज़ यरिसुहा अ़िबादि–यस् सालिहून (105)इन्–न फ़ी हाज़ा ल–बलाग़ल् लिक़ौमिन् आ़बिदीन(106)व मा अर्सल्ना–क इल्ला रह्–मतल् लिल्–आ़–लमीन(107)कुल् इन्नमा यूहा इलय्–य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव् वाह़िदुन् फ़–हल् अन्तुम् मुस्लिमून(108)फ़–इन् त–वल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवाइन् व इन् अदरी अ–क़रीबुन् अम् बई़दुम् मा तू–अदून(109)इन्नहू यअ्लमुल् जह्–र मिनल्क़ौलि व यअ्लमु मा तक्तुमून(110)व इन् अदरी ल–अ़ल्लहू फ़ित्–नतुल् लकुम् व मताअुन् इला ह़ीन(111) क़ा–ल रब्बिह्कुम् बिल्ह़क़्क़ि व रब्बुनर् रह़्मानुल् मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून(112)

जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे (फ़186) यह वादा है हमारे ज़िम्मा हम को इसका ज़रूर करना।(104) और बेशक हमने ज़बूर में नसीहत के बाद लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।(105) (फ़187) बेशक यह कुरआन काफ़ी है इबादत वालों को।(106) (फ़188) और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए।(107) (फ़189) तुम फ़रमाओ मुझे तो यही 'वह़ी' होती है कि तुम्हारा खुदा नहीं मगर एक अल्लाह तो क्या तुम मुसलमान होते हो।(108) फिर अगर वह मुँह फेरें (फ़190) तो फ़रमा दो मैंने तुम्हें लड़ाई का एलान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं (फ़191) कि पास है या दूर है वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है।(109) (फ़192) बेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात (फ़193) और जानता है जो तुम छुपाते हो।(110) (फ़194) और मैं क्या जानूं शायद वह (फ़195) तुम्हारी जांच हो (फ़196) और एक वक़्त तक बरतवाना।(111) (फ़197) नबी ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे (फ़198) और हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो।(112) (फ़199) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा186) यानी हमने जैसे पहले अ़दम से बनाया था वैसे ही फिर मअ्दूम करने के बाद पैदा कर देंगे या यह माना हैं कि जैसा मां के पेट से बरहना ग़ैर मख़्तून पैदा किया था ऐसा ही मरने के बाद उठायेंगे। (फ़ा187) इस ज़मीन से मुराद ज़मीने जन्नत है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की ज़मीनें मुराद हैं जिनको मुसलमान फ़तह करेंगे और एक क़ौल यह है कि ज़मीने शाम मुराद है। (फ़ा188) कि जो उसका इत्तेबाअ़ करे और उसके मुताबिक़ अमल करे जन्नत पाये और मुराद को पहुंचे और इबादत वालों से मोमिनीन मुराद हैं और एक क़ौल यह है कि उम्मते मुहम्मदिया मुराद है जो पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं रमज़ान के रोज़े रखते हैं हज करते हैं। (फ़ा189) कोई हो जिन्न हो या इन्स मोमिन हो या काफ़िर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आम है ईमान वाले के लिए भी और उसके लिए भी जो ईमान न लाया और मोमिन के लिए तो आप दुनिया व आख़िरत दोनों में रहमत हैं और जो ईमान न लाया उसके लिए आप दुनिया में रहमत हैं कि आपकी बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़स्फ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए तफ़सीर रूहुल बयान में इस आयत की तफ़सीर में अकाबिर का यह क़ौल नक़ल किया है कि आयत के माना यह हैं कि हमने आपको नहीं भेजा मगर रहमते मुतलक़ा ताम्मा कामिला आम्मा शामिला जामिआ़ मुहीता बर जमीअ़. मुक़ीदाते रहमत ग़ैबिया व शहादते इल्मिया व अ़ैनिया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाहिक़ा वग़ैर ज़ालिक तमाम जहानों के लिए आ़लमे अरवाह हों या आ़लमे अजसाम ज़विलउक़ूल हों या ग़ैर ज़विलउक़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिए रहमत हो लाज़िम है कि वह तमाम जहान से अफ़ज़ल हो (फ़ा190) और इस्लाम न लायें (फ़ा191) बे खुदा के बताये यानी यह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है यहां दरायत की नफ़ी फ़रमाई गई दरायत कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़र्रिदात राग़िब और रद्दुल मुहतार में है इसी लिए अल्लाह तआ़ला के वास्ते लफ़्ज़ दरायत इस्तेमाल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया *मा कुन्–त तद्री मल्किताबु वलल्–ईमानु* लिहाज़ा यहां **(बक़िया सफ़हा 543 पर)**

سورة الحج مدنية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِیْمٌ ۝ یَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَ تَرَی النَّاسَ سُكٰرٰی وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰی وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِیْدٌ ۝ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ یَتَّبِعُ كُلَّ شَیْطٰنٍ مَّرِیْدٍ ۝
كُتِبَ عَلَیْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ یُضِلُّهٗ وَ یَهْدِیْهِ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ۝ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

सूरतुल हज्जि

(मदनी है इसमें 78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुम् इन्–न ज़ल्–ज़–ल–तस् सा–अ़ति शैउन् अ़ज़ीम(1)यौ–म तरौ–नहा तज़्हलु कुल्लु मुरज़ि–अ़तिन् अ़म्मा अर्–ज़–अ़त् व त–ज़अु कुल्लु ज़ाति ह़म्लिन् ह़म्–लहा व त–रन्ना–स सुकारा व माहुम् बिसुकारा व लाकिन्–न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद(2)व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव् व यत्तबिअु कुल्–ल शैतानिम् मरीद(3)कुति–ब अ़लैहि अन्नहू मन् त–वल्लाहु फ़–अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर(4)या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिनल्–बअ़्सि फ़इन्ना ख़–लक़्नाकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ लोगो अपने रब से डरो (फ़ा2) बेशक क़ियामत का ज़लज़ला (फ़ा3) बड़ी सख़्त चीज़ है।(1) जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली (फ़ा4) अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी (फ़ा5) अपना गाभ डाल देगी (फ़ा6) और तू लोगों को देखेगा जैसे नशा में हैं और वह नशा में न होंगे (फ़ा7) मगर है यह कि अल्लाह की मार कड़ी है।(2)और कुछ लोग वह हैं कि अल्लाह के मुआ़मला में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।(3)(फ़ा8)जिस पर लिख दिया गया है कि जो इसकी दोस्ती करेगा तो यह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा।(4) (फ़ा9)ऐ लोगो अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो यह ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया

(फ़ा1) सूरह हज बक़ौल इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा व मुजाहिद मक्की है सिवाए छः आयतों के जो हाज़ानि ख़स्मानि से शुरू होती हैं इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठहत्तर आयतें और 1291 कलिमात और 5075 हरफ़ हैं। (फ़ा2) उसके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करो और उसकी ताअ़त में मश्ग़ूल हो। (फ़ा3) जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत आफ़ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के नज़दीक वाक़ेअ़ होगा (फ़ा4) उसकी हैबत से (फ़ा5) यानी हमल वाली उस दिन के हौल से (फ़ा6) हमल साक़ित हो जायेंगे। (फ़ा7) बल्कि अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे। (फ़ा8)**शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुई जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बाद उठाये जाने का मुन्किर था। (फ़ा9) शैतान के इत्तेबाअ़ से ज़जर फ़रमाने के बाद मुन्किरीने बअ़्स पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाई जाती है।

(बक़िया सफ़्हा 542 का) बे तालीमे इलाही महज़ अपने अक़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुतलक़ इल्म की और मुतलक़ इल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जबकि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है *वक़्तर्र–बल् वअ़्दुल् ह़क़्क़ु* यानी क़रीब आया सच्चा वादा तो कैसे कहा जा सकता है कि वादे का क़ुर्ब व बुअ़्द किसी तरह मालूम नहीं ख़ुलासा यह है कि अपने अक़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि तालीमे इलाही से जानने की (फ़ा192) अ़ज़ाब का या क़ियामत का। (फ़ा193) जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम एलान के साथ इस्लाम पर बतरीक़े तअ़्न कहते हो। (फ़ा194) अपने दिलों में यानी नबी की अ़दावत और मुसलमानों से हसद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है अल्लाह उसको भी जानता है सब का बदला देगा। (फ़ा195) यानी दुनिया में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना (फ़ा196) जिस से तुम्हारा हाल ज़ाहिर हो जाये (फ़ा197) यानी वक़्ते मौत तक। (फ़ा198) मेरे और उनके दर्मियान जो मुझे झुठलाते हैं इस तरह कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा यह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ारे बद्र व अहज़ाब व हुनैन वग़ैरह में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। (फ़ा199) शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की।

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا أَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلٰٓى أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ

وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهٗ يُحْيِ

الْمَوْتٰى وَأَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّأَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَأَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝

मिन् तुराबिन् सुम्–म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्–म मिन् अ–ल–क़तिन् सुम्–म मिम् मुज़्ग़तिम् मुख़ल्ल –क़तिंव् व ग़ैरि मुख़ल्ल–क़तिल् लिनुबय्यि–न लकुम् व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशाउ इला अ–जलिम् मुसम्मन् सुम्–म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्–लन् सुम्–म लितब्लुग़ू अशुद्–दकुम् व मिन्कुम् मंय्यु–त–वफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्–ज़लिल् अुमुरि लिकैला यअ्–ल–म मिम् बअ्दि अिल्मिन् शैअन् व त–रल् अर्–ज़ हामि–द–तन् फ़इज़ा अन्ज़ल्ना अलैहल् मा–अह्तज़्ज़त् व र–बत् व अम्ब–तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम् बहीज(5)ज़ालि–क बिअन्नल्ला–ह हुवल् हक़्क़ु व अन्नहू युह्यियल् मौता व अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(6)व अन्नस्सा–अ–त आति–यतुल् लारै–ब फ़ीहा व अन्नल्ला–ह यब्–असु मन् फ़िल्क़ुबूरि(7)व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव् व ला हुदंव् व ला किताबिम् मुनीर(8)सानि–य अ़ित्फ़िही लियुज़िल्–ल अ़न् सबीलिल्लाहि लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव् व नुज़ीक़ुहू यौमल् क़िया–मति अ़ज़ाबल् हरीक़(9)

मिट्टी से (फ़10) फिर पानी की बूंद से (फ़11) फिर ख़ून की फुटक से (फ़12) फिर गोश्त की बोटी से नक़्शा बनी और बे बनी (फ़13) ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमायें (फ़14) और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक मुक़र्रर मीआ़द तक (फ़15) फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर(फ़16) इस लिए कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो (फ़17) और तुम में कोई पहले ही मर जाता है और कोई सब में निकम्मी उम्र तक डाला जाता है (फ़18) कि जानने के बाद कुछ न जाने (फ़19) और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई (फ़20) फिर जब हमने उस पर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई और उभर आई और हर रौनक़दार जोड़ा (फ़21) उगा लाई।(5) (फ़22) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है (फ़23) और यह कि वह मुर्दे जिलाएगा और यह कि वह सब कुछ कर सकता है।(6) और इसलिए कि क़ियामत आने वाली इसमें कुछ शक नहीं और यह कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं।(7) और कोई आदमी वह है कि अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इल्म न कोई दलील और न कोई रौशन नविश्ता।(8) (फ़24) हक़ से अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह की राह से बहका दे (फ़25) उसके लिए दुनिया में रुसवाई है (फ़26) और क़ियामत के दिन हम उसे आग का अ़ज़ाब चखायेंगे।(9) (फ़27)

(फ़10) तुम्हारी नस्ल की असल यानी तुम्हारे जद्दे आला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उससे पैदा करके। (फ़11) यानी क़तरए मनी से उनकी तमाम ज़ुर्रियत को (फ़12) कि नुत्फ़ए ख़ूने ग़लीज़ हो जाता है। (फ़13) यानी मुसव्विर और ग़ैर मुसव्विर बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोगों का माद्दए पैदाइश मां के शिकम में चालीस रोज़ तक नुत्फ़ा रहता है फिर उतनी ही मुद्दत ख़ून बस्ता हो जाता है फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की तरह रहता है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़्क़ उसकी उम्र उसके अमल उसका शक़ी या सईद होना लिखता है फिर उसमें रूह फूंकता है (हदीस) अल्लाह तआ़ला इन्सान की पैदाईश इस तरह फ़रमाता है और उसको एक हाल से दूसरे के हाल की तरफ़ मुन्तक़िल करता है यह इस लिए बयान फ़रमाया गया। (फ़14) और तुम अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत व हिकमत को जानो और अपनी इब्तेदाए पैदाइश के हालात पर नज़र करके समझ लो कि जो क़ादिरे बरहक़ बे जान मिट्टी में इतने इन्क़लाब करके जानदार आदमी बना देता है वह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उसकी क़ुदरत से क्या बईद। (फ़15) यानी वक़्ते विलादत तक (फ़16) तुम्हें उम्र देते हैं। (फ़17) और तुम्हारी अक़्ल व क़ुव्वत कामिल **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِطْمَاَنَّ بِهٖ وَاِنْ
اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ذٰلِكَ
هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ
لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

ज़ालि–क बिमा क़द्–द–मत् यदा–क व अन्नल्ला–ह लै–स बिज़ल्लामिल् लिल् अ़बीद(10)व मिनन्नासि मंय्यअ़्बुदुल्ला–ह अ़ला ह़रफ़िन् फ़इन् असा–बहू ख़ैरु नित्म–अन्–न बिही व इन् असाबत्हु फ़ित्–नतु निन्क़्–ल–ब अ़ला वज्हिही ख़सिरद्दुन्या वल् आख़ि–र–त ज़ालि–क हुवल् ख़ुस्रानुल् मुबीन(11)यद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यजुर्रुहू व मा ला यन्फ़अ़ुहू ज़ालि–क हुवज़्ज़लालुल् बअ़ीद(12)यद्अ़ू ल–मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अ़िही लबिअ्सल् मौला व लबिअ्सल् अ़शीर(13)इन्नल्ला–ह युद्ख़िलुल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिह़ाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् अन्हारु इन्नल्ला–ह यफ़्अ़लु मा युरीद(14)मन् का–न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सु–रहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल् आख़ि–रति फ़ल्यम्दुद् बि–स–बबिन् इलस्समाइ सुम्मल् यक़्तअ़् फ़ल्–यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्–न कैदुहू मा यग़ीज़(15)व कज़ालि–क अन्ज़ल्नाहु आ–यतिम् बय्यिनातिंव् व अन्नल्ला–ह यह्दी मंय्युरीद(16)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू वल्लज़ी–न हादू

यह उसका बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा (फ़ा28) और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(10) (फ़ा29) (रुकूअ़8) और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं (फ़ा30) फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी (फ़ा31) मुंह के बल पलट गए (फ़ा32) दुनिया और आख़िरत दोनों का घाटा (फ़ा33) यही है सरीह़ नुक़्सान।(11) (फ़ा34) अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका बुरा भला कुछ न करे (फ़ा35) यही है दूर की गुमराही।(12) ऐसे को पूजते हैं जिसके नफ़ा से (फ़ा36) नक़सान की तवक़्क़ोअ़् ज़्यादा है (फ़ा37) बेशक (फ़ा38) क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़।(13) बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिनके नीचे नहरें रवाँ बेशक अल्लाह करता है जो चाहे।(14) (फ़ा39) जो यह ख़्याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी (फ़ा40) की मदद न फ़रमाएगा दुनिया (फ़ा41) और आख़िरत में (फ़ा42) तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फाँसी देले फिर देखे कि उसका यह दाँव कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है।(15) (फ़ा43) और बात यही है कि हमने यह क़ुरआन उतारा रौशन आयतें और यह कि अल्लाह राह देता है जिसे चाहे।(16) बेशक मुसलमान और यहूदी

(फ़ा28) यानी जो तूने दुनिया में किया कुफ़्र व तकज़ीब (फ़ा29) और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता। (फ़ा30) इसमें इत्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उनहें सबात व क़रार हासिल नहीं होता शक व तरद्दुद में रहते हैं जिस तरह पहाड़ के किनारे खड़ा हुआ शख़्स तज़लज़ुल की हालत में होता है। **शाने नुज़ूलः** यह आयत अअ़्राबियों की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो अतराफ़ से आकर मदीना में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे उनकी हालत यह थी कि अगर वह ख़ूब तन्दुरुस्त रहे और उनकी दौलत बढ़ी और उनके बेटा हुआ तब तो कहते थे इस्लाम अच्छा दीन है इसमें आकर हमें फ़ाइदा हुआ और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ पेश आई मसलन बीमार हो गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जब से हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़सान ही हुआ और दीन से फिर जाते थे यह आयत उनके हक़ में नाज़िल हुई और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में सबात ही हासिल नहीं हुआ उनका हाल यह है (फ़ा31) किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई (फ़ा32) मुरतद हो गए और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए (फ़ा33) दुनिया का घाटा तो यह कि जो उनकी उम्मीदें थीं वह पूरी न हुईं और इरतेदाद की वजह से उनका ख़ून मुबाह हुआ और आख़िरत का घाटा हमेशा का अ़ज़ाब (फ़ा34) वह लोग मुरतद होने के बाद बुत परस्ती करते हैं और (फ़ा35) क्योंकि वह बेजान है (फ़ा36) यानी जिस की परस्तिश के ख़्याली नफ़ा से उसको पूजने के। (फ़ा37) यानी अ़ज़ाबे दुनिया व आख़िरत की (फ़ा38) वह बुत (फ़ा39) फ़रमांबरदारों पर इनाम और **(बक़िया सफ़हा 558 पर)**

وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۷﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ
لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ
وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۱۸﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِىْ رَبِّهِمْ ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ
يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿۱۹﴾ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِىْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿۲۰﴾ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿۲۱﴾ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا

वस़्साबिईं–न वन्नसारा वल्मजू–स वल्लज़ी–न अश्–रकू इन्नल्ला–ह यफ़्सिलु बै–नहुम् यौमल्क़िया–मति इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(17)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्–क़–मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श–जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम् मिनन्नासि व कसीरुन् हक़्–क़ अ़लैहिल् अ़ज़ाबु व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम् मुक्रिमिन् इन्नल्ला–ह यफ़्अ़लु मा यशाउ(18)हाज़ानि ख़स्मानिख़्–त–समू फ़ी रब्बिहिम् फ़ल्लज़ी–न क–फ़रू क़ुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम् मिन् नारिन् युसब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल् ह़मीम(19)युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्–जुलूद(20)व लहुम् मक़ामिअ़ु मिन् ह़दीद(21)कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उई़दू फ़ीहा व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल् ह़रीक़(22)इन्नल्ला–ह युदख़िलुल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस़्–सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्–अन्हारु युह़ल्लौ–न फ़ीहा

और सितारा परस्त और नसरानी और आतिश परस्त और मुशरिक बेशक अल्लाह इन सब में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा (फ़ा44) बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(17) क्या तुमने न देखा (फ़ा45) कि अल्लाह के लिए सजदा करते हैं वह जो आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए (फ़ा46) और बहुत आदमी (फ़ा47) और बहुत वह हैं जिन पर अ़ज़ाब मुक़र्रर हो चुका (फ़ा48) और जिसे अल्लाह ज़लील करे (फ़ा49) उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक अल्लाह जो चाहे करे।(18) यह दो फ़रीक़ हैं (फ़ा50) कि अपने रब में झगड़े (फ़ा51) तो जो काफ़िर हुए उनके लिए आग के कपड़े बियोंते गए हैं (फ़ा52) और उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।(19) (फ़ा53) जिससे गल जाएगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें।(20) (फ़ा54) और उनके लिए लोहे के गुर्ज़ हैं।(21) (फ़ा55) जब घुटन के सबब उसमें से निकलना चाहेंगे (फ़ा56) फिर उसमें लौटा दिये जायेंगे और हुक्म होगा कि चखो आग का अ़ज़ाब।(22) (रुकूअ़ 9) बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बेहिश्तों मे जिनके नीचे नहरें बहें उसमें पहनाए जायेंगे

(फ़ा44) मोमिनीन को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कुफ़्फ़ार को किसी क़िस्म के भी हों जहन्नम में दाख़िल करेगा। (फ़ा45) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा46) सजदए ख़ुज़ूअ़ जैसा अल्लाह चाहे (फ़ा47) यानी मोमिनीन मज़ीद बर आँ सज्दए ताअ़त व इबादत भी। (फ़ा48) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा49) उसकी शक़ावत के सबब। (फ़ा50) यानी मोमिनीन और पांचों क़िस्म के कुफ़्फ़ार जिनका ऊपर ज़िक्र किया गया। (फ़ा51) यानी उसके दीन के बारे में और उसकी सिफ़ात में (फ़ा52) यानी आग उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगी। (फ़ा53) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया ऐसा तेज़ गरम कि अगर उसका एक क़तरा दुनिया के पहाड़ों पर डाल दिया जाये तो उनको गला डाले। (फ़ा54) हदीस शरीफ़ में है फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा। (तिर्मिज़ी) (फ़ा55) जिनसे उनको मारा जाएगा। (फ़ा56) यानी दोज़ख़ में से तो गुरज़ों से मार कर।

(बक़िया सफ़हा 549 का) हुक्म नहीं दिया गया है जब हुज़ूर ने मदीना तय्येबा को हिजरत फ़रमाई तब यह आयत नाज़िल हुई और यह वह पहली आयत है जिस में कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है। (फ़ा105) और बे वतन किये गए। (फ़ा106) और यह कलामे हक़ है और हक़ पर घरों से निकालना और बे वतन करना क़तअ़न नाहक़ (फ़ा107) जिहाद की इजाज़त देकर और हुदूद क़ाइम फ़रमा कर तो नतीजा यह होता कि मुशरिकीन का इस्तीला हो जाता और कोई दीन व मिल्लत वाला उनके दस्ते तअ़द्दी से न बचता। (फ़ा108) राहिबों की। (फ़ा109) नसरानियों के। (फ़ा110) यहूदियों के। (फ़ा111) मुसलमानों की

مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ
مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾
وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا

मिन् असावि–र मिन् ज़–हबिंव्–व लूअ्–लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा ह़रीर(23)व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्क़ौलि व हुदू इला सिरातिल् ह़मीद(24)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू व यसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्मस्जिदिल् ह़रामिल् लज़ी ज–अ़ल्नाहु लिन्नासि सवा–अ निल्आकिफ़ु फ़ीहि वल्बादि व मंय्युरिद् फ़ीहि बिइल्ह़ादिम् बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(25)व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही–म मकानल् बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव् व त़ह्हिर् बैति–य लित्ताइफ़ी–न वल्क़ाइमी–न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद (26)व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्ह़ज्जि यअ्तू–क रिजालंव् व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती–न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अ़मीक़िल्(27)लि–यश्हदू मनाफ़ि–अ़ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम् मअ्लूमातिन् अ़ला मा र–ज़–क़हुम् मिम् बही–मतिल् अन्आ़मि फ़कुलू मिन्हा व अत़्अ़िमुल् बाइसल् फ़क़ीर(28)सुम्मल् यक़्ज़ू त–फ़–स़हुम् वल्यूफ़ू नुज़ू–रहुम् वल्यत्तव्वफ़ू

सोने के कंगन और मोती (फ़ा57) और वहां उनकी पोशाक रेशम है।(23) (फ़ा58) और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई (फ़ा59) और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई।(24)(फ़ा60) बेशक वह जिन्होंने कुफ़्र किया और रोकते हैं अल्लाह की राह (फ़ा61) और उस अदब वाली मस्जिद से (फ़ा62) जिसे हम ने सब लोगों के लिए मुक़र्रर किया कि उसमें एक सा हक़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उसमें किसी ज़्यादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखायेंगे।(25) (फ़ा63)(रुकूअ़10) और जबकि हमने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया (फ़ा64) और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुथरा रख (फ़ा65) तवाफ़ वालों और एतेकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिए।(26) (फ़ा66) और लोगों में हज की आ़म निदा कर दे (फ़ा67) वह तेरे पास हाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।(27) (फ़ा68) ताकि वह अपना फ़ाइदा पायें (फ़ा69) और अल्लाह का नाम लें (फ़ा70) जाने हुए दिनों में (फ़ा71) इस पर कि उन्हें रोज़ी दी बे ज़बान चौपाए (फ़ा72) तो उनमें से खुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोहताज को खिलाओ।(28) (फ़ा73) फिर अपना मैल कुचेल उतारें (फ़ा74) और अपनी मिन्नतें पूरी करें (फ़ा75) और उस आज़ाद घर का

(फ़ा57) ऐसे जिनकी चमक मशरिक़ से मग़रिब तक रौशन कर डाले। (तिर्मिज़ी) (फ़ा58) जिसका पहनना दुनिया में मर्दों को हराम है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने दुनिया में रेशम पहना आख़िरत में न पहनेगा। (फ़ा59) यानी दुनिया में और पाकीज़ा बात से कलिमए तौहीद मुराद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा क़ुरआन मुराद है। (फ़ा60) यानी अल्लाह का दीन इस्लाम (फ़ा61) यानी उसके दीन और उसकी इताअ़त से (फ़ा62) यानी उसमें दाख़िल होने से शाने नुज़ूलः यह आयत सुफ़ियान बिन हरब वग़ैरह के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था मस्जिदे हराम से या ख़ास कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा मुराद है जैसा कि इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि वह तमाम लोगों का क़िबला है वहां के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं सब के लिए उसकी ताज़ीम व हुरमत और उसमें अदाए मनासिके हज यकसाँ है और तवाफ़ व नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक यहां मस्जिदे हराम से मक्का मुकर्रमा यानी जमीअ़े ह़रम मुराद है इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि हरम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिए यकसाँ है उसमें रहने और ठहरने का सब किसी को हक़ है बजुज़ इसके कि कोई किसी को निकाले नहीं इसी लिए इमाम साहब मक्का मुकर्रमा की आराज़ी की बैअ़ और उसके किराया को मना फ़रमाते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मक्का मुकर्रमा हराम है उसकी अराज़ी फ़रोख़्त न **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۗ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

बिल्बैतिल् अ़तीक़(29)ज़ालि–क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु–व ख़ैरुल् लहू अ़िन्–द रब्बिही व उहिल्लत् लकुमुल् अन्आ़मु इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् फ़ज्–तनिबुर् रिज्–स मिनल् औसानि वज्–तनिबू क़ौलज़्ज़ूर(30)हु–नफ़ा–अ लिल्लाहि ग़ै–र मुश्रिकी–न बिही व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़–क–अन्नमा ख़र्–र मिनस् समाइ फ़–तख़्तफ़ुहुत्–तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़(31)ज़ालि–क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआइरल्लाहि फ़–इन्नहा मिन् तक़्वल्कुलूब(32)लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु इला अ–जलिम् मुसम्मन् सुम्–म महिल्लुहा इलल् बैतिल् अ़तीक़(33)व लिकुल्लि उम्मतिन् ज–अ़ल्ना मन्स–कल् लि–यज़्कुरुस्–मल्लाहि अ़ला मा र–ज़–क़हुम् मिम् बही–मतिल् अन्आ़मि फ़इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़–लहू अस्लिमू व बश्शिरिल् मुख़्बितीन(34)अल्लज़ी–न इज़ा ज़ुकि–रल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी–न अ़ला मा असा–बहुम् वल्मुक़ी–मिस्सलाति व मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून(35)

तवाफ़ करें।(29) (फ़ा76) बात यह है और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे (फ़ा77) तो वह उसके लिए उसके रब के यहां भला है और तुम्हारे लिए हलाल किये गए बे ज़बान चौपाए (फ़ा78) सिवा उनके जिनकी मुमानअ़त तुम पर पढ़ी जाती है (फ़ा79) तो दूर हो बुतों की गन्दगी से (फ़ा80) और बचो झूठी बात से।(30) एक अल्लाह के होकर कि उसका साझी किसी को न करो और जो अल्लाह का शरीक करे वह गोया गिरा आसमान से कि परिन्दे उसे उचक ले जाते हैं (फ़ा81) या हवा उसे किसी दूर जगह फेंकती है।(31) (फ़ा82) बात यह है और जो अल्लाह के निशानों की ताज़ीम करे तो यह दिलों की परहेज़गारी से है।(32) (फ़ा83) तुम्हारे लिए चौपायों में फ़ाइदे हैं (फ़ा84) एक मुक़र्ररा मीआ़द तक (फ़ा85) फिर उनका पहुंचना है उस आज़ाद घर तक।(33) (फ़ा86) (रुकूअ़ 11) और हर उम्मत के लिए (फ़ा87) हमने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें उसके दिए हुए बे ज़बान चौपायों पर (फ़ा88) तो तुम्हारा मअ़बूद एक मअ़बूद है (फ़ा89) तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो (फ़ा90) और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।(34) कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उनके दिल डरने लगते हैं (फ़ा91) और जो उफ़्ताद पड़े उसके सहने वाले और नमाज़ बरपा रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च करते हैं।(35) (फ़ा92)

(फ़ा76) इससे तवाफ़े ज़ियारत मुराद है मसाइले हज बित्तफ़सील सूरह बक़र पारह दो में ज़िक्र हो चुके। (फ़ा77) यानी उसके अहकाम की ख़्वाह वह मनासिके हज हों या उनके सिवा और अहकाम बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उससे मनासिके हज मुराद लिये हैं और बाज़ ने बैते हराम व मुशअ़रे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुराद लिये हैं (फ़ा78) कि उन्हें ज़बह करके खाओ (फ़ा79) कुरआन पाक में जैसे कि सूरह माइदा की आयत हुर्रिमत् अ़लैकुम् में बयान फ़रमाई गई। (फ़ा80) जिनकी परस्तिश करना बदतरीन गन्दगी से आलूदा होना है। (फ़ा81) और बोटी बोटी करके खा जाते हैं (फ़ा82) मुराद यह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बदतरीन हलाकत में डालता है ईमान को बुलन्दी में आसमान से तश्बीह दी गई और ईमान तर्क करने वाले को आसमान से गिरने वाले के साथ और उसकी ख़्वाहिशाते नफ़सानिया को जो उसकी फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परिन्दे के साथ और शयातीन को जो उसको वादीए ज़लालत में फेंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और उस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया। (फ़ा83) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि शआइरिल्लाह से मुराद बुदने और हदाया हैं और उनकी ताज़ीम यह है कि फ़रबा ख़ूबसूरत क़ीमती लिये जायें। (फ़ा84) वक़्ते ज़रूरत उन पर सवार होने और वक़्ते हाजत उनके दूध पीने के (फ़ा85) यानी उनके ज़बह के वक़्त तक (फ़ा86) यानी हरम शरीफ़ तक जहां वह ज़बह किये जायें। (फ़ा87) पिछली ईमानदार उम्मतों में से (फ़ा88) उनके ज़बह के वक़्त (फ़ा89) तो ज़बह के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो इस आयत में **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ

كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ

वल्बुद्-न ज-अ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआइरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कु-रुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ फ़-इज़ा व-ज-बत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत़्अिमुल् क़ानि-अ़ वल्मुअ़्-तर्-र कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून(36)लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा वलाकिंय्यनालुहुत् तक़्वा मिन्कुम् कज़ालि-क सख़्-ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व बश्शिरिल् मुह्सिनीन(37)इन्नल्ला-ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी-न आ-मनू इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर(38)उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ा-तलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर(39)अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बु-नल्लाहु व लौला दफ़्अुल्ला-हिन्ना-स बअ़्-ज़हुम बि-बअ़्ज़िल् लहुद्दिमत् सवामिअ़ु व बि-यअुंव् व स-ल-वातुंव व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन्

और कुरबानी के डीलदार जानवर ऊंट और गाय हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों से किये (फ़93) तुम्हारे लिए उनमें भलाई है (फ़94) तो उन पर अल्लाह का नाम लो (फ़95) एक पांव बंधे तीन पाँव से खड़े (फ़96) फिर जब उनकी करवटें गिर जायें (फ़97) तो उनमें से खुद खाओ (फ़98) और सब्र से बैठने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ हमने यूंही उनको तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एहसान मानो।(36) अल्लाह को हरगिज़ न उनके गोश्त पहुंचते हैं न उनके ख़ून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है (फ़99) यूं ही उनको तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम अल्लाह की बड़ाई बोलो उस पर कि तुम को हिदायत फ़रमाई और ऐ महबूब खुशख़बरी सुनाओ नेकी वालों को।(37) (फ़100) बेशक अल्लाह बलायें टालता है मुसलमानों की (फ़101) बेशक अल्लाह दोस्त नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ ना शुकरे को।(38) (फ़102) (रुकूअ़ 12) परवानगी अ़ता हुई उन्हें जिनसे काफ़िर लड़ते हैं (फ़103) इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुआ (फ़104) और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है।(39) वह जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए (फ़105) सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है (फ़106) और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफ़ा न फ़रमाता (फ़107) तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें (फ़108) और गिरजा (फ़109) और कलीसे (फ़110) और मस्जिदें (फ़111) जिन में अल्लाह का बकसरत नाम लिया जाता है और बेशक अल्लाह ज़रूर

(फ़ा93) यानी उसके अ़लामे दीन से (फ़ा94) दुनिया में नफ़ा और आख़िरत में अज्र व सवाब। (फ़ा95) उनके ज़बह के वक़्त जिस हाल में कि वह हों (फ़ा96) ऊंट के ज़बह का यही मस्नून तरीक़ा है(फ़ा97) यानी बाद ज़िबह उनके पहलू ज़मीन पर गिरें और उनकी हरकत साकिन हो जाये (फ़ा98) अगर तुम चाहो (फ़ा99) यानी कुरबानी करने वाले सिर्फ़ नीयत के इख़्लास और शुरूते तक़्वा की रिआ़यत से अल्लाह तआ़ला को राज़ी कर सकते हैं **शाने नुज़ूलः** ज़मानए जाहिलियत के कुफ़्फ़ार अपनी क़ुरबानियों के ख़ून से कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को आलूदा करते थे और उसको सबबे तक़र्रुब जानते थे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा100) सवाब की (फ़ा101) और उनकी मदद फ़रमाता है। (फ़ा102) यानी कुफ़्फ़ार को जो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत और ख़ुदा की निअ़मतों की नाशुक्री करते हैं (फ़ा103) जिहाद की (फ़ा104) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे मक्का असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ायें देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है किसी का हाथ टूटा है किसी का पांव बंधा हुआ है रोज़मर्रा इस क़िस्म की शिकायतें बारगाहे अक़दस में पहुंचती थीं और असहाबे किराम कुफ़्फ़ार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फ़रियादें करते हुज़ूर यह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो मुझे अभी जिहाद का **(बक़िया सफ़हा 546 पर)**

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ
يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ

व ल–यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहु इन्नल्ला–ह ल–क़वियुन् अ़ज़ीज़(40)अल्लज़ी–न इम्मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला–त व–आ–तवुज़्ज़का–त व अ–मरू बिल्मअ़रूफ़ि व नहौ अ़निल्मुन्करि व लिल्लाहि आ़कि़–बतुल् उमूर(41)व इंय्युकज़्ज़िबू–क फ़–क़द कज़्ज़बत् क़ब्–लहुम् क़ौमु नूहिंव् व आ़दुंव् व समूद(42)व क़ौमु इब्राही–म व क़ौमु लूतिंव्(43)व अस्हाबु मद्–य–न व कुज़्ज़ि–ब मूसा फ़–अम्लैतु लिल् काफ़िरी–न सुम्–म अ–ख़ज़्तुहुम् फ़कै–फ़ का–न नकीर(44)फ़–क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् अह्–लक्नाहा व हि–य ज़ालि–मतुन् फ़हि–य ख़ावि–यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा व बिअ़्रिम् मुअ़त्त–लतिंव् व क़स्रिम् मशीद(45)अ–फ़–लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–तकू–न लहुम् कुलूबुंय्यअ़्क़िलू–न बिहा औ आज़ानुंय्यस्मअ़ू–न बिहा फ़–इन्नहा ला तअ़्मल् अब्सारु व लाकिन् तअ़्मल् कुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर(46)व यस्तअ़्जिलू–न–क बिलअ़ज़ाबि

मदद फ़रमाएगा उसकी जो उसके दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह क़ुदरत वाला ग़ालिब है।(40) वह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें (फ़ा112) तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें (फ़ा113) और अल्लाह ही के लिए सब कामों का अन्जाम।(41) और अगर यह तुम्हारी तकज़ीब करते हैं (फ़ा114) तो बेशक उनसे पहले झुठला चुकी है नूह की क़ौम और आ़द (फ़ा115) और समूद।(42) (फ़ा116) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।(43) और मदयन वाले (फ़ा117) और मूसा की तकज़ीब हुई (फ़ा118) तो मैंने काफ़िरों को ढील दी (फ़ा119) फिर उन्हें पकड़ा (फ़ा120) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब।(44) (फ़ा121) और कितनी ही बस्तियाँ हमने खपा दीं (फ़ा122) कि वह सितमगार थीं (फ़ा123) तो अब वह अपनी छतों पर डही पड़ी हैं और कितने कुएं बेकार पड़े (फ़ा124) और कितने महल गच किये हुए।(45) (फ़ा125) तो क्या ज़मीन में न चले (फ़ा126) कि उनके दिल हों जिनसे समझें (फ़ा127) या कान हों जिनसे सुनें (फ़ा128) तो यह कि आँखें अन्धी नहीं होतीं (फ़ा129) बल्कि वह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।(46) (फ़ा130) और यह तुम से अ़ज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं (फ़ा131)

(फ़ा112) और उनके दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी मदद फ़रमायें। (फ़ा113) इसमें ख़बर दी गई है कि आइन्दा मुहाजरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़ता फ़रमाने के बाद उनकी सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे इसमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदीईन के अ़द्ल और उनके तक़वा व परहेज़गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तमकीन व हुकूमत अ़ता फ़रमाई और सीरते आ़दला अ़ता की। (फ़ा114) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (फ़ा115) हज़रत हूद की क़ौम (फ़ा116) हज़रत सालेह की क़ौम। (फ़ा117) यानी हज़रत शुऐब की क़ौम (फ़ा118) यहां मूसा की क़ौम न फ़रमाया क्योंकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम बनी इसराईल ने आपकी तकज़ीब न की थी बल्कि फ़िरऔ़न की क़ौम क़िबतियों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की थी उन क़ौमों का तज़किरा और हर एक के अपने रसूल की तकज़ीब करने का बयान सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तस्कीन ख़ातिर के लिए है कि कुफ़्फ़ार का यह क़दीमी तरीक़ा है पिछले अम्बिया के साथ भी यही दस्तूर रहा है (फ़ा119) और उनके अ़ज़ाब में ताख़ीर की और उन्हें मुहलत दी (फ़ा120) और उनके कुफ़्र व सरकशी की सज़ा दी (फ़ा121) आपकी तकज़ीब करने वालों को चाहिए कि अपने अन्जाम को सोचें और इबरत हासिल करें (फ़ा122) और वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया। (फ़ा123) यानी वहां के रहने वाले काफ़िर थे (फ़ा124) कि उनसे कोई पानी भरने वाला नहीं (फ़ा125) वीरान पड़े हैं (फ़ा126) कुफ़्फ़ार के उन हालात का मुशाहिदा करें। (फ़ा127) कि अम्बिया की तकज़ीब का क्या अन्जाम हुआ और इबरत हासिल करें (फ़ा128) पिछली उम्मतों के **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۭ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ

व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ़्–दहू व इन्–न यौमन् अ़िन्–द रब्बि–क क–अल्फ़ि स–नतिम् मिम्मा तअुद्दून(47)व क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् अम्लैतु लहा व हि–य ज़ालि–मतुन् सुम्–म अ–ख़ज़्तुहा व इलय्यल् मसीर(48)क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नमा अना लकुम् नज़ीरुम् मुबीन(49) फ़ल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व रिज़्क़ुन् करीम(50)वल्लज़ी–न सऔ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी–न उलाइ–क अस्हाबुल् जहीम(51)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क मिर्रसूलिंव् व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा त–मन्ना अल्क़श्–शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही फ़–यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम्–म युह्किमुल्लाहु आयातिही वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(52)लि–यज्अ़–ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्नतल् लिल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुंव् वल्क़ासि–यति क़ुलूबुहुम् व इन्नज़्ज़ालिमी–न लफ़ी शिक़ाक़िम् बअ़ीद(53)व लियअ़्ल–मल्लज़ी–न ऊतुल्अ़िल्–म अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बि–क

और अल्लाह हरगिज़ अपना वादा झूठा न करेगा (फ़ा132) और बेशक तुम्हारे रब के यहां (फ़ा133) एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिन्ती में हज़ार बरस।(47) (फ़ा134) और कितनी बस्तियाँ कि हमने उनको ढील दी इस हाल पर कि वह सितमगार थीं फिर मैंने उन्हें पकड़ा (फ़ा135) और मेरी ही तरफ़ पलट कर आना है।(48) (फ़ा136) (रुकूअ़ 13) तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगों मैं तो यही तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(49) तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।(50) (फ़ा137) और वह जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादा से (फ़ा138) वह जहन्नमी हैं।(51) और हमने तुम से पहले जितने रसूल या नबी भेजे (फ़ा139) सब पर यह वाक़ेआ़ गुज़रा है कि जब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर कुछ अपनी तरफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है (फ़ा140) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(52) ताकि शैतान के डाले हुए को फ़ित्ना कर दे (फ़ा141) उनके लिए जिनके दिलों में बीमारी है (फ़ा142) और जिनके दिल सख़्त हैं (फ़ा143) और बेशक सितमगार (फ़ा144) धुर के झगड़ालू हैं।(53) और इस लिए कि जान लें वह जिनको इल्म मिला है (फ़ा145) कि वह (फ़ा146) तुम्हारे रब के पास से

(फ़ा132) और ज़रूर हस्बे वादा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा चुनांचे यह वादा बद्र में पूरा हुआ (फ़ा133) आख़िरत में अ़ज़ाब का। (फ़ा134) तो यह कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। (फ़ा135) और दुनिया में उनपर अ़ज़ाब नाज़िल किया (फ़ा136) आख़िरत में (फ़ा137) जो कभी मुन्क़तअ़ न हो वह जन्नत है। (फ़ा138) कि कभी इन आयात को सेहर कहते हैं कभी शेअ़्र कभी पिछलों के क़िस्से और वह यह ख़्याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उनका यह मक्र चल जाएगा। (फ़ा139) नबी और रसूल में फ़र्क़ है नबी आम है और रसूल ख़ास बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि रसूल शरअ़् के वाज़ेअ़् होते हैं और नबी उसके हाफ़िज़ व निगहबान। शाने नुज़ूल जब सूरए वन्नज्म नाज़िल हुई तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिदे हराम में इसकी तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता आहिस्ता आयतों के दर्मियान वक़्फ़ा फ़रमाते हुए जिससे सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले जब आपने आयत व मनातस्सालि–स–तल्–उख़्रा पढ़ कर हस्बे दस्तूर वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैतान ने मुशरिकीन के कान में इससे मिलाकर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिनसे बुतों की तारीफ़ निकलती थी जिबरील अमीन ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह हाल अर्ज़ किया इससे हुज़ूर को रन्ज हुआ अल्लाह तआ़ला ने आपकी तसल्ली के लिए यह आयत नाज़िल फ़रमाई। (फ़ा140) जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

فَيُؤْمِنُوا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ۝ اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ
عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

फ़युअ्मिनू बिही फ़–तुख़्बि–त लहू कुलूबुहुम् व इन्नल्ला–ह लहादिल्लज़ी–न आ–मनू इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(54)व ला यज़ालुल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु हत्ता तअ्ति–यहुमुस् सा–अ़तु बग़्त–तन् औ यअ्ति–यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़क़ीम(55)अल्मुल्कु यौ–मइज़िल् लिल्लाहि यह्कुमु बै–नहुम् फ़ल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन् नओ़म(56)वल्लज़ी –न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुम् मुहीन(57)वल्लज़ी–न हा–जरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्–म कुतिलू औ मातू ल–यर्ज़ुक़न्–नहुमुल्लाहु रिज़्–क़न् ह–स–नन् व इन्नल्ला–ह लहु–व ख़ैरुर्–राज़िक़ीन(58)लयुदख़िलन्नहुम् मुदख़–लंय्यर्ज़ौ–नहू व इन्नल्ला–ह ल–अ़लीमुन् हलीम(59)ज़ालि–क व मन् आ–क़–ब बिमिस्लि मा ऊक़ि–ब बिही सुम्–म बुग़ि –य अ़लैहि ल–यन्सुरन्नहुल्लाहु इन्नल्ला–ह ल–अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर(60)ज़ालि–क बि–अन्नल्ला–ह यूलिजुल्लै–ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा–र

हक़ है तो उस पर ईमान लायें तो झुक जायें उसके लिए उनके दिल और बेशक अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह चलाने वाला है।(54) और काफ़िर उससे (फ़ा147) हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उन पर क़ियामत आ जाए अचानक (फ़ा148) या उन पर ऐसे दिन का अ़ज़ाब आए जिसका फल उनके लिए कुछ अच्छा न हो।(55) (फ़ा149) बादशाही उस दिन (फ़ा150) अल्लाह ही की है वह उनमें फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और (फ़ा151) अच्छे काम किये वह चैन के बाग़ों में हैं।(56) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाई उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।(57) (रुकूअ़ 14) और वह जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर बार छोड़े (फ़ा152) फिर मारे गए या मर गए तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा (फ़ा153) और बेशक अल्लाह की रोज़ी सबसे बेहतर है।(58) ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वह पसन्द करेंगे (फ़ा154) और बेशक अल्लाह इल्म व हिल्म वाला है।(59) बात यह है और जो बदला ले (फ़ा155) जैसी तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उस पर ज़्यादती की जाए (फ़ा156) तो बेशक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएगा (फ़ा157) बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।(60) यह (फ़ा158) इस लिए कि अल्लाह तआ़ला रात को डालता है दिन के हिस्सा में और दिन को लाता है

(फ़ा147) यानी क़ुरआन से या दीने इस्लाम से। (फ़ा148) या मौत कि वह भी क़ियामते सुग़रा है। (फ़ा149) इससे बद्र का दिन मुराद है जिस में काफ़िरों के लिए कुछ कशाइश व राहत न थी और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इससे रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़ा150) यानी क़ियामत के दिन (फ़ा151) उन्होंने (फ़ा152) और उसकी रज़ा के लिये अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को छोड़ कर वतन से निकले और मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्येबा की तरफ़ हिजरत की। (फ़ा153) यानी रिज़्के जन्नत जो कभी मुन्क़तअ़ न हो (फ़ा154) वहां उनकी हर मुराद पूरी होगी और कोई नागवार बात पेश न आएगी। शाने नुज़ूलः नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आपके बाज़ असहाब ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे जो असहाब शहीद हो गए हम जानते हैं कि बारगाहे इलाही में उनके बड़े दर्जे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे लेकिन अगर हम आपके साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिए क्या है इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं *वल्लज़ी–न हा–जरू फ़ी सबीलिल्लाहि* (फ़ा155) कोई मोमिन ज़ुल्म का मुशरिक से (फ़ा156) ज़ालिम की तरफ़ से उसको बे वतन करके। (फ़ा157) शाने नुज़ूलः यह आयत मुशरिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जो माहे मुहर्रम की अख़ीर तारीख़ों में मुसलमानों पर हमला आवर हुए और मुसलमानों ने माहे मुबारक की हुरमत के ख़्याल से लड़ना न चाहा मगर मुशरिक न माने और **(बक़िया सफ़हा 559 पर)**

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٦١ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٦٢ اَلَمْ
تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝٦٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦٤ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٥ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝٦٦ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ۭ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ۝٦٧ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٦٨

फ़िल्लैलि व अन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(61)ज़ालि–क बि–अन्नल्ला–ह हुवल्–हक़्क़ु व अन्–न मा यदअू–न मिन् दूनिही हुवल्बातिलु व अन्नल्ला–ह हुवल्–अलिय्युल् कबीर(62)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़तुस्बिहुल् अर्जु मुख़्ज़र्र–तन् इन्नल्ला–ह लतीफ़ुन् ख़बीर(63)लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन्नल्ला–ह लहुवल् ग़निय्युल् हमीद(64)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह सख़्ख़–र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल्–क तज्री फ़िल्बह्रि बिअम्रिही व युम्सि– कुस्समा–अ अन् त–क़–अ अ–लल्अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही इन्नल्ला–ह बिन्नासि ल–रऊफ़ुर्रहीम (65)व हुवल्लज़ी अह्याकुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म युह्यीकुम् इन्नल्इन्सा–न ल–कफ़ूर (66)लिकुल्लि उम्मतिन् ज–अ़ल्ना मन्स–कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न–क फ़िल्अम्रि वदअु इला रब्बि–क इन्न–क ल–अ़ला हुदम् मुस्तक़ीम(67)व इन् जा–दलू–क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्–लमु बिमा तअ्–मलून(68)

रात के हिस्सा में (फ़159) और इस लिए कि अल्लाह सुनता देखता है।(61) यह इस लिए (फ़160) कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे पूजते हैं (फ़161) वही बातिल है और इस लिए कि अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है।(62) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो सुबह को ज़मीन (फ़162) हरियाली हो गई बेशक अल्लाह पाक ख़बरदार है।(63) उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है।(64) (रुकूअ़ 15) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है (फ़163) और कश्ती कि दरिया में उसके हुक्म से चलती है (फ़164) और वह रोके हुए है आसमान को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उसके हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर वाला मेहरबान है।(65) (फ़165) और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दा किया (फ़166) फिर तुम्हें मारेगा (फ़167) फिर तुम्हें जिलाएगा (फ़168) बेशक आदमी बड़ा ना शुकरा है।(66) (फ़169) हर उम्मत के लिए (फ़170) हमने इबादत के क़ाइदे बना दिये कि वह उन पर चले (फ़171) तो हरगिज़ वह तुम से इस मुआ़मले में झगड़ा न करें (फ़172) और अपने रब की तरफ़ बुलाओ (फ़173) बेशक तुम सीधी राह पर हो।(67) और अगर वह (फ़174) तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे कोतक।(68)

(फ़ा159) यानी कभी दिन को बढ़ाता रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है उसके सिवा कोई उस पर क़ुदरत नहीं रखता जो ऐसा क़ुदरत वाला है वह जिसकी चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे। (फ़ा160) यानी और यह मदद इस लिए भी है (फ़ा161) यानी बुत (फ़ा162) सब्ज़े से। (फ़ा163) जानवर वग़ैरह जिन पर तुम सवार होते हो और जिन से तुम काम लेते हो तुम्हारे लिए उसके चलाने के वास्ते हवा और पानी को मुसख़्ख़र किया (फ़ा164) कि उसने उनके लिए मनफ़अ़तों के दरवाज़े खोले और तरह तरह की मुज़र्रतों से उनको महफ़ूज़ किया (फ़ा165) बेजान नुत्फ़ा से पैदा फ़रमा कर। (फ़ा166) तुम्हारी उम्रें पूरी होने पर (फ़ा167) रोज़े बअ़्स सवाब व अ़ज़ाब के लिए (फ़ा168) कि बावजूद इतनी नेअ़मतों के उसकी इबादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़्लूक़ की परस्तिश करता है (फ़ा169) अहले दीन व मलल में से (फ़ा170) और आ़मिल हो (फ़ा171) यानी अम्रे दीन में या ज़बीहा के अम्र में (फ़ा172) शाने नुज़ूलः यह आयत बदील बिन वरक़ा और बशर बिन सुफ़ियान और यज़ीद बिन ख़नीस के हक़ में नाज़िल हुई इन लोगों ने असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि क्या सबब है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिसको अल्लाह मारता है उसको नहीं (बक़िया सफ़हा 559 पर)

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ

مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝ مَا قَدَرُوا

अल्लाहु यह्कुमु बै–नकुम् यौमल् क़िया–मति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून(69)अ–लम् तअ्–लम् अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि इन्–न ज़ालि–क फ़ी किताबिन् इन्–न ज़ालि–क अ–लल्लाहि यसीर(70)व यअ्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव् व मा लै–स लहुम् बिही अिल्मुन् व मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् नसीर(71)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्रिफु फ़ी वुजूहिल् लज़ी–न क–फ़रुल्मुन्क–र यकादू–न यस्तू–न बिल्लज़ी–न यत्लू–न अ़लैहिम् आयातिना क़ुल् अ–फ़उ–नब्बिउकुम् बिशर्रिम् मिन् ज़ालिकुम् अन्नारु व– अ–द–हल्लाहुल् लज़ी–न क–फ़रू व बिअ्सल् मसीर(72)या–अय्युहन्नासु ज़ुरि–ब म–सलुन् फ़स्तमिअू लहू इन्नल्लज़ी–न तद्अू–न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव् व लविज्त–मअू लहू व इंय्यस्लुब्–हुमुज़् ज़ुबाबु शैअल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु ज़अुफ़त्तालिबु वल्मत़्लूब(73)मा क़–दरुल्ला–ह

अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ कर रहे हो।(69) (फ़्र175) क्या तूने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक यह सब एक किताब में है (फ़्र176) बेशक यह (फ़्र177) अल्लाह पर आसान है।(70) (फ़्र178) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं (फ़्र179) जिनकी कोई सनद उसने न उतारी और ऐसों को जिनका ख़ुद उन्हें कुछ इल्म नहीं (फ़्र180) और सितमगारों का (फ़्र181) कोई मददगार नहीं।(71) (फ़्र182) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जायें (फ़्र183) तो तुम उनके चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखो जिन्होंने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उनको जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे उस हाल से भी (फ़्र184) बदतर है वह आग है अल्लाह ने उसका वादा दिया है काफ़िरों को और क्या ही बुरी पलटने की जगह।(72) (रुकूअ् 16) ऐ लोगो एक कहावत फ़रमाई जाती है उसे कान लगा कर सुनो (फ़्र185) वह जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो (फ़्र186) एक मक्खी न बना सकेंगे अगरचे सब उस पर इकट्ठे हो जायें (फ़्र187) और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन कर ले जाए (फ़्र188) तो उससे छुड़ा न सकें (फ़्र189) कितना कमज़ोर चाहने वाला और वह जिसको चाहा।(73) (फ़्र190) अल्लाह की क़दर

(फ़ा175) और तुम पर हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर हो जाएगी (फ़ा176) यानी लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा177) यानी इन सब का इल्म या तमाम हवादिस का लौहे महफ़ूज़ में सब्त फ़रमाना (फ़ा178) इसके बाद कुफ़्फ़ार की जहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वह ऐसों की इबादत करते हैं जो इबादत के मुस्तहिक़ नहीं (फ़ा179) यानी बुतों को (फ़ा180) यानी उनके पास अपने इस फ़ेअ्ल की न कोई दलील अ़क़्ली है न नक़ली महज़ जहल व नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक़ नहीं उनको पूजते हैं यह शदीद ज़ुल्म है (फ़ा181) यानी मुशरिकीन का (फ़ा182) जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। (फ़ा183) और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया जाये जिसमें बयाने अहकाम और तफ़सील हलाल व हराम है (फ़ा184) यानी तुम्हारे इस ग़ैज़ व नागवारी से भी जो क़ुरआने पाक सुनकर तुम में पैदा होती है। (फ़ा185) और उसमें ख़ूब ग़ौर करो वह कहावत यह है कि तुम्हारे बुत। (फ़ा186) उनकी आ़जिज़ी और बे क़ुदरती का यह हाल है कि वह निहायत छोटी से चीज़ (फ़ा187) तो आ़क़िल को कब शायाँ है कि ऐसे को मअ़बूद ठहराये ऐसे को पूजना और इलाह क़रार देना कितना इन्तेहा दर्जे का जहल है। (फ़ा188) वह शहद व ज़ाफ़रान वग़ैरह जो मुशरिकीन बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं जिस पर मक्खियां भनकती हैं (फ़ा189) ऐसे को ख़ुदा बनाना और मअ़बूद ठहराना कितना अ़जीब और अ़क़्ल से दूर है। (फ़ा190) चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है या चाहने वाले से मक्खी मुराद है जो बुत पर से शहद व ज़ाफ़रान की तालिब है और मतलूब से बुत और बाज़ ने कहा कि तालिब से बुत मुराद है और मतलूब से मक्खी।

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۭ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ ښ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۭ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

हक़्–क़ क़दरिही इन्नल्ला–ह ल–क़विय्युन् अज़ीज़(74)अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल् मलाइ–कति रुसुलंव् व मिनन्नासि इन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(75)यअ्–लमु मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व इलल्लाहि तुर्–जअुल् उमूर(76)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुर्–कअू वस्जुदू वअ्बुदू रब्बकुम् वफ़्–अलुल् ख़ै–र ल–अल्लकुम् तुफ़्लिहून(77)व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्–क़ जिहादिही हुवज्तबाकुम् व मा ज–अ–ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह–रजिन् मिल्–ल–त अबीकुम् इब्राही–म हु–व सम्माकुमुल् मुस्लिमी–न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि–यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु–हदा–अ अ़–लन्नासि फ़–अक़ीमुस् सला–त व आतुज़्ज़का–त वअ्–तसिमु बिल्लाहि हु–व मौलाकुम् फ़–लिअ्मल् मौला व निअ्–मन्नसीर(78)

जानी जैसी चाहिये थी (फ़ा191) बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है।(74) अल्लाह चुन लेता है फ़रिश्तों में से रसूल (फ़ा192) और आदमियों में से (फ़ा193) बेशक अल्लाह सुनता देखता है।(75) जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है (फ़ा194) और सब कामों की रुजूअ् अल्लाह की तरफ़ है।(76) ऐ ईमान वालो रुकूअ् और सज्दा करो (फ़ा195) और अपने रब की बन्दगी करो (फ़ा196) और भले काम करो (फ़ा197) इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो। (77) और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का (फ़ा198) उसने तुम्हें पसन्द किया (फ़ा199) और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी (फ़ा200) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (फ़ा201) अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल तुम्हारा निगेहबान व गवाह हो (फ़ा202) और तुम और लोगों पर गवाही दो (फ़ा203) तो नमाज़ बरपा रखो (फ़ा204) और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो (फ़ा205) वह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार।(78) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा191) और उसकी अज़मत पहचानी जिन्होंने ऐसों को खुदा का शरीक किया जो मक्खी से भी कमज़ोर हैं मअ्बूद वही है जो कुदरते कामिला रखे। (फ़ा192) मिस्ल जिबरील व मीकाईल वग़ैरह के (फ़ा193) मिस्ल हज़रत इब्राहीम व हज़रत मूसा व हज़रत ईसा व हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शाने नुज़ूलः यह आयत उन कुफ़्फ़ार के रद में नाज़िल हुई जिन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर कैसे रसूल हो सकता है इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है जिसे चाहे अपना रसूल बनाये वह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और मलाइका में से भी जिन्हें चाहे। (फ़ाफ़ा194) यानी उमूरे दुनिया को भी और उमूरे आख़िरत को भी या उनके गुज़रे हुए आमाल को भी और आइन्दा के अहवाल को भी (फ़ा195) अपनी नमाज़ों में इस्लाम के अव्वल अहद में नमाज़ बग़ैर रुकूअ् व सुजूद के थी फिर नमाज़ में रुकूअ. व सुजूद का हुक्म फरमाया गया। (फ़ा196) यानी रुकूअ. व सुजूद ख़ास अल्लाह के लिए हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो (फ़ा197) सिला रहमी व मकारिमे अख़्लाक़ वग़ैरह नेकियां (फ़ा198) यानी नीयते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ एअ्लाए दीन के लिए (फ़ा199) अपने दीन व इबादत के लिए (फ़ा200) बल्कि ज़रूरत के मौक़ों पर तुम्हारे लिए सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की हालत में गुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम तो तुम दीन की पैरवी करो (फ़ा201) जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है (फ़ा202) रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास खुदा का पयाम पहुंचा दिया। (फ़ा203) कि उन्हें इन रसूलों ने अहकामे खुदावन्दी पहुंचा दिये अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें यह इज़्ज़त व करामत अ़ता फ़रमाई। (फ़ा204) इस पर मदावमत करो (फ़ा205) और उसके दीन पर क़ायम रहो।

(बक़िया सफ़हा 531 का) लिए उन्होंने मोअ्.जेज़ात को जादू बता दिया और कहा (फ़ा7) उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती ख़्वाह कितने ही पर्दा और राज़ में रखी गई हो उनका राज़ भी इसमें ज़ाहिर फ़रमा दिया उसके बाद क़ुरआने करीम से उन्हें सख़्त परेशानी व हैरानी लाहक़ थी कि इसका किस तरह इन्कार करें वह ऐसा बैय्यन मोअ्जेज़ा है जिसने तमाम मुल्क के माया नाज़ माहिरों को आ़जिज़ व मुतहय्यर कर दिया है और वह इसकी दो चार आयतों की मिस्ल कलाम बना कर नहीं ला सके इस परेशानी में उन्होंने क़ुरआन की निस्बत मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें कहीं जिनका बयान अगली आयत में है (फ़ा8) उनको नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह़ीए इलाही समझ गए हैं कुफ़्फ़ार ने यह कह कर सोचा कि यह बात चस्पाँ नहीं हो सकेगी तो अब उसको छोड़ कर कहने लगे (फ़ा9) यह कहकर ख़्याल हुआ कि लोग कहेंगे कि अगर यह कलाम हज़रत का बनाया हुआ है और तुम उन्हें अपने मिस्ल बशर भी कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यों नहीं बना सकते यह ख़्याल करके इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे। (फ़ा10) और यह कलाम शेअ्.र है इसी तरह की बातें बनाते रहे किसी एक बात पर क़ाइम न रह सके और अहले बातिल कज़्ज़ाबों का यही हाल होता है अब उन्होंने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे (फ़ा11) इसके रद् व जवाब में अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा12) माना यह हैं कि उन से पहले लोगों के पास जो निशानियां आईं तो वह उन पर ईमान न लाये और उनकी तकज़ीब करने लगे और इस सबब से हलाक कर दिये गए तो क्या यह लोग निशानी देख कर ईमान ले आयेंगे बावजूदेकि इनकी सरकशी उनसे बढ़ी हुई है (फ़ा13) यह उनके कलामे साबिक़ का रद् है कि अम्बिया का सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमाना नबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं हमेशा ऐसा ही होता रहा है। (फ़ा14) क्योंकि नावाक़िफ़ को इससे चारा ही नहीं कि वाक़िफ़ से दरियाफ़्त करे और मर्ज़े जहल का इलाज यही है कि आलिम से सवाल करे और उसके हुक्म पर आ़मिल हो। **मसलाः** इस आयत से तक़लीद का वुजूब साबित होता है यहां उन्हें इल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया कि उनसे दरियाफ़्त करो कि अल्लाह के रसूल सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमा हुए थे या नहीं इससे तुम्हारे तरद्दुद का ख़ात्मा हो जाएगा।

(बक़िया सफ़हा 532 का) और तुम्हारे अमवाल क्या हुए तो तुम दरियाफ़्त करने वाले को अपने इल्म व मुशाहदे से जवाब दे सको। (फ़ा27) अ़ज़ाब देखने के बाद उन्होंने गुनाह का इक़रार किया और नादिम हुए इस लिए यह एतेराफ़ उन्हें काम न आया। (फ़ा28) खेत की तरह कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की तरह होगए। (फ़ा29) कि उनसे कोई फ़ाइदा न हो बल्कि उसमें हमारी हिकमतें हैं मिनजुमला उनके यह है कि हमारे बन्दे उन से हमारी क़ुदरत व हिकमत पर इस्तेदलाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ व कमाल की मअ्.रेफ़त हो (फ़ा30) मिस्ल ज़न व फ़रज़न्द के जैसा कि नसारा कहते हैं और हमारे लिए बीबी और बेटियां बताते हैं अगर यह हमारे हक़ में मुमकिन होता (फ़ा31) क्योंकि ज़न व फ़रज़न्द वाले ज़न व फ़रज़न्द अपने पास रखते हैं मगर हम इससे पाक हैं हमारे लिए यह मुमकिन ही नहीं (फ़ा32) माना यह हैं कि हम अहले बातिल के किज़्ब को बयाने हक़ से मिटा देते हैं(फ़ा33)ऐ कुफ़्फ़ार नाबकार (फ़ा34)शाने इलाही में कि उसके लिए बीवी व बच्चा ठहराते हो

(बक़िया सफ़हा 533 का) पर मुत्तफ़िक़ हुए तो लाज़िम आएगा कि एक चीज़ दोनों की मक़दूर हो और दोनों की क़ुदरत से वाक़ेअ्. हो यह मुहाल है और अगर मुख़्तलिफ़ हुए तो एक शय के मुतअ़ल्लिक़ दोनों के इरादे या मअ़न वाक़ेअ्. होंगे और एक ही वक़्त में वह मौजूद व मअ्.दूम दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़ेअ्. न हों और शय न मौजूद हो न मअ्दूम या एक का इरादा वाक़ेअ् हो दूसरे का वाक़ेअ्. न हो यह तमाम सूरतें मुहाल हैं तो साबित हुआ कि फ़साद हर तक़दीर पर लाज़िम है तौहीद की यह निहायत क़वी बुरहान है और उसकी तक़रीरें बहुत बस्त के साथ अइम्मए कलाम की किताबों में मज़कूर हैं यहां इख़्तेसारन इसी क़दर पर इक्तेफ़ा किया गया (तफ़सीर कबीर वग़ैरह) (फ़ा42) कि उसके लिए औलाद व शरीक ठहराते हैं (फ़ा43) क्योंकि वह मालिके हक़ीक़ी है जो चाहे करे जिसे चाहे इज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे वह सब का हाकिम है कोई उसका हाकिम नहीं जो उससे पूछ सके (फ़ा44) क्योंकि सब उसके बन्दे हैं ममलूक हैं सब पर उसकी फ़रमांबरदारी और इताअ़त लाज़िम है इससे तौहीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है जब सब ममलूक हैं तो उन में से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है उसके बाद बतरीक़े इस्तिफ़हाम तौबीख़न फ़रमाया (फ़ा45) ऐ हबीब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उन मुशरिकीन से कि तुम अपने इस बातिल दावा पर (फ़ा46) और हुज्जत क़ायम करो ख़्वाह अक़्ली हो या नक़्ली मगर न कोई दलील अ़क़्ली ला सकते हो जैसा कि बराहीन मज़कूरा से ज़ाहिर हो चुका और न कोई दलील नक़्ली पेश कर सकते हो क्योंकि तमाम कुतुबे समाविया में अल्लाह तआ़ला की तौहीद का बयान है और सब में शिर्क का इबताल किया गया है (फ़ा47) साथ वालों से मुराद आपकी उम्मत है क़ुरआने करीम में इसका ज़िक्र है कि उसको ताअ़त पर क्या सवाब मिलेगा और मअ्.सियत पर क्या अ़ज़ाब किया जाएगा। (फ़ा48) यानी पहले अम्बिया की उम्मतों का और इसका कि दुनिया में उनके साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा। (फ़ा49) और ग़ौर व तअम्मुल नहीं करते और नहीं सोचते कि तौहीद पर ईमान लाना उनके लिए ज़रूरी है। (फ़ा50) **शाने नुज़ूलः** यह आयत ख़ुज़ाआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा था। (फ़ा51) उसकी ज़ात इससे मुनज़्ज़ा है कि उसके औलाद हो। (फ़ा52) यानी फ़रिश्ते उसके बरगुज़ीदा और मुकर्रम बन्दे हैं। (फ़ा53) यानी जो कुछ उन्होंने किया और जो कुछ वह आईन्दा करेंगे। (फ़ा54) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यानी जो तौहीद का क़ायल हो।

(बक़िया सफ़हा 534 का) है कि हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात हो जाएगी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि दुश्मनाने रसूल के लिए यह कोई ख़ुशी की बात नहीं हमने दुनिया में किसी आदमी के लिए हमेशगी नहीं रखी। (फ़ा67) और उन्हें मौत के पंजे से रिहाई मिल जाएगी जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते

हैं हक़ीक़त यह है कि (फ़ा68) यानी राहत व तकलीफ़ तन्दुरुस्ती व बीमारी दौलतमन्दी व नादारी नफ़ा और नुक़सान से (फ़ा69) ताकि ज़ाहिर हो जाये कि सब्र व शुक्र में तुम्हारा क्या दर्जा है। (फ़ा70) हम तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा देंगे। (फ़ा71) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई हुज़ूर तशरीफ़ लिए जाते थे वह आपको देख कर हंसा और कहने लगा कि यह बनी अब्द मनाफ़ के नबी हैं और आपस में एक दूसरे से कहने लगे (फ़ा72) कुफ़्फ़ार

(बक़िया सफ़्हा 535 का) रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वह अपने बुतों की निस्बत यह एतेक़ाद रखते हैं तो उनका हाल यह है कि (फ़ा86) अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे। (फ़ा87) यानी कुफ़्फ़ार को (फ़ा88) और दुनिया में उन्हें निअ्मत व मुहलत दी। (फ़ा89) और वह उससे और मग़रूर हुए और उन्होंने गुमान किया कि वह हमेशा ऐसे ही रहेंगे। (फ़ा90) कुफ़्रिस्तान की (फ़ा91) रोज़ बरोज़ मुसलमानों को उस पर तसल्लुत दे रहे हैं और एक शहर के बाद दूसरा शहर फ़तह होता चला आ रहा है हुदूदे इस्लाम बढ़ रही हैं और सरज़मीने कुफ़्र घटती चली आती है और हवालीए मक्का मुकर्रमा पर मुसलमानों का तसल्लुत होता जाता है क्या मुशरिकीन जो अ़ज़ाब तलब करने में जल्दी करते हैं उसको नहीं देखते और इबरत हासिल नहीं करते (फ़ा92) जिनके क़ब्ज़ा से ज़मीन दम ब-दम निकलती जा रही है या रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और उनके असहाब जो ब-फ़ज़्ले इलाही फ़तह पर फ़तह पा रहे हैं और उनके मक़बूज़ात दम ब-दम बढ़ते चले जाते हैं (फ़ा93) और अ़ज़ाबे इलाही का उसी की तरफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूं।

(बक़िया सफ़्हा 537 का) उन्होंने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो (फ़ा111) यह ख़बर नमरूद व जब्बार और उसके उमरा को पहुंची तो। (फ़ा112) कि यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ही का फ़ेअ़ल है या उन से बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया है मुद्दआ़ यह था कि शहादत क़ाइम हो तो वह आपके दरपै हों चुनान्चे हज़रत बुलाए गए और वह लोग (फ़ा113) आपने इसका तो कुछ जवाब न दिया और शाने मुनाज़रा ना से तअ़रीज़ के तौर पर एक अ़जीब व ग़रीब हुज्जत क़ायम की (फ़ा114) इस ग़ुस्सा से कि उसके होते तुम उसके छोटों को पूजते हो उसके कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही क़ियास किया जा सकता है मुझसे क्या पूछना पूछना हो (फ़ा115) वह खुद बतायें कि उनके साथ यह किसने किया मुद्दआ़ यह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता जो कुछ कर नहीं सकता वह खुदा नहीं हो सकता उसकी खुदाई का एतेक़ाद बातिल है चुनान्चे आपने यह फ़रमाया (फ़ा116) और समझे कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हक़ पर हैं (फ़ा117) जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो जो अपने कांधे से बसूला न हटा सके वह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सके और उसके क्या काम आ सके। (फ़ा118) और कलिमए हक़ कहने के बाद फिर उनकी बदबख़्ती उनके सरों पर सवार हुई और वह कुफ़्र की तरफ़ पलटे और बातिल मुजादला व मुक़ाबरा शुरू किया और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे। (फ़ा119) तो हम उनसे कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम तुम हमें उनसे पूछने का कैसे हुक्म देते हो। (फ़ा120) अगर इसे पूजो। (फ़ा121) अगर इसका पूजना मौक़ूफ़ कर दो। (फ़ा122) कि इतना भी समझ सको कि यह बुत पूजने के क़ाबिल नहीं जब हुज्जत तमाम हो गई और वह लोग जवाब से आ़जिज़ आये तो

(बक़िया सफ़्हा 538 का) पर फ़ाइक़ है यहां कसरत से नहरें हैं पानी पाकीज़ा और खुशगवार है अश्जार व समार की कसरत है हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने मक़ामे फ़लस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने मोतफ़िका में (फ़ा130) और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से बेटे की दुआ़ की थी। (फ़ा131) लोगों को हमारे दीन की तरफ़। (फ़ा132) उस बस्ती का नाम सुदूम था (फ़ा133) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा134) यानी तूफ़ान से और तकज़ीब अहले तुग़यान से

(बक़िया सफ़्हा 539 का) मसला का हुक्म था और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जो तजवीज़ फ़रमाई यह सूरते सुलह थी। (फ़ा137) वुजूहे इज्तेहाद व तरीक़े अहकाम वग़ैरह का मसला जिन उलमा को इज्तेहाद की अहलियत हासिल हो उन्हें इन उमूर में इज्तेहाद का हक़ है जिस में वह किताब व सुन्नत का हुक्म न पावें और अगर इज्तेहाद में ख़ता भी हो जावे तो भी उन पर मुआख़ज़ा नहीं बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तेहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में मुसीब हो तो उस के लिए दो अज्र हैं और अगर इज्तेहाद में ख़ता वाक़ेअ़ हो जाये तो एक अज्र (फ़ा138) पत्थर और परिन्दे आपके साथ आपकी मुवाफ़क़त में तस्बीह करते थे। (फ़ा139) यानी जंग में दुश्मन के मुक़ाबिल काम आये और वह ज़िरह है सब से पहले ज़िरह बनाने वाले हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम हैं (फ़ा140) उस ज़मीन से मुराद शाम है जो आपका मसकन था। (फ़ा141) दरिया की गहराई में दाख़िल होकर समुन्दर की तह से आपके लिए जवाहर निकाल कर लाते। (फ़ा142) अ़जीब अ़जीब सनअ़तें इमारतें महल बर्तन शीशे की चीज़ें साबुन वग़ैरह बनाना। (फ़ा143) कि आपके हुक्म से बाहर न हों (फ़ा144) यानी अपने रब से दुआ़ की हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं अल्लाह तआ़ला ने आपको हर तरह की निअ्मतें अ़ता फ़रमाई हैं हुस्ने सूरत भी कसरते औलाद भी कसरते अमवाल भी अल्लाह तआ़ला ने आपको इब्तेला में डाला और आपके फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊँट हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को इन चीज़ों से हलाक होने और ज़ाया होने की ख़बर दी जाती थी तो आप हम्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे मेरा क्या है जिस का था उसने लिया जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उसका शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूं फिर आप बीमार हुए तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया सब लोगों ने छोड़ दिया बजुज़ आप की बीबी साहिबा के कि वह आपकी ख़िदमत करती रहीं और यह हालत सालहा

साल रही आख़िरकार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आपने बारगाहे इलाही में दुआ की (फ़ा145) इस तरह से कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पांव मारिये उन्होंने पाँव मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुआ हुक्म दिया गया इससे ग़ुस्ल कीजिये ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाँव मारने का हुक्म हुआ फिर आपने पाँव मारा उससे भी एक चश्मा ज़ाहिर हुआ जिसका पानी निहायत सर्द था आपने बहुक्मे इलाही पिया इससे बातिन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आपको आला दर्जा की सेहत हासिल हुई (फ़ा146) हज़रत इब्ने मसऊद व इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपकी तमाम औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आपको उतनी ही औलाद और इनायत की हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने आप की बीबी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उनके कसीर औलादें हुईं (फ़ा147) कि वह इस वाक़िआ से बलाओं पर सब्र करने और उसके सवाबे अज़ीम से बाख़बर हों और सब्र करें और सवाब पायें। (फ़ा148) कि उन्होंने मेहनतों और बलाओं और इबादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया।

(बक़िया सफ़हा 540 का) में हज़रत ईसा को पैदा किया (फ़ा163) अपने कमाले क़ुदरत की कि हज़रत ईसा को उसके बतन से बग़ैर बाप के पैदा किया (फ़ा164) दीने इस्लाम यही तमाम अम्बिया का दीन है इसके सिवा जितने अदियान हैं सब बातिल, सबको इसी दीन पर क़ाइम रहना लाज़िम है। (फ़ा165) न मेरे सिवा कोई दूसरा रब न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन (फ़ा166) यानी दीन में इख़्तिलाफ़ किया और फ़िरक़े फ़िरक़े हो गए (फ़ा167) हम उन्हें उनके आमाल की जज़ा देंगे।

(बक़िया सफ़हा 541 का) तलहा और ज़ुबैर और सअद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़। **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रोज़ कअ्बा मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए उस वक़्त क़ुरैश के सरदार हतीम में मौजूद थे और कअ्बा शरीफ़ के गिर्द तीन सौ साठ बुत थे नज़र बिन हारिस सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आया और आप से कलाम करने लगा हुज़ूर ने उसको जवाब देकर साकित कर दिया और यह आयत तिलावत फ़रमाई *इन्नकुम् व मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह़-स-बु जहन्न-म* कि तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं यह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले आये फिर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबअरी सहमी आया उसको वलीद बिन मुग़ीरा ने इस गुफ़्तगू की ख़बर दी कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं होता तो उन से मुबाहसा करता इस पर लोगों ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुलाया इब्ने ज़ुबअरी यह कहने लगा कि आपने यह फ़रमाया है कि तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि हां, कहने लगा यहूद तो हज़रत उज़ैर को पूजते हैं और नसारा हज़रत मसीह को पूजते हैं और बनी मलीह फ़रिश्तों को पूजते हैं इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और बयान फ़रमा दिया कि हज़रत उज़ैर और मसीह और फ़रिश्ते वह हैं जिनके लिए भलाई का वादा हो चुका और वह जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दर हक़ीक़त यहूद व नसारा वग़ैरह शैतान की परस्तिश करते हैं इन जवाबों के बाद उसको मजाले दम ज़दन न रही और वह साकित रह गया और दर हक़ीक़त उसका एतेराज़ कमाले इनाद से था क्योंकि जिस आयत पर उसने एतेराज़ किया उसमें *मा तअ्बुदू-न* है और मा ज़बाने अरबी में ग़ैर ज़विल उक़ूल के लिए बोला जाता है यह जानते हुए उसने अन्धा बन कर एतेराज़ किया यह एतेराज़ तो अहले ज़बान की निगाहों में खुला हुआ बातिल था मगर मज़ीद बयान के लिए इस आयत में तौज़ीह फ़रमा दी गई। (फ़ा181) और उसके जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी वह मनाज़िले जन्नत में आराम फ़रमा होंगे (फ़ा182) ख़ुदावन्दी निअ्मतों और करामतों में (फ़ा183) यानी नफ़्ख़ए अख़ीरा (फ़ा184) क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारकबादें देते तहनियत पेश करते और यह कहते (फ़ा185) जो कातिबे आमाल है आदमी की मौत के वक़्त उसके

(बक़िया सफ़हा 544 का) हो। (फ़ा18) और उसको इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अक़्ल व हवास बजा नहीं रहते और ऐसा हो जाता है (फ़ा19) और जो जानता हो वह भूल जाये इकरमा ने कहा जो क़ुरआन की मदावमत रखेगा इस हालत को न पहुंचेगा इसके बाद अल्लाह तआला बअ्स यानी मरने के बाद उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है (फ़ा20) ख़ुश्क बे ग्याह (फ़ा21) यानी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा (फ़ा23) यह दलीलें बयान फ़रमाने के बाद नतीजा मुरत्तब फ़रमाया जाता है (फ़ा२३) और यह जो कुछ ज़िक्र किया गया आदमी की पैदाइश और ख़ुश्क बे-ग्याह ज़मीन को सरसब्ज़ व शादाब कर देना उसके वजूद व हिकमत की दलीलें हैं उनसे उसका वजूद भी साबित होता है। (फ़ा24) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल वग़ैरह एक जमाअ़ते कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो अल्लाह तबारक व तआला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उसकी तरफ़ ऐसे औसाफ़ की निस्बत करते थे जो उसकी शान के लायक़ नहीं इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बग़ैर इल्म और बे सनद व दलील के कहनी न चाहिए ख़ास कर शाने इलाही में और जो बात इल्म वाले के ख़िलाफ़ बे इल्मी से कही जाएगी वह बातिल होगी फिर उस पर यह अन्दाज़ कि इसरार करे और बराहे तकब्बुर। (फ़ा25) और उसके दीन से मुनहरिफ़ कर दे। (फ़ा26) चुनांचे बद्र में वह ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ क़त्ल हुआ (फ़ा27) और उससे कहा जाएगा

(बक़िया सफ़हा 545 का) नाफ़रमानों पर अज़ाब। (फ़ा40) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा41) मैं उनके दीन को ग़लबा अता फ़रमाकर (फ़ा42) उनके दर्जे बुलन्द करके (फ़ा43) यानी अल्लाह तआला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा जिसे उससे जलन हो वह अपनी इन्तेहाई सई ख़त्म करदे और जलन में मर भी जाये तो भी कुछ नहीं कर सकता।

(बकिया सफ़हा 547 का) की जायें। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा63) इल्हादिम् बिज़ुल्मिन् नाहक़ ज़्यादती से या शिर्क व बुत परस्ती मुराद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हर ममनूअ़ क़ौल व फ़ेअ़्ल मुराद है हत्ता कि ख़ादिम को गाली देना भी बाज़ ने कहा इससे मुराद है हरम में बग़ैर एहराम के दाख़िल होना या ममनूआ़ते हरम का इरतेकाब करना मिस्ल शिकार मारने और दरख़्त काटने के और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुराद यह है कि जो तुझे न क़त्ल करे तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे तू उस पर ज़ुल्म करे शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी उन लोगों ने अपने अपने मफ़ाख़िरे नसब बयान किये तो अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस को गुस्सा आया और उसने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और खुद मुरतद होकर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ भाग गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा64) तामीरे कअ़बा शरीफ़ के वक़्त पहले इमारते कअ़बा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बनाई थी और तूफ़ाने नूह के वक़्त वह आसमान पर उठा ली गई अल्लाह तआ़ला ने एक हवा मुक़र्रर की जिस ने उसकी जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जो ख़ास उस बुक़आ़ के मुक़ाबिल था जहां कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की इमारत थी इस तरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को कअ़बा शरीफ़ की जगह बताई गई और आपने उसकी क़दीम बुनियाद पर इमारते कअ़बा तामीर की और अल्लाह तआ़ला ने आपको वही फ़रमाई। (फ़ा65) शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नजासतों से (फ़ा66) यानी नमाज़ियों के (फ़ा67) चुनांचे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अबू कुबैस पहाड़ पर चढ़ कर जहान के लोगों को निदा कर दी कि बैतुल्लाह का हज करो जिनके मक़दूर में हज है उन्होंने बापों की पुश्तों और माओं के पेटों से जवाब दिया लब्बै-क अल्लाहुम्-म लब्बै-क हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि इस आयत में अज़्ज़िन् का ख़िताब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को है चुनान्चे हज्जतुल विदाअ़ में एलान फ़रमा दिया और इरशाद किया कि ऐ लोगो अल्लाह ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया तो हज करो (फ़ा68) और कसरते सैरो सफ़र से दुबली हो जाती हैं (फ़ा69) दीनी भी दुनियवी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं दूसरी इबादत में नहीं पाये जाते (फ़ा70) वक़्ते ज़बह (फ़ा71) जाने हुए दिनों से ज़िलहिज्जा का अ़शरा मुराद है जैसा कि हज़रत अली और इब्ने अ़ब्बास व हसन व क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का क़ौल है और यही मज़हब है हमारे इमामे आज़म हज़रत अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का और साहिबीन के नज़दीक जाने हुए दिनों से अय्यामे नहर मुराद हैं यह क़ौल है हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का और हर तक़दीर पर यहां इन दिनों से ख़ास रोज़े ईद मुराद है। (तफ़सीरे अहमदी) (फ़ा72) ऊंट गाय बकरी भेड़ (फ़ा73) ततव्वुअ़ ओर मुतआ़ व क़िरान व हर एक हदी से जिनका इस आयत में बयान है खाना जाइज़ है बाक़ी हिदाया से जायज़ नहीं (तफ़सीर अहमदी व मदारिक) (फ़ा74) मूंछें कतरवायें नाखुन तराशें बग़लों और ज़ेरे नाफ़ के बाल दूर करें (फ़ा75) जो उन्होंने मानी हों

(बकिया सफ़हा 548 का) दलील है इस पर कि नामे खुदा का ज़िक्र करना ज़बह के लिए शर्त है अल्लाह तआ़ला ने हर एक उम्मत के लिए मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उसके लिए ब-तरीक़े तक़र्रुब कुरबानी करें और तमाम कुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाये (फ़ा90) और इख़्लास के साथ उसकी इताअ़त करो। (फ़ा91) उसके हैबत व जलाल से (फ़ा92) यानी सदक़ा देते हैं

(बकिया सफ़हा 550 का) हालात और उनका हलाक होना और उनकी बस्तियों की वीरानी कि उससे इबरत हासिल हो (फ़ा129) यानी कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी हिस बातिल नहीं हुई है वह इन आंखों से देखने की चीज़ें देखते हैं। (फ़ा130) और दिलों ही का अन्धा होना ग़ज़ब है इसी लिए आदमी दीन की राह पाने से महरूम रहता है। (फ़ा131) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का मिस्ल नज़र बिन हारिस वग़ैरह के और यह जल्दी करना उनका इस्तेहज़ा के तरीक़ा पर था।

(बकिया सफ़हा 551 का) उन्हें शैतानी कलिमात के ख़ल्त से महफ़ूज़ फ़रमाता है। (फ़ा141) और इब्तेला व आज़माईश बना दे। (फ़ा142) शक और निफ़ाक़ की (फ़ा143) हक़ को क़बूल नहीं करते और यह मुशरिकीन हैं (फ़ा144) यानी मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन (फ़ा145) अल्लाह के दीन का और उसकी आयात का (फ़ा146) यानी कुरआन शरीफ़

(बकिया सफ़हा 552 का) उन्होंने क़िताल शुरू कर दिया मुसलमान उन के मुक़ाबिल साबित रहे अल्लाह तआ़ला ने उनकी मदद फ़रमाई। (फ़ा158) यानी मज़लूम की मदद फ़रमाना इस लिए है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर है और उसकी क़ुदरत की निशानियां ज़ाहिर हैं।

(बकिया सफ़हा 553 का) खाते उस पर यह यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा173) और लोगों को उस पर ईमान लाने और उसका दीन क़बूल करने और उसकी इबादत में मशग़ूल होने की दावत दो। (फ़ा174) बावजूद तुम्हारे तरह देने के भी

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ
حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ
سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

सूरत मुअ्मिनून

मक्की है इसमें 118 आयतें और 6 रुकूअ् हैं

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् अफ़्-ल-हल् मुअ्मिनून(1)अल्लज़ी-न हुम् फ़ी सलातिहिम् ख़ाशिऊन(2)वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ्रिज़ून(3)वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून(4)वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून(5)इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन(6) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्आ़दून(7)वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़िहदिहिम् राऊन(8)वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स-लवातिहिम् युहाफ़िज़ून(9)उलाइ-क हुमुल् वारिसून(10)अल्लज़ी-न यरिसूनल् फ़िरदौ-स हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(11)व ल-क़द ख़-लक़्नल् इन्सा-न मिन् सुला-लतिम् मिन् तीन(12)सुम्-म ज-अ़ल्नाहु नुत्फ़तन् फ़ी क़रारिम् मकीन(13)सुम्-म ख़-लक़्नन् नुत्फ़-त अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-लक़्नल् अ़-ल-क़-त मुज़्-ग़-तन् फ़-ख़-लक़्नल् मुज़्-ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल् अ़िज़ा-म

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1) बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले।(1) जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।(2) (फ़ा2) और वह जो किसी बेहूदा बात की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते।(3) (फ़ा3) और वह कि ज़कात देने का काम करते हैं।(4) (फ़ा4) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।(5) मगर अपनी बीबियों या शरई बान्दियों पर जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं।(6) (फ़ा5) तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं।(7) (फ़ा6) और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआयत करते हैं।(8) (फ़ा7) और वह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं।(9) (फ़ा8) यही लोग वारिस हैं।(10) कि फ़िरदौस की मीरास पायेंगे वह उसमें हमेशा रहेंगे।(11) और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया।(12) (फ़ा9) फिर उसे (फ़ा10) पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में।(13) (फ़ा11) फिर हमने उस पानी की बूंद को ख़ून की फुटक किया फिर ख़ून की फुटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया

(फ़ा1) सूरह मूअ्मिनून मक्की है इसमें छः रुकूअ् और 118 आयतें हैं 1840 कलिमे और 4802 हरफ़ हैं। (फ़ा2) उनके दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता हे और उनके आज़ा साकिन होते हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ्. यह है कि उसमें दिल लगा हो और दुनिया से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाये नमाज़ से बाहर न जाये और गोशए चश्म से किसी तरफ़ न देखे और कोई अ़बस काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाये इस तरह कि उसके दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंगलियां न चटखाये और इस क़िस्म के हरकात से बाज़ रहे बाज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ्. यह है कि आसमान की तरफ़ नज़र न उठाए। (फ़ा3) हर लह्व व बातिल से मुजतनिब रहते हैं। (फ़ा4) यानी उसके पाबन्द हैं और मुदावमत करते हैं। (फ़ा5) अपनी बीबियों और बांदियों के साथ जाइज़ तरीक़े पर क़ुरबत करने में (फ़ा6) कि हलाल से हराम की तरफ़ तजावुज़ करते हैं मसलाः इससे मालूम हुआ कि हाथ से क़ज़ाए शह्वत करना हराम है सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को अ़ज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल **(बक़िया सफ़हा 580 पर)**

لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ

اَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا

فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً مَّا

लह़मन् सुम्–म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आ–ख़–र फ़–त–बा–र–कल्लाहु अह़्सनुल् ख़ालिक़ीन(14) सुम्–म इन्नकुम् बअ्–द ज़ालि–क ल–मय्यितून(15)सुम्–म इन्नकुम् यौमल् क़िया–मति तुब्–अ़सून(16) व ल– क़द् ख़–लक़्ना फ़ौ–क़कुम् सब्–अ़ तराइ–क़ व मा कुन्ना अ़निल्ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन(17)व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा–अम् बि–क़–दरिन् फ़–अस्कन्नाहु फ़िलअर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून(18)फ़–अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव् व अअ्नाबिन् लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसी़–रतुंव् व मिन्हा तअ्कुलून(19)व श–जर–तन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना– अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल् लिल्–आकिलीन(20)व इन्–न लकुम् फ़िल् अन्आ़मि लअि़ब्– र–तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु कसी़–रतुंव् व मिन्हा तअ्कुलून (21)व अ़लैहा व अ़–लल्फ़ुल्कि तुह़्मलून(22)व ल–क़द् अर्सल्ना नूह़न् इला क़ौमिही फ़क़ा–ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ–फ़ला तत्तक़ून(23)फ़क़ालल् म–लउल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस़्लुकुम् युरीदु अंय्–य–त–फ़ज़्ज़–ल अ़लैकुम् व लौ शाअल्लाहु ल–अन्ज़–ल मलाइ–क–तम् मा

फिर उसे और सूरत में उठान दी (फ़12) तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बेहतर बनाने वाला है।(14) फिर उसके बाद तुम ज़रूर (फ़13) मरने वाले हो।(15) फिर तुम सब क़ियामत के दिन (फ़14) उठाए जाओगे।(16) और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं (फ़15) और हम ख़ल्क़ से बे-ख़बर नहीं।(17) (फ़16) और हमने आसमान से पानी उतारा (फ़17) एक अन्दाज़ा पर (फ़18) फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके लेजाने पर क़ादिर हैं।(18) (फ़19) तो उससे हमने तुम्हारे लिए बाग़ पैदा किये खजूरों और अंगूरों के तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे हैं (फ़20) और उनमें से खाते हो।(19) (फ़21) और वह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है (फ़22) लेकर उगता है तेल और खाने वालों के लिए सालन।(20) (फ़23) और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते हैं उसमें से जो उनके पेट में है (फ़24) और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फ़ाइदे हैं (फ़25) और उनसे तुम्हारी ख़ुराक है।(21) (फ़26) और उन पर (फ़27) और कश्ती पर (फ़28) सवार किये जाते हो।(22) (रुकूअ़ 1) और बेशक हमने नूह़ को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।(23) (फ़29) तो उसकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले (फ़30) यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने (फ़31) और अल्लाह चाहता (फ़32) तो फ़रिश्ते उतारता

(फ़12) यानी उसमें रूह डाली इस बेजान को जानदार किया नुत्क़ और समअ़् और बसर इनायत की। (फ़13) अपनी उम्रें पूरी होने पर (फ़14) हिसाब व जज़ा के लिए (फ़15) इनसे मुराद सात आसमान हैं जो मलाइका के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं। (फ़16) सब के आमाल अक़्वाल ज़माइर को जानते हैं कोई चीज़ हमसे छुपी नहीं। (फ़17) यानी मेंह बरसाया (फ़18) जितना हमारे इल्म व हिकमत में ख़ल्क़ की हाजतों के लिए चाहिए (फ़19) जैसा अपनी क़ुदरत से नाज़िल फ़रमाया ऐसा ही उस पर भी क़ादिर हैं कि उसको ज़ाइल कर दें तो बन्दों को चाहिए कि उस निअ़्मत की शुक्र-गुज़ारी से हिफ़ाज़त करें।(फ़20) तरह तरह के (फ़21) जाड़े और गर्मी वग़ैरह मौसमों में और ऐश करते हो। (फ़22) उस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है। (फ़23) **(बक़िया सफ़्हा 582 पर)**

سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِیْنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلَیْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا
وَ وَحْیِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُۙ فَاسْلُكْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْۚ وَ لَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْاۚ
اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِذَا اسْتَوَیْتَ اَنْتَ وَ مَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۸﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ
خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ وَّ اِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِیْنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَرْسَلْنَا فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَ اَتْرَفْنٰهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَاۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْۙ یَاْكُلُ مِمَّا

समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल् अव्वलीन(24)इन् हु–व इल्ला रजुलुम् बिही जिन्नतुन् फ़–त–रब्बसू बिही हत्ता हीन(25)क़ा–ल रब्बिन्सुरनी बिमा कज़्ज़बून(26)फ़औहैना इलैहि अनिस्–नअ़िल् फुल्–क बि–अअ्युनिना व वह्यिना फ़इज़ा जा–अ अम्रुना व फ़ारत्–तन्नूरु फ़स्लुक् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्–ल–क इल्ला मन् स–ब–क़ अ़लैहिल्क़ौलु मिन्हुम् व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी–न ज़–लमू इन्नहुम् मुग़्–रकू़न(27)फ़इज़स् तवै–त अन्–त व मम्–म–अ़–क अ़–लल्फुल्कि फ़कुलिल् ह़म्दु लिल्लाहिल् लज़ी नज्जाना मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन(28)व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़–लम् मुबा–रकंव् व अन्–त ख़ैरुल् मुन्ज़िलीन(29)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिंव् व इन् कुन्ना लमुब्तलीन(30)सुम्–म अन्शअ्ना मिम् बअ्दिहिम् क़र्–नन् आ–ख़रीन(31)फ़–अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् अनिअ्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ–फ़ला तत्तकून(32)व क़ालल् म–लउ मिन् क़ौमिहिल् लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल् आख़ि–रति व अतरफ़्नाहुम् फ़िल्–हयातिद्दुन्या मा हाज़ा इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् यअ्कुलु मिम्मा

हमने तो यह अपने अगले बाप दादाओं में न सुना।(24) (फ़ा33) वह तो नहीं मगर एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माना तक उसका इन्तेज़ार किये रहो।(25) (फ़ा34) नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा (फ़ा35) इस पर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।(26) तो हमने उसे 'वह़ी' भेजी कि हमारी निगाह के सामने (फ़ा36) और हमारे हुक्म से कश्ती बना फिर जब हमारा हुक्म आये (फ़ा37) और तन्नूर उबले (फ़ा38) तो उसमें बिठाले (फ़ा39) हर जोड़े में से दो (फ़ा40) और अपने घर वाले (फ़ा41) मगर उनमें से वह जिन पर बात पहले पड़ चुकी (फ़ा42) और उन ज़ालिमों के मुआ़मला में मुझसे बात न करना (फ़ा43) यह ज़रूर डुबोए जायेंगे।(27) फिर जब ठीक बैठे कश्ती पर तू और तेरे साथ वाले तो कह सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें इन ज़ालिमों से नजात दी।(28) और अ़र्ज़ कर (फ़ा44) कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है।(29) बेशक इसमें(फ़ा45) ज़रूर निशानियां हैं(फ़ा46)और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे।(30)(फ़ा47)फिर उनके(फ़ा48)बाद हमने और संगत पैदा की।(31) (फ़ा49) तो उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा (फ़ा50)कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोइ ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।(32) (फ़ा51) (रुकूअ़ 2)और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्होंने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़िरी (फ़ा52)को झुठलाया और हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में चैन दिया(फ़ा53)कि यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम खाते हो

(फ़ा33) कि बशर भी रसूल होता है यह उनकी कमाले हिमाकत थी कि बशर का रसूल होना तो तस्लीम न किया पत्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्होंने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की निस्बत यह भी कहा। (फ़ा34) ता आंकि उसका जुनून दूर हो ऐसा हुआ तो ख़ैर वरना उसको क़त्ल कर डालना जब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उनके हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो हज़रत (फ़ा35) और इस क़ौम को हलाक कर (फ़ा36) यानी हमारी हिमायत व हिफ़ाज़त में (फ़ा37) उनकी हलाकत का और आसारे अ़ज़ाब नमूदार हों। (फ़ा38) और उसमें से पानी बरआमद हो तो यह अलामत है अ़ज़ाब के शुरू होने की। (फ़ा39) यानी कश्ती में हैवानात के। (फ़ा40) नर और मादा (फ़ा41) यानी अपनी मोमिना बीबी और ईमानदार औलाद या तमाम मोमिनीन (फ़ा42) और कलामे अज़ली में उनका अ़ज़ाब व हलाक मुअ़य्यन हो चुका वह आपका एक बेटा था कनआ़न नाम और एक औरत कि यह दोनों काफ़िर थे आपने अपने तीन फ़रज़न्दों साम **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

تَأْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ

بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

तअ्कुलू–न मिन्हु व यश्–रबु मिम्मा तश्–रबून(33)व लइन् अ–तअ्तुम् ब–श–रम् मिस्लकुम् इन्नकुम् इज़ल् लख़ासिरून(34)अ–यअिदुकुम् अन्नकुम् इजा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव् व अिज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून(35)हैहा–त हैहा–त लिमा तू–अ़दून(36)इन् हि–य इल्ला ह़यातु –नद्दुन्या नमूतु व नह़्या व मा नह़्नु बि–मब्अूसीन(37)इन् हु–व इल्ला रजुलु–निफ़्तरा अ़–लल्लाहि कज़िबंव् व मा नह़्नु लहू बिमु–अ्मिनीन(38)क़ा–ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून(39) क़ा–लअ़म्मा क़लीलिल् लयुस्बिहुन्–न नादिमीन(40)फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुस्सै–ह़तु बिल् ह़क़्क़ि फ़ –ज–अ़ल्नाहुम् ग़ुसाअन् फ़बुअ्–दल् लिल्क़ौ–मिज़्ज़ालिमीन(41)सुम्–म अन्शअ्ना मिम् बअ्दिहिम् क़ुरूनन् आ–ख़रीन(42)मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ–ज–लहा व मा यस्तअ्ख़िरून(43) सुम्–म अर्सल्ना रुसु–लना तत्रा कुल्लमा जा–अ उम्म–तर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़–अत्बअ्ना बअ्–ज़हुम् बअ्ज़ंव् व ज–अ़ल्नाहुम् अह़ादी–स फ़बुअ्दल् लिक़ौमिल् ला युअ्मिनून(44)सुम्–म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू–न बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन(45)इला फ़िर्औ–न व म–लइही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन्

उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है।(33) (फ़ा54) और अगर तुम किसी अपने जैसे आदमी की इताअ़त करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो।(34) क्या तुम्हें यह वादा देता है कि तुम जब मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे उसके बाद फिर (फ़ा55) निकाले जाओगे।(35) कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वादा दिया जाता है।(36) (फ़ा56) वह तो नहीं मगर हमारी दुनिया की ज़िन्दगी (फ़ा57) की हम मरते जीते हैं (फ़ा58) और हमें उठना नहीं।(37) (फ़ा59) वह तो नहीं मगर एक मर्द जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा (फ़ा60) और हम उसे मानने के नहीं।(38) (फ़ा61) अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इस पर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।(39) अल्लाह ने फ़रमाया कुछ देर जाती है कि ये सुबह करेंगे पछताते हुए।(40) (फ़ा62) तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने (फ़ा63) तो हमने उन्हें घास कूड़ा कर दिया (फ़ा64) तो दूर हों (फ़ा65) ज़ालिम लोग।(41) फिर उनके बाद हमने और संगतें पैदा कीं।(42) (फ़ा66) कोई उम्मत अपनी मीआ़द से न पहले जाये न पीछे रहे।(43) (फ़ा67) फिर हमने अपने रसूल भेजे एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसे झुठलाया (फ़ा68) तो हमने अगलों से पिछले मिला दिये (फ़ा69) और उन्हें कहानियाँ कर डाला (फ़ा70) तो दूर हों वह लोग कि ईमान नहीं लाते।(44) फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और रौशन सनद (फ़ा71) के साथ भेजा।(45) फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों की तरफ़ तो उन्होंने ग़ुरूर किया (फ़ा72) और वह लोग ग़लबा

(फ़ा54) यानी यह अगर नबी होते तो मलाइका की तरह खाने पीने से पाक होते इन बातिन के अन्धों ने कमालाते नबुव्वत को न देखा और खाने पीने के औसाफ़ देख कर नबी को अपनी तरह बशर कहने लगे यह बुनियाद उनकी गुमराही की हुई चुनान्चे इसी से उन्होंने यह नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे। (फ़ा55) क़ब्रों से ज़िन्दा (फ़ा56) यानी उन्होंने मरने के बाद ज़िन्दा होने को बहुत बईद जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी ख़्याले बातिल की बिना पर कहने लगे। (फ़ा57) इससे उनका मतलब यह था कि इस दुनियवी ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं सिर्फ़ इतना ही है (फ़ा58) कि हम में कोई मरता है कोई पैदा होता है (फ़ा59) मरने के बाद और अपने रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत उन्होंने **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

عالين ﴿٤٦﴾ فقالوا انؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عبدون ﴿٤٧﴾ فكذبوهما فكانوا من المهلكين ﴿٤٨﴾ ولقد اتينا موسى الكتب لعلهم يهتدون ﴿٤٩﴾
وجعلنا ابن مريم وامه اية واوينهما الى ربوة ذات قرار ومعين ﴿٥٠﴾ يايها الرسل كلوا من الطيبت واعملوا صالحا اني بما تعملون عليم ﴿٥١﴾
وان هذه امتكم امة واحدة وانا ربكم فاتقون ﴿٥٢﴾ فتقطعوا امرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون ﴿٥٣﴾ فذرهم في غمرتهم حتى حين ﴿٥٤﴾ ايحسبون
انما نمدهم به من مال وبنين ﴿٥٥﴾ نسارع لهم في الخيرت بل لا يشعرون ﴿٥٦﴾ ان الذين هم من خشية ربهم مشفقون ﴿٥٧﴾ والذين هم بايت ربهم يؤمنون ﴿٥٨﴾
والذين هم بربهم لا يشركون ﴿٥٩﴾ والذين يؤتون ما اتوا وقلوبهم وجلة انهم الى ربهم رجعون ﴿٦٠﴾ اولئك يسرعون في الخيرت وهم لها سبقون ﴿٦١﴾

आ़लीन(46)फ़क़ालू अनुअ्मिनु लि–ब–शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आ़बिदून(47)फ़–कज़्ज़बूहुमा फ़कानू मिनल् मुह्लकीन(48)व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब ल–अ़ल्लहुम् यह्तदून(49)व ज–अ़ल्–नब्–न मर्य–म व उम्महू आ–यतंव् व आवैनाहुमा इला रब्–वतिन् ज़ाति क़रारिंव् व मअ़ीन(50)या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ़्–मलू सालिहन् इन्नी बिमा तअ़्–मलू–न अ़लीम(51)व इन्–न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव् वाहि–द–तंव् व अना रब्बुकुम् फ़त्तक़ून(52) फ़–त–क़त्तअ़ू अम्–रहुम् बै–नहुम् ज़ुबुरन् कुल्लु हिज़्बिम् बिमा लदैहिम् फ़रिहून(53)फ़–ज़र्हुम् फ़ी ग़म्–रतिहिम् ह़त्ता ह़ीन(54)अ–यह्सबू–न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम् मालिंव् व बनीन (55)नुसारिअ़ु लहुम् फ़िल्–ख़ैराति बल् ला यश्अ़ुरून(56)इन्नल्लज़ी–न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून(57)वल्लज़ी–न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून(58)वल्लज़ी–न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून(59)वल्लज़ी–न युअ्तू–न मा आतव् व क़ुलूबुहुम् वजि–लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअ़ून(60)उलाइ–क युसारिअ़ू–न फ़िल्ख़ैराति व हुम् लहा साबिक़ून(61)

पाये हुए थे।(46) (फ़73) तो बोले क्या हम ईमान ले आयें अपने जैसे दो आदमियों पर (फ़74) और उनकी क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है।(47) (फ़75) तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए।(48) (फ़76) और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई (फ़77) कि उनको (फ़78) हिदायत हो।(49) और हमने मरयम और उसके बेटे को (फ़79) निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन (फ़80) जहां बसने का मक़ाम (फ़81) और निगाह के सामने बहता पानी।(50) (रुकूअ़ 3) ऐ पैग़म्बरो, पाकीज़ा चीज़ें खाओ (फ़82) और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं।(51) (फ़83) और बेशक यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है (फ़84) और मैं तुम्हारा रब हूं तो मुझ से डरो।(52) तो उनकी उम्मतों ने अपना काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया (फ़85) हर गरोह जो उसके पास है उस पर खुश है।(53) (फ़86) तो तुम उनको छोड़ दो उनके नशा में (फ़87) एक वक़्त तक।(54) (फ़88) क्या यह ख़्याल कर रहे हैं कि वह जो हम उनकी मदद कर रहे हैं माल और बेटों से।(55) (फ़89) यह जल्द जल्द उनको भलाईयां देते हैं (फ़90) बल्कि उन्हें ख़बर नहीं।(56) (फ़91) बेशक वह जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं।(57) (फ़92) और वह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं।(58) (फ़93) और वह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते।(59) और वह जो देते हैं जो कुछ दें (फ़94) और उनके दिल डर रहे हैं यूं कि उनको अपने रब की तरफ़ फिरना है।(60) (फ़95) यह लोग भलाईयों में जल्दी करते हैं और यही सब से पहले उन्हें पहुंचे।(61) (फ़96)

(फ़73) बनी इसराईल पर अपने ज़ुल्म व सितम से जब हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम ने उन्हें ईमान की दावत दी (फ़74) यानी हज़रत मूसा व हज़रत हारून पर (फ़75) यानी बनी इसराईल हमारे ज़ेरे फ़रमान हैं तो यह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान लाकर उनके मुतीअ़ बन जायें। और ग़र्क़ कर डाले गए (फ़76) और ग़र्क़ कर डाले गए (फ़77) यानी तौरेत शरीफ़ फ़िरऔन और उसकी क़ौम की हलाकत के बाद (फ़78) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम बनी इसराईल को (फ़79) यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमा कर अपनी क़ुदरत की। (फ़80) **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾
مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

व ला नुकल्लिफु नफ़्सन् इल्ला वुस्–अ़हा व लदैना किताबुंय्यन्तिकु बिल्ह़क़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून(62)बल् कुलूबुहुम् फ़ी ग़म्–रतिम् मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्मालुम् मिन् दूनि ज़ालि–क हुम् लहा आ़मिलून(63)ह़त्ता इज़ा अ–ख़ज़्ना मुत्–रफ़ीहिम् बिलअ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्अरून(64)ला तज्अरुल् यौ–म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून(65)क़द् कानत् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् तन्किसून (66)मुस्तक्बिरी–न बिही सामिरन् तह्जुरून(67)अ–फ़–लम् यद्दब्बरुल् क़ौ–ल अम् जा–अहुम् मा लम् यअ्ति आबा–अहुमुल् अव्वलीन(68)अम् लम् यअ्रिफ़ू रसू–लहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून (69)अम् यक़ूलू–न बिही जिन्नतुन् बल् जा–अहुम् बिल्ह़क़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्ह़क़्क़ि कारिहून(70) व लवित्त–ब–अ़ल्ह़क़्क़ु अह्वा–अहुम् ल–फ़–स–दतिस् समावातु वलअर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्–न बल् अतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ्रिज़ून(71)अम् तस्–अलुहुम् ख़र्जन् फ़–ख़राजु रब्बि–क ख़ैरुंव् व हु–व ख़ैरुर् राज़िक़ीन(72)व इन्न–क ल–तद्अूहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(73)व इन्नल्लज़ी–न

और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उसकी ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है कि हक़ बोलती है (फ़ा97) और उनपर ज़ुल्म न होगा।(62) (फ़ा98) बल्कि उनके दिल उससे (फ़ा99) ग़फ़लत में हैं और उनके काम उन कामों से जुदा हैं (फ़ा100) जिन्हें वह कर रहे हैं।(63) यहां तक कि जब हमने उनके अमीरों को अ़ज़ाब में पकड़ा (फ़ा101) तो जभी वह फ़रियाद करने लगे।(64) (फ़ा102) आज फ़रियाद न करो हमारी तरफ़ से तुम्हारी मदद न होगी।(65) बेशक मेरी आयतें (फ़ा103) तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल उलटे पलटते थे।(66) (फ़ा104) ख़िदमते ह़रम पर बड़ाई मारते हो (फ़ा105) रात को वहां बेहूदा कहानियां बकते(67) (फ़ा106) हक़ को छोड़े हुए। (फ़ा107) क्या उन्होंने बात को सोचा नहीं (फ़ा108) या उनके पास वह आया जो उनके बाप दादा के पास न आया था।(68) (फ़ा109) या उन्होंने अपने रसूल को न पहचाना (फ़ा110) तो वह उसे बेगाना समझ रहे हैं।(69) (फ़ा111) या कहते हैं उसे सौदा है (फ़ा112) बल्कि वह तो उनके पास हक़ लाये (फ़ा113) और उनमें अक्सर को हक़ बुरा लगता है।(70) (फ़ा114) और अगर हक़ (फ़ा115) उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करता (फ़ा116) तो ज़रूर आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं सब तबाह हो जाते (फ़ा117) बल्कि हम तो उनके पास वह चीज़ लाये (फ़ा118) जिसमें उनकी नामवरी थी तो वह अपनी इ़ज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं।(71) क्या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो (फ़ा119) तो तुम्हारे रब का अज्र सबसे भला और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला।(72) (फ़ा120) और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो।(73) (फ़ा121) और बेशक जो

(फ़ा97) इसमें हर शख़्स का अ़मल मकतूब है और वह लौहे महफ़ूज़ है (फ़ा98) न किसी की नेकी घटाई जाएगी न बदी बढ़ाई जाएगी उसके बाद कुफ़्फ़ार का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा99) यानी कुरआन शरीफ़ से (फ़ा100) जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए (फ़ा101) और वह रोज़ बरोज़ तहे तेग़ किये गए और एक क़ौल यह है कि उस अ़ज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भूक की वह मुसीबत है जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से उन पर मुसल्लत की गई थी और उस क़हत से उनकी हालत यहां तक पहुंच गई थी कि वह कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे (फ़ा102) अब उनका जवाब यह है कि (फ़ा103) यानी आयाते कुरआन मजीद (फ़ा104) और उन आयात को न मानते थे और उन पर ईमान न लाते थे **(बक़िया सफ़हा 582 पर)**

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا
لِرَبِّهِمْ وَمَا یَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۷۶﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِیْدٍ اِذَا هُمْ فِیْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ وَهُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَاِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۸۰﴾ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۸۱﴾ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۸۲﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ
لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِیْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾ سَیَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ﴿۸۶﴾ سَیَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا

ला युअ्मिनू–न बिल्–आख़ि–रति अ़निस्सिराति लना किबून(74)व लौ रहिम्नाहुम् व क–शफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल् ल–लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्–महून(75)व ल–क़द अ–ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़–मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य–त–ज़र्रअून(76)हत्ता इज़ा फ़–तह्ना अ़लैहिम् बबान् ज़ा अ़ज़ाबिन् शदीदिन् इज़ा हुम् फ़ीहि मुब्लिसून(77)व हुवल्लज़ी अन्श–अ लकुमुस्सम्–अ़ वल्अब्सा–र वल्–अफ़्इ–द–त क़लीलम् मा तश्कुरून(78)व हुवल्लज़ी ज़–र–अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्–शरून(79)व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्–लैलि वन्नहारि अ–फ़ला तअ्क़िलून(80)बल् क़ालू मिस्–ल मा क़ालल् अव्वलून(81)क़ालू अ–इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव् व अ़िज़ामन् अ–इन्ना ल–मब्अूसून(82)ल–क़द वुअ़िद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(83)क़ुल् लि–मनिल् अरज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून(84) स–यक़ूलू–न लिल्लाहि क़ुल् अ–फ़ला त–ज़क्करून(85)क़ुल् मर्रब्बुस् समावातिस् सब्अि व रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम(86)स–यक़ूलू–न लिल्लाहि क़ुल् अ–फ़ला

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से (फ़122) कतराए हुए हैं।(74) और अगर हम उन पर रहम करें और जो मुसीबत (फ़123) उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना ढिठाई करेंगे अपनी सरकशी में बहकते हुए।(75) (फ़124) और बेशक हमने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा (फ़125) तो न वह अपने रब के हुज़ूर में झुके और न गिड़गिड़ाते हैं।(76) (फ़126) यहां तक कि जब हमने उन पर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा (फ़127) तो वह अब उसमें ना उम्मीद पड़े हैं।(77) (रुकूअ़ 4) और वही है जिसने बनाए तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल (फ़128) तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो।(78) (फ़129) और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठना है।(79) (फ़130) और वही जिलाये और मारे और उसी के लिए हैं रात और दिन की तबदीलें (फ़131) तो क्या तुम्हें समझ नहीं।(80) (फ़132) बल्कि उन्होंने वही कही जो अगले (फ़133) कहते थे।(81) बोले क्या जब हम मर जायें और मिट्टी और हड्डियां होजायें क्या फिर निकाले जायेंगे।(82) बेशक यह वादा हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादा को दिया गया यह तो नहीं मगर वही अगली दास्तानें।(83) (फ़134) तुम फ़रमाओ किसका माल है ज़मीन और जो कुछ उसमें है अगर तुम जानते हो।(84) (फ़135) अब कहेंगे कि अल्लाह का (फ़136) तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं सोचते।(85) (फ़137) तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आसमानों का और मालिक बड़े अ़र्श का।(86) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर

(फ़ा122) यानी दीने हक़ से (फ़ा123) हफ़्त साला क़हत साली की (फ़ा124) यानी अपने कुफ़्र व इनाद और सरकशी की तरफ़ लौट जायेंगे और यह तमल्लुक़ व चापलोसी जाती रहेगी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मोमिनीन की अ़दावत और तकब्बुर जो उनका पहला तरीक़ा था वही इख़्तियार करेंगे शाने नुज़ूलः जब क़ुरैश सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से सात बरस के क़हत में मुब्तला हुए और उनकी हालत बहुत अबतर हो गई तो अबू सुफ़ियान उनकी तरफ़ से नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़्याल में रहमतुल लिलआ़लमीन बना कर नहीं भेजे गए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक अबू सुफ़ियान ने कहा कि बड़ों को तो आपने बद्र में तहे तेग़ कर दिया औलाद जो रही वह आपकी बद दुआ़ से इस हालत को पहुंची कि मुसीबते क़हत में मुब्तला हुई फ़ाक़ों से तंग आगई लोग भूख की बेताबी से हड्डियां चाब गए मुर्दार तक खा गए मैं आपको अल्लाह की (बक़िया सफ़हा 583 पर)

تَتَّقُوْنَ ۝ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ۝ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ عٰلِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ۝ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۝ لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ

तत्तकून(87)कुल् मम् बि–यदिही म–लकूतु कुल्लि शैइंव् व हु–व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन् कुन्तुम् तअ्लमून(88)स–यकूलू–न लिल्लाहि कुल् फ़–अन्ना तुस्–हरून(89)बल् अतैनाहुम् बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् ल–काज़िबून(90)मत्त–ख़–ज़ल्लाहु मिंव् व–लदिंव् व मा का–न म–अ़हू मिन् इलाहिन् इज़ल् ल–ज़–ह–ब कुल्लु इलाहिम् बिमा ख़–ल–क़ व ल–अ़ला बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िन् सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफून(91)आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहा–दति फ़–तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(92) कुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यू–अ़दून(93)रब्बि फ़ला तज्–अ़ल्नी फ़िल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन(94)व इन्ना अ़ला अन् नुरि–य–क मा नअि़दुहुम् लक़ादिरून(95)इद्–फ़अ् बिल्लती हि–य अह्सनुस्–सय्यि–अ–त नह्नु अअ्लमु बिमा यसिफून(96)व कुर्रब्बि अऊ़ज़ुबि–क मिन् ह–मज़ातिश् शयातीन(97)व अऊ़ज़ुबि–क रब्बि अंय्यह्ज़ुरून(99)हत्ता इज़ा जा–अ अ–ह–दहुमुल् मौतु क़ा–ल रब्बिर्जिअून(99)ल–अ़ल्ली अअ्–मलु सालिहन् फ़ीमा त–रक्तु कल्ला इन्नहा कलि–मतुन् हुव क़ाइलुहा व मिंव् वराइहिम् बर्ज़ख़ुन् इला यौमि युब्अ़सून(100)फ़–इज़ा नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि

क्यों नहीं डरते।(87) (फ़ा138) तुम फ़रमाओ किसके हाथ है हर चीज़ का क़ाबू (फ़ा139) और वह पनाह देता है और उसके ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें इल्म हो।(88) (फ़ा140) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है, तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब में पड़े हो।(89) (फ़ा141) बल्कि हम उनके पास हक़ लाए (फ़ा142) और वह बेशक झूठे हैं।(90) (फ़ा143) अल्लाह ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया (फ़ा144) और न उसके साथ कोई दूसरा ख़ुदा (फ़ा145) यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता (फ़ा146) और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली चाहता (फ़ा147) पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो यह बनाते हैं।(91) (फ़ा148) जानने वाला हर निहां व अयां का तो उसे बुलन्दी है उनके शिर्क से।(92) (रुकूअ़ 5) तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाये(93) (फ़ा149) जो उन्हें वादा दिया जाता है। तो ऐ मेरे रब मुझे उन ज़ालिमों के साथ न करना।(94) (फ़ा150) और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वादा दे रहे हैं।(95) (फ़ा151) सबसे अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ् करो (फ़ा152) हम ख़ूब जानते हैं जो बातें यह बनाते हैं।(96) (फ़ा153) और तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वसवसों से।(97) (फ़ा154) और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वह मेरे पास आयें।(98) यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए (फ़ा155) तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये।(99) (फ़ा156) शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊँ उसमें जो छोड़ आया हूं (फ़ा157) हिश्त यह तो एक बात है जो वह अपने मुंह से कहता है (फ़ा158) और उनके आगे एक आड़ है (फ़ा159) उस दिन तक जिसमें उठाये जायेंगे।(100) तो जब सूर फूंका जाएगा (फ़ा160)

(फ़ा138) उसके ग़ैर को पूजने और शिर्क करने से और उसके मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से (फ़ा139) और हर चीज़ पर हक़ीक़ी क़ुदरत व इख़्तियार किसका है (फ़ा140) तो जवाब दो (फ़ा141) यानी किस शैतानी धोखे में हो कि तौहीद व ताअ़ते इलाही को छोड़ कर हक़ को बातिल समझ रहे हो जब तुम इक़रार करते हो कि क़ुदरते हक़ीक़ी उसी की है और उसके ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता तो दूसरे की इबादत क़तअ़न बातिल है। (फ़ा142) कि अल्लाह के न औलाद हो सकती है न उसका शरीक यह दोनों बातें मुहाल हैं। (फ़ा143) जो उसके लिए शरीक और औलाद ठहराते हैं (बक़िया सफ़हा 583 पर)

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ
عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ
بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ
يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

फ़ला अन्सा–ब बै–नहुम् यौ–मइज़िंव् व ला य–तसा–अलून(101)फ़–मन् स़कुलत् मवाज़ीनुहू फ़उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहून(102)व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़उलाइ–कल् लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् फ़ी जहन्न–म ख़ालिदून(103)तल्फ़हु वुजू–हहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून(104)अ–लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून(105)क़ालू रब्बना ग़–ल–बत् अ़लैना शिक़्–वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन(106)रब्बना अख़्रिजना मिन्हा फ़इन् अ़ुदना फ़– इन्ना ज़ालिमून(107)क़ालख़्–सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून(108)इन्नहू का–न फ़रीक़ुम् मिन् अ़िबादी यक़ूलू–न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्–लना वर्हम्ना व अन्–त ख़ैरुर्–राहिमीन(109) फ़त्त–ख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्–हकून(110) इन्नी जज़ैतुहुमुल् यौ–म बिमा स–बरू अन्नहुम् हुमुल् फ़ाइज़ून(111)क़ा–ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़–द–दसिनीन(112) क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ़्–ज़ यौमिन् फ़स्अलिल् आ़द्दीन(113)क़ा–ल इंल्–लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल् लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ़्–लमून(114)अ–फ़–हसिब्तुम् अन्नमा ख़–लक़्नाकुम् अ़–ब–संव् व अन्नकुम् इलैना ला तुर्–जअून(115)फ़–तआ़लल्लाहुल् मलिकुल् हक़्क़ु ला इला–ह इल्ला हु–व रब्बुल् अ़र्शिल् करीम(116)व मंय्यदअ़ु म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र ला बुर्हा–न लहू बिही फ़इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्–द रब्बिही इन्नहू ला युफ़्लिहुल् काफ़िरून(117)व क़ुर्–रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्–त ख़ैरुर्–राहिमीन(118)

तो न उनमें रिश्ते रहेंगे (फ़ा161) और न एक दूसरे की बात पूछे।(101) (फ़ा162) तो जिन की तौलें (फ़ा163) भारी होलीं वही मुराद को पहुंचे।(102) और जिनकी तौलें हलकी पड़ीं (फ़ा164) वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।(103) उनके मुंह पर आग लपट मारेगी और वह उसमें मुंह चिड़ाए होंगे।(104) (फ़ा165) क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं (फ़ा166) तो तुम उन्हें झुठलाते थे।(105) कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे।(106) ऐ रब हमारे हमको दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं।(107) (फ़ा167) रब फ़रमाएगा दुतकारे पड़े रहो इसमें और मुझ से बात न करो।(108) (फ़ा168) बेशक मेरे बन्दों का एक गरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है।(109) तो तुमने उन्हें ठट्ठा बना लिया (फ़ा169) यहां तक कि उन्हें बनाने के शुग़ल में (फ़ा170) मेरी याद भूल गए और तुम उनसे हंसा करते।(110) बेशक आज मैं ने उनके सब्र का उन्हें यह बदला दिया कि वही कामयाब हैं।(111) फ़रमाया (फ़ा171) तुम ज़मीन में कितना ठहरे (फ़ा172)बरसों की गिनती से।(112) बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा (फ़ा173) तू गिनने वालों से दरियाफ़्त फ़रमा।(113) (फ़ा174) फ़रमाया तुम न ठहरे मगर थोड़ा (फ़ा175) अगर तुम्हें इल्म होता।(114) तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें (बक़िया सफ़हा 584 पर)

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَ فَرَضْنٰهَا وَ اَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ
فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَ لْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّ الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ
اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّ لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ
شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ
شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَ الْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَ يَدْرَؤُا عَنْهَا

सूरह नूर

(मदनी है इस सूरह में 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सू–रतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़–रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् बय्यिनातिल् ल–अ़ल्लकुम् त–ज़क्करून(1)अज़्ज़ानि–यतु वज़्ज़ानी फज्लिदू कुल्–ल वाहिदिम् मिन्हुमा मि–अ–त जल्दतिंव् व ला तअ्खुज़्–कुम् बिहिमा रअ्–फतुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू–न बिल्लाहि वल् यौमिल् आख़िरि वल्–यश्–हद अ़ज़ा–बहुमा ताइ–फतुम् मिनल् मुअ्मिनीन(2)अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि–य–तन् औ मुश्रि–क–तंव् वज़्ज़ानि–यतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि–म ज़ालि–क अ़–लल् मुअ्मिनीन(3)वल्लज़ी–न यर्मूनल् मुह्–सनाति सुम्–म लम् यअ्तू बि–अर् –ब–अ़ति शु–हदा–अ फज्लिदूहुम् समानी–न जल्दतंव् व ला तक़्बलू लहुम् शहा–द–तन् अ–ब –दन् व उलाइ–क हुमुल् फ़ासिकून(4)इल्लल्लज़ी–न ताबू मिम् बअ्दि ज़ालि–क व अस्लहू फ़इन्नल्ला –ह ग़फ़ूरुर् रहीम(5)वल्लज़ी–न यर्मू–न अज्वा–जहुम् व लम् यकुल्लहुम् शु–हदाउ इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़–शहा–दतु अ–हदिहिम् अर्बअु शहादातिम् बिल्लाहि इन्नहू लमिनस् सादिक़ीन(6) वल्ख़ामि–सतु अन्–न लअ्–नतल्लाहि अ़लैहि इन् का–न मिनल् काज़िबीन(7)व यदरऊ अ़न्हल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

यह एक सूरत है कि हमने उतारी और हमने उसके अहकाम फ़र्ज़ किये (फ़ा2) और हमने उसमें रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाईं कि तुम ध्यान करो।(1) जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उनमें हर एक को सौ कोड़े लगाओ (फ़ा3) और तुम्हें उन पर तरस न आये अल्लाह के दीन में (फ़ा4) अगर तुम ईमान लाते हो अल्लाह और पिछले दिन पर और चाहिये कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गरोह हाज़िर हो।(2) (फ़ा5) बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द या मुशरिक (फ़ा6) और यह काम (फ़ा7) ईमान वालों पर हराम है।(3) (फ़ा8) और जो पारसा औरतों को ऐब लगायें फिर चार गवाह मोआ़इना के न लायें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो (फ़ा9) और वही फ़ासिक़ हैं।(4) मगर जो उसके बाद तौबा कर लें और संवर जायें (फ़ा10) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(5) और वह जो अपनी औरतों को ऐब लगायें (फ़ा11) और उनके पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की गवाही यह है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वह सच्चा है।(6) (फ़ा12) और पांचवीं यह कि अल्लाह की लानत हो उस पर अगर झूठा हो।(7) और औरत से यूं

(फ़ा1) सूरए नूर मदनी है इसमें नौ रुकूअ़, चौसठ आयतें हैं (फ़ा2) और उन पर अमल करना बन्दों पर लाज़िम किया (फ़ा3) यह ख़िताब हुक्काम को है कि जिस मर्द या औरत से ज़िना सरज़द हो उसकी हद यह है कि **(बक़िया सफ़हा 584 पर)**

الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْ بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ

وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّقَالُوْا هٰذَا إِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوْ

عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَا

أَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهُ هَيِّنًا وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ

अ़जा–ब अन् तश्–ह–द अर्ब–अ़ शहादातिम् बिल्लाहि इन्नहू लमिनल् काज़िबीन(8)वल्ख़ामि–स–त अन्–न ग़–ज़–बल्लाहि अ़लैहा इन् का–न मिनस्–सादिक़ीन(9)व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला–ह तव्वाबुन् हकीम(10)इन्नल्लज़ी–न जाऊ बिल् इफ़्कि अुस्बतुम् मिन्कुम् ला तह्सबूहु शर्रल् लकुम् बल् हु–व ख़ैरुल् लकुम् लिकुल्लिम्रिइम् मिन्हुम् मक्–त–स–ब मिनल् इस्मि वल्लज़ी त–वल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(11)लौला इज् समिअ़्तुमूहु ज़न्नल् मुअ्मिनू–न वल्मुअ्मिनातु बिअन्फुसिहिम् ख़ैरंव् व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम् मुबीन(12)लौला जाऊ अ़लैहि बि–अर्–ब–अ़ति शु–हदा–अ फ़इज् लम् यअ्तू बिश्शु–हदाइ फ़उलाइ–क अ़िन्दल्लाहि हुमुल् काज़िबून(13)व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्आख़ि–रति ल–मस्सकुम् फ़ी मा अ–फ़ज़्तुम् फ़ीहि अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(14)इज् त–लक़्क़ौ–नहू बिअल्सि–नतिकुम् व तक़ूलू–न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै–स लकुम् बिही अ़िल्मुंव् व तह्सबू–नहू हय्यिनंव् व हु–व अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीम(15)व लौला इज् समि–अ़्तुमूहु

सज़ा टल जाएगी कि वह अल्लाह का नाम लेकर चार बार गवाही दे कि मर्द झूठा है।(8) (फ़ा13)और पांचवीं यूं कि औरत पर ग़ज़ब अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो।(9) (फ़ा14) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाता हिक्मत वाला है (10) (रुकूअ़ 7)तो तुम्हारा पर्दा खोल देता। बेशक वह कि यह बड़ा बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअ़त है (फ़ा15) उसे अपने लिए बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है (फ़ा16) उनमें हर शख़्स के लिए वह गुनाह है जो उसने कमाया (फ़ा17) और उनमें वह जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया (फ़ा18) उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(11) (फ़ा19)क्यों न हुआ जब तुमने उसे सुना था कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता (फ़ा20) और कहते यह खुला बोहतान है।(12) (फ़ा21) उस पर चार गवाह क्यों न लाए तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं।(13) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर दुनिया और आख़िरत में न होती (फ़ा22) तो जिस चर्चे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता।(14) जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुनकर लाते थे और अपने मुंह से वह निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म नहीं और उसे सहल समझते थे (फ़ा23) और वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है।(15) (फ़ा24) और क्यों न हुआ जब तुमने

(फ़ा13) उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में (फ़ा14) इसको लेआ़न कहते हैं **मसलाः** जब मर्द अपनी बीबी पर ज़िना की तोहमत लगाये तो अगर मर्द व औरत दोनों शहादत के अहल हों और औरत उस पर मुतालबा करे तो मर्द पर लेआ़न वाजिब हो जाता है अगर वह लेआ़न से इन्कार करे तो उसको उस वक़्त तक क़ैद रखा जाएगा जब तक वह लेआ़न करे या अपने झूठ का मुक़िर हो अगर झूठ का इक़रार करे तो उसको हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी जिसका बयान ऊपर गुज़र चुका है और अगर लेआ़न करना चाहे तो उसको चार मर्तबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि वह इस औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है और पाँचवीं मर्तबा कहना होगा कि अल्लाह की लअ्.नत मुझ पर अगर मैं यह इल्ज़ाम लगाने में झूठा हूं इतना करने के बाद मर्द परसे हद्दे क़ज़फ़ साक़ित हो जाएगी और औरत पर लेआ़न वाजिब होगा इन्कार करेगी तो क़ैद की जाएगी यहां तक कि लेआ़न मन्ज़ूर करे या शौहर के इल्ज़ाम लगाने की तस्दीक़ करे अगर तस्दीक़ की तो औरत **(बक़िया सफ़हा 585 पर)**

قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ

يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۠ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۭ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

कुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न–त–कल्ल–म बिहाज़ा सुब्हा–न–क हाज़ा बुह्तानुन् अ़ज़ीम(16) यअिज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ–ब–दन् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन(17)व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल् आयाति वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(18)इन्नल्लज़ी–न युहिब्बू–न अन् तशीअ़ल् फ़ाहि–शतु फ़िल्लज़ी–न आ–मनू लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् फ़िद्दुन्या वल् आख़ि–रति वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्–लमून(19)व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला–ह रऊफ़ुर् रह़ीम(20)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश् शैतानि व मंय्यत्तबिअ़् ख़ुतुवातिश्–शैतानि फ़इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह़्शाइ वल्मुन्करि व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ–ह़दिन् अ–ब–दंव् व ला–किन्नल्ला–ह युज़क्की मंय्यशाउ वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम(21)व ला यअ्तलि उलुल् फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स–अ़ति अंय्यूअ्तू उलिल्कुर्बा वल्म–साकी–न वल्मुहाजिरी–न फ़ी सबी–लिल्लाहि वल्–यअ़्फ़ू वल्–यस्फ़हू. अला तुहिब्बू–न अंय्यग़्फ़ि–रल्लाहु लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(22)इन्नल्लज़ी–न यर्मूनल्

सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहें (फ़ा25) इलाही पाकी है तुझे (फ़ा26) यह बड़ा बोहतान है।(16) अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो।(17) और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(18) वह लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है दुनिया (फ़ा27) और आख़िरत में (फ़ा28) और अल्लाह जानता है (फ़ा29) और तुम नहीं जानते।(19) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तुम पर निहायत मेहरबान मेहर वाला है तो तुम उसका मज़ा चखते।(20)(फ़ा30)(रुकूअ़ 8) ऐ ईमान वालों शैतान के क़दमों पर न चलो और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा (फ़ा31) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता (फ़ा32)हां अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे (फ़ा33)और अल्लाह सुनता जानता है।(21) और क़सम न खायें वह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले (फ़ा34)और गुन्जाइश वाले हैं(फ़ा35) क़राबत वालों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि माफ़ करें और दरगुज़रें क्या तुम उसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़्शिश करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(22) (फ़ा36) बेशक वह जो ऐब

(फ़ा25) यह हमारे लिए रवा नहीं क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता (फ़ा26) इससे कि तेरे नबी की हरम को फ़ुजूर की आलूदगी पहुंचे मसला यह मुमकिन ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके अगरचे उसका मुब्तलाए कुफ़्र होना मुमकिन है क्योंकि अम्बिया कुफ़्फ़ार की तरफ़ मबऊस होते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ कुफ़्फ़ार के नज़दीक भी क़ाबिले नफ़रत हो उससे वह पाक हों और ज़ाहिर है कि औरत की बदकारी उनके नज़दीक क़ाबिले नफ़रत है (कबीर वग़ैरह) (फ़ा27) यानी इस जहान में और वह हद क़ाइम करना है चुनान्चे इब्ने उबय और हस्सान और मिस्तह के हद लगाई गई (मदारिक) (फ़ा28) दोज़ख़ अगर बे तौबा मर जायें (फ़ा29) दिलों के राज़ और बातिन के अहवाल (फ़ा30) और अ़ज़ाबे इलाही तुम्हें मोहलत न देता (फ़ा31) उसके वसवसों में न पड़ो और बोहतान उठाने वालों की बातों पर कान न लगाओ (फ़ा32) और अल्लाह तआ़ला उसको तौबा व हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ न देता और अ़फ़्व व मग़फ़िरत न फ़रमाता (फ़ा33) तौबा क़बूल फ़रमा कर **(बक़िया सफ़हा 586 पर)**

الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۲۳﴾ یَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَیْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَ اَیْدِیْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ یَوْمَىٕذٍ

یُّوَفِّیْهِمُ اللّٰهُ دِیْنَهُمُ الْحَقَّ وَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ ﴿۲۵﴾ اَلْخَبِیْثٰتُ لِلْخَبِیْثِیْنَ وَ الْخَبِیْثُوْنَ لِلْخَبِیْثٰتِ ۚ وَ الطَّیِّبٰتُ لِلطَّیِّبِیْنَ وَ الطَّیِّبُوْنَ لِلطَّیِّبٰتِ ۚ

اُولٰٓىٕكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا یَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ﴿۲۶﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُیُوْتًا غَیْرَ بُیُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ

خَیْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِیْهَاۤ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى یُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِیْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ﴿۲۸﴾ لَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُیُوْتًا غَیْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِیْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۲۹﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا

मुह़्–स़नातिल् ग़ाफ़िलातिल् मुअ्मिनाति लुअ़िनू फ़िद्दुन्या वल् आख़ि–रति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(23)यौ–म तश्हदु अ़लैहिम् अल्सि–नतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ़् –मलून(24)यौ–मइज़िंय्युवफ़्–फ़ीहिमुल्लाहु दी–नहुमुल् ह़क़्–क़ व यअ़्–लमू–न अन्नल्ला–ह हुवल् ह़क़्क़ुल् मुबीन(25)अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी–न वल्ख़बीसू–न लिल्ख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्त–य्यिबी–न वत्तय्यिबू–न लित्तय्यिबाति उलाइ–क मुबर्रऊ–न मिम्मा यक़ूलू–न लहुम् मग़्फ़ि –रतुंव् व रिज़्क़ुन् करीम(26)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै–र बुयूतिकुम् ह़त्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् ल–अ़ल्लकुम् त–ज़क्करून (27)फ़इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ–ह़–दन् फ़ला तद्ख़ुलूहा ह़त्ता युअ्ज–न लकुम् व इन् क़ी–ल लकुमुर्जिअूर्जिअू हु–व अज़्का लकुम् वल्लाहु बिमा तअ़्मलू–न अ़लीम(28)लै–स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै–र मस्कू–नतिन् फ़ीहा मताअुल् लकुम् वल्लाहु यअ़्लमु मा तुब्दू–न व मा तक्तुमून(29)क़ुल् लिल्मुअ्मिनी–न यग़ुज़्ज़ू

लगाते हैं अनजान (फ़ा37) पारसा ईमान वालियों को (फ़ा38) उन पर लानत है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(23) (फ़ा39) जिस दिन (फ़ा40) उन पर गवाही देंगी उनकी ज़बानें (फ़ा41) और उनके हाथ और उनके पाँव जो कुछ करते थे।(24) उस दिन अल्लाह उन्हें उनकी सच्ची सज़ा पूरी देगा (फ़ा42) और जान लेंगे कि अल्लाह ही सरीह़ ह़क़ है।(25) (फ़ा43) गन्दियाँ गन्दों के लिए और गन्दे गन्दियों के लिए (फ़ा44) और सुथरियां सुथरों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए वह (फ़ा45) पाक हैं उन बातों से जो यह (फ़ा46) कह रहे हैं उनके लिए बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।(26) (फ़ा47) (रुकूअ़ 9) ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जब तक इजाज़त न ले लो (फ़ा48) और उनके साकिनों पर सलाम न कर लो (फ़ा49) यह तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम ध्यान करो।(27) फिर अगर उनमें किसी को न पाओ (फ़ा50) जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उनमें न जाओ (फ़ा51) और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो (फ़ा52) यह तुम्हारे लिए बहुत सुथरा है अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।(28) उसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं (फ़ा53) और उनके बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।(29) मुसलमान मर्दों को हुक्म दो

(फ़ा37) औरतों को जो बदकारी और फ़ुजूर को जानती भी नहीं और बुरा ख़्याल उनके दिल में भी नहीं गुज़रता। (फ़ा38) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अज़वाजे मुतह्हरात के औसाफ़ हैं। एक क़ौल यह है कि इससे तमाम ईमानदार पारसा औरतें मुराद हैं उनके ऐब लगाने वालों पर अल्लाह तआ़ला लानत फ़रमाता है। (फ़ा39) यह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन उबय सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में है (ख़ाज़िन) (फ़ा40) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा41) ज़बानों का गवाही देना तो उनके मुंहों पर मुहरें लगाये जाने से क़बल होगा और उसके बाद मुंहों पर मुहरें लगा दी जायेंगी जिससे ज़बानें बन्द हो जायेंगी और आज़ा बोलने लगेंगे और दुनिया में जो अमल किये थे उनकी ख़बर देंगे जैसे कि आगे इरशाद है (फ़ा42) जिसके वह मुस्तह़िक़ हैं (फ़ा43) यानी मौजूद ज़ाहिर है उसी की क़ुदरत से हर चीज़ का वुजूद है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि माना यह हैं कि कुफ़्फ़ार दुनिया में अल्लाह तआ़ला के वादों में शक करते थे अल्लाह तआ़ला आख़िरत में उन्हें उनके आमाल की जज़ा देकर उन वादों का ह़क़ होना ज़ाहिर फ़रमा देगा फ़ाइदा क़ुरआने करीम में **(बक़िया सफ़हा 587 पर)**

مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۠ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۠ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ۭ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ

मिन् अब्सारिहिम् व यह्फ़ज़ू फ़ुरू–जहुम् ज़ालि–क अज़्का लहुम् इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा यस्–नअून(30)व कुल् लिल्मुअ्मिनाति यग्ज़ुज़्–न मिन् अब्सारि हिन्–न व यह्–फ़ज़्–न फ़ुरू–जहुन्–न व ला युब्दी–न ज़ी–न–तहुन्–न इल्ला मा ज़–ह–र मिन्हा वल् यज़्रिब्–न बिख़ुमुरि हिन्–न अ़ला जुयूबिहिन्–न व ला युब्दी–न ज़ी–न–तहुन्–न इल्ला लिबुअू–लतिहिन्–न औ आबाइहिन्–न औ आबाइ बुअू–लतिहिन्–न औ अब्नाइहिन्–न औ अब्नाइ बुअू–लतिहिन्–न औ इख़्वानिहिन्–न औ बनी इख़्वा–निहिन्–न औ बनी अ–ख़वातिहिन्–न औ निसाइहिन्–न औ मा म–ल–कत् ऐमानुहुन्–न अवित्ताबिअ़ी–न ग़ैरि उलिल्इर्–बति मिनर्रिजालि अवित्–तिफ़्लिल् लज़ी–न लम् यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसाइ व ला यज़्रिब्–न बि–अर्जुलिहिन्–न लियुअ्ल–म मा युख़्फ़ी–न मिन् ज़ी–नतिहिन्–न व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल् मुअ्मिनू–न ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (31)व अन्किहुल् अयामा मिन्कुम् वस्सालिही–न मिन् अ़िबादिकुम् व इमाइकुम् इंय्यकूनू फ़ु–क़रा –अ युग्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम(32)वल्–यस्तअ़्फ़िफ़िल्

अपनी निगाहें कुछ नीची रखें (फ़ा54) और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें (फ़ा55) यह उनके लिए बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है।(30) और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें (फ़ा56) और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखायें (फ़ा57) मगर जितना खुद ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप (फ़ा58) या शौहरों के बाप (फ़ा59) या अपने बेटे (फ़ा60) या शौहरों के बेटे (फ़ा61) या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भांजे (फ़ा62) या अपने दीन की औरतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों (फ़ा63) या नौकर बशर्ते कि शह्वत वाले मर्द न हों (फ़ा64) या वह बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं (फ़ा65) और ज़मीन पर पाँव ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उनका छुपा हुआ सिंगार (फ़ा66) और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानों सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ।(31) और निकाह कर दो अपनों में उनका जो बे निकाह हों (फ़ा67) और अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का अगर वह फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल के सबब (फ़ा68) और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(32) और चाहिये कि बचे रहें(फ़ा69)

(फ़ा54) और जिस चीज़ का देखना जाइज़ नहीं उस पर नज़र न डालें मसाइल मर्द का बदन ज़ेरे नाफ़ से घुटने के नीचे तक औरत है उसका देखना जाइज़ नहीं और औरतों में से अपने महारिम और ग़ैर की बांदी का भी यही हुक्म है मगर इतना और है कि उनके पेट और पीठ का देखना भी जाइज़ नहीं और हुर्रा अजनबिया के तमाम बदन का देखना ममनूअ़ है *इल्लम् या मम्–मिनश्शह्वति व इन् अमि–न मिन्हा फ़ल्ममनूअुन् न–ज़रू इला मा सिवल् वज्हि वल्कफ़्फ़ि वल्–क–दमि व मंय्या–मनु फ़इन्–नज़्ज़मान ज़मानुल् फ़सादि फ़ला य–हिल्लुन्–न–ज़रू इलल्–हुर्रतिल् अज्नबिय्यति मुत्लक़म्–मिन् ग़ैरि .ज़ुरू–रतिन्* मगर बहालते ज़रूरत क़ाज़ी व गवाह को और उस औरत से निकाह की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जाइज़ है और अगर किसी औरत के ज़रीआ़ से हाल मालूम कर सकता हो तो न देखे और तबीब को मौज़ए मर्ज़ का बक़द्रे ज़रूरत देखना जाइज़ है मसला अमरद लड़के की तरफ़ भी शह्वत से देखना हराम है (मदारिक व अहमदी) (फ़ा55) और ज़िना व हराम से बचें या यह माना हैं कि अपनी शर्मगाहों और उनके लवाहिक़ यानी तमाम बदने औरत को छुपायें और पर्दा **(बक़िया सफ़हा 587 पर)**

الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم
مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٣٣ وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝٣٤ اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ
نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝٣٥ فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ

लज़ी–न ला यजिदू–न निकाहन् हत्ता युग़्नि–यहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लज़ी–न यब्तग़ू–नल् किता–ब मिम्मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अ़लिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव् व आतूहुम् मिम् मालिल्लाहिल् लज़ी आताकुम् व ला तुक्रिहू फ़–तयातिकुम् अ़–लल्बिग़ाइ इन् अ–रद्–न त– हस्सुनल् लि–तब्तग़ू अ़–र–ज़ल् हयातिद्दुन्या व मंय्युक्रिह्–हुन्–न फ़इन्नल्ला–ह मिम् बअ़्दि इक्रा– हिहिन्–न ग़फ़ूरुर् रहीम(33)व ल–क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम् मुबय्यिनातिंव् व म–स–लम् मिनल्लज़ी–न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् व मौअ़ि–ज़–तल् लिल्मुत्तक़ीन(34)अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि म–सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन् अल्मिस्बाहु फ़ी ज़ुजा–जतिन् अज़्ज़ुजा–जतु कअन्नहा कौ–कबुन् दुर्रिय्युंय्यू–क़दु मिन् श–ज–रतिम् मुबा–र–कतिन् ज़ैतू–नतिल् ला शर्क़िय्यतिंव् व ला ग़र्बिय्यतिंय्–यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् नूरुन् अ़ला नूरिन् यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशाउ व यज़्रिबुल्लाहुल् अम्सा–ल लिन्नासि वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(35)फ़ी बुयूतिन् अज़ि–नल्लाहु अन् तुर्फ़–अ़ व युज़्क–र

वह जो निकाह का मक़्दूर नहीं रखते (फ़ा70) यहां तक कि अल्लाह उन्हें मक़्दूर वाला करदे अपने फ़ज़्ल से (फ़ा71) और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी ग़ुलामों में से जो यह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो (फ़ा72) अगर उनमें कुछ भलाई जानो (फ़ा73) और उस पर उनकी मदद करो अल्लाह के माल से जो तुमको दिया (फ़ा74) और मजबूर न करो अपनी कनीज़ों को बदकारी पर जबकि वह बचना चाहें ताकि तुम दुनियवी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो (फ़ा75) और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह बाद उसके कि वह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है।(33) (फ़ा76) और बेशक हम ने उतारीं तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें (फ़ा77) और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिए नसीहत।(34) (रुकूअ़ 10) अल्लाह नूर है (फ़ा78) आसमानों और ज़मीन का उसके नूर की (फ़ा79) मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उसमें चराग़ है वह चराग़ एक फ़ानूस में है वह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से (फ़ा80) जो न पूरब का न पच्छिम का (फ़ा81) क़रीब है कि उसका तेल (फ़ा82) भड़क उठे अगरचे उसे आग न छूए नूर पर नूर है (फ़ा83) अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिए और अल्लाह सब कुछ जानता है।(35) उन घरों में जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है (फ़ा84) और उनमें उसका नाम

(फ़ा70) जिन्हें महर व नफ़्क़ा मुयस्सर नहीं (फ़ा71) और वह महर व नफ़्क़ा अदा करने के क़ाबिल हो जायें हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो निकाह की क़ुदरत रखे वह निकाह करे कि निकाह पारसाई व पाकबाज़ी का मुईन है और जिसे निकाह की क़ुदरत न हो वह रोज़े रखे कि यह शह्वतों के तोड़ने वाले हैं (फ़ा72) कि वह इस क़दर माल अदा करके आज़ाद हो जायें और इस तरह की आज़ादी को किताबत कहते हैं और आयत में इसका अमर इस्तेहबाब के लिए है और यह इस्तेहबाब इस शर्त के साथ मशरूत है जो उसके बाद ही आयत में मज़कूर है शाने नुज़ूल हुवैतिब बिन अब्दुल ग़रा के ग़ुलाम सबीह ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की मौला ने इन्कार किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई तो हुवैतिब ने उसको सौ दीनार पर मुकातब कर दिया और उनमें से बीस उसको बख़्श दिये **(बक़िया सफ़हा 588 पर)**

فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿۳۷﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

फ़ीहस्मुहू युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्गुदुव्वि वल्आसा–ल(36)रिजालुल् ला तुल्हीहिम् तिजा–रतुंव् व ला बैअुन् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफू–न यौमन् त–त–क़ल्लबु फ़ीहिल् कुलूबु वल्अब्सार(37)लि–यज्ज़ि–यहुमुल्लाहु अह्–स–न मा अ़मिलू व यज़ी–दहुम् मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब(38)वल्लज़ी–न क–फ़रू अअ्मालुहुम् क–सराबिम् बिक़ी–अतिंय्यह्सबुहुज़् ज़म्आनु माअन् हत्ता इज़ा जा–अहू लम् यजिद्हु शैअंव्–व व–जदल्ला–ह अ़िन्दहू फ़–वफ़्फ़ाहु हिसा–बहू वल्लाहु सरीअुल्–हिसाब(39)औ कज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रिल् लुज्जिय्यिंय्यग़्शाहु मौजुम् मिन् फ़ौक़िही मौजुम् मिन् फ़ौक़िही सहाबुन् ज़ुलुमातुम् बअ्ज़ुहा फ़ौ–क़ बअ्ज़िन् इज़ा अख़्–र–ज य–दहू लम् य–कद यराहा व मल्लम् यज्–अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्नूर(40)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन् कुल्लुन् क़द अ़लि–म सला–तहू व तस्बी–हहू वल्लाहु अ़लीमुम् बिमा यफ़्अ़लून(41)व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति

लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह करते हैं उनमें सुबह और शाम।(36) (फ़ा85) वह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद (फ़ा86) और नमाज़ बरपा रखने (फ़ा87) और ज़कात देने से (फ़ा88) डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जायेंगे दिल और आंखें।(37) (फ़ा89) ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उनके सबसे बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें इनाम ज़्यादा दे और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती।(38) और जो काफ़िर हुए उनके काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया (फ़ा90) और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उसने उसका हिसाब पूरा भर दिया और अल्लाह जल्द हिसाब कर लेता है।(39) (फ़ा91) या जैसे अंधेरियां किसी कुन्डे के दरिया में (फ़ा92) उसके ऊपर मौज, मौज के ऊपर और मौज उसके ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक (फ़ा93) जब अपना हाथ निकाले तो सुझाई देता मालूम न हो (फ़ा94) और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिए कहीं नूर नहीं।(40) (फ़ा95) (रुकूअ़ 11) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे (फ़ा96) पर फैलाए सबने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह और अल्ला उनके कामों को जानता है।(41) और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत

(फ़ा85) तस्बीह से मुराद नमाज़ें हैं सुबह की तस्बीह से फ़ज्र और शाम से ज़ुहर व अ़स्र व मग़रिब व इशा मुराद हैं। (फ़ा86) और उसके ज़िक्रे क़लबी व लिसानी और औक़ाते नमाज़ मस्जिदों की हाज़िरी से (फ़ा87) और उन्हें वक़्त पर अदा करनेसे हज़रत इबूने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बाज़ार में थे मस्जिद में नमाज़ के लिए इक़ामत कही गई आपने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल होगए तो फ़रमाया कि आयत रिजालुल्–ला तुल्हीहिम् ऐसे ही लोगों के हक़ में है। (फ़ा88) उसके वक़्त पर। (फ़ा89) दिलों का उलट जाना यह है कि शिद्दते ख़ौफ़ व इज़्तेराब से उलट कर गले तक चढ़ जायेंगे न बाहर निकलें न नीचे उतरें और आंखें ऊपर चढ़ जायेंगी या यह माना हैं कुफ़्फ़ार के दिल कुफ़्र व शक से ईमान व यक़ीन की तरफ़ पलट जायेंगे और आंखों से पर्दे उठ जायेंगे यह तो उस दिन का बयान है आयत में यह इरशाद फ़रमाया गया कि वह फ़रमांबरदार बन्दे जो ज़िक्र व ताअ़त में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इबादत की अदा में सरगरम रहते हैं बावजूद इस हुसने अमल के उस रोज़ से ख़ाइफ़ रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इबादत का हक़ अदा न हो **(बक़िया सफ़्हा 589 पर)**

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۗ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا

वल्अर्ज़ि व इलल्लाहिल् मसीर(42)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह युज़्जी सहाबन् सुम्–म युअल्लिफु बै–नहू सुम्–म यज्अलुहू रुकामन् फ़–त–रल् वद्–क़ यख़्रुजु मिन् ख़िला–लिही व युनज़्ज़िलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम् ब–रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशाउ व यस्रिफ़ुहू अम् मंय्यशाउ यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार(43)युक़ल्लि–बुल्लाहुल्लै–ल वन्नहा–र इन्–न फ़ी ज़ालि–क लअ़िब्र–तल् लिउलिल् अब्सार(44)वल्लाहु ख़–ल–क़ कुल्–ल दाब्बतिम् मिम् माइन् फ़मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला बत़्निही व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर्–बअ़िन् यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशाउ इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(45)ल–क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् मुबय्यि–नातिन् वल्लाहु यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(46)व यक़ूलू–न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ–तअ़्ना सुम्–म य–त–वल्ला फ़रीक़ुम् मिन्हुम् मिम् बअ़्दि ज़ालि–क व मा उलाइ–क बिल् मुअ्मिनीन(47)व इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि–यह्कु–म बै–नहुम् इज़ा

आसमानों और ज़मीन की और अल्लाह ही की तरफ़ फिर जाना।(42) क्या तूने न देखा कि अल्लाह नर्म नर्म चलाता है बादल को (फ़ा97) फिर उन्हें आपस में मिलाता है (फ़ा98) फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकलता है और उतारता है आसमान से उसमें जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उनमें से कुछ ओले (फ़ा99) फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे (फ़ा100) और फेर देता है उन्हें जिससे चाहे (फ़ा101) क़रीब है कि उसकी बिजली की चमक आँख ले जाए।(43) (फ़ा102) अल्लाह बदली करता है रात और दिन की (फ़ा103) बेशक उसमें समझने का मक़ाम है निगाह वालों को।(44) और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया (फ़ा104) तो उनमें कोई अपने पेट पर चलता है (फ़ा105) और उनमें कोई दो पाँव पर चलता है (फ़ा106) और उनमें कोई चार पाँव पर चलता है (फ़ा107) अल्लाह बनाता है जो चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(45) बेशक हमने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें (फ़ा108) और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहे सीधी राह दिखाये।(46) (फ़ा109) और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर कुछ उनमें के उसके बाद फिर जाते हैं(फ़ा110) और वह मुसलमान नहीं।(47) (फ़ा111) और जब बुलाए जायें अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाये तो जभी

(फ़ा97) जिस सरज़मीन और जिन बिलाद की तरफ़ चाहे। (फ़ा98) और उनके मुतफ़र्रिक़ टुकड़ों को यकजा कर देता है (फ़ा99) इसके माना या तो यह हैं कि जिस तरह ज़मीन में पत्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आसमान में बरफ़ के पहाड़ अल्लाह तआ़ला ने पैदा किये हैं और यह उसकी क़ुदरत से कुछ बईद नहीं उन पहाड़ों से ओले बरसाता है या यह माना हैं कि आसमान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है यानी बकसरत ओले बरसाता है (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा100) और जिसके जान व माल को चाहता है उनसे हलाक व तबाह करता है। (फ़ा101) उसके जान व माल को महफ़ूज़ रखता है (फ़ा102) और रौशनी की तेज़ी से आंखों को बेकार करदे। (फ़ा103) कि रात के बाद दिन लाता है और दिन के बाद रात। (फ़ा104) यानी तमाम अजनास हैवान को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी उन सब की असल है और यह सब बावजूद मुत्तहिदुल असल होने के बाहम किस क़दर मुख़्तलिफ़ुल हाल हैं यह ख़ालिक़े आ़लम के इल्म व हिकमत और उसके कमाले क़ुदरत की दलील रौशन है। (फ़ा105) जैसे कि सांप और मछली और बहुत से कीड़े (फ़ा106) जैसे कि आदमी और परिन्द (फ़ा107) मिस्ल बहाइम और दरिन्दों के। (फ़ा108) यानी क़ुरआने करीम जिस में हिदायत व अहकाम और हलाल व हराम का वाज़ेह बयान है **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ

بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلْ لَا تُقْسِمُوا طَاعَةٌ

مَّعْرُوفَةٌ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ وَإِنْ تُطِيعُوهُ

تَهْتَدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ

फ़रीकुम् मिन्हुम् मुअ्रिज़ून(48)व इंय्यकुल् लहुमुल् हक़्कु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन(49)अफ़ी कुलूबिहिम् म–रजुन् अमिर् ताबू अम् यख़ाफ़ू–न अंय्यही–फ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू बल् उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून (50)इन्नमा का–न क़ौललमुअ्मिनी–न इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लियह्कु–म बै–नहुम् अंय्यकूलू समिअ्ना व अ–तअ्ना व उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहून(51)व मंय्युतिअ़िल्ला–ह व रसू–लहू व यख़्शल्ला–ह व यत्तक़्हि फ़उलाइ–क हुमुल्फ़ाइज़ून(52)व अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमानिहिम् लइन् अ–मर् तहुम् ल–यख़्रुजुन्–न कुल् ला तुक़्सिमू ता–अतुम् मअ्रू–फ़तुन् इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा तअ्–मलून(53)कुल् अतीउल्ला–ह व अतीउर्रसू–ल फ़इन् त–वल्लौ फ़इन्नमा अ़लैहि मा हुम्मि–ल व अ़लैकुम् मा हुम्मिल्तुम् व इन् तुतीअूहु तह्तदू व मा अ़–लर्रसूलि इल्लल् बलाग़ुल् मुबीन(54)व अ़–दल्लाहुल् लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् व अ़मिलुस् सालिहाति ल–यस्तख़्लिफ़न्नहुम् फ़िल्अर्ज़ि क–मस्तख़्ल–फ़ल् लज़ी–न मिन्

उनका एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है।(48) और अगर उनकी डिगरी हो (उनके हक़ में फ़ैसला हो) तो उसकी तरफ़ आयें मानते हुए।(49) (फ़ा112) क्या उनके दिलों में बीमारी है (फ़ा113) या शक रखते हैं (फ़ा114) या यह डरते हैं कि अल्लाह व रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे (फ़ा115) बल्कि वह ख़ुद ही ज़ालिम हैं।(50) (रुकूअ़ 12) मुसलमानों की बात तो यही है (फ़ा116) जब अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाए जायें कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए कि अ़र्ज़ करें हमने सुना और हुक्म माना और यही लोग मुराद को पहुंचे।(51) और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं।(52) और उन्होंने (फ़ा117) अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में ह़द की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे तो वह ज़रूर जिहाद को निकलेंगे तुम फ़रमा दो क़समें न खाओ (फ़ा118) मुवाफ़िक़े शरअ़ हुक्म बरदारी चाहिये अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।(53) (फ़ा119) तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का (फ़ा120) फिर अगर तुम मुंह फेरो (फ़ा121) तो रसूल के ज़िम्मे वही है जो उस पर लाज़िम किया गया (फ़ा122) और तुम पर वह है जिसका बोझ तुम पर रखा गया (फ़ा123) और अगर रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे राह पाओगे और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।(54) (फ़ा124) अल्लाह ने वादा दिया उनको जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये (फ़ा125) कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा (फ़ा126) जैसी उनसे

(फ़ा112) कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बारहा तजरबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यक़ीन था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़ैसला सरासर हक़ व अ़द्ल होता है इस लिए उनमें जो सच्चा होता वह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर इस का फ़ैसला फ़रमायें और जो नाहक़ पर होता वह जानता था कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सच्ची अदालत से वह अपनी नाजाइज़ मुराद नहीं पा कसता इस लिए वह हुज़ूर के फ़ैसला से डरता और घबराता था। **शाने नुज़ूलः** बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ था एक ज़मीन के मुआ़मला में उसका एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी जानता था कि इस मुआ़मला में वह सच्चा है और उसको यक़ीन था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हक़ व अद्ल का फ़ैसला फ़रमाते हैं इसलिए उसने ख़्वाहिश की कि यह मुक़द्दमा हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से फ़ैसल कराया जाये लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वह बातिल पर है और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अद्ल व इन्साफ़ में किसी की रू रिआ़यत नहीं फ़रमाते इस लिए वह हुज़ूर के फ़ैसला पर तो राज़ी न हुआ और कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर मुसिर हुआ और हुज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वह हम पर ज़ुल्म करेंगे इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा113) कुफ़्र या निफ़ाक़ **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۵۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۸﴾ وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ

क़ब्लिहिम् व लयु–मक्किनन्–न लहुम् दी–नहुमुल् लज़िर्–तज़ा लहुम् व लयुबद्दिद लन्नहुम् मिम् बअ्दि ख़ौफ़िहिम् अम्–नन् यअ्बुदू–ननी ला युश्रिकू–न बी शैअन् व मन् क–फ़–र बअ्–द ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् फ़ासिकून(55)व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अतीउर्रसू–ल ल–अल्लकुम् तुर्–हमून(56)ला तह्–सबन्नल् लज़ी–न क–फ़रू मुअ्जिज़ी–न फ़िल्अर्ज़ि व मअ्वाहुमुन्नारु व लबि–अ्सल्मसीर(57)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू लि–यस्तअ्ज़िन्कुमुल् लज़ी–न म–ल–कत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी–न लम् यब्लुगुलहुलु–म मिन्कुम् सला–स मर्रातिन् मिन् क़ब्लि सलातिल् फ़ज्रि व ही–न त–ज़अून सिया–बकुम् मिनज़्ज़ही–रति व मिम् बअ्दि सलातिल् अिशाइ सलासु औरातिल् लकुम् लै–स अलैकुम् व ला अलैहिम् जुनाहुम् बअ्–द हुन्–न तव्वाफ़ू–न अलैकुम् बअ्ज़ुकुम् अला बअ्ज़िन् कज़ालि–क यबुय्यि–नुल्लाहु लकुमुल् आयाति वल्लाहु अलीमुन् हकीम(58)व इज़ा ब–ल–ग़ल् अत्फ़ालु मिन्कुमुल् हुलु–म फ़ल्–यस्तअ्ज़िनू क–मस्तअ्–ज़–नल् लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् कज़ालि–क युबय्यिनुल्लाहु

पहलों को दी (फ़ा127) और ज़रूर उनके लिए जमा देगा उनका वह दीन जो उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (फ़ा128) और ज़रूर उनके अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा (फ़ा129) मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहरायें और जो उसके बाद नाशुक्री करे तो वही लोग बे हुक्म हैं।(55) और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो।(56) हरगिज़ काफ़िरों को ख़्याल न करना कि वह कहीं हमारे क़ाबू से निकल जायें ज़मीन में और उनका ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम।(57) (रुकूअ़ 13) ऐ ईमान वालो चाहिए कि तुम से इज़्न लें तुम्हारे हाथ के माल ग़ुलाम (फ़ा130) और वह जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे (फ़ा131) तीन वक़्त (फ़ा132) नमाज़े सुबह से पहले (फ़ा133) और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो दोपहर को (फ़ा134) और नमाज़े इशा के बाद (फ़ा135) यह तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं (फ़ा136) इन तीन के बाद कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उन पर (फ़ा137) आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहां एक दूसरे के पास (फ़ा138) अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिए आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(58) और जब तुम में लड़के (फ़ा139) जवानी को पहुंच जायें तो वह भी इज़्न मांगें (फ़ा140) जैसे उनके अगलों (फ़ा141) ने इज़्न मांगा अल्लाह यूंही बयान

(फ़ा127) हज़रत दाऊद व सुलैमान वग़ैरह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम को और जैसी कि जबाबिरह मिस्र व शाम को हलाक करके बनी इसराईल को ख़िलाफ़त दी और उन ममालिक पर उनको मुसल्लत किया। (फ़ा128) यानी दीने इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़ालिब फ़रमाएगा। (फ़ा129) चुनांचे यह वादा पूरा हुआ और सर ज़मीने अ़रब से कुफ़्फ़ार मिटा दिये गए मुसलमानों का तसल्लुत हुआ मशरिक़ व मग़रिब के ममालिक अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए फ़तह फ़रमाये अकासिरा के ममालिक व ख़ज़ाइन उनके क़ब्ज़ा में आये दुनिया पर उनका रोअ्.ब छा गया। फ़ाइदा इस आयत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और आपके बाद होने वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की दलील है क्योंकि उनके ज़माना में फ़ुतूहाते अ़ज़ीमा हुए और किसरा वग़ैरह मुलूक के ख़ज़ाइन मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आये और अमन व तमकीन और दीन का ग़लबा हासिल हुआ तिर्मिज़ी व अबू दाऊद की हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल है फिर मिल्क होगा उसकी तफ़सील यह है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त दो **(बक़िया सफ़हा 589 पर)**

اللّٰہ لَکُمُ الْاٰیٰتِ ؕ وَاللّٰہُ عَلِیۡمٌ حَکِیۡمٌ ﴿۵۹﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِیۡ لَا یَرۡجُوۡنَ نِکَاحًا فَلَیۡسَ عَلَیۡہِنَّ جُنَاحٌ اَنۡ یَّضَعۡنَ ثِیَابَہُنَّ غَیۡرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِیۡنَۃٍ ؕ

وَاَنۡ یَّسۡتَعۡفِفۡنَ خَیۡرٌ لَّہُنَّ ؕ وَاللّٰہُ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۶۰﴾ لَیۡسَ عَلَی الۡاَعۡمٰی حَرَجٌ وَّلَا عَلَی الۡاَعۡرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَی الۡمَرِیۡضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰۤی اَنۡفُسِکُمۡ اَنۡ

تَاۡکُلُوۡا مِنۡۢ بُیُوۡتِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ اٰبَآئِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ اُمَّہٰتِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ اِخۡوَانِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ اَخَوٰتِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ اَعۡمَامِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ عَمّٰتِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ

اَخۡوَالِکُمۡ اَوۡ بُیُوۡتِ خٰلٰتِکُمۡ اَوۡ مَا مَلَکۡتُمۡ مَّفَاتِحَہٗۤ اَوۡ صَدِیۡقِکُمۡ ؕ لَیۡسَ عَلَیۡکُمۡ جُنَاحٌ اَنۡ تَاۡکُلُوۡا جَمِیۡعًا اَوۡ اَشۡتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلۡتُمۡ بُیُوۡتًا فَسَلِّمُوۡا

عَلٰۤی اَنۡفُسِکُمۡ تَحِیَّۃً مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰہِ مُبٰرَکَۃً طَیِّبَۃً ؕ کَذٰلِکَ یُبَیِّنُ اللّٰہُ لَکُمُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّکُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰہِ

लकुम् आयातिही वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(59)वल्क़वाअ़िदु मिनन् निसाइल्लाती ला यर्जू–न निकाहन् फ़लै–स अ़लैहिन्–न जुनाहुन् अंय्य–ज़अ्–न सि़या–बहुन्–न ग़ै–र मु–त–बर्रिजातिम् बिज़ी–नतिन् व अंय्यस्तअ़्फ़िफ़्–न ख़ैरुल् लहुन्–न वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(60)लै–स अ़लल् अअ़्मा ह़–रजुंव् व ला अ़लल् अअ़्–रजि ह़–रजुंव् व ला अ़लल् मरीज़ि ह़–रजुंव् व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम् बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बूयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ–ख़वातिकुम् औ बुयूति अअ़्मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़्वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा म–लक्तुम् मफ़ाति–हहू औ सदीक़िकुम् लै–स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन् फ़इज़ा द–ख़ल्तुम् बुयूतन् फ़–सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तह़िय्य–तम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबा–र–क–तन् तय्यि–ब–तन् कज़ालि–क युबय्यि–नुल्लाहु लकुमुल् आयाति ल–अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून(61)इन्नमल् मुअ्मिनूनल् लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि

फ़रमाता है तुम से अपनी आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(59) और बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें (फ़ा142) जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उन पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जब कि सिंगार न चमकायें (फ़ा143) और उससे भी बचना (फ़ा144) उनके लिए और बेहतर है और अल्लाह सुनता जानता है।(60) न अन्धे पर तंगी (फ़ा145) और न लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर रोक और न तुममें किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर (फ़ा146) या अपने बाप के घर या अपनी मां के घर या अपने भाईयों के यहां या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहां या अपनी फूफियों के घर या अपने मामूओं के यहां या अपनी ख़ालाओं के घर या जहां की कुंजियां तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं (फ़ा147) या अपने दोस्त के यहां (फ़ा148) तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग (फ़ा149) फिर जब किसी घर में जाओ तो अपनों को सलाम करो (फ़ा150) मिलते वक़्त कि अच्छी दुआ़ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीज़ा अल्लाह यूंही बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो।(61) (रुकूअ़ 14) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर

(फ़ा142) जिन का सिन ज़्यादा हो चुका और औलाद होने की उम्र न रही और पीराना साली के बायस (फ़ा143) और बाल सीना पिन्डली वग़ैरह न खोलें (फ़ा144) बालाई कपड़ों को पहने रहना। (फ़ा145) शाने नुज़ूलः सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सहाबा किराम नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियां नाबीना और बीमारों और अपाहिजों को दे जाते जो इन आज़ार के बाइस जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि उनके मकानों से खाने की चीज़ें लेकर खायें मगर वह लोग इसको गवारा न करते बईं ख़्याल कि शायद यह उनको दिल से पसन्द न हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें इसकी इजाज़त दी गई और एक क़ौल यह है कि अन्धे अपाहिज और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई और एक क़ौल यह है कि जब अन्धे नाबीना अपाहिज किसी मुसलमान के पास जाते और उसके पास उनके खिलाने के लिए कुछ न होता तो वह उन्हें किसी रिश्तेदार के यहां खिलाने के लिए ले जाता यह बात उन लोगों को गवारा न होती इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि इसमें कोई हर्ज नहीं है (फ़ा146) कि औलाद का घर अपना ही घर **(बक़िया सफ़हा 590 पर)**

وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا
اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَلَآ
اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

व रसूलिही व इज़ा कानू म–अ़हू अ़ला अम्रिन् जामि–अ़िल् लम् यज़्हबू ह़त्ता यस्तअ्ज़िनूहु इन्नल्लज़ी–न यस्तअ्जि नू–न–क उलाइ–कल्लज़ी–न युअ्मिनू–न बिल्लाहि व रसूलिही फ़इ–ज़स्तअ् –जनू–क लिबअ्ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्ज़ल् लिमन् शिअ्–त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रह़ीम(62)ला तज्अ़लू दुआ़अर्रसूलि बै–नकुम् कदुआ़इ बअ्ज़िकुम् बअ्–ज़न् क़द यअ्–लमुल्लाहुल् लज़ी–न य–त–सल्–ललू–न मिन्कुम् लिवाज़न् फ़ल्–यह़्–ज़रिल् लज़ी–न युख़ालिफ़ू–न अ़न् अम्रिही अन् तुसी–बहुम् फ़ित्–नतुन् औ युसी–बहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(63)अला इन्–न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़द यअ्–लमु मा अन्तुम् अ़लैहि व यौ–म युर्– जअू–न इलैहि फ़यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(64)

यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिसके लिए जमा किये गए हों (फ़ा151) तो न जायें जब तक उनसे इजाज़त न ले लें वह जो तुमसे इजाज़त मांगते हैं वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं (फ़ा152) फिर जब वह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिए तो उनमें जिसे तुम चाहो इजाज़त देदो और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी मांगो (फ़ा153) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(62) रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है (फ़ा154) बेशक अल्लाह जानता है जो तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ लेकर (फ़ा155) तो डरें वह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे (फ़ा156) या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।(63) (फ़ा157) सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक वह जानता है जिस हाल पर तुम हो (फ़ा158) और उस दिन को जिसमें उसकी तरफ़ फेरे जायेंगे (फ़ा159) तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया और अल्लाह सब कुछ जानता है।(64) (फ़ा160) (रुकूअ़ 15)

(फ़ा151) जैसे कि जिहाद और तदबीरे जंग और जुमा व ईदैन और मशवरा और हर इज्तेमाअ़ जो अल्लाह के लिए हो (फ़ा152) उनका इजाज़त चाहना निशाने फ़रमांबरदारी और दलीले सेहते ईमान है। (फ़ा153) इससे मालूम हुआ कि अफ़ज़ल यही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त तलब न करें मसला इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिए (मदारिक) (फ़ा154) क्योंकि जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पुकारें उस पर इजाबत व तअ़्मील वाजिब हो जाती है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब हाज़िर होने के लिए इजाज़त तलब करे और इजाज़त से ही वापस हो और एक माना मुफ़स्सिरीन ने यह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को निदा करे तो अदब व तकरीम और तौक़ीर व ताज़ीम के साथ आपके मुअ़ज़्ज़म अलक़ाब से नरम आवाज़ के साथ मुतवाज़ेआ़ना व मुन्कसिराना लहजा में *या नबिय्यल्लाहि या रसूलल्लाहि या हबीबल्लाहि* कह कर (फ़ा155) शाने नुज़ूलः मुनाफ़िक़ीन पर रोज़े जुमा मस्जिद में ठहर कर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़ुतबे का सुनना गिराँ होता था तो वह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ लेकर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा156) दुनिया में तकलीफ़ या क़त्ल या ज़लज़ले या और हौलनाक हवादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का सख़्त होकर मअ़्रेफ़ते इलाही से महरूम रहना। (फ़ा157) आख़िरत में (फ़ा158) ईमान पर या निफ़ाक़ पर (फ़ा159) जज़ा के लिए और वह दिन रोज़े क़ियामत है। (फ़ा160) उससे कुछ छुपा नहीं।

(बक़िया सफ़्हा 560 का) करते थे। (फ़ा7) ख़्वाह वह अमानतें अल्लाह की हों या ख़ल्क़ की और इसी तरह अहद ख़ुदा के साथ हों या मख़्लूक़ के साथ सब की वफ़ा लाज़िम है। (फ़ा8) और उन्हें उनके वक़्तों में उनके शराइत व आदाब के साथ अदा करते हैं और फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व नवाफ़िल सब की निगहबानी रखते हैं (फ़ा9) मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहां हज़रते आदम हैं (फ़ा10) यानी उसकी नस्ल को (फ़ा11) यानी रहम में

سُوۡرَۃُ الۡفُرۡقَانِ مَکِّیَّۃٌ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

تَبٰرَکَ الَّذِیۡ نَزَّلَ الۡفُرۡقَانَ عَلٰی عَبۡدِہٖ لِیَکُوۡنَ لِلۡعٰلَمِیۡنَ نَذِیۡرَا ۙ۝ الَّذِیۡ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ لَمۡ یَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ شَرِیۡکٌ
فِی الۡمُلۡکِ وَ خَلَقَ کُلَّ شَیۡءٍ فَقَدَّرَہٗ تَقۡدِیۡرًا ۝ وَ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اٰلِہَۃً لَّا یَخۡلُقُوۡنَ شَیۡئًا وَّ ہُمۡ یُخۡلَقُوۡنَ وَ لَا یَمۡلِکُوۡنَ لِاَنۡفُسِہِمۡ ضَرًّا
وَّ لَا نَفۡعًا وَّ لَا یَمۡلِکُوۡنَ مَوۡتًا وَّ لَا حَیٰوۃً وَّ لَا نُشُوۡرًا ۝ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِنۡ ہٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفۡکُ ۨافۡتَرٰىہُ وَ اَعَانَہٗ عَلَیۡہِ قَوۡمٌ اٰخَرُوۡنَ ۚ
فَقَدۡ جَآءُوۡ ظُلۡمًا وَّ زُوۡرًا ۚ۝ وَ قَالُوۡۤا اَسَاطِیۡرُ الۡاَوَّلِیۡنَ اکۡتَتَبَہَا فَہِیَ تُمۡلٰی عَلَیۡہِ بُکۡرَۃً وَّ اَصِیۡلًا ۝ قُلۡ اَنۡزَلَہُ الَّذِیۡ یَعۡلَمُ السِّرَّ

सूरतुल फ़ुर्क़ानि

(मक्की है इस में 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम

तबा–र कल्लज़ी नज़्ज़–लल् फ़ुर्क़ा–न अ़ला अ़ब्दिही लियकू–न लिल्‌आ़–लमी–न नज़ीरा(1) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्‌अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व–ल–दंव् व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व ख़–ल–क़ कुल्–ल शैइन् फ़–क़द्–द–रहू तक़्दीरा(2)वत्तख़ज़ू मिन् दूनिही आलि–ह–तल् ला यख़्लुक़ू–न शैअंव् व हुम् युख़्–लक़ू–न व ला यम्लिकू–न लिअन्फ़ु–सिहिम् ज़र्रंव् व ला नफ़्अंव् व ला यम्लिकू–न मौतंव् व ला हयातंव् व ला नुशूरा(3)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कु निफ़्तराहु व अआ़–नहू अ़लैहि क़ौमुन् आ–ख़रू–न फ़–क़द् जाऊ ज़ुल्मंव् वज़ूरा(4)व क़ालू असातीरुल् अव्वली–नक्–त–त–बहा फ़हि–य तुम्ला अ़लैहि बुक्–र–तंव् व असीला(5)क़ुल् अन्ज़–लहुल् लज़ी यअ़्–लमुस् सिर्–र

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

बड़ी बरकत वाला है वह जिसने उतारा क़ुरआन अपने बन्दा पर (फ़2) जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।(1) (फ़3) वह जिसके लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत और उसने न इख़्तियार फ़रमाया (फ़4) बच्चा और उसकी सल्तनत में कोई साझी नहीं (फ़5) उसने हर चीज़ पैदा करके ठीक अन्दाज़ा पर रखी।(2) और लोगों ने उसके सिवा और ख़ुदा ठहरा लिए (फ़6) कि वह कुछ नहीं बनाते और ख़ुद पैदा किये गए हैं और ख़ुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का न उठने का।(3) और काफ़िर बोले (फ़7) यह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने बना लिया है (फ़8) और उस पर और लोगों ने (फ़9) उन्हें मदद दी है बेशक वह (फ़10) ज़ुल्म और झूठ पर आये। और बोले (फ़11) अगलों की कहानियां हैं(4) जो उन्होंने (फ़11) लिख ली हैं तो वह उन पर सुबह व शाम पढ़ी जाती हैं।(5) तुम फ़रमाओ उसे तो उसने उतारा है जो आसमानों

(फ़1) सूरह फ़ुरक़ान मक्की है इस में छः रुकूअ़ और सतहत्तर आयतें और आठ सौ बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सौ तीन हरफ़ हैं (फ़2) यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर। (फ़3) इसमें हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उमूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए जिन्न हों या बशर या फ़रिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आपके उम्मती हैं क्योंकि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं इसमें यह सब दाख़िल हैं मलाइका को इससे ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कबीर में इमाम राज़ी से और शोअ़बुलईमान में बैहक़ी से सादिर हुआ बे दलील है और दावा इज्माअ़ ग़ैर साबित चुनांचे इमाम सुबकी व बाज़री व इब्ने हज़्म व सुयूती ने इसका तआ़क़ुब किया और ख़ुद इमाम राज़ी को तस्लीम है कि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं पस वह तमाम ख़ल्क़ को शामिल है मलाइका को इससे ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं इलावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है उर्सिल्तु इलल् ख़ल्क़ि काफ़्फ़तन् यानी मैं तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया अल्लामा अ़ली क़ारी ने मिरक़ात में इसकी शरह में फ़रमाया यानी तमाम मौजूदात की तरफ़ जिन्न हों या इन्सान या फ़रिश्ते या हैवानात या जमादात इस मसला की कामिल तन्क़ीह व तहक़ीक़ शरह व बस्त के साथ इमाम क़स्तलानी की मवाहिब लदुन्निया में है (फ़4) इसमें यहूद **(बक़िया सफ़हा 590 पर)**

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَ قَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ يَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰۤى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَ قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ تَبٰرَكَ الَّذِيْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ يَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَ اَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ
مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ۝ وَ اِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّ مَصِيْرًا ۝

फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि इन्नहू का-न ग़फ़ूरर् रहीमा (6) व क़ालू मालि हाज़र्रसूलि यअ्कुलुत्तआ-म व यम्शी फ़िल्अस्वाक़ि लौला उन्ज़ि-ल इलैहि म-लकुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा (7) औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुंय्यअ्कुलु मिन्हा व क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम् मस्हूरा (8) उन्ज़ुर्-कै-फ़ ज़-रबू ल-कल् अम्सा-ल फ़ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला (9) तबा-र कल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क ख़ैरम् मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु व यज्-अ़ल् ल-क क़ुसूरा (10) बल् कज़्ज़बू बिस्सा-अ़ति व अअ्-तद्ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्सा-अ़ति सअ़ीरा (11) इज़ा र-अत्हुम् मिम् मकानिम् बअ़ीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव् व ज़फ़ीरा (12) व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन् ज़य्यिक़म् मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा (13) ला तद्अुल् यौ-म सुबरंव् वाहिदंव् वद्अू सुबूरन् कसीरा (14) कुल अज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल् ख़ुल्दिल् लती वुअ़िदल् मुत्तक़ू-न कानत् लहुम् जज़ाअंव् व मसीरा

और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है (फ़ा13) बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (6) (फ़ा14) और बोले (फ़ा15) इस रसूल को क्या हुआ खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है (फ़ा16) क्यों न उतारा गया उनके साथ कोई फ़रिश्ता कि उनके साथ डर सुनाता। (7) (फ़ा17) या ग़ैब से उन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या उनका कोई बाग़ होता जिसमें से खाते (फ़ा18) और ज़ालिम बोले (फ़ा19) तुम तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुआ। (8) (फ़ा20) ऐ महबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिए बना रहे हैं तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते। (9) (रुकूअ़16) बड़ी बरकत वाला है वह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर उससे कर दे (फ़ा 21) जन्नतें जिनके नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिए ऊँचे ऊँचे महल। (10) बल्कि यह तो क़ियामत को झुठलाते हैं और जो क़ियामत को झुठलाये हमने उसके लिए तैयार कर रखी है भड़कती हुई आग। (11) जब वह उन्हें दूर जगह से देखेगी (फ़ा२२) तो सुनेंगे उसका जोश मारना और चिंघाड़ना। (12) और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जायेंगे (फ़ा23) जंन्जीरों में जकड़े हुए (फ़ा24) तो वहां मौत मांगेंगे। (13) (फ़ा25) फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो। (14) (फ़ा26) तुम फ़रमाओ क्या (फ़ा27) भला यह वह हमेशगी के बाग़ जिसका वादा डर वालों को है वह उनका सिला और अन्जाम है।

(फ़ा13) यानी क़ुरआने करीम उलूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है यह दलील सरीह है इसकी कि वह हज़रत अल्लामुलग़ुयूब की तरफ़ से है। (फ़ा14) इसी लिए कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। (फ़ा15) कुफ़्फ़ार क़ुरैश (फ़ा16) इससे उनकी मुराद यह थी कि आप नबी होते तो न खाते न बाज़ारों में चलते और यह भी न होता तो। (फ़ा17) और उनकी तस्दीक़ करता और उनकी नबुव्वत की शहादत देता। (फ़ा18) मालदारों की तरह (फ़ा19) मुसलमानों से (फ़ा20) और मआ़ज़ल्लाह उसकी अ़क़्ल बजा न रही ऐसी तरह तरह की बेहूदा बातें उन्होंने बकीं। (फ़ा21) यानी जल्द आपको उस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़ता फ़रमावे जो यह काफ़िर कहते हैं (फ़ा23) एक बरस की राह से दोनों क़ौम हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं अल्लाह तआ़ला चाहे तो उसको हयात व अ़क़्ल और रूयत अ़ता फ़रमाये और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है। (फ़ा23) जो निहायत कर्ब व बैचेनी पैदा करने वाली हो (फ़ा24) उस तरह कि उनके हाथ गर्दनों से मिलाकर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ हो। (फ़ा25) और वासबूराह वासबूराह का शोर मचायेंगे बईं माना कि हाए आए मौत आ जा हदीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वह इबलीस है और उसकी ज़ुर्रियत उसके पीछे होगी और यह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से (फ़ा26) क्योंकि तुम तरह तरह के अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे (फ़ा27) अ़ज़ाब और अहवाले जहन्नम जिसका ज़िक्र किया गया।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَآءُونَ خٰلِدِينَ ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔولًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَيَقُولُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًا ۢ بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

(15) लहुम फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न का-न अ़ला रब्बि-क वअ़्- दम् मस्ऊला (16) व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ-अन्तुम् अज़्लल्तुम् अ़िबादी हाउलाइ अम् हुम् ज़ल्लुस् सबील (17) क़ालू सुब्हा-न-क मा का-न यम्बग़ी लना अन् नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम् मत्तअ़्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र व कानू क़ौमम् बूरा (18) फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न फ़मा तस्ततीअ़ू-न सर्फ़ंव् व ला नस्रन् व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अ़ज़ाबन् कबीरा (19) व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल् मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत् तआ़-म व यम्शू-न फ़िल्अस्वाक़ि व ज-अ़ल्ना बअ़्-ज़कुम् लि- बअ़्ज़िन् फ़ित्-तन् अ-तस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा (20)

(15) उनके लिए वहां मन मानी मुरादें हैं जिनमें हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वादा है मांगा हुआ। (16)(फ़ा28) और जिस दिन इकट्ठा करेगा उन्हें (फ़ा29) और जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हैं (फ़ा30) फिर उन मअ़्बूदों से फरमाएगा क्या तुम ने गुमराह कर दिये यह मेरे बन्दे या ख़ुद ही राह भूले। (17) (फ़ा31) वह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझको (फ़ा32) हमें सज़ावार न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनायें (फ़ा33) लेकिन तूने उन्हें और उनके बाप दादाओं को बरतने दिया (फ़ा34) यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए और यह लोग थे ही हलाक होने वाले। (18) (फ़ा35) तो अब मअ़्बूदों ने तुम्हारी बात झुठला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखायेंगे। (19) और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते (फ़ा36) और हमने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है (फ़ा37) और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे (फ़ा38) और ए महबूब तुम्हारा रब देखता है। (20) (फ़ा39) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा28) यानी मांगने के लाइक़ या वह जो मोमिनीन ने दुनिया में यह अर्ज़ करके मांगा रब्बना आतिना फ़िद् दुन्या ह-स-न तंव् व फिल् आख़ि-रति- ह-स-नः या यह अर्ज़ करके रब्बना व आतिना मा व अ़त्-तना अ़ला रुसुलि-क (फ़ा29) यानी मुशरिकीन को (फ़ा30) यानी उनके बातिल मअ़्बूदों को ख़्वाह ज़विल उक़ूल हो या ग़ैर ज़विल उक़ूल कलबी ने कहा कि उन मअ़्बूदों से बुत मुराद है उन्हें अल्लाह तआला गोयाई देगा (फ़ा31) अल्लाह तआ़ला हक़ीक़ते हाल का जानने वाला है उससे कुछ भी मख़्फ़ी नहीं यह सवाल मुशरिकीन को ज़लील करने के लिए है कि उनके मअ़्बूद उन्हें झुठलायें तो उनकी हसरत व ज़िल्लत और ज़्यादा हो (फ़ा32) इससे कि कोई तेरा शरीक हो। (फ़ा33) तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मअ़्बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे हम तेरे बन्दे हैं (फ़ा34) और उन्हें अमवाल व औलाद व तूले उम्र व सेहत व सलामत इनयात की (फ़ा35) शक़ी बाद अज़ाँ कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा (फ़ा36) यह कुफ़्फ़ार के उस तअ़्न का जवाब है जो उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर किया था कि वह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं यहां बताया गया कि यह उमूर मनाफ़ीए नबुव्वत नहीं बल्कि यह तमाम अम्बिया की आदत मुस्तमरा थी लिहाज़ा यह तअ़्न महज़ जहल व इनाद है। (फ़ा37) शाने नुज़ूलः शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो गुरबा को देख कर यह ख़्याल करते कि यह हम से पहले इस्लाम ला चुके इनको हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी बईं ख़्याल वह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिए ग़ुरबा आज़माइश बन जाते और एक क़ौल यह है कि यह आयत अबू जहल व वलीद बिन उक़बा और आस बिन वाइल सहमी और नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई इन लोगों ने हज़रत अबू ज़र इब्ने मसऊद व अ़म्मार बिन यासिर व बिलाल व सुहब व आमिर बिन फ़हीरा को देखा कि पहले से इस्लाम लाये हैं तो गुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आयें तो उन्हीं जैसे हो जायेंगे तो हम में और उन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा और एक क़ौल यह है कि यह आयत फ़ुक़रा मुस्लिमीन की आज़माइश में नाज़िल हुई जिनका कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस्तेहज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इत्तेबाअ़ करने वाले यह लोग हैं जो हमारे गुलाम और अरज़ल हैं अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (ख़ाज़िन) (फ़ा38) इस फ़क़्र व शिद्दत पर और कुफ़्फ़ार की इस बदगोई पर (फ़ा39) उसको जो सब्र करे और उसको जो बे-सब्री करे।

(बक़िया सफ़हा 561 का) यह इसमें अ़जीब सिफ़त है कि वह तेल भी है कि मुनाफ़ा और फ़वाइद तेल के इससे हासिल किये जाते हैं जलाया भी जाता है दवा के तरीक़ा पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा उससे रोटी खाई जा सकती है (फ़ा24) यानी दूध ख़ुशगवार मुवाफ़िक़ तबअ़ जो लतीफ़ ग़िज़ा होता है (फ़ा25) कि उनके बाल खाल ऊन वग़ैरह से काम लेते हो (फ़ा26) कि उन्हें ज़बह करके खा लेते हो (फ़ा27) ख़ुश्की में (फ़ा28) दरियाओं में (फ़ा29) उसके अ़ज़ाब का जो उसके सिवा औरों को पूजते हो। (फ़ा30) अपनी क़ौम के लोगों से कि (फ़ा31) और तुम्हें अपना ताबेअ़ बनाये (फ़ा32) कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाये

(बक़िया सफ़हा 562 का) हाम याफ़िस और उनकी बीबियों को और दूसरे मोमिनीन को सवार किया कुल लोग जो कश्ती में थे उनकी तादाद अठहत्तर थी, निस्फ़ मर्द और निस्फ़ औरतें (फ़ा43) और उनके लिए नजात न तलब करना दुआ़ न फ़रमाना (फ़ा44) कश्ती से उतरते वक़्त या उसमें सवार होते वक़्त (फ़ा45) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वाक़िऐ में और उसमें जो दुश्मनाने हक़ के साथ किया गया (फ़ा46) और इबरतें और नसीहतें और क़ुदरते इलाही के दलाइल हैं। (फ़ा47) उस क़ौम के हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को उसमें भेजकर और उनको वअ़ज़ व नसीहत पर मामूर फ़रमा कर ताकि ज़ाहिर हो जाये कि नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले कौन नसीहत क़बूल करता और तस्दीक़ व इताअ़त करता है और कौन नाफ़रमान तकज़ीब व मुख़ालफ़त पर मुसिर रहता है। (फ़ा48) यानी क़ौमे नूह के अ़ज़ाब व हलाक के (फ़ा49) यानी आ़द क़ौमे हूद (फ़ा50) यानी हूद अ़लैहिस्सलाम और उनकी मअ़रेफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया। (फ़ा51) उसके अ़ज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ। (फ़ा52) और वाहं के सवाब व अ़ज़ाब वग़ैरह। (फ़ा53) यानी बाज़ कुफ़्फ़ार जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने फ़राख़ीए ऐश और नेअ़मते दुनिया अ़ता फ़रमाई थी अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे।

(बक़िया सफ़हा 563 का) यह कहा (फ़ा60) कि अपने आपको उस का नबी बताया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी (फ़ा61) पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम जब उनके ईमान से मायूस हुए और उन्होंने देखा कि क़ौम इन्तेहाई सरकशी पर है तो उनके हक़ में बद दुआ़ की और बारगाहे इलाही में। (फ़ा62) अपने कुफ़्र व तकज़ीब पर जबकि अ़ज़ाबे इलाही देखेंगे (फ़ा63) यानी वह अ़ज़ाब व हलाक में गिरिफ़्तार किये गए (फ़ा64) यानी वह हलाक होकर घास कूड़े की तरह हो गए (फ़ा65) यानी ख़ुदा की रहमत से दूर हों अम्बिया की तकज़ीब करने वाले। (फ़ा66) मिस्ल क़ौमे सालेह और क़ौमे लूत और क़ौमे शुऐब वग़ैरह के (फ़ा67) जिसके लिए हलाक का जो वक़्त मुक़र्रर है वह ठीक उसी वक़्त हलाक होगी उसमें कुछ भी तक़दीम व ताख़ीर नहीं हो सकती (फ़ा68) और उसकी हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाये (फ़ा69) और बाद वालों को पहलों की तरह हलाक कर दिया। (फ़ा70) कि बाद वाले अफ़साना की तरह उनका हाल बयान किया करें और उनके अ़ज़ाब व हलाक का बयान सबबे इबरत हो (फ़ा71) मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरह मोअ़जेज़ात के (फ़ा72) और अपने तकब्बुर के बाइस ईमान न लाये

(बक़िया सफ़हा 564 का) इससे मुराद या बैतुल मुक़द्दस है या दमिश्क़ या फ़लस्तीन कई क़ौल हैं (फ़ा81) यानी ज़मीन हमवार फ़राख़ फलों वाली जिसमें रहने वाले ब-आसाइश बसर करते हैं (फ़ा82) यहां पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उनके ज़माना में यह निदा फ़रमाई गई या रसूलों से मुराद ख़ास सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं या हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कई क़ौल हैं। (फ़ा83) उनकी जज़ा अ़ता फ़रमाऊंगा। (फ़ा84) यानी इस्लाम। (फ़ा85) और फ़िरक़े फ़िरक़े हो गए यहूदी नसरानी मजूसी वग़ैरह (फ़ा86) और अपने ही आपको हक़ पर जानता है और दूसरों को बातिल पर समझता है इस तरह उनके दर्मियान दीनी इख़्तिलाफ़ात हैं अब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब होता है (फ़ा87) यानी उनके कुफ़्र व ज़लाल और उनकी जहालत व ग़फ़लत में (फ़ा88) यानी उनकी मौत के वक़्त तक। (फ़ा89) दुनिया में (फ़ा90) और हमारी यह निअ़मतें उनके आमाल की जज़ा हैं या हमारे राज़ी होने की दलील हैं ऐसा ख़्याल करना ग़लत है वाक़िआ़ यह नहीं है (फ़ा91) कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं। (फ़ा92) उन्हें उसके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मोमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बदी करता है और निडर रहता है। (फ़ा93) और उसकी किताबों को मानते हैं (फ़ा94) ज़कात व सदक़ात या यह माना हैं कि आमाले सालिहा बजा लाते हैं (फ़ा95) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ की नूर दीदा ऐसा नहीं यह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं यह आमाल ना मक़बूल न हो जायें (फ़ा96) यानी नेकियों को माना यह हैं कि वह नेकियों में और उम्मतों पर सबक़त करते हैं।

(बक़िया सफ़हा 565 का) (फ़ा105) और यह कहते हुए कि हम अहले हरम हैं और बैतुल्लाह के हमसाया हैं हम पर कोई ग़ालिब न होगा हमें किसी का ख़ौफ़ नहीं। (फ़ा106) कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जमा होकर और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआन पाक पर तअ़न और इसको सेहर और शेअ़र कहना और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में बेजा बातें कहना होता था। (फ़ा107) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआने करीम को (फ़ा108) यानी क़ुरआने पाक में ग़ौर नहीं किया और इसके एजाज़ पर नज़र नहीं डाली जिससे उन्हें मालूम होता कि यह कलामे हक़ है इसकी तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इसमें इरशाद फ़रमाया गया वह सब हक़ और वाजिबुत्तस्लीम है और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़ व हक़्क़ानियत पर इसमें दलालाते वाज़ेहा मौजूद हैं। (फ़ा109) यानी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले अहद में हुई ही न हो और वह यह कह सकें कि हमें ख़बर ही

न थी कि ख़ुदा की तरफ़ से रसूल आया भी करते हैं कभी पहले कोई रसूल आया होता और हम ने उसका तज़्किरा सुना होता तो हम क्यों इस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को न मानते यह उज़्र करने का मौक़ा भी नहीं है क्योंकि पहली उम्मतों में रसूल आ चुके हैं और ख़ुदा की किताबें नाज़िल हो चुकी हैं। (फ़ा110) और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के जुमला अहवाल को न देखां और आपके नस्बे आली और सिद्क़ व अमानत और वफ़ूरे अ़क़्ल व हुस्ने अख़्लाक़ और कमाले हिल्म और वफ़ा व करम व मुरव्वत वग़ैरह पाकीज़ा अख़्लाक़ व महासिन सिफ़ात और बग़ैर किसी से सीखे आपके इल्म में कामिल और तमाम जहान से अअ़्लम और फ़ाइक़ होने को न जाना क्या ऐसा है। (फ़ा111) हक़ीक़त में यह बात तो नहीं बल्कि वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और आपके औसाफ़ व कमालात को ख़ूब जानते हैं और आपके बरगुज़ीदा सिफ़ात शोहरए आफ़ाक़ हैं (फ़ा112) यह भी सरासर ग़लत और बातिल है क्योंकि वह जानते हैं कि आप जैसा दाना और कामिलुल-अ़क़्ल शख़्स उनके देखने में नहीं आया (फ़ा113) यानी क़ुरआने करीम जो तौहीदे इलाही व अहकामे दीन पर मुश्तमिल है (फ़ा114) क्योंकि इसमें उनके ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की मुख़ालफ़त है इस लिए वह रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनके सिफ़ात व कमालात को जानने के बावजूद हक़ की मुख़ालफ़त करते हैं अक्सर की क़ैद से साबित होता है कि यह हाल उनमें बेश्तर लोगों का है चुनान्चे बाज़ उन में ऐसे भी थे जो आपको हक़ पर जानते थे और हक़ उन्हें बुरा भी नहीं लगता था लेकिन वह अपनी क़ौम की मुवाफ़क़त या उनके तअ़न व तशनीअ़ के ख़ौफ़ से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब (फ़ा115) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा116) इस तरह कि इसमें वह मज़ामीन मज़कूर होते जिनकी कुफ़्फ़ार ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटा और बेटियां होना वग़ैरह कुफ़्रियात (फ़ा117) और तमाम आ़लम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता (फ़ा118) यानी क़ुरआन पाक। (फ़ा119) उन्हें हिदायत करने और राहे हक़ बताने पर ऐसा तो नहीं और वह क्या हैं और आपको क्या दे सकते हैं तुम अगर अज्र चाहो (फ़ा120) और उसका फ़ज़्ल आप पर अ़ज़ीम और जो जो निअ़्मतें उस ने आपको अ़ता फ़रमाईं वह बहुत कसीर और आला तो आपको उनकी क्या परवाह फिर जब वह आपके औसाफ़ व कमालात से वाक़िफ़ भी हैं .क़ुरआन पाक का एजाज़ भी उनकी निगाहों के सामने है और आप उनसे हिदायत व इरशाद का कोई अज्र व एवज़ भी तलब नहीं फ़रमाते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या उज़्र रहा। (फ़ा121) तो उन पर लाज़िम है कि आपकी दावत क़बूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों

(बक़िया सफ़्हा 566 का) क़सम देता हूं और क़राबत की आप अल्लाह से दुआ़ कीजिये कि हम से इस क़हत को दूर फ़रमाये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ की और उन्होंने इस बला से रिहाई पाई इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयतें नाज़िल हुईं। (फ़ा125) क़हत साली के या क़त्ल के (फ़ा126) बल्कि अपने तमर्रुद व सरकशी पर हैं। (फ़ा127) उस अ़ज़ाब से या क़हत साली मुराद है जैसा कि रिवायते मज़कूरा शाने नुज़ूल का मुक़तज़ा है या रोज़े बद्र का क़त्ल यह इस क़ौल की बिना पर है कि वाक़िअ़ए क़हत वाक़िअ़ए बद्र से पहले हो और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उस सख़्त अ़ज़ाब से मौत मुराद है बाज़ ने कहा कि क़ियामत (फ़ा128) ताकि सुनो और देखो और समझो और दीनी और दुनियवी मुनाफ़ा हासिल करो (फ़ा129) कि तुमने उन निअ़्मतों की क़द्र न जानी और उनसे फ़ाइदा न उठाया और कानों आंखों और दिलों से आयाते इलाहिया के सुनने देखने समझने और मअ़रेफ़ते इलाही हासिल करने और मुनइमे हक़ीक़ी का हक़ पहचान कर शुक्रगुज़ार बनने का नफ़ा न उठाया (फ़ा130) रोज़े क़ियामत (फ़ा131) उनमें से हर एक का दूसरे के बाद आना और तारीकी व रौशनी और ज़्यादती व कमी में हर एक का दूसरे से मुख़्तलिफ़ होना यह सब उसकी क़ुदरत के निशान हैं (फ़ा132) कि उनसे इबरत हासिल करो और उनमें ख़ुदा की क़ुदरत का मुशाहदा करके मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को तस्लीम करो और ईमान लाओ (फ़ा133) यानी उनसे पहले काफ़िर। (फ़ा134) जिनकी कुछ भी हक़ीक़त नहीं कुफ़्फ़ार के इस मकूला का रद्द फ़रमाने और उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाने के लिए अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमाया (फ़ा135) उसके ख़ालिक़ व मालिक को तो बताओ। (फ़ा136) क्योंकि बजुज़ उसके कोई जवाब ही नहीं और मुशरिकीन अल्लाह तआ़ला की ख़ालक़ियत के मुक़िर भी हैं जब वह यह जवाब दें (फ़ा137) कि जिसने ज़मीन को और उसकी कायनात को इब्तेदाअन पैदा किया वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

(बक़िया सफ़्हा 567 का) (फ़ा144) वह उससे मुनज़्ज़ा है क्योंकि नौअ़ और जिन्स से पाक है और औलाद वही हो सकती है जो हम जिन्स हो (फ़ा145) जो उलूहियत में शरीक हो (फ़ा146) और उसको दूसरे के तहते तसर्रुफ़ न छोड़ता (फ़ा147) और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्योंकि मुतक़ाबिल हुकूमतें उसी की मुक़तज़ी हैं इससे मालूम हुआ कि दो ख़ुदा होना बातिल है ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसी के तहते तसर्रुफ़ है (फ़ा148) कि उसके लिए शरीक और औलाद ठहराते हैं। (फ़ा149) वह अ़ज़ाब (फ़ा150) और उनका क़रीन और साथी न बनाना यह दुआ़ बतरीक़े तवाज़ोअ़ व इज़्हारे अ़ब्दीयत है बावजूदेकि मालूम है कि अल्लाह तआ़ला आपको उनका क़रीन व साथी न करेगा इसी तरह अम्बिया मअ़सूमीन इस्तिग़फ़ार किया करते हैं बावजूदेकि उन्हें अपनी मग़फ़िरत और इकरामे ख़ुदावन्दी का इल्म यक़ीनी होता है यह सब ब-तरीक़े तवाज़ोअ़. व इज़्हारे बन्दगी है (फ़ा151) यह जवाब है उन कुफ़्फ़ार का जो अ़ज़ाबे मौऊ़द का इन्कार करते और उसकी हंसी उड़ाते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआ़ला उस वादा के पूरा करने पर क़ादिर है फिर वजहे इन्कार और सबबे इस्तेहज़ा क्या और अ़ज़ाब में जो ताख़ीर हो रही है उसमें अल्लाह की हिकमतें हैं कि उन में से जो ईमान लाने वाले हैं वह ईमान ले आयें और जिन की नस्लें ईमान लाने वाली हैं उन से वह नस्लें पैदा हो लें (फ़ा152) इस जुमलए जमीला के माना बहुत वसीअ़ हैं इसके यह माना भी हैं कि तौहीद जो आला बेहतरी है उससे शिर्क की बुराई को दफ़ा फ़रमाये और यह भी कि ताअ़त व तक़्वा को रिवाज देकर मअ़सियत और गुनाह की बुराई दफ़ा कीजिये और यह भी कि अपने मकारिमे अख़्लाक़ से ख़ताकारों पर इस तरह अ़फ़्व

व रहमत फ़रमाए जिससे दीन में कोई सुस्ती न हो। (फ़ा153) अल्लाह और उसके रसूल की शान में तो हम उसका बदला देंगे। (फ़ा154) जिन से वह लोगों को फ़रेब देकर मआसी और गुनाहों में मुब्तला करते हैं। (फ़ा155) यानी काफ़िर वक़्ते मौत तक तो अपने कुफ़्र व सरकशी और ख़ुदा और रसूल की तकज़ीब और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर मुसिर रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उसको जहन्नम में उसका जो मक़ाम है दिखाया जाता है और जन्नत का वह मक़ाम भी दिखाया जाता है कि अगर वह ईमान लाता तो यह मक़ाम उसे दिया जाता (फ़ा156) दुनिया की तरफ़ (फ़ा157) और आमाले नेक बजा लाकर अपनी तक़सीरात का तदारुक करूं इस पर उसको फ़रमाया जाएगा। (फ़ा158) हसरत व नदामत से यह होने वाली नहीं और इसका कुछ फ़ाइदा नहीं जो (फ़ा159) उन्हें दुनिया की तरफ़ वापस होने से मानेअ़ है और वह मौत है (ख़ाज़िन) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि बरज़ख़ वक़्ते मौत से वक़्ते बअ़्स तक की मुद्दत को कहते हैं। (फ़ा160) पहली मर्तबा जिसको नफ़ख़ए ऊला कहते हैं जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है।

(बक़िया सफ़हा 568 का) बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं। (115) (फ़ा176) तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह कोई मअ़बूद नहीं सिवा उसके इज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक।(116) और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिसकी उसके पास कोई सनद नहीं (फ़ा177) तो उसका हिसाब उसके रब के यहां है बेशक काफ़िरों का छुटकारा नहीं। (117) और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे (फ़ा178) और रहम फ़रमा और तू सबसे बरतर रहम करने वाला।(118) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा161) जिन पर दुनियामें फ़ख़्र किया करते थे और आपस के नसबी तअ़ल्लुक़ात मुन्क़तअ़ हो जायेंगे और क़राबत की मुहब्बतें बाक़ी न रहेंगी और यह हाल होगा कि आदमी अपने भाई और मां और बाप और बीबी और बेटों से भागेगा (फ़ा162) जैसे कि दुनिया में पूछते थे क्योंकि हर एक अपने ही हाल में मुब्तला होगा फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और बाद हिसाब लोग एक दूसरे का हाल दरयाफ़्त करेंगे (फ़ा163) आमाले सालेहा और नेकियों से (फ़ा164) नेकियां न होने के बाइस और वह कुफ़्फ़ार हैं। (फ़ा165) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि आग उनको भून डालेगी और ऊपर का होंट सिकुड़ कर निस्फ़ सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा दांत खुले रह जायेंगे (ख़ुदा की पनाह) और उनसे फ़रमाया जाएगा (फ़ा166) दुनिया में (फ़ा167) तिर्मिज़ी की हदीस में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे उसके बाद वह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे फिर वह परवरदिगार को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ रब हमारे हमें दोज़ख़ से निकाल और यह पुकार उनकी दुनिया से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी, उसके बाद उन्हें यह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है (ख़ाज़िन) और दुनिया की उम्र कितनी है इसमें कई क़ौल हैं बाज़ ने कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस है बाज़ ने कहा बारह हज़ार बरस बाज़ ने कहा तीन लाख साठ बरस वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम (तज़किरा क़ुर्तबी) (फ़ा168) अब उनकी उम्मीदें मुन्क़तअ़ हो जायेंगी और यह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा फिर उसके बाद उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते भोंकते रहेंगे। (फ़ा169) **शाने नुज़ूलः** यह आयतें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुईं जो हज़रत बिलाल व हज़रत अ़म्मार व हज़रत सुहैब व हज़रत ख़ब्बाब वग़ैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़ुक़रा असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तमस्ख़ुर करते थे। (फ़ा170) यानी उनके साथ तमस्ख़ुर करने में इतने मश्गू़ल हुए कि। (फ़ा171) अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से (फ़ा172) यानी दुनिया में और क़ब्र में (फ़ा173) यह जवाब इस वजह से देंगे कि उस दिन की दहशत और अ़ज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुनिया में रहने की मुद्दत याद न रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा इसी लिये कहेंगे (फ़ा174) यानी उन मलाइका से जिनको तूने बन्दों की उम्रें और उनके आमाल लिखने पर मामूर किया उस पर अल्लाह तआ़ला ने (फ़ा175) ब-निस्बत आख़िरत के। (फ़ा176) और आख़िरत में जज़ा के लिए उठना नहीं बल्कि तुम्हें इबादत के लिए पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी तरफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा दें (फ़ा177) यानी ग़ैरुल्लाह की परस्तिश महज़ बातिल बे सनद है (फ़ा178) ईमान वालों को।

(बक़िया सफ़हा 569 का) उसके सौ कोड़े लगाओ यह हदे हुर ग़ैर मुहसिन की है क्योंकि हुर मुहसिन का हुक्म यह है कि उसको रजम किया जाये जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद है कि माइज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बहुक्मे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रजम किया गया और मुहसिन वह आज़ाद मुसलमान है जो मुकल्लफ़ हो और निकाहे सहीह के साथ सुहबत कर चुका हो ख़्वाह एक ही मर्तबा ऐसे शख़्स से ज़िना साबित हो तो रजम किया जायेगा और अगर इन में से एक बात भी न हो मसलन हुर न हो या मुसलमान न हो या आक़िल बालिग़ न हो या उसने कभी अपनी बीबी के साथ सुहबत न की हो या जिसके साथ की हो उसके साथ निकाह फ़ासिद हुआ हो तो यह सब ग़ैर मुहसिन में दाख़िल हैं और उन सब का हुक्म कोड़े मारना है मसाइल मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाये और उसके तमाम कपड़े उतार दिये जायें सिवा तहबन्द के और उसके तमाम बदन पर कोड़े लगाये जायें सिवाये सर चेहरे और शर्मगाह के कोड़े इस तरह लगाये जायें कि अलम गोश्त तक न पहुंचे और कोड़ा मुतवस्सित दर्जा का हो और औरत को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा न किया जाये न उसके कपड़े उतारे जायें अलबत्ता अगर पोस्तीन या रूईदार कपड़े पहने हुए हो तो उतार दिये जायें यह हुक्म हुर और हुर्रा का है यानी आज़ाद मर्द और औरत का और बांदी ग़ुलाम की हद इससे निस्फ़ यानी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरह निसा में मज़कूर हो चुका सुबूते ज़िना

या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार मर्तबा इक़रार कर लेने से फिर भी इमाम बार बार सवाल करेगा और दरयाफ़्त करेगा कि ज़िना से क्या मुराद है कहां किया किस से किया कब किया अगर इन सब को बयान कर दिया तो ज़िना साबित होगा वरना नहीं और गवाहों को सराहतन अपना मुआइना बयान करना होगा बग़ैर इसके सुबूत न होगा लवातत ज़िना में दाख़िल नहीं लिहाज़ा इस फ़ेअ़्ल से हद वाजिब नहीं होती लेकिन तअ़्ज़ीर वाजिब होती है और इस तअ़्ज़ीर में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के चन्द क़ौल मरवी हैं आग में जला देना ग़र्क़ कर देना बुलन्दी से गिराना और ऊपर से पत्थर बरसाना फ़ाअ़ेल व मफ़ऊल दोनों का एक ही हुक्म है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा4) यानी हुदूद के पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत और मुतसल्लिब रहो (फ़ा5) ताकि इबरत हासिल हो (फ़ा6) क्योंकि ख़बीस का मैलान ख़बीस ही की तरफ़ होता है नेकों को ख़बीसों की तरफ़ रग़बत नहीं होती **शाने नुज़ूलः** मुहाजरीन में बाज़े बिल्कुल नादार थे न उनके पास कुछ माल था न उनको कोई अ़ज़ीज़ क़रीब था और बदकार मुशरिका औरतें दौलतमन्द और मालदार थीं यह देख कर किसी मुहाजिर को ख़्याल आया कि अगर उनसे निकाह कर लिया जाये तो उनकी दौलत काम में आयेगी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उन्होंने उसकी इजाज़त चाही इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इससे रोक दिया गया (फ़ा7) यानी बदकारों से निकाह करना (फ़ा8) इब्तेदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह करना हराम था बाद में आयत *वन्किहुल् अ-यामा मिन्कुम्* से मन्सूख़ हो गया (फ़ा9) इस आयत से चन्द मसाइल साबित हुए मसला जो शख़्स किसी पारसा मर्द या औरत को ज़िना की तोहमत लगाये और उस पर चार मुआइना के गवाह पेश न कर सके तो उस पर हद वाजिब हो जाती है अस्सी कोड़े आयत में मुहसनात का लफ़्ज़ ख़ुसूसी वाक़िआ के सबब से वारिद हुआ या इस लिए कि औरतों को तोहमत लगाना कसीरुलवक़ूअ़ है **मसलाः** और ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर हद जारी हो चुकी हो मरदूदुश्शहादत हो जाते हैं कभी उनकी गवाही मक़बूल नहीं होती पारसा से मुराद वह हैं जो मुसलमान मुकल्लफ़ आज़ाद और ज़िना से पाक हों मसला ज़िना की शहादत का निसाब चार गवाह हैं **मसलाः** हद्दे क़ज़फ़ मुतालबा पर मशरूत है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वह मुतालबा न करे तो क़ाज़ी पर हद क़ायम करना लाज़िम नहीं मसला मुतालबा का हक़ उसी को है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वह ज़िन्दा हो और अगर मर गया हो तो उसके बेटे पोते को भी है **मसलाः** ग़ुलाम अपने मौला पर और बेटा बाप पर क़ज़फ़ यानी अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाने का दावा नहीं कर सकता **मसलाः** क़ज़फ़ के अलफ़ाज़ यह हैं कि वह सराहतन किसी को या ज़ानी कहे या यह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उसके बाप का नाम लेकर कहे कि तू फ़लां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे और हो उसकी मां पारसा तो ऐसा शख़्स क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत की हद आएगी **मसलाः** अगर ग़ैर मुहसन को ज़ेना की तोहमत लगाई मसलन किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख़्स को जिसका कभी ज़ेना करना साबित हो तो उस पर हद्दे क़ज़फ़ क़ायम न होगी बल्कि उस पर तअ़्ज़ीर वाजिब होगी और यह तअ़्ज़ीर तीन से उन्तालीस तक हस्बे तजवीज़ हाकिमे शरअ़ को कोड़े लगाना है इसी तरह अगर किसी शख़्स ने ज़ेना के सिवा और किसी फ़ुजूर की तोहमत लगाई और पारसा मुसलमान को ऐ फ़ासिक़ ऐ काफ़िर ऐ ख़बीस ऐ चोर ऐ बदकार ऐ मुख़न्नस ऐ बद दियानत ऐ लूती ऐ ज़िन्दीक़ ऐ दय्यूस ऐ शराबी ऐ सूद ख़ार ऐ बदकार औरत के बच्चे ऐ हराम ज़ादे इस क़िस्म के अलफ़ाज़ कहे तो भी उस पर तअ़्ज़ीर वाजिब होगी **मसलाः** इमाम यानी हाकिमे शरअ़ को और उस शख़्स को जिसे तोहमत लगाई गई हो सुबूत से क़बल माफ़ करने का हक़ है **मसलाः** अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि ग़ुलाम हो तो उसके चालीस कोड़े लगाये जायेंगे **मसलाः** तोहमत लगाने के जुर्म में जिसको हद लगाई गई हो उसकी गवाही किसी मुआमला में मोअ़तबर नहीं चाहे वह तौबा करे लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबा करने और आदिल होने की सूरत में उसका क़ौल क़बूल कर लिया जाएगा क्योंकि यह दर हक़ीक़त शहादत नहीं है इसी लिए इसमें लफ़्ज़े शहादत और निसाबे शहादत भी शर्त नहीं। (फ़ा10) अपने अहवाल व अफ़आ़ल को दुरुस्त करलें (फ़ा11) ज़िना का (फ़ा12) औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में

(बक़िया सफ़हा 570 का) पर ज़िना की हद लगाई जाएगी और अगर लेआ़न करना चाहे तो उसको चार मर्तबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं मर्तबा यह कहना होगा अगर मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो इतना कहने के बाद औरत से ज़िना की हद साक़ित हो जाएगी और लेआ़न के बाद क़ाज़ी के तफ़रीक़ करने से फ़ुरक़त वाक़ेअ़ होगी बग़ैर इसके नहीं और यह तफ़रीक़ तलाक़े बाइना होगी और अगर मर्द अहले शहादत में से न हो मसलन ग़ुलाम हो या काफ़िर हो या उस पर क़ज़फ़ की हद लग चुकी हो तो लेआ़न न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी और अगर मर्द अहले शहादत में से हो और औरत में यह अहलियत न हो इस तरह कि वह बांदी हो या काफ़िरा हो या उस पर क़ज़फ़ की हद लग चुकी हो या बच्ची हो या मजनूना हो या ज़ानिया हो इस सूरत में न मर्द पर हद होगी और न लेआ़न **शाने नुज़ूलः** यह आयत एक सहाबी के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औरत को ज़िना में मुब्तला देखे तो क्या करे न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुरसत है और न बग़ैर गवाही के वह यह बात कह सकता है क्योंकि उसे हद्दे क़ज़फ़ का अन्देशा है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और लेआ़न का हुक्म दिया गया। (फ़ा15) बड़े बोहतान से मुराद हज़रत उम्मुलमोमिनिन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर तोहमत लगाना है सन् 5 हिजरी में ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ज़रूरत के लिए किसी गोशा में तशरीफ़ ले गईं वहां हार आपका टूट गया उसकी तलाश में मसरूफ़ हो गईं उधर क़ाफ़िला ने

कूच किया और आप का महमिल शरीफ़ ऊँट पर कस दिया और उन्हें यही ख़्याल रहा कि उम्मुलमोमिनीन इसमें हैं क़ाफ़िला चल दिया आप आकर क़ाफ़िला की जगह बैठ गईं और आपने ख़्याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा क़ाफ़िला के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे इस मौक़ा पर हज़रत सफ़वान इस काम पर थे जब वह आये और उन्होंने आपको देखा तो बुलन्द आवाज़ से *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पुकारा आपने कपड़े से पर्दा कर लिया उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुंचीं मुनाफ़िक़ीन सियाह बातिन ने औहामे फ़ासिदा फैलाए और आपकी शान में बदगोई शुरू की बाज़ मुसलमान भी उनके फ़रेब में आगए और उनकी ज़बान से भी कोई कलिमए बेजा सरज़द हुआ उम्मुलमोमिनीन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं उस ज़माना में उन्हें इत्तलाअ़ न हुई कि उनकी निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं एक रोज़ उम्मे मिस्तह से उन्हें यह ख़बर मालूम हुई और उससे आपका मर्ज़ और बढ़ गया और इस सदमा में इस तरह रोईं कि आपका आंसू न थमता था और न एक लम्हा के लिए नींद आती थी इस हाल में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर वही नाज़िल हुई और हज़रत उम्मुलमोमिनीन की तहारत में यह आयतें उतरीं और आपका शरफ़ व मर्तबा अल्लाह तआ़ला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआने करीम की बहुत सी आयात में आपकी तहारत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई इस दौरान में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बर सरे मिम्बर बक़सम फ़रमा दिया था मुझे अपने अह्ल की पाकी व ख़ूबी बिलयक़ीन मालूम है तो जिस शख़्स ने उनके हक़ में बदगोई की है उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअ़ज़रत पेश कर सकता है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन बिलयक़ीन झूठे हैं उम्मुलमोमिनीन बिलयक़ीन पाक हैं अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जिस्मे पाक को मक्खी के बैठने से महफ़ूज़ रखा कि वह नजासतों पर बैठती है कैसे हो सकता है कि वह आपको बद औरत की सोहबत से महफ़ूज़ न रखे हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी इस तरह आपकी तहारत बयान की और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आपका साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि उस साया पर किसी का क़दम न पड़े तो जो परवरदिगार आपके साया को महफ़ूज़ रखता है किस तरह मुमकिन है कि वह आपके अहल को महफ़ूज़ न फ़रमाए हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि एक जूँ का ख़ून लगने से परवरदिगारे आ़लम ने आपको नअ़लैन उतार देने का हुक्म दिया जो परवरदिगार आपकी नअ़लैन शरीफ़ की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फ़रमाए मुमकिन नहीं कि वह आपके अहल की आलूदगी गवारा करे इस तरह बहुत से सहाबा और बहुत से सहाबियात ने क़समें खाईं आयत नाज़िल होने से क़बल ही हज़रत उम्मुलमोमिनीन की तरफ़ से क़ुलूब मुतमइन थे आयत के नुज़ूल ने उनका इज़्ज़ो शरफ़ और ज़्यादा कर दिया तो बद गोयों की बदगोई अल्लाह और उसके रसूल और सहाबए केबार के नज़दीक बातिल है और बद गोई करने वालों के लिए सख़्त तरी मुसीबत है (फ़ा16) कि अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें इस पर जज़ा देगा और हज़रत उम्मुलमोमिनीन की शान और उनकी बराअत ज़ाहिर फ़रमाएगा चुनान्चे इस बराअत में उसने अठारह आयतें नाज़िल फ़रमाईं (फ़ा17) यानी बक़द्र उसके अ़मल के कि किसी ने तूफ़ान उठाया किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़ाबनी मुवाफ़क़त की कोई हंस दिया किसी ने ख़ामोशी के साथ सुन ही लिया जिसने जो किया उसका बदला पाएगा। (फ़ा18) कि अपने दिल से यह तूफ़ान गढ़ा और उसको मशहूर करता फिरा और वह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन उबय सलूल मुनाफ़िक़ है। (फ़ा19) आख़िरत में मरवी है कि उन बोहतान लगाने वालों पर बहुक्मे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हद क़ाइम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए (फ़ा20) क्योंकि मुसलमान को यही हुक्म है कि मुसलमान के साथ नेक गुमान करने और बदगुमानी ममनूअ़ है बाज़े गुमराह बेबाक यह कह गुज़रते हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मआ़ज़ल्लाह इस मुआ़मला में बदगुमानी हो गई थी वह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मोमिनीन के हक़ में भी लायक़ नहीं है अल्लाह तआ़ला मोमिनीन से फ़रमाता है कि तुमने नेक गुमान क्यों न किया तो कैसे मुमकिन था कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बदगुमानी करते और हुज़ूर की निस्बत बदगुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बातिनी है ख़ासकर ऐसी हालत में जबकि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर ने बक़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि मेरे अहल पाक हैं जैसा कि ऊपर मज़कूर हो चुका मसला इससे मालूम हुआ कि मुसलमान पर बदगुमानी करना नाजाइज़ है और जब किसी नेक शख़्स पर तोहमत लगाई जाये तो बग़ैर सुबूत मुसलमान को उसकी मुवाफ़क़त और तस्दीक़ करना रवा नहीं (फ़ा21) बिल्कुल झूठ है बे हक़ीक़त है (फ़ा22) और तुम पर फ़ज़्लो करम मन्ज़ूर न होता जिसमें से तौबा के लिए मोहलते दुनिया भी है और आख़िरत में अफ़्व व मग़फ़िरत फ़रमाना भी (फ़ा23) और ख़्याल करते थे कि इसमें बड़ा गुनाह नहीं (फ़ा24) जुर्मे अज़ीम है

(बक़िया सफ़हा 571 का) (फ़ा34) और मन्ज़िलत वाले हैं दीन में (फ़ा35) सरवत व माल में शाने नुज़ूल यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई आपने क़सम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वह आपकी ख़ाला के बेटे थे नादार थे मुहाजिर थे बदरी थे आप ही उनका ख़र्च उठाते थे मगर चूंकि उम्मुलमोमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ उन्होंने मुवाफ़क़त की थी इस लिए आपने यह क़सम खाई इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा36) जब यह आयत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पढ़ी तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा बेशक मेरी आरज़ू है कि अल्लाह मेरी मग़फ़िरत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उसको कभी मौक़ूफ़ न करूंगा चुनांचे आपने उस को जारी फ़रमा दिया मसला इस आयत से मालूम हुआ कि जो शख़्स किसी काम पर क़सम खाये फिर मालूम हो कि उसका करना ही बेहतर है तो चाहिए कि उस काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे हदीस सहीह में यही वारिद है मसला इस आयत से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की फ़ज़ीलत साबित हुई इससे आपकी उलूए शान व मर्तबत ज़ाहिर होती है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऊलुलफ़ज़्ल फ़रमाया और।

(बक़िया सफ़हा 572 का) किसी गुनाह पर ऐसी तग़लीज़ व तश्दीद और तकरार व ताकीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई इससे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिफ़अ़ते मन्ज़िलत ज़ाहिर होती है (फ़ा44) यानी ख़बीस के लिए ख़बीस लाइक़ है ख़बीसा औरत ख़बीस मर्द के लिए और ख़बीस मर्द ख़बीसा औरत के लिए और ख़बीस आदमी ख़बीस बातों के दरपै होता है और ख़बीस बातें ख़बीस आदमी का वतीरा होती हैं (फ़ा45) यानी पाक मर्द और औरतें जिन में से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और सफ़वान हैं (फ़ा46) तोहमत लगाने वाले ख़बीस। (फ़ा47) यानी सुथरों और सुथरियों के लिए जन्नत में इस आयत से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का कमाले फ़ज़्ल व शरफ़ साबित हुआ कि वह तय्येबा और पाक पैदा की गईं और क़ुरआने करीम में उनकी पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मग़फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वादा दिया गया हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अल्लाह तआ़ला ने बहुत ख़साइस अ़ता फ़रमाए जो आपके लिए क़ाबिले फ़ख़्र हैं उन में से बाज़ यह हैं कि जिबरीले अमीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में एक हरीर पर आपकी तस्वीर लाए और अर्ज़ किया कि यह आपकी ज़ौजा हैं और यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आपके सिवा किसी कुंवारी (बाकरा) से निकाह न फ़रमाया और यह कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात आपकी गोद में और आपकी नौबत के दिन हुई और आप ही का हुजरए शरीफ़ा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आरामगाह और आपका रौज़ए ताहिरा हुआ और यह कि बाज़ औक़ात ऐसी हालत में हु.जूर पर वही नाज़िल हुई कि हज़रत सिद्दीक़ा आपके साथ आपके लिहाफ़ में होतीं और यह कि आप हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुख़्तर हैं और यह कि आप पाक पैदा की गईं और आप से मग़फ़िरत व रिज़्क़े करीम का वादा फ़रमाया गया (फ़ा48) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का तरीक़ा भी यही है कि बुलन्द आवाज़ से सुबहानल्लाह या अल्हम्दु लिल्लाह या अल्लाहु अक्बर कहे या खकारे जिससे मकान वालों को मालूम हो कि कोई आना चाहता है या यह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ग़ैर के घर से वह घर मुराद है जिसमें ग़ैर सुकूनत रखता हो ख़्वाह उसका मालिक हो या न हो। (फ़ा49) **मसलाः** ग़ैर के घर जाने वाले की अगर साहबे मकान से पहले ही मुलाक़ात हो जाये तो अव्वल सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वह मकान के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त चाहे इस तरह कि कहे अस्सलामु अलैकुम क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है हदीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर मुक़द्दम करो हज़रत अब्दुल्लाह की क़िरअ़त भी इसी पर दलालत करती है उनकी क़िरअ़त यूं है हत्ता तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा व तस्ताज़िनू और यह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे (मदारिक कशाफ़ अहमदी) **मसलाः** अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दायें या बायें जानिब खड़े होकर इजाज़त तलब करे मसला हदीस शरीफ़ में है अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त तलब करे (मौअत्ता इमाम मालिक)। (फ़ा50) यानी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो (फ़ा51) क्योंकि मिल्के ग़ैर में तसर्रुफ़ करने के लिए उसकी रज़ा ज़रूरी है (फ़ा52) और इजाज़त तलब करने में इसरार व इलहाह न करो **मसलाः** किसी का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और शदीद आवाज़ से चीख़ना ख़ास कर उलमा और बुज़ुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना उनको ज़ोर से पुकारना मकरूह व ख़िलाफ़े अदब है (फ़ा53) मिस्ल सराय और मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरह के कि उसमें जाने के लिए इजाज़त हासिल करने की हाजत नहीं **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन असहाब के जवाब में नाज़िल हुई जिन्होंने आयत इस्तीज़ान यानी ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बाद दरयाफ़्त किया था कि मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्येबा के दर्मियान और शाम की राह में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उनमें दाख़िल होने के लिए भी इजाज़त लेना ज़रूरी है

(बक़िया सफ़हा 573 का) का एहतेमाम रखें (फ़ा56) और ग़ैर मर्दों को न देखें हदीस शरीफ़ में है कि अज़वाजे मुतह्हरात में से बाज़ उम्महातुल मोमिनीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में थीं उसी वक़्त इब्ने उम्मे मकतूम आये हुज़ूर ने अज़्वाज को पर्दा का हुक्म फ़रमाया उन्होंने अ़र्ज़ किया कि वह तो नाबीना हैं फ़रमाया तुम तो नाबीना नहीं हो (तिर्मिज़ी व अबू दाऊद) इस हदीस से मालूम हुआ कि औरतों को भी नामहरम को देखना और उसके सामने होना जाइज़ नहीं। (फ़ा57) अज़्हर यह है कि यह हुक्म नमाज़ का है न नज़र का क्योंकि हुर्रा का तमाम बदन औरत है शौहर और महरम के सिवा और किसी के लिए उसके किसी हिस्सा का देखना बे ज़रूरत जाइज़ नहीं और मुआ़लेजा वग़ैरह की ज़रूरत से क़द्रे ज़रूरत जायज़ है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा58) और उन्हीं के हुक्म हैं दादा परदादा वग़ैरह तमाम उसूल। (फ़ा59) कि वह भी महरम हो जाते हैं (फ़ा60) और उन्हीं के हुक्म में है उनकी औलाद (फ़ा61) कि वह भी महरम हो गए (फ़ा62) और उन्हीं के हुक्म में हैं चचा मामूं वग़ैरह तमाम महारिम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अबू उबैदा बिन जर्राह को लिखा था कि कुफ़्फ़ार अहले किताब की औरतों को मुसलमान औरतों के साथ हम्माम में दाख़िल होने से मना करें इससे मालूम हुआ कि मुस्लिमा औरत को काफ़िरा औरत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं **मसलाः** औरत अपने ग़ुलाम से भी मिस्ल अजनबी के पर्दा करे (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा63) उन पर अपना सिंगार ज़ाहिर करना ममनूअ़ नहीं और ग़ुलाम उनके हुक्म में नहीं उसको अपनी मालिका के मवाज़ेअ़ ज़ीनत को देखना जायज़ नहीं। (फ़ा64) मसलन ऐसे बूढ़े हों जिन्हें असलन शह्वत बाक़ी नहीं रही हो और हों सालेह मसला अइम्मए हनफ़िया के नज़दीक ख़स्सी और इन्नीन हुरमते नज़र में अजनबी का हुक्म रखते हैं मसला इस तरह क़बीहुल अफ़आ़ल मुख़न्नस से भी पर्दा किया जाये जैसा कि हदीसे मुस्लिम से साबित है। (फ़ा65) वह अभी नादान नाबालिग़ हैं (फ़ा66) यानी औरतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाँव इस क़दर आहिस्ता रखें कि उनके ज़ेवर की झंकार न सुनी जाये मसला

इसी लिए चाहिए कि औरतें बाजेदार झांझन न पहनें हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला उस क़ौम की दुआ नहीं क़बूल फ़रमाता जिनकी औरतें झांझन पहनती हों इससे समझना चाहिए कि जब ज़ेवर की आवाज़ अदमे क़बूले दुआ का सबब है तो ख़ास औरत की आवाज़ और उसकी बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी पर्दे की तरफ़ से बेपरवाई तबाही का सबब है (अल्लाह की पनाह) तफ़सीर अहमदी वग़ैरह (फ़ा67) ख़्वाह मर्द या औरत कुंवारे या ग़ैर कुंवारे (फ़ा68) इस ग़िना से मुराद या क़नाअ़त है कि वह बेहतरीन ग़िना है जो क़ानेअ़ को तरद्दुद से बेनियाज़ कर देता है या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिए काफ़ी हो जाये जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ है या ज़ौज व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जमा हो जाना या फ़राख़ी ब-बरकते निकाह जैसा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है। (फ़ा69) हराम कारी से

(बक़िया सफ़हा 574 का) बाक़ी उसने अदा कर दिये (फ़ा73) भलाई से मुराद अमानत व दियानत और कमाई पर क़ुदरत रखना है कि वह हलाल रोज़ी से माल हासिल करके आज़ाद हो सके और मौला को माल देकर आज़ादी हासिल करने के लिए भीख न मांगता फिरे इसी लिए हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने ग़ुलाम को मुकातब करने से इन्कार फ़रमा दिया जो सिवाए भीख के कोई ज़रीआ कस्ब का न रखता था (फ़ा74) मुसलमानों को इरशाद है कि वह मुकातब ग़ुलामों को ज़कात वग़ैरह देकर मदद करें जिससे वह बदल किताबत देकर अपनी गर्दन छुड़ा सकें और आज़ाद हो सकें (फ़ा75) यानी तमअ़े माल में अन्धे होकर कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करें **शाने नुज़ूल:** यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो माल हासिल करने के लिए अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर करता था उन कनीज़ों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उसकी शिकायत की इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा76) और वबाले गुनाह मजबूर करने वालों पर (फ़ा77) जिन्होंने हलाल व हराम हुदूद व अहकाम सब को वाज़ेह कर दिया। (फ़ा78) नूर अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया माना यह हैं कि अल्लाह आसमान व ज़मीन का हादी है तो अहले समावात व अर्ज़ उसके नूर से हक़ की राह पाते हैं और उसकी हिदायत से गुमराही की हैरत से नजात हासिल करते हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला आसमान व ज़मीन का मुनव्वर फ़रमाने वाला है उसने आसमानों को मलाइका से और ज़मीन को अम्बिया से मुनव्वर किया (फ़ा79) अल्लाह के नूर से या तो क़ल्बे मोमिन की वह नूरानियत मुराद है जिससे वह हिदायत पाता और राहयाब होता है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह के इस नूर की मिसाल जो उसने मोमिन को अ़ता फ़रमाया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़सीर यह है कि इस नूर से मुराद सय्यदे कायनात अफ़ज़ले मौजूदात हज़रत रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं (फ़ा80) यह दरख़्त निहायत कसीरुलबरकत है क्योंकि उसका रौग़न जिस को ज़ेत कहते हैं निहायत साफ़ व पाकीज़ा रौशनी देता है सर में भी लगाया जाता है सालन और नान ख़ूरश की जगह रोटी से भी खाया जाता है दुनिया के और किसी तेल में यह वस्फ़ नहीं और दरख़्त ज़ैतून के पत्ते नहीं गिरते (ख़ाज़िन) (फ़ा81) बल्कि वस्त का है कि न उसे गर्मी से ज़रर पहुंचे न सर्दी से और वह निहायत अजवद व आला है और उसके फल ग़ायते एतेदाल में (फ़ा82) अपनी सफ़ा व लताफ़त के बाइस ख़ुद (फ़ा83) इस तम्सील के माना में अहले इल्म के कई क़ौल हैं एक यह कि नूर से मुराद हिदायत है और माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला की हिदायत ग़ायते ज़हूर में है कि आ़लमे महसूसात में उसकी तश्बीह ऐसे रौशनदान से हो सकती है जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़ानूस हो उस फ़ानूस में ऐसा चराग़ हो जो निहायत ही बेहतर और मुसफ़्फ़ा ज़ैतून से रौशन हो कि उसकी रौशनी निहायत आला और साफ़ हो और एक क़ौल यह है कि यह तम्सील नूरे सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने कअ़्ब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के माना बयान करो उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मिसाल बयान फ़रमाई रौशनदान (ताक़) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस क़ल्बे मुबारक और चराग़े नबुव्वत कि शजरे नबुव्वत से रौशन है और उस नूरे मुहम्मदी की रौशनी व अज़ाइत इस मर्तबए कमाल ज़हूर पर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमायें जब भी ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाये और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि रौशनदान तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सीनए मुबारक है और फ़ानूस क़ल्बे अतहर और चराग़ वह नूर जो अल्लाह तआ़ला ने उसमें रखा कि शरक़ी है न ग़रबी न यहूदी व नसरानी एक शजरए मुबारका से रौशन है वह शजर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं नूर क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी नूर पर नूर है और मुहम्मद बिन कअ़ब क़र्ज़ी ने कहा कि रौशनदान व फ़ानूस तो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं और चराग़ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और शजरए मुबारका हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कि अक्सर अम्बिया आप की नस्ल से हैं और शरक़ी व ग़रबी न होने के यह माना हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम न यहूदी थे न नसरानी क्योंकि यहूद मग़रिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और नसारा मशरिक़ की तरफ़ क़रीब है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के महासिन व कमालात नु.ज़ूले वही से क़बल ही ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जायें नूर पर नूर यह कि नबी हैं नस्ले नबी से नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर इसके इलावा और भी बहुत अक़वाल हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा84) और उनकी ताज़ीम व ततहीर लाज़िम की मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में

(बक़िया सफ़हा 575 का) सका। (फ़ा90) यानी पानी समझ कर उसकी तलाश में चला जब वहां पहुंचा तो पानी का नाम व निशान न था ऐसे ही काफ़िर अपने ख़्याल में नेकियां करता है और समझता है कि अल्लाह तआ़ला से उसका सवाब पाएगा जब अ़रसात क़ियामत में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि अ़ज़ाबे अ़ज़ीम में गिरिफ़्तार होगा और उस वक़्त उसकी हसरत और उसका अन्दोह व ग़म इस प्यास से बदर्जहा ज़्यादा होगा (फ़ा91) आमाले कुफ़्फ़ार की मिसाल ऐसी है। (फ़ा92) समुन्दरों की गहराई में (फ़ा93) एक अंधेरा दरिया की गहराई का उस पर एक और अंधेरा मौजों के तराकुम का उस पर और अंधेरा बादलों की घिरी हुई घटा का उन अंधेरियों की शिद्दत का यह आ़लम कि जो उसमें हो वह (फ़ा94) बावजूदेकि अपना हाथ निहायत ही क़रीब और अपने जिस्म का जुज़्व है जब वह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वह एतेक़ादे बातिल और क़ौले नाहक़ और अमले क़बीह की तारीकियों में गिरिफ़्तार है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दरिया के कुन्डे और उसकी गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जहल व शक व हैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मुहर को जो उन दिलों पर है तश्बीह दी गई (फ़ा95) राहयाब वही होता है जिसको वह राह दे। (फ़ा96) जो आसमान व ज़मीन के दर्मियान में हैं।

(बक़िया सफ़हा 576 का) (फ़ा109) और सीधी राह जिस पर चलने से रज़ाए इलाही व निअ़मते आख़िरत मुयस्सर हो दीने इस्लाम है आयात का ज़िक्र फ़रमाने के बाद यह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िरक़ों में मुन्क़सिम हो गए एक वह जिन्होंने ज़ाहिर में तस्दीके हक़ की और बातिन में तकज़ीब करते रहे वह मुनाफ़िक़ हैं दूसरे वह जिन्होंने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मोअ़तक़िद रहे यह मुख़लिसीन हैं तीसरे वह जिन्होंने ज़ाहिर में भी तकज़ीब की और बातिन में भी वह कुफ़्फ़ार हैं उनका ज़िक्र बित्तरतीब फ़रमाया जाता है। (फ़ा110) और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते (फ़ा111) मुनाफ़िक़ हैं क्योंकि उनके दिल उनकी ज़बानों के मुवाफ़िक़ नहीं

(बक़िया सफ़हा 577 का) की (फ़ा114) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुवत में (फ़ा115) ऐसा तो है नहीं क्योंकि यह वह ख़ूब जानते हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़ैसला हक़ से मुतजावुज़ हो ही नहीं सकता और कोई बद दियानत आपकी अ़दालत से पराया हक़ मारने में कामयाब नहीं हो सकता इसी वजह से वह आपके फ़ैसला से एअ़राज़ करते हैं। (फ़ा116) और उनको यह तरीक़े अदब लाज़िम है कि (फ़ा117) यानी मुनाफ़िक़ीन ने (मदारिक) (फ़ा118) कि झूठी क़सम गुनाह है (फ़ा119) ज़बानी इताअ़त और अ़मली मुख़ालफ़त उससे कुछ छुपा नहीं (फ़ा120) सच्चे दिल और सच्ची नीयत से (फ़ा121) रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की फ़रमांबरदारी से तो इसमें उनका कुछ ज़रर नहीं (फ़ा122) यानी दीन की तबलीग़ और अहकामे इलाही का पहुंचा देना उसको रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अच्छी तरह अदा कर दिया और वह अपने फ़र्ज़ से ओहदा बरआ हो चुके। (फ़ा123) यानी रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की इताअ़त व फ़रमांबरदारी (फ़ा124) चुनांचे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बहुत वाज़ेह तौर पर पहुंचा दिया (फ़ा125) शाने नुज़ूलः सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वही नाज़िल होने से दस साल तक मक्का मुकर्रमा में मअ़ असहाब के क़ियाम फ़रमाया और कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं पर जो शबो रोज़ होती रहती थीं सब्र किया फिर बहुक्मे इलाही मदीना तय्येबा को हिजरत फ़रमाई और अन्सार के मनाज़िल को अपनी सुकूनत से सरफ़राज़ किया मगर क़ुरैश इस पर भी बाज़ न आए रोज़मर्रा उनकी तरफ़ से जंग के एलान होते और तरह तरह की धमकियां दी जातीं असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर वक़्त ख़तरे में रहते और हथियार साथ में रखते एक रोज़ एक सहाबी ने फ़रमाया कभी ऐसा भी ज़माना आएगा कि हमें अमन मुयस्सर हो और हथियारों के बार से हम सुबुकदोश हों इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा126) और बजाए कुफ़्फ़ार के तुम्हारी फ़रमांरवाई होगी हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर शबो रोज़ गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा।

(बक़िया सफ़हा 578 का) बरस तीन माह और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त दस साल छः माह और हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त बारह साल और हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त चार साल नौ माह और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त छः माह हुई। (ख़ाज़िन) (फ़ा130) और बांदियां शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक अन्सारी ग़ुलाम मुदलुज बिन अ़म्र को दोपहर के वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बुलाने के लिए भेजा वह ग़ुलाम वैसे ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान में चला गया जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बे तकल्लुफ़ अपने दौलत सराय में तशरीफ़ रखते थे ग़ुलाम के अचानक चले आने से आपके दिल में ख़्याल हुआ कि काश ग़ुलामों को इजाज़त लेकर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा131) बल्कि अभी क़रीबे बुलूग़ हैं सिन्ने बुलूग़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक लड़के के लिए अठारह साल और लड़की के लिए सतरह साल और आम्मा उलमा के नज़दीक लड़के और लड़की दोनों के लिए पन्द्रह साल है। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा132) यानी इन तीन वक़्तों में इजाज़त हासिल करें जिन का बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है। (फ़ा133) कि वह वक़्त है ख़्वाबगाहों से उठने और शब ख़्वाबी का लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का (फ़ा134) क़ैलूला करने के लिए और तहबन्द बांध लेते हो (फ़ा135) कि वह वक़्त है बेदारी का लिबास उतारने और ख़्वाब का लिबास पहनने का (फ़ा136) कि इन औक़ात में ख़लवत व तन्हाई होती है बदन छुपाने का बहुत एहतेमाम नहीं होता मुमकिन है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाये जिसके ज़ाहिर होने से शर्म आती है लिहाज़ा इन औक़ात में ग़ुलाम और

बच्चे भी बे इजाज़त दाख़िल न हों और इनके अलावा जवान लोग तमाम औक़ात में इजाज़त हासिल करें किसी वक़्त भी बे इजाज़त दाख़िल न हों (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा137)मसलाः यानी इन तीन वक़्तों के सिवा बाक़ी औक़ात में ग़ुलाम और बच्चे बे इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्योंकि वह (फ़ा138) काम व ख़िदमत के लिए तो उन पर हर वक़्त इस्तीज़ान का लाज़िम होना सबबे हज्र होगा और शरअ़ में हज्र मदफ़ूअ़ है।(मदारिक)(फ़ा139)यानी आज़ाद (फ़ा140)तमाम औक़ात में(फ़ा141) उन से बड़े मर्दों

(बक़िया सफ़हा 579 का) है हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू और तेरा माल तेरे बाप का है इसी तरह शौहर के लिए बीवी का और बीवी के लिए शौहर का घर भी अपना ही घर है (फ़ा147) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद आदमी का वकील और उसका कार-परदाज़ है (फ़ा148) माना यह हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जाइज़ है ख़्वाह वह मौजूद हों या न हों जबकि मालूम हो कि वह उससे राज़ी हैं सल्फ़ का तो यह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उसकी ग़ैबत में पहुंचता तो उसकी बांदी से उसका कीसा तलब करता और जो चहता उसमें से ले लेता जब वह दोस्त घर आता और बाँदी उसको ख़बर देती तो उस ख़ुशी में वह बाँदी को आज़ाद कर देता मगर इस ज़माना में यह फ़ैयाज़ी कहां लिहाज़ा बे इजाज़त खाना न चाहिए। (मदारिक व जलालैन) (फ़ा149) शाने नुज़ूलः क़बीला बनी लैस बिन अ़म्र के लोग तन्हा बग़ैर मेहमान के खाना न खाते थे कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुबह से शाम तक खाना लिये बैठे रहते उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा150) मसलाः जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल को सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों बशर्तेकि उनके दीन में ख़लल न हो (ख़ाज़िन) मसला अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो जहां कोई नहीं है तो कहे अस्सलामु अ़लन्नबीय्यि व रह़्मतुल्लाहि तआ़ला व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्-सालिह़ीन अस्सलामु अ़ला अह्लिल् बैति व रह़्मतुल्लाहि तआ़ला व बरकातुहू हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे अस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (शिफ़ा शरीफ़) मुल्ला अ़ली क़ारी ने शरह़ शिफ़ा में लिखा कि ख़ाली मकान में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर सलाम अर्ज़ करने की वजह यह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़दस जलवा फ़रमा होती है

(बक़िया सफ़हा 581 का) व नसारा का रद् है जो हज़रत उज़ैर व मसीह अ़लैहिमस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते हैं मआ़ज़ल्लाह (फ़ा5) इस में बुत परस्तों का रद् है जो बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। (फ़ा6) यानी बुत परस्तों ने बुतों को ख़ुदा ठहराया जो ऐसे आ़जिज़ व बे क़ुदरत हैं। (फ़ा7) यानी नज़र बिन हारिस और उसके साथी क़ुरआने करीम की निस्बत कि (फ़ा8) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (फ़ा9) और लोगों से नज़र बिन हारिस की मुराद यहूदी थे और अ़दास व यसार वग़ैरह अहले किताब।(फ़ा10)नज़र बिन हारिस वग़ैरह मुशरिकीन जो यह बेहूदा बात कहने वाले थे।(फ़ा11)वही मुशरिकीन क़ुरआने करीम की निस्बत कि यह रुस्तम व अस्फ़न्दयार वग़ैरह के क़िस्सों की तरह। (फ़ा12) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَقَدِمْنَآ إِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّأَحْسَنُ مَقِيْلًا ۝ وَيَوْمَ
تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ۝ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۗ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۝ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ
يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ۝ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَآءَنِيْ ۗ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ
خَذُوْلًا ۝ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝

व क़ालल्लज़ी–न ला यर्जू–न लिक़ाअना लौला उन्ज़ि–ल अ़लैनल् मलाइ–कतु औ नरा रब्बना ल–क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अ़तौ अ़ुतुव्वन् कबीरा(21)यौ–म यरौनल् मलाइ–क–त ला बुश्रा यौ–मइज़िल् लिल्मुज्रिमी–न व यक़ूलू–न हिज्रम् मह्जूरा(22)व क़दिम्ना इला मा अ़मिलू मिन् अ़–मलिन् फ–ज–अ़ल्नाहु हबाअम् मन्सूरा(23)अस्हाबुल् जन्नति यौ–मइज़िन् ख़ैरुम् मुस्त –क़र्–रंव् व अह्सनु मक़ीला(24)व यौ–म त–शक़्क़क़ुस्–समाउ बिल्ग़मामि व नुज़्ज़िलल् मलाइ–कतु तन्ज़ीला(25)अल्मुल्कु यौ–मइज़िनिल् हक़्क़ु लिर्रह्मानि व का–न यौमन् अ़–लल्काफ़िरी–न अ़सीरा (26)व यौ–म य–अ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला यदैहि यक़ूलु या लै–तनित् त–ख़ज़्तु म–अ़र्रसूलि सबीला (27)या वै–लता लै–तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला(28)ल–क़द अ–ज़ल्लनी अ़निज़्ज़िक्रि बअ़्–द इज़् जा–अनी व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला(29)व क़ालर् रसूलु या रब्बि इन्–न क़ौमित् त–ख़ज़ू हाज़ल्–क़ुरआ–न मह्जूरा(30)व कज़ालि–क ज–अ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वम् मिनल् मुज्रिमी–न व कफ़ा बि–रब्बि–क हादियंव् व नसीरा(31)

और बोले वह लोग जो (फ़ा40) हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे (फ़ा41) या हम अपने रब को देखते (फ़ा42) बेशक अपने जी में बहुत ही ऊँची खींची और बड़ी सरकशी पर आए।(21) (फ़ा43) जिस दिन फ़रिश्तों को देखेंगे (फ़ा44) वह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा (फ़ा45) और कहेंगे इलाही हममें उनमें कोई आड़ कर दे रुकी हुई।(22) (फ़ा46) और जो कुछ उन्होंने काम किये थे (फ़ा47) हमने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं।(23) (फ़ा48) जन्नत वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना (फ़ा49) और हिसाब के दोपहर के बाद अच्छी आराम की जगह।(24) और जिस दिन फट जाएगा आसमान बादलों से और फ़रिश्ते उतारे जायेंगे पूरी तरह।(25) (फ़ा50) उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त है।(26) (फ़ा51) और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा (फ़ा52) कि हाय किसी तरह मैंने रसूल के साथ राह ली होती।(27) (फ़ा53) वाय ख़राबी मेरी हाय किसी तरह मैंने फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता।(28) बेशक उसेन मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से (फ़ा54) और शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है।(29) (फ़ा55) और रसूल ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया। (30) (फ़ा56) और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बना दिये थे मुजरिम लोग (फ़ा57) और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को।(31)

(फ़ा40) काफ़िर हैं हश्र व बअ़्स के मोअ़्तक़िद नहीं इसी लिए (फ़ा41) हमारे लिए रसूल बना कर या सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत व रिसालत के गवाह बनाकर (फ़ा42) वह ख़ुद हमें ख़बर दे देता कि सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके रसूल हैं (फ़ा43) और उनका तकब्बुर इन्तेहा को पहुंच गया और सरकशी हद से गुज़र गई कि मोअ़्जेज़ात का मुशाहदा करने के बाद मलायका के अपने ऊपर उतरने और अल्लाह तआ़ला को देखने का सवाल किया (फ़ा44) यानी मौत के दिन या क़ियामत के दिन (फ़ा45) रोज़े क़ियामत फ़रिश्ते मोमिनीन को बशारत सुनायेंगे और कुफ़्फ़ार से कहेंगे तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी नहीं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते कहेंगे कि मोमिन के सिवा किसी के लिए जन्नत में दाख़िल होना हलाल नहीं इस लिए वह दिन क़ुफ़्फ़ार के **(बक़िया सफ़हा 615 पर)**

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ۝ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ

وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

وَزِيْرًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا

لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ

الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَھٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ

व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू लौला नुज़्ज़ि–ल अ़लैहिल् क़ुरआनु जुम्ल–तंव् वाहि–द–तन् कज़ालि–क लिनुसब्बि–त बिही फ़ुआ–द–क व रत्तल्लाहु तर्तीला(32)व ला यअ्तू–न–क बि–म–स़लिन् इल्ला जिअ्ना–क बिल्हक़्क़ि व अह्–स–न तफ़्सीरा(33)अल्लज़ी–न युह़्शरू–न अ़ला वुजूहिहिम् इला जहन्न–म उलाइ–क शर्रुम् मकानंव् व अ–ज़ल्लु सबीला(34)व ल–क़द् आतैना मूसल् किता–ब व ज–अ़ल्ना म–अ़हू अख़ाहु हारू–न वज़ीरा(35)फ़क़ुल्नज़् हबा इलल्क़ौमिल् लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़–दम्मर्नाहुम् तदमीरा(36)व क़ौ–म नूहिल् लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु–ल अग़्–रक़्नाहुम् व ज–अ़ल्लाहुम् लिन्नासि आ–य–तन् व अअ़्तदना लिज़्ज़ालिमी–न अ़ज़ाबन् अलीमा(37)व आ़दंव् व समू–द व अस्ह़ाबर्रस्सि व क़ुरूनम् बै–न ज़ालि–क कसीरा(38)व कुल्लन् ज़–रब्ना लहुल्–अम्सा–ल व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा(39)व ल–क़द् अतौ अ़–लल् क़रयतिल् लती उम्ति–रत् म–त़– रस्सौइ अ–फ़–लम् यकूनू यरौ–नहा बल् कानू ला यर्जू–न नुशूरा(40)व इज़ा रऔ–क इंय्यत्तख़िज़ू–न–क इल्ला हुज़ुवा अहाज़ल् लज़ी ब–अ़–स़ल्लाहु रसूला(41)इन् का–द

और काफ़िर बोले क़ुरआन उन पर एक साथ क्यों न उतार दिया (फ़ा58) हमने यूं ही ब-तदरीज उसे उतारा है कि उससे तुम्हारा दिल मज़बूत करें (फ़ा59) और हमने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा।(32) (फ़ा60) और वह कोई कहावत तुम्हारे पास न लायेंगे (फ़ा61) मगर हम हक़ और उससे बेहतर बयान ले आयेंगे।(33) वह जो जहन्नम की तरफ़ हांके जायेंगे अपने मुंह के बल उनका ठिकाना सबसे बुरा (फ़ा62) और वह सब से गुमराह।(34) (रुकूअ़ 1) और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई और उसके भाई हारून को वज़ीर किया।(35) तो हमने फ़रमाया तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिसने हमारी आयतें झुठलाईं (फ़ा63) फिर हमने उन्हें तबाह करके हलाक कर दिया।(36) और नूह की क़ौम को (फ़ा64) जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया (फ़ा65) हमने उनको डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिए निशानी कर दिया (फ़ा66) और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(37) और आ़द और समूद (फ़ा67) और कुएं वालों को (फ़ा68) और उनके बीच में बहुत सी संगतें।(38) (फ़ा69) और हमने सबसे मिसालें बयान फ़रमाईं (फ़ा70) और सबको तबाह करके मिटा दिया।(39) और ज़रूर यह (फ़ा71) हो आए हैं उस बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था (फ़ा72) तो क्या यह उसे देखते न थे (फ़ा73) बल्कि उन्हें जी उठने की उम्मीद थी ही नहीं।(40) (फ़ा74) और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा (फ़ा75) क्या यह हैं जिनको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा।(41) क़रीब था कि यह

(फ़ा58) जैसे कि तौरेत व इन्जील व ज़बूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी कुफ़्फ़ार का यह एतेराज़ बिल्कुल फ़ुज़ूल और मोहमल है क्योंकि क़ुरआने करीम का मोअजेज़ा मुहतज बः होना हर हाल में यकसाँ है चाहे यकबारगी नाज़िल हो या बतदरीज बल्कि बतदरीज नाज़िल फ़रमाने में इसके एजाज़ का और भी कामिल इज़हार है कि जब एक आयत नाज़िल हुई और तहद्दी की गई और ख़ल्क़ का उसके मिस्ल बनाने से आ़जिज़ होना ज़ाहिर हुआ फिर दूसरी उतरी इसी तरह इसका एजाज़ ज़ाहिर हुआ इस तरह बराबर आयत आयत होकर क़ुरआन पाक नाज़िल होता रहा और हर हर दम इसकी बे मिसाली और ख़ल्क़ की आ़जिज़ी ज़ाहिर होती रही ग़रज़ कुफ़्फ़ार का एतेराज़ महज़ लग़्व व बे माना है आयत में अल्लाह तआ़ला बतदरीज नाज़िल फ़रमाने की हिकमत ज़ाहिर फ़रमाता है। (फ़ा59) और पयाम का सिलसिला जारी रहने से आपके क़ल्बे मुबारक को तस्कीन होती रही और कुफ़्फ़ार को हर हर मौक़ा पर जवाब मिलते रहें इलावा बरीं यह भी फ़ाइदा है कि इसका (बक़िया सफ़हा 615 पर)

لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۗ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ

وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ

اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۝ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ

بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

लयुज़िल्लुना अ़न् आलि–हतिना लौला अन् स–बरना अ़लैहा व सौ–फ़ यअ़्–लमू–न ही–न यरौनल् अ़ज़ा–ब मन् अ–ज़ल्लु सबीला(42)अ–रऐ–त मनित् त–ख़–ज़ इला–हहू हवाहु अ–फ़ अन्–त तकूनु अ़लैहि वकीला(43)अम् तह्सबु अन्–न अक्स़–रहुम् यस्मअू–न औ यअ़्क़िलू–न इन् हुम् इल्ला कल्–अन्आमि बल् हुम् अ–ज़ल्लु सबीला(44)अ–लम् त–र इला रब्बि–क कै–फ़ मद्दज़्ज़िल्–ल व लौ शा–अ ल–ज–अ़–लहू साकिनन् सुम्–म ज–अ़ल्नश्शम्–स अ़लैहि दलीला(45)सुम्–म क़–बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा(46)व हुवल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल्लै–ल लिबासंव् वन्नौ–म सुबातंव् व ज–अ़–लन् नहा–र नुशूरा(47)व हुवल्लज़ी अर्स–लर्रिया–ह बुश्रम् बै–न यदै रह़्मतिही व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअन् तहूरल्(48)लिनुह़्यि–य बिही बल्द–तम् मैतंव् व नुस्क़ि–यहू मिम्मा ख़–लक़्ना अन्आमंव् व अनासिय्–य कस़ीरा(49)व ल–क़द् स़र्रफ़्नाहु बै–नहुम् लियज़्ज़क्करू फ़–अबा अक्स़–रुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा(50)व लौ शिअ्ना ल–ब–अ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्–यतिन् नज़ीरा(51)फ़ला तुतिअ़िल्–काफ़िरी–न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा(52)व हुवल्लज़ी म–र–जल् बह़्रैनि

हमें हमारे खुदाओं से बहका दें अगर हम उन पर सब्र न करते (फ़ा76) और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अ़ज़ाब देखेंगे (फ़ा77) कि कौन गुमराह था।(42) (फ़ा78) क्या तुमने उसे देखा जिसने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना खुदा बना लिया (फ़ा79) तो क्या तुम उसकी निगहबानी का ज़िम्मा लोगे।(43) (फ़ा80) या यह समझते हो कि उनमें बहुत कुछ सुनते या समझते हैं वह (फ़ा81) तो नहीं मगर जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी बदतर गुमराह।(44) (फ़ा82) (रुकूअ़ 2) ऐ महबूब क्या तुमने अपने रब को न देखा (फ़ा83) कि कैसा फैलाया साया (फ़ा84) और अगर चाहता तो उसे ठहराया हुआ कर देता (फ़ा85) फिर हमने सूरज को उस पर दलील किया।(45) फिर हमने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेटा।(46) (फ़ा86) और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा किया और नींद को आराम और दिन बनाया उठने के लिए।(47) (फ़ा87) और वही है जिसने हवायें भेजीं अपनी रहमत के आगे मुज़दा सुनाती हुई (फ़ा88) और हमने आसमान से पानी उतारा पाक करने वाला।(48) ताकि हम उससे ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शहर को (फ़ा89) और उसे पिलायें अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को।(49) और बेशक हमने उनमें पानी के फेरे रखे (फ़ा90) कि वह ध्यान करें (फ़ा91)तो बहुत लोगों ने न माना मगर ना शुक्री करना।(50) और हम चाहते तो हर बस्ती में एक डर सुनाने वाला भेजते।(51) (फ़ा92)तो काफ़िरों का कहा न मान और इस कुरआन से उन पर जिहाद कर बड़ा जिहाद।(52)और वही है जिसने मिले हुए रवाँ किये दो समुन्दर

(फ़ा76) इससे मालूम हुआ कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दावत और आपके इज़्हारे मोअ़्जेज़ात ने कुफ़्फ़ार पर इतना असर किया था और दीने हक़ को इस क़दर वाज़ेह कर दिया था कि खुद कुफ़्फ़ार को इक़रार है कि अगर वह अपनी हट पर जमे न रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और दीने इस्लाम इख़्तियार करें या दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत उन पर ख़ूब वाज़ेह हो चुकी थी और शुकूक व शुबहात मिटा डाले गए थे लेकिन वह अपनी हट और ज़िद की वजह से महरूम रहे। (फ़ा77) आख़िरत में (फ़ा78) यह उसका जवाब है कि कुफ़्फ़ार ने यह कहा था कि क़रीब है कि यह हमें हमारे खुदाओं से बहकादें यहां बताया गया कि बहके हुए तुम खुद हो और आख़िरत में यह तुमको खुद मालूम हो जाएगा और रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ बहकाने की निस्बत महज़ बेजा है। (फ़ा79) और **(बक़िया सफ़हा 616 पर)**

هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّ هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَیْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّ صِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِیْرًا ﴿۵۴﴾ وَ
یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُهُمْ وَلَا یَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰی رَبِّهٖ ظَهِیْرًا ﴿۵۵﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا ﴿۵۶﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ
اَنْ یَّتَّخِذَ اِلٰی رَبِّهٖ سَبِیْلًا ﴿۵۷﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَی الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰی بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًا ﴿۵۸﴾ ۚ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ
اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِیْرًا ﴿۵۹﴾ وَاِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿۶۰﴾ ۩ تَبٰرَكَ
الَّذِیْ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ جَعَلَ فِیْهَا سِرٰجًا وَّ قَمَرًا مُّنِیْرًا ﴿۶۱﴾ وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿۶۲﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ

हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुंव् व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व ज–अ़–ल बै–नहुमा बरज़ख़ंव् व हिज्रम् मह़्जूरा (53)व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ मिनल्माइ ब–शरन् फ़–ज–अ़–लहू न–स–बंव् व सिह्रन् व का–न रब्बु–क क़दीरा(54)व यअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम् व कानल्काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा(55)व मा अर्सल्ना–क इल्ला मुबश्शिरंव् व नज़ीरा(56)क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा–अ अंय्यत्तख़ि–ज़ इला रब्बिही सबीला(57)व त–वक्कल् अ़–लल्ह़य्यिल् लज़ी ला यमूतु व सब्बिह़् बि–ह़म्दिही व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा (58)अल्लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़–लल्अ़र्शि अर्रह़्मानु फ़स्–अल् बिही ख़बीरा(59)व इज़ा क़ी–ल लहुमुस्जुदू लिर्रह़्मानि क़ालू व मर्रह़्मानु अ–नस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ा–दहुम् नुफ़ूरा(60)तबा–र–कल्लज़ी ज–अ़–ल फ़िस्समाइ बुरूजंव् व ज–अ़–ल फ़ीहा सिराजंव् व क़–म–रम् मुनीरा(61)व हुवल्लज़ी ज–अ़लल्लै–ल वन्नहा–र ख़िल्फ़तल् लिमन् अरा–द अंय्यज़्ज़क्क–र औ अरा–द शुकूरा(62)व अ़िबादुर्रह़्मानिल्

यह मीठा है निहायत शीरीं और यह खारी है निहायत तल्ख़ और उनके बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़।(53)(फ़ा93)और वही है जिसने पानी से(फ़ा94)बनाया आदमी फिर उसके रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की (फ़ा95)और तुम्हारा रब क़ुदरत वाला है।(54) (फ़ा96) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं (फ़ा97) जो उनका भला बुरा कुछ न करें और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है।(55) (फ़ा98) और हमने तुम्हें न भेजा मगर (फ़ा99) ख़ुशी और(फ़ा100)डर सुनाता।(56)तुम फ़रमाओ मैं उस (फ़ा101) पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले।(57) (फ़ा102) और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा (फ़ा103) और उसे सराहते हुए उसकी पाकी बोलो (फ़ा104) और वही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार।(58) (फ़ा105) जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाये (फ़ा106) फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है (फ़ा107) वह बड़ी मेहर वाला तो किसी जानने वाले से उसकी तारीफ़ पूछ।(59) (फ़ा108) और जब उनसे कहा जाए (फ़ा109) रहमान को सज्दा करो कहते हैं रहमान क्या है क्या हम सजदा कर लें जिसे तुम कहो (फ़ा110) और इस हुक्म ने उन्हें और बिदकना बढ़ाया।(60) (फ़ा111) (रुकूअ़ 3) बड़ी बरकत वाला है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए (फ़ा112) और उनमें चराग़ रखा (फ़ा113) और चमकता चाँद।(61) और वही है जिसने रात और दिन की बदली रखी (फ़ा114) उसके लिए जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे।(62) और रहमान के वह बन्दे

(फ़ा93) कि न मीठा खारी हो न खारी मीठा न कोई किसी ज़ाइक़ा को बदल सके जैसे कि दजला दरियाए शोर में मीलों तक चला जाता है और उसके ज़ाइक़ा में कोई तग़य्युर नहीं आता अ़जब शाने इलाही है। (फ़ा94) यानी नुत्फ़ा से (फ़ा95) कि नस्ल चले। (फ़ा96) कि उसने एक नुत्फ़ा से दो क़िस्म के इन्सान पैदा किये मुज़क्कर और मुअन्नस फिर भी काफ़िरों का यह हाल है कि उस पर ईमान नहीं लाते (फ़ा97) यानी बुतों को (फ़ा98) क्योंकि बुत परस्ती करना शैतान को मदद देना है। (फ़ा99) ईमान व ताअ़त पर जन्नत की (फ़ा100) कुफ़्र व मअ़सियत पर अ़ज़ाबे जहन्नम का (फ़ा101) तबलीग़ व इरशाद। (फ़ा102) और उसका क़ुर्ब और उसकी रज़ा हासिल करे मुराद यह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और उनका ताअ़ते **(बक़िया सफ़हा 616 पर)**

الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ

لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ

فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ

اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ

فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝

लज़ी–न यम्शू–न अ़लल्अर्ज़ि हौनंव् व इज़ा ख़ा–त–बहुमुल् जाहिलू–न क़ालू सलामा(63) वल्लज़ी–न यबीतू–न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव् व क़ियामा(64)वल्लज़ी–न यक़ूलू–न रब्ब–नस्रिफ़् अ़न्ना अ़ज़ा–ब जहन्न–म इन्–न अ़ज़ा–बहा का–न ग़रामा(65)इन्नहा सा–अत् मुस्तक़र्रंव् व मुक़ामा (66) वल्लज़ी–न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का–न बै–न ज़ालि–क क़वामा(67)वल्लज़ी–न ला यदअू–न म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र व ला यक़्तुलूनन्–नफ़्सल् लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि व ला यज़्नू–न व मंय्यफ़्–अ़ल् ज़ालि–क यल्–क़ असामंय्(68)युज़ाअ़फ़् लहुल्–अ़ज़ाबु यौमल्क़िया–मति व यख़्लुद् फ़ीहि मुहाना(69)इल्ला मन् ता–ब व आ–म–न व अ़मि–ल अ़–म –लन् सालिहन् फ़उलाइ–क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह–स–नातिन् व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् रहीमा(70)व मन् ता–ब व अ़मि–ल सालिहन् फ़–इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा(71)वल्लज़ी–न ला यश्हदूनज़्ज़ू–र व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू किरामा(72)वल्लज़ी–न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अ़लैहा सुम्मंव् व अुम्याना(73)वल्लज़ी–न यक़ूलू–न रब्बना हब्–लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र–त अअ्युनिंव् वज्–अ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी–न इमामा(74)उलाइ–क युज्ज़ौनल् ग़ुर्–फ़–त बिमा स–बरू व युलक़्क़ौ–न फ़ीहा तहिय्यतंव् व सलामा(75)ख़ालिदी–न फ़ीहा हसुनत् मुस्त–क़र्रंव् व मुक़ामा(76)क़ुल् मा यअ्–बउ बिकुम् रब्बी लौला दुआउकुम् फ़–क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ–फ़ यकूनु लिज़ामा(77)

कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं (फ़ा115) और जब जाहिल उनसे बात करते हैं (फ़ा116) तो कहते हैं बस सलाम।(63) (फ़ा117) और वह जो रात काटते हैं अपने रब के लिए सज्दे और क़ियाम में।(64) (फ़ा118) और वह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमसे फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उसका अ़ज़ाब गले का गुल है।(65) (फ़ा119) बेशक वह बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है।(66) और वह कि जब ख़र्च करते हैं न हद से बढ़ें और न तंगी करें (फ़ा120) और उन दोनों के बीच एतेदाल पर रहें।(67) (फ़ा121) और वह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को नहीं पूजते (फ़ा122) और उस जान को जिसकी अल्लाह ने हुरमत रखी (फ़ा123) नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते (फ़ा124) और जो यह काम करे वह सज़ा पाएगा।(68) बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन (फ़ा125) और हमेशा उसमें ज़िल्लत से रहेगा।(69) मगर जो तौबा करे (फ़ा126) और ईमान लाये (फ़ा127) और अच्छा काम करे (फ़ा128) तो ऐसों की बुराईयों को अल्लाह भलाईयों से बदल देगा (फ़ा129) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(70) और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वह अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी।(71) और जो झूठी गवाही नहीं देते (फ़ा130) और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं।(72) (फ़ा131) और वह कि जब कि उन्हें उनके रब की आयतें याद दिलाई जायें तो उन पर (फ़ा132) बहरे अन्धे होकर **(बक़िया सफ़हा 616 पर)**

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَلَيَّ

सूरतुश् शु–अ़राइ

(मक्की है इस सूरह में 227 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ता–सीम्–मीम्(1)तिल्–क आयातुल् किताबिल् मुबीन(2)ल–अ़ल्ल–क बाख़िअुन् नफ़्स–क अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन(3)इन् नशअ् नु–नज़्ज़िल् अ़लैहिम् मिनस्समाइ आ–यतन् फ़–ज़ल्लत् अअ़्नाकुहुम् लहा ख़ाज़िअ़ीन(4)व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिनर्रह्मानि मुह्–दसिन् इल्ला कानू अ़न्हु मुअ्रिज़ीन(5)फ़–क़द् कज़्ज़बू फ़–स–यअ्तीहिम् अम्बाउ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(6) अ–व लम् यरौ इलल्अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम(7)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(8)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम(9)व इज़् नादा रब्बु–क मूसा अनिअ्तिल् क़ौमज़्–ज़ालिमीन(10)क़ौ–म फ़िरऔ़–न अला यत्तकून(11)क़ा–ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (12)व यज़ीकु सदरी व ला यन्तलिकु लिसानी फ़–अर्सिल् इला हारून(13)व लहुम् अ़–लय्–य

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

तासीम मीम(1) यह आयतें हैं रौशन किताब की।(2) (फ़2) कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके ग़म में कि वह ईमान नहीं लाए।(3) (फ़3) अगर हम चाहें तो आसमान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उनके ऊंचे ऊंचे उसके हुज़ूर झुके रह जायें।(4) (फ़4) और नहीं आती उनके पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत मगर उससे मुंह फेर लेते हैं।(5) (फ़5) तो बेशक उन्होंने झुठलाया तो अब उन पर आया चाहती हैं ख़बरें उनके ठट्टे की।(6) (फ़6) क्या उन्होंने ज़मीन को न देखा हमने उसमें कितने इज़्ज़त वाले जोड़े उगाए।(7)(फ़7) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है (फ़8) और उनके अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।(8) और बेशक तुम्हारा रब ज़रूर वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(9) (फ़9) (रुकूअ़ 5) और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के पास जा।(10) जो फ़िरऔ़न की क़ौम है (फ़10) क्या वह न डरेंगे।(11) (फ़11) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूं कि वह मुझे झुठलायेंगे।(12) और मेरा सीना तंगी करता है (फ़12) और मेरी ज़बान नहीं चलती (फ़13) तो तू हारून को भी रसूल कर।(13) (फ़14) और उनका मुझ पर एक इल्ज़ाम है (फ़15)

(फ़1) सूरह शोअ़रा मक्की है सिवाए आख़िर की चार आयतों के जो *वश्शोअ़राउ यत्तबेउहुम्* से शुरू होती हैं इस सूरत में ग्यारह रुकूअ़ और 227 आयतें और 1279 कलिमे और 5540 हरफ़ हैं। (फ़2) यानी कुरआन पाक की जिसका एजाज़ ज़ाहिर है और जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करने वाला है उसके बाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बराहे रहमत व करम ख़िताब होता है। (फ़3) जब अहले मक्का ईमान न लाये और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब की तो हुज़ूर पर उनकी महरूमी बहुत शाक़ हुई इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई कि आप इस क़दर ग़म न करें। (फ़4) और कोई मअ़्सियत व नाफ़रमानी के साथ गर्दन न उठा सके। (फ़5) यानी दम बदम उनका कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो मौएज़त व तज़कीर और जो वही नाज़िल होती है वह उसका इन्कार करते चले जाते हैं (फ़6) **(बक़िया सफ़हा 617 पर)**

ذَنْبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ

اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّاَنَا

مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ

ज़म्बुन् फ़–अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून(14)क़ा–ल कल्ला फ़ज़्–हबा बिआयातिना इन्ना म–अ़कुम् मुस्तमिअू न(15)फ़अतिया फ़िर्औ़–न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल् आ़–लमीन(16)अन् अर्सिल् म–अ़ना बनी इस्राईल(17) क़ा–ल अ–लम् नुरब्बि–क फ़ीना वलीदंव् व लबिस्–त फ़ीना मिन् अुमुरि–क सिनीन(18)व फ़–अ़ल्–त फ़अ़्–ल–त–कल् लती फ़–अ़ल्–त व अन्–त मिनल्काफ़िरीन (19)क़ा–ल फ़–अ़ल्तुहा इज़ंव् व अना मिनज़्ज़ाल्लीन(20)फ़–फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़–व ह–ब ली रब्बी हुक्मंव् व ज–अ़–लनी मिनल् मुर्सलीन(21)व तिल्–क निअ़्–मतुन् तमुन्नुहा अ़लय्–य अन् अ़ब्बत्–त बनी इस्राईल(22)क़ा–ल फ़िर्औ़नु व मा रब्बुल् आ़–लमीन(23)क़ा–ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा इन् कुन्तुम् मूक़िनीन(24) क़ा–ल लिमन् हौ–लहू अला तस्तमिअून (25)क़ा–ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल् अव्वलीन(26) क़ा–ल इन्–न रसू–लकुमुल् लज़ी उर्सि–ल इलैकुम् ल–मज्नून(27)क़ा–ल रब्बुल् मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि व मा बै–नहुमा इन् कुन्तुम् तअ़्क़िलून(28)क़ा–ल ल–इनित् तख़ज़्–त इलाहन् ग़ैरी

तो मैं डरता हूं कहीं मुझे (फ़ा16) क़त्ल कर दें।(14) फ़रमाया यूं नहीं (फ़ा17) तुम दोनों मेरी आयतें लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं।(15) (फ़ा18) तो फ़िरऔन के पास जाओ फिर उससे कहो हम दोनों उसके रसूल हैं जो रब है सारे जहान का।(16) कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे।(17) (फ़ा19) बोला क्या हमने तुम्हें अपने यहां बचपन में न पाला और तुमने हमारे यहां अपनी उम्र के कई बरस गुज़ारे।(18) (फ़ा20) और तुमने क्या अपना वह काम जो तुमने किया (फ़ा21) और तुम नाशुक्र थे।(19) (फ़ा22) मूसा ने फ़रमाया मैंने वह काम किया जबकि मुझे राह की ख़बर न थी।(20) (फ़ा23) तो मैं तुम्हारे यहां से निकल गया जबकि तुम से डरा (फ़ा24) तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता फ़रमाया (फ़ा25) और मुझे पैग़म्बरों से किया।(21) और यह कोई निअ़मत है जिसका तू मुझ पर एहसान जताता है कि तूने ग़ुलाम बना कर रखे बनी इसराईल।(22) (फ़ा26) फ़िरऔन बोला और सारे जहान का रब क्या है।(23) (फ़ा27) मूसा ने फ़रमाया रब आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो।(24) (फ़ा28) अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम ग़ौर से सुनते नहीं।(25) (फ़ा29) मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का।(26) (फ़ा30) बोला तुम्हारे यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अ़क़्ल नहीं रखते।(27) (फ़ा31) मूसा ने फ़रमाया रब पूरब और पच्छिम का और जो कुछ उनके दर्मियान है (फ़ा32) अगर तुम्हें अ़क़्ल हो।(28) (फ़ा33) बोला अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा ठहराया

(फ़ा16) उसके बदले में (फ़ा17) तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया। (फ़ा18) जो तुम कहो और जो तुम्हें दिया जाये। (फ़ा19) ताकि हम उन्हें सरज़मीने शाम में ले जायें फ़िरऔन ने चार सौ बरस तक बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाये रखा था और उस वक़्त बनी इसराईल की तादाद छः लाख तीस हज़ार थी अल्लाह तआ़ला का यह हुक्म पाकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम मिस्र की तरफ़ रवाना हुए आप पश्मीना का जुब्बा पहने हुए थे दस्ते मुबारक में अ़सा था अ़सा के सिरे में ज़म्बील लटकी थी जिसमें सफ़र का तोशा था इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम वहीं थे आपने उन्हें ख़बर दी कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर **(बक़िया सफ़हा 618 पर)**

لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَیْءٍ مُّبِیْنٍ ۝ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝ فَاَلْقٰی عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ ثُعْبَانٌ مُّبِیْنٌ ۝ وَّنَزَعَ یَدَهٗ

فَاِذَا هِیَ بَیْضَآءُ لِلنّٰظِرِیْنَ ۝ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِیْمٌ ۝ یُّرِیْدُ اَنْ یُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ

فِی الْمَدَآئِنِ حٰشِرِیْنَ ۝ یَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِیْمٍ ۝ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَّقِیْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ

اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِیْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِیْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ۝ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤی

اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِیَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَاَلْقٰی مُوْسٰی عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ تَلْقَفُ مَا یَاْفِكُوْنَ ۝ فَاُلْقِیَ

ल–अज्अ़लन्न–क मिनल् मस्जूनीन(29)क़ा–ल अ–व लौ जिअ्तु–क बिशैइम् मुबीन(30)क़ा–ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्–त मिनस्सादिक़ीन(31)फ़–अल्क़ा अ़साहु फ़–इज़ा हि–य सुअ्बानुम् मुबीनुंव् (32)व न–ज़–अ य–दहू फ़इज़ा हि–य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन(33)क़ा–ल लिल्म–लइ हौ–लहू इन्–न हाज़ा ल–साहिरुन् अ़लीम(34)युरीदु अंय्युख़्रि–जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिही फ़माज़ा तअ्मुरून (35)क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु वब्–अ़स् फ़िल्मदाइनि ह़ाशिरीन(36)यअ्तू–क बिकुल्लि सह़्हारिन् अ़लीम(37)फ़जुमिअ़स्स–ह़–रतु लिमीक़ाति यौमिम् मअ्–लूम(38)व क़ी–ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिऊन(39)ल–अ़ल्लना नत्तबिउ़स्स–ह़–र–त इन् कानू हुमुल ग़ालिबीन(40)फ़–लम्मा जाअस्स– ह़–रतु क़ालू लिफ़िर्औ़–न अ–इन्–न लना ल–अज्रन् इन् कुन्ना नह़्नुल् ग़ालिबीन(41)क़ा–ल न–अ़म् व इन्नकुम् इज़ल् लमिनल् मुक़र्रबीन(42)क़ा–ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़न (43)फ़–अल्क़ौ ह़िबा–लहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िर्औ़–न इन्ना ल–नह़्नुल् ग़ालिबून(44)फ़–अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़इज़ा हि–य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून(45)फ़उल्क़ियस्

तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा।(29) (फ़ा34) फ़रमाया क्या अगरचे मैं तेरे पास कोई रौशन चीज़ लाऊँ।(30) (फ़ा35) कहा तो लाओ अगर सच्चे हो।(31) तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया जभी वह सरीह अज़दहा हो गया।(32) (फ़ा36) और अपना हाथ (फ़ा37) निकाला तो जभी वह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा।(33) (फ़ा38) (रुकूअ़ 6) बोला अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक यह दाना जादूगर हैं।(34) चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है।(35) (फ़ा39) वह बोले उन्हें और उनके भाई को ठहराए रहो और शहरों में जमा करने वाले भेजो।(36) कि वह तेरे पास ले आयें हर बड़े जादूगर दाना को।(37) (फ़ा40) तो जमा किये गए जादूगर एक मुक़र्रर दिन के वादा पर।(38) (फ़ा41) और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा होगे।(39) (फ़ा42) शायद हम इन जादूगरों ही की पैरवी करें अगर यह ग़ालिब आयें।(40) (फ़ा43) फिर जब जादूगर आये फ़िरऔ़न से बोले क्या हमें कुछ मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आये।(41) बोला हां और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब हो जाओगे।(42) (फ़ा44) मूसा ने उनसे फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है।(43) (फ़ा45) तो उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फ़िरऔ़न की इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है।(44) (फ़ा46) तो मूसा ने अपना अ़सा डाला जभी वह उनकी बनावटों को निगलने लगा।(45)(फ़ा47) अब सजदे

(फ़ा34) फ़िरऔ़न की क़ैद क़त्ल से बदतर थी उसका जेल ख़ाना तंग व तारीक अ़मीक़ गढ़ा था उसमें अकेला डाल देता था न वहां कोई आवाज़ सुनाई आती थी न कुछ नज़र आता था (फ़ा35) जो मेरी रिसालत की बुरहान हो मुराद इससे मोअ्जेज़ा है उस पर फ़िरऔ़न ने (फ़ा36) अ़सा अज़दहा बन कर आसमान की तरफ़ बक़द्र एक मील के उड़ा फिर उतर कर फ़िरऔ़न की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा ऐ मूसा मुझे जो चाहिए हुक्म दीजिये फ़िरऔ़न ने घबरा कर कहा उसकी क़सम जिसने तुम्हें रसूल बनाया इसको पकड़ो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसको दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया फ़िरऔ़न कहने लगा इसके सिवा और भी कोई मोअ्.जेज़ा है आपने फ़रमाया हां और उसको यदे बैज़ा दिखाया (फ़ा37) गिरेबान में डाल कर (फ़ा38) उससे आफ़ताब की सी शुआ़अ़ ज़ाहिर हुई (फ़ा39) क्योंकि उस ज़माना में जादू का बहुत रिवाज था इस लिए फ़िरऔ़न ने ख़्याल किया कि यह बात चल जाएगी और उसकी क़ौम के लोग धोखे में आकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से मुतनफ़्फ़िर हो जायेंगे और उनकी बात क़बूल न करेंगे। (फ़ा40) जो इल्मे सेहर में **(बक़िया सफ़हा 618 पर)**

السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۹﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۱﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۵۲﴾ فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۵۷﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۵۸﴾ كَذٰلِكَ ؕ

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۵۹﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿۶۲﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى

स–ह–रतु साजिदीन(46)क़ालू आमन्ना बिरब्बिल् आ़–लमीन(47)रब्बि मूसा व हारून(48)क़ा–ल आमन्तुम् लहू क़ब्–ल अन् आ–ज–न लकुम् इन्नहू ल–कबीरु कुमुल्लज़ी अ़ल्ल–म कुमुस्– सिह्–र फ़–ल–सौ–फ़ तअ़्–लमू–न लउ–क़त्तिअ़न्–न ऐदि–यकुम् व अर्‌जु–लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव् व लउ–स़ल्लिबन्–नकुम् अज्मई़न(49)क़ालू ला ज़ै–र इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून(50)इन्ना नत़्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि–र लना रब्बुना ख़त़ायाना अन् कुन्ना अव्वलल् मुअ्मिनीन(51)व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी इन्नकुम् मुत्त–बअ़ून(52)फ़–अर्स–ल फ़िर्‌औ़नु फ़िल्मदाइनि ह़ाशिरीन (53)इन्–न हाउलाइ लशिज़ि–मतुन् क़लीलून(54)व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून(55)व इन्ना ल– जमीअ़ुन् ह़ाज़िरून(56)फ़–अख़्रज्नाहुम् मिन् जन्नातिंव् व अ़ुयूनिंव्(57)व कुनूज़िंव् व मक़ामिन् करीम(58)कज़ालि–क व औरस्नाहा बनी इस्राईल(59)फ़–अत्बअ़ू हुम् मुश्रिक़ीन(60)फ़–लम्मा तराअल् जम्अ़ानि क़ा–ल अस्ह़ाबु मूसा इन्ना लमुद्–रकून(61)क़ा–ल कल्ला इन्–न मअ़ि–य रब्बी स–यह्दीन(62)फ़औहैना इला

में गिरे।(46) जादूगर बोले हम ईमान लाये उस पर जो सारे जहान का रब है।(47) जो मूसा और हारून का रब है।(48) फ़िरऔ़न बोला क्या तुम उस पर ईमान लाये क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया (फ़ा48) तो अब जाना चाहते हो (फ़ा49) मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा और तुम सब को सूली दूंगा।(49) (फ़ा50) वह बोले कुछ नुक़सान नहीं (फ़ा51) हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं।(50) (फ़ा52) हमें तमअ़ है कि हमारा रब हमारी ख़तायें बख़्श दे इस पर कि हम सबसे पहले ईमान लाए।(51) (फ़ा53) (रुकूअ़ 3) और हमने मूसा को 'वह़ी' भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को (फ़ा54) ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है।(52) (फ़ा55) अब फ़िरऔ़न ने शहरों में जमा करने वाले भेजे।(53) (फ़ा56) कि यह लोग एक थोड़ी जमाअ़त हैं।(54) और बेशक हम सब का दिल जलाते हैं।(55) (फ़ा57) और बेशक हम सब चौकन्ने हैं।(56) (फ़ा58) तो हमने उन्हें (फ़ा59) बाहर निकाला बाग़ों और चश्मों।(57) और ख़ज़ानों और उम्दा मकानों से।(58) हमने ऐसा ही किया और उनका वारिस कर दिया बनी इसराईल को।(59) (फ़ा60) तो फ़िरऔ़नियों ने उनका तआ़क़ुब किया दिन निकले।(60) फिर जब आमना सामना हुआ दोनों गरोहों का (फ़ा61) मूसा वालों ने कहा हमको उन्होंने आ लिया।(61) (फ़ा62) मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं (फ़ा63)बेशक मेरा रब मेरे साथ है वह मुझे अब राह देता है।(62)तो हमने मूसा को

(फ़ा48) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तुम्हारे उस्ताद हैं इसी लिए वह तुम से बढ़ गए। (फ़ा49) कि तुम्हारे साथ क्या किया जाये (फ़ा50) इससे मक़सूद यह था कि आ़म ख़ल्क़ डर जाये और जादूगरों को देख कर लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न ले आयें (फ़ा51) ख़्वाह दुनिया में कुछ भी पेश आये क्योंकि (फ़ा52) ईमान के साथ और हमें अल्लाह तआ़ला से रहमत की उम्मीद है। (फ़ा53) रइयते फ़िरऔ़न में से या उस मजमा के हाज़िरीन में से इस वाक़िआ़ के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कई साल वहां इक़ामत फ़रमाई और उन लोगों को ह़क़ की दावत देते रहे लेकिन उनकी सरकशी बढ़ती गई। (फ़ा54) यानी बनी इसराईल को मिस्र से (फ़ा55) फ़िरऔ़न और उसके लश्कर पीछा करेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे हम तुम्हें नजात देंगे और उन्हें ग़र्क़ करेंगे (फ़ा56) लश्करों को जमा करने के लिए जब लश्कर जमा हो गए तो उनकी कसरत के मुक़ाबिल बनी इसराईल की तादाद थोड़ी मालूम होने लगी चुनान्चे फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल की **(बक़िया सफ़हा 619 पर)**

مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ۝ وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا
الْآخَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝
قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ۝ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ قَالَ
أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ۝ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي
وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۝ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي

मूसा अनिज़्रिब् बि–अ़साकल् बह्–र फन्फ़्–ल–क फका–न कुल्लु फ़िर्क़िन् कत्तौदिल् अ़ज़ीम(63) व अज़्लफ़्ना स़म्मल् आ–ख़रीन(64)व अन्जैना मूसा व मम् म–अ़हू अज्मअ़ीन(65)सुम्–म अग्–रक़्नल् आ–ख़रीन(66)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्स़रुहुम् मुअ्मिनीन (67)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम(68)वत्लु अ़लैहिम् न–ब–अ इब्राहीम(69)इज़् क़ा–ल लिअबीहि व क़ौमिही मा तअ़्बुदून(70)क़ालू नअ़्बुदु अस्नामन् फ़–न–ज़ल्लु लहा आ़किफ़ीन (71)क़ा–ल हल् यस्मअू–नकुम् इज़् तद्अू़न(72)औ यन्फ़अू–नकुम् औ यज़ुर्रून(73)क़ालू बल् व जद्ना आबा–अना कज़ालि–क यफ़्–अ़लून(74)क़ा–ल अ–फ़–रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ़्बुदून (75)अन्तुम् व आबाउकुमुल् अक़्दमून(76)फ़इन्नहुम् अ़दुव्वुल्ली इल्ला रब्बल् आ़–लमीन(77) अल्लज़ी ख़–ल–क़नी फ़हु–व यह्दीन(78)वल्लज़ी हु–व युत्अ़िमुनी व यस्क़ीन(79)व इज़ा मरिज़्तु फ़हु–व यश्फ़ीन(80)वल्लज़ी युमीतुनी सुम्–म युह्यीन(81)वल्लज़ी अत़्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि–र ली ख़ती–अती यौमद्दीन(82)रब्बि हब् ली हुक्मंव् व अलहिक़्नी

'वह़ी' फ़रमाई कि दरिया पर अपना अ़सा मार (फ़ा64) तो जभी दरिया फट गया (फ़ा65) तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़।(63) (फ़ा66) और वहां क़रीब लाये हम दूसरों को।(64) (फ़ा67) और हमने बचा लिया मूसा और उसके सब साथ वालों को।(65) (फ़ा68) फिर दूसरों को डुबो दिया।(66) (फ़ा69) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है (फ़ा70) और उनमें अक्सर मुसलमान न थे।(67) (फ़ा71) और बेशक तुम्हारा रब वही इ़ज़्ज़त वाला (फ़ा72) मेहरबान है।(68) (फ़ा73) (रुकूअ़ 8) और उन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की।(69) (फ़ा74) जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो।(70) (फ़ा75) बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उनके सामने आसन मारे रहते हैं।(71) फ़रमाया क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारो।(72) या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं।(73) (फ़ा76) बोले बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया।(74) फ़रमाया तो क्या देखते हो जिन्हें पूज रहे हो।(75) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा।(76) (फ़ा77) बेशक वह सब मेरे दुश्मन हैं (फ़ा78) मगर परवरदिगारे आ़लम।(77) (फ़ा79) वह जिसने मुझे पैदा किया (फ़ा80) तो वह मुझे राह देगा।(78) (फ़ा81) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है।(79) (फ़ा82) और जब मैं बीमार हूं तो वही मुझे शिफ़ा देता है।(80) (फ़ा83) और वह मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।(81) (फ़ा84) और वह जिसकी मुझे आस लगी है कि मेरी ख़तायें क़ियामत के दिन बख़्शेगा।(82) (फ़ा85) ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अ़ता कर (फ़ा86) और मुझे उनसे मिला दे जो तेरे

(फ़ा64) चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दरिया पर अ़सा मारा (फ़ा65) और उसके बारह हिस्सा नमूदार हुए (फ़ा66) और उनके दर्मियान ख़ुश्क राहें (फ़ा67) यानी फ़िरऔन और फ़िरऔ़नियों को ता आंकि वह बनी इसराईल के रास्तों में चल पड़े जो उनके लिए दरिया में ब–क़ुदरते इलाही पैदा हुए थे। (फ़ा68) दरिया से सलामत निकाल कर (फ़ा69) यानी फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को इस तरह कि जब बनी इसराईल कुल के कुल दरिया से बाहर हो गए और तमाम फ़िरऔ़नी दरिया के अन्दर आ गए तो दरिया बहुक्मे इलाही मिल गया और मिस्ले साबिक़ हो गया और फ़िरऔन मअ़ अपनी क़ौम के डूब गया। (फ़ा70) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत पर और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का मोअ़जेज़ा है (फ़ा71) यानी अहले मिस्र में सिर्फ़ आसिया फ़िरऔ़न की बीबी और हज़क़ील जिनको मोमिन आले फ़िरऔ़न कहते हैं वह अपना ईमान छुपाये रहते थे **(बक़िया सफ़हा 619 पर)**

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿۸۵﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ
يُبْعَثُوْنَ ﴿۸۷﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ
تَعْبُدُوْنَ ﴿۹۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿۹۴﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿۹۵﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۹۶﴾
تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۷﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۸﴾ وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۹۹﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿۱۰۰﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا
كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِذْ قَالَ

बिस्सालिहीन(83)वजअ़ल् ली लिसा–न सिद्किन् फ़िल् आख़िरीन(84)वजअ़ल्नी मिंव् व–र–सति जन्नतिन् नअ़ीम(85)वग़्फ़िर् लि–अबी इन्नहू का–न मिनज़्ज़ाल्लीन(86)व ला तुख़्ज़िनी यौ–म युब्–असून(87)यौ–म ला यन्फ़अु मालुंव् व ला बनून(88)इल्ला मन् अ–तल्ला–ह बिक़ल्बिन् सलीम(89)व उज़्लि–फ़तिल् जन्नतु लिल्मुत्तक़ीन(90)व बुर्रि–ज़तिल् जहीमु लिल्ग़ावीन(91)व क़ी–ल लहुम् ऐ–नमा कुन्तुम् तअ़्बुदून(92)मिन् दूनिल्लाहि हल् यन्सुरू–नकुम् औ यन्तसिरून(93) फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून(94)व जुनूदु इब्ली–स अज्मअून(95)क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून(96)तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम् मुबीन(97)इज़् नुसव्वीकुम् बि–रब्बिल् आ–लमीन(98)व मा अ–ज़ल्लना इल्लल् मुज्रिमून(99)फ़मा लना मिन् शाफ़िअ़ीन(100)व ला सदीक़िन् हमीम(101)फ़लौ अन्–न लना कर्–रतन् फ़–नकू–न मिनल् मुअ्मिनीन(102)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(103)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अज़ीज़ुर् –रहीम(104)कज़्ज़बत् क़ौमु नूहिनिल् मुर्सलीन(105)इज़् क़ा–ल

क़ुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं।(83) (फ़ा87) और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में।(84)(फ़ा88) और मुझे उनमें कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं।(85) (फ़ा89) और मेरे बाप को बख़्श दे (फ़ा90) बेशक वह गुमराह है।(86) और मुझे रुसवा न करना जिस दिन सब उठाए जायेंगे।(87) (फ़ा91) जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे।(88) मगर वह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर।(89) (फ़ा92) और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के लिए।(90) (फ़ा93) और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिए।(91) और उनसे कहा जाएगा (फ़ा94) कहां हैं वह जिनको तुम पूजते थे।(92) अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद करेंगे (फ़ा95) या बदला लेंगे।(93) तो औंधा दिये गए जहन्नम में वह और सब गुमराह।(94) (फ़ा96) और इबलीस के लश्कर सारे।(95) (फ़ा97) कहेंगे और वह उसमें बाहम झगड़ते होंगे।(96) ख़ुदा की क़सम बेशक हम खुली गुमराही में थे।(97) जबकि तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे।(98) और हमें न बहकाया मगर मुजरिमों ने।(99) (फ़ा98) तो अब हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं।(100) (फ़ा99) और न कोई ग़मख़्वार दोस्त।(101) (फ़ा100) तो किसी तरह हमें फिर जाना होता (फ़ा101) कि मुसलमान होते।(102) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत ईमान वाले न थे।(103) और बेशक तुम्हारा रब वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(104) (रुकूअ़ 4) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।(105) (फ़ा102) जब कि उनसे

(फ़ा87) यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और आपकी यह दुआ़ मुस्तजाब हुई चुनांचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है *व इन्नहू फ़िल्–आख़ि–रति ल–मि–नस्सालिहीन*। (फ़ा88) यानी उन उम्मतों में जो मेरे बाद आईं चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उनको यह अ़ता फ़रमाया कि तमाम अहले अदियान उनसे मुहब्बत करते हैं और उनकी सना करते हैं। (फ़ा89) जिन्हें तू जन्नत अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा90) तौबा व ईमान अ़ता फ़रमा कर और यह दुआ़ आपने इस लिए फ़रमाई कि वक़्ते मुफ़ारक़त आपके वालिद ने आप से ईमान लाने का वादा किया था जब ज़ाहिर हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है उसका वादा झूठा था तो आप उससे बेज़ार हो गए जैसा कि सूरह बराअ़त में है *मा का–नस्तिग़्फ़ारु इब्राही–म लि–अबीहि इल्ला अ़म्–मौअ़ि–दतिंव्–व अ–दहा इय्याहु फ़–लम्मा त–बय्य–न लहू अन्नहू अ़दुव्वुल् लिल्लाहि तबर्र–अमिन्हु* (फ़ा91) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा92) जो शिर्क कुफ़्र निफ़ाक़ से पाक हो उसको उसका माल भी नफ़ा देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह हो **(बक़िया सफ़हा 619 पर)**

لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ۝ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ۝ وَمَا أَنَا
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ۝ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا
وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ

लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तकून(106)इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन(107)फ़त्तकुल्ला–ह व अतीऊन(108) व मा अस्–अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि–य इल्ला अ़ला रब्बिल् आ–लमीन(109)फ़त्तकुल्ला–ह व अतीऊन(110)क़ालू अनुअ्मिनु ल–क वत्त–ब–अ़–कल् अर्ज़लून(111)क़ा–ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ्–मलून(112)इन् हिसाबुहुम् इल्ला अ़ला रब्बी लौ तश्अुरून(113)व मा अना बितारि–दिल् मुअ्मिनीन(114)इन् अना इल्ला नज़ीरुम् मुबीन(115)क़ालू ल–इल्लम् तन्तहि यानूहु ल–तकूनन्–न मिनल् मर्जूमीन(116)क़ा–ल रब्बि इन्–न क़ौमी कज़्ज़बून (117)फ़फ़्–तह् बैनी व बै–नहुम् फ़त्हंव् व नज्जिनी व मम् मअ़ि–य मिनल् मुअ्मिनीन(118) फ़–अन्जैनाहु व मम् म–अ़हू फ़िल्फ़ुल्किल् मश्हून (119)सुम्–म अग़्रक़्ना बअ्दुल् बाक़ीन(120)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(121)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम (122)कज़्ज़–बत् आ़दु निल् मुर्सलीन(123)इज़् क़ा–ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तकून(124)इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन(125)फ़त्तकुल्ला–ह

नके हम क़ौम नूह ने कहा क्या तुम डरते नहीं।(106) (फ़ा103) बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का भेजा हुआ अमीन हूं।(107) (फ़ा104) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(108) (फ़ा105) और मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।(109) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(110) बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आयें और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं।(111) (फ़ा106) फ़रमाया मुझे क्या ख़बर उनके काम क्या हैं।(112) (फ़ा107) उनका हिसाब तो मेरे रब ही पर है (फ़ा108) अगर तुम्हें हिस हो।(113) (फ़ा109) और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं।(114) (फ़ा110) मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला।(115) (फ़ा111) बोले ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए (फ़ा112) तो ज़रूर संगसार किये जाओगे।(116)(फ़ा113) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया।(117) (फ़ा114) तो मुझ में और उन में पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसलमानों को नजात दे।(118) (फ़ा115) तो हमने बचा लिया उसे और उसके साथ वालों को भरी हुई कश्ती में।(119) (फ़ा116) फिर उसके बाद (फ़ा117) हमने बाक़ियों को डुबो दिया।(120) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें अक्सर मुसलमान न थे।(121) और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(122) (रुकूअ़ 10) आ़द ने रसूलों को झुठलाया।(123) (फ़ा118) जबकि उनसे उनके हम क़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं।(124) बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।(125) तो अल्लाह से डरो (फ़ा119)

(फ़ा103) अल्लाह तआ़ला से कि कुफ़्र व मआ़सी तर्क करो। (फ़ा104) उसकी वही व रिसालत की तबलीग़ पर और आपकी अमानत आपकी क़ौम को मुसल्लम थी जैसे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अमानत पर अ़रब को इत्तेफ़ाक़ था। (फ़ा105) जो मैं तौहीद व ईमान व ताअ़ते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ देता हूं (फ़ा106) यह बात उन्होंने ग़ुरूर से कही ग़ुरबा के पास बैठना उन्हें गवारा न था इसमें वह अपनी कसुरे शान समझते थे इस लिए ईमान जैसी निअ़मत से महरूम रहे कमीने से मुराद उन की ग़ुरबा और पेशावर लोग थे और उन को रज़ील और कमीन कहना यह कुफ़्फ़ार का मुतकब्बिराना फ़ेअ़्ल था वरना दर हक़ीक़त सनअ़त और पेशा हैसियते दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता ग़िना असल में दीनी ग़िना है और नसब तक़वा का नसब मसला मोमिन को रज़ील कहना जाइज़ नहीं ख़्वाह वह कितना ही मुहताज व नादार हो या (बक़िया सफ़हा 619 पर)

وَ اَطِيْعُوْنِ ۝١٢٦ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢٧ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ۝١٢٨ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۝١٢٩

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝١٣٠ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٣١ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٣٢ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٣٣ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٣٤ اِنِّيْٓ

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٣٥ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۝١٣٦ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣٧ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝١٣٨ فَكَذَّبُوْهُ

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣٩ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٤٠ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٤١ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا

تَتَّقُوْنَ ۝١٤٢ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٤٣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٤٤ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٤٥ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا

व अतीऊ़न(126)व मा अस्–अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि–य इल्ला अ़ला रब्बिल् आ़–लमीन(127)अ–तब्नू–न बिकुल्लि रीअ़िन् आ–यतन् तअ़्–बसून(128)व तत्तख़िज़ू–न मसानि–अ ल–अ़ल्लकुम् तख़्लुदून(129)व इज़ा ब–त़श्तुम् ब–त़श्तुम् जब्बारीन(130) फ़त्तकुल्ला–ह व अतीऊ़न(131)वत्तकुल्लज़ी अ–मद्–दकुम् बिमा तअ़्–लमून(132)अ–मददकुम् बि–अन्आ़मिंव् व बनीन(133)व जन्नातिंव् व अुयूनिन्(134)इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(135)क़ालू सवाउन् अ़लैना अ–व अज़्–त अम् लम् तकुम् मिनल् वाअ़िज़ीन(136)इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुकुल् अव्वलीन(137)व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन(138)फ़–कज़्ज़बूहु फ़–अह्लक्नाहुम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(139)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम (140)कज़्–ज़बत् समूदुल् मुर्सलीन(141)इज़् क़ा–ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तकून(142)इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन(143)फ़त्तकुल्ला–ह व अतीऊ़न(144)व मा अस्–अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि–य इल्ला अ़ला रब्बिल् आ़–लमीन(145)अतुत्रकू–न फ़ी मा

और मेरा हुक्म मानो।(126) और मैं तुमसे उस पर कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब।(127) क्या हर बुलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को।(128) (फ़ा120) और मज़बूत महल चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे।(129) (फ़ा121) और जब किसी पर गिरिफ़्त करते हो तो बड़ी बेदर्दी से गिरिफ़्त करते हो।(130) (फ़ा122) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(131) और उससे डरो जिसने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मालूम हैं।(132) (फ़ा123) तुम्हारी मदद की चौपायों और बेटों।(133) और बाग़ों और चश्मों से।(134) बेशक मुझे तुम पर डर है एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का।(135) (फ़ा124) बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नासेहों में न हो।(136) (फ़ा125) यह तो नहीं मगर वही अगलों की रीत।(137) (फ़ा126) और हमें अ़ज़ाब होना नहीं।(138) (फ़ा127) तो उन्होंने उसे झुठलाया (फ़ा128) तो हमने उन्हें हलाक किया (फ़ा129) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।(139) और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(140) (रुकूअ़ 11) समूद ने रसूलों को झुठलाया।(141) जब कि उन से उनके हम क़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं।(142) बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।(143) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(144) और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।(145) क्या तुम यहां की (फ़ा130) नेअ़्मतों में चैन से

(फ़ा120) कि उस पर चढ़कर गुज़रने वालों से तमस्ख़ुर करो और यह उस क़ौम का मामूल था उन्होंने सरे राह बुलन्द बिनाएं बना ली थीं वहां बैठ कर राह चलने वालों को परेशान करते और खेल करते। (फ़ा121) और कभी न मरोगे। (फ़ा122) तलवार से क़त्ल करके दुर्रे मार कर निहायत बे रहमी से (फ़ा123) यानी वह नेअ़्मतें जिन्हें तुम जानते हो आगे उन का बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा124) अगर तुम मेरी नाफ़रमानी कर लो इसका जवाब उनकी तरफ़ से यह हुआ कि (फ़ा125) हम किसी तरह तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दावत क़बूल न करेंगे। (फ़ा126) यानी जिन चीज़ों का आप ने ख़ौफ़ दिलाया यह पहलों का दस्तूर है वह भी ऐसी ही बातें कहा करते थे इससे उनकी मुराद यह थी कि हम उन बातों का एतेबार नहीं करते उन्हें झूठ जानते हैं या आयत के माना यह हैं कि यह मौत व हायत और इमारतें बनाना पहलों का तरीक़ा है। (फ़ा127) दुनिया में न मरने के बाद उठना न आख़िरत में हिसाब। (फ़ा128) यानी हूद अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा129) हवा के अ़ज़ाब से। (फ़ा130) यानी दुनिया की

هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۱۴۷﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿۱۴۸﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۵۰﴾ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۴﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۱۵۵﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵۶﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿۱۵۷﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۵۹﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۶۰﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۶۲﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۶۳﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۴﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۵﴾ وَ

हाहुना आमिनीन(146)फ़ी जन्नातिंव् व अुयूनिंव्(147)व ज़ुरूअिंव् व नख़्लिन् तल्अुहा हज़ीम(148)व तन्हितू-न मिनल्जिबालि बुयूतन् फ़ारिहीन(149)फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून(150)व ला तुतीअू अम्-रल् मुस्रिफ़ीन(151)अल्लज़ी-न युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून(152)क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल् मुसह्-हरीन(153)मा अन्-त इल्ला ब-शरुम् मिस्लुना फ़अ्ति बिआ-यतिन् इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन(154)क़ा-ल हाज़िही ना-क़तुल् लहा शिर्बुंव् व लकुम् शिर्बु यौमिम् मअ्लूम (155)व ला त-मस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़ज़ीम(156)फ़-अ़-क़रूहा फ़-अस्बहू नादिमीन(157) फ़-अ-ख़-ज हुमुल् अ़ज़ाबु इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(158)व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम(159)कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिनिल्मुर्सलीन(160)इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला तत्तक़ून(161)इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन(162)फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून(163)व मा अस्-अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल् आ़-लमीन(164)अतअ्तूनज़् ज़ुक्रा-न मिनल् आ़-लमीन(165)व

छोड़ दिये जाओगे।(146) (फ़ा131) बाग़ों और चश्मों।(147) और खेतों और खजूरों में जिनका शगूफ़ा नर्म नाज़ुक।(148) और पहाड़ों में से घर तराशते हो उस्तादी से।(149) (फ़ा132) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(150) और हद से बढ़ने वालों के कहने पर न चलो।(151) (फ़ा133) वह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं (फ़ा134) और बनाव नहीं करते।(152) (फ़ा135) बोले तुम पर तो जादू हुआ है।(153) (फ़ा136) तुम तो हमीं जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ (फ़ा137) अगर सच्चे हो।(154) (फ़ा138) फ़रमाया यह नाक़ा है एक दिन इसके पीने की बारी (फ़ा139) और एक मुअ़य्यन दिन तुम्हारी बारी।(155) और इसे बुराई के साथ न छुओ (फ़ा140) कि तुम्हें बड़े दिन का अ़ज़ाब आ लेगा।(156) (फ़ा141) इस पर उन्होंने उसकी कोंचें काट दीं (फ़ा142) फिर सुबह को पछताते रह गए।(157) (फ़ा143) तो उन्हें अ़ज़ाब न आ लिया (फ़ा144)बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।(158) और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(159) (रुकूअ़ 12) लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।(160) जबकि उनसे उनके हम क़ौम लूत ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं।(161)बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।(162)तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(163)और मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।(164) क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद-फ़ेअ़्ली करते हो।(165) (फ़ा145) और

(फ़ा131) कि यह नेअ़्मतें कभी ज़ाइल न हों और कभी अ़ज़ाब न आये कभी मौत न आए आगे उन निअ़्मतों का बयान है। (फ़ा132) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि फ़रह ब-मानी फ़ख़्र व ग़ुरूर है माना यह हुए कि अपनी सनअ़त पर ग़ुरूर करते इतराते। (फ़ा133) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुस्रिफ़ीन से मुराद मुशरिकीन बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुसरिफ़ीन से मुराद वह नौ शख़्स हैं जिन्होंने नाक़ा को क़त्ल किया था। (फ़ा134) कुफ़्र व ज़ुल्म और मआ़सी के साथ (फ़ा135) ईमान लाकर और अ़द्ल क़ाइम करके और अल्लाह के मुतीअ़्. होकर माना यह हैं कि उनका फ़साद ठोस है जिस में किसी तरह नेकी का शायबा भी नहीं और बाज़ मुफ़सिदीन ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं कुछ नेकी भी उनमें होती है मगर यह ऐसे नहीं। (फ़ा136) यानी बार बार ब-कसरत जादू हुआ है जिसकी वजह से अ़क़्ल बजा नहीं रही (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा137) अपनी सच्चाई की। (फ़ा138) रिसालत के दावा में (फ़ा139) **(बक़िया सफ़हा 619 पर)**

تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿۱۶۷﴾ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ رَبِّ

نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۱۷۲﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۱۷۳﴾ اِنَّ

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۷۵﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۷۶﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۷۹﴾ وَمَاۤ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۰﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿۱۸۱﴾

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿۱۸۲﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۸۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ

त-ज़रून् मा ख़-ल-क़् लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वा-जिकुम् बल् अन्तुम् क़ौमुन् आ़दून(166) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या लूतु ल-तकूनन्-न मिनल् मुख़्-रजीन(167)क़ा-ल इन्नी लि-अ़-मलिकुम् मिनल्क़ालीन(168)रब्बि नज्जिनी व अह्ली मिम्मा यअ़्-मलून (169)फ़-नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मअ़ीन(170)इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्ग़ाबिरीन(171)सुम्-म दम्मर्नल् आ-ख़रीन(172)व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-त-रन् फ़सा-अ म-तरुल् मुन्ज़रीन(173) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(174)व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम(175)कज़्ज़-ब अस्हाबुल् ऐ-कतिल् मुर्सलीन(176)इज़् क़ा-ल लहुम् शुअ़ैबुन् अला तत्तकून(177)इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (178)फ़त्तकुल्ला-ह व अतीअ़ून(179)व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल् आ़-लमीन(180)औफ़ुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल् मुख़्सिरीन(181)व ज़िनू बिल्क़िस्तासिल्मुस्तक़ीम (182)व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन(183) वत्तक़ुल् लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल् जिबिल्ल-तल् अव्वलीन(184)क़ालू इन्नमा

छोड़ते हे वह जो तुम्हारे लिए तुम्हारे रब ने जो रूयें बनाईं बल्कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो।(166) (फ़ा146) बोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आये (फ़ा147) तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे।(167) (फ़ा148) फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूं।(168) (फ़ा149) ऐ मेरे रब मुझे और मेरे घर वालों को इनके काम से बचा।(169) (फ़ा150) तो हमने उसे और उसके सब घर वालों को नजात बख़्शी।(170) (फ़ा151) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गई।(171) (फ़ा152) फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।(172) और हमने उन पर एक बरसाव बरसाया (फ़ा153) तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए गयों का।(173) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।(174) और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(175) (रुकूअ़ 13) बन वालों ने रसूलों को झुठलाया।(176) (फ़ा154) जब उनसे शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं।(177) बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।(178) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(179) और मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।(180) (फ़ा155) नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो।(181) (फ़ा156) और सीधी तराज़ू से तौलो।(182) और लोगों की चीज़ें कम करके न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।(183) (फ़ा157) और उससे डरो जिसने तुमको पैदा किया और अगली मख़्लूक़ को।(184) बोले तुम

(फ़ा146) कि हलाल तय्यब को छोड़ कर हराम ख़बीस में मुब्तला होते हो। (फ़ा147) नसीहत करने और उस फ़ेअ़्ल को बुरा कहने से। (फ़ा148) शहर से और तुम्हें यहां न रहने दिया जाएगा। (फ़ा149) और मुझे उससे निहायत दुशमनी है फिर आपने बारगाहे इलाही में दुआ की। (फ़ा150) उसकी शामते आमाल से महफ़ूज़ रख। (फ़ा151) यानी आपकी बेटियों को और उन तमाम लोगों को जो आप पर ईमान लाये (फ़ा152) जो आपकी बीबी थी और वह अपनी क़ौम के फ़ेअ़्ल पर राज़ी थी और जो मअ़्सियत पर राज़ी हो वह आसी के हुक्म में होता है इसी लिए वह बुढ़िया गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब हुई और उसने नजात न पाई। (फ़ा153) पत्थरों का या गन्धक और आग का। (फ़ा154) यह बन मदयन के क़रीब था उसमें बहुत दरख़्त और झाड़ियां थीं अल्लाह तआ़ला ने हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ मबऊस फ़रमाया था जैसा कि अहले मदयन की तरफ़ मबऊस किया था और यह लोग हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के न थे। (फ़ा155) उन तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम **(बक़िया सफ़हा 620 पर)**

أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ۝ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَآءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّيْٓ

أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

مُبِينٍ ۝ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۝ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ اٰيَةً أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ إِسْرَآءِيلَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا

كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

अन्–त मिनल् मु–सह्–हरीन(185)व मा अन्–त इल्ला ब–शरुम् मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु–क लमिनल् काज़िबीन(186)फ़–अस्क़ित् अ़लैना कि–स–फ़म् मिनस्समाइ इन् कुन्–त मिनस् सादिक़ीन(187)क़ा–ल रब्बी अअ्–लमु बिमा तअ्मलून(188)फ़–कज़्ज़बूहु फ़–अ–ख़–ज़हुम् अ़ज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति इन्नहू का–न अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(189)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतन् व मा का–न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन(190)व इन्–न रब्ब–क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम(191)व इन्नहू ल–तन्ज़ीलु रब्बिल् आ– लमीन(192)न–ज़–ल बिहिर्रूहुल् अमीन(193)अ़ला क़ल्बि–क लि–तकू–न मिनल् मुन्ज़िरीन (194)बिलिसानिन् अ़–रबिय्यिम् मुबीन(195)व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल् अव्वलीन(196)अ–व–लम् यकुल्लहुम् आ–यतन् अंय्यअ्–ल–महू अ़ु–लमाउ बनी इस्राई–ल(197)व लौ नज़्ज़ल्नाहु अ़ला बअ्ज़िल् अअ्–जमीन(198)फ़–क़–र–अहू अ़लैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन(199)कज़ालि –क स–लक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल् मुज्रिमीन(200)ला युअ्मिनू–न बिही हत्ता य–र–वुल् अ़ज़ाबल् अलीम(201)फ़–यअ्ति–यहुम् बग़्त–तंव् व हुम् ला यश्अुरून(202)

पर जादू हुआ है।(185) तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी (फ़ा158) और बेशक हम तुम्हें झूठा समझते हैं।(186) तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो।(187) (फ़ा159) फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कोतक हैं।(188) (फ़ा160) तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक वह बड़े दिन का अ़ज़ाब था।(189) (फ़ा161) बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।(190) और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(191) (रुकूअ़ 14) और बेशक यह क़ुरआन रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है।(192) इसे रूहुल अमीन लेकर उतरा।(193) (फ़ा162) तुम्हारे दिल पर (फ़ा163) कि तुम डर सुनाओ।(194) रौशन अ़रबी ज़बान में।(195) और बेशक इसका चर्चा अगली किताबों में है।(196) (फ़ा164) और क्या यह उनके लिए निशानी न थी (फ़ा165) कि इस नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आ़लिम।(197) (फ़ा166) और अगर हम इसे किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर उतारते।(198) कि वह उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उस पर ईमान न लाते।(199) (फ़ा167) हम ने यूं ही झुठलाना पैरा दिया है मुजरिमों के दिलों में।(200) (फ़ा168) वह इस पर ईमान न लायेंगे यहां तक कि देखें दर्दनाक अ़ज़ाब।(201) तो वह अचानक उन पर आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी।(202)

(फ़ा158) नबुव्वत का इन्कार करने वाले अम्बिया की निस्बत बिलउमूम यही कहा करते थे जैसा कि आजकल के बाज़े फ़ासिदुल अक़ीदा कहते हैं। (फ़ा159) नबुव्वत के दावे में (फ़ा160) और जिस अ़ज़ाब के तुम मुस्तहिक़ हो वह जो अ़ज़ाब चाहेगा तुम पर नाज़िल फ़रमाएगा। (फ़ा161) जो कि इस तरह हुआ कि उन्हें शदीद गर्मी पहुंची हवा बन्द हुई और सात रोज़ गर्मी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार रहे तह ख़ानों में जाते वहां और ज़्यादा गर्मी पाते उसके बाद एक अब्र आया सब उसके नीचे आके जमा हो गए उससे आग बरसी और सब जल गए (इस वाक़िआ का बयान सूरह अअ़्राफ़ और सूरह हूद में गुज़र चुका) (फ़ा162) रूहुल–अमीन से हज़रत जिबरील मुराद हैं जो वही के अमीन हैं (फ़ा163) ताकि आप उसे महफ़ूज़ रखें और समझें और न भूलें दिल की तख़्सीस इस लिए है कि दर हक़ीक़त वही मुख़ातिब है और तमीज़ व अ़क़्ल व इख़्तियार का मक़ाम भी वही है तमाम आज़ा उसके मुसख़्ख़र व मुतीअ. हैं हदीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है और उसके ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब और फ़रह व सुरूर व रंजो ग़म का मक़ाम दिल ही है जब दिल को ख़ुशी होती है **(बक़िया सफ़हा 620 पर)**

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ
لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾
فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾
هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ
وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

फ़–यकूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून(203)अ–फ़बिअ़ज़ाबिना यस्तअ्जिलून(204)अ–फ़–रऐ–त इम् मत्तअ्नाहुम् सिनीन(205)सुम्–म जा–अहुम् मा कानू यू–अ़दून(206)मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यु–मत्तअून(207)व मा अह्–लक्ना मिन् क़र्–यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून(208)ज़िक्रा व मा कुन्ना ज़ालिमीन(209)व मा त–नज़्ज़–लत् बिहिश्शयातीन(210)व मा यम्बग़ी लहुम् व मा यस्ततीअून(211) इन्नहुम् अ़निस्सम्अ़ि ल–मअ्ज़ूलून(212)फ़ला तद्अु म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र फ़–तकू–न मिनल् मुअ़ज़्ज़बीन(213)व अन्ज़िर् अ़शी–र–त–कल्अक़्रबीन(214)वख़्फ़िज़् जना–ह–क लि–मनित्त–ब– अ़–क मिनल् मुअ्मिनीन(215)फ़–इन् अ़सौ–क फ़क़ुल् इन्नी बरीउम् मिम्मा तअ्मलून(216)व त–वक्कल् अ़लल् अ़ज़ीज़िर्रहीम(217)अल्लज़ी यरा–क ह़ी–न तक़ूम(218)व तक़ल्लु–ब–क फ़िस्साजिदीन (219)इन्नहू हुवस्समीअुल् अ़लीम (220)हल् उ–नब्बिउकुम् अ़ला मन् त–नज़्ज़लुश् शयातीन(221) त–नज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिंय्–(222)युल्क़ूनस्सम्–अ़ व अक्सरुहुम् काज़िबून(223) वश्शु–अ़राउ यत्तबिअुहुमुल् ग़ावून(224)अ–लम् त–र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्यहीमून(225)व अन्नहुम् यक़ूलू–न मा ला यफ़्–अ़लून(226)इल्लल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति व ज़–करुल्ला–ह कसीरंव् वन्त–सरू मिम् बअ्दि मा ज़ुलिमू व सयअ्–लमुल् लज़ी–न ज़–लमू अय्–य मुन्क़्–लबिंय्यन्क़लिबून(227)

तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी।(203) (फ़ा169) तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं।(204) भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें।(205) (फ़ा170) फिर आये उनपर वह जिसका वह वादा दिये जाते हैं।(206) (फ़ा171) तो क्या काम आएगा उनके वह जो बरतते थे।(207) (फ़ा172) और हमने कोई बस्ती हलाक न की जिसे डर सुनाने वाले न हों।(208) नसीहत के लिए और हम जुल्म नहीं करते।(209) (फ़ा173) और इस कुरआन को लेकर शैतान न उतरे।(210) (फ़ा174) और वह इस क़ाबिल नहीं (फ़ा175) न वह ऐसा कर सकते हैं।(211) (फ़ा176) वह तो सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं।(212) (फ़ा177) तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा न पूज कि तुझ पर अ़ज़ाब होगा।(213) और ऐ महबूब अपने क़रीबतर रिश्तेदारों को डराओ(214) (फ़ा178) और अपनी रहमत का बाजू बिछाओ (फ़ा179) अपने पैरो मुसलमानों के लिए।(215) (फ़ा180) तो अगर वह तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे कामों से बे इलाक़ा हूं।(216) और उस पर भरोसा करो जो इज़्ज़त वाला मेहर वाला है।(217) (फ़ा181) जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो।(218) (फ़ा182) और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को।(219) (फ़ा183) बेशक वही सुनता जानता है।(220) (फ़ा184) क्या मैं तुम्हें बता दूं कि किस पर उतरते हैं शैतान।(221) उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनहगार पर।(222) (फ़ा185) शैतान अपनी सुनी हुई (फ़ा186) उन पर डालते हैं और उनमें अक्सर झूठे हैं।(223) (फ़ा187) और शायरों की पैरवी गुमराह करते हैं।(224) (फ़ा188) क्या तुमने न देखा कि **(बक़िया सफ़हा 620 पर)**

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝ هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ
مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهَا
نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَاَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

सूरतुन्–नम्लि

(मक्की है इसमें 93 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तासीन् तिल्–क आयातुल् कुरआनि व किताबिम् मुबीन(1)हुदंव् व बुश्रा लिल्–मुअ्मिनीन(2) अल्लज़ी–न युक़ीमूनस्सला–त व युअ्तू–नज़्ज़का–त व हुम् बिल् आख़ि–रति हुम् यूक़िनून(3) इन्नल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति ज़य्यन्ना लहुम् अअ्मा–लहुम फ़हुम् यअ्–महून(4) उलाइ–कल्लज़ी–न लहुम् सूउल्–अ़ज़ाबि व हुम् फ़िल्आख़ि–रति हुमुल् अख़्सरून(5)व इन्न –क लतु–लक़्क़ल् कुरआ–न मिल्लदुन् हकीमिन् अ़लीम(6)इज् क़ा–ल मूसा लि–अह्लिही इन्नी आनस्तु नारन् सआतीकुम् मिन्हा बि–ख़–बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क़–बसिल् ल–अ़ल्लकुम् तस्तलून(7)फ़–लम्मा जा–अहा नूदि–य अम्बूरि–क मन् फ़िन्नारि व मन् हौ–लहा व सुब्हानल्लाहि रब्बिल् आ़–लमीन(8)या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(9)व अल्क़ि अ़सा–क फ़–लम्मा रआहा तह्तज़्ज़ु

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

यह आयतें हैं कुरआन और रौशन किताब की।(1)(फ़ा2) हिदायत और खुशख़बरी ईमान वालों को।(2) वह जो नमाज़ बरपा रखते हैं (फ़ा3) और ज़कात देते हैं (फ़ा4) और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।(3) वह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके कोतक उनकी निगाह में भले कर दिखाये हैं(4) (फ़ा5) तो वह भटक रहे हैं यह वह हैं जिनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है (फ़ा6) और यही आख़िरत में सबसे बढ़ कर नक़सान में।(5) (फ़ा7) और बेशक तुम कुरआन सिखाए जाते हो हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से।(6) (फ़ा8) जबकि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा (फ़ा9) मुझे एक आग नज़र पड़ी है अंक़रीब मैं तुम्हारे पास उसकी कोई ख़बर लाता हूं या उसमें से कोई चमकती चिंगारी लाऊँगा कि तुम तापो।(7) (फ़ा10) फिर जब आग के पास आया निदा की गई कि बरकत दिया गया वह जो उस आग की जलवागाह में है यानी मूसा और जो उसके आसपास हैं यानी फ़रिश्ते (फ़ा11) और पाकी है अल्लाह को जो रब सारे जहान का।(8) ऐ मूसा बात यह है कि मैं ही हूं अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(9) और अपना अ़सा डाल दे (फ़ा12) फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ गोया

(फ़ा1) सूरह नमल मक्की है इसमें सात रुकूअ़ और तिरानवे आयतें और १३१७ कलिमे और ४७९६ हरफ़ हैं। (फ़ा2) जो हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करती है और जिसमें उलूम व हिकम वदीअ़त रखे गए हैं। (फ़ा3) और इस पर मदावमत करते हैं और उसके शराइत व आदाब व जुमला हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करते हैं (फ़ा4) ख़ुश दिली से (फ़ा5) कि वह अपनी बुराईयों को शह्वात के सबब से भलाई जानते हैं (फ़ा6) दुनिया में क़त्ल व गिरिफ़्तारी (फ़ा7) कि उनका अन्जाम दाइमी अ़ज़ाब है इसके बाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब होता है (फ़ा8) इसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का एक वाक़िआ बयान फ़रमाया जाता है जो दक़ाइके इल्म व लताइफ़े हिकमत पर मुश्तमिल है (फ़ा9) मदयन से मिस्र को सफ़र करते हुए तारीक रात में जबकि बरफ़ बारी से निहायत सर्दी हो रही थी और रास्ता गुम हो गया था और बीबी साहिबा **(बक़िया सफ़हा 621 पर)**

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَىَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ

رَّحِيْمٌ ﴿۱۱﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِىْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۱۲﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا

مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۳﴾ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ

وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَىْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَوْا

क–अन्नहा जान्नुंव् वल्ला मुदबिरंव् व लम् युअक़्क़िब् या मूसा ला त–ख़फ़् इन्नी ला यख़ाफ़ु ल–दय्यल् मुर्सलून(10)इल्ला मन् ज–ल–म सुम्–म बद्–द–ल हुस्–नम् बअ्–द सूइन् फ़इन्नी ग़फ़ूरुर् रहीम(11)व अदख़िल् य–द–क फ़ी जैबि–क तख़रुज् बैज़ा–अ मिन् ग़ैरि सूइन् फ़ी तिस्इ आयातिन् इला फ़िरऔ–न व क़ौमिही इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन(12)फ़–लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि–र–तन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम् मुबीन(13)व ज–हदू बिहा वस्तै–क़–नत्हा अन्फ़ुसुहुम् ज़ुल्मंव् व अुलुव्वन् फ़न्ज़ुर् कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् मुफ़्सिदीन(14)व ल–क़द् आतैना दावू–द व सुलैमा–न अ़िल्मन् व क़ालल्–हम्दु लिल्लाहिल् लज़ी फ़ज़्–ज़–लना अ़ला कसीरिम् मिन् अ़िबादिहिल् –मुअमिनीन(15)व वरि–स़ सुलैमानु दावू–द व क़ा–ल या अय्युहन्नासु अुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन् इन्–न हाज़ा लहुवल् फ़ज़्लुल् मुबीन(16)व हुशि–र लिसुलैमा–न जुनूदुहू मिनलजिन्नि वलइन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू–ज़अून(17)हत्ता इज़ा अतौ

सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़कर न देखा हमने फ़रमाया ऐ मूसा डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को ख़ौफ़ नहीं होता।(10) (फ़ा13) हां जो कोई ज़्यादती करे (फ़ा14) फिर बुराई के बाद भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं।(11) (फ़ा15) और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब (फ़ा16) नौ निशानियों में (फ़ा17) फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ बेशक वह बे हुक्म लोग हैं।(12) फिर जब हमारी निशानियां आंखें खोलती उनके पास आईं (फ़ा18) बोले यह तो सरीह़ जादू है।(13) और उनके मुन्किर हुए और उनके दिलों में उनका यक़ीन था (फ़ा19) ज़ुल्म और तकब्बुर से तो देखो कैसा अंजाम हुआ फ़सादियों का।(14) (फ़ा20) (रुकूअ़ 16) और बेशक हमने दाऊद और सुलैमान को बड़ा इल्म अ़ता फ़रमाया (फ़ा21) और दोनों ने कहा सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।(15) (फ़ा22) और सुलैमान दाऊद का जा-नशीन हुआ (फ़ा23) और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हमको अ़ता हुआ (फ़ा24) बेशक यही ज़ाहिर फ़ज़्ल है।(16) (फ़ा25) और जमा किये गए सुलैमान के लिए उसके लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वह रोके जाते थे।(17) (फ़ा26)यहां तक कि जब च्यूंटियों के

(फ़ा13) न सांप का न किसी और चीज़ का यानी जब मैं उन्हें अमन दूं तो फिर क्या अन्देशा। (फ़ा14) उसको डर होगा और वह भी जब तौबा करे। (फ़ा15) तौबा कबूल फ़रमाता हूं और बख़्श देता हूं इसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दूसरी निशानी दिखाई गई और फ़रमाया गया (फ़ा16) यह निशानी है उन (फ़ा17) जिनके साथ रसूल बनाकर भेजे गए हो (फ़ा18) यानी उन्हें मोअ्जेज़े दिखाये गए (फ़ा19) और वह जानते थे कि बेशक यह निशानियां अल्लाह की तरफ़ से हैं लेकिन बावजूद इसके अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे। (फ़ा20) कि ग़र्क़ करके हलाक किये गए (फ़ा21) यानी इल्मे क़ज़ा व सियासत और हज़रत दाऊद को पहाड़ों और परिन्दों की तस्बीह का इल्म दिया और हज़रत सुलैमान को चौपायों और पिरन्दों की बोली का (ख़ाज़िन) (फ़ा22) नबुव्वत व मुल्क अ़ता फ़रमा कर और जिन्न व इन्स और शयातीन को मुसख़्ख़र करके। (फ़ा23) नबुव्वत व इल्म व मुल्क में (फ़ा24) यानी बकसरत निअ्मतें दुनिया व आख़िरत की हम को अ़ता फ़रमाई गईं। (फ़ा25) मरवी है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात को अल्लाह तआ़ला ने मशारिक़ व मग़ारिब अ़र्ज़ का मिमुल्क अ़ता फ़रमाया चालीस साल आप उसके मालिक रहे फिर तमाम दुनिया की ममलेकत अ़ता फ़रमाई जिन्न व इन्स शैतान परिन्दे चौपाये दरिन्दे सब पर आपकी हुकूमत थी और हर एक शय की ज़बान आपको अ़ता फ़रमाई और अ़जीब व ग़रीब सनअ़तें आपके ज़माना में बर रूए कार आईं। (फ़ा26) आगे बढ़ने से ताकि सब मुज्तमअ़ हो जायें फिर चलाये जाते थे।

عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ

رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَتَفَقَّدَ

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاۡاَذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ

فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ۝ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ

अ़ला वादिन्नम्लि क़ालत् नम्लतुंय्या अय्युहन् नम्लुदख़ुलू मसाकि–नकुम् ला यह़्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अुरून(18)फ़–त–बस्स–म ज़ाहि–कम् मिन् क़ौलिहा व क़ा–ल रब्बि औज़िअ्नी अन् अश्कु–र निअ्–म–त–कल्लती अन्अ़म्–त अ़लय्–य व अ़ला वालिदय्–य व अन् अअ्–म–ल स़ालिह़न् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बिरह़्मति–क फ़ी अ़िबादि–कस्–सालिह़ीन(19)व त– फ़क़्क़–दत् तै–र फ़क़ा–ल मा लि–य ला अरल्हुदहु–द अम् का–न मिनल् ग़ाइबीन(20)ल– उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन् शदीदन् औ–ल–अज़् ब–ह़न्नहू औ–ल–यअतियन्नी बिसुल्तानिम् मुबीन(21)फ़–म–क–स़ ग़ै–र बअ़ीदिन् फ़क़ा–ल अह़त्तु बिमा लम् तुह़ित् बिही व जिअ्तु–क मिन् स–ब –इम् बि–न–बइंय्यक़ीन(22)इन्नी व–जत्तुम्–र अ–तन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव् व लहा अ़र्शुन् अ़ज़ीम(23)व जत्तुहा व क़ौ–महा यस्जुदू–न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य–न लहुमुश्शैतानु अअ्मा–लहुम् फ़–स़द्दहुम् अ़निस्सबीलि फ़हुम् ला यह्–तदून(24)अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल् लज़ी युख़्रिजुल ख़ब्–अ फ़िस्समावाति

नाले पर आए (फ़ा27) एक च्यूंटी बोली (फ़ा28) ऐ च्यूंटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उनके लश्कर बे ख़बरी में।(18) (फ़ा29) तो उसकी बात से मुस्कुरा कर हंसा (फ़ा30) और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूँ तेरे एहसान का जो तूने (फ़ा31) मुझ पर और मेरे मां बाप पर किये और यह कि मैं वह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आये और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं।(19) (फ़ा32) और परिन्दों का जायज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुआ कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह वाक़ई हाज़िर नहीं।(20) ज़रूर मैं उसे सख़्त अ़ज़ाब करूंगा (फ़ा33) या ज़बह कर दूंगा या कोई रौशन सनद मेरे पास लाये।(21) (फ़ा34) तो हुदहुद कुछ ज़्यादा देर न ठहरा और आकर (फ़ा35) अ़र्ज़ की कि मैं वह बात देख आया हूं जो हुज़ूर ने न देखी और मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं।(22) मैंने एक औरत देखी (फ़ा36) कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है (फ़ा37) और उसका बड़ा तख़्त है।(23) (फ़ा38) मैंने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं (फ़ा39) और शैतान ने उन के आमाल उनकी निगाह में संवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया (फ़ा40) तो वह राह नहीं पाते।(24) क्यों नहीं सजदा करते अल्लाह को जो निकालता है आसमानों

(फ़ा27) यानी ताइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहां च्यूंटियां ब–कसरत थीं (फ़ा28) जो च्यूंटियों की मलका थी वह लंगड़ी थी (लतीफ़ा) जब हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहां की ख़ल्क़ आपकी गिरवीदा हुई तो आपने लोगों से कहा जो चाहो दरियाफ़्त करो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उस वक़्त नौजवान थे आपने फ़रमाया कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की च्यूंटी मादा थी या नर हज़रत क़तादा साकित हो गए तो इमाम साहब ने फ़रमाया कि वह मादा थी आपसे दरियाफ़्त किया गया कि यह आपको किस तरह मालूम हुआ आपने फ़रमाया क़ुरआने करीम में इरशाद हुआ क़ालत् नम्–लतुन् अगर नर होती तो क़ुरआन शरीफ़ में क़ा–ल नम्लुतु वारिद होता (सुबहानल्लाह इस से हज़रत इमाम की शाने इल्म मालूम होती है) ग़रज़ जब उस च्यूंटी की मलका ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लश्कर को देखा तो कहने लगी (फ़ा29) यह उसने इस लिए कहा कि वह जानती थी कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम नबी हैं साहबे अ़द्ल हैं जब्र और ज़्यादती आपकी शान नहीं है इस लिए अगर आप के लश्कर से च्यूंटियां कुचल जायेंगी तो बे–ख़बरी **(बक़िया सफ़हा 621 पर)**

وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ

वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुख़्फू-न व मा तुअ्लिनून(25)अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम(26)क़ा-ल सनन्ज़ुरु अ-स-दक्-त अम् कुन्-त मिनल्काज़िबीन(27)इज़्हब् बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अ़न्हुम् फ़न्ज़ुर् मा ज़ा यर्जिअून(28)क़ालत् या अय्युहल् म-लउ इन्नी उल्क़ि-य इलय्-य किताबुन् करीम(29)इन्नहू मिन् सुलैमा-न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्- रह्मानिर्रहीम(30)अल्ला तअ्लू अ़लय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन(31)क़ालत् या अय्युहल् म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति-अ-तन् अम्रन् हत्ता तश्-हदून(32)क़ालू नह्नु उलू क़ुव्वतिंव् व उलू बअ्सिन् शदीदिंव् वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा तअ्मुरीन(33)क़ालत् इन्नल्मुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र्-य-तन् अफ़्सदूहा व ज-अ़लू अअ़िज़्ज़-त अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व कज़ालि-क यफ़्-अ़लून(34)व इन्नी मुर्सि-लतुन् इलैहिम् बि-हदिय्यतिन् फ़नाज़ि-रतुम् बि-म यर्जिअुल् मुर्सलून(35)फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दू-ननि बिमालिन् फ़मा आतानि- यल्लाहु ख़ैरुम् मिम्मा आताकुम् बल् अन्तुम्

और ज़मीन की छुपी चीज़ें (फ़ा41) और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो।(25) (फ़ा42) अल्लाह है कि उसके सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं वह बड़े अ़र्श का मालिक है।(26) सुलैमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठों में है।(27) (फ़ा43) मेरा यह फ़रमान ले जाकर उन पर डाल फिर उनसे अलग हटकर देख कि वह क्या जवाब देते हैं।(28) (फ़ा44) वह औरत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया।(29) (फ़ा45) बेशक वह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वह अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(30) यह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो (फ़ा46) और गर्दन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो।(31)(फ़ा47) (रुकूअ़ 17) बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआ़मले में मुझे राय दो मैं किसी मुआ़मले में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो।(32) वह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं (फ़ा48) और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है।(33) (फ़ा49) बोली बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में (फ़ा50) दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उसके इज़्ज़त वालों को (फ़ा51) ज़लील और ऐसा ही करते हैं।(34) (फ़ा52) और मैं उनकी तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब लेकर पलटे।(35) (फ़ा53) फिर जब वह (फ़ा54) सुलैमान के पास आया फ़रमाया सुलैमान ने क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे अल्लाह ने दिया (फ़ा55) वह बेहतर है उससे जो तुम्हें दिया (फ़ा56) बल्कि तुम ही अपने

(फ़ा41) आसमान की छुपी चीज़ों से मेंह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से नबातात मुराद हैं। (फ़ा42) इसमें आफ़ताब परस्तों बल्कि तमाम बातिल परस्तों का रद्द है जो अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को भी पूजें मक़सूद यह है कि इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वही है जो कायनाते अर्ज़ी व समावी पर क़ुदरत रखता हो और जमीअ़ मालूमात का आ़लिम हो जो ऐसा नहीं वह किसी तरह मुस्तहिके इबादत नहीं (फ़ा43) फ़िर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने एक मकतूब लिखा जिसका मज़मून यह था कि अज़ जानिब बन्दए ख़ुदा सुलैमान बिन दाऊद बसूए बिलक़ीस मलकए शहर सबा बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम उस पर सलाम जो हिदायत क़बूल करे इसके बाद मुद्दआ़ यह कि तुम मुझ पर बुलन्दी न चाहो और मेरे हुज़ूर मुतीअ़ होकर हाज़िर हो इस पर आपने अपनी मुहर लगाई और हुद हुद से फ़रमाया। (फ़ा44) चुनांचे हुद हुद वह मकतूबे गिरामी लेकर बिलक़ीस **(बक़िया सफ़हा 622 पर)**

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ
يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ
الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۫ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ
اَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا
جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۚ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ

बि–हदिय्य–तिकुम् तफ़्–रहून(36)इरजिअ् इलैहिम् फ़–ल–नअ्तियन्नहुम् बिजुनूदिल् ला कि–ब–ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल–तंव् व हुम् सागिरून(37)क़ा–ल या अय्युहल्म –लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बि–अ्रशिहा क़ब्–ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमीन(38)क़ा–ल अ़िफ़्रीतुम् मिनल्जिन्नि अना आती–क बिही क़ब्–ल अन् तकू–म मिम् मक़ामि–क व इन्नी अ़लैहि ल–क़विय्युन् अमीन(39)क़ालल्लज़ी अ़िन्दहू अ़िल्मुम् मिनल्किताबि अना आती–क बिही क़ब्–ल अंय्यर् तद्–द इलै–क त़र्फ़ु–क फ़–लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन् अ़िन्दहू क़ा–ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी लियब्लु–वनी अ–अश्कुरु अम् अक्फ़ुरु व मन् श–क–र फ़–इन्नमा यश्कुरु लि–नफ़्सिही व मन् क–फ़–र फ़इन्–न रब्बी ग़निय्युन् करीम(40)क़ा–ल नक्किरू लहा अ़र्–शहा नन्ज़ुर् अ–तहतदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी–न ला यहतदून(41)फ़–लम्मा जाअत् क़ी–ल अहा–कज़ा अ़र्शुकि क़ालत् क–अन्नहू हु–व व ऊतीनल् अ़िल्–म मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन(42)व सददहा मा कानत् तअ्बुदु मिन् दूनिल्लाहि इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन्

तोहफ़े पर ख़ुश होते हो।(36) (फ़ा57) पलट जा उनकी तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वह लश्कर लायेंगे जिनकी उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उनको उस शहर से ज़लील करके निकाल देंगे यूं कि वह पस्त होंगे।(37) (फ़ा58) सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वह उसका तख़्त मेरे पास ले आये क़ब्ल इसके कि वह मेरे हुज़ूर मुतीअ् होकर हाज़िर हों।(38) (फ़ा59) एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि मैं वह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इसके कि हुज़ूर इजलास बरख़ास्त करें (फ़ा60) और मैं बेशक उस पर क़ुव्वत वाला अमानतदार हूं।(39)(फ़ा61) उसने अ़र्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था (फ़ा62) कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले (फ़ा63) फिर जब सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है (फ़ा64) और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।(40) सुलैमान ने हुक्म दिया औ़रत का तख़्त उसके सामने वज़अ् बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें वह राह पाती है या उनमें होती है जो नावाक़िफ़ रहे।(41) फिर जब वह आई उससे कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली गोया यह वही है (फ़ा65) और हमको इस वाक़ेआ़ से पहले ख़बर मिल चुकी (फ़ा66) और हम फ़रमांबरदार हुए।(42) (फ़ा67) और उसे रोका (फ़ा68) उस चीज़ ने जिसे वह अल्लाह के सिवा पूजती थी बेशक वह काफ़िर लोगों

(फ़ा57) यानी तुम अहले मुफ़ाख़रत हो ज़ख़ारिफ़े दुनिया पर फ़ख़्र करते हो और एक दूसरे के हदिया पर ख़ुश होते हो मुझे न दुनिया से ख़ुशी होती है न उसकी हाजत अल्लाह तआ़ला ने मुझे इतना कसीर अ़ता फ़रमाया कि औरों को न दिया बावजूद इसके दीन और नबुव्वत से मुझको मुशर्रफ़ किया उसके बाद हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने वफ़्द के अमीर मुन्ज़र बिन अ़म्र से फ़रमाया कि यह हदिये लेकर (फ़ा58) यानी अगर वह मेरे पास मुसलमान होकर हाज़िर न हुए तो यह अन्जाम होगा जब क़ासिद हदिये लेकर बिलक़ीस के पास वापस गए और तमाम वाक़िआ़त सुनाये तो उसने कहा बेशक वह नबी हैं और हमें उनसे मुक़ाबला की ताक़त नहीं और उसने अपना तख़्त अपने सात महलों में से सबसे पिछले महल में महफ़ूज़ करके तमाम दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल कर दिये और उन पर पहरादार मुक़र्रर कर दिये और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत **(बक़िया सफ़हा 622 पर)**

كٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ

نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ۝

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

(43)क़ी–ल ल–हद्ख़ुलिस् सर्–ह फ़–लम्मा र–अत्हु ह़सि–बत्हु लुज्जतंव् व क–श–फ़त् अन् साक़ैहा क़ा– ल इन्नहू सर्हुम् मुमर्रदुम् मिन् क़वारी–र क़ालत् रब्बि इन्नी ज़–लम्तु नफ़्सी व अस्–लम्तु म–अ सुलैमा–न लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन(44)व ल–क़द अर्सल्ना इला समू– द अख़ाहुम् सालिहन् अनि–अ़बुदुल्ला–ह फ़इज़ा–हुम् फ़रीक़ानि यख़्तसिमून(45)क़ा–ल या क़ौमि लि–म तस्त–अ़जिलू–न बिस्सय्यि–अति क़ब्लल् ह़–स–नति लौला तस्तग़्फ़ि–रूनल्ला–ह ल–अल्लकुम् तुर्–हमून(46)क़ालुत्तय्यर्ना बि–क व बिमम् म–अ–क क़ा–ल ताइरुकुम् अ़िन्दल्लाहि बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून(47)व का–न फ़िल्मदी–नति तिस्अ़तु रह्तिंय्युफ़्सिदू–न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून(48)क़ालू तक़ा–समू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्–लहू सुम्–म ल–नक़ूलन्– न लि–वलिय्यिही मा शहिदना महलि–क अह्लिही व इन्ना लसादिक़ून(49)व म–करू मक्रंव् व म–कर्ना मक्–रंव् वहुम् ला यश्अ़ुरून(50)फ़न्ज़ुर् कै–फ़ का–न

में से थी। (43) उससे कहा गया सेहन में आ (फ़ा69) फिर जब उसने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साकें खोलीं (फ़ा70) सुलैमान ने फ़रमाया यह तो एक चिकना सेहन है शीशों जड़ा (फ़ा71) औरत ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया (फ़ा72) और अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गर्दन रखती रहूँ जो रब सारे जहान का।(44) (फ़ा73) (रुकूअ़ 18) और बेशक हमने समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह़ को भेजा कि अल्लाह को पूजो (फ़ा74) तो जभी वह दो गरोह हो गए (फ़ा75) झगड़ा करते।(45) (फ़ा76) सालेह़ ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यों बुराई की जल्दी करते हो (फ़ा77) भलाई से पहले (फ़ा78) अल्लाह से बख़्शिश क्यों नहीं मांगते (फ़ा79) शायद तुम पर रहम हो।(46) (फ़ा80) बोले हमने बुरा शगुन लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से (फ़ा81) फ़रमाया तुम्हारी बद शगूनी अल्लाह के पास है (फ़ा82) बल्कि तुम लोग फ़ितने में पड़े हो।(47) (फ़ा83) और शहर में नौ शख़्स थे (फ़ा84) कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते।(48) आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले हम ज़रूर रात को छापा मारेंगे सालेह और उसके घर वालों पर (फ़ा85) फिर उसके वारिस से (फ़ा86) कहेंगे उस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे और बेशक हम सच्चे हैं।(49) और उन्होंने अपना सा मक्र किया और हमने अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई (फ़ा87) और वह ग़ाफ़िल रहे।(50) तो देखो कैसा अंजाम हुआ उनके

(फ़ा69) वह सेहन शफ़्फ़ाफ़ आबगीना का था उसके नीचे आब जारी था उसमें मछलियां थीं और उसके वस्त में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का तख़्त था जिस पर आप जलवा अफ़रोज़ थे। (फ़ा70) ताकि पानी में चल कर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो। (फ़ा71) यह पानी नहीं है यह सुन कर बिलक़ीस ने अपनी साकें छुपा लीं और इससे उसको बहुत तअ़ज्जुब हुआ और उसने यक़ीन किया कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का मुल्क व हुकूमत अल्लाह की तरफ़ से है और उन अ़जाइबात से उसने अल्लाह तआ़ला की तौहीद और आपकी नबुव्वत पर इस्तिदलाल किया अब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने उसको इस्लाम की दावत दी (फ़ा72) कि तेरे ग़ैर को पूजा आफ़ताब की परस्तिश की (फ़ा73) चुनांचे उसने इख़्लास के साथ तौहीद व इस्लाम को क़बूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की इबादत इख़्तियार की (फ़ा74) और किसी को उसका शरीक न करो (फ़ा75) एक मोमिन और एक काफ़िर (फ़ा76) हर फ़रीक़ अपने ही को हक़ पर कहता और दोनों बाहम झगड़ते काफ़िर गरोह ने कहा ऐ सालेह़ जिस अ़ज़ाब का तुम वादा देते हो उसको लाओ अगर रसूलों में से हो (फ़ा77) यानी बला व अ़ज़ाब की। (फ़ा78) **(बक़िया सफ़हा 623 पर)**

عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ أَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ۝ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنجَيْنٰهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ۝ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفٰى ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

आक़ि–बतु मक्रिहिम् अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौ–महुम् अज्मअ़ीन(51)फ़तिल्–क बुयूतुहुम् ख़ावि– यतम् बिमा ज़–लमू इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिक़ौ–मिंय्यअ्–लमून(52)व अन्जैनल् लज़ी–न आ–मनू व कानू यत्तकून(53)व लूतन् इज् क़ा–ल लिक़ौ–मिही अतअ्तूनल् फ़ाहि– श–त व अन्तुम् तुब्सिरून(54)अ–इन्नकुम् ल–तअ्तूनर् रिजा–ल शहव–तम् मिन् दूनिन्निसाइ बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्हलून(55)फ़मा का–न जवा–ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू आ–ल लूतिम् मिन् क़र्–यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य–त–तह्–हरून(56)फ़–अन्जैनाहु व अह्–लहू इल्लम्र–अ–तहू क़द्–दर्नाहा मिनल्ग़ाबिरीन(57)व अम्तर्ना अ़लैहिम् म–त्–रन् फ़सा–अ म–तरुल् मुन्ज़रीन(58)क़ुलिल्–हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अ़ला अ़िबादिहिल् लज़ीनस्–त़फ़ा आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून(59)

मक्र का हमने हलाक कर दिया उन्हें (फ़ा88) और उनकी सारी क़ौम को।(51) (फ़ा89) तो यह हैं उनके घर डहे पड़े बदला उनके ज़ुल्म का बेशक उसमें निशानी है जानने वालों के लिए।(52) और हमने उनको बचा लिया जो ईमान लाये (फ़ा90) और डरते थे।(53) (फ़ा91) और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या बेहयाई पर आते हो (फ़ा92) और तुम सूझ रहे हो।(54) (फ़ा93) क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो औरतें छोड़ कर (फ़ा94) बल्कि तुम जाहिल लोग हो।(55) (फ़ा95) तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यह कि बोले लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो यह लोग तो सुथरापन चाहते हैं।(56) (फ़ा96) तो हमने उसे और उसके घर वालों को नजात दी मगर उसकी औरत को हमने ठहरा दिया था कि वह रह जाने वालों में है।(57) (फ़ा97) और हमने उन पर एक बरसाव बरसाया (फ़ा98) तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुओं का।(58) (रुकूअ़ 19) तुम कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को (फ़ा99) और सलाम उसके चुने हुए बन्दे पर (फ़ा100) क्या अल्लाह बेहतर (फ़ा101) या उनके साख़्ता शरीक।(59) (फ़ा102)

(फ़ा88) यानी उन नौ शख़्सों को हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उस शब हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के मकान की हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते भेजे तो वह नौ शख़्स हथियार बांध कर तलवारें खींच कर हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आये फ़रिश्तों ने उनके पत्थर मारे वह पत्थर लगते थे और मारने वाले नज़र न आते थे इस तरह उन नौ को हलाक किया। (फ़ा89) हौलनाक आवाज़ से। (फ़ा90) हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम पर (फ़ा91) उनकी नाफ़रमानी से उन लोगों की तादाद चार हज़ार थी (फ़ा92) इस बेहयाई से मुराद उनकी बदकारी है (फ़ा93) यानी इस फ़ेअ्.ल की क़बाहत जानते हो या यह माना हैं कि एक दूसरे के सामने बेपर्दा बिलएलान बद–फ़ेअ्.ली का इरतेकाब करते हो या यह कि तुम अपने से पहले नाफ़रमानी करने वालों की तबाही और उनके अ़ज़ाब के आसार देखते हो फिर भी उस बद–आमाली में मुब्तला हो (फ़ा94) बावजूदेकि मर्दों के लिए औ़रतें बनाई गईं मर्दों के लिए मर्द और औ़रतों के लिए औ़रतें नहीं बनाई गईं लिहाज़ा यह फ़ेअ़्ल हिकमते इलाही की मुख़ालफ़त है (फ़ा95) जो ऐसा फ़ेअ़्.ल करते हो। (फ़ा96) और इस गन्दे काम को मना करते हैं (फ़ा97) अ़ज़ाब में (फ़ा98) पत्थरों का (फ़ा99) यह ख़िताब है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर अल्लाह तआ़ला की हम्द बजा लायें। (फ़ा100) यानी अम्बिया व मुरसलीन पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के असहाब मुराद हैं। (फ़ा101) ख़ुदा परस्तों के लिए जो ख़ास उसकी इबादत करें और उस पर ईमान लायें और वह उन्हें अ़ज़ाब व हलाक से बचाये। (फ़ा102) यानी बुत जो अपने परिस्तारों के कुछ काम न आसकें तो जब उनमें कोई भलाई नहीं वह कोई नफ़ा नहीं पहुंचा सकते तो उनको पूजना और मअ़बूद मानना निहायत बेजा है उसके बाद चन्द अनवाअ़ ज़िक्र फ़रमाये जाते हैं जो अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और उसके कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं।

(बक़िया सफ़हा 591 का) वास्ते निहायत हसरत व अन्दोह और रन्ज व ग़म का दिन होगा (फ़ा46) इस कलिमे से वह मलाइका से पनाह चाहेंगे (फ़ा47) हालते कुफ़्र में मिस्ल सिला रहमी व मेहमानदारी व यतीम नवाज़ी वग़ैरह के। (फ़ा48) न हाथ से छूए जायें न उनका साया हो मुराद यह है कि वह आमाल बातिल कर दिये गए उनका कुछ समरा और कोई फ़ाइदा नहीं क्योंकि आमाल की मक़बूलियत के लिए ईमान शर्त है और वह उन्हें मुयस्सर न था उसके बाद अहले जन्नत की फ़ज़ीलत इरशाद होती है (फ़ा49) और उनकी क़रारगाह उन मग़रूर मुतकब्बिर मुशरिकों से बुलन्द व बाला बेहतर व आला। (फ़ा50) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया आसमाने दुनिया फटेगा और वहां के रहने वाले (फ़रिश्ते) उतरेंगे और वह तमाम अहले ज़मीन से ज़्यादा हैं जिन्न व इन्स सब से फिर दूसरा आसमान फटेगा वहां के रहने वाले उतरेंगे वह आसमाने दुनिया के रहने वालों से और जिन्न व इन्स सब से ज़्यादा हैं इसी तरह आसमान फटते जायेंगे और हर आसमान वालों की तादाद अपने मातहतों से ज़्यादा है यहां तक कि सातवां आसमान फटेगा फिर करोबीं उतरेंगे फिर हामलीने अर्श और यह रोज़े क़ियामत होगा (फ़ा51) और अल्लाह के फ़ज़्ल से मुसलमानों पर सहल हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत का दिन मुसलमानों पर आसान किया जाएगा यहां तक कि वह उन के लिए एक फ़र्ज़ नमाज़ से हलका होगा जो दुनिया में पढ़ी थी। (फ़ा52) हसरत व नदामत से यह हाल अगरचे कुफ़्फ़ार के लिए आ़म है मगर उक़बा बिन उबय मुईत से उसका ख़ास तअ़ल्लुक़ है **शाने नुज़ूलः** उक़बा बिन उबय मुईत उबय बिन ख़ल्फ़ का गहरा दोस्त था हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रमाने से उसने ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह की शहादत दी और उसके बाद उबय बिन ख़ल्फ़ के ज़ोर डालने से फिर मुरतद हो गया और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको मक़तूल होने की ख़बर दी चुनान्चे बद्र में मारा गया यह आयत उसके हक़ में नाज़िल हुई कि रोज़े क़ियामत उसको इन्तेहा दर्जा की हसरत व नदामत होगी इस हसरत में वह अपने हाथ चाब चाब लेगा। (फ़ा53) जन्नत व नजात की और उनका इत्तेबाअ़ किया होता और उनकी हिदायत क़बूल की होती (फ़ा54) यानी क़ुरआन व ईमान से। (फ़ा55) और बला व अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त इससे अलाहिदगी करता है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अबू दाऊद व तिर्मिज़ी में एक हदीस मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तो देखना चाहिए किस को दोस्त बनाता है और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम नशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़गार को मसला बे दीन और बद मज़हब की दोस्ती और उसके साथ सोहबत व इख़्तेलात और उलफ़त व एहतेराम ममनूअ़ है (फ़ा56) किसी ने उसको सहर कहा किसी ने शेअ़्र और वह लोग ईमान लाने से महरूम रहे इस पर अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को तसल्ली दी और आप से मदद का वादा फ़रमाया जैसा कि आगे इरशाद होता है (फ़ा57) यानी अम्बिया के साथ बद नसीबों का यही मामूल रहा है

(बक़िया सफ़हा 592 का) हिफ़्ज़ सहल और आसान हो। (फ़ा60) ब-ज़बबने जिबरील थोड़ा थोड़ा बीस या बाईस बरस की मुद्दत में या यह माना हैं कि हमने आयत के बाद आयत बतदरीज नाज़िल फ़रमाई और बाज़ ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हमें क़िराअत में तरतील करने यानी ठहर ठहर कर ब-इत्मीनान पढ़ने और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी तरह अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद हुआ *व रत्तिलिल् क़ुरआ-न तर्तीला* (फ़ा61) यानी मुशरिकीन आपके दीन के ख़िलाफ़ या आपकी नबुव्वत में क़दह करने वाला कोई सवाल पेश न कर सकेंगे। (फ़ा62) हदीस शरीफ़ में है कि आदमी रोज़े क़ियामत तीन तरीक़े पर उठाये जायेंगे एक गरोह सवारियों पर एक गरोह प्यादा पा और एक जमाअ़त मुंह के बल घिसटती अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह मुंह के बल कैसे चलेंगे फ़रमाया जिसने पाँव पर चलाया है वही मुंह के बल चलाएगा। (फ़ा63) यानी क़ौमे फ़िरऔ़न की तरफ़ चुनान्चे वह दोनों हज़रात उनकी तरफ़ गए और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और अपनी रिसालत की तबलीग़ की लेकिन उन बदबख़्तों ने उन हज़रात को झुठलाया। (फ़ा64) भी हलाक कर दिया (फ़ा65) यानी हज़रत नूह और हज़रत इदरीस को और हज़रत शीस को या यह बात है कि एक रसूल की तकज़ीब तमाम रसूलों की तकज़ीब है तो जब उन्होंने हज़रत नूह को झुठलाया तो सब रसूलों को झुठलाया। (फ़ा66) कि बाद वालों के लिये इबरत हों (फ़ा67) और आ़द हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की क़ौम और समूद हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम इन दोनों क़ौमों को भी हलाक किया। (फ़ा68) यह हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम थी जो बुत परस्ती करते थे अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को भेजा आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी उन्होंने सरकशी की हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और आपको ईज़ा दी उन लोगों के मकान कुंएं के गिर्द थे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया और यह तमाम क़ौम मअ़ अपने मकानों के उस कुंएं के साथ ज़मीन में धंस गई इसके इलावा और अक़वाल भी हैं (फ़ा69) यानी क़ौमे आ़द व समूद और कुंएं वालों के दर्मियान में बहुत सी उम्मतें हैं जिनको अम्बिया की तकज़ीब करने के सबब से अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। (फ़ा70) और हुज्जतें क़ाइम कीं और उनमें से किसी को बग़ैर इन्ज़ार हलाक न किया (फ़ा71) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार (फ़ा72) इस बस्ती से मुराद सुदूम है जो क़ौमे लूत की पांच बस्तियों में सब से बड़ी बस्ती थी इन बस्तियों मे एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो इस ख़बीस बदकारी के आमिल न थे जिस में बाक़ी चार बस्तियों के लोग मुब्तला थे इसी लिए उन्होंने नजात पाई और वह चार बस्तियां अपनी बद अ़मली के बाइस आसमान से पत्थर बरसा कर हलाक कर दी गईं (फ़ा73) कि इबरत पकड़ते और ईमान लाते (फ़ा74) यानी मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने के क़ाइल न थे कि उन्हें आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब की परवाह होती। (फ़ा75) और कहते हैं

(बक़िया सफ़हा 593 का) अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजने लगा उसी का मुतीअ़ हो गया वह हिदायत किस तरह क़बूल करेगा मरवी है कि ज़मानए जाहिलियत के लोग एक पत्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पत्थर उससे अच्छा नज़र आता तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते। (फ़ा80) कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो (फ़ा81) यानी वह अपने शिद्दते इनाद से न आपकी बात सुनते हैं न दलाइल व बराहीन को समझते हैं बहरे और नासमझ बने हुए हैं (फ़ा82) क्योंकि चौपाये भी अपने रब की तस्बीह करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उसके मुतीअ़ रहते हैं और एहसान करने वाले को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वाले से घबराते हैं नाफ़ेअ़ की तलब करते हैं मुज़िर से बचते हैं चरागाहों की राहें जानते हैं यह कुफ़्फ़ार इन से भी बदतर हैं कि न रब की इताअ़त करते हैं न उसके एहसान को पहचानते हैं न शैतान जैसे दुश्मन की ज़रर रसानी को समझते हैं न सवाब जैसी अ़ज़ीमुल मनफ़अ़त चीज़ के तालिब हैं न अ़ज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मुहलिका से बचते हैं (फ़ा83) कि उसकी सनअ़त व क़ुदरत कैसी अ़जीब है (फ़ा84) सुबहे सादिक़ के तुलूअ़ के बाद से आफ़ताब के तुलूअ़ तक कि उस वक़्त तमाम ज़मीन में साया ही साया होता है न धूप है न अंधेरा है (फ़ा85) कि आफ़ताब के तुलूअ़ से भी ज़ाइल न होता (फ़ा86) कि तुलूअ़ के बाद आफ़ताब जितना ऊँचा होता गया साया सिमटता गया (फ़ा87) कि इसमें रोज़ी तलाश करो और कामों में मश्ग़ूल हो हज़रत लुक़मान ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बाद फिर उठोगे। (फ़ा88) यहां रहमत से मुराद बारिश है (फ़ा89) जहां की ज़मीन ख़ुश्की से बेजान हो गई। (फ़ा90) कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में कभी कहीं ज़्यादा हो कभी कहीं मुख़्तलिफ़ तौर पर हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत एक हदीस में है कि आसमान से रोज़ व शब की तमाम साअ़तों में बारिश होती रहती है अल्लाह तआ़ला उसे जिस ख़ित्ता की जानिब चाहता है फेरता है और जिस ज़मीन को चाहता है सैराब करता है। (फ़ा91) और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व नेअ़्मत में ग़ौर करें। (फ़ा92) और आप पर से अन्ज़ार का बार कम कर देते लेकिन हमने तमाम बस्तियों की अन्ज़ार का बार आप ही पर रखा ताकि आप तमाम जहान के रसूल होकर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों के जामेअ़ हों और नबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आपके बाद फिर कोई नबी न हो।

(बक़िया सफ़हा 594 का) इलाही में मश्ग़ूल होना ही मेरा अज्र है क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला मुझे इस पर जज़ा अ़ता फ़रमाएगा इस लिए सुलहाए उम्मत के ईमान और उनकी नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उनके अम्बिया को जिनकी हिदायत से वह इस रुतबा पर पहुंचे। (फ़ा103) उसी पर भरोसा करना चाहिए क्योंकि मरने वाले पर भरोसा करना आ़क़िल की शान नहीं (फ़ा104) उसकी तस्बीह व तहमीद करो उसकी ताअ़त और उसका शुक्र बजा लाओ। (फ़ा105) न उससे किसी का गुनाह छुपे न कोई उसकी गिरिफ़्त से अपने को बचा सके (फ़ा106) यानी इतनी मिक़दार में क्योंकि लैलो नहार और आफ़ताब तो थे ही नहीं और इतनी मिक़दार में पैदा करना अपनी मख़्लूक़ को आहिस्तगी और इत्मीनान की तालीम के लिए है वरना वह एक लम्हा में सब कुछ पैदा कर देने पर क़ादिर है (फ़ा107) सल्फ़ का मज़हब यह है कि इस्तिवा और अमसाल जो वारिद हुए हम उस पर ईमान रखते हैं और उसकी कैफ़ियत के दरपै नहीं होते उसको अल्लाह जाने बाज़ मुफ़स्सिरीन इस्तिवा को बुलन्दी और बरतरी के माना में लेते हैं और बाज़ इस्तीला के माना में लेकिन क़ौले अव्वल ही असलम व अक़्वा है। (फ़ा108) इसमें इन्सान को ख़िताब है कि हज़रत रहमान के सिफ़ात मर्दे आरिफ़ से दरियाफ़्त करे। (फ़ा109) यानी जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुशरिकीन से फ़रमायें कि (फ़ा110) इससे उनका मक़सद यह है कि रहमान को जानते नहीं और यह बातिल है जो उन्होंने बराहे इनाद कहा क्यों कि लुग़ते अरब का जानने वाला ख़ूब जानता है कि रहमान के माना निहायत रहमत वाला हैं और यह अल्लाह तआ़ला ही की सिफ़त है। (फ़ा111) यानी सजदा का हुक्म उनके लिए और ज़्यादा ईमान से दूरी का बाइस हुआ। (फ़ा112) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सबआ़ सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं जिनकी तादाद बारह है हमल, सौर, जौज़ा, सरतान, असद, सुंबुला, मीज़ान, अक़रब, क़ौस, जदी, दलू, हूत। (फ़ा113) चराग़ से यहां आफ़ताब मुराद है। (फ़ा114) कि उनमें एक के बाद दूसरा आता है और उसका क़ाइम मक़ाम होता है कि जिसका अ़मल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाये तो दूसरे में अदा करे ऐसा ही फ़रमाया हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने और रात और दिन का एक दूसरे के बाद आना और क़ाइम मक़ाम होना अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व हिकमत की दलील है।

(बक़िया सफ़हा 595 का) नहीं गिरते। (73) (फ़ा133) और वह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठंडक (फ़ा134) और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना। (74) (फ़ा135) उनको जन्नत का सबसे ऊंचा बाला ख़ाना इनाम मिलेगा बदला उनके सब्र का और वहां मुजरे और सलाम के साथ उनकी पेशवाई होगी। (75) (फ़ा136) हमेशा उसमें रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह। (76) तुम फ़रमाओ (फ़ा137) तुम्हारी कुछ क़दर नहीं मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुमने तो झुठलाया (फ़ा138) तो अब होगा वह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा। (77) (फ़ा139) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा115) इत्मीनान व वक़ार के साथ मुतवाज़ेआ़ना शान से न कि मुतकब्बिराना तरीक़ा पर जूते खटखटाते पाँव ज़ोर से मारते इतराते कि यह मुतकब्बिरीन की शान है और शरअ़ ने इसको मना फ़रमाया। (फ़ा116) और कोई नागवार कलिमा या बेहूदा या ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब बात कहते हैं (फ़ा117) यह सलामे मुतारकत है यानी जाहिलों के साथ मुजादला करने से एअ़राज़ करते हैं या यह माना हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरुस्त हो और उसमें ईज़ा और गुनाह से सालिम रहें हसन बसरी ने फ़रमाया

कि यह तो उन बन्दों के दिन का हाल है और उनकी रात का बयान आगे आता है मुराद यह है कि उनकी मजलिसी ज़िन्दगी और ख़ल्क़ के साथ मुआ़मला ऐसा पाकीज़ा है और उनकी ख़लवत की ज़िन्दगानी और हक़ के साथ राबता यह है जो आगे बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा118) यानी नमाज़ और इबादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं और अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी शब बेदारी का सवाब अ़ता फ़रमाता है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जिस किसी ने बाद इशा दो रकअ़त या ज़्यादा नफ़्ल पढ़े वह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है जिसने इशा की नमाज़ बा-जमाअ़त अदा की उसने निस्फ़ शब के क़ियाम का सवाब पाया और जिसने फ़ज्र भी बजमाअ़त अदा की वह तमाम शब की इबादत करने वाले की मिस्ल है (फ़ा119) यानी लाज़िम जुदा न होने वाला इस आयत में इन बन्दों की शब बेदारी और इबादत का ज़िक्र फ़रमाने के बाद उनकी इस दुआ़ का बयान किया इससे यह इज़्हार मक़सूद है कि वह बावजूद कसरते इबादत के अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ रखते हैं और उसके हुज़ूर तज़र्रुअ़ करते हैं। (फ़ा120) इसराफ़ मअ़सियत में ख़र्च करने को कहते हैं एक बुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा नेकी में इसराफ़ ही नहीं और तंगी करना यह है कि अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रर किये हु.कूक़ के अदा करने में कमी करे यही हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने किसी हक़ को मना किया उसने इक़्तार किया यानी तंगी की और जिसने नाहक़ में ख़र्च किया उसने इसराफ़ किया यहां उन बन्दों के ख़र्च करने का हाल ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वह इसराफ़ व इक़्तार के दोनों मज़्मूम तरीक़ों से बचते हैं। (फ़ा121) अब्दुलमलिक बिन मरवान ने हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अपनी बेटी बियाहते वक़्त ख़र्च का हाल दरियाफ़्त किया तो हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नेकी दो बदियों के दर्मियान है इससे मुराद यह थी कि ख़र्च में एतेदाल नेकी है और वह इसराफ़ व इक़्तार के दर्मियान है जो दोनों बदियां हैं इससे अ़ब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वह इस आयत के मज़्मून की तरफ़ इशारा करते हैं मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में जिन हज़रात का ज़िक्र है वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के असहाब किबार हैं जो न लज़्ज़त व तनइम के लिए खाते न ख़ूबसूरती और ज़ीनत के लिए पहनते भूख रोकना सत्रा छुपाना सर्दी गर्मी की तकलीफ़ से बचना इतना उनका मक़सद था। (फ़ा122) शिर्क से बरी और बेज़ार हैं। (फ़ा123) और उसका ख़ून मुबाह न किया जैसे कि मोमिन व मुआ़हिद इसको (फ़ा124) सालिहीन से उन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में कुफ़्फ़ार पर तअ़रीज़ है जो इन बदियों में गिरिफ़्तार थे (फ़ा125) यानी वह शिर्क के अ़ज़ाब में भी गिरिफ़्तार होगा और उन मआ़सी का अ़ज़ाब इस अ़ज़ाब पर और ज़्यादा किया जाएगा। (फ़ा126) शिर्क व कबाइर से (फ़ा127) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर (फ़ा128) यानी बाद तौबा नेकी इख़्तियार करे। (फ़ा129) यानी बदी करने के बाद नेकी की तौफ़ीक़ देकर या यह माना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उनकी जगह ईमान व ताअ़त वग़ैरह नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (मदारिक) मुस्लिम की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख़्स हाज़िर किया जाएगा मलाइका बहुक्मे इलाही उसके सग़ीरा गुनाह एक एक करके उसको याद दिलाते जायेंगे वह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरता होगा उसके बाद कहा जाएगा कि हर एक बदी की एवज़ तुझको नेकी दी गई यह बयान फ़रमाते हुए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला की बन्दानवाज़ी और उसकी शाने करम पर ख़ुशी हुई और चेहरए अक़दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायाँ हुए (फ़ा130) और झूठों की मजलिस से अलाहिदा रहते हैं और उनके साथ मुख़ालतत नहीं करते (फ़ा131) और अपने आपको लह्व व बातिल से मुलव्विस नहीं होने देते ऐसी मजालिस से एअ़.राज़ करते हैं (फ़ा132) ब-तरीक़े तग़ाफ़ुल (फ़ा133) कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और बचश्मे बसीरत देखते हैं और इस नसीहत से पन्द पज़ीर होते हैं नफ़ा उठाते हैं और इन आयतों पर फ़रमांबरदाराना गिरते हैं (फ़ा134) यानी फ़रहत व सुरूर मुराद यह है कि हमें बीबियां और औलाद नेक सालेह मुत्तक़ी अ़ता फ़रमा कि उनके हुसने अमल और उनकी इताअ़ते ख़ुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल ख़ुश हों (फ़ा135) यानी हमें ऐसा परहेज़गार और ऐसा आ़बिद व ख़ुदा परस्त बना कि हम परहेज़गारों की पेशवाई के क़ाबिल हों और वह दीनी उमूर में हमारी इक़्तेदा करें मसला बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेशवाई और सरदारी की रग़बत व तलब चाहिए इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने अपने सालिहीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए उसके बाद उनकी जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है। (फ़ा136) मलायका तहिय्यत व तस्लीम के साथ उनकी तकरीम करेंगे या अल्लाह अज़्ज़ो जल्ल उनकी तरफ़ सलाम भेजेगा (फ़ा137) ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अहले मक्का से कि (फ़ा138) मेरे रसूल और मेरी किताब को (फ़ा139) यानी अ़ज़ाब दाइम व हलाक लाज़िम।

(बक़िया सफ़हा 596 का) यह वईद है और उसमें अन्ज़ार है कि रोज़े बद्र या रोज़े क़ियामत जब उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि क़ुरआन और रसूल की तकज़ीब का यह अंजाम है। (फ़ा7) यानी क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन और नाफ़ेअ़. नबातात पैदा किये और शोअ़बी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावार हैं जो जन्नती है वह इज़्ज़त वाला और करीम और जो जहन्नमी है वह बद-बख़्त लईम है। (फ़ा8) अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत पर। (फ़ा9) काफ़िरों से इन्तेक़ाम लेता और मोमिनीन पर रहमत फ़रमाता है (फ़ा10) जिन्होंने कुफ़्र व मआ़सी से अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और बनी इसराईल को ग़ुलाम बना कर और उन्हें तरह तरह की ईज़ायें पहुंचा कर उन पर ज़ुल्म किया उस क़ौम का नाम क़िब्त है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया कि उन्हें उनकी बद किरदारी पर ज़जर फ़रमायें। (फ़ा11) अल्लाह से और अपनी जानों को अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाकर और उसकी फ़रमांबरदारी करके उसके अ़ज़ाब से न बचायेंगे इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही

में (फ़ा12) उनके झुठलाने से (फ़ा13) यानी गुफ़्तगू करने में किसी क़द्र तकल्लुफ़ होता है इस उक़्दा की वजह से जो ज़बान में ब-अय्यामे सिग़्र सिनी में आग का अंगारा रख लेने से हो गया है। (फ़ा14) ताकि वह तबलीग़े रिसालत में मेरी मदद करें जिस वक़्त हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को शाम में नबुव्वत अ़ता की गई उस वक़्त हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम मिस्र में थे। (फ़ा15) कि मैंने क़िब्ती को मारा था।

(बक़िया सफ़हा 597 का) फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा है और आपको भी रसूल बनाया है कि फ़िरऔ़न को ख़ुदा की तरफ़ दावत दो यह सुन कर आपकी वालिदा साहिबा घबराईं और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहने लगीं कि फ़िरऔ़न तुम्हें क़त्ल करने के लिए तुम्हारी तलाश में है जब तुम उसके पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा लेकिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उनके यह फ़रमाने से न रुके और हज़रत हारून को साथ लेकर शब के वक़्त फ़िरऔ़न के दरवाज़े पर पहुंचे दरवाज़ा खटखटाया पूछा आप कौन हैं हज़रत ने फ़रमाया मैं हूं मूसा रब्बुल आ़लमीन का रसूल। फ़िरऔ़न को ख़बर दी गई और सुबह के वक़्त आप बुलाये गए आपने पहुंच कर अल्लाह तआ़ला की रिसालत अदा की और फ़िरऔ़न के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मामूर किये गए थे वह पहुंचाया फ़िरऔ़न ने आपको पहचाना (फ़ा20) मुफ़स्सिरीन ने कहा तीस बरस उस ज़माना में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम फ़िरऔ़न के लिबास पहनते थे और उसकी सवारियों में सवार होते थे और उसके फ़रज़न्द मशहूर थे (फ़ा21) क़िब्ती को क़त्ल किया (फ़ा22) कि तुमने हमारी निअ़्मत की सिपास गुज़ारी न की और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया (फ़ा23) मैं न जानता था कि घूंसा मारने से वह शख़्स मर जाएगा मेरा मारना तादीब के लिए था न क़त्ल के लिए (फ़ा24) कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और शहर मदयन को चला गया (फ़ा25) मदयन से वापसी के वक़्त हुक्म से यहां या नबुव्वत मुराद है या इल्म। (फ़ा26) यानी इसमें तेरा क्या एहसान है कि तुमने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा खिलाया पहनाया क्योंकि मेरे तुझ तक पहुंचने का सबब तो यही हुआ कि तूने बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाया उनकी औलादों को क़त्ल किया यह तेरा ज़ुल्मे अ़ज़ीम इसका बाइस हुआ कि मेरे वालदैन मुझे परवरिश न कर सके और मेरे दरिया में डालने पर मजबूर हुए तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालदैन के पास रहता इस लिए यह बात क्या इस क़ाबिल है कि इसका एहसान जताया जाये फ़िरऔ़न मूसा अ़लैहिस्सलाम की इस तक़रीर से लाजवाब हुआ और उसने उसलूबे कलाम बदला और यह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरू की (फ़ा27) जिसके तुम अपने आपको रसूल बताते हो (फ़ा28) यानी अगर तुम अशिया को दलील से जानने की सलाहियत रखते हो तो इन चीज़ों की पैदाईश उसके वुजूद की काफ़ी दलील है ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिदलाल से हासिल हो इसी लिए अल्लाह तआ़ला की शान में मोक़न नहीं कहा जाता। (फ़ा29) उस वक़्त उसके गिर्द उसकी क़ौम के अशराफ़ में से पांच सौ शख़्स ज़ेवरों से आरास्ता ज़र्रीं कुर्सियों पर बैठे थे उन से फ़िरऔ़न का यह कहना क्या तुम ग़ौर से नहीं सुनते बईं माना था कि वह ज़मीन और आसमान को क़दीम समझते थे और उनके हुदूस के मुन्किर थे मतलब यह था कि जब यह चीज़ें क़दीम हैं तो उनके लिए रब की क्या हाजत अब हज़रत मूसा अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने इन चीज़ों से इस्तिदलाल पेश करना चाहा जिनका हुदूस और जिन की फ़ना मुशाहदा में आ चुकी है (फ़ा30) यानी अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तिदलाल नहीं कर सकते तो ख़ुद तुम्हारे नुफ़ूस से इस्तिदलाल पेश किया जाता है अपने आपको जानते हो पैदा हुए हो अपने बाप दादा को जानते हो कि वह फ़ना हो गए तो अपनी पैदाइश से और उनकी फ़ना से पैदा करने और फ़ना कर देने वाले के वजूद का सुबूत मिलता है। (फ़ा31) फ़िरऔ़न ने यह इसलिए कहा कि वह अपने सिवा किसी मअ़्बूद के वजूद का क़ाइल न था और जो उसके मअ़्बूद होने का एतेक़ाद न रखे उसको ख़ारिज अज़ अ़क़्ल कहता था और हक़ीक़तन इस तरह की गुफ़्तगू इज्ज़ के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है लेकिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़र्ज़ हिदायत व इरशाद अ़ला वजहुलकमाल अदा किया और उसकी इस तमाम ला यानी गुफ़्तगू के बावजूद फिर मज़ीद बयान की तरफ़ मुतवज्जह हुए। (फ़ा32) क्योंकि पूरब से आफ़ताब का तुलूअ़ करना और पच्छिम में ग़ुरूब हो जाना और साल की फ़सलों में एक हिसाबे मुअ़य्यन पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरह के निज़ाम यह सब उसके वजूद व क़ुदरत पर दलालत करते हैं (फ़ा33) अब फ़िरऔ़न मुतहय्यर हो गया और आसारे क़ुदरते इलाही के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उससे बन न आया तो।

(बक़िया सफ़हा 598 का) बक़ौल उनके हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बढ़कर हो और वह लोग अपने जादू से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ़्जेज़ात का मुक़ाबला करें ताकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिए हुज्जत बाक़ी न रहे और फ़िरऔ़नियों को यह कहने का मौक़ा मिल जाये कि यह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नबुव्वत की दलील नहीं (फ़ा41) वह दिन फ़िरऔ़नियों की ईद का था और इस मुक़ाबला के लिए वक़्ते चाश्त मुक़र्रर किया गया था। (फ़ा42) ताकि देखो कि दोनों फ़रीक़ क्या करते हैं और उनमें कौन ग़ालिब आता है (फ़ा43) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर इससे मक़सूद उनका जादूगरों का इत्तेबाअ़ करना न था बल्कि ग़रज़ यह थी कि इस हीला से लोगों को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इत्तबाअ़ से रोकें। (फ़ा44) तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा तुम्हें ख़ास एज़ाज़ दिये जायेंगे सबसे पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी सब से बाद तक दरबार में रहोगे उसके बाद जादूगरों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया कि क्या हज़रत पहले अपना अ़सा डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना सामाने सेहर डालें। (फ़ा45) ताकि तुम उसका अन्जाम देख लो। (फ़ा46) उन्हें अपने ग़लबा का इत्मीनान था क्योंकि सेहर के आमाल में जो इन्तेहा के अ़मल थे यह उनको काम में लाये थे और यक़ीने कामिल रखते थे कि अब कोई सेहर उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। (फ़ा47) जो उन्होंने जादू के ज़रीआ़ से बनाई थीं यानी उनकी रस्सियां और लाठियां जो जादू से अज़दहे बन कर दौड़ते नज़र आ रहे थे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा अज़दहा बन कर उन सब को निगल गया फिर उसको

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने दस्ते मुबारक में लिया तो वह मिस्ले साबिक़ अ़सा था जब जादूगरों ने यह देखा तो उन्हें यक़ीन हो गया कि यह जादू नहीं है।

(बक़िया सफ़हा 599 का) निस्बत कहा (फ़ा57) हमारी मुख़ालफ़त करके और बे हमारी इजाज़त के हमारी सरज़मीन से निकल कर। (फ़ा58) मुस्तइद हैं हथियार-बन्द हैं। (फ़ा59) यानी फ़िरऔ़नियों को (फ़ा60) फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के ग़र्क़ के बाद (फ़ा61) और उनमें से हर एक ने दूसरे को देखा। (फ़ा62) अब वह हम पर क़ाबू पा लेंगे न हम उनके मुक़ाबला की ताक़त रखते हैं न भागने की जगह है क्योंकि आगे दरिया है (फ़ा63) वादए इलाही पर कामिल भरोसा है

(बक़िया सफ़हा 600 का) और फ़िरऔ़न के चचाज़ाद थे और मरयम जिसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की क़ब्र का निशान बताया था जबकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनके ताबूत को दरिया से निकाला। (फ़ा72) कि उसने काफ़िरों को ग़र्क़ करके उनसे इन्तेक़ाम लिया। (फ़ा73) मोमिनीन पर जिन्हें ग़र्क़ से नजात दी (फ़ा74) यानी मुशरिकीन पर (फ़ा75) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जानते थे कि वह लोग बुत परस्त हैं बावजूद इसके आपका सवाल फ़रमाना इस लिए था ताकि उन्हें दिखा दें कि जिन चीज़ों को वह लोग पूजते हैं वह किसी तरह उसके मुस्तहिक़ नहीं। (फ़ा76) जब यह कुछ नहीं तो उन्हें तुम ने मअ़बूद किस तरह क़रार दिया। (फ़ा77) कि न यह इल्म रखते हैं न क़ुदरत न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़ा या ज़रर पहुंचा सकते हैं (फ़ा78) मैं उनका पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता (फ़ा79) मेरा रब है मेरा कारसाज़ है मैं उसकी इबादत करता हूं वह मुस्तहिक़े इबादत है उसके औसाफ़ यह हैं (फ़ा80) नेस्त से हस्त फ़रमाया और अपनी ताअ़त के लिए बनाया (फ़ा81) आदाबे ख़िल्लत की जैसी कि साबिक़ में हिदायत फ़रमा चुका है मसालेहे दुनिया व दीन की। (फ़ा82) और मेरा रोज़ी देने वाला है (फ़ा83) मेरे अमराज़ दूर करता है इब्ने अ़ता ने कहा माना यह हैं कि जब मैं ख़ल्क़ की दीद से बीमार होता हूं तो मुशाहदए हक़ से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है। (फ़ा84) मौत और हयात उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। (फ़ा85) अम्बिया मअ़्सूम हैं गुनाह उनसे सादिर नहीं होते उनका इस्तिग़फ़ार अपने रब के हुज़ूर तवाज़ोअ़ है और उम्मत के लिए तलबे मग़फ़िरत की तालीम है हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का इन सिफ़ाते इलाहिया को बयान करना अपनी क़ौम पर इक़ामते हुज्जत है कि मअ़बूद वही हो सकता है जिसके यह सिफ़ात हों। (फ़ा86) हुक्म से या इल्म मुराद है या हिक्मत या नबुव्वत।

(बक़िया सफ़हा 601 का) जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उसके अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाते हैं सिवा तीन के एक सदक़ए जारिया दूसरा वह माल जिससे वह लोग नफ़ा उठायें तीसरी नेक औलाद जो उसके लिए दुआ़ करे (फ़ा93) कि उसको देखेंगे (फ़ा94) बतरीक़े ज़जर व तौबीख़ के उनके शिर्क व कुफ़्र पर (फ़ा95) अ़ज़ाबे इलाही से बचा कर। (फ़ा96) यानी बुत और उनके पुजारी सब औंधे करके जहन्नम में डाल दिये जायेंगे (फ़ा97) यानी उसके इत्तेबाअ़ करने वाले जिन्न हों या इन्सान बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इबलीस के लश्करों से उसकी ज़ुर्रियत मुराद है (फ़ा98) जिन्होंने बुत परस्ती की दावत दी या वह पहले लोग जिनका हमने इत्तेबाअ़ किया या इबलीस और उसकी ज़ुर्रियत ने (फ़ा99) जैसे कि मोमिनीन के लिए अम्बिया और औलिया और मलाइका और मोमिनीन शफ़ाअ़त करने वाले हैं। (फ़ा100) जो काम आए यह बात कुफ़्फ़ार उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और मलाइका और सालिहीन ईमानदारों की शफ़ाअ़त कर रहे हैं और उनकी दोस्तियां काम आ रही हैं हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा मेरे फ़लां दोस्त का क्या हाल है और वह दोस्त गुनाहों की वजह से जहन्नम में होगा अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि इसके दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जायेंगे वह यह कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं है और न कोई ग़मख़्वार दोस्त हसन रहमतुल्लाह अ़लैह ने फ़रमाया ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्योंकि वह रोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त करेंगे। (फ़ा101) दुनिया में (फ़ा102) यानी नूह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब तमाम पैग़म्बरों की तकज़ीब है क्योंकि दीन तमाम रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों को तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दावत देते हैं।

(बक़िया सफ़हा 602 का) वह किसी नसब का हो।(मदारिक) (फ़ा107) वह क्या पेशे करते हैं मुझे इससे क्या मतलब मैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूं। (फ़ा108) वही उन्हें जज़ा देगा (फ़ा109) तो न तुम उन्हें ऐब लगाओ न पेशों के बाइस उनसे आ़र करो फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आपके पास आयें और आपकी बात मानें इसके जवाब में फ़रमाया (फ़ा110) यह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी ख़्वाहिशों को पूरा करूं और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसलमानों को अपने पास से निकाल दूं। (फ़ा111) बुरहान सही के साथ जिस से हक़ व बातिल में इम्तियाज़ हो जाये तो जो ईमान लाये वही मेरा मुक़र्रब है और जो ईमान न लाये वही दूर। (फ़ा112) दावत व अन्ज़ार से (फ़ा113) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में (फ़ा114) तेरी वही व रिसालत में मुराद आपकी यह थी कि मैं जो इनके हक़ में बद दुआ़ करता हूं इसका सबब यह नहीं है कि इन्होंने मुझे संगसार करने की धमकी दी न यह कि इन्होंने मेरे मुत्तबेईन को रज़ील कहा बल्कि मेरी दुआ़ का सबब यह है कि इन्होंने तेरे कलाम को झुठलाया और तेरी रिसालत के क़बूल करने से इन्कार किया। (फ़ा115) उन लोगों की शामते आमाल से (फ़ा116) जो आदमियों परिन्दों और हैवानों से भरी हुई थी (फ़ा117) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनके साथियों को नजात देने के बाद (फ़ा118) आ़द एक क़बीला है और दर असल यह एक शख़्स का नाम है जिसकी औलाद से यह क़बीला है (फ़ा119) और मेरी तकज़ीब न करो।

(बक़िया सफ़हा 604 का) इस में उससे मज़ाहमत न करो यह एक ऊंटनी थी जो उनके मोअ़जेज़ा तलब करने पर उनके हस्बे ख़्वाहिश ब-दुआ़ए हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम पत्थर से निकली थी उसका सीना साठ गज़ का था जब उसके पीने का दिन

होता तो वह वहां का तमाम पानी पी जाती और जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती। (मदारिक) (फ़ा140) न उसको मारो न उसकी कोंचें काटो। (फ़ा141) नुज़ूले अ़ज़ाब की वजह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि वह अ़ज़ाब इस क़दर अ़ज़ीम और सख़्त था कि जिस दिन में वह वाक़ेअ़ हुआ उसको उसकी वजह से बड़ा फ़रमाया गया (फ़ा142) कोंचें काटने वाले शख़्स का नाम क़िदार था और वह लोग उसके इस फ़ेअ़्ल से राज़ी थे इस लिए कोंचें काटने की निस्बत उन सब की तरफ़ की गई (फ़ा143) कोंचें काटने पर नुज़ूले अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से न कि मअ़सियत पर ताइबाना नादिम हुए हों या यह बात कि आसारे अ़ज़ाब देख कर नादिम हुए ऐसे वक़्त की नदामत नाफ़ेअ़ नहीं (फ़ा144) जिसकी उन्हें ख़बर दी गई थी तो हलाक हो गए। (फ़ा145) इसके यह माना भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक़ में ऐसे क़बीह और ज़लील फ़ेअ़ल के लिए तुम ही रह गए हो जहान के और लोग भी तो हैं उन्हें देख कर तुम्हें शरमाना चाहिए और यह माना भी हो सकते हैं कि ब-कसरत औरतें होते हुए इस फ़ेअ़्ले क़बीह का मुरतकिब होना इन्तेहा दर्जा की ख़बासत है।

(बक़िया सफ़हा 605 का) की दावत का यही उनवान रहा क्योंकि वह सब हज़रात अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और उसकी इताअ़त और इख़्लास फ़िलइबादत का हुक्म देते और तबलीग़े रिसालत पर कोई अज्र नहीं लेते थे लिहाज़ा सब ने यही फ़रमाया। (फ़ा156) लोगों के हुक़ूक़ कम न करो नाप और तौल में। (फ़ा157) रहज़नी और लूट मार करके और खेतियां तबाह करके यही उन लोगों की आ़दतें थीं हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें इनसे मना फ़रमाया।

(बक़िया सफ़हा 606 का) तमाम आज़ा पर उसका असर पड़ता है तो वह मिस्ले रईस के है वही मौज़अ़ है अ़क़्ल का तो अमीर मुतलक़ हुआ और तकलीफ़ जो अक़्ल व फ़हम के साथ मशरूत है उसी की तरफ़ राजेअ़ हुई (फ़ा164) *इन्नहू* की ज़मीर का मरजअ़ अगर क़ुरआन हो तो इसके माना यह होंगे कि इसका ज़िक्र तमाम कुतुबे समाविया में है और अगर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ ज़मीर राजेअ़ हो तो माना यह होंगे कि अगली किताबों में आपकी नअ़त व सिफ़त मज़कूर है। (फ़ा165) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़े नबुव्वत व रिसालत पर। (फ़ा166) अपनी किताबों से और लोगों को ख़बरें देते हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने यहूदे मदीना के पास अपने मोअ़्तमिदीन को यह दरियाफ़्त करने भेजा कि क्या नबीए आख़िरुज़्ज़मां सय्यदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत उनकी किताबों में कोई ख़बर है इसका जवाब उलमाए यहूद ने यह दिया कि यही उनका ज़माना है और उनकी नअ़त व सिफ़त तौरेत में मौजूद है। उलमाए यहूद में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इब्ने यामीन और सअ़्लबा और असद और असीद यह हज़रात जिन्होंने तौरेत में हुज़ूर के औसाफ़ पढ़े थे हुज़ूर पर ईमान लाये। (फ़ा167) माना यह हैं कि हमने यह क़ुरआने करीम एक फ़सीह बलीग़ अ़रबी नबी पर उतारा जिसकी फ़साहत अहले अ़रब को मुसल्लम है और वह जानते हैं कि क़ुरआने करीम मोअ़्जिज़ है और इसकी मिस्ल एक सूरत बनाने से भी तमाम दुनिया आ़जिज़ है इलावा बरीं उलमाए अहले किताब का इत्तेफ़ाक़ है कि इसके नुज़ूल से क़बल इसके नाज़िल होने की बशारत और उस नबी की सिफ़त उनकी किताबों में उन्हें मिल चुकी है। इससे क़तई तौर पर साबित होता है कि यह नबी अल्लाह के भेजे हुए हैं और यह किताब उसकी नाज़िल फ़रमाई हुई है और कुफ़्फ़ार जो तरह तरह की बेहूदा बातें इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं सब बातिल हैं और ख़ुद कुफ़्फ़ार भी मुतहय्यर हैं कि इसके ख़िलाफ़ क्या बात कहें इस लिए कभी उसको पहलों की दास्तानें कहते हैं कभी शेअ़र कभी संहर और कभी यह कि मआ़ज़ल्लाह इसको ख़ुद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बना लिया है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ उसकी ग़लत निस्बत कर दी है इस तरह के बेहूदा एतेराज़ मुआ़निद हर हाल में कर सकता है हत्ता कि अगर बिलफ़र्ज़ यह क़ुरआन किसी ग़ैर अरबी शख़्स पर नाज़िल किया जाता जो अ़रबी की महारत न रखता और बावजूद इसके वह ऐसा मोअ़जिज़ क़ुरआन पढ़कर सुनाता जब भी यह लोग उसी तरह कुफ़्र करते जिस तरह उन्होंने अब कुफ़्र व इन्कार किया क्योंकि उनके कुफ़्र व इन्कार का बाइस इनाद है। (फ़ा168) यानी उन काफ़िरों के जिनका कुफ़्र इख़्तियार करना और उस पर मुसिर रहना हमारे इल्म में है तो उनके लिए हिदायत का कोई भी तरीक़ा इख़्तियार किया जाये किसी हाल में वह कुफ़्र से पलटने वाले नहीं।

(बक़िया सफ़हा 607 का) वह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं।(225) (फ़ा189) और वह कहते हैं जो नहीं करते।(226) (फ़ा190) मगर वह जो ईमान लाये और अच्छे काम किये (फ़ा191) और ब-कसरत अल्लाह की याद की (फ़ा192) और बदला लिया (फ़ा193) बाद उसके कि उन पर ज़ुल्म हुआ (फ़ा194) और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम (फ़ा195) कि किस करवट पर पलटा खायेंगे।(227) (फ़ा196)

(फ़ा169) ताकि हम ईमान लायें और तस्दीक़ करें लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार को उस अ़ज़ाब की ख़बर दी तो बराहे तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा कहने लगे कि यह अ़ज़ाब कब आएगा इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा170) और फ़ौरन हलाक न करदें। (फ़ा171) यानी अ़ज़ाबे इलाही (फ़ा172) यानी दुनिया की ज़िन्दगानी और उसका ऐश ख़्वाह तवील भी हो लेकिन न वह अ़ज़ाब को दफ़अ़ कर सकेगा न उसकी शिद्दत कम कर सकेगा (फ़ा173) पहले हुज्जत क़ाइम कर देते हैं डर सुनाने वालों को भेज देते हैं उसके बाद भी जो लोग राह पर नहीं आते और हक़ को क़बूल नहीं करते उन पर अ़ज़ाब करते हैं (फ़ा174) इसमें कुफ़्फ़ार का रद है जो कहते थे कि जिस तरह शयातीन काहिनों के पास आसमानी ख़बरें लाते हैं उसी तरह मआ़ज़ल्लाह हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास क़ुरआन लाते हैं इस आयत में उनके इस ख़्याल को बातिल कर दिया कि यह ग़लत है (फ़ा175) कि क़ुरआन लायें। (फ़ा176) क्योंकि यह उनके

मक़दूर से बाहर है। (फ़ा177) यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वत्तस्लीमात की तरफ़ जो वही होती है उसको अल्लाह तआ़ला ने महफ़ूज़ कर दिया जब तक कि फ़रिश्ता उसको बारगाहे रिसालत में पहुंचाये इससे पहले शयातीन इसको नहीं सुन सकते इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से फ़रमाता है (फ़ा178) हुज़ूर के क़रीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें एलान के साथ अन्ज़ार फ़रमाया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि अहादीसे सहीहा में वारिद है (फ़ा179) यानी लुत्फ़ो करम फ़रमाओ (फ़ा180) जो सिद्क़ व इख़्लास से आप पर ईमान लायें ख़्वाह वह आपसे क़राबत रखते हों या न रखते हों (फ़ा181) यानी अल्लाह तआ़ला तुम अपने तमाम काम उसको तफ़्वीज़ करो। (फ़ा182) नमाज़ के लिए या दुआ़ के लिए या हर उस मक़ाम पर जहां तुम हो। (फ़ा183) जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले असहाब के अहवाल मुलाहज़ा फ़रमाने के लिए शब को दौरा करते हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा माना यह हैं कि जब तुम इमाम होकर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम व रुकूअ़ व सुजूद व क़ुऊद में गुज़रते हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा माना यह हैं कि वह आपकी गर्दिशे चश्म को देखता है नमाज़ों में क्योंकि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पसो पेश यकसाँ मुलाहज़ा फ़रमाते थे और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस में है बख़ुदा मुझ पर तुम्हारा ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ मख़्फ़ी नहीं मैं तुम्हें अपने पसे पुश्त देखता हूं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और माना यह हैं कि ज़मानए हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमुस्सलाम से लेकर हज़रत अब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन की असलाब व अरहाम में आपके दौरे को मुलाहज़ा फ़रमाता है इससे साबित हुआ कि आपके तमाम उसूल आबा व अजदाद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तक सब के सब मोमिन हैं (मदारिक व जुमल वग़ैरह) (फ़ा184) तुम्हारे क़ौल व अ़मल और तुम्हारी नीयत को उसके बाद अल्लाह तआ़ला उन मुशरिकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर शैतान उतरते हैं यह इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा185) मिस्ल मुसैलमा वग़ैरह काहिनों के (फ़ा186) जो उन्होंने मलाइका से सुनी होती है (फ़ा187) क्योंकि वह फ़रिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ़ से बहुत झूठ मिला देते हैं हदीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सौ झूठ उसके साथ मिलाते हैं और यह भी उस वक़्त तक था जब तक कि वह आसमान पर पहुंचने से रोके न गए थे। (फ़ा188) उनके अशआ़र में कि उनको पढ़ते हैं रिवाज देते हैं बावजूदेकि वह अशआ़र किज़्ब व बातिल होते हैं। **शाने नुज़ूलः** यह आयत शुअ़राए कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिज्व में शेअ़्र कहते थे और कहते थे कि जैसा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं और उनकी क़ौम के गुमराह लोग उनसे उन अशआ़र को नक़ल करते थे उन लोगों की आयत में मज़म्मत फ़रमाई गई (फ़ा189) और हर तरह की झूठी बातें बनाते हैं और हर लग्व व बातिल में सुख़न आराई करते हैं झूठी मदह करते हैं झूठी हिज्व करते हैं (फ़ा190) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाये तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि शेअ़र से पुर हो मुसलमान शुअ़रा जो इस तरीक़ा से इजतेनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तस्ना किये गए। (फ़ा191) इसमें शुअ़राए इस्लाम का इस्तिसना फ़रमाया गया वह हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त लिखते हैं अल्लाह तआ़ला की हम्द लिखते हैं इस्लाम की मदह लिखते हैं पन्द व नसाएह लिखते हैं इस पर अज्र व सवाब पाते हैं बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में हज़रत ह़स्सान के लिए मिम्बर बिछाया जाता था वह उस पर खड़े होकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मफ़ाख़िर पढ़ते थे और कुफ़्फ़ार की बदगोईयों का जवाब देते थे और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम उनके हक़ में दुआ़ फ़रमाते जाते थे बुख़ारी की हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बाज़ शेअ़र हिकमत होते हैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिसे मुबारक में अक्सर शेअ़र पढ़े जाते थे जैसा कि तिर्मिज़ी में जाबिर बिन समरा से मरवी है हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि शेअ़र कलाम है बाज़ अच्छा होता है बाज़ बुरा अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो शोअ़बी ने कहा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ शेअ़र कहते थे हज़रत अ़ली इन सब से ज़्यादा शेअ़र फ़रमाने वाले थे रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम। (फ़ा192) और शेअ़र उनके लिए ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत का सबब न हो सका बल्कि उन लोगों ने जब शेअ़र कहा भी तो अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना और उसकी तौहीद और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त और असहाबे किराम व सुलहाए उम्मत की मदह और हिकमत व मौएज़त और ज़ुह्द व अदब में। (फ़ा193) कुफ़्फ़ार से उनकी हिज्व का। (फ़ा194) कुफ़्फ़ार की तरफ़ से कि उन्होंने मुसलमानों की और उनके पेशवाओं की हिज्व की इन हज़रात ने उसको दफ़ा किया और उसके जवाब दिये यह मज़मूम नहीं हैं बल्कि मुस्तहिक़े अज्र व सवाब हैं हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी यह उन हज़रात का जिहाद है। (फ़ा195) यानी मुशरिकीन जिन्होंने सय्येदुत्ताहिरीन अफ़ज़लुलख़ल्क़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिज्व की। (फ़ा196) मौत के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ़ और वह बुरा ही ठिकाना है।

(बक़िया सफ़हा 608 का) को दर्दे ज़ेह शुरू हो गया था (फ़ा10) और सर्दी की तकलीफ़ से अमन पाओ (फ़ा11) यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तहिय्यत है अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बरकत के साथ। (फ़ा12) चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बहुक्म इलाही अ़सा डाल दिया और वह सांप हो गया।

(बक़िया सफ़हा 610 का) ही में कुचल जायेंगी कि वह गुज़रते हों और इस तरफ़ इल्तेफ़ात न करें च्यूंटी की यह बात हज़रत सुलैमान ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आपके समअ़े मुबारक तक पहुंचाती थी जब आप च्यूंटियों की वादी पर पहुंचे तो आपने अपने लश्करों को ठहरने का हुक्म दिया यहां तक कि च्यूंटियां अपने घरों में दाख़िल हो गईं सैर

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अगरचे हवा पर थी मगर बईद नहीं है कि यह मक़ाम आपका जाए नुज़ूल हो (फ़ा30) अम्बिया का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि अहादीस में वारिद हुआ है वह हज़रात क़हक़हा मार कर नहीं हंसते (फ़ा31) नबुव्वत व मुल्क व इल्म अ़ता फ़रमा कर (फ़ा32) हज़राते अम्बिया व औलिया (फ़ा33) उसके पर उखाड़ कर या उसको उसके प्यारों से जुदा करके या उसको उसके अक़रान का ख़ादिम बना कर या उसको ग़ैर जानवरों के साथ क़ैद कर के और हुद हुद को हस्बे मसलेहत अ़ज़ाब करना आपके लिए हलाल था और जब परिन्द आपके लिए मुसख़्ख़र किये गए थे तो तादीब व सियासत मुक़्तज़ाए तस्ख़ीर है (फ़ा34) जिससे उसकी मअ़्ज़ूरी ज़ाहिर हो (फ़ा35) निहायत इज्ज़ व इन्केसार और अदब व तवाज़ोअ़ के साथ माफ़ी चाह कर। (फ़ा36) जिस का नाम बिलक़ीस है। (फ़ा37) जो बादशाहों के लिए शायान होता है (फ़ा38) जिसका तूल अस्सी गज़ अ़रज़ चालीस सोने चाँदी का जवाहरात के साथ मुरस्सअ़ (फ़ा39) क्योंकि वह लोग आफ़ताब परस्त मजूसी थे (फ़ा40) सीधी राह से मुराद तरीक़े हक़ व दीने इस्लाम है।

(बक़िया सफ़हा 611 का) के पास पहुंचा उस वक़्त बिलक़ीस के गिर्द उसके अअ़्यान व वुज़रा का मजमा था हुद हुद ने वह मकतूब बिलक़ीस की गोद में डाल दिया और वह उसको देख कर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उस पर मुहर देख कर। (फ़ा45) उसने उस ख़त को इ़ज़्ज़त वाला या इस लिए कहा कि उस पर मुहर लगी हुई थी इससे उसने जाना कि किताब का भेजने वाला जलीलुल मन्ज़िलत बादशाह है या इस लिए कि उस मकतूब की इब्तेदा अल्लाह तआ़ला के नामे पाक से थी फिर उसने बताया कि वह मकतूब किस की तरफ़ से आया है चुनांचे कहा। (फ़ा46) यानी मेरी तअ़्मीले इरशाद करो और तकब्बुर न करो जैसा कि बाज़ बादशाह किया करते हैं (फ़ा47) फ़रमांबरदाराना शान से मकतूब का यह मज़मून सुना कर बिलक़ीस अपनी अअ़्याने दौलत की तरफ़ मुतवज्जह हुई। (फ़ा48) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग उसके लिए तैयार हैं बहादुर और शुजाअ़् हैं साहबे क़ुव्वत व तवानाई हैं कसीर फ़ौजें रखते हैं जंग आज़मा हैं (फ़ा49) ऐ मलका हम तेरी इताअ़त करेंगे तेरे हुक्म के मुन्तज़िर हैं इस जवाब में उन्होंने यह इशारा किया कि उनकी राय जंग की है या उनका मुद्दआ़ यह हो कि हम जंगी लोग हैं राय और मशवरा हमारा काम नहीं तू ख़ुद साहबे अ़क़्ल व तदबीर है हम बहरहाल तेरा इत्तेबाअ़् करेंगे जब बिलक़ीस ने देखा कि यह लोग जंग की तरफ़ माइल हैं तो उसने उन्हें उनकी राय की ख़ता पर आगाह किया और जंग के नताइज सामने किये। (फ़ा50) अपने ज़ोर व क़ुव्वत से (फ़ा51) क़त्ल और क़ैद और एहानत के साथ (फ़ा52) यही बादशाहों का तरीक़ा है बादशाहों की आ़दत का जो उसको इल्म था उसकी बिना पर उसने यह कहा और मुराद उसकी यह थी कि जंग मुनासिब नहीं है इसमें मुल्क और अहले मुल्क की तबाही व बरबादी का ख़तरा है इसके बाद उसने अपनी राय का इज़्हार किया और कहा (फ़ा53) इससे मालूम हो जाएगा कि वह बादशाह हैं या नबी क्योंकि बादशाह इ़ज़्ज़त व एहतेराम के साथ हदिया क़बूल करते हैं अगर वह बादशाह हैं तो हदिया क़बूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो हदिया क़बूल न करेंगे और सिवा इसके कि हम उनके दीन का इत्तेबाअ़् करें वह और किसी बात से राज़ी न होंगे तो उसने पांच सौ गुलाम और पांच सौ बांदियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ आरास्ता करके ज़र निगार ज़ीनों पर सवार करके भेजे और पांच सौ ईंटें सोने की और जवाहर से मुरस्सअ़ ताज और मुश्क व अ़म्बर वग़ैरह वग़ैरह मअ़ एक ख़त के अपने क़ासिद के साथ रवाना किये हुद हुद यह देख कर चल दिया और उसने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास सब ख़बर पहुंचाई आपने हुक्म दिया कि सोने चांदी की ईंटें बनाकर नौ फ़रसंग के मैदान में बिछा दी जायें और उसके गिर्द सोने चांदी से इहाता की बुलन्द दीवार बना दी जाये और बर्रो बहर के ख़ूबसूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दायें बायें हाज़िर किये जायें। (फ़ा54) यानी बिलक़ीस का प्यामी मअ़ अपनी जमाअ़त के हदिया लेकर। (फ़ा55) यानी दीन और नबुव्वत और हिकमत व मुल्क (फ़ा56) माल व असबाबे दुनिया

(बक़िया सफ़हा 612 का) में हाज़िर होने का इन्तेज़ाम किया ताकि देखे कि आप उसको क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वह एक लश्करे गिराँ लेकर आपकी तरफ़ रवाना हुई जिसमें बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी जब इतने क़रीब पहुंच गई कि हज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग का फ़ासला रह गया (फ़ा59) इससे आपका मुद्दआ़ यह था कि उसका तख़्त हाज़िर करके उसको अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और अपनी नबुव्वत पर दलालत करने वाला मोअ़्जेज़ा दिखावें बाज़ों ने कहा है कि आपने चाहा कि उसके आने से क़बल इसकी वज़अ़ बदल दें और उससे उसकी अ़क़्ल का इम्तेहान फ़रमायें कि पहचान सकती है या नहीं। (फ़ा60) और आपका इजलास सुबह से दोपहर तक होता था (फ़ा61) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं इससे जल्द चाहता हूं (फ़ा62) यानी आपके वज़ीर आसिफ़ बिन बरख़िया जो अल्लाह तआ़ला का इस्मे आज़म जानते थे (फ़ा63) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया लाओ हाज़िर करो आसिफ़ ने अ़र्ज़ किया आप नबी इब्ने नबी हैं और जो रुतबा बारगाहे इलाही में आपको हासिल है यहां किस को मुयस्सर है आप दुआ़ करें तो वह आप के पास ही होगा आपने फ़रमाया तुम सच कहते हो और दुआ़ की उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की कुर्सी के क़रीब नमूदार हुआ। (फ़ा64) कि इस शुक्र का नफ़ा ख़ुद उस शुक्रगुज़ार की तरफ़ आयद होता है। (फ़ा65) इस जवाब से उसका कमाले अ़क़्ल मालूम हुआ अब उससे कहा गया कि यह तेरा ही तख़्त है दरवाज़ा बन्द करने क़ुफ़्ल लगाने पहरादार मुक़र्रर करने से क्या फ़ाइदा हुआ इस पर उसने कहा। (फ़ा66) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और आपकी सेहत नबुव्वत की हुद हुद के वाक़िआ़ से और अमीरे वफ़्द से। (फ़ा67) हमने आपकी इताअ़त और आपकी फ़रमांबरदारी इख़्तियार की। (फ़ा68) अल्लाह की इबादत व तौहीद से या इस्लाम की तरफ़ तक़द्दुम से।

(बक़िया सफ़हा 613 का) भलाई से मुराद आफ़ियत व रहमत है (फ़ा79) अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले कुफ़्र से तौबा करके ईमान लाकर (फ़ा80) और दुनिया में अ़ज़ाब न किया जाये (फ़ा81) हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम जब मबऊस हुए और क़ौम ने तकज़ीब की उसके बाइस बारिश रुक गई क़हत हो गया लोग भूके मरने लगे उसको उन्होंने हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ निस्बत किया और आपकी आमद को बदशगूनी समझा (फ़ा82) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बदशगूनी जो तुम्हारे पास आई यह तुम्हारे कुफ़्र के सबब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आई। (फ़ा83) आज़माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइस अ़ज़ाब में मुब्तला हो (फ़ा84) यानी समूद के शहर में जिसका नाम हजर है उनके शरीफ़ज़ादों में से नौ शख़्स थे जिनका सरदार क़िदार बिन सालिफ़ था यही लोग हैं जिन्होंने नाक़ा की कोंचें काटने में सई की थी। (फ़ा85) यानी रात के वक़्त उनको और उनकी औलाद को और उनके मुत्तेबईन को जो उनपर ईमान लाये हैं क़त्ल कर देंगे (फ़ा86) जिसको उनके ख़ून का बदला तलब करने का हक़ होगा। (फ़ा87) यानी उनके मक्र की जज़ा यह दी कि उनके अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाई।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
يَّعْدِلُوْنَ ۞ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ أَمَّنْ
يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۞ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ
يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۞ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

अम्मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समाइ माअन् फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ-इलाहुम् म-अल्लाहि बल् हुम् क़ौमुंय्यअ्दिलून(60) अम्मन् ज-अ-लल् अर्-ज़ क़रारंव् व ज-अ-ल ख़िला-लहा अन्हारंव् व ज-अ-ल लहा रवासि-य व ज-अ-ल बैनल्-बह्रैनि हाजिज़न् अ-इलाहुम् म-अल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून(61)अम्मंय्युजीबुल् मुज़्तर्-र इज़ा दआहु व यक्शिफ़ुस् सू-अ व यज्-अलुकुम् ख़ु-लफ़ाअल् अर्ज़ि अ-इलाहुम् म-अल्लाहि क़लीलम् मा त-ज़क्करून (62)अम्मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमा-तिल् बर्रि वल्बह्रि व मंय्युर्सिलुर् रिया-ह बुश्रम् बै-न यदै रह्-मतिही अ-इलाहुम् म-अल्लाहि तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून(63)अम्मंय्यब्दउल् ख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू व मंय्यर् ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि अ-इलाहुम् म-अल्लाहि क़ुल् हातू बुर्हा-नकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(64)क़ुल ला यअ्-लमु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़िल्ग़ै-ब इल्लल्लाहु व मा यश्अुरू-न अय्या-न युब्असून(65)बलिद्दा-र-क अिल्मुहुम्

या वह जिसने आसमान व ज़मीन बनाए (फ़ा103) और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे बाग़ उगाए रौनक़ वाले तुम्हारी ताक़त न थी कि उनके पेड़ उगाते (फ़ा104) क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है (फ़ा105) बल्कि वह लोग राह से कतराते हैं।(60) (फ़ा106) या वह जिसने ज़मीन बसने को बनाई और उसके बीच में नहरें निकालीं और उसके लिए लंगर बनाए (फ़ा107) और दोनों समुन्दरों में आड़ रखी (फ़ा108) क्या अल्लाह के साथ और ख़ुदा है बल्कि उनमें अक्सर जाहिल हैं।(61) (फ़ा109) या वह जो लाचार की सुनता है (फ़ा110) जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन के वारिस करता है (फ़ा111) क्या अल्लाह के साथ और ख़ुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो।(62) या वह जो तुम्हें राह दिखाता है (फ़ा112) ख़ुश्की और तरी की अंधेरियों में (फ़ा113) और वह कि हवायें भेजता है अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी सुनाती (फ़ा114) क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बरतर है अल्लाह उनके शिर्क से।(63) या वह जो ख़ल्क़ की इब्तेदा फ़रमाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा (फ़ा115) और वह जो तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है (फ़ा116) क्या अल्लाह के साथ और कोई ख़ुदा है तुम फ़रमाओ कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।(64) (फ़ा117) तुम फ़रमाओ ख़ुद ग़ैब नहीं जानते जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं मगर अल्लाह (फ़ा118) और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जायेंगे।(65) क्या उनके इल्म का सिलसिला

(फ़ा103) अज़ीम तरीन अशिया जो मुशाहदे में आती हैं और अल्लाह तआला की क़ुदरते अज़ीमा पर दलालत करती हैं उनका ज़िक्र फ़रमाया माना यह हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वह जिसने आसमान और ज़मीन जैसी अज़ीम और अजीब मख़्लूक़ बनाई। (फ़ा104) यह तुम्हारी क़ुदरत में न था। (फ़ा105) क्या यह दलाइले क़ुदरत देखकर ऐसा कहा जा सकता है हरगिज़ नहीं वह वाहिद है उसके सिवा कोई मअ्बूद नहीं। (फ़ा106) जो उसके लिए शरीक ठहराते हैं (फ़ा107) वज़नी पहाड़ जो उसे जुम्बिश से रोकते हैं (फ़ा108) कि खारी मीठे मिलने न पायें (फ़ा109) जो अपने रब की तौहीद और उसके क़ुदरत व इख़्तियार को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते (फ़ा110) और हाजत रवाई फ़रमाता है। (फ़ा111) कि तुम उसमें सुकूनत करो और क़रनन बाद क़रनिन उसमें मुतसर्रिफ़ रहो (फ़ा112) तुम्हारे मनाज़िल व मक़ासिद की (फ़ा113) सितारों से और अलामतों से (फ़ा114) रहमत से मुराद यहां बारिश है (फ़ा115) उसकी मौत के बाद अगरचे मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने के कुफ़्फ़ार **(बक़िया सफ़हा 647 पर)**

فِى الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا
الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

फ़िल्आख़ि–रति बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन्हा बल् हुम् मिन्हा अ़मून(66)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू अ–इज़ा कुन्ना तुराबंव् व आबाउना अ–इन्ना ल–मुख़्रजून(67)ल–क़द् वुअ़िद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(68)क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् मुज्रिमीन(69)व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम् मिम्मा यम्कुरून(70)व यक़ूलू–न मता हाज़ल् वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (71)क़ुल् अ़सा अंय्यकू–न रदि–फ़ लकुम् बअ़्ज़ुल्लज़ी तस्तअ़्जिलून (72)व इन्–न रब्ब–क लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला यश्कुरून(73)व इन्–न रब्ब–क ल–यअ़्–लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून(74)व मा मिन् ग़ाइ–बतिन् फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन(75)इन्–न हाज़ल्क़ुरआ–न यक़ुस्सु अ़ला बनी इस्राई–ल अक्स–रल्लज़ी हुम् फ़ीहि यख़्–तलिफ़ून(76)व इन्नहू ल–हुदंव् व रह्–मतुल् लिल्मुअ्मिनीन (77)इन्–न रब्ब–क यक़्ज़ी बै–नहुम् बिहुक्मिही व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् अ़लीम(78)फ़–त–वक्कल् अ़–लल्लाहि इन्न–क अ़लल् हक़्क़िल् मुबीन(79)इन्न–क ला तुस्मिअ़ुल्मौता

आख़िरत के जानने तक पहुंच गया (फ़ा119) कोई नहीं वह उसकी तरफ़ से शक में हैं (फ़ा120) बल्कि वह उससे अन्धे हैं।(66) (रुकूअ़ 1) और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जायेंगे क्या हम फिर निकाले जायेंगे।(67) (फ़ा121) बेशक इसका वादा दिया गया हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं को यह तो नहीं मगर अगलों की कहानियाँ।(68) (फ़ा122) तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा हुआ अन्जाम मुजरिमों का।(69) (फ़ा123) और तुम उन पर ग़म न खाओ (फ़ा124) और उनके मक्र से दिल तंग न हो।(70) (फ़ा125) और कहते हैं कब आएगा यह वादा (फ़ा126) अगर तुम सच्चे हो।(71) तुम फ़रमाओ क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बाज़ वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो।(72) (फ़ा127) और बेशक तेरा रब फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर (फ़ा128) लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते।(73) (फ़ा129) और बेशक तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपी है और जो ज़ाहिर करते हैं।(74) (फ़ा130) और जितने ग़ैब हैं आसमान और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं।(75)(फ़ा131) बेशक यह कुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी इसराईल से अक्सर वह बातें जिसमें वह इख़्तिलाफ़ करते हैं।(76) (फ़ा132) और बेशक वह हिदायत और रहमत है मुसलमानों के लिए।(77) बेशक तुम्हारा रब उनके आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वही है इज़्ज़त वाला इल्म वाला।(78) तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तुम रौशन हक़ पर हो।(79) बेशक तुम्हारे सुनाए नहीं सुनते

(फ़ा119) और उन्हें क़ियामत क़ाइम होने का इल्म व यक़ीन हासिल हो गया जो वह उसका वक़्त दरियाफ़्त करते हैं (फ़ा120) उन्हें अभी तक क़ियामत के आने का यक़ीन नहीं है (फ़ा121) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा। (फ़ा122) यानी (मआ़ज़ल्लाह) झूठी बातें (फ़ा123) कि वह इन्कार के सबब अ़ज़ाब से हलाक किये गए (फ़ा124) उनके एअ़राज़ व तकज़ीब करने और इस्लाम से महरूम रहने के सबब। (फ़ा125) क्योंकि अल्लाह आप का हाफ़िज़ व नासिर है। (फ़ा126) यानी यह वादा अ़ज़ाब का कब पूरा होगा। (फ़ा127) यानी अ़ज़ाबे इलाही चुनान्चे वह अ़ज़ाब रोज़े बद्र उन पर आ ही गया और बाक़ी को वह बाद **(बक़िया सफ़हा 647 पर)**

الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ
عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ
إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ
لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ
وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

व ला तुस्मिअुस्सुम्मद्दुआ–अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन(80)व मा अन्–त बिहादिल्–अुम्यि अन् ज़ला–लतिहिम् इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून(81)व इज़ा व–क–अ्ल्क़ौलु अ्लैहिम् अख़्–रज्ना लहुम् दाब्बतम् मिनलअर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् अन्नन्ना –स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून(82)व यौ–म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम् मिम्मंय्यु –कज़्ज़िबु बिआ–यातिना फ़हुम् यू–ज़अून(83)हत्ता इज़ा जाऊ का–ल अ–कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम् तुहीतू बिहा अ्ल्मन् अम्मा जा कुन्तुम् तअ्–मलून(84) व व–क–अ्ल्क़ौलु अ्लैहिम् बिमा ज–लमू फ़हुम् ला यन्तिकून(85)अ–लम् यरौ अन्ना ज–अ्ल्नल् लै–ल लियस्कुनू फ़ीहि वन्नहा–र मुब्सिरन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयातिल् लिक़ौ–मिंय्युअ्मिनून(86)व यौ–म युन्फ़खु फ़िस्सूरि फ़–फ़ज़ि–अ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल् अर्ज़ि इल्ला मन् शा–अल्लाहु व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन(87)व त–रल्जिबा–ल तह्–सबुहा जामि–द–तंव् व हि–य तमुर्रु मर्रस्सहाबि सुन्–अ्ल्लाहिल् लज़ी अत्–क़–न कुल्–ल शैइन् इन्नहू ख़बीरुम् बिमा तफ़्–अ्लून(88)मन् जा–अ बिल्–ह–स–नति

मुर्दे (फ़ा133) और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ देकर।(80) (फ़ा134) और अन्धों को (फ़ा135) गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं (फ़ा136) और वह मुसलमान हैं।(81) और जब बात उन पर आ पड़ेगी (फ़ा137) हम ज़मीन से उनके लिए एक चौपाया निकालेंगे (फ़ा138) जो लोगों से कलाम करेगा (फ़ा139) इस लिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे।(82) (फ़ा140) (रुकूअ़ 1) और जिस दिन उठायेंगे हम हर गरोह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुठलाती है (फ़ा141) तो उनके अगले रोके जायेंगे कि पिछले उनसे आ मिलें।(83) यहां तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे (फ़ा142) फ़रमाएगा क्या तुमने मेरी आयतें झुठलाईं हालांकि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुंचता था (फ़ा143) या क्या काम करते थे।(84) (फ़ा144) और बात पड़ चुकी उन पर (फ़ा145) उनके ज़ुल्म के सबब तो वह अब कुछ नहीं बोलते।(85) (फ़ा146) क्या उन्होंने न देखा कि हमने रात बनाई कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया सुझाने वाला बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए कि ईमान रखते हैं।(86) (फ़ा147) और जिस दिन फूंका जाएगा सूर (फ़ा148) तो घबराए जायेंगे जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (फ़ा149) मगर जिसे ख़ुदा चाहे (फ़ा150) और सब उसके हुज़ूर हाज़िर हुए आ़जिज़ी करते।(87) (फ़ा151) और तू देखेगा पहाड़ों को ख़्याल करेगा कि वह जमे हुए हैं और वह चलते होंगे बादल की चाल (फ़ा152) यह काम है अल्लाह का जिसने हिकमत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की।(88) जो नेकी लाए (फ़ा153)

(फ़ा133) मुर्दों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं जिन के दिल मुर्दा हैं चुनांचे इसी आयत में उनके मुक़ाबिल अहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बि–आयातिना जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर इस्तिदलाल करते हैं। उनका इस्तिदलाल ग़लत है चूंकि यहां मुर्दा कुफ़्फ़ार को फ़रमाया गया और उनसे भी मुतलक़न हर कलाम के सुनने की नफ़ी मुराद नहीं है बल्कि पन्द व मौअ़ेज़त और कलामे हिदायत की ब–समअ़ कबूल सुनने की नफ़ी है और मुराद यह है कि काफ़िर **(बक़िया सफ़हा 647 पर)**

فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ۝ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۭ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ

رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ

اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

फ़—लहू ख़ैरुम् मिन्हा व हुम् मिन् फ़—ज—इंय्यौ—मइज़िन् आमिनून(89)व मन् जा—अ बिस्सय्यि—अति फ़—कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि हल् तुज्ज़ौ—न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्—मलून (90)इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बु—द रब्—ब हाज़िहिल् बल्दतिल् लज़ी हर्र—महा व लहू कुल्लु शैइंव् व उमिर्तु अन् अकू—न मिनल्मुस्लिमीन(91)व अन् अत्लु—वल् कुर्आ—न फ़—मनिह्तदा फ़—इन्नमा यह्—तदी लि—नफ़्सिही व मन् ज़ल्—ल फ़कुल् इन्नमा अना मिनल् मुन्ज़िरीन(92)व कुलिल्हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ़—तअ्रिफ़ू—नहा व मा रब्बु—क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून(93)

उसके लिए उससे बेहतर सिला है (फ़ा154) और उनको उस दिन की घबराहट से अमान है।(89) (फ़ा155) और जो बदी लाए (फ़ा156) तो उनके मुंह औंधाए गए आग में (फ़ा157) तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का जो करते थे।(90) (फ़ा158) मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि पूजूं इस शहर के रब को (फ़ा159) जिसने इसे हुरमत वाला किया है (फ़ा160) और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमांबरदारों में हूं।(91) और यह कि कुरआन की तिलावत करूं (फ़ा161) तो जिस ने राह पाई उसने अपने भले को राह पाई (फ़ा162) और जो बहके (फ़ा163) तो फ़रमा दो कि मैं तो यही डर सुनाने वाला हूं।(92) (फ़ा164) और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए हैं अन्करीब वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखायेगा तो उन्हें पहचान लोगे (फ़ा165) और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगों तुम्हारे आमाल से।(93) (रुकूअ़ 3)

(फ़ा154) जन्नत और सवाब (फ़ा155) जो ख़ौफ़े अ़ज़ाब से होगी पहली घबराहट जिसका ऊपर की आयत में ज़िक्र हुआ है वह उसके इलावा है (फ़ा156) यानी शिर्क (फ़ा157) यानी वह औंधे मुंह आग में डाले जायेंगे और जहन्नम के ख़ाज़िन उनसे कहेंगे (फ़ा158) यानी शिर्क और मआ़सी और अल्लाह तआ़ला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप फ़रमा दीजिये कि (फ़ा159) यानी मक्का मुकर्रमा के और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं मक्का मुकर्रमा का ज़िक्र इस लिए है कि वह नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का वतन और वही का जाए नुज़ूल है। (फ़ा160) कि वहां न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाये न कोई शिकार मारा जाये न वहां की घांस काटी जाये (फ़ा161) मख़्लूके ख़ुदा को ईमान की दावत देने के लिए (फ़ा162) इस का नफ़ा व सवाब वह पाएगा (फ़ा163) और रसूले ख़ुदा की इताअ़त न करे और ईमान न लाये। (फ़ा164) मेरे ज़िम्मा पहुंचा देना था वह मैंने अन्जाम दिया (हाज़िहिल् आयतु नुस्ख़तुहा आयतुल किताल) (फ़ा165) उन निशानियों से मुराद शक़्क़े क़मर वग़ैरह मोअ्जेज़ात हैं और वह उक़ूबतें जो दुनिया में आईं जैसे कि बद्र में कुफ़्फ़ार का क़त्ल होना क़ैद होना मलाइका का उन्हें मारना।

(बक़िया सफ़्हा 628 का) ही थी लड़कों के क़त्ल कर देने से क्या नतीजा था और अगर सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी लग़्वियात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या माना रखता था। (फ़ा6) कि वह लोगों को नेकी की राह बतायें और लोग नेकी में उनकी इक़्तेदा करें (फ़ा7) यानी फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के अमलाक व अमवाल उन ज़ईफ़ बनी इसराईल को दे दें। (फ़ा8) मिस्र और शाम की (फ़ा9) कि बनी इसराईल के एक फ़रज़न्द के हाथ से उनके मुल्क का ज़वाल और उनका हलाक हो (फ़ा10) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा का नाम यूहानिज़ है आप लावा बिन याकूब की नस्ल से हैं अल्लाह तआ़ला ने उनको ख़्वाब के या फ़रिश्ते के ज़रीआ़ या उनके दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया। (फ़ा11) चुनांचे वह चन्द रोज़ आपको दूध पिलाती रहीं उस अर्सा में न आप रोते थे न उनकी गोद में कोई हरकत करते थे न आपकी हमशीरा के सिवा और किसी को आपकी विलादत की इत्तलाअ़ थी। (फ़ा12) कि हमसाया वाक़िफ़ हो गए हैं वह ग़म्माज़ी और चुग़लख़ोरी करेंगे और फ़िरऔ़न उस फ़रज़न्द अरजमन्द के क़त्ल के दरपै हो जाएगा। (फ़ा13) यानी नीले मिस्र में बे-ख़ौफ़ व ख़तर डाल दे और उसके ग़र्क़ व हलाक का अन्देशा न कर। (फ़ा14) उसकी जुदाई का (फ़ा15) तो उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को तीन माह दूध पिलाया और जब आपको फ़िरऔ़न की तरफ़ से अन्देशा हुआ तो एक सन्दूक़ में रख कर (जो ख़ास तौर पर इस मक़सद के लिए बनाया गया था) शब के वक़्त दरियाए नील में बहा दिया। (फ़ा16) उस शब की सुबह को और उस सन्दूक़ को फ़िरऔ़न के सामने रखा और वह खोला गया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बर आमद हुए जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे (फ़ा17) आख़िरकार

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

طٰسٓمٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا
يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ
عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ

सूरतुल क़्—ससि

(मक्की है इसमें 88 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ता—सीम्—मीम्(1)तिल्—क आयातुल् किताबिल् मुबीन(2)नत्लू अ़लै—क मिन् न—बइ मूसा व फ़िर्औ—न बिल्हक़्क़ि लिक़ौ—मिंय्युअ्मिनून(3)इन्—न फ़िर्औ—न अ़ला फ़िल्अर्ज़ि व ज—अ़—ल अह्—लहा शि—य—अंय्यस्तज़्अिफ़ु ताइ—फ़—तम् मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब्ना—अहुम् व यस्तह्यी निसा—अहुम् इन्नहू का—न मिनल् मुफ़्सिदीन(4)व नुरीदु अन् नमुन्—न अ़—लल् लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज्—अ़—लहुम् अ—इम्मतंव् व नज्—अ़—लहुमुल् वारिसीन(5)व नु—मक्कि—न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व नुरि—य फ़िर्औ—न व हामा—न व जुनू— दहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्ज़रून(6)व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िअ़ीहि फ़—इज़ा ख़िफ़्ति अ़लैहि फ़—अल्क़ीहि फ़िल्—यम्मि व ला तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाअ़िलूहु मिनल् मुर्सलीन(7)फ़ल्त—क़—तहू आलु फ़िर्औ—न लि—यकू—न लहुम् अ़दुव्वंव् व ह़—ज़—नन् इन्—न फ़िर्औ—न व

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तासीम मीम(1) यह आयतें हैं रौशन किताब की।(2) (फ़ा2) हम तुम पर पढ़ें मूसा और फ़िरऔन की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।(3) बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में ग़लबा पाया था (फ़ा3) और उसके लोगों को अपना ताबेअ़ बनाया उनमें एक गरोह को (फ़ा4) कमज़ोर देखता उनके बेटों को ज़बह करता और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखता (फ़ा5) बेशक वह फ़सादी था।(4) और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों पर एहसान फ़रमायें और उनको पेशवा बनायें (फ़ा6) और उनके मुल्क व माल का उन्हीं को वारिस बनायें।(5) (फ़ा7) और उन्हें (फ़ा8) ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को वही दिखा दें जिसका उन्हें उनकी तरफ़ से ख़तरा है।(6) (फ़ा9) और हमने मूसा की माँ को इल्हाम फ़रमाया (फ़ा10) कि उसे दूध पिला (फ़ा11) फिर जब तुझे उससे अन्देशा हो (फ़ा12) तो उसे दरिया में डाल दे और न डर (फ़ा13) और न ग़म कर (फ़ा14) बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लायेंगे और उसे रसूल बनायेंगे।(7) (फ़ा15) तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के घर वालों ने (फ़ा16) कि वह उनका दुश्मन और उन पर ग़म हो (फ़ा17) बेशक फ़िरऔन और

(फ़ा1) सूरह क़ससि मक्की है सिवाए चार आयतों के जो अल्लज़ी—न आतैना हुमुल् किता—ब से शुरू होकर ला नब्तग़िल् जाहिली—न पर ख़त्म होती हैं और इस सूरत में एक आयत इन्नल्लज़ी फ़—र—ज़ ऐसी है जो मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्येबा के दर्मियान नाज़िल हुई इस सूरत में नौ रुकूअ़ अट्ठासी आयतें 441 कलिमे और 5800 हरफ़ हैं। (फ़ा2) जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करती है (फ़ा3) यानी सरज़मीने मिस्र में उसका तसल्लुत था और वह ज़ुल्म व तकब्बुर में इन्तेहा को पहुंच गया था हत्ता कि उसने अपनी अ़ब्दीयत और बन्दा होना भी भुला दिया था। (फ़ा4) यानी बनी इसराईल को (फ़ा5) यानी लड़कियों को ख़िदमतगारी के लिए ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़बह करने का सबब यह था कि काहिनों ने उससे कह दिया था कि बनी इसराईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा इस लिए वह ऐसा करता था और यह उसकी निहायत हिमाक़त थी क्योंकि वह अगर अपने ख़्याल में काहिनों को सच्चा समझता था तो यह बात होनी **(बक़िया सफ़हा 627 पर)**

هَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝ وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاَصْبَحَ

فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ

عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۖ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ

हामा–न व जुनू–दहुमा कानू ख़ातिईन(8)व क़ा–लतिम्–र–अतु फ़िर्औ–न क़ुर्रतु ऐनिल्ली व ल–क ला तक़्तुलूहु असा अंय्यन्फ़–अ़ना औ नत्तख़ि–ज़हू व–ल–दंव् व हुम् ला यश्अुरून(9)व अस्ब–ह़ फ़ुआदु उम्मि मूसा फ़ारिग़न् इन् कादत् लतुब्दी बिही लौला अर्–बत़्ना अ़ला क़ल्बिहा लि–तकू–न मिनल् मुअ्मिनीन(10)व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस़्सीहि फ़–बसुरत् बिही अ़न् जुनुबिंव् व हुम् ला यश्–अुरून(11)व ह़र्रम्ना अ़लैहिल् मराज़ि–अ़ मिन् क़ब्लु फ़क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अ़ला अहलि बैतिंय्यक्फ़ुलू–नहू लकुम् व हुम् लहू नासिह़ून(12)फ़–र–दद्नाहु इला उम्मिही कै त–क़र्–र अ़ैनुहा व ला तह़्–ज़–न व लितअ्–ल–म अन्–न वअ्दल्लाहि ह़क़्क़ुंव् व लाकिन्–न अक्स़–रहुम् ला यअ्–लमून(13)व लम्मा ब–ल–ग़ अशुद्–दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव् व अ़िल्मन् व कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह़्सिनीन(14)व द–ख़–लल् मदी–न–त अ़ला ह़ीनि ग़फ़्–लतिम् मिन् अह्लिहा फ़–व–ज–द फ़ीहा रजुलैनि यक़्ततिलानि हाज़ा मिन् शी– अ़तिही व हाज़ा मिन् अ़दुव्विही फ़स्तग़ा–स़हुल् लज़ी मिन् शी–अ़तिही अ़लल् लज़ी मिन्

हामान (फ़ा18) और उनके लश्कर ख़ताकार थे।(8)(फ़ा19) और फ़िरऔन की बीबी ने कहा (फ़ा20) यह बच्चा मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है इसे क़त्ल न करो शायद यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें (फ़ा21) और वह बेख़बर थे।(9) (फ़ा22) और सुबह को मूसा की माँ का दिल बे सब्र हो गया (फ़ा23) ज़रूर क़रीब था कि वह उसका हाल खोल देती (फ़ा24) अगर हम न ढारस बंधाते उसके दिल पर कि उसे हमारे वादा पर यक़ीन रहे।(10) (फ़ा25) और (उसकी माँ) ने उसकी बहन से कहा (फ़ा26) उसके पीछे चली जा तो वह उसे दूर से देखती रही और उनको ख़बर न थी।(11) (फ़ा27) और हमने पहले ही सब दाईयां उस पर हराम कर दी थीं (फ़ा28) तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चा को पाल दें और वह इसके ख़ैरख़्वाह हैं।(12) (फ़ा29) तो हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ फेरा कि माँ की आँख ठंडी हो और ग़म न खाए और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(13) (फ़ा30) (रुकूअ़ 4) और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर आया (फ़ा31) हमने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया (फ़ा32) और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(14) और उस शहर में दाख़िल हुआ (फ़ा33) जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़्वाब में बेख़बर थे (फ़ा34) तो उसमें दो मर्द लड़ते पाए एक मूसा के गरोह से था (फ़ा35) और दूसरा उसके दुशमनों से (फ़ा36) तो वह जो उसके गरोह से था (फ़ा37) उसने मूसा से मदद मांगी उस पर जो उसके

(फ़ा18) जो उसका वज़ीर था (फ़ा19) यानी नाफ़रमान तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें यह सज़ा दी कि उनके हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई (फ़ा20) जबकि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के लोगों के वरग़लाने से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल का इरादा किया (फ़ा21) क्योंकि यह इसी क़ाबिल है फ़िरऔन की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं अम्बिया की नस्ल से थीं ग़रीबों और मिस्कीनों पर रहम व करम करती थीं उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि यह बच्चा साल भर से ज़्यादा उम्र का मालूम होता है और तूने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों को क़त्ल का हुक्म दिया है इलावा बरीं मालूम नहीं यह बच्चा दरिया में किस सरज़मीन से आया तुझे जिस बच्चे का अन्देशा है वह इसी मुल्क के बनी इसराईल से बताया गया है आसिया की यह बात उन लोगों ने मान ली (फ़ा22) इससे जो अन्जाम होने वाला था (फ़ा23) जब उन्होंने सुना कि उनके फ़रज़न्द फ़िरऔन **(बक़िया सफ़हा 648 पर)**

عَدُوِّهٖ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِی الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ
يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِیْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِیْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا
بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِی الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ؗ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنَّ الْمَلَاَ
يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّیْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ؗ قَالَ رَبِّ نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ

अदुव्विही फ़—व—क—ज़हू मूसा फ़—क़ज़ा अलैहि क़ा—ल हाज़ा मिन् अ—मलिश्शैतानि इन्नहू अदुव्वुम् मुज़िल्लुम् मुबीन(15)क़ा—ल रब्बि इन्नी ज़—लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर्ली फ़—ग़—फ़—र—लहू इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम(16) क़ा—ल रब्बि बिमा अन्—अम्—त अलय्—य फ़—लन् अकू—न ज़हीरल् लिल्मुजिरमीन(17)फ़—अस्ब—ह फ़िल्मदी—नति ख़ाइ—फ़ंय्य—त—रक़्क़बु फ़—इज़ल् लज़िस्तन्स—रहू बिल्—अम्सि यस्तस्रिख़ुहू क़ा—ल लहू मूसा इन्न—क ल—ग़विय्युम् मुबीन(18)फ़—लम्मा अन् अरा—द अंय्यब्ति—श बिल्लज़ी हुव अदुव्वुल् लहुमा क़ा—ल या मूसा अतुरीदु अन् तक़्तु—लनी कमा क़—तल्—त नफ़्—सम् बिलअम्सि इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू—न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू—न मिनल् मुस्लिहीन(19)व जा—अ रजुलुम् मिन् अक़्सल् मदी—नति यस्आ क़ा—ल या मूसा इन्नल् म—ल—अ यअ्—तमिरू—न बि—क लि—यक़्तुलू—क फ़ख़्रुज् इन्नी ल—क मिनन्नासिहीन (20)फ़—ख़—र—ज मिन्हा ख़ाइ—फ़ंय्य—त—रक़्क़बु क़ा—ल रब्बि नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़् ज़ालिमीन(21)व लम्मा त—वज्ज—ह तिल्क़ा—अ मद्—य—न क़ा—ल

दुश्मनों से था तो मूसा ने उसके घूंसा मारा (फ़ा38) तो उसका काम तमाम कर दिया (फ़ा39) कहा यह काम शैतान की तरफ़ से हुआ (फ़ा40) बेशक वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला।(15) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की (फ़ा41) तू मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।(16) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब जैसा तूने मुझ पर एहसान किया तो अब (फ़ा42) हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न हूंगा।(17) तो सुबह की उस शहर में डरते हुए इस इन्तेज़ार में कि क्या होता है (फ़ा43) जभी देखा कि वह जिसने कल उनसे मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है (फ़ा44) मूसा ने उससे फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है।(18) (फ़ा45) तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरिफ़्त करे जो उन दोनों का दुश्मन है (फ़ा46) वह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुमने कल एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो यही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्तगीर बनो और इस्लाह करना नहीं चाहते।(19) (फ़ा47) और शहर के परले किनारे से एक शख़्स (फ़ा48)दौड़ता आया कहा ऐ मूसा बेशक दरबार वाले(फ़ा49) आपके क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये (फ़ा50) मैं आपका ख़ैरख़्वाह हूं।(20) (फ़ा51) तो उस शहर से निकला डरता हुआ इस इन्तेज़ार में कि अब क्या होता है अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे सितमगारों से बचा ले।(21) (फ़ा52) (रुकूअ़ 5) और जब मदयन की तरफ़ मुतवज्जह हुआ (फ़ा53) कहा

(फ़ा38) पहले आपने क़िबती से कहा कि इसराईली पर ज़ुल्म न कर इसको छोड़ दे लेकिन वह बाज़ न आया और बद ज़बानी करने लगा तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसको इस ज़ुल्म से रोकने के लिए घूंसा मारा (फ़ा39) यानी वह मर गया और आपने उसको रेत में दफ़न कर दिया आपका इरादा क़त्ल करने का न था। (फ़ा40) यानी उस क़िबती का इसराईली पर ज़ुल्म करना जो उसकी हलाकत का बाइस हुआ। (ख़ाज़िन) (फ़ा41) यह कलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का बतरीक़े तवाज़ोअ़ है क्योंकि आपसे कोई मअ़सियत सरज़द नहीं हुई और अम्बिया मअ़सूम हैं उनसे गुनाह नहीं होते क़िबती का मारना आपका दफ़्ओ़ ज़ुल्म और इमदादे मज़लूम थी यह किसी मिल्लत में भी गुनाह नहीं फिर भी अपनी तरफ़ तक़सीर की निस्बत करना और इस्तिग़फ़ार चाहना यह मुक़र्रबीन का दस्तूर ही है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इसमें ताख़ीर उला थी इस लिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने तर्के उला को ज़्यादती फ़रमाया और उस पर हक़ तआ़ला से मग़फ़िरत तलब की। (फ़ा42) यह **(बक़िया सफ़हा 648 पर)**

عَسٰى رَبِّىٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ
قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰىٓ اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا
تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٙ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾
قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ؗ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ
فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ

असा रब्बी अंय्यह्दि–यनी सवाअस्–सबील(22)व लम्मा व–र–द मा–अ मदय–न व–ज–द अ़लैहि उम्म– तम् मिनन्नासि यस्कू–न व व–ज–द मिन् दूनिहिमुम्–र–अतैनि तज़ूदानि क़ा–ल मा ख़त्बुकुमा क़ा–लता ला नस्क़ी ह़त्ता युस्दि–रर्–रिआ़उ व अबूना शैखुन् कबीर(23)फ़–सक़ा लहुमा सुम्–म त–वल्ला इलज़्ज़िल्लि फ़क़ा–ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्–त इलय्–य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर(24)फ़जाअत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ़–लस्तिह़्याइन् क़ालत् इन्–न अबी यदअू–क लि–यज्ज़ि–य–क अज्–र मा सक़ै–त लना फ़–लम्मा जा–अहू व क़स्–स अ़लैहिल् क़–स़–स क़ा–ल ला त–ख़फ़् नजौ–त मिनल् क़ौ–मिज़्ज़ालि–मीन(25)क़ालत् इह्दाहुमा या अ–बतिस्त–अ्जिर्हु इन्–न ख़ै–र मनिस्तअ् जर्तल् क़विय्युल् अमीन(26)क़ा–ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि–ह़–क इह्–दब्–न– तय्– य हातैनि अ़ला अन् तअ्जु–रनी समानि–य ह़ि–जजिन् फ़–इन् अत्मम्–त अ़श्–रन् फ़मिन् अ़िन्दि–क व मा उरीदु अन् अशुक़्–क़ अ़लै–क स–तजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस्सालिहीन(27)क़ा–ल ज़ालि–क बैनी व बै–न–क अय्य–मल् अ–जलैनि क़ज़ैतु

क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए।(22) (फ़ा54) और जब मदयन के पानी पर आया (फ़ा55) वहां लोगों के एक गरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उनसे उस तरफ़ (फ़ा56) दो औरतें देखीं कि अपने जानवरों को रोक रही हैं (फ़ा57) मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है (फ़ा58) वह बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिला कर फेर न ले जायें (फ़ा59) और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं।(23) (फ़ा60) तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साए की तरफ़ फिरा (फ़ा61) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं उस खाने का जो तू मेरे लिए उतारे मोहजात हूं।(24) (फ़ा62) तो उन दोनों में से एक उसके पास आई शर्म से चलती हुई (फ़ा63) बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उसकी जो तुमने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है (फ़ा64) जब मूसा उसके पास आया और उसे बातें कह सुनाईं (फ़ा65) उसने कहा डरिये नहीं आप बच गए ज़ालिमों से।(25)(फ़ा66) उनमें की एक बोली (फ़ा67) ऐ मेरे बाप इनको नौकर रख लो(फ़ा68)बेशक बेहतर नौकर वह जो ताक़तवर अमानतदार हो।(26) (फ़ा69) कहा मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूं (फ़ा70)इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो(फ़ा71)फिर अगर पूरे दस बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है (फ़ा72) और मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता(फ़ा73)क़रीब है इन्शाअल्लाह तुम मुझे नेकों में पाओगे।(27) (फ़ा74) मूसा ने कहा यह मेरे और आपके दर्मियान इक़रार हो चुका मैं इन दोनों में जो मीआ़द पूरी कर दूं (फ़ा75) तो मुझ पर

(फ़ा54) चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ता भेजा जो आपको मदयन तक ले गया (फ़ा55) यानी कुंएं पर जिससे वहां के लोग पानी लेते और अपने जानवरों को सैराब करते थे यह कुंआं शहर के किनारे था (फ़ा56) यानी मर्दों से अलाहिदा (फ़ा57) इस इन्तेज़ार में कि लोग फ़ारिग़ हों और कुंआं ख़ाली हो क्योंकि कुंएं को कवी और ज़ोर आवर लोगों ने घेर रखा था उनके हुजूम में औरतों से मुमकिन न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकतीं (फ़ा58) यानी अपने जानवरों को पानी क्यों नहीं पिलातीं। (फ़ा59) क्योंकि न हम मर्दों के अम्बोह में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं जब यह लोग अपने जानवरों को पानी पिला कर वापस हो जाते हैं तो हौज़ में जो पानी बच रहता है वह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं (फ़ा60) ज़ईफ़ हैं ख़ुद यह काम नहीं कर सकते इस लिए जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई जब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनकी बातें सुनीं तो आपको रिक़्क़त आई और रहम आया और वहीं दूसरा कुंआं जो उसके क़रीब था और एक बहुत **(बक़िया सफ़हा 649 पर)**

فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝ فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ
اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ
مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝ وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً

फ़ला अुद्वा–न अ–लय्–य वल्लाहु अला मा नक़ूलु वकील(28)फ़–लम्मा क़ज़ा मूसल् अ–ज–ल व सा– र बि–अह्लिही आ–न–स मिन् जानिबित्तूरि नारन् क़ा–ल लि–अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल् ल–अ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि–ख़–बरिन् औ जज़्वतिम् मिनन्नारि ल–अ़ल्लकुम् तस्तलून(29)फ़–लम्मा अताहा नूदि–य मिन् शातिइल् वादिल् ऐ–मनि फ़िल्बुक़्अतिल् मुबा–र–कति मिनश्श–ज–रति अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल् आ–लमीन(30)व अन् अल्क़ि अ़सा–क फ़–लम्मा रआहा तह्तज़्ज़ु क–अन्नहा जान्नुंव् वल्ला मुदबिरंव् व लम् यु–अ़क़्क़िब् या मूसा अक़्बिल् व ला त–ख़फ़् इन्न–क मिनल्–आमिनीन(31)उस्लुक् य–द–क फ़ी जैबि–क तख़्रुज् बैज़ा–अ मिन् ग़ैरि सूइंव् वज़्मुम् इलै–क जना–ह–क मिनर्रह्बि फ़ज़ानि–क बुर्हानानि मिर्रब्बि–क इला फ़िर्औ–न व म–ल–इही इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन(32)क़ा–ल रब्बि इन्नी क़–तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़–अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून(33)व अख़ी हारूनु हुव अफ़्सहु मिन्नी लिसानन् फ़–अर्सिल्हु मअि–य रिदअंय्यु–

कोई मुतालबा नहीं और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है।(28) (फ़ा76) (रुकूअ़ 6) फिर जब मूसा ने अपनी मीआ़द पूरी कर दी (फ़ा77) और अपनी बीबी को लेकर चला (फ़ा78) तूर की तरफ़ से एक आग देखी (फ़ा79) अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की तरफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ ख़बर लाऊँ (फ़ा80) या तुम्हारे लिए कोई आग की चिंगारी लाऊँ कि तुम तापो।(29) फिर जब आग के पास हाज़िर हुआ निदा की गई मैदान के दाहिने कनारे से (फ़ा81) बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से (फ़ा82) कि ऐ मूसा बेशक मैं ही हूं अल्लाह रब सारे जहान का।(30) (फ़ा83) और यह कि डाल दे अपना अ़सा (फ़ा84) फिर जब मूसा ने उसे देखा लहाराता हुआ गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़कर न देखा (फ़ा85) ऐ मूसा सामने आ और डर नहीं बेशक तुझे अमान है।(31) (फ़ा86) अपना हाथ (फ़ा87) गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब (फ़ा88) और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले ख़ौफ़ दूर करने को (फ़ा89) तो यह दो हुज्जतें हैं तेरे रब की (फ़ा90) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ बेशक वह बे हुक्म लोग हैं।(32) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने उनमें एक जान मार डाली है (फ़ा91) तो डरता हूं कि मुझे क़त्ल कर दें।(33) और मेरा भाई हारून उसकी ज़बान मुझसे ज़्यादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिए रसूल बना कि

(फ़ा76) फिर जब आपका अ़क़्द हो चुका तो हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी साहबज़ादी को हुक्म दिया कि वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को एक अ़सा दें जिससे वह बकरियों की निगहबानी करें और दरिन्दों को दफ़अ़ करें हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के पास अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के कई अ़सा थे साहिबज़ादी साहिबा का हाथ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के अ़सा पर पड़ा जो आप जन्नत से लाये थे और अम्बिया उसके वारिस होते चले आये थे और वह हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को पहुंचा था हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने यह अ़सा हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दिया। (फ़ा77) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि आप ने बड़ी मीआ़द यानी दस साल पूरे किये फिर हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से मिस्र की तरफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही आपने इजाज़त दी (फ़ा78) उनके वालिद की इजाज़त से मिस्र की तरफ़ (फ़ा79) जबकि आप जंगल में थे अंधेरी रात थी सर्दी शिद्दत की पड़ रही थी रास्त गुम हो गया था उस वक़्त आपने आग देख कर (फ़ा80) राह की कि किस तरफ़ है (फ़ा81) जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के दस्ते रास्त की तरफ़ था (फ़ा82) **(बक़िया सफ़्हा 649 पर)**

يُصَدِّقُنِيٓ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَٰنًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِـَٔايَٰتِنَآ أَنتُمَا وَمَنِ ٱتَّبَعَكُمَا

ٱلْغَٰلِبُونَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُم مُّوسَىٰ بِـَٔايَٰتِنَا بَيِّنَٰتٍ قَالُوا۟ مَا هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِىٓ ءَابَآئِنَا ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّىٓ أَعْلَمُ

بِمَن جَآءَ بِٱلْهُدَىٰ مِنْ عِندِهِۦ وَمَن تَكُونُ لَهُۥ عَٰقِبَةُ ٱلدَّارِ ۖ إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِى فَأَوْقِدْ

لِى يَٰهَٰمَٰنُ عَلَى ٱلطِّينِ فَٱجْعَل لِّى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَطَّلِعُ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٣٨﴾ وَٱسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُۥ فِى ٱلْأَرْضِ

بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَٰهُ وَجُنُودَهُۥ فَنَبَذْنَٰهُمْ فِى ٱلْيَمِّ ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ

सदृदिकुनी इन्नी अख़ाफु अंय्यु–कज़्ज़िबून(34)क़ा–ल स–नशुद्दु अ़ज़ु–द–क बि–अख़ी–क व नज्अलु लकुमा सुल्तानन् फ़ला यसिलू–न इलैकुमा बिआयातिना अन्तुमा व मनित्त–ब–अ़–कुमल् ग़ालिबून(35)फ़–लम्मा जा–अहुम् मूसा बिआ–यातिना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुफ़्तरंव् व मा समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइ–नल् अव्वलीन(36)व क़ा–ल मूसा रब्बी अअ्–लमु बिमन् जा–अ बिल्हुदा मिन् अ़िन्दिही व मन् तकूनु लहू आक़ि–बतुद्दारि इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून(37)व क़ा–ल फ़िरऔनु या अय्युहल् म–लउ मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी फ़औक़िद् ली या हामानु अ़लत्तीनि फ़ज्–अ़ल् ली सर्हल् ल–अ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा व इन्नी ल–अज़ुन्नुहू मिनल्का–ज़िबीन(38)वस्तक्–ब–र हुव व जुनूदुहू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्–जअू न(39)फ़–अ–ख़ज़्नाहु व जुनू–दहू फ़–न–बज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि फ़न्ज़ुर् कै–फ़ का–न आक़ि–बतुज़् ज़ालिमीन(40)व ज–अ़ल्नाहुम् अ–इम्मतंय्यदअू–न

मेरी तस्दीक़ करे मुझे डर है कि वह (फ़ा92) मुझे झुठलायेंगे।(34) फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से कुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़ल्बा अता फ़रमायेंगे तो वह तुम दोनों का कुछ नुक़सान न कर सकेंगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे।(35) (फ़ा93) फिर जब मूसा उनके पास हमारी रौशन निशानियां लाया बोले यह तो नहीं मगर बनावट का जादू (फ़ा94) और हमने अपने अगले बाप दादाओं में ऐसा न सुना।(36) (फ़ा95) और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उसके पास से हिदायत लाया (फ़ा96) और जिसके लिए आख़िरत का घर होगा (फ़ा97) बेशक ज़ालिम मुराद को नहीं पहुंचते।(37) (फ़ा98) और फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियो मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिए गारा पका कर (फ़ा99) एक महल बना (फ़ा100) कि शायद मैं मूसा के ख़ुदा को झांक आऊं (फ़ा101) और बेशक मेरे गुमान में तो वह (फ़ा102) झूठा है।(38) (फ़ा103) और उसने और उसके लश्करियों ने ज़मीन में बेजा बड़ाई चाही (फ़ा104) और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।(39) तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया (फ़ा105) तो देखो कैसा अंजाम हुआ सितमगारों का।(40) और उन्हें हमने (फ़ा106) दोज़ख़ियों का पेश्वा बनाया कि आग की

(फ़ा92) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम (फ़ा93) फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर। (फ़ा94) उन बदनसीबों ने मोअ्जेज़ात का इन्कार कर दिया और उनको जादू बता दिया मतलब यह था कि जिस तरह तमाम अनवाअ़े सेहर बातिल होते हैं उसी तरह मआ़ज़ल्लाह यह भी है। (फ़ा95) यानी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया या यह माना हैं कि जो दावत आप हमें देते हैं वह ऐसी नई है कि हमारे आबा व अज्दाद में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी। (फ़ा96) यानी जो हक़ पर है और जिस को अल्लाह तआ़ला ने नबुव्वत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया। (फ़ा97) और वह वहां की निअ्मतों और रहमतों के साथ नवाज़ा जाएगा। (फ़ा98) यानी काफ़िरों को आख़िरत की फ़लाह मुयस्सर नहीं। (फ़ा99) ईंट तैयार कर कहते हैं कि यही दुनिया में सबसे पहले ईंट बनाने वाला है यह सनअ़त इससे पहले न थी। (फ़ा100) निहायत बुलन्द (फ़ा101) चुनांचे हामान ने हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जमा किये ईंटें बनवाईं और इमारती सामान जमा करके इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि दुनिया में उसके बराबर कोई इमारत बुलन्द न थी फ़िरऔन ने यह गुमान किया कि (मआ़ज़ल्लाह) अल्लाह तआ़ला के लिए भी मकान है और वह जिस्म है कि उस तक पहुंचना उसके लिए मुमकिन होगा (फ़ा102) यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम (फ़ा103) अपने इस दावा में कि उसका **(बक़िया सफ़हा 650 पर)**

إِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ
مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ
بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ

इलन्नारि व यौमल्–क़िया–मति ला युन्स़रून(41)व अत्बअ़नाहुम् फ़ी हाजिहिद्दुन्या लअ़्–न–तन् व यौमल् क़िया–मति हुम् मिनल् मक़्बूह़ीन(42)व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब मिम्बअ़्दि मा अह्–लक्–नल् क़ुरूनल् ऊला बस़ाइ–र लिन्नासि व हुदंव् व रह्–म–तल् ल–अ़ल्ल–हुम् य–त–ज़क्करून(43)व मा कुन्–त बिजानिबिल् ग़रबिय्यि इज़् क़ज़ैना इला मूसल् अम्–र व मा कुन्–त मिनश्शाहिदीन(44)व लाकिन्ना अन्शअ़्ना क़ुरूनन् फ़–तता–व–ल अ़लैहिमुल् अ़ुमुरु व मा कुन्–त स़ावियन् फ़ी अह्लि मद्–य–न तत्लू अ़लैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन(45)व मा कुन्–त बिजानिबित्तूरि इज़् नादैना व लाकिर्रह्–म–तम् मिर्रब्बि–क लितुन्ज़ि–र क़ौमम्मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि–क ल–अ़ल्लहुम् य–त–ज़क्करून(46)व लौला अन् तुसी–बहुम् मुस़ी–बतुम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् फ़–यक़ूलू रब्बना लौला अर्सल्–त इलैना रसूलन् फ़–नत्तबि–अ़ आयाति–क व नकू–न मिनल् मुअ्मिनीन(47) फ़–लम्मा जा–अ हुमुल्ह़क़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू लौला ऊति–य

तरफ़ बुलाते हैं (फ़ा107) और क़ियामत के दिन उनकी मदद न होगी।(41) और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे लानत लगाई (फ़ा108) और क़ियामत के दिन उन का बुरा है।(42) (रुकूअ़ 7) और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई (फ़ा109) बाद इसके कि अगली संगतें (फ़ा110) हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आँखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रहमत ताकि वह नसीहत मानें।(43) और तुम (फ़ा111) तूर की जानिब मग़रिब में न थे (फ़ा112) जबकि हमने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा (फ़ा113) और उस वक़्त तुम हाज़िर न थे।(44) मगर हुआ यह कि हमने संगतें पैदा कीं (फ़ा114) कि उन पर ज़मानए दराज़ गुज़रा (फ़ा115) और न तुम अहले मदयन में मुक़ीम थे उन पर हमारी आयतें पढ़ते हुए हां हम रसूल बनाने वाले हुए।(45) (फ़ा116) और न तुम तूर के किनारे थे जब हमने निदा फ़रमाई (फ़ा117) हां तुम्हारे रब की मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इल्म दिये) (फ़ा118) कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिसके पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया (फ़ा119) यह उम्मीद करते हुए कि उनको नसीहत हो।(46) और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत (फ़ा120) उसके सबब जो उनके हाथों ने आगे भेजा (फ़ा121) तो कहते ऐ हमारे रब तूने क्यों न भेजा हमारी तरफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाते।(47) (फ़ा122) फिर जब उनके पास हक़ आया (फ़ा123) हमारी तरफ़ से बोले (फ़ा124)उन्हें क्यों न दिया गया

(फ़ा107) यानी कुफ़्र व मआ़सी की दावत देते हैं जिससे अ़ज़ाबे जहन्नम के मुस्तहिक़ हों और जो उनकी इताअ़त करे वह भी जहन्नमी हो जाए।(फ़ा108) यानी रुसवाई और रहमत से दूरी (फ़ा109) यानी तौरेत (फ़ा110) मिस्ल क़ौमे नूह व आ़द व समूद वग़ैरह के (फ़ा111) ऐ सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा112) वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का मीक़ात था। (फ़ा113) और उनसे कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़र्रब किया। (फ़ा114) यानी बहुत सी उम्मतें बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के। (फ़ा115) तो वह अल्लाह का अहद भूल गए और उन्होंने उसकी फ़रमांबरदारी तर्क की और उसकी हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ में और आप पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ अहद लिए थे जब दराज़ ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बाद उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वह लोग इन अहदों को भूल गए और उसकी वफ़ा तर्क कर दी। (फ़ा116) तो हमने आपको इल्म दिया और **(बक़िया सफ़हा 650 पर)**

مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظَاهَرَا ۟ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ
اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؗ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ؗ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ

मिस–ल मा अूति–य मूसा अ–व–लम यक फुरू बिमा अूति–य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू सिह्रानि तजा–हरा व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून(48)क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् मिन् अिन्दिल्लाहि हुव अह्दा मिन्हुमा अत्तबिअ्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(49)फ़–इल्लम् यस्तजीबू ल–क फ़अ्–लम् अन्नमा यत्तबिअू–न अह्वा–अहुम् व मन् अज़ल्लु मिम्मनित्त–ब–अ् हवाहु बिग़ैरि हुदम् मिनल्लाहि इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमज़्–ज़ालिमीन(50)व ल–क़द् वस्सल्ना लहुमुल्क़ौ–ल ल–अल्लहुम् य–त–ज़क्करून(51)अल्लज़ी–न आतैनाहुमुल् किता–ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून(52)व इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल्–हक़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्लिमीन(53)उलाइ–क युअ्तौ–न अज्–रहुम् मर्रतैनि बिमा स़–बरू व यद्रऊ–न बिल्–ह़–स–नतिस् सय्यि–अ–त व मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून(54)व इज़ा समिअुल् लग़्–व अअ्रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् सलामुन् अ़लैकुम् ला नब्तग़िल् जाहिलीन(55)इन्न–क ला तह्दी मन्

जैसा मूसा को दिया गया (फ़ा125) क्या उसके मुन्किर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया (फ़ा126) बोले दो जादू हैं एक दूसरे की पुश्ती पर और बोले हम इन दोनों के मुन्किर हैं।(48) (फ़ा127) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़्यादा हिदायत की हो (फ़ा128) मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो।(49) (फ़ा129) फिर अगर वह यह तुम्हारा फ़रमाना क़बूल न करें (फ़ा130) तो जान लो कि (फ़ा131) बस वह अपनी ख़्वाहिशों ही के पीछे हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे अल्लाह की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को।(50) (रुकूअ़ 8) और बेशक हमने उनके लिए बात मुसलसल उतारी(फ़ा132) कि वह ध्यान करें।(51) जिनको हमने इससे पहले (फ़ा133) किताब दी वह इस पर ईमान लाते हैं।(52) और जब उन पर यह आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इस पर ईमान लाए बेशक यही ह़क़ है हमारे रब के पास से हम इससे पहले ही गर्दन रख चुके थे।(53) (फ़ा134) उनको उनका अज्र दोबाला दिया जाएगा (फ़ा135) बदला उनके सब्र का (फ़ा136) और वह भलाई से बुराई को टालते हैं (फ़ा137) और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं।(54) (फ़ा138) और जब बेहूदा बात सुनते हैं उससे तग़ाफ़ुल करते हैं (फ़ा139) और कहते हैं हमारे लिए हमारे अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल बस तुम पर सलाम (फ़ा140) हम जाहिलों के ग़रज़ी नहीं।(55) (फ़ा141) बेशक यह नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ़ से

(फ़ा125) यानी उन्हें क़ुरआने करीम यकबारगी क्यों नहीं दिया गया जैसा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को पूरी तौरेत एक ही बार में अ़ता की गई थी या यह माना हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अ़सा और यदे बैज़ा जैसे मोअ़जेज़ात क्यों न दिये गए अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है (फ़ा126) यहूद ने क़ुरैश को पैग़ाम भेजा कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के से मोअ़जेज़ात तलब करें इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जिन यहूद ने यह सवाल किया है क्या वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के और जो उन्हें अल्लाह की तरफ़ से दिया गया है उसके मुन्किर न हुए। (फ़ा127) यानी तौरेत के भी और क़ुरआन के भी इन दोनों को उन्होंने जादू कहा और एक क़िराअत में साहिरान है इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि दोनों जादूगर हैं यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु **(बक़िया सफ़हा 650 पर)**

اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا

يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ

مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۭ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى

اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

अह्–बब्–त व लाकिन्नल्ला–ह यह्दी मंय्यशाउ व हु–व अअ्–लमु बिल्मुह्तदीन(56)व क़ालू इन् नत्तबिअिल्हुदा म–अ–क नु–त–ख़त्तफ़् मिन् अर्ज़िना अ–व लम् नुमक्किल् लहुम् ह्–र–मन् आमिनंय्युज्बा इलैहि स़–मरातु कुल्लि शैइर्रिज़्कम् मिल्लदुन्ना व लाकिन्–न अक्स़–रहुम् ला यअ्–लमून(57)व कम् अह्–लक्ना मिन् क़र्यतिम् बति–रत् मओ़–श–तहा फ़तिल्–क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् मिम्बअ्दिहिम् इल्ला क़लीलन् व कुन्ना नह्नुल् वारिस़ीन(58)व मा का–न रब्बु–क मुह्लिकल्–क़ुरा ह़त्ता यब्–अ–स़ फ़ी उम्मिहा रसूलंय्यत्लू अ़लैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून(59)व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़–माताअुल् ह़यातिद्दुन्या व ज़ी–नतुहा व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव् व अब्क़ा अ–फ़ला तअ्क़िलून(60)अ–फ़–मंव् व अ़्दनाहु वअ्दन् ह्–स–नन् फ़हु–व लाक़ीहि क–मम्–मत्तअ्नाहु मताअ़ल् ह़यातिद्दुन्या सुम्–म हु–व यौमल् क़िया–मति मिनल् मुह्–ज़रीन(61)व यौ–म युनादीहिम् फ़्–यक़ूलु ऐ–न शु–रकाइ–यल्लज़ी–न कुन्तुम्

चाहो हिदायत कर दो हां अल्लाह हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और वह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को।(56) (फ़ा142) और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक ले जायेंगे (फ़ा143) क्या हमने उन्हें जगह न दी अमान वाली ह़रम में (फ़ा144) जिसकी तरफ़ हर चीज़ के फल लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उनमें अक्सर को इल्म नहीं।(57) (फ़ा145) और कितने शहर हमने हलाक कर दिये जो अपने ऐश पर इतरा गए थे (फ़ा146) तो यह हैं उनके मकान (फ़ा147) कि उनके बाद उनमें सुकूनत न हुई मगर कम (फ़ा148) और हमीं वारिस हैं।(58) (फ़ा149) और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक उनके अस्ल मरजअ़ में रसूल न भेजे (फ़ा150) जो उन पर हमारी आयतें पढ़े (फ़ा151) और हम शहरों को हलाक नहीं करते मगर जब कि उनके साकिन सितमगार हों।(59) (फ़ा152) और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वह दुनियवी ज़िन्दगी का बरतावा और उसका सिंगार है (फ़ा153) और जो अल्लाह के पास है (फ़ा154) वह बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला(फ़ा155) तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं।(60) (फ़ा156) (रुकूअ़ 9) तो क्या वह जिसे हमने अच्छा वादा दिया (फ़ा157) तो वह उससे मिलेगा उस जैसा है जिसे हमने दुनियवी ज़िन्दगी का बरताव बरतने दिया फिर वह क़ियामत के दिन गिरिफ़्तार करके हाज़िर लाया जाएगा।(61) (फ़ा158) और जिस दिन उन्हें निदा करेगा (फ़ा159) तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन्हें तुम (फ़ा160) गुमान

(फ़ा142) जिनके लिये उसने हिदायत मुक़द्दर फ़रमाई जो दलाइल से पन्द पज़ीर होने और हक़ बात मानने वाले हैं **शाने नुज़ूलः** मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि यह आयत अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन से उन की मौत के वक़्त फ़रमाया ऐ चचा कहो *ला इला–ह इल्लल्लाह* मैं तुम्हारे लिए रोज़े क़ियामत शाहिद हूंगा उन्होंने कहा अगर मुझे क़ुरैश के अ़ार देने का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर ईमान लाकर तुम्हारी आंख ठंडी करता उसके बाद उन्होंने यह शेअ्र पढ़े- *व लक़द् अ़लिम्तु बि–अन्–न दी–न मुहम्मदिन्-- मिन ख़ैरि अद्यानिल् बरिय्यति दीनन् लौलल् मला–मतु औ हिज़ारु मुसब्बतिन्+ ल–व जत्–तनी समुहम् बिज़ा–क मुबीनन्* यानी मैं यक़ीन से जानता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दीन तमाम जहानों के दीनों से बेहतर है अगर मलामत व बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को क़बूल करता। इसके बाद अबू तालिब का इन्तेक़ाल हो गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा143) यानी सरज़मीने अरब से एक दम निकाल देंगे **शाने नुज़ूलः** यह आयत हारिस **(बक़िया सफ़हा 650 पर)**

تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۚ أَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوٓا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَآ أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَآءُ

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ

الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولٰى

وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَآءٍ ۖ أَفَلَا

तज़्-अुमून(62)क़ालल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल् क़ौलु रब्बना हाउला-इल्लज़ी-न अग़्वैना अग़्वैनाहुम् कमा ग़वैना तबर्रअ्ना इलै-क मा कानू इय्याना यअ़्बुदून(63)व क़ीलदअू शु-रका-अकुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अवुल् अ़ज़ा-ब लौ अन्नहुम् कानू यह्-तदून (64)व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल् मुर्सलीन(65)फ़-अ़मियत् अ़लैहिमुल् अम्बाउ यौ-मइज़िन् फ़हुम् ला य-तसा-अलून(66)फ़-अम्मा मन् ता-ब व आ-म-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-अ़सा अंय्यकू-न मिनल् मुफ़्लि-हीन(67)व रब्बु-क यख़्लुक़ु मा यशाउ व यख़्तारु मा का-न लहुमुल् ख़ि-य-रतु सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (68)व रब्बु-क यअ़्-लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून(69)व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल्-हम्दु फ़िल्ऊला वल्आख़ि-रति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्-जअ़ून(70)क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़-लल्लाहु अ़लैकुमुल्लै-ल सर्मदन् इला यौमिल्क़िया-मति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन् अ-फ़ला

करते थे।(62) कहेंगे कि वह जिन पर बात साबित हो चुकी (फ़ा161) ऐ हमारे रब यह हैं वह जिन्हें हमने गुमराह किया हमने उन्हें गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे (फ़ा162) हम उनसे बेज़ार होकर तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाते हैं वह हमको न पूजते थे।(63) (फ़ा163) और उन से फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो (फ़ा164) तो वह पुकारेंगे तो वह उनकी न सुनेंगे और देखेंगे अ़ज़ाब क्या अच्छा होता अगर वह राह पाते।(64) (फ़ा165) और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा (फ़ा166) तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया।(65) (फ़ा167) तो उस दिन उन पर ख़बरें अन्धी हो जायेंगी (फ़ा168) तो वह कुछ पूछ गछ न करेंगे(66) (फ़ा169) तो वह जिसने तौबा की (फ़ा170) और ईमान लाया (फ़ा171) और अच्छा काम किया क़रीब है कि वह राहयाब हो।(67) और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है (फ़ा172) उनका (फ़ा173) कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है अल्लाह को उनके शिर्क से।(68) और तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपा है (फ़ा174) और जो ज़ाहिर करते हैं।(69) (फ़ा175) और वही है अल्लाह कि कोई ख़ुदा नहीं उसके सिवा उसी की तारीफ़ है दुनिया (फ़ा176) और आख़िरत में और उसी का हुक्म है (फ़ा177) और उसी की तरफ़ फिर जाओगे।(70)तुम फ़रमाओ (फ़ा178) भला देखो तो अगर अल्लाह हमेशा तुम पर क़ियामत तक रात रखे (फ़ा179) तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रौशनी ला दे (फ़ा180) तो क्या तुम

(फ़ा161) यानी अ़ज़ाब वाजिब हो चुका और वह लोग अहले ज़लालत के सरदार और अइम्मए कुफ़्र हैं (फ़ा162) यानी वह लोग हमारे बहकाने से ब-इख़्तियार ख़ुद गुमराह हुए हमारी उनकी गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं हमने उन्हें मजबूर न किया था। (फ़ा163) बल्कि वह ख़ुद अपनी ख़्वाहिशों के परिस्तार और अपनी शह्वात के मुतीअ़ थे (फ़ा164) यानी कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो वह तुम्हें अ़ज़ाब से बचायें (फ़ा165) दुनिया में ताकि आख़िरत में अ़ज़ाब न देखते। (फ़ा166) यानी कुफ़्फ़ार से दरियाफ़्त फ़रमाएगा। (फ़ा167) जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए थे और हक़ की दावत देते थे। (फ़ा168) और कोई उज़्र और हुज्जत उन्हें नज़र न आएगी। (फ़ा169) और ग़ायते दहशत से साकित रह जायेंगे या कोई किसी से इस लिए न पूछेगा कि जवाब से आ़जिज़ होने में सबके सब बराबर हैं ताबेअ़ हों या मतबूअ़ काफ़िर हों या काफ़िर गर। (फ़ा170) शिर्क से (फ़ा171) अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की तरफ़ से आया। (फ़ा172) शाने नुज़ूलः यह आयत मुशरिकीन **(बक़िया सफ़हा 651 पर)**

تَسۡمَعُوۡنَ ۝ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيۡكُمُ النَّهَارَ سَرۡمَدًا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ مَنۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ يَاۡتِيۡكُمۡ بِلَيۡلٍ تَسۡكُنُوۡنَ فِيۡهِ‌ؕ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ ۝
وَمِنۡ رَّحۡمَتِهٖ جَعَلَ لَـكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ اَيۡنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيۡنَ
كُنۡتُمۡ تَزۡعُمُوۡنَ ۝ وَنَزَعۡنَا مِنۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا فَقُلۡنَا هَاتُوۡا بُرۡهَانَكُمۡ فَعَلِمُوۡۤا اَنَّ الۡحَـقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ۝ اِنَّ قَارُوۡنَ
كَانَ مِنۡ قَوۡمِ مُوۡسٰى فَبَغٰى عَلَيۡهِمۡ‌ وَاٰتَيۡنٰهُ مِنَ الۡكُنُوۡزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَـتَـنُوۡٓاُ بِالۡعُصۡبَةِ اُولِى الۡقُوَّةِ اِذۡ قَالَ لَهٗ قَوۡمُهٗ لَا تَفۡرَحۡ‌ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الۡفَرِحِيۡنَ ۝ وَابۡتَغِ فِيۡمَاۤ اٰتٰٮكَ اللّٰهُ الدَّارَ الۡاٰخِرَةَ‌ وَلَا تَنۡسَ نَصِيۡبَكَ مِنَ الدُّنۡيَا‌ وَاَحۡسِنۡ كَمَاۤ اَحۡسَنَ اللّٰهُ اِلَيۡكَ‌ وَلَا تَبۡغِ الۡفَسَادَ

तस्–मअू़न(71)कुल् अ–रऐतुम् इन् ज–अ़–लल्लाहु अ़लैकुमुन्नहा–र सर्–मदन् इला यौमिल्क़िया–मति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू–न फ़ीहि अ–फ़ला तुब्सिरून(72)व मिर्रह़्मतिही ज–अ़–ल लकुमुल्लै–ल वन्नहा–र लितस्कुनू फ़ीहि व लि–तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(73)व यौ–म युनादीहिम् फ़–यकू़लु ऐ–न शु–रकाइ–यल्लज़ी–न कुन्तुम् तज़्अुमून(74)व न–ज़अ़्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़कु़ल्ना हातू बुर्हा–नकुम् फ़–अ़लिमू अन्नल्हक़्–क़ लिल्लाहि व ज़ल्–ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून(75)इन्–न क़ारू–न का–न मिन् क़ौमि मूसा फ़–बग़ा अ़लैहिम् व आतैनाहु मिनल्कुनूज़ि मा इन्–न मफ़ाति–हहू ल–तनूउ बिल्अुस्बति उलिल् कु़व्वति इज़् क़ा–ल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह् इन्नल्ला–ह ला युहिब्बुल् फ़रिहीन(76)वब्तग़ि फ़ीमा आताकल्लाहुद्–दारल् आख़ि–र–त व ला तन्–स नसी–ब–क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्स–नल्लाहु इलै–क व ला तब्ग़िल् फ़सा–द

सुनते नहीं।(71) (फ़ा181) तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह क़ियामत तक हमेशा दिन रखे (फ़ा182) तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिसमें आराम करो (फ़ा183) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं।(72) (फ़ा184) और उसने अपनी मेहर से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उसका फ़ज़्ल ढूंढो (फ़ा185) और इस लिए कि तुम हक़ मानो।(73) (फ़ा186) और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वह शरीक जो तुम बकते थे।(74) और हर गरोह में से हम एक गवाह निकाल कर (फ़ा187) फ़रमायेंगे अपनी दलील लाओ (फ़ा188) तो जान लेंगे कि (फ़ा189) हक़ अल्लाह का है और उनसे खोई जायेंगी जो बनावटें करते थे।(75) (फ़ा190) (रुकूअ़ 10) बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था (फ़ा191) फिर उसने उनपर ज़्यादती की और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दिये जिनकी कुंजियाँ एक ज़ोर आवार जमाअ़त पर भारी थीं जब उससे उसकी क़ौम (फ़ा192) ने कहा इतरा नहीं (फ़ा193) बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता।(76) और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उससे आख़िरत का घर तलब कर (फ़ा194) और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल (फ़ा195) और एहसान कर (फ़ा196) जैसा अल्लाह ने तुझ पर एहसान किया और (फ़ा197) ज़मीन में फ़साद

(फ़ा181) गोशे होश से कि शिर्क से बाज़ आओ। (फ़ा182) रात होने ही न दे (फ़ा183) और दिन में जो काम और मेहनत की थी उसकी तकान दूर करो। (फ़ा184) कि तुम कितनी बड़ी ग़लती में हो जो उसके साथ और को शरीक करते हो। (फ़ा185) कस्बे मआ़श करो। (फ़ा186) और उसकी निअ़्मतों का शुक्र बजा लाओ। (फ़ा187) यहां गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्होंने उन्हें रब के प्याम पहुंचाये और नसीहतें कीं। (फ़ा188) यानी शिर्क और रसूलों की मुख़ालफ़त जो तुम्हारा शेवा था उस पर क्या दलील है पेश करो। (फ़ा189) इलाहियत व मअ़बूदियते ख़ास (फ़ा190) दुनिया में कि अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराते थे। (फ़ा191) क़ारून हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के चचा यसहर का बेटा था निहायत ख़ूबसूरत शकील आदमी था इसी लिए उसको मुनव्वर कहते थे और बनी इसराईल में तौरेत का सब से बेहतर क़ारी था नादारी के ज़माना में निहायत मुतवाज़ेअ़ व बा अख़्लाक़ था दौलत हाथ आते ही उसका हाल मुतग़य्यर हुआ और सामरी की तरह मुनाफ़िक़ हो गया कहा गया है कि फ़िरऔ़न ने उसको बनी इसराईल पर हाकिम बना दिया था। (फ़ा192) यानी मोमिनीन बनी इसराईल। (फ़ा193) कसरते माल पर (फ़ा194) अल्लाह की निअ़्मतों का शुक्र करके और माल को ख़ुदा की राह में ख़र्च करके (फ़ा195) यानी दुनिया में आख़िरत के लिए अमल कर कि अ़ज़ाब से नजात पाये इस लिए कि दुनिया में इन्सान का **(बक़िया सफ़हा 651 पर)**

فِي الْاَرْضِ ۖ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ۭ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ۭ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ

फ़िल्अर्ज़ि इन्नल्ला–ह ला युहिब्बुल् मुफ़्सिदीन(77)क़ा–ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी अ–व लम् यअ्लम् अन्नल्ला–ह क़द् अह्–ल–क मिन् क़ब्लिही मिनल् क़ुरूनि मन् हु–व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव् व अक्सरु जम्–अ़न् व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल् मुज्रिमून (78)फ़–ख़–र–ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ी–नतिही क़ालल्लज़ी–न युरीदू–नल् ह़यातद्दुन्या यालै–त लना मिस्–ल मा ऊति–य क़ारूनु इन्नहू लज़ू ह़ज़्ज़िन् अ़ज़ीम(79)व क़ालल्लज़ी–न ऊतुल्अ़िल्–म वै–लकुम् स़वाबुल्लाहि ख़ैरुल् लिमन् आ–म–न व अ़मि–ल सालिह़न् व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून (80)फ़–ख़–सफ़्ना बिही व बिदारिहिल् अर्–ज़ फ़मा का–न लहू मिन् फ़ि–अतिंय्यन्सुरू–नहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का–न मिनल् मुन्तसिरीन(81)व अस्बह़ल्लज़ी–न तमन्नौ मका–नहू बिल्अम्सि यक़ूलू–न वै–क–अन्नल्ला–ह यब्सुतुर्रिज़्–क़ लिमंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लौला अम्मन्नल्लाहु अ़लैना ल–ख़–स–फ़

न चाह बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता।(77) बोला यह (फ़ा198) तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है (फ़ा199) और क्या उसे यह नहीं मालूम कि अल्लाह ने इससे पहले वह संगतें हलाक फ़रमा दीं जिनकी कुव्वतें उससे सख़्त थी और जमा उससे ज़्यादा (फ़ा200) और मुजरिमों से उनके गुनाहों की पूछ नहीं।(78) (फ़ा201) तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में (फ़ा202) बोले वह जो दुनिया की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हमको भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उसका बड़ा नसीब है।(79) और बोले वह जिन्हें इल्म दिया गया (फ़ा203) ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उसके लिए जो ईमान लाए और अच्छे काम करे (फ़ा204) और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं।(80) (फ़ा205) तो हमने उसे (फ़ा206) और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उसके पास कोई जमाअ़त न थी कि अल्लाह से बचाने में उसकी मदद करती (फ़ा207) और न वह बदला ले सका।(81) (फ़ा208) और कल जिसने उसके मर्तबा की आरज़ू की थी सुबह (फ़ा209) कहने लगे अ़जब बात है अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ करता है अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है (फ़ा210) अगर अल्लाह हम पर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा

(फ़ा198) यानी क़ारून ने कहा कि यह माल (फ़ा199) इस इल्म से मुराद या इल्मे तौरेत है या इल्मे कीमिया जो उसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से हासिल किया था और उसके ज़रीआ़ से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़राअ़त या और पेशों का इल्म, सहल ने फ़रमाया जिसने खुद बीनी की फ़लाह न पाई। (फ़ा200) यानी कुव्वत व माल में इससे ज़्यादा थे और बड़ी जमाअ़तें रखते थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया फिर यह क्यों कुव्वत व माल की कसरत पर गुरूर करता है वह जानता है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हलाक है। (फ़ा201) उनसे दरियाफ़्त करने की हाजत नहीं क्योंकि अल्लाह तआ़ला उनका हाल जानने वाला है लिहाज़ा इस्तेअ़्लाम के लिए सवाल न होगा तौबीख़ व ज़जर के लिए होगा (फ़ा202) बहुत से सवार जुलू में लिए हुए ज़ेवरों से आरास्ता हरीरी लिबास पहने आरास्ता घोड़ों पर सवार (फ़ा203) यानी बनी इसराईल के उलमा। (फ़ा204) उस दौलत से जो दुनिया में क़ारून को मिली (फ़ा205) यानी अ़मले सालेह साबिरीन ही का हिस्सा हैं और उसका सवाब वही पाते हैं (फ़ा206) यानी क़ारून को (फ़ा207) क़ारून और उसके घर के धंसाने का वाक़िआ़ उलमाए सैर व अख़बार ने ज़िक्र किया है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बनी इसराईल को दरिया के पार ले जाने के बाद मज़बह की रियासत हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को तफ़वीज़ की बनी इसराईल अपनी कुरबानियां हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के पास लाते और वह मज़बह में रखते आग आसमान से उतर कर उनको खा लेती क़ारून को हज़रत हारून के इस **(बक़िया सफ़हा 651 पर)**

بِنَا ۚ وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ
عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ
الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

बिना वै–क–अन्नहू ला युफ़्लिहुल् काफ़िरून(82)तिल्कद्दारुल् आख़ि–रतु नज्–अलुहा लिल्लज़ी–न ला युरीदू–न अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन् वल्–आक़ि–बतु लिल्मुत्तक़ीन (83)मन् जा–अ बिल्ह़–स–नति फ़–लहू ख़ैरुम् मिन्हा व मन् जा–अ बिस्सय्यि–अति फ़ला युज्ज़ल् लज़ी–न अ़मिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ्–मलून(84)इन्नल्लज़ी फ़–र–ज़ अ़लैकल् कुरआ–न लरादु–क इला मआ़दिन् कुर्रब्बी अअ्–लमु मन् जा–अ बिल्हुदा व मन् हु–व फ़ी ज़लालिम् मुबीन(85)व मा कुन्–त तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल् किताबु इल्ला रह़्–म–तम् मिर्रब्बि–क फ़ला तकूनन्–न ज़हीरल् लिल्काफ़िरीन(86)व ला यसुद्दुन्न–क अ़न् आयातिल्लाहि बअ़्–द इज़् उन्ज़िलत् इलै–क वद्अु इला रब्बि–क व ला तकूनन्–न मिनल् मुश्रिकीन(87)व ला तद्अु म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र ला इला–ह इल्ला हु–व कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्–हहू लहुल्हुक्मु व इलैहि तुर्–जअ़ून(88)

देता ऐ अ़जब काफ़िरों का भला नहीं।(82) (रुकूअ़ 11) यह आख़िरत का घर (फ़ा211) हम उनके लिए करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़गारों ही की (फ़ा212) है। (83) जो नेकी लाए उसके लिए उससे बेहतर है (फ़ा213) और जो बदी लाए बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था।(84) बेशक जिसने तुम पर कुरआन फ़र्ज़ किया (फ़ा214) वह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो (फ़ा215) तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है।(85) (फ़ा216) और तुम उम्मीद न रखते थे कि किताब तुम पर भेजी जाएगी (फ़ा217) हां तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की पुश्ती न करना।(86) (फ़ा218) और हरगिज़ वह तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बाद इसके कि वह तुम्हारी तरफ़ उतारी गईं (फ़ा219) और अपने रब की तरफ़ बुलाओ (फ़ा220) और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना।(87) (फ़ा221) और अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उसकी ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे।(88) (फ़ा222) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा211) यानी जन्नत (फ़ा212) महमूद (फ़ा213) दस गुना सवाब (फ़ा214) यानी उसकी तिलावत व तबलीग़ और उसके अहकाम पर अमल लाज़िम किया (फ़ा215) यानी मक्का मुकर्रमा में मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला आप को फ़तहे मक्का के दिन मक्का मुकर्रमा में बड़े शान व शिकोह और इज़्ज़त व वक़ार और ग़लबा व इक़्तेदार के साथ दाख़िल करेगा वहां के रहने वाले सब आपके ज़ेरे फ़रमान होंगे शिर्क और उसके हामी ज़लील व रुसवा होंगे **शाने नुज़ूलः** यह आयते करीमा जहफ़ा में नाज़िल हुई जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना की तरफ़ हिजरत करते हुए वहां पहुंचे और आपको अपने और अपने आबा के जाये विलादत मक्का मुकर्रमा का शौक़ हुआ तो जिब्रील अमीन आये और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि क्या हुज़ूर को अपने शहर मक्का मुकर्रमा का शौक़ है फ़रमाया हां उन्होंने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है और यह आयते करीमा पढ़ी मआ़द की तफ़सीर मौत व क़ियामत व जन्नत से भी की गई है। (फ़ा216) यानी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिए उसका अज्र व सवाब है और मुशरिकीन गुमराही में हैं और सख़्त अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ **शाने नुज़ूलः** यह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत कहा *इन्न–क लफ़ी ज़लालिम्–मुबीन* यानी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा217) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह ख़िताब ज़ाहिर में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को है और मुराद इससे मोमिनीन हैं (फ़ा218) उन के मुईन व मददगार न होना (फ़ा219) यानी कुफ़्फ़ार की गुमराहकुन बातों की तरफ़ इल्तेफ़ात न करना और उन्हें ठुकरा **(बक़िया सफ़हा 652 पर)**

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۞ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۞ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۞ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ۭ سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۞ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاۗءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۞ وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۭ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۭ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

सूरतुल अ़न्कबूति

(मक्की है इसमें 69 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्–लाम्–मीम्(1)अ–ह़सिबन्नासु अंय्युत्रकू अंय्यक़ूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून(2)व ल–क़द् फ़– तन्नल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़–ल–यअ्–ल मन्नल्लाहुल् लजी–न स–दक़ू व ल–यअ्‌ल–मन्नल् काज़िबीन (3)अम् ह़सिबल्लज़ी–न यअ्–मलूनस्–सय्यिआति अंय्यस्बिक़ूना सा–अ मा यह्कुमून(4)मन् का–न यर्जू लिक़ाअल्लाहि फ़इन्–न अ–ज–लल्लाहि लआतिन् व हुवस्समीअुल् अ़लीम(5)व मन् जा–ह–द फ़इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही इन्नल्ला–ह ल–ग़निय्युन् अ़निल् आ़–लमीन(6)वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लनु–कफ़्फ़िरन्–न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल–नज्ज़ियन्नहुम् अह्स–नल्लज़ी कानू यअ्‌मलून(7)व वस्सैनल् इन्सा–न बिवालिदैहि हुस्नन् व इन् जा–हदा–क लितुश्रि–क बी मा लै–स ल–क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ्‌हुमा इलय्–य मर्जिअ़ु–कुम् फ़उ–नब्बिउकुम् बिमा

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अलिफ़ लाम-मीम(1) क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जायेंगे कि कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माईश न होगी।(2) (फ़ा2) और बेशक हमने उनसे अगलों को जांचा (फ़ा3) तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और ज़रूर झूठों को देखेगा।(3) (फ़ा4) या यह समझे हुए हैं वह जो बुरे काम करते हैं (फ़ा5) कि हमसे कहीं निकल जायेंगे (फ़ा6) क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।(4) जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो (फ़ा7) तो बेशक अल्लाह की मीआ़द ज़रूर आने वाली है (फ़ा8) और वही सुनता जानता है।(5) (फ़ा9) और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे (फ़ा10) तो अपने ही भले को कोशिश करता है (फ़ा11) बेशक अल्लाह बे-परवाह है सारे जहान से।(6) (फ़ा12) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये हम ज़रूर उनकी बुराईयाँ उतार देंगे (फ़ा13) और ज़रूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उनके सब कामों में अच्छा था।(7) (फ़ा14) और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की (फ़ा15) और अगर वह तुझसे कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे इल्म नहीं तो तू उनका कहा न मान (फ़ा16) मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें

(फ़ा1) सूरह अ़न्कबूत मक्की है इसमें सात रुकूअ़ 69 आयतें 980 कलिमे, 4165 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शदाइदे तकालीफ़ और अनवाओ़ मसाइब और ज़ौके़ ताआ़त व तर्के शह्वात व बदल व जान व माल से कि उनकी हक़ीक़ते ईमान ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिन मुख़लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाये **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन हज़रात के हक़ में नाज़िल हुई जो मक्का मुकर्रमा में थे और उन्होंने इस्लाम का इक़रार किया तो असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें लिखा कि महज़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो उन साहिबों ने हिजरत की और ब-क़स्दे मदीना रवाना हुए मुशरिकीन उनके दरपै हुए और उनसे क़िताल किया बाज़ हज़रात उनमें से शहीद हो गए बाज़ बच आए उनके हक़ में यह दो आयतें नाज़िल हुईं और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हश्शाम और अ़याश बिन अबी रबीआ़ और वलीद बिन वलीद और अ़म्मार बिन यासिर वग़ैरह हैं जो मक्का मुकर्रमा में (बक़िया सफ़हा 652 पर)

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ
اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ
فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

कुन्तुम् तअ्मलून(8)वल्लज़ी–न आ–मनू व अमिलुस्सालिहाति लनुदखि़–लन्नहुम् फ़िस्सालिहीन(9)व मिनन्नासि मंय्यकूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़इज़ा ऊज़ि–य फ़िल्लाहि ज–अ–ल फ़ित्नतन्–नासि क–अज़ाबिल्लाहि व लइन् जा–अ नस्रुम् मिर्रब्बि–क ल–यकू.लुन्–न इन्ना कुन्ना म–अकुम् अ–व लैसल्लाहु बि–अअ्–ल–म बिमा फ़ी सुदूरिल् आ–लमीन(10)व ल–यअ्लमन् नल्लाहुल्लज़ी–न आ–मनू व ल–यअ्–ल मन्नल् मुना–फ़िक़ीन(11)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू लिल्लज़ी–न आ–मनुत्तबिअू सबी–लना वल्नह्मिल् ख़तायाकुम् व मा हुम् बिहामिली–न मिन् ख़तायाहुम् मिन् ़शैइन् इन्नहुम् लकाज़िबून(12)व ल–यह्मिलुन्–न अस्क़ा–लहुम् व अस्क़ालम् म–अ अस्क़ालिहिम् व ल–युस्अलुन्–न यौमल् क़िया–मति अम्मा कानू यफ़्तरून(13)व ल–क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़–लबि–स फ़ीहिम् अल्–फ़ स–नतिन् इल्ला ख़म्सी–न आमन् फ़–अ–ख़–ज़ हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून(14)फ़–अन्जैनाहु व अस्हाबस् सफ़ी–नति व ज–अ़ल्नाहा आ–यतल् लिलआ़–लमीन(15)व इब्राही–म इज़् क़ा–ल लिक़ौमिहि–अ़बुदुल्ला–ह वत्तक़ूहु ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम्

जो तुम करते थे।(8) (फ़ा17) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें नेकों में शामिल करेंगे।(9) (फ़ा18) और बाज़ आदमी कहते हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हें कोई तकलीफ़ दी जाती है (फ़ा19) तो लोगों के फ़ित्ने को अल्लाह के अ़ज़ाब के बराबर समझते हैं (फ़ा20) और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए (फ़ा21) तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे (फ़ा22) क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जहां भर के दिलों में है।(10) (फ़ा23) और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को (फ़ा24) और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िक़ों को।(11) (फ़ा25) और काफ़िर मुसलमानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे (फ़ा26) हालांकि वह उनके गुनाहों में से कुछ न उठायेंगे बेशक वह झूठे हैं।(12) और बेशक ज़रूर अपने (फ़ा27) बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ (फ़ा28) और ज़रूर क़ियामत के दिन पूछे जायेंगे जो कुछ बोहतान उठाते थे।(13) (फ़ा29) (रुकूअ़ 13) और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वह उनमें पचास साल कम हज़ार बरस रहा (फ़ा30) तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वह ज़ालिम थे।(14) (फ़ा31) तो हमने उसे (फ़ा32) और कश्ती वालों को (फ़ा33) बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहान के लिए निशानी किया।(15) (फ़ा34) और इब्राहीम को (फ़ा35) जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उससे डरो इसमें तुम्हारा भला

(फ़ा17) तुम्हारे किरदार की जज़ा देकर। (फ़ा18) कि उनके साथ हश्र फ़रमायेंगे और सालिहीन से मुराद अम्बिया और औलिया हैं। (फ़ा19) यानी दीन के सबब से कोई तकलीफ़ पहुंचती है जैसे कि कुफ़्फ़ार का ईज़ा पहुंचाना। (फ़ा20) और जैसा अल्लाह के अ़ज़ाब से डरना चाहिए था ऐसा ख़ल्क़ की ईज़ा से डरते हैं हत्ता कि ईमान तर्क कर देते हैं और कुफ़्र इख़्तियार कर लेते हैं यह हाल मुनाफ़िक़ीन का है। (फ़ा21) मसलन मुसलमानों की फ़तह हो या उन्हें दौलत मिले। (फ़ा22) ईमान व इस्लाम में और तुम्हारी तरह दीन पर साबित थे तो हमें उसमें शरीक करो। (फ़ा23) कुफ़्र या ईमान (फ़ा24) जो सिद्क़ व इख़्लास के साथ ईमान लाये और बला व मुसीबत में अपने ईमान व इस्लाम पर साबित व क़ायम रहे। (फ़ा25) और दोनों फ़रीक़ों को जज़ा देगा (फ़ा26) कुफ़्फ़ारे मक्का ने मोमिनीने कुरैश से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन इख़्तियार करो **(बक़िया सफ़हा 652 पर)**

إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ

الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ

يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ

اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ۝ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن

دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ

इन् कुन्तुम् तअ्-लमून(16)इन्नमा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव् व तख़्लुकू-न इफ़्कन् इन्नल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़्-क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ वअ्बुदूहु वश्कुरू लहू इलैहि तुर्-जअू न(17)व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम् मिन् क़ब्लिकुम् व मा अ़लर्रसूलि इल्लल् बलागुल् मुबीन(18)अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल् ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (19)क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-द-अल् ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन्-नश्-अ-तल् आख़ि-र-त इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(20)युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व यर्-हमु मंय्यशाउ व इलैहि तुक़्लबून(21)व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव् व ला नसीर(22)वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ाइही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(23)फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही

है अगर तुम जानते।(16) तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूठ गढ़ते हो (फ़ा36) बेशक वह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह के पास रिज़्क़ ढूंढो (फ़ा37) और उसकी बन्दगी करो और उसका एहसान मानो तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है।(17) (फ़ा38) और अगर तुम झुठलाओ (फ़ा39) तो तुम से पहले कितने ही गरोह झुठला चुके हैं (फ़ा40) और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।(18) और क्या उन्होंने न देखा अल्लाह क्यों कर ख़ल्क़ की इब्तेदा फ़रमाता है (फ़ा41) फिर उसे दोबारा बनाएगा (फ़ा42) बेशक यह अल्लाह को आसान है।(19) (फ़ा43) तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र करके देखो (फ़ा44) अल्लाह क्योंकर पहले बनाता है (फ़ा45) फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है (फ़ा46) बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(20) अ़ज़ाब देता है जिसे चाहे(फ़ा47) और रहम फ़रमाता है जिसपर चाहे (फ़ा48) और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है।(21) और न तुम ज़मीन में(फ़ा49) क़ाबू से निकल सको और न आसमान में (फ़ा50) और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला और न मददगार।(22) (रुकूअ़ 14) और वह जिन्होंने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना (फ़ा51) वह हैं जिन्हें मेरी रहमत की आस नहीं और उकने लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(23) (फ़ा52) तो उसकी क़ौम को कुछ जवाब बन न आया

(फ़ा36) कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो (फ़ा37) वही रज़्ज़ाक़ है (फ़ा38) आख़िरत में (फ़ा39) और मुझे न मानो तो इससे मेरा कोई ज़रर नहीं मैंने राह दिखा दी मोअ्जेज़ात पेश कर दिये मेरा फ़र्ज़ अदा हो गया इस पर भी अगर तुम न मानो। (फ़ा40) अपने अम्बिया को जैसे कि क़ौमे नूह व आ़द व समूद वग़ैरह उनके झुठलाने का अंजाम यही हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया। (फ़ा41) कि पहले उन्हें नुत्फ़ा बनाता है फिर ख़ून बस्ता की सूरत देता है फिर गोश्त पारा बनाता है इस तरह तदरीजन उनकी ख़िलक़त को मुकम्मल करता है। (फ़ा42) आख़िरत में बअ्स के वक़्त (फ़ा43) यानी पहली बार पैदा करना और मरने के बाद फिर दोबारा बनाना (फ़ा44) गुज़श्ता क़ौमों के दयार व आसार को कि (फ़ा45) मख़्लूक़ को फिर उसे मौत देता है (फ़ा46) यानी जब यह यक़ीन से जान लिया कि पहली मर्तबा अल्लाह ही ने पैदा किया तो मालूम हो गया कि उस ख़ालिक़ का मख़्लूक़ को मौत देने के बाद दोबारा पैदा करना कुछ भी मुतअ़ज़्ज़िर नहीं। (फ़ा47) अपने अ़द्ल से (फ़ा48) अपने फ़ज़्ल से। (फ़ा49) अपने रब के (फ़ा50) उससे बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं या यह माना हैं कि न ज़मीन **(बक़िया सफ़्हा 653 पर)**

إِلَّآ أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَىٰهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَٰنًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَىٰكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَـَٔامَنَ لَهُۥ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُۥ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَٰبَ وَءَاتَيْنَٰهُ أَجْرَهُۥ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُۥ فِي الْءَاخِرَةِ لَمِنَ الصَّٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾ وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَٰحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِن كُنتَ مِنَ

इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ ह़र्रिकूहु फ़—अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि इन्—न फ़ी ज़ालि—क लआयातिल् लिक़ौ—मिंय्युअ्मिनून(24)व क़ा—ल इन्नमत्—त—ख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् म—वद्—द—त बैनिकुम् फ़िल्—ह़यातिद्दुन्या सुम्—म यौमल् क़िया—मति यक्फ़ुरु बअ्ज़ुकुम् बि—बअ्ज़िंव् व यल्अनु बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़ंव् व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् नासिरीन(25)फ़आ—म—न लहू लूतुन् व क़ा—ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी इन्नहू हुवल्अज़ीज़ुल् ह़कीम(26)व व—हब्ना लहू इस्ह़ा—क़ व यअ्क़ू—ब व ज—अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन् नुबुव्व—त वल्किता—ब व आतैनाहु अज्रहू फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल् आख़ि—रति लमिनस्सालिह़ीन(27)व लूतन् इज़् क़ा—ल लिक़ौमिही इन्नकुम् ल—तअ्तूनल् फ़ाह़ि—श—त मा स—ब—क़कुम् बिहा मिन् अ—ह़दिम् मिनल्—आ़—लमीन (28)अ—इन्नकुम् ल—तअ्तूनर् रिजा—ल व तक़्तअ़ूनस् सबी—ल व तअ्तू—न फ़ी नादीकुमुल् मुन्क—र फ़मा का—न जवा—ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बिअ़ज़ाबिल्लाहि इन् कुन्—त मिनस्

मगर यह बोले उन्हें क़त्ल कर दो या जला दो (फ़ा53) तो अल्लाह ने उसे (फ़ा54) आग से बचा लिया (फ़ा55) बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिए।(24) (फ़ा56) और इब्राहीम ने (फ़ा57) फ़रमाया तुमने तो अल्लाह के सिवा यह बुत बना लिए हैं जिनसे तुम्हारी दोस्ती यही दुनिया की ज़िन्दगी तक है (फ़ा58) फिर क़ियामत के दिन तुम में एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर लानत डालेगा (फ़ा59) और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है (फ़ा60) और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।(25) (फ़ा61) तो लूत उस पर ईमान लाया (फ़ा62) और इब्राहीम ने कहा मैं (फ़ा63) अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूं (फ़ा64) बेशक वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(26) और हमने उसे (फ़ा65) इसहाक़ और याक़ूब अ़ता फ़रमाए और हमने उसकी औलाद में नबुव्वत (फ़ा66) और किताब रखी (फ़ा67) और हमने दुनिया में उसका सवाब उसे अ़ता फ़रमाया (फ़ा68) और बेशक आख़िरत में वह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है।(27) (फ़ा69) और लूत को नजात दी जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बेहयाई का काम करते हो कि तुम से पहले दुनिया भर में किसी ने न किया।(28) (फ़ा70) क्या तुम मर्दों से बदफ़ेअ़ली करते हो और राह मारते हो (फ़ा71) और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो (फ़ा72) तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न हुआ मगर यह कि बोले हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब लाओ अगर तुम

(फ़ा53) यह उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने मुत्तबेईन से बहर हाल कुछ कहने वाले थे कुछ इस पर राज़ी होने वाले थे सब मुत्तफ़िक़ इस लिए वह सब क़ाइलीन के हुक्म में हैं। (फ़ा54) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जबकि उनकी क़ौम ने आग में डाला। (फ़ा55) उस आग को ठन्डा करके और हज़रत इब्राहीम के लिए सलामती बनाकर (फ़ा56) अ़जीब अ़जीब निशानियां आग का इस कसरत के बावजूद असर न करना और सर्द हो जाना और उस की जगह गुलशन पैदा हो जाना और यह सब पल भर से भी कम में होना (फ़ा57) अपनी क़ौम से (फ़ा58) फिर मुन्क़तअ़ हो जाएगी और आख़िरत में कुछ काम न आएगी। (फ़ा59) बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर लानत करेंगे (फ़ा60) बुतों का भी और पुजारियों का भी उनमें सरदारों का भी और उनके फ़रमांबरदारों का भी। (फ़ा61) जो तुम्हें अ़ज़ाब से बचाए और जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात आग से सलामत निकले और उसने आपको कोई ज़रर न पहुंचाया। (फ़ा62) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने यह मोअजेज़ा देख कर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रिसालत की तस्दीक़ की, आप हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के सब से पहले तस्दीक़ करने वाले हैं ईमान से तस्दीक़े रिसालत ही मुराद है क्योंकि असल तौहीद का एतेक़ाद तो उनको हमेशा से हासिल है इस लिए अम्बिया हमेशा ही मोमिन होते हैं और **(बक़िया सफ़हा 653 पर)**

الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ
اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۟ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۤ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّآ اَنْ
جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۣ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠

सादिक़ीन(29)क़ा–ल रब्बिन्सुर्नी अ़–लल्क़ौमिल् मुफ़्सिदीन(30)व लम्मा जाअत् रुसुलुना इब्राही–म बिल्बुश्रा क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल् क़र्–यति इन्–न अह्–लहा कानू ज़ालिमीन(31)क़ा–ल इन्–न फ़ीहा लूतन् क़ालू नह्नु अअ्–लमु बि–मन् फ़ीहा लनुनज्जियन्नहू व अह्–लहू इल्लम्–र–अ–तहू कानत् मिनल् ग़ाबिरीन(32)व लम्मा अन् जाअत् रुसुलुना लूतन् सी–अ बिहिम् व ज़ा–क़ बिहिम् ज़र्अंव् व क़ालू ला त–ख़फ़् व ला तह्ज़न् इन्ना मुनज्जू–क व अह्–ल–क इल्लम्–र अ–त–क कानत् मिनल्ग़ाबिरीन(33)इन्ना मुन्ज़िलू–न अ़ला अह्लि हाज़िहिल् क़र्–यति रिज्–ज़म् मिनस्समाइ बिमा कानू यफ़्सुक़ून(34)व ल–क़त् तरक्ना मिन्हा आ–य–तम् बय्यि–नतल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(35)व इला मद्–य–न अख़ाहुम् शुऐबन् फ़क़ा–ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला–ह वर्जुल् यौमल्–आख़ि–र व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन(36)फ़–कज़्ज़बूहु फ़–अ–ख़ज़त् हुमुर्–रज्फ़तु फ़–अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन(37)व आ़दंव् व समू–द

सच्चे हो।(29) (फ़ा73) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर (फ़ा74) इन फ़सादी लोगों पर।(30) (फ़ा75) (रुकूअ़ 15) और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास मुज़्दा लेकर आए (फ़ा76) बोले हम ज़रूर इस शहर वालों को हलाक करेंगे (फ़ा77) बेशक इसके बसने वाले सितमगार हैं(31) कहा (फ़ा78) इसमें तो लूत है (फ़ा79) फ़रिश्ते बोले हमें ख़ूब मालूम है जो कुछ इसमें है ज़रूर हम उसे (फ़ा80) और उसके घर वालों को नजात देंगे मगर उसकी औरत को वह रह जाने वालों में है।(32) (फ़ा81) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास (फ़ा82) आए उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके सबब दिल तंग हुआ (फ़ा83) और उन्होंने कहा न डरिये (फ़ा84) और न ग़म कीजिये (फ़ा85) बेशक हम आपको और आपके घर वालों को नजात देंगे मगर आपकी औरत वह रह जाने वालों में है।(33) बेशक हम इस शहर वालों पर आसमान से अ़ज़ाब उतारने वाले हैं बदला इनकी नाफ़रमानियों का।(34) और बेशक हमने उससे रौशन निशानी बाक़ी रखी अ़क़्ल वालों के लिए।(35) (फ़ा86) मदयन की तरफ़ उनके हम क़ौम शुऐब को भेजा तो उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की उम्मीद रखो (फ़ा87) और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।(36) तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए।(37) (फ़ा88) और आ़द और समूद

(फ़ा73) इस बात में कि यह अफ़्आ़ल क़बीह हैं और ऐसा करने वाले पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा यह उन्होंने बराहे इस्तेहज़ा कहा जब हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को उस क़ौम के राहे रास्त पर आने की उम्मीद न रही तो आपने बारगाहे इलाही में (फ़ा74) नुज़ूले अ़ज़ाब के बारे में मेरी बात पूरी करके (फ़ा75) अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई (फ़ा76) उनके बेटे और पोते हज़रत इस्हाक़ व हज़रत याक़ूब अ़लैहिमुस्सलाम का (फ़ा77) उस शहर का नाम सुदूम था (फ़ा78) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा79) और लूत अ़लैहिस्सलाम तो अल्लाह के नबी और उसके बरगुज़ीदा बन्दे हैं। (फ़ा80) यानी लूत अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा81) अ़ज़ाब में (फ़ा82) ख़ूबसूरत मेहमानों की शक्ल में (फ़ा83) क़ौम के अफ़्आ़ल व हरकात और उनकी नालाइक़ी का ख़्याल करके उस वक़्त फ़रिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वह अल्लाह के भेजे हुए हैं। (फ़ा84) क़ौम से (फ़ा85) हमारा कि क़ौम के लोग हमारे साथ कोई बे अदबी या गुस्ताख़ी करें हम फ़रिश्ते हैं हम लोगों को हलाक करेंगे और। (फ़ा86) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह रौशन निशानी क़ौमे लूत के वीरान मकान हैं। (फ़ा87) यानी रोज़े क़ियामत की ऐसे अफ़्आ़ल बजा लाकर जो सवाबे आख़िरत का बाइस हों। (फ़ा88) मुर्दे बेजान

وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ۝ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ
وَهَامٰنَ ۗ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۝ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَاۤ
اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

व क़त्–तबय्य–न लकुम् मिम् मसाकिनिहिम् व ज़य्य–न लहुमुश्शैतानु अअ्मा–लहुम् फ़–सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन(38)व क़ारू–न व फ़िरऔ–न व हामा–न व ल–क़द् जा–अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन(39)फ़कुल्लन् अ–ख़ज़्ना बिज़म्बिही फ़मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अलैहि हासिबन् व मिन्हुम् मन् अ–ख़–ज़त्हुस् सै–हतु व मिन्हुम् मन् ख़–सफ़्ना बिहिल्अर्–ज़ व मिन्हुम् मन् अग़्रक़्ना व मा कानल्लाहु लि–यज़्लि–महुम् व लाकिन् कानू अन्फु–सहुम् यज़्लिमून(40)म–सलुल्लज़ीनत् तख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया–अ क –म–सलिल् अन्कबूति इत्–त–ख़–ज़त् बैतन् व इन्–न औ–ह–नलबुयूति लबैतुल् अन्कबूति लौ कानू यअ्–लमून(41)इन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा यद्अू–न मिन् दूनिही मिन् शैइन् व हुवल् अज़ीज़ुल् हकीम(42)व तिल्कल् अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल् आलिमून(43)ख़–ल–क़ल्लाहुस्–समावाति वलअर्–ज़ बिल्–हक़्क़ि इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आ–यतल् लिल्मुअ्मिनीन(44)

को हलाक फ़रमाया और तुम्हें (फ़ा89) उनकी बस्तियां मालूम हो चुकी हैं (फ़ा90) और शैतान ने उनके कोतक (फ़ा91) उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह से रोका और उन्हें सूझता था।(38) (फ़ा92) और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को (फ़ा93) और बेशक उनके पास मूसा रौशन निशानियां लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में तकब्बुर किया और वह हमसे निकल कर जाने वाले न थे।(39) (फ़ा94) तो उन में हर एक को हमने उसके गुनाह पर पकड़ा तो उनमें किसी पर हमने पथराव भेजा (फ़ा95) और उनमें किसी को चिंघाड़ ने आ लिया (फ़ा96) और उनमें हमने किसी को ज़मीन में धंसा दिया (फ़ा97) और उनमें किसी को डुबो दिया (फ़ा98) और अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करे (फ़ा99) हां वह ख़ुद ही (फ़ा100) अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।(40) उनकी मिसाल जिन्होंने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिए हैं (फ़ा101) मकड़ी की तरह है उसने जाले का घर बनाया (फ़ा102) और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर (फ़ा103) क्या अच्छा होता अगर जानते।(41) (फ़ा104) अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उसके सिवा पूजा करते हैं (फ़ा105) और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(42) (फ़ा106) और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान फ़रमाते हैं और उन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले।(43) (फ़ा107) अल्लाह ने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए बेशक उसमें निशानी है (फ़ा108) मुसलमानों के लिए।(44) (रुकूअ् 16)

(फ़ा89) ऐ अहले मक्का (फ़ा90) हजर और यमन में जब तुम अपने सफ़रों में वहां गुज़रते हो। (फ़ा91) कुफ़्र व मआसी (फ़ा92) साहबे अक़्ल थे हक़ व बातिल में तमीज़ कर सकते थे लेकिन उन्होंने अक़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया (फ़ा93) अल्लाह तआला ने हलाक फ़रमाया (फ़ा94) कि हमारे अज़ाब से बच सकते (फ़ा95) और वह क़ौमे लूत थी जिनको छोटे छोटे संगरेज़ों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उन पर लगते थे। (फ़ा96) यानी क़ौमे समूद कि हौलनाक आवाज़ के अज़ाब से हलाक की गई। (फ़ा97) यानी क़ारून और उसके साथियों को (फ़ा98) जैसे क़ौमे नूह को और फ़िरऔन को और उसकी क़ौम को (फ़ा99) वह किसी को बग़ैर गुनाह के अज़ाब में गिरिफ़्तार नहीं करता। (फ़ा100) नाफ़रमानियां करके और कुफ़्र व तुग़यान इख़्तियार करके (फ़ा101) यानी बुतों को मअ्बूद ठहराया है उनके साथ उम्मीदें वाबस्ता कर रखी हैं और वाक़ेअ् में उनके इज्ज़ व बे-इख़्तियारी की मिसाल यह है जो आगे ज़िक्र फ़रमाई जाती है (फ़ा102) अपने रहने के लिए न उससे गर्मी दूर हो न सर्दी **(बक़िया सफ़हा 653 पर)**

(बक़िया सफ़हा 624 का) मुक़िर व मोअ़्तरिफ़ न थे लेकिन जबकि उस पर बराहीन क़ाइम हैं तो उनका इक़रार न करना कुछ क़ाबिले लिहाज़ नहीं बल्कि जब वह इब्तेदाई पैदाइश के क़ाइल हैं तो उन्हें इआ़दे का क़ाइल होना पड़ेगा क्योंकि इब्तेदा इआ़दे पर दलालते क़विय्या करती है तो अब उनके लिए कोई जाए उज्र व इन्कार बाक़ी नहीं रही (फ़ा116) आसमान से बारिश और ज़मीन से नबातात। (फ़ा117) अपने इस दावा में कि अल्लाह के सिवा और भी मअ़्बूद हैं तो बताओ जो जो सिफ़ात व कमालात ऊपर ज़िक्र किये गए वह किस में हैं और जब अल्लाह के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मअ़्बूद ठहराते हो यहां हातू बुर्हा-नकुम् फ़रमा कर उनके इज्ज़ व बुतलान का इज़्हार मन्ज़ूर है। (फ़ा118) वही जानने वाला है ग़ैब का उसको इख़्तियार है जिसे चाहे बताये चुनांचे अपने प्यारे अम्बिया को बताता है जैसा कि सूरह आले इमरान में है *व मा का-नल्लाहु लियुत़्लि-अ़कुम् अ़ललग़ैबि व ला किन्-नल्ला-ह यज्तबी मिंर्-रुसुलिही मंय्यशाउ* यानी अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इल्म दे हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे और बकसरत आयात में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उलूम अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इससे अगले रुकूअ़ में वारिद है *व मा मिन् ग़ाइ-बतिन् फ़िस्समाअि वल् अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन°* यानी जितने ग़ैब हैं आसमान और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में है शाने नुज़ूल यह आयत मुशरिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़ियामत के आने का वक़्त दरियाफ़्त किया था

(बक़िया सफ़हा 625 का) मौत पायेंगे (फ़ा128) इसी लिए अ़ज़ाब में ताख़ीर फ़रमाता है। (फ़ा129) और शुक्रगुज़ारी नहीं करते और अपनी जहालत से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। (फ़ा130) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अ़दावत रखना और आपकी मुख़ालफ़त में मक्कारियां करना सब कुछ अल्लाह तआ़ला को मालूम है वह उसकी सज़ा देगा। (फ़ा131) यानी लौहे महफ़ूज़ में सब्त हैं और जिन्हें उनका देखना ब-फ़ज़्ले इलाही मुयस्सर है उनके लिए ज़ाहिर हैं। (फ़ा132) दीनी उमूर में अहले किताब ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया उनके बहुत फ़िरक़े हो गए और आपस में लअ़न तअ़न करने लगे तो क़ुरआने करीम ने इसका बयान फ़रमाया ऐसा बयान किया कि अगर वह इन्साफ़ करें और उसको क़बूल करें और इस्लाम लायें तो उन में यह बाहमी इख़्तिलाफ़ बाक़ी न रहे।

(बक़िया सफ़हा 626 का) मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से मुन्तफ़अ़ नहीं होते इस आयत के माना यह बताना कि मुर्दे नहीं सुनते बिल्कुल ग़लत है सही अहादीस से मुर्दों का सुनना साबित है। (फ़ा134) माना यह हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ायत एअ़राज़ व रूगरदानी से मुर्दे और बहरे के मिस्ल हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और हक़ की दावत देना किसी तरह नाफ़ेअ़ नहीं होता। (फ़ा135) जिन की बसीरत जाती रही और दिल अन्धे हो गए। (फ़ा136) जिनके पास समझने वाले दिल हैं और जो इल्मे इलाही में सआ़दते ईमान से बहरा अन्दोज़ होने वाले हैं। (बैज़ावी व कबीर व अबुस्सऊद व मदारिक) (फ़ा137) यानी उन पर ग़ज़बे इलाही होगा और अ़ज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी इस तरह कि लोग अम्र बिलमअ़्रूफ़ और नहिए मुनकर तर्क कर देंगे और उनकी दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी यानी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उसकी अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़ा न देगी। (फ़ा138) उस चौपाया को दाब्बतुलअर्ज़ कहते हैं यह अ़जीब शक्ल का जानवर होगा जो कोहे सफ़ा से बर-आमद होकर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा फ़साहत के साथ कलाम करेगा हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा अ़लैहिस्सलाम से नूरानी ख़त खींचेगा काफ़िर की पेशानी पर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगुश्तरी से सियाह मुहर लगाएगा (फ़ा139) ब-ज़बाने फ़सीह और कहेगा हाज़ा मोमिन व हाज़ा काफ़िर यह मोमिन है और यह काफ़िर है (फ़ा140) यानी क़ुरआन पाक पर ईमान न लाते थे जिस में बअ़्स व हिसाब व अ़ज़ाब व ख़ुरूज दाब्बतुल अर्ज़ का बयान है इसके बाद की आयत में क़ियामत का बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा141) जो कि हमने अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं फ़ौज से मुराद जमाअ़ते कसीरा है (फ़ा142) रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ हिसाब में (फ़ा143) और तुमने उनकी मअ़रेफ़त हासिल न की थी बग़ैर सोचे समझे ही इन आयतों का इन्कार कर दिया (फ़ा144) जब तुम ने उन आयतों को भी नहीं सोचा तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे (फ़ा145) अ़ज़ाब साबित हो चुका (फ़ा146) कि उनके लिए कोई हुज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है एक क़ौल यह भी है कि अ़ज़ाब उन पर इस तरह छा जाएगा कि वह बोल न सकेंगे। (फ़ा147) और आयत में बअ़्स बादुलमौत पर दलील है इस लिए कि जो दिन की रौशनी को शब की तारीकी से और शब की तारीकी को दिन की रौशनी से बदलने पर क़ादिर है वह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है नीज़ इन्क़ेलाबे लैलो नहार से यह भी मालूम होता है उसमें उनकी दुनियवी ज़िन्दगी का इन्तेज़ाम है तो यह अ़बस नहीं किया गया बल्कि इस ज़िन्दगानी के आमाल पर अ़ज़ाब व सवाब का तरत्तुब मुक़्तज़ाए हिकमत है और जब दुनिया दारुल अ़मल है तो ज़रूरी है कि एक दारे आख़िरत भी हो वहां की ज़िन्दगानी में यहां के आमाल की जज़ा मिले। (फ़ा148) और उसके फूंकने वाले हज़रत इसराफ़ील होंगे अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा149) ऐसा घबराना जो सबबे मौत होगा। (फ़ा150) और जिस के क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला सुकून अ़ता फ़रमाए हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि यह शोहदा हैं जो अपनी तलवारें गलों में हमाइल किये अर्श के गिर्द हाज़िर होंगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया वह शोहदा हैं इस लिए कि वह अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं फ़ज़अ़् उनको न पहुंचेगा एक क़ौल यह है कि नफ़ख़ा के बाद हज़रत जिबरील व मीकाईल व इसराफ़ील व इज़राईल ही बाक़ी रहेंगे। (फ़ा151) यानी रोज़े क़ियामत सब लोग बादे मौत ज़िन्दा किये जायेंगे और मौक़िफ़ में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर आजिज़ी करते हाज़िर होंगे सीग़ए माज़ी से तअ़्बीर फ़रमाना तहक़्क़ुक़ व वुक़ूअ़ के लिए है। (फ़ा152) माना यह हैं कि नफ़ख़ा के वक़्त पहाड़ देखने में तो अपनी जगह साबित व क़ाइम मालूम होंगे और हक़ीक़त में वह मिस्ल बादलों के निहायत

तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वग़ैरह बड़े जिस्म चलते हैं मुतहर्रिक नहीं मालूम होते यहां तक कि वह पहाड़ ज़मीन पर गिर कर उसके बराबर हो जायेंगे फिर रेज़ा रेज़ा होकर बिखर जायेंगे। (फ़ा153) नेकी से मुराद कलिमए तौहीद की शहादत है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इख़्लास अ़मल और बाज़ ने कहा कि हर ताअ़त जो अल्लाह के लिए की हो

(बक़िया सफ़्हा 628 का) के हाथ में पहुंच गए (फ़ा24) और जोशे मुहब्बते मादरी में वा इब्नाह वा इब्नाह (हाए बेटे हाए बेटे) पुकार उठतीं (फ़ा25) जो वादा हम कर चुके हैं तेरे इस फ़रज़न्द को तेरी तरफ़ फेर लायेंगे (फ़ा26) जिनका नाम मरयम था कि हाल मालूम करने के लिए। (फ़ा27) कि यह इस बच्चा की बहन है और इसकी निगरानी करती है (फ़ा28) चुनांचे जिस क़दर दाइयां हाज़िर की गईं उन में से किसी की छाती आपने मुंह में न ली इससे उन लोगों को बहुत फ़िक्र हुई कि कहीं से कोई ऐसी दाई मुयस्सर आये जिसका दूध आप पी लें दाइयों के साथ आपकी हमशीर भी यह हाल देखने चली गई थीं अब उन्होंने मौक़ा पाया (फ़ा29) चुनांचे वह उनकी ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔ़न की गोद में थे और दूध के लिए रोते थे फ़िरऔ़न आपको शफ़क़त के साथ बहलाता था जब आपकी वालिदा आईं और आपने उनकी ख़ुश्बू पाई तो आपको क़रार आया और आपने उनका दूध मुंह में लिया फ़िरऔ़न ने कहा तू इस बच्चा की कौन है कि इसने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया उन्होंने कहा मैं एक औरत हूं पाक साफ़ रहती हूं मेरा दूध ख़ुशगवार है जिस्म ख़ुश्बूदार है इस लिए जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है वह और औरतों का दूध नहीं लेते हैं मेरा दूध पी लेते हैं फ़िरऔ़न ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर करके फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दी चुनांचे आप अपने मकान पर ले आईं और अल्लाह तआ़ला का वादा पूरा हुआ उस वक़्त उन्हें इत्मीनाने कामिल हो गया कि यह फ़रज़न्द अरजमन्द ज़रूर नबी होंगे अल्लाह तआ़ला इस वादा का ज़िक्र फ़रमाता है। (फ़ा30) और शक में रहते हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माना तक रहे और उस ज़माना में फ़िरऔ़न उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा दूध छूटने के बाद आप हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को फ़िरऔ़न के पास ले आईं और आप वहां पर परवरिश पाते रहे। (फ़ा31) उम्र शरीफ़ तीस साल से ज़्यादा होगई (फ़ा32) यानी मसालेहे दीन व दुनिया का इल्म। (फ़ा33) वह शहर या तो मनफ़ था जो हुदूदे मिस्र में है असल उसकी माफ़ा है ज़बाने क़िबती में इस लफ़्ज़ के माना हैं तीस यह पहला शहर है जो तूफ़ाने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद आबाद हुआ इस सर ज़मीन में मिस्र बिन हाम ने इक़ामत की यह इक़ामत करने वाले कुल तीस थे इस लिए इसका नाम माफ़ा हुआ फिर इसकी अरबी मनफ़ हुई या वह शहर हाबीन था जो मिस्र से दो फ़रसंग के फ़ासला पर था एक क़ौल यह भी है कि वह शहर ऐन शम्स था (जुमल व ख़ाज़िन) (फ़ा34) और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पोशीदा तौर पर दाख़िल होने का सबब यह था कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जवान हुए तो आपने हक़ का बयान और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की गुमराही का रद शुरू किया बनी इसराईल के लोग आपकी बात सुनते और आपका इत्तेबाअ़ करते आप फ़िरऔ़नियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते शुदा शुदा इसका चर्चा हुआ और फ़िरऔ़नी जुस्तजू में हुए इस लिए आप जिस बस्ती में दाख़िल होते ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहां के लोग ग़फ़लत में हों हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि वह दिन ईद का था लोग अपने लह्व व लइब में मश्ग़ूल थे (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा35) बनी इसराईल में से (फ़ा36) यानी क़िबती क़ौमे फ़िरऔ़न से यह इसराईली पर जब्र कर रहा था ताकि उस पर लकड़ियों का अम्बार लाद कर फ़िरऔ़न के मतबख़ में ले जाये (फ़ा37) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के

(बक़िया सफ़्हा 630 का) करम भी कर कि मुझे फ़िरऔ़न की सोहबत और उसके यहां रहने से भी बचा कि उस ज़ुमरा में शुमार किया जाना यह भी एक तरह का मददगार होना है। (फ़ा43) कि ख़ुदा जाने उस क़िबती के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उसकी क़ौम के लोग क्या करें। (फ़ा44) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔ़न को इत्तलाअ़ दी कि किसी बनी इसराईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है इस पर फ़िरऔ़न ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो फ़िरऔ़नी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सुबूत नहीं मिलता था दूसरे रोज़ जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को फिर ऐसा इत्तेफ़ाक़ पेश आया कि वही बनी इसराईल जिसने एक रोज़ पहले मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔ़नी से लड़ रहा है और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को देख कर उनसे फ़रियाद करने लगा तब हज़रत (फ़ा45) मुराद यह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है अपने आपको भी मुसीबत व परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी क्यों ऐसे मौक़ों से नहीं बचता और क्यों एहतियात नहीं करता फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को रहम आया और आपने चाहा कि उस को फ़िरऔ़नी के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई दिलायें (फ़ा46) यानी फ़िरऔ़नी पर तो इसराईली ग़लती से यह समझा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम मुझ से ख़फ़ा हैं मुझे पकड़ना चाहते हैं यह समझ कर (फ़ा47) फ़िरऔ़नी ने यह बात सुनी और जाकर फ़िरऔ़न को इत्तलाअ़ दी कि कल के फ़िरऔ़नी मक़्तूल के क़ातिल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं फ़िरऔ़न ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ढूंडने निकले (फ़ा48) जिसको मोमिन आले फ़िरऔ़न कहते हैं यह ख़बर सुन कर क़रीब की राह से (फ़ा49) फ़िरऔ़न के (फ़ा50) शहर से। (फ़ा51) यह बात ख़ैरख़्वाही और मसलेहत अन्देशी से कहता हूं (फ़ा52) यानी क़ौमे फ़िरऔ़न से (फ़ा53) मदयन वह मक़ाम है जहां हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ रखते थे उसको मद्यन इब्ने इब्राहीम कहते हैं मिस्र से यहां तक आठ रोज़ की मुसाफ़त है यह शहर फ़िरऔ़न के हुदूदे क़लमरौ से बाहर था हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसका रास्ता भी न देखा था न कोई सवारी साथ थी न तोशा न कोई हमराही राह में दरख़्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्ज़े के सिवा ख़ुराक की और कोई चीज़ न मिलती थी

(बक़िया सफ़हा 631 का) भारी पत्थर उस पर ढका हुआ था जिसको बहुत से आदमी मिल कर हटा सकते थे आपने तन्हा उसको हटा दिया। (फ़ा61) धूप और गर्मी की शिद्दत थी और आपने कई रोज़ से खाना नहीं खाया था भूख का ग़लबा था इस लिए आराम हासिल करने की ग़रज़ से एक दरख़्त के साया में बैठ गए और बारगाहे इलाही में। (फ़ा62) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को खाना मुलाहज़ा फ़रमाए पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था इस दर्मियान में एक लुक़मा न खाया था शिकमे मुबारक पुश्ते अक़दस से मिल गया था इस हालत में अपने रब से ग़िज़ा तलब की और बावजूदेकि बारगाहे इलाही में निहायत कुर्ब व मन्ज़िलत रखते हैं इस इज्ज़ व इन्केसार के साथ रोटी का एक टुकड़ा तलब किया और जब वह दोनों साहबज़ादियां उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उनके वालिद माजिद ने फ़रमाया कि आज इस क़दर जल्द वापस आ जाने का क्या सबब हुआ अर्ज़ किया कि हमने एक नेक मर्द पाया उसने हम पर रहम किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया उस पर उनके वालिद साहब ने एक साहबज़ादी से फ़रमाया कि जाओ और उस मर्दे सालेह़ को मेरे पास बुला लाओ (फ़ा63) चेहरा आस्तीन से ढके जिस्म छुपाये यह बड़ी साहबज़ादी थीं उनका नाम सफ़ूरा है और एक क़ौल यह है कि वह छोटी साहबज़ादी थीं (फ़ा64) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम उजरत लेने पर तो राज़ी न हुए लेकिन हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की ज़ियारत और उनकी मुलाक़ात के क़स्द से चले और उन साहबज़ादी साहिबा से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाइये यह आपने पर्दा के एहतेमाम के लिए फ़रमाया और इस तरह तशरीफ़ लाये जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के पास पहुंचे तो खाना हाज़िर था हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया बैठिये खाना खाइये हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने मन्ज़ूर न किया और अऊज़ुबिल्लाह फ़रमाया हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या सबब खाने में क्यों उज़्र है क्या आपको भूख नहीं है फ़रमाया कि मुझे यह अन्देशा है कि यह खाना मेरे इस अमल का एवज़ न हो जाये जो मैंने आपके जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है क्योंकि हम वह लोग हैं कि अमले ख़ैर पर एवज़ लेना क़बूल नहीं करते हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ जवान ऐसा नहीं है यह खाना आपके अमल के एवज़ नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबा व अज्दाद की आदत है कि हम मेहमान ख़्वानी किया करते हैं और खाना खिलाते हैं तो आप बैठे और आपने खाना तनावुल फ़रमाया (फ़ा65) और तमाम वाक़िआत व अहवाल जो फ़िरऔन के साथ गुज़रे थे अपनी विलादत शरीफ़ से लेकर क़िबती के क़त्ल और फ़िरऔनियों के आपके दरपै जान होने तक के सब हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से बयान कर दिये। (फ़ा66) यानी फ़िरऔन और फ़िरऔनियों से क्योंकि यहां मदयन में फ़िरऔन की हुकूमत व सल्तनत नहीं मसाइल इससे साबित हुआ कि एक शख़्स की ख़बर पर अमल करना जाइज़ है ख़्वाह वह गुलाम हो या औरत हो और यह भी साबित हुआ कि अजनबिया के साथ वरअ़. व एहतियात के साथ चलना जाइज़ है। (मदारिक) (फ़ा67) जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को बुलाने के वास्ते भेजी गई थी बड़ी या छोटी (फ़ा68) कि यह हमारी बकरियां चराया करें और यह काम हमें न करना पड़े। (फ़ा69) हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने साहिबज़ादी से दरियाफ़्त किया कि तुम्हें उनकी क़ुव्वत व अमानत का क्या इल्म उन्होंने अर्ज़ किया कि क़ुव्वत तो इससे ज़ाहिर है कि उन्होंने तन्हा कुंएं पर से वह पत्थर उठा लिया जिसको दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इससे ज़ाहिर है कि उन्होंने हमें देखकर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा नमूदार हो यह सुनकर हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से (फ़ा70) यह वादए निकाह था अल्फ़ाज़े अ़क़्द न थे क्योंकि मसला अक़्द के लिए सीग़ए माज़ी ज़रूरी है मसला और ऐसे ही मनकूहा की तअ़य्युन भी ज़रूरी है। (फ़ा71) **मसलाः** आज़ाद मर्द का आज़ार औरत से निकाह किसी दूसरे आज़ाद शख़्स की ख़िदमत करने या बकरियां चराने को महर क़रार देकर जाइज़ है मसला और अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्दत तक औरत की ख़िदमत करने को या क़ुरआन की तालीम को महर क़रार देकर निकाह किया तो निकाह जाइज़ है और यह चीज़ें महर न हो सकेंगी बल्कि इस सूरत में महरे मिस्ल लाज़िम होगा। (हिदाया व अहमदी) (फ़ा72) यानी यह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब न होगा। (फ़ा73) कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूं। (फ़ा74) तो मेरी तरफ़ से हुस्ने मुआ़मलत और वफ़ाए अ़हद ही होगी और इन्शाअल्लाह तआ़ला आपने अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ व मदद पर भरोसा करने के लिए फ़रमाया (फ़ा75) ख़्वाह दस साल की या आठ साल की

(बक़िया सफ़हा 632 का) वह दरख़्त उन्नाब का था या औसज का (औसज एक ख़ारदार दरख़्त है जो जंगलों में होता है।) (फ़ा83) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सर सब्ज़ दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि अल्लाह तआ़ला के सिवा यह किसी की क़ुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का अल्लाह तआ़ला ही मुतकल्लिम है यह भी मन्क़ूल है कि यह कलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सिर्फ़ गोशे मुबारक ही से नहीं बल्कि अपने जिस्मे अक़दस के हर हर जुज़्व से सुना। (फ़ा84) चुनांचे आपने अ़सा डाल दिया वह सांप बन गया। (फ़ा85) तब निदा की गई (फ़ा86) कोई ख़तरा नहीं। (फ़ा87) अपनी क़मीस के। (फ़ा88) शुआ़ऐ आफ़ताब की तरह तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपना दस्ते मुबारक गिरेबान में डाल कर निकाला तो उसमें ऐसी तेज़ चमक थी जिससे निगाहें छपकें। (फ़ा89) ताकि हाथ अपनी असली हालत पर आये और ख़ौफ़ रफ़अ़ हो जाये हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को सीना पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो ख़ौफ़ सांप देखने के वक़्त पैदा हो गया था रफ़अ़ हो जाये और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद जो ख़ौफ़ज़दा अपना हाथ सीना पर रखेगा उसका ख़ौफ़ दफ़अ़ हो जाएगा (फ़ा90) यानी अ़सा और यदे बैज़ा तुम्हारी रिसालत की बुरहानें हैं। (फ़ा91) यानी क़िबती मेरे हाथ से मारा गया है।

(बक़िया सफ़हा 633 का) एक मअ्बूद है जिसने उसको अपना रसूल बना कर हमारी तरफ़ भेजा है (फ़ा104) और हक़ को न माना और बातिल पर रहे (फ़ा105) और सब ग़र्क़ हो गए (फ़ा106) दुनिया में।

(बक़िया सफ़हा 634 का) पहलों के हालात पर मुत्तलअ्. किया। (फ़ा117) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को तौरेत अ़ता फ़रमाने के वक़्त (फ़ा118) जिनसे तुम उनके अहवाल बयान फ़रमाते हो आपका इन उमूर की ख़बर देना आपकी नबुव्वत की ज़ाहिर दलील है (फ़ा119) इस क़ौम से मुराद अहले मक्का हैं जो ज़मानए फ़ितरत में थे जो हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम व हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान पांच सौ पचास बरस की मुद्दत का है। (फ़ा120) अ़ज़ाब व सज़ा (फ़ा121) यानी जो कुफ़्र व इस्यान उन्होंने किया (फ़ा122) माना आयत के यह हैं कि रसूलों का भेजना ही इल्ज़ामे हुज्जत के लिए है कि उन्हें यह उज़्र करने की गुंजाईश न मिले कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए इस लिए गुमराह हो गए अगर रसूल आते तो हम ज़रूर मुतीअ्. होते और ईमान लाते (फ़ा123) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा124) मक्का के कुफ़्फ़ार

(बक़िया सफ़हा 635 का) अ़लैहि वसल्लम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम **शाने नुज़ूलः** मुशरिकीने मक्का ने यहूदे मदीना के सरदारों के पास क़ासिद भेजकर दरियाफ़्त किया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत कुतुबे साबिक़ा में कोई ख़बर है उन्होंने जवाब दिया कि हां हुज़ूर की नअ़त व सिफ़त उनकी किताब तौरेत में मौजूद है जब यह ख़बर क़ुरैश को पहुंची तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम व सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत कहने लगे कि वह दोनों जादूगर हैं इनमें एक दूसरे का मुईन व मददगार है इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया। (फ़ा128) यानी तौरेत व क़ुरआन से (फ़ा129) अपने इस क़ौल में कि यह दोनों जादू या जादूगर हैं इसमें तम्बीह है कि वह इसके मिस्ल किताब लाने से आ़जिज़ महज़ हैं चुनांचे आगे इरशाद फ़रमाया जाता है। (फ़ा130) और ऐसी किताब न ला सकें। (फ़ा131) उनके पास कोई हुज्जत नहीं है। (फ़ा132) यानी क़ुरआने करीम उनके पास पेयापे और मुसलसल आया वअ़्द और वईद और क़िसस और इबरतें और मौअ़ेज़तें ताकि समझें और ईमान लायें (फ़ा133) यानी क़ुरआन शरीफ़ से या सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले **शाने नुज़ूलः** यह आयत मोमिनीन अहले किताब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल यह है कि यह उन अहले इन्जील के हक़ में नाज़िल हुई जो हबशा से आकर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये यह चालीस हज़रात थे जो हज़रत जअ्.फ़र बिन अबी तालिब के साथ आये जब उन्होंने मुसलमानों की हाजत और तंगीए मआ़श देखी तो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जाकर अपने माल ले आयें और उनसे मुसलमानों की ख़िदमत करें हुज़ूर ने इजाज़त दी और वह जाकर अपने माल ले आये और उनसे मुसलमानों की ख़िदमत की उनके हक़ में यह आयात *मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ू-न* तक नाज़िल हुईं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयतें अस्सी अहले किताब के हक़ में नाज़िल हुईं जिन में चालीस नजरान के और बत्तीस हबशा के और आठ शाम के थे। (फ़ा134) यानी नुज़ूले क़ुरआन से क़ब्ल ही हम हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान रखते थे कि वह नबीए बरहक़ हैं क्योंकि तौरेत व इन्जील में उनका ज़िक्र है (फ़ा135) क्योंकि वह पहली किताब पर भी ईमान लाये और क़ुरआने पाक पर भी (फ़ा136) कि उन्होंने अपने दीन पर भी सब्र किया और मुशरिकीन की ईज़ा पर भी बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अज्र मिलेंगे एक अहले किताब का वह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर भी दूसरा वह ग़ुलाम जिसने अल्लाह का हक़ भी अदा किया और मौला का भी तीसरा वह जिस के पास बांदी थी जिससे क़ुरबत करता था फिर उसको अच्छी तरह अदब सिखाया अच्छी तालीम दी और आज़ाद करके उससे निकाह कर लिया उसके लिए भी दो अज्र हैं। (फ़ा137) ताअ़त से मअ्.सियत को और हिल्म से ईज़ा को हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि तौहीद की शहादत यानी *अश्-हदु अंल्लाइला-ह इल्लल्लाहु* से शिर्क को। (फ़ा138) ताअ़त में यानी सदक़ा करते हैं (फ़ा139) मुशरिकीन मक्का मुकर्रमा के ईमानदारों को उनका दीन तर्क करने और इस्लाम क़बूल करने पर गालियां देते और बुरा कहते यह हज़रात उनकी बेहूदा बातें सुन कर एअ़्राज़ फ़रमाते (फ़ा140) यानी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियां न देंगे। (फ़ा141) उनके साथ मेल जोल नशिस्त व बरख़ास्त नहीं चाहते हमें जाहिलाना हरकात गवारा नहीं (नुसि-ख़ ज़ालि-क बिलुक़ितालि)

(बक़िया सफ़हा 636 का) बिन उसमान बिन नौफ़ल बिन अ़ब्द मनाफ़ के हक़ में नाज़िल हुई उसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि यह तो हम यक़ीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वह हक़ है लेकिन अगर हम आपके दीन का इत्तेबाअ्. करें तो हमें डर है कि अरब के लोग हमें शहर बदर कर देंगे और हमारे वतन में न रहने देंगे इस आयत में इसका जवाब दिया गया (फ़ा144) जहां के रहने वाले क़त्ल व ग़ारत से अमन में हैं और जहां जानवरों और सब्ज़ों तक को अमन है। (फ़ा145) और वह अपनी जहालत से नहीं जानते कि यह रोज़ी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है अगर यह समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ व अमन भी उसी की तरफ़ से है और ईमान लाने में शहर बदर किये जाने का ख़ौफ़ न करते (फ़ा146) और उन्होंने तुग़यान इख़्तियार किया था कि अल्लाह तआ़ला की दी हुई रोज़ी खाते और पूजते बुतों को अहले मक्का को ऐसी क़ौम के ख़राब अंजाम से ख़ौफ़ दिलाया जाता है जिनका हाल उनकी तरह था कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़्मतें पाते और शुक्र न करते इन नेअ़्मतों पर इतराते वह हलाक कर दिये गए। (फ़ा147) जिनके आसार बाक़ी हैं और अरब के लोग अपने सफ़रों में उन्हें देखते हैं। (फ़ा148) कि कोई मुसाफ़िर या रहरौ उनमें थोड़ी देर के लिए ठहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं। (फ़ा149)

उन मकानों के यानी वहां के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उनके बाद उनका कोई जानशीन बाक़ी न रहा अब अल्लाह के सिवा उन मकानों का कोई वारिस नहीं ख़ल्क़ की फ़ना के बाद वही सब का वारिस है। (फ़ा150) यानी मर्कज़ी मक़ाम में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उम्मुलक़ुरा से मुराद मक्का मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा151) और उन्हें तबलीग़ करे और ख़बर दे कि अगर वह ईमान न लायेंगे तो उन पर अ़ज़ाब किया जाएगा ताकि उन पर हुज्जत लाज़िम हो और उनके लिए उज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रहे (फ़ा152) रसूल की तकज़ीब करते हों अपने कुफ़्र पर मुसिर हों और इस सबब से अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हों। (फ़ा153) जिस बक़ा बहुत थोड़ी और जिसका अन्जाम फ़ना (फ़ा154) यानी आख़िरत के मुनाफ़े (फ़ा155) तमाम कदूरतों से ख़ाली और दाइम ग़ैर मुन्क़तअ़ (फ़ा156) कि इतना समझ सको कि बाक़ी फ़ानी से बेहतर है इसी लिए कहा गया है कि जो शख़्स आख़िरत को दुनिया पर तरजीह दे वह नादान है (फ़ा157) सवाब जन्नत का (फ़ा158) यह दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते इनमें पहला जिसे अच्छा वादा दिया गया मोमिन है और दूसरा काफ़िर। (फ़ा159) अल्लाह तआ़ला बतरीक़े तौबीख़ (फ़ा160) दुनिया में मेरा शरीक

(बक़िया सफ़हा 637 का) के जवाब में नाज़िल हुई जिन्होंने कहा था कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबुव्वत के लिए क्यों बरगुज़ीदा किया यह क़ुरआन मक्का व ताइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यों न उतारा इस कलाम का क़ाइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वह अपने आप को और उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी को मुराद लेता था उसके जवाब में यह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी है अपनी हिकमत वही जानता है उन्हें उसकी मर्ज़ी में दख़ल की क्या मजाल। (फ़ा173) यानी मुशरिकीन का (फ़ा174) यानी कुफ़्र और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अ़दावत जिसको यह लोग छुपाते हैं (फ़ा175) अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़ेअ़. जैसे कि नबुव्वत में तअ़्न करना और क़ुरआन पाक की तकज़ीब (फ़ा176) कि उसके औलिया दुनिया में भी उसकी हम्द करते हैं और आख़िरत में भी उसकी हम्द से लज़्ज़त उठाते हैं (फ़ा177) उसी की क़ज़ा हर चीज़ में नाफ़िज़ व जारी है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अपने फ़रमांबरदारों के लिए मग़फ़िरत का और नाफ़रमानों के लिए शफ़ाअ़त का हुक्म फ़रमाता है। (फ़ा178) ऐ हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अहले मक्का से (फ़ा179) और दिन निकाले ही नहीं। (फ़ा180) जिसमें तुम अपनी मआ़श के काम कर सको।

(बक़िया सफ़हा 638 का) हक़ीक़ी हिस्सा यह है कि आख़िरत के लिए अमल करे सदक़ा देकर सिला रहमी करके और आमाले ख़ैर के साथ और उसकी तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अपनी सेहत व क़ुव्वत व जवानी व दौलत को न भूले इससे कि उनके साथ आख़िरत तलब करे हदीस में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़राग़त को शुग़ल से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले। (फ़ा196) अल्लाह के बन्दों के साथ। (फ़ा197) मआ़सी और गुनाहों का इरतेकाब करके और ज़ुल्म व बग़ावत कर के।

(बक़िया सफ़हा 639 का) मन्सब पर रश्क हुआ उसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि रिसालत तो आपकी हुई और क़ुरबानी की सरदारी हज़रत हारून की मैं कुछ भी न रहा बावजूदेकि मैं तौरेत का बेहतरीन क़ारी हूं मैं इस पर सब्र नहीं कर सकता हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह मन्सब हज़रत हारून को मैंने नहीं दिया अल्लाह ने दिया है क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं आपकी तस्दीक़ न करूंगा जब तक आप उसका सबूत मुझे दिखा न दें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने रुऊसाए बनी इसराईल को जमा करके फ़रमाया कि अपनी लाठियां ले आओ उन्हें सब को अपने क़ुब्बा में जमा किया रात भर बनी इसराईल उन लाठियों का पहरा देते रहे सुबह को हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम का असा सरसब्ज़ शादाब हो गया उसमें पत्ते निकल आये हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ क़ारून तूने यह देखा क़ारून ने कहा यह आपके जादू से कुछ अ़जीब नहीं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उसकी मदारात करते थे और वह आप को हर वक़्त ईज़ा देता था और उसकी सरकशी और तकब्बुर और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ अ़दावत दम बदम तरक़्क़ी पर थी उसने एक मकान बनाया जिसका दरवाज़ा सोने का था और उसकी दीवारों पर सोने के तख़्ते नसब किये बनी इसराईल सुबह व शाम उसके पास आते खाने खाते बातें बनाते उसे हंसाते जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुआ तो क़ारून मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आया तो उसने आपसे तय किया कि दिरहम व दीनार व मवेशी वग़ैरह में से हज़ारवाँ हिस्सा ज़कात देगा लेकिन घर जाकर हिसाब किया तो उसके माल में से इतना भी बहुत कसीर होता था उसके नफ़्स ने इतनी भी हिम्मत न की और उसने बनी इसराईल को जमा करके कहा कि तुम ने मूसा अ़लैहिस्सलाम की हर बात में इताअ़त की अब वह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो उन्होंने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये कहने लगा कि फ़लानी बद-चलन औरत के पास जाओ और उससे एक मुआ़वज़ा मुक़र्रर करो कि वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तोहमत लगाए ऐसा हुआ तो बनी इसराईल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को छोड़ देंगे चुनांचे क़ारून ने उस औरत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपये और बहुत से मवाईद करके यह तोहमत लगाने पर तय किया और दूसरे रोज़ बनी इसराईल को जमा करके हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा कि बनी इसराईल आपका इन्तेज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें वअ़ज़ व नसीहत फ़रमायें हज़रत तशरीफ़ लाये और बनी इसराईल में खड़े होकर आपने फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल जो चोरी करेगा उसके हाथ काटे जायेंगे जो बोहतान लगाएगा उसके अस्सी कोड़े लगाये जायेंगे और जो ज़िना करेगा उसके अगर बीबी नहीं है तो सौ कोड़े मारे जायेंगे और अगर बीबी है तो उसको संगसार किया जाएगा यहां तक कि मर जाये। क़ारून कहने लगा कि यह हुक्म सब के लिए है ख़्वाह आप ही हों फ़रमाया ख़्वाह मैं ही क्यों न हूं कहने लगा कि बनी इसराई का ख़्याल है कि आपने फ़लां बद-कार औरत के साथ बदकारी की है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसे बुलाओ वह आई

तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसकी क़सम जिसने बनी इसराईल के लिए दरिया फाड़ा और उसमें रस्ते बनाये और तौरेत नाज़िल की सच कह दे वह औरत डर गई और अल्लाह के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुरअत उसे न हुई और उसने अपने दिल में कहा कि इससे तौबा करना बेहतर है और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की क़सम यह झूठ है और उसने आप पर तोहमत लगाने के एवज़ में मेरे लिए बहुत माले कसीर मुक़र्रर किया है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सज्दा में गिरे और यह अर्ज़ करने लगे या रब अगर मैं तेरा रसूल हूं तो मेरी वजह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा अल्लाह तआला ने आपको वही फ़रमाई कि मैंने ज़मीन को आपकी फ़रमांबरदारी करने का हुक्म दिया है आप उसको जो चाहें हुक्म दें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से फ़रमाया ऐ बनी इसराईल अल्लाह तआला ने मुझे क़ारून की तरफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔन की तरफ़ भेजा था जो क़ारून का साथी हो उसके साथ उसकी जगह ठहरा रहे जो मेरा साथी हो जुदा हो जाये सब लोग क़ारून से जुदा हो गए और सिवा दो शख़्सों के कोई उसके साथ न रहा फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को हुक्म दिया कि इन्हें पकड़ ले तो वह घुटनों तक धंस गए। फिर आपने यही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए आप यही फ़रमाते रहे हत्ता कि वह लोग गर्दनों तक धंस गए अब वह बहुत मिन्नत व लजाजत करते थे और क़ारून आपको अल्लाह की क़स्में और रिश्ता व क़राबत के वास्ते देता था मगर आपने इल्तेफ़ात न फ़रमाया यहां तक कि वह बिल्कुल धंस गये और ज़मीन बराबर हो गई क़तादा ने कहा कि वह क़ियामत तक धंसते ही चले जायेंगे बनी इसराईल ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून के मकान और उसके ख़ज़ाइन व अमवाल की वजह से उसके लिए बद दुआ की यह सुन कर आप ने अल्लाह तआला से दुआ की तो उसका मकान और उसके ख़ज़ाने व अमवाल सब ज़मीन में धंस गए। (फ़ा208) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से। (फ़ा209) अपनी उस आरज़ू पर नादिम होकर (फ़ा210) जिसके लिए चाहे

(बक़िया सफ़हा 640 का) देना (फ़ा220) ख़ल्क़ को अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी इबादत की दावत दो (फ़ा221)उनकी इआनत व मुवाफ़क़त न करना (फ़ा222) आख़िरत में और वही आमाल की जज़ा देगा।

(बक़िया सफ़हा 641 का) ईमान लाये और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत अम्मार के हक़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा परस्ती की वजह से सताये जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त ईज़ायें पहुंचाते थे और एक क़ौल यह है कि यह आयतें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत महजअ़ बिन अब्दुल्लाह के हक़ में नाज़िल हुई जो बद्र में सबसे पहीले शहीद होने वाले हैं सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनकी निस्बत फ़रमाया कि महजअ़ सय्येदुश्शोहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्नत की तरफ़ पहले वह पुकारे जायेंगे उनके वालदैन और उनकी बीबी को उनका बहुत सदमा हुआ तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की फिर उनकी तसल्ली फ़रमाई। (फ़ा3) तरह तरह की आज़माईशों में डाला बाज़ उनमें से वह हैं जो आरे से चीर डाले गए बाज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए और मक़ामे सिद्क़ व वफ़ा में साबित व क़ाइम रहे (फ़ा4) हर एक का हाल ज़ाहिर फ़रमा देगा। (फ़ा5) शिर्क व मआसी में मुब्तला हैं (फ़ा6) और हम उनसे इन्तेक़ाम न लेंगे। (फ़ा7) बअ़स व हिसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे। (फ़ा8) उसने सवाब व अ़ज़ाब का जो वादा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है चाहिए कि उसके लिए तैयार रहे और अ़मले सालेह में जल्दी करे (फ़ा9) बन्दों के अक़वाल व अफ़आल को (फ़ा10) ख़्वाह आदाए दीन से मुहारबा करके या नफ़्स व शैतान की मुख़ालफ़त करके और ताअ़ते इलाही पर साबिर व क़ाइम रह कर (फ़ा11) उसका नफ़ा व सवाब पाएगा (फ़ा12) इन्स व जिन्न व मलायका और उनके आमाल व इबादात से उसका अमर व नही फ़रमाना बन्दों पर रहमत व करम के लिए है (फ़ा13) नेकियों के सबब (फ़ा14) यानी अमले नेक पर (फ़ा15) एहसान और नेक सुलूक की **शाने नुज़ूलः** यह आयत और सूरह लुक़मान और सूरह अहक़ाफ़ की आयतें सअ़द बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में व बक़ौल इब्ने इसहाक़ सअ़द बिन मालिक ज़ुहरी के हक़ में नाज़िल हुईं उनकी मां हमना बिन्त अबी सुफ़ियान बिन उमैया बिन अबद शम्स थी हज़रत सअ़द साबिक़ीन अव्वलीन में से थे और अपनी वालदा के साथ अच्छा सुलूक करते थे जब आप इस्लाम लाये तो आपकी वालदा ने कहा कि तूने यह क्या नया काम किया ख़ुदा की क़सम अगर तू इससे बाज़ न आया तो न मैं खाऊँ न पियूं यहां तक कि मर जाऊँ और तेरी हमेशा के लिए बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाये फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया न पिया न साया में बैठी उससे जईफ़ हो गई फ़िर एक रात दिन और इसी तरह रही तब हज़रत सअ़द उसके पास आये और आपने उससे फ़रमाया कि ऐ मां अगर तेरी सौ जानें हों और एक एक करके सब ही निकल जायें तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं तू चाहे खा चाहे मत खा जब वह हज़रत सअ़द की तरफ़ से मायूस हो गई कि यह अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो खाने पीने लगी इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालदैन के साथ नेक सुलूक किया जाये और अगर वह कुफ़्र व शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाये (फ़ा16) क्योंकि जिस चीज़ का इल्म न हो उसको किसी के कहने से मान लेना तक़लीद है माना यह हुए कि वाक़ेअ़ में मेरा कोई शरीक नहीं तो इल्म व तहक़ीक़ से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता मुहाल है रहा तक़लीदन बग़ैर इल्म के मेरे लिए शरीक मान लेना यह निहायत क़बीह है इसमें वालिदैन की हरगिज़ इताअ़त न कर **मसलाः** ऐसी इताअ़त किसी मख़्लूक़ की जायज़ नहीं जिस में ख़ुदा की नाफ़रमानी हो

(बक़िया सफ़हा 642 का) तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उसके हम कफ़ील हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गर्दन पर यानी अगर हमारे तरीक़ा पर रहने से अल्लाह तआला ने तुम को पकड़ा और अ़ज़ाब किया तो तुम्हारा अ़ज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे अल्लाह तआला ने उनकी तकज़ीब फ़रमाई। (फ़ा27) कुफ़्र व मआसी के (फ़ा28) उनके गुनाहों के जिन्हें उन्होंने गुमराह

किया और राहे हक़ से रोका हदीस शरीफ़ में है जिसने इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा निकाला उस पर उस तरीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़ियामत तक जो लोग उस पर अमल करें उनके गुनाह भी बग़ैर इसके कि उन पर से उनके बारे गुनाह में कुछ भी कमी हो (मुस्लिम शरीफ़) (फ़ा29) अल्लाह तआला उनके आमाल व इफ़्तेरा सब का जानने वाला है लेकिन यह सवाल तौबीख़ के लिए है (फ़ा30) इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौहीद व ईमान की दावत जारी रखी और उनकी ईज़ाओं पर सब्र किया इस पर भी वह क़ौम बाज़ न आई और तकज़ीब करती रही। (फ़ा31) तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आपसे पहले अम्बिया के साथ उनकी क़ौमों ने बहुत सख़्तियां की हैं हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम पचास कम हज़ार बरस दावत फ़रमाते रहे और इस तवील मुद्दत में उनकी क़ौम के बहुत क़लील लोग ईमान लाए तो आप कुछ ग़म न करें क्योंकि बफ़ज़्लेही तआला आपकी क़लील मुद्दत की दावत से ख़ल्क़े कसीर मुशर्रफ़ ब-ईमान हो चुकी है। (फ़ा32) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा33) जो आपके साथ थे उनकी तादाद अठहत्तर थी निस्फ़ मर्द निस्फ़ औरत उनमें हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द साम व हाम व याफ़िस और उनकी बीबियां भी शामिल हैं। (फ़ा34) कहा गया है कि वह कश्ती जूदी पहाड़ पर मुद्दत दराज़ तक बाक़ी रही। (फ़ा35) याद करो

(बक़िया सफ़हा 643 का) वाले उसके हुक्म व क़ज़ा से कहीं भाग सकते हैं न आसमान वाले (फ़ा51) यानी क़ुरआन शरीफ़ और बअ़्स पर ईमान न लाये (फ़ा52) इस पन्द व मौअ़ेज़त के बाद फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि जब आपने अपनी क़ौम को ईमान की दावत दी और दलाइल क़ाइम किये और नसीहतें फ़रमाईं।

(बक़िया सफ़हा 644 का) कुफ़्र उन से किसी हाल में मुतसव्विर नहीं (फ़ा63) अपनी क़ौम को छोड़ कर (फ़ा64) जहां उसका हुक्म हो चुनांचे आपने सवादे इराक़ से सर ज़मीने शाम की तरफ़ हिजरत फ़रमाई इस हिजरत में आपके साथ आपकी बीबी सारा और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम थे (फ़ा65) बाद हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के। (फ़ा66) कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाद जितने अम्बिया हुए सब आप की नस्ल से हुए (फ़ा67) किताब से तौरेत इन्जील ज़बूर क़ुरआन शरीफ़ मुराद हैं (फ़ा68) कि पाक ज़ुर्रियत अ़ता फ़रमाई पैग़म्बरी उनकी नस्ल में रखी किताबें उन पैग़म्बरों को अ़ता कीं जो उनकी औलाद में हैं और उनको ख़ल्क़ में महबूब व मक़बूल किया कि तमाम अहले मिलल व अदयान उन से मुहब्बत रखते हैं और उनकी तरफ़ निस्बते फ़ख़्र जानते हैं और उनके लिए इख़्तितामे दुनिया तक दुरूद मुक़र्रर कर दिया यह तो वह है जो दुनिया में अ़ता फ़रमाया। (फ़ा69) जिनके लिए बड़े बुलन्द दर्जे हैं। (फ़ा70) इस बेहयाई की तफ़सीर इस से अगली आयत में बयान होती है। (फ़ा71) राहगीरों को क़त्ल करके उनके माल लूट कर और यह भी कहा गया है कि वह लोग मुसाफ़िरों के साथ बदफ़ेअ़्ली करते थे हत्ता कि लोगों ने उस तरफ़ गुज़रना मौक़ूफ़ कर दिया था। (फ़ा72) जो अक़्लन व उर्फ़न क़बीह व ममनूअ़् है जैसे गाली देना फ़ुहश बकना ताली और सीटी बजाना एक दूसरे के कंकरियां मारना रस्ता चलने वालों पर कंकरी वग़ैरह फेंकना शराब पीना तमस्ख़ुर और गन्दी बातें करना एक दूसरे पर थूकना वग़ैरह ज़लील अफ़आ़ल व हरकात जिनकी क़ौमे लूत आदी थी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने उस पर उन्हें मलामत की।

(बक़िया सफ़हा 646 का) न गर्द व गुबार व बारिश किसी चीज़ से हिफ़ाज़त ऐसे ही बुत हैं कि अपने पूजारियों को न दुनिया में नफ़ा पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई ज़रर पहुंचा सकें। (फ़ा103) ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का दीन है फ़ाइदा हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है आप ने फ़रमाया अपने घरों से मकड़ियों के जाले दूर करो यह नादारी का बाइस होते हैं (फ़ा104) कि उनका दीन इस क़दर निकम्मा है (फ़ा105) कि वह कुछ हक़ीक़त नहीं रखती (फ़ा106) तो आ़क़िल को कब शायान है कि इज़्ज़त व हिकमत वाले क़ादिर मुख़्तार की इबादत छोड़ कर बे इल्म बे इख़्तियार पत्थरों की पूजा करे। (फ़ा107) यानी उनके हुस्न व ख़ूबी और उनके नफ़ा और फ़ाइदे और उनकी हिकमत को इल्म वाले समझते हैं जैसा कि इस मिसाल ने मुशरिक और मुवह्हिद का हाल ख़ूब अच्छी तरह ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ वाज़ेह फ़रमा दिया क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने तन्ज़ के तौर पर कहा था कि अल्लाह तआ़ला मक्खी और मकड़ी की मिसालें बयान फ़रमाता है और इस पर उन्होंने हंसी बनाई थी इस आयत में उनका रद् कर दिया गया कि वह जाहिल हैं तम्सील की हिकमत को नहीं जानते मिसाल से मक़सूद तफ़हीम होती है और जैसी चीज़ हो उसकी शान ज़ाहिर करने के लिए वैसी ही मिसाल मुक़तज़ाए हिकमत है तो बातिल और कमज़ोर दीन के ज़ोअ़्फ़ व बुतलान के इज़हार के लिए यह मिसाल निहायत ही नाफ़ेअ़ है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल व इल्म अ़ता फ़रमाया वह समझते हैं (फ़ा108) उसकी क़ुदरत व हिकमत और उसकी तौहीद व यकताई पर दलालत करने वाली।

اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَؕ-اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِؕ-وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُؕ-وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ(۴۵) وَ لَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ﳓ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَ اِلٰهُنَا وَ اِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ(۴۶) وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَؕ-فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖۚ-وَ مِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖؕ-وَ مَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ(۴۷) وَ مَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ(۴۸) بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَؕ-وَ مَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ(۴۹) وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖؕ-قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِؕ-وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ(۵۰) اَوَ لَمْ یَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ یُتْلٰى عَلَیْهِمْؕ-اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

उत्लु मा ऊहि–य इलै–क मिनल्–किताबि व अक़िमिस्सला–त इन्नस्सला–त तन्हा अ़निल्–फ़ह्शाइ वल्मुन्करि व लज़िक्रुल्लाहि अक्बरु वल्लाहु यअ्लमु मा तस्–नअू न(45)व ला तुजादिलू अह्लल् –किताबि इल्ला बिल्लती हि–य अह्सनु इल्लल्लज़ी–न ज़–लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि–ल इलैना व उन्ज़ि–ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुंव् व नह्नु लहू मुस्लिमून (46)व कज़ालि–क अन्ज़ल्ना इलैकल् किता–ब फ़ल्लज़ी–न आतैनाहुमुल् किता–ब युअ्मिनू–न बिही व मिन् हाउलाइ मंय्युअ्मिनु बिही व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल्–काफ़िरून(47)व मा कुन्–त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव् व ला तख़ुत्तुहू बि–यमीनि–क इज़ल्–लर् ताबल् मुब्तिलून(48)बल् हु–व आयातुम् बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल् लज़ी–न ऊतुल्अ़िल्–म व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लज़्–ज़ालिमून(49)व क़ालू लौला उन्ज़ि–ल अ़लैहि आयातुम् मिर्रब्बिही क़ुल् इन्नमल् आयातु अ़िन्दल्लाहि व इन्नमा अना नज़ीरुम् मुबीन(50)अ–व लम् यक्फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल् किता–ब युत्ला अ़लैहिम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क

ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी तरफ़ 'वही' की गई (फ़ा109) और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से (फ़ा110) और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा (फ़ा111) और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।(45) और ऐ मुसलमानों किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर तरीक़ा पर (फ़ा112) मगर वह जिन्होंने उनमें से ज़ुल्म किया (फ़ा113) और कहो (फ़ा114) हम ईमान लाए उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मअ्बूद है और हम उसके हुज़ूर गर्दन रखे हैं।(46) (फ़ा115) और ऐ महबूब यूंही तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी (फ़ा116) तो वह जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई (फ़ा117) इस पर ईमान लाते हैं और कुछ उनमें से हैं (फ़ा118) जो इस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों से मुन्किर नहीं होते मगर काफ़िर।(47) (फ़ा119) और इस (फ़ा120) से पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता (फ़ा121) तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते।(48) (फ़ा122) बल्कि वह रौशन आयतें हैं उनके सीनों में जिनको इल्म दिया गया (फ़ा123) और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करते मगर ज़ालिम।(49) (फ़ा124) और बोले (फ़ा125) क्यों न उतरीं कुछ निशानियाँ उन पर उनके रब की तरफ़ से (फ़ा126) तुम फ़रमाओ निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं(फ़ा127)और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूं।(50)(फ़ा128) और क्या यह उन्हें बस नहीं कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है (फ़ा129)बेशक उसमें

(फ़ा109) यानी क़ुरआन शरीफ़ कि इसकी तिलावत इबादत भी है और इसमें लोगों के लिए पन्द व नसीहत भी और अहकाम व आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ की तालीम भी। (फ़ा110) यानी ममनूआते शरइया से लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और उसको अच्छी तरह अदा करता है नतीजा यह होता है कि एक न एक दिन वह उन बुराईयों को तर्क कर देता है जिनमें मुबतला था हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इरतेकाब करता था हुज़ूर से उसकी शिकायत की गई फ़रमाया उसकी नमाज़ किसी रोज़ उसको इन बातों से रोक देगी चुनान्चे बहुत ही क़रीब ज़माना में उसने तौबा की और उसका हाल बेहतर हो गया। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जिसकी नमाज़ उसको बेहयाई और ममनूआत से न रोके वह नमाज़ ही नहीं। (फ़ा111) कि वह अफ़ज़ल ताआ़त है तिर्मिज़ी की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु **(बक़िया सफ़हा 679 पर)**

لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَاِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ
اَرْضِىْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّاىَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِىْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ

ल–रह्म–तंव् व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्युअ्मिनून(51)कुल् कफ़ा बिल्लाहि बैनी व बै–नकुम् शहीदन् यअ्–लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लज़ी–न आ–मनू बिल्बातिलि व क–फ़रू बिल्लाहि उलाइ–क हुमुल्ख़ासिरून(52)व यस्तअ्जिलू–न–क बिल्अ़जाबि व लौला अ–जलुम् मुसम्मल् लजा–अ–हुमुल् अ़ज़ाबु व ल–यअ्ति–यन्नहुम् बग्त–तंव् व हुम् ला यश्अुरून(53) यस्तअ्जिलू–न–क बिल्अ़ज़ाबि व इन्–न जहन्न–म लमुही–ततुम् बिल्काफ़िरीन(54)यौ–म यग्शाहुमुल् अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्मलून (55)याअिबादि–यल् लज़ी–न आ–मनू इन्–न अर्ज़ी वासि–अतुन् फ़इय्या–य फ़अ्बुदून (56)कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ–क़तुल्मौति सुम्–म इलैना तुर्जअून(57)वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति लनुबव्वि–अन्नहुम् मिनल् जन्नति ग़ु–र–फ़न् तजरी मिन् तह्तिहल् अन्हारू ख़ालिदी–न फ़ीहा निअ्म अज्रुल्आमिलीन(58)अल्लज़ी–न स–बरू व अ़ला रब्बि–हिम् य–त–वक्कलून(59) व–क–अय्यिम् मिन् दाब्बतिल् ला तह्मिलु रिज़्क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम्

रहमत और नसीहत है ईमान वालों के लिए।(51) (रुकूअ़ 1) तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह (फ़ा130) जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वह जो बातिल पर यक़ीन लाए और अल्लाह के मुन्किर हुए वही घाटे में हैं।(52) और तुम से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं (फ़ा131) और अगर एक ठहराई मुद्दत न होती (फ़ा132) तो ज़रूर उन पर अ़ज़ाब आ जाता (फ़ा133) और ज़रूर उन पर अचानक आएगा जब वह बे-ख़बर होंगे।(53) तुम से अ़ज़ाब की जल्दी मचाते हैं और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को।(54) (फ़ा134) जिस दिन उन्हें ढांपेगा अ़ज़ाब उनके ऊपर और उनके पाँव के नीचे से और फ़रमाएगा चखो अपने किये का मज़ा।(55) (फ़ा135) ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो मेरी ही बन्दगी करो।(56) (फ़ा136) हर जान को मौत का मज़ा चखना है (फ़ा137) फिर हमारी ही तरफ़ फिरोगे।(57) (फ़ा138) और बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बाला ख़ानों पर जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उनमें रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का।(58) (फ़ा139) वह जिन्होंने सब्र किया (फ़ा140) और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।(59) (फ़ा141) और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते (फ़ा142) अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें (फ़ा143)

(फ़ा130) मेरे सिद्क़े रिसालत और तुम्हारी तकज़ीब का मोअ्जेज़ात से मेरी ताईद फ़रमा कर (फ़ा131) यह आयत नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जिसने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि हमारे ऊपर आसमान से पत्थरों की बारिश कराइये (फ़ा132) जो अल्लाह तआ़ला ने मुअ़य्यन की है और उस मुद्दत तक अज़ाब का मुअख़्ख़र फ़रमाना मुक़तज़ाए हिकमत है। (फ़ा133) और ताख़ीर न होती। (फ़ा134) इसमें उनमें का कोई भी न बचेगा (फ़ा135) यानी अपने आमाल की जज़ा (फ़ा136) जिस ज़मीन में ब-सहूलत इबादत कर सको माना यह हैं कि जब मोमिन को किसी सरज़मीन में अपने दीन पर क़ाइम रहना और इबादत करना दुशवार हो तो चाहिए कि वह ऐसी सरज़मीन की तरफ़ हिजरत करे जहां आसानी से इबादत कर सके और दीन की पाबन्दी में दुशवरियां दरपेश न हों **शाने नुज़ूलः** यह आयत ज़ोअ़फ़ाए मुस्लिमीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हें वहां रहकर इस्लाम के इज़्हार में ख़तरे और तकलीफ़ें थीं और निहायत ज़ैक़ में थे उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो ज़रूर है यहां रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ वह वसीअ़ **(बक़िया सफ़हा 679 पर)**

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

व हुवस्समीउल् अ़लीम(60)व ल–इन् स–अल्तहुम् मन् ख़–ल–क़स्समावाति वल् अर्–ज़ व सख़्ख़–रश् शम्स वल्क़–म–र ल–यक़ूलुन्नल्लाहु फ़–अन्ना युअ्–फ़कून(61)अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्–क़ लिमंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू इन्नल्ला–ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(62)व लइन् स–अल्तहुम् मन् नज़्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अह़्या बिहिल्अर्–ज़ मिम् बअ़्दि मौतिहा ल–यक़ूलुन्नल्लाहु क़ुलिल्ह़म्दु लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्–क़िलून(63)व मा हाज़िहिल् ह़यातुद्दुन्या इल्ला लह्वुंव् व लअ़िबुन् व इन्नद्दारल् आख़ि–र–त ल–हि–यल् ह़–यवानु लौ कानू यअ़्लमून(64)फ़इज़ा रकिबू फ़िल्फ़ुल्कि द–अ़वुल्ला–ह मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न फ़–लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून(65) लि–यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् व लि–य–त–मत्तअ़ू फ़सौ–फ़ यअ़्लमून(66)अ–व लम् यरौ अन्ना ज–अ़ल्ना ह़–र–मन् आमिनंव् व यु–त–ख़त्तफ़ुन्नासु मिन् ह़ौलिहिम् अ–फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू–न व बिनिअ़्–मतिल्लाहि यक्फ़ुरून(67)व मन् अज़्–लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़–लल्लाहि कज़िबन् औ कज्ज–ब बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा–अहू अलै–स फ़ी जहन्न–म मस्वल् लिल्काफ़िरीन(68)वल्लज़ी–न जा–हदू फ़ीना ल–नह्दियन्नहुम् सुबु–लना व इन्नल्ला–ह ल–मअ़ल् मुह़्सिनीन(69)

और वही सुनता जानता है।(60) (फ़ा144) और अगर तुम उनसे पूछो (फ़ा145) किसने बनाए आसमान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चाँद तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने तो कहां औंधे जाते हैं।(61) (फ़ा146) अल्लाह कुशादा करता है रिज़्क़ अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिए चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(62) और जो तुम उनसे पूछो किस ने उतारा आसमान से पानी तो उसके सबब ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरे पीछे ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने (फ़ा147) तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को बल्कि उनमें अक्सर बे-अ़क़्ल हैं।(63) (फ़ा148) (रुकूअ़ 2) और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद (फ़ा149) और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है (फ़ा150) क्या अच्छा था अगर जानते।(64) (फ़ा151) फिर जब कश्ती में सवार होते हैं (फ़ा152) अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अ़क़ीदा लाकर (फ़ा153) फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है (फ़ा154) जभी शिर्क करने लगते हैं।(65) (फ़ा155) कि नाशुक्री करें हमारी दी हुई निअ़्मत की (फ़ा156) और बरतें (फ़ा157) तो अब जाना चाहते हैं।(66) (फ़ा158) और क्या उन्होंने (फ़ा159) यह न देखा कि हम ने (फ़ा160) हुरमत वाली ज़मीन पनाह बनाई (फ़ा161) और उनके आस पास वाले लोग उचक लिए जाते हैं (फ़ा162) तो क्या बातिल पर यक़ीन लाते हैं (फ़ा163) और अल्लाह की दी हुई निअ़्मत से(67) (फ़ा164) नाशुक्री करते हैं। और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा165) या हक़ को झुठलाए (फ़ा166) जब वह उसके पास आए क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं।(68) (फ़ा167) और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे (फ़ा168) और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है।(69) (फ़ा169) (रुकूअ़ 3)

(फ़ा144) तुम्हारे अक़्वाल और तुम्हारे दिल की बातों को हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करो जैसा चाहिए तो वह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी परिन्दों **(बक़िया सफ़्हा 680 पर)**

سُورَةُ الرُّومِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ○ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ○ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ○ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ○ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ○ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ښ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ○ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ○ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

सूरतुर्रूमि

(मक्की है इसमें 60 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्–लाम्–मीम्(1)गुलि–बतिर्रूमु(2)फ़ी अदनल् अर्ज़ि व हुम् मिम् बअ़्दि ग़–लबिहिम् स–यग़्लिबून(3)फ़ी बिज़्अ़ सिनी–न लिल्लाहिल् अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ़्दु व यौ–मइज़िंय्यफ़्–रहुल् मुअमिनून(4)बिनस्रिल्लाहि यन्सुरु मंय्यशाउ व हुवल् अ़ज़ीज़ुर् रहीम(5)वअ़्दल्लाहि ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ़्–दहू व लाकिन्–न अक्स–रन्नासि ला यअ़्–लमून(6)यअ़्–लमू–न ज़ाहिरम् मिनल् हयातिद्दुन्या व हुम् अ़निल् आख़ि–रति हुम् ग़ाफ़िलून(7)अ–व लम् य–त–फ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ख़–ल–क़ल्लाहुस् समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ–जलिम् मुसम्मन् व इन्–न कसीरम् मिनन्नासि बिलिक़ाइ रब्बिहिम् लकाफ़िरून(8)अ–व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्ज़ुरू कै–फ़ का–न आक़ि–बतुल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् कानू अशद्–द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अलिफ़ लाम-मीम(1) रूमी (फ़ा2) मग़लूब हुए।(2) पास की ज़मीन में (फ़ा3) और अपनी मग़लूबी के बाद अन्क़रीब ग़ालिब होंगे।(3) (फ़ा4) चन्द बरस में (फ़ा5) हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे (फ़ा6) और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे।(4) अल्लाह की मदद से (फ़ा7) मदद करता है जिसकी चाहे और वही है इज़्ज़त वाला मेहरबान।(5) अल्लाह का वादा (फ़ा8) अल्लाह अपना वादा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।(6) (फ़ा9) जानते हैं आँखों के सामने की दुनियवी ज़िन्दगी (फ़ा10) और वह आख़िरत से पूरे बेख़बर हैं।(7) क्या उन्होंने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने पैदा न किये आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है मगर हक़ (फ़ा11) और एक मुक़र्रर मीआ़द से (फ़ा12) और बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इंकार रखते हैं।(8) (फ़ा13) और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कि उनसे अगलों का अन्जाम कैसा हुआ (फ़ा14) वह उनसे ज़्यादा ज़ोर आवर थे

(फ़ा1) सूरह रूम मक्की है इसमें छः रुकूअ़ साठ आयतें 819 कलिमे 3534 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः फ़ारस और रूम के दर्मियान जंग थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिए मुशरिकीने अ़रब उनका ग़लबा पसन्द करते थे, रूमी अहले किताब थे इस लिए मुसलमानों को उनका ग़लबा अच्छा मालूम होता था खुसरो परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और क़ैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा यह लश्कर सरज़मीने शाम के क़रीब मुक़ाबिल हुए अहले फ़ारस ग़ालिब हुए मुसलमानों को यह ख़बर गिराँ गुज़री कुफ़्फ़ारे मक्का इस से खुश होकर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाईयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आजायेंगे यह आयतें सुन कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कुफ़्फ़ारे मक्का में जा कर एलान कर दिया कि खुदा की क़सम रूमी ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पायेंगे ऐ अहले **(बक़िया सफ़हा 680 पर)**

وَّ اَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ
الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُوْنَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ
تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ

व अस़ारुल् अर्–ज़ व अ़–मरूहा अक्स़–र मिम्मा अ़–मरूहा व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लि–यज़्लि–महुम् व लाकिन् कानू अन्फु–सहुम् यज़्लिमून(9)सुम्–म का–न आ़कि़–बतल्लज़ी–न असाउस्सूआ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह्ज़िऊन(10) अल्लाहु यब्दउल्ख़ल्–क़ सुम्–म युईदुहू सुम्–म इलैहि तुरजऊन(11)व यौ–म तकू़मुस्सा–अ़तु युब्लिसुल् मुज्रिमून(12)व लम् यकुल्लहुम् मिन् शु–रकाइहिम् शु–फ़आउ व कानू बिशु–रकाइहिम् काफ़िरीन(13)व यौ–म तकू़मुस्सा–अ़तु यौ–मइज़िंय्य–त–फ़र्रकू़न(14)फ़–अम्मल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौ–ज़तिंय्युह्–बरून(15)व अम्मल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल् आख़ि–रति फ़उलाइ–क फ़िल्अ़ज़ाबि मुह्ज़रून(16)फ़सुब्हानल्लाहि ही़–न तुम्सू–न व ही़–न तुस्बिहून.(17)व लहुल्हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अ़शिय्यंव् व ही़–न तुज़्हिरून(18)युख़्रिजुल् हय्–य मिनल् मय्यिति व युख़्रिजुल् मय्यि–त मिनल् हय्यि व युह़्यिल्

और ज़मीन जोती और आबाद की उन (फ़ा15) की आबादी से ज़्यादा और उनके रसूल उनके पास रौशन निशानियाँ लाए (फ़ा16) तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता (फ़ा17) हां वह खुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।(9) (फ़ा18) फिर जिन्होंने हद भर की बुराई की उनका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह की आयतें झुठलाने लगे और उनके साथ तमस्ख़ुर करते।(10) (रुकूअ़ 4) अल्लाह पहले बनाता है फिर दोबारा बनाएगा (फ़ा19) फिर उसकी तरफ़ फिरोगे।(11) (फ़ा20) और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी मुजरिमों की आस टूट जाएगी।(12) (फ़ा21) और उनके शरीक (फ़ा22) उनके सिफ़ारशी न होंगे और वह अपने शरीकों से मुन्किर हो जायेंगे।(13) और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन अलग हो जायेंगे।(14) (फ़ा23) तो वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की क्यारी में उनकी ख़ातिरदारी होगी।(15) (फ़ा24) और वह जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुठलाया (फ़ा25) वह अ़ज़ाब में ला धरे जायेंगे।(16) (फ़ा26) तो अल्लाह की पाकी बोलो (फ़ा27) जब शाम करो (फ़ा28) और जब सुबह हो।(17) (फ़ा29) और उसी की तारीफ़ है आसमानों और ज़मीन में (फ़ा30) और कुछ दिन रहे (फ़ा31) और जब तुम्हें दोपहर हो।(18) (फ़ा32) वह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से (फ़ा33) और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से (फ़ा34) और ज़मीन

(फ़ा15) अहले मक्का (फ़ा16) तो वह उन पर ईमान न लाए पस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया। (फ़ा17) उनके हुक़ूक़ कम करके और उन्हें बग़ैर जुर्म के हलाक करके (फ़ा18) रसूलों की तकज़ीब करके अपने आप को मुस्तहिके अ़ज़ाब बना कर। (फ़ा19) यानी बाद मौत ज़िन्दा करके (फ़ा20) तो आमाल की जज़ा देगा (फ़ा21) और किसी नफ़ा और भलाई की उम्मीद बाक़ी न रहेगी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह माना बयान किये हैं कि उनका कलाम मुन्क़तअ़ हो जाएगा वह साकित रह जायेंगे क्योंकि उनके पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज्जत न होगी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह माना बयान किये हैं कि वह रुसवा होंगे। (फ़ा22) यानी बुत जिन्हें वह पूजते थे। (फ़ा23) मोमिन और काफ़िर फिर कभी जमा न होंगे। (फ़ा24) यानी बुस्ताने जन्नत में उनका इकराम किया जाएगा जिससे वह ख़ुश होंगे यह ख़ातिरदारी जन्नती निअ़मतों के साथ होगी एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद सिमाअ़. है कि उन्हें नग़माते तरब अंगेज़ सुनाये जायेंगे जो अल्लाह तबारक व तआ़ला की तस्बीह पर मुश्तमिल होंगे। (फ़ा25) बअ़स व हश्र के मुन्किर हुए (फ़ा26) न इस अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो न इससे कभी निकलें (फ़ा27) पाकी बोलने से या तो अल्लाह तआ़ला की तस्बीह व सना मुराद है और उसकी अहादीस में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इससे नमाज़ मुराद है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से दरियाफ़्त किया गया कि क्या यह पंजगाना नमाज़ों का बयान क़ुरआने पाक में है फ़रमाया हां और यह आयतें **(बक़िया सफ़हा 680 पर)**

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا
لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْعَالِمِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ
الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَ
الْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِنَ الْأَرْضِ ۖ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي

अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा व कज़ालि–क तुख़्रजून(19)व मिन् आयातिही अन् ख़–ल–क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्–म इज़ा अन्तुम् ब–शरुन् तन्त–शिरून(20)व मिन् आयातिही अन् ख़–ल–क़ लकुम् मिन् अन्फ़ु–सिकुम् अज़्वाजल् लितस्कुनू इलैहा व ज–अ–ल बै–नकुम् म–वद्–द–तंव् व रह्–म–तन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(21)व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्ति–लाफ़ु अल्– सि–नतिकुम् व अल्वा–निकुम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यातिल् लिल् आ–लमीन(22)व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्तिग़ाउकुम् मिन् फ़ज़्लि–ही इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआया–तिल् लिक़ौमिंय्यस्–मऊ न(23)व मिन् आयातिही युरीकुमुल्बर्–क़ ख़ौफ़ंव् व त–म–अंव् व युनज़्ज़िलु मिनस्समाइ माअन् फ़युह्यी बिहिल्अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा इन्–न फ़ी जालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(24)व मिन आयातिही अन् तक़ूमस्समाउ वल्अर्ज़ु बिअम्रिही सुम्–म इज़ा दआकुम् दअ्–व–तम् मिनल् अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून (25)व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि कुल्लुल् लहू क़ानितून(26)व हु–वल्लज़ी

को जिलाता है उसके मरे पीछे (फ़ा35) और यूंही तुम निकाले जाओगे।(19) (फ़ा36) (रुकूअ़ 5) और उसकी निशानियों से है यह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से (फ़ा37) फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए।(20) और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ और तुम्हारे आपस में मुहब्बत और रहमत रखी (फ़ा38) बेशक उसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए।(21) और उसकी निशानियों से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़ (फ़ा39) बेशक उसमें निशानियाँ हैं जानने वालों के लिए।(22) और उसकी निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना (फ़ा40) और उसका फ़ज़्ल तलाश करना (फ़ा41) बेशक उसमें निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिए।(23) (फ़ा42) और उसकी निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती (फ़ा43) और उम्मीद दिलाती (फ़ा44) और आसमान से पानी उतारता है तो उससे ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे बेशक उसमें निशानियां हैं अ़क्ल वालों के लिए।(24) (फ़ा45) और उसकी निशानियों से है कि उसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं (फ़ा46) फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा (फ़ा47) जभी तुम निकल पड़ोगे।(25) (फ़ा48) और उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसके ज़ेरे हुक्म हैं।(26) और वही है कि

(फ़ा35) यानी ख़ुश्क हो जाने के बाद मेंह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर (फ़ा36) क़ब्रों से बअ़स व हिसाब के लिए (फ़ा37) तुम्हारा जद्दे आला और तुम्हारी असल हज़रत आदम अ़लैहिस्सलामे को इससे पैदा करके। (फ़ा38) कि बग़ैर किसी पहली मअ़्रेफ़त और बग़ैर किसी क़राबत के एक को दूसरे के साथ मुहब्बत व हमदर्दी है। (फ़ा39) ज़बानों का इख़्तिलाफ़ तो यह है कि कोई अ़रबी बोलता है कोई अ़जमी कोई और कुछ और रंगतों का इख़्तिलाफ़ यह है कि कोई गोरा है कोई काला कोई गन्दुमी और यह इख़्तिलाफ़ निहायत अ़जीब है क्योंकि सब एक असल से हैं और सब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं। (फ़ा40) जिससे तकान दूर होती है और राहत हासिल होती है। (फ़ा41) फ़ज़्ल तलाश करने से कस्बे मआ़श मुराद है। (फ़ा42) जो गोश होश से सुनें। (फ़ा43) गिरने और नुक़सान पहुंचाने से (फ़ा44) बारिश की। (फ़ा45) जो सोचें और क़ुदरते इलाही पर ग़ौर करें (फ़ा46) हज़रत इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने फ़रमाया कि वह दोनों बग़ैर किसी सहारे के क़ाइम हैं। (फ़ा47) यानी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा इस तरह कि हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम क़ब्र वालों के उठाने के लिए सूर फूंकेंगे तो अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे चुनांचे उसके बाद ही इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा48) यानी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर।

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ
مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِي مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيهِ سَوَآءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ
الَّذِينَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِي مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِينَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ
عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۰﴾ مُنِيبِينَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَاَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿۳۱﴾
مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿۳۲﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيبِينَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا

यब्दउल् ख़ल्–क़ सुम्–म युओदुहू व हु–व अह्–वनु अ़लैहि व लहुल् म–स़लुल् अअ्ला फ़िस्समावाति वलअर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(27)ज़–र–ब लकुम् म–स़–लम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् हल्लकुम् मिम्मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् मिन् शु–रका–अ फ़ी मा र–ज़क्नाकुम् फ़–अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ू–नहुम् कख़ी–फ़तिकुम् अन्फ़ु–सकुम् कज़ालि–क नुफ़स़्सिलुल् आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्क़िलून (28)बलित् त–ब–अल् लज़ी–न ज़–लमू अह्वा–अहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् फ़–मंय्यह्दी मन् अ–ज़ल्लल्लाहु व मा लहुम् मिन् नासिरीन(29)फ़–अक़िम् वज्ह–क लिद्दीनि ह़नीफ़न् फ़ित्र–तल्लाहिल् लती फ़–त–रन्ना–स अ़लैहा ला तब्दी–ल लि–ख़ल्क़िल्लाहि ज़ालिकद्दीनुल् क़य्यिमु व लाकिन् –न अक्स़रन्नासि ला यअ़्–लमून(30)मुनीबी–न इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्सला–त व ला तकूनू मिनल् मुश्रिकीन(31) मिनल्लज़ी–न फ़र्रक़ू दी–नहुम् व कानू शि–य–अन् कुल्लु हिज़्बिम् बिमा लदैहिम् फ़रिहू न(32)व इज़ा मस्सन्ना–स ज़ुर्रुन् दऔ रब्बहुम् मुनीबी–न इलैहि सुम्–म इज़ा अज़ा–क़हुम् मिन्हु रह्–म–तन् इज़ा

अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा (फ़ा49) और यह तुम्हारी समझ में उस पर ज़्यादा आसान होना चाहिये (फ़ा50) और उसी के लिए है सब से बरतर शान आसामनों और ज़मीन में (फ़ा51) और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(27) (रुकूअ़ 6) तुम्हारे लिए (फ़ा52) एक कहावत बयान फ़रमाता है खुद तुम्हारे अपने हाल से (फ़ा53) क्या तुम्हारे लिए तुम्हारे हाथ के गुलामों में से कुछ शरीक हैं (फ़ा54) उसमें जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी (फ़ा55) तो तुम सब उसमें बराबर हो (फ़ा56) तुम उनसे डरो (फ़ा57) जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो (फ़ा58) हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियाँ बयान फ़रमाते हैं अ़क़्ल वालों के लिए।(28) बल्कि ज़ालिम (फ़ा59) अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हो लिए बे जाने (फ़ा60) तो उसे कौन हिदायत करे जिसे खुदा ने गुमराह किया (फ़ा61) और उनका कोई मददगार नहीं।(29) (फ़ा62) तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इताअ़त के लिए एक अकेले उसी के होकर (फ़ा63) अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया (फ़ा64) अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना (फ़ा65) यही सीधा दीन है मगर बहुत लोग नहीं जानते।(30) (फ़ा66) उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाते हुए (फ़ा67) और उससे डरो और नमाज़ क़ाइम रखो और मुश्रिकों से न हो।(31) उनमें से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया (फ़ा68) और हो गए गरोह गरोह हर गरोह जो उसके पास है उस पर खुश है।(32) (फ़ा69) और जब लोगों को तकलीफ़ पहुंचती है (फ़ा70) तो अपने रब को पुकारते हैं उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाते हुए फिर जब वह उन्हें अपने पास से रहमत का मज़ा देता है (फ़ा71) जभी

(फ़ा49) हलाक होने के बाद (फ़ा50) क्योंकि इन्सानों का तजर्बा और उनकी राय यही बताती है कि शय का इआ़दा उसकी इब्तेदा से सहल होता है और अल्लाह तआ़ला के लिए कुछ भी दुशवार नहीं (फ़ा51) कि उस जैसा कोई नहीं वह मअ़बूदे बरहक़ है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। (फ़ा52) ऐ मुशरिको। (फ़ा53) वह मिस्ल (कहावत) यह है (फ़ा54) यानी क्या तुम्हारे गुलाम तुम्हारे साझी हैं। (फ़ा55) माल व मताअ़ वग़ैरह (फ़ा56) यानी आक़ा और गुलाम को इस माल व मताअ़ में यकसां इस्तेहक़ाक़ हो ऐसा कि (फ़ा57) अपने माल व मताअ़ में बग़ैर उन गुलामों की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने से। (फ़ा58) मुद्दआ यह है कि तुम किसी तरह अपने ममलूकों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं कर सकते तो कितना ज़ुल्म है कि अल्लाह तआ़ला के ममलूकों को उसका शरीक क़रार दो। ऐ मुशरिकीन तुम अल्लाह तआ़ला के सिवा जिन्हें अपना मअ़बूद क़रार **(बक़िया सफ़हा 681 पर)**

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾
وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ

फ़रीकुम मिन्हुम् बि–रब्बिहिम् युश्रिकून(33)लियक्फुरू बिमा आतैनाहुम् फ़–त–मत्तअ़ू फ़सौ–फ़ तअ़्–लमून (34)अम् अन्ज़ल्ना अ़लैहिम् सुल्तानन् फ़–हुव य–त–कल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून(35) व इज़ा अ–ज़क़्नन्ना–स रह्–म–तन् फ़रिहू बिहा व इन् तुसिब्हुम् सय्यि–अतुम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़्–नतून(36)अ–व लम् यरौ अन्नल्ला–ह यब्सुतुर्रिज़्–क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयातिल् लिक़ौ–मिंय्युअ्मिनून(37)फ़आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्मिस्की–न वब्नस्सबीलि ज़ालि–क ख़ैरुल् लिल्लज़ी–न युरीदू–न वज्हल्लाहि व उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहून (38)व मा आतैतुम् मिर्रिबल् लि–यर्बु–व फ़ी अम्वालिन्नासि फ़ला यर्बू अ़िन्दल्लाहि व मा आतैतुम् मिन् ज़कातिन् तुरीदू–न वज्–हल्लाहि फ़उलाइ–क हुमुल् मुज़्अिफ़ून(39)अल्लाहुल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् सुम्–म र–ज़–क़कुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म युह्यीकुम् हल् मिन् शु–रकाइकुम् मंय्यफ़्–अ़लु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन् सुब्हा–नहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(40)ज़–ह–रल्फ़सादु

उनमें से एक गरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है।(33) कि हमारे दिए की नाशुक्री करें तो बरत लो (फ़ा72) अब क़रीब जानना चाहते हो।(34) (फ़ा73) या हम ने उन पर कोई सनद उतारी (फ़ा74) कि वह उन्हें हमारे शरीक बता रही है।(35) (फ़ा75) और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा देते हैं (फ़ा76) उस पर खुश हो जाते हैं (फ़ा77) और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे (फ़ा78) बदला उस का जो उनके हाथ ने भेजा (फ़ा79) जभी वह नाउम्मीद हो जाते हैं।(36) (फ़ा80) और क्या उन्होंने न देखा कि अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिए चाहे बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए।(37)तो रिश्तेदार को उसका हक़ दो (फ़ा81) और मिस्कीन और मुसाफ़िर को (फ़ा82) यह बेहतर है उनके लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं (फ़ा83) और उन्हीं का काम बना।(38) और तुम जो चीज़ ज़्यादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वह अल्लाह के यहां न बढ़ेगी (फ़ा84) और जो तुम ख़ैरात दो अल्लाह की रज़ा चाहते हुए (फ़ा85) तो उन्हीं के दूने हैं।(39) (फ़ा86) अल्लाह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा (फ़ा87) क्या तुम्हारे शरीकों में (फ़ा88) भी कोई ऐसा है जो उन कामों में से कुछ करे (फ़ा89) पाकी और बरतरी है उसे उनके शिर्क से।(40) (रुकूअ़ 7) चमकी ख़राबी

(फ़ा72) दुनियवी निअ़मतों को चन्द रोज़। (फ़ा73) कि आख़िरत में तुम्हारा क्या हाल होता है और इस दुनिया तलबी का क्या नतीजा निकलने वाला है (फ़ा74) कोई हुज्जत या कोई किताब। (फ़ा75) और शिर्क करने का हुक्म देती है ऐसा नहीं है न कोई हुज्जत है न कोई सनद। (फ़ा76) यानी तन्दुरुस्ती और वुसअ़ते रिज़्क़ का। (फ़ा77) और इतराते हैं। (फ़ा78) क़हत या ख़ौफ़ या और कोई बला। (फ़ा79) यानी उनकी मअ़सियतों और उनके गुनाहों का। (फ़ा80) अल्लाह तआ़ला की रहमत से और यह बात मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्योंकि मोमिन का हाल यह है कि जब उसे निअ़मत मिलती है तो शुक्रगुज़ारी करता है और जब सख़्ती होती है तो अल्लाह तआ़ला की रहमत का उम्मीदवार रहता है। (फ़ा81) उसके साथ सुलूक और एहसान करो। (फ़ा82) उनके हक़ दो सदक़ा देकर और मेहमान नवाज़ी करके मसला इस आयत से महारिम के नफ़क़ा का वुजूब साबित होता है। (मदारिक) (फ़ा83) और अल्लाह तआ़ला से सवाब के तालिब हैं। (फ़ा84) लोगों का दस्तूर था कि वह दोस्त अहबाब और आशनाओं को या और किसी शख़्स को इस नीयत से हदिया देते थे कि वह उन्हें इससे ज़्यादा देगा यह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा और इसमें बरकत न होगी क्योंकि यह अमल ख़ालिसन अल्लाह तआ़ला नहीं हुआ। (फ़ा85) न उससे बदला लेना मक़सूद हो न नाम व नुमूद। (फ़ा86) उन का अज्र व सवाब ज़्यादा होगा एक नेकी का दस गुना दिया जाएगा। **(बक़िया सफ़हा 681 पर)**

فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۝ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ۝ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ

كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ

الرِّيَاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ

قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ

फ़िल्बर्रि वल्बह्रि बिमा क–स–बत् ऐदिन्नासि लियुज़ी–क़हुम् बअ्–ज़ल्लज़ी अ़मिलू ल–अ़ल्लहुम् यर्जिअू न(41)कुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् लज़ी–न मिन् क़ब्लु का–न अक्स़रुहुम् मुश्रिकीन(42)फ़–अक़िम् वज्–ह–क लिद्–दीनिल् क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति–य यौमुल् ला म–रद्–द लहू मिनल्लाहि यौ–मइ–ज़िंय्यस्सद्–दअू न(43)मन् क–फ़–र फ़–अ़लैहि कुफ़्–रुहू व मन् अ़मि–ल सालिहन् फ़–लिअन्फ़ु–सिहिम् यम्हदून(44) लि–यज्ज़ि–यल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सा–लिहाति मिन् फ़ज़्लिही इन्नहू ला युहिब्बुल् काफ़िरीन(45)व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर्–रिया–ह मुबश्शिरातिंव् व लियुज़ी–क़कुम् मिर्रह्मतिही व लि–तज्रि–यल् फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(46)व ल–क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्त–क़म्ना मिनल्लज़ी–न अज्–रमू व का–न हक़्क़न् अ़लैना नस्रुल् मुअ्मिनीन (47)अल्लाहुल् लज़ी युर्सिलुर् रिया–ह फ़तुसीरु सहाबन् फ़–यब्सुतुहू फ़िस्समाइ कै–फ़

खुश्की और तरी में (फ़ा90) उन बुराईयों से जो लोगों के हाथों ने कमाईं ताकि उन्हें उनके बाज़ कोतकों का मज़ा चखाए कहीं वह बाज़ आयें।(41) (फ़ा91) तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा अंजाम हुआ अगलों का उनमें बहुत मुश्रिक थे। (42) (फ़ा92) तो अपना मुँह सीधा कर इबादत के लिए (फ़ा93) क़ब्ल इसके कि वह दिन आए जिसे अल्लाह की तरफ़ से टलना नहीं (फ़ा94) उस दिन अलग फट जायेंगे।(43) (फ़ा95) जो कुफ़्र करे उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो अच्छा काम करें वह अपने ही लिये तैयारी कर रहे हैं।(44) (फ़ा96) ताकि सिला दे (फ़ा97) उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अपने फ़ज़्ल से बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।(45) और उसकी निशानियों से है कि हवायें भेजता है मुज़दा सुनाती (फ़ा98) और इस लिए कि तुम्हें अपनी रहमत का ज़ायका दे और इस लिए कि कश्ती (फ़ा99) उसके हुक्म से चले और इस लिए कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो (फ़ा100) और इस लिए कि तुम हक़ मानो।(46) (फ़ा101) और बेशक हमने तुम से पहले कितने रसूल उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे तो वह उनके पास खुली निशानियां लाए (फ़ा102) फिर हमने मुजरिमों से बदला लिया (फ़ा103) और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।(47) (फ़ा104) अल्लाह है कि भेजता है हवायें कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आसमान में जैसा चाहे (फ़ा105)

(फ़ा90) शिर्क व मआ़सी के सबब से क़हत और इमसाके बारां और क़िल्लते पैदावार और खेतियों की ख़राबी और तिजारतों के नुक़सान और आदमियों और जानवरों में मौत और कसरते आतिशज़दगी और ग़रक़ और हर शय में बे बरकती। (फ़ा91) कुफ़्र व मआ़सी से और ताइब हों। (फ़ा92) अपने शिर्क के बाइस हलाक किये गए उनके मनाज़िल और मसाकिन वीरान पड़े हैं उन्हें देख कर इबरत हासिल करो। (फ़ा93) यानी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ क़ायम रहो। (फ़ा94) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा95) यानी हिसाब के बाद मुतफ़र्रिक़ हो जायेंगे जन्नती जन्नत की तरफ़ जायेंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़। (फ़ा96) कि मनाज़िले जन्नत में राहत व आराम पायें। (फ़ा97) और सवाब अ़ता फ़रमाए अल्लाह तआ़ला (फ़ा98) बारिश और कसरते पैदावार का। (फ़ा99) दरिया में उन हवाओं से। (फ़ा100) यानी दरियाई तिजारतों से कस्बे मआ़श करो। (फ़ा101) इन नेअ़मतों का और अल्लाह की तौहीद क़बूल करो। (फ़ा102) जो उन रसूलों के सिद्क़े रिसालत पर दलील वाज़ेह थीं तो उस क़ौम में से बाज़ ईमान लाये और बाज़ ने कुफ़्र किया। (फ़ा103) कि दुनिया में उन्हें अ़ज़ाब करके हलाक कर दिया। (फ़ा104) यानी उन्हें नजात देना और **(बक़िया सफ़हा 681 पर)**

يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ
يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ۝ فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ
عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ
بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا

यशाउ व यज्–अलुहू कि–स–फ़न् फ़–त–रल् वद्–क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही फ़इज़ा असा–ब बिही मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून(48)व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़–ल अ़लैहिम् मिन् क़ब्लिही लमुब्लिसीन(49)फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै–फ़ युह्यिल् अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा इन्–न ज़ालि–क लमुह्यिल्मौता व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(50)व लइन् अर्सल्ना रीहन् फ़–रऔहु मुस्–फ़र्रल् ल–ज़ल्लू मिम् बअ्दिही यक्फ़ुरून(51)फ़इन्न–क ला तुस्मिअुल् मौता व ला तुस्मिअुस् सुम्मद्दुआ–अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन(52)व मा अन्–त बिहादिल् अुम्यि अ़न् ज़ला–लतिहिम् इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून(53)अल्लाहुल् लज़ी ख़–ल–क़कुम् मिन् ज़ुअ्फ़िन् सुम्–म ज–अ़–ल मिम् बअ्दि ज़ुअ्फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्–म ज–अ़–ल मिम् बअ्दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ्फ़ंव् व शै–बतन् यख़्लुक़ु मा यशाउ व हुवल् अ़लीमुल् क़दीर(54)व यौ–म तक़ू.मुस्सा–अ़तु युक़्सिमुल् मुज्रिमू–न मा लबिसू ग़ै–र सा–अ़तिन् कज़ालि–क कानू

और उसे पारा पारा करता है (फ़ा106) तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है (फ़ा107) अपने बन्दों में जिसकी तरफ़ चाहे जभी वह खुशियाँ मनाते हैं।(48) अगरचे उस के उतारने से पहले आस तोड़े हुए थे।(49) तो अल्लाह की रहमत के असर देखो (फ़ा108) क्यों कर ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे (फ़ा109) बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वह सब कुछ कर सकता है।(50) और अगर हम कोई हवा भेजें (फ़ा110) जिस से वह खेती को ज़र्द देखें (फ़ा111) तो ज़रूर उसके बाद नाशुक्री करने लगें।(51) (फ़ा112) इस लिए कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते (फ़ा113) और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वह पीठ देकर फिरें।(52) (फ़ा114) और न तुम अन्धों को (फ़ा115) उनकी गुमराही से राह पर लाओ तो तुम उसी को सुनाते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वह गर्दन रखे हुए हैं।(53) (रुकूअ़ 8) अल्लाह है जिसने तुम्हें इब्तेदा में कमज़ोर बनाया (फ़ा116) फिर तुम्हें नातवानी से ताक़त बख़्शी (फ़ा117) फिर कुव्वत के बाद (फ़ा118) कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया बनाता है जो चाहे (फ़ा119) और वही इल्म व कुदरत वाला है।(54) और जिस दिन क़ियागत क़ायम होगी मुजरिम क़सम खायेंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी (फ़ा120) वह ऐसे ही औंधे

(फ़ा106) यानी कभी तो अल्लाह तआ़ला अब्रे मुहीत भेज देता है जिस से आसमान घिरा मालूम होता है और कभी मुतफ़र्रिक़ टुकड़े अलाहिदा अलाहिदा (फ़ा107) यानी मेंह को। (फ़ा108) यानी बारिश के असर जो उस पर मुरत्तब होते हैं कि बारिश ज़मीन को सैराब करती है उससे सब्ज़ा निकलता है सब्ज़े से फल पैदा होते हैं फलों में ग़िज़ाइयत होती है और उससे जानदारों के अजसाम के क़िवाम को मदद पहुंचती है और यह देखो कि अल्लाह तआ़ला यह सब्ज़े और फल पैदा करके (फ़ा109) और ख़ुश्क मैदान को सब्ज़ाज़ार बना देता है जिसकी यह क़ुदरत है (फ़ा110) ऐसी जो खेती और सब्ज़े के लिए मुज़िर हो (फ़ा111) बाद इसके कि वह सर सब्ज़ व शादाब थी (फ़ा112) यानी खेती ज़र्द होने के बाद नाशुक्री करने लगें और पहली नेअ़्मत से भी मुकर जायें माना यह हैं कि उन लोगों की हालत यह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है रिज़्क़ मिलता है खुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है खेती ख़राब होती है तो पहली निअ़्मतों से भी मुकर जाते हैं चाहिए तो यह था कि अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करते और जब निअ़्मत पहुंचती शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल होते उसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने हबीबे अकरम सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि आप उन लोगों की महरूमी और उनके ईमान न लाने पर रन्जीदा न हों। (फ़ा113) यानी जिनके दिल मर चुके और उनसे किसी तरह क़बूले हक़ की तवक़्क़ोअ़ नहीं रही। (फ़ा114) यानी हक़ के सुनने से बहरे हों और बहरे भी ऐसे **(बक़िया सफ़हा 664 पर)**

नमाज़ में सर्फ़ करे क्योंकि इसके साथ खाने पीने वग़ैरह के हवाइज व ज़रूरियात हैं तो अल्लाह तआला ने बन्दा पर इबादत में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाई और दिन के अव्वल व औसत व आख़िर में और रात के अव्वल व आख़िर में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि उन औक़ात में मश्ग़ूले नमाज़ रहना दाइमी इबादत के हुक्म में हो (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा33) जैसे कि परिन्द को अन्डे से और इन्सान को नुत्फ़ा से और मोमिन को काफ़िर से (फ़ा34) जैसे कि अन्डे को परिन्द से नुत्फ़ा को इन्सान से काफ़िर को मोमिन से

(बक़िया सफ़्हा 660 का) देते हो वह उसके बन्दे और ममलूक हैं (फ़ा59) जिन्होंने शिर्क करके अपनी जानों पर ज़ुल्मे अ़ज़ीम किया है। (फ़ा60) जहालत से (फ़ा61) यानी कोई उसका हिदायत करने वाला नहीं। (फ़ा62) जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। (फ़ा63) यानी ख़ुलूस के साथ दीने इलाही पर बइस्तिक़ामत व इस्तिक़लाल क़ाइम रहो। (फ़ा64) फ़ितरत से मुराद दीने इस्लाम है माना यह हैं कि अल्लाह तआला ने ख़ल्क़ को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है यानी इसी अहद पर जो अलस्तु बि-रब्बिकुम् फ़रमा कर लिया गया है बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है फिर उसके मां बाप उसको यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं इस आयत में हुक्म दिया गया कि दीने इलाही पर क़ाइम रहो जिस पर अल्लाह तआला ने ख़ल्क़ को पैदा किया है (फ़ा65) यानी दीने इलाही पर क़ाइम रहना (फ़ा66) इसकी हक़ीक़त को तो इस दीन पर क़ाइम रहो (फ़ा67) यानी अल्लाह तआला की तरफ़ तौबा और ताअ़त के साथ। (फ़ा68) मअ़बूद के बाब में इख़्तिलाफ़ करके। (फ़ा69) और अपने बातिल को हक़ गुमान करता है। (फ़ा70) मरज़ की या क़हत की या उसके सिवा और कोई। (फ़ा71) इस तकलीफ़ से ख़लासी इनायत करता है और राहत अ़ता फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़्हा 661 का) (फ़ा87) पैदा करना रोज़ी देना मारना जिलाना यह सब काम अल्लाह ही के हैं। (फ़ा88) यानी बुतों में जिन्हें तुम अल्लाह तआला का शरीक ठहराते हो उनमें। (फ़ा89) उसके जवाब से मुशरिकीन आ़जिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मजाल न हुई तो फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़्हा 662 का) काफ़िरों को हलाक करना इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आख़िरत की कामयाबी और अअ़्दा पर फ़तह व नुसरत की बशारत दी गई है तिर्मिज़ी की हदीस में है जो मुसलमान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआ़ला उसे रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग से बचाएगा यह फ़रमा कर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई *का-न ह़क़्क़न् अ़लैना नस्रुल-मुअ़्मिनीन* (फ़ा105) क़लील या कसीर।

(बक़िया सफ़्हा 666 का) गया है कि हिकमत ऐसी शय है कि अल्लाह तआ़ला उसको जिसके दिल में रखता है उसके दिल को रौशन कर देती है। (फ़ा14) इस निअ़्मत पर कि अल्लाह तआ़ला ने हिकमत अ़ता की। (फ़ा15) क्योंकि शुक्र से निअ़्मत ज़्यादा होती है और सवाब मिलता है। (फ़ा16) हज़रत लुक़्मान अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलाम के उन साहबज़ादे का नाम अनअ़म या अश्कम था और इन्सान का आला मर्तबा यह है कि वह ख़ुद कामिल हो और दूसरे की तकमील करे तो हज़रत लुक़्मान अ़ला नबीय्यिना व अ़लैहिस्सलाम का कामिल होना तो *आतैना लुक़्मानल्-हिक्-म-त* में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तकमील करना *व हु-व यअ़िज़ुहू* से ज़ाहिर फ़रमाया और नसीहत बेटे को की इससे मालूम हुआ कि नसीहत में घर वालों और क़रीब तर लोगों को मुक़द्दम करना चाहिए और नसीहत की इब्तेदा मना शिर्क से फ़रमाई इससे मालूम हुआ कि यह निहायत अहम है। (फ़ा17) क्योंकि इसमें ग़ैर-मुस्तहिक़्क़े इबादत को मुस्तहिक़्क़े इबादत के बराबर क़रार देना है और इबादत को उसके महल के ख़िलाफ़ रखना यह दोनों बातें ज़ुल्मे अ़ज़ीम हैं। (फ़ा18) कि उनका फ़रमांबरदार रहे और उनके साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इरशाद है)। (फ़ा19) यानी उसका ज़ोअ़्फ़ दम बदम तरक़्क़ी पर होता है जितना हमल बढ़ता जाता है बार ज़्यादा होता है और ज़ोअ़्फ़ तरक़्क़ी करता है औरत को हामिला होने के बाद ज़ोअ़्फ़ और तअ़ब और मुशक़्क़तें पहुंचती रहती हैं हमल ख़ुद ज़ईफ़ करने वाला है दर्दे ज़ेह ज़ोअ़्फ़ पर ज़ोअ़्फ़ है और वज़अ़् उस पर मज़ीद और शिद्दत है दूध पिलाना इन सब पर मज़ीद बरआँ है। (फ़ा20) यह वह ताकीद है जिसका ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था सुफ़ियान बिन अ़ैनिया ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि जिसने पंजगाना नमाज़ें अदा कीं वह अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाया और जिसने पंजगाना नमाज़ों के बाद वालदैन के लिए दुआयें कीं उसने वालदैन की शुक्रगुज़ारी की (फ़ा21) यानी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्योंकि मेरा शरीक मुहाल है हो ही नहीं सकता अब जो कोई भी कहेगा तो बे इल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा ऐसा अगर मां बाप भी कहें (फ़ा22) नख़ई ने कहा कि वालदैन की ताअ़त वाजिब है लेकिन अगर वह शिर्क का हुक्म करें तो उनकी इताअ़त न करो क्योंकि ख़ालिक की नाफ़रमानी करने में किसी मख़्लूक़ की ताअ़त रवा नहीं (फ़ा23) हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक और एहसान व तहम्मुल के साथ (फ़ा24) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब की राह इसी को मज़हबे सुन्नत व जमाअ़त कहते हैं (फ़ा25) तुम्हारे आमाल की जज़ा देकर *व वस्सैनल् इन्सा-न* से यहां तक जो मज़मून है यह हज़रत लुक़्मान अ़ला नबीय्यिना व अ़लैहिस्सलाम का नहीं है बल्कि उन्होंने अपने साहबज़ादे को अल्लाह तआ़ला के शुक्रे निअ़्मत का हुक्म दिया था और शिर्क की मुमानअ़त की थी तो अल्लाह तआ़ला ने वालदैन की ताअ़त और उसका महल इरशाद फ़रमाया उसके बाद फिर हज़रत लुक़्मान अ़ला नबीय्यिना व अ़लैहिस्सलाम का मक़ूला ज़िक्र किया जाता है कि उन्होंने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया

(बक़िया सफ़्हा 667 का) हुस्न व शक्ल व सूरत मुराद हैं और बातिनी निअ़्मतों से इल्मे मअ़्रेफ़त व मलकाते फ़ाज़िला वग़ैरह हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि नेअ़्मते ज़ाहिरा तो इस्लाम व क़ुरआन है और निअ़्मते बातिना यह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये तुम्हारा इफ़शाए हाल न किया सज़ा में जल्दी न फ़रमाई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया

कि निअ्मते ज़ाहिरा दुरुस्तीए आज़ा और हुस्ने सूरत है और निअ्मते बातिना एतेक़ादे क़लबी एक क़ौल यह भी है कि निअ्मते ज़ाहिरा रिज़्क़ है और बातिना हुस्ने खुल्क़ एक क़ौल यह है कि निअ्मते ज़ाहिरा अहकामे शरईया का हलका होना है और निअ्मते बातिना शफ़ाअ़त एक क़ौल यह है कि निअ्मते ज़ाहिरा इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर फ़तहयाब होना है और निअ्मते बातिना मलाइका का इमदाद के लिए आना एक क़ौल यह है कि निअ्मते ज़ाहिरा रसूल का इत्तेबाअ़ है और नेअ्मते बातिना उनकी मुहब्बत रज़क़्नल्लाहु तआ़ला इत्तेबाअ़हु व मुहब्बतहु सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा38) तो जो कहेंगे जहल व नादानी होगा और शाने इलाही में इसी तरह की जुरअत व लब कुशाई निहायत बेजा और गुमराही है **शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़र बिन हारिस व उबय बिन ख़लफ़ वग़ैरह कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो बावजूद बे इल्म व जाहिल होने के नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ झगड़े किया करते थे। (फ़ा39) यानी अपने बाप दादा के तरीक़े ही पर रहेंगे इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़्हा 668 का) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हिजरत करके मदीना तय्येबा तशरीफ़ लाये तो यहूद के उलमा व अहबार ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि हमने सुना है कि आप फ़रमाते हैं व मा ऊतीतुम्-मिनल्-इल्मि इल्ला क़लीलन् यानी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया तो इससे आप की मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़ अपनी क़ौम फ़रमाया सब मुराद हैं उन्होंने कहा क्या आपकी किताब में यह नहीं है कि हमें तौरेत दी गई है उसमें हर शय का इल्म है हुज़ूर ने फ़रमाया कि हर शय का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और तुम्हें तो अल्लाह तआ़ला ने इतना इल्म दिया है कि उस पर अ़मल करो तो नफ़ा पाओ उन्होंने कहा आप कैसे यह ख़्याल फ़रमाते हैं आपका क़ौल तो यह है कि जिसे हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई तो इल्मे क़लील और ख़ैरे कसीर कैसे जमा हो इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई इस तक़दीर पर यह आयत मदनी होगी एक क़ौल यह भी है कि यहूद ने क़ुरैश से कहा था कि मक्का में जाकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस तरह का कलाम करें एक क़ौल यह है कि मुशरिकीन ने यह कहा था कि क़ुरआन और जो कुछ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लाते हैं यह अ़न्क़रीब तमाम हो जाएगा फिर क़िस्सा ख़त्म इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई (फ़ा50) अल्लाह पर कुछ दुशवार नहीं उसकी क़ुदरत यह है कि एक कुन से सब को पैदा करदे। (फ़ा51) यानी एक को घटा कर दूसरे को बढ़ा कर और जो वक़्त एक में से घटाता है दूसरे में बढ़ा देता है (फ़ा52) बन्दों के नफ़ा के लिए (फ़ा53) यानी रोज़े क़ियामत तक या अपने अपने औक़ाते मुअ़य्यना तक सूरज आख़िर साल तक और चांद आख़िर माह तक।

(बक़िया सफ़्हा 669 का) दूंगा यानी इताअ़त करूंगा अल्लाह तआ़ला ने करम किया हवा ठहर गई और इकरमा मक्का मुकर्रमा की तरफ़ आगए और इस्लाम लाए और बड़ा मुख़्लिसाना इस्लाम लाये और बाज़ उनमें ऐसे थे जिन्होंने अहदे वफ़ा न किया उनकी निस्बत अगले जुमला में इरशाद होता है। (फ़ा62) यानी ऐ अहले मक्का (फ़ा63) रोज़े क़ियामत हर इन्सान नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा न काफ़िरों की मुसलमान औलाद उन्हें फ़ाइदा पहुंचा सकेगी न मुसलमान मां बाप काफ़िर औलाद को (फ़ा64) ऐसा दिन ज़रूर आना और बअ़्स व हिसाब व जज़ा का वादा ज़रूर पूरा होना है (फ़ा65) जिसकी तमाम निअ्मतें और लज़्ज़तें फ़ानी कि उनके शैफ़्ता होकर निअ्मते ईमान से महरूम हो जाओ (फ़ा66) यानी शैतान दूर दराज़ की उम्मीदों में डाल कर मअ़सियतों में मुबतला न करदे। (फ़ा67) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हारिस बिन अ़मर के हक़ में नाज़िल हुई जिसने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़ियामत का वक़्त दरियाफ़्त किया था और यह कहा था कि मैंने खेती बोई है ख़बर दीजिये कि मेंह कब आएगा और मेरी औरत हामिला है मुझे बताईये कि उसके पेट में क्या है लड़का या लड़की यह तो मुझे मालूम है कि कल मैंने क्या किया यह मुझे बताइये कि आइन्दा कल को क्या करूंगा यह भी जानता हूं कि मैं कहां पैदा हुआ मुझे यह बताइये कि कहां मरूंगा उसके जवाब में यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा68) जिसको चाहे अपने औलिया और अपने महबूबों में से उन्हें ख़बरदार करे इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इल्म की ख़ुसूसियत अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इरशाद हुआ *आ़लिमुल्-ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ-हदन् इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन्* ग़र्ज़ यह कि बग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए इन चीज़ों का इल्म किसी को नहीं और अल्लाह तआ़ला अपने महबूबों में से जिसे चाहे बताये और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर ख़ुद उसने सूरह जिन्न में दी है ख़ुलासा यह कि इल्मे ग़ैब अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इल्म अल्लाह तआ़ला की तालीम से बतरीक़े मोअ़्जेज़ा व करामत अ़ता होता है यह उस इख़्तेसास के मुनाफ़ी नहीं और कसीर आयतें और हदीसें इस पर दलालत करती हैं बारिश का वक़्त और हमल में क्या है और कल को क्या करे और कहां मरेगा इन उमूर की ख़बरें बकसरत औलिया व अम्बिया ने दी हैं और क़ुरआन व हदीस से साबित हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम को हज़रत यह्या अ़लैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत मरयम को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़रिश्तों को भी पहले से मालूम था कि उन हमलों में क्या है और उन हज़रात को भी जिन्हें फ़रिश्तों ने इत्तेलाएं दी थीं और इन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के माना क़तअ़न यही हैं कि बग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताये कोई नहीं जानता इसके यह माना लेना कि अल्लाह तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता महज़ बातिल और सदहा आयात व अहादीस के ख़िलाफ़ है (ख़ाज़िन बैज़ावी अहमदी रूहुल बयान वग़ैरह)।

(बक़िया सफ़हा 683 पर) किरदार से शर्मिन्दा व नादिम होकर और अ़र्ज़ करते होंगे। (फ़ा24) मरने के बाद उठने को और तेरे वादा वईद के सिद्क़ को जिनके हम दुनिया में मुन्किर थे (फ़ा25) तुझ से तेरे रसूलों की सच्चाई को तो अब दुनिया में (फ़ा26) और अब हम ईमान ले आये लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा (फ़ा27) और उस पर ऐसा लुत्फ़ करते कि अगर वह उसको इख़्तियार करता तो राहयाब होता लेकिन हमने ऐसा न किया क्योंकि हम काफ़िरों को जानते थे कि वह कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे (फ़ा28) जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया और जब वह जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उनसे कहेंगे। (फ़ा29) और दुनिया में ईमान न लाये थे (फ़ा30) अ़ज़ाब में अब तुम्हारी तरफ़ इल्तेफ़ात न होगा

(बक़िया सफ़हा 672 का) शरफ़ ईमान व तक़वा में है जिसे यह दौलत नसीब नहीं वह इन्तेहा का रज़ील है काफ़िर मोमिन के बराबर नहीं हो सकता अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की तस्दीक़ में यह आयत नाज़िल फ़रमाई (फ़ा37) यानी मोमिनीन सालिहीन की जन्नते मावरा में इज़्ज़त व इकराम के साथ मेहमानदारी की जाएगी। (फ़ा38) नाफ़रमान काफ़िर हैं। (फ़ा39) दुनिया ही में क़त्ल और गिरिफ़्तारी और क़हत व अमराज़ वग़ैरह में मुब्तला करके चुनांचे ऐसा ही पेश आया कि हुज़ूर की हिजरत से क़बल क़ुरैश अमराज़ व मसाइब में गिरिफ़्तार हुए और बाद हिजरत बद्र में मक़तूल हुए गिरिफ़्तार हुए और सात बरस क़हत की ऐसी सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे कि हड्डियां और मुर्दार और कुत्ते तक खा गए। (फ़ा40) यानी अ़ज़ाबे आख़िरत से (फ़ा41) और आयात में ग़ौर न किया और उनके वुजूह व इरशाद से फ़ायदा न उठाया और ईमान से बहरा-अन्दोज़ न हुआ

(बक़िया सफ़हा 673 का) इससे उनकी मुराद यह थी कि हम पर रहमत व करम करेगा और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन को अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा उस पर काफ़िर बतौरे तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा कहते थे कि यह फ़ैसला कब होगा उसका वक़्त कब आएगा अल्लाह तआ़ला अपने हबीब से इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा58) जब अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होगा (फ़ा59) तौबा व मअ़ज़रत की फ़ैसला के दिन से या रोज़े क़ियामत मुराद है या रोज़े फ़तहे मक्का या रोज़े बद्र बर तक़दीरे अव्वल अगर रोज़े क़ियामत मुराद हो तो ईमान का नाफ़ेअ़ न होना ज़ाहिर है क्योंकि ईमान वही मक़बूल है जो दुनिया में हो और दुनिया से निकलने के बाद न ईमान मक़बूल होगा न ईमान लाने के लिए दुनिया में वापस आना मुयस्सर आएगा और अगर फ़ैसला के दिन से रोज़े बद्र या रोज़े फ़तहे मक्का मुराद हो तो माना यह हैं कि जबकि अ़ज़ाब आजाये और वह लोग क़त्ल होने लगें तो हालते क़त्ल में उनका ईमान लाना क़बूल न किया जाएगा और न अ़ज़ाब मुअख़्ख़र करके उन्हें मोहलत दी जाए चुनान्चे जब मक्का मुकर्रमा फ़तह हुआ तो क़ौमे बनी कनाना भागी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्होंने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया कोई उम्मीद जाँ बरी की नहीं तो उन्होंने इस्लाम का इज़्हार किया हज़रत ख़ालिद ने क़बूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया। (जुमल वग़ैरह) (फ़ा60) उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होने का (फ़ा61) बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रोज़े जुमा नमाज़े फ़ज्र में यह सूरत यानी सूरए सजदा और सूरए दहर पढ़ते थे तिर्मिज़ी की हदीस में है कि जब तक हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह सूरत और सूरह तबा-र-कल्लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्कु पढ़ न लेते ख़्वाब न फ़रमाते। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सूरए सज्दा अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखती है (ख़ाज़िन व मदारिक)।

(बक़िया सफ़हा 674 का) इतना क़वी है वह ख़ुद भी कहता था कि उसके दो दिल हैं और हर एक में हज़रत (सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से ज़्यादा दानिश है जब बद्र में मुशरिक भागे तो अबू मुअ़म्मर इस शान से भागा कि एक जूती हाथ में एक पाँव में अबू सुफ़ियान से मुलाक़ात हुई तो अबू सुफ़ियान ने पूछा क्या हाल है कहा लोग भाग गए तो अबू सुफ़ियान ने पूछा एक जूती हाथ में और एक पाँव में क्यों है कहा इसकी मुझे ख़बर ही नहीं मैं तो यही समझ रहा हूं कि दोनों जूतियां पाँव में हैं उस वक़्त क़ुरैश को मालूम हुआ कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिए हुए था भूल न जाता और एक क़ौल यह भी है कि मुनाफ़िक़ीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए दो दिल बताते थे और कहते थे कि उनका एक दिल हमारे साथ है और एक अपने असहाब के साथ नीज़ ज़मानए जाहिलियत में जब कोई अपनी औरत से ज़िहार करता था तो वह लोग उस ज़िहार को तलाक़ कहते और उस औरत को उसकी मां क़रार देते थे और जब कोई शख़्स किसी को बेटा कह देता था तो उसको हक़ीक़ी बेटा क़रार देकर शरीके मीरास ठहराते और उसकी ज़ौजा को बेटा कहने वाले के लिए सुलबी बेटे की बीबी की तरह हराम जानते इन सब की रद में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा5) यानी ज़िहार से औरत मां के मिस्ल हराम नहीं हो जाती ज़िहार मन्कूहा को ऐसी औरत से तश्बीह देना जो हमेशा के लिए हराम हो और यह तश्बीह ऐसे उज़्व में हो जिसको देखना और छूना जाइज़ नहीं मसलन किसी ने अपनी बीबी से यह कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पीठ या पेट के मिस्ल है तो वह मज़ाहिर हो गया। मसला ज़िहार से निकाह बातिल नहीं होता लेकिन कफ़्फ़ारा अदा करना लाज़िम हो जाता है और कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले औरत से अलाहिदा रहना और उससे तमत्तुअ़ न करना लाज़िम है मसला ज़िहार का कफ़्फ़ारा एक ग़ुलाम का आज़ाद करना और यह मुयस्सर न हो तो मुतवातिर दो महीने के रोज़े और यह भी न हो सके तो साठ मिस्कीनों का खिलाना है मसला कफ़्फ़ारा अदा करने के बाद औरत से क़ुरबत और तमत्तुअ़ हलाल हो जाता है। (हिदाया) (फ़ा6) ख़्वाह उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों (फ़ा7) यानी बीबी को मां के मिस्ल कहना और ले पालक को बेटा कहना बे हक़ीक़त बात है न बीबी मां हो सकती है न दूसरे का फ़रज़न्द अपना बेटा। नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब हज़रत ज़ैनब बिन्त हजश से निकाह किया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने ज़बाने तअ़न खोली और कहा कि (हज़रत) मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम) ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली क्योंकि पहले हज़रत ज़ैनब ज़ैद के निकाह में थीं और हज़रत ज़ैद उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ज़र ख़रीद थे उन्होंने हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वह अपने बाप के पास न गए हुज़ूर की ख़िदमत ही में रहे हुज़ूर उन पर शफ़क़त व करम फ़रमाते थे इस लिए लोग उन्हें हुज़ूर का फ़रज़न्द कहने लगे इससे वह हक़ीक़तन हुज़ूर के बेटे न होगए और यहूद व मुनाफ़िक़ीन का तअ़ना महज़ ग़लत और बेजा हुआ अल्लाह तआ़ला ने यहां उन ताइनीन की तकज़ीब फ़रमाई और उन्हें झूठा क़रार दिया। (फ़ा8) हक़ की लिहाज़ा ले पालकों को उनके पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि (फ़ा9) जिनसे वह पैदा हुए

(बक़िया सफ़हा 675 का) है जो अजनबी औरतों का और उनकी बेटियों को मोमिनीन की बहनें और उनके भाईयों और बहनों को मोमिनीन के मामूं ख़ाला न कहा जाएगा। (फ़ा16) तवारिस में (फ़ा17) **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि ऊलुल-अरहाम एक दूसरे के वारिस होते हैं कोई अजनबी दीनी बिरादरी के ज़रीआ़ से वारिस नहीं होता। (फ़ा18) इस तरह कि जिसके लिए चाहो कुछ वसीयत करो तो वसीयत सुल्स माल के क़दर में तवारिस पर मुक़द्दम की जाएगी खुलासा यह है कि अव्वल माल ज़विल फ़ुरूज़ को दिया जाएगा फिर अ़सबात को फिर नसबी ज़विलफ़ुरूज़ पर रद किया जाएगा फिर ज़विल-अरहाम को दिया जाएगा फिर मौला अलमवालात को (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा19) यानी लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा20) रिसालत की तबलीग़ और दीने हक़ की दावत देने का (फ़ा21) खुसूसियत के साथ मसला सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्र दूसरे अम्बिया पर मुक़द्दम करना उन सब पर आपकी फ़ज़ीलत के इज़्हार के लिए है (फ़ा22) यानी अम्बिया से या उनके तस्दीक़ करने वालों से (फ़ा23) यानी जो उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तबलीग़ की वह दरियाफ़्त फ़रमाए या मोमिनीन से उनकी तस्दीक़ का सवाल करे या यह माना हैं कि अम्बिया को जो उनकी उम्मतों ने जवाब दिये वह दरियाफ़्त फ़रमाए और इस सवाल से मक़सूद कुफ़्फ़ार की तज़लील व तबकीत है। (फ़ा24) जो उसने जंगे अहज़ाब के दिन फ़रमाया जिसको ग़ज़वए ख़न्दक़ कहते हैं जो जंगे उहद से एक साल बाद था जबकि मुसलमानों का नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहिस्सलाम के साथ मदीना तय्येबा में मुहासरा कर लिया गया था। (फ़ा25) क़ुरैश और ग़तफ़ान और यहूदे क़ुरैज़ा व नुज़ैर के (फ़ा26) यानी मलाइका ने लश्कर ग़ज़वए अहज़ाब का मुख़्तसर बयान यह ग़ज़वा शव्वाल सन् 4 या 5 हिजरी में पेश आया जब यहूद बनी नुज़ैर को जला वतन किया गया तो उनके अकाबिर मक्का मुकर्रमा में क़ुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वादा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहां तक कि मुसलमान नेस्तो नाबूद हो जायें अबू सुफ़ियान ने इस तहरीक की बहुत क़दर की और कहा कि हमें दुनिया में वह सब से प्यारा है जो मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की अ़दावत में हमारा साथ दे फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम हक़ पर हैं या मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) यहूद ने कहा तुम्हीं हक़ पर हो इस पर क़ुरैश खुश हुए इसी पर आयत अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल् किताबि युअ्मिनू-न बिल्जिब्ति वत्ताग़ूति नाज़िल हुई फिर यहूदी क़बाइल ग़तफ़ान व क़ैस व ग़ीलान वग़ैरह में गए वहां भी यही तहरीक की वह सब उनके मुवाफ़िक़ हो गए इस तरह उन्होंने जा बजा दौरे किये और अ़रब के क़बीला क़बीला को मुसलमानों के ख़िलाफ़ तैयार कर लिया जब सब लोग तैयार हो गए तो क़बीला ख़ज़ाआ़ के चन्द लोगों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कुफ़्फ़ार की इन ज़बरदस्त तैयारियों की इत्तलाअ़ दी यह इत्तलाअ़ पाते ही हुज़ूर ने ब-मशवरा हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़न्दक़ खुदवानी शुरू कर दी उस ख़न्दक़ में मुसलमानों के साथ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुद भी काम किया मुसलमान ख़न्दक़ तैयार करके फ़ारिग़ ही हुए थे कि मुशरिकीन बारह हज़ार का लश्करे गिराँ लेकर उन पर टूट पड़े और मदीना तय्येबा का मुहासरा कर लिया ख़न्दक़ मुसलमानों के और उनके दर्मियान हाइल थी उसको देख कर मुतहय्यर हुए और कहने लगे कि यह ऐसी तदबीर है जिससे अरब लोग अब तक वाक़िफ़ न थे अब उन्होंने मुसलमानों पर तीर अन्दाज़ी शुरू की और उस मुहासरा को पन्द्रह रोज़ या चौबीस रोज़ गुज़रे मुसलमानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुआ और वह बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और उन पर तेज़ हवा भेजी निहायत सर्द और अंधेरी रात में उस हवा ने उनके ख़ेमे गिरा दिये तनाबें तोड़ दीं खूंटे उखाड़ दिये हांडियां उलट दीं आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्ते भेज दिये जिन्होंने कुफ़्फ़ार को लरज़ा दिया उनके दिलों में दहशत डाल दी मगर इस जंग में मलाइका ने क़िताल नहीं किया फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिए भेजा वक़्त निहायत सर्द था यह हथियार लगा कर रवाना हुए हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रवाना होते वक़्त उनके चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिससे उन पर सर्दी असर न कर सकी और यह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए वहां तेज़ हवा चल रही थी और संगरेज़े उड़ उड़ कर लोगों के लग रहे थे आंखों में गर्द पड़ रही थी अ़जब परेशानी का आ़लम था लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार अबू सुफ़ियान हवा का यह आ़लम देख कर उठे और उन्होंने .क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले यह एलान होने के बाद हर एक शख़्स ने अपने बराबर वाले को टटोलना शुरू किया हज़रत हुज़ैफ़ा ने दानाई से अपने दाहिने शख़्स का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है उसने कहा मैं फ़लां बिन फ़लां हूं उसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ गरोहे क़ुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो घोड़े और ऊँट हलाक हो चुके बनी क़ुरैज़ा अपने अहद से फिर गए और हमें उनकी तरफ़ से अन्देशानाक ख़बरें पहुंची हैं हवा ने जो हाल किया है वह तुम देख ही रहे हो बस अब यहां से कूच करदो मैं कूच करता हूं अबू सुफ़ियान यह कह कर अपनी ऊँटनी पर सवार

हो गए और लश्कर में अर्रहील अर्रहील यानी कूच कूच का शोर मच गया हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी मगर यह हवा उस लश्कर से बाहर न थी अब यह लश्कर भाग निकला और सामान का बार करके लेजाना उसको शाक़ हो गया इस लिए कसीर सामान छोड़ गया। (जुमल) (फ़ा27) यानी तुम्हारा ख़न्दक़ खोदना और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदारी में साबित क़दम रहना (फ़ा28) यानी वादी की बालाई जानिब मशरिक़ से क़बीला असद व ग़तफ़ान के लोग मालिक बिन औ़फ़ नसरी व अ़ैनिया बिन हसन फ़ुज़ारी की सरकर्दगी में एक हज़ार की जमअ़ीयत लेकर और उनके साथ तलीहा बिन खुवैलद असदी बनी असद की जमअ़ीयत लेकर और हुयई बिन अख़्तब यहूद बनी क़ुरैज़ा की जमीअत लेकर और वादी की ज़ेरीं जानिब मग़रिब से क़ुरैश और कनाना ब-सरकर्दगी अबू सुफ़ियान बिन हरब।

(बक़िया सफ़हा 676 का) (फ़ा40) यानी आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उसको दरियाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यों वफ़ा नहीं किया गया (फ़ा41) क्योंकि जो मुक़द्दर है वह ज़रूर होकर रहेगा (फ़ा42) यानी अगर वक़्त नहीं आया है तो भी भाग कर थोड़े ही दिन जितनी उमर बाक़ी है उतने ही दुनिया को बरतोगे और यह एक क़लील मुद्दत है (फ़ा43) यानी उसको तुम्हारा क़त्ल व हलाक मन्ज़ूर हो तो उसको कोई दफ़अ़ नहीं कर सकता (फ़ा44) अमन व आफ़ियत अ़ता फ़रमा कर

(बक़िया सफ़हा 677 का) कि वह भाग चुके। (फ़ा52) यानी मुनाफ़िक़ीन की अपनी नामर्दी की बाइस यही आरज़ू और। (फ़ा53) मदीना तय्येबा के आने जाने वालों से (फ़ा54) कि मुसलमानों का क्या अन्जाम हुआ कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला में उनकी क्या हालत रही। (फ़ा55) रियाकारी और उज़्र रखने के लिए ताकि यह कहने का मौक़ा मिल जाये कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे। (फ़ा56) उनका अच्छी तरह इत्तेबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नतों पर चलो यह बेहतर है। (फ़ा57) हर मौक़ा पर उसका ज़िक्र करे खुशी में भी रंज में भी तंगी में भी फ़राख़ी में भी। (फ़ा58) कि तुम्हें शिद्दत व बला पहुंचेगी और तुम आज़माइश में डाले जाओगे और पहलों की तरह तुम पर सख़्तियां आयेंगी और लश्कर जमा हो होकर तुम पर टूटेंगे और अन्जामकार तुम ग़ालिब होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है *अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल-जन्न-त व लम्मा यातिकुम् म-सलुल्-लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् अलआयत* और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असहाब से फ़रमाया कि पिछली नौ या दस रातों में लश्कर तुम्हारी तरफ़ आने वाले हैं जब उन्होंने देखा कि इस मीआ़द पर लश्कर आगए तो कहा यह है वह जो हमें अल्लाह और उसके रसूज ने वादा दिया था। (फ़ा59) यानी जो उसके वादे हैं सब सच्चे हैं सब यक़ीनन वाक़ेअ़ होंगे हमारी मदद भी होगी हमें ग़लबा भी दिया जाएगा और मक्का मुकर्रमा और रूम व फ़ारस भी फ़तह होंगे

(बक़िया सफ़हा 678 का) उन्होंने अपना वादा सच्चा कर दिया (फ़ा61) जिहाद पर साबित रहा यहां तक कि शहीद हो गया जैसे कि हज़रत हमज़ा व मुसअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा। (फ़ा62) और शहादत का इन्तेज़ार कर रहा है जैसे कि हज़रत उसमान और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा (फ़ा63) अपने अहद पर वैसे ही साबित क़दम रहे शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तेज़ार करने वाले भी उन मुनाफ़िक़ीन और मरीज़ुल् क़ल्ब लोगों पर तअ़रीज़ है जो अपने अहद पर क़ाइम न रहे (फ़ा64) यानी क़ुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरह के लश्करों को जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका है। (फ़ा65) नाकाम व नामुराद वापस हुए (फ़ा66) दुश्मन फ़रिश्तों की तकबीरों और हवा की सख़्तियों से भाग निकले (फ़ा67) यानी बनी क़ुरैज़ा ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुक़ाबिल क़ुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरह अहज़ाब की मदद की थी (फ़ा68) इसमें ग़ज़वए बनी क़ुरैज़ा का बयान है यह आख़िर ज़ीक़अ़दा सन् 4 हि° या 5 हि° में हुआ जब ग़ज़वए ख़न्दक़ में शब को मुख़ालिफ़ीन के लश्कर भाग गए जिसका ऊपर की आयात में ज़िक्र हो चुका है उस शब की सुबह को रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सहाबा किराम मदीना तय्येबा में तशरीफ़ लाये और हथियार उतार दिये उस रोज़ ज़ुहर के वक़्त जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सर मुबारक धोया जा रहा था जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये फ़रिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं अल्लाह तआ़ला आपको बनी क़ुरैज़ा की तरफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है हुज़ूर ने हुक्म फ़रमाया कि निदा कर दी जाये कि जो फ़रमांबरदार हो वह अ़स्र की नमाज़ न पढ़े मगर बनी क़ुरैज़ा में जाकर हुज़ूर यह फ़रमा कर रवाना हो गए और मुसलमान चलने शुरू हुए और यके बाद दीगरे हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचते रहे यहां तक कि बाज़े हज़रात नमाज़े इशा के बाद पहुंचे लेकिन उन्होंने उस वक़्त तक अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्योंकि हुज़ूर ने बनी क़ुरैज़ा में पहुंच कर अ़स्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था इस लिए उस रोज़ उन्होंने अ़स्र बाद इशा पढ़ी और इस पर न अल्लाह तआ़ला ने उनकी गिरिफ़्त फ़रमाई न रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने। लश्करे इस्लाम ने पचीस रोज़ तक बनी क़ुरैज़ा का मुहासरा रखा इससे वह तंग आगए और अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में रोअ़ब डाला रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम मेरे हुक्म पर क़िलों से उतरोगे? उन्होंने इंकार किया तो फ़रमाया क्या क़बीला औस के सरदार सअ़्द बिन मआ़ज़ के हुक्म पर उतरोगे?इस पर वह राज़ी हुए और सअ़द बिन मआ़ज़ को उनके बारे में हुक्म देने पर मामूर फ़रमाया हज़रत सअ़द ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जायें औरतें और बच्चे क़ैद किये जायें फिर बाज़ारे मदीना में ख़न्दक़ खोदी गई और वहां लाकर उन सब की गर्दनें मारी गईं उन लोगों में क़बीला बनी नुज़ैर का सरदार हुयई बिन अख़्तब और बनी क़ुरैज़ा का सरदार कअ़ब बिन असद भी था और यह लोग छः सौ या सात सौ जवान थे जो गर्दनें काट कर ख़न्दक़ में डाल दिये गए (मदारिक व जुमल) (फ़ा69) यानी मक़ातिलीन को। (फ़ा70) औरतों

और बच्चों को। (फ़71) नक्द और सामान और मवेशी सब मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आईं। (फ़72) इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो फ़तहे क़रीज़ा के बाद मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आया या वह हर ज़मीन मुराद है जो क़ियामत तक फ़तह होकर मुसलमानों के क़ब्ज़ा आने वाली है (फ़73) यानी अगर तुम्हें माले कसीर और असबाबे ऐश दरकार है शाने नुज़ूल सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतह्हरात ने आपसे दुनियवी सामान तलब किये और नफ़्क़ा में ज़्यादती की दरख़्वास्त की यहां तो कमाले ज़ुह्द था सामाने दुनिया और उसका जमा करना गवारा ही न था इस लिए यह ख़ातिरे अक़्दस पर गिराँ हुआ और यह आयत नाज़िल हुई और अज़वो मुतह्हरात को तख़य्युर दी गई उस वक़्त हुज़ूर की नौ बीबियां थीं पांच क़ुरैशिया हज़रत आइशा बिन्त अबी बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु हफ़सा बिन्त फ़ारूक़ उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफ़ियान उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया सौदा बिन्त ज़मआ और चार ग़ैर क़ुरैशिया ज़ैनब बिन्ते जहश असदिया मैमूना बिन्ते हारिस हिलालिया सफ़िया बिन्ते हुयई बिन अख़्तब ख़ैबरिया जुवैरिया बिन्ते हारिस मुस्तलक़िया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुन्न सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सब से पहले हज़रत आइशा रज़ियलाहु अ़न्हा को यह आयत सुनाकर इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि जल्दी न करो अपने वालदैन से मशवरा करके जो राय हो उस पर अमल करो उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर के मुआमला में मशवरा कैसा मैं अल्लाह को और उसके रसूल को और दारे आख़िरत को चाहती हूं और बाक़ी अज़वाज ने भी यही जवाब दिया मसला जिस औरत को इख़्तियार दिया जाएगा वह अगर अपने ज़ौज को इख़्तियार करे तो तलाक़ वाक़ेअ़ नहीं होती और अगर अपने नफ़्स को इख़्तियार करे तो हमारे नज़दीक तलाक़ बाइन वाक़ेअ़ होती है (फ़74) जिस औरत के साथ बाद निकाह दख़ूल या ख़लवते सहीहा हुई हो उसको तलाक़ दी जाये तो कुछ सामान देना मुस्तहब है और वह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है यहां माल से वही मुराद है मसला जिस औरत का महर मुक़र्रर न किया गया हो उसको क़बले दुख़ूल तलाक़ दी तो यह जोड़ा देना वाजिब है (फ़75) बग़ैर किसी ज़रर के (फ़76) जैसे कि शौहर की इताअ़त में कोताही करना और उसके साथ कज ख़ल्क़ी से पेश आना क्योंकि बदकारी से तो अल्लाह तआ़ला अम्बिया की बीबियों को पाक रखता है (फ़77) क्योंकि जिस शख़्स की फ़ज़ीलत ज़्यादा होती है उससे अगर क़ुसूर वाक़ेअ़ हो तो वह क़ुसूर भी दूसरों के क़ुसूर से ज़्यादा सख़्त क़रार दिया जाता है मसला इसी लिए आलिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़्यादा क़बीह होता है और इसी लिए आज़ादों की सज़ा शरीअ़त में गुलामों से ज़्यादा मुक़र्रर है और नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की बीबियां तमाम जहान की औरतों से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती हैं इस लिए उनकी अदना बात सख़्त गिरिफ़्त के क़ाबिल है फ़ाइदा लफ़्ज़ फ़ाहिशा जब मअ़रफ़ा होकर वारिद हो तो उससे ज़ेना और लवातत मुराद होती है और अगर नकरा ग़ैर मौसूफ़ा होकर लाया जाये तो उससे तमाम गुनाह मुराद होते हैं और जब मौसूफ़ होकर वारिद हो तो उससे शौहर की नाफ़रमानी और फ़साद मअ़शेरत मुराद होता है इस आयत में नकरा मौसूफ़ा है इसी लिए इससे शौहर की इताअ़त में कोताही और कज ख़ल्क़ी मुराद है जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मन्क़ूल है। (जुमल वग़ैरह)

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ

وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ

اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَ

الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

व मंय्यक़्नुत् मिन्कुन्–न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्–मल् सालिहन् नुअ्तिहा अज्रहा मर्रतैनि व अअ्–तदना लहा रिज़्क़न् करीमा(31)या निसा–अन्नबिय्यि लस्तुन्–न क–अ–हृदिम् मिनन् निसाइ इनित् तक़ैतुन्–न फ़ला तख़्ज़अ्–न बिल्क़ौलि फ़–यत्म–अ़ल् लज़ी फ़ी क़ल्बिही म–रज़ुंव् व क़ुल्–न क़ौलम् मअ्रूफ़ा(32)व क़र्–न फ़ी बुयूतिकुन्–न व ला त–बर्रज्–न त–बर्रुजल् जाहिलिय्यतिल् ऊला व अक़िम्नस् सला–त व आतीनज़्ज़का–त व अतिअ्नल्ला–ह व रसू–लहू इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्हि–ब अन्कुमुर्रिज्–स अह्–लल् बैति व यु–तह्हि–रकुम् तत्हीरा(33)वज़्कुर्–न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्–न मिन् आयातिल्लाहि वल्हिक्मति इन्नल्ला–ह का–न लतीफ़न् ख़बीरा(34) इन्नल्–मुस्लिमी–न वल्मुस्लिमाति वल्मुअ्मिनी–न वल्–मुअ्मिनाति वल्क़ा–निती–न वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी–न वस्सादिक़ाति वस्सा– बिरी–न वस्साबिराति वल्–ख़ा–शिअ़ी–न वल्–ख़ाशिआ़ति वल्मु–त–सद्दिक़ी–न वल् मु–त–सद्दि–क़ाति वस्साइमी–न वस्साइमाति वल्हाफ़िज़ी–न फ़ुरू–जहुम् वल्हा–फ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरी–नल्ला–ह कसीरंव्

और (फ़ा78) जो तुम में फ़रमांबरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना सवाब देंगे (फ़ा79) और हम ने उसके लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।(31) (फ़ा80) ऐ नबी की बीबियो तुम और औरतों की तरह नहीं हो (फ़ा81) अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे (फ़ा८२) हां अच्छी बात कहो।(32) (फ़ा83) और अपने घरों में ठहरी रहो और बे-पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बे-पर्दगी (फ़ा84) और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे।(33) (फ़ा85) और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें और हिकमत (फ़ा86) बेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है।(34) (रुकूअ़ 1) बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें (फ़ा87) और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमांबरदार और फ़रमांबरदारें और सच्चे और सच्चियां (फ़ा88) और सब्र वाले और सब्र वालियां और आजिज़ी करने वाले और आजिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले

(फ़ा78) ऐ नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की बीबियो (फ़ा79) यानी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना क्योंकि तमाम जहान की औरतों में तुम्हें शर्फ़ व फ़ज़ीलत है और तुम्हारे अ़मल में भी दो जेहतें हैं एक अदाए इताअ़त दूसरे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रज़ा जूई और क़नाअ़त व हुस्ने मुआशरत के साथ हुज़ूर को ख़ुश्नूद करना (फ़ा80) जन्नत में (फ़ा81) तुम्हारा मर्तबा सब से ज़्यादा है और तुम्हारा अज्र सब से बढ़ कर जहान की औरतों में कोई तुम्हारी हमसर नहीं। (फ़ा82) इसमें तालीमे आदाब है कि अगर बज़रूरत ग़ैर मर्द से पसे पर्दा गुफ़्तगू करनी पड़े तो क़सद करो कि लहजा में नज़ाकत न आने पाये और बात में लोच न हो बात निहायत सादगी से की जाये इफ़्फ़त मआब ख़वातीन के लिए यही शायाँ है। (फ़ा83) दीन व इस्लाम की और नेकी की तालीम और पन्द व नसीहत की अगर ज़रूरत पेश आये मगर बे लोच लहजा से (फ़ा84) अगली जाहिलियत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है उस ज़माना में औरतें इतराती निकलती थीं अपनी ज़ीनत व महासिन का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें लिबास ऐसे पहनती थीं जिनसे जिस्म के आज़ा **(बक़िया सफ़हा 709 पर)**

وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا

مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

مَّقْدُوْرًا ﴿٣٨﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ

वज़्ज़ाकिराति अ–अ़द–दल्लाहु लहुम् मग़्फ़ि–र–तंव् व अज्रन् अ़ज़ीमा(35)व मा का–न लिमुअ्मिनिंव् व ला मुअ्मि–नतिन् इज़ा क़–ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्रन् अंय्यकू–न लहुमुल्ख़ि–य–रतु मिन् अम्रिहिम् व मंय्यअ़्सिल्ला–ह व रसू–लहू फ़–क़द ज़ल्–ल ज़लालम् मुबीना(36)व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्–अ़–मल्लाहु अ़लैहि व अन्अ़म्–त अ़लैहि अम्सिक् अ़लै–क ज़ौ–ज–क वत्तक़िल्ला–ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि–क मल्लाहु मुब्दीहि व तख़्शन्ना–स वल्लाहु अ–ह़क़्क़ु अन् तख़्शाहु फ़–लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम् मिन्हा व–त–रन् ज़व्वज्ना–कहा लिकैला यकू–न अ़लल् मुअ्मिनी–न ह़–रजुन् फ़ी अज़्वाजि अद्अ़ियाइहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्–न व–त–रन् व का–न अम्रुल्लाहि मफ़्अ़ूला (37)मा का–न अ़–लन्नबिय्यि मिन् ह़–रजिन् फ़ीमा फ़–र–ज़ल्लाहु लहू सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी–न ख़लौ मिन् क़ब्लु व का–न अम्रुल्लाहि क़–द–रम् मक़्दू–र नि–(38)–ल्लज़ी–न युबल्लिग़ू–न रिसाला–तिल्लाहि व यख़्शौ–नहू व ला यख़्शौ–न अ–ह़–दन् इल्लल्ला–ह व कफ़ा बिल्लाहि ह़सीबा(39)मा का–न मुह़म्मदुन् अबा अ–ह़दिम् मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्

और याद करने वालियाँ इन सब के लिए अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है।(35) और किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औ़रत को पहुंचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मला का कुछ इख़्तियार रहे (फ़ा89) और जो हुक्म न माने अल्लाह और उसके रसूल का वह बेशक सरीह गुमराही बहका।(36) और ऐ महबूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उससे जिसे अल्लाह ने निअ़मत दी (फ़ा90) और तुम ने उसे निअ़मत दी (फ़ा91) कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे (फ़ा92) और अल्लाह से डर (फ़ा93) और तुम अपने दिल में रखते थे वह जिसे अल्लाह को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था (फ़ा94) और तुम्हें लोगों के तअ़ने का अन्देशा था (फ़ा95) और अल्लाह ज़्यादा सज़ावार है कि उसका ख़ौफ़ रखो (फ़ा96) फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उससे निकल गई (फ़ा97) तो हमने वह तुम्हारे निकाह में देदी (फ़ा98) कि मुसलमानों पर कुछ ह़रज न रहे उनके ले पालकों की बीबियों में जब उनसे उनका काम ख़त्म हो जाए (फ़ा99) और अल्लाह का हुक्म होकर रहना।(37) नबी पर कोई हरज नहीं उस बात में जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर फ़रमाई (फ़ा100) अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है उनमें जो पहले गुज़र चुके(फ़ा101)और अल्लाह का काम मुक़र्रर तक़दीर है।(38) वह जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उससे डरते और अल्लाह के सिवा किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस है हिसाब लेने वाला।(39)(फ़ा102)मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं (फ़ा103) हां

(फ़ा89) शाने नुज़ूलः यह आयत ज़ैनब बिन्त जहश असदिया और उनके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जहश और उनकी वालिदा उमीमा बिन्त अब्दुलमुत्तलिब के हक़ में नाज़िल हुई उमीमा हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फूफी थीं वाक़िआ़ यह था कि ज़ैद बिन हारिसा जिनको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आज़ाद किया था और वह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे हुज़ूर ने ज़ैनब के लिए उनका पयाम दिया उसको ज़ैनब ने और उनके भाई ने मन्ज़ूर नहीं किया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और हज़रत ज़ैनब और उनके भाई इस हुक्म को सुनकर राज़ी हो गए और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद का निकाह उनके साथ कर दिया और हुज़ूर ने उनका महर दस दीनार साठ दिरम एक जोड़ा कपड़ा पचास मुद (एम पैमाना है) खाना तीस साअ़ खजूरें दीं मसलाः इससे मालूम हुआ कि आदमी को रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताअ़त हर अमर में वाजिब है और नबी अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबला में कोई **(बक़िया सफ़हा 710 पर)**

رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ هُوَ الَّذِيْ

يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰۗىِٕكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ښ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا

النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝ وَلَا

تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ

تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ

रसूलल्लाहि व ख़ा–त–मन्नबिय्यी–न व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा(40)या अय्युहल् लज़ी–न आ–मनुज़्कुरुल्ला–ह ज़िक्रन् कसीरंव्(41)व सब्बिहूहु बुक्रतंव् व असीला(42)हुवल्लज़ी युसल्ली अ़लैकुम् व मलाइ–कतुहू लियुख़्रि–जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व का–न बिल्मुअ्मिनी–न रहीमा (43)तहिय्यतुहुम् यौ–म यल्क़ौ–नहू सलामुन् व अ–अ़द्–द लहुम् अज्रन् करीमा(44)या अय्यु–हन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना–क शाहिदंव् व मुबश्शिरंव् व नज़ीरा(45)व दाअियन् इलल्लाहि बि–इज़्निही व सिराजम् मुनीरा(46)व बश्शिरिल् मुअ्मिनी–न बिअन्–न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्लन् कबीरा(47)व ला तुतिअिल् काफ़िरी–न वल्मुना–फ़िक़ी–न व दअ् अज़ाहुम् व त–वक्कल् अ़लल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला(48)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा न–कह्तुमुल् मुअ्मिनाति सुम्–म तल्लक़्तुमू हुन्–न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सू हुन्–न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्–न मिन् इद्दतिन् तअ्–तद्दू–नहा फ़–मत्तिअू हुन्–न व सिर्रहू हुन्–न सराहन् जमीला(49)या अय्युहन् नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल–क अज़्वा–ज–कल्लाती आतै–त उजू–रहुन्–न व मा म–ल–कत्

अल्लाह के रसूल हैं (फ़ा104) और सब नबियों में पिछले (फ़ा105) और अल्लाह सब कुछ जानता है।(40) (रुकूअ़ 2) ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो।(41) और सुबह व शाम उसकी पाकी बोलो।(42) (फ़ा106) वही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वह और उसके फ़रिश्ते (फ़ा107) कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की तरफ़ निकाले (फ़ा108) और वह मुसलमानों पर मेहरबान है।(43) उनके लिए मिलते वक़्त की दुआ सलाम है (फ़ा109) और उनके लिए इज़्ज़त का सवाब तैयार कर रखा है।(44) ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर (फ़ा110) और खुशख़बरी देता और डर सुनाता।(45) (फ़ा111) और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता (फ़ा112) और चमका देने वाला आफ़ताब।(46) (फ़ा113) और ईमान वालों को खुश ख़बरी दो कि उनके लिए अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।(47) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की खुशी न करो और उनकी ईज़ा पर दरगुज़र फ़रमाओ (फ़ा114) और अल्लाह पर भरोसा करो और अल्लाह बस है कारसाज़।(48) ऐ ईमान वालो जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिए कुछ इद्दत नहीं जिसे गिनो (फ़ा115) तो उन्हें कुछ फ़ायदा दो (फ़ा116) और अच्छी तरह से छोड़ दो।(49) (फ़ा117) ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)हमने तुम्हारे लिए हलाल फ़रमाईं तुम्हारी वह बीबियां जिन को तुम महर दो (फ़ा118) और तुम्हारे हाथ का

(फ़ा104) और सब रसूल नासेह शफ़ीक़ और वाजिबुत्तौक़ीर व लाज़िमुत्ताअ़त होने के लिहाज़ से अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं बल्कि उनके हुक़ूक़ हक़ीक़ी बाप के हुक़ूक़ से बहुत ज़्यादा हैं लेकिन इससे उम्मत हक़ीक़ी औलाद नहीं हो जाती और हक़ीक़ी औलाद के तमाम अहकाम वरासत वग़ैरह उसके लिए साबित नहीं होते (फ़ा105) यानी आख़िरुलअम्बिया कि नबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई आपकी नबुव्वत के बाद किसी को नबुव्वत नहीं मिल सकती हत्ता कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम नाज़िल होंगे तो अगरचे नबुव्वत पहले पा चुके हैं मगर नुज़ूल के बाद शरीअ़ते मुहम्मदिया पर आ़मिल होंगे और इसी शरीअ़त पर हुक्म करेंगे और आप ही के क़िबला यानी कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे हुज़ूर का आख़िरुल अम्बिया होना क़त्ई है नस्से क़ुरआनी भी इसमें वारिद है और सहाह की बकसरत अहादीस जो हद्दे तवातुर तक पहुंचती हैं उन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी हैं आपके बाद कोई नबी होने वाला नहीं जो हुज़ूर की नबुव्वत के बाद किसी और को नबुव्वत मिलना मुमकिन जाने वह ख़त्म नबुव्वत का मुन्किर और काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम है (फ़ा106) क्योंकि सुबह व शाम के औक़ात मलाइका **(बक़िया सफ़हा 710 पर)**

يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ز وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ

اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ق خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ط قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

رَّحِيْمًا ۝ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ط وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ط ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ

بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ

यमीनु–क मिम्मा अफ़ा–अल्लाहु अ़लै–क व बनाति अ़म्मि–क व बनाति अ़म्माति–क व बनाति ख़ालि–क व बनाति ख़ाला–तिकल्लाती हाजर्–न म–अ़–क वम्–र अतम् मुअ्मि–न–तन् इंव्व–ह–बत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरा–दन्न–बिय्यु अंय्यस्तन्कि–हहा ख़ालि–स़–तल् ल–क मिन् दूनिल्– मुअ्मिनी–न क़द् अ़लिम्ना मा फ़–रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म–ल–कत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू–न अ़लै–क ह़–रजुन् व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् रह़ीमा(50)तुर्जी मन् तशाउ मिन्हुन्–न व तुअ्वी इलै–क मन् तशाउ व मनिब्तग़ै–त मिम्मन् अ़–ज़ल्–त फ़ला जुना–ह़ अ़लै–क ज़ालि–क अद्ना अन्तक़र्–र अअ्युनुहुन्–न व ला यह़्ज़न्–न व यर्ज़ै–न बिमा आतै–तहुन्–न कुल्लुहुन्–न वल्लाहु यअ्–लमु मा फ़ी क़ुलूबिकुम् व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़लीमा(51)ला यह़िल्लु ल–कन्निसाउ मिम् बअ्दु व ला अन्त–ब़द–द–ल बिहिन्–न मिन् अज़्वाजिंव् व लौ अअ्–ज–ब–क ह़ुस्नुहुन्–न इल्ला मा म–ल–कत् यमीनु–क व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइर् रक़ीबा(52)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ्–ज़–न लकुम् इला त़आमिन् ग़ै–र नाज़िरी–न

माल कनीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत में दीं (फ़ा119) और तुम्हारे चचा की बेटियां और फूफियों की बेटियां और मामूं की बेटियां और ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की (फ़ा120) और ईमान वाली औ़रत अगर वह अपनी जान नबी की नज़्र करे अगर नबी उसे निकाह में लाना चाहे (फ़ा121) यह ख़ास तुम्हारे लिये है उम्मत के लिए नहीं (फ़ा122) हमें मालूम है जो हम ने मुसलमानों पर मुक़र्रर किया है उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल कनीज़ों में (फ़ा123) यह खुसूसियत तुम्हारी (फ़ा124) इसलिए कि तुम पर कोई तंगी न हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।(50) पीछे हटाओ उनमें से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो (फ़ा125) और जिसे तुमने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उसमें भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं (फ़ा126) यह अम्र उससे नज़दीक तर है कि उनकी आँखें ठंडी हों और ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाओ उस पर वह सब की सब राज़ी रहें (फ़ा127) और अल्लाह जानता है जो तुम सब के दिलों में है और अल्लाह इल्म व ह़िल्म वाला है।(51) उनके बाद (फ़ा128) और औ़रतें तुम्हें हलाल नहीं (फ़ा129) और न यह कि उनके एवज़ और बीबियां बदलो (फ़ा130) अगरचे तुम्हें उनका हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल (फ़ा131) और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है।(52) (रुकूअ़ 3) ऐ ईमान वालो नबी के घरों में (फ़ा132) न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ (फ़ा133) मसलन खाने के लिए बुलाए जाओ न यूं कि खुद उसके पकने की राह तको (फ़ा134)

(फ़ा119) मिस्ल हज़रत सुफ़िया व हज़रत जुवैरिया के जिनको सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आज़ाद फ़रमाया और उनसे निकाह किया मसला ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलत के लिए है क्योंकि ममलूकात बमिल्के यमीन ख़्वाह ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या वरासत से या वसीयत से वह सब हलाल हैं। (फ़ा120) साथ हिजरत करने की क़ैद भी अफ़ज़ल का बयान है क्योंकि बग़ैर साथ हिजरत करने के भी उनमें से हर एक हलाल है और यह भी हो सकता है कि ख़ास हुज़ूर के हक़ में उन औरतों की हिल्लत इस क़ैद के साथ मुक़य्यद हो जैसा कि उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब की रिवायत इस तरफ़ मुशीर है। (फ़ा121) माना यह हैं कि हमने आपके लिए उस मोमिना औरत को हलाल किया जो बग़ैर महर और बग़ैर शुरूते निकाह अपनी जान आपको हिबा करे बशर्तेकि आप उसे निकाह में लाने का इरादा फ़रमायें हज़रत इब्ने (बक़िया सफ़्हा 711 पर)

إِنَىٰهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ

الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَن تَنكِحُوا أَزْوَاجَهُ

مِن بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾ إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾ لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ

وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا

इनाहु व लाकिन् इज़ा दुऔतुम् फ़द्खुलू फ़इज़ा तअिम्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्निसी–न लि–ह़दीसिन् इन्–न ज़ालिकुम् का–न युअ्ज़िन्नबिय्–य फ़–यस्तह़्यी मिन्कुम् वल्लाहु ला यस्तह़्यी मिनल् ह़क़्क़ि व इज़ा स–अल्तुमूहुन्–न मताअन् फ़स्अलू हुन्–न मिंव्वराइ ह़िज़ाबिन् ज़ालिकुम् अत्हरु लिकुलू–बिकुम् व कुलूबिहिन्–न व मा का–न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्ला–हि व ला अन् तन्किहू अज़्वा–जहू मिम् बअ्दिही अ–ब–दन् इन्–न ज़ालिकुम् का–न अिन्दल्लाहि अ़ज़ीमा (53)इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़इन्नल्ला–ह का–न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा(54)ला जुना–ह़ अ़लैहिन्–न फ़ी आबाइहिन्–न व ला अब्नाइहिन्–न व ला इख़्वानिहिन्–न व ला अब्नाइ इख़्वानिहिन् –न व ला अब्नाइ अ–ख़वातिहिन्–न व ला निसाइहिन्–न व ला मा म–ल–कत् ऐमानुहुन्–न वत्तक़ी– नल्ला –ह इन्नल्ला–ह का–न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा(55)इन्नल्ला–ह व मलाइ–क–तहू युसल्लू–न अ़लन्नबिय्यि या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा(56)इन्नल्लज़ी–न युअ्ज़ूनल्ला–ह व रसू–लहू ल–अ–नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या

हां जब बुलाए जाओ तो ह़ाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न यह कि बैठे बातों में दिल बहलाओ (फ़ा135) बेशक इसमें नबी को ईज़ा होती थी तो वह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे (फ़ा136) और अल्लाह हक़ फ़रमाने में नहीं शरमाता और जब तुम उनसे (फ़ा137) बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो, उसमें ज़्यादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उनके दिलों की (फ़ा138) और तुम्हें नहीं पहुंचता कि रसूलुल्लाह को ईज़ा दो (फ़ा139) और न यह कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो (फ़ा140) बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी सख़्त बात है।(53) (फ़ा141) अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(54) उन पर मुज़ाएक़ा नहीं (फ़ा142) उनके बाप और बेटों और भाईयों और भतीजों और भांजों (फ़ा143) और अपने दीन की औ़रतों (फ़ा144) और अपनी कनीज़ों में (फ़ा145) और अल्लाह से डरती रहो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(55) बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।(56) (फ़ा146) बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया और

(फ़ा135) कि यह अहले ख़ाना की तकलीफ़ और उनके हर्ज का बाइस है (फ़ा136) और उनसे चले जाने के लिए नहीं फ़रमाते थे (फ़ा137) यानी अज़वाजे मुतह्हरात से (फ़ा138) कि वसावस और ख़तरात से अमन रहती है (फ़ा139) और कोई काम ऐसा करो जो ख़ातिरे अक़्दस पर गिराँ हो (फ़ा140) क्योंकि जिस औरत से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़क़्द फ़रमाया वह हु.जूर के सिवा हर शख़्स पर हमेशा के लिए हराम हो गई इसी तरह वह कनीज़ें जो बारयाबे ख़िदमत हुईं और कुरबत से सरफ़राज़ फ़रमाई गईं वह भी उसी तरह सब के लिए हराम हैं (फ़ा141) इसमें एअ़लाम है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत बड़ी अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई और आपकी हुरमत हर हाल में वाजिब की। (फ़ा142) यानी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इसमें कि वह उन लोगों से पर्दा न करें जिनका आयत में आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है शाने नुज़ूलः जब पर्दा का हुक्म नाज़िल हुआ तो औरतों के बाप बेटों और क़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दा के बाहर से गुफ़्तगू करें इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा143) यानी इन अक़ारिब के सामने आने और उनसे कलाम **(बक़िया सफ़हा 712 पर)**

وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿57﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿58﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ
لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿59﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿60﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿61﴾
سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿62﴾ يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ
قَرِيْبًا ﴿63﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿64﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿65﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا

वल्–आख़ि–रति व अ–अ़द्–द लहुम् अ़ज़ाबम् मुहीना(57)वल्लज़ी–न युअ्ज़ूनल् मुअ्मिनी–न वल्मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त–सबू फ़–क़दिह्–त–मलू बुह्तानंव् व इस्मम् मुबीना(58)या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि–अज़्वाजि–क व बनाति–क व निसाइल् मुअ्मिनी–न युद्नी–न अ़लैहिन्–न मिन् जलाबीबिहिन्–न ज़ालि–क अद्ना अंय्युअ्–रफ़्–न फ़ला युअ्ज़ै–न व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् रहीमा (59)लइल्लम् यन्तहिल् मुनाफ़िक़ू–न वल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुंव् वल्मुर्जिफ़ू–न फ़िल्मदी–नति ल–नुग़्रियन्न–क बिहिम् सुम्–म ला युजावि–रू–न–क फ़ीहा इल्ला क़लीलम् (60)मल्अ़ूनी–न ऐ–नमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला(61)सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी–न ख़लौ मिन् क़ब्लु व लन् तजि–द लिसुन्न–तिल्लाहि तब्दीला(62)यस्अलु–कन्नासु अ़निस्सा–अ़ति क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व मा युद्री–क ल–अ़ल्लस् सा–अ़–त तकूनु क़रीबा(63)इन्नल्ला–ह ल–अ़–नल् काफ़िरी–न व अ–अ़द्–द लहुम् सअ़ीरा(64)ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब– दन् ला यजिदू–न वलिय्यंव् व ला नसीरा(65)यौ–म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू–न यालै–तना अतअ्नल

आख़िरत में (फ़ा147) और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(57) (फ़ा148) और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्होंने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।(58) (फ़ा149) (रुकूअ़ 4) ऐ नबी अपनी बीबियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें (फ़ा150) यह उससे नज़दीक तर है कि उनकी पहचान हो (फ़ा151) तो सताई न जायें (फ़ा152) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(59) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ (फ़ा153) और जिन के दिलों में रोग है (फ़ा154) और मदीना में झूठ उड़ाने वाले (फ़ा155) तो ज़रूर हम तुम्हें उन पर शह देंगे (फ़ा156) फिर वह मदीना में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन।(60) (फ़ा157) फटकारे हुए जहां कहीं मिलें पकड़े जायें और गिन गिन कर क़त्ल किये जायें।(61) अल्लाह का दस्तूर चला आता है उन लोगों में जो पहले गुज़र गए (फ़ा158) और तुम अल्लाह का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे।(62) लोग तुम से क़ियामत को पूछते हैं (फ़ा159) तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानो शायद क़ियामत पास ही हो।(63) (फ़ा160) बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत फ़रमाई और उनके लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है।(64)उसमें हमेशा रहेंगे उसमें न कोई हिमायती पायेंगे न मददगार।(65) (फ़ा161) जिस दिन उनके मुंह उलट उलट कर आग में तले जायेंगे कहते होंगे हाय किसी तरह हमने अल्लाह का हुक्म माना होता

(फ़ा147) वह ईज़ा देने वाले कुफ़्फ़ार हैं जो शाने इलाही में ऐसी बातें कहते हैं जिन से वह मुनज़्ज़ा और पाक है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करते हैं उन पर दारैन में लानत (फ़ा148) आख़िरत में (फ़ा149) **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ईज़ा देते थे और उनके हक़ में बदगोई करते थे हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुअर को भी नाहक़ ईज़ा देना हलाल नहीं तो मोमिनीन व मोमिनात को ईज़ा देना किस क़दर बदतरीन जुर्म है (फ़ा150) और सर और चेहरे को छुपायें जब किसी हाजत के लिए उनको निकलना हो (फ़ा151) कि यह हुर्रा हैं (फ़ा152) और मुनाफ़िक़ीन उनके दरपै न हों मुनाफ़िक़ीन की आदत थी कि वह बांदियों को छेड़ा करते थे इस लिए हुर्रा औरतों को हुक्म दिया कि वह चादर से जिस्म ढक कर सर और मुंह छुपा कर बांदियों से अपनी वज़अ़ **(बक़िया सफ़हा 712 पर)**

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

ला–ह व अतअ्–नर्रसूला (66)व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ्ना सा–द–तना व कु–बरा–अना फ़–अ–ज़ल्लूनस् सबीला(67)रब्बना आतिहिम् ज़िअ्फ़ैनि मिनल् अ़ज़ाबि वल्–अ़न्हुम् लअ्–नन् कबीरा (68)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तकूनू कल्लज़ी–न आज़ौ मूसा फ़बर्र–अहुल्लाहु मिम्मा क़ालू व का–न अ़िन्दल्लाहि वजीहा(69)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुत्तक़ुल्ला–ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदंय्–(70)–युस्लिह् लकुम् अअ्मा–लकुम् व यग्फ़िर् लकुम् ज़ुनू–बकुम् व मंय्यु–तिअ़िल्ला–ह व रसू–लहू फ़–क़द् फ़ा–ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा(71)इन्ना अ़–रज़्नल् अमा–न–त अ़लस्समा–वाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़–अबै–न अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क्–न मिन्हा व ह्–म–ल–हल् इन्सानु इन्नहू का–न ज़लूमन् जहूलल्(72)लियु–अ़ज़्ज़िबल्लाहुल् मुनाफ़िक़ी–न वल्मुनाफ़िक़ाति वल् मुश्रिकी–न वल्–मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल् मुअ्मिनी–न वल्–मुअ्मिनाति व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् रहीमा(73)

और रसूल का हुक्म माना होता।(66) (फ़ा162) और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले (फ़ा163) तो उन्होंने हमें राह से बहका दिया।(67) ऐ हमारे रब उन्हें आग का दूना अ़ज़ाब दे (फ़ा164) और उन पर बड़ी लानत कर।(68) (रुकूअ़ 5) ऐ ईमान वालो (फ़ा165) उन जैसे न होना जिन्होंने मूसा को सताया (फ़ा166) तो अल्लाह ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्होंने कही (फ़ा167) और मूसा अल्लाह के यहां आबरू वाला है।(69) (फ़ा168) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।(70) (फ़ा169) तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए संवार देगा (फ़ा170) और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पाई।(71) बेशक हमने अमानत पेश फ़रमाई (फ़ा171) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए (फ़ा172) और आदमी ने उठा ली बेशक वह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है।(72) ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को (फ़ा173) और अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(73) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा162) दुनिया में तो हम आज इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार न होते। (फ़ा163) यानी क़ौम सरदारों और बड़ी उम्र के लोगों और अपनी जमाअ़त के आ़लिमों के उन्होंने हमें कुफ़्र की तलक़ीन की (फ़ा164) क्योंकि वह ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया (फ़ा165) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का अदब व एहतेराम बजा लाओ और कोई काम ऐसा न करना जो उनके रन्ज व मलाल का बाइस हो और (फ़ा166) यानी उन बनी इसराईल की तरह न होना जो नंगे नहाते थे और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तअ़्न करते थे कि हज़रत हमारे साथ क्यों नहीं नहाते उन्हें बरस वग़ैरह की कोई बीमारी है। (फ़ा167) इस तरह कि जब एक रोज़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने ग़ुस्ल के लिए एक तन्हाई की जगह में पत्थर पर कपड़े उतार कर रखे और ग़ुस्ल शुरू किया तो पत्थर आपके कपड़े लेकर भागा आप कपड़े लेने के लिए उसकी तरफ़ बढ़े तो बनी इसराईल ने देख लिया कि जिस्मे मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐब नहीं है (फ़ा168) साहबे जाह और साहबे मन्ज़िलत और मुस्तजाबुद्दावात (फ़ा169) यानी सच्ची और दुरुस्त हक़ व इन्साफ़ की और अपनी ज़बान और कलाम की हिफ़ाज़त रखो यह भलाईयों की असल है ऐसा करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम पर करम फ़रमाएगा और (फ़ा170) तुम्हें नेकियों की तौफ़ीक़ देगा और तुम्हारी ताअ़तें क़बूल फ़रमाएगा। (फ़ा171) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद ताअ़त व फ़राइज़ हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर पेश किया उन्हीं को आसमानों ज़मीनों पहाड़ों **(बक़िया सफ़हा 713 पर)**

سُوْرَةُ سَبَا مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ

وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۚ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ

وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ

فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

सूरतु स–बइन्

(मक्की है इसमें 45 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल् लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्हम्दु फ़िल्आख़ि–रति व हुवल् हकीमुल् ख़बीर(1)यअ़्–लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ़्रुजु फ़ीहा व हुवर्–रहीमुल् ग़फ़ूर(2)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू ला तअ्ती–नस्सा–अ़तु कुल् बला व रब्बी ल–तअ्ति–यन्नकुम् आलिमिल्–ग़ैबि ला यअ़्ज़ुबु अ़न्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व ला अस्ग़रु मिन् ज़ालि–क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीनिल्–(3)लि–यज्ज़ि–यल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मि–लुस्सालिहाति उलाइ–क लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव व रिज़्क़ुन् करीम(4)वल्लज़ी–न सऔ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी–न उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम(5)व य–रल्लज़ी–न ऊतुल् अ़िल्मल् लज़ी उन्ज़ि–ल इलै–क मिर्रब्बि–क हुवल्–हक़्–क़ व यह्दी इला सिरा–तिल् अ़ज़ीज़िल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

सब ख़ूबियां अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा2) और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है (फ़ा3) और वही है हिकमत वाला ख़बरदार।(1) जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है (फ़ा4) और जो ज़मीन से निकलता है (फ़ा5) और जो आसमान से उतरता है (फ़ा6) और जो उसमें चढ़ता है (फ़ा7) और वही है मेहरबान बख़्शिश वाला।(2) और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी (फ़ा8) तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला (फ़ा9) उससे ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आसमानों में और न ज़मीन में और न उससे छोटी और न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली किताब में है।(3) (फ़ा10) ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये यह हैं जिनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।(4) (फ़ा11) और जिन्होंने हमारी आयतों में हराने की कोशिश (फ़ा12) उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब दर्दनाक में से अ़ज़ाब है।(5) और जिन्हें इल्म मिला (फ़ा13) वह जानते हैं कि जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (फ़ा14) वही हक़ है और इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों की सराहे की

(फ़ा1) सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत *व य–रल्लज़ी–न ऊतुल् अ़िल्–म* इसमें छः रुकूअ़ 45 आयतें 833 कलिमे 1512 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक़ और हाकिम अल्लाह तआ़ला है और हर निअ़्मत उसी की तरफ़ से तो वही हम्द व सना का मुस्तहिक़ और सज़ावार है (फ़ा3) यानी जैसा दुनिया में हम्द का मुस्तहिक़ अल्लाह तआ़ला है वैसे ही आख़िरत में भी हम्द का मुस्तहिक़ वही है क्योंकि दोनों जहान उसी की नेअ़्मतों से भरे हुए हैं दुनिया में तो बन्दों पर उसकी हम्द व सना वाजिब है क्योंकि यह दारुत्तकलीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्नत नेअ़्मतों के सुरूर और राहतों की ख़ुशी में उसकी हम्द करेंगे। (फ़ा4) यानी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने। (फ़ा5) जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और बवक़्ते हश्र मुर्दे। (फ़ा6) जैसे कि बारिश बर्फ़ ओले और तरह तरह की बरकतें और फ़रिश्ते। (फ़ा7) जैसे कि फ़रिश्ते और दुआ़यें और बन्दों के अ़मल। (फ़ा8) यानी उन्होंने क़ियामत के आने का **(बक़िया सफ़हा 713 पर)**

الحميد ۝ وقال الذين كفروا هل ندلكم على رجل ينبئكم اذا مزقتم كل ممزق انكم لفي خلق جديد ۝ افترى على الله كذبا ام به جنة
بل الذين لا يؤمنون بالاخرة في العذاب والضلل البعيد ۝ افلم يروا الى ما بين ايديهم وما خلفهم من السماء والارض ان نشا نخسف بهم الارض
او نسقط عليهم كسفا من السماء ان في ذلك لاية لكل عبد منيب ۝ ولقد اتينا داود منا فضلا يجبال اوبي معه والطير والنا له
الحديد ۝ ان اعمل سبغت وقدر في السرد واعملوا صالحا اني بما تعملون بصير ۝ ولسليمن الريح غدوها شهر ورواحها شهر واسلنا له عين
القطر ومن الجن من يعمل بين يديه باذن ربه ومن يزغ منهم عن امرنا نذقه من عذاب السعير ۝ يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان

हमीद(6)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अ़ला रजुलिंय्यु–नब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल्–ल मु–मज़्ज़किन् इन्नकुम् लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीद(7)अफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन् बलिल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल् आख़ि–रति फ़िल् अ़ज़ाबि वज़्ज़लालिल् बऔद(8) अ–फ़–लम् यरौ इला मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि इन्–नशअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल् अर्–ज़ औ नुस्क़ित् अ़लैहिम् कि–स–फ़म् मि–नस्समाइ इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिकुल्लि अ़ब्दिम् मुनीब(9)व ल–क़द आतैना दावू–द मिन्ना फ़ज़्लन् या जिबालु अव्विबी म–अ़हू वत्तै–र व अ–लन्ना लहुल् ह़दीद(10)अनिअ़मल् साबिग़ातिंव् व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ़मलू सालिह़िन् इन्नी बिमा तअ़मलू–न बसीर(11)व लिसुलैमानर् री–ह़ ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव् व रवाहुहा शह्रुन् व अ–सल्ना लहू अ़ैनल्क़ित्रि व मिनल्जिन्नि मंय्यअ्–मलु बै–न यदैहि बिइज़्नि रब्बिही व मंय्यज़िग् मिन्हुम् अ़न् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्सअ़ीर(12)यअ्–मलू–न लहू मा यशाउ मिम् महारी–ब व तमासी–ल व जिफ़ानिन्

राह बताता है।(6) और काफ़िर बोले (फ़ा15) क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें (फ़ा16) जो तुम्हें ख़बर दे कि जब तुम पुरज़ा होकर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है।(7) क्या अल्लाह पर उसने झूठ बांधा या उसे सौदा है (फ़ा17) बल्कि वह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते (फ़ा18) अ़ज़ाब और दूर की गुमराही में हैं।(8) तो क्या उन्होंने न देखा जो उनके आगे और पीछे है आसमान और ज़मीन (फ़ा19) हम चाहें तो उन्हें (फ़ा20) ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान का टुकड़ा गिरा दें बेशक उस (फ़ा21) में निशानी है हर रुजूअ़ लाने वाले बन्दे के लिए।(9) (फ़ा22) (रुकूअ़ 7) और बेशक हमने दाऊद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया (फ़ा23) ऐ पहाड़ो उसके साथ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करो और ऐ परिन्दो (फ़ा24) और हमने उस के लिए लोहा नर्म किया।(10) (फ़ा25) कि वसीअ़ ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिहाज़ रख (फ़ा26) और तुम सब नेकी करो बेशक तुम्हारे काम देख रहा हूं।(11) और सुलैमान के बस में हवा कर दी उसकी सुबह की मन्ज़िल एक महीना की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह (फ़ा27) और हम ने उसके लिए पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया (फ़ा28) और जिन्नों में से वह जो उसके आगे काम करते उसके रब के हुक्म से (फ़ा29) और जो उनमें हमारे हुक्म से फिरे (फ़ा30) हम उसे भड़कती आग का अ़ज़ाब चखायेंगे।(12) उसके लिए बनाते जो वह चाहता ऊंचे-ऊंचे महल (फ़ा31) और तस्वीरें (फ़ा32) और बड़े हौज़ों के

(फ़ा15) यानी काफ़िरों ने आपस में मुतअ़ज्जिब होकर कहा (फ़ा16) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा17) जो वह ऐसी अ़जीबो ग़रीब बातें कहते हैं अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के इस मकूला का रद् फ़रमाया कि यह दोनों बातें नहीं हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन दोनों से मुबर्रा हैं। (फ़ा18) यानी काफ़िर बअ़्स व हिसाब का इंकार करने वाले (फ़ा19) यानी क्या वह अन्धे हैं कि उन्होंने आसमान व ज़मीन की तरफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मालूम होता कि वह हर तरफ़ से इहाता में हैं और ज़मीन व आसमान के अक़्तार से बाहर नहीं जा सकते और मिल्के ख़ुदा से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं उन्होंने आयात और रसूल की तकज़ीब व इन्कार के दहशत अंगेज़ जुर्म का इरतेकाब करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इस हालत का ख़्याल करके न डरे। (फ़ा20) उनकी तकज़ीब व इन्कार की सज़ायें क़ारून की तरह (फ़ा21) नज़र व फ़िक्र (फ़ा22) जो दलालत **(बक़िया सफ़्हा 713 पर)**

كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿13﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۗبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿14﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۥ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿15﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿16﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿17﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿18﴾ فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

कल्जवाबि व कुदूरिर्-रासियातिन् इअ्-मलू आ-ल दावू-द शुक्-रन् व कलीलुम् मिन् अिबादि -यश्-शकूर(13)फ़-लम्मा क़ज़ैना अ़लैहिल् मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही इल्ला दाब्बतुल् अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू फ़-लम्मा ख़र्-र त-बय्यि-नतिल् जिन्नु अल्लौ कानू यअ्-लमूनल् ग़ै-ब मा लबिसू फ़िल्-अ़ज़ाबिल् मुहीन(14)ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम् आ-यतुन् जन्नतानि अंय्यमीनिंव् व शिमालिन् कुलू मिर्रिज़्क़ि रब्बिकुम् वश्कुरू लहू बल्दतुन् तय्यि-बतुंव् व रब्बुन् ग़फ़ूर(15)फ़-अअ्रज़ू फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् सैलल् अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्तिंव् व अस्लिंव् व शैइम् मिन् सिद्रिन् क़लील(16)ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिमा क-फ़रू व हल् नुजाज़ी इल्लल् कफ़ूर(17)व ज-अ़ल्ना बै-नहुम् व बैनल् क़ुरल् लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहि-रतंव् व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-र सीरू फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (18)फ़क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-ज-अ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्नाहुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन् इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्

बराबर लगन (फ़ा33) और लंगरदार देगें (फ़ा34) ऐ दाऊद वालो शुक्र करो (फ़ा35) और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।(13) फिर जब हमने उस पर मौत का हुक्म भेजा (फ़ा36) जिन्नों को उसकी मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उसका अ़सा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हक़ीक़त खुल गई (फ़ा37) अगर ग़ैब जानते होते (फ़ा38) तो उस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते।(14) (फ़ा39) बेशक सबा (फ़ा40) के लिए उनकी आबादी में (फ़ा41) निशानी थी (फ़ा42) दो बाग़ दाहिने और बायें (फ़ा43) अपने रब का रिज़्क़ खाओ (फ़ा44) और उसका शुक्र अदा करो (फ़ा45) पाकीज़ा शहर (फ़ा46) और बख़्शने वाला रब।(15) (फ़ा47) तो उन्होंने मुंह फेरा (फ़ा48) तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब) भेजा (फ़ा49) और उनके बाग़ों के एवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बकटा मेवा (फ़ा50) और झाव और कुछ थोड़ी सी बेरियां।(16) (फ़ा51) हमने उन्हें यह बदला दिया उनकी नाशुक्री (फ़ा52) की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं उसी को जो नाशुक्रा है।(17) और हमने किये थे उनमें (फ़ा53) और उन शहरों में जिन में हमने बरकत रखी (फ़ा54) सरे राह कितने शहर (फ़ा55) और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा (फ़ा56) उनमें चलो रातों और दिनों अमन व अमान से।(18) (फ़ा57) तो बोले ऐ हमारे रब हमारे सफ़र में दूरी डाल (फ़ा58) और उन्होंने खुद अपना ही नक़सान किया तो हमने उन्हें कहानियां कर दिया (फ़ा59) और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया (फ़ा60) बेशक उसमें ज़रूर निशानियां हैं

(फ़ा33) इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार आदमी खाते। (फ़ा34) जो अपने पायों पर क़ाइम थीं और बहुत बड़ी थीं हत्ता कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं सीढ़ियां लगा कर उन पर चढ़ते थे यह यमन में थीं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने फ़रमाया कि (फ़ा35) अल्लाह तआ़ला का उन निअ़मतों पर जो उसने तुम्हें अ़ता फ़रमाई उसकी इताअ़त बजा लाकर। (फ़ा36) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की थी कि उनकी वफ़ात का हाल जिन्नात पर ज़ाहिर न होता कि इन्सानों को मालूम हो जाये कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते फिर आप मेहराब में दाख़िल हुए और हस्बे आ़दत नमाज़ के लिए अपने अ़सा पर तकिया लगा कर खड़े हो गए जिन्नात हस्बे दस्तूर अपनी ख़िदमतों में मशगूल रहे और यह समझते रहे कि हज़रत ज़िन्दा हैं और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का अर्सए दराज़ तक इसी हालत पर रहना उनके **(बक़िया सफ़हा 714 पर)**

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً

लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर(19)व ल–क़द् सद्–द–क़ अ़लैहिम् इब्लीसु ज़न्नहू फ़त्त–बअूहु इल्ला फ़रीक़म् मिनल् मुअ्मिनीन(20)व मा का–न लहू अ़लैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ्–ल–म मंय्युअ्मिनु बिल्आख़ि–रति मिम्मन् हु–व मिन्हा फ़ी शक्किन् व रब्बु–क अ़ला कुल्लि शैइन् ह़फ़ीज़(21) कुलिद्अुल्लज़ी–न ज़–अ़म्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू–न मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव् व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर(22)व ला तन्फ़अुश् शफ़ा–अ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि–न लहू ह़त्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि–अ़ अ़न् क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा क़ा–ल रब्बुकुम् क़ालुल्ह़क़्–क़ व हुवल् अ़लिय्युल् कबीर(23)क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि क़ुलिल्लाहु व इन्ना औ इय्याकुम् ल–अ़ला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम् मुबीन(24)क़ुल् ला तुस्–अलू–न अ़म्मा अज्रम्ना व ला नुस्अलु अ़म्मा तअ्–मलून(25)क़ुल् यज्–मअु बै–नना रब्बुना सुम्–म यफ़्तहु बै–नना बिल्ह़क़्क़ि व हुवल् फ़त्ताहुल् अ़लीम(26)क़ुल् अरूनियल्लज़ी–न अल्ह़क़्तुम् बिही शु–रका–अ कल्ला बल् हुवल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(27)व मा अर्सल्ना–क इल्ला काफ़्फ़तल्

हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिए।(19) (फ़ा61) और बेशक इबलीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया (फ़ा62) तो वह उसके पीछे हो लिए मगर एक गरोह कि मुसलमान था।(20) (फ़ा63) और शैतान का उन पर (फ़ा64) कुछ क़ाबू न था मगर इसलिए कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन उससे शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगेहबान है।(21) (रुकूअ़ 8) तुम फ़रमाओ (फ़ा65) पुकारो उन्हें जिन्हें अल्लाह के सिवा (फ़ा66) समझे बैठे हो (फ़ा67) वह ज़र्रा भर के मालिक नहीं आसमानों में और न ज़मीन में और न उनका उन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उनमें से कोई मददगार।(22) और उसके पास शफ़ाअ़त काम नहीं देती मगर जिसके लिए वह इज़्न फ़रमाए यहां तक कि जब इज़्न देकर उनके दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है एक दूसरे से (फ़ा68) कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वह कहते हैं जो फ़रमाया हक़ फ़रमाया।(23) (फ़ा69) और वही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन जो तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों और ज़मीन से (फ़ा70) तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह (फ़ा71) और बेशक हम या तुम (फ़ा72) या तो ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में।(24) (फ़ा73) तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उसकी तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कोतकों का हम से सवाल।(25) (फ़ा74) तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जमा करेगा (फ़ा75) फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा देगा (फ़ा76) और वही है बड़ा नियाओ चुकाने वाला सब कुछ जानता।(26) तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वह शरीक जो तुमने उससे मिलाए हैं (फ़ा77) हिश्त बल्कि वही है अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(27) और ऐ महबूब हमने तुम को न भेजा मगर ऐसी

(फ़ा61) और सब्र व शुक्र मोमिन की सिफ़त है कि जब वह बला में मुब्तला होता है सब्र करता है और जब निअ़मत पाता है शुक्र बजा लाता है। (फ़ा62) यानी इबलीस जो गुमान रखता था कि बनीए आदम को वह शह्वत व हिर्स और ग़ज़ब के ज़रीअ़ा गुमराह कर देगा यह गुमान उसने अहले सबा पर बल्कि तमाम काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वह उसके मुतब्बअ़ हो गए और उसकी इताअ़त करने लगे हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि शैतान ने न किसी पर तलवार खींची न किसी पर कोड़े मारे झूठे वादों और बातिल उम्मीदों से अहले बातिल को गुमराह कर दिया। (फ़ा63) उन्होंने उसका इत्तेबाअ़ न किया **(बक़िया सफ़हा 715 पर)**

لِلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۹﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا

تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

اِۨلْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَ

اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ

लिन्नासि बशीरंव् व नज़ीरंव् व लाकिन्–न अक्स–रन्नासि ला यअ्–लमून(28)व यकूलू–न मता हाज़ल् वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(29)कुल् लकुम् मीआदु यौमिल् ला तस्–तअ्ख़िरू–न अन्हु साअ–तंव् व ला तस्तक़्दिमून (30)व क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू लन्नुअ्मि–न बिहाज़ल् क़ुर्आनि व ला बिल्लज़ी बै–न यदैहि व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू–न मौक़ूफ़ू–न अ़िन्–द रब्बिहिम् यर्जिअु बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़ि निल्क़ौ–ल यक़ूलुल् लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ी–नस्तक्बरू लौला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन(31)क़ालल् लज़ीनस्–तक्बरू लिल्लज़ीनस्–तुज़्अिफ़ू अ–नह्नु स–दद्नाकुम् अ़निल्हुदा बअ्–द इज् जा–अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन(32)व क़ालल् लजीनस्–तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्–तक्बरू बल् मक्–रुल् लैलि वन्नहारि इज् तअ्मुरू–नना अन् नक्फ़ु–र बिल्लाहि व नज्–अ–ल लहू अन्दादन् व अ–सर्रुन्नदा–म–त लम्मा र–अवुल् अ़ज़ा–ब व ज–अल्–नल् अग़ला–ल फ़ी अअ्ना–क़िल् लज़ी–न क–फ़रू हल् युज्ज़ौ–न इल्ला मा कानू यअ्–मलून(33)व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा–ल

रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है (फ़ा78) ख़ुशख़बरी देता (फ़ा79) और डर सुनाता (फ़ा80) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।(28) (फ़ा81) और कहते हैं यह वादा कब आएगा (फ़ा82) अगर तुम सच्चे हो।(29) तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का वादा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे हट सको और न आगे बढ़ सको।(30) (फ़ा83) (रुकूअ़ 9) और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लायेंगे इस क़ुरआन पर और न उन किताबों पर जो इससे आगे थीं (फ़ा84) और किसी तरह तो देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास खड़े किये जायेंगे उनमें एक दूसरे पर बात डालेगा वह जो दबे थे (फ़ा85) उनसे कहेंगे जो ऊंचे खिंचते (फ़ा86) थे अगर तुम न होते (फ़ा87) तो हम ज़रूर ईमान ले आते।(31) वह जो ऊँचे खिंचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से बाद इसके कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम थे।(32) और कहेंगे वह जो दबे हुए थे उनसे जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दांव था (फ़ा88) जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि अल्लाह का इन्कार करें और उसके बराबर वाले ठहरायें और दिल ही दिल में पछताने लगे (फ़ा89) जब अ़ज़ाब देखा (फ़ा90) और हमने तौक़ डाले उनकी गर्दनों में जो मुन्किर थे (फ़ा91)वह क्या बदला पायेंगे मगर वही जो कुछ करते थे।(33)(फ़ा92)और हमने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के

(फ़ा78) इस आयत से मालूम हुआ कि हुज़ुर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत आम्मा है तमाम इन्सान उसके इहाता में हैं गोरे हों या काले अ़रबी हों या अ़जमी पहले हों या पिछले सब के लिए आप रसूल हैं ओर वह सब आपके उम्मती बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मुझे पांच चीज़ें ऐसी अ़ता फ़रमाई गईं जो मुझ से पहले सिकी नबी को न दी गईं एक माह की मुसाफ़त के रोअ़ब से मेरी मदद की गई तमाम ज़मीन मेरे लिए मस्जिद और पाक की गई कि जहां मेरे उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और मेरे लिए ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिए हलाल न थीं और मुझे मर्तबए शफ़ाअ़त अ़ता किया गया और अम्बिया ख़ास अपनी क़ौम की तरफ़ मबऊस होते थे और मैं तमाम इन्सानों की तरफ़ मबऊस फ़रमाया गया हदीस में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ज़ाइले मख़्सूसा का बयान है जिन में से एक आपकी रिसालते आम्मा है जो तमाम जिन्न व इन्स को शामिल है ख़ुलासा यह कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और यह मर्तबा ख़ास आपका है जो (बक़िया सफ़हा 715 पर)

مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۡ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾
وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿۴۰﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا
يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿۴۱﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۴۲﴾

मुत्–रफ़ूहा इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून(34)व क़ालू नह्नु अक्सरु अम्वालंव् व औलादंव् व मा नह्नु बिमु–अ़ज़्ज़बीन(35)कुल् इन्–न रब्बी यब्सुतुर् रिज़्–क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यअ़्–लमून(36)व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तु–क़र्रिबुकुम् अ़िन्दना ज़ुल्फ़ा इल्ला मन् आ–म–न व अ़मि–ल सालिहन् फ़उलाइ–क लहुम् जज़ाउज़् ज़िअ़्फ़ि बिमा अ़मिलू व हुम् फ़िल्ग़ुरुफ़ाति आमिनून(37)वल्लज़ी–न यस्औ़–न फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी–न उलाइ–क फ़िल्–अ़ज़ाबि मुह़्–ज़रून(38)कुल् इन्–न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्–क़ लि–मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु–व युख़्लिफ़ुहू व हु–व ख़ैरुर्–राज़िक़ीन(39)व यौ–म यह़्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्–म यक़ूलु लिल्मलाइ–कति अ–हाउलाइ इय्याकुम् कानू यअ़्बुदून(40) क़ालू सुब्हा–न–क अन्–त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् बल् कानू यअ़्बुदूनल् जिन्–न अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ्मिनून(41)फ़ल्यौ–म ला यम्लिकु बअ़्जुकुम् लिबअ़्ज़िन् नफ़्–अंव् व ला ज़र्रन् व नक़ूलु लिल्लज़ी–न ज़–लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारिल् लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून(42)

आसूदों ने यही कहा कि तुम जो लेकर भेजे गए हम उसके मुन्किर हैं।(34) (फ़ा93) और बोले हम माल और औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अ़ज़ाब होना नहीं।(35) (फ़ा94) तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ करता है जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है (फ़ा95) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।(36) (रुकूअ़ 10) और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद इस क़ाबिल नहीं कि तुम्हें हमारे क़ुर्ब तक पहुंचायें मगर वह जो ईमान लाए और नेकी की (फ़ा96) उनके लिए दूना दून सिला (फ़ा97) उनके अ़मल का बदला और वह बालाख़ानों में अमून व अमान से हैं।(37) (फ़ा98) और वह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं (फ़ा99) वह अ़ज़ाब में ला धरे जायेंगे।(38) (फ़ा100) तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिए चाहे (फ़ा101) और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वह उसके बदले और देगा (फ़ा102) और वह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला।(39)(फ़ा103)और जिस दिन उन सब को उठाएगा (फ़ा104) फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा क्या यह तुम्हें पूजते थे।(40)(फ़ा105)वह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझको तू हमारा दोस्त है न वह (फ़ा106) बल्कि वह जिन्नों को पूजते थे (फ़ा107) उनमें अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे।(41) (फ़ा108) तो आज तुम में एक दूसरे के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा (फ़ा109) और हम फ़रमायेंगे ज़ालिमों से उस आग का अ़ज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे।(42) (फ़ा110)

(फ़ा93) इसमें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीन ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप उन कुफ़्फ़ार की तकज़ीब व इन्कार से रन्जीदा न हों कुफ़्फ़ार का अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ यही दस्तूर रहा है और मालदार लोग इसी तरह अपने माल व औलाद के ग़ुरूर में अम्बिया की तकज़ीब करते रहे हैं शाने नुज़ूलः दो शख़्स शरीके तिजारत थे उन में से एक मुल्के शाम को गया और एक मक्का मुकर्रमा में रहा जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मबऊस हुए और उसने मुल्के शाम में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त लिखा और उससे हुज़ूर का मुफ़स्सल हाल दरियाफ़्त किया उस शरीक ने जवाब में लिखा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी नबुव्वत का एलान तो किया है लेकिन सिवाए छोटे दर्जे के हक़ीर व ग़रीब लोगों के और किसी ने उनका इत्तेबाअ़ नहीं किया जब यह ख़त उसके पास पहुंचा तो वह अपने तिजारती काम छोड़ कर मक्का मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सय्यदे आ़लम **(बक़िया सफ़हा 715 पर)**

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ
لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٤٣﴾ وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ
مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾
قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا
فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَكَانٍ
بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ﴿٥٤﴾

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्युरीदु अंय्यसुद्–दकुम् अ़म्मा का–न यअ़बुदु आबा–उकुम् व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम् मुफ़्तरन् व क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू लिलह़क़्क़ि लम्मा जा–अहुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह़्रुम् मुबीन(43)व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्यद रुसू–नहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्–ल–क मिन् नज़ीर(44)व कज़्ज़बल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ब–लग़ू मिअ़्शा–र मा आतैनाहुम् फ़–कज़्ज़बू रुसुली फ़कै–फ़ का–न नकीर(45)कुल् इन्नमा अअ़िज़ुकुम् बिवाहि़–दतिन् अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्–म त–त–फ़क्करू मा बिसाहि़–बिकुम् मिन् जिन्नतिन् इन् हु–व इल्ला नज़ीरुल् लकुम् बै–न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद(46)कुल् मा स–अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु–व लकुम् इन् अज्रि–य इल्ला अ़लल्लाहि व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(47)कुल् इन्–न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिलह़क़्क़ि अ़ल्लामुल् ग़ुयूब(48)कुल् जाअलह़क़्क़ु व मा युब्दिउल् बातिलु व मा युअ़ीद(49)कुल् इन् ज़–लल्तु फ़इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी व इनिह्तदैतु फ़बिमा यूही इलय्–य रब्बी इन्नहू समीअ़ुन् क़रीब(50)व लौ तरा इज़् फ़ज़िअ़ू फ़ला फ़ौ–त व उख़िज़ू मिम् मकानिन् क़रीब(51)व क़ालू आमन्ना बिही व अन्ना लहुमुत्–तनावुशु मिम् मकानिम् बअ़ीदिंव्–(52) –व क़द् क–फ़रू बिही मिन् क़ब्लु व यक़्ज़िफ़ू–न बिल्ग़ैबि मिम् मकानिम् बअ़ीद(53)व ह़ी–ल बै–नहुम् व बै–न मा यश्तहू–न कमा फ़ुअ़ि–ल बिअश्याअ़िहिम् मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम् मुरीब(54)

और जब उन पर हमारी रौशन आयतें (फ़ा111) पढ़ी जायें तो कहते हैं (फ़ा112) यह तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा के मअ़बूदों से (फ़ा113) और कहते हैं (फ़ा114) यह तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुआ और काफ़िरों ने हक़ को कहा (फ़ा115) जब उनके पास आया यह तो नहीं मगर खुला जादू।(43) और हमने उन्हें कुछ किताबें न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया।(44) (फ़ा116) और उनसे अगलों ने (फ़ा117) झुठलाया और यह उसके दसवें को भी न पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था (फ़ा118) फिर उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा इन्कार करना।(45) (फ़ा119) (रुकूअ़ 11) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक ही नसीहत करता हूं (फ़ा120) कि अल्लाह के लिए खड़े रहो (फ़ा121) दो दो (फ़ा122) और अकेले अकेले (फ़ा123) फिर सोचो (फ़ा124) कि तुम्हारे इन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वह तो नहीं मगर तुम्हें डर सुनाने वाले (फ़ा125) एक सख़्त अ़ज़ाब के आगे।(46) (फ़ा126) तुम फ़रमाओ मैंने तुम से उस पर कुछ अज्र मांगा हो तो वह तुम्हीं को (फ़ा127) मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और वह हर चीज़ पर गवाह है।(47) तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब हक़ का इल्क़ा फ़रमाता है (फ़ा128) बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का।(48) तुम फ़रमाओ हक़ आया (फ़ा129) और बातिल न पहल करे और न फिर कर आए।(49) (फ़ा130) तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका (फ़ा131) और अगर मैंने राह पाई तो उसके सबब जो मेरा रब मेरी तरफ़ 'वही' फ़रमाता है (बक़िया सफ़हा 716 पर)

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ○

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُولِيٓ أَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ مَا يَفْتَحِ اللَّهُ

لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنۢ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ

خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ○ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ○

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ○ إِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُۥ لِيَكُونُوا

सूरतु फ़ातिरिन्

(मक्की है इसमें 45 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अल्ह़म्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस् समावाति वल्अर्ज़ि जाअ़िलिल् मलाइ–कति रुसुलन् उली अज्निह़–तिम् मस्ना व सुला–स व रुबा–अ यज़ीदु फ़िल्ख़ल्क़ि मा यशाउ इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(1)मा यफ़्तह़िल्लाहु लिन्नासि मिर्रह़्–मतिन् फ़ला मुम्सि–क लहा व मा युम्सिक् फ़ला मुर्सि–ल लहू मिम् बअ़्दिही व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(2)या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ़्म–तल्लाहि अ़लैकुम् हल् मिन् ख़ालि–क़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ला इला–ह इल्ला हु–व फ़–अन्ना तुअ़–फ़कून (3)व इंय्युकज़्ज़िबू–क फ़–क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि–क व इलल्लाहि तुर्जअुल् उमूर(4)या अय्यहन्नासु इन्–न वअ़्दल्लाहि ह़क़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल् ह़यातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल् ग़रूर(5)इन्नश्शैता–न लकुम् अ़दुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अ़दुव्वन् इन्नमा यदअ़ू ह़िज़्–बहू लि–यकूनू

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

सब ख़ूबियां अल्लाह को जो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़रिश्तों को रसूल करने वाला (फ़ा2) जिनके दो दो, तीन तीन, चार चार, पर हैं बढ़ाता है आफ़रीनश में जो चाहे (फ़ा3) बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1) अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले (फ़ा4) उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ रोक ले तो उसकी रोक के बाद उसका कोई छोड़ने वाल नहीं और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(2) ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह का एहसान याद करो (फ़ा5) क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी ख़ालिक़ कि आसमान और ज़मीन से (फ़ा6) तुम्हें रोज़ी दे उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो तुम कहां औंधे जाते हो।(3) (फ़ा7) और अगर यह तुम्हें झुठलायें (फ़ा8) तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुठलाए गए (फ़ा9) और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं।(4) (फ़ा10) ऐ लोगो बेशक अल्लाह का वादा सच है (फ़ा11) तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुनिया की ज़िन्दगी (फ़ा12) और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के ह़िल्म पर फ़रेब न दे वह बड़ा फ़रेबी।(5) (फ़ा13) बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो (फ़ा14) वह तो अपने गरोह को (फ़ा15) इसी लिए बुलाता है कि

(फ़ा1) सूरए फ़ातिर मक्की है इसमें पांच रुकूअ़ पैंतालीस आयतें 970 कलिमे और 3130 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अपने अम्बिया की तरफ़ (फ़ा3) फ़रिश्तों में और उनके सिवा और मख़्लूक़ में (फ़ा4) मिस्ल बारिश व रिज़्क़ व सेहत वग़ैरह के। (फ़ा5) कि उसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया आसमान को बग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया अपनी राह बताने और हक़ की दावत देने के लिए रसूलों को भेजा रिज़्क़ के दरवाज़े खोले। (फ़ा6) मेंह बरसा कर और तरह तरह के नबातात पैदा करके (फ़ा7) और यह जानते हुए कि वही ख़ालिक़ व राज़िक़ है ईमान व तौहीद से क्यों फिरते हो उसके बाद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली के लिए फ़रमाया जाता है (फ़ा8) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और तुम्हारी नबुव्वत व रिसालत को न मानें और तौहीद व बअ़्स व हिसाब और अ़ज़ाब का इन्कार करें। (फ़ा9) उन्होंने सब्र किया आप भी **(बक़िया सफ़हा 717 पर)**

مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ
فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۭ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ
الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۭ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَمَا

मिन् अस्हा–बिस्सअ़ीर(6)अल्लज़ी–न क–फ़रू लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन् वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व अज्रुन् कबीर(7)अ–फ़–मन् ज़ुय्यि–न लहू सूउ अ़–मलिही फ़–रआहु ह़–स–नन् फ़–इन्नल्ला–ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ फ़ला तज़्–हब् नफ़्सु–क अ़लैहिम् ह़–सरातिन् इन्नल्ला– ह अ़लीमुम् बिमा यस्–नअू न(8)वल्लाहुल्लज़ी अर्सलर् रिया–ह़ फ़तुसीरु सहाबन् फ़सुक़्नाहु इला ब–लदिम् मय्यितिन् फ़–अह़्यैना बिहिल्अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा कज़ालिकन् नुशूर(9)मन् का–न युरीदुल् अ़िज़्ज़–त फ़लिल्लाहिल् अ़िज़्ज़तु जमीअ़न् इलैहि यस्–अ़दुल् कलिमुत् तय्यिबु वल्–अ़–मलुस्सालिहु यरफ़अुहू वल्लज़ी–न यम्कुरू–नस् सय्यिआति लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन् व मक्रु उलाइ–क हु–व यबूर(10)वल्लाहु ख़–ल–क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्–म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्–म ज–अ़–लकुम् अज़्वाजन् व मा तह़्मिलु मिन् उन्सा व ला त–ज़अु इल्ला बिअ़िल्मिही व मा यु–अ़म्मरु मिम् मु–अ़म्मरिंव् व ला युन्क़सु मिन् अ़ुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन् इन्–न ज़ालि–क अ़लल्लाहि यसीर(11)व मा

दोज़ख़ियों में हों(6) (फ़ा16) और काफ़िरों के लिए (फ़ा17) सख़्त अ़ज़ाब है और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए (फ़ा18) उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है(7) तो क्या वह जिसकी निगाह में उसका बुरा काम आरास्ता किया गया कि उसने उसे भला समझा हिदायत वाले की तरह हो जाएगा (फ़ा19) इसलिए अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे तो तुम्हारी जान उन पर हसरतों में न जाए (फ़ा20) अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह करते हैं(8) और अल्लाह है जिसने भेजीं हवायें कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ रवाँ करते हैं (फ़ा21) तो उसके सबब हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते हैं उसके मरे पीछे (फ़ा22) यूँ हीं हश्र में उठना है।(9) (फ़ा23) जिसे इज़्ज़त की चाह हो तो इज़्ज़त तो सब अल्लाह के हाथ है (फ़ा24) उसी की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम (फ़ा25) और जो नेक काम है वह उसे बुलन्द करता है (फ़ा26) और वह जो बुरे दाँव करते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है (फ़ा27) और उन्हीं का मक्र बरबाद होगा।(10) (फ़ा28) और अल्लाह ने तुम्हें बनाया (फ़ा29) मिट्टी से फिर (फ़ा30) पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया जोड़े जोड़े (फ़ा31) और किसी मादा को पेट नहीं रहता और न वह जनती है मगर उसके इल्म से और जिस बड़ी उम्र वाले को उम्र दी जाए या जिस किसी की उम्र कम रखी जाए यह सब एक किताब में है (फ़ा32) बेशक यह अल्लाह को आसान है।(11) (फ़ा33) और दोनों

(फ़ा16) अब शैतान के मुत्तबेईन और उसके मुख़ालिफ़ीन का हाल तफ़सील के साथ बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा17) जो शैतान के गरोह में से हैं। (फ़ा18) और शैतान के फ़रेब में न आये और उसकी राह पर न चले। (फ़ा19) हरगिज़ नहीं बुरे काम को अच्छा समझने वाला राहयाब की तरह क्या हो सकता है वह इस बदकार से बदर्जहा बद्तर है जो अपने ख़राब अ़मल को बुरा जानता हो और हक़ को हक़ और बातिल को बातिल समझता हो शाने नुज़ूल यह आयत अबू जहल वग़ैरह मुशरिकीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जो अपने शिर्क व कुफ़्र जैसे क़बीह अफ़आ़ल को शैतान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे और एक क़ौल यह है कि यह आयत असहाबे बिदअ़त व हवा के हक़ में नाज़िल हुई जिनमें रवाफ़िज़ व ख़वारिज वग़ैरह दाख़िल हैं जो अपनी बद-मज़हबियों को अच्छा जानते हैं और उन्हीं के ज़ुमरा में दाख़िल हैं तमाम बद-मज़हब ख़्वाह वहाबी हों या ग़ैर-मुक़ल्लिद या मिर्ज़ाई या चकड़ाली और कबीरा गुनाह वाले जो अपने गुनाहों को बुरा **(बक़िया सफ़्हा 717 पर)**

يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ
مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۝ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ

यस्तविल् बह्रानि हाज़ा अज़्बुन् फुरातुन् साइगुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व मिन् कुल्लिन् तअकुलू–न लह्मन् तरिय्यंव् व तस्तख़्रिजू–न हिल्य–तन् तल्बसू–नहा व तरल्फुल्–क फ़ीहि मवाख़ि–र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(12)यूलिजुल् लै–ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा–र फ़िल्लैलि व सख़्ख़–रश्शम्–स वल्–क़–म–र कुल्लुंय्यज्री लि–अ–जलिम् मुसम्मन् ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुलमुल्कु वल्लज़ी–न तदऊ–न मिन् दूनिही मा यम्लिकू–न मिन् क़ित्मीर(13)इन् तदऊ हुम् ला यस्मअू दुआ–अकुम् व लौ समिअू मस्तजाबू लकुम् व यौमल्क़िया–मति यक्फुरू–न बिशिर्किकुम् व ला युनब्बिउ–क मिस्लु ख़बीर(14)या अय्युहन्नासु अन्तुमुल् फु–क़राउ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल्ग़निय्युल् हमीद(15)इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद(16)व मा ज़ालि–क अ़–लल्लाहि बि–अ़ज़ीज़(17)व ला तज़िरु वाज़ि–रतुंव् विज़्–र उख़्रा व इन् तदअु मुस्क़–लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्मल् मिन्हु शैउंव् व लौ का–न ज़ाक़ुर्बा

समुन्दर एक से नहीं (फ़ा34) यह मीठा है ख़ूब मीठा जिसका पानी ख़ुशगवार और यह खारी है तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त (फ़ा35) और निकालते हो पहनने का एक गहना (फ़ा36) और तू कश्तियों को उसमें देखे कि पानी चीरती हैं (फ़ा37) ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो (फ़ा38) और किसी तरह हक़ मानो।(12) (फ़ा39) रात लाता है दिन के हिस्सा में (फ़ा40) और दिन लाता है रात के हिस्सा में (फ़ा41) और उसने काम में लगाए सूरज और चाँद हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द तक चलता है (फ़ा42) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है और उसके सिवा जिन्हें तुम पूजते हो (फ़ा43) दाना खुरमा के छिलके तक के मालिक नहीं।(13) तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार न सुनें (फ़ा44) और बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत रवा न कर सकें (फ़ा45) और क़ियामत के दिन वह तुम्हारे शिर्क से मुन्किर होंगे (फ़ा46) और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की तरह।(14) (फ़ा47) (रुकूअ़ 14) ऐ लोगो तुम सब अल्लाह के मोहताज (फ़ा48) और अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(15) वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (फ़ा49) और नई मख़्लूक़ ले आए।(16) (फ़ा50) और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं।(17) और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी (फ़ा51) और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उसके बोझ में से कोई कुछ न उठाएगा अगरचे क़रीब रिश्तेदार हो (फ़ा52)

(फ़ा34) बल्कि दोनों में फ़र्क़ है (फ़ा35) यानी मछली (फ़ा36) गौहर व मिरजान (फ़ा37) दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं। (फ़ा38) तिजारतों में नफ़ा हासिल करके (फ़ा39) और अल्लाह तआ़ला की निअ़मतों की शुक्र गुज़ारी करो (फ़ा40) तो दिन बढ़ जाता है (फ़ा41) तो रात बढ़ जाती है यहां तक कि बढ़ने वाले दिन या रात की मिक़दार पन्द्रह घन्टा तक पहुंचती है और घटने वाला नौ घन्टे का रह जाता है। (फ़ा42) यानी रोज़े क़ियामत तक कि जब क़ियामत आजाएगी तो उनका चलना मौक़ूफ़ हो जाएगा और यह निज़ाम बाक़ी न रहेगा। (फ़ा43) यानी बुत। (फ़ा44) क्योंकि जमाद बेजान हैं। (फ़ा45) क्योंकि असलन क़ुदरत व इख़्तियार नहीं रखते (फ़ा46) और बेज़ारी का इज़्हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें न पूजते थे। (फ़ा47) यानी दारैन के अहवाल और बुत परस्ती के मआल की जैसी ख़बर अल्लाह तआ़ला देता है और कोई नहीं दे सकता। (फ़ा48) यानी उसके फ़ज़्ल व एहसान के हाजतमन्द हो और तमाम ख़ल्क़ उसकी मुहताज है हज़रत ज़ुन्नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क़ हर दम और हर लहज़ा अल्लाह तआ़ला की मुहताज है और क्यों न होगी उनकी हस्ती और उनकी बक़ा सब उसके करम से है। (फ़ा49) यानी तुम्हें मअ़दूम करदे क्योंकि वह बेनियाज़ और ग़नी बिज़्ज़ात है। (फ़ा50) बजाए तुम्हारे जो **(बक़िया सफ़हा 717 पर)**

إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿۱۹﴾

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿۲۰﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿۲۱﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾ اِنْ اَنْتَ

اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

इन्नमा तुन्ज़िरुल् लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्सला–त व मन् त–ज़क्का फ़–इन्नमा य–त–ज़क्का लि–नफ़्सिही व इलल्लाहिल् मसीर(18)व मा यस्तविल् अअ्मा वल्बसीर(19) व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर(20)व लज़्ज़िल्लु व लल्–हरूर(21)व मा यस्तविल् अह्याउ व लल्अम्वातु इन्नल्ला–ह युस्मिअु मंय्यशाउ व मा अन्–त बिमुस्मि–अिम् मन् फ़िल्क़ुबूर(22)इन् अन्–त इल्ला नज़ीर(23)इन्ना अर्सल्ना–क बिल्हक़्क़ि बशीरंव् व नज़ीरन् व इम्मिन् उम्मतिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर(24)व इंय्यु–कज़्ज़िबू–क फ़–क़द् कज़्ज़बल् लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्–किताबिल् मुनीर(25)सुम्–म अ–ख़ज़्तुल्लज़ी–न क–फ़रू फ़कै–फ़ का–न नकीर(26)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अख़्रज्ना बिही स–मरातिम् मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा व मिनल् जिबालि जु–ददुम् बीज़ुंव् व हुम्रुम् मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद(27)व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्–अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि–क इन्नमा यख़्शल्ला–ह

ऐ महबूब तुम्हारा डर सुनाना तो उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने रब से डरते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो सुथरा हुआ (फ़ा53) तो अपने ही भले को सुथरा हुआ (फ़ा54) और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है।(18) और बराबर नहीं अन्धा और अंखियारा।(19) (फ़ा55) और न अंधेरियां (फ़ा56) और उजाला।(20) (फ़ा57) और न साया (फ़ा58) और न तेज़ धूप।(21) (फ़ा59) और बराबर नहीं ज़िन्दे और मुर्दे (फ़ा60) बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे (फ़ा61) और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों में पड़े हैं।(22) (फ़ा62) तुम तो यही डर सुनाने वाले हो।(23) (फ़ा63) ऐ महबूब बेशक हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा ख़ुशख़बरी देता (फ़ा64) और डर सुनाता (फ़ा65) और जो कोई गरोह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका।(24) (फ़ा66) और अगर यह (फ़ा67) तुम्हें झुठलायें तो उनसे अगले भी झुठला चुके हैं (फ़ा68) उनके पास उनके रसूल आए रौशन दलीलें (फ़ा69) और सहीफ़े और चमकती किताब (फ़ा70) लेकर।(25) फिर मैंने काफ़िरों को पकड़ा (फ़ा71) तो कैसा हुआ मेरा इन्कार।(26) (फ़ा72) (रुकूअ़ 15) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा (फ़ा73) तो हमने उससे फल निकाले रंग बिरंग (फ़ा74) और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग-रंग के और कुछ काले भूचंग।(27) और आदमियों और जानवरों और चारपायों के रंग यूंही तरह तरह के हैं (फ़ा75) अल्लाह से उसके बन्दों में

(फ़ा53) यानी बदियों से बचा और नेक अ़मल किये (फ़ा54) उस नेकी का नफ़ा वही पाएगा (फ़ा55) यानी जाहिल और आलिम या काफ़िर और मोमिन (फ़ा56) यानी कुफ़्र (फ़ा57) यानी ईमान (फ़ा58) यानी हक़ या जन्नत (फ़ा59) यानी बातिल या दोज़ख़ (फ़ा60) यानी मोमिनीन और कुफ़्फ़ार या उलमा और जुह्हाल (फ़ा61) यानी जिसकी हिदायत मन्ज़ूर हो उसको तौफ़ीके क़बूल अ़ता फ़रमाता है। (फ़ा62) यानी कुफ़्फ़ार को इस आयत में मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस तरह मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़ा नहीं उठा सकते और पन्द पज़ीर नहीं होते बद-अन्जाम कुफ़्फ़ार का भी यही हाल है कि वह हिदायत व नसीहत से मुन्तफ़अ़ नहीं होते इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर इस्तिदलाल करना सही नहीं है क्योंकि आयत में क़ब्र वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वह सुनता है जिस पर राहयाबी का नफ़ा मुरत्तब हो रहा मुर्दों का सुनना वह अहादीसे कसीरा से साबित है इस मसला का बयान बीसवें पारे के दूसरे रुकूअ़ में गुज़रा। (फ़ा63) तो अगर सुनने वाला आपके अन्ज़ार पर **(बक़िया सफ़हा 717 पर)**

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ

تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ

بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌ ۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ ۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا

الْحَزَنَ ۗ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ

मिन् अिबादिहिल् अुलमाउ इन्नल्ला–ह अ़ज़ीज़ुन् ग़फ़ूर(28)इन्नल्लज़ी–न यत्लू–न किताबल्लाहि व अक़ा –मुस्सला–त व अन्फ़क़ू मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् सिर्रंव् व अ़लानि–य–तंय्यर्जू–न तिजा–रतल् लन् तबूर(29) लियुवफ़्फ़ि–यहुम् उजू–रहुम् व यज़ी–दहुम् मिन् फ़ज़्लिही इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर (30)वल्लज़ी औहैना इलै–क मिनल्किताबि हुवल्हक़्क़ु मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि इन्नल्ला –ह बिअ़िबादिही ल–ख़बीरुम् बसीर(31)सुम्–म औरस्नल् किताबल् लज़ी–नस्तफ़ैना मिन् अ़िबादिना फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल् लि–नफ़्सिही व मिन्हुम् मुक़्–तसिदुन् व मिन्हुम् साबिक़ुम् बिल्ख़ैराति बिइज़्निल्लाहि ज़ालि–क हुवल्–फ़ज़्लुल् कबीर(32)जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलू–नहा युहल्लौ–न फ़ीहा मिन् असावि–र मिन् ज़–हबिंव् व लुअ्लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा ह़रीर(33)व क़ालुल–ह़म्दु लिल्लाहिल् लज़ी अज़्–ह–ब अ़न्नल् ह़–ज़–न इन्–न रब्बना ल–ग़फ़ूरुन् शकूरु नि–(34)–ल्लज़ी अ–ह़ल्लना दारल् मुक़ा–मति मिन् फ़ज़्लिही ला यमस्सुना फ़ीहा न–सबुंव् व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब(35) वल्लज़ी–न क–फ़रू लहुम् नारु ज–हन्न–म

वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं (फ़ा76) बेशक अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला बख़्शने वाला।(28) बेशक वह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं।(29) (फ़ा77) जिस में हरगिज़ टोटा नहीं ताकि उनके सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा अ़ता करे बेशक वह बख़्शने वाला क़दर फ़रमाने वाला है।(30) और वह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ 'वह़ी' भेजी (फ़ा78) वही ह़क़ है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार देखने वाला है।(31) (फ़ा79) फिर हमने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को (फ़ा80) तो उनमें कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उनमें कोई मियाना चाल पर है और उनमें कोई वह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाईयों में सबक़त ले गया (फ़ा81) यही बड़ा फ़ज़्ल है।(32) बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वह (फ़ा82) उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जायेंगे और वहां उनकी पोशाक रेशमी है।(33) और कहेंगे सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमारा ग़म दूर किया (फ़ा83) बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़दर फ़रमाने वाला है।(34) (फ़ा84) वह जिसने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उसमें न कोई तकलीफ़ पहुंचे न हमें उसमें कोई तकान लाहिक़ हो।(35) और जिन्होंने कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की आग है

(फ़ा76) और उसके सिफ़ात को जानते और उसकी अ़ज़मत को पहचानते हैं जितना इल्म ज़्यादा उतना ख़ौफ़ ज़्यादा ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद यह है कि मख़्लूक़ में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ उसको है जो अल्लाह तआ़ला के जबरूत और उसकी इ़ज़्ज़त व शान से बा-ख़बर है बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की कि मैं अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादा जानने वाला हूं और सब से ज़्यादा उसका ख़ौफ़ रखने वाला हूं। (फ़ा77) यानी सवाब के (फ़ा78) यानी क़ुरआन मजीद (फ़ा79) और उनके ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला (फ़ा80) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत को यह किताब अ़ता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी और सय्यदे रुसल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ग़ुलामी व नियाज़मन्दी की करामत व शराफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया इस उम्मत के लोग मुख़्तलिफ़ मदारिज व मरातिब रखते हैं (फ़ा81) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने **(बक़िया सफ़्हा 718 पर)**

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝۳۶ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝۳۷ اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۳۸ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ۝۳۹ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ۝۴۰ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ

ला युक़्ज़ा अ़लैहिम् फ़–यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन् अ़ज़ाबिहा कज़ालि–क नज्ज़ी कुल्–ल कफ़ूर(36)व हुम् यस्तरिख़ू–न फ़ीहा रब्बना अख़्रिज्ना नअ्–मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्–मलु अ–व लम् नुअ़म्मिर् कुम् मा य–त–ज़क्करु फ़ीहि मन् त–ज़क्क–र व जाअकुमुन् नज़ीरु फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् नसीर (37)इन्नल्ला–ह आ़लिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(38)हुवल्लज़ी ज–अ–लकुम् ख़लाइ–फ़ फ़िल्अर्ज़ि फ़–मन् क–फ़–र फ़–अ़लैहि कुफ़्रुहू व ला यज़ीदुल् काफ़िरी–न कुफ़्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् व ला यज़ीदुल् काफ़िरी–न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा(39)क़ुल् अ–रऐतुम् शु–रका–अकुमुल्लज़ी–न तद्अू–न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़–लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यि–नतिम् मिन्हु बल् इंय्यअ़िदुज़्–ज़ालिमू–न बअ्ज़ुहुम् बअ्–ज़न् इल्ला ग़ुरूरा(40) इन्नल्ला–ह युम्सिकुस् समावाति वल्अर्–ज़ अन् तज़ूला व लइन् ज़ा–लता इन् अम्स–कहुमा मिन् अ–हदिम्

न उनकी क़ज़ा आए कि मर जायें (फ़ा85) और न उन पर उसका (फ़ा86) अ़ज़ाब कुछ हलका किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्रे को।(36) और वह उसमें चिल्लाते होंगे (फ़ा87) ऐ हमारे रब हमें निकाल (फ़ा88) कि हम अच्छा क़ाम करें उसके ख़िलाफ़ जो पहले करते थे (फ़ा89) और क्या हम ने तुम्हें वह उम्र न दी थी जिसमें समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला (फ़ा90) तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था (फ़ा91) तो अब चखो (फ़ा92) कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।(37) (रुकूअ् 16) बेशक अल्लाह जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात का बेशक वह दिलों की बात जानता है।(38) वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में अगलों का जा नशीन किया (फ़ा93) तो जो कुफ़्र करे (फ़ा94) उसका कुफ़्र उसी पर पड़े (फ़ा95) और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके रब के यहां नहीं बढ़ाएगा मगर बेज़ारी (फ़ा96) और काफ़िरों को उनका कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़्सान।(39) (फ़ा97) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वह शरीक (फ़ा98) जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आसमानों में कुछ उनका साझा है (फ़ा99) या हमने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उसकी रौशन दलीलों पर हैं (फ़ा100) बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वादा नहीं देते मगर फ़रेब का।(40) (फ़ा101) बेशक अल्लाह रोके हुए है आसमानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करें (फ़ा102) और अगर वह हट जायें तो उन्हें कौन रोके

(फ़ा85) और मर कर अ़ज़ाब से छूट सकें (फ़ा86) यानी जहन्नम का। (फ़ा87) यानी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि। (फ़ा88) यानी दोज़ख़ से निकाल और दुनिया में भेज। (फ़ा89) यानी हम बजाए कुफ़्र के ईमान लायें और बजाए मअ़सियत व नाफ़रमानी के तेरी इताअ़त और फ़रमांबरदारी करें इस पर उन्हें जवाब दिया जाएगा। (फ़ा90) यानी रसूले अकरम सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा91) तुमने उस रसूले मोहतरम की दावत क़बूल न की और उनकी इताअ़त व फ़रमांबरदारी बजा न लाए। (फ़ा92) अ़ज़ाब का मज़ा। (फ़ा93) और उनके अ़मलाक व मक़बूज़ात का मालिक व मुतसर्रफ़ बनाया और उनके मुनाफ़ेअ़ तुम्हारे लिए मुबाह किये ताकि तुम ईमान व ताअ़त इख़्तिया करके शुक्र गुज़ारी करो। (फ़ा94) और उन निअ़्मतों पर शुक्रे इलाही न बजा लाये। (फ़ा95) यानी अपने कुफ़्र का वबाल उसी को बरदाश्त करना पड़ेगा। (फ़ा96) यानी ग़ज़बे इलाही (फ़ा97) आख़िरत गें। (फ़ा98) यानी बुत। (फ़ा99) कि आसमानों के बनाने में उन्हें कुछ दख़ल हो किस सबब से उन्हें मुस्तहिक़े इबादत क़रार देते हो। (फ़ा100) उन में से कोई भी बात नहीं। (फ़ा101) कि उन में जो बहकाने वाले हैं वह अपने मुत्तबेईन को धोखा देते हैं और बुतों की तरफ़ से उन्हें बातिल उम्मीदें दिलाते हैं। (फ़ा102) वरना आसमान व ज़मीन के दर्मियान शिर्क जैसी मअ़सियत हो तो आसमान व ज़मीन कैसे क़ायम रहें।

بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝41 وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۝42

اِسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ

تَحْوِيْلًا ۝43 اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ

وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝44 وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا

جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝45

मिम् बअ्दिही इन्नहू का–न ह़लीमन् ग़फ़ूरा(41)व अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमा–निहिम् लइन् जा–अहुम् नज़ीरुल् ल–यकूनन्–न अह्दा मिन् इह्दल् उ–ममि फ़–लम्मा जा–अहुम् नज़ीरुम् मा ज़ा–दहुम् इल्ला नुफ़ू–र नि–(42)–स्तिक्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मक्रस्सय्यिइ व ला यह़ीकुल् मक्रुस्सय्यिउ इल्ला बिअह्लिही फ़–हल् यन्ज़ुरू–न इल्ला सुन्नतल् अव्वली–न फ़–लन् तजि–द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला व लन् तजि–द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला(43)अ–व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्ज़ुरू कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्–द मिन्हुम् क़ुव्वतन् व मा कानल्लाहु लियुअ्जि–ज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि इन्नहू का–न अ़लीमन् क़दीरा (44)व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्–ना–स बिमा क–सबू मा त–र–क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव् व लाकिंय्यु–अख़्ख़िरुहुम् इला अ–जलिम् मुसम्मन् फ़–इज़ा जा–अ अ–जलुहुम् फ़–इन्नल्ला–ह का–न बिअ़िबादिही बसीरा(45)

अल्लाह के सिवा बेशक वह ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है।(41) और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वह ज़रूर किसी न किसी गरोह से ज़्यादा राह पर होंगे (फ़ा103) फिर जब उनके पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया (फ़ा104) तो उसने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना।(42) (फ़ा105) अपनी जान को ज़मीन में ऊँचा खींचना और बुरा दाँव (फ़ा106) और बुरा दाँव अपने चलने वाले ही पर पड़ता है (फ़ा107) तो काहे के इन्तेज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर हुआ (फ़ा108) तो तुम हरगिज़ अल्लाह के दस्तूर को बदलता न पाओगे और हरगिज़ अल्लाह के क़ानून को टलता न पाओगे।(43) और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अन्जाम हुआ (फ़ा109) और वह उनसे ज़ोर में सख़्त थे (फ़ा110) और अल्लाह वह नहीं जिसके क़ाबू से निकल सके कोई शय आसमानों और न ज़मीन में बेशक वह इल्म व क़ुदरत वाला है।(44) और अगर अल्लाह लोगों को उनके किये पर पकड़ता (फ़ा111) तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर मीआ़द (फ़ा112) तक उन्हें ढील देता है फिर जब उनका वादा आएगा तो बेशक अल्लाह के सब बन्दे उसकी निगाह में हैं।(45) (फ़ा113) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा103) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत से पहले क़ुरैश ने यहूद व नसारा के अपने रसूलों को न मानने और उनको झुठलाने की निस्बत कहा था कि अल्लाह तआ़ला उन पर लानत करे कि उनके पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रसूल आये और उन्होंने उन्हें झुठलाया और न माना ख़ुदा की क़सम अगर हमारे पास कोई रसूल आये तो हम उनसे ज़्यादा राह पर होंगे और उस रसूल को मानने में उनके बेहतर गरोह पर सबक़त ले जायेंगे। (फ़ा104) यानी सय्यदुल मुरसलीन ख़ातमुन्नबीय्यीन हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रौनक़ अफ़रोज़ी व जलवा आराई हुई। (फ़ा105) हक़ व हिदायत से और (फ़ा106) बुरे दावों से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है और या रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मक्र व फ़रेब करना (फ़ा107) यानी मक्कार पर चुनान्चे फ़रेबकारी करने वाले बद्र में मारे गए (फ़ा108) कि उन्होंने तकज़ीब की और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुए। (फ़ा109) यानी क्या उन्होंने शाम और इराक़ और यमन के सफ़रों में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की तकज़ीब करने वालों की हलाकत व बरबादी और उनके अ़ज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उनसे इबरत हासिल करते (फ़ा110) यानी वह तबाह शुदा क़ौमें उन अहले मक्का से ज़ोर व क़ुव्वत में ज़्यादा थीं बावजूद इसके इतना भी तो न हो सका कि वह अ़ज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं। (फ़ा111) यानी उनके मआ़सी पर (फ़ा112) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा113) उन्हें उनके आमाल की जज़ा देगा जो अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हैं उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाएगा और जो लाइक़े करम हैं उन पर रहमो करम करेगा।

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ

सूरतु यासीन

(मक्की है इसमें 83 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

यासीन्(1)वल्–कुरआनिल् हकीम(2)इन्न–क लमिनल् मुर्–सलीन(3)अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(4) तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर् रहीम(5)लितुन्ज़ि–र क़ौमम् मा उन्ज़ि–र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून(6)ल–क़द् हक़्क़ल् क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअमिनून(7)इन्ना ज–अ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि–य इलल्–अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून(8)व ज–अ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़–अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून(9)व सवाउन् अ़लैहिम् अ–अन्ज़र्–तहुम् अम् लम् तुन्ज़िरहुम् ला युअमिनून(10)इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त–ब–अ़ज़् ज़िक्–र व ख़शि–यर्रह्मा–न बिल्ग़ैबि फ़–बश्–शिरहु बि–मग़्फ़ि–रतिंव् व अज्रिन् करीम(11)इन्ना नह्नु नुह्यिल् मौता व नक्तुबु मा क़द्–दमू व आसा–रहुम् व कुल्–ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम् मुबीन(12)वज़्रिब् लहुम् म–स़–लन् अस्हाबल् क़र्यति इज़् जा–अ हल् मुर्सलून(13)इज़् अर्सल्ना इलैहि–मुस्नैनि

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

यासीन(1) हिकमत वाले कुरआन की क़सम।(2) बेशक तुम(3) (फ़ा2) सीधी राह पर भेजे गए हो।(4) (फ़ा3) इज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा हुआ।(5) ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ जिसके बाप दादा न डराए गए। (फ़ा4) तो वह बेख़बर हैं।(6) बेशक उनमें अक्सर पर बात साबित हो चुकी है (फ़ा5) तो वह ईमान न लायेंगे।(7) (फ़ा6) हम ने उनकी गर्दनों में तौक़ कर दिये हैं कि वह ठोड़ियों तक हैं तो यह अब ऊपर को मुँह उठाए रह गए।(8) (फ़ा7) और हमने उनके आगे दीवार बना दी और उनके पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता।(9) (फ़ा8) और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वह ईमान लाने के नहीं।(10) तुम तो उसी को डर सुनाते हो (फ़ा9) जो नसीहत पर चले और रहमान से बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इज़्ज़त के सवाब की बशारत दो।(11) (फ़ा10) बेशक हम मुर्दों को जिलायेंगे और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा (फ़ा11) और जो निशानियाँ पीछे छोड़ गए (फ़ा12) और हर चीज़ हमने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में।(12) (फ़ा13) (रुकूअ़ 18) और उनसे मिसाल बयान करो उस शहर वालों की (फ़ा14) जब उनके पास फ़िरिस्तादे आए।(13) (फ़ा15) जब हमने उनकी तरफ़ दो भेजे (फ़ा16)

(फ़ा1) सूरह यासीन मक्की है इसमें पांच रुकूअ़ तिरासी आयतें 729 कलिमे 3000 हरफ़ हैं। तिर्मिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिए क़ल्ब है और कुरआन का क़ल्ब यासीन है और जिसने यासीन पढ़ी अल्लाह तआ़ला उसके लिए दस बार कुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है यह हदीस ग़रीब है और इसकी असनाद में एक रावी मजहूल है अबू दाऊद की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने अमवात पर यासीन पढ़ो इसी लिए क़रीबे मौत हालते नज़अ़ में मरने वालो के पास यासीन पढ़ी जाती है। (फ़ा2) ऐ सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।(फ़ा3)जो मन्ज़िले मक़सूद को पहुंचाने वाली है यह राहे तौहीद व हिदायत की राह है तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम इसी राह पर रहे हैं इस आयत में कुफ़्फ़ार का रद् है जो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहते थे लस्–त मुर्सलन् **(बक़िया सफ़हा 718 पर)**

فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۗ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

फ़–कज़्ज़बूहुमा फ़–अ़ज़्ज़ज़्ना बि–स़लासिन् फ़–क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून(14)क़ालू मा अन्तुम् इल्ला ब–शरुम् मिस्लुना व मा अन्ज़लर्–रह्मानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून(15)क़ालू रब्बुना यअ्–लमु इन्ना इलैकुम् लमुर्–सलून(16)व मा अ़लैना इल्लल् बलागुल्–मुबीन(17)क़ालू इन्ना त–तय्यर्ना बिकुम् ल–इल्लम् तन्तहू ल–नर्जुमन्नकुम् व ल–य–मस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (18)क़ालू त़ाइरुकुम् म–अ़कुम् अइन् ज़ुक्किर्तुम् बल् अन्तुम् क़ौमुम् मुस्रिफ़ून(19)व जा–अ मिन् अक़्सल् मदी–नति रजुलुंय्यस्आ क़ा–ल या क़ौमित्तबिअुल् मुर्सलीन–(20)–त्तबिअू मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव् व हुम् मुह्तदून(21)

फिर उन्होंने उनको झुठलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया (फ़ा17) अब उन सब ने कहा (फ़ा18) कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।(14) बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूठे हो।(15) वह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।(16) और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।(17) (फ़ा19) बोले हम तुम्हें मनहूस समझते हैं (फ़ा20) बेशक अगर तुम बाज़ न आए (फ़ा21) तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी।(18) उन्होंने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है (फ़ा22) क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए (फ़ा23) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो।(19) (फ़ा24) और शहर के परले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया (फ़ा25) बोला ऐ मेरी क़ौम भेजे हुओं की पैरवी करो।(20) ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वह राह पर हैं।(21) (फ़ा26)

(फ़ा17) यानी शमऊन से तक़वियत और ताईद पहुंचाई (फ़ा18) यानी तीनों फ़रिस्तादों ने (फ़ा19) अदला वाज़िहा के साथ और वह अन्धों और बीमारों को अच्छा करता और मुर्दों को ज़िन्दा करता है (फ़ा20) जब से तुम आये हो बारिश ही नहीं हुई (फ़ा21) अपने दीन की तबलीग़ से (फ़ा22) यानी तुम्हारा कुफ़्र (फ़ा23) और तुम्हें इस्लाम की दावत दी गई (फ़ा24) ज़लाल व तुग़यान में और यही बड़ी नहूसत है (फ़ा25) यानी हबीब नज्जार जो पहाड़ के ग़ार में मसरूफ़े इबादते इलाही था जब उसने सुना कि क़ौम ने उन फ़रिस्तादों की तकज़ीब की। (फ़ा26) हबीब नज्जार की यह गुफ़्तुगू सुन कर क़ौम ने कहा कि क्या तू उनके दीन पर है और तू उनके माबूद पर ईमान ले आया उसके जवाब में हबीब नज्जार ने कहा।

(बक़िया सफ़्हा 687 का) अच्छी तरह न ढकें और पिछली जाहिलियत से अख़ीर ज़माना मुराद है जिसमें लोगों के अफ़आल पहलों की मिस्ल हो जायेंगे (फ़ा85) यानी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है और अहले बैत में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अज़वाजे मुतहहरात और हज़रत ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा और अली मुर्तज़ा और हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सब दाख़िल हैं आयात व अहादीस को जमा करने से यही नतीजा निकलता है और यही हज़रत इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है इन आयात में अहले बैत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वह गुनाहों से बचें और तक़वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से इस्तेआ़रा फ़रमाया गया क्योंकि गुनाहों का मुरतकिब उनसे ऐसा ही मुलव्विस होता है जैसा जिस्म नजासतों से इस तर्ज़े कलाम से मक़सूद यह है कि अरबाबे उक़ूल को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़वा व परहेज़गारी की तरग़ीब दी जाए (फ़ा86) यानी सुन्नत (फ़ा87) **शाने नुज़ूलः** अस्मा बिन्ते अ़मीस जब अपने शौहर जअ़फ़र बिन अबी तालिब के साथ हब्शा से वापस आईं तो अज़वाजे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिल कर उन्होंने दरियाफ़्त किया कि क्या औरतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है उन्होंने फ़रमाया नहीं तो अस्मा ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर औरतें बड़े टोटे में हैं फ़रमाया क्यों अ़र्ज़ किया कि उनका ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उनके दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और उनके साथ उनकी मदद फ़रमाई गई और मरातिब में से पहला मर्तबा इस्लाम है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी है दूसरा ईमान कि वह एतेक़ाद सही और ज़ाहिर व बातिन का मुवाफ़िक़ होना है तीसरा मर्तबा

कुनूत यानी ताअ़त है (फ़ा88) इसमें चौथे मर्तबा का बयान है कि वह सिद्क़े नीयात व सिद्क़े अक़वाल व अफ़आ़ल है उसके बाद पांचवें मर्तबा सब्र का बयान है कि ताअ़तों की पाबन्दी करना और ममनूआ़त से एहतेराज़ रखना ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिराँ हो रज़ाए इलाही के लिए इख़्तियार किया जाये उसके बाद छठे मर्तबा ख़ुशूअ़ का बयान है जो ताअ़तों और इबादतों में क़ुलूब व जवारेह के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है इसके बाद सातवें मर्तबा सदक़ा का बयान है जो अल्लाह तआ़ला के अ़ता किये हुए माल में से उसकी राह में बतरीक़े फ़र्ज़ व नफ़्ल देना है फिर आठवें मर्तबा सौम का बयान है यह भी फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है मन्क़ूल है कि जिसने हर हफ़्ता एक दिरम सदक़ा किया वह मुतसद्दिक़ीन में और जिसने हर महीना अय्यामे बीज़ के तीन रोज़े रखे वह साइमीन में शुमार किया जाता है उसके बाद नवें मर्तबा इफ़्फ़त का बयान है और वह यह है कि अपनी पारसाई को महफ़ूज़ रखे और जो हलाल नहीं है उससे बचे सब से आख़िर में दसवें मर्तबा कसरते ज़िक्र का बयान है ज़िक्र में तस्बीह तहमीद तहलील तकबीर क़िराअत क़ुरआन इल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना नमाज़ वअ़ज़ नसीहत मीलाद शरीफ़ नअ़त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं कहा गया है कि बन्दा ज़ाकिरीन में जब शुमार होता है जबकि वह खड़े बैठे लेटे हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करे।

(बक़िया सफ़हा 688 का) अपने नफ़्स का भी खुद-मुख़्तार नहीं मसला इस आयत से यह भी साबित हुआ कि अमर वजूब के लिए होता है फ़ाइदा बाज़ तफ़ासीर में हज़रत ज़ैद को ग़ुलाम कहा गया है मगर यह ख़ाली अज़ तसामोह नहीं क्योंकि वह हुर थे गिरिफ़्तारी से बिलख़ुसूस क़ब्ल बअ़सत शरअ़न कोई शख़्स मरक़ूक़ यानी ममलूक नहीं हो जाता और वह ज़माना फ़तरत का था और अहले फ़तरत को हरबी नहीं कहा जाता। (कज़ाफ़िल जुमल) (फ़ा90) इस्लाम की जो बड़ी जलील निअ़मत है (फ़ा91) आज़ाद फ़रमाकर मुराद इससे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा हैं कि हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद किया और उनकी परवरिश फ़रमाई (फ़ा92) **शाने नुज़ूलः** जब हज़रत ज़ैद का निकाह हज़रत ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वही आई कि ज़ैनब आपके अज़्वाजे ताहिरात में दाख़िल होंगी अल्लाह तआ़ला को यही मन्ज़ूर है इसकी सूरत यह हुई कि हज़रत ज़ैद और ज़ैनब के दर्मियान मुवाफ़क़त न हुई और हज़रत ज़ैद ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हज़रत ज़ैनब की सख़्त गुफ़्तारी तेज़ ज़बानी अ़दमे इताअ़त और अपने आपको बड़ा समझने की शिकायत की ऐसा बार बार इत्तेफ़ाक़ हुआ हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत ज़ैद को समझा देते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा93) ज़ैनब पर किब्र व ईज़ाए शौहर के इलज़ाम लगाने में (फ़ा94) यानी आप यह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निबाह नहीं हो सकेगा और तलाक़ ज़रूर वाक़ेअ़ होगी और अल्लाह तआ़ला उन्हें अज़्वाजे मुतह्हरात में दाख़िल करेगा और अल्लाह तआ़ला को उसका ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था (फ़ा95) यानी जब हज़रत ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक़ दे दी तो आपको लोगों के तअ़न का अन्देशा हुआ कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म तो है हज़रत ज़ैनब के साथ निकाह करने का और ऐसा करने से लोग तअ़ना देंगे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऐसी औरत के साथ निकाह कर लिया जो उनके मुंह बोले बेटे के निकाह में रही थी मक़सूद यह है कि अमरे मुबाह में बेजा तअ़न करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिए। (फ़ा96) और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सब से ज़्यादा अल्लाह का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़्यादा तक़वा वाले हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है। (फ़ा97) और हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दी और इद्दत गुज़र गई। (फ़ा98) हज़रत ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बाद उनके पास हज़रत ज़ैद रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पयाम लेकर गए और उन्होंने सर झुका कर कमाले शर्म व अदब से उन्हें यह पयाम पहुंचाया उन्होंने कहा कि इस मुआ़मला में मैं अपनी राय को कुछ दख़ल नहीं देती जो मेरे रब को मन्ज़ूर हो उस पर राज़ी हूं यह कह कर वह बारगाहे इलाही में मुतवज्जह हुईं और उन्होंने नमाज़ शुरू कर दी और यह आयत नाज़िल हुई। हज़रत ज़ैनब को इस निकाह से बहुत ख़ुशी और फ़ख़्र हुआ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस शादी का वलीमा बहुत वुसअ़त के साथ किया (फ़ा99) यानी ताकि यह मालूम हो जाये कि ले पालक की बीबी से निकाह जायज़ है। (फ़ा100) यानी अल्लाह तआ़ला ने जो उनके लिए मुबाह किया और बाबे निकाह में जो वुसअ़त उन्हें अ़ता फ़रमाई इस पर इक़दाम करने में कुछ हर्ज नहीं। (फ़ा101) यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को बाबे निकाह में वुसअ़तें दी गईं कि दूसरों से ज़्यादा औरतें उनके लिए हलाल फ़रमाईं जैसा कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की सौ बीबियां और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की तीन सौ बीबियां थीं यह उनके ख़ास अहकाम हैं उनके सिवा दूसरों को रवा नहीं न कोई इस पर मोअ़तरिज़ हो सकता है अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में जिसके लिए जो हुक्म फ़रमाए उस पर किसी को एतेराज़ की क्या मजाल इसमें यहूद का रद है जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर चार से ज़्यादा निकाह करने पर तअ़न किया था, इसमें उन्हें बताया गया कि यह हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए ख़ास है जैसा कि पहले अम्बिया के लिए तादादे अज़्वाज में ख़ास अहकाम थे (फ़ा102) तो उसी से डरना चाहिए (फ़ा103) तो हज़रत ज़ैद के भी आप हक़ीक़त में बाप नहीं कि उनकी मनकूहा आपके लिए हलाल न होती क़ासिम व तय्यब व ताहिर व इब्राहीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रज़न्द थे मगर वह इस उम्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाये उन्होंने बचपन में वफ़ात पाई

(बक़िया सफ़हा 689 का) रोज़ो शब के जमा होने के वक़्त हैं और यह भी कहा गया है कि अतराफ़े लैलो निहार का ज़िक्र करने से ज़िक्र की मुदावमत की तरफ़ इशारा फ़रमाया गया है (फ़ा107) **शाने नुज़ूलः** हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जब आयत *इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू यु-सल्लू-न अ़लन्-नबिय्यि* नाज़िल हुई तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह तआ़ला अ़लैक वसल्लम जब आपको अल्लाह तआ़ला कोई फ़ज़्ल व शरफ़ अ़ता फ़रमाता है तो हम नियाज़मन्दों को भी आपके तुफ़ैल में नवाज़ता है इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। (फ़ा108) यानी कुफ़्र व

मअ़सियत और नाखुदा शनासी की अंधेरियों से हक़ व हिदायत और मअ़रेफ़त व खुदा शनासी की रौशनी की तरफ़ हिदायत फ़रमाए। (फ़ा109) मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का मरवी है कि हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलाम किसी मोमिन की रूह उसको सलाम किये बग़ैर क़ब्ज़ नहीं फ़रमाते हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जब मलकुलमौत मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम फ़रमाता है और यह भी वारिद हुआ है कि मोमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाइका सलामती की बशारत के तौर पर उन्हें सलाम करेंगे। (जुमल व ख़ाज़िन) (फ़ा110) शाहिद का तर्जुमा हाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तर्जुमा है मुफ़र्रदात राग़िब में है अश्शुहूदु वश्शहा-दतुल्-हुज़ूरु म-अ़ल्-मुशा-ह-दति इम्मा बिल्-ब-स-रि औ बिल्बसी-रति यानी शहूद और शहादत के माना हैं हाज़िर होना मअ़ नाज़िर होने के बसर के साथ हो या बसीरत के साथ और गवाह को भी इसी लिए शाहिद कहते हैं कि वह मुशाहिदा के साथ जो इल्म रखता है उसको बयान करता है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम आ़लम की तरफ़ मबऊस हैं आपकी रिसालत आम्मा है जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुआ तो हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ियामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और उनके आमाल व अफ़आ़ल व अहवाल तस्दीक़ तकज़ीब हिदायत ज़लाल सब का मुशाहिदा फ़रमाते हैं (अबुस्सऊद व जुमल) (फ़ा111) यानी ईमानदारों को जन्नत की खुशख़बरी और काफ़िरों को अ़ज़ाबे जहन्नम का डर सुनाता (फ़ा112) यानी ख़ल्क़ को ताक़ते इलाही की दावत देता (फ़ा113) सिराज का तर्जुमा आफ़ताबे कुरआने करीम के बिल्कुल मुताबिक़ है कि इसमें आफ़ताब को सिराज फ़रमाया गया है जैसा कि सूरह नूह में व-ज-अ़-लश्शम्-स सिराजा और आख़िर पारा की पहली सूरत में है व ज-अ़ल्ना सिराजंव्-वह्हाजा और दर हक़ीक़त हज़ारों आफ़ताबों से ज़्यादा रौशनी आपके नूरे नबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्र व शिर्क के .जुलमाते शदीदा को अपने नूरे हक़ीक़त अफ़रोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क़ के लिए मअ़रेफ़त व तौहीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रौशन और वाज़ेह करदीं और ज़लालत के वादीए तारीक में राह गुम करने वालों को अपने अनवारे हिदायत से राहयाब फ़रमाया और अपने नूरे नबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और कुलूब व अरवाह को मुनव्वर किया हक़ीक़त में आपका वजूदे मुबारक ऐसा आफ़ताब आ़लमताब है जिसने हज़ारहा आफ़ताब बना दिये इसी लिए उसकी सिफ़त में मुनीर इरशाद फ़रमाया गया (फ़ा114) जब तक कि इस बारे में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई हुक्म दिया जाए (फ़ा115) मसला इस आयत से मालूम हुआ कि अगर औरत को क़ब्ल कुरबत तलाक़ दी तो उस पर इद्दत वाजिब नहीं **मसलाः** ख़लवते सहीहा कुरबत के हुक्म में है तो अगर ख़लवते सहीहा के बाद तलाक़ वाक़ेअ़ हो तो इद्दत वाजिब होगी अगरचे मुबाशरत न हुई हो मसला यह हुक्म मोमिना और किताबिया दोनों को आम है लेकिन आयत में मोमिनात का ज़िक्र फ़रमाना इस तरफ़ मुशीर है कि निकाह करना मोमिना से ऊला है (फ़ा116) **मसलाः** यानी अगर उनका महर मुक़र्रर हो चुका था तो क़ब्ल ख़लवत तलाक़ देने से शौहर पर निस्फ़ महर वाजिब होगा और अगर महर मुक़र्रर न हुआ था तो एक जोड़ा देना वाजिब है जिसमें तीन कपड़े होते हैं। (फ़ा117) अच्छी तरह छोड़ना यह है कि उनके हुक़ूक़ अदा कर दिये जायें और उनको कोई ज़रर न दिया जाये और उन्हें रोका न जाये क्योंकि उनपर इद्दत नहीं है। (फ़ा118) महर की तअ़जील और अ़क़्द में तअ़य्युन अफ़ज़ल है शर्त हिल्लत नहीं क्यों कि महर को मुअ़ज्जल तरीक़ा पर देना या उसको मुक़र्रर करना उला और बेहतर है वाजिब नहीं (तफ़सीर अहमदी)

(बक़िया सफ़हा 690 का) अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इस में आइन्दा के हुक्म का बयान है क्योंकि वक़्ते नुज़ूले आयत हुज़ूर के अज़वाज में से कोई भी ऐसी न थीं जो हिबा के ज़रीआ़ से मुशर्रफ़ बज़ौजियत हुई हों और जिन मोमिना बीबियों ने अपनी जानें हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नज़र कर दीं वह मैमूना बिन्ते हारिस और ख़ौला बिन्ते हकीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा122) यानी निकाह बे महर ख़ास आपके लिए जाइज़ है उम्मत के लिए नहीं उम्मत पर बहरहाल महर वाजिब है ख़्वाह वह महर मुअ़य्यन न करें या क़स्दन महर की नफ़ी करें मसला निकाह बलफ़्ज़े हिबा जाइज़ है (फ़ा123) यानी बीबियों के हक़ में जो कुछ मुक़र्रर फ़रमाया है महर और गवाह और बारी का वाजिब होना और चार हुर्रा औरतों तक को निकाह में लाना मसला इससे मालूम हुआ कि शरअ़न महर की मिक़दार अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मुक़र्रर है और वह दस दिरहम हैं जिससे कम करना ममनूअ़ है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है (फ़ा124) जो ऊपर ज़िक्र हुई कि औरतें आप के लिए महज़ हिबा से बग़ैर महर के हलाल की गईं (फ़ा125) यानी आपको इख़्तियार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुक़र्रर करें या न करें लेकिन बावजूद इस इख़्तियार के सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम अज़वाजे मुतह्हरात के साथ अ़द्ल फ़रमाते और उनकी बारियां बराबर रखते बजुज़ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के जिन्होंने अपनी बारी का दिन हज़रत उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दे दिया था और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया था कि मेरे लिए यही काफ़ी है कि मेरा हश्र आपके अज़वाज में हो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि यह आयत उन औरतों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने अपनी जानें हुज़ूर को नज़र कीं और हुज़ूर को इख़्तियार दिया गया कि उनमें से जिसको चाहें क़बूल करें उसके साथ तज़व्वुज फ़रमाएं और जिसको चाहें इन्कार फ़रमा दें (फ़ा126) यानी अज़वाज में से आपने जिसको मअ़ज़ूल या साक़ितुल क़िस्मत कर दिया हो आप जब चाहें उसकी तरफ़ इल्तेफ़ात फ़रमायें और उसको नवाज़ें इसका आपको इख़्तियार दिया गया है (फ़ा127) क्योंकि जब वह यह जानेंगी कि यह तफ़वीज़ और यह इख़्तियार आपको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता हुआ है तो उनके कुलूब मुतमइन हो जायेंगे। (फ़ा128) यानी उन नौ बीबियों के बाद जो आपके निकाह में हैं जिन्हें आपने इख़्तियार दिया तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला व रसूल को इख़्तियार किया (फ़ा129) क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए अज़वाज का निसाब नौ है जैसे कि उम्मत के लिए चार

(फ़ा130) यानी उन्हें तलाक़ देकर उनकी जगह दूसरी औरतों से निकाह कर लो ऐसा भी न करो यह एहतेराम उन अज़्वाज का इस लिए है कि जब हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें इख़्तियार दिया था तो उन्होंने अल्लाह व रसूल को इख़्तियार किया और असाइशे दुनिया को ठुकरादिया चुनांचे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हीं पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और अख़ीर तक यही बीबियां हुज़ूर की ख़िदमत में रहीं। हज़रत आइशा व उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि आख़िर में हुज़ूर के लिए हलाल कर दिया गया था कि जितनी औरतों से चाहें निकाह फ़रमायें इस तक़दीर पर आयत मन्सूख़ है और उसका नासिख़ आयत *इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-ज-क अलआयत* है (फ़ा131) कि वह तुम्हारे लिए हलाल है और उसके बाद हज़रत मारिया क़बतिया हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मिल्क में आईं और उनसे हुज़ूर के फ़रज़न्द हज़रत इब्राहीम पैदा हुए जिन्होंने छोटी उम्र में वफ़ात पाई (फ़ा132) **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि घर मर्द का होता है और इसी लिए उससे इजाज़त हासिल करना मुनासिब है शौहर के घर को औरत का घर भी कहा जाता है इस लिहाज़ से कि वह उसमें सुकूनत का हक़ रखती है इसी वजह से आयत *वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न* में घरों की निस्बत औरतों की तरफ़ की गई है नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मकानात जिनमें हुज़ूर के अज़्वाज मुतह्हरात की सुकूनत थी और हुज़ूर के पर्दा फ़रमाने के बाद भी वह अपनी हयात तक उनही में रहीं वह हुज़ूर के मिल्क थे और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अज़्वाजे ताहिरात को हिबा न फ़रमाये थे बल्कि सुकूनत की इजाज़त दी थी इसी लिए अज़्वाजे मुतह्हरात की वफ़ात के बाद उनके वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक़्फ़ है और जिसका नफ़ा तमाम मुसलमानों के लिए आम है। (फ़ा133) इससे मालूम हुआ कि औरतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बे इजाज़त दाख़िल होना जाइज़ नहीं आयत अगरचे ख़ास अज़्वाजे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ में वारिद है लेकिन हुक्म इसका तमाम मुसलमान औरतों के लिए आम है **शाने नुज़ूलः** जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब से निकाह किया और वलीमा की आ़म दावत फ़रमाई तो जमाअ़तें की जमाअ़तें आती थीं और खाने से फ़ारिग़ होकर चली जाती थीं आख़िर में तीन साहब ऐसे थे जो खाने से फ़ारिग़ होकर बैठे रह गए और उन्होंने गुफ़्तगू का तवील सिलसिला शुरू कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे मकान तंग था इससे घर वालों को तकलीफ़ हुई और हर्ज हुआ कि वह उनकी वजह से अपना काम काज कुछ न कर सके रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उठे और अज़्वाजे मुतह्हरात के हुजरों में तशरीफ़ ले गए और दौरा फ़रमा कर तशरीफ़ लाये उस वक़्त तक यह लोग अपनी बातों में लगे हुए थे हुज़ूर फिर वापस हो गए यह देख कर वह लोग रवाना हुए तब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दौलत सराए में दाख़िल हुए और दरवाज़ा पर पर्दा डाल दिया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई इससे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कमाले हया और शाने करम व हुस्ने अख़्लाक़ मालूम होती है कि बावजूद ज़रूरत के असहाब से यह न फ़रमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया वह हुस्ने आदाब का आला तरीन मुअ़ल्लिम है। (फ़ा134) **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि बग़ैर दावत किसी के यहां खाने न जाए

(बक़िया सफ़्हा 691 का) करने में कोई हर्ज नहीं (फ़ा144) यानी मुसलमान बीबियों के सामने आना जाइज़ है और काफ़िरा औरतों से पर्दा करना और अपने जिस्म छुपाना लाज़िम है सिवाए जिस्म के उन हिस्सों के जो घर के काम काज के लिए खोलने ज़रूरी होते हैं (जुमल) (फ़ा145) यहां चचा और मामूं का सराहतन ज़िक्र नहीं किया गया क्योंकि वह वालदैन के हुक्म में हैं। (फ़ा146) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम भेजना वाजिब है हर एक मजलिस में आप का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मर्तबा और इससे ज़्यादा मुस्तहब है यही क़ौल मोअ़तमिद है और इस पर जम्हूर हैं और नमाज़ के क़अ़्दए अख़ीरा में बाद तशह्हुद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है और आप के ताबेअ़् करके आपके आल व असहाब व दूसरे मोमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है और मुस्तक़िल तौर पर हुज़ूर के सिवा उनमें से किसी पर दुरूद भेजना मकरूह है मसला दुरूद शरीफ़ में आल व असहाब का ज़िक्र मुतवारिस है और यह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बग़ैर मक़बूल नहीं दुरूद शरीफ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकरीम है उलमा ने अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मद के माना यह बयान किये हैं कि या रब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अ़ज़्मत अ़ता फ़रमा दुनिया में उनका दीन बुलन्द और उनकी दावत ग़ालिब फ़रमा कर और उनकी शरीअ़त को बक़ा इनायत करके और आख़िरत में उनकी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कर और उनका सवाब ज़्यादा करके और अव्वलीन व आख़िरीन पर उनकी फ़ज़ीलत का इज़्हार फ़रमा कर और अम्बिया मुरसलीन व मलाइका और तमाम ख़ल्क़ पर उनकी शान बुलन्द करके मसला दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़रिश्ते उसके लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करते हैं मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआ़ला उस पर दस बार भेजता है। तिर्मिज़ी की हदीस में है बख़ील वह है जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह दुरूद न भेजे

(बक़िया सफ़्हा 692 का) मुमताज़ करदें। (फ़ा153) अपने निफ़ाक़ से (फ़ा154) और जो बुरे ख़्याल रखते हैं यानी फ़ाजिर बदकार हैं वह अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए (फ़ा155) जो इस्लामी लश्करों के मुतअ़ल्लिक़ झूठी ख़बरें उड़ाया करते थे और यह मशहूर किया करते थे कि मुसलमानों को हज़ीमत हो गई वह क़त्ल कर डाले गए दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है और उससे उनका मक़सद मुसलमानों की दिल-शिकनी और उनका परेशानी में डालना होता था उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया जाता है कि अगर वह इन हरकात से बाज़ न आये। (फ़ा156) और तुम्हें उन पर मुसल्लत करेंगे (फ़ा157) फिर मदीना तय्येबा उन से

ख़ाली करा लिया जाएगा और वहां से निकाल दिये जायेंगे। (फ़ा158) यानी पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ीन जो ऐसे हरकात करते थे उनके लिए भी सुन्नते इलाहिया यही रही कि जहां पाये जायें मार डाले जायें। (फ़ा159) कि कब क़ायम होगी शाने नुज़ूलः मुशरिकीन तो तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा के तौर पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़ियामत का वक़्त दरियाफ़्त किया करते थे गोया कि उनको बहुत जल्दी है और यहूद इसको इम्तेहानन पूछते थे क्योंकि तौरेत में इसका इल्म मख़्फ़ी रखा गया था तो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म फ़रमाया। (फ़ा160) इसमें जल्दी करने वालों को तहदीद और इम्तेहानन सवाल करने वालों का इसकात और उनकी दहन दोज़ी है। (फ़ा161) जो उन्हें अ़ज़ाब से बचा सके।

(बक़िया सफ़हा 693 का) पर पेश किया था कि अगर वह उन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जायेंगे न अदा करेंगे तो अ़ज़ाब किये जायेंगे हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना ज़कात देना रमज़ान के रोज़े रखना ख़ाना कअ़बा का हज सच बोलना नाप और तौल में और लोगों की वदीअ़तों में अ़द्ल करना है बाज़ों ने कहा कि अमानत से मुराद वह तमाम चीज़ें हैं जिनका हुक्म दिया गया और जिनकी मुमानअ़त की गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने फ़रमाया कि तमाम आज़ा कान हाथ पाँव वग़ैरह सब अमानत हैं उसका ईमान ही क्या जो अमानतदार न हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों की वदीअ़तें और अ़हदों का पूरा करना है तो हर मोमिन पर फ़र्ज़ है कि न किसी मोमिन की ख़ियानत करे न काफ़िर मुआ़हिद की न क़लील में न कसीर में अल्लाह तआ़ला ने यह अमानत अअ़्याने समावात व अर्ज़ व जिबाल पर पेश फ़रमाई फिर उनसे फ़रमाया क्या तुम इन अमानतों को मअ़ उसकी ज़िम्मेदारी के उठाओगे उन्होंने अर्ज़ किया ज़िम्मेदारी क्या है फ़रमाया यह कि अगर तुम उन्हें अच्छी तरह अदा करो तो तुम्हें जज़ा दी जाएगी और अगर नाफ़रमानी करो तो तुम्हें अ़ज़ाब किया जाएगा उन्होंने अर्ज़ किया नहीं ऐ रब हम तेरे हुक्म के मुतीअ़. हैं न सवाब चाहें न अ़ज़ाब और उनका यह अ़र्ज़ करना बराहे ख़ौफ़ व ख़शियत था और अमानत बतौरे तख़य्युर पेश की गई थी यानी उन्हें इख़्तियार दिया गया था कि अपने में क़ुव्वत व हिम्मत पायें तो उठायें वरना मअ़्ज़ेरत कर दें उसका उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वह इन्कार न करते (फ़ा172) कि अगर अदा न कर सके तो अ़ज़ाब किये जायेंगे तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने वह अमानत आदम अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैंने आसमानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वह न उठा सके क्या तू मअ़ उसकी ज़िम्मेदारी के उठा सकेगा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इक़रार किया (फ़ा173) कहा गया है कि माना यह हैं कि हमने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ और मुशरिकीन का शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उनके ईमान का इज़्हार हो और अल्लाह तबारक व तआ़ला उनकी तौबा कबूल फ़रमाये और उन पर रहमत व मग़फ़िरत करे अगरचे उनसे बाज़ ताआ़त में कुछ तक़सीर भी हुई हो (ख़ाज़िन)

(बक़िया सफ़हा 694 का) इन्कार किया। (फ़ा9) यानी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उससे कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो क़ियामत का आना और उसके क़ाइम होने का वक़्त भी उसके इल्म में है। (फ़ा10) यानी लौहे महफ़ूज़ में। (फ़ा11) जन्नत में। (फ़ा12) और उनमें तअ़्न करके और उनको शेअ़्र व सेहर वग़ैरह बता कर लोगों को उनसे रोकना चाहा (इसका मज़ीद बयान इसी सूरत के आख़िर रुकूअ़ पांच में आएगा)। (फ़ा13) यानी असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम या मोमिनीने अहले किताब मिस्ल अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों के। (फ़ा14) यानी क़ुरआन मजीद

(बक़िया सफ़हा 695 का) करती है कि अल्लाह तआ़ला बअ़्स पर और उसके मुन्किर के अ़ज़ाब पर और हर शय पर क़ादिर है। (फ़ा23) यानी नबुव्वत और किताब और कहा गया है मिल्क और एक क़ौल यह है कि हुस्ने सौत वग़ैरह तमाम चीज़ें जो आपको ख़ुसूसियत के साथ अ़ता फ़रमाई गईं और अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों और परिन्दों को हुक्म दिया। (फ़ा24) जब वह तस्बीह करें उनके साथ तस्बीह करो चुनान्चे जब हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम तस्बीह करते तो पहाड़ों से भी तस्बीह सुनी जाती और परिन्द झुक आते यह आपका मोअ़्जेज़ा था। (फ़ा25) कि आप के दस्ते मुबारक में आकर मिस्ल मोम या गूंधे हुए आटे के नर्म हो जाता और आप उससे जो चाहते बग़ैर आग के और बग़ैर ठोंके पीटे बना लेते उसका सबब यह बयान किया गया है कि जब आप बनी इसराईल के बादशाह हुए तो आपका तरीक़ा यह था कि आप लोगों के हालात की जुस्तजू के लिए इस तरह निकलते कि लोग आपको न पहचानें और जब कोई मिलता और आपको न पहचानता तो उससे आप दरियाफ़्त करते कि दाऊद कैसा शख़्स है सब लोग तारीफ़ करते अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ता बसूरते इन्सान भेजा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने उससे भी हस्बे आ़दत यही सवाल किया तो फ़रिश्ता ने कहा कि दाऊद हैं तो बहुत ही अच्छे आदमी काश उनमें एक ख़सलत न होती इस पर आप मुतवज्जह हुए और फ़रमाया कि बन्दए ख़ुदा कौनसी ख़सलत उसने कहा कि वह अपना और अपने अहल व अ़याल का ख़र्च बैतुल माल से लेते हैं यह सुनकर आपके ख़्याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़्यादा बेहतर होता इस लिए आपने बारगाहे इलाही में दुआ़ की कि उनके लिए कोई ऐसा सबब करदे जिससे आप अपने अहल व अ़याल का गुज़ारा करें और बैतुल माल (ख़ज़ानए शाही) से आपको बेनियाज़ी हो जाए, आपकी यह दुआ़ मुस्तजाब हुई और अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए लोहे को नरम किया और आपको सनअ़त ज़िरह साज़ी का इल्म दिया सब से पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं आप रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे वह चार हज़ार की बिकती थी उसमें से अपने और अपने अहल व अ़याल पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़ुक़रा व मसाकीन पर भी सदक़ा करते इसका बयान आयत में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिए लोहा नर्म करके उनसे फ़रमाया। (फ़ा26) कि उसके हलक़े यकसाँ और मुतवस्सित हों न बहुत

तंग न फ़राख़। (फ़ा27) चुनांचे आप सुबह को दमिश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को कैलूला उस्तुख़र में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दमिश्क़ से एक महीना की राह पर है और शाम को उस्तुख़र से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते यह भी तेज़ सवार के लिए एक महीना का रास्ता है (फ़ा28) जो तीन रोज़ सरज़मीने यमन में पानी की तरह जारी रहा और एक क़ौल यह है कि हर महीना में तीन रोज़ जारी रहता था और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिए लोहे को नरम किया था (फ़ा29) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिए जिन्नात को मुतीअ़ किया (फ़ा30) और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की फ़रमांबरदारी न करे। (फ़ा31) और आ़लीशान इमारतें और मस्जिदें और उन्हीं में से बैतुल मुक़द्दस भी है। (फ़ा32) दरिन्दों और परिन्दों वग़ैरह की तांबे और बिल्लोर और पत्थर वग़ैरह से और उस शरीअ़त में तस्वीर बनाना हराम न था।

(बक़िया सफ़हा 696 का) लिए कुछ हैरत का बाइस नहीं हुआ क्योंकि वह बारहा देखते थे कि आप एक माह दो-दो माह और इससे ज़्यादा अ़र्सा तक इबादत में मश्गूल रहते हैं और आपकी नमाज़ बहुत दराज़ होती है हत्ता कि आपकी वफ़ात के पूरे एक साल बाद तक जिन्नात आपकी वफ़ात पर मुत्तलअ़ न हुए और अपनी ख़िदमतों में मश्गूल रहे यहां तक कि बहुक्मे इलाही दीमक ने आपका अ़सा खा लिया और आपका जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ायम था ज़मीन पर आया उस वक़्त जिन्नात को आपकी वफ़ात का इल्म हुआ। (फ़ा37) कि वह ग़ैब नहीं जानते (फ़ा38) तो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात से मुत्तलअ. होते (फ़ा39) और एक साल तक इमारत के कामों में तकलीफ़े शाक़्क़ा उठाते न रहते मरवी है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने बैतुल मुक़द्दस की बिना उस मक़ाम पर रखी थी जहां हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ख़ेमा नसब किया गया था उस इमारत के पूरा होने से क़बल हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आपने अपने फ़रज़न्द अरजुमन्द हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को उसकी तकमील की वसीयत फ़रमाई चुनांचे आपने शयातीन को उसकी तकमील का हुक्म दिया जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो आपने दुआ़ की कि आपकी वफ़ात शयातीन पर ज़ाहिर न हो ताकि वह इमारत की तकमील तक मसरूफ़े अ़मल रहें और उन्हें जो इल्मे ग़ैब का दावा है वह बातिल हो जाये हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ तिरेपन साल की हुई तेरह साल की उम्र शरीफ़ में आप सरीर आराए सल्तनत हुए चालीस साल हुकमरानी फ़रमाई (फ़ा40) सबा अरब का एक क़बीला है जो अपने जद् के नाम से मशहूर है और वह जद सबा बिन यशजब बिन यअ़रब बिन क़हतान है (फ़ा41) जो हुदूदे यमन में वाक़ेअ़ थी (फ़ा42) अल्लाह तआ़ला की वहदानियत व क़ुदरत पर दलालत करने वाली और वह निशानी क्या थी उसका आगे बयान होता है (फ़ा43) यानी उनकी वादी के दाहिने और बायें दूर तक चले गए और उनसे कहा गया था (फ़ा44) बाग़ ऐसे कसीरुलसमर थे कि जब कोई शख़्स सर पर टोकरा लिए गुज़रता तो बग़ैर हाथ लगाए क़िस्म क़िस्म के मेवों से उसका टोकरा भर जाता (फ़ा45) यानी इस निअ़मत पर उसकी ताअ़त बजा लाओ (फ़ा46) लतीफ़ आबो हवा साफ़ सुथरी सरज़मीन न उसमें मच्छर न मक्खी न खटमल न सांप न बिच्छू हवा की पाकीज़गी का यह आ़लम कि अगर कहीं और का कोई शख़्स उस शहर में गुज़र जाये और उसके कपड़ों में जूयें हों तो सब मर जाएं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि शहरे सबा सनआ़ से तीन फ़रसंग के फ़ासिला पर था (फ़ा47) यानी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और इताअ़त बजा लाओ तो वह बख़्शिश फ़रमाने वाला है (फ़ा48) उसकी शुक्र गुज़ारी से और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की तकज़ीब की वहब का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ तेरह नबी भेजे जिन्होंने उनको हक़ की दावतें दीं और अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें याद दिलाईं और उसके अ़ज़ाब से डराया मगर वह ईमान न लाये और उन्होंने अम्बिया को झुठला दिया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर ख़ुदा की कोई भी निअ़मत हो तुम अपने रब से कह दो कि उससे हो सके तो वह उन नेअ़मतों को रोक ले। (फ़ा49) अ़ज़ीम सैलाब जिससे उनके बाग़ अमवाल सब डूब गए और उनके मकानात रेत में दफ़न हो गए और इस तरह तबाह हुए कि उनकी तबाही अरब के लिए मिस्ल बन गई। (फ़ा50) निहायत बद मज़ा। (फ़ा51) जैसी वीरानियों में जम आती हैं इस तरह की झाड़ियों और वहशतनाक जंगल को जो उनके ख़ुशनुमा बाग़ों की जगह पैदा हो गया था बतरीक़े मशाकलत बाग़ फ़रमाया। (फ़ा52) और उनके कुफ़्र। (फ़ा53) यानी शहरे सबा में। (फ़ा54) कि वहां के रहने वालों को वसीअ़ निअ़मतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये मुराद इन से शाम के शहर हैं। (फ़ा55) क़रीब क़रीब सबा से शाम तक सफ़र करने वालों को इस राह में तोशा और पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न होती। (फ़ा56) कि चलने वाला एक मक़ाम से सुबह चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाये जहां ज़रूरियात के तमाम सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाये यमन से शाम तक का तमाम सफ़र इसी आसाइश के साथ तय हो सके और हम ने उनसे कहा कि। (फ़ा57) न रातों में कोई खटका न दिनों में कोई तकलीफ़ न दुश्मन का अन्देशा न भूख प्यास का ग़म मालदारों में हसद पैदा हुआ कि हमारे और ग़रीबों के दर्मियान कोई फ़र्क़ ही नहीं रहा क़रीब क़रीब की मन्ज़िलें हैं लोग ख़रामाँ ख़रामाँ हवा ख़ोरी करते चले जाते हैं थोड़ी देर के बाद दूसरी आबादी आ जाती है वहां आराम करते हैं न सफ़र में तकान है न कोफ़्त अगर मन्ज़िलें दूर होतीं सफ़र की मुद्दत दराज़ होती राह में पानी न मिलता जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता तो हम तोशा साथ लेते पानी के इन्तेज़ाम करते सवारियां और ख़ुद्दाम साथ रखते सफ़र का लुत्फ़ आता और अमीर व ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता यह ख़्याल करके उन्होंने कहा (फ़ा58) यानी हमारे और शाम के दर्मियान जंगल और बयाबान कर दे कि बग़ैर तोशा और सवारी के सफ़र न हो सके (फ़ा59) बाद वालों के लिए कि उनके अहवाल से इबरत हासिल करें (फ़ा60) क़बीला क़बीला मुन्तशिर

हो गया वह बस्तियां ग़र्क़ हो गईं और लोग बे ख़ानुमां होकर जुदा जुदा बिलाद में पहुंचे ग़स्सान शाम में और अज़्द अ़म्मान में और ख़ज़ाआ़ तहामा में और आले ख़ज़ीमा इराक़ में और औस ख़ज़रज का जद अ़मर बिन आ़मिर मदीना में

(बक़िया सफ़्हा 697 का) (फ़ा64) जिनके हक़ में उसका गुमान पूरा हुआ। (फ़ा65) ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा के काफ़िरों से। (फ़ा66) अपना मअ़बूद (फ़ा67) कि वह तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि किसी नफ़ा व ज़रर में। (फ़ा68) बतरीक़े इस्तिबशार (फ़ा69) यानी शफ़ाअ़त करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअ़त का इज़्न दिया। (फ़ा70) यानी आसमान से मेंह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। (फ़ा71) क्योंकि इस सवाल का बजुज़ इसके और कोई जवाब ही नहीं। (फ़ा72) यानी दोनों फ़रीक़ों मे से हर एक के लिए इन दोनों हालों में से एक हाल ज़रूरी है। (फ़ा73) और यह ज़ाहिर है कि जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को रोज़ी देने वाला पानी बरसाने वाला सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक ज़र्रा भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर की आयात में बयान हो चुका) वह यक़ीनन खुली गुमराही में है। (फ़ा74) बल्कि हर शख़्स से उसके अ़मल का सवाल होगा और हर एक पर अ़मल की जज़ा पाएगा (फ़ा75) रोज़े क़ियामत। (फ़ा76) तो अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में दाख़िल करेगा। (फ़ा77) यानी जिन बुतों को तुमने इबादत में शरीक किया है मुझे दिखाओ तो किस क़ाबिल हैं क्या वह कुछ पैदा करते हैं रोज़ी देते हैं और जब यह कुछ नहीं तो उनको ख़ुदा का शरीक बनाना और उनकी इबादत करना कैसी अज़ीम ख़ता है इससे बाज़ आओ।

(बक़िया सफ़्हा 698 का) क़ुरआने करीम की आयात और अहादीसे कसीरा से साबित है सूरह फ़ुरक़ान की इब्तेदा में भी इसका बयान गुज़र चुका है। (ख़ाज़िन) (फ़ा79) ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल की (फ़ा80) काफ़िरों को उसके अ़द्ल का। (फ़ा81) और अपने जह्ल की वजह से आपकी मुख़ालफ़त करते हैं। (फ़ा82) यानी क़ियामत का वादा। (फ़ा83) यानी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर मुमकिन नहीं और अगर जल्दी चाहो तो तक़द्दुम मुमकिन नहीं बहर तक़दीर इस वादा का अपने वक़्त पर पूरा होना (फ़ा84) तौरेत व इन्जील वग़ैरह (फ़ा85) यानी ताबेअ़ और पैरो थे(फ़ा86) यानी अपने सरदारों से (फ़ा87) और हमें ईमान लाने से न रोकते।(फ़ा88) यानी तुम शबो रोज़ हमारे लिए मक्र करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे। (फ़ा89) दोनों फ़रीक़ ताबेअ़ भी और मतबूअ़ भी पैरो भी और उनके बहकाने वाले भी ईमान न लाने पर(फ़ा90) जहन्नम का (फ़ा91) ख़्वाह बहकाने वाले हों या उनके कहने में आने वाले तमाम कुफ़्फ़ार की यही सज़ा है (फ़ा92) दुनिया में कुफ़्र और मअ़सियत

(बक़िया सफ़्हा 699 का) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पता बताओ और मालूम करके हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि आप दुनिया को क्या दावत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं फ़रमाया बुत परस्ती छोड़ कर एक अल्लाह तआ़ला की इबादत करना और आपने अहकामे इस्लाम बताए यह बातें उसके दिल में असर कर गईं और वह शख़्स पिछली किताबों का आलिम था कहने लगा कि मैं गवाही देता हूं कि आप बेशक अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं हुज़ूर ने फ़रमाया तुम ने यह कैसे जाना उसने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया पहले छोटे दर्जे के ग़रीब लोग ही उसके ताबेअ़ हुए यह सुन्नते इलाहिया हमेशा ही जारी रही इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा94) यानी जब दुनिया में हम खुश हाल हैं तो हमारे आमाल व अफ़आ़ल अल्लाह तआ़ला को पसन्द होंगे और ऐसा हुआ तो आख़िरत में अ़ज़ाब नहीं होगा अल्लाह तआ़ला ने उनके इस ख़्याले बातिल का इब्ताल फ़रमा दिया कि सवाबे आख़िरत को मआ़शिते दुनिया पर क़ियास करना ग़लत है (फ़ा95) बतरीक़े इब्तेला व इम्तेहान तो दुनिया में रोज़ी की कशाइश रज़ाए इलाही की दलील नहीं और ऐसे ही उसकी तंगी अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी की दलील नहीं कभी गुनहगार पर वुसअ़त करता है कभी फ़रमांबरदार पर तंगी यह उसकी हिकमत है सवाबे आख़िरत को इस पर क़ियास करना ग़लत व बेजा है (फ़ा96) यानी माल किसी के लिए सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए मोमिन सालेह के जो उसको राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और औलाद किसी के लिए सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए उस मोमिन के जो उन्हें नेक इल्म सिखाये दीन की तालीम दे और सालेह व मुत्तक़ी बनाये (फ़ा97) एक नेकी के बदले दस से लेकर सात सौ गुने तक और इससे भी ज़्यादा जितना ख़ुदा चाहे (फ़ा98) यानी जन्नत के मनाज़िले बाला में (फ़ा99) यानी क़ुरआने करीम पर ज़बाने तअ़न खोलते हैं और यह गुमान करते हैं कि अपनी इन बातिल-कारियों से वह लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे और उनका यह मक्र इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वह हमारे अ़ज़ाब से बच रहेंगे क्योंकि उनका एतेक़ाद यह है कि मरने के बाद उठना ही नहीं है तो अ़ज़ाब सवाब कैसा। (फ़ा100) और उनकी मक्कारियां उन्हें कुछ काम न आयेंगी। (फ़ा101) अपने हस्बे हिकमत। (फ़ा102) दुनिया में या आख़िरत में बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा दूसरी हदीस में है सदक़ा से माल कम नहीं होता माफ़ करने से इज़्ज़त बढ़ती है तवाज़ोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं (फ़ा103) क्योंकि इसके सिवा जो कोई किसी को देता है ख़्वाह बादशाह लश्कर को या आक़ा ग़ुलाम को या साहबे ख़ाना अपने अ़याल को वह अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई और उसकी अ़ता फ़रमाई हुई रोज़ी में से देता है रिज़्क़ और उससे मुन्तफ़ेअ़ होने के असबाब का ख़ालिक़ सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं वही रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी है। (फ़ा104) यानी उन मुशरिकीन को। (फ़ा105) दुनिया में। (फ़ा106) यानी हमारी उनसे कोई दोस्ती नहीं तो हम किस तरह उनके पूजने से राज़ी हो सकते थे हम उससे बरी हैं। (फ़ा107) यानी शयातीन को कि उनकी इताअ़त के लिए ग़ैर ख़ुदा को पूजते थे। (फ़ा108) यानी शयातीन पर। (फ़ा109) और वह झूठे मअ़बूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़ा नक़सान न पहुंचा सकेंगे। (फ़ा110) दुनिया में

(बक़िया सफ़हा 700 का) (फ़ा132) बेशक वह सुनने वाला नज़दीक है।(50) (फ़ा133) और किसी तरह तू देखे (फ़ा134) जब वह घबराहट में डाले जायेंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे (फ़ा135) और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जायेंगे।(51) (फ़ा136) और कहेंगे हम उस पर ईमान लाए (फ़ा137) और अब वह उसे क्यों कर पायें इतनी दूर जगह से।(52) (फ़ा138) कि पहले (फ़ा139) तो उससे कुफ़्र कर चुके थे और बे देखे फेंक मारते हैं (फ़ा140) दूर मकान से।(53) (फ़ा141) और रोक कर दी गई उनमें और उसमें जिसे चाहते हैं (फ़ा142) जैसे उनके पहले गरोहों से किया गया था (फ़ा143) बेशक वह धोका डालने वाले शक में थे।(54) (फ़ा144) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा111) यानी आयाते क़ुरआन ज़बाने सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से। (फ़ा112) हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत। (फ़ा113) यानी बुतों से। (फ़ा114) क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत। (फ़ा115) यानी क़ुरआन शरीफ़ को। (फ़ा116) यानी आपसे पहले मुशरिकीने अ़रब के पास न कोई किताब आई न रसूल जिसकी तरफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो यह जिस ख़्याल पर हैं उनके पास उसकी कोई सनद नहीं वह उनके नफ़्स का फ़रेब है (फ़ा117) यानी पहली उम्मतों ने मिस्ल क़ुरैश के रसूलों की तकज़ीब की और उनको (फ़ा118) यानी जो क़ुव्वत व कसरते माल व औलाद व तूले उम्र पहलों को दी गई थी मुशरिकीने क़ुरैश के पास तो उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं उनके पहले तो उनसे ताक़त व क़ुव्वत माल व दौलत में दस गुने से ज़्यादा थे (फ़ा119) यानी उनको नापसन्द रखना और अ़ज़ाब देना और हलाक फ़रमाना यानी पहले मुकज़्ज़बीन ने जब मेरे रसूलों को झुठलाया तो मैंने अपने अ़ज़ाब से उन्हें हलाक किया और उनकी ताक़त व क़ुव्वत और माल व दौलत कोई चीज़ भी काम न आई उन लोगों की क्या हक़ीक़त है उन्हें डरना चाहिये। (फ़ा120) अगर तुम ने इस पर अ़मल किया तो तुम पर हक़ वाज़ेह हो जाएगा और तुम वसावस व शुबहात और गुमराही की मुसीबत से नजात पाओगे वह नसीहत यह है (फ़ा121) महज़ तलबे हक़ की नीयत से अपने आपको तरफ़दारी और तअ़स्सुब से ख़ाली करके। (फ़ा122) ताकि बाहम मशवरा कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें। (फ़ा123) ताकि मजमा और अज़दहाम से तबीअ़त मुतवह्हिश न हो और तअ़स्सुब और तरफ़दारी व मुक़ाबला व लिहाज़ वग़ैरह से तबीअ़तें पाक रहें और अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़ा मिले। (फ़ा124) और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत ग़ौर करो कि क्या जैसा कि कुफ़्फ़ार आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत करते हैं उसमें सच्चाई का कुछ शाइबा भी है तुम्हारे अपने तजर्बे में क़ुरैश में या नौअ़े इन्सान में कोई शख़्स भी इस मर्तबा का आ़क़िल नज़र आया है?क्या ऐसा ज़हीन ऐसा साइबुर्राए देखा है ऐसा सच्चा ऐसा पाक नफ़्स कोई और भी पाया है जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म करदे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन औसाफ़ में यकता हैं तो तुम यक़ीन जानो। (फ़ा125) अल्लाह तआ़ला के नबी। (फ़ा126) और वह अ़ज़ाबे आख़िरत है। (फ़ा127) यानी मैं नसीहत व हिदायत और तबलीग़ व रिसालत पर तुम से कोई अज्र नहीं तलब करता। (फ़ा128) अपने अम्बिया की तरफ़। (फ़ा129) यानी क़ुरआन व इस्लाम। (फ़ा130) यानी शिर्क व कुफ़्र मिट गया न उसकी इब्तेदा ही न उसका इआ़दा मुराद यह है कि वह हलाक हो गया। (फ़ा131) कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहते थे कि आप गुमराह हो गए (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि आप उनसे फ़रमा दें कि अगर यह फ़र्ज़ किया जाये कि मैं बहका तो उसका वबाल मेरे नफ़्स पर है (फ़ा132) हिकमत व बयान की क्योंकि राहयाब होना उसी की तौफ़ीक़ व हिदायत पर है अम्बिया सब मअ़सूम होते हैं गुनाह उनसे नहीं हो सकता और हुज़ूर तो सय्यदुल अम्बिया हैं सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ल्क़ को नेकियों की राहें आपके इत्तेबाअ़ से मिलती हैं बावजूद जलालते मन्ज़िलत व रिफ़अ़ते मर्तबत के आपको हुक्म दिया गया कि ज़लालत की निस्बत अ़ला सबीलिल फ़र्ज़ अपने नफ़्स की तरफ़ फ़रमायें ताकि ख़ल्क़ को मालूम हो कि ज़लालत का मन्शा इन्सान का नफ़्स है जब उसको इस पर छोड़ दिया जाता है इससे ज़लालत पैदा होती है और हिदायत हज़रते हक़ अज़्ज़ व अ़ला की रहमत व मौहिबत से हासिल होती है नफ़्स उसका मन्शा नहीं (फ़ा133) हर राहयाब और गुमराह को जानता है और उनके अ़मल व किरादार से बाख़बर है कोई कितना ही छुपाए किसी का हाल उससे छुप नहीं सकता। अ़रब के एक माया नाज़ शायर इस्लाम लाये तो कुफ़्फ़ार ने उनसे कहा कि क्या तुम अपने दीन से फिर गए और इतने बड़े शायर और ज़बान के माहिर होकर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाए उन्होंने कहा हां वह मुझ पर ग़ालिब आगए क़ुरआने करीम की तीन आयतें मैं ने सुनीं और चाहा कि उनके क़ाफ़िया पर तीन शेअ़र कहूं हर चन्द कोशिश की मेहनत उठाई अपनी तमाम क़ुव्वत सरफ़ कर दी मगर यह मुमकिन न हो सका तब मुझे यक़ीन हो गया कि यह बशर का कलाम नहीं वह यह आयतें क़ुल् इन्-न रब्बी यक़्ज़ि-फ़ु बिल्हक़्क़ि से समीअ़ुन् क़रीबुन् तक हैं (रूहुल बयान) (फ़ा134) कुफ़्फ़ार को मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन। (फ़ा135) और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे। (फ़ा136) जहां भी होंगे क्योंकि कहीं भी हों अल्लाह तआ़ला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते उस वक़्त हक़ की मअ़रेफ़त के लिए मुज़तर होंगे। (फ़ा137) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर। (फ़ा138) यानी अब मुकल्लफ़ होने के महल से दूर होकर तौबा व ईमान कैसे पा सकेंगे? (फ़ा139) यानी अ़ज़ाब देखने से पहले। (फ़ा140) यानी बे जाने कह गुज़रते हैं जैसा कि उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में कहा था कि वह शायर हैं साहिर हैं काहिन हैं और उन्होंने कभी हुज़ूर से शेअ़र व सेहर व कहानत का सुदूर न देखा था। (फ़ा141) यानी सिद्क़ व वाक़िइयत

से दूर कि उनके उन मताइन को सिदक से कुर्ब व नज़दीकी भी नहीं। (फ़ा142) यानी तौबा व ईमान में। (फ़ा143) कि उनकी तौबा व ईमान वक़्ते यास क़बूल न फ़रमाई गई। (फ़ा144) ईमानियात के मुतअ़ल्लिक़।

(बक़िया सफ़्हा 701 का) सब्र फ़रमाइये कुफ़्फ़ार का अम्बिया के साथ क़दीम से यह दस्तूर चला आता है। (फ़ा10) वह झुठलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों की मदद फ़रमाएगा। (फ़ा11) क़ियामत ज़रूर आनी है मरने के बाद ज़रूर उठना है आमाल का हिसाब यक़ीनन होगा हर एक को उसके किये की जज़ा बेशक मिलेगी। (फ़ा12) कि उसकी लज़्ज़तों में मश्गूल होकर आख़िरत को भूल जाओ। (फ़ा13) यानी शैतान तुम्हारे दिलों में यह वसवसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठा लो अल्लाह तआ़ला हिल्म फ़रमाने वाला है वह दरगुज़र करेगा अल्लाह तआ़ला बेशक हिल्म वाला है लेकिन शैतान की फ़रेबकारी यह है कि वह बन्दों को इस तरह तौबा व अ़मले सालेह से रोकता है और गुनाह व मअ़सियत पर जरी करता है उसके फ़रेब से होशियार रहो। (फ़ा14)और उसकी इताअ़त न करो और अल्लाह तआ़ला की ताअ़त में मश्गूल रहो(फ़ा15)यानी अपने मुत्तबेईन को कुफ़्र की तरफ़

(बक़िया सफ़्हा 702 का) जानते हैं और हलाल नहीं समझते इसमें दाख़िल नहीं। (फ़ा20) कि अफ़सोस वह ईमान न लाये और हक़ को क़बूल करने से महरूम रहे मुराद यह है कि आप उनके कुफ़्र व हलाकत का ग़म न फ़रमायें। (फ़ा21) जिसमें सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहां की ज़मीन बेजान हो गई है (फ़ा22) और उसको सर सब्ज़ व शादाब कर देते हैं इससे हमारी क़ुदरत ज़ाहिर है (फ़ा23) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला मुर्दे किस तरह ज़िन्दा फ़रमाएगा ख़ल्क़ में उसकी कोई निशानी हो तो इरशाद फ़रमाइये फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुआ है जो ख़ुश्क साली से बेजान हो गया हो और वहां सब्ज़ा का नामो निशान न रहा हो फिर कभी उसी जंगल में गुज़र हुआ हो और उसको हरा भरा लहलहाता पाया हो उन सहाबी ने अ़र्ज़ किया बेशक ऐसा देखा है हुज़ूर ने फ़रमाया ऐसे ही अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और ख़ल्क़ में यह उसकी निशानी है। (फ़ा24) दुनिया व आख़िरत में वही इज़्ज़त का मालिक है जिसे चाहे इज़्ज़त दे तो जो इज़्ज़त का तलबगार हो वह अल्लाह तआ़ला से इज़्ज़त तलब करे क्योंकि हर चीज़ उसके मालिक ही से तलब की जाती है। हदीस शरीफ़ में है कि रब तबारक व तआ़ला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे इज़्ज़त दारैन की ख़्वाहिश हो चाहिए कि वह हज़रत अ़ज़ीज़े जल्लत इज़्ज़तुहू की इताअ़त करे और ज़रीआ़ तलबे इज़्ज़त का ईमान और आमाले सालिहा हैं। (फ़ा25) यानी उसके महल कबूल व रज़ा तक पहुंचता है और पाकीज़ा कलाम से मुराद कलिमए तौहीद व तस्बीह व तहमीद व तकबीर वग़ैरह हैं जैसा कि हाकिम व बैहक़ी ने रिवायत किया और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने कलमे तय्यब की तफ़सीर ज़िक्र से फ़रमाई और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन और दुआ़ भी मुराद ली है। (फ़ा26) नेक काम से मुराद वह अ़मल व इबादत है जो इख़्लास से हो और माना यह हैं कि कलिमा तय्येबा अ़मल को बुलन्द करता है क्योंकि अ़मल बे तौहीद व ईमान मक़बूल नहीं या यह माना हैं कि अ़मले सालेह को अल्लाह तआ़ला रिफ़अ़ते क़बूल अ़ता फ़रमाता है या यह माना हैं कि अ़मले नेक अ़मल करने वाले का मर्तबा बुलन्द करते हैं तो जो इज़्ज़त चाहे उसको लाज़िम है कि नेक अ़मल करे। (फ़ा27) मुराद इन मक्र करने वालों से वह क़ुरैश हैं जिन्होंने दारुन्नदवा में जमा होकर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत क़ैद करने और क़त्ल करने और जला वतन करने के मश्वरे किये थे जिसका तफ़सीली बयान सूरए अनफ़ाल में हो चुका है (फ़ा28) और वह अपने दांव व फ़रेब में कामयाब न होंगे चुनान्चे ऐसा ही हुआ हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनके शर से महफ़ूज़ रहे और उन्होंने अपनी मक्कारियों की सज़ायें पाईं कि बद्र में क़ैद भी हुए क़त्ल भी किये गए और मक्का मुकर्रमा से निकाले भी गए। (फ़ा29) यानी तुम्हारी असल हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा30) उनकी नस्ल को (फ़ा31) मर्द व औरत (फ़ा32) यानी लौहे महफ़ूज़ में हज़रत क़तादा से मरवी है कि मुअ़म्मर वह है जिसकी उम्र साठ साल पहुंचे और कम उम्र वाला वह जो इससे क़बल मर जाये (फ़ा33) यानी अ़मल व अजल का मकतूब फ़रमाना

(बक़िया सफ़्हा 703 का) मुतीअ़ और फ़रमांबरदार हो। (फ़ा51) माना यह हैं कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा जो उसने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के एवज़ न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उनके गुमराह करनेसे जो लोग गुमराह हुए उनकी तमाम गुमराहियों का बार उन गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि कलामे करीम में इरशाद हुआ व ल-यह्मिलुन्-न अस्क़ा-लहुम् व अस्क़ालम्-म-अ़ अस्क़ालिहिम् और दर हक़ीक़त यह उनकी अपनी कमाई है दूसरे की नहीं। (फ़ा52) बाप या मां बेटा या भाई कोई किसी का बोझ न उठाएगा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मां बाप बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठाले वह कहेगा मेरे इमकान में नहीं मेरा अपना बार क्या कम है।

(बक़िया सफ़्हा 704 का) कान रखे और बगोशे क़बूल सुने तो नफ़ा पाए और अगर मुसिर्रीन मुन्करीन में से हो और आप की नसीहत से पन्द पज़ीर न हो तो आपका कुछ हर्ज नहीं वही महरूम है। (फ़ा64) ईमानदारों को जन्नत की। (फ़ा65) काफ़िरों को अ़ज़ाब का। (फ़ा66) ख़्वाह वह नबी हो या आ़लिमे दीन जो नबी की तरफ़ से ख़ल्क़े ख़ुदा को अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाये। (फ़ा67) कुफ़्फ़ारे मक्का (फ़ा68) अपने रसूलों को कुफ़्फ़ार का क़दीम से अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ यही बरताव रहा है। (फ़ा69) यानी नबुव्वत पर दलालत करने वाले मोअ़जेज़ात (फ़ा70) तौरेत व इन्जील व ज़बूर। (फ़ा71) तरह तरह के अ़ज़ाबों से बसबब उनकी तकज़ीबों के (फ़ा72)मेरा अ़ज़ाब देना (फ़ा73) बारिश नाज़िल की (फ़ा74) सब्ज़ सुर्ख़ ज़र्द वग़ैरह तरह तरह के अनार सेब इन्जीर अंगूर खजूर वग़ैरह बेशुमार। (फ़ा75) जैसे फलों और पहाड़ों में यहां अल्लाह तआ़ला अपनी आयतें और अपने निशानहाए क़ुदरत और आसारे सनअ़त जिनसे उसकी ज़ात व सिफ़ात पर इस्तिदलाल किया जाये ज़िक्र की उसके बाद फ़रमाया।

(बक़िया सफ़हा 705 का) फ़रमाया कि सबक़त लेजाने वाला मोमिन मुख़लिस है और मुक़्तसिद यानी मियाना रवी करने वाला वह जिसके अ़मल रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहां वह है जो नेअ़्मते इलाही का मुन्किर तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाये हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारा साबिक़ तो साबिक़ ही है और मुक़्तसिद नाजी और ज़ालिम मग़फ़ूर एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया नेकियों में सबक़त लेजाने वाला जन्नत में बे हिसाब दाख़िल होगा और मुक़्तसिद से हिसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम मक़ामे हिसाब में रोका जायेगा उसको परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि साबिक़ अहदे रिसालत के वह मुख़लिसीन हैं जिनके लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत दी और मुक़्तसिद वह असहाब हैं जो आपके तरीक़ा पर आ़मिल रहे और ज़ालिम लिनफ़्सिही हम तुम जैसे लोग हैं यह कमाले इन्केसार था हज़रत उम्मुलमोमिनीन रज़ियल्लाहु अ़न्हा का कि अपने आपको उस तीसरे तबक़ा में शुमार फ़रमाया बावजूद इस जलालते मन्ज़िलत व रिफ़अ़त दर्जत के जो अल्लाह तआ़ला ने आपको अ़ता फ़रमाई थी और भी उसकी तफ़सीर में बहुत अक़वाल हैं जो तफ़ासीर में मुफ़स्सलन मज़कूर हैं (फ़ा82) तीनों गरोह। (फ़ा83) इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या ताअ़तों के ग़ैर मक़बूल होने का या अह्वाले क़ियामत का ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वह उस पर अल्लाह की हम्द करेंगे। (फ़ा84) कि गुनाहों को बख़्शता है और ताअ़तें क़बूल फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़हा 708 का) तुम रसूल नहीं हो इसके बाद क़ुरआने करीम की निस्बत इरशाद फ़रमाया। (फ़ा4) यानी उनके पास कोई नबी न पहुंचे और क़ौमे क़ुरैश का यही हाल है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले उनमें कोई रसूल नहीं आया (फ़ा5) यानी हुक्मे इलाही व क़ज़ाए अज़ली उनके अ़ज़ाब पर जारी हो चुकी है और अल्लाह तआ़ला का इरशाद ल-अम्-ल अनू-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अजमअ़ीन उनके हक़ में साबित हो चुका है और अ़ज़ाब का उनके लिए मुक़र्रर हो जाना इस सबब से है कि वह कुफ़्र व इन्कार पर अपने इख़्तियार से मुसिर रहने वाले हैं (फ़ा6) इसके बाद उनके कुफ़्र में पुख़्ता होने की एक तम्सील इरशाद फ़रमाई (फ़ा7) यह तम्सील है उनके कुफ़्र में ऐसे रासिख़ होने की कि आयात व नुज़र पन्द व हिदायत किसी से वह मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते जैसे कि वह शख़्स जिन की गर्दनों में ग़िल की क़िस्म का तौक़ पड़ा हो जो ठोढ़ी तक पहुंचता है और उसकी वजह से वह सर नहीं झुका सकते यही हाल उनका है कि किसी तरह उनको हक़ की तरफ़ इल्तेफ़ात नहीं होता और उसके हुज़ूर सर नहीं झुकाते और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि यह उनकी हक़ीक़ते हाल है जहन्नम में उन्हें इसी तरह का अ़ज़ाब किया जाएगा जैसा कि दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया इज़िल् अग़ूलालु फ़ी अअ़्नाक़िहिम् **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल और उसके दो मख़ज़ूमी दोस्तों के हक़ में नाज़िल हुई अबू जहल ने क़सम खाई थी कि अगर वह सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पत्थर से सर कुचल डालेगा जब उसने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वह इसी इरादए फ़ासिदा से एक भारी पत्थर लेकर आया जब उस पत्थर को उठाया तो उस के हाथ गर्दन में चिपके रह गए और पत्थर हाथ को लिपट गया यह हाल देख कर अपने दोस्तों की तरफ़ वापस हुआ और उनसे वाक़िआ़ बयान किया तो उसके दोस्त वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा कि यह काम मैं करूंगा और मैं उनका सर कुचल कर ही आऊँगा चुनांचे वह पत्थर लेकर आया हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे जब यह क़रीब पहुंचा अल्लाह तआ़ला ने उसकी बीनाई सल्ब कर ली हुज़ूर की आवाज़ सुनता था आंखों से नहीं देख सकता था यह भी परेशान होकर अपने यारों की तरफ़ लौटा वह भी नज़र न आये उन्होंने ही उसे पुकारा और उससे कहा तूने क्या किया कहने लगा मैं ने उनकी आवाज़ तो सुनी मगर वह मुझे नज़र ही नहीं आये अब अबू जहल के तीसरे दोस्त ने दावा किया कि वह इस काम को अन्जाम देगा और बड़े दावे के साथ वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ चला था कि उलटे पाँव ऐसा बद-हवास होकर भागा कि औंधे मुंह गिर गया उसके दोस्तों ने हाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा हाल बहुत सख़्त है मैंने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के दर्मियान हाइल हो गया लात व उज़्ज़ा की क़सम अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो मुझे खा ही जाता इस पर यह आयत नाज़िल हुई (ख़ाज़िन व जुमल) (फ़ा8) यह भी तम्सील है कि जैसे किसी शख़्स के लिए दोनों तरफ़ दीवारें हों और हर तरफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वह किसी तरह मन्ज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंच सकता यही हाल उन कुफ़्फ़ार का है कि उन पर हर तरफ़ से ईमान की राह बन्द है सामने उनके ग़ुरूरे दुनिया की दीवार है और उनके पीछे तकज़ीबे आख़िरत की और वह जहालत के क़ैद ख़ाना में महबूस हैं आयात व दलाइल में नज़र करना उन्हें मुयस्सर नहीं (फ़ा9) यानी आपके डर सुनाने और ख़ौफ़ दिलाने से वही नफ़ा उठाता है। (फ़ा10) यानी जन्नत की (फ़ा11) यानी दुनिया की ज़िन्दगानी में जो नेकी या बदी की ताकि उस पर जज़ा दी जाये (फ़ा12) यानी और हम उनकी वह निशानियां वह तरीक़े भी लिखते हैं जो वह अपने बाद छोड़ गए ख़्वाह वह तरीक़े नेक हों या बद जो नेक तरीक़े उम्मती निकालते हैं उनको बिदअ़ते हसना कहते हैं और इस तरीक़े के निकालने वालों और अ़मल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे तरीक़े निकालते हैं उनको बिदअ़ते सइया कहते हैं इस तरीक़े के निकालने वाले और अ़मल करने वाले दोनों गुनहगार होते हैं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक तरीक़ा निकाला उसको तरीक़ा निकालने का सवाब मिलेगा और उस पर अ़मल करने वालों को भी सवाब बग़ैर इसके कि अ़मल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाये और जिसने इस्लाम में बुरा तरीक़ा निकाला तो उस पर वह तरीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस तरीक़ा पर अ़मल करने वालों के भी गुनाह बग़ैर इसके कि उन अ़मल

करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाये इससे मालूम हुआ कि सदहा उमूरे ख़ैर मिस्ले फ़ातिहा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवां व उर्स व तोशा व ख़त्म व महाफ़िले ज़िक्रे मीलाद व शहादत जिनको बद-मज़हब लोग बिदअ़त कह कर मना करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं यह सब दुरुस्त और बाइसे अज्र व सवाब हैं और इनको बिदअ़ते सइया बताना ग़लत व बातिल है यह ताआत और आमाले सालिहा जो ज़िक्र व तिलावत और सदका व ख़ैरात पर मुश्तमिल हैं बिदअ़ते सइया नहीं, बिदअ़ते सइया वह बुरे तरीक़े हैं ज़िनसे दीन को नुक़सान पहुंचता है और जो सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया कि जो क़ौम बिदअ़त निकालती है उससे एक सुन्नत उठ जाती है तो बिदअ़ते सइया वही है जिससे सुन्नत उठती हो जैसे कि रफ़्ज़ व ख़ुरूज वहाबियत यह सब इन्तेहा दर्जे की ख़राब सइया बिदअ़तें हैं रफ़्ज़ व ख़ुरूज जो असहाब व अहल बैते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अ़दावत पर मबनी हैं उनसे असहाब व अहले बैत के साथ मुहब्बत व नियाज़मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिसके शरीअ़त में ताकीदी हुक्म हैं वहाबियत की असल मक़बूलाने हक़ हज़रात अम्बिया व औलिया की जनाब में बे अदबी व गुस्ताख़ी और तमाम मुसलमानों को मुश्रिक क़रार देना है इससे बुज़ुर्गाने दीन की हुरमत व इज़्ज़त और अदब व तकरीम और मुसलमानों के साथ अख़ुव्वत व मुहब्बत की सुन्नते उठ जाती हैं जिनकी बहुत शदीद ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़े हैं और इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वह क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की तरफ़ चलने में रखता है और इस माना पर आयत की **शाने नुज़ूलः** यह बयान की गई है कि बनी सलमा मदीना तय्येबा के किनारे पर रहते थे उन्होंने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के क़रीब आ बसें इस पर यह आयत नाज़िल हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं तुम मकान तब्दील न करो यानी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़्यादा पड़ेंगे और अज्र व सवाब ज़्यादा होगा। (फ़ा13) यानी लौहे महफ़ूज़ में। (फ़ा14) इस शहर से मुराद अन्ताकिया है यह एक बड़ा शहर है इसमें चश्मे हैं कई पहाड़ हैं एक संगीन शहर पनाह है बारह मील के दूर में बसता है (फ़ा15) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ़ का मुख़्तसर बयान यह है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने दो हवारियों सादिक़ व सुदूक़ को अन्ताकिया भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने हक़ की दावत दें जब यह दोनों शहर के क़रीब पहुंचे तो उन्होंने एक बूढ़े शख़्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है उस शख़्स का नाम हबीब नज्जार था उसने उनका हाल दरियाफ़्त किया उन दोनों ने कहा कि हम हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के भेजे हुए हैं तुम्हें दीने हक़ की दावत देने आये हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो हबीब नज्जार ने निशानी दरियाफ़्त की उन्होंने कहा कि निशानी यह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं अन्धों को बीना करते हैं बरस वाले का मर्ज़ दूर कर देते हैं हबीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था उन्होंने उस पर हाथ फेरा वह तन्दुरुस्त हो गया हबीब ईमान लाये और इस वाक़िआ़ की ख़बर मशहूर हो गई ता आंकि एक ख़ल्क़े कसीर ने उनके हाथों अपने अमराज़ से शिफ़ा पाई यह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा क्या हमारे मअ़बूदों के सिवा और कोई मअ़बूद भी है उन दोनों ने कहा हां वही जिसने तुझे और तेरे मअ़बूदों को पैदा किया फिर लोग उनके दरपै हुए और उन्हें मारा और यह दोनों क़ैद कर लिए गए फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने शमऊन को भेजा वह अजनबी बन कर शहर में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबीन व मुक़र्रबीन से रस्मो राह पैदा करके बादशाह तक पहुंचे और इस पर अपना असर पैदा कर लिया जब देखा कि बादशाह उनसे ख़ूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो क़ैद किये गए हैं क्या उनकी बात सुनी गई थी वह क्या कहते थे बादशाह ने कहा कि नहीं जब उन्होंने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे .गुस्सा आ गया शमऊन ने कहा कि अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाये देखें उनके पास क्या है चुनांचे वह दोनों बुलाये गए शमऊन ने उनसे दरियाफ़्त किया तुम्हें किसने भेजा है उन्होंने कहा उस अल्लाह ने जिसने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिसका कोई शरीक नहीं शमऊन ने कहा कि इसकी मुख़्तसर सिफ़त बयान करो उन्होंने कहा वह जो चाहता है करता है जो चाहता है हुक्म देता है शमऊन ने कहा तुम्हारी निशानी क्या है उन्होंने कहा जो बादशाह चाहे तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया उन्होंने दुआ़ की वह फ़ौरन बीना हो गया शमऊन ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब यह है कि तू अपने मअ़बूदों से कह कि वह भी ऐसा ही करके दिखायें ताकि तेरी और उनकी इज़्ज़त ज़ाहिर हो बादशाह ने शमऊन से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है हमारा मअ़बूद न देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके न बना सके फिर बादशाह ने उन दोनों हवारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मअ़बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की क़ुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आयें उन्होंने कहा हमारा मअ़बूद हर शय पर क़ादिर है बादशाह ने एक दहक़ान के लड़के को मंगाया जिसको मरे हुए सात दिन हो गए थे और जिस्म ख़राब हो चुका था बदबू फैल रही थी उनकी दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़िन्दा किया और वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि मैं मुशरिक मरा था मुझको जहन्नम के सात वादियों में दाख़िल किया गया मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक़सानदेह है ईमान लाओ और कहने लगा कि आसमान के दरवाज़े खुले और एक हसीन जवान मुझे नज़र आया जो उन तीनों शख़्सों की सिफ़ारिश करता है बादशाह ने कहा कि कौन तीन उसने कहा एक शमऊन और दो यह बादशाह को तअ़ज्जुब हुआ जब शमऊन ने देखा कि उसकी बात बादशाह पर असर कर गई तो उसने बादशाह को नसीहत की वह ईमान लाया और उसकी क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाये और अ़ज़ाबे इलाही से हलाक किये गए। (फ़ा16) यानी दो हवारी वहब ने कहा कि उनके नाम योहन्ना और बोलस थे और कअ़ब का क़ौल है कि सादिक़ व सुदूक़

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِیْ فَطَرَنِیْ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ یُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّیْ شَفَاعَتُهُمْ شَیْـًٔا وَّلَا یُنْقِذُوْنِ ۝ اِنِّیْٓ اِذًا

لَّفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝ اِنِّیْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ۝ قِیْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ یٰلَیْتَ قَوْمِیْ یَعْلَمُوْنَ ۝ بِمَا غَفَرَ لِیْ رَبِّیْ وَجَعَلَنِیْ مِنَ الْمُكْرَمِیْنَ ۝ وَمَآ اَنْزَلْنَا

عَلٰی قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِیْنَ ۝ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ۝ یٰحَسْرَةً عَلَی الْعِبَادِ ۚ مَا یَاْتِیْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ

اِلَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَیْهِمْ لَا یَرْجِعُوْنَ ۝ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِیْعٌ لَّدَیْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ وَاٰیَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ

الْمَیْتَةُ ۚۖ اَحْیَیْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ یَاْكُلُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِیْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِیْهَا مِنَ الْعُیُوْنِ ۝ لِیَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ

व मा लि–य ला अअ्बुदुल् लज़ी फ़–त़–रनी व इलैहि तुर्जअू न(22)अ–अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही आलि–ह–तन् इंय्युरिदनिर्–रह़्मानु बिज़ुर्रिल् ला तुग़्नि अ़न्नी शफ़ा–अ़तुहुम् शैअंव् व ला युन्क़िज़ून(23)इन्नी इज़ल् लफ़ी ज़लालिम् मुबीन(24)इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअू न(25) क़ीलद् ख़ुलिल्जन्न–त क़ा–ल यालै–त क़ौमी यअ्–लमून(26)बिमा ग़–फ़–र ली रब्बी व ज–अ़–लनी मिनल् मुक्रमीन(27)व मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही मिम्बअ़्दिही मिन् जुन्दिम् मिनस्समाइ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन(28)इन् कानत् इल्ला सै–ह़–तंव् वाह़ि–द–तन् फ़–इज़ा हुम् ख़ामिदून(29)या ह़स्–रतन् अ़लल् अ़िबादि मा यअ्तीहिम् मिर्–रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(30)अ–लम् यरौ कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिनल्कुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअू न(31)व इन् कुल्लुल लम्मा जमीअुल् लदैना मुह़्ज़रून(32)व आ–यतुल् लहुमुल् अर्ज़ुल्मै–ततु अह़्यैनाहा व अख़्–रज्ना मिन्हा ह़ब्बन् फ़मिन्हु यअ्कुलून(33)व ज–अ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव् व अअ़्नाबिंव् व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल् अ़ुयून(34)लि–यअ्कुलू मिन् स़–मरिही

और मुझे क्या है कि उसकी बन्दगी न करूं जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है।(22) (फ़ा27) क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहराऊँ (फ़ा28) कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न वह मुझे बचा सकें।(23) बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं।(24) (फ़ा29) मुक़र्रर मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो।(25) (फ़ा30) उससे फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो (फ़ा31) कहा किसी तरह मेरी क़ौम जानती।(26) जैसी मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया।(27) (फ़ा32) और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर न उतारा (फ़ा33) और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था।(28) वह तो बस एक ही चीख़ थी जभी वह बुझ कर रह गए।(29) (फ़ा34) और कहा गया कि हाय अफ़सोस उन बन्दों पर (फ़ा35) जब उनके पास कोई रसूल आता है तो उससे ठट्टा ही करते हैं।(30) क्या उन्होंने न देखा (फ़ा36) हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलाक फ़रमाईं कि वह अब उनकी तरफ़ पलटने वाले नहीं।(31) (फ़ा37) और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर लाए जायेंगे।(32) (फ़ा38) (रुकूअ़ 1) और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है (फ़ा39) हमने उसे ज़िन्दा किया (फ़ा40) और फिर उससे अनाज निकाला तो उसमें से खाते हैं।(33) और हमने उसमें (फ़ा41) बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हमने उसमें कुछ चश्मे बहाए।(34) कि उसके फलों में से खायें

(फ़ा27) यानी इब्तेदाए हस्ती से जिसकी हम पर नेअ़्मतें हैं और आख़िरकार भी उसी की तरफ़ रुजूअ़ करना है उस मालिके हक़ीक़ी की इबादत न करना क्या माना और उसकी निस्बत एतेराज़ कैसा हर शख़्स अपने वुजूद पर नज़र करके उसके हक़्क़े निअ़्मत व एहसान को पहचान सकता है। (फ़ा28) यानी क्या बुतों को मअ़्बूद बनाऊँ (फ़ा29) जब हबीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीहत आमेज़ कलाम किया तो वह लोग उन पर यकबारगी टूट पड़े और उन पर पत्थराव शुरू किया और पाँव से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला क़ब्र उनकी इन्ताकिया में है जब क़ौम ने उन पर हमला शुरू किया तो उन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के फ़रिस्तादों से बहुत जल्दी करके यह कहा (फ़ा30) यानी मेरे ईमान के शाहिद रहो जब वह क़त्ल हो चुके तो बतरीक़े इकराम (फ़ा31) जब वह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की निअ़्मतें देखीं। (फ़ा32) हबीब नज्जार ने यह तमन्ना की कि उनकी क़ौम को मालूम हो जाये कि अल्लाह तआ़ला ने हबीब की मग़फ़िरत की और इकराम **(बक़िया सफ़हा 744 पर)**

وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ سُبْحٰنَ الَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ

فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ لَهَآ

اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۴۱﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا

يَرْكَبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ

व मा अ़मि–लत्हु ऐदीहिम् अ–फ़ला यश्कुरून(35)सुब्हानल् लज़ी ख़–ल–क़ल् अज़्वा–ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल् अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्–लमून(36)व आ–यतुल् लहुमुल्लैलु नस्–लख़ु मिन्हुन्नहा–र फ़–इज़ा हुम् मुज़्लिमून(37)वश्शम्सु तजरी लिमुस्तक़र्रिल् लहा ज़ालि–क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल् अ़लीम(38)वल्क़–म–र क़द्दर्नाहु मनाज़ि–ल हत्ता आ़–द कल्–उ़र्जूनिल् क़दीम(39)लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल् क़–म–र व लल्लैलु साबिक़ुन्नहारि व कुल्लुन् फ़ी फ़–लकिंय्यस्बहून(40)व आ–यतुल् लहुम् अन्ना ह़–मल्ना ज़ुर्रिय्य–तहुम् फ़िल्फ़ुल्किल् मश्हून(41) व ख़–लक़्ना लहुम् मिम् मिस्लिही मा यर्कबून(42)व इन् न–शअ् नुग़्रिक़्हुम् फ़ला सरी–ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून(43)इल्ला रह्म–तम् मिन्ना व मताअ़न् इला ह़ीन(44)व इज़ा क़ी–ल लहुमुत्तक़ू मा बै–न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् ल–अ़ल्लकुम् तुर्–हमून(45)व मा तअ्तीहिम् मिन् आ–यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन(46)व इज़ा क़ी–ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र–ज़–क़कुमुल्लाहु क़ा–लल् लज़ी–न क–फ़रू लिल्लज़ी–न

और यह उनके हाथ के बनाए नहीं तो क्या हक़ न मानेंगे।(35) (फ़ा42) पाकी है उसे जिसने सब जोड़े बनाए (फ़ा43) उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है (फ़ा44) और ख़ुद उनसे (फ़ा45) और उन चीज़ों से जिनकी उन्हें ख़बर नहीं।(36) (फ़ा46) और उनके लिए एक निशानी (फ़ा47) रात है हम उस पर से दिन खींच लेते हैं (फ़ा48) जभी वह अंधेरे में हैं।(37) और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिए (फ़ा49) यह हुक्म है ज़बरदस्त इल्म वाले का।(38) (फ़ा50) और चाँद के लिए हमने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं (फ़ा51) यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाल।(39) (फ़ा52) सूरज को नहीं पहुंचता कि चाँद को पकड़ ले (फ़ा53) और न रात दिन पर सबक़त ले जाए (फ़ा54) और हर एक एक घेरे में पैर रहा है।(40) और उनके लिए एक निशानी यह है कि उन्हें उनके बुज़ुर्गों की पीठ में हमने भरी कश्ती में सवार किया।(41) (फ़ा55) और उनके लिए वैसी ही कश्तियाँ बना दीं जिन पर सवार होते हैं।(42) और हम चाहें तो उन्हें डूबो दें (फ़ा56) तो न कोई उनकी फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वह बचाए जायें।(43) मगर हमारी तरफ़ की रहमत और एक वक़्त तक बरतने देना।(44) (फ़ा57) और जब उनसे फ़रमाया जाता है डरो तुम उससे जो तुम्हारे सामने है (फ़ा58) और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है (फ़ा59) इस उम्मीद पर कि तुम पर मेह्र हो तो मुंह फेर लेते हैं।(45) और जब कभी उनके रब की निशानियों से कोई निशानी उनके पास आती है तो उससे मुंह ही फेर लेते हैं।(46) (फ़ा60) और जब उनसे फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उसकी राह में ख़र्च करो तो काफ़िर मुसलमानों के लिए कहते हैं कि क्या हम

(फ़ा42) और अल्लाह तआ़ला की नेअ्मतों का शुक्र बजा न लायेंगे। (फ़ा43) यानी असनाफ़ व अक़साम। (फ़ा44) ग़ल्ले फल वग़ैरह। (फ़ा45) औलाद ज़ुकूर व इनास। (फ़ा46) बर्रो बहर की अ़जीबो ग़रीब मख़्लूक़ात में से जिसकी इन्सानों को ख़बर भी नहीं है। (फ़ा47) हमारी क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करने वाली। (फ़ा48) तो बिल्कुल तारीक रह जाती है जिस तरह काले भूजंगे हबशी का लिबास उतार लिया जाये तो फिर वह सियाह ही सियाह रह जाता है इससे मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन के दर्मियान की फ़िज़ा असल में तारीक है आफ़ताब की रौशनी उसके लिए एक सफ़ेद लिबास की तरह है जब आफ़ताब ग़ुरूब हो जाता है तो यह लिबास उतर जाता है और फ़िज़ा अपनी असली हालत में तारीक रह जाती है। (फ़ा49) यानी जहां तक उसकी सैर की निहायत मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वह रोज़े क़ियामत है उस वक़्त तक वह चलता ही रहेगा **(बक़िया सफ़हा 744 पर)**

آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا
يَا وَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾
فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى
الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي

आ–मनू अनुत्‌इमु मल्लौ यशाउल्लाहु अत्‌अ–महू इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़ला–लिम् मुबीन(47)व यकूलू–न मता हाज़लवअ्‌दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(48)मा यन्ज़ुरू–न इल्ला सै–हतंव् वाहि–द–तन् तअ्‌खुज़ुहुम् व हुम् यखि़स्सिमून(49)फ़ला यस्ततीऊ–न तौसिय–तंव् व ला इला अह्‌लिहिम् यर्‌जिऊ–न(50)व नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि फ़इज़ा हुम् मिनल्–अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून(51) क़ालू यावै–लना मम्ब–अ़–सना मिम् मर्–क़दिना हाज़ा मा व अ़–दर्रह्‌मानु व स–द–क़ल् मुर्–सलून(52) इन् कानत् इल्ला सै–हतंव् वाहि–द–तन् फ़इज़ा हुम् जमीउल् लदैना मुह्‌ज़रून(53)फ़ल्यौ–म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव् व ला तुज्ज़ौ–न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्‌–मलून(54)इन्–न अस्हाबल् जन्नतिल् यौ–म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून(55)हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़–लल् अराइकि मुत्तकिऊन(56) लहुम् फ़ीहा फ़ाकि–हतुंव् व लहुम् मा यद्–दऊ–न(57)सलामुन् क़ौलम् मिर्रब्बिर् रहीम(58)वम्ताज़ुल् यौ–म अय्युहल् मुज्‌रिमून(59)अ–लम् अअ्‌हद् इलैकुम् या बनी

उसे खिलायें जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता (फ़ा61) तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में।(47) और कहते हैं कब आएगा यह वादा (फ़ा62) अगर तुम सच्चे हो।(48) (फ़ा63) राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की (फ़ा64) कि उन्हें आ लेगी जब वह दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे।(49) (फ़ा65) तो न वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जायें।(50) (फ़ा66) (रुकूअ़ 2) और फूंका जाएगा सूर (फ़ा67) जभी वह क़ब्रों से (फ़ा68) अपने रब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे।(51) कहेंगे हाय हमारी ख़राबी किसने हमें सोते से जगा दिया (फ़ा69) यह है वह जिसका रहमान ने वादा दिया था और रसूलों ने हक़ फ़रमाया।(52) (फ़ा70) वह तो न होगी मगर एक चिंघाड़ (फ़ा71) जभी वह सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जायेंगे।(53) (फ़ा72) तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का।(54) बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं।(55) (फ़ा73) वह और उनकी बीबियाँ सायों में हैं तख़्तों पर तकिया लगाए।(56) उनके लिए उसमें मेवा है और उनके लिए है उसमें जो मांगें।(57) उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ।(58) (फ़ा74) और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो।(59) (फ़ा75) ऐ औलादे आदम क्या मैंने तुम से अ़हद न लिया था (फ़ा76)

(फ़ा61) **शाने नुज़ूलः** यह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई जिन से मुसलमानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वह हिस्सा मिस्कीनों पर ख़र्च करो जो तुमने बज़ोऊमे ख़ुद अल्लाह तआ़ला के लिए निकाला है इस पर उन्होंने कहा कि क्या हम उनको खिलायें जिन्हें अल्लाह तआ़ला खिलाना चाहता तो खिला देता मतलब यह था कि ख़ुदा ही को मिस्कीनों का मुहताज रखना मन्ज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उसकी मशीयत के ख़िलाफ़ होगा यह बात उन्होंने बख़ीली और कन्ज़ूसी से बतौरे तमस्ख़ुर के कही थी और निहायत बातिल थी क्योंकि दुनिया दारुलइम्तेहान है फ़क़ीरी और अमीरी दोनों आज़माईशें हैं फ़क़ीर की आज़माइश सब्र से और ग़नी की इनफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह से। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवीहै कि मक्का मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उनसे कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदक़ा दो तो कहते थे हरगिज़ नहीं यह कैसे हो सकता है कि जिसको अल्लाह तआ़ला मुहताज करे हम खिलायें। (फ़ा62) बअ़्स व क़ियामत का। (फ़ा63) अपने दावे में उनका यह ख़िताब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब से था अल्लाह तआ़ला उनके हक़ में फ़रमाता है। (फ़ा64) यानी सूर के पहले नफ़ख़ा की जो हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम फूंकेंगे। (फ़ा65) ख़रीद व फ़रोख़्त में और खाने पीने में और बाज़ारों और मजलिसों में दुनिया के कामों में कि अचानक क़ियामत हो जाएगी। हदीस शरीफ़ में है नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़रीदार और बाएअ़ के दर्मियान कपड़ा फैला होगा न सौदा तमाम होने पाएगा न कपड़ा लिपट सकेगा कि **(बक़िया सफ़हा 744 पर)**

اَدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ
مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ

आ–द–म अल्ला तअ्बुदुश्शैता–न इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीनुंव्–(60)व अनिअ्बुदूनी हाज़ा सि़रातुम् मुस्तक़ीम(61)व ल–क़द अज़ल्–ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसी़रन् अ–फ़–लम् तकूनू तअ्क़िलून(62)हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू–अ़दून(63)इस्लौहल् यौ–म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून(64) अल्यौ–म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वा–हिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्–हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून(65)व लौ नशाउ ल–त–मस्ना अ़ला अअ्युनिहिम् फ़स्त–बक़ुस् सि़रा–त फ़–अन्ना युब्सि़रून (66)व लौ नशाउ ल–म–सख़्नाहुम् अ़ला मका–नतिहिम् फ़मस्तताअू मुज़िय्यंव् व ला यर्जिअून(67) व मन् नुअ़म्मिर्हु नु–नक्किस्हु फ़िल्–ख़ल्क़ि अ–फ़ला यअ्क़िलून(68)व मा अ़ल्लम्ना–हुश् शिअ्–र व मा यम्बग़ी लहू इन् हु–व इल्ला ज़िक्रुंव् व क़ुरआनुम् मुबीनुल्(69)लियुन्ज़ि–र मन् का–न हय्यंव् व यहिक़्क़ल् क़ौलु अ़–लल्काफ़िरीन(70)अ–व लम् यरौ अन्ना ख़–लक़्ना लहुम् मिम्मा अ़मिलत् ऐदीना अन्आ़मन् फ़हुम् लहा मालिकून(71)व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम्

कि शैतान को न पूजना (फ़ा77) बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(60) और मेरी बन्दगी करना (फ़ा78) यह सीधी राह है।(61) और बेशक उसने तुम में से बहुत सी ख़िलक़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी।(62) (फ़ा79) यह है वह जहन्नम जिसका तुम से वादा था।(63) आज इसमें जाओ बदला अपने कुफ़्र का।(64) आज हम उनके मुंहों पर मोहर कर देंगे (फ़ा80) और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पाँव उनके किये की गवाही देंगे।(65) (फ़ा81) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखें मिटा देते (फ़ा82) फिर लपक कर रस्ते की तरफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता।(66) (फ़ा83) और अगर हम चाहते तो उनके घर बैठे उनकी सूरतें बदल देते (फ़ा84) न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते।(67) (फ़ा85) (रुकूअ़ 3) और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें (फ़ा86) तो क्या वह समझते नहीं।(68) (फ़ा87) और हम ने उनको शेअ़र कहना न सिखाया (फ़ा88) और न वह उनकी शान के लाइक़ है वह तो नहीं मगर नसीहत और रौशन क़ुरआन।(69) (फ़ा89) कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो (फ़ा90) और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए।(70) (फ़ा91) और क्या उन्होंने न देखा कि हमने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उनके लिए पैदा किये तो यह उनके मालिक हैं।(71) और उन्हें उनके लिए नर्म कर दिया (फ़ा92) तो किसी पर सवार होते

(फ़ा77) उसकी फ़रमांबरदारी न करना। (फ़ा78) और किसी को इबादत में मेरा शरीक न करना। (फ़ा79) कि तुम उसकी अ़दावत और गुमराह गरी को समझते और जब वह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उनसे कहा जाएगा। (फ़ा80) कि वह बोल न सकें और यह मुहर करना उनके यह कहने के सबब होगा कि हम मुशरिक न थे न हमने रसूलों को झुठलाया। (फ़ा81) उनके आज़ा बोल उठेंगे और जो कुछ उनसे सादिर हुआ है सब बयान कर देंगे। (फ़ा82) कि निशान भी बाक़ी न रहता इस तरह का अन्धा कर देते। (फ़ा83) लेकिन हमने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्ल व करम से निअ़मते बसर उनके पास बाक़ी रखी तो अब उन पर हक़ यह है कि वह शुक्र गुज़ारी करें कुफ़्र न करें (फ़ा84) और उन्हें बन्दर या सुअर बना देते (फ़ा85) और उनके जुर्म उसके मुस्तदई थे लेकिन हमने अपनी रहमत व हिकमत के हस्बे इक़्तेज़ा अ़ज़ाब में जल्दी न की और उनके लिए मोहलत रखी (फ़ा86) कि वह बचपन के से ज़ोअ़फ़ व नातवानी की तरफ़ वापस होने लगे और दम बदम उसकी ताक़तें कुव्वतें और जिस्म और अक़्ल घटने लगे (फ़ा87) कि जो अहवाल के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन के ज़ोअ़फ़ व नातवानी और सिग़रे जिस्म व नादानी के बाद शबाब की कुव्वतें व तवानाई और जिस्म क़वी व दानाई अ़ता फ़रमाता है और फिर किब्र सिन और आख़िर उम्र में उसी क़वी हैकल जवान को दुबला और हक़ीर कर देता है अब न वह जिस्म बाक़ी **(बक़िया सफ़हा 744 पर)**

وَمِنْهَا يَأْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ڲ بَلٰي ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَـيْـــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

व मिन्हा यअ्कुलून(72)व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु अ-फ़ला यश्कुरून(73)वत्तख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल् लअ़ल्लहुम् युन्सरून(74)ला यस्ततीअू-न नस्रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रून(75)फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् इन्ना नअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्लिनून(76) अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम् मुबीन(77)व ज़-र-ब लना म-स-लंव् व नसि-य ख़ल्क़हू क़ा-ल मंय्युह्यिल् अ़िज़ा-म व हि-य रमीम(78)क़ुल् युह्-यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन् व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अ़लीमु नि(79)-ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुम् मिनश् श-जरिल् अख़्-ज़रि नारन् फ़इज़ा अन्तुम् मिन्हु तूक़िदून(80)अ-व लैसल् लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् बला व हुवल्ख़ल्लाक़ुल अ़लीम(81)इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून(82)फ़सुब्हानल् लज़ी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव् व इलैहि तुर्जअून(83)

और किसी को खाते हैं।(72) और उनके लिए उनमें कई तरह के नफ़े (फ़ा93) और पीने की चीज़ें हैं (फ़ा94) तो क्या शुक्र न करेंगे।(73) (फ़ा95) और उन्होंने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये (फ़ा96) कि शायद उनकी मदद हो।(74) (फ़ा97) वह उनकी मदद नहीं कर सकते (फ़ा98) और वह उनके लश्कर सब गिरिफ़्तार हाज़िर आयेंगे।(75) (फ़ा99) तो तुम उनकी बात का ग़म न करो (फ़ा100) बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं।(76) (फ़ा101) और क्या आदमी ने न देखा कि हमने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वह सरीह झगड़ालू है।(77) (फ़ा102) और हमारे लिए कहावत कहता है (फ़ा103) और अपनी पैदाइश भूल गया (फ़ा104) बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वह बिल्कुल गल गईं।(78) तुम फ़रमाओ उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश का इल्म है।(79) (फ़ा105) जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उससे सुलगाते हो।(80) (फ़ा106) और क्या वह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए उन जैसे और नहीं बना सकता (फ़ा107) क्यों नहीं (फ़ा108) और वही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता।(81) उस का काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे (फ़ा109) तो उससे फ़रमाए होजा वह फ़ौरन हो जाती है।(82) (फ़ा110) तो पाकी है उसे जिसके हाथ हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे।(83) (फ़ा111) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा93) और फ़ाइदे हैं कि उनकी खालों बालों और ऊन वग़ैरह काम में लाते हैं (फ़ा94) दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें दही मट्ठा वग़ैरह (फ़ा95) अल्लाह तआ़ला की उन नेअ़मतों का (फ़ा96) यानी बुतों को पूजने लगे (फ़ा97) और मुसीबत के वक़्त काम आयें और अ़ज़ाब से बचायें और ऐसा मुमकिन नहीं (फ़ा98) क्योंकि जमाद बेजान बे क़ुदरत बे शुऊर हैं (फ़ा99) यानी काफ़िरों के साथ उनके बुत भी गिरिफ़्तार करके हाज़िर किये जायेंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे बुत भी और उनके पुजारी भी (फ़ा100) यह ख़िताब है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ार की तकज़ीब व इंकार से और उनकी ईज़ाओं और जफ़ाकारियों से आप ग़मगीन न हों (फ़ा101) हम उन्हें उनके किरदार की जज़ा देंगे (फ़ा102) शाने नुज़ूलः यह आयत आ़स बिन वाइल या अबू जहल और बक़ौल मशहूर उबय बिन ख़लफ़ हमजी के हक़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बअ़स में यानी मरने के बाद उठने के इन्कार में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बहस व तकरार करने आया था उसके हाथ में एक गली हुई हड्डी थी उसको तोड़ता जाता था और सय्यदे (बक़िया सफ़हा 745 पर)

سُورَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا
بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖۗ﴿۸﴾ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾ اِلَّا مَنْ
خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿۱۰﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۪﴿۱۲﴾ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا
يَذْكُرُوْنَ ۪﴿۱۳﴾ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۪﴿۱۴﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚۖ﴿۱۵﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ﴿۱۷﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ

सूरतुस्साफ़्फ़ाति

(मक्की है इसमें 182 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न्(1)फ़ज़्ज़ा–जिराति ज़ज्रन्(2)फ़त्तालियाति ज़िक्रन्(3)इन्–न इला–हकुम् लवाहिद(4)रब्बुस्समावाति वलअर्ज़ि व मा बै–नहुमा व रब्बुल्–मशारिक़(5)इन्ना ज़य्यन्नस् समा–अद्दुन्या बिज़ी–नतिनिल् कवाकिब(6)व हिफ़्ज़म् मिन् कुल्लि शैतानिम् मारिद(7)ला यस्सम्मऊ–न इलल्–म–ल–इल् अअ्ला व युक़्ज़फ़ू–न मिन् कुल्लि जानिब(8)दुहूरंव् व लहुम् अज़ाबुंव् वासिब (9)इल्ला मन् ख़ति–फ़ल् ख़त्फ़–त फ़–अत्ब–अ़हू शिहाबुन् साक़िब(10)स्तफ़्तिहिम् अहुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम् मन् ख़–लक़्ना इन्ना ख़–लक़्नाहुम् मिन् तीनिल् लाज़िब(11)बल् अ़जिब्–त व यस्ख़रून (12)व इज़ा ज़ुक्किरू ला यज़्कुरून(13)व इज़ा रऔ आ–य तंय्यस्तस्ख़िरून(14)व क़ालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन(15)अ–इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव् व अ़िज़ामन् अ–इन्ना ल–मब्अूसून (16)अ–व आबाउ–नल् अव्वलून(17)क़ुल् न–अ़म् व अन्तुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी कि बाक़ाइदा सफ़ बांधें।(1) (फ़ा2) फिर उनकी कि झिड़क कर चलायें।(2) (फ़ा3) फिर उन जमाअ़तों की कि क़ुरआन पढ़ें।(3) बेशक तुम्हारा मअ़बूद ज़रूर एक है।(4) मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है और मालिक मश्रिकों का(5) (फ़ा4) और बेशक हम ने नीचे के आसमान (फ़ा5) तारों के सिंगार से आरास्ता किया।(6) और निगाह रखने को हर शैतान सरकश से।(7) (फ़ा6) आ़लमे बाला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते (फ़ा7) और उन पर हर तरफ़ से मार फेंक होती है।(8) (फ़ा8) उन्हें भगाने को और उनके लिए (फ़ा9) हमेशा का अ़ज़ाब।(9) मगर जो एक आध बार उचक ले चला (फ़ा10) तो रौशन अंगारा उसके पीछे लगा।(10) (फ़ा11) तो उनसे पूछो (फ़ा12) क्या उनकी पैदाइश ज़्यादा मज़बूत है या हमारी और मख़्लूक़ आसमानों और फ़रिश्तों वग़ैरह की (फ़ा13) बेशक हमने उनको चिपकती मिट्टी से बनाया।(11) (फ़ा14) बल्कि तुम्हें अचंभा आया (फ़ा15) और वह हंसी करते हैं।(12) (फ़ा16) और समझाए नहीं समझते।(13) और जब कोई निशानी देखते हैं (फ़ा17) ठट्टा करते हैं।(14) और कहते हैं यह तो नहीं मगर खुला जादू।(15) क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जायेंगे क्या हम ज़रूर उठाए जायेंगे।(16) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी।(17) (फ़ा18) तुम फ़रमाओ हां यूं कि

(फ़ा1) सूरह वस्साफ़्फ़ात मक्की है इसमें पांच रुकूअ़ 182 आयतें और 860 कलिमे और 3826 हरफ़ हैं। (फ़ा2) इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गरोहों की या तो मुराद इससे मलाइका के गरोह हैं जो नमाज़ियों की तरह सफ़ बस्ता होकर उसके हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं या उलमाए दीन के गरोह जो तहज्जुद और तमाम नमाज़ों में सफ़ें बांध कर मसरूफ़े इबादत रहते हैं या ग़ाज़ियों के गरोह जो राहे खुदा में सफ़ें बांध कर दुश्मनाने हक़ के मुक़ाबिल होते हैं। (मदारिक) (फ़ा3) पहली तक़दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाइका हैं जो अब्र पर मुक़र्रर हैं और उसको हुक्म देकर चलाते है। और दूसरी तक़दीर पर वह उलमा जो वअ़ज़ व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं तीसरी सूरत में **(बक़िया सफ़हा 745 पर)**

دَاخِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ یَنْظُرُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا یٰوَیْلَنَا هٰذَا یَوْمُ الدِّیْنِ ﴿۲۰﴾ هٰذَا یَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۱﴾ اُحْشُرُوا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا
وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا یَعْبُدُوْنَ ﴿۲۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰی صِرَاطِ الْجَحِیْمِ ﴿۲۳﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿۲۴﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ بَلْ هُمُ الْیَوْمَ
مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰی بَعْضٍ یَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْیَمِیْنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۲۹﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَیْكُمْ مِّنْ
سُلْطٰنٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِیْنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَیْنَا قَوْلُ رَبِّنَاۤ اِنَّا لَذَآىِٕقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغْوَیْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِیْنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمْ یَوْمَىِٕذٍ فِی الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ
نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۳۴﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَیَقُوْلُوْنَ اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳۷﴾

दाख़िरून(18)फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्रतुंव् वाहि-दतुन् फ़-इज़ा हुम् यन्जुरून(19)व क़ालू या वै-लना हाज़ा यौमुद्दीन(20)हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल् लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून(21) उह्शुरुल् लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वा-जहुम् व मा कानू यअ्बुदून(22)मिन् दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल् जहीम(23)व क़िफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्ऊलून(24)मा लकुम् ला तना-सरून(25) बल् हुमुल्यौ-म मुस्तस्लिमून(26)व अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अला बअ्ज़िंय्य-तसा-अलून(27)क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्तू-नना अनिल्यमीन(28)क़ालू बल् लम् तकूनू मुअमिनीन(29)व मा का-न लना अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन(30)फ़-हक़्-क़ अलैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ाइक़ून (31)फ़-अग़्वैना-कुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन(32)फ़-इन्नहुम् यौ-मइज़िन् फ़िल्अज़ाबि मुश्तरिकून(33)इन्ना कज़ालि-क नफ़्अलु बिल्-मुज्रिमीन(34)इन्नहुम् कानू इज़ा क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून(35)व यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-तारिकू आलि-हतिना लिशाअिरिम् मज्नून(36)बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्-द-क़ल् मुर्-सलीन(37)

ज़लील होके।(18) तो वह (फ़ा19) तो एक ही झिड़क है (फ़ा20) जभी वह (फ़ा21) देखने लगेंगे।(19) और कहेंगे हाय हमारी ख़राबी उनसे कहा जाएगा यह इन्साफ़ का दिन है।(20) (फ़ा22) यह है वह फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुठलाते थे।(21) (फ़ा23) (रुकूअ़ 5) हांको ज़ालिमों और उनके जोड़ों को (फ़ा24) और जो कुछ पूजते थे।(22) अल्लाह के सिवा उन सब को राहे दोज़ख़ की तरफ़।(23) और उन्हें ठहराओ (फ़ा25) उनसे पूछना है।(24) (फ़ा26) तुम्हें क्या हुआ एक दूसरे की मदद क्यों नहीं करते।(25) (फ़ा27) बल्कि वह आज गर्दन डाले हैं।(26) (फ़ा28) और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया आपस में पूछते हुए।(27) बोले (फ़ा29) तुम हमारे दाहिनी तरफ़ से बहकाने आते थे।(28) (फ़ा30) जवाब देंगे तुम ख़ुद ही ईमान न रखते थे।(29) (फ़ा31) और हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था (फ़ा32) बल्कि तुम सरकश लोग थे।(30) तो साबित हो गई हम पर हमारे रब की बात (फ़ा33) हमें ज़रूर चखना है।(31) (फ़ा34) तो हमने तुम्हें गुमराह किया कि हम ख़ुद गुमराह थे।(32) तो उस दिन (फ़ा35) वह सबके सब अ़ज़ाब में शरीक हैं।(33) (फ़ा36) मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।(34) बेशक जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊँचे खींचते थे।(35) (फ़ा37) और कहते थे क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शायर के कहने से। (36) (फ़ा38) बल्कि वह तो हक़ लाए हैं और उन्होंने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई।(37) (फ़ा39)

(फ़ा19) यानी बअ़्स (फ़ा20) एक ही हौलनाक आवाज़ है नफ़ख़ए सानिया की (फ़ा21) ज़िन्दा होकर अपने अफ़आ़ल और पेश आने वाले अहवाल (फ़ा22) यानी फ़रिश्ते कहेंगे कि यह इन्साफ़ का दिन है यह हिसाब व जज़ा का दिन है। (फ़ा23) दुनिया में और फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा। (फ़ा24) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं और उनके जोड़ों से मुराद उनके शयातीन जो दुनिया में उनके जलीस व क़रीन रहते थे हर एक काफ़िर अपने शैतान के साथ एक ही ज़न्जीर में जकड़ दिया जाएगा और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अश्बाह व अमसाल हैं यानी हर काफ़िर अपने ही क़िस्म के कुफ़्फ़ार के साथ हांका जाएगा बुत परस्त बुत परस्तों के साथ आतिश परस्त आतिश परस्तों के साथ व अ़ला हाज़ल क़ियास (फ़ा25) सिरात के पास। (फ़ा26) हदीस शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उससे न पूछ ली जायें एक उसकी उम्र कि किस काम में गुज़री दूसरे उसका इल्म कि उस पर क्या अ़मल **(बक़िया सफ़हा 746 पर)**

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ۝
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ۝ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ۝ وَعِندَهُمْ
قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَآءَلُونَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَئِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَآءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ

इन्नकुम् लज़ाइकुल् अ़ज़ाबिल् अलीम(38)व मा तुज्ज़ौ–न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्–मलून(39)इल्ला अ़िबादल्लाहिल् मुख़्–लसीन(40)उलाइ–क लहुम् रिज़्कुम् मअ्लूम(41)फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून (42)फ़ी जन्नातिन् नअ़ीम (43)अ़ला सुरुरिम् मु–तक़ाबिलीन(44)युताफु अ़लैहिम् बिकअ्सिम् मिम् मअ़ीनिम्(45)बैज़ा–अ लज़्ज़तिल् लिश्शारिबीन(46)ला फ़ीहा ग़ौलुंव् व ला हुम् अ़न्हा युन्ज़फून(47) व अ़िन्दहुम् क़ासिरातुत् तरफ़ि अ़ीनुन्(48)क–अन्नहुन्–न बैज़ुम् मक्नून(49)फ़–अक़्ब–ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्–तसा–अलून(50)क़ा–ल क़ाइलुम् मिन्हुम् इन्नी का–न ली क़रीनुंय्–(51) –यकूलु अइन्न–क लमिनल् मुसद्दिक़ीन(52)अ–इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव् व अ़िज़ामन् अ–इन्ना ल–मदीनून (53)क़ा–ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअून(54)फत्त–ल–अ फ़–रआहु फ़ी सवाइल् जहीम(55) क़ा–ल तल्लाहि इन् कित्–त लतुर्दीनि(56)व लौ ला निअ्–मतु रब्बी लकुन्तु मिनल् मुह्ज़रीन (57)अ–फ़मा नह्नु बि–मय्यितीन(58)इल्ला मौ–त–तनल् ऊला व मा नह्नु बिमुअ़ज़्– ज़बीन (59)इन्–न हाज़ा लहुवल् फ़ौज़ुल्

बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है।(38) तो तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का।(39) (फ़ा40) मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं।(40) (फ़ा41) उनके लिए वह रोज़ी है जो हमारे इल्म में है।(41) मेवे (फ़ा42) और उनकी इज़्ज़त होगी।(42) चैन के बाग़ों में।(43) तख़्तों पर होंगे आमने सामने।(44) (फ़ा43) उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का।(45) (फ़ा44) सफ़ेद रंग (फ़ा45) पीने वालों के लिए लज़्ज़त।(46) (फ़ा46) न उसमें खुमार है (फ़ा47) और न उससे उनका सर फिरे।(47) (फ़ा48) और उनके पास हैं जो शौहरों के सिवा दूसरी तरफ़ आँख उठा कर न देखेंगी।(48) (फ़ा49) बड़ी आंखों वालियां गोया वह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए।(49) (फ़ा50) तो उनमें (फ़ा51) एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया पूछते हुए।(50) (फ़ा52) उनमें से कहने वाला बोला मेरा एक हम-नशीन था।(51) (फ़ा53) मुझ से कहा करता क्या तुम इसे सच मानते हो।(52) (फ़ा54) क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जायेंगे तो क्या हमें जज़ा सज़ा दी जाएगी।(53) (फ़ा55) कहा क्या तुम झांक कर देखोगे।(54) (फ़ा56) फिर झांका तो उसे बीच भड़कती आग में देखा।(55) (फ़ा57) कहा ख़ुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे।(56) (फ़ा58) और मेरा रब फ़ज़्ल न करे (फ़ा59) तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता।(57) (फ़ा60) तो क्या हमें मरना नहीं।(58) मगर हमारी पहली मौत (फ़ा61) और हम पर अ़ज़ाब न होगा।(59) (फ़ा62) बेशक यही बड़ी

(फ़ा40) उस शिर्क और तकज़ीब का जो दुनिया में कर आये हो। (फ़ा41) ईमान और इख़्लास वाले। (फ़ा42) और नफ़ीस व लज़ीज़ निअ्मतें खुश ज़ाइक़ा खुशबूदार और खुश मन्ज़र। (फ़ा43) एक दूसरे से मानूस और मसरूर (फ़ा44) जिसकी पाकीज़ा नहरें निगाहों के सामने जारी होंगी। (फ़ा45) दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद (फ़ा46) बख़िलाफ़ दुनिया की शराब के जो बदबूदार और बद ज़ाइक़ा होती है और पीने वाला उसको पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है। (फ़ा47) जिससे अ़क़्ल में ख़लल आये। (फ़ा48) बख़िलाफ़ दुनिया की शराब के जिसमें बहुत से फ़सादात और ऐब हैं उससे पेट में भी दर्द होता है सर में भी पेशाब में भी तकलीफ़ हो जाती है तबीअ़त मालिश करती है क़य आती है सर चकराता है अ़क़्ल ठिकाने नहीं रहती (फ़ा49) कि उसके नज़दीक उसका शौहर ही साहबे हुस्न और प्यारा है। (फ़ा50) गर्द व ग़ुबार से पाक साफ़ दिलकश रंग। (फ़ा51) यानी अहले जन्नत में से। (फ़ा52) कि दुनिया में क्या हालात व वाक़िआत पेश आये। (फ़ा53) दुनिया में जो मरने के बाद उठने का मुन्किर **(बक़िया सफ़हा 746 पर)**

الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُونَ ۝ اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِ۟لَى

الْجَحِيْمِ ۝ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۝ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

अ़ज़ीम(60)लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ्-मलिल् आमिलून(61)अज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन् अम् श-ज रतुज़्-ज़क़्क़ूम(62)इन्ना ज-अ़ल्नाहा फ़ित्-न-तल् लिज़्ज़ालिमीन(63)इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फ़ी अस्लिल् जहीम(64)तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन(65)फ़-इन्नहुम् लआकिलू-न मिन्हा फ़मालिऊ-न मिन्हल्बुतून(66)सुम्-म इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम् मिन् ह़मीम(67)सुम्-म इन्-न मर्जि-अ़हुम् ल-इलल् जहीम(68)इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन(69)फ़हुम् अ़ला आसारिहिम् युह्रअू-न(70)व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्-लहुम् अक्सरुल् अव्वलीन(71)व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन(72)फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुन्ज़रीन(73)इल्ला अ़िबादल्लाहिल् मुख़्लसीन(74) व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ्मल् मुजीबून(75)व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल् अ़ज़ीम(76)व ज-अ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल् बाक़ीन(77)व त-रक्ना अ़लैहि फ़िल् आख़िरीन(78) सलामुन् अ़ला नूहिन् फ़िल् आ़-लमीन(79)इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(80)इन्नहू मिन् अ़िबादिनल् मुअमिनीन(81)सुम्-म अग्-रक़्नल्

कामयाबी है।(60) ऐसी ही बात के लिए कामियों को काम करना चाहिये।(61) तो यह मेहमानी भली (फ़ा63) या थूहड़ का पेड़?(62) (फ़ा64) बेशक हमने उसे ज़ालिमों की जांच किया है।(63) (फ़ा65) बेशक वह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है।(64) (फ़ा66) उसका शगूफ़ा जैसे देवों के सर।(65) (फ़ा67) फिर बेशक वह उसमें से खायेंगे (फ़ा68) फिर उस से पेट भरेंगे।(66) फिर बेशक उनके लिए उस पर खौलते पानी की मिलौनी है।(67) (फ़ा69) फिर उनकी बाज़गश्त ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है।(68)(फ़ा70)बेशक उन्होंने अपने बाप दादा गुमराह पाए।(69) तो वह उन्हीं के निशाने क़दम पर दौड़े जाते हैं।(70) (फ़ा71) और बेशक उनसे पहले बहुत से अगले गुमराह हुए।(71) (फ़ा72) और बेशक हमने उनमें डर सुनाने वाले भेजे।(72) (फ़ा73) तो देखो डराए गयों का कैसा अंजाम हुआ।(73) (फ़ा74) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।(74) (फ़ा75) (रुकूअ़ 6) और बेशक हमें नूह ने पुकारा (फ़ा76) तो हम क्या ही अच्छे क़बूल फ़रमाने वाले।(75) (फ़ा77) और हमने उसे और उसके घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से नजात दी।(76) और हमने उसी की औलाद बाक़ी रखी।(77) (फ़ा78) और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी।(78) (फ़ा79) नूह पर सलाम हो जहान वालों में।(79) (फ़ा80) बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(80)बेशक वह हमारे आला दर्जा के कामिलुल ईमान बन्दों में है।(81) फिर हमने दूसरों को

(फ़ा63) यानी जन्नती नेअ़्मतें और लज़्ज़तें और वहां के नफ़ीस व लतीफ़ मआकिल व मशारिब और दायमी ऐश और बे निहायत राहत व सुरूर। (फ़ा64) निहायत तल्ख़ इन्तेहा का बदबूदार हद दर्जा का बद मज़ा सख़्त नागवार जिससे दोज़ख़ियों की मेज़बानी की जाएगी और उनको उसके खाने पर मजबूर किया जाएगा। (फ़ा65) कि दुनिया में काफ़िर उसका इंकार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा। (फ़ा66) और उसकी शाख़ें जहन्नम के दरकात में पहुंचती हैं। (फ़ा67) यानी निहायत बद हैयत और क़बीहुलमन्ज़र। (फ़ा68) शिद्दत की भूख से मजबूर होकर। (फ़ा69) यानी जहन्नमी थूहड़ से उनके पेट भरेंगे वह जलता होगा पेटों को जलाएगा उसकी सोज़िश से प्यास का ग़लबा होगा और मुद्दत तक तो प्यास की तकलीफ़ में रखे जायेंगे फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गरम खौलता पानी उसकी गरमी और सोज़िश थूहड़ की गरमी और जलन से मिलकर और तकलीफ़ व बेचैनी बढ़ाएगी। (फ़ा70) क्योंकि ज़क़्क़ूम खिलाने और गरम पानी पिलाने के लिए उनको अपने दरकात से दूसरे दरकात में लेजाया जाएगा उसके बाद फिर अपने दरकात की तरफ़ लौटाये जायेंगे उसके बाद **(बक़िया सफ़्हा 746 पर)**

الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۝ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ۝ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ۝
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ۝ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ۝ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ۝
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ۝ وَقَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ
السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۚ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَسْلَمَا

आ–ख़रीन(82)व इन्–न मिन् शी–अ़तिही ल–इब्राहीम(83)इज़् जा–अ रब्बहू बिक़ल्बिन् सलीम(84) इज़् क़ा–ल लि–अबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्बुदून(85)अ–इफ़्कन् आलि–ह–तन् दूनल्लाहि तुरीदून (86)फ़मा ज़न्नुकुम् बि–रब्बिल् आ़–लमीन(87)फ़–न–ज़–र नज़्र–तन् फ़िन्नुजूमि(88)फ़क़ा–ल इन्नी सक़ीम (89)फ़–त–वल्लौ अ़न्हु मुद्बिरीन(90)फ़रा–ग़ इला आलि–हतिहिम् फ़क़ा–ल अला तअ्कुलून(91)मा लकुम् ला तन्तिक़ून(92)फ़रा–ग़ अ़लैहिम् ज़र्बम् बिल्यमीन(93)फ़–अक़्बलू इलैहि यज़िफ़्फ़ून(94)क़ा–ल अ–तअ्बुदू–न मा तन्हितून (95)वल्लाहु ख़–ल–क़कुम् व मा तअ्–मलून(96) क़ालुब्नू लहू बुन्यानन् फ़–अल्क़ूहु फ़िल्जहीम (97)फ़–अरादू बिही कैदन् फ़–ज–अ़ल्ना–हुमुल् अस्फ़लीन(98)व क़ा–ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स–यह्दीन(99)रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन(100) फ़–बश्शर्नाहु बिगुलामिन् हलीम(101)फ़–लम्मा ब–ल–ग़ म–अ़हुस्सअ्–य क़ा–ल या बुनय्–य इन्नी अरा फ़िल्मनामि अन्नी अज़्बहु–क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा क़ा–ल या अ–बतिफ़्–अ़ल् मा तुअ्–मरु स–तजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस् साबिरीन(102)फ़–लम्मा अस्–लमा

डूबो दिया।(82) (फ़ा81) और बेशक उसी के गरोह से इब्राहीम है।(83) (फ़ा82) जबकि अपने रब के पास हाज़िर हुआ ग़ैर से सलामत दिल लेकर।(84) (फ़ा83) जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया (फ़ा84) तुम क्या पूजते हो।(85) क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा और ख़ुदा चाहते हो।(86) तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आलमीन पर।(87) (फ़ा85) फिर उसने एक निगाह सितारों को देखा।(88) (फ़ा86) फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूं।(89) (फ़ा87) तो वह उस पर पीठ देकर फिर गए।(90) (फ़ा88) फिर उनके ख़ुदाओं की तरफ़ छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते।(91) (फ़ा89) तुम्हें क्या हुआ कि नहीं बोलते।(92) (फ़ा90) तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें दाहिने हाथ से मारने लगा।(93) (फ़ा91) तो काफ़िर उसकी तरफ़ जल्दी करते आए।(94) (फ़ा92) फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों को पूजते हो।(95) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आमाल को।(96) (फ़ा93) बोले इसके लिए एक इमारत चूनो (फ़ा94) फिर इसे भड़कती आग में डाल दो।(97) तो उन्होंने उस पर दाँव चलना चाहा हमने उन्हें नीचा दिखाया।(98) (फ़ा95) और कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूं (फ़ा96) अब वह मुझे राह देगा।(99) (फ़ा97) इलाही मुझे लाइक़ औलाद दे।(100) तो हमने उसे ख़ुशख़बरी सुनाई एक अ़क़्लमन्द लड़के की।(101) फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैंने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़बह करता हूं (फ़ा98) अब तू देख तेरी क्या राय है (फ़ा99) कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आपको हुक्म होता है ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पायेंगे।(102) तो जब उन दोनों

(फ़ा81) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के काफ़िरों को (फ़ा82) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के दीन व मिल्लत और उन्हीं के तरीक़ व सुन्नत पर हैं हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम व हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान दो हज़ार छः सौ चालीस बरस का ज़मानी फ़र्क़ है और दोनों हज़रात के दर्मियान जो अ़हद गुज़रा उसमें सिर्फ़ दो नबी हुए हज़रत हूद व हज़रत सालेह़ अ़लैहिमस्सलाम (फ़ा83) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया। (फ़ा84) ब-तरीक़े तौबीख़। (फ़ा85) कि जब तुम उसके सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वह तुम्हें बे अ़ज़ाब छोड़ देगा बावजूदे कि तुम जानते हो कि वही मुनइमे (बक़िया सफ़हा 746 पर)

وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ۝١٠٣ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۝١٠٤ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٠٥ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ۝١٠٦ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ
عَظِيْمٍ ۝١٠٧ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝١٠٨ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝١٠٩ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١٠ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١١ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٢ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ۝١١٣ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١١٤ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝١١٥ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٦ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۝١١٧ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١١٨ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝١١٩ سَلٰمٌ عَلٰى
مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١٢٠ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢١ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٢٢ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٢٣ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٢٤ اَتَدْعُوْنَ

व तल्लहू लिल्जबीन(103)व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम(104)क़द स़द्–दक़्तर् रुअ्या इन्ना कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(105)इन्–न हाज़ा ल–हुवल् बलाउल् मुबीन(106)व फ़दैनाहु बिज़िब्ह़िन् अ़ज़ीम (107) व त–रक्ना अ़लैहि फ़िल्–आख़िरीन(108)सलामुन् अ़ला इब्राहीम(109)कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह्सिनीन (110)इन्नहू मिन् अ़िबादि–नल् मुअ्मिनीन(111)व बश्शर्–नाहु बिइस्हा–क़ नबिय्यम् मिनस्सा–लिहीन (112)व बारक्ना अ़लैहि व अ़ला इस्हा–क़ व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव् व ज़ालिमुल् लि–नफ़्सिही मुबीन(113)व ल–क़द् म–नन्ना अ़ला मूसा व हारून(114)व नज्जैनाहुमा व क़ौ–महुमा मिनल्–कर्बिल् अ़ज़ीम(115)व न–स़र्नाहुम् फ़कानू हुमुल् ग़ालिबीन(116)व आतैनाहुमल् किताबल् मुस्तबीन(117)व हदैना हु–मस्सिरातल् मुस्तक़ीम(118)व त–रक्ना अ़लैहिमा फ़िल्–आख़िरीन(119)सलामुन् अ़ला मूसा व हारून(120)इन्ना कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(121)इन्नहुमा मिन् अ़िबादिनल् मुअ्मिनीन(122)व इन्–न इल्या–स लमिनल् मुर्–सलीन(123)इज़् क़ा–ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून(124)अ–तदअू–न

ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी।(103) और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त का हाल न पूछ।(104) (फ़ा100) और हमने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाई (फ़ा101) हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(105) बेशक यह रौशन जांच थी।(106) और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके सदक़ा में देकर उसे बचा लिया।(107) (फ़ा102) और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी।(108) सलाम हो इब्राहीम पर।(109) (फ़ा103) हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(110) बेशक वह हमारे आला दर्जा के कामिलुल ईमान बन्दों में है।(111) और हमने उसे ख़ुशख़बरी दी इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में।(112) (फ़ा104) और हमने बरकत उतारी उस पर और इस्हाक़ पर (फ़ा105) और उनकी औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला (फ़ा106) और कोई अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाला।(113) (फ़ा107) (रुकूअ़ 7) और बेशक हमने मूसा और हारून पर एहसान फ़रमाया।(114) (फ़ा108) और उन्हें और उनकी क़ौम (फ़ा109) को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी।(115) (फ़ा110) और उनकी हमने मदद फ़रमाई (फ़ा111) तो वही ग़ालिब हुए।(116) (फ़ा112) और हमने उन दोनों को रौशन किताब अ़ता फ़रमाई।(117) (फ़ा113) और उनको सीधी राह दिखाई।(118) और पिछलों में उनकी तारीफ़ बाक़ी रखी।(119) सलाम हो मूसा और हारून पर।(120) बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(121) बेशक वह दोनों हमारे आला दर्जे के कामिललु ईमान बन्दों में हैं।(122) और बेशक इलयास पैग़म्बरों से है।(123) (फ़ा114) जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं।(124) (फ़ा115) क्या बअ़ल को पूजते हो (फ़ा116)

(फ़ा100) यह वाक़िआ़ मिना में वाक़ेअ़ हुआ और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई क़ुदरते इलाही कि छुरी ने कुछ भी काम न किया। (फ़ा101) इताअ़त व फ़रमांबरदारी कमाल को पहुंचा दी फ़रज़न्द को ज़बह के लिए बे दरेग़ पेश कर दिया बस अब इतना काफ़ी है। (फ़ा102) इसमें इख़्तिलाफ़ है कि यह फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल हैं या हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिमस्सलाम लेकिन दलाइल की क़ुव्वत यही बताती है कि ज़बीह हज़रत इसमाईल ही हैं अ़लैहिस्सलाम और फ़िदिया में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिसको हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ज़बह फ़रमाया। (फ़ा103) हमारी तरफ़ से। (फ़ा104) वाक़िआ़ ज़बह के बाद हज़रत इसाहक़ की ख़ुशख़बरी उसकी दलील है कि ज़बीह हज़रत इसमाईल अ़लैहिमस्सलाम हैं (फ़ा105) हर तरह की बरकत दीनी भी और दुनियवी भी और ज़ाहिरी बरकत यह है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की औलाद में **(बक़िया सफ़्हा 747 पर)**

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ۙ (125) اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ (126) فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۙ (127) اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ (128) وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ (129)

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ (130) اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ (131) اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (132) وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (133) اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۙ (134) اِلَّا عَجُوْزًا

فِى الْغٰبِرِيْنَ (135) ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ (136) وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۙ (137) وَبِالَّيْلِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (138) وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۭ (139) اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۙ (140)

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۚ (141) فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ (142) فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۙ (143) لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۚ (144) فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

سَقِيْمٌ ۚ (145) وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۚ (146) وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۚ (147) فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۭ (148) فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ

बअ्—लंव् व त—ज़रू—न अह्—सनल् ख़ालिक़ीन(125)अल्ला—ह रब्बकुम् व रब्—ब आबा—इकुमुल् अव्वलीन(126)फ़—कज़्ज़बूहु फ़—इन्नहुम् ल—मुह्ज़रून(127)इल्ला अिबादल्लाहिल् मुख़्लसीन (128)व त—रक्ना अ़लैहि फ़िल्—आख़िरीन(129)सलामुन् अ़ला इल्यासीन(130)इन्ना कज़ालि—क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(131)इन्नहू मिन् अिबादि—नल् मुअ्मिनीन(132)व इन्—न लूतल्—लमिनल् मुर्—सलीन(133)इज़् नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन(134)इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्ग़ाबिरीन(135) सुम्—म दम्मर्नल् आ—ख़रीन(136)व इन्नकुम् ल—तमुर्रू—न अ़लैहिम् मुस्बिहीन(137)व बिल्लैलि अ—फ़ला तअ्क़िलून(138)व इन्—न यूनु—स लमिनल् मुर्—सलीन(139)इज़् अ—ब—क़ इलल्फ़ुल्किल् मश्हूनि(140)फ़सा—ह—म फ़का—न मिनल्मुद् हज़ीन(141)फ़ल्त—क़—महुल् हूतु व हु—व मुलीम(142) फ़लौला अन्नहू का—न मिनल्—मुसब्बिहीन(143)ल—लबि—स फ़ी बत्निही इला यौमि युब्—असून(144) फ़—न—बज्नाहु बिल्—अ़राइ व हु—व सक़ीम(145)व अम्बत्ना अ़लैहि श—ज—रतम् मिंय्यक़्तीन (146)व अर्सल्नाहु इला मि—अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून(147)फ़आ—मनू फ़—मत्तअ्नाहुम् इलाहीन (148)फ़स्तफ़्तिहिम् अलि—रब्बिकल् बनातु

और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले।(125) अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का।(126) (फ़ा117) फिर उन्होंने उसे झुठलाया तो वह ज़रूर पकड़े आयेंगे।(127) (फ़ा118) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।(128) (फ़ा119) और हमने पिछलों में उसकी सना बाक़ी रखी।(129) सलाम हो इलयास पर।(130) बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(131) बेशक वह हमारे आला दर्जा के कामिलुल ईमान बन्दों में है।(132) और बेशक लूत पैग़म्बरों में है।(133) जब कि हमने उसे और उसके सब घर वालों को नजात बख़्शी।(134) मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई।(135) (फ़ा120) फिर दूसरों को हमने हलाक फ़रमा दिया।(136) (फ़ा121) और बेशक तुम (फ़ा122) उन पर गुज़रते हो सुबह को।(137) और रात में (फ़ा123) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(138) (फ़ा124) (रुकूअ़ 8) और बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है।(139) जब कि भरी कश्ती की तरफ़ निकल गया।(140) (फ़ा125) तो क़ुरआ डाला तो ढकेले हुओं में हुआ।(141) फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह अपने आपको मलामत करता था।(142) (फ़ा126) तो अगर वह तस्बीह करने वाला न होता।(143) (फ़ा127) ज़रूर उसके पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जायेंगे।(144) (फ़ा128) फिर हमने उसे (फ़ा129) मैदान पर डाल दिया और वह बीमार था।(145) (फ़ा130) और हमने उस पर (फ़ा131) कद्दू का पेड़ उगाया।(146) (फ़ा132) और हमने उसे (फ़ा133) लाख आदमियों की तरफ़ भेजा बल्कि ज़्यादा।(147) तो वह ईमान ले आए (फ़ा134) तो हम ने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया।(148) (फ़ा135) तो उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ हैं

(फ़ा117) उसकी इबादत तर्क करते हो (फ़ा118) जहन्नम में (फ़ा119) यानी उस क़ौम में से अल्लाह तआ़ला के बरगुज़ीदा बन्दे जो हज़रत इलयास अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाये उन्होंने अ़ज़ाब से नजात पाई (फ़ा120) अ़ज़ाब के अन्दर। (फ़ा121) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के कुफ़्फ़ार को। (फ़ा122) ऐ अहले मक्का। (फ़ा123) यानी अपने सफ़रों में रोज़ व शब तुम उनके आसार व मनाज़िल पर गुज़रते हो। (फ़ा124) कि उनसे इबरत हासिल करो। (फ़ा125) हज़रत इब्ने **(बक़िया सफ़हा 747 पर)**

وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۞ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ۞ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۞ وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۞ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى
الْبَنِيْنَ ۞ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۞ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۞ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۞ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ
اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۞ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۞ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۞ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۞ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۞ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۞ وَمَا مِنَّآ
اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۞ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ۞ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۞ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۞ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۞ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۞
فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۞ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۞ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۞ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۞ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۞
وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۞ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۞ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ۞ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۞ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۞
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۞ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۞ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞

व लहुमुल् बनून(149)अम् ख़-लक़्नल् मलाइ-क-त इनासंव् व हुम् शाहिदून(150)अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून(151)व-ल-दल्लाहु व इन्नहुम् लकाज़ि-बून(152)अस़्त़-फ़ल्बनाति अलल् बनीन(153)मा लकुम् कै-फ़ तह्कुमून(154)अ-फ़ला त-ज़क्करून(155)अम् लकुम् सुल्तानुम् मुबीन (156)फ़अ्तू बिकिताबिकुम् इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन(157)व ज-अ़लू बै-नहू व बैनल्-ज़िन्नति न-स-बन् व लक़द् अ़लि-मतिल् जिन्नतु इन्नहुम् लमुह्ज़रून(158)सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसि-फ़ून(159) इल्ला अ़िबादल्लाहिल् मुख़्लसीन(160)फ़-इन्नकुम् व मा तअ़्बुदून(161)मा अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन(162) इल्ला मन् हु-व स़ालिल् जहीम(163)व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम् मअ़्लूमुंव्-(164)व इन्ना ल-नह्नुस् स़ाफ़्फ़ून.(165)व इन्ना ल-नह्नुल् मुसब्बिहून(166)व इन् कानू ल-यक़ूलून(167)लौ अन्-न अ़िन्दना ज़िक्रम् मिनल् अव्वलीन(168)लकुन्ना अ़िबादल्लाहिल् मुख़्-लसीन(169)फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ़्-लमून(170)व ल-क़द् स-ब-क़त् कलि-मतुना लिअ़िबादि-नल् मुर्-सलीन (171)इन्नहुम् लहुमुल् मन्सूरून(172)व इन्-न जुन्दना लहुमुल् ग़ालिबून(173)फ़-त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता ह़ीनिंव् (174)व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून(175)अ-फ़बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ़्जिलून(176)फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसा-ह़तिहिम् फ़सा-अ स़बाहुल् मुन्ज़रीन(177)व त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता ह़ीनिंव्-(178)व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून(179)सुब्ह़ा-न रब्बि-क रब्बिल् अ़िज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून(180)व सलामुन् अ़लल् मुर्-सलीन(181)वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमीन(182)

(फ़ा136) और उनके बेटे।(149) (फ़ा137) या हमने मलाइका को औ़रतें पैदा किया और वह हाज़िर थे।(150) (फ़ा138) सुनते हो बेशक वह अपने बोहतान से कहते हैं।(151) कि अल्लाह की औलाद है और बेशक वह ज़रूर झूठे हैं।(152) क्या उसने बेटियाँ पसन्द कीं बेटे छोड़ कर।(153) तुम्हें क्या है कैसा हुक्म लगाते हो।(154) (फ़ा139) तो क्या ध्यान नहीं करते।(155) (फ़ा140) या तुम्हारे लिए कोई खुली सनद है।(156) तो अपनी किताब लाओ (फ़ा141) अगर तुम सच्चे हो।(157) और उसमें और जिन्नों में रिश्ता ठहराया (फ़ा142) और बेशक जिन्नों को मालूम है कि वह (फ़ा143) ज़रूर हाज़िर लाए जायेंगे।(158) (फ़ा144) पाकी है अल्लाह को उन बातों से कि यह बताते हैं।(159) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।(160) (फ़ा145) तो तुम और जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो।(161) (फ़ा146) तुम उसके ख़िलाफ़ किसी को बहकाने वाले नहीं।(162) (फ़ा147) मगर उसे जो भड़कती आग में जाने वाला है।(163) (फ़ा148) और फ़रिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक मक़ाम मालूम है।(164) (फ़ा149) और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर हैं।(165) और बेशक हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं।(166) और बेशक वह कहते थे।(167) (फ़ा150) अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत होती।(168) (फ़ा151) तो ज़रूर हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते।(169) (फ़ा152) तो उसके मुन्किर हुए तो अ़न्क़रीब जान लेंगे।(170) (फ़ा153) और बेशक हमारा कलाम गुज़र (बक़िया सफ़हा 747 पर)

سُوْرَةُ صٓ مَکِّیَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّکْرِ ○ بَلِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ○ کَمْ اَهْلَکْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ○ وَعَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْکٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ کَذَّابٌ ○ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ○ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰۤی اٰلِهَتِکُمْ

اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ یُّرَادُ ○ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ○ ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّکْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا بَلْ هُمْ فِیْ شَکٍّ مِّنْ ذِکْرِیْ بَلْ لَّمَّا

یَذُوْقُوْا عَذَابِ ○ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّکَ الْعَزِیْزِ الْوَهَّابِ ○ اَمْ لَهُمْ مُّلْکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ○ جُنْدٌ مَّا هُنَالِکَ

सूरत साद

(मक्की है इसमें 88 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

साद् वल्कुरआनि ज़िज़्ज़िक्र(1)बलिल् लज़ी–न क–फ़रू फ़ी अ़िज़्ज़तिंव् व शिक़ाक़(2)कम् अह्–लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निन् फ़नादव् व ला–त ही–न मनास(3)व अ़जिबू अन् जा–अहुम् मुन्ज़िरुम् मिन्हुम् व क़ालल्काफ़िरू–न हाज़ा साहिरुन् कज़्ज़ाब(4)अ–ज–अ़–लल् आलि–ह–त इलाहंव् वाहिदन् इन्–न हाज़ा लशैउन् अुजाब(5)वन्त–ल–क़ल् म–ल–उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अ़ला आलि– हतिकुम् इन्–न हाज़ा लशैउंय्युराद(6)मा समिअ़ना बि–हाज़ा फ़िल् मिल्लतिल् आख़ि–रति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़(7)अ–उन्ज़ि–ल अ़लैहिज् ज़िक्रु मिम् बैनिना बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अ़ज़ाब(8)अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ाइनु रह्मति रब्बिकल् अ़ज़ीज़िल् वह्हाब(9)अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा फ़ल्यर् तक़ू फ़िल् अस्बाब(10)जुन्दुम् मा हुनालि–क

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

इस नामवर क़ुरआन की क़सम।(1) (फ़ा2) बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में हैं।(2) (फ़ा3) हम ने उनसे पहले कितनी संगतें खपाईं (फ़ा4) तो अब वह पुकारें (फ़ा5) और छूटने का वक़्त न था।(3) (फ़ा6) और उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया (फ़ा7) और काफ़िर बोले यह जादूगर है बड़ा झूठा।(4) क्या उसने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया (फ़ा8) बेशक यह अ़जीब बात है।(5) और उनमें के सरदार चले (फ़ा9) कि उसके पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो बेशक इसमें उसका कोई मतलब है।(6) यह तो हमने सब से पिछले दीन नसरानियत में भी न सुनी (फ़ा10) यह तो निरी नई गढ़त है।(7) क्या उन पर क़ुरआन उतारा गया हम सब में से (फ़ा11) बल्कि वह शक में हैं मेरी किताब से (फ़ा12) बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है।(8) (फ़ा13) क्या वह तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ान्ची हैं (फ़ा14) वह इज़्ज़त वाला बहुत अ़ता फ़रमाने वाला।(9) (फ़ा15) क्या उनके लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दर्मियान है तो रस्सियाँ लटका कर चढ़ न जायें।(10) (फ़ा16) यह एक ज़लील लश्कर है

(फ़ा1) सूरह साद इसका नाम सूरह दाऊद भी है यह सूरत मक्की है इसमें पांच रुकूअ़ 88 आयतें और 732 कलिमे और 3067 हरफ़ हैं (फ़ा2) जो शरफ़ वाला है कि यह कलाम मोअ़जिज़ है। (फ़ा3) और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़दावत रखते हैं इस लिए हक़ का एतेराफ़ नहीं करते। (फ़ा4) यानी आपकी क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं उसी इस्तिकबार और अम्बिया की मुख़ालफ़त के बाइस। (फ़ा5) यानी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त उन्होंने फ़रियाद की (फ़ा6) कि ख़लास पा सकते उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी कुफ़्फ़ारे मक्का ने उनके हाल से इबरत हासिल न की (फ़ा7) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा8) **शाने नुज़ूलः** जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस्लाम लाये तो मुसलमानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को निहायत रन्ज हुआ वलीद बिन मुग़ीरा ने क़ुरैश के अ़माइद और सर बर आवुर्दा पच्चीस आदमियों को जमा किया और उन्हें अबू तालिब के पास लाया और उनसे कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुज़ुर्ग हो हम तुम्हारे पास इस लिए आये हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के दर्मियान फ़ैसला कर दो उनकी जमाअ़त के छोटे दर्जे के लोगों ने जो शोरिश बरपा कर रखी है वह तुम जानते हो अबू तालिब ने हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को **(बक़िया सफ़हा 748 पर)**

مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾ إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ
الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ
وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ
الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ

मह्जू.मुम् मिनल् अह्ज़ाब(11)कज़्ज़–बत् क़ब्–लहुम् क़ौमु नूहिंव् व आदुंव् व फ़िर्औनु ज़ुल्–औताद (12)व समूदु व क़ौमु लूतिंव् व अस्हाबुल् ऐ–कति उलाइ–कल् अह्ज़ाब(13)इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़बर् रुसु–ल फ़–हक़्–क़ अिक़ाब(14)व मा यन्ज़ुरु हाउलाइ इल्ला सै–हतंव् वाहि–दतम् मा लहा मिन् फ़वाक़(15)व क़ालू रब्बना अ़ज्जिल् लना क़ित्तना क़ब्–ल यौमिल्–हिसाब(16)इस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न वज़्कुर् अ़ब्दना दावू–द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब(17)इन्ना सख़्ख़र्नल् जिबा–ल म–अ़हू यु–सब्बिह्–न बिल्–अ़शिय्यि वल् इश्राक़(18)वत्तै–र मह्शू–रतन् कुल्लुल् लहू अव्वाब(19)व श–ददना मुल्कहू व आतैनाहुल् हिक्म–त व फ़स्–लल्ख़िताब(20)व हल् अता–क न–बउल् ख़स्मि इज़् तसव्वरुल् मिह्राब(21)इज़् द–ख़लू अ़ला दावू–द फ़–फ़ज़ि–अ़ मिन्हुम् क़ालू ला त–ख़फ़् ख़स्मानि बग़ा बअ़्ज़ुना अ़ला बअ़्ज़िन् फ़ह्कुम् बै–नना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा–इस्सिरात(22)इन्–न हाज़ा अख़ी लहू तिस्अुंव् व तिस्अू–न नअ़्–ज–तंव् व लि–य नअ़्–जतुंव् वाहि–दतुन् फ़क़ा–ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी फ़िल्ख़िताब(23)क़ा–ल ल–क़द् ज़–ल–म–क

उन्हीं लश्करों में से जो वहीं भगा दिया जाएगा।(11) (फ़ा17) इनसे पहले झुठला चुके हैं नूह की क़ौम और आ़द और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔ़न।(12) (फ़ा18) और समूद और लूत की क़ौम और बन वाले (फ़ा19) यह हैं वह गरोह।(13) (फ़ा20) इनमें कोई ऐसा नहीं जिसने रसूलों को न झुठलाया हो तो मेरा अ़ज़ाब लाज़िम हुआ।(14) (फ़ा21) (रुकूअ़ 10) और यह राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की (फ़ा22) जिसे कोई फेर नहीं सकता।(15) और बोले ऐ हमारे रब हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे हिसाब के दिन से पहले।(16) (फ़ा23) तुम उनकी बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद नेअ़्मतों वाले को याद करो (फ़ा24) बेशक वह बड़ा रुजूअ़ करने वाला है।(17) (फ़ा25) बेशक हमने उसके साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह करते (फ़ा26) शाम को और सूरज चमकते।(18) (फ़ा27) और परिन्दे जमा किये हुए (फ़ा28) सब उसके फ़रमांबरदार थे।(19) (फ़ा29) और हमने उसकी सल्तनत को मज़बूत किया (फ़ा30) और उसे हिकमत (फ़ा31) और क़ौले फ़ैसल दिया।(20) (फ़ा32) और क्या तुम्हें (फ़ा33) उस दावे वालों की भी ख़बर आई जब वह दीवार कूद कर दाऊद की मस्जिद में आए।(21) (फ़ा34) जब वह दाऊद पर दाख़िल हुए तो वह उनसे घबरा गया उन्होंने अ़र्ज़ की डरिये नहीं हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है (फ़ा35) तो हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और ख़िलाफ़े हक़ न कीजिये (फ़ा36) और हमें सीधी राह बताईये।(22) बेशक यह मेरा भाई है (फ़ा37) इसके पास निन्नानवे दुम्बियां हैं और मेरे पास एक दुम्बी अब यह कहता है वह भी मुझे हवाले करदे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है।(23) दाऊद ने फ़रमाया बेशक यह तुझ पर ज़्यादती

(फ़ा17) यानी उन क़ुरैश की जमाअ़त उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मुक़ाबिल गरोह बांध बांध कर आया करते थे और ज़्यादतियां किया करते थे इस सबब से हलाक कर दिये गए अल्लाह तआ़ला ने अपने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़बर दी कि यही हाल उनका है उन्हें भी हज़ीमत होगी चुनान्चे बद्र में ऐसा वाक़ेअ़ हुआ उसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर के लिए पिछले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और उनकी क़ौमों का ज़िक्र फ़रमाया। (फ़ा18) जो किसी पर ग़ुस्सा करता था तो उसे लिटा कर उसके चारों हाथ पाँव खींच कर चारों तरफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उसको पिटवाता था और **(बक़िया सफ़हा 748 पर)**

بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾ يَا دَاوُودُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

बिसुआलि नअ्-जति-क इला निआजिही व इन्-न कसीरम् मिनल्खु-लताइ ल-यब्ग़ी बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आ-मनू व अ़मि-लुस्सालिहाति व क़लीलुम् मा-हुम् व ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़-तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र राकिअंव् व अनाब(24)फ़-ग़-फ़र्ना लहू ज़ालि-क व इन्-न लहू अ़िन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब(25)या दावूदु इन्ना जअ़ल्ना-क ख़ली-फ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़िल्हवा फ़युज़िल्ल-क अ़न् सबीलिल्लाहि इन्नल् लज़ी-न यज़िल्लू-न अ़न् सबीलिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुम् बिमा नसू यौमल्हिसाब(26)व मा ख़-लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बै-नहुमा बातिलन् ज़ालि-क ज़न्नुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़वैलुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार(27)अम् नज्अ़लुल् लज़ी-न आ-मनू व अ़मिलुस्सालिहाति कल्मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अ़लुल् मुत्तक़ी-न कल् फ़ुज्जार(28)किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबा-रकुल् लियद् दब्बरू आयातिही व लि-य-त-ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब(29)व व-हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न निअ्-मल्अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब(30)इज़् अुरि-ज़ अ़लैहि बिल्अशिय्यिस्-साफ़िनातुल् जियाद(31)

करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अक्सर साझे वाले एक दूसरे पर ज़्यादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वह बहुत थोड़े हैं (फ़ा38) अब दाऊद समझा कि हमने यह उसकी जांच की थी (फ़ा39) तो अपने रब से माफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा (फ़ा40) और रुजूअ़ लाया।(24) तो हमने उसे यह माफ़ फ़रमाया दिया और बेशक उसके लिए हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है।(25) ऐ दाऊद बेशक हमने तुझे ज़मीन में नाइब किया (फ़ा41) तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वह जो अल्लाह की राह से बहकते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है उस पर कि वह हिसाब के दिन को भूल बैठे।(26) (फ़ा42) (रुकूअ़ 11) और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है बेकार न बनाए यह काफ़िरों का गुमान है (फ़ा43) तो काफ़िरों की ख़राबी है आग से।(27) क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फ़ैलाते हैं या हम परहेज़गारों को शरीर बेहुक्मों के बराबर ठहरा दें।(28) (फ़ा44) यह एककिताब है कि हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी (फ़ा45) बरकत वाली ताकि इसकी आयतों को सोचें और अ़क़्लमन्द नसीहत मानें।(29) और हमने दाऊद को (फ़ा46) सुलैमान अ़ता फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वह बहुत रुजूअ़ लाने वाला।(30) (फ़ा47) जब कि उस पर पेश किये गए तीसरे पहर को (फ़ा48) कि रोकिये तो तीन पाँव पर खड़े हों चौथे सुम का किनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जायें।(31) (फ़ा49)

(फ़ा38) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की यह गुफ़्तगू सुन कर फ़रिश्तों मे से एक ने दूसरे की तरफ़ देखा और तबस्सुम करके वह आसमान की तरफ़ रवाना हो गए। (फ़ा39) और दम्बी एक किनाया था जिससे मुराद औरत थी क्योंकि निन्नानवे औरतें आपके पास होते हुए एक और औरत की आपने ख़्वाहिश की थी इस लिए दम्बी के पैराया में सवाल किया गया जब आपने यह समझा। (फ़ा40) मसला इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रुकूअ़ करना सजदए तिलावत के क़ाइम मक़ाम हो जाता है जबकि नीयत की जाए (फ़ा41) ख़ल्क़ की तदबीर पर आपको मामूर किया और आप का हुक्म उन में नाफ़िज़ फ़रमाया। (फ़ा42) और इस वजह से ईमान से महरूम रहे अगर उन्हें रोज़े हिसाब का यक़ीन होता तो दुनिया ही में ईमान ले आते। (फ़ा43) अगरचे वह सराहतन यह न कहें कि आसमान व ज़मीन और तमाम दुनिया बेकार पैदा की गई लेकिन **(बक़िया सफ़हा 749 पर)**

فَقَالَ اِنِّیْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَیْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّیْۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ۫ ﴿۳۲﴾ رُدُّوْهَا عَلَیَّؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَ الْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا سُلَیْمٰنَ وَ اَلْقَیْنَا عَلٰى كُرْسِیِّهٖ
جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ هَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِیْۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّیْحَ تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَیْثُ اَصَابَۙ ﴿۳۶﴾ وَ الشَّیٰطِیْنَ
كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍۙ ﴿۳۷﴾ وَّ اٰخَرِیْنَ مُقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾ وَ اذْكُرْ عَبْدَنَاۤ اَیُّوْبَ
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الشَّیْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّ عَذَابٍؕ ﴿۴۱﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿۴۲﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰى
لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۴۳﴾ وَ خُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ لَا تَحْنَثْؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًاؕ نِعْمَ الْعَبْدُؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ وَ اذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ اُولِی

फ़का-ल इन्नी अह्-बब्तु हुब्बल् ख़ैरि अ़न् ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत् बिल्-हिजाब(32)रुद्दूहा अ़लय्-य फ़-तफ़ि-क़ मस्हम् बिस्सूक़ि वल् अअ्नाक़(33)व ल-क़द् फ़-तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अ़ला कुरसिय्यिही ज-स-दन् सुम्-म अनाब(34)क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल् ला यम्बग़ी लि-अ-हदिम् मिम् बअ्दी इन्न-क अन्तल् वह्हाब(35)फ़-सख़्ख़रना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब(36)वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइंव् व ग़व्वास(37)व आ-ख़री-न मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद(38)हाज़ा अ़ताउना फ़म्नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब(39)व इन्-न लहू अ़िन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब(40)वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियश् शैतानु बिनुस्बिंव् व अ़ज़ाब(41)उर्कुज़् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्-त-सलुम् बारिदुंव् व शराब(42)व व-हब्ना लहू अह्-लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्-म-तम् मिन्ना व ज़िक्रा लिउलिल् अल्बाब(43)व ख़ुज़् बियदि-क ज़िग़्सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्नस् इन्ना व-जदनाहु साबिरन् निअ्मल् अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब(44) वज़्कुर् अ़िबा-दना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब उलिल्

तो सुलैमान ने कहा मुझे इन घोड़ों की मुहब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिए (फ़ा50) फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए।(32) (फ़ा51) फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा।(33) (फ़ा52) और बेशक हमने सुलैमान को जांचा (फ़ा53) और उसके तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया। (फ़ा54) फिर रुजूअ़ लाया(34) (फ़ा55) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्तनत अ़ता कर कि मेरे बाद किसी को लाइक़ न हो (फ़ा56) बेशक तू ही है बड़ी दैन वाला।(35) तो हमने हवा उसके बस में कर दी कि उसके हुक्म से नर्म नर्म चलती (फ़ा57) जहां वह चाहता।(36) और देव बस में कर दिये हर मेअ़मार (फ़ा58) और ग़ोताख़ोर।(37) (फ़ा59) और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुए।(38) (फ़ा60) यह हमारी अ़ता है अब तू चाहे तो एहसान कर (फ़ा61) या रोक रख (फ़ा62) तुझ पर कुछ हिसाब नहीं।(39) और बेशक उसके लिए हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है।(40) (रुकूअ़ 12) और याद करो हमारे बन्दा अय्यूब को जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और ईज़ा लगा दी।(41) (फ़ा63) हमने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाँव मार (फ़ा64) यह है ठंडा चश्मा नहाने और पीने को।(42) (फ़ा65) और हमने उसे उसके घर वाले और उनके बराबर और अ़ता फ़रमा दिये अपनी रहमत करने (फ़ा66) और अ़क़्लमन्दों की नसीहत को।(43) और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू लेकर उससे मार दे (फ़ा67) और क़सम न तोड़ बेशक हमने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा (फ़ा68) बेशक वह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है(44) और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब क़ुदरत

(फ़ा50) यानी मैं उनसे रज़ाए इलाही और तक़वियत व ताईदे दीन के लिए मुहब्बत करता हूं मेरी मुहब्बत उनके साथ दुनियवी गर्ज़ से नहीं है। (तफ़सीर कबीर) (फ़ा51) यानी नज़र से ग़ाइब हो गए। (फ़ा52) और उस हाथ फेरने के चन्द बाइस थे एक तो घोड़ों की इज़्ज़त व शरफ़ का इज़्हार कि वह दुश्मन के मुक़ाबला में बेहतर मुईन हैं दूसरे उमूरे सल्तनत की ख़ुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम अ़म्माल मुस्तइद रहें सोम यह कि आप घोड़ों के अहवाल और उनके अमराज़ व उयूब के आला माहिर थे उन पर हाथ फेर कर उनकी हालत का इम्तेहान फ़रमाते थे बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इन आयात की तफ़सीर में **(बक़िया सफ़हा 749 पर)**

الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿45﴾ إِنَّا أَخْلَصْنٰهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿46﴾ وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿47﴾ وَاذْكُرْ إِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿48﴾

هٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿49﴾ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿50﴾ مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿51﴾ وَعِندَهُمْ قٰصِرٰتُ

الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿52﴾ هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿53﴾ إِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿54﴾ هٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطّٰغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿55﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿56﴾ هٰذَا

فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿57﴾ وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿58﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿59﴾ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ

لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿60﴾ قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿61﴾ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿62﴾ أَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا

ऐदी वल्–अब्सार(45)इन्ना अख़्लस्नाहुम् बिख़ालि–सतिन् ज़िक्–रद्दार (46)व इन्नहुम् अिन्दना लमिनल् मुस्तफ़ैनल् अख़्यार(47)वज़्कुर् इस्माअी–ल वल्–य–स–अ व ज़लकिफ़्लि व कुल्लुम् मिनल् अख़्यार(48)हाज़ा ज़िक्रुन् व इन्–न लिलमुत्तक़ी–न लहुस्–न मआब(49)जन्नाति अ़दनिम् मुफ़त्त–ह़–तल् लहुमुल् अब्वाब(50)मुत्तकिई–न फ़ीहा यदअू–न फ़ीहा बिफ़ाकि–हतिन् कसी़–रतिंव् व शराब (51)व अिन्दहुम् क़ासिरातुत् तर्फ़ि अतराब(52)हाज़ा मा तू–अ़दू–न लियौमिल् ह़िसाब(53)इन्– न हाज़ा लरिज़्कुना मा लहू मिन् नफ़ाद(54)हाज़ा व इन्–न लित्तागी–न लशर्–र मआब(55)जहन्न –म यस्लौ–नहा फ़बि–अ्सल् मिहाद(56)हाज़ा फ़ल्यज़ू–क़ूहु ह़मीमुंव् व ग़स्साक़(57)व आ–ख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज(58)हाज़ा फ़ौजुम् मुक़्तह़िमुम् म–अकुम् ला मर्–ह़बम् बिहिम् इन्नहुम् सालुन्नार(59) क़ालू बल् अन्तुम् ला मर्–ह़बम् बिकुम् अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना फबिअ्सल् क़रार(60)क़ालू रब्बना मन् क़द्–द–म लना हाजा फ़ज़िद्हु अ़जाबन् ज़िअ्–फ़न् फ़िन्नार(61)व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम् मिनल् अशरार(62)अत्त–ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन्

और इल्म वालों को।(45) (फ़ा69) बेशक हमने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वह उस घर की याद है।(46) (फ़ा70) और बेशक वह हमारे नज़दीक चुने हुए पसन्दीदा हैं।(47) और याद करो इस्माईल और यसअ् और ज़ुलकिफ़्ल को (फ़ा71) और सब अच्छे हैं।(48) यह नसीहत है और बेशक (फ़ा72) परहेज़गारों का ठिकाना भला।(49) बसने के बाग़ उनके लिए सब दरवाज़े खुले हुए।(50) उनमें तकिया लगाए (फ़ा73) उनमें बहुत से मेवे और शराब मांगते हैं।(51) और उनके पास वह बीबियाँ हैं कि अपने शौहर के सिवा और की तरफ़ आँख नहीं उठातीं एक उम्र की(52) (फ़ा74) यह है वह जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है हिसाब के दिन।(53) बेशक यह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म न होगा।(54) (फ़ा75) उनको तो यह है (फ़ा76) और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना।(55) जहन्नम कि उसमें जायेंगे तो क्या ही बुरा बिछौना।(56) (फ़ा77) उनको यह है तो उसे चखें खौलता पानी और पीप।(57) (फ़ा78) और उसी शक्ल के और जोड़े।(58) (फ़ा79) उनसे कहा जाएगा यह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी। (फ़ा80) वह कहेंगे उनको खुली जगह न मिलयो आग में (59)तो उनको जाना ही है वहां भी तंग जगह में रहें ताबेअ् बोले बल्कि तुम्हें खुली जगह न मिलयो यह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए(फ़ा81)तो क्या ही बुरा ठिकाना।(60)(फ़ा82)वह बोले ऐ हमारे रब जो यह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना अ़ज़ाब बढ़ा।(61)और(फ़ा83) बोले हमें क्या हुआ हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे।(62) (फ़ा84) क्या हमने उन्हें हंसी बना लिया (फ़ा85)

(फ़ा69) जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने हिकमते इल्मिया व अमलिया अ़ता फ़रमाईं और अपनी मअ्रेफ़त और ताआ़त पर कुव्वत अ़ता फ़रमाई। (फ़ा70) यानी दारे आख़िरत की कि वह लोगों को उसी की याद दिलाते हैं और कसरत से उसका ज़िक्र करते हैं मुहब्बते दुनिया ने उनके क़ुलूब में जगह नहीं पाई। (फ़ा71) यानी उनके फ़ज़ाइल और उनके सब्र को ताकि उनकी पाक ख़सलतों से लोग नेकियों का ज़ौक़ व शौक़ हासिल करें और ज़ुलकिफ़्ल की नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। (फ़ा72) आख़िरत में (फ़ा73) मुरस्सअ् तख़्तों पर। (फ़ा74) यानी सब सिन में बराबर ऐसे ही हुस्न व जवानी में आपस में मुहब्बत रखने वाले न एक को दूसरे से बुग़्ज़ न रश्क न हसद। (फ़ा75) हमेशा बाक़ी रहेगा वहां जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी दुनिया की चीज़ों की तरह फ़ना और नेस्तो नाबूद न होगी। (फ़ा76) यानी ईमान वालों को। **(बक़िया सफ़हा 750 पर)**

اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ
نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ
مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ لَاَمْلَئَنَّ
جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

अम् ज़ागत् अन्हुमुल् अब्सार(63)इन्–न ज़ालि–क ल–हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार(64) क़ुल् इन्नमा अना मुन्ज़िरुंव् व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल् वाहिदुल् क़ह्हार(65)रब्बुस्समावाति वल्–अर्ज़ि व मा बै–नहुमल् अज़ीज़ुल् ग़फ़्फ़ार(66)क़ुल् हु–व न–ब–उन् अज़ीम(67)अन्तुम् अन्हु मुअ्रिज़ून (68)मा का–न लि–य मिन् अिल्मिम् बिल् म–लइल् अअ्ला इज़् यख़्त–सिमून(69)इंय्यूहा इलय्–य इल्ला अन्नमा अना नज़ीरुम् मुबीन(70)इज़् क़ा–ल रब्बु–क लिल्मलाइ–कति इन्नी ख़ालिक़ुम् ब–श–रम् मिन् तीन(71)फ़–इज़ा सव्वैतुहू व न–फ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़–क़अू लहू साजिदीन(72) फ़–स–ज–दल् मलाइ–कतु कुल्लुहुम् अज्मअून(73)इल्ला इब्ली–स इस्तक्ब–र व का–न मिनल्काफ़िरीन (74)क़ा–ल या इब्लीसु मा म–न–अ–क अन् तस्जु–द लिमा ख़–लक़्तु बिय–दय्–य अस्तक्बर्–त अम् कुन्–त मिनल् आलीन(75)क़ा–ल अना ख़ैरुम् मिन्हु ख़–लक़्तनी मिन् नारिंव् व ख़–लक़्तहू मिन् तीन(76)क़ा–ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़–इन्न–क रजीम(77)व इन्–न अलै–क लअ्–नती इला यौमिद्दीन(78)क़ा–ल रब्बि फ़–अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्–असून(79) क़ा–ल फ़इन्न–क मिनल् मुन्ज़रीन(80)इला यौमिल् वक़्तिल् मअ्लूम(81)क़ा–ल फ़बिअिज़्–ज़ति–क ल–उग़वियन्नहुम् अज्म–अीन (82)इल्ला अिबा–द–क मिन्हुमुल् मुख़्लसीन(83)क़ा–ल फ़ल्हक़्क़ु वल्हक़्–क़ अक़ूल(84) ल–अम्ल–अन्–न जहन्न–म मिन्–क व मिम्मन् तबि–अ–क मिन्हुम् अज्मअीन(85)क़ुल् मा अस्–अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिंव् व मा अना मिनल् मु–त–कल्लिफ़ीन(86)इन् हु–व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्आ–लमीन (87)व ल–तअ्–लमुन्–न न–ब–अहू बअ्–द हीन(88)

या आँखें उनकी तरफ़ से फिर गईं।(63) (फ़ा86) बेशक यह ज़रूर हक़ है दोज़ख़ियों का बाहम झगड़ा।(64) (रुकूअ् 13) तुम फ़रमाओ (फ़ा87) मैं डर सुनाने वाला ही हूं (फ़ा88) और मअ्बूद कोई नहीं मगर एक अल्लाह सब पर ग़ालिब।(65) मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है साहिबे इज़्ज़त बड़ा बख़्शने वाला।(66) तुम फ़रमाओ वह (फ़ा89) बड़ी ख़बर है।(67) तुम उससे ग़फ़लत में हो।(68) (फ़ा90) मुझे आ़लमे बाला की क्या ख़बर थी जब वह झगड़े थे।(69) (फ़ा91) मुझे तो यही 'वही' होती है कि मैं नहीं मगर रौशन डर सुनाने वाला(70) (फ़ा92) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊँगा।(71) (फ़ा93) फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं (फ़ा94) और उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकूं (फ़ा95) तो तुम उसके लिए सज्दे में गिरना।(72) तो सब फ़रिश्तों ने सजदा किया एक एक ने, कि कोई बाक़ी न रहा।(73) मगर इबलीस ने (फ़ा96) उसने ग़ुरूर किया और वी था ही काफ़िरों में(74) (फ़ा97) फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिए सजदा करे जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया क्या तुझे ग़ुरूर आ गया या तू था ही मग़रूरों में।(75) (फ़ा98) बोला मैं उस से बेहतर हूं (फ़ा99) तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से पैदा किया।(76) फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू राँधा गया।(77) **(बक़िया सफ़हा 750 पर)**

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ○ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ○ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ○ لَوْ اَرَادَ
اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ○ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ
النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ○ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ

सूरतुज़्ज़ु–मरि

(मक्की है इसमें 75 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

तन्ज़ीलुल् किताबि मिनल्लाहिल् अज़ीज़िल् ह़कीम(1)इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल् किता–ब बिल्ह़क़्क़ि फ़अ़्–बुदिल्ला–ह मुख़्लिसल् लहुद्दीन(2)अला लिल्लाहिद्–दीनुल् ख़ालिसु वल्लज़ी–नत् त–ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया–अ मा नअ़्बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रि–बूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा इन्नल्ला–ह यह़्कुमु बै–नहुम् फ़ी मा हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ू–न इन्नल्ला–ह ला यह्दी मन् हु–व काज़िबुन् कफ़्फ़ार(3) लौ अरा–दल्लाहु अंय्यत्तख़ि–ज़ व–ल–दल् लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुकु मा यशाउ सुब्ह़ा–नहू हुवल्लाहुल् वाह़िदुल् क़ह्हार(4)ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ बिल्ह़क़्क़ि युकव्विरुल् लै–ल अ़लन्नहारि व युकव्विरुन् नहा–र अ़लल्लैलि व सख़्–ख़–रश्शम्–स वल्क़–म–र कुल्लुंय्यजरी लि–अ–जलिम् मुसम्मन् अला हुवल्–अ़ज़ीज़ुल् ग़फ़्फ़ार(5)ख़–ल क़कुम् मिन् नफ़्सिंव् वाह़ि–दतिन् सुम्–म ज–अ़–ल मिन्हा ज़ौ–जहा व अन्ज़–ल

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

किताब (फ़ा2) उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ़ से।(1) बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ (फ़ा3) यह किताब हक़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उसके बन्दे होकर।(2) हां ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दगी है (फ़ा4) और वह जिन्होंने उसके सिवा और वाली बना लिये (फ़ा5) कहते हैं हम तो उन्हें (फ़ा6) सिर्फ़ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि यह हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिसमें इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं (फ़ा7) बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूठा बड़ा नाशुक्रा हो।(3) (फ़ा8) अल्लाह अपने लिए बच्चा बनाता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता (फ़ा9) पाकी है उसे (फ़ा10) वही है एक अल्लाह (फ़ा11) सब पर ग़ालिब।(4) उसने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है (फ़ा12) और उसने सूरज और चाँद को काम पर लगाया हर एक एक ठहराई मीआ़द के लिए चलता है (फ़ा13) सुनता है वही साहिबे इ़ज़्ज़त बख़्शने वाला है।(5) उसने तुम्हें एक जान से बनाया (फ़ा14) फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया (फ़ा15) और तुम्हारे लिए चौपायों से (फ़ा16)

(फ़ा1) सूरह ज़ुमर मक्की है सिवा आयत क़ुल् या अ़िबादियल्लज़ी–न असु–रफ़ू और आयतअल्लाहु नज़्ज़–ल अह्–स–नलह़दीस के इस सूरत में आठ रुकूअ़ और पचहत्तर आयतें और 1172 कलिमे और 4902 हरफ़ हैं। (फ़ा2) किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है (फ़ा3) ऐ सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा4) उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं। (फ़ा5) मअ़बूद ठहरा लिये मुराद उन लोगों से बुत परस्त हैं। (फ़ा6) यानी बुतों को। (फ़ा7) ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर। (फ़ा8) झूठा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआ़ला से नज़दीक करने वाला बताये और ख़ुदा के लिए औलाद ठहराये और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजते। (फ़ा9) यानी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद मुमकिन होती तो वह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि यह तजवीज़ कुफ़्फ़ार पर छोड़ता कि वह जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद क़रार दें (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा10) औलाद से और हर उस चीज़ से जो उसकी शाने अक़्दस के लायक़ नहीं। (फ़ा11) न उसका कोई शरीक न उसकी कोई औलाद (फ़ा12) यानी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्सा को छुपाता है **(बक़िया सफ़हा 751 पर)**

لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۭ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۣ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ڰ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَاۗءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَاۗىِٕمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۭ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

लकुम् मिनल्-अन्आमि समानि-य-त अज़्वाजिन् यख़्लुकुकुम् फ़ी बुतूनि उम्महा-तिकुम् ख़ल्कम् मिम् बअ्दि ख़ल्किन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन् ज़ालि-कुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ू न(6)इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अन्कुम् व ला यरज़ा लिअिबादिहिल्-कुफ़्-र व इन् तश्कुरू यर्-ज़हु लकुम् व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव् विज़्-र उख़्रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलू-न इन्नहू अलीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(7) व इज़ा मस्सल् इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ्-म-तम् मिन्हु नसि-य मा का-न यद्ऊ इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ-ल लिल्लाहि अन्दादल् लियुज़िल्-ल अन् सबीलिही क़ुल् तमत्तअ् बिकुफ़्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार(8)अम्मन् हु-व क़ानितुन् आनाअल् लैलि साजिदंव् व क़ाइ-मंय्यह्ज़-रुल् आख़ि-र-त व यरजू रह्-म-त रब्बिही क़ुल् हल् यस्तविल् लज़ी-न यअ्-लमू-न वल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल् अल्बाब(9)

आठ जोड़े उतारे (फ़ा17) तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और तरह (फ़ा18) तीन अंधेरियों में (फ़ा19) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं फिर कहां फिरे जाते हो।(6) (फ़ा20) अगर तुम नाशुक्री करो तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ है तुम से (फ़ा21) और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं और अगर शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिए पसन्द फ़रमाता है (फ़ा22) और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी (फ़ा23) फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ फिरना है (फ़ा24) तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे (फ़ा25) बेशक वह दिलों की बात जानता है।(7) और जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है (फ़ा26) अपने रब को पुकारता है उसी तरफ़ झुका हुआ (फ़ा27) फिर जब अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई निअ्मत दी तो भूल जाता है जिस लिए पहले पुकारा था (फ़ा28) और अल्लाह के लिए बराबर वाले ठहराने लगता है (फ़ा29) ताकि उसकी राह से बहका दे तुम फ़रमाओ (फ़ा30) थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले (फ़ा31) बेशक तू दोज़ख़ियों में है।(8) क्या वह जिसे फ़रमांबरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में (फ़ा32) आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए (फ़ा33) क्या वह नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर है जानने वाले और अनजान नसीहत तो वही मानते हैं जो अ़क्ल वाले हैं।(9) (रुकूअ़ 15)

(फ़ा17) यानी पैदा किये जोड़ों से मुराद नर और मादा हैं। (फ़ा18) यानी नुत्फ़ा फिर अ़लक़ा (ख़ून बस्ता) फिर मुज़्ग़ा गोश्त पारा। (फ़ा19) एक अंधेरी पेट की दूसरी रिहम की तीसरी बच्चादान की। (फ़ा20) और तरीक़े हक़ से दूर होते हो कि उसकी इबादत छोड़ कर ग़ैर की इबादत करते हो। (फ़ा21) यानी तुम्हारी ताअ़त व इबादत से और तुम ही उसके मुहताज हो ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़ा और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही ज़रर है। (फ़ा22) कि वह तुम्हारी कामयाबी का सबब है इस पर तुम्हें सवाब देगा और जन्नत अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा23) यानी कोई शख़्स दूसरे के गुनाह में माख़ूज़ न होगा (फ़ा24) आख़िरत में। (फ़ा25) दुनिया में और उसकी तुम्हें जज़ा देगा। (फ़ा26) यहां आदमी से मुतलक़न काफ़िर या ख़ास अबू जहल या उतबा बिन रबीआ़ मुराद है (फ़ा27) उसी से फ़रियाद करता है (फ़ा28) यानी उस शिद्दत व तकलीफ़ को फ़रामोश कर देता है जिसके लिए अल्लाह से फ़रियाद की थी (फ़ा29) यानी हाजत बर आरी के बाद फिर बुत परस्ती में मुब्तला हो जाता है (फ़ा30) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस काफ़िर से (फ़ा31) और दुनिया की ज़िन्दगी के दिन पूरे करले। (फ़ा32) शाने नुज़ूलः हज़रत **(बक़िया सफ़हा 751 पर)**

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۭ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ

عَظِيْمٍ ۝ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ۝ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۭ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۭ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ۭ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ

اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ

कुल् या अिबा–दिल्लज़ी–न आ–मनुत् तक़ू रब्बकुम् लिल्लज़ी–न अह्सनू फ़ी हाज़ि–हिद्दुन्या ह–स–नतुन् व अर्ज़ुल्लाहि वासि–अतुन् इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरू–न अज्–रहुम् बिग़ैरि हिसाब(10)कुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला–ह मुख़्लिसल् लहुद्दीन(11)व उमिर्तु लि–अन् अकू–न अव्वलल् मुस्लिमीन(12)कुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(13)कुलिल्ला–ह अअ्बुदु मुख़्लिसल् लहू दीनी(14)फ़अ्बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही कुल् इन्नल् ख़ासिरीनल् लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्–क़िया–मति अला ज़ालि–क हुवल् ख़ुस्रानुल् मुबीन(15)लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु–ललुम् मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु–ललुन् ज़ालि–क युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अिबा–दहू याअिबादि फ़त्तक़ून(16)वल्लज़ीनज्त–नबुत् ताग़ू–त अंय्य–अ्बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहु–मुल्बुश्रा फ़–बश्शिर् अिबाद(17)अल्लज़ी–न यस्तमिअूनल् क़ौ–ल फ़–यत्तबिअू–न अह्स–नहू उलाइ–कल्

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्होंने भलाई की (फ़ा34) उनके लिए इस दुनिया में भलाई है। (फ़ा35) और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है। (फ़ा36) साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिन्ती।(10) (फ़ा37) तुम फ़रमाओ (फ़ा38) मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूं निरा उसका बन्दा हो कर।(11) और मुझे हुक्म है कि मैं सब से पहले गर्दन रखूं।(12) (फ़ा39) तुम फ़रमाओ बिलफ़र्ज़ अगर मुझ से नाफ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।(13) (फ़ा40) तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूं निरा उसका बन्दा होकर।(14) तो तुम उसके सिवा जिसे चाहो पूजो (फ़ा41) तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने घर वाले क़ियामत के दिन हार बैठे (फ़ा42) हां हां यही खुली हार है।(15) उनके ऊपर आग के पहाड़ हैं और उनके नीचे पहाड़ (फ़ा43) उस से अल्लाह डराता है अपने बन्दों को (फ़ा44) ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो।(16) (फ़ा45) और वह जो बुतों की पूजा से बचे और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ हुए उन्हीं के लिए ख़ुशख़बरी है तो ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को।(17) जो कान लगाकर बात सुनें फिर उसके बेहतर पर चलें (फ़ा46) यह हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और यह हैं जिनको

(फ़ा34) ताअ़त बजा लाये और अच्छे अ़मल किये (फ़ा35) यानी सेहत व आ़फ़ियत (फ़ा36) इसमें हिजरत की तरग़ीब है कि जिस शहर में मआ़सी की कसरत हो और वहां रहने से आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ाइम रहना दुशवार हो जाये, चाहिए कि उस जगह को छोड़ दे और वहां से हिजरत कर जाये शाने नुज़ूल यह आयत मुहाजिरीने हबशा के हक़ में नाज़िल हुई और यह भी कहा गया है कि हज़रत जअ़फ़र बिन अबी तालिब और उनके हमराहियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिजरत की और अपने दीन पर क़ाइम रहे उसको छोड़ना गवारा न किया (फ़ा37) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़न किया जाएगा सिवाए सब्र करने वालों के कि उन्हें बे अन्दाज़ा और बे हिसाब दिया जाएगा और यह भी मरवी है कि असहाबे मुसीबत व बला हाज़िर किये जायेंगे न उनके लिए मीज़ान क़ाइम की जाये न उनके लिए दफ़्तर खोले जायें उन पर अज्र व सवाब की बे हिसाब बारिश होगी यहां तक कि दुनिया में आफ़ियत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर आरज़ू करेंगे कि काश वह अहले मुसीबत में से होते और उनके जिस्म कैंचियों से काटे गए होते कि आज यह सब्र का अज्र पाते (फ़ा38) ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा39) और अहले ताअ़त व इख़्लास में मुक़द्दम व साबिक़ हों अल्लाह तआ़ला ने पहले इख़्लास का हुक्म दिया जो अ़मले क़ल्ब है फिर इताअ़त यानी आमाले जवारेह का चूंकि अहकामे शरइया रसूल से हासिल होते हैं वही उनके पहुंचाने वाले **(बक़िया सफ़हा 751 पर)**

الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝١٨ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ۝١٩ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ۝٢٠ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ
ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝٢١ اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ
فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٢ اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ
جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٢٣

लज़ी–न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ–क हुम् उलुल् अल्बाब(18)अ–फ़–मन् हक़्–क़ अ़लैहि कलि–मतुल् अ़ज़ाबि अ–फ़ अन्–त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार(19)लाकिनिल् लज़ी–नत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् गु–रफ़ुम् मिन् फ़ौक़िहा गु–रफ़ुम् मब्निय्यतुन् तजरी मिन् तह़्तिहल् अन्हारु वअ़्दल्लाहि ला युख़्लि–फ़ुल्लाहुल् मीआ़द(20)अ–लम् त–र अन्नल्ला–ह अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–स–ल–कहू यनाबी–अ़ फ़िल्अर्ज़ि सुम्–म युख़्रिजु बिही ज़रअ़म् मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्–म यहीजु फ़–तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्–म यज्–अ़लुहू हुत़ामन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लज़िक्रा लिउलिल्अल्बाब(21)अ–फ़ मन् श–र–ह़ल्लाहु स़द्–रहू लिल्इस्लामि फ़हु–व अ़ला नूरिम् मिर्रब्बिही फ़वैलुल् लिल्क़ासि–यति क़ुलूबुहुम् मिन् ज़िक्रिल्लाहि उलाइ–क फ़ी ज़लालिम् मुबीन(22)अल्लाहु नज़्ज़–ल अह़्स–नल् ह़दीसि किताबम् मु–तशाबिहम् मसानि–य तक़्शअ़िर्रु मिन्हु जुलूदुल् लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् सुम्–म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि ज़ालि–क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशाउ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद(23)

अ़क़्ल है।(18) (फ़ा47) तो क्या वह जिस पर अ़ज़ाब की बात साबित हो चुकी नजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत देकर आग के मुस्तहिक़ को बचा लोगे।(19) (फ़ा48) लेकिन जो अपने रब से डरे (फ़ा49) उनके लिए बाला ख़ाने हैं उन पर बाला ख़ाने बने(फ़ा50) उनके नीचे नहरें बहें अल्लाह का वादा अल्लाह वादा ख़िलाफ़ नहीं करता।(20) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे ज़मीन में चश्मे बनाए फिर उससे खेती निकालता है कई रंगत की (फ़ा51) फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वह (फ़ा52) पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है बेशक उसमें ध्यान की बात है अक़्लमन्दों को।(21) (फ़ा53) (रुकूअ़ 16) तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया (फ़ा54) तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है (फ़ा55) उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है तो ख़राबी है उनकी जिनके दिल यादे ख़ुदा की तरफ़ से सख़्त हो गए हैं (फ़ा56) वह खुली गुमराही में हैं।(22) अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब (फ़ा57) कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है (फ़ा58) दोहरे बयान वाली (फ़ा59) इस से बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उनकी खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की तरफ़ रग़बत में (फ़ा60) यह अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।(23)

(फ़ा47) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ईमान लाये तो आपके पास हज़रत उसमान और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और तलहा व ज़ुबैर व सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास व सईद बिन ज़ैद आये और उनसे हाल दरियाफ़्त किया उन्होंने अपने ईमान की ख़बर दी यह हज़रात भी सुन कर ईमान ले आये उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई फ़बश्शिर् अ़िबादी अल्आयत (फ़ा48) जो अज़ली बद-बख़्त और इल्मे इलाही में जहन्नमी है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे अबू लहब और उसके लड़के हैं। (फ़ा49) और उन्होंने अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी की। (फ़ा50) यानी जन्नत के मनाज़िले रफ़ीआ़ जिनके ऊपर और अरफ़अ़् मनाज़िल हैं। (फ़ा51) ज़र्द, सब्ज़, सुर्ख़, सफ़ेद क़िस्म क़िस्म के गेहूं जौ और तरह तरह के ग़ल्ले (फ़ा52) सरसब्ज़ व शादाब होने के बाद (फ़ा53) जो उससे अल्लाह तआ़ला की वहदानियत व क़ुदरत पर दलीलें क़ाइम करते हैं (फ़ा54) और उसको क़बूले हक़ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई (फ़ा55) यानी यक़ीन व हिदायत पर हदीस रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम **(बक़िया सफ़हा 751 पर)**

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾ فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

अ-फ़ मंय्यत्तक़ी बि-वज्हिही सूअल्-अज़ाबि यौमल्-क़िया-मति व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून(24)कज़्ज़बल् लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल् अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून(25)फ़-अज़ा-क़हुमुल्लाहुल् ख़िज़्-य फ़िलहयातिद्-दुन्या व ल-अज़ाबुल् आख़ि-रति अक्बरु लौ कानू यअ्-लमून(26)व ल-क़द् ज़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल् क़ुरआनि मिन् कुल्लि म-सलिल् ल-अल्लहुम् य-त-ज़क्करून(27)क़ुरआनन् अ-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अि-वजिल् ल-अल्लहुम् यत्तक़ून(28)ज़-र-बल्लाहु म-स-लर् रजुलन् फ़ीहि शु-रकाउ मु-तशा-किसू-न व रजुलन् स-ल-मल् लि-रजुलिन् हल् यस्तवियानि म-स-लन् अल्हम्दु लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून(29) इन्न-क मय्यितुंव् व इन्नहुम् मय्यितून(30)सुम्-म इन्नकुम् यौमलक़िया-मति अिन्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून(31)

तो क्या वह जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब की ढाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा (फ़ा61) नजात वाले की तरह हो जाएगा (फ़ा62) और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो।(24) (फ़ा63) उनसे अगलों ने झुठलाया (फ़ा64) तो उन्हें अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़बर न थी।(25) (फ़ा65) और अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का मज़ा चखाया (फ़ा66) और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से बड़ा क्या अच्छा था अगर वह जानते।(26) (फ़ा67) और बेशक हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी तरह उन्हें ध्यान हो।(27) (फ़ा68) अ़रबी ज़बान का क़ुरआन (फ़ा69) जिसमें असलन कजी नहीं (फ़ा70) कि कहीं वह डरें।(28) (फ़ा71) अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है (फ़ा72) एक ग़ुलाम में कई बदख़ू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या उन दोनों का हाल एक सा है (फ़ा73) सब ख़ूबियां अल्लाह को (फ़ा74) बल्कि उनके अक्सर नहीं जानते।(29) (फ़ा75) बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उनको भी मरना है।(30) (फ़ा76) फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।(31) (फ़ा77) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा61) वह काफ़िर है जिसके हाथ गर्दन के साथ मिला कर बांध दिये जायेंगे और उसकी गर्दन में गन्धक का एक जलता हुआ पहाड़ पड़ा होगा जो उसके चेहरे को भूने डालता होगा इस हाल से औंधा करके आतिशे जहन्नम में गिराया जाएगा (फ़ा62) यानी उस मोमिन की तरह जो अ़ज़ाब से मामून व महफ़ूज़ हो (फ़ा63) यानी दुनिया में जो कुफ़्र व सरकशी इख़्तियार की थी अब उसका वबाल व अ़ज़ाब बरदाश्त करो। (फ़ा64) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुठलाया। (फ़ा65) अ़ज़ाब आने का ख़तरा भी न था ग़फ़लत में पड़े हुए थे। (फ़ा66) किसी क़ौम की सूरतें मस्ख़ कीं किसी को ज़मीन में धंसाया (फ़ा67) और ईमान ले आते तकज़ीब न करते (फ़ा68) और वह नसीहत क़बूल करें (फ़ा69) ऐसा फ़सीह जिसने फ़ुसहा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया। (फ़ा70) यानी तनाक़ुज़ व इख़्तिलाफ़ से पाक (फ़ा71) और कुफ़्र व तकज़ीब से बाज़ आयें। (फ़ा72) मुशरिक और मुवह्हिद की। (फ़ा73) यानी एक जमाअ़त का ग़ुलाम निहायत परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी तरफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है वह हैरान है कि किस का हुक्म बजा लाये और किस तरह तमाम आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस ग़ुलाम को जब कोई हाजत व ज़रूरत पेश हो तो किस आक़ा से कहे बख़िलाफ़ उस ग़ुलाम के जिसका एक ही आक़ा हो वह उसकी ख़िदमत करके उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई हाजत पेश आये तो उसी से अ़र्ज़ कर सकता है उसको कोई परेशानी पेश नहीं आती यह हाल मोमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है उसी की इबादत करता है और मुशरिक जमाअ़त के ग़ुलाम की तरह है कि उसने बहुत से मअ़बूद क़रार दे दिये हैं (फ़ा74) जो अकेला है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। (फ़ा75) कि उसके सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं। (फ़ा76) इसमें कुफ़्फ़ार का रद है जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात का इन्तेज़ार किया करता थे उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले होकर दूसरे की मौत का इन्तेज़ार करना हिमाक़त है कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिए होती है फिर उन्हें हयात अ़ता फ़रमाई जाती है इस पर बहुत सी शरई बुरहानें क़ाइम हैं (फ़ा77) अम्बिया उम्मत पर हुज्जत क़ाइम करेंगे कि उन्होंने रिसालत की तबलीग़ की और दीन की दावत देने में जहदे **(बक़िया सफ़हा 751 पर)**

(बक़िया सफ़्हा 720 का) फ़रमाया ताकि क़ौम को मुरसलीन के दीन की तरफ़ रग़बत हो जब हबीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुआ और उनकी उक़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई हज़रत जिबरील को हुक्म हुआ और उनकी एक ही हौलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए चुनांचे इरशाद फ़रमाया जाता है (फ़ा33) उस क़ौम की हलाकत के लिए (फ़ा34) फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है (फ़ा35) उन पर और उनकी मिस्ल और सब पर जो रसूलों की तकज़ीब करके हलाक हुए। (फ़ा36) यानी अहले मक्का ने जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करते हैं कि (फ़ा37) यानी दुनिया की तरफ़ लौटने वाले नहीं क्या यह लोग उनके हाल से इबरत हासिल नहीं करते। (फ़ा38) यानी तमाम उम्मतें रोज़े क़ियामत हमारे हुज़ूर हिसाब के लिए मौक़फ़ में हाज़िर की जायेंगी (फ़ा39) जो उस पर दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमाएगा। (फ़ा40) पानी बरसा कर (फ़ा41) यानी ज़मीन में

(बक़िया सफ़्हा 721 का) या यह माना हैं कि वह अपनी मन्ज़िलों में चलता है और जब सबसे दूर वाले मग़रिब में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्योंकि यही उसका मुस्तक़र है। (फ़ा50) और यह निशानी है जो उसकी क़ुदरते कामिला और हिकमते बालिग़ा पर दलालत करती है (फ़ा51) चांद की अट्ठाईस मन्ज़िलें हैं हर शब एक मन्ज़िल में होता है और पूरी मन्ज़िल तय कर लेता है न कम चले न ज़्यादा तुलूअ़ की तारीख़ से अट्ठाईसवीं तारीख़ तक तमाम मन्ज़िलें तय कर लेता है और अगर महीना तीस का हो तो दो शब और उन्तीस हो तो एक शब छुपता है और जब अपने आख़िर मनाज़िल में पहुंचता है तो बारीक और कमान की तरह ख़मीदा और ज़र्द हो जाता है (फ़ा52) जो सूख कर पतली और ख़मीदा और ज़र्द हो गई हो। (फ़ा53) यानी शब में जो उसके ज़ुहूरे शौकत का वक़्त है उसके साथ जमा होकर उसके नूर को मग़लूब करे क्योंकि सूरज और चांद में से हर एक के ज़ुहूरे शौकत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है सूरज के लिए दिन और चांद के लिए रात (फ़ा54) कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आजाये ऐसा भी नहीं बल्कि रात और दिन दोनों मुअ़य्यन हिसाब के साथ आते जाते हैं कोई उनमें से अपने वक़्त से क़बल नहीं आता और नय्यरैन यानी आफ़ताब व महताब में से कोई दूसरे के हुदूद व शौकत में दाख़िल नहीं होता न आफ़ताब रात में चमके न माहताब दिन में (फ़ा55) जो सामान असबाब वग़ैरह से भरी हुई थी मुराद इससे कश्तीए नूह है जिसमें उनके पहले अजदाद सवार किये गए थे और यह और उनकी ज़ुर्रीयतें उनकी पुश्त में थीं (फ़ा56) बावजूद कश्तियों के (फ़ा57) जो उनकी ज़िन्दगानी के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है (फ़ा58) यानी अ़ज़ाबे दुनिया (फ़ा59) यानी अ़ज़ाबे आख़िरत (फ़ा60) यानी उनका दस्तूर और तरीक़ा कार ही यह है कि वह हर आयत व मौअ़ेज़त से एराज़ व रूगरदानी किया करते हैं।

(बक़िया सफ़्हा 722 का) क़ियामत क़ाइम हो जाएगी यानी लोग अपने अपने कामों में मश्गूल होंगे और वह काम वैसे ही नातमाम रह जायेंगे न उन्हें ख़ुद पूरा कर सकेंगे न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वह वापस न आ सकेंगे चुनान्चे इरशाद होता है। (फ़ा66) वहीं मर जायेंगे और क़ियामत फ़ुर्सत व मोहलत न देगी। (फ़ा67) दूसरी मर्तबा यह नफ़ख़ए सानिया है जो मुर्दों के उठाने के लिए होगा और उन दोनों नफ़ख़ों के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला होगा (फ़ा68) ज़िन्दा होकर (फ़ा69) यह मक़ूला कुफ़्फ़ार का होगा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह यह बात इस लिए कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला दोनों नफ़ख़ों के दर्मियान उनसे अ़ज़ाब उठा देगा और इतना ज़माना वह सोते रहेंगे और नफ़ख़ए सानिया के बाद जब उठाये जायेंगे ओर अहवाले क़ियामत देखेंगे तो इस तरह चीख़ उठेंगे और यह भी कहा गया है कि जब कुफ़्फ़ार जहन्नम और उसके अ़ज़ाब देखेंगे तो उसके मुक़ाबला में अ़ज़ाबे क़ब्र उन्हें सहल मालूम होगा इस लिए वह वैल व अफ़सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे (फ़ा70) और उस वक़्त का इक़रार उन्हें कुछ नाफ़ेअ़ न होगा (फ़ा71) यानी नफ़ख़ए अख़ीरा एक हौलनाक आवाज़ होगी (फ़ा72) हिसाब के लिए फिर उनसे कहा जाएगा। (फ़ा73) तरह तरह की नेअ़मतें और क़िस्म क़िस्म के सुरूर और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ज़ियाफ़त जन्नती नहरों के किनारे बहिश्ती अश्जार की दिलनवाज़ फ़ज़ायें तरब अंगेज़ नग़मात हसीनाने जन्नत का क़ुर्ब और क़िस्म क़िस्म की नेअ़मतों से इल्तेज़ाज़ यह उनके शुग़ल होंगे। (फ़ा74) यानी अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल उन पर सलाम फ़रमाएगा ख़्वाह बवास्ता या बे-वास्ता और यह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है मलाइका अहले जन्नत के पास हर दरवाज़े से आकर कहेंगे तुम पर तुम्हारे रहमत वाले रब का सलाम। (फ़ा75) जिस वक़्त मोमिन जन्नत की तरफ़ रवाना किये जायेंगे उस वक़्त कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ मोमिनीन से अलाहिदा हो जाओ और एक क़ौल यह भी है कि यह हुक्म कुफ़्फ़ार को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने मक़ाम पर जायें। (फ़ा76) अपने अम्बिया की मअ़रेफ़त।

(बक़िया सफ़्हा 723 का) है न क़ुव्वतें नशिस्त बरख़ास्त में मजबूरियां दर पेश हैं अक़्ल काम नहीं करती बात याद नहीं रहती अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को पहचान नहीं सकता जिस परवरदिगार ने यह तग़य्युर किया वह क़ादिर है कि आंखें देने के बाद उन्हें मिटा दे और अच्छी सूरतें अ़ता करने के बाद उनको मस्ख़ करदे और मौत देने के बाद फिर ज़िन्दा करदे। (फ़ा88) माना यह हैं कि हमने आपको शेअ़र गोई का मलका न दिया या यह कि क़ुरआन तालीमे शेअ़र नहीं है और शेअ़र से कलामे काज़िब मुराद है ख़्वाह मौज़ूं हो या ग़ैर मौज़ूं इस आयत में इशारा है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उलूमे अव्वलीन व आख़िरीन तालीम फ़रमाये गए जिनसे कश्फ़े हक़ाइक़ होता है और आपके मालूमात वाक़ई व नफ़सुलअमरी हैं किज़्ब शेअ़री नहीं जो हक़ीक़त में जहल है वह आपकी शान के लाइक़ नहीं और आपका दामने तक़द्दुस इससे पाक है इसमें शेअ़र ब-माना कलाम मौज़ूं के जानने और उसके सही व सक़ीम जय्यद व रद्दी को पहचानने की नफ़ी नहीं इल्म नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में तअ़न करने वालों के लिए यह आयत किसी तरह सनद नहीं हो सकती अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को उलूमे कायनात अ़ता फ़रमाये उसके इन्कार में इस आयत को पेश करना महज़ ग़लत है **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश

कहा था कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) शायर हैं और जो वह फ़रमाते हैं यानी कुरआने पाक वह शेअ़र है इससे उनकी मुराद यह थी कि (मआ़ज़ल्लाह) यह कलाम काज़िब है जैसा कि कुरआने करीम में उनका मक़ूला नक़्ल फ़रमाया गया है बलिफ़्तराहु बल् हु-व शाअ़िरुन् उसी का इस आयत में रद् फ़रमाया गया कि हमने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ऐसी बातिल गोई का मलका ही नहीं दिया और यह किताब अशआ़र यानी अकाज़ीब पर मुश्तमिल नहीं कुफ़्फ़ारे कुरैश ज़बान से ऐसे बद ज़ौक़ और नज़्म उरूज़ी से ऐसे नावाक़िफ़ न थे कि नसर को नज़्म कह देते और कलाम पाक को शेअ़रे उरूज़ी बता बैठते और कलाम का महज़ वज़न उरूज़ी पर होना ऐसा भी न था कि उस पर एतेराज़ किया जा सके इससे साबित हो गया कि उन बे दीनों की मुराद शेअ़्र से कलामे काज़िब थी। (मदारिक व जुमल व रूहुल बयान) और हज़रत शैख़ अकबर कुद्देस सिर्रुहू ने इस आयत के माना में फ़रमाया है कि माना यह हैं कि हमने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुअ़म्मे और इजमाल के साथ ख़िताब नहीं फ़रमाया जिसमें मुराद के मख़्फ़ी रहने का एहतेमाल हो बल्कि साफ़ सरीह कलाम फ़रमाया है जिससे तमाम हिजाब उठ जायें और उलूम रौशन हो जायें चूंकि शेअ़्र नग़ूज़ व तौरिया और रम्ज़ व इजमाल का महल होता है इस लिए शेअ़र की नफ़ी फ़रमा कर इस माना को बयान फ़रमा दिया। (फ़ा89) साफ़ सरीह हक़ व हिदायत कहां वह पाक आसमानी किताब तमाम उलूम की जामेअ़ और कहां शेअ़र जैसा कलाम काज़िब चे निस्बत ख़ाक रा बा आ़लमे पाक (अलकिबरियतुल अहमर लिशैख़ुल अकबर) (फ़ा90) दिल ज़िन्दा रखता हो कलाम व ख़िताब को समझे और यह शान मोमिन की है (फ़ा91) यानी हुज्जते अ़ज़ाब क़ायम हो जाये (फ़ा92) यानी मुसख़्ख़र व ज़ेरे हुक्म कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 724 का) आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहता जाता था कि क्या आपका ख़्याल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बाद भी अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा करेगा हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया हां और तुझे भी मरने के बाद उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उसके जहल का इज़्हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बादअल्लाह तआ़ला की कुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना अपनी नादानी से नामुमकिन समझता है कितना अहमक़ है अपने आपको नहीं देखता कि इब्तेदा में एक गन्दा नुत्फ़ा था गली हुई हड्डी से भी हक़ीर तर अल्लाह तआ़ला की कुदरते कामिला ने उसमें जान डाली इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूर व मुतकब्बिर इन्सान हुआ कि उसकी .कुदरत ही का मुन्किर होकर झगड़ने आ गया इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बरहक़ पानी की बूंद को क़वी और तवाना इन्सान बना देता है उसकी कुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बईद है और इसको नामुमकिन समझना कितनी खुली हुई जहालत है। (फ़ा103) यानी गली हुई हड्डी को हाथ से मल कर मिस्ल बनाता है कि यह तो ऐसी बिखर गई कैसे ज़िन्दा होगी। (फ़ा104) कि क़तरए मनी से पैदा किया गया है। (फ़ा105) पहली का भी और मौत के बाद वाली का भी। (फ़ा106) अरब में दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाये जाते हैं एक का नाम मिर्ख़ दूसरे का अ़फ़्फ़ार इनकी ख़ासियत यह है कि जब उनकी सब्ज़ शाख़ें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जायें तो उनसे आग निकलती है बावजूदेकि वह इतनी तर होती हैं कि उनसे पानी टपकता होता है इसमें कुदरत की कैसी अ़जीब व ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद न पानी आग को बुझाये न आग लकड़ी को जलाये जिस क़ादिरे मुतलक़ की यह हिकमत है वह अगर एक बदन पर मौत के बाद ज़िन्दगी वारिद करे तो उसकी कुदरत से क्या अ़जीब और उसको नामुमकिन कहना आसारे कुदरत देख कर जाहिलाना व मुआ़निदाना इन्कार करना है (फ़ा107) या उन्हीं को बाद मौत ज़िन्दा नहीं कर सकता (फ़ा108) बेशक वह इस पर क़ादिर है (फ़ा109) कि पैदा करे (फ़ा110) यानी मख़्लूक़ात का वुजूद उसके हुक्म के ताबेअ़ है (फ़ा111) आख़िरत में।

(बक़िया सफ़हा 725 का) वह ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। (फ़ा4) यानी आसमान और ज़मीन और उनकी दर्मियानी कायनात और तमाम हुदूद व जेहात सब का मालिक वही है तो कोई दूसरा किस तरह मुस्तहिक़्के इबादत हो सकता है लिहाज़ा वह शरीक से मुनज़्ज़ा है। (फ़ा5) जो ज़मीन के ब-निस्बत और आसमानों से क़रीब तर है। (फ़ा6) यानी हमने आसमान को हर एक नाफ़रमान शैतान से महफ़ूज़ रखा कि जब शयातीन आसमन पर जाने का इरादा करें तो फ़रिश्ते शहाब मार कर उनको दफ़ा कर दें लिहाज़ा शयातीन आसमान पर नहीं जा सकते और (फ़ा7) और आसमान के फ़रिश्तों की गुफ़्तगू नहीं सुन सकते। (फ़ा8) अंगारों की जब वह इस नीयत से आसमान की तरफ़ जायें। (फ़ा9) आख़िरत में। (फ़ा10) यानी अगर कोई शैतान मलाइका का कोई कलिमा कभी ले भागा। (फ़ा11) कि उसे जलाये और ईज़ा पहुंचाये (फ़ा12) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का से। (फ़ा13) तो जिस क़ादिरे बरहक़ को आसमान व ज़मीन जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ का पैदा कर देना कुछ भी मुश्किल और दुशवार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उस पर क्या मुश्किल हो सकता है। (फ़ा14) यह उनके ज़ोअ़्फ़ की एक और शहादत है कि उनकी पैदाइश का असल माद्दा मिट्टी है जो कोई शिद्दत व कुव्वत नहीं रखती और उसमें उन पर एक और बुरहान क़ाइम फ़रमाई गई है कि चिपकती मिट्टी उनका माद्दए पैदाइश है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और ग़ायत यह है कि मिट्टी हो जाने के बाद उस मिट्टी से फिर दोबारा पैदाइश को वह क्यों नामुमकिन जानते हैं माद्दा मौजूद सानेअ़ मौजूद फिर दोबारा पैदाइश कैसे मुहाल हो सकती है। (फ़ा15) उनके तकज़ीब करने से कि ऐसे वाज़ेहुद्दलालत आयात व बय्यिनात के बावजूद वह किस तरह तकज़ीब करते हैं (फ़ा16) आपसे और आपके तअ़ज्जुब से या मरने के बाद उठने से (फ़ा17) मिस्ले शक़्क़े क़मर वग़ैरह के (फ़ा18) जो हमसे ज़माना में मुक़द्दम हैं कुफ़्फ़ार के नज़दीक उनके बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना खुद उनके ज़िन्दा किये जाने से ज़्यादा बईद था इस लिए उन्होंने यह कहा अल्लाह तआ़ला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़हा 726 का) किया तीसरे उसका माल कि कहां से कमाया कहां ख़र्च किया चौथे उसका जिस्म कि उसको किस काम में लाया। (फ़ा27) यह उनसे जहन्नम के ख़ाज़िन बतरीक़े तौबीख़ कहें कि दुनिया में तो एक दूसरे की इमदाद पर बहुत गुर्रा रखते थे आज देखो कैसे आजिज़ हो तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता। (फ़ा28) आजिज़ व ज़लील होकर। (फ़ा29) अपने सरदारों से जो दुनिया में बहकाते थे। (फ़ा30) यानी बज़ोरे क़ुव्वत हमें गुमराही पर आमादा करते थे उस पर कुफ़्फ़ार के सरदार कहेंगे और (फ़ा31) पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से ब-इख़्तियार ख़ुद एअ्राज़ करते थे। (फ़ा32) कि हम तुम्हें अपने इत्तेबाअ् पर मजबूर करते। (फ़ा33) जो उसने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा लिहाज़ा (फ़ा34) उसका अ़ज़ाब गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी (फ़ा35) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा36) गुमराह भी और उनके गुमराह करने वाले सरदार भी क्यों कि यह सब दुनिया में गुमराही में शरीक थे (फ़ा37) और तौहीद क़बूल न करते थे शिर्क से बाज़ न आते थे। (फ़ा38) यानी सय्यदे आ़लम हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रमाने से। (फ़ा39) दीन व तौहीद व नफ़ी शिर्क में

(बक़िया सफ़हा 727 का) था और उसकी निस्बत तन्ज़ के तरीक़ा पर। (फ़ा54) यानी मरने के बाद उठने को। (फ़ा55) और हम से हिसाब लिया जाएगा यह बयान करके उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से। (फ़ा56) कि मेरे उस हमनशीन का जहन्नम में क्या हाल है। (फ़ा57) कि अ़ज़ाब के अन्दर गिरिफ़्तार है तो उस जन्नती ने उससे (फ़ा58) राहे रास्त से बहका कर (फ़ा59) और अपने रहमत व करम से मुझे तेरे इग़वा से महफ़ूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ न देता। (फ़ा60) तेरे साथ जहन्नम में और जब मौत ज़बह कर दी जाएगी तो अहले जन्नत फ़रिश्तों से कहेंगे। (फ़ा61) वही जो दुनिया में हो चुकी। (फ़ा62) फ़रिश्ते कहेंगे नहीं और अहले जन्नत का यह दरियाफ़्त करना अल्लाह तआ़ला की रहमत के साथ तलज़्ज़ुज़ और दाइमी हयात की नेअ्मत और अ़ज़ाब से मामून होने के एहसान पर उसकी नेअ्मत का ज़िक्र करने के लिए है और इस ज़िक्र से उन्हें सुरूर हासिल होगा।

(बक़िया सफ़हा 728 का) उनके मुस्तहिक़े अ़ज़ाब होने की इल्लत इरशाद फ़रमाई जाती है (फ़ा71) और गुमराही में उनका इत्तेबाअ् करते हैं और हक़ के दलाइले वाज़ेहा से आंखें बन्द कर लेते हैं (फ़ा72) इसी वजह से कि उन्होंने अपने बाप दादा की ग़लत राह न छोड़ी और हुज्जत व दलील से फ़ाइदा न उठाया (फ़ा73) यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम जिन्होंने उनको गुमराही और बदअ़मली के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ दिलाया। (फ़ा74) कि वह अ़ज़ाब से हलाक किये गए (फ़ा75) ईमानदार जिन्होंने अपने इख़्लास के सबब नजात पाई (फ़ा76) और हम से अपनी क़ौम के अ़ज़ाब व हलाक की दरख़्वास्त की (फ़ा77) कि हम ने उनकी दुआ़ क़बूल की और उनके दुश्मनों के मुक़ाबला में मदद की और उनसे पूरा इन्तेक़ाम लिया कि उन्हें ग़र्क़ करके हलाक कर दिया (फ़ा78) तो अब दुनिया में जितने इन्सान हैं सब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के कश्ती से उतरने के बाद उनके हमराहियों में जिस क़दर मर्द व औरत थे सभी मर गए सिवा आपकी औलाद और उनकी औरतों के उन्हीं से दुनिया की नस्लें चलीं अरब और फ़ारस और रूम आपके फ़रज़न्द साम की औलाद से हैं और सूडान के लोग आपके बेटे हाम की नसल से और तुर्क और याजूज माजूज वग़ैरह आपके साहबज़ादा याफ़स की औलाद से (फ़ा79) यानी उनके बाद वाले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और उनकी उम्मतों में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्रे जमील बाक़ी रखा। (फ़ा80) यानी मलाइका और जिन्न व इन्स सब उन पर क़ियामत तक सलाम भेजा करें।

(बक़िया सफ़हा 729 का) हक़ीक़ी मुस्तहिक़े इबादत है क़ौम ने कहा कि कल को हमारी ईद है जंगल में मेला लगेगा हम नफ़ीस खाने पका कर बुतों के पास रख जायेंगे और मेला से वापस होकर तबर्रुक के तौर पर उनको खायेंगे आप भी हमारे साथ चलें और मजमा और मेला की रौनक़ देखें वहां से वापस होकर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उनका बनाव सिंगार देखें यह तमाशा देखने के बाद हम समझते हैं कि आप बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे। (फ़ा86) जैसे कि सितारा शनास नुजूम के माहिर सितारों के मवाक़ेअ्. इत्तेसालात व इन्सिराफ़ात को देखा करते हैं (फ़ा87) क़ौम नुजूम की बहुत मोअ्तक़िद थी वह समझी कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने सितारों से अपने बीमार होने का हाल मालूम कर लिया अब यह किसी मुतअ़द्दी मर्ज़ में मुब्तला होने वाले हैं और मुतअ़द्दी मर्ज़ से वह लोग बहुत डरते थे मसला इल्मे नुजूम हक़ है और सीखने में मश्ग़ू.ल होना मन्सूख़ हो चुका मसला शरअ़न कोई मर्ज़ मुतअ़द्दी नहीं होता यानी एक शख़्स का मर्ज़ बेऐनिही दूसरे में नहीं पहुंच जाता माद्दों के फ़साद और हवा वग़ैरह की सम्मियतों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक तरह के मर्ज़ हो सकते हैं लेकिन हुदूस मर्ज़ का हर एक में जुदागाना है किसी का मर्ज़ किसी दूसरे में नहीं पहुंचता। (फ़ा88) अपनी ईद की तरफ़ और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को छोड़ गए आप बुत ख़ाना में आये (फ़ा89) यानी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है बुतों ने उसका कुछ जवाब न दिया और वह जवाब ही क्या देते तो आपने फ़रमाया (फ़ा90) इस पर भी बुतों की तरफ़ से कुछ जवाब न हुआ वह बेजान पत्थर थे जवाब क्या देते। (फ़ा91) और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बुतों को मार मार कर पारा पारा कर दिया जब काफ़िरों को इसकी ख़बर पहुंची। (फ़ा92) और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम उन्हें तोड़ते हो (फ़ा93) तो पूजने का मुस्तहिक़ वह है न बुत इस पर वह हैरान हो गए और उनसे कोई जवाब न बन आया। (फ़ा94) पत्थर की तीस गज़ लम्बी बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी फिर उसको लकड़ियों से भर दो और उनमें आग लगा दो यहां तक कि आग ज़ोर पकड़े। (फ़ा95) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को उस आग में सलामत रखकर चुनांचे आग से आप सलामत बरआमद हुए। (फ़ा96) इस दारुल कुफ़्र से हिजरत करके जहां जाने का मेरा रब हुक्म दे। (फ़ा97) चुनांचे बहुक्मे इलाही आप

सरज़मीने शाम में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आपने अपने रब से दुआ़ की। (फ़ा98) यानी तेरे ज़बह का इन्तेज़ाम कर रहा हूं और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ख़्वाब हक़ होता है और उनके अफ़आ़ल बहुक्मे इलाही हुआ करते हैं। (फ़ा99) यह आपने इस लिए कहा था कि फ़रज़न्द को ज़बह से वहशत न हो और इताअ़ते अम्रे इलाही के लिए वह ब-रग़बत तैयार हों चुनान्चे उस फ़रज़न्दे अरजमन्द ने रज़ाए इलाही पर फ़िदा होने का कमाले शौक़ से इज़हार किया।

(बक़िया सफ़हा 730 का) कसरत की और हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से बहुत से अम्बिया किये, हज़रत याक़ूब से लेकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम तक। (फ़ा106) यानी मोमिन (फ़ा107) यानी काफ़िर फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि किसी बाप के साहबे फ़ज़ाइल कसीरा होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं यह अल्लाह तआ़ला की शानें हैं कभी नेक से नेक पैदा करता है कभी बद से बद कभी बद से नेक न औलाद का बद होना आबा के लिए ऐब हो न आबा की बदी औलाद के लिए। (फ़ा108) कि उन्हें नबुव्वत व रिसालत इनायत फ़रमाई (फ़ा109) यानी बनी इसराईल। (फ़ा110) कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के मज़ालिम से रिहाई दी। (फ़ा111) क़िबतियों के मुक़ाबिल। (फ़ा112) फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम पर। (फ़ा113) जिसका बयान बलीग़ और वह हुदूद व अहकाम वग़ैरह की जामेअ. इस किताब से मुराद तौरेत शरीफ़ है। (फ़ा114) जो बअ़्लबक और उसके नवाह के लोगों की तरफ़ मबऊस हुए। (फ़ा115) यानी क्या तुम्हें अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं (फ़ा116) बअ़ल उनके बुत का नाम था जो सोने का था उसकी लम्बाई बीस गज़ थी चार मुंह थे उसकी बहुत ताज़ीम करते थे जिस मक़ाम में वह था उस जगह का नाम बक था इस लिए बअ़लबक मुरक्कब हुआ यह बिलादे शाम में है।

(बक़िया सफ़हा 731 का) अ़ब्बास और वहब का क़ौल है कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से अ़ज़ाब का वादा किया था उसमें ताख़ीर हुई तो आप उनसे छुपकर निकल गए और आपने दरियाई सफ़र का क़स्द किया कश्ती पर सवार हुए दरिया के दर्मियान में कश्ती ठहर गई और उसके ठहरने का कोई सबब ज़ाहिर मौजूद न था मल्लाहों ने कहा इस कश्ती में अपने मौला से भागा हुआ कोई गुलाम है क़ुरआ डालने से ज़ाहिर हो जाएगा.क़ुरआ डाला गया तो आप ही के नाम निकला तो आपने फ़रमाया कि मैं ही वह गुलाम हूं और आप पानी में डाल दिये गए क्यों कि दस्तूर यही था कि जब तक भागा हुआ गुलाम दरिया में ग़र्क़ न कर दिया जाये उस वक़्त तक कश्ती चलती न थी। (फ़ा126) कि क्यों निकलने में जल्दी की और क़ौम से जुदा होने में अम्रे इलाही का इन्तेज़ार न किया। (फ़ा127) यानी ज़िक्रे इलाही की कसरत करने वाला और मछली के पेट में ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़् ज़ालिमीन पढ़ने वाला। (फ़ा128) यानी रोज़े क़ियामत तक। (फ़ा129) मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस के बाद (फ़ा130) यानी मछली के पेट में रहने के बाइस आप ऐसे ज़ईफ़ नहीफ़ और नाज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है जिस्म की खाल नर्म हो गई थी बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था। (फ़ा131) साया करने और मक्खियों से महफ़ूज़ रखने के लिए (फ़ा132) कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है मगर यह आपका मोअ़जेज़ा था कि यह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की तरह शाख़ रखता था और उसके बड़े बड़े पत्तों के साया में आप आराम करते थे और बहुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के दहाने मुबारक में देकर आपको सुबह व शाम दूध पिला जाती यहां तक कि जिस्म मुबारक की जिल्द शरीफ़ यानी खाल मज़बूत हुई और अपने मौक़ा से बाल जमे और जिस्म में तवानाई आई। (फ़ा133) पहले की तरह सरज़मीन मूसल में क़ौमे नैनवा के। (फ़ा134) आसारे अ़ज़ाब देख कर (इसका बयान सूरह यूनुस के दसवें रुकूअ़ में गुज़र चुका है और इस वाक़िआ़ का बयान सूरह अम्बिया के छटे रुकूअ़ में भी आ चुका है) (फ़ा135) यानी उनकी आख़िर उम्र तक उन्हें आसाइश के साथ रखा इस वाक़िआ़ के बयान फ़रमाने के बाद अल्लाह तआ़ला अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाता है कि आप कुफ़्फ़ारे मक्का से इन्कारे बअ़्स की वजह दरियाफ़्त कीजिये चुनांचे इरशाद फ़रमता है।

(बक़िया सफ़हा 732 का) चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिए।(171) कि बेशक उन्हीं की मदद होगी।(172) और बेशक हमारा ही लश्कर (फ़ा154) ग़ालिब आएगा।(173) तो एक वक़्त तक तुम उनसे मुंह फेर लो।(174) (फ़ा155) और उन्हें देखते रहो कि अन्क़रीब वह देखेंगे।(175) (फ़ा156) तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं।(176) फिर जब उतरेगा उनके आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुबह होगी।(177) और एक वक़्त तक उनसे मुंह फेर लो।(178) और इन्तिज़ार करो कि वह अन्क़रीब देखेंगे।(179) पाकी है तुम्हारे रब को इज़्ज़त वाले रब को उनकी बातों से।(180) (फ़ा157) और सलाम है पैग़म्बरों पर।(181) (फ़ा158) और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब है।(182) (रुकूअ़ 9)

(फ़ा136) जैसा कि जहीना और बनी सलमा वग़ैरह कुफ़्फ़ार का एतेक़ाद है कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं। (फ़ा137) यानी अपने लिए तो बेटियां गवारा नहीं करते बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को ख़ुदा की तरफ़ निस्बत करते हैं। (फ़ा138) देख रहे थे क्यों ऐसी बेहूदा बात कहते हैं। (फ़ा139) फ़ासिद व बातिल। (फ़ा140) और इतना नहीं समझते कि अल्लाह तआ़ला औलाद से पाक और मुनज़्ज़ा है। (फ़ा141) जिसमें यह सनद हो। (फ़ा142) जैसा कि बाज़ मुशरिकीन ने कहा था कि अल्लाह ने जिन्नों में शादी की उससे फ़रिश्ते पैदा हुए (मआ़ज़ल्लाह) कैसे अज़ीम कुफ़्र के मुरतकिब हुए (फ़ा143) यानी इस बेहूदा बात के कहने वाले (फ़ा144) जहन्नम में अ़ज़ाब के लिए (फ़ा145) ईमानदार अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से जो

यह कुफ़्फ़ार नाबकार कहते हैं। (फ़ा146) यानी तुम्हारे बुत सब के सब वह और (फ़ा147) गुमराह नहीं कर सकते (फ़ा148) जिस की क़िस्मत ही में यह है कि वह अपने किरदारे बद से मुस्तहिक़े जहन्नम हो। (फ़ा149) जिसमें अपने रब की इबादत करता है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि आसमानों में बालिश्त भर भी जगह ऐसी नहीं है जिसमें कोई फ़रिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो (फ़ा150) यानी मक्का मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले कहा करते थे कि। (फ़ा151) कोई किताब मिलती। (फ़ा152) उसकी इताअ़त करते और इख़्लास के साथ इबादत बजा लाते फिर जब तमाम किताबों से अफ़ज़ल व अशरफ़ मोअ्जिज़ किताब उन्हें मिली यानी कुरआन मजीद नाज़िल हुआ। (फ़ा153) अपने कुफ़्र का अन्जाम। (फ़ा154) यानी अहले ईमान (फ़ा155) जब तक कि तुम्हें उनके साथ क़िताल करने का हुक्म दिया जाये। (फ़ा156) तरह तरह के अ़ज़ाब दुनिया व आख़िरत में जब यह आयत नाज़िल हुई तो कुफ़्फ़ार ने बराहे तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा कहा कि यह अ़ज़ाब कब नाज़िल होगा इसके जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। (फ़ा157) जो काफ़िर उसकी शान में कहते हैं और उसके लिए शरीक और औलाद ठहराते हैं। (फ़ा158) जिन्होंने अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ से तौहीद और अहकामे शरअ़ पहुंचाये इन्सानी मरातिब में सब से आला मर्तबा यह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तकमील करे यह शान अम्बिया की है अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम तो हर एक पर उन हज़रात का इत्तेबाअ़ और उनकी इक़्तेदा लाज़िम है।

(बक़िया सफ़्हा 733 का) बुला कर अर्ज़ किया कि यह आपकी क़ौम के लोग हैं और आप से सुलह चाहते हैं आप उनकी तरफ़ से यक लख़्त इन्हेराफ़ न कीजिये सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह मुझसे क्या चाहते हैं उन्होंने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मअ़बूदों के ज़िक्र को छोड़ दीजिये हम आपके और आपके मअ़बूद की बदगोई के दरपै न होंगे हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया क्या तुम एक कलिमा क़बूल कर सकते हो जिससे अरब व अ़जम के मालिक व फ़रमांरवा हो जाओ अबू जहल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे क़बूल कर सकते हैं सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो ला इला-ह इल्लल्लाह इस पर वह लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या उन्होंने बहुत से ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया इतनी बहुत सी मख़्लूक़ के लिए एक ख़ुदा कैसे काफ़ी हो सकता है (फ़ा9) अबू तालिब की मजलिस से आपस में यह कहते (फ़ा10) नसरानी भी तीन ख़ुदाओं के क़ाइल थे यह तो एक ही ख़ुदा बताते हैं। (फ़ा11) अहले मक्का को सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मन्सबे नबुव्वत पर हसद आया और उन्होंने यह कहा कि हम में साहबे शरफ़ व इज़्ज़त आदमी मौजूद थे उनमें से किसी पर कुरआन न उतरा ख़ास हज़रत सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर उतरा। (फ़ा12) कि उसके लाने वाले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करते हैं (फ़ा13) अगर मेरा अ़ज़ाब चख लेते तो यह शक व तकज़ीब व हसद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तस्दीक़ करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक़ मुफ़ीद न होती। (फ़ा14) और क्या नबुव्वत की कुन्जियां उनके हाथ में हैं जिसे चाहें दें अपने आपको क्या समझते हैं अल्लाह तआ़ला और उसकी मालकियत को नहीं जानते (फ़ा15) हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत जिसे जो चाहे अ़ता फ़रमाये उसने अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबुव्वत अ़ता फ़रमाई तो किसी को उसमें दख़ल देने और चूं चरा की क्या मजाल (फ़ा16) और ऐसा इख़्तियार हो तो जिसे चाहें वही के साथ ख़ास करें और आ़लम की तदबीर अपने हाथ में लें और जब यह कुछ नहीं है तो उमूरे रब्बानिया व तदाबीरे इलाहिया में दख़ल क्यों देते हैं उन्हें इसका क्या हक़ है कुफ़्फ़ार को यह जवाब देने के बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने नबीए करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नुसरत व मदद का वादा फ़रमाया है

(बक़िया सफ़्हा 734 का) उस पर तरह तरह की सख़्तियां करता था। (फ़ा19) जो शुऐब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की क़ौम से थे। (फ़ा20) जो अम्बिया के मुक़ाबिल जत्थे बांध कर आये मुशरिकीने मक्का उन्हीं गरोहों में से हैं (फ़ा21) यानी उन गुज़री हुई उम्मतों ने जब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की तकज़ीब की तो उन पर अ़ज़ाब लाज़िम हो गया तो उन ज़ईफ़ों का क्या हाल होगा जब उन पर अ़ज़ाब उतरेगा (फ़ा22) यानी क़ियामत के नफ़ख़ए औला की जो उनके अ़ज़ाब की मीआ़द है। (फ़ा23) यह नज़र बिन हारिस ने बतौर तमस्ख़ुर कहा था इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया कि-(फ़ा24) जिनको इबादत की बहुत क़ुव्वत दी गई थी आपका तरीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते एक दिन इफ़्तार फ़रमाते और रात के पहले निस्फ़ हिस्सा में इबादत करते इसके बाद शब की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छटा हिस्सा इबादत में गुज़ारते (फ़ा25) अपने रब की तरफ़। (फ़ा26) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की तस्बीह के साथ (फ़ा27) इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिए पहाड़ों को ऐसा मुसख़्ख़र किया था कि जहां आप चाहते साथ ले जाते। (मदारिक) (फ़ा28) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि जब हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम तस्बीह करते तो पहाड़ भी आपके साथ तस्बीह करते और परिन्दे आपके पास जमा होकर तस्बीह करते (फ़ा29) पहाड़ भी और परिन्द भी। (फ़ा30) फ़ौज व लश्कर की कसरत अ़ता फ़रमा कर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि रूए ज़मीन के बादशाहों में हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की सल्तनत बड़ी मज़बूत और क़वी सल्तनत थी छत्तीस हज़ार मर्द आपके मेहराब के पहरे पर मुक़र्रर थे। (फ़ा31) यानी नबुव्वत बाज़ मुफ़स्सिरीन ने हिकमत की तफ़सीर अ़द्ल की है बाज़ ने किताबुल्लाह का इल्म बाज़ ने फ़िक़्ह बाज़ ने सुन्नत (जुमल) (फ़ा32) क़ौले फ़ैसल से इल्मे क़ज़ा मुराद है जो हक़ व बातिल में फ़र्क़ व तमीज़ कर दे। (फ़ा33) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा34) यह आने वाले जक़ौल मशहूर

मलाइका थे जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की आज़माइश के लिए आये थे (फ़ा35) उनका यह क़ौल एक मसला की फ़र्ज़ी शक्ल पेश करके जवाब हासिल करना था और किसी मसला के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म मालूम करने के लिए फ़र्ज़ी सूरतें मुक़र्रर करली जाती हैं और मुअ़य्यन अश्ख़ास की तरफ़ उनकी निस्बत कर दी जाती है ताकि मसला का बयान बहुत वाज़ेह तरीक़ा पर हो और इबहाम बाक़ी न रहे यहां जो सूरते मसला उन फ़रिश्तों ने पेश की इस से मक़सूद हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को तवज्जोह दिलाना थी उस अमर की तरफ़ जो उन्हें पेश आया था और वह यह था कि आपकी निन्नानवे बीबियां थीं इसके बाद आपने एक और औरत को पयाम दे दिया जिसको एक मुसलमान पहले से पयाम दे चुका था लेकिन आपका पयाम पहुंचने के बाद औरत के अइज़्ज़ा व अक़ारिब दूसरे की तरफ़ इल्तेफ़ात करने वाले कब थे आपके लिए राज़ी हो गए और आप से निकाह हो गया एक क़ौल यह भी है कि उस मुसलमान के साथ निकाह हो चुका था आपने उस मुसलमान से अपनी रग़बत का इज़्हार किया और चाहा कि वह अपनी औरत को तलाक़ दे दे वह आपके लिहाज़ से मना न कर सका और उसने तलाक़ दे दी आपका निकाह हो गया और उस ज़माना में ऐसा मामूल था कि अगर किसी शख़्स को किसी की औरत की तरफ़ रग़बत होती तो उस से इस्तेदआ़ करके तलाक़ दिलवा लेता और बादे इद्दत निकाह कर लेता यह बात न तो शरअ़न नाजाइज़ है न उस ज़माना के रस्म व आदत के खिलाफ़ लेकिन शाने अम्बिया बहुत अरफ़अ़ व आला होती है इस लिए यह आपके मन्सबे आली के लाइक़ न था तो मर्ज़ीए इलाही यह हुई कि आपको उस पर आगाह किया जाये और इसका सबब यह पैदा किया कि मलाइका मुद्दई और मुद्दआ़ इलैह की शक्ल में आपके सामने पेश हुए फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि अगर बुज़ुर्गों से कोई लग़ज़िश सादिर हो और कोई अमर ख़िलाफ़े शान वाक़ेअ़ हो जाये तो अदब यह है कि मोअ़तरेज़ाना ज़बान न खोली जाये बल्कि इस वाक़िआ़ की मिस्ल एक वाक़िआ़ मुतसव्विर करके उसकी निस्बत साइलाना व मुस्तफ़तियाना व मुस्तफ़ीदाना सवाल किया जाए और उनकी अ़ज़मत व एहतेराम का लिहाज़ रखा जाये और यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़्ज़ व जल्ल मालिक व मौला अपने अम्बिया की ऐसी इज़्ज़त फ़रमाता है कि उनको किसी बात पर आगाह करने के लिए मलाइका को इस तरीक़े अदब के साथ हाज़िर होने का हुक्म देता है। (फ़ा36) जिस की ग़लती हो बे रू रिआ़यत फ़रमा दीजिये (फ़ा37) यानी दीनी भाई।

(बक़िया सफ़हा 735 का) जबकि बअ़्स व जज़ा के मुन्किर हैं तो नतीजा यही है कि आ़लम की ईजाद को अ़बस और बे फ़ाइदा मानें। (फ़ा44) यह बात बिल्कुल हिकमत के ख़िलाफ़ है और जो शख़्स जज़ा का क़ाइल नहीं वह ज़रूर मुफ़सिद व मुसलेह और फ़ाजिर व मुत्तक़ी को बराबर क़रार देगा और उनमें फ़र्क़ न करेगा कुफ़्फ़ार इस जहल में गिरिफ़्तार हैं **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे कुरैश ने मुसलमानों से कहा था कि आख़िरत में जो निअ़मतें तुम्हें मिलेंगी वही हमें भी मिलेंगी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि नेक व बद मोमिन व काफ़िर को बराबर कर देना मुक़तज़ाए हिकमत नहीं कुफ़्फ़ार का ख़्याल बातिल है। (फ़ा45) यानी क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा46) फ़रज़न्दे अरजमन्द (फ़ा47) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ और तमाम औक़ात तस्बीह व ज़िक्र में मश्गूल रहने वाला। (फ़ा48) बाद ज़ुहर ऐसे घोड़े। (फ़ा49) यह हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिए हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के मुलाहज़ा में बाद ज़ुहर पेश किये गए।

(बक़िया सफ़हा 736 का) बहुत से वाही अक़वाल लिख दिये हैं जिनकी सेहत पर कोई दलील नहीं और वह महज़ हिकायात हैं जो दलाइले क़विया के सामने किसी तरह क़ाबिले क़बूल नहीं और यह तफ़सीर जो ज़िक्र की गई यह इबारते क़ुरआन से बिल्कुल मुताबिक़ है व लिल्लाहिल् हम्द° (तफ़सीरे कबीर) (फ़ा53) बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नव्वे बीबियों पर दौरा करूंगा हर एक हामला होगी और हर एक से राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला सवार पैदा होगा मगर यह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से इन्शाअल्लाह न फ़रमाया (ग़ालबन हज़रत किसी ऐसे शुग़ल में थे कि इसका ख़्याल न रहा) तो कोई भी औरत हामला न हुई सिवाए एक के और उसके भी नाक़िसुल ख़िलक़त बच्चा पैदा हुआ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने इन्शाअल्लाह फ़रमाया होता तो उन सब औरतों के लड़के ही पैदा होते और वह राहे ख़ुदा में जिहाद करते (बुख़ारी पारह तेरह किताबुल अम्बिया) (फ़ा54) यानी ग़ैर ताम्मुल ख़िलक़त बच्चा (फ़ा55) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ इस्तिग़फ़ार करके इन्शाअल्लाह कहने की भूल पर और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में (फ़ा56) इससे यह मक़सूद था कि ऐसा मुल्क आपके लिए मोअ़जेज़ा हो (फ़ा57) फ़रमांबरदाराना तरीक़ा पर (फ़ा58) जो आपके हुक्म से हस्बे मर्ज़ी अ़जीब व ग़रीब इमारतें तामीर करता (फ़ा59) जो आपके लिए समुन्द्र से मोती निकालता दुनिया में सब से पहले समुन्द्र से मोती निकलवाने वाले आप ही हैं (फ़ा60) सरकश शैतान भी आपके मुसख़्ख़र कर दिये गए जिनको आप तादीब और फ़साद से रोकने के लिए बेड़ियों और ज़न्जीरों में जकड़वा कर क़ैद करते थे (फ़ा61) जिस पर चाहे। (फ़ा62) जिस किसी से चाहे यानी आपको देने और न देने का इख़्तियार दिया गया जैसी मर्ज़ी हो करें। (फ़ा63) जिस्म और माल में इससे आपका मर्ज़ और उसके शदाइद मुराद हैं (इस वाक़िआ़ का मुफ़स्सल बयान सूरह अम्बिया के रुकूअ़ छः में गुज़र चुका है)। (फ़ा64) चुनांचे आपने ज़मीन में पाँव मारा और उस से आबे शीरीं का एक चश्मा ज़ाहिर हुआ और आपसे कहा गया। (फ़ा65) चुनांचे आपने उससे पिया और ग़ुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी व बातिनी मर्ज़ और तकलीफ़ें दफ़ा हो गईं। (फ़ा66) चुनांचे मरवी है कि जो औलाद आपकी मर चुकी थी अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़्ल व रहमत से उतने ही और अ़ता फ़रमाये (फ़ा67) अपनी बीबी को जिस को सौ ज़रबें मारने की क़सम खाई थी देर से हाज़िर होने के बायस। (फ़ा68) यानी अय्यूब अ़लैहिस्सलाम।

(बक़िया सफ़हा 737 का) (फ़ा77) भड़कने वाली आग कि वही फ़र्श होगी। (फ़ा78) जो जहन्नमियों के जिस्मों और उनके सड़े हुए ज़ख़्मों और नजासत के मक़ामों से बहेगी जलती बदबूदार। (फ़ा79) क़िस्म क़िस्म के अज़ाब। (फ़ा80) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनके पीछे पीछे उनकी इत्तेबाअ करने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे यह तुम्हारे मुत्तबेईन की फ़ौज है जो तुम्हारी तरह तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है। (फ़ा81) कि तुमने पहले कुफ़्र इख़्तियार किया और हमें उस राह पर चलाया। (फ़ा82) यानी जहन्नम निहायत ही बुरा ठिकाना है। (फ़ा83) कुफ़्फ़ार के अमाइद और सरदार। (फ़ा84) यानी ग़रीब मुसलमानों को और उन्हें वह अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के बाइस शरीर कहते थे और ग़रीब होने की वजह से हक़ीर समझते थे जब कुफ़्फ़ार जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वह हमें क्यों नज़र नहीं आते (फ़ा85) और दर हक़ीक़त वह ऐसे न थे दोज़ख़ में आये ही नहीं हमारा उनके साथ इस्तेहज़ा करना और उनकी हंसी बनाना बातिल था।

(बक़िया सफ़हा 738 का) (फ़ा100) और बेशक तुझ पर मेरी लानत है क़ियामत तक।(78) (फ़ा101) बोला ऐ मेरे रब ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक वह कि उठाए जायें।(79) (फ़ा102) फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है।(80) उस जाने हुए वक़्त के दिन तक।(81) (फ़ा103) बोला तो तेरी इज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा। (82) मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं।(83) फ़रमाया तो सच यह है और मैं सच ही फ़रमाता हूं।(84) बेशक मैं ज़रूर जहन्नम भर दूंगा तुझ से (फ़ा104) और उनमें से (फ़ा105) जितने तेरी पैरवी करेंगे(85) सब से तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं।(86) वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिए।(87)और ज़रूर एक वक़्त के बाद तुम उसकी ख़बर जानोगे।(88)(फ़ा106) (रुकूअ 14)

(फ़ा86) इस लिए वह हमें नज़र न आये या यह माना हैं कि उनकी तरफ़ से आंखें फिर गईं और दुनिया में हम उनके रुतबे और बुज़ुर्गी को न देख सके। (फ़ा87) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के कुफ़्फ़ार से (फ़ा88) तुम्हें अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता हूं। (फ़ा89) यानी क़ुरआन या क़ियामत या मेरा रसूल मुन्ज़र होना या अल्लाह तआला का वाहिद लाशरीक लहू होना (फ़ा90) कि मुझ पर ईमान नहीं लाते और क़ुरआन पाक और मेरे दीन को नहीं मानते (फ़ा91) यानी फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाब में यह हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सेहते नबुव्वत की एक दलील है मुद्दआ यह है कि आलमे बाला में फ़रिश्तों का हज़रत आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाब में सवाल व जवाब करना मुझे क्या मालूम होता अगर मैं नबी न होता उसकी ख़बर देना मेरी नबुव्वत और मेरे पास वही आने की दलील है (फ़ा92) दारमी और तिर्मिज़ी की हदीसों में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन हालत में अपने रब अज़्ज़ व जल्ल के दीदार से मुशर्रफ़ हुआ (हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे ख़्याल में यह वाक़िआ ख़्वाब का है) हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत रब्बुल इज़्ज़त अज़्ज़ा व ऊला व तबारक व तआला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आलमे बाला के मलाइका किस बहस में हैं मैंने अर्ज़ किया या रब तू ही दाना है हुज़ूर ने फ़रमाया फिर रब्बुल इज़्ज़त ने अपना दस्ते रहमत व करम मेरे दोनों शानों के दर्मियान रखा और मैंने उसके फ़ैज़ का असर अपने क़ल्ब मुबारक में पाया तो आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें मेरे इल्म में आ गईं फिर अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क्या तुम जानते हो कि आलमे बाला के मलाइका किस अमर में बहस कर रहे हैं मैंने अर्ज़ किया हां ऐ रब मैं जानता हूं वह कफ़्फ़ारात में बहस कर रहे हैं और कफ़्फ़ारात यह हैं नमाज़ों के बाद मस्जिद में ठहरना और प्यादा पा जमाअतों के लिए जाना और जिस वक़्त सर्दी वग़ैरह के बाइस पानी का इस्तेमाल नागवार हो उस वक़्त अच्छी तरह वुज़ू करना जिस ने यह किया उसकी ज़िन्दगी भी बेहतर मौत भी बेहतर और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था और फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नमाज़ के बाद यह दुआ किया करो *अल्लाहुम्-म इन्नी अस्-अलु-क फ़ेअ्-लल्ख़ैराति व तर्-कल् मुन्कराति व हुब्-बल्मसाकीनि व इज़ा अरत्-त बि-अिबादि-क फ़ित्-नतन् फ़क़्बिज़्नी इलै-क ग़ै-र मफ़्तून* बाज़ रिवायतों में यह है कि हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ मशरिक़ व मग़रिब में है सब मैंने जान लिया इमाम अल्लामा अलाउद्दीन अली बिन मुहम्मद इब्ने इब्राहीम बग़दादी मअ़रूफ़ बख़ाज़िन अपनी तफ़सीर में इसके माना यह बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हु.ज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीना मुबारक खोल दिया और क़ल्ब शरीफ़ को मुनव्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सब की मअ़रेफ़त आपको अता कर दी ता आंकि आपने निअ़मत व मअ़रेफ़त की सर्दी अपने क़ल्बे मुबारक में पाई और जब क़ल्ब शरीफ़ मुनव्वर हो गया और सीना पाक खुल गया तो जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है बइलामे इलाही जान लिया (फ़ा93) यानी (हज़रत) आदम को पैदा करूंगा (फ़ा94) यानी उसकी पैदाइश तमाम करदूं (फ़ा95) और उसको ज़िन्दगी अता करदूं (फ़ा96) सजदा न किया (फ़ा97) यानी इल्मे इलाही में (फ़ा98) यानी उस क़ौम में से जिनका शैवा ही तकब्बुर है (फ़ा99) इससे उसकी मुराद यह थी कि अगर आदम आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं उन्हें सज्दा न करता चे जाइकि उनसे बेहतर होकर उन्हें सज्दा करूं (फ़ा100) अपनी सरकशी व नाफ़रमानी व तकब्बुर के बाइस फिर अल्लाह तआला ने उसकी सूरत बदल दी वह पहले हसीन था बद शकल रू सियाह कर दिया गया

और उसकी नूरानियत सल्ब कर दी गई (फ़ा101) और क़ियामत के बाद लानत भी और तरह तरह के अ़ज़ाब भी (फ़ा102) आदम अ़लैहिस्सलाम और उनकी ज़ुर्रियत अपने फ़ना होने के बाद जज़ा के लिए और इससे उसकी मुराद यह थी कि वह इन्सानों को गुमराह करने के लिए फ़राग़त पाये और उनसे अपना बुग्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाये क्योंकि उठने के बाद मौत नहीं है। (फ़ा103) यानी नफ़ख़ए औला तक जिसको ख़ल्क़ की फ़ना के लिए मुअ़य्यन फ़रमाया गया। (फ़ा104) मअ़ तेरी ज़ुर्रियत के। (फ़ा105) यानी इन्सानों में से। (फ़ा106) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मौत के बाद और एक क़ौल यह है कि क़ियामत के रोज़।

(बक़िया सफ़हा 739 का) और कभी दिन की रौशनी से रात के हिस्सा को मुराद यह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात को घटा कर दिन को ज़्यादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटते घटते दस घन्टा का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घन्टे का हो जाता है। (फ़ा13) यानी क़ियामत तक वह अपने मुक़र्रर निज़ाम पर चलते रहेंगे। (फ़ा14) यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से(फ़ा15)यानी हज़रत हव्वा को।(फ़ा16)यानी ऊँट गाय बकरी भेड़ से

(बक़िया सफ़हा 740 का) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मरवी है कि यह आयत हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की शान में नाज़िल हुई और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मरवी है कि वह आयत हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल यह है कि हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अ़म्मार और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के हक़ में नाज़िल हुई फ़ाइदा इस आयत से साबित हुआ कि रात के नवाफ़िल व इबादत दिन के नवाफ़िल से अफ़ज़ल हैं इसकी एक वजह तो यह है कि रात का अ़मल पोशीदा होता है इस लिए वह रिया से बहुत दूर होता है दूसरे यह कि दुनिया के कारोबार बन्द होते हैं इस लिए क़ल्ब ब-निस्बत दिन के बहुत फ़ारिग़ होता है और तवज्जोह इलल्लाह और ख़ुशूअ़ दिन से ज़्यादा रात में मुयस्सर आता है तीसरे रात चूंकि राहत व ख़्वाब का वक़्त होता है इस लिए उसमें बेदार रहना नफ़्स को बहुत मुशक़्क़त व तअ़ब में डालता है तो सवाब भी उसका ज़्यादा होगा। (फ़ा33) इससे साबित हुआ कि मोमिन के लिए लाज़िम है कि वह बैनल ख़ौफ़ वर्रिजा हो अपने अ़मल की तक़सीर पर नज़र करके अ़ज़ाब से डरता रहे और अल्लाह तआ़ला की रहमत का उम्मीदवार रहे दुनिया में बिल्कुल बेख़ौफ़ होना या अल्लाह तआ़ला की रहमत से मुतलक़न मायूस होना यह दोनों क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार की हालतें बताई गई हैं क़ालल्लाहु तआ़ला फ़ला या मनु मक्रल्लाहि इल्लल्क़ौमुल् ख़ासिरू-न व क़ा-ल तआ़ला ला यय्-असु मिंर्-रौहिल्लाहि इल्लल्-क़ौमुल्काफ़िरून°

(बक़िया सफ़हा 741 का) हैं तो वह उनके शुरू करने में सबसे मुक़द्दम और अव्वल हुए अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को यह हुक्म देकर तम्बीह की कि दूसरों पर इसकी पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरग़ीब के लिए नबी अ़लैहिस्सलाम को यह हुक्म दिया गया (फ़ा40) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात व उज़्ज़ा की परस्तिश करते हैं उनके रद्द में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा41) यह बतरीक़े तहदीद व तौबीख़ फ़रमाया। (फ़ा42) यानी गुमराही इख़्तियार करके हमेशा के लिए मुस्तहिक़े जहन्नम हो गए और जन्नत की निअ़मतों से महरूम हो गए जो ईमान लाने पर उन्हें मिलतीं। (फ़ा43) यानी हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। (फ़ा44) कि ईमान लायें और ममनूआ़त से बचें। (फ़ा45) वह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का सबब हो। (फ़ा46) जिस में उनकी बहबूद हो।

(बक़िया सफ़हा 742 का) ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सीना का खुलना किस तरह होता है फ़रमाया कि जब नूर क़ल्ब में दाख़िल होता है तो वह खुलता है और उसमें वुसअ़त होती है सहाबा ने अ़र्ज़ किया इसकी क्या अ़लामत है फ़रमाया दारुलख़ुलूद की तरफ़ मुतवज्जह होना और दारुलग़ुरूर (दुनिया से) दूर रहना और मौत के लिए उसके आने से क़ब्ल आमादा होना। (फ़ा56) नफ़्स जब ख़बीस होता है तो क़बूले हक़ से उसको बहुत दूरी हो जाती है और ज़िक्रुल्लाह के सुनने से उसकी सख़्ती और कदूरत बढ़ती है जैसे कि आफ़ताब की गर्मी से मोम नर्म होता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही ज़िक्रुल्लाह से मोमिनीन के क़ुलूब नरम होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है फ़ाइदा इस आयत से उन लोगों को इबरत पकड़ना चाहिए जिन्होंने ज़िक्रुल्लाह को रोकना अपना शिआ़र बना लिया है वह सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मना करते हैं नमाज़ों के बाद ज़िक्रुल्लाह करने वालों को भी रोकते और मना करते हैं ईसाले सवाब के लिए क़ुरआने करीम और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिदअ़ती बताते हैं और उन ज़िक्र की महफ़िलों से निहायत घबराते हैं और भागते अल्लाह तआ़ला हिदायत दे। (फ़ा57) क़ुरआन शरीफ़ जो इबारत में ऐसा फ़सीह व बलीग़ कि कोई कलाम इससे कुछ निस्बत ही नहीं रख सकता मज़मून निहायत दिल पज़ीर बावजूदेकि न नज़्म है न शेअ़र निराले ही उसलूब पर है और माना में ऐसा बुलन्द मर्तबा कि तमाम उलूम का जामेअ़ और मअ़रेफ़ते इलाही जैसी अज़ीमुश्शान निअ़मत का रहनुमा (फ़ा58) हुस्न व ख़ूबी में (फ़ा59) कि उसमें वअ़्द के साथ वईद और अम्र के साथ नही और अख़्बार के साथ अहकाम हैं (फ़ा60) हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह औलिया अल्लाह की सिफ़त है कि ज़िक्रे इलाही से उनके बाल खड़े होते जिस्म लरज़ते हैं और दिल चैन पाते हैं

(बक़िया सफ़हा 743 का) बलीग़ सिर्फ़ फ़रमाई और काफ़िर बे फ़ाइदा मअ़ज़रतें पेश करेंगे यह भी कहा गया है कि मुराद इख़्तेसाम आम है कि लोग दुनियवी हुक़ूक़ में मुख़ासमा करेंगे और हर एक अपना हक़ तलब करेगा।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكٰفِرِينَ ۝ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ

وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَمَنْ يَهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ

السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهِ ۚ

قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ۝ إِنَّا

फ़—मन् अज़्लमु मिम्मन् क—ज़—ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़—ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा—अहू अलै—स फ़ी जहन्न—म मस्वल् लिल्काफ़िरीन(32)वल्ल—ज़ी जा—अ बिस्सिद्क़ि व सद्—द—क़ बिही उलाइ—क हुमुल्मुत्तक़ून(33) लहुम् मा यशाऊ—न अ़िन्—द रब्बि—हिम् ज़ालि—क जज़ाउल् मुह्सिनीन(34)लियु—कफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्—व अल्लज़ी अ़मिलू व यज्ज़ि—यहुम् अज्—रहुम् बि—अह्सनिल् लज़ी कानू यअ़्मलून(35) अलै—सल्लाहु बि—काफ़िन् अ़ब्दहू व यु—ख़व्विफ़ू—न—क बिल्लज़ी—न मिन् दूनिही व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद(36)व मंय्यह्दिल्लाहु फ़मा लहू मिम्मुज़िल्लिन् अलैसल्लाहु बि—अ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम(37)व लइन् स—अल्तहुम् मन् ख़—ल—क़स्समावाति वल्अर्—ज़ ल—यक़ू—लुन्नल्लाहु क़ुल् अ—फ़—रऐतुम् मा तदअून.न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरा—दनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्—न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरा—दनी बि—रह्मतिन् हल् हुन्—न मुम्सिकातु रह्मतिही क़ुल् ह़स्बियल्लाहु अ़लैहि य—त—वक्कलुल् मु—त—वक्किलून(38)क़ुल् या क़ौमिअ़्—मलू अ़ला मका—नतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ— फ़ तअ़्—लमून(39) मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम् मुक़ीम(40)इन्ना

तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा78) और हक़ को झुठलाए (फ़ा79) जब उसके पास आए क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं।(32) और वह जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए (फ़ा80) और वह जिन्होंने उनकी तस्दीक़ की (फ़ा81) यही डर वाले हैं।(33) उनके लिए है जो वह चाहें अपने रब के पास नेकों का यही सिला है।(34) ताकि अल्लाह उनसे उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्होंने किया और उन्हें उनके सवाब का सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर (फ़ा82) जो वह करते थे।(35) क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं (फ़ा83) और तुम्हें डराते हैं उसके सिवा औरों से (फ़ा84) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसकी कोई हिदायत करने वाला नहीं।(36) और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने वाला नहीं।(37) (फ़ा85) और अगर तुम उनसे पूछो आसमान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने (फ़ा86) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो (फ़ा87) अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे (फ़ा88) तो क्या वह उसकी भेजी तकलीफ़ टाल देंगे या वह मुझ पर मेह्र फ़रमाना चाहे तो क्या वह उसकी मेह्र को रोक रखेंगे (फ़ा89) तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है (फ़ा90) भरोसे वाले उस पर भरोसा करें।(38) तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम अपनी जगह काम किये जाओ (फ़ा91) मैं अपना काम करता हूं (फ़ा92) तो आगे जान जाओगे।(39) किस पर आता है वह अ़ज़ाब कि उसे रुसवा करेगा (फ़ा93)और किस पर उतरता है अ़ज़ाब कि रह पड़ेगा।(40)(फ़ा94) बेशक

(फ़ा78) और उसके लिए शरीक और औलाद क़रार दे (फ़ा79) यानी क़ुरआन शरीफ़ को या रसूल अ़लैहिस्सलाम की रिसालत को (फ़ा80) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो तौहीदे इलाही लाये (फ़ा81) यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु या तमाम मोमिनीन। (फ़ा82) यानी उनकी बदियों पर गिरिफ़्त न करे और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाये। (फ़ा83) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए और एक क़िराअत में इबा-दहू भी आया है इस सूरत में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम मुराद हैं जिनके साथ उनकी क़ौमों ने ईज़ा रिसानी के इरादे किये अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखा और उनकी किफ़ायत फ़रमाई। (फ़ा84) यानी बुतों से वाक़िआ यह था कि कुफ़्फ़ारे अरब ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को डराना चाहा और आप से कहा कि आप हमारे **(बक़िया सफ़हा 774 पर)**

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿41﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ
الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿42﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
شُفَعَآءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿43﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿44﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ
قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿45﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿46﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अन्ज़ल्ना अ़लैकल् किता–ब लिन्नासि बिल्ह़क़्क़ि फ़–मनिह्तदा फ़लि–नफ़्सिही व मन् ज़ल्–ल फ़इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्–त अ़लैहिम् बि–वकील(41)अल्लाहु य–त–वफ़्फ़ल् अन्फ़ु–स ह़ी–न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़युम्सिकुल् लती क़ज़ा अ़लैहल्मौ–त व युर्सिलुल् उख़्रा इला अ–जलिम् मुसम्मन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(42) अमित् त–ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शु–फ़आ–अ कुल् अ–वलौ कानू ला यम्लिकू–न शैअंव् व ला यअ़क़िलून(43)कुल् लिल्ला–हिश्शफ़ा–अ़तु जमीअ़न् लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि सुम्–म इलैहि तुर्जअू़न(44)व इज़ा ज़ुकि–रल्लाहु वह्–दहुश्म–अज़्ज़त् क़ुलूबुल् लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल् आख़ि–रति व इज़ा ज़ुकि–रल्लज़ी–न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून(45)कुलिल्लाहुम्–म फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि आ़लिमल् ग़ैबि वश्शहा–दति अन्–त तह्कुमु बै–न अ़िबादि–क फ़ी मा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून.(46)व लौ अन्–न लिल्लज़ी–न ज़–लमू मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव् व मिस्लहू म–अ़हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल् अ़ज़ाबि यौमल्क़िया–मति व बदा–लहुम् मिनल्लाहि

हमने तुम पर यह किताब लोगों की हिदायत को हक़ के साथ उतारी (फ़ा95) तो जिस ने राह पाई तो अपने भले को (फ़ा96) और जो बहका वह अपने ही बुरे को बहका (फ़ा97) और तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार नहीं।(41) (फ़ा98) (रुकूअ़ 1) अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उनके सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है (फ़ा99) और दूसरी (फ़ा100) एक मीआ़द मुक़र्रर तक छोड़ देता है (फ़ा101) बेशक इसमें ज़रूर निशानियाँ हैं सोचने वालों के लिए।(42) (फ़ा102) क्या उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं (फ़ा103) तुम फ़रमाओ क्या अगरचे वह किसी चीज़ के मालिक न हों (फ़ा104) और न अ़क़्ल रखें।(43) तुम फ़रमाओ शफ़ाअ़त तो सब अल्लाह के हाथ में है (फ़ा105) उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही फिर तुम्हें उसी की तरफ़ पलटना है।(44) (फ़ा106) और जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उनके जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते (फ़ा107) और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र होता है (फ़ा108) जभी वह ख़ुशियाँ मनाते हैं।(45) तुम अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले निहाँ और अ़याँ के जानने वाले तू अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा जिसमें वह इख़्तिलाफ़ रखते थे।(46) (फ़ा109) और अगर ज़ालिमों के लिए होता जो कुछ ज़मीन में है सब और उसके साथ उस जैसा (फ़ा110) तो यह सब छुड़ाई में देते रोज़े क़ियामत के बड़े अ़ज़ाब से (फ़ा111) और उन्हें अल्लाह की तरफ़ से वह बात

(फ़ा95) ताकि उससे हिदायत हासिल करें (फ़ा96) कि उस राहयाबी का नफ़ा वही पाएगा (फ़ा97) उसकी गुमराही का ज़रर और वबाल उसी पर पड़ेगा। (फ़ा98) तुम से उनकी तक़सीर का मुआख़ज़ा न होगा। (फ़ा99) यानी उस जान को उसके जिस्म की तरफ़ वापस नहीं करता। (फ़ा100) जिस की मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई उसको। (फ़ा101) यानी उसकी मौत के वक़्त तक। (फ़ा102) जो सोचें और समझें कि जो उस पर क़ादिर है वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। (फ़ा103) यानी बुत जिनकी निस्बत वह कहते थे कि यह अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ़ हैं (फ़ा104) न शफ़ाअ़त के न और किसी चीज़ के (फ़ा105) जो उसका माज़ून हो वही शफ़ाअ़त कर सकता है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअ़त का इज़्न देता है बुतों को उसने शफ़ीअ. नहीं बनाया और इबादत तो ख़ुदा के सिवा सिकी की भी जाइज़ नहीं शफ़ीअ़ हो या **(बक़िया सफ़हा 775 पर)**

مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ
وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝
قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ۝ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ

मा लम् यकूनू यह्–तसिबून(47)व बदा–लहुम् सय्यिआतु मा क–सबू व हा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(48)फ़इज़ा मस्सल् इन्सा–न ज़ुर्रुन् दआना सुम्–म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ़्म–तम् मिन्ना क़ा–ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन् बल् हि–य फ़ित्–नतुंव व लाकिन्–न अक्स़–रहुम् ला यअ़्लमून(49)क़द् क़ा–ल–हल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून(50) फ़–असा–बहुम् सय्यिआतु मा क–सबू वल्लज़ी–न ज़–लमू मिन् हाउलाइ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क–सबू व मा हुम् बिमुअ़्जिज़ीन(51)अ–व लम् यअ़्लमू अन्नल्ला–ह यब्सुतुर्रिज़्–क़ लि–मंय्यशाउ व यक़्दिरु इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यातिल् लिक़ौमिंय्युअ़्मिनून(52)क़ुल् याअ़िबादि–यल् लज़ी–न अस्–रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्–नतू मिर्रह्मतिल्लाहि इन्नल्ला–ह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू–ब जमीअ़न् इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम(53)व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअति–यकुमुल् अ़ज़ाबु सुम्–म ला तुन्स़रून(54)वत्तबिअ़ू अह्–स–न मा उन्ज़ि–ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअति यकुमुल् अ़ज़ाबु बग़्त–तंव् व अन्तुम् ला तश्अ़ुरून(55)अन् तक़ू–ल नफ़्सुंय्या–

ज़ाहिर हुई जो उनके ख़्याल में न थी।(47) (फ़ा112) और उन पर अपनी कमाई हुई बुराईयाँ खुल गईं (फ़ा113) और उन पर आ पड़ा वह जिसकी हंसी बनाते थे।(48) (फ़ा114) फिर जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई निअ़मत अता फ़रमायें कहता है यह तो मुझे एक इल्म की बदौलत मिली है (फ़ा115) बल्कि वह तो आज़माईश है (फ़ा116) मगर उनमें बहुतों को इल्म नहीं।(49) (फ़ा117) उनसे अगले भी ऐसे ही कह चुके (फ़ा118) तो उनका कमाया उनके कुछ काम न आया।(50) तो उन पर पड़ गईं उनकी कमाईयों की बुराईयाँ (फ़ा119) और वह जो उनमें ज़ालिम हैं अ़न्क़रीब उन पर पड़ेंगी उनकी कमाईयों की बुराईयाँ और वह क़ाबू से नहीं निकल सकते।(51) (फ़ा120) क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिसके लिए चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक इसमें ज़रूर निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए।(52) (रुकूअ़ 2) तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वह बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की (फ़ा121) अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है (फ़ा122) बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।(53) और अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ लाओ (फ़ा123) और उसके हुज़ूर गर्दन रखो (फ़ा124) क़ब्ल इसके कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।(54) और उसकी पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़ उतारी गई (फ़ा125) क़ब्ल इसके कि अ़ज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो।(55) (फ़ा126) कि कहीं कोई जान यह न कहे

(फ़ा112) यानी ऐसे ऐसे अ़ज़ाबे शदीद जिनका उन्हें ख़्याल भी न था और इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि वह गुमान करते होंगे कि उनके पास नेकियां हैं और जब नामए आमाल खुलेंगे तो बदियां ज़ाहिर होंगी। (फ़ा113) जो उन्होंने दुनिया में की थीं अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक करना और उसके दोस्तों पर ज़ुल्म करना वग़ैरह। (फ़ा114) यानी नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ख़बर देने पर वह जिस अ़ज़ाब की हंसी बनाया करते थे वह नाज़िल हो गया और उसमें घिर गए। (फ़ा115) यानी मैं मआ़श का जो इल्म रखता हूं उसके ज़रीआ़ से मैंने यह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था। (फ़ा116) यानी यह निअ़मत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आज़माइश व इम्तेहान है कि बन्दा उस पर शुक्र करता है या नाशुक्री। (फ़ा117) कि यह निअ़मत व अ़ता इस्तिदराज व इम्तेहान है। (फ़ा118) यानी यह बात क़ारून ने भी कही थी कि यह दौलत मुझे अपने **(बक़िया सफ़हा 775 पर)**

يٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۵۷﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِىْ

كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِىْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۹﴾ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ

اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۶۲﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۳﴾ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّىْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَقَدْ اُوْحِىَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۶۵﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ

हस्–रता अ़ला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु लमिनस् साख़िरीन(56)औ तकू–ल लौ अन्नल्ला –ह हदानी लकुन्तु मिनल् मुत्तक़ीन(57)औ तकू–ल ह़ी–न त–रल् अ़ज़ा–ब लौ अन्–न ली कर्रतन् फ़–अकू–न मिनल् मुह्सिनीन(58)बला क़द् जाअत्–क आयाती फ़–कज़्ज़ब्–त बिहा वस्तक्बर्–त व कुन्–त मिनल्काफ़िरीन(59)व यौमल्–क़िया–मति त–रल् लज़ी–न क–ज़बू अ़लल्लाहि वुजूहुहुम् मुस्–वद्–दतुन् अलै–स फ़ी जहन्न–म मस्वल् लिल्मु–त–कब्बिरीन(60)व यु–नज्जिल्लाहुल् लज़ी–नत् तक़ौ बि–मफ़ा–ज़तिहिम् ला य–मस्सुहुमुस्सूउ व ला हुम् यह्ज़नून(61) अल्लाहु ख़ालिकु कुल्लि शैइंव् व हु–व अ़ला कुल्लि शैइंव् वकील(62)लहू मक़ालीदुस् समावाति वल्अर्ज़ि वल्लज़ी–न क–फ़रू बिआया–तिल्लाहि उलाइ–क हुमुल् ख़ासिरून(63)क़ुल् अ–फ़ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्बुदु अय्युहल् जाहिलून(64)व ल–क़द् ऊहि–य इलै–क व इ–लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लि–क लइन् अश्–रक्–त ल–यह्ब–तन्–न अ़–मलु–क व ल–तकूनन्–न मिनल्ख़ा–सिरीन(65)बलिल्ला–ह फ़अ्बुद् व कुम् मिनश्शाकिरीन(66)व मा क़–दरुल्ला–ह ह़क़्–क क़द्रिही वल्अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्ज़तुहू यौमल्क़िया–मति

कि हाय अफ़सोस उन तक़सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं (फ़ा127) और बेशक मैं हंसी बनाया करता था।(56) (फ़ा128) या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता।(57) या कहे जब अ़ज़ाब देखे किसी तरह मुझे वापसी मिले (फ़ा129) कि मैं नेकियाँ करूं।(58) (फ़ा130) हां क्यों नहीं बेशक तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था।(59) (फ़ा131) और क़ियामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बांधा (फ़ा132) कि उनके मुँह काले हैं क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं।(60) (फ़ा133) और अल्लाह बचाएगा परहेज़गारों को उनकी नजात की जगह (फ़ा134) न उन्हें अ़ज़ाब छूए और न उन्हें ग़म हो।(61) अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ का मुख़्तार है।(62) उसी के लिए हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ (फ़ा135) और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वही नुक़सान में हैं।(63) (रुकूअ़ 3) तुम फ़रमाओ (फ़ा136) तो क्या अल्लाह के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो।(64) (फ़ा137) और बेशक 'वह़ी' की गई तुम्हारी तरफ़ और तुम से अगलों की तरफ़ कि ऐ सुनने वाले अगर तूने अल्लाह का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू हार में रहेगा।(65) बल्कि अल्लाह ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो।(66) (फ़ा138) और उन्हों ने अल्लाह की क़दर न की जैसा कि उसका हक़ था (फ़ा139) और वह क़ियामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा

(फ़ा127) कि उसकी इताअ़त बजा न लाया और उसके हक़ को न पहचाना और उसकी रज़ा जूई की फ़िक्र न की (फ़ा128) अल्लाह तआ़ला के दीन की और उसकी किताब की। (फ़ा129) और दोबारा दुनिया में जाने का मौक़ा दिया जाए। (फ़ा130) उन बातिल उज़्रों का जवाब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वह है जो अगली आयत में इरशाद होता है। (फ़ा131) यानी तेरे पास क़ुरआन पाक पहुंचा और हक़ व बातिल की राहें वाज़ेह कर दी गईं और तुझे हक़ व हिदायत इख़्तियार करने की क़ुदरत दी गई बावजूद इसके तूने हक़ को छोड़ा और उसको कबूल करने से तकब्बुर किया गुमराही इख़्तियार की जो हुक्म दिया गया उसकी ज़िद व मुख़ालफ़त की तो अब तेरा यह कहना ग़लत है कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे राह दिखाता तो मैं **(बक़िया सफ़हा 775 पर)**

وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ
قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآئَ ءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۱﴾ قِيْلَ ادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ
الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۵﴾

वस्समावातु मत़्विय्यातुम् बि–यमीनिही सुब्हा–नहू व लआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(67)व नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि फ़–स़अि–क मन् फ़िस्स–मावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा–अल्लाहु सुम्–म नुफ़ि–ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़–इज़ाहुम् क़िया–मुंय्यन्ज़ुरून(68)व अश्–र–क़तिल् अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअ़ल् किताबु वजी–अ बिन्नबिय्यी–न वश्शु–हदाइ व क़ुज़ि–य बै–नहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून(69)व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम् मा अ़मिलत् व हु–व अअ्–लमु बिमा यफ़्–अ़लून(70)व सीक़ल् लज़ी–न क–फ़रू इला जहन्न–म ज़ु–म–रन् ह़त्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिह़त् अब्वाबुहा व क़ा–ल लहुम् ख़–ज़–नतुहा अ–लम् यअ्तिकुम् रुसुलुम् मिन्कुम् यत्लू–न अ़लैकुम् आयाति रब्बिकुम् व युन्ज़िरू–नकुम् लिक़ा–अ यौमिकुम् हाज़ा क़ालू बला व लाकिन् ह़क़्क़त् कलि–मतुल् अ़ज़ाबि अ़–लल्का–फ़िरीन(71)क़ीलद्ख़ुलू अब्वा–ब ज–हन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा फ़बिअ्–स मस्वल् मु–त–कब्बिरीन(72)वसीक़ल्लज़ी–नत् तक़ौ रब्बहुम् इलल्जन्नति ज़ु–म–रन् ह़त्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिह़त् अब्वाबुहा व क़ा–ल लहुम् ख़–ज़–नतुहा सलामुन् अ़लैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन(73)व क़ालुलह़म्दु लिल्लाहिल् लज़ी स़–द–क़ना वअ्–दहू व औ–र–स़–नल् अर्–ज़ न–त–बव्वउ मिनल्जन्नति हैसु नशाउ फ़निअ्–म अज्रुल् आ़मिलीन(74)व–त–रल् मलाइ–क–त हाफ़्फ़ी–न मिन् हौलिल् अ़र्शि यु–सब्बिहू–न बिह़म्दि रब्बिहिम् व क़ुज़ि–य बै–नहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्–ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़–लमीन(75)

और उसकी क़ुदरत से सब आसमान लपेट दिये जायेंगे (फ़ा140) और उनके शिर्क से पाक और बरतर है।(67) और सूर फूंका जाएगा तो बेहोश हो जायेंगे (फ़ा141) जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे अल्लाह चाहे (फ़ा142) फिर वह दोबारा फूंका जाएगा (फ़ा143) जभी वह देखते हुए खड़े हो जायेंगे।(68) (फ़ा144) और ज़मीन जगमगा उठेगी (फ़ा145) अपने रब के नूर से (फ़ा146) और रखी जाएगी किताब (फ़ा147) और लाए जायेंगे अम्बिया और यह नबी और इसकी उम्मत के उन पर गवाह होंगे (फ़ा148) और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।(69) और हर जान को उसका किया भरपूर दिया जाएगा और उसे ख़ूब मालूम है जो वह करते थे।(70) (फ़ा149) (रुकूअ़ 4) और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हांके जायेंगे (फ़ा150) गरोह गरोह (फ़ा151) यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उसके दरवाज़े खोले जायेंगे (फ़ा152) और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से वह रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते थे कहेंगे क्यों नहीं (फ़ा153) मगर अ़ज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा।(71) (फ़ा154) फ़रमाया जाएगा जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का।(72) और जो अपने रब से डरते थे उनकी सवारियाँ (फ़ा155) गरोह गरोह जन्नत की तरफ़ चलाई जायेंगी यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले (बक़िया सफ़हा 775 पर)

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ مَا يُجَادِلُ فِيْۤ
اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۪ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ
وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ
الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ

सूरतुल् मुअ्मिनि

(मक्की है इसमें 85 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा–मीम्(1)तन्ज़ीलुल् किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् अ़लीम(2)ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल् अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला–ह इल्ला हु–व इलैहिल् मसीर(3)मा युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ला यग़्रुर्–क त–क़ल्लुबुहुम् फ़िल् बिलाद(4)कज़्ज़–बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव् वल्–अह्ज़ाबु मिम् बअ्दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्मतिम् बि–रसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जा–दलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्–क़ फ़–अ–ख़ज़्तुहुम् फ़कै–फ़ का–न अ़िक़ाब(5)व कज़ालि–क हक़्क़त् कलि–मतु रब्बि–क अ़–लल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्नार(6)अल्लज़ी–न यह्मिलूनल् अ़र्–श व मन् हौ–लहू यु–सब्बिहू–न बि–हम्दि रब्बि–हिम् व युअ्मिनू–न बिही व यस्तग़्फ़िरू–न लिल्लज़ी–न आ–मनू रब्बना वसिअ्–त कुल्–ल शैइर्रह्–मतंव् व अ़िल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी–न ताबू वत्त–बअू सबी–ल–क

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा–मीम(1) यह किताब उतारना है अल्लाह की तरफ़ से जो इज़्ज़त वाला इल्म वाला।(2) गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला (फ़ा2) सख़्त अ़ज़ाब करने वाला (फ़ा3) बड़े इनाम वाला (फ़ा4) उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं उसी की तरफ़ फिरना है।(3) (फ़ा5) अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर (फ़ा6) तो ऐ सुनने वाले तुझे धोका न दे इनका शहरों में अहले गहले फिरना।(4) (फ़ा7) इनसे पहले नूह की क़ौम और उनके बाद के गरोहों (फ़ा8) ने झुठलाया और हर उम्मत ने यह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें (फ़ा9) और बातिल के साथ झगड़े कि उससे हक़ को टाल दें (फ़ा10) तो मैंने उन्हें पकड़ा फिर कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब।(5) (फ़ा11) और यूं ही तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वह दोज़ख़ी हैं।(6) वह जो अ़र्श उठाते हैं (फ़ा12) और जो उसके गिर्द हैं (फ़ा13) अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते (फ़ा14) और उस पर ईमान लाते (फ़ा15) और मुसलमानों की मग़फ़िरत मांगते हैं (फ़ा16) ऐ रब हमारे तेरे रहमत व इल्म में हर चीज़ की समाई है (फ़ा17) तो उन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले (फ़ा18)

(फ़ा1) सूरह मोमिन इसका नाम सूरह ग़ाफ़िर भी है यह सूरत मक्की है सिवाए दो आयतों के जो *अल्लज़ी–न युजादिलू–न फ़ी आयातिल्लाहि* से शुरू होती हैं इस सूरत में नौ रुकूअ़ और 85 आयतें और 1199 कलिमे और 4960 हरफ़ हैं। (फ़ा2) ईमानदारों की। (फ़ा3) काफ़िरों पर। (फ़ा4) आरिफ़ों पर। (फ़ा5) बन्दों को आख़िरत में। (फ़ा6) यानी कुरआन पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मोमिन का काम नहीं अबू दाऊद की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरआन में झगड़ा करना कुफ़्र है झगड़े और जदाल से मुराद आयाते इलाहिया में तअ़न करना और तकज़ीब व इन्कार के साथ पेश आना है और हल्ले मुश्किलात व कश्फ़े मोअ़ज़लात के लिए इल्मी व उसूली बहसें जिदाल नहीं बल्कि आज़म ताआ़त में से हैं कुफ़्फ़ार का झगड़ा करना आयात में यह था कि वह कभी कुरआन पाक को सेहर कहते कभी शेअ़र कभी कहानत कभी दास्तान। (फ़ा7) यानी काफ़िरों का सेहत व सलामती के साथ मुल्क मुल्क तिजारतें करते फिरना और नफ़ा पाना तुम्हारे लिए बाइसे तरद्दुद **(बक़िया सफ़हा 776 पर)**

وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ
وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ
فَتَكْفُرُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ
وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ

व क़िहिम् अ़ज़ाबल् जहीम(7)रब्बना व अदख़िल्हुम् जन्नाति अ़दनि निल्लती व–अ़त्तहुम् व मन् स–ल–ह् मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् इन्न–क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम (8)व क़िहिमुस् सय्यिआति व मन् तक़िस्सय्यिआति यौ–मइज़िन् फ़–क़द् रहिम्तहू व ज़ालि–क हुवल्फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(9)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू युनादौ–न ल–मक़्–तुल्लाहि अक्बरु मिम् मक़्तिकुम् अन्फ़ु–सकुम् इज़् तुदऔ–न इललईमानि फ़–तक्फ़ुरून(10)क़ालू रब्बना अ–मत्त–नस्नतैनि व अह़्यै–त–नस्–नतैनि फ़अ्–त–रफ़्ना बिज़ुनूबिना फ़–हल् इला ख़ुरूजिम् मिन् सबील(11)ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि़–यल्लाहु वह़्दहू क–फ़र्तुम् व इंय्युश्रक् बिही तुअ्मिनू फ़ल्हुक्मु लिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् कबीर(12)हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व यु–नज़्ज़िलु लकुम् मि–नस्समाइ रिज़्क़न् व मा य–त–ज़क्करु इल्ला मंय्युनीब(13) फ़दअुल्ला–ह मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न व लौ करिहल् काफ़िरून(14)रफ़ीअुद् द–रजाति ज़ुल्अ़र्शि युल्क़िर्रू–ह् मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अि़बादिही लियुन्ज़ि–र यौमत्–तलाक़(15)यौ–म हुम् बारिज़ू–न

और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।(7) ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा फ़रमाया है और उनको जो नेक हों उनके बाप दादा और बीबियों और औलाद में (फ़ा19) बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(8) और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तूने उस पर रहम फ़रमाया और यही बड़ी कामयाबी है।(9) (रुकूअ़ 6) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उनको निदा की जाएगी (फ़ा20) कि ज़रूर तुम से अल्लाह की बेज़ारी उससे बहुत ज़्यादा है जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जबकि तुम (फ़ा21) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते।(10) कहेंगे ऐ हमारे रब तूने हमें दो बार मुर्दा किया और दो बार ज़िन्दा किया (फ़ा22) अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए तो आग से निकलने की भी कोई राह है।(11) (फ़ा23) यह उस पर हुआ कि जब एक अल्लाह पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते (फ़ा24) और उसका शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते (फ़ा25) तो हुक्म अल्लाह के लिए है जो सब से बुलन्द बड़ा।(12) वही है कि तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है (फ़ा26) और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है (फ़ा27) और नसीहत नहीं मानता (फ़ा28) मगर जो रुजूअ़ लाए।(13) (फ़ा29) तो अल्लाह की बन्दगी करो निरे उसके बन्दे होकर (फ़ा30) पड़े बुरा मानें काफ़िर।(14) बुलन्द दर्जे देने वाला (फ़ा31) अ़र्श का मालिक ईमान की जान 'वह़ी' डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे (फ़ा32) कि वह मिलने के दिन से डराए।(15) (फ़ा33) जिस दिन वह बिल्कुल ज़ाहिर हो जायेंगे (फ़ा34)

(फ़ा19) उन्हें भी दाख़िल कर। (फ़ा20) रोज़े क़ियामत जबकि वह जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनकी बदियां उन पर पेश की जायेंगी और वह अ़ज़ाब देखेंगे तो फ़रिश्ते उन से कहेंगे। (फ़ा21) दुनिया में। (फ़ा22) क्योंकि पहले नुत्फ़ा बेजान थे इस मौत के बाद उन्हें जान देकर ज़िन्दा किया फिर उम्र पूरी होने पर मौत दी फिर बअ़्स के लिए ज़िन्दा किया। (फ़ा23) उसका जवाब यह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने की कोई सबील नहीं और तुम जिस हाल में हो जिस अ़ज़ाब में मुब्तला हो और उससे रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते। (फ़ा24) यानी उस अ़ज़ाब और उसके दवाम व ख़ुलूद का सबब तुम्हारा यह फ़ेअ़्ल है कि जब तौहीदे इलाही का एलान होता और ला इला–ह इल्लल्लाह कहा जाता तो तुम उसका इन्कार करते और कुफ़्र इख़्तियार करते। (फ़ा25) और उस शिर्क की तस्दीक़ करते (फ़ा26) यानी अपनी मस्नूआ़त के अ़जाइब जो उसके कमाले **(बक़िया सफ़हा 776 पर)**

لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۭ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۭ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿16﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۭ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿17﴾
وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ڛ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿18﴾ يَعْلَمُ خَاۗىِٕنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿19﴾
وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿20﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿21﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿22﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿23﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا

ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन् लि-मनिल् मुल्कुल्यौ-म लिल्लाहिल् वाहिदिल् क़ह्हार(16) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम् बिमा क-स-बत् ला ज़ुल्मल् यौ-म इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल् हिसाब(17)व अन्ज़िर् हुम् यौमल् आज़ि-फ़ति इज़िल्क़ुलूबु ल-दल् हनाजिरि काज़िमी-न मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव् व ला शफ़ी-इंय्युता-अ़(18)यअ़्-लमु ख़ाइ-न-तल् अअ़्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर(19)वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि वल्लज़ी- न यदअ़ू-न मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बि-शैइन् इन्नल्ला-ह हुवस्समीअ़ुल् बसीर (20)अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम् कानू हुम् अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव् व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् व मा का-न लहुम् मि-नल्लाहि मिंव्वाक़(21)ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़ हु-मुल्लाहु इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल् अ़िक़ाब(22)व ल-क़द अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन(23)इला फ़िरऔ-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू

अल्लाह पर उनका कुछ हाल छुपा न होगा (फ़ा35) आज किसकी बादशाही है (फ़ा36) एक अल्लाह सब पर ग़ालिब की।(16) (फ़ा37) आज हर जान अपने किये का बदला पाएगी (फ़ा38) आज किसी पर ज़्यादती नहीं बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।(17) और उन्हें डराओ उस नज़दीक आने वाली आफ़त के दिन से (फ़ा39) जब दिल गलों के पास आ जायेंगे (फ़ा40) ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिसका कहा माना जाए।(18) (फ़ा41) अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह (फ़ा42) और जो कुछ सीनों में छुपा है।(19)(फ़ा43) और अल्लाह सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उसके सिवा जिनको (फ़ा44) पूजते हैं वह कुछ फ़ैसला नहीं करते (फ़ा45) बेशक अल्लाह ही सुनता और देखता है।(20) (फ़ा46) (रुकूअ़ 7) तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अन्जाम हुआ उनसे अगलों का (फ़ा47) उनकी कुव्वत और ज़मीन में जो निशानियाँ छोड़ गए (फ़ा48) उनसे ज़ाइद तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा और अल्लाह से उनका कोई बचाने वाला न हुआ।(21)(फ़ा49)यह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियाँ लेकर आए (फ़ा50)फिर वह कुफ़्र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा बेशक अल्लाह ज़बरदस्त अ़ज़ाब वाला है।(22)और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों और रौशन सनद के साथ भेजा।(23) फ़िरऔ़न और हामान और क़ारून की तरफ़ तो वह बोले

(फ़ा35) न आमाल न अक़्वाल न दूसरे अहवाल और अल्लाह तआ़ला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन यह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिए कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिसके ज़रीआ़ से वह अपने ख़्याल में भी अपने हाल को छुपा सकें और ख़ल्क़ की फ़ना के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा। (फ़ा36) अब कोई न होगा कि जवाब दे ख़ुद ही जवाब में फ़रमाएगा कि अल्लाह वाहिद क़ह्हार की और एक क़ौल यह है कि रोज़े क़ियामत जब तमाम अव्वलीन व आख़िरीन हाज़िर होंगे तो एक निदा करने वाला निदा करेगा आज किस की बादशाही है तमाम ख़ल्क़ जवाब देगी लिल्लाहिल् वाहिदिल् क़ह्हारि अल्लाह वाहिद क़ह्हार की जैसा कि आगे इरशाद होता है (फ़ा37) मोमिन तो यह जवाब बहुत लज़्ज़त के साथ अर्ज़ करेंगे क्योंकि वह दुनिया में यही एतेक़ाद रखते थे यही कहते थे और उसी की बदौलत उन्हें मर्तबे मिले और कुफ़्फ़ार ज़िल्लत व नदामत के साथ इसका इक़रार करेंगे और दुनिया में अपने मुन्किर रहने पर शर्मिन्दा होंगे (फ़ा38) नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का (फ़ा39) इससे रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़ा40) शिद्दते ख़ौफ़ से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें। (फ़ा41) यानी काफ़िर शफ़ाअ़त से महरूम होंगे (फ़ा42) यानी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और ममनूआत पर नज़र डालना (फ़ा43) यानी दिलों के राज़ सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला के इल्म में हैं। **(बक़िया सफ़हा 776 पर)**

سِحْرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ
وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ

साहि़रुन् कज़्ज़ाब(24)फ़—लम्मा जा—अहुम् बिल् ह़क़्क़ि मिन् अि़न्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल् लज़ी—न आ—मनू म—अहू वस्तह्यू निसा—अहुम् व मा कैदुल्काफ़िरी—न इल्ला फ़ी ज़लाल(25)व क़ा—ल फ़िरऔनु ज़रूनी अक़्तुल् मूसा वल्यदअु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु—बद्दि—ल दी—नकुम् औ अंय्युज़्हि—र फ़िलअर्ज़िल् फ़साद(26)व क़ा—ल मूसा इन्नी उज़्तु बि—रब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु—त—कब्बिरिल् ला युअ्मिनु बियौमिल् ह़िसाब(27)व क़ा—ल रजुलुम् मुअ्मिनुम् मिन् आलि फ़िरऔ—न यक्तुमु ईमा—नहू अ—तक़्तुलू—न रजुलन् अंय्यकू़ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा—अकुम् बिल्बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम् व इंय्यकु काज़िबन् फ़—अ़लैहि कज़िबुहू व इंय्यकु सादिक़ंय्युसिब्कुम् बअ्ज़ुल लज़ी यअि़दुकुम् इन्नल्ला—ह ला यह्दी मन् हु—व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब(28)या क़ौमि लकुमुल् मुल्कुल् यौ—म ज़ाहिरी—न फ़िल्अर्ज़ि फ़—मंय्यन्सुरुना मिम् बअ्सिल्लाहि इन् जा—अना क़ा—ल फ़िरऔनु मा उरीकुम् इल्ला मा अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर् रशाद(29)व क़ालल्लज़ी आ—म—न या क़ौमि

जादूगर है बड़ा झूठा।(24) (फ़ा51) फिर जब वह उन पर हमारे पास से हक़ लाया (फ़ा52) बोले जो उस पर ईमान लाए उनके बेटे क़त्ल करो और औ़रतें ज़िन्दा रखो (फ़ा53) और काफ़िरों का दाँव नहीं मगर भटकता फिरता।(25) (फ़ा54) और फ़िरऔ़न बोला (फ़ा55) मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूं (फ़ा56) और वह अपने रब को पुकारे (फ़ा57) मैं डरता हूं कहीं वह तुम्हारा दीन बदल दे (फ़ा58) या ज़मीन में फ़साद चमकाए।(26) (फ़ा59) और मूसा ने (फ़ा60) कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं हर मुतकब्बिर से कि ह़िसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता।(27) (फ़ा61) (रुकूअ़ 8) और बोला फ़िरऔ़न वालों में से एक मर्द मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और बेशक वह रौशन निशानियाँ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से लाए (फ़ा62) और अगर बिलफ़र्ज़ वह ग़लत कहते हैं तो उनकी ग़लत गोई का वबाल उन पर और अगर वह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वह जिसका तुम्हें वादा देते हैं (फ़ा63) बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूठा हो।(28) (फ़ा64) ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा रखते हो (फ़ा65) तो अल्लाह के अ़ज़ाब से हमें कौन बचा लेगा अगर हम पर आए फ़िरऔ़न बोला मैं तो तुम्हें वही सुझाता हूं जो मेरी सूझ है (फ़ा66)और मैं तुम्हें वही बताता हूं जो भलाई की राह है।(29) और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम

(फ़ा51) और उन्होंने हमारी निशानियों और बुरहानों को जादू बताया। (फ़ा52) यानी नबी होकर पयामे इलाही लाये तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी। (फ़ा53) ताकि लोग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इत्तेबाअ़ से बाज़ आयें (फ़ा54) कुछ भी कारआमद नहीं बिल्कुल निकम्मा और बेकार पहले भी फ़िरऔ़नियों ने बहुक्मे फ़िरऔ़न हज़ारहा क़त्ल किये मगर क़ज़ाए इलाही होकर रही और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को परवरदिगारे आ़लम ने फ़िरऔ़न के घर में पाला उससे ख़िदमतें कराईं जैसा वह दाँव फ़िरऔ़नियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिए फिर दोबारा क़त्ल शुरू करना बेकार है। हज़रत मूसा अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात के दीन का रिवाज अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर है उसे कौन रोक सकता है। (फ़ा55) अपने गरोह से (फ़ा56) फ़िरऔ़न जब कभी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल करने का इरादा करता तो उसकी क़ौम के लोग उसको इससे मना करते और कहते कि यह वह शख़्स नहीं है जिसका तुझे अन्देशा है यह तो एक मामूली जादूगर है इस पर तो हम अपने जादू से ग़ालिब आजायेंगे और अगर उसको क़त्ल कर दिया तो आम लोग शुबहा में पड़ जायेंगे कि वह शख़्स सच्चा था हक़ पर था तो दलील से उसका मुक़ाबला करने में आ़जिज़ हुआ जवाब न दे सका तो तूने उसे क़त्ल **(बक़िया सफ़हा 777 पर)**

إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُم مِّثۡلَ يَوۡمِ ٱلۡأَحۡزَابِ ۝٣٠ مِثۡلَ دَأۡبِ قَوۡمِ نُوحٖ وَعَادٖ وَثَمُودَ وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡۚ وَمَا ٱللَّهُ يُرِيدُ ظُلۡمٗا لِّلۡعِبَادِ ۝٣١ وَيَٰقَوۡمِ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ
يَوۡمَ ٱلتَّنَادِ ۝٣٢ يَوۡمَ تُوَلُّونَ مُدۡبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ ٱللَّهِ مِنۡ عَاصِمٖۗ وَمَن يُضۡلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِنۡ هَادٖ ۝٣٣ وَلَقَدۡ جَآءَكُمۡ يُوسُفُ مِن قَبۡلُ بِٱلۡبَيِّنَٰتِ فَمَا زِلۡتُمۡ
فِي شَكّٖ مِّمَّا جَآءَكُم بِهِۦۖ حَتَّىٰٓ إِذَا هَلَكَ قُلۡتُمۡ لَن يَبۡعَثَ ٱللَّهُ مِنۢ بَعۡدِهِۦ رَسُولٗاۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٞ مُّرۡتَابٌ ۝٣٤ ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِيٓ
ءَايَٰتِ ٱللَّهِ بِغَيۡرِ سُلۡطَٰنٍ أَتَىٰهُمۡۖ كَبُرَ مَقۡتًا عِندَ ٱللَّهِ وَعِندَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْۚ كَذَٰلِكَ يَطۡبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلۡبِ مُتَكَبِّرٖ جَبَّارٖ ۝٣٥ وَقَالَ فِرۡعَوۡنُ يَٰهَٰمَٰنُ ٱبۡنِ لِي
صَرۡحٗا لَّعَلِّيٓ أَبۡلُغُ ٱلۡأَسۡبَٰبَ ۝٣٦ أَسۡبَٰبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُۥ كَٰذِبٗاۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرۡعَوۡنَ سُوٓءُ عَمَلِهِۦ وَصُدَّ عَنِ ٱلسَّبِيلِۚ

इन्नी अख़ाफु अलैकुम् मिस्–ल यौमिल् अह्ज़ाब(30)मिस्–ल दअ्बि क़ौमि नूहिंव् व आदिंव् व समू–द वल्लज़ी–न मिम् बअ्दिहिम् व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल् लिल्अिबाद(31)व या क़ौमि इन्नी अख़ाफु अलैकुम् यौमत्तनाद(32)यौ–म तुवल्लू–न मुदबिरी–न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद(33)व ल–क़द जा–अकुम् यूसुफु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम् मिम्मा जा–अकुम् बिही हत्ता इज़ा ह–ल–क कुल्तुम् लंय्यब्–अ–सल्लाहु मिम् बअ्दिही रसूलन् कज़ालि–क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु–व मुस्रिफुम् मुरताबु नि (34)–ल्लज़ी–न युजादिलू–न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् कबु–र मक्तन् अिन्दल्लाहि व अिन्दल्लज़ी–न आ–मनू कज़ालि–क यत्–बअुल्लाहु अ़ला कुल्लि कल्बि मु–त–कब्बिरिन् जब्बार(35) व का–ल फ़िरऔनु या हामानुब्नि ली सरहल् ल–अ़ल्ली अब्लुगुल् अस्बाब(36)अस्बाबस्समावाति फ़–अत्तलि–अ़ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल–अज़ुन्नुहू काज़िबन् व कज़ालि–क ज़ुय्यि–न लिफ़िरऔ–न सूउ अ–मलिही व सुद्–द अनिस्सबीलि

मुझे तुम पर (फ़ा67) अगले गरोहों के दिन का सा ख़ौफ़ है।(30) (फ़ा68) जैसे दस्तूर गुज़रा नूह की क़ौम और आद और समूद और उनके बाद औरों का (फ़ा69) और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।(31) (फ़ा70) और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूं जिस दिन पुकार मचेगी।(32) (फ़ा71) जिस दिन पीठ देकर भागोगे (फ़ा72) अल्लाह से (फ़ा73) तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह दिखाने वाला नहीं।(33) और बेशक इससे पहले (फ़ा74) तुम्हारे पास यूसुफ़ रौशन निशानियाँ लेकर आए तो तुम उनके लाए हुए से शक ही में रहे यहां तक कि जब उन्होंने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह कोई रसूल न भेजेगा (फ़ा75) अल्लाह यूंही गुमराह करता है उसे जो हद से बढ़ने वाला शक लाने वाला है।(34) (फ़ा76) वह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं (फ़ा77) बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो किस क़दर सख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के नज़दीक और ईमान वालों के नज़दीक अल्लाह यूं ही मुहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर।(35) (फ़ा78) और फ़िरऔन बोला (फ़ा79) ऐ हामान मेरे लिए ऊँचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊँ रास्तों तक।(36) काहे के रास्ते आसमानों के तो मूसा के ख़ुदा को झाँक कर देखूं और बेशक मेरे गुमान में तो वह झूठा है (फ़ा80) और यूंही फ़िरऔन की निगाह में उसका बुरा काम (फ़ा81) भला कर दिखाया गया (फ़ा82) और वह रास्ते से रोका गया

(फ़ा67) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब करने और उनके दरपै होने से (फ़ा68) जिन्हों ने रसूलों की तकज़ीब की। (फ़ा69) कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की तकज़ीब करते रहे और हर एक को अ़ज़ाबे इलाही ने हलाक किया (फ़ा70) बग़ैर गुनाह के उन पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और बग़ैर इक़ामते हुज्जत के उनको हलाक नहीं करता। (फ़ा71) वह क़ियामत का दिन होगा क़ियामत के दिन को यौमुत्तनाद यानी पुकार का दिन इस लिए कहा जाता है कि उस रोज़ तरह तरह की पुकारें मची होंगी हर शख़्स अपने सरगरोह के साथ और हर जमाअ़त अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी जन्नती दोज़ख़ियों को और दोज़ख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे सआ़दत व शक़ावत की निदायें की जायेंगी कि फ़लाँ सईद हुआ अब कभी शक़ी न होगा और फ़लां शक़ी हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस वक़्त मौत ज़बह की जाएगी उस वक़्त निदा की जाएगी कि ऐ अहले जन्नत अब दवाम है मौत नहीं और ऐ अहले दोज़ख़ अब दवाम है मौत नहीं। (फ़ा72) मौक़फ़ हिसाब से दोज़ख़ की **(बक़िया सफ़हा 777 पर)**

وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَا قَوْمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيَا قَوْمِ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجَاةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝ تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقَاهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا ۖ وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝

व मा कैदु फ़िरऔ–न इल्ला फी तबाब(37)व कालल्लज़ी आ–म–न या कौमित् तबिअूनि अहदिकुम् सबीलर्रशाद (38)या कौमि इन्नमा हाज़िहिल् हयातुद्दुन्या मताअुंव् व इन्नल् आखि़–र–त हि–य दारुल्करा–र(39)मन् अमि–ल सय्यि–अ–तन् फला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व मन् अमि–ल सालिहम् मिन् ज़–करिन् औ उन्सा व हु–व मुअ्मिनुन् फउलाइ–क यद्खुलूनल् जन्न–त युर्ज़कू–न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब(40)व या कौमि मा ली अद्अूकुम् इलन्नजाति व तद्अू–ननी इलन्नार(41) तद्अू–ननी लि–अक्फु–र बिल्लाहि व उश्रि–क बिही मा लै–स ली बिही अिल्मुंव् व अना अद्अू–कुम् इलल् अज़ीज़िल् ग़फ़्फ़ार(42)ला ज–र–म अन्नमा तद्अू–ननी इलैहि लै–स लहू दअ्–वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्आखि़–रति व अन्–न म–रद्दना इलल्लाहि व अन्नल् मुस्रिफ़ी–न हुम् अस्हाबुन्नार(43) फ–स–तज़्कुरू–न मा अकूलु लकुम् व उफ़व्विजु अम्री इलल्लाहि इन्नल्ला–ह बसीरुम् बिलअिबाद (44)फ–वकाहुल्लाहु सय्यिआति मा म–करू व हा–क बिआलि फ़िरऔ–न सूउलअ़ज़ाब(45)

और फ़िरऔन का दाव (फ़ा83) हलाक होने ही को था।(37) (रुकूअ् 9) और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी कौम मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊँ।(38) ऐ मेरी कौम यह दुनिया का जीना तो कुछ बरतना ही है (फ़ा84) और बेशक वह पिछला हमेशा रहने का घर है।(39) (फ़ा85) जो बुरा काम करे तो उसे बदला न मिलेगा मगर उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औरत और हो मुसलमान (फ़ा86) तो वह जन्नत में दाखि़ल किये जायेंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पायेंगे।(40) (फ़ा87) और ऐ मेरी कौम मुझे क्या हुआ मैं तुम्हें बुलाता हूं नजात की तरफ़ (फ़ा88) और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख़ की तरफ़।(41) (फ़ा89) मुझे उस तरफ़ बुलाते हो कि अल्लाह का इन्कार करूं और ऐसे को उसका शरीक करूं जो मेरे इल्म में नहीं और मैं तुम्हें उस इज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले कि तरफ़ बुलाता हूं।(42) आप ही साबित हुआ कि जिसकी तरफ़ मुझे बुलाते हो (फ़ा90) उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुनिया में न आखि़रत में (फ़ा91) और यह हमारा फिरना अल्लाह की तरफ़ है (फ़ा92) और यह कि हद से गुज़रने वाले (फ़ा93) ही दोज़ख़ी हैं।(43) तो जल्द वह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूं उसे याद करोगे (फ़ा94) और मैं अपने काम अल्लाह को सौंपता हूं बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है।(44) (फ़ा95) तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उनके मक्र की बुराईयों से (फ़ा96) और फ़िरऔन वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा।(45) (फ़ा97)

(फ़ा83) जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की आयात को बातिल करने के लिए उसने इख़्तियार किया। (फ़ा84) यानी थोड़ी मुद्दत के लिए नापाइदार नफ़ा है जिसको बक़ा नहीं। (फ़ा85) मुराद यह है कि दुनिया फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी व जाविदानी और जाविदानी ही बेहतर इसके बाद नेक और बद आमाल और उनके अन्जाम बताये। (फ़ा86) क्योंकि आमाल की मक़बूलियत ईमान पर मौक़ूफ़ है। (फ़ा87) यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है। (फ़ा88) जन्नत की तरफ़ ईमान व ताअ़त की तलक़ीन करके। (फ़ा89) कुफ़्र व शिर्क की दावत देकर। (फ़ा90) यानी बुत की तरफ़ (फ़ा91) क्योंकि वह जिमाद बेजान है (फ़ा92) वही हमें जज़ा देगा (फ़ा93) यानी काफ़िर (फ़ा94) यानी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त तुम मेरी नसीहतें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न देगा यह सुन कर उन लोगों ने उस मोमिन को धमकाया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरे पेश आयेंगे उसके जवाब में उसने कहा। (फ़ा95) और उनके आमाल व अहवाल को जानता है फिर वह मोमिन उन में से निकल कर पहाड़ की तरफ़ चला गया और वहां नमाज़ में मश्गूल हो गया फ़िरऔन ने हज़ार आदमी उसकी जुस्तजू में भेजे अल्लाह तआ़ला ने दरिन्दे उसकी हिफ़ाज़त पर मामूर कर दिये जो फ़िरऔनी **(बक़िया सफ़हा 777 पर)**

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿46﴾ وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿47﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿48﴾ وَقَالَ
الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿49﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا
دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿50﴾ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿51﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿52﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿53﴾ هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿54﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

अन्नारु युअ्–रजू–न अलैहा गुदुव्वंव् व अशिय्यन् व यौ–म तकूमुस्सा–अतु अदख़िलू आ–ल फ़िरऔ–न अशद–दल् अज़ाब(46)व इज़् य–तहाज्जू–न फ़िन्नारि फ़–यकूलुज़् ज़ु–अफ़ाउ लिल्लज़ी–नस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त–ब–अन् फ़–हल् अन्तुम् मुग़्नू–न अन्ना नसीबम् मिनन्नार(47)कालल् लज़ी–नस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा इन्नल्ला–ह क़द् ह–क–म बैनल् अिबाद(48)व कालल्लज़ी–न फ़िन्नारि लि–ख़–ज़–नति ज–हन्नमदअू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अन्ना यौ–मम् मिनल् अज़ाब(49)कालू अ–व लम् तकु तअ्तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति कालू बला कालू फ़दअू व मा दुआउल् काफ़िरी–न इल्ला फ़ी ज़लाल(50)इन्ना ल–नन्सुरु रुसु–लना वल्लज़ी–न आ–मनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ–म यकूमुल् अश्हाद(51)यौ–म ला यन्–फ़अुज़्ज़ालिमी–न मअ्ज़ि–रतुहुम् व लहुमुल् लअ्–नतु व लहुम् सूउद्दार(52)व ल–क़द् आतैना मूसल्हुदा व औ–रस्ना बनी इस्राईलल् किताब(53) हुदंव् व ज़िक्रा लिउलिल् अल्बाब(54)फ़स्बिर् इन्–न वअ्दल्लाहि हक़्कुंव्

आग जिस पर सुबह व शाम पेश किये जाते हैं (फ़ा98) और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔन वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।(46) और (फ़ा99) जब वह आग में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर उनसे कहेंगे जो बड़े बनते थे हम तुम्हारे ताबेअ़ थे (फ़ा100) तो क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा घटा लोगे।(47) वह तकब्बुर वाले बोले (फ़ा101) हम सब आग में हैं (फ़ा102) बेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका।(48) (फ़ा103) और जो आग में हैं उसके दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ़ करो हम पर अ़ज़ाब का एक दिन हल्का कर दे।(49) (फ़ा104) उन्होंने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल रौशन निशानियाँ न लाते थे (फ़ा105) बोले क्यों नहीं (फ़ा106) बोले तो तुम्हीं दुआ़ करो (फ़ा107) और काफ़िरों की दुआ नहीं मगर भटकते फिरने को।(50) (रुकूअ़ 10) बेशक ज़रूर हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की (फ़ा108) दुनिया की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे।(51) (फ़ा109) जिस दिन ज़ालिमों को उनके बहाने कुछ काम न देंगे (फ़ा110) और उनके लिए लानत है और उनके लिए बुरा घर।(52) (फ़ा111) और बेशक हमने मूसा को रहनुमाई अ़ता फ़रमाई (फ़ा112) और बनी इसराईल को किताब का वारिस किया।(53) (फ़ा113) अ़क़्लमन्दों की हिदायत और नसीहत को। तो ऐ महबूब(54) तुम सब्र करो (फ़ा114) बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है (फ़ा115)

(फ़ा98) उसमें जलाये जाते हैं हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया फ़िरऔ़नियों की रूहें सियाह परिन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मर्तबा सुबह व शाम आग पर पेश की जाती हैं और उनसे कहा जाता है कि यह आग तुम्हारा मक़ाम है और क़ियामत तक उनके साथ यही मअ़्मूल रहेगा मसला इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत पर इस्तिदलाल किया जाता है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हर मरने वाले पर उसका मक़ाम सुबह व शाम पेश किया जाता है जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का और उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है ता आंकि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला तुझको उसकी तरफ़ उठाये (फ़ा99) ज़िक्र फ़रमाये ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर कुफ़्फ़ार के आपस में झगड़ने का हाल कि (फ़ा100) दुनिया में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने (फ़ा101) यानी काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे। (फ़ा102) हर एक अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता। (फ़ा103) ईमानदारों को उसने जन्नत में दाख़िल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में जो होना था हो चुका। (फ़ा104) यानी दुनिया के एक दिन की मिक़दार तक हमारे अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहे। (फ़ा105) क्या उन्होंने ज़ाहिर मोअ़जेज़ात पेश न किये थे यानी अब तुम्हारे लिए जाये उज़्र बाक़ी न रही। (फ़ा106) यानी काफ़िर अम्बिया के तशरीफ़ लाने और अपने कुफ़्र करने का इक़रार **(बक़िया सफ़हा 777 पर)**

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ
بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ
مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ

वस्तग्फ़िर् लि–ज़म्बि–क व सब्बिह् बि–हम्दि रब्बि–क बिल्अशिय्यि वल्इब्कार(55)इन्नल्लज़ी–न युजादिलू–न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम् मा हुम् बिबालिग़ीहि फ़स्तअिज़् बिल्लाहि इन्नहू हुवस्स–मीअुल् बसीर(56)ल–ख़ल्क़ुस्स–मावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन्–न अक्स–रन्नासि ला यअ्–लमून(57)व मा यस्तविल् अअ्मा वल्बसीरु वल्लज़ी–न आ–मनू व अमिलुस्सालिहाति व लल्मुसीउ क़लीलम् मा त–त–ज़क्करून(58)इन्नस्सा–अ–त लआति–यतुल् लारै–ब फ़ीहा व लाकिन्–न अक्स–रन्नासि ला युअ्मिनून(59)व क़ा–ल रब्बुकु–मुद्अूनी अस्तजिब् लकुम् इन्नल्लज़ी–न यस्तक्बिरू–न अन् अिबा–दती स–यद्ख़ुलू–न ज–हन्न–म दाख़िरीन(60)अल्लाहुल्लज़ी ज–अ–ल लकुमुल् लै–ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा–र मुब्सिरन् इन्नल्ला–ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ–लन्नासि व लाकिन्–न अक्स–रन्नासि ला यश्कुरून(61)ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ला इला–ह इल्ला हु–व फ़–अन्ना तुअ्–फ़कून(62)कज़ालि–क

और अपनों के गुनाहों की माफ़ी चाहो (फ़ा116) और अपने रब की तारीफ़ करते हुए सुबह और शाम उसकी पाकी बोलो।(55) (फ़ा117) वह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो (फ़ा118) उनके दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हवस (फ़ा119) जिसे न पहुंचेंगे (फ़ा120) तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो (फ़ा121) बेशक वही सुनता देखता है।(56) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी (फ़ा122) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।(57) (फ़ा123) और अन्धा और अंखियारा बराबर नहीं (फ़ा124) और न वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और बदकार (फ़ा125) कितना कम ध्यान करते हो।(58) बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है इसमें कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते।(59) (फ़ा126) और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा (फ़ा127) बेशक वह जो मेरी इबादत से ऊँचे खिंचते हैं अन्क़रीब जहन्नम में जायेंगे ज़लील होकर।(60) (रुकूअ् 11) अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उसमें आराम पाओ और दिन बनाया आँखें खोलता (फ़ा128) बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र नहीं करते।(61) वह है अल्लाह तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां औंधे जाते हो।(62) (फ़ा129) यूंही

(फ़ा116) यानी अपनी उम्मत के (मदारिक) (फ़ा117) यानी अल्लाह तआला की इबादत पर मुदावमत रखो और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया इससे पांचों नमाज़ें मुराद हैं। (फ़ा118) उन झगड़ा करने वालों से कुफ़्फ़ारे कुरैश मुराद हैं (फ़ा119) और उनका यही तकब्बुर उनके तकज़ीब व इन्कार और कुफ़्र के इख़्तियार करने का बाइस हुआ कि उन्होंने यह गवारा न किया कि कोई उनसे ऊँचा हो इस लिए सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अदावत की बईं ख़्याले फ़ासिद कि अगर आप को नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हवस रखते हैं बड़े बनने की। (फ़ा120) और बड़ाई मुयस्सर न आएगी बल्कि हुज़ूर की मुख़ालफ़त व इन्कार उनके हक़ में ज़िल्लत और रुसवाई का सबब होगा। (फ़ा121) हासिदों के मक्र व कैद से। (फ़ा122) यह आयत मुन्करीने बअ्स के रद में नाज़िल हुई उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि जब तुम आसमान व ज़मीन की पैदाइश पर बावजूद उन की इस अज़मत और बड़ाई के अल्लाह तआला को क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा कर देना उसकी कुदरत से क्यों बईद समझते हो। (फ़ा123) बहुत लोगों से मुराद **(बक़िया सफ़हा 777 पर)**

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ
الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ۫ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ
عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

युअ्–फ़कुल् लज़ी–न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून(63)अल्लाहुल्लज़ी ज–अ–ल लकुमुल्अर्–ज़ क़रारंव् वस्समा–अ बिनाअंव् व सव्व–रकुम् फ़–अह्स–न सु–व–रकुम् व र–ज़–क़कुम् मि–नत्तय्यिबाति ज़ालि–कुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़–तबा–र कल्लाहु रब्बुल् आ–लमीन(64)हुवल्हय्यु ला इला–ह इल्ला हु–व फ़दअूहु मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन (65)क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्लज़ी–न तदअू–न मिन् दूनिल्लाहि लम्मा जा–अ नियल्बय्यिनातु मिर्रब्बी व उमिर्तु अन् उस्लि–म लि–रब्बिल् आ–लमीन(66)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्–म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्–म मिन् अ–ल–क़तिन् सुम्–म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्–म लितब्लुग़ू अशुद्–दकुम् सुम्–म लि–तकूनू शुयूख़न् व मिन्कुम् मंय्यु–त–वफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लि–तब्लुग़ू अ–ज–लम् मुसम्मंव् व ल–अ़ल्लकुम् तअ्क़िलून(67)हुवल्लजी युह्यी व युमीतु फ़–इज़ा क़ज़ा अम्–रन् फ़–इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़–यकून(68)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न युजादिलू–न फ़ी आयातिल्लाहि अन्ना युस्–रफ़ून(69)अल्लज़ी–न कज़्ज़बू

औंधे होते हैं (फ़ा130) वह जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं।(63) (फ़ा131) अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन ठहराव बनाई (फ़ा132) और आसमान छत (फ़ा133) और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं (फ़ा134) और तुम्हें सुथरी चीज़ें (फ़ा135) रोज़ी दीं यह है अल्लाह तुम्हारा रब तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का।(64) वही ज़िन्दा है (फ़ा136) उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो निरे उसी के बन्दे होकर सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब।(65) तुम फ़रमाओ मैं मना किया गया हूं कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो (फ़ा137) जब कि मेरे पास रौशन दलीलें (फ़ा138) मेरे रब की तरफ़ से आईं और मुझे हुक्म हुआ है कि रब्बुल आलमीन के हुज़ूर गर्दन रखूं।(66) वही है जिसने तुम्हें (फ़ा139) मिट्टी से बनाया फिर (फ़ा140) पानी की बूंद से (फ़ा141) फिर ख़ून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी को पहुंचो (फ़ा142) फिर इस लिए कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है (फ़ा143) और इस लिए कि तुम एक मुक़र्रर वादा तक पहुंचो (फ़ा144) और इस लिए कि समझो।(67) (फ़ा145) वही है कि जिलाता है और मारता है फिर जब कोई हुक्म फ़रमाता है तो उस से यही कहता है कि होजा जभी वह हो जाता है।(68) (फ़ा146) (रुकूअ़ 12) क्या तुमने उन्हें न देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं (फ़ा147) कहां फेरे जाते हैं।(69) (फ़ा148) वह जिन्होंने झुठलाई किताब (फ़ा149)

(फ़ा130) और हक़ से फिरते हैं बावजूद दलाइल क़ाइम होने के। (फ़ा131) और उनमें हक़ जूयाना नज़र व तअम्मुल नहीं करते। (फ़ा132) कि वह तुम्हारी क़रारगाह हो ज़िन्दगी में भी और बाद मौत भी। (फ़ा133) कि इसको मिस्ल क़ुब्बा के बुलन्द फ़रमाया। (फ़ा134) कि तुम्हें रास्त क़ामत पाकीज़ा रौ मुतनासिबुल आज़ा किया बहाइम की तरह न बनाया कि औंधे चलते। (फ़ा135) नफ़ीस मआकिल व मशारिब। (फ़ा136) कि उसकी फ़ना मुहाल है। (फ़ा137) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ार नाबकार ने बराहे जहालत व गुमराही अपने दीने बातिल की तरफ़ हुज़ूर पुरनूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दावत दी थी और आपसे बुत परस्ती की दरख़्वास्त की थी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा138) अक़्ल व वही की तौहीद पर दलालत करने वाली। (फ़ा139) यानी तुम्हारे असल और तुम्हारे जद्दे आला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा140) बाद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के उनकी नस्ल को। (फ़ा141) यानी क़तरए मनी से। (फ़ा142) और तुम्हारी कुव्वत कामिल हो (फ़ा143) यानी **(बक़िया सफ़हा 778 पर)**

بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۰﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ يُسْحَبُوْنَ ﴿۷۱﴾ فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ ثُمَّ قِيْلَ
لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۳﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿۷۵﴾ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا
عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۷۸﴾

बिल्–किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसु–लना फ़सौ–फ़ यअ्लमून(70)इज़िल् अग्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्–हबून(71)फ़िल्हमीमि सुम्–म फ़िन्नारि युस्जरून(72)सुम्–म क़ी–ल लहुम् ऐ–न मा कुन्तुम् तुश्रिकून(73)मिन् दूनिल्लाहि क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना बल् लम् नकुन् नदअू मिन् क़ब्लु शैअन् कज़ालि–क युज़िल्लुल्लाहुल् काफ़िरीन(74)ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्–रहू–न फ़िलअर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्–रहून(75)उद्खुलू अब्वा–ब ज–हन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा फ़बिअ्–स मस्वल् मु–त–कब्बिरीन(76)फ़स्बिर् इन्–न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़इम्मा नुरि–यन्न–क बअ्–ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न–त–वफ़्फ़–यन्न–क फ़–इलैना युरजअून (77)व ल–क़द् अर्सल्ना रुसुलम् मिन् क़ब्लि–क मिन्हुम् मन् क़–सस्ना अ़लै–क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अ़लै–क व मा का–न लि–रसूलिन् अंय्यअ्ति–य बिआ–यतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि फ़इज़ा जा–अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि–य बिल्हक़्क़ि व ख़सि–र हुनालिकल् मुब्तिलून(78)

और जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा (फ़ा150) वह अन्क़रीब जान जायेंगे।(70) (फ़ा151) जब उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़न्जीरें (फ़ा152) घसीटे जायेंगे।(71) खौलते पानी में फिर आग में दहकाए जायेंगे।(72) (फ़ा153) फिर उनसे फ़रमाया जाएगा कहां गए वह जो तुम शरीक बताते थे।(73) (फ़ा154) अल्लाह के मुक़ाबिल कहेंगे वह तो हम से गुम गए (फ़ा155) बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे (फ़ा156) अल्लाह यूं ही गुमराह करता है काफ़िरों को।(74) यह (फ़ा157) उसका बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर खुश होते थे (फ़ा158) और उसका बदला है जो तुम इतराते थे।(75) जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का।(76) (फ़ा159) तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का (फ़ा160) वादा सच्चा है तो अगर हम तुम्हें दिखा दें (फ़ा161) कुछ वह चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है (फ़ा162) या तुम्हें पहले ही वफ़ात दें बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना।(77) (फ़ा163) और बेशक हमने तुम से पहले कितने रसूल भेजे कि जिन में किसी का अहवाल तुम से बयान फ़रमाया (फ़ा164) और किसी का अहवाल न बयान फ़रमाया (फ़ा165) और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए बे हुक्म खुदा के फिर जब अल्लाह का हुक्म आएगा (फ़ा166) सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा167) और बातिल वालों का वहां ख़सारा।(78) (रुकूअ् 13)

(फ़ा150) उसकी भी तकज़ीब की और उसके रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी उससे मुराद या तो वह किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वह अ़क़ाइदे हक़्क़ा जो तमाम अम्बिया ने पहुंचाये मिस्ल तौहीदे इलाही और बअ्स बाद मौत के। (फ़ा151) अपनी तकज़ीब का अन्जाम। (फ़ा152) और उन ज़न्जीरों से। (फ़ा153) और वह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उनके अन्दर भी भरी होगी (अल्लाह तआ़ला की पनाह)। (फ़ा154) यानी वह बुत क्या हुए जिनकी तुम इबादत करते थे। (फ़ा155) कहीं नज़र ही नहीं आते। (फ़ा156) बुतों की परस्तिश का इन्कार कर जायेंगे फिर बुत हाज़िर किए जायेंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे यह मअ्बूद सब जहन्नम का ईंधन हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि जहन्नमियों का यह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इसके यह माना हैं कि अब हमें ज़ाहिर हो गया कि जिन्हें हम पूजते थे वह कुछ न थे कि कोई नफ़ा या नक़सान पहुंचा सकते। (फ़ा157) यानी यह अ़ज़ाब जिसमें तुम मुब्तला हो (फ़ा158) यानी शिर्क व बुत परस्ती व इन्कारे बअ्स पर। (फ़ा159) जिन्होंने तकब्बुर किया और हक़ को क़बूल न किया (फ़ा160) कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब फ़रमाने का (फ़ा161) तुम्हारी वफ़ात से पहले (फ़ा162) अनवाए अ़ज़ाब से मिस्ल बद्र में मारे जाने के जैसा कि वह वाक़ेअ् हुआ। (फ़ा163) और अ़ज़ाबे शदीद में गिरिफ़्तार होना। (फ़ा164) इस क़ुरआन में सराहत के साथ। (फ़ा165) क़ुरआन शरीफ़ में तफ़सीलन व **(बक़िया सफ़हा 778 पर)**

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

अल्लाहुल्लज़ी ज–अ–ल लकुमुल् अन्आ–म लि–तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून(79)व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लि–तब्लुगू अलैहा हा–ज–तन् फ़ी सुदूरिकुम् व अलैहा व अलल्फ़ुल्कि तुह्–मलून(80)व युरीकुम् आयातिही फ़–अय्–य आयातिल्लाहि तुन्किरून(81)अ–फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्ज़ुरू कै–फ़ का–न आक़ि–बतुल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् कानू अक्स़–र मिन्हुम् व अशद्–द क़ुव्वतंव् व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून(82)फ़–लम्मा जा–अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू बिमा अिन्दहुम् मिनल्अिल्मि व हा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(83)फ़–लम्मा रऔ बअ्–सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्दहू व क–फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन(84)फ़–लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ बअ्–सना सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़–लत् फ़ी अिबादिही व ख़सि–र हुनालिकल् काफ़िरून(85)

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए कि किसी पर सवार हो और किसी का गोश्त खाओ।(79) और तुम्हारे लिए उनमें कितने ही फ़ाइदे हैं (फ़ा168) और इस लिए कि तुम उनकी पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो (फ़ा169) और उन पर (फ़ा170) और कश्तियों पर (फ़ा171) सवार होते हो।(80) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है (फ़ा172) तो अल्लाह की कौनसी निशानी का इन्कार करोगे।(81) (फ़ा173) क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अन्जाम हुआ वह उनसे बहुत थे (फ़ा174) और उनकी क़ुव्वत (फ़ा175) और ज़मीन में निशानियाँ उनसे ज़्यादा (फ़ा176) तो उनके क्या काम आया जो उन्होंने कमाया।(82) (फ़ा177) तो जब उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाए तो वह उसी पर खुश रहे जो उनके पास दुनिया का इल्म था (फ़ा178) और उन्हीं पर उलट पड़ा जिस की हंसी बनाते थे।(83) (फ़ा179) फिर जब उन्होंने हमारा अ़ज़ाब देखा बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उसके शरीक करते थे उनसे मुन्किर हुए।(84) (फ़ा180) तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्होंने हमारा अ़ज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उसके बन्दों में गुज़र चुका (फ़ा181) और वहां काफ़िर घाटे में रहे।(85) (फ़ा182) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा168) कि उनके दूध और ऊन वग़ैरह काम में लाते हो और उनकी नस्ल से नफ़ा उठाते हो। (फ़ा169) यानी अपने सफ़रों में अपने वज़नी सामान उनकी पीठों पर लाद कर एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम पर ले जाते हो (फ़ा170) खुश्की के सफ़रों में (फ़ा171) दरियाई सफ़रों में। (फ़ा172) जो उसकी क़ुदरत व वहदानियत पर दलालत करती हैं (फ़ा173) यानी वह निशानियां ऐसी ज़ाहिर व बाहिर हैं कि उनके इन्कार की कोई सूरत ही नहीं। (फ़ा174) तादाद उनकी कसीर थी। (फ़ा175) और जिस्मानी ताक़त भी उनसे ज़्यादा थी। (फ़ा176) यानी उनके महल और इमारतें वग़ैरह। (फ़ा177) माना यह हैं कि अगर यह लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मालूम हो जाता कि मुन्करीन मुतमरदीन का क्या अन्जाम हुआ और वह किस तरह हलाक व बरबाद हुए और उनकी तादाद उनके ज़ोर उनके माल कुछ भी उनके काम न आ सके। (फ़ा178) और उन्होंने इल्मे अम्बिया की तरफ़ इल्तेफ़ात न किया उसकी तहसील और उससे इन्तेफ़ाअ़ की तरफ़ मुतवज्जह न हुए बल्कि उसको हक़ीर जाना और उसकी हंसी बनाई और अपने दुनियवी इल्म को जो हक़ीक़त में जहल हैं पसन्द करते रहे। (फ़ा1790) यानी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब। (फ़ा180) यानी जिन बुतों को उसके सिवा पूजते थे उन से बेज़ार हुए। (फ़ा181) यही है कि नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त ईमान लाना नाफ़ेअ़ नहीं होता उस वक़्त ईमान क़बूल नहीं किया जाता और यह भी अल्लाह तआ़ला की सुन्नत है कि रसूलों के झुठलाने वालों पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है। (फ़ा182) यानी उनका घाटा और टोटा अच्छी तरह ज़ाहिर हो गया।

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ۝۱ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝۲ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝۳ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝۴
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝۵ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝۶ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

सूरतु हामीम्–अस्सज्दति

(मक्की है इसमें 45 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हामीम्(1)तन्ज़ीलुम् मिनर्रह्मानिर्रहीम(2)किताबुन् फ़ुस्सिलत् आयातुहू कु़रआनन् अ़–रबिय्यल् लिक़ौमिंय्यअ्–लमून(3)बशीरंव् व नज़ीरन् फ़–अअ्–र–ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्मऊन.(4)व क़ालू कुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम् मिम्मा तदअूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना वक्रुंव् व मिम् बैनिना व बैनि–क हिजाबुन् फ़अ्–मल् इन्नना आमिलून(5)कुल् इन्नमा अना ब–शरुम् मिस्लुकुम् यूहा इलय्–य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग्फ़िरुहु व वैलुल् लिल्मुश्रिकीन(6) अल्लज़ी–न ला युअ्तू–नज़्ज़का–त व हुम् बिल् आख़ि–रति हुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा–मीम(1) यह उतारा है बड़े रहम वाले मेहरबान का।(2) एक किताब है जिसकी आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं (फ़ा2) अ़रबी क़ुरआन अ़क़्ल वालों के लिए।(3) ख़ुशख़बरी देता (फ़ा3) और डर सुनाता (फ़ा4) तो उनमें अक्सर ने मुंह फेरा तो वह सुनते ही नहीं।(4) (फ़ा5) और बोले (फ़ा6) हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं उस बात से जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो (फ़ा7) और हमारे कानों में टेंट है (फ़ा8) और हमारे और तुम्हारे दर्मियान रोक है (फ़ा9) तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं।(5) (फ़ा10) तुम फ़रमाओ (फ़ा11) आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूं (फ़ा12) मुझे 'वह़ी' होती है कि तुम्हारा मअ़बूद एक ही मअ़बूद है तो उसके हुज़ूर सीधे रहो (फ़ा13) और उससे माफ़ी मांगो (फ़ा14) और ख़राबी है शिर्क वालों को।(6) वह जो ज़कात नहीं देते (फ़ा15) और वह आख़िरत के

(फ़ा1) इस सूरत का नाम सूरह फ़ुस्सिलत् भी है और सूरए सजदा व सूरए मसाबीह भी है यह सूरत मक्की है इसमें छः रुकूअ़ 54 आयतें और 796 कलिमे और 3350 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अहकाम व अम्साल व मवाइज़ व वअ़्द व वईद वग़ैरह के बयान में (फ़ा3) अल्लाह तआ़ला के दोस्तों को सवाब की (फ़ा4) अल्लाह तआ़ला के दुश्मनों को अ़ज़ाब का (फ़ा5) तवज्जोह से क़बूल का सुनना (फ़ा6) मुशरिकीन हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से (फ़ा7) हम उसको समझ ही नहीं सकते यानी तौहीद व ईमान को (फ़ा8) हम बहरे हैं आपकी बात हमारे सुनने में नहीं आती इससे उनकी मुराद यह थी कि आप हम से ईमान व तौहीद के क़बूल करने की तवक़्क़ोअ़ न रखिये हम किसी तरह मानने वाले नहीं और न मानने में हम बमन्ज़िला उस शख़्स के हैं जो न समझता हो न सुनता हो (फ़ा9) यानी दीनी मुख़ालफ़त तो हम आपकी बात मानने वाले नहीं (फ़ा10) यानी तुम अपने दीन पर रहो हम अपने दीन पर क़ाइम हैं या यह माना हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वह करो हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे। (फ़ा11) ऐ अकरमुल ख़ल्क़ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बराहे तवाज़ोअ. उन लोगों के इरशादात व हिदायात के लिए कि (फ़ा12) ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूं मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे तुम्हारे दर्मियान में बज़ाहिर कोई जिन्सी मुग़ायरत भी नहीं है तो तुम्हारा यह कहना कैसे सही हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुंचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे दर्मियान कोई रोक हो बजाए मेरे कोई ग़ैर जिन्स जिन्न या फ़रिश्ता आता तो तुम कह सकते थे कि न वह हमारे देखने में आयें न उनकी बात सुनने में आये न हम उनके कलाम को समझ सकें हमारे उनके दर्मियान तो जिन्सी मुख़ालफ़त ही बड़ी रोक है लेकिन यहां तो ऐसा नहीं क्योंकि मैं बशरी सूरत में जलवानुमा हुआ तो तुम्हें मुझ से मानूस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और उससे फ़ाइदा उठाने की बहुत कोशिश करना चाहिए क्योंकि मेरा मर्तबा बहुत बुलन्द है और मेरा कलाम बहुत आली है। इस लिए कि मैं वही कहता हूं जो मुझे वह़ी होती है फ़ाइदा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बलिहाज़े ज़ाहिर अना ब-शरुम्-मिस्लुकुम् फ़रमाना **(बक़िया सफ़हा 778 पर)**

كٰفِرُوْنَ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٨ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ
لَهٗۤ اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِيْۤ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١٠
ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَاۤ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝١١ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ
فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۭ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝١٢ فَاِنْ اَعْرَضُوْا
فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝١٣ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ

काफ़िरून(7)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून(8)कुल् अ– इन्नकुम् ल–तक्फ़ुरू–न बिल्लज़ी ख़–ल–क़ल् अर्–ज़ फ़ी यौमैनि व तज्अ़लू–न लहू अन्दादन् ज़ालि–क रब्बुल् आ–लमीन(9)व ज–अ़–ल फ़ीहा रवासि–य मिन् फ़ौक़िहा व बा–र–क फ़ीहा व क़द्–द–र फ़ीहा अक़्वा–तहा फ़ी अर्ब–अ़ति अय्यामिन् सवाअल् लिस्साइलीन(10)सुम्मस्तवा इलस्समाइ व हि–य दुख़ानुन् फ़क़ा–ल लहा व लिल्–अर्ज़िअ्तिया तौअ़न् औ कर्हन् क़ा–लता अतैना ताइ–अ़ीन (11)फ़–क़ज़ाहुन्–न सब्–अ़ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समाइन् अम्–रहा व ज़य्यन्नस् समा–अद् दुन्या बि– मसाबी–ह् व हिफ़्ज़न् ज़ालि–क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल् अ़लीम(12)फ़इन् अअ्–रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअ़ि–क़–तम् मिस्ल साअ़ि–क़ति आ़दिंव् व समूद(13)इज़् जाअत्हुमुर्रुसुलु मिम् बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला–ह क़ालू लौशा–अ

मुन्किर हैं।(7) (फ़ा16) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए बे इन्तिहा सवाब है।(8) (फ़ा17) (रुकूअ़ 15) तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उसका इंकार रखते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई (फ़ा18) और उसके हमसर ठहराते हो (फ़ा19) वह है सारे जहान का रब।(9) (फ़ा20) और इसमें (फ़ा21) उसके ऊपर से लंगर डाले (फ़ा22) और उसमें बरकत रखी (फ़ा23) और उसमें उसके बसने वालों की रोज़ियाँ मुक़र्रर कीं यह सब मिला कर चार दिन में (फ़ा24) ठीक जवाब पूछने वालों को।(10) फिर आसमान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वह धुवाँ था (फ़ा25) तो उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे ना खुशी से दोनों ने अ़र्ज़ की कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।(11) तो उन्हें पूरे सात आसमान कर दिया दो दिन में (फ़ा26) और हर आसमान में उसी के काम के अहकाम भेजे (फ़ा27) और हम ने नीचे के आसमान को (फ़ा28) चराग़ों से आरास्ता किया (फ़ा29) और निगेहबानी के लिए (फ़ा30) यह उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले का ठहराया हुआ है।(12) फिर अगर वह मुँह फेरें (फ़ा31) तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी।(13) (फ़ा32) जब रसूल उनके आगे पीछे फिरते थे (फ़ा33) कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बोले (फ़ा34) हमारा रब चाहता तो

(फ़ा16) कि मरने के बाद उठने और जज़ा के मिलने के क़ाइल नहीं (फ़ा17) जो मुन्क़तअ़ न होगा यह भी कहा गया है कि यह आयत बीमारों अपाहिजों और बूढ़ों के हक़ में नाज़िल हुई जो अ़मल व ताअ़त के क़ाबिल न रहें उन्हें वही अज्र मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अ़मल करते थे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि जब बन्दा कोई अ़मल करता है और किसी मर्ज़ या सफ़र के बाइस वह आ़मिल उस अ़मल से मजबूर हो जाता है तो तन्दुरुस्ती और इक़ामत की हालत में जो करता था वैसा ही उसके लिए लिखा जाता है (फ़ा18) उसकी ऐसी क़ुदरते कामिला है और चाहता तो एक लम्हा से भी कम में बना देता। (फ़ा19) यानी शरीक (फ़ा20) और वही इबादत का मुस्तहिक़ है उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं सब उसकी ममलूक व मख़्लूक़ हैं इसके बाद फिर उसकी क़ुदरत का बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा21) यानी ज़मीन में (फ़ा22) पहाड़ों के (फ़ा23) दरिया और नहरें और दरख़्त व फल और क़िस्म क़िस्म के हैवानात वग़ैरह पैदा करके। (फ़ा24) यानी दो दिन ज़मीन की पैदाइश और दो दिन में यह सब (फ़ा25) यानी नज्जार बुलन्द होने वाला (फ़ा26) यह कुल छः दिन हुए इन में सब से पिछला जुमा है (फ़ा27) वहां के रहने वालों को ताअ़ात व इबादात व अमर व नही के (फ़ा28) जो ज़मीन से क़रीब है (फ़ा29) यानी रौशन सितारों से (फ़ा30) शयातीन मुस्तरक़ा से (फ़ा31) यानी अगर यह मुशरिकीन इस बयान के बाद भी ईमान लाने से एअ़्राज़ करें (फ़ा32) यानी अ़ज़ाबे मुहलिक से जैसा उन पर आया था। (फ़ा33) यानी क़ौमे आ़द व समूद के रसूल हर तरफ़ से आते थे और उनकी हिदायत की हर तदबीर अ़मल में लाते थे और उन्हें हर तरह नसीहत करते थे (फ़ा34) उनकी क़ौम के काफ़िर उनके जवाब में कि

رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ
اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۖ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ﴿١٦﴾ وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ
الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا
شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ

रब्बुना ल–अन्ज़–ल मलाइ–क–तन् फ़–इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून(14)फ़–अम्मा आदुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना क़ुव्वतन् अ–व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़–ल–क़हुम हु–व अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन् व कानू बिआयातिना यज्हदून(15) फ़–अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्–स–रन् फ़ी अय्यामिन् नहिसातिल् लिनुज़ी–क़हुम् अ़ज़ाबल् ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद् दुन्या व ल–अ़ज़ाबुल् आख़ि–रति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून(16)व अम्मा समूदु फ़–हदैनाहुम् फ़स्त–हब्बुल् अ़मा अ़लल्हुदा फ़–अ–ख़–ज़त्हुम् साअ़ि–क़तुल् अ़ज़ाबिल् हूनि बिमा कानू यक्सिबून(17)व नज्जै–नल्लज़ी–न आ–मनू व कानू यत्तक़ून(18)व यौ–म युह्शरु अअ़्दा–उल्लाहि इलन्नारि फ़हुम् यू–ज़अ़ून(19)हत्ता इज़ा मा जाऊहा शहि–द अ़लैहिम् सम्अ़ुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ़्–मलून(20)व क़ालू लिजुलूदिहिम् लि–म शहित्तुम् अ़लैना क़ालू अन्–त–क़–नल्लाहुल् लज़ी अन्–त–क़ कुल्–ल शैइंव्

फ़रिश्ते उतारता (फ़ा35) तो जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते।(14) (फ़ा36) तो वह जो आ़द थे उन्होंने ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर किया (फ़ा37) और बोले हम से ज़्यादा किस का ज़ोर और क्या उन्होंने न जाना कि अल्लाह जिसने उन्हें बनाया उनसे ज़्यादा क़वी है और हमारी आयतों का इन्कार करते थे।(15) तो हम ने उन पर एक आंधी भेजी सख़्त गरज की (फ़ा38) उनकी शामत के दिनों मे कि हम उन्हें रुसवाई का अ़ज़ाब चखायें दुनिया की ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अ़ज़ाब में सब से बड़ी रुसवाई है और उनकी मदद न होगी।(16) और रहे समूद उन्हें हम ने राह दिखाई (फ़ा39) तो उन्होंने सूझने पर अन्धे होने को पसन्द किया (फ़ा40) तो उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की कड़क ने आ लिया (फ़ा41) सज़ा उनके किये की।(17) (फ़ा42) और हमने (फ़ा43) उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए (फ़ा44) और डरते थे।(18) (फ़ा45) (रुकूअ़ 16) और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन (फ़ा46) आग की तरफ़ हांके जायेंगे तो उनके अगलों को रोकेंगे।(19) यहां तक कि पिछले आ मिलें (फ़ा47) यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उन के कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े सब उन पर उनके किये की गवाही देंगे।(20) (फ़ा48) और वह अपनी खालों से कहेंगे तुम ने हम पर क्यों गवाही दी वह कहेंगी हमें अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी

(फ़ा35) बजाए तुम्हारे तुम तो हमारी मिस्ल आदमी हो (फ़ा36) यह ख़िताब उनका हज़रत हूद और हज़रत सालेह और तमाम अम्बिया से था जिन्होंने ईमान की दावत दी इमाम बग़वी ने ब-इसनादे सअ़्लबी हज़रत जाबिर से रिवायत की कि जमाअ़ते क़ुरैश ने जिन में अबू जहल वग़ैरह सरदार भी थे यह तजवीज़ किया कि कोई ऐसा शख़्स जो शेअ़्र सेहर कहानत में माहिर हो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कलाम करने के लिए भेजा जाये चुनांचे उतबा बिन रबीआ़ का इन्तेख़ाब हुआ उतबा ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आकर कहा कि आप बेहतर हैं या हाशिम, आप बेहतर हैं या अब्दुल मुत्तलिब, आप बेहरत हैं या अ़ब्दुल्लाह आप क्यों हमारे मअ़्बूदों को बुरा कहते हैं क्यों हमारे बाप दादा को गुमराह बताते हैं हुकूमत का शौक़ हो तो हम आपको बादशाह मान लें आपके फरेरे उड़ायें, औ़रतों का शौक़ हो तो क़ुरैश की जिन लड़कियों में से आप पसन्द करें हम दस आपके अ़क़्द में दें माल की ख़्वाहिश हो तो इतना जमा कर दें जो आपकी नस्लों से भी बच रहे। सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह तमाम गुफ़्तगू ख़ामोश सुनते रहे जब उतबा अपनी तक़रीर करके ख़ामोश हुआ तो हुज़ूरे अनवर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यही सूरत हाम्-मीम्-सज्दा पढ़ी जब आप आयत *फ़इन् अअ़्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअ़ि-क़्-तम्-मिस्-ल साअ़ि-क़ति आ़दिंव् व समूद* पर पहुंचे तो उतबा ने जल्दी से अपना हाथ **(बक़िया सफ़हा 778 पर)**

وَهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٢١ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا

يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢٢ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٢٣ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا

فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝٢٤ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٢٥ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝٢٦ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ

كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٧ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۚ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

व हु–व ख़–ल–क़कुम् अव्व–ल मर्रतिंव् व इलैहि तुर्जअून(21)व मा कुन्तुम् तस्ततिरू–न अंय्यश् –ह–द अ़लैकुम् समअुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़–नन्तुम् अन्नल्ला–ह ला यअ्–लमु कसीरम् मिम्मा तअ्–मलून(22)व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल् लज़ी ज़–नन्तुम् बि–रब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़–अस्बह्तुम् मिनल् ख़ासिरीन(23)फ़इंय्यस्बिरू फ़न्नारु मस्वल् लहुम् व इंय्यस्तअ्–तिबू फ़मा हुम् मिनल्मुअ्–तबीन(24)व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु–रना–अ फ़–ज़य्यनू लहुम् मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ह़क़्–क़ अ़लैहिमुल् क़ौलु फ़ी उ–ममिन् क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल् इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन(25)व क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू ला तस्–मअू लिहाज़ल् क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि ल–अ़ल्लकुम् तग़्लिबून(26)फ़–लनुज़ी–क़न्नल् लज़ी–न क–फ़रू अ़ज़ाबन् शदीदंव् व ल–नज्ज़ि–यन्नहुम् अस्–व अल्लज़ी कानू यअ्–मलून(27)ज़ालि–क जज़ा–उ अअ्दा– इल्लाहिन्नारु लहुम् फ़ीहा दारुल्–ख़ुल्दि जज़ा–अम् बिमा कानू बिआ–यातिना

और उसने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की तरफ़ तुम्हें फिरना है।(21) और तुम (फ़ा49) उससे कहां छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें (फ़ा50) लेकिन तुम तो यह समझे बैठे थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता।(22) (फ़ा51) और यह है तुम्हारा वह गुमान जो तुमने अपने रब के साथ किया और उसने तुम्हें हलाक कर दिया (फ़ा52) तो अब रह गए हारे हुओं में।(23) फिर अगर वह सब्र करें (फ़ा53) तो आग उनका ठिकाना है (फ़ा54) और अगर वह मनाना चाहें तो कोई उनका मनाना न माने।(24) (फ़ा55) और हमने उन पर कुछ साथी तैनात किये (फ़ा56) उन्होंने उन्हें भला कर दिखाया जो उनके आगे है (फ़ा57) और जो उनके पीछे (फ़ा58) और उन पर बात पूरी हुई (फ़ा59) उन गरोहों के साथ जो उनसे पहले गुज़र चुके जिन्न और आदमियों के बेशक वह ज़ियाँ कार थे।(25)(रुकूअ़ 17)और काफ़िर बोले(फ़ा60)यह कुरआन न सुनो और इसमें बेहूदा गुल करो (फ़ा61)शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ।(26) (फ़ा62)तो बेशक ज़रूर हम काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब चखायेंगे और बेशक हम उनके बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे।(27) (फ़ा63)यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग उसमें उन्हें हमेशा रहना है सज़ा उसकी कि हमारी आयतों का

(फ़ा49) गुनाह करते वक़्त। (फ़ा50) तुम्हें तो इसका गुमान भी न था बल्कि तुम तो बअ़्स व जज़ा के सिरे ही से क़ाइल न थे। (फ़ा51) जो तुम छुपा कर करते हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार यह कहते थे कि अल्लाह तआ़ला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उसको नहीं जानता (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा52) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया माना यह हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया। (फ़ा53) अ़ज़ाब पर। (फ़ा54) यह सब्र भी कारआमद नहीं। (फ़ा55) यानी हक़ तआ़ला उनसे राज़ी न हो चाहे कितना ही मिन्नत करें किसी तरह अ़ज़ाब से रिहाई नहीं। (फ़ा56) शयातीन में से (फ़ा57) यानी दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इत्तेबाअ़। (फ़ा58) यानी अमरे आख़िरत यह वसवसा डाल कर कि न मरने के बाद उठना है न हिसाब न अ़ज़ाब चैन ही चैन है। (फ़ा59) अ़ज़ाब की। (फ़ा60) यानी मुशरिकीने कुरैश। (फ़ा61) और शोर मचाओ कुफ़्फ़ार एक दूसरे से कहते थे कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कुरआन शरीफ़ पढ़ें तो ज़ोर ज़ोर से शोर करो ख़ूब चिल्लाओ ऊँची ऊँची आवाज़ें निकाल कर चीख़ो बे माना कलिमात से शोर करो तालियां और सीटियां बजाओ ताकि कोई कुरआन सुनने न पाये और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम परेशान हों (फ़ा62) और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़िराअत मौक़ूफ़ कर दें। (फ़ा63) यानी कुफ़्र का बदला सख़्त अ़ज़ाब।

يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ
عَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ
حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

यज्हदून(28)व क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू रब्बना अरिनल् लज़ैनि अ–ज़ल्लाना मिनल्जिन्नि वल्इन्सि नज्–अ़ल्हुमा तह्–त अक़्दामिना लि–यकूना मिनल् अस्फ़लीन(29)इन्नल्लज़ी–न क़ालू रब्बु–नल्लाहु सुम्मस्–तक़ामू त–त–नज़्ज़लु अ़लैहिमुल् मलाइ–कतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्–जन्नतिल् लती कुन्तुम् तू–अदून(30)नह्नु औलियाउकुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्–आख़ि–रति व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्–दऊ़न(31) नुज़ुलम् मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम(32)व मन् अह्सनु क़ौलम् मिम्मन् दआ़ इलल्लाहि व अ़मि–ल सालिहंव् व क़ा–ल इन्ननी मिनल्मुस्लिमीन(33)व ला तस्तविल् ह़–स–नतु व लस्सय्यि–अतु इद्फ़अ़् बिल्लती हि–य अह्सनु फ़–इज़ल् लज़ी बै–न–क व बै–नहू अ़दा–वतुन् क–अन्नहू वलिय्युन् ह़मीम(34) व मा यु–लक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी–न स़–बरू व मा यु–लक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीम(35) व इम्मा यन्–ज़ ग़न्न–क मिनश्शैतानि नज़्गुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि इन्नहू हुवस्समीअुल्

इंकार करते थे।(28) और काफ़िर बोले (फ़ा64) ऐ हमारे रब हमें दिखा वह दोनों जिन्न और आदमी जिन्होंने हमें गुमराह किया (फ़ा65) कि हम उन्हें अपने पाँव तले डालें (फ़ा66) कि वह हर नीचे से नीचे रहें।(29) (फ़ा67) बेशक वह जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर क़ाइम रहे (फ़ा68) उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (फ़ा69) कि न डरो (फ़ा70) और न ग़म करो (फ़ा71) और खुश हो उस जन्नत पर जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था।(30) (फ़ा72) हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया की ज़िन्दगी में (फ़ा73) और आख़िरत में (फ़ा74) और तुम्हारे लिए है उस में (फ़ा75) जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिए उसमें जो मांगो।(31) मेहमानी बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से।(32) (रुकूअ़ 18) और उससे ज़्यादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए (फ़ा76) और नेकी करे (फ़ा77) और कहे मैं मुसलमान हूं।(33) (फ़ा78) और नेकी और बदी बराबर न हो जायेंगी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल (फ़ा79) जभी वह कि तुझ में और उसमें दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।(34) (फ़ा80) और यह दौलत (फ़ा81) नहीं मिलती मगर साबिरों को और उसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला।(35) और अगर तुझे शैतान का कोई कोंचा पहुंचे (फ़ा82) तो अल्लाह की पनाह मांग (फ़ा83) बेशक वही सुनता

(फ़ा64) जहन्नम में (फ़ा65) यानी हमें वह दोनों शैतान दिखा जिन्नी भी और इन्सी भी शैतान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों में से एक इन्सानों में से जैसा कि क़ुरआन पाक में है शयातीनल् इन्सि वल् जिन्नि जहन्नम में कुफ़्फ़ार इन दोनों के देखने की ख़्वाहिश करेंगे। (फ़ा66) आग में (फ़ा67) दरके असफ़ल में हम से ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब में (फ़ा68) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से दरियाफ़्त किया गया इस्तिक़ामत किया है फ़रमाया यह कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया इस्तिक़ामत यह है कि अमर व नही पर क़ाइम रहे। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया इस्तिक़ामत यह है कि अ़मल में इख़्लास करे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया इस्तिक़ामत यह है कि फ़राइज़ अदा करे और इस्तिक़ामत के माना में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला के अमर को बजा लाए और मआ़सी से बचे। (फ़ा69) मौत के वक़्त या वह जब क़ब्रों से उठेंगे और यह भी कहा गया है कि मोमिन को तीन बार बशारत दी जाती है एक वक़्ते मौत दूसरे क़ब्र में तीसरे क़ब्रों से उठने के वक़्त। (फ़ा70) मौत से और आख़िरत में पेश आने वाले हालात से। (फ़ा71) अहल व औलाद के छूटने का या गुनाहों का। (फ़ा72) और फ़रिश्ते कहेंगे। (फ़ा73) तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे। (फ़ा74) तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे। (फ़ा75) यानी जन्नत में वह करामत **(बक़िया सफ़हा 778 पर)**

الْعَلِيْمُ ۝ وَمِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَ النَّهَارُ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ هُمْ لَا یَسْـَٔمُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَ رَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا لَا یَخْفَوْنَ عَلَیْنَا ؕ اَفَمَنْ یُّلْقٰى فِی النَّارِ خَیْرٌ اَمْ مَّنْ یَّاْتِیْۤ اٰمِنًا یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِیْزٌ ۝ لَّا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ ۝ مَا یُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِیْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

अ़लीम(36)व मिन् आयातिहिल् लैलु वन्नहारु वश्शम्सु वल्क़–मरु ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़–मरि वस्जुदू लिल्लाहिल् लज़ी ख़–ल–क़हुन्–न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून(37) फ़इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी–न अ़िन्–द रब्बि–क यु–सब्बिहू–न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्–अमून(38)व मिन् आयातिही अन्न–क त–रल् अर्–ज़ ख़ाशि–अ–तन् फ़इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा–अह्तज़्ज़त् व र–बत् इन्नल्लज़ी अह्–याहा लमुह्यिल्मौता इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (39)इन्नल्लज़ी–न युल्हिदू–न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ–न अ़लैना अ–फ़–मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम् मंय्यअ्ती आमिनंय्यौमल् क़िया–मति इअ़्मलू मा शिअ्तुम् इन्नहू बिमा तअ़्मलू–न बसीर(40)इन्नल् लज़ी–न क–फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा–अहुम् व इन्नहू लकिताबुन् अ़ज़ीज़ुल्(41) ला यअ्तीहिल् बातिलु मिम् बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही तन्ज़ीलुम् मिन् ह़कीमिन् ह़मीद(42) मा युक़ालु ल–क इल्ला मा क़द् क़ी–ल लिर्–रुसुलि मिन् क़ब्लि–क इन्–न रब्ब–क

जानता है।(36) और उसकी निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चाँद (फ़ा84) सजदा न करो सूरज को और न चाँद को (फ़ा85) और अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया (फ़ा86) अगर तुम उसके बन्दे हो।(37) तो अगर यह तकब्बुर करें (फ़ा87) तो वह जो तुम्हारे रब के पास हैं (फ़ा88) रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और उकताते नहीं।(38) और उसकी निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे बे क़दर पड़ी (फ़ा89) फिर जब हमने उस पर पानी उतारा (फ़ा90) तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली बेशक जिसने उसे जिलाया ज़रूर मुर्दे जिलाएगा बेशक वह सब कुछ कर सकता है।(39) बेशक वह जो हमारी आयतों में टेढ़े चलते हैं (फ़ा91) हम से छुपे नहीं (फ़ा92) तो क्या जो आग में डाला जाएगा (फ़ा93) वह भला या जो क़ियामत में अमान से आएगा (फ़ा94) जो जी में आए करो बेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है।(40) बेशक जो ज़िक्र से मुन्किर हुए (फ़ा95) जब वह उनके पास आया उनकी ख़राबी का कुछ हाल न पूछ और बेशक वह इज़्ज़त वाली किताब है।(41) (फ़ा96) बातिल को उसकी तरफ़ राह नहीं न उसके आगे से न उसके पीछे से (फ़ा97) उतारा हुआ है हिकमत वाले सब ख़ूबियों सराहे का।(42) तुम से न फ़रमाया जाएगा (फ़ा98) मगर वही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया कि बेशक तुम्हारा

(फ़ा84) जो उसकी क़द्र व हिकमत और उसकी रबूबियत व वहदानियत पर दलालत करते हैं। (फ़ा85) क्योंकि वह मख़्लूक़ हैं और हुक्म ख़ालिक़ से मुसख़्ख़र हैं और जो ऐसा हो मुस्तहिक़े इबादत नहीं हो सकता। (फ़ा86) वही सजदा और इबादत का मुस्तहिक़ है। (फ़ा87) सिर्फ़ अल्लाह को सजदा करने से। (फ़ा88) मलायका वह (फ़ा89) सूखी कि उसमें सब्ज़ा का नाम व निशान नहीं। (फ़ा90) बारिश नाज़िल की। (फ़ा91) और तावील आयात में सेहत व इस्तिक़ामत से उदूल व इन्हेराफ़ करते हैं (फ़ा92) हम उन्हें इसकी सज़ा देंगे (फ़ा93) यानी काफ़िर मुलहिद (फ़ा94) मोमिन सादिकुल अ़क़ीदा बेशक वही बेहतर है (फ़ा95) यानी कुरआने करीम से और उन्होंने इसमें तअ़्न किये। (फ़ा96) बे अ़दील व बे-नज़ीर जिसकी एक सूरत का मिस्ल बनाने से तमाम ख़ल्क़ आ़जिज़ है (फ़ा97) यानी किसी तरह और किसी जहत से भी बातिल उस तक राह नहीं पा सकता वह तग़य्युर व तब्दील व कमी व ज़्यादती से महफ़ूज़ है शैतान इसमें तसर्रुफ़ की कुदरत नहीं रखता। (फ़ा98) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से।

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّ ذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّ عَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ ؕ

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّ هُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

लजू मग़्फ़ि–रतिंव् व जू अ़िक़ाबिन् अलीम(43)व लौ ज–अ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अअ़्–जमिय्यल् लक़ालू लौला फ़ुस्सि़लत् आयातुहू अ–अअ़्–जमिय्युंव् व अ़–रबिय्युन् क़ुल् हु–व लिल्लज़ी–न आ–मनू हुदंव् व शिफ़ाउन् वल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रुंव् व हु–व अ़लैहिम् अ़–मन् उलाइ–क युनादौ–न मिम्मकानिम् बअ़ीद(44)व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब फ़ख़्तुलि–फ़ फ़ीहि व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर्रब्बि–क लक़ुज़ि–य बै–नहुम् व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब(45)मन् अ़मि–ल सा़लिह़न् फ़लि–नफ़्सिही व मन् असा–अ फ़–अ़लैहा व मा रब्बु–क बि–ज़ल्लामिल् लिल्अ़बीद(46)

रब बख़्शिश वाला (फ़ा99) और दर्दनाक अ़ज़ाब वाला है।(43) (फ़ा100) और अगर हम उसे अ़जमी ज़बान का क़ुरआन करते (फ़ा101) तो ज़रूर कहते कि उसकी आयतें क्यों न खोली गईं (फ़ा102) क्या किताब अ़जमी और नबी अ़रबी (फ़ा103) तुम फ़रमाओ वह (फ़ा104) ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है (फ़ा105) और वह जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में टेंट है (फ़ा106) और वह उन पर अंधापन है (फ़ा107) गोया वह दूर जगह से पुकारे जाते हैं।(44) (फ़ा108) (रुकूअ़ 19) और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई (फ़ा109) तो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया (फ़ा110) और अगर एक बात तुम्हारे रब की तरफ़ से गुज़र न चुकी होती (फ़ा111) तो जभी उनका फ़ैसला हो जाता (फ़ा112) और बेशक वह (फ़ा113) ज़रूर उसकी तरफ़ से एक धोखा डालने वाले शक में हैं।(45) जो नेकी करे वह अपने भले को और जो बुराई करे तो अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(46)

(फ़ा99) अपने अम्बिया के लिए अ़लैहिमुस्सलाम और उन पर ईमान लाने वालों के लिए (फ़ा100) अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के दुश्मनों और तकज़ीब करने वालों के लिए। (फ़ा101) जैसा कि यह कुफ़्फ़ार बतरीक़े एतेराज़ कहते हैं कि यह क़ुरआन अ़जमी ज़बान में क्यों न उतरा। (फ़ा102) और ज़बाने अ़रबी में बयान न की गईं कि हम समझ सकते। (फ़ा103) यानी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यों उतरी हासिल यह है कि क़ुरआन पाक अ़जमी ज़बान में होता तो यह काफ़िर एतेराज़ करते अ़रबी में आया तो मोअ़तमिज़ हुए बात यह है कि 'ख़ूए बद रा बहानए बिसयार' ऐसे एतेराज़ तालिबे हक़ की शान के लाइक़ नहीं। (फ़ा104) क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा105) कि हक़ की राह बताता है गुमराही से बचाता है जहल व शक वग़ैरह क़लबी अमराज़ से शिफ़ा देता है और जिस्मानी अमराज़ के लिए भी इसका पढ़ कर दम करना दफ़ए मर्ज़ के लिए मुअस्सिर है। (फ़ा106) कि वह क़ुरआन पाक के सुनने की निअ़मत से महरूम हैं (फ़ा107) कि शुकूक व शुबहात की ज़ुल्मतों में गिरिफ़्तार हैं। (फ़ा108) यानी वह अपने अ़दमे क़बूल से इस हालत को पहुंच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाये तो वह पुकारने वाले की बात न सुने न समझे। (फ़ा109) यानी तौरेत मुक़द्दस (फ़ा110) बाज़ों ने इसको माना और बाज़ों ने न माना बाज़ों ने इसकी तस्दीक़ की और बाज़ों ने तकज़ीब। (फ़ा111) यानी हिसाब व जज़ा को रोज़े क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमा दिया होता। (फ़ा112) और दुनिया ही में उन्हें इसकी सज़ा दे दी जाती। (फ़ा113) यानी किताबे इलाही की तकज़ीब करने वाले।

(बक़िया सफ़हा 752 का) मअ़बूदों यानी बुतों की बुराईयां बयान करने से बाज़ आइये वरना वह आपको नुक़सान पहुंचायेंगे हलाक कर देंगे या अक़्ल को फ़ासिद कर देंगे। (फ़ा85) बेशक वह अपने दुश्मनों से इन्तेक़ाम लेता है। (फ़ा86) यानी यह मुशरिकीन ख़ुदाए क़ादिर अलीम हकीम की हस्ती के तो मुक़िर हैं और यह बात तमाम ख़ल्क़ के नज़दीक मुसल्लम है और ख़ल्क़ की फ़ितरत इसकी शाहिद है और जो शख़्स आसमान व ज़मीन के अ़जाइब में नज़र करे उसको यक़ीनी तौर पर मालूम हो जाता है कि यह मौजूदात एक क़ादिरे हकीम की बनाई हुई है अल्लाह तआ़ला अपने नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को हुक्म देता है कि आप इन मुशरिकीन पर हुज्जत क़ाइम कीजिये चुनान्चे फ़रमाता है (फ़ा87) यानी बुतों को यह भी तो देखो कि वह कुछ भी कुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं (फ़ा88) किसी तरह की मर्ज़ की या क़हत की या नादारी की या और कोई। (फ़ा89) जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुशरिकीन से यह सवाल फ़रमाया तो वह लाजवाब हुए और साकित रह गए अब हुज्जत तमाम हो गई और उनके सुकूती इक़रार से साबित हो गया कि बुत महज़ बे क़ुदरत हैं न कोई नफ़ा पहुंचा सकते हैं न कुछ ज़रर उनकी इबादत करना निहायत ही जहालत है इस लिए अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमाया। (फ़ा90) मेरा उसी पर भरोसा है और जिसका अल्लाह तआ़ला पर भरोसा हो वह किसी से भी नहीं डरता तुम जो मुझे बुत जैसी बे क़ुदरत व बेइख़्तियार चीज़ों से डराते हो यह तुम्हारी निहायत ही बेवक़ूफ़ी व जहालत है (फ़ा91) और जो जो मक्र व हीले तुम से हो सकें मेरी अ़दावत में सब ही कर गुज़रो। (फ़ा92) जिस पर मामूर हों यानी दीन का क़ायम करना और अल्लाह तआ़ला मेरा मुईन व नासिर है और उसी पर मेरा भरोसा है। (फ़ा93) चुनांचे रोज़े बद्र वह रुसवाई के अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। (फ़ा94) यानी दाइम होगा और वह अ़ज़ाबे जहन्नम है।

(बक़िया सफ़हा 753 का) न हो। (फ़ा106) आख़िरत में। (फ़ा107) और वह बहुत तंगदिल और परेशान होते हैं और नागवारी का असर उनके चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है (फ़ा108) यानी बुतों का। (फ़ा109) यानी अम्रे दीन में इब्ने मुसय्यिब से मन्क़ूल है कि यह आयत पढ़ कर जो दुआ़ मांगी जाये क़बूल होती है। (फ़ा110) यानी अगर बिलफ़र्ज़ काफ़िर तमाम दुनिया के अमवाल व ज़ख़ाइर के मालिक होते और इतना ही और भी उनके मिल्क में होता। (फ़ा111) कि किसी तरह यह अमवाल देकर उन्हें उस अ़ज़ाबे अ़ज़ीम से रिहाई मिल जाए।

(बक़िया सफ़हा 754 का) इल्म की बदौलत मिली और उसकी क़ौम उसकी इस बेहूदा गोई पर राज़ी रही थी तो वह भी क़ाइलों में शुमार हुई। (फ़ा119) यानी जो बदियां उन्होंने कीं थीं उनकी सज़ायें। (फ़ा120) चुनांचे वह सात बरस क़हत की मुसीबत में मुब्तला रखे गए। (फ़ा121) गुनाहों और मअ़सीयतों में मुब्तला होकर। (फ़ा122) उसके जो कुफ़्र से बाज़ आये **शाने नुज़ूलः** मुशरिकीन में से चन्द आदमी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर से अर्ज़ किया कि आप का दीन तो बेशक हक़ और सच्चा है लेकिन हमने बड़े बड़े गुनाह किये हैं बहुत सी मअ़सीयतों में मुब्तला रहे हैं क्या किसी तरह हमारे वह गुनाह माफ़ हो सकते हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा123) ताइब होकर। (फ़ा124) और इख़्लास के साथ इताअ़त बजा लाओ। (फ़ा125) वह अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद है। (फ़ा126) तुम ग़फ़लत में पड़े रहो इस लिए चाहिए कि पहले से होशियार रहो।

(बक़िया सफ़हा 755 का) डर वालों में होता और तेरे तमाम उज़्र झूठे हैं। (फ़ा132) और शाने इलाही में ऐसी बात कही जो उसके लाइक़ नहीं उसके लिए शरीक तजवीज़ किये औलाद बताई उसकी सिफ़ात का इन्कार किया उसका नतीजा यह है (फ़ा133) जो बराहे तकब्बुर ईमान न लाये। (फ़ा134) उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा135) यानी ख़ज़ाइने रहमत व रिज़्क़ व बारिश वग़ैरह की कुन्जियां उसी के पास हैं वही उनका मालिक है यह भी कहा गया है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस आयत की तफ़सीर दरियाफ़्त की तो फ़रमाया कि मक़ालीद समावात व अर्ज़ यह हैं *ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि व हुवल् अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्बातिनु बि-यदिहिल् ख़ैरु युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शयअिन् क़दीर* मुराद यह है कि इन कलिमात में अल्लाह तआ़ला की तौहीद व तमजीद है यह आसमान व ज़मीन की भलाईयों की कुन्जियां हैं जिस मोमिन ने यह कलिमे पढ़े दारैन की बेहतरी पाएगा। (फ़ा136) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से जो आपको अपने दीन यानी बुत परस्ती की तरफ़ बुलाते हैं (फ़ा137) जाहिल इस वास्ते फ़रमाया कि उन्हें इतना भी मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं बावजूदेकि इस पर क़त्ई दलीलें क़ाइम हैं। (फ़ा138) जो नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला ने तुझको अ़ता फ़रमाईं उसकी इताअ़त बजा लाकर उनकी शुक्रगुज़ारी कर। (फ़ा139) जभी तो शिर्क में मुब्तला हुए अगर अ़ज़मते इलाही से वाक़िफ़ होते और उसका मर्तबा पहचानते तो ऐसा क्यों करते इसके बाद अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत व जलाल का बयान है

(बक़िया सफ़हा 756 का) हुए होंगे (फ़ा156) और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने।(73) और वह कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपना वादा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों का।(74) (फ़ा157) और तुम फ़रिश्तों को देखोगे अ़र्श के आस पास हल्क़ा किये अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा158) और कहा जाएगा कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो सारे जहान का रब।(75) (फ़ा159) (रुकूअ़ 5)

(फ़ा140) हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत उमर इब्ने रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला आसमानों को लपेट कर अपने दस्ते क़ुदरत में लेगा फिर फ़रमाएगा मैं हूं बादशाह कहां हैं जब्बार कहां हैं मुतकब्बिर मुल्क व हुकूमत के दावेदार फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते मुबारक में लेगा और यही फ़रमाएगा फिर फ़रमाएगा मैं हूं बादशाह कहां हैं ज़मीन के बादशाह। (फ़ा141) यह पहले नफ़ख़ा का बयान है उस नफ़ख़ा से जो बेहोशी तारी होगी उसका यह असर होगा कि मलाइका और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वह उससे मर जायेंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर अल्लाह तआ़ला ने उनहें हयात इनायत की वह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसे कि अम्बिया व शोहदा उन पर इस नफ़ख़ा से बेहोशी की सी कैफ़ियत तारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़ख़ा का शुऊर भी न होगा। (जुमल वग़ैरह) (फ़ा142) इस इस्तिसना में कौन कौन दाख़िल है इसमें मुफ़स्सिरीन के बहुत अक़वाल हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि नफ़ख़ए सअ़क़ से

तमाम आसमान और ज़मीन वाले मर जायेंगे सिवाए जिब्राईल व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के फिर अल्लाह तआ़ला दोनों नफ़ख़ों के दर्मियान जो चालीस बरस की मुद्दत है उसमें उन फ़रिश्तों को भी मौत देगा दूसरा क़ौल यह है कि मुस्तसना शोहदा हैं जिनके लिए क़ुरआन मजीद में बल् अह़्याउन् आया है हदीस शरीफ़ में भी है कि वह शोहदा हैं जो तलवारें हमाइल किये गिर्दे अर्श हाज़िर होंगे तीसरा क़ौल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मुस्तसना हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं चूंकि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इस लिए इस नफ़ख़ा से आप बेहोश न होंगे बल्कि आप मुतयक़्क़िज़ व होशियार रहेंगे चौथा क़ौल यह है कि मुस्तसना जन्नत की हूरें और अर्श व कुर्सी के रहने वाले हैं ज़हाक का क़ौल है कि मुस्तसना रिज़वान और हूरें और वह फ़रिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं। (तफ़सीर कबीर व जुमल) (फ़ा143) यह नफ़ख़ए सानिया है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जायेंगे (फ़ा144) अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो यह मुराद है कि वह हैरत में आकर मबहूत की तरह हर तरफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे या यह माना हैं कि वह यह देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मुआ़मला पेश आएगा और मोमिनीन की क़ब्रों पर अल्लाह तआ़ला की रहमत से सवारियां हाज़िर की जायेंगी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया है *यौ-म नह़्शुरुल् मुत्-तक़ी-न इलर्रह़्मानि वफ़्दन्* (फ़ा145) बहुत तेज़ रौशनी से यहां तक कि सुर्ख़ी की झलक नुमूदार होगी यह ज़मीन दुनिया की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत की महफ़िल के लिए पैदा फ़रमाएगा (फ़ा146) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह चांद सूरज का नूर न होगा जिसको अल्लाह तआ़ला पैदा फ़रमाएगा उससे ज़मीन रौशन हो जाएगी (जुमल) (फ़ा147) यानी आमाल की किताब हिसाब के लिए इससे मुराद या तो लौहे महफ़ूज़ है जिसमें दुनिया के जमीअ़ अहवाल क़ियामत तक शरह व बस्त के साथ सब्त हैं या हर शख़्स का आमाल नामा जो उसके साथ में होगा। (फ़ा148) जो रसूलों की तबलीग़ की गवाही देंगे। (फ़ा149) उससे कुछ मख़्फ़ी नहीं न उसको शाहिद व कातिब की हाजत यह सब हुज्जत तमाम करने के लिए होंगे। (जुमल) (फ़ा150) सख़्ती के साथ क़ैदियों की तरह। (फ़ा151) हर हर जमाअ़त और उम्मत अलाहिदा अलाहिदा। (फ़ा152) यानी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जायेंगे जो पहले से बन्द थे (फ़ा153) बेशक अम्बिया तशरीफ़ भी लाए और उन्होंने अल्लाह तआ़ला के अहकाम भी सुनाये और उस दिन से भी डराया। (फ़ा154) कि हम पर हमारी बद-नसीबी ग़ालिब आई और हमने गुमराही इख़्तियार की। और हस्बे इरशादे इलाही जहन्नम में भरे गए। इज़्ज़त व एहतेराम और लुत्फ़ व करम के साथ। (फ़ा155) उनके इज़्ज़त व एहतेराम के लिए और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि दरवाज़ए जन्नत के क़रीब एक दरख़्त है उसके नीचे से दो चश्मे निकलते हैं (फ़ा156) मोमिन वहां पहुंच कर एक चश्मा में ग़ुस्ल करेगा उससे उसका जिस्म पाक व साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मा का पानी पियेगा उससे उसका बातिन पाकीज़ा हो जायेगा फिर फ़रिश्ते दरवाज़ए जन्नत पर इस्तिक़बाल करेंगे। (फ़ा157) यानी अल्लाह और रसूल की इताअ़त करने वालों का। (फ़ा158) कि मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल किया जाएगा (फ़ा159) अहले जन्नत जन्नत में दाख़िल होकर अदाए शुक्र के लिए हम्दे इलाही अ़र्ज़ करेंगे।

(बक़िया सफ़हा 757 का) न हो कि यह कुफ़्र जैसा अज़ीम जुर्म करने के बाद भी अ़ज़ाब से अमन में रहे क्योंकि उनका अन्जाम कार ख़्वारी और अ़ज़ाब है पहली उम्मतों में भी ऐसे हालात गुज़र चुके हैं (फ़ा8) आ़द व समूद व क़ौमे लूत वग़ैरह (फ़ा9) और उन्हें क़त्ल और हलाक करदें (फ़ा10) जिसको अम्बिया लाये हैं (फ़ा11) क्या उनमें का कोई उससे बच सका। (फ़ा12) यानी मलाइका हामिलीने अर्श जो असहाबे क़ुर्ब और मलाइका में अशरफ़ व अफ़ज़ल हैं। (फ़ा13) यानी जो मलायका कि अर्श का तवाफ़ करने वाले हैं उन्हें करुबी कहते हैं और यह मलाइका में साहबे सियादत हैं (फ़ा14) और *सुब्ह़ानल्लाहि व बिहम्दिही* कहते। (फ़ा15) और उसकी वहदानियत की तस्दीक़ करते शहर बिन होशब ने कहा कि हामिलीने अ़र्श आठ हैं उनमें से चार की तस्बीह यह है *सुब्ह़ा-न-कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ल-कल्हम्दु अ़ला ह़िल्मि-क बअ़्-द अ़िल्मि-क* और चार की यह *सुब्ह़ा-न कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ल-कल्-ह़म्दु अ़ला अ़फ़्वि-क बअ़्-द क़ुद्रति-क* (फ़ा16) और बारगाहे इलाही में इस तरह अर्ज़ करते हैं। (फ़ा17) यानी तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को वसीअ़ है फ़ाइदा दुआ़ से पहले अ़र्ज़े सना से मालूम हुआ कि आदाबे दुआ़ में से यह है कि पहले अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना की जाये फिर मुराद अर्ज़ की जाये। (फ़ा18) यानी दीने इस्लाम पर।

(बक़िया सफ़हा 758 का) क़ुदरत पर दलालत करते हैं मिस्ले हवा और बादल और बिजली वग़ैरह के। (फ़ा27) मेंह बरसा कर। (फ़ा28) और उन निशानियों से पन्द पज़ीर नहीं होता (फ़ा29) तमाम उमूर में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ और शिर्क से ताइब हो। (फ़ा30) शिर्क से किनारा कश होकर। (फ़ा31) अम्बिया व औलिया व उलमा को जन्नत में। (फ़ा32) यानी अपने बन्दों में से जिस को चाहता है मन्सबे नबुव्वत अ़ता फ़रमाता है और जिसको नबी बनाता है उसका काम होता है। (फ़ा33) यानी ख़ल्क़े ख़ुदा को रोज़े क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन अहले आसमान और अहले ज़मीन और अव्वलीन व आख़िरीन मिलेंगे और रूहें जिस्मों से और हर अ़मल करने वाला अपने अ़मल से मिलेगा। (फ़ा34) क़ब्रों से निकल कर और कोई इमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पायेंगे

(बक़िया सफ़हा 759 का) (फ़ा44) यानी जिन बुतों को यह मुशरिकीन (फ़ा45) क्योंकि न वह इल्म रखते हैं न क़ुदरत तो उनकी इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही खुला बातिल है। (फ़ा46) अपनी मख़्लूक़ के अक़वाल व अफ़आ़ल और जुमला अहवाल को। (फ़ा47) जिन्होंने रसूलों की तकज़ीब की थी (फ़ा48) क़िले और महल और नहरें और हौज़ और बड़ी बड़ी इमारतें। (फ़ा49) कि अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता आक़िल का काम है कि दूसरे के हाल से इबरत हासिल करे इस अ़हद के काफ़िर यह हालात देख कर क्यों इबरत हासिल नहीं करते क्यों नहीं सोचते कि पिछली क़ौमें उनसे ज़्यादा क़वी व तवाना

बन्दों की दुआयें अपनी रहमत से क़बूल फ़रमाता है और उनके क़बूल के लिए चन्द शर्तें हैं एक इख़्लास दुआ में, दूसरे यह कि क़ल्ब ग़ैर की तरफ़ मशगूल न हो, तीसरे यह कि वह दुआ किसी अमरे ममनूअ पर मुश्तमिल न हो, चौथे यह कि अल्लाह तआला की रहमत पर यक़ीन रखता हो, पांचवें यह कि शिकायत न करे कि मैंने दुआ मांगी क़बूल न हुई। जब इन शर्तों से दुआ की जाती है क़बूल होती है हदीस शरीफ़ में है कि दुआ करने वाले की दुआ क़बूल होती है या तो उसकी मुराद दुनिया ही में उसको जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उसके लिए ज़ख़ीरा होती है या उससे उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि दुआ से मुराद इबादत है और क़ुरआने करीम में दुआ बमाना इबादत बहुत जगह वारिद है हदीस शरीफ़ में है अद्दुआउ हुवल्-अिबा-दतुः (अबू दाऊद व तिर्मिज़ी) इस तक़दीर पर आयत के माना यह होंगे कि तुम मेरी इबादत करो मैं तुम्हें सवाब दूंगा। (फ़ा128) कि इसमें अपने काम ब-इत्मीनान अन्जाम दो। (फ़ा129) कि उसको छोड़ कर बुतों की इबादत करते हो और उस पर ईमान नहीं लाते बावजूदेकि दलायल क़ायम हैं।

(बक़िया सफ़हा 765 का) बुढ़ापे या जवानी को पहुंचने से क़बल ही यह इस लिए किया कि तुम ज़िन्दगानी करो। (फ़ा144) ज़िन्दगानी के वक़्ते महदूद तक (फ़ा145) दलाइले तौहीद को और ईमान लाओ। (फ़ा146) यानी अशिया का वुजूद उसके इरादा का ताबेअ है कि उसने इरादा फ़रमाया और शय मौजूद हुई न कोई कुलफ़त है न मशक़्क़त है न किसी सामान की हाजत यह उसके कमाले क़ुदरत का बयान है (फ़ा147) यानी क़ुरआन पाक में (फ़ा148) ईमान और दीने हक़ से (फ़ा149) यानी कुफ़्फ़ार जिन्होंने क़ुरआन शरीफ़ की तकज़ीब की।

(बक़िया सफ़हा 766 का) सराहतन (मिरक़ात) और उन तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने निशानी और मोअ.जेज़ात अता फ़रमाए और उनकी क़ौमों ने उनसे मुजादला किया और उन्हें झुठलाया इस पर उन हज़रात ने सब्र किया इस तज़किरा से मक़सूद नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसल्ली है कि जिस तरह के वाक़िआत क़ौम की तरफ़ से आपको पेश आ रहे हैं और जैसी ईज़ायें पहुंच रही हैं पहले अम्बिया के साथ भी यही हालात गुज़र चुके हैं उन्होंने सब्र किया आप भी सब्र फ़रमायें। (फ़ा166) कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल करने की बाबत। (फ़ा167) रसूलों के और उनकी तकज़ीब करने वालों के दर्मियान।

(बक़िया सफ़हा 768 का) हिकमत व हिदायत व इरशाद के लिए बतरीक़े तवाज़ोअ है और जो कलिमात तवाज़ोअ के लिए कहे जायें वह तवाज़ोअ करने वाले के उलूए मन्सब की दलील होते हैं छोटों का इन कलिमात को उसकी शान में कहना या उससे बराबरी ढूंढना तर्के अदब और गुस्ताख़ी होता है तो किसी उम्मती को रवा नहीं कि वह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से मुमासिल होने का दावा करे यह भी मलहूज़ रहना चाहिए कि आपकी बशरियत भी सबसे आला है हमारी बशरियत को उससे कुछ भी निस्बत नहीं। (फ़ा13) उस पर ईमान लाओ उसकी इताअत इख़्तियार करो उसकी राह से न फिरो। (फ़ा14) अपने फ़सादे अक़ीदा व अमल की। (फ़ा15) यह मना ज़कात से ख़ौफ़ दिलाने के लिए फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि ज़कात को मना करना ऐसा बुरा है कि क़ुरआने करीम में मुशरिकीन के औसाफ़ में ज़िक्र किया गया और इसकी वजह यह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है तो माल का राहे ख़ुदा में ख़र्च कर डालना उसके सबात व इस्तिक़लाल और सिद्क़ व इख़्लास नीयत की क़वी दलील है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से मुराद है तौहीद का मोअतक़िद होना और ला इला-ह इल्लल्लाहु कहना इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि जो तौहीद का इक़रार करके अपने नफ़्सों को शिर्क से बाज़ नहीं रखते और क़तादा ने इसके माना यह लिए हैं कि जो लोग ज़कात को वाजिब नहीं जानते इसके इलावा और भी अक़वाल हैं।

(बक़िया सफ़हा 770 का) हुज़ूर के दहाने मुबारक पर रख दिया और आपको रिश्ता व क़राबत के वास्ता से क़सम दिलाई और डर कर अपने घर भाग गया, जब क़ुरैश उसके मकान पर पहुंचे तो उसने तमाम वाक़िआ बयान करके कहा कि ख़ुदा की क़सम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जो कहते हैं न वह शेअर है न सेहर है न कहानत, मैं उन चीज़ों को ख़ूब जानता हूं मैंने उनका कलाम सुना जब उन्होंने आयत फ़इन् अअ्-रजू पढ़ी तो मैंने उनके दहाने मुबारक पर हाथ रख दिया और उन्हें क़सम दी कि बस करें और तुम जानते ही हो कि वह जो कुछ फ़रमाते हैं वही हो जाता है उनकी बात कभी झूठी नहीं होती मुझे अन्देशा हो गया कि कहीं तुम पर अज़ाब नाज़िल न होने लगे। (फ़ा37) क़ौमे आद के लोग बड़े क़वी और शह ज़ोर थे जब हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें अज़ाबे इलाही से डराया तो उन्होंने कहा कि हम अपनी ताक़त से अज़ाब को हटा सकते हैं। (फ़ा38) निहायत ठंडी बग़ैर बारिश के। (फ़ा39) और नेकी और बदी के तरीक़े उन पर ज़ाहिर फ़रमाए। (फ़ा40) और ईमान के मुक़ाबला में कुफ़्र इख़्तियार किया। (फ़ा41) और हौलनाक आवाज़ के अज़ाब से हलाक किये गए। (फ़ा42) यानी उनके शिर्क व तकज़ीबे पैग़म्बर और मआसी की। (फ़ा43) साअिक़ा के उस ज़िल्लत वाले अज़ाब से। (फ़ा44) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर। (फ़ा45) शिर्क और आमाले ख़बीसा से। (फ़ा46) यानी कुफ़्फ़ार अगले और पिछले (फ़ा47) फिर सब को दोज़ख़ में हांक दिया जाएगा। (फ़ा48) आज़ा बहुक्मे इलाही बोल उठेंगे और जो जो अमल किये थे बता देंगे।

(बक़िया सफ़हा 772 का) और निअ्मत व लज़्ज़त (फ़ा76) उसकी तौहीद व इबादत की तरफ़ कहा गया है कि उस दावत देने वाले से मुराद हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और यह भी कहा गया है कि वह मोमिन मुराद है जिसने नबी अलैहिस्सलाम की दावत को क़बूल किया और दूसरों को नेकी की दावत दी। (फ़ा77) **शाने नुज़ूलः** हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया मेरे नज़दीक यह आयत मुअज़्ज़िनों के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल यह भी है कि जो कोई किसी तरीक़ा पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ दावत दे वह इसमें दाख़िल है। दावते इलल्लाह के कई मर्तबे हैं अव्वल दावत अम्बिया

और साहबे सरवत व इक़्तेदार होने के बावजूद इस इबरतनाक तरीक़ा पर तबाह कर दी गईं यह क्यों हुआ। (फ़ा50) मोअ़जेज़ात दिखाते।

(बक़िया सफ़हा 760 का) कर दिया लेकिन हक़ीक़त में फ़िरऔन का यह कहना कि मुझे छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूं ख़ालिस धमकी ही थी उसको ख़ुद आपके नबीए बरहक़ होने का यक़ीन था और वह जानता था कि जो मोअ़जेज़ात आप लाये हैं वह आयाते इलाहिया हैं सेहर नहीं लेकिन यह समझता था कि अगर आपके क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उसको हलाक करने में जल्दी फ़रमायेंगे। इस से बेहतर यह है कि तूल बहस में ज़्यादा वक़्त गुज़ार दिया जाये अगर फ़िरऔन अपने दिल में आपको नबीए बरहक़ न समझता और यह न जानता कि रब्बानी ताईदें जो आपके साथ हैं उनका मुक़ाबला नामुमकिन है तो आपके क़त्ल में हरगिज़ तअम्मुल न करता क्योंकि वह बड़ा ख़ूँख़्वार सफ़्फ़ाक ज़ालिम बेदर्द था अदना सी बात में हज़ारहा ख़ून कर डालता था। (फ़ा57) जिसका अपने आपको रसूल बताता है ताकि उसका रब उसको हम से बचाए फ़िरऔन का यह मक़ूला इस पर शाहिद है कि उसके दिल में आपका और आपकी दुआओं का ख़ौफ़ था वह अपने दिल में आपसे डरता था ज़ाहिरी इज़्ज़त बनी रखने के लिए यह ज़ाहिर करता था कि वह क़ौम के मना करने के बाइस हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को क़त्ल नहीं करता। (फ़ा58) और तुम से फ़िरऔन परस्ती और बुत परस्ती छुड़ा दे। (फ़ा59) जिदाल व क़िताल करके (फ़ा60) फ़िरऔन की धमकियाँ सुन कर। (फ़ा61) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔन की सख़्तियों के जवाब में अपनी तरफ़ से कोई कलिमा तअ़ल्ली का न फ़रमाया बल्कि अल्लाह तआ़ला से पनाह चाही और उस पर भरोसा किया यही ख़ुदा शनासों का तरीक़ा है और इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने आप को हर एक बला से महफ़ूज़ रखा इन मुबारक जुमलों में कैसी नफ़ीस हिदायतें हैं यह फ़रमाना कि मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं और इसमें हिदायत है कि रब एक ही है यह भी हिदायत है कि जो उसकी पनाह में आये उस पर भरोसा करे और वह उसकी मदद फ़रमाये कोई उसको ज़रर नहीं पहुंचा सकता यह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करना शाने बन्दगी है और तुम्हारे रब फ़रमाने में यह भी हिदायत है कि अगर तुम उस पर भरोसा करो तो तुम्हें भी सआ़दत नसीब हो (फ़ा62) जिनसे उनका सिद्क़ ज़ाहिर हो गया यानी नबुव्वत साबित हो गई। (फ़ा63) मतलब यह है कि दो हाल से ख़ाली नहीं या यह सच्चे होंगे या झूठे अगर झूठे हों तो ऐसे मुआ़मला में झूठ बोल कर उसके वबाल से बच ही नहीं सकते हलाक हो जायेंगे और अगर सच्चे हैं तो जिस अ़ज़ाब का तुम्हें वादा देते हैं उस में से बिलफ़ेअ़ल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा कुछ पहुंचना इस लिए कहा कि आपका वादा अ़ज़ाबे दुनिया व आख़िरत दोनों को आ़म था उसमें से बिलफ़ेअ़ल अ़ज़ाब देना ही पेश आना था (फ़ा64) कि ख़ुदा पर झूठ बांधे। (फ़ा65) यानी मिस्र में तो ऐसा काम न करो कि अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आए अगर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आया। (फ़ा66) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को क़त्ल कर देना

(बक़िया सफ़हा 761 का) तरफ़। (फ़ा73) यानी उसके अ़ज़ाब से। (फ़ा74) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से क़बल। (फ़ा75) यह बे दलील बात तुम ने यानी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद गढ़ी ताकि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बाद आने वाले अम्बिया की तकज़ीब करो और उन्हें झुठलाओ तो तुम कुफ़्र पर क़ाइम रहे। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत में शक करते रहे और बाद वालों की नबुव्वत के इन्कार के लिए तुमने यह मन्सूबा बना लिया कि अब अल्लाह तआ़ला कोई रसूल ही न भेजेगा (फ़ा76) उन चीज़ों में जिन पर रौशन दलीलें शाहिद हैं (फ़ा77) उन्हें झुठला कर। (फ़ा78) कि इसमें हिदायत क़बूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता। (फ़ा79) बराहे जहल व फ़रेब अपने वज़ीर से। (फ़ा80) यानी मूसा मेरे सिवा और ख़ुदा बताने में और यह बात फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को फ़रेब देने के लिए कही क्योंकि वह जानता था कि मअ़बूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है और फ़िरऔन अपने आपको फ़रेब कारी के लिए मअ़बूद ठहराता है (इस वाक़िआ़ का बयान सूरह क़सस में गुज़र चुका)। (फ़ा81) यानी अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करना और उसके रसूल को झुठलाना। (फ़ा82) यानी शैतानों ने वसवसे डाल कर उसकी बुराईयां उसकी नज़र में भली कर दिखाईं।

(बक़िया सफ़हा 762 का) उसकी तरफ़ आया दरिन्दों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उसने फ़िरऔन से हाल बयान किया फ़िरऔन ने उसको सूली दे दी ताकि यह हाल मशहूर न हो। (फ़ा96) और उसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ होकर नजात पाई अगरचे वह फ़िरऔन की क़ौम का था। (फ़ा97) दुनिया में तो यह अ़ज़ाब कि वह फ़िरऔन के साथ ग़र्क़ हो गए और आख़िरत में दोज़ख़।

(बक़िया सफ़हा 763 का) करेंगे। (फ़ा107) हम काफ़िर के हक़ में दुआ़ न करेंगे और तुम्हारा दुआ़ करना भी बेकार है। (फ़ा108) उनको ग़लबा अ़ता फ़रमा कर और हुज्जते क़विय्या देकर और उनके दुश्मनों से इन्तेक़ाम लेकर। (फ़ा109) वह क़ियामत का दिन है कि मलाइका रसूलों की तबलीग़ और कुफ़्फ़ार की तकज़ीब की शहादत देंगे। (फ़ा110) और काफ़िरों का कोई उज़्र क़बूल न किया जाएगा। (फ़ा111) यानी जहन्नम (फ़ा112) यानी तौरेत व मोअ़जेज़ात (फ़ा113) यानी तौरेत का या उनके अम्बिया पर नाज़िल शुदा तमाम किताबों का। (फ़ा114) अपनी क़ौम की ईज़ा पर। (फ़ा115) वह आपकी मदद फ़रमाएगा आपके दीन को ग़ालिब करेगा आपके दुश्मनों को हलाक करेगा। कलबी ने कहा कि आयते सब्र आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गई।

(बक़िया सफ़हा 764 का) यहां कुफ़्फ़ार हैं और उनके इन्कारे बअ़्स का सबब उनकी बे इल्मी है कि वह आसमान व ज़मीन की पैदाइश पर क़ादिर होने से बअ़्स पर इस्तिदलाल नहीं करते तो वह मिस्ल अन्धे के हैं और जो मख़्लूक़ात के वुजूद से ख़ालिक़ की क़ुदरत पर इस्तिदलाल करते हैं वह मिस्ल बीना के हैं। (फ़ा124) यानी जाहिल व आ़लिम यकसाँ नहीं। (फ़ा125) यानी मोमिन सालेह और बदकार यह दोनों भी बराबर नहीं। (फ़ा126) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते। (फ़ा127) अल्लाह तआ़ला

अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम मोअ्जेज़ात और हुजज व बराहीन व सैफ़ के साथ यह मर्तबा अम्बिया ही के साथ ख़ास है। दोम दावत उलमा फ़क़त हुजज व बराहीन के साथ और उलमा कई तरह के हैं एक आलिमे बिल्लाह दूसरे आलिम बिस्सिफ़ातुल्लाह तीसरे आलिम ब-अहकामिल्लाह मर्तबए सोम दावत मुजाहिदीन है यह कुफ़्फ़ार को सैफ़ के साथ होती है यहां तक कि वह दीन में दाख़िल हों और ताअ़त क़बूल कर लें मर्तबए चहारुम मुअ़ज़्ज़िनीन की दावत नमाज़ के लिए अ़मले सालेह की दो क़िस्म है एक वह जो क़ल्ब से हो वह मअ्रेफ़ते इलाही है दूसरे जो आज़ा से हो वह तमाम ताआ़त हैं। (फ़ा78) और यह फ़क़त क़ौल न हो बल्कि दीने इस्लाम का दिल से मोअ्तक़िद होकर कहे कि सच्चा कहना यही है। (फ़ा79) मसलन गुस्सा को सब्र से और जहल को इल्म से और बदसुलूकी को अ़फ़्व से कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू माफ़ कर। (फ़ा80) यानी इस ख़सलत का नतीजा यह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह मुहब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूलः** कहा गया है कि यह आयत अबू सुफ़ियान के हक़ में नाज़िल हुई कि बावजूद उनकी शिद्दते अ़दावत के नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनके साथ सुलूक नेक किया उनकी साहबज़ादी को अपनी ज़ौजियत का शरफ़ अ़ता फ़रमाया उसका नतीजा यह हुआ कि वह सादिक़ुल मुहब्बत जाँनिसार हो गए। (फ़ा81) यानी बदियों को नेकियों से दफ़अ.करने की ख़सलत। (फ़ा82) यानी शैतान तुझ को बुराईयों पर उभारे और इस ख़सलते नेक से और इसके अलावा और नेकियों से मुनहरिफ़ करे। (फ़ा83) उसके शर से और अपनी नेकियों पर क़ायम रह शैतान की राह न इख़्तियार कर अल्लाह तआ़ला तेरी मदद फ़रमाएगा।

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْۤا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ﴿47﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿48﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿49﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْۤ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿50﴾ وَاِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿51﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿52﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿53﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿54﴾

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्सा–अति व मा तख़्रुजु मिन् स–मरातिम् मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त–ज़अु इल्ला बिअिल्मिही व यौ–म युनादीहिम् ऐ–न शु–रकाई क़ालू आज़न्ना –क मा मिन्ना मिन् शहीद(47)व ज़ल्–ल अन्हुम् मा कानू यद्अू–न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम् महीस(48)ला यस्–अमुल् इन्सानु मिन् दुआइल्ख़ैरि व इम्–मस्सहुश्–शर्रु फ़–यऊसुन् क़नूत(49) व ल–इन् अ–ज़क़्नाहु रह्म–तम् मिन्ना मिम् बअ्दि ज़र्रा–अ मस्सत्हु ल–यक़ूलन्–न हाज़ा ली व मा अज़ुन्नुस्सा –अ–त क़ाइ–म– तंव् व लइर्रुजिअ्तु इला रब्बी इन्–न ली अिन्दहू ललहुस्ना फ़–लनु–नब्बि–अन्नल् लज़ी–न क–फ़रू बिमा अमिलू व लनुज़ी–क़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़(50)व इज़ा अन्–अम्ना अ–लल्इन्सानि अअ्र–ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अरीज़(51)कुल् अ–रऐतुम् इन् का–न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्–म क–फ़र्तुम् बिहि मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु–व फ़ी शिक़ाक़िम् बअीद(52)सनुरीहिम् आयातिना फ़िल् आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य–त–बय्य–न लहुम् अन्नहुल् हक़्क़ु अ–व लम् यक्फ़ि बिरब्बि–क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद(53)अला इन्नहुम् फ़ी मिर्–यतिम् मिल्लिक़ाइ रब्बिहिम् अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम् मुहीत(54)

क़ियामत के इल्म का उसी पर हवाला है (फ़ा114) और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से नहीं निकलता और न किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उसके इल्म से (फ़ा115) और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा (फ़ा116) कहां हैं मेरे शरीक (फ़ा117) कहेंगे हम तुझ से कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं।(47) (फ़ा118) और गुम गया उनसे जिसे पहले पूजते थे (फ़ा119) और समझ लिए कि उन्हें कहीं (फ़ा120) भागने की जगह नहीं।(48) आदमी भलाई मांगने से नहीं उकताता (फ़ा121) और कोई बुराई पहुंचे (फ़ा122) तो ना उम्मीद आस टूटा।(49) (फ़ा123) और अगर हम उसे कुछ अपनी रहमत का मज़ा दें (फ़ा124) उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंची थी तो कहेगा यह तो मेरी है (फ़ा125) और मेरे गुमान में क़ियामत क़ाइम न होगी और अगर (फ़ा126) मैं रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिए उसके पास भी ख़ूबी ही है (फ़ा127) तो ज़रूर हम बता देंगे काफ़िरों को जो उन्होंने किया (फ़ा128) और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखायेंगे।(50) (फ़ा129) और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं तो मुंह फेर लेता है (फ़ा130) और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है (फ़ा131) और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है (फ़ा132) तो चौड़ी दुआ वाला है।(51) (फ़ा133) तुम फ़रमाओ (फ़ा134) भला बताओ अगर यह कुरआन अल्लाह के पास से है (फ़ा135) फिर तुम उसके मुन्किर हुए तो उससे बढ़ कर गुमराह कौन जो दूर की ज़िद में है।(52) (फ़ा136) अभी हम उन्हें दिखायेंगे अपनी आयतें दुनिया भर में (फ़ा137) और ख़ुद उनके आपे में (फ़ा138) यहां तक कि उन पर खुल जाए कि बेशक वह हक़ है (फ़ा139) क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं।(53) सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है (फ़ा140) सुनो वह हर चीज़ को मुहीत है।(54) (फ़ा141) (रुकूअ 1)

(फ़ा114) तो जिससे वक़्ते क़ियामत दरियाफ़्त किया जाए उसको लाज़िम है कि कहे कि अल्लाह तआला **(बक़िया सफ़हा 806 पर)**

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً

सूरतुश्शूरा

(मक्की है इसमें 53 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हामीम्(1)अ़ैन्–सीन्–क़ाफ़् (2)कज़ालि–क यूही इलै–क व इ–लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लि–क ल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(3)लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल्–अ़लिय्युल् अ़ज़ीम(4)तकादुस्–समावातु य–त–फ़त्तर्–न मिन् फ़ौक़िहिन्–न वल्मलाइ–कतु युसब्बिहू–न बि–ह़म्दि रब्बिहिम् व यस्तग्फ़िरू–न लिमन् फ़िल्अर्ज़ि अला इन्नल्ला–ह हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम(5)वल्लज़ी–नत्तख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया–अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अ़लैहिम् व मा अन्–त अ़लैहिम् बि–वकील(6)व कज़ालि–क औहैना इलै–क क़ुरआनन् अ़–रबिय्यल् लितुन्ज़ि–र उम्मल्क़ुरा व मन् हौ–लहा व तुन्ज़ि–र यौमल्–जम्अ़ि ला रै–ब फ़ीहि फ़रीक़ुन् फ़िल्जन्नति व फ़रीक़ुन् फ़िस्सअ़ीर(7)व लौ शाअल्लाहु ल–ज–अ़–लहुम् उम्मतंव्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा–मीम(1) ऐन स्वाद क़ाफ़(2) यूंही 'वही' फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़ (फ़ा2) और तुम से अगलों की तरफ़ (फ़ा3) अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला।(3) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही बुलन्द व अ़ज़मत वाला है।(4) क़रीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जायें (फ़ा4) और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी मांगते हैं (फ़ा5) सुन लो बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है।(5) और जिन्होंने अल्लाह के सिवा और वाली बना रखे हैं (फ़ा6) वह अल्लाह की निगाह में हैं (फ़ा7) और तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं।(6) (फ़ा8) और यूंही हम ने तुम्हारी तरफ़ अ़रबी क़ुरआन 'वही' भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उसके गिर्द हैं (फ़ा9) और तुम डराओ इकट्ठे होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं (फ़ा10) एक गरोह जन्नत में है और एक गरोह दोज़ख़ में।(7) और अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन

(फ़ा1) सूरह शूरा जम्हूर के नज़दीक मक्की है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के एक क़ौल में इसकी चार आयतें मदीना तय्येबा में नाज़िल हुईं जिनमें की पहली *क़ुल्–ला अस्–अलुकुम् अ़लैहि अज्रा* है इस सूरत में पांच रुकूअ़ तिरपन आयतें 860 कलिमे और 3588 हरफ़ हैं (फ़ा2) ग़ैबी ख़बरें (ख़ाज़िन) (फ़ा3) अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से वही फ़रमा चुका। (फ़ा4) अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत और उसके उलूए शान से। (फ़ा5) यानी ईमानदारों के लिए क्योंकि काफ़िर इस लाइक़ नहीं हैं कि मलाइका उनके लिए इस्तिग़फ़ार करें यह हो सकता है कि काफ़िरों के लिए यह दुआ़ करें कि उन्हें ईमान देकर उनकी मग़फ़िरत फ़रमा। (फ़ा6) यानी बुत जिनको वह पूजते और मअ़बूद समझते हैं। (फ़ा7) उनके आमाल अफ़आ़ल उसके सामने हैं वह उन्हें बदला देगा। (फ़ा8) तुमसे उनके अफ़आ़ल का मुआख़ज़ा न होगा। (फ़ा9) यानी तमाम आ़लम के लोग उन सबको। (फ़ा10) यानी रोज़े क़ियामत से डराओ जिसमें अल्लाह तआ़ला अव्वलीन व आख़िरीन और अहले आसमान व ज़मीन सब को जमा फ़रमाएगा और उस जमा के बाद फिर सब मुतफ़र्रिक़ होंगे।

وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ
وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝
فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ
نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا

वाहि़-द-तंव् व लाकिंय्युदख़िलु मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव् व ला नसीर(8)अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ फ़ल्लाहु हुवल्वलिय्यु व हु-व युह़्यिल्मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(9)व मख़्-त-लफ़्तुम् फ़ीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब(10)फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव् व मिनल् अन्आमि अज़्वाजन् यज़्-रउकुम् फ़ीहि लै-स कमिस्लिही शैउन् व हुवस्समीअुल् बसीर(11)लहू मक़ालीदुस्समा-वाति वल्अर्ज़ि यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(12)श-र-अ़ लकुम् मि-नद् दीनि मा वस़्सा बिही नूहंव् वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व ई़सा अन् अक़ीमुद्दी-न व ला त-त-फ़र्रकू फ़ीहि कबु-र अ़लल् मुश्रिकी-न मा

पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे (फ़ा11) और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार।(8) (फ़ा12) क्या अल्लाह के सिवा और वाली ठहरा लिए हैं (फ़ा13) तो अल्लाह ही वाली है और वह मुर्दे जिलाएगा और वह सब कुछ कर सकता है।(9) (फ़ा14) (रुकूअ़ 2) तुम जिस बात में (फ़ा15) इख़्तिलाफ़ करो तो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है (फ़ा16) यह है अल्लाह मेरा रब मैंने उस पर भरोसा किया और मैं उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाता हूं।(10) (फ़ा17) आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हारे लिए तुम्हीं में से (फ़ा8) जोड़े बनाए और नर व मादा चौपाए उससे (फ़ा19) तुम्हारी नस्ल फैलाता है उस जैसा कोई नहीं और वही सुनता देखता है।(11) उसी के लिए हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ (फ़ा20) रोज़ी वसीअ़ करता है जिसके लिए चाहे और तंग फ़रमाता है (फ़ा21) बेशक वह सब कुछ जानता है।(12) तुम्हारे लिए दीन की वह राह डाली जिसका हुक्म उसने नूह को दिया (फ़ा22) और जो हम ने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की (फ़ा23) और जिसका हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया (फ़ा24) कि दीन ठीक रखो (फ़ा25) और उसमें फूट न डालो (फ़ा26) मुश्रिकों पर बहुत ही गिराँ है वह (फ़ा27) जिसकी

(फ़ा11) उसको इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है। (फ़ा12) यानी काफ़िरों को कोई अ़ज़ाब से बचाने वाला नहीं। (फ़ा13) यानी कुफ़्फ़ार ने अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर बुतों को अपना वाली बना लिया है यह बातिल है। (फ़ा14) तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है (फ़ा15) दीन की बातों में से कुफ़्फ़ार के साथ (फ़ा16) रोज़े क़ियामत तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला फ़रमाएगा तुम उनसे कहो (फ़ा17) हर अमर में (फ़ा18) यानी तुम्हारी जिन्स में से। (फ़ा19) यानी उस तज़वीज से (ख़ाज़िन) (फ़ा20) मुराद यह है कि आसमान व ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां ख़्वाह मेंह के ख़ज़ाने हों या रिज़्क़ के। (फ़ा21) जिसके लिए चाहे वह मालिक है रिज़्क़ की कुन्जियां उसके दस्ते क़ुदरत में हैं। (फ़ा22) नूह अ़लैहिस्सलाम साहबे शरअ़ अम्बिया में सब से पहले नबी हैं। (फ़ा23) ऐ सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा24) माना यह हैं कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से आप तक ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जितने अम्बिया हुए सब के लिए हमने दीन की एक ही राह मुक़र्रर की जिसमें वह सब मुत्तफ़िक़ हैं वह राह यह है। (फ़ा25) मुराद दीन से इस्लाम है माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसकी इताअ़त और उस पर और उसके रसूलों पर और उसकी किताबों पर और रोज़े जज़ा पर और बाक़ी तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाना लाज़िम करो कि यह उमूर तमाम अम्बिया की उम्मतों के लिए यकसाँ लाज़िम हैं। (फ़ा26) हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने फ़रमाया कि जमाअ़त रहमत और फ़ुरक़त अ़ज़ाब है ख़ुलासा यह है कि उसूले दीन में तमाम मुसलमान ख़्वाह वह किसी अ़हद या किसी उम्मत के हों यकसाँ हैं उनमें **(बक़िया सफ़हा 806 पर)**

تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ إِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ إِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا إِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِيْنَ أُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ
وَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۚ اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ لَنَآ أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾ اللّٰهُ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۚ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ

तदऊहुम् इलैहि अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब(13)व मा त–फ़र्रकू इल्ला मिम् बअ्दि मा जा–अ हुमुल्–अ़िल्मु बग्यम् बै–नहुम् व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर्रब्बि–क इला अ–जलिम् मुसम्मल् लक़ुज़ि–य बै–नहुम् व इन्नल्लज़ी–न ऊरिसुल् किता–ब मिम् बअ्दिहिम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब(14)फ़लिज़ालि–क फ़द्अु वस्तक़िम् कमा उमिर्–त व ला तत्तबिअ् अह्वा–अहुम् व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज़–लल्लाहु मिन् किताबिन् उमिर्तु लि–अअ्दि–ल बै–नकुम् अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम् लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् ला हुज्ज–त बै–नना व बै–नकुम् अल्लाहु यज्मअु बै–नना व इलैहिल् मसीर(15)वल्लज़ी–न युहाज्जू–न फ़िल्लाहि मिम् बअ्दि मस्तुजी–ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि–ज़तुन् अि़न्–द रब्बिहिम् व अ़लैहिम् ग़–ज़बुंव् व लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद(16)अल्लाहुल् लज़ी अन्ज़–लल् किता–ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा–न व मा युद्री–क ल–अ़ल्लस्साअ–त

तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और अल्लाह अपने क़रीब के लिए चुन लेता है जिसे चाहे (फ़ा28) और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ़ लाए।(13) (फ़ा29) और उन्होंने फूट न डाली मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चुका था (फ़ा30) आपस के ह़सद से (फ़ा31) और अगर तुम्हारे रब की एक बात गुज़र न चुकी होती (फ़ा32) एक मुक़र्रर मीआ़द तक (फ़ा33) तो कब का उनमें फ़ैसला कर दिया होता (फ़ा34) और बेशक वह जो उनके बाद किताब के वारिस हुए (फ़ा35) वह उससे एक धोखा डालने वाले शक में हैं।(14) (फ़ा36) तो उसी लिए बुलाओ (फ़ा37) और साबित क़दम रहो (फ़ा38) जैसा तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब अल्लाह ने उतारी (फ़ा39) और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं (फ़ा40) अल्लाह हमारा और तुम्हारा सब का रब है (फ़ा41) हमारे लिए हमारा अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारा किया (फ़ा42) कोई हुज्जत नहीं हम में और तुम में (फ़ा43) अल्लाह हम सब को जमा करेगा (फ़ा44) और उसी की तरफ़ फिरना है।(15) और वह जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बाद इसके कि मुसलमान उसकी दावत क़बूल कर चुके हैं (फ़ा45) उनकी दलील महज़ बे सिबात है उनके रब के पास और उन पर ग़ज़ब है (फ़ा46) और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।(16) (फ़ा47) अल्लाह है जिसने हक़ के साथ किताब उतारी (फ़ा48) और इन्साफ़ की तराज़ू (फ़ा49) और तुम क्या जानो शायद क़ियामत

(फ़ा28) अपने बन्दों में से उसी को तौफ़ीक़ देता है। (फ़ा29) और उसकी इताअ़त क़बूल करे। (फ़ा30) यानी अहले किताब ने अपने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद जो दीन में इख़्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौहीद इख़्तियार की कोई काफ़िर हो गया वह इससे पहले जान चुके थे कि इस तरह इख़्तिलाफ़ करना और फ़िरक़ा फ़िरक़ा हो जाना गुमराही है लेकिन बावजूद इसके उन्होंने यह सब कुछ किया। (फ़ा31) और रियासत व नाहक़ की हुकूमत के शौक़ में। (फ़ा32) अ़ज़ाब के मुअख़्ख़र फ़रमाने की। (फ़ा33) यानी रोज़े क़ियामत तक। (फ़ा34) काफ़िरों पर दुनिया में अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा कर। (फ़ा35) यानी यहूद व नसारा। (फ़ा36) यानी अपनी किताब पर मज़बूत ईमान नहीं रखते या यह माना हैं कि वह क़ुरआन की तरफ़ से या सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से शक में पड़े हैं। (फ़ा37) यानी उन कुफ़्फ़ार के इस इख़्तिलाफ़ व परागन्दगी की वजह से उन्हें तौहीद और मिल्लते हनीफ़िया पर मुत्तफ़िक़ होने की दावत दो। (फ़ा38) दीन पर और दीन की दावत देने पर (फ़ा39) यानी अल्लाह तआ़ला की तमाम किताबों पर क्योंकि मुतफ़र्रिक़ीन बाज़ पर ईमान लाते थे और बाज़ से कुफ़्र करते थे। (फ़ा40) तमाम चीज़ों में और जमीअ़ अहवाल में और हर फ़ैसला में। (फ़ा41) **(बक़िया सफ़हा 806 पर)**

قَرِيبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ
لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَٰلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ

क़रीब(17)यस्तअ्जिलु बि–हल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिहा वल्लज़ी–न आ–मनू मुश्फ़िक़ू–न मिन्हा व यअ्–लमू–न अन्न–हल् ह़क़्क़ु अला इन्नल्लज़ी–न युमारू–न फ़िस्सा–अ़ति लफ़ी ज़लालिम् बअ़ीद(18)अल्लाहु लतीफ़ुम् बिअ़िबादिही यरज़ुक़ु मंय्यशाउ व हुवल्क़विय्युल् अ़ज़ीज़(19)मन् का–न युरीदु ह़र्–सल् आख़ि–रति नज़िद् लहू फ़ी ह़र्सिही व मन् का–न युरीदु ह़र्सद्–दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल् आख़ि–रति मिन् नसीब(20)अम् लहुम् शु–रकाउ श–रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्ज़म् बिहिल्लाहु व लौला कलि–मतुल् फ़स्लि लक़ुज़ि–य बै–नहुम् व इन्नज़्ज़ालिमी–न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(21)त–रज़्ज़ालिमी–न मुश्फ़िक़ी–न मिम्मा क–सबू व हु–व वाक़िअुम् बिहिम् वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल् जन्नाति लहुम् मा यशाऊ–न अ़िन्–द रब्बिहिम् ज़ालि–क हुवल् फ़ज़्लुल् कबीर(22)ज़ालि–कल् लज़ी यु–बश्शिरुल्लाहु अ़िबा–दहुल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सालिहाति

क़रीब ही हो।(17) (फ़ा50) उसकी जल्दी मचा रहे हैं वह जो उस पर ईमान नहीं रखते (फ़ा51) और जिन्हें उस पर ईमान है वह उससे डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वह हक़ है सुनते हो बेशक जो क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं।(18) अल्लाह अपने बन्दों पर लुत्फ़ फ़रमाता है (फ़ा52) जिसे चाहे रोज़ी देता है (फ़ा53) और वही क़ुव्वत व इज़्ज़त वाला है।(19) (रुकूअ् 3) जो आख़िरत की खेती चाहे (फ़ा54) हम उसके लिए उसकी खेती बढ़ायें (फ़ा55) और जो दुनिया की खेती चाहे (फ़ा56) हम उसे उसमें से कुछ देंगे (फ़ा57) और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।(20) (फ़ा58) या उनके लिए कुछ शरीक हैं (फ़ा59) जिन्होंने उनके लिए (फ़ा60) वह दीन निकाल दिया है (फ़ा61) कि अल्लाह ने उसकी इजाज़त न दी (फ़ा62) और अगर एक फ़ैसला का वादा न होता (फ़ा63) तो यहीं उनमें फ़ैसला कर दिया जाता (फ़ा64) और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(21) (फ़ा65) तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाईयों से सहमे हुए होंगे (फ़ा66) और वह उन पर पड़ कर रहेंगी (फ़ा67) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वह जन्नत की फुलवारियों में हैं उनके लिए उनके रब के पास है जो चाहें यही बड़ा फ़ज़्ल है।(22) यह है वह जिसकी ख़ुशख़बरी देता है अल्लाह अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

(फ़ा50) शाने नुज़ूलः नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुशरिकीन ने बतरीक़े तकज़ीब कहा कि क़ियामत कब होगी इसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा51) और यह गुमान करते हैं कि क़ियामत आने वाली ही नहीं इसी लिए बतरीक़े तमस्खुर जल्दी मचाते हैं (फ़ा52) बेशुमार एहसान करता है नेकों पर भी और बदों पर भी हत्ता कि बन्दे गुनाहों में मश्गूल रहते हैं और वह उन्हें भूक से हलाक नहीं करता। (फ़ा53) और फ़राख़ीए ऐश अ़ता फ़रमाता है मोमिन को भी और काफ़िर को भी हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत। हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मेरे बाज़े मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवंगरी उनके क़ुव्वत व ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें फ़क़ीर मुहताज कर दूं तो उनके अ़क़ीदे फ़ासिद हो जायें और बाज़े बन्दे ऐसे हैं कि तंगी व मुहताजी उनके क़ुव्वते ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दूं तो उनके अ़क़ीदे ख़राब हो जायें। (फ़ा54) यानी जिसको अपने आमाल से नफ़ए आख़िरत मक़सूद हो। (फ़ा55) उसको नेकियों की तौफ़ीक़ देकर और उसके लिए ख़ैरात व ताअ़ात की राहें सहल करके और उसकी नेकियों का सवाब बढ़ा कर। (फ़ा56) यानी जिसका अ़मल महज़ दुनिया हासिल करने के लिए हो और वह आख़िरत पर ईमान न रखता हो (मदारिक)। (फ़ा57) यानी दुनिया में जितना उसके लिए मुक़द्दर किया है। (फ़ा58) क्योंकि उसने आख़िरत के लिए अ़मल किया ही नहीं। (फ़ा59) माना यह हैं कि क्या कुफ़्फ़ारे मक्का उस दीन **(बक़िया सफ़हा 806 पर)**

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۭ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۭ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَاۗبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰى

कुल् ला अस्-अलुकुम् अलैहि अज्-रन् इल्लल् म-वद्-द-त फ़िल्कुरबा व मंय्यक्तरिफ़् ह-स-न-तन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्नन् इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर(23)अम् यकूलू-नफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन् फ़-इंय्य-शइल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-क व यम्हुल्लाहुल् बाति-ल व युहिक़्कुल् हक़्-क़ बि-कलिमातिही इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(24)व हुवल् लज़ी यक़्बलुत् तौ-ब-त अन् अ़िबादिही व यअ़्फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ़्लमु मा तफ़्-अ़लून(25)व यस्तजीबुल् लज़ी-न आ-मनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद(26)व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्यु-नज़्ज़िलु बि-क़्-दरिम् मा यशाउ इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम् बसीर(27)व हुवल्लज़ी यु-नज़्ज़िलुल् ग़ै-स मिम् बअ़्दि मा क़्-नतू व यन्शुरु रह़्म-तहू व हुवल् वलिय्युल् हमीद(28)व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन् व हु-व अ़ला

तुम फ़रमाओ मैं उस (फ़ा68) पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता (फ़ा69) मगर क़राबत की मुहब्बत (फ़ा70) और जो नेक काम करे (फ़ा71) हम उसके लिए उसमें और ख़ूबी बढ़ायें बेशक अल्लाह बख़्शने वाला क़दर फ़रमाने वाला है।(23) या (फ़ा72) यह कहते हैं कि उन्होंने अल्लाह पर झूठ बांध लिया (फ़ा73) और अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत व हिफ़ाज़त की मुहर फ़रमा दे (फ़ा74) और मिटाता है बातिल को (फ़ा75) और हक़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से (फ़ा76) बेशक वह दिलों की बातें जानता है।(24) और वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है (फ़ा77) और जानता है जो कुछ तुम करते हो।(25) और दुआ क़बूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और इनाम देता है (फ़ा78) और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।(26) और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फेलाते (फ़ा79) लेकिन वह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे बेशक वह अपने बन्दों से ख़बरदार है।(27) (फ़ा80) उन्हें देखता है और वही है कि मेंह उतारता है उनके नाउम्मीद होने पर और अपनी रहमत फैलाता है (फ़ा81) और वही काम बनाने वाला है सब ख़ूबियों सराहा।(28) और उसकी निशानियों से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले उनमें फैलाए और वह उनके इकट्ठा करने पर (फ़ा82)

(फ़ा68) तबलीग़े रिसालत और इरशाद व हिदायत (फ़ा69) और तमाम अम्बिया का यही तरीक़ा है **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मरवी है कि जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़िम्मा मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्होंने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुक़ूक़ व एहसानात याद करके हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिए बहुत सा माल जमा किया और उसको लेकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई हमने गुमराही से नजात पाई हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़्यादा हैं इस लिए हम यह माल ख़ुद्दामे आस्ताना की ख़िदमत में नज़र के लिए लाये हैं क़बूल फ़रमा कर हमारी इज़्ज़त अफ़ज़ाई की जाये इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुज़ूर ने वह अमवाल वापस फ़रमा दिये। (फ़ा70) तुम पर लाज़िम है क्योंकि मुसलमानों के दर्मियान मवद्दत व मुहब्बत वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया *अलमुअ़मिनू-न वलमुअ़मिनातु बअ़्जुहुम् औलियाउ बअ़्ज़िन्* और हदीस शरीफ़ में है कि मुसलमान मिस्ल एक इमारत के हैं जिसका हर एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को **(बक़िया सफ़हा 807 पर)**

جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِنْ يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَحِيصٍ ۝ فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝
وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ

जम्अ़िहिम् इज़ा यशाउ क़दीर(29)व मा असा–बकुम् मिम् मुसी–बतिन् फ़बिमा क–स–बत् ऐदीकुम् व यअ़्फ़ू अ़न् कसीर(30)व मा अन्तुम् बिमुअ़्जिज़ी–न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव् व ला नसीर(31)व मिन् आयातिहिल् जवारि फ़िल्बह़्रि कल्अअ़्लाम(32) इंय्य–शअ् युस्किनिर्री–ह फ़–यज़्लल्–न रवाकि–द अ़ला ज़ह्रिही इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर(33)औ यूबिक़्हुन्–न बिमा क–सबू व यअ़्फ़ु अ़न् कसीर(34)व यअ़्–ल–मल्लज़ी–न युजादिलू–न फ़ी आयातिना मा लहुम् मिम् मह़ीस़(35)फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़–मताअुल् ह़यातिद्दुन्या व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव् व अब्क़ा लिल्लज़ी–न आ–मनू व अ़ला रब्बिहिम् य–त–वक्कलून(36)वल्लज़ी–न यज्तनिबू–न कबाइ–रल् इस्मि वल्फ़वाह़ि–श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून(37)वल्लज़ी–नस्–तजाबू लि–रब्बिहिम् व अक़ामुस़्स़ला–त व अम्रुहुम् शूरा बै–नहुम् व मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून(38)वल्लज़ी–न इज़ा असा–बहुमुल् बग़्यु हुम् यन्तसिरून(39)व जज़ाउ सय्यि–अतिन्

जब चाहे क़ादिर है।(29) (रुकूअ़ 4) और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह उसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (फ़ा83) और बहुत कुछ तो माफ़ फ़रमा देता है।(30) और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते (फ़ा84) और न अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार।(31) (फ़ा85) और उसकी निशानियों से हैं (फ़ा86) दरिया में चलने वालियां जैसे पहाड़ियां।(32) वह चाहे तो हवा थमा दे (फ़ा87) कि उसकी पीठ पर (फ़ा88) ठहरी रह जायें (फ़ा89) बेशक उसमें ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े साबिर शाकिर को।(33) (फ़ा90) या उन्हें तबाह कर दे (फ़ा91) लोगों के गुनाहों के सबब (फ़ा92) और बहुत कुछ माफ़ फ़रमा दे।(34) (फ़ा93) और जान जायें वह जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें (फ़ा94) कहीं भागने की जगह नहीं।(35) तुम्हें जो कुछ मिला है (फ़ा95) वह जीती दुनिया में बरतने का है (फ़ा96) और वह जो अल्लाह के पास है (फ़ा97) बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला उनके लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं।(36) (फ़ा98) और वह जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाईयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए माफ़ कर देते हैं।(37) और वह जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना (फ़ा99) और नमाज़ क़ाइम रखी (फ़ा100) और उनका काम उनके आपस के मश्वरे से है (फ़ा101) और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं।(38) और वह कि जब उन्हें बग़ावत पहुंचे बदला लेते हैं।(39) (फ़ा102) और बुराई का बदला

(फ़ा83) यह ख़िताब मोमिनीन मुकल्लिफ़ीन से है जिनसे गुनाह सरज़द होते हैं मुराद यह है कि दुनिया में जो तकलीफ़ें और मुसीबतें मोमिनीन को पहुंचती हैं अक्सर उनका सबब उनके गुनाह होते हैं उन तकलीफ़ों को अल्लाह तआ़ला उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तकलीफ़ उसके रफ़ए दर्जात के लिए होती है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में वारिद है अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम जो गुनाहों से पाक हैं और छोटे बच्चे जो मुकल्लफ़ नहीं हैं इस आयत के मुख़ातिब नहीं। **फ़ायदाः** बाज़े गुमराह फ़िरक़े जो तनासुख़ के क़ाइल हैं इस आयत से इस्तिदलाल करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वह उनके गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उनसे कोई गुनाह हुआ नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले और कोई ज़िन्दगी हो जिसमें गुनाह हुए हों यह बात बातिल है क्योंकि बच्चे इस कलाम के मुख़ातिब ही नहीं जैसा कि बिलउमूम **(बक़िया सफ़हा 807 पर)**

سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَلَمَنِ انتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ ﴿٤١﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ

عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾ وَمَن يُضْلِلِ

اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن وَلِيٍّ مِّن بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّن سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَاشِعِينَ مِنَ

الذُّلِّ يَنظُرُونَ مِن طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي

عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن

सय्यि-अतुम् मिस्लुहा फ़-मन् अफ़ा व अस्-ल-ह फ़-अज्रुहू अ-लल्लाहि इन्नहू ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (40)व ल-मनिन्-त-स-र बअ्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा अलैहिम् मिन् सबील(41)इन्न-मस्सबीलु अ-लल्लज़ी-न यज़्लिमू-नन्ना-स व यब्गू-न फ़िल् अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि उलाइ-क लहुम् अज़ाबुन् अलीम(42)व ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल् उमूर(43)व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिंव्वलिय्यिम् मिम् बअ्दिही व त-रज़्ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल् अज़ा-ब यकूलू-न हल् इला म-रद्दिम् मिन् सबील(44)व तराहुम् युअ्-रज़ू-न अ़लैहा ख़ाशिअी-न मि-नज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन् व क़ालल् लज़ी-न आ-मनू इन्नल् ख़ासिरी-नल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्ली-हिम् यौमल् क़िया-मति अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम् मुक़ीम(45)व मा का-न लहुम् मिन् औलिया-अ यन्सुरू-नहुम् मिन् दूनिल्लाहि व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबील(46)इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन्

उसी की बराबर बुराई है (फ़ा103) तो जिस ने माफ किया और काम संवारा तो उसका अज्र अल्लाह पर है बेशक वह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।(40) (फ़ा104) और बेशक जिस ने अपनी मज़लूमी पर बदला लिया उन पर कुछ मुआख़ज़ा की राह नहीं।(41) मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो (फ़ा105) लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक सरकशी फैलाते हैं (फ़ा106) उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(42) और बेशक जिसने सब्र किया (फ़ा107) और बख़्श दिया तो यह ज़रूर हिम्मत के काम हैं।(43) (रुकूअ़ 5) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई रफ़ीक़ नहीं अल्लाह के मुक़ाबिल (फ़ा108) और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अ़ज़ाब देखेंगे (फ़ा109) कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है।(44) (फ़ा110) और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं (फ़ा111) और ईमान वाले कहेंगे बेशक हार में वह हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़ियामत के दिन (फ़ा112) सुनते हो बेशक ज़ालिम (फ़ा113) हमेशा के अ़ज़ाब में हैं।(45) और उनके कोई दोस्त न हुए कि अल्लाह के मुक़ाबिल उनकी मदद करते (फ़ा114) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसके लिए कहीं रास्ता नहीं।(46) (फ़ा115) अपने रब का हुक्म मानो (फ़ा116) उस दिन के

(फ़ा103) माना यह हैं कि बदला क़दरे जनायत होना चाहिये इसमें ज़्यादती न हो और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि सूरतन मुशाबेह होने के सबब से कहा जाता है और जिसको वह बदला दिया जाये उसे बुरा मालूम होता है और बुराई के साथ ताबीर करने में यह भी इशारा है कि अगरचे बदला लेना जायज़ है लेकिन अ़फ़्व इससे बेहतर है। (फ़ा104) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वह मुराद हैं जो ज़ुल्म की इब्तेदा करें। (फ़ा105) इब्तेदाअन (फ़ा106) तकब्बुर और मआ़सी का इरतेकाब करके (फ़ा107) ज़ुल्म व ईज़ा पर और बदला न लिया। (फ़ा108) कि उसे अ़ज़ाब से बचा सके। (फ़ा109) रोज़े क़ियामत। (फ़ा110) यानी दुनिया में ताकि वहां जाकर ईमान ले आयें। (फ़ा111) यानी ज़िल्लत व ख़ौफ़ के बाइस आग को दुज़्दीदा निगाहों से देखेंगे जैसे कोई गर्दन ज़दनी अपने क़त्ल के वक़्त तैग़ ज़न की तलवार को दुज़्दीदा निगाह से देखता है। (फ़ा112) जानों का हारना तो यह है कि वह कुफ़्र इख़्तियार करके जहन्नम के दाइमी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए और घर वालों का हारना यह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूरें उनके लिए नामज़द थीं उनसे महरूम हो गए। (फ़ा113) यानी काफ़िर (फ़ा114) और उसके अ़ज़ाब से बचा सकते। (फ़ा115) ख़ैर का न वह दुनिया में हक़ तक पहुंच सके न आख़िरत में जन्नत तक। (फ़ा116) और सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदारी करके तौहीद व इबादते इलाही इख़्तियार करो।

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ
اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ
اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝

क़ब्लि अंय्यअति–य यौमुल् ला म–रद–द लहू मिनल्लाहि मा लकुम् मिम् मल्जइंय्यौ–मइज़िंव् व मा लकुम् मिन् नकीर(47)फ़–इन् अअ्–रजू. फ़मा अर्सल्ना–क अलैहिम् हफ़ीज़न् इन् अलै–क इल्लल् बलागु व इन्ना इज़ा अ–ज़क्नल् इन्सा–न मिन्ना रह्म–तन् फ़रि–ह बिहा व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् फ़–इन्नल्इन्सा–न कफ़ूर(48)लिल्लाहि मुल्कुस् समावाति वल्अर्ज़ि यख़्लुक़ु मा यशाउ य– हबु लि–मंय्यशाउ इनासंव् व य–हबु लिमंय्यशाउज़्ज़ुकूर(49)औ यु–ज़व्विजुहुम् ज़ुक्रानंव् व इनासन् व यज्अलु मंय्यशाउ अक़ीमन् इन्नहू अलीमुन् क़दीर(50) व मा का–न लि–ब–शरिन् अंय्युकल्लि–महुल्लाहु इल्ला वह्यन् औ मिंव्वराइ हिजाबिन् औ युर्सि–ल रसूलन् फ़यूहि–य बि–इज़्निही मा यशाउ इन्नहू अलिय्युन् हकीम(51)व कज़ालि–क औहैना इलै–क रूहम् मिन् अम्रिना मा कुन्–त तद्री मल्किताबु व लल् ईमानु व लाकिन् ज–अल्लाहु नूरन् नह्दी बिही मन् नशाउ मिन् अिबादिना व इन्न–क ल–तह्दी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(52) सिरातिल्लाहिल् लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि अला इलल्लाहि तसीरुल् उमूर(53)

आने से पहले जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं (फ़ा117) उस दिन तुम्हें कोई पनाह न होगी और न तुम्हें इन्कार करते बने।(47) (फ़ा118) तो अगर वह मुंह फेरें (फ़ा119) तो हम ने तुम्हें उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा (फ़ा120) तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना (फ़ा121) और जब हम आदमी को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा देते हैं (फ़ा122) उस पर खुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे (फ़ा123) बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा (फ़ा124) तो इन्सान बड़ा नाशुक्रा है।(48) (फ़ा125) अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत (फ़ा126) पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए (फ़ा127) और जिसे चाहे बेटे दे।(49) (फ़ा128) या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे (फ़ा129) बेशक वह इल्म व क़ुदरत वाला है।(50) और किसी आदमी को नहीं पहुंचता कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर 'वह्‌ी' के तौर पर (फ़ा130) या यूं कि वह बशर पर्दए अज़मत के उधर हो (फ़ा131) या कोई फ़रिश्ता भेजे कि वह उसके हुक्म से 'वह्‌ी' करे जो वह चाहे (फ़ा132) बेशक वह बुलन्दी व हिकमत वाला है।(51) और यूंही हम ने तुम्हें 'वह्‌ी' भेजी (फ़ा133) एक जांफ़िज़ा चीज़ (फ़ा134) अपने हुक्म से इससे पहले न तुम किताब जानते थे न अहकामे शरह़ की तफ़सील हां हमने उसे (फ़ा135) नूर किया जिससे हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर सीधी राह बताते हो।(52) (फ़ा136) अल्लाह की राह (फ़ा137) कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं।(53) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा117) इससे मुराद या मौत का दिन है या क़ियामत का। (फ़ा118) अपने गुनाहों का यानी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं न अ़ज़ाब से बच सकते हो न अपने आमाले क़बीहा का इन्कार कर सकते हो जो तुम्हारे आमाल नामों में दर्ज हैं। (फ़ा119) ईमान लाने और इताअ़त करने से। (फ़ा120) कि तुम पर उनके आमाल की हिफ़ाज़त लाज़िम हो। (फ़ा121) और वह तुमने अदा कर दिया (व का–न हाज़ा क़ब्लिल् अम्र बिल्जिहाद) (फ़ा122) ख़्वाह वह दौलत व सरवत हो या **(बक़िया सफ़हा 807 पर)**

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى
مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ

सूरतुज़्ज़ुख़्रुफ़ि

(मक्की है इसमें 89 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामीम्(1)वल्किताबिल् मुबीन(2)इन्ना ज-अ़ल्नाहु कुरआनन् अ-रबिय्यल् ल-अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून(3)व इन्नहू फ़ी उम्मिल्किताबि लदैना ल-अ़लिय्युन् हकीम(4)अ-फ़-नज़्रिबु अ़न्कुमुज़्ज़िक्-र सफ़्हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम् मुस्रिफ़ीन(5)व कम् अर्सल्ना मिन् नबिय्यिन् फ़िल् अव्वलीन(6)व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(7)फ़-अह्लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत्शंव व मज़ा म-सलुल् अव्वलीन(8)व लइन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स् समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल् अ़ज़ीज़ुल् अ़लीम(9)अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल् अर्-ज़ मह्दंव् व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल् ल-अ़ल्लकुम् तह्-तदून(10)वल्लज़ी नज़्ज़-ल मि-नस्समाइ माअम् बि-क़-दरिन् फ़-अन्शर्ना बिही बल्द- तम् मैतन् कज़ालि-क तुख़्-रजून(11)वल्लज़ी ख़-ल-क़ल् अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा-मीम(1) रौशन किताब की क़सम।(2) (फ़ा2) हमने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा कि तुम समझो।(3) (फ़ा3) और बेशक वह असल किताब में (फ़ा4) हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिकमत वाला है।(4) तो क्या हम तुम से ज़िक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो।(5) (फ़ा5) और हम ने कितने ही ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे।(6) और उनके पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उसकी हंसी ही बनाया किये।(7) (फ़ा6) तो हमने वह हलाक कर दिये जो उनसे भी पकड़ में सख़्त थे (फ़ा7) और अगलों का हाल गुज़र चुका है।(8) और अगर तुम उनसे पूछो (फ़ा8) कि आसमान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले ने।(9) (फ़ा9) वह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिए इसमें रास्ते किये कि तुम राह पाओ।(10) (फ़ा10) और वह जिसने आसमान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से (फ़ा11) तो हमने उससे एक मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया यूं ही तुम निकाले जाओगे।(11) (फ़ा12) और जिस ने सब जोड़े बनाए (फ़ा13) और तुम्हारे लिए कश्तियों

(फ़ा1) सूरह ज़ुख़रुफ़ मक्की है इस सूरत में सात रुकूअ़ नवासी आयतें और 3400 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी क़ुरआन पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह कर दीं और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरियात को बयान फ़रमा दिया (फ़ा3) उसके मआ़नी व अहकाम को। (फ़ा4) असल किताब से मुराद लौहे महफ़ूज़ है क़ुरआने करीम इस में सब्त है। (फ़ा5) यानी तुम्हारे कुफ़्र में हद से बढ़ने की वजह से क्या हम तुम्हें मुहमल छोड़ दें और तुम्हारी तरफ़ से वहीए क़ुरआन का रुख़ फेर दें और तुम्हें अमूर व नही कुछ न करें माना यह हैं कि हम ऐसा न करेंगे। हज़रत क़तादा ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम अगर यह क़ुरआन पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जबकि उस उम्मत के पहले लोगों ने इससे एअ़राज़ किया था तो वह सब हलाक हो जाते लेकिन उसने अपनी रहमत व रकम से उस क़ुरआन का नुज़ूल जारी रखा। (फ़ा6) जैसा आप की क़ौम के लोग करते हैं कुफ़्फ़ार का क़दीम से यह मामूल चला आया है। (फ़ा7) और हर तरह का ज़ोर व क़ुव्वत रखते **(बक़िया सफ़हा 808 पर)**

الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ

مُقْرِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّ اَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿۱۶﴾

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿۱۸﴾ وَجَعَلُوا

الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْــَٔلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ

اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿۲۱﴾ بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ مَاۤ

फुल्कि वल्अन्आमि मा तर्–कबून(12)लि–तस्तवू अ़ला ज़ुहूरिही सुम्–म तज़्कुरू निअ़्म–त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तकूलू सुब्हा–नल् लज़ी सख़्ख़–र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन (13)व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून(14)व ज–अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्अन् इन्नल् इन्सा –न ल–कफ़ रुम् मुबीन(15)अमित्त–ख़–ज़ मिम्मा यख़्लुक़ु बनातिंव् व अस्फ़ाकुम् बिल्बनीन(16) व इज़ा बुश्शि–र अ–ह़दुहुम् बिमा ज़–र–ब लिर्रह़्मानि म–स़–लन् ज़ल्–ल वज्हुहू मुस्–वद्दंव् व हु–व कज़ीम(17)अ–व मंय्यु–नश्शउ फ़िल्–ह़िल्यति व हु–व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (18)व ज–अ़लुल् मलाइ–क–तल् लज़ी–न हुम् अ़िबादुर्रह़्मानि इनासन् अ–शहिदू ख़ल्क़हुम् स–तुक्तबु शहा–दतुहुम् व युस्–अलून(19)व क़ालू लौ शाअर्रह़्मानु मा अ़–बद्नाहुम् मा लहुम् बिज़ालि–क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून(20)अम् आतैनाहुम् किताबम् मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून(21)बल् क़ालू इन्ना व–जद्ना आबा–अना अ़ला उम्मतिंव् व इन्ना अ़ला आस़ारिहिम् मुह्–तदून(22)व कज़ालि–क मा

और चौपायों से सवारियाँ बनाईं।(12) कि तुम उनकी पीठों पर ठीक बैठो (फ़ा14) फिर अपने रब की निअ़मत याद करो जब उस पर ठीक बैठ लो और यूं कहो पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे बस में कर दिया और यह हमारे बूते की न थी।(13) और बेशक हमें अपने रब की तरफ़ पलटना है।(14) (फ़ा15) और उसके लिए उसके बन्दों में से टुकड़ा ठहराया (फ़ा16) बेशक आदमी (फ़ा17) खुला नाशुक्रा है।(15) (फ़ा18) (रुकूअ़ 7) क्या उसने अपने लिए अपनी मख़्लूक़ में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया।(16) (फ़ा19) और जब उनमें किसी को ख़ुशख़बरी दी जाए उस चीज़ की (फ़ा20) जिसका वस्फ़ रहमान के लिए बता चुका है (फ़ा21) तो दिन भर उसका मुंह काला रहे और ग़म खाया करे।(17) (फ़ा22) और क्या (फ़ा23) वह जो गहने में परवान चढ़े (फ़ा24) और बहस में साफ़ बात न करे।(18) (फ़ा25) और उन्होंने फ़रिश्तों को कि रहमान के बन्दे हैं औ़रतें ठहराया (फ़ा26) क्या उनके बनाते वक़्त यह हाज़िर थे (फ़ा27) अब लिख ली जाएगी उनकी गवाही(19) (फ़ा28) और उनसे जवाब तलब हो (फ़ा29) और बोले अगर रहमान चाहता हम उन्हें न पूजते (फ़ा30) उन्हें उसकी हक़ीक़त कुछ मालूम नहीं (फ़ा31) यूंही अटकलें दौड़ाते हैं।(20) (फ़ा32) या इससे क़ब्ल हमने उन्हे कोई किताब दी है जिसे वह थामे हुए हैं।(21) (फ़ा33) बल्कि बोले हमने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर पर चल रहे हैं।(22) (फ़ा34) और ऐसे ही हमने

(फ़ा14) ख़ुश्की और तरी के सफ़र में। (फ़ा15) आख़िरकार मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो अपने नाक़ा पर सवार होते वक़्त पहले अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ते फिर सुबहानल्लाह और अल्लाहु अक्बर यह सब तीन तीन बार फिर यह आयत पढ़ते सुब्हा-नल्लज़ी सख़्ख़-र-लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन° व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून और इसके बाद और दुआयें पढ़ते और जब हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कश्ती में सवार होते तो फ़रमाते बिस्मिल्लाहि मज्रीहा व मुर्साहा इन्न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम° (फ़ा16) यानी कुफ़्फ़ार ने इस इक़रार के बावजूद कि अल्लाह तआ़ला आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है यह सितम किया कि मलाइका को अल्लाह तआ़ला की बेटियां बताया और औलाद साहबे औलाद का जुज़ होती है ज़ालिमों ने अल्लाह तबारक व तआ़ला के लिए जुज़्व क़रार दिया कैसा अ़ज़ीम जुर्म है। (फ़ा17) जो ऐसी बातों का क़ाइल है। (फ़ा18) उसका **(बक़िया सफ़हा 808 पर)**

اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ

अरसल्ना मिन् कब्लि–क फी कर्–यतिम् मिन् नज़ीरिन् इल्ला का–ल मुत्–रफूहा इन्ना व–जदना आबा–अना अला उम्मतिंव् व इन्ना अला आसारिहिम् मुक्तदून(23)का–ल अ–व लौ जिअ्तुकुम् बि–अह्दा मिम्मा व–जत्तुम् अलैहि आबा–अकुम् कालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (24)फन्त–कम्ना मिन्हुम् फन्जुर् कै–फ का–न आकि–बतुल् मु–कज़्ज़िबीन(25)व इज् का–ल इब्राहीमु लि–अबीहि व कौमिही इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्बुदून(26)इल्लल् लज़ी फ–त–रनी फइन्नहू स–यह्दीन(27)व ज– अ–लहा कलि–म–तम् बाकिय–तन् फी अकिबिही ल–अल्लहुम् यरजिअू न(28)बल् मत्तअ्तु हाउला–इ व आबा–अहुम् हत्ता जा–अ हुमुल् हक्कु व रसूलुम् मुबीन(29)व लम्मा जा–अ हुमुल्–हक्कु कालू हाज़ा सिह्रुंव् व इन्ना बिही काफ़िरून(30)व कालू लौला नुज़्ज़ि–ल हाज़लकुर्आनु अला रजुलिम् मिनल् कर्–यतैनि अज़ीम(31)अहुम् यक्सिमू–न रह्म–त रब्बि–क नह्नु क–सम्ना बै–नहुम् मअी–श–तहुम् फ़िल् हयातिद्दुन्या व–र फअ्ना बअ्–ज़हुम् फौ–क बअ्ज़िन् द–रजातिल् लि–यत्–तख़ि–ज बअ्ज़ुहुम्

तुम से पहले जब किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों ने यही कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर के पीछे हैं।(23) (फ़ा35) नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वह (फ़ा36) लाऊँ जो सीधी राह हो उससे (फ़ा37) जिस पर तुम्हारे बाप दादा थे बोले जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते।(24) (फ़ा38) तो हम ने उनसे बदला लिया (फ़ा39) तो देखो झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।(25) (रुकूअ् 8) और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मअ्बूदों से।(26) सिवा उसके जिसने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वह बहुत जल्द मुझे राह देगा।(27) और उसे (फ़ा40) अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा (फ़ा41) कि कहीं वह बाज़ आयें।(28) (फ़ा42) बल्कि मैंने उन्हें (फ़ा43) और उनके बाप दादा को दुनिया के फ़ाइदे दिये (फ़ा44) यहां तक कि उनके पास हक़ (फ़ा45) और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया।(29) (फ़ा46) और जब उनके पास हक़ आया बोले यह जादू है और हम इसके मुन्किर हैं।(30) और बोले क्यों न उतारा गया यह कुरआन उन दो शहरों (फ़ा47) के किसी बड़े आदमी पर।(31) (फ़ा48) क्या तुम्हारे रब की रहमत वह बांटते हैं (फ़ा49) हमने उनमें उनकी ज़ीस्त का सामान दुनिया की ज़िन्दगी में बांटा(फ़ा50)और उनमें एक दूसरे पर दर्जों बुलन्दी दी(फ़ा51)कि उनमें एक दूसरे की

(फ़ा35) इससे मालूम हुआ कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना कुफ़्फ़ार का क़दीमी मर्ज़ है और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी की पैरवी करने के लिए यह देख लेना ज़रूरी है कि वह सीधी राह पर हो चुनान्चे (फ़ा36) दीने हक़ (फ़ा37) यानी उस दीन से (फ़ा38) अगरचे तुम्हारा दीन हक़ व सवाब हो मगर हम अपने बा दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहे वह कैसा ही हो इस पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है (फ़ा39) यानी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुठलाने वालों से। (फ़ा40) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने इस तौहीदी कलिमा को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मअ्बूदों से सिवाए उसके जिसने मुझको पैदा किया (फ़ा41) तो आपकी औलाद में मुवह्हिद और तौहीद के दाई हमेशा रहेंगे (फ़ा42) शिर्क से और यह दीने बरहक़ क़बूल करें यहां हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाने में तम्बीह है कि ऐ अहले मक्का अगर तुम्हें अपने बाप दादा का इत्तेबाअ् करना ही है तो तुम्हारे आबा में जो सब से बेहतर हैं हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उनका इत्तेबाअ़ करो और शिर्क छोड़ दो और यह भी देखो कि उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम को राहे रास्त पर नहीं पाया तो उनसे बेज़ारी का एलान फ़रमा दिया इससे मालूम हुआ कि जो **(बक़िया सफ़हा 808 पर)**

بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَآ أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا

يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾ وَمَن

يَعْشُ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي

وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾ وَلَن يَنفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ

وَمَن كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾ فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾ أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ

बअ़्ज़न् सुख़्रिय्यन् व रह़्मतु रब्बि–क ख़ैरुम् मिम्मा यज्मअ़ू न(32)व लौला अंय्यकू–नन्नासु उम्मतंव् वाहि़–द–तल् ल–ज–अ़ल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह़्मानि लिबुयूति–हिम् सुकुफ़म् मिन् फ़िज़्ज़तिंव् व मआ़रि–ज अ़लैहा यज़्–हरून(33)व लिबुयूतिहिम् अब्वाबंव् व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन (34)व ज़ुख़रु–फ़न् व इन् कुल्लु ज़ालि–क लम्मा मताअ़ुल् ह़यातिद्दुन्या वल् आख़ि–रतु अ़िन्–द रब्बि–क लिल्मुत्तक़ीन(35)व मंय्यअ़्शु अ़न् ज़िक्रिर्–रह़्मानि नु–क़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु–व लहू क़रीन(36)व इन्नहुम् ल–यसुद्दू–नहुम् अ़निस्सबीलि व यह़्सबू–न अन्नहुम् मुह्–तदून(37) ह़त्ता इज़ा जा–अना क़ा–ल यालै–त बैनी व बै–न–क बुअ़्दल् मश्रिक़ैनि फ़बिअ्सल् क़रीन(38) व लंय्यन्फ़–अ़कुमुल् यौ–म इज़् ज़–लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्अ़ज़ाबि मुश्तरिकून(39) अ–फ़–अन्–त तुस्मिअ़ुस् सुम्–म औ तह्दिल् अ़ुम्–य व मन् का–न फ़ी ज़लालिम् मुबीन(40)फ़इम्मा नज़् ह–बन्–न बि–क फ़इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून(41)औ नुरि–यन्न–कल् लज़ी व अ़द्नाहुम् फ़इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदिरून(42)फ़स्तम्सिक् बिल्लज़ी ऊहि़–य

हंसी बनाए (फ़ा52) और तुम्हारे रब की रहमत (फ़ा53) उनकी जमा जत्था से बेहतर।(32) (फ़ा54) और अगर यह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जायें (फ़ा55) तो हम ज़रूर रहमान के मुन्किरों के लिए चाँदी की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते।(33) और उनके घरों के लिए चाँदी के दरवाज़े और चाँदी के तख़्त जिन पर तकिया लगाते।(34) और तरह तरह की आराइश (फ़ा56) और यह जो कुछ है जीती दुनिया ही का असबाब है और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़गारों के लिए है।(35) (फ़ा57) (रुकूअ़ 9) और जिसे रतोंद आए रहमान के ज़िक्र से (फ़ा58) हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे है।(36) और बेशक वह शयातीन उनको (फ़ा59) राह से रोकते हैं और (फ़ा60) समझते यह हैं कि वह राह पर हैं।(37) यहां तक कि जब (फ़ा61) काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाए किसी तरह मुझ में तुझ में पूरब पच्छिम का फ़ासला होता तू क्या ही बुरा साथी है।(38) और हरगिज़ तुम्हारा उस (फ़ा62) से भला न होगा आज जब कि (फ़ा63) तुमने ज़ुल्म किया कि तुम सब अ़ज़ाब में शरीक हो।(39) तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे (फ़ा64) या अन्धों को राह दिखाओगे (फ़ा65) और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं।(40) (फ़ा66) तो अगर हम तुम्हें ले जायें (फ़ा67) तो उनसे हम ज़रूर बदला लेंगे।(41) (फ़ा68) या तुम्हें दिखा दें (फ़ा69) जिसका उन्हें हमने वादा दिया है तो हम उन पर बड़ी क़ुदरत वाले हैं।(42) तो मज़बूत थामे रहो उसे जो तुम्हारी तरफ़ 'वही'

(फ़ा52) यानी मालदार फ़क़ीर की हंसी करे यह क़ुरतबी की तफ़सीर के मुताबिक़ है और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने सुख़रिय्यन् हंसी बनाने के माना में नहीं लिया है बल्कि आमाल व अश्ग़ाल के मुसख़्ख़र बनाने के माना में लिया है इस सूरत में माना यह होंगे कि हमने दौलत व माल में लोगों को मुतफ़ावुत किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रीआ ख़िदमत ले और दुनिया का निज़ाम मज़बूत हो ग़रीब हो ज़रीए मआ़श हाथ आये और मालदार को काम करने वाले बहम पहुंचें तो उस पर कौन एतेराज़ कर सकता है कि फ़लां को क्यों ग़नी किया और फ़लां को फ़क़ीर और जब दुनियवी उमूर में कोई शख़्स दम नहीं मार सकता तो नबुव्वत जैसे रुतबए आ़ली में किसी को क्या ताबे सुख़न व हक़्क़े एतेराज़ उसकी मर्ज़ी जिसको चाहे सरफ़राज़ फ़रमाये। (फ़ा53) यानी जन्नत (फ़ा54) यानी उस माल से बेहतर है जिसको दुनिया में कुफ़्फ़ार जमा करके रखते हैं। (फ़ा55) यानी अगर इसका लिहाज़ न होता कि काफ़िर को फ़राख़ी ऐश में देख कर सब लोग काफ़िर हो जायेंगे। **(बक़िया सफ़्हा 809 पर)**

إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾ وَسْئَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ
آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيهِم
مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ ۚ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا
عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿٥٠﴾ وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا
خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ

इलै–क इन्न–क अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(43)व इन्नहू ल–ज़िक्रुल् ल–क व लिक़ौमि–क व सौ–फ़ तुस्–अलून(44)वस्–अल् मन् अरसल्ना मिन् क़ब्लि–क मिर्रुसुलिना अ–ज–अ़ल्ना मिन् दूनिर्रह्मानि आलि–ह–तंय्–युअ्–बदून(45)व ल–क़द् अरसल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िरऔ–न व म–ल– इही फ़क़ा–ल इन्नी रसूलु रब्बिल् आ–लमीन(46)फ़–लम्मा जा–अहुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज्–हकून(47)व मा नुरीहिम् मिन् आ–यतिन् इल्ला हि–य अक्बरु मिन् उख़्तिहा व अ–ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि ल–अ़ल्लहुम् यरजिअू़न(48)व क़ालू या अय्युहस् साहिरुदअु लना रब्ब–क बिमा अ़हि–द अ़िन्द–क इन्नना लमुह्–तदून(49)फ़–लम्मा क–शफ़्ना अ़न्हुमुल् अ़ज़ा–ब इज़ा हुम् यन्कुसून(50)व नादा फ़िरऔनु फ़ी क़ौमिही क़ा–ल याक़ौमि अलै–स ली मुल्कु मिस्–र व हाज़िहिल् अन्हारु तज्री मिन् तह्ती अ–फ़ला तुब्सिरून(51)अम् अना ख़ैरुम् मिन् हाज़ल्लज़ी हु–व महीनुंव् व ला यकादु युबीन(52)फ़लौला उल्कि–य अ़लैहि अस्वि–रतुम् मिन् ज–हबिन् औ जा–अ म–अहुल् मलाइ–कतु मुक़्तरिनीन(53)फ़स्तख़फ़्–फ़ क़ौ–महू फ़–अता़अूहु

की गई (फ़ा70) बेशक तुम सीधी राह पर हो।(43) और बेशक वह (फ़ा71) शरफ़ है तुम्हारे लिए (फ़ा72) और तुम्हारी क़ौम के लिए (फ़ा73) और अन्क़रीब तुम से पूछा जाएगा।(44) (फ़ा74) और उनसे पूछो जो हमने तुम से पहले रसूल भेजे क्या हमने रहमान के सिवा कुछ और खुदा ठहराए जिनको पूजा हो।(45) (फ़ा75) (रुकूअ़ 10) और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो उसने फ़रमाया बेशक मैं उसका रसूल हूं जो सारे जहान का मालिक है।(46) फिर जब वह उनके पास हमारी निशनियाँ लाया (फ़ा76) जभी वह उन पर हंसने लगे।(47) (फ़ा77) और हम उन्हें जो निशानी दिखाते वह पहले से बड़ी होती (फ़ा78) और हम ने उन्हें मुसीबत में गिरिफ़्तार किया कि वह बाज़ आयें।(48) (फ़ा79) और बोले (फ़ा80) कि ऐ जादूगर (फ़ा81) हमारे लिए अपने रब से दुआ़ कर इस अ़हद के सबब जो उसका तेरे पास है(49) (फ़ा82) बेशक हम हिदायत पर आयेंगे। (फ़ा83) फिर जब हमने उनसे वह मुसीबत टाल दी जभी वह अ़हद तोड़ गए।(50) (फ़ा84) और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम में (फ़ा85) पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिए मिस्र की सल्तनत नहीं और यह नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं (फ़ा86) तो क्या तुम देखते नहीं।(51) (फ़ा87) या मैं बेहतर हूं (फ़ा88) उससे कि ज़लील है (फ़ा89) और बात साफ़ करता मालूम नहीं होता।(52) (फ़ा90) तो उस पर क्यों न डाले गए सोने के कंगन (फ़ा91) या उसके साथ फ़रिश्ते आते कि उसके पास रहते।(53) (फ़ा92) फिर उसने अपनी क़ौम को कम अ़क़्ल कर लिया (फ़ा93) तो वह उसके

(फ़ा70) हमारी किताब क़ुरआन मजीद (फ़ा71) क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा72) कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें नबुव्वत व हिकमत अ़ता फ़रमाई (फ़ा73) यानी उम्मत के लिए कि उन्हें इससे हिदायत फ़रमाई। (फ़ा74) रोज़े क़ियामत कि तुमने क़ुरआन का क्या हक़ अदा किया इसकी क्या ताज़ीम की उस निअ़मत का क्या शुक्र बजा लाए। (फ़ा75) रसूलों से सवाल करने के माना यह हैं कि उनके अदियान व मिलल को तलाश करो कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती रवा रखी गई है और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने उसके माना यह बयान किये हैं कि मोमिनीन अहले किताब से दरियाफ़्त करो कि क्या कभी किसी नबी ने ग़ैरुल्लाह की इबादत की इजाज़त दी ताकि मुशरिकीन पर साबित हो जाये कि मख़्लूक़ परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई यह भी एक रिवायत है कि शबे मेअ्राज सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बैतुल मुक़द्दस में तमाम अम्बिया **(बक़िया सफ़हा 809 पर)**

إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنكُم مَّلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِن بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ

इन्नहुम् कानू कौमन् फ़ासिक़ीन(54)फ़-लम्मा आ-सफ़ू-नन्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्मईन(55)फ़-ज-अल्नाहुम् स-ल-फ़ंव् व म-स-लल् लिल्आख़िरीन(56)व लम्मा ज़ुरि-बब्नु मर्य-म म-स-लन् इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून(57)व क़ालू अ-आलि-हतुना ख़ैरुन् अम् हु-व मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-द-लन् बल् हुम् क़ौमुन् ख़सिमून(58)इन् हु-व इल्ला अब्दुन् अन्-अम्ना अलैहि व ज-अल्नाहु म-स-लल् लि-बनी इस्राईल(59)व लौ नशाउ ल-ज-अल्ना मिन्कुम् मलाइ-क-तन् फ़िल्अर्ज़ि यख़्लुफ़ून(60)व इन्नहू ल-इल्मुल् लिस्सा-अति फ़ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिऊनि हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम(61)व ला यसुद्दन्नकुमुश् शैतानु इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् मुबीन(62)व लम्मा जा-अ ईसा बिल्बय्यिनाति क़ा-ल क़द् जिअ्तुकुम् बिल्हिक्मति व लिउ-बय्यि-न लकुम् बअ्-ज़ल् लज़ी तख़्-तलिफ़ू-न फ़ीहि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन(63)इन्नल्ला-ह हु-व रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम(64)फ़ख़्त-ल-फ़ल् अह्ज़ाबु मिम् बैनिहिम् फ़वैलुल् लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अज़ाबि यौमिन् अलीम(65)हल्

कहने पर चले (फ़ा94) बेशक वह बे-हुक्म लोग थे।(54) फिर जब उन्होंने वह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब उन पर आया हमने उन से बदला लिया तो हमने उन सब को डुबो दिया।(55) उन्हें हमने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिए।(56) (फ़ा95) (रुकूअ़ 11) और जब इब्ने मरयम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम उससे हंसने लगते हैं।(57) (फ़ा96) और कहते हैं क्या हमारे मअ़बूद बेहतर हैं या वह (फ़ा97) उन्होंने तुम से यह न कही मगर नाहक़ झगड़े को (फ़ा98) बल्कि वह हैं झगड़ालू लोग।(58) (फ़ा99) वह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हमने एहसान फ़रमाया (फ़ा100) और उसे हमने बनी इसराईल के लिए अ़जीब नमूना बनाया।(59) (फ़ा101) और अगर हम चाहते तो (फ़ा102) ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़रिश्ते बसाते।(60) (फ़ा103) और बेशक ईसा क़ियामत की ख़बर है (फ़ा104) तो हरगिज़ क़ियामत में शक न करना और मेरे पैरो होना (फ़ा105) यह सीधी राह है।(61) और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे (फ़ा106) बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(62) और जब ईसा रौशन निशानियां (फ़ा107) लाया उसने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिकमत लेकर आया (फ़ा108) और इस लिए मैं तुम से बयान कर दूं बाज़ वह बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो (फ़ा109) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(63) बेशक अल्लाह मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो यह सीधी राह है।(64) (फ़ा110) फिर वह गरोह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए (फ़ा111) तो ज़ालिमों की ख़राबी है (फ़ा112) एक दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब से।(65) (फ़ा113) काहे

(फ़ा94) और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब करने लगे (फ़ा95) कि बाद वाले उनके हाल से नसीहत व इबरत हासिल करें (फ़ा96) **शाने नुज़ूलः** जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरैश के सामने यह आयत व मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह-सबु ज-हन्न-म पढ़ी जिसके माना यह हैं कि ऐ मुशरिकीन तुम और जो चीज़ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है यह सुन कर मुशरिकीन को बहुत गुस्सा आया और इब्ने ज़बअ़री कहने लगा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क्या यह ख़ास हमारे और हमारे मअ़बूदों ही के लिए है या हर उम्मत व गरोह के लिए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे और तुम्हारे मअ़बूदों के लिए भी है और सब उम्मतों के लिए भी इस पर उसने कहा कि आपके नज़दीक ईसा बिन मरयम नबी हैं और आप उनकी और उनकी वालिदा की तारीफ़ **(बक़िया सफ़हा 810 पर)**

يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىِٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ
تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا
تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾
اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ
عَلَيْنَا رَبُّكَ ۗ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ

यन्जुरू–न इल्लस्सा–अ–त अन् तअ्ति–यहुम् बग़्त–तंव् व हुम् ला यश्अुरून(66)अल्–अख़िल्लाउ यौ–मइजिम् बअ्ज़ुहुम् लि–बअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् इल्लल् मुत्तक़ीन(67)याअिबादि ला ख़ौफुन् अ़लैकुमुल् यौ–म व ला अन्तुम् तह्–ज़नून(68)अल्लज़ी–न आ–मनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (69)उद्ख़ुलुल् जन्न–त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह्–बरून(70)युताफ़ु अ़लैहिम् बिसिहाफ़िम् मिन् ज़–हबिंव् व अक्वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल् अन्फ़ुसु व त–लज़्ज़ुल् अअ्युनु व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून(71)व तिल्कल् जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(72)लकुम् फ़ीहा फ़ाकि–हतुन् कसी–रतुम् मिन्हा तअ्कुलून(73)इन्नल् मुज्रिमी–न फ़ी अ़ज़ाबि ज–हन्न–म ख़ालिदून (74)ला यु–फ़त्तरु अ़न्हुम् व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून(75)व मा ज़–लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़् ज़ालिमीन(76)व नादौ या मालिकु लि–यक़्ज़ि अ़लैना रब्बु–क क़ा–ल इन्नकुम् माकिसून(77) ल–क़द् जिअ्नाकुम् बिल्हक़्क़ि व ला किन्–न अक्स–रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून(78)अम् अब्–रमू अम्रन् फ़–इन्ना मुब्रिमून(79)अम् यह्–सबू–न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम्

के इन्तिज़ार में हैं मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो।(66) गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार।(67) (फ़ा114) (रुकूअ् 12) उनसे फ़रमाया जाएगा ऐ मेरे बन्दों आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो।(68) वह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और मुसलमान थे।(69) दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारी ख़ातिरें होतीं।(70) (फ़ा115) उन पर दौरा होगा सोने के प्यालों और जामों का और उसमें जो जी चाहे और जिससे आँख को लज़्ज़त पहुंचे (फ़ा116) और तुम उसमें हमेशा रहोगे।(71) और यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस किये गए अपने आमाल से।(72) तुम्हारे लिए इसमें बहुत मेवे हैं कि उनमें से खाओ।(73) (फ़ा117) बेशक मुजरिम (फ़ा118) जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं।(74) वह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वह उसमें बे आस रहेंगे।(75) (फ़ा119) और हमने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वह ख़ुद ही ज़ालिम थे।(76) (फ़ा120) और वह पुकारेंगे (फ़ा121) ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके (फ़ा122) वह फ़रमाएगा (फ़ा123) तुम्हें तो ठहरना है।(77) (फ़ा124) बेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए (फ़ा125) मगर तुम में अक्सर को हक़ नागवार है।(78) क्या उन्होंने (फ़ा126) अपने ख़्याल में कोई काम पक्का कर लिया है।(79) (फ़ा127) तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं (फ़ा128) क्या इस घमंड में हैं कि हम उनकी आहिस्ता बात

(फ़ा114) यानी दीनी दोस्ती और वह मुहब्बत जो अल्लाह तआ़ला के लिए है बाक़ी रहेगी हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इस आयत की तफ़सीर में मरवी है आपने फ़रमाया दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफ़िर मोमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ करता है या रब फलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फरमांबरदारी का और नेकी करने का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना है या रब उसको मेरे बाद गुमराह न कर और उसको मेरी हिदायत दे जैसे हिदायत फ़रमाई और उसका इकराम कर जैसा मेरा इकराम फ़रमाया जब उसका मोमिन दोस्त मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला दोनों को जमा करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो हर एक कहता है कि यह अच्छा भाई है अच्छा दोस्त है अच्छा रफ़ीक़ है और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ करता है या रब फलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमांबरदारी से मना करता था और **(बक़िया सफ़हा 810 पर)**

وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ۝ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَاۗءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝ وَتَبٰرَكَ
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا
مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۭ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

व नज्वाहुम् बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून(80)कुल् इन् का–न लिर्रह्मानि व–लदुन् फ़–अना अव्वलुल् आबिदीन(81)सुब्हा–न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल् अर्शि अम्मा यसिफ़ून(82) फ़–ज़रहुम् यख़ूज़ू व यल्–अबू हत्ता युलाकू यौ–महुमुल् लज़ी यू–अदून(83)व हुवल् लज़ी फ़िस्समाइ इलाहुंव् व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन् व हुवल् हकीमुल् अलीम(84)व तबा–र–कल् लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा व अिन्दहू अिल्मुस्सा–अति व इलैहि तुरजअून(85)व ला यम्लिकुल् लज़ी–न यदअू–न मिन् दूनिहिश्श–फ़ाअ–त इल्ला मन् शहि–द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्–लमून(86)व लइन् स–अल्तहुम् मन् ख़–ल–क़हुम् ल–यकूलुन्नल्लाहु फ़–अन्ना युअ्–फ़कून(87)व क़ीलिही या रब्बि इन्–न हाउलाइ क़ौमुल् ला युअमिनून(88)फ़स्–फ़ह् अन्हुम् व कुल् सलामुन् फ़सौ–फ़ यअ्–लमून(89)

और उनकी मश्वरत नहीं सुनते हां क्यों नहीं (फ़ा129) और हमारे फ़रिश्ते उनके पास लिख रहे हैं।(80) तुम फ़रमाओ ब- फ़र्ज़े मुहाल रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता।(81) (फ़ा130) पाकी है आसमानों और ज़मीन के रब को अर्श के रब को उन बातों से जो यह बनाते हैं।(82) (फ़ा131) तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें (फ़ा132) यहां तक कि अपने उस दिन को पायें जिस का उन से वादा है।(83) (फ़ा133) और वही आसमान वालों का ख़ुदा और ज़मीन वालों का ख़ुदा (फ़ा134) और वही हिकमत व इल्म वाला है।(84) और बड़ी बरकत वाला है वह कि उसी के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दर्मियान है और उसी के पास है क़ियामत का इल्म और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना।(85) और जिनको यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते हां शफ़ाअत का इख़्तियार उन्हें है जो हक़ की गवाही दें (फ़ा135) और इल्म रखें।(86) (फ़ा136) और अगर तुम उनसे पूछो (फ़ा137) उन्हें किसने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने (फ़ा138) तो कहां औंधे जाते हैं।(87) (फ़ा139) मुझे रसूल (फ़ा140) के उस कहने की क़सम (फ़ा141) कि ऐ मेरे रब यह लोग ईमान नहीं लाते।(88) तो उनसे दरगुज़र करो (फ़ा142) और फ़रमाओ बस सलाम है (फ़ा143) कि आगे जान जायेंगे।(89) (फ़ा144) (रुकूअ़ 13)

(फ़ा129) हम ज़रूर सुनते हैं और पोशीदा ज़ाहिर हर बात जानते हैं हम से कुछ नहीं छुप सकता। (फ़ा130) लेकिन उसके बच्चा नहीं और उसके लिए औलाद मुहाल है यह नफ़ी वलद में मुबालग़ा है **शाने नुज़ूलः** नज़र बिन हारिस ने कहा था कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई तो नज़र कहने लगा देखते हो क़ुरआन में मेरी तस्दीक़ आ गई वलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि यह फ़रमाया गया कि रहमान के वलद नहीं है और मैं अहले मक्का में से पहला मुवह्हिद हूं उससे वलद की नफ़ी करने वाला इसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला की तन्ज़ीया का बयान है। (फ़ा131) और उसके लिए औलाद क़रार देते हैं (फ़ा132) यानी जिस लग़्व व बातिल में हैं उसी में पड़े रहें (फ़ा133) जिसमें अ़ज़ाब किये जायेंगे और वह रोज़े क़ियामत है (फ़ा134) यानी वही मअ़बूद है आसमान व ज़मीन में उसी की इबादत की जाती है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। (फ़ा135) यानी तौहीदे इलाही की। (फ़ा136) इसका कि अल्लाह उनका रब है ऐसे मक़बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे (फ़ा137) यानी मुशरिकीन से (फ़ा138) और अल्लाह तआ़ला के ख़ालिक़ आलिम होने का इक़रार करेंगे। (फ़ा139) और बावजूद इस इक़रार के उसकी तौहीद व इबादत से फिरते हैं। (फ़ा140) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा141) अल्लाह तबारक व तआ़ला का हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़ौल मुबारक की क़सम फ़रमाना हुज़ूर के इकराम और हुज़ूर की दुआ़ व इल्तेजा के एहतेराम का इज़्हार है। (फ़ा142) और उन्हें छोड़ दो। (फ़ा143) यह सलाम मुतारकत है इसके माना यह हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अमन में रहना चाहते हैं (व कान हाज़ा क़ब्लुल अम्र बिलजिहाद) (फ़ा144) अपना अंजाम कार।

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۚ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ

सूरतुद्दुख़ानि

(मक्की है इसमें सूरह में 59 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामीम(1)वलकिताबिल्मुबीन(2)इन्ना अन्ज़ल्लाहु फ़ी लै–लतिम् मुबा–र–कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (3)फ़ीहा युफ़रकु कुल्लु अम्रिन् हकीम(4)अम्रम् मिन् अ़िन्दिना इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन(5)रह्‌म–तम् मिर्रब्बि–क इन्नहू हुवस्समीअुल् अ़लीम(6)रब्बिस्समावाति वलअर्ज़ि व मा बै–नहुमा इन् कुन्तुम् मूक़िनीन(7)ला इला–ह इल्ला हु–व युह्‌यी व युमीतु रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल् अव्वलीन(8)बल् हुम् फ़ी शक्किंय्यल्–अ़बून(9)फ़रतक़िब् यौ–म तअ्तिस्समाउ बिदुख़ानिम् मुबीनिंय्(10)यग़्शन्ना–स हाज़ा अ़ज़ाबुन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा-मीम(1) क़सम उस रौशन किताब की।(2) (फ़ा2) बेशक हमने उसे बरकत वाली रात में उतारा (फ़ा3) बेशक हम डर सुनाने वाले हैं।(3) (फ़ा4) उस में बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम।(4) (फ़ा5) हमारे पास के हुक्म से बेशक हम भेजने वाले हैं।(5) (फ़ा6) तुम्हारे रब की तरफ़ से रहमत बेशक वही सुनता जानता है।(6) वह जो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो।(7) (फ़ा7) उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं वह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब।(8) बल्कि वह शक में पड़े खेल रहे हैं।(9) (फ़ा8) तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आसमान एक ज़ाहिर धुआँ लाएगा।(10) कि लोगों को ढांप लेगा (फ़ा9) यह है दर्दनाक

(फ़ा1) सूरए दुख़ान मक्की है इसमें तीन रुकूअ़ और सत्तावन या उनसठ आयतें और 346 कलिमे और 1431 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी क़ुरआन पाक की जो हलाल व हराम वग़ैरह अहकाम का बयान फ़रमाने वाला है। (फ़ा3) उस रात से या शबे क़दर मुराद है या शबे बरात इस शब में क़ुरआन पाक बितमामिही लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ उतारा गया फिर वहां से हज़रत जिबरील बीस साल के अरसा में थोड़ा थोड़ा लेकर नाज़िल हुए इस शब को शबे मुबारका इस लिए फ़रमाया गया कि इस में क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ और हमेशा इस शब में ख़ैर व बरकत नाज़िल होती है दुआ़यें क़बूल की जाती हैं। (फ़ा4) अपने अ़ज़ाब का (फ़ा5) साल भर के अरज़ाक़ व आजाल व अहकाम (फ़ा6) अपने रसूल ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनसे पहले अम्बिया को (फ़ा7) कि वह आसमान व ज़मीन का रब है तो यक़ीन करो कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके रसूल हैं (फ़ा8) उनका इक़रार इल्म व यक़ीन से नहीं बल्कि उनकी बात में हंसी और तमस्ख़ुर शामिल है और वह आपके साथ इस्तेहज़ा करते हैं तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन पर दुआ़ की कि या रब उन्हें ऐसी हफ़्त साला क़हत की मुसीबत में मुब्तला कर जैसे सात साल का क़हत हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में भेजा था यह दुआ़ मुस्तजाब हुई और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमाया गया। (फ़ा9) चुनांचे क़ुरैश पर क़हत साली आई और यहां तक उसकी शिद्दत हुई कि वह लोग मुर्दार खागए और भूख से इस हाल को पहुंच गए कि जब ऊपर को नज़र उठाते आसमान की तरफ़ देखते तो उनको धुआँ ही धुआँ मालूम होता यानी ज़ोअ़्फ़ से निगाहों में ख़ीरगी आ गई थी और क़हत से ज़मीन ख़ुश्क हो गई ख़ाक उड़ने लगी ग़ुबार ने हवा को मुकद्दर कर दिया इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि धुयें से मुराद वह धुआँ है जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत ज़ाहिर होगा मशरिक़ व मग़रिब इस से भर जायेंगे चालीस रोज़ व शब रहेगा मोमिन की हालत तो इससे ऐसी हो जाएगी जैसे ज़ुकाम हो जाये और काफ़िर मदहोश होंगे उनके नथनों और कानों और बदन के सुराख़ों से धुआँ निकलेगा।

أَلِيمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾ إِنَّا
كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ
كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾ وَأَن لَّا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي
وَرَبِّكُمْ أَن تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾

अलीम(11)रब्ब–नक्शिफ़् अ़न्नल् अ़ज़ा–ब इन्ना मुअ्मिनून(12)अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व क़द् जा–अहुम् रसूलुम् मुबीन(13)सुम्–म त–वल्लौ अ़न्हु व क़ालू मुअ़ल्लमुम् मज्नून(14)इन्ना काशिफ़ुल् अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आइदून(15)यौ–म नब्तिशुल् बत्श–तल् कुब्रा इन्ना मुन्तक़िमून(16)व ल–क़द् फ़–तन्ना क़ब्–लहुम् क़ौ–म फ़िर्औ़–न व जा–अहुम् रसूलुन् करीम (17)अन् अद्दू इलय्–य अ़िबादल्लाहि इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीनुंव्(18)व अंल्ला तअ़्लू अ़लल्लाहि इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम् मुबीन(19)व इन्नी अ़ुज़्तु बि–रब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून(20)व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्–तज़िलून(21)फ़–दआ़ रब्बहू अन्–न हाउला–इ क़ौमुम् मुज्रिमून(22)फ़–अस्रि बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त–बअून(23)वत्रुकिल् बह्–र रह्वन् इन्नहुम् जुन्दुम् मुग्रक़ून(24)कम् त–रकू मिन् जन्नातिंव् व अुयूनिंव्(25)व ज़ुरूअ़िंव् व मक़ामिन् करीमिंव्(26)व नअ़्–मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन(27)

अ़ज़ाब।(11) उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अ़ज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं।(12) (फ़ा10) कहां से हो उन्हें नसीहत मानना (फ़ा11) हालांकि उनके पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका।(13) (फ़ा12) फिर उससे रूगरदाँ हुए और बोले सिखाया हुआ दीवाना है।(14) (फ़ा13) हम कुछ दिनों को अ़ज़ाब खोले देते हैं तुम फिर वही करोगे।(15) (फ़ा14) जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे (फ़ा15) बेशक हम बदला लेने वाले हैं।(16) और बेशक हमने उनसे पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को जांचा और उनके पास एक मोअ़ज़्ज़ज़ रसूल तशरीफ़ लाया।(17) (फ़ा16) कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सुपुर्द कर दो (फ़ा17) बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानत वाला रसूल हूं।(18) और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास एक रौशन सनद लाता हूं।(19) (फ़ा18) और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और तुम्हारे रब की इससे कि तुम मुझे संगसार करो।(20) (फ़ा19) और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ।(21) (फ़ा20) तो उसने अपने रब से दुआ़ की कि यह मुजरिम लोग हैं।(22) हमने हुक्म फ़रमाया कि मेरे बन्दों (फ़ा21) को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा।(23) (फ़ा22) और दरिया को यूंही जगह जगह से खुला छोड़ दे (फ़ा23) बेशक वह लश्कर डुबोया जाएगा।(24) (फ़ा24) कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे।(25) और खेत और उम्दा मकानात।(26) (फ़ा25) और नेअ़मतें जिनमें फ़ारिग़ुलबाल थे।(27) (फ़ा26)

(फ़ा10) और तेरे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्दीक़ करते हैं। (फ़ा11) यानी इस हालत में वह कैसे नसीहत मानेंगे। (फ़ा12) और मोअ़जेज़ात ज़ाहिरात और आयात बय्यिनात पेश फ़रमा चुका। (फ़ा13) जिसको वही की ग़शी तारी होने के वक़्त जिन्नात यह कलिमात तलक़ीन कर जाते हैं। (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) (फ़ा14) जिस कुफ़्र में थे उसी की तरफ़ लौटोगे चुनान्चे ऐसा ही हुआ अब फ़रमाया जाता है कि उस दिन को याद करो। (फ़ा15) उस दिन से मुराद रोज़े क़ियामत है या रोज़े बदर। (फ़ा16) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम (फ़ा17) यानी बनी इसराईल को मेरे हवाले कर दो और जो शिद्दतें और सख़्तियां उन पर करते हो उससे रिहाई दो। (फ़ा18) अपने सिदक़े नबुव्वत व रिसालत की जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया तो फ़िरऔ़नियों ने आपको क़त्ल की धमकी दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार कर देंगे तो आपने फ़रमाया। (फ़ा19) यानी मेरा तवक्कुल व एतेमाद इस पर है मुझे तुम्हारी धमकी की कुछ परवाह नहीं अल्लाह तआ़ला मेरा बचाने वाला है (फ़ा20) मेरी ईज़ा के दरपै न हो उन्होंने इसको भी न माना (फ़ा21) यानी बनी इसराईल (फ़ा22) यानी फ़िरऔ़न मअ़ अपने लश्करों के तुम्हारे दरपै होगा चुनान्चे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम रवाना हुए और दरिया पर पहुंच कर आपने अ़सा मारा उसमें बारह रस्ते ख़ुश्क पैदा हो गए आप मअ़ बनी इसराईल के दरिया में से गुज़र गए पीछे फ़िरऔ़न और उसका लश्कर आ रहा था आपने चाहा कि अ़सा मार कर फिर दरिया **(बक़िया सफ़हा 810 पर)**

كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ

الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ

مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝ فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَهُمْ

خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ اَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ

कज़ालि–क व औरस्नाहा क़ौमन् आ–ख़रीन(28)फ़मा ब–कत् अलैहिमुस्समाउ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन(29)व ल–क़द् नज्जैना बनी इस्राई–ल मिनल् अज़ाबिल्मुहीन(30)मिन् फ़िर्औ–न इन्नहू का–न आलियम् मिनल्मुस्रिफ़ीन(31)व ल–क़दिख़्तर्नाहुम् अला अिल्मिन् अ–लल् आ–लमीन(32) व आतैनाहुम् मिनल्आयाति मा फ़ीहि बलाउम् मुबीन(33)इन्–न हाउलाइ ल–यक़ूलून(34)इन् हि–य इल्ला मौ–ततु–नल् ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन(35)फ़अ्तू बि–आबाइना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (36)अहुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअिंव् वल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् अह्–लक्नाहुम् इन्नहुम् कानू मुज्रिमीन(37)व मा ख़–लक़्नस्समावाति वल् अर्–ज़ व मा बै–नहुमा लाअिबीन(38)मा ख़–लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला यअ्–लमून (39)इन्–न यौमल्फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्–मअीन(40)यौ–म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव् व ला हुम्

हम ने यूं ही किया और उनका वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया।(28) (फ़ा27) तो उन पर आसमान और ज़मीन न रोए (फ़ा28) और उन्हें मोहलत न दी गई।(29) (फ़ा29) (रुकूअ़ 14) और बेशक हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अ़ज़ाब से नजात बख़्शी।(30) (फ़ा30) फ़िरऔ़न से बेशक वह मुतकब्बिर हद से बढ़ने वालों में से था।(31) और बेशक हमने उन्हें (फ़ा31) दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से।(32) और हमने उन्हें वह निशानियाँ अ़ता फ़रमाईं जिन में सरीह़ इनाम था।(33) (फ़ा32) बेशक यह (फ़ा33) कहते हैं।(34) वह तो नहीं मगर हमारा एक दफ़ा का मरना (फ़ा34) और हम उठाए न जायेंगे।(35) (फ़ा35) तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो।(36) (फ़ा36) क्या वह बेहतर हैं (फ़ा37) या तुब्बअ़ की क़ौम (फ़ा38) और जो उनसे पहले थे (फ़ा39) हम ने उन्हें हलाक कर दिया (फ़ा40) बेशक वह मुजरिम लोग थे।(37) (फ़ा41) और हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और ज़ो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर।(38) (फ़ा42) हमने उन्हें न बनाया मगर हक़ के साथ (फ़ा43) लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं।(39) (फ़ा44) बेशक फ़ैसला का दिन (फ़ा45) उन सब की मीआ़द है।(40) जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा (फ़ा46) और न उनकी

(फ़ा27) यानी बनी इसराईल को जो न उनके हम मज़हब थे न रिश्तेदार न दोस्त (फ़ा28) क्योंकि वह ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उस पर आसमान व ज़मीन चालीस रोज़ तक रोते हैं जैसा कि तिर्मिज़ी की हदीस में है मुजाहिद से कहा गया कि क्या मोमिन की मौत पर आसमान व ज़मीन रोते हैं फ़रमाया ज़मीन क्यों न रोये उस बन्दे पर जो ज़मीन को अपने रुकूअ़ व सुजूद से आबाद रखता था और आसमान क्यों न रोये उस बन्दे पर जिस की तस्बीह व तकबीर आसमान में पहुंचती थी हसन का क़ौल है कि मोमिन की मौत पर आसमान वाले और ज़मीन वाले रोते हैं (फ़ा29) तौबा वग़ैरह के लिए अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करने के बाद। (फ़ा30) यानी गुलामी और शाक़्क़ा ख़िदमतों और मेहनतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था। (फ़ा31) यानी बनी इसराईल को। (फ़ा32) कि उनके लिए दरिया में खुश्क रस्ते बनाये अब्र को सायबान किया मन्न व सलवा उतारा इसके इलावा और निअ़्मतें दीं। (फ़ा33) कुफ़्फ़ारे मक्का। (फ़ा34) यानी इस ज़िन्दगानी के बाद सिवाए एक मौत के हमारे लिए और कोई हाल बाक़ी नहीं इससे उनका मक़सूद बअ़्स यानी मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करना था जिसको अगले जुमले में वाज़ेह कर दिया। (कबीर) (फ़ा35) बाद मौत ज़िन्दा करके। (फ़ा36) इस बात में कि हम बाद मरने के ज़िन्दा करके उठाये जायेंगे कुफ़्फ़ारे मक्का ने यह सवाल किया था कि कुसइ बिन किलाब को ज़िन्दा कर दो अगर मौत के बाद किसी का ज़िन्दा होना मुमकिन हो और यह उनकी जाहलाना बात थी क्योंकि जिस काम के लिए वक़्त मुअ़य्यन हो उसका उस वक़्त से क़ब्ल वुजूद में न आना उसके नामुमकिन होने की दलील नहीं होता और न इसका इन्कार सही होता है अगर कोई शख़्स **(बक़िया सफ़हा 810 पर)**

يُنۡصَرُوۡنَ ۝ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ۝ طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ۝ كَالۡمُهۡلِ ۚ يَغۡلِىۡ فِى الۡبُطُوۡنِ ۝ كَغَلۡىِ
الۡحَمِيۡمِ ۝ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ۝ ذُقۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ۝ اِنَّ
هٰذَا مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تَمۡتَرُوۡنَ ۝ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ مَقَامٍ اَمِيۡنٍ ۝ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۝ يَّلۡبَسُوۡنَ مِنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ ۝
كَذٰلِكَ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ۝ يَدۡعُوۡنَ فِيۡهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيۡنَ ۝ لَا يَذُوۡقُوۡنَ فِيۡهَا الۡمَوۡتَ اِلَّا الۡمَوۡتَةَ الۡاُوۡلٰى ۚ وَوَقٰهُمۡ
عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ۝ فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ۝ فَارۡتَقِبۡ اِنَّهُمۡ مُّرۡتَقِبُوۡنَ ۝

युन्सरून(41)इल्ला मर्रहि–मल्लाहु इन्नहू हुवल् अज़ीज़ुर्–रहीम(42)इन्–न श–ज–र–तज़्ज़क्कूम(43) तआमुल् असीम(44)कल्मुह्लि यग्ली फ़िल् बुतून(45)क–ग़ल्यिल् हमीम(46)ख़ुज़ूहु फ़अ्तिलूहु इला सवाइल् जहीम(47)सुम्–म सुब्बू फ़ौ–क़ रअ्सिही मिन् अज़ाबिल् हमीम(48)ज़ुक् इन्न–क अन्तल् अज़ीज़ुल् करीम(49)इन्–न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून(50)इन्नल्मुत्तक़ी–न फ़ी मक़ामिन् अमीन(51)फ़ी जन्नातिंव् व अुयूनिंय्(52)यल्बसू–न मिन् सुन्दुसिंव् व इस्तब्–रक़िम् मु–तक़ाबिलीन(53)कज़ालि–क व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन(54)यदअू–न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकि–हतिन् आमिनीन(55)ला यज़ूक़ू–न फ़ीहल्मौ–त इल्लल्मौ–त–तल् ऊला व वक़ाहुम् अज़ाबल् जहीम(56)फ़ज़्लम् मिर्रब्बि–क ज़ालि–क हुवल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(57)फ़–इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि–क ल–अ़ल्लहुम् य–त–ज़क्करून(58)फ़र्–तक़िब् इन्नहुम् मुर्–तक़िबून(59)

मदद होगी।(41) (फ़ा47) मगर जिस पर अल्लाह रहम करे (फ़ा48) बेशक वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।(42) (रुकूअ़ 15) बेशक थूहड़ का पेड़।(43) (फ़ा49) गुनाहगारों की खुराक है।(44) (फ़ा50) गले हुए तांबे की तरह पेटों में जोश मारे।(45) जैसा खौलता पानी जोश मारे।(46) (फ़ा51) उसे पकड़ो (फ़ा52) ठीक भड़कती आग की तरफ़ बज़ोर घसीटते ले जाओ।(47) फिर उसके सर के ऊपर खौलते पानी का अ़ज़ाब डालो।(48) (फ़ा53) चख (फ़ा54) हां हां तू ही बड़ा इज़्ज़त वाला करम वाला है।(49) (फ़ा55) बेशक यह है वह (फ़ा56) जिस में तुम शुबहा करते थे।(50) (फ़ा57) बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं।(51) (फ़ा58) बाग़ों और चश्मों में।(52) पहनेंगे करेब और क़नादीज़ (फ़ा59) आमने सामने।(53) (फ़ा60) यूंही है और हमने उन्हें ब्याह दिया निहायत सियाह और रौशन बड़ी आंखों वालियों से।(54) उसमें हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे (फ़ा61) अमन व अमान से।(55) (फ़ा62) उसमें पहली मौत के सिवा (फ़ा63) फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया।(56) (फ़ा64) तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से यही बड़ी कामयाबी है।(57) तो हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में (फ़ा65) आसान किया कि वह समझें।(58) (फ़ा66) तो तुम इन्तेज़ार करो (फ़ा67) वह भी किसी इन्तेज़ार में हैं।(59) (फ़ा68) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा47) यानी काफ़िरों की (फ़ा48) यानी सिवाए मोमिनीन के कि वह बइज़्ने इलाही एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे (जुमल) (फ़ा49) थूहड़ एक ख़बीस निहायत कड़वा दरख़्त है जो अहले जहन्नम की खुराक होगा हदीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़तरा उस थूहड़ का दुनिया में टपका दिया जाए तो अहले दुनिया की ज़िन्दगानी ख़राब हो जाये। (फ़ा50) अबू जहल की और उसके साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं। (फ़ा51) जहन्नम के फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि। (फ़ा52) यानी गुनहगार को। (फ़ा53) और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि (फ़ा54) उस अ़ज़ाब को। (फ़ा55) मलायका यह कलिमए इहानत और तज़लील के लिए कहेंगे क्योंकि अबू जहल कहा करता था कि बतहा में मैं बड़ा इज़्ज़त वाला करम वाला हूं उसको अ़ज़ाब के वक़्त यह तअ़ना दिया जाएगा और कुफ़्फ़ार से यह भी कहा जाएगा। (फ़ा56) अ़ज़ाब जो तुम देखते हो (फ़ा57) और इस पर ईमान नहीं लाते थे उसके बाद परहेज़गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा58) जहां कोई ख़ौफ़ नहीं। (फ़ा59) यानी रेशम के बारीक व दबीज़ लिबास। (फ़ा60) कि किसी की पुश्त किसी की तरफ़ न हो। (फ़ा61) यानी जन्नत में अपने जन्नती ख़ादिमों को मेवे हाज़िर करने का हुक्म देंगे। (फ़ा62) कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा। न मेवे के कम होने का न ख़त्म हो जाने का न ज़रर करने न और कोई। (फ़ा63) जो दुनिया में हो चुकी। (फ़ा64) उससे नजात अ़ता फ़रमाई। (फ़ा65) यानी अ़रबी में (फ़ा66) और नसीहत क़बूल करें और ईमान लायें लेकिन लायेंगे नहीं (फ़ा67) उनके हलाक व अ़ज़ाब का (फ़ा68) तुम्हारी मौत के (क़ील हाज़ल आयत मन्सूख़तुम बिआयतिस्सैफ़)

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ۚ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٤ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا ۟اتَّخَذَهَا هُزُوًا

सूरतुल् जासियति

(मक्की है इस सूरह में 73 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

ह़ामीम्(1)तन्ज़ीलुल् किताबि मि–नल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् ह़कीम(2)इन्–न फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिल्मुअ्मिनीन(3)व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल् लिक़ौमिंय् –यूक़िनून(4) वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़–लल्लाहु मिनस्समाइ मिर्रिज़्क़िन् फ़–अह़्या बिहिल्अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा व तस्रीफ़िर् रियाहि आयातुल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(5)तिल्–क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै–क बिल्ह़क़्क़ि फ़बि–अय्यि ह़दीसिम् बअ्दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (6)वैलुल् लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिंय्(7)–यस्–मअु आया–तिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्–म युसिर्रु मुस्तक्बि–रन् क–अल्लम् यस्मअ्हा फ़–बश्शिर्हु बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(8)व इज़ा अ़लि–म मिन् आयातिना शै–अनित् त–ख़–ज़हा हुज़ुवन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हा–मीम (1) किताब का उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ़ से।(2) बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए।(3) (फ़ा2) और तुम्हारी पैदाइश में (फ़ा3) और जो जो जानवर वह फैलाता है उनमें निशानियाँ हैं यक़ीन वालों के लिए।(4) और रात और दिन की तब्दीलियों में (फ़ा4) और उसमें कि अल्लाह ने आसमान से रोज़ी का सबब मेंह उतारा तो उससे ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की गर्दिश में (फ़ा5) निशानियाँ हैं अ़क़्लमन्दों के लिए।(5) यह अल्लाह की आयतें हैं कि हम तुम पर हक़ के साथ पढ़ते हैं फिर अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़ कर कौन सी बात पर ईमान लायेंगे।(6) ख़राबी है हर बड़े बोहतानहाए गुनाहगार के लिए।(7) (फ़ा6) अल्लाह की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है (फ़ा7) ग़ुरूर करता (फ़ा8) गोया उन्हें सुना ही नहीं तो उसे ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की।(8) और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ़ पाए उसकी हंसी बनाता है

(फ़ा1) यह सूरह जासियह है इसका नाम सूरह शरीआ़ भी है यह सूरत मक्की है सिवाए आयत *क़ुल्–लिल्लज़ी–न आ–मनू यग़्फ़िरू* के इस सूरत में चार रुकूअ़ सैंतीस आयतें 488 कलिमे 2191 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और उसकी वहदानियत पर दलालत करने वाली। (फ़ा3) यानी तुम्हारी पैदाइश में भी उसकी क़ुदरत व हिकमत की निशानियां हैं कि नुत्फ़ा को ख़ून बनाता है ख़ून को बस्ता करता है ख़ूने बस्ता को गोश्त पारा यहां तक कि पूरा इन्सान बना देता है। (फ़ा4) कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है। (फ़ा5) कि कभी गरम चलती है कभी सर्द कभी जुनूबी कभी शुमाली कभी शरक़ी कभी ग़रबी। (फ़ा6) यानी नज़र बिन हारिस के लिए शाने नुज़ूलः कहा गया है कि यह आयत नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जो अ़जम के क़िस्से कहानियां सुना कर लोगों को क़ुरआन पाक सुनने से रोकता था और यह आयत हर ऐसे शख़्स के लिए आ़म है जो दीन को ज़रर पहुंचाए और ईमान लाने और क़ुरआन सुनने से तकब्बुर करे। (फ़ा7) यानी अपने कुफ़्र पर। (फ़ा8) ईमान लाने से।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुम् मुहीन(9)मिंव्वराइहिम् जहन्नमु व ला युग़्नी अ़न्हुम् मा क–सबू शैअंव् व ला मत्त–ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया–अ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(10)हाज़ा हुदन् वल्लज़ी–न क–फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम् अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम(11)अल्लाहुल् लज़ी सख़्ख़–र लकुमुल् बह्–र लि–तज्रि–यल् फुल्कु फ़ीहि बि–अम्रिही व लि–तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(12)व सख़्ख़–र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म् मिन्हु इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(13)क़ुल् लिल्लज़ी–न आ–मनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ी–न ला यर्जू–न अय्यामल्लाहि लि–यज्ज़ि–य क़ौमम् बिमा कानू यक्सिबून(14)मन् अ़मि–ल सालिहन् फ़लि–नफ़्सिही व मन् असा–अ फ़–अ़लैहा सुम्–म इला रब्बिकुम् तुर्–जऊ़न(15) व ल–क़द् आतैना बनी इस्राईलल् किता–ब वल् हुक्–म वन्नुबुव्व–त व रज़क़्नाहुम् मिनत्

उनके लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब।(9) उनके पीछे जहन्नम है (फ़ा9) और उन्हें कुछ काम न देगा उनका कमाया हुआ (फ़ा10) और न वह जो अल्लाह के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे (फ़ा11) और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(10) यह (फ़ा12) राह दिखाना है और जिन्होंने अपने रब की आयतों को न माना उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब में से सख़्त तर अ़ज़ाब है।(11) (रुकूअ़ 17) अल्लाह है जिसने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उसमें उसके हुक्म से कश्तियाँ चलें और इस लिए कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो (फ़ा13) और इस लिए कि हक़ मानो।(12) (फ़ा14) और तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आसमानों में हैं (फ़ा15) और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा16) अपने हुक्म से बेशक इसमें निशानियाँ हैं सोचने वालों के लिए।(13) ईमान वालों से फ़रमाओ दरगुज़रें उन से जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते (फ़ा17) ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे।(14) (फ़ा18) जो भला काम करे तो अपने लिए और बुरा करे तो अपने बुरे को (फ़ा19) फिर अपने रब की तरफ़ फेरे जाओगे।(15) (फ़ा20) और बेशक हमने बनी इसराईल को किताब (फ़ा21) और हुकूमत और नबुव्वत अ़ता फ़रमाई (फ़ा22) और हम ने उन्हें

(फ़ा9) यानी बाद मौत उनका अन्जामकार और मआल दोज़ख़ है (फ़ा10) माल जिस पर वह बहुत नाज़ाँ हैं (फ़ा11) यानी बुत जिनको पूजा करते थे (फ़ा12) क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा13) बहरी सफ़रों से और तिजारतों से और ग़व्वासी करने और मोती वग़ैरह निकालने से। (फ़ा14) उसके निअ़मत व करम और फ़ज़्ल व एहसान का। (फ़ा15) सूरज चांद सितारे वग़ैरह। (फ़ा16) चौपाए दरख़्त नहरें वग़ैरह (फ़ा17) जो दिन कि उसने मोमिनीन की मदद के लिए मुक़र्रर फ़रमाए या अल्लाह तआ़ला के दिनों से वह वक़ाएअ़ मुराद हैं जिनमें वह अपने दुश्मनों को गिरिफ़्तार करता है बहरहाल उन उम्मीद न रखने वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं और माना यह हैं कि कुफ़्फ़ार से जो ईज़ा पहुंचे और उनके कलिमात जो तकलीफ़ पहुंचायें मुसलमान उनसे दर गुज़र करें मुनाज़अ़त न करें (व क़ील इन्नल आयतः मन्सूख़तुम बि–आयतिल्क़िताल) **शाने नुज़ूलः** इस आयत की शाने नुज़ूल में कई क़ौल हैं एक यह कि ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ में मुसलमान बीर मुरीसीअ़ पर उतरे यह एक कुआँ था अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने गुलाम को पानी के लिए भेजा वह देर में आया तो उससे सबब दरियाफ़्त किया उसने कहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कुएं के किनारे पर बैठे थे जब तक नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मश्कें न भर गईं उस वक़्त तक उन्होंने किसी को पानी भरने न दिया यह सुनकर उस बद–बख़्त ने उन हज़रात की शान में गुस्ताख़ाना कलिमे कहे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इसकी ख़बर हुई तो आप तलवार लेकर तैयार हुए इस पर यह आयत नाज़िल हुई इस तक़दीर पर यह आयत मदनी होगी। मक़ातिल का क़ौल है कि क़बीला बनी ग़फ़्फ़ार के एक शख़्स ने मक्का मुकर्रमा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को गाली दी तो आपने उसको पकड़ने का इरादा **(बक़िया सफ़हा 811 पर)**

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ

तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़लल्आ़–लमीन(16)व आतैनाहुम् बय्यिनातिम् मिनल् अम्रि फ़–मख़्त–लफ़ू इल्ला मिम्बअ़्दि मा जा–अहुमुल् अ़िल्मु बग़्यम् बै–नहुम् इन्–न रब्ब–क यक़्ज़ी बै–नहुम् यौमल् क़िया–मति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून(17)सुम्–म ज–अ़ल्ना–क अ़ला शरी–अ़तिम् मिनल् अम्रि फ़त्तबिअ़्हा व ला तत्तबिअ़् अह्वा–अल् लज़ी–न ला यअ़्–लमून (18)इन्नहुम् लंय्युग़्नू अ़न्–क मिनल्लाहि शैअन् व इन्नज़्ज़ालिमी–न बअ़्ज़ुहुम् औलियाउ बअ़्ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल् मुत्तक़ीन(19)हाज़ा बसाइरु लिन्नासि व हुदंव् व रह्मतुल् लिक़ौमिंय्यूक़िनून(20) अम् हसि–बल्लज़ी–नज्–त–रहुस् सय्यिआति अन् नज्–अ–लहुम् कल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति सवा–अम् मह्याहुम् व ममातुहुम् सा–अ मा यह्कुमून(21)व ख़–ल–क़ल्लाहुस् समावाति वल्अर्–ज़ बिल् हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्–बिमा क–स–बत् व हुम् ला युज़्–लमून(22)अ–फ़–रऐ–त

सुथरी रोज़ियाँ दीं (फ़ा23) और उन्हें उनके ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।(16) और हमने उन्हें उस काम की (फ़ा24) रौशन दलीलें दीं तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ न किया (फ़ा25) मगर बाद इसके कि इल्म उनके पास आ चुका (फ़ा26) आपस के हसद से (फ़ा27) बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं।(17) फिर हमने उस काम के (फ़ा28) उम्दा रास्ता पर तुम्हें किया (फ़ा29) तो उसी राह पर चलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो।(18) (फ़ा30) बेशक वह अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं (फ़ा31) और डर वालों का दोस्त अल्लाह।(19) (फ़ा32) यह लोगों की आंखें खोलना है (फ़ा33) और ईमान वालों के लिए हिदायत व रहमत।(20) क्या जिन्होंने बुराईयों का इरतिकाब किया (फ़ा34) यह समझते हैं कि हम उन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इनकी उनकी ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए (फ़ा35) क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।(21) (फ़ा36) (रुकूअ़ 18) और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया (फ़ा37) और इस लिए कि हर जान अपने किये का बदला पाए (फ़ा38) और उन पर ज़ुल्म न होगा।(22) भला देखो तो

(फ़ा23) हलाल कशाइश के साथ फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के अमवाल व दयार का मालिक करके और मन्न व सलवा नाज़िल फ़रमा कर। (फ़ा24) यानी अमूरे दीन और बयाने हलाल व हराम और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मबऊस होने की (फ़ा25) हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत में (फ़ा26) और इल्म ज़वाल इख़्तिलाफ़ का सबब होता है और यहां उन लोगों के लिए इख़्तिलाफ़ का सबब हुआ इसका बाइस यह है कि इल्म उनका मक़्सूद न था बल्कि मक़्सूद उनका जाह व रियासत की तलब थी इसी लिए उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया। (फ़ा27) कि उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जलवा अफ़रोज़ी के बाद अपने जाह व रियासत के अन्देशा से आपके साथ हसद और दुश्मनी की और काफ़िर हो गए। (फ़ा28) यानी दीन के। (फ़ा29) ऐ हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा30) यानी रऊसाए क़ुरैश की जो अपने दीन की दावत देते हैं। (फ़ा31) सिर्फ़ दुनिया में और आख़िरत में उनका कोई दोस्त नहीं। (फ़ा32) दुनिया में भी और आख़िरत में भी डर वालों से मुराद मोमिनीन हैं और आगे क़ुरआन पाक की निस्बत इरशाद होता है (फ़ा33) कि इससे उन्हें उमूरे दीन में बीनाई हासिल होती है। (फ़ा34) कुफ़्र व मआ़सी का। (फ़ा35) यानी ईमानदारों और काफ़िरों की मौत व हयात बराबर हो जाये ऐसा हरगिज़ नहीं होगा क्योंकि ईमानदार ज़िन्दगी में ताअ़त पर क़ाइम रहे और काफ़िर बदियों में डूबे रहे तो उन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई ऐसे ही मौत भी यकसाँ नहीं कि मोमिन की मौत बशारत व रहमत व **(बक़िया सफ़हा 811 पर)**

مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

मनित्त–ख़–ज़ इला–हहू हवाहु व अ–ज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्मिंव् व ख़–त–म अ़ला समअ़िही व क़ल्बिही व ज–अ़–ल अ़ला ब–सरिही ग़िशा–व–तन् फ़मंय्यह्दीहि मिम् बअ़्दिल्लाहि अ–फ़ला त–ज़क्करून(23)व क़ालू मा हि–य इल्ला हयातु–नद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्–दहरु व मा लहुम् बिज़ालि–क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून(24)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम् मा का–न हुज्ज–तहुम् इल्ला अन् क़ालुअ्तू बिआबाइना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (25)क़ुलिल्लाहु युह्यीकुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म यज्मअ़ुकुम् इला यौमिल् क़िया–मति ला रै–ब फ़ीहि व लाकिन्–न अक्स़–रन्नासि ला यअ़्–लमून(26)व लिल्लाहि मुल्कुस् समावाति वल्अर्ज़ि व यौ–म तक़ूमुस्सा–अ़तु यौ–मइज़िंय्यख़्–सरुल् मुब्तिलून(27)व तरा कुल्–ल उम्मतिन् जासिय –तन् कुल्लु उम्मतिन् तुद्अ़ा इला किताबिहा अल्यौ–म तुज्ज़ौ–न मा कुन्तुम् तअ़्–मलून(28)

वह जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना खुदा ठहरा लिया (फ़ा39) और अल्लाह ने उसे बा वस्फ़े इल्म के गुमराह किया (फ़ा40) और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाला (फ़ा41) तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाए तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।(23) और बोले (फ़ा42) वह तो नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी (फ़ा43) मरते हैं और जीते हैं (फ़ा44) और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना (फ़ा45) और उन्हें उस का इल्म नहीं (फ़ा46) वह तो निरे गुमान दौड़ाते हैं।(24) (फ़ा47) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जायें (फ़ा48) तो बस उनकी हुज्जत यही होती है कि कहते हैं हमारे बाप दादा को ले आओ (फ़ा49) तुम अगर सच्चे हो।(25) (फ़ा50) तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें जिलाता है (फ़ा51) फिर तुम को मारेगा (फ़ा52) फिर तुम सब को इकट्ठा करेगा (फ़ा53) क़ियामत के दिन जिस में कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते।(26) (फ़ा54) (रुकूअ़ 19) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी बातिल वालों की उस दिन हार है।(27) (फ़ा55) और तुम हर गरोह (फ़ा56) को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए हर गरोह अपने नामए आमाल की तरफ़ बुलाया जाएगा (फ़ा57) आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा।(28)

(फ़ा39) और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हो गया जिसे नफ़्स ने चाहा पूजने लगा मुशरिकीन का यही हाल था कि वह पत्थर और सोने और चांदी वग़ैरह को पूजते थे जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मालूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फेंक देते दूसरों को पूजने लगते। (फ़ा40) कि इस गुमराह ने हक़ को जान पहचान कर बे राही इख़्तियार की मुफ़स्सिरीन ने इसके यह माना भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उसके अन्जामकार और उसके शक़ी होने को जानते हुए उसे गुमराह किया यानी अल्लाह तआ़ला पहले से जानता था कि यह अपने इख़्तियार से राहे हक़ से मुनहरिफ़ होगा और गुमराही इख़्तियार करेगा। (फ़ा41) तो उसने हिदायत व मौअ़िज़त को न सुना और न समझा और राहे हक़ को न देखा। (फ़ा42) मुन्किरीने बअ़्स। (फ़ा43) यानी इस ज़िन्दगी के इलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं (फ़ा44) यानी बाज़े मरते हैं और बाज़े पैदा होते हैं। (फ़ा45) यानी रोज़ व शब का दौरा वह उसी को मुअस्सर एतेक़ाद करते थे और मलकुलमौत का और बहुक्मे इलाही रूहें क़ब्ज़ किये जाने का इन्कार करते थे और हर एक हादसा को दहर और ज़माना की तरफ़ मन्सूब करते थे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा46) यानी वह यह बात बे इल्मी से कहते हैं। (फ़ा47) ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ मसला हवादिस को ज़माना की तरफ़ निस्बत करना और नागवार हवादिस रूनुमा होने से ज़माना को बुरा कहना ममनूअ़ है अहादीस में इसकी मुमानअ़त आई है। (फ़ा48) यानी क़ुरआन पाक की आयतें जिनमें अल्लाह तआ़ला के बअ़्स बादलमौत पर क़ादिर होने की दलीलें मज़कूर हैं जब कुफ़्फ़ार **(बक़िया सफ़हा 811 पर)**

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ
رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۟ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝
وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

हाज़ा किताबुना यन्तिकु अ़लैकुम् बिल्हक़्क़ि इन्ना कुन्ना नस्तन्सिखु मा कुन्तुम् तअ्–मलून (29)फ़–अम्मल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़युदख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह्मतिही ज़ालि–क हुवल् फ़ौज़ुल् मुबीन(30)व अम्मल्लज़ी–न क–फ़रू अ–फ़–लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् कौमम् मुज्रिमीन(31)व इज़ा क़ी–ल इन्–न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्वस्सा–अ़तु ला रै–ब फ़ीहा कुल्तुम् मा नदरी मस्सा–अ़तु इन् नज़ुन्नु इल्ला ज़न्नंव् व मा नह्नु बिमुस्तैक़िनीन(32)व बदा–लहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्–ज़िऊन(33)व क़ीलल् यौ–म नन्साकुम् कमा नसीतुम् लिक़ा–अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् नासिरीन(34)ज़ालिकुम् बि–अन्नकुमुत् तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव् व ग़र्रत्–कुमुल् हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ–म ला युख़्रजू–न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ्–तबून(35) फ़लिल्ला–हिल्–हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल् अर्ज़ि रब्बिल् आ–लमीन(36)व लहुल् किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(37)

हमारा यह नविश्ता तुम पर हक़ बोलता है हम लिखते रहे थे (फ़ा58) जो तुमने किया।(29) तो वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उन्हें अपनी रहमत में लेगा (फ़ा59) यही खुली कामयाबी है।(30) और जो काफ़िर हुए उनसे फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम तकब्बुर करते थे (फ़ा60) और तुम मुजरिम लोग थे।(31) और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वादा (फ़ा61) सच्चा है और क़ियामत में शक नहीं (फ़ा62) तुम कहते हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें तो यूंही कुछ गुमान सा होता है और हमें (फ़ा63) यक़ीन नहीं।(32) और उन पर खुल गईं (फ़ा64) उनके कामों की बुराईयाँ (फ़ा65) और उन्हें घेर लिया उस अ़ज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे।(33) और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे (फ़ा66) जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को भूले हुए थे (फ़ा67) और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।(34) (फ़ा68) यह इस लिए कि तुम ने अल्लाह की आयतों का ठट्ठा बनाया और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें फ़रेब दिया (फ़ा69) तो आज न वह आग से निकाले जायें और न उनसे कोई मनाना चाहे।(35) (फ़ा70) तो अल्लाह ही के लिए सब ख़ूबियाँ हैं आसमानों का रब और ज़मीन का रब और सारे जहान का रब।(36) और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(37) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा58) यानी हमने फ़रिश्तों को तुम्हारे अ़मल लिखने का हुक्म दिया था। (फ़ा59) जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (फ़ा60) और उन पर ईमान न लाते थे। (फ़ा61) मुर्दों को ज़िन्दा करने का। (फ़ा62) वह ज़रूर आएगी तो (फ़ा63) क़ियामत के आने का (फ़ा64) यानी कुफ़्फ़ार पर आख़िरत में। (फ़ा65) जो उन्होंने दुनिया में किये थे और उनकी सज़ायें (फ़ा66) अ़ज़ाबे दोज़ख़ में (फ़ा67) कि ईमान व ताअ़त छोड़ बैठे। (फ़ा68) जो तुम्हें उस अ़ज़ाब से बचा सके। (फ़ा69) कि तुम उसके मफ़्तून हो गए और तुम ने बअ़्स व हिसाब का इन्कार कर दिया। (फ़ा70) यानी अब उन से यह भी मतलूब नहीं कि वह तौबा करके और ईमान व ताअ़त इख़्तियार करके अपने रब को राज़ी करें क्योंकि उस रोज़ कोई उज़्र और तौबा क़बूल नहीं।

(**बक़िया सफ़हा 780 का**) जानने वाला है। (फ़ा115) यानी अल्लाह तआला फल के ग़िलाफ़ से बरआमद होने के क़बल उसके अहवाल को जानता है और मादा के हमल को और उसकी साअ़तों को और वज़अ़ के वक़्त को और उसके नाक़िस व ग़ैर नाक़िस और अच्छे और बुरे और नर व मादा होने को सब को जानता है उसका इल्म भी उसी की तरफ़ हवाले करना चाहिए अगर यह एतेराज़ किया जाए कि औलियाए किराम असहाबे कश्फ़ बसा औक़ात इन उमूर की ख़बरें देते हैं और वह सही वाक़ेअ़ होती हैं बल्कि कभी मुनज्जिम और काहिन भी ख़बरें देते हैं इसका जवाब यह है कि नजूमियों और काहिनों की ख़बरें तो महज़ अटकल की बातें हैं जो अक्सर व बेश्तर ग़लत हो जाया करती हैं वह इल्म ही नहीं बे हक़ीक़त बातें हैं और औलिया की ख़बरें बेशक सही होती हैं और वह इल्म से फ़रमाते हैं और यह इल्म उनका ज़ाती नहीं अल्लाह तआ़ला का अ़ता फ़रमाया हुआ है तो हक़ीक़त में यह उसी का इल्म हुआ ग़ैर का नहीं। (ख़ाज़िन) (फ़ा116) यानी अल्लाह तआला मुशरिकीन से फ़रमाएगा कि (फ़ा117) जो तुम ने दुनिया में गढ़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे उसके जवाब में मुशरिकीन (फ़ा118) जो आज यह बातिल गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है यानी हम सब मोमिन मुवह्हिद हैं यह मुशरिकीन अ़ज़ाब देख कर कहेंगे और अपने बुतों से बरी होने का इज़्हार करेंगे (फ़ा119) दुनिया में यानी बुत (फ़ा120) अ़ज़ाबे इलाही से बचने और (फ़ा121) हमेशा अल्लाह तआला से माल और तवंगरी व तन्दुरुस्ती मांगता रहता है (फ़ा122) यानी कोई सख़्ती व बला व मआश की तंगी (फ़ा123) अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व रहमत से मायूस हो जाता है यह और उसके बाद जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वह काफ़िर का हाल है और मोमिन अल्लाह तआला की रतहमत से मायूस नहीं होते ला ययूलैसु मिंर्-रूहिल्लाहि इल्लल् क़ौमुल् काफ़िरून° (फ़ा124) सेहत व सलामत व माल व दौलत अ़ता फ़रमा कर (फ़ा125) ख़ालिस मेरा हक़ है मैं अपने अ़मल से उसका मुस्तहिक़ हूं। (फ़ा126) बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसलमान कहते हैं (फ़ा127) यानी वहां भी मेरे लिए दुनिया की तरह ऐश व राहत व इ़ज़्ज़त व करामत है। (फ़ा128) यानी उनके आमाले क़बीहा और उन आमाल के नताइज और जिस अ़ज़ाब के वह मुस्तहिक़ हैं उससे उन्हें आगाह कर देंगे। (फ़ा129) यानी निहायत सख़्त। (फ़ा130) और इस एहसान का शुक्र बजा नहीं लाता और इस निअ़मत पर इतराता है और निअ़मत देने वाले परवरदिगार को भूल जाता है। (फ़ा131) यादे इलाही से तकब्बुर करता है। (फ़ा132) किसी क़िस्म की परेशानी बीमारी या नादारी वग़ैरह की पेश आती है (फ़ा133) खूब दुआयें करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआयें मांगे जाता है। (फ़ा134) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार से। (फ़ा135) जैसा कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं और बराहीने क़तअ़ीया साबित करती हैं। (फ़ा136) हक़ की मुख़ालफ़त करता है। (फ़ा137) आसमान व ज़मीन के अक़्तार में सूरज चांद सितारे नबातात हैवान यह सब उसकी क़ुदरत व हिकमत पर दलालत करने वाले हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इन आयात से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिनसे अम्बिया की तकज़ीब करने वालों का हाल मालूम होता है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिक़ व मग़रिब की वह फ़ुतूहात मुराद हैं जो अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनके नियाज़मन्दों को अ़न्क़रीब अ़ता फ़रमाने वाला है (फ़ा138) उनकी हस्तियों में लाखों लताइफ़े सनअ़त और बेशुमार अ़जाइबे हिकमत हैं या यह माना हैं कि बदर में कुफ़्फ़ार को मग़लूब व मक़हूर करके खुद उनके अपने अहवाल में अपनी निशानियों का मुशाहिदा करा दिया या यह माना हैं कि मक्का मुकर्रमा फ़तह फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां ज़ाहिर कर देंगे। (फ़ा139) यानी इस्लाम व क़ुरआन की सच्चाई और हक़्क़ानियत उन पर ज़ाहिर हो जाये। (फ़ा140) क्योंकि वह बअ़स व क़ियामत के क़ाइल नहीं हैं (फ़ा141) कोई चीज़ उसके इहातए इल्मी से बाहर नहीं और उसके मालूमात ग़ैर मतनाही हैं

(**बक़िया सफ़हा 782 का**) कोई इख़्तिलाफ़ नहीं अलबत्ता अहकाम में उम्मतें बएेतबार अपने अहवाल व खुसूसियात के जुदागाना हैं चुनान्चे अल्लाह तआला ने फ़रमाया *लिकुल्लिन् ज-अ़ल्ना मिन्कुम् शिर्-अ़-तंव्-व मिन्हाजा* (फ़ा27) यानी बुतों को छोड़ना और तौहीद इख़्तियार करना

(**बक़िया सफ़हा 783 का**) और हम सब उसके बन्दे। (फ़ा42) हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। (फ़ा43) क्योंकि हक़ ज़ाहिर हो चुका (व हाज़ल आयात मन्सूख़तुन बिआयातिल क़िताल) (फ़ा44) रोज़े क़ियामत। (फ़ा45) मुराद उन झगड़ने वालों से यहूद हैं वह चाहते थे कि मुसलमानों को फिर कुफ़्र की तरफ़ लौटायें इस लिए झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना हमारी किताब पुरानी हमारे नबी पहले हम तुम से बेहतर हैं। (फ़ा46) ब-सबब उनके कुफ़्र के (फ़ा47) आख़िरत में (फ़ा48) यानी क़ुरआन पाक जो क़िस्म क़िस्म के दलाइल व अहकाम पर मुश्तमिल है। (फ़ा49) यानी उसने अपनी क़ुतबे मन्ज़िला में अ़दल का हुक्म दिया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुराद मीज़ान से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी है

(**बक़िया सफ़हा 784 का**) को क़बूल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिए मुक़र्रर फ़रमाया या उनके लिए कुछ ऐसे शुरका हैं शयातीन वग़ैरह। (फ़ा60) कुफ़्री दीनों में से। (फ़ा61) जो शिर्क व इन्कारे बअ़स पर मुश्तमिल है। (फ़ा62) यानी वह दीने इलाही के ख़िलाफ़ है। (फ़ा63) और जज़ा के लिए रोज़े क़ियामत मुअ़य्यन न फ़रमा दिया गया होता। (फ़ा64) और दुनिया ही में तकज़ीब करने वालों को गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब कर दिया जाता (फ़ा65) आख़िरत में और ज़ालिमों से मुराद यहां काफ़िर हैं। (फ़ा66) यानी कुफ़्र व आमाले ख़बीसा से जो उन्होंने दुनिया में कमाए थे। इस अन्देशा से कि अब उनकी सज़ा मिलने वाली है (फ़ा67) ज़रूर उनसे किसी तरह बच नहीं सकते डरें या न डरें।

(बक़िया सफ़हा 785 का) क़ुव्वत और मदद पहुंचाता है जब मुसलमानों में बाहम एक दूसरे के साथ मुहब्बत वाजिब हुई तो सय्यदे आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किस क़दर मुहब्बत फ़र्ज़ होगी माना यह हैं कि मैं हिदायत व इरशाद पर कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुक़ूक़ तो तुम पर वाजिब हैं उनका लिहाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें ईज़ा न दो हज़रत सईद बिन जुबैर से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आले पाक है (बुख़ारी) **मसलाः** अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इसमें कई क़ौल हैं एक तो यह कि मुराद इससे हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व हसनैन करीमैन हैं रज़ियल्लाहु अ़न्हुम एक क़ौल यह है कि आले अली व आले अ़क़ील व आले जअ़्फ़र व आले अ़ब्बास मुराद हैं और एक क़ौल यह है कि हुज़ूर के वह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है और वह मुख़लिसीन बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब हैं हुज़ूर की अज़वाज मुतह्हरात हुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं मसला हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत और हुज़ूर के अक़ारिब की मुहब्बत दीन के फ़राइज़ में से है (जुमल व ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा71) यहां नेक काम से मुराद या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आले पाक की मुहब्बत है या तमाम उमूरे ख़ैर (फ़ा72) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत कुफ़्फ़ारे मक्का (फ़ा73) नबुव्वत का दावा करके या क़ुरआने करीम को किताबे इलाही बता कर (फ़ा74) कि आपको उनकी बदगोईयों से ईज़ा न हो (फ़ा75) जो कुफ़्फ़ार कहते हैं (फ़ा76) जो अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाईं चुनांचे ऐसा ही किया कि उन के बातिल को मिटाया और कलिमए इस्लाम को ग़ालिब किया। (फ़ा77) **मसलाः** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की हक़ीक़त यह है कि आदमी बदी व मअ़सियत से बाज़ आये और जो गुनाह उससे सादिर हुआ उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुजतनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की हक़ तलफ़ी भी थी तो उस हक़ से बतरीक़े शरई उहदा बरआ हो (फ़ा78) यानी जितना दुआ़ मांगने वाले ने तलब किया था उससे ज़्यादा अ़ता फ़रमाता है (फ़ा79) तकब्बुर व ग़ुरूर में मुब्तला होकर (फ़ा80) जिसके लिए जितना मुक़्तज़ाए हिकमत है उसको उतना अ़ता फ़रमाता है। (फ़ा81) और मेंह से नफ़ा देता है और क़हत को दफ़ा फ़रमाता है (फ़ा82) हश्र के लिए।

(बक़िया सफ़हा 786 का) तमाम ख़िताब आक़िलीन बालिग़ीन को होते हैं पस तनासुख़ वालों का इस्तिदलाल बातिल हुआ। (फ़ा84) जो मुसीबतें तुम्हारे लिए मुक़द्दर हो चुकी हैं उनसे कहीं भाग नहीं सकते बच नहीं सकते। (फ़ा85) कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें मुसीबत व तकलीफ़ से बचा सके। (फ़ा86) बड़ी बड़ी कश्तियां। (फ़ा87) जो कश्तियों को चलाती है। (फ़ा88) यानी दरिया के ऊपर (फ़ा89) चलने न पायें। (फ़ा90) साबिर व शाकिर से मोमिन मुख़लिस मुराद है जो सख़्ती व तकलीफ़ में सब्र करता है और राहत व ऐश में शुक्र। (फ़ा91) यानी कश्तियों को ग़र्क़ कर दे (फ़ा92) जो उसमें सवार हैं। (फ़ा93) गुनाहों में से कि उन पर अ़ज़ाब न करे। (फ़ा94) हमारे अ़ज़ाब से। (फ़ा95) दुनियवी माल व असबाब। (फ़ा96) सिर्फ़ चन्द रोज़ उसको बक़ा नहीं। (फ़ा97) यानी सवाब वह। (फ़ा98) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई जब आप ने अपना कुल माल सदक़ा कर दिया और उस पर अ़रब के लोगों ने आपको मलामत की। (फ़ा99) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अन्सार के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने अपने रब की दावत क़बूल करके ईमान व ताअ़त को इख़्तियार किया। (फ़ा100) इस पर मुदावमत की। (फ़ा101) वह जल्दी और ख़ुदराई नहीं करते हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जो क़ौम मश्वरा करती है वह सही राह पर पहुंचती है। (फ़ा102) यानी जब उन पर कोई ज़ुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में हद से तजावुज़ नहीं करते इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि मोमिन दो तरह के हैं एक वह जो ज़ुल्म को माफ़ करते हैं पहली आयत में उनका ज़िक्र फ़रमाया गया दूसरे वह जो ज़ालिम से बदला लेते हैं उनका इस आयत में ज़िक्र है अ़ता ने कहा कि यह वह मोमिनीन हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्का मुकर्रमा से निकाला और उन पर ज़ुल्म किया फिर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस सरज़मीन में तसल्लुत दिया और उन्होंने ज़ालिमों से बदला लिया।

(बक़िया सफ़हा 788 का) सेहत व आ़फ़ियत या अमन व सलामत या जाह व मर्तबत या और कोई (फ़ा123) और कोई मुसीबत व बला मिस्ल क़हत व बीमारी व तंगदस्ती वग़ैरह के रूनुमा हो (फ़ा124) यानी उनकी नाफ़रमानियों और मअ़सियतों के सबब से (फ़ा125) नेअ़मतों को भूल जाता है (फ़ा126) जैसा चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है कोई दख़ल देने और एतेराज़ करने की मजाल नहीं रखता। (फ़ा127) बेटा न दे (फ़ा128) दुख़्तर न दे (फ़ा129) कि उसके औलाद ही न हो वह मालिक है अपनी निअ़मत को जिस तरह चाहे तक़सीम करे जिसे जो चाहे दे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम में भी यह सब सूरतें पाई जाती हैं हज़रत लूत व हज़रत शुऐब अ़लैहिमस्सलाम के सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यदे अम्बिया हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने चार फ़रज़न्द अ़ता फ़रमाए और चार साहबज़ादियां और हज़रत यह्या और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के कोई औलाद ही नहीं हुई। (फ़ा130) यानी बे वास्ता उसके दिल में इलक़ा फ़रमा कर और इल्हाम करके बेदारी में या ख़्वाब में इसमें वही का वुसूल बे वास्ता समअ़ के है और आयत में इल्ला वह्यन् से यही मुराद है इसमें यह क़ैद नहीं कि इस हाल में सामेअ़ मुतकल्लिम को देखता हो या न देखता हो। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के सीनए मुबारक में ज़ुबूर की वही फ़रमाई और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ज़बहे फ़रज़न्द की ख़्वाब में वही फ़रमाई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मेअ़राज में इसी तरह की वही फ़रमाई जिसका फ़-औहा इला अ़ब्दिही मा औहा में बयान है यह सब इसी क़िस्म

में दाख़िल हैं अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के ख़्वाब हक़ होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद है कि अम्बिया के ख़्वाब वही हैं (तफ़सीर अबीस्सुऊद व कबीर व मदारिक व ज़रक़ानी अ़लल्मवाहिब वग़ैरह) (फ़ा131) यानी रसूल पसे पर्दा उसका कलाम सुने इस तरीक़े वही में भी कोई वास्ता नहीं मगर सामेअ़ को इस हाल में मुतकल्लिम का दीदार नहीं होता। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम इसी तरह के कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। **शाने नुज़ूलः** यहूद ने हुज़ूर पुरनूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआ़ला से कलाम करते वक़्त उसको क्यों नहीं देखते जैसा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम देखते थे। हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम नहीं देखते थे और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। मसला अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि उसके लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानियात के लिए होता है इस पर्दा से मुराद सामेअ़ का दुनिया में दीदार से महजूब होना है। (फ़ा132) इस तरीक़े वही में रसूल की तरफ़ फ़रिश्ता की वसातत है (फ़ा133) ऐ सय्यदे आ़लम ख़ात्मुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा134) यानी क़ुरआन पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है (फ़ा135) यानी क़ुरआन शरीफ़ को। (फ़ा136) यानी दीने इस्लाम (फ़ा137) जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए मुक़र्रर फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 789 का) थे आपकी उम्मत के लोग जो पहले कुफ़्फ़ार की चाल चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं उनका भी वही अन्जाम न हो जो उनका हुआ कि ज़िल्लत व रुसवाई की उक़ूबतों से हलाक किये गए। (फ़ा8) यानी मुशरिकीन से। (फ़ा9) यानी इक़रार करेंगे कि आसमान व ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने बनाया और यह भी इक़रार करेंगे कि वह इज़्ज़त व इल्म वाला है बावजूद इस इक़रार के बअ़्स का इन्कार कैसी इन्तेहा दर्जा की जहालत है उसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने इज़्हारे क़ुदरत के लिए अपने मस्नूआ़त का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औसाफ़ व शान का इज़्हार करता है। (फ़ा10) सफ़रों में अपने मनाज़िल व मक़ासिद की तरफ़। (फ़ा11) तुम्हारी हाजतों की क़दर न इतना कम कि उससे तुम्हारी हाजतें पूरी न हों न इतना ज़्यादा कि क़ौमे नूह की तरह तुम्हें हलाक कर दे (फ़ा12) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा करके। (फ़ा13) यानी तमाम असनाफ़ व अनवाअ़ कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला फ़र्द है ज़िद और निदा दर ज़ौजियत से मुनज़्ज़ा व पाक है उसके सिवा ख़ल्क़ में जो है ज़ौज है।

(बक़िया सफ़हा 790 का) कुफ़्र ज़ाहिर है। (फ़ा19) अदना अपने लिए और आला तुम्हारे लिए कैसे जाहिल हो क्या बकते हो। (फ़ा20) यानी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है। (फ़ा21) कि मआ़ज़ल्लाह वह बेटी वाला है। (फ़ा22) और बेटी का होना इस क़दर नागवार समझे बावजूद इसके ख़ुदाए पाक के लिए बेटियां बताये (तआ़लल्लाहु अ़न् ज़ालि-क) (फ़ा23) काफ़िर हज़रते रहमान के लिए औलाद की क़िस्मों में से तजवीज़ करते हैं (फ़ा24) यानी ज़ेवरों की ज़ेब व ज़ीनत में नाज़ व नज़ाकत के साथ परवरिश पाए फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि ज़ेवर से तज़य्युन दलीले नुक़सान है तो मर्दों को इससे इज्तेनाब चाहिए परहेज़गारी से अपनी ज़ीनत करें अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़्हार फ़रमाया जाता है। (फ़ा25) यानी अपने ज़ोअ़्फ़े हाल और क़िल्लते अ़क़्ल की वजह से हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि औरत जब गुफ़्तगू करती है और अपनी ताईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह अपने ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है। (फ़ा26) हासिल यह है कि फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताने में बे दीनों ने तीन कुफ़्र किये एक तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ औलाद की निस्बत दूसरे इस ज़लील चीज़ का उसकी तरफ़ मन्सूब करना जिसको वह ख़ुद बहुत ही हक़ीर समझते हैं और अपने लिए गवारा नहीं करते तीसरे मलाइका की तौहीन उन्हें बेटियां बताना (मदारिक) अब उसका रद्द फ़रमाया जाता है (फ़ा27) फ़रिश्तों का मुज़क्कर या मुअन्नस होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अ़क़्ली दलील क़ाइम हो सके और उनके पास ख़बर कोई आई नहीं तो जो कुफ़्फ़ार उनको मुअन्नस क़रार देते हैं उनका ज़रीअ़ए इल्म क्या है क्या उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे और उन्होंने मुशाहदा कर लिया है जब यह भी नहीं तो महज़ जाहिलाना गुमराही की बात है (फ़ा28) यानी कुफ़्फ़ार का फ़रिश्तों के मुअन्नस होने पर गवाही देना लिख लिया जाएगा। (फ़ा29) आख़िरत में और इस पर सज़ा दी जाएगी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुम फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां किस तरह कहते हो तुम्हारा ज़रीअ़ए इल्म क्या है उन्होंने कहा हमने अपने बाप दादा से सुना है और हम गवाही देते हैं वह सच्चे थे इस गवाही को अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और इस पर जवाब तलब होगा। (फ़ा30) यानी मलायका को मतलब यह था कि अगर मलाइका की परस्तिश करने से अल्लाह तआ़ला राज़ी न होता तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता और जब अ़ज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वह यही चाहता है यह उन्होंने ऐसी बातिल बात कही जिस से लाज़िम आए कि तमाम जुर्म जो दुनिया में होते हैं उनसे ख़ुदा राज़ी है अल्लाह तआ़ला उनकी तकज़ीब फ़रमाता है। (फ़ा31) वह रज़ाए इलाही के जानने वाले ही नहीं। (फ़ा32) झूठ बकते हैं। (फ़ा33) और इसमें ग़ैर-ख़ुदा की परस्तिश की इजाज़त है ऐसा नहीं यह बातिल है और इसके सिवा भी उनके पास कोई हुज्जत नहीं है (फ़ा34) आँखें मीच कर बे सोचे समझे उनका इत्तेबाअ़ करते हैं वह मख़्लूक़ परस्ती किया करते थे मतलब यह है कि उसकी कोई दलील बजुज़ इसके नहीं है कि यह काम वह बाप दादा की पैरवी में करते हैं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उनसे पहले भी ऐसा ही कहा करते थे।

(बक़िया सफ़हा 791 का) बाप दादा राहे रास्त पर हों दीने हक़ रखते हों उनका इत्तेबाअ़ किया जाये और जो बातिल पर हों गुमराही में हों उनके तरीक़ा से बेज़ारी का एलान किया जाये। (फ़ा43) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का को। (फ़ा44) दराज़ उम्रें अ़ता फ़रमाईं और उनके कुफ़्र के बाइस उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करने में जल्दी न की। (फ़ा45) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा46) यानी सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रौशन तरीन आयात व मोअ़्जेज़ात के साथ रौनक़ अफ़रोज़ हुए और आपने

शरई अहकाम वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाये और हमारे इस इनआम का हक़ यह था कि उस रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त करते लेकिन उन्होंने ऐसा न किया। (फ़ा47) मक्का मुकर्रमा व ताइफ़। (फ़ा48) जो कसीरुल माल जत्थेदार हो जैसे कि मक्का मुकर्रमा में वलीद बिन मुग़ीरा और ताइफ़ में उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी अल्लाह तआ़ला उनकी इस बात का रद फ़रमाता है। (फ़ा49) यानी क्या नबुव्वत की कुन्जियां उनके हाथ में हैं कि जिसको चाहें दे दें किस क़दर जाहिलाना बात कहते हैं। (फ़ा50) तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को क़वी किसी को ज़ईफ़ मख़्लूक़ में कोई हमारे हुक्म को बदलने और हमारी तक़दीर से बाहर निकलने की कुदरत नहीं रखता तो जब दुनिया जैसी क़लील चीज़ में किसी को मजाले एतेराज़ नहीं तो नबुव्वत जैसे मन्सबे आ़ली में क्या किसी को दम मारने का मौक़ा है हम जिसे चाहते हैं ग़नी करते हैं जिसे चाहते हैं मख़्दूम बनाते हैं जिसे चाहते हैं फ़क़ीर करते हैं जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं जिसे चाहते हैं उम्मती बनाते हैं अमीर क्या कोई अपनी क़ाबिलियत से हो जाता है?हमारी अ़ता है जिसे जो चाहें करें। (फ़ा51) कुव्वत व दौलत वग़ैरह दुनियवी निअ़मत हैं

(बक़िया सफ़हा 792 का) (फ़ा56) क्योंकि दुनिया और उसके सामान की हमारे नज़दीक कुछ क़द्र नहीं वह सरीअ़तुज़्ज़वाल है। (फ़ा57) जिन्हें दुनिया की चाहत नहीं तिर्मिज़ी की हदीस में है कि अगर अल्लाह तआ़ला के नज़दीक दुनिया मच्छर के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को उससे एक प्यास पानी न देता (क़ालत्तिर्मिज़ी हदीस हसन ग़रीब) दूसरी हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नियाज़मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जाते थे रास्ता में एक मुर्दा बकरी देखी फ़रमाया देखते हो इसके मालिकों ने इसे बहुत बे-क़दरी से फेंक दिया दुनिया की अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़दीक इस मरी हुई बकरी की हो (अख़्रजहुत्तिर्मिज़ी व क़ाल हदीस हसन) हदीस सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुनिया से ऐसा बचाता है जैसा तुम अपने बीमार को पानी से बचाओ (अत्तिर्मिज़ी व क़ाल हसन ग़रीब) हदीस दुनिया मोमिन के लिए क़ैद ख़ाना और काफ़िर के लिए जन्नत है। (फ़ा58) यानी क़ुरआन पाक से अन्धा बन जाये कि उसकी हिदायतों को न देखे और उनसे फ़ाइदा न उठाए। (फ़ा59) यानी अन्धा बनने वालों को। (फ़ा60) वह अन्धा बनने वाले बावजूद गुमराह होने के। (फ़ा61) रोज़े क़ियामत। (फ़ा62) हसरत व नदामत। (फ़ा63) ज़ाहिर व साबित होगया कि दुनिया में शिर्क करके। (फ़ा64) जो गोशे क़बूल नहीं रखते। (फ़ा65) जो चश्मे हक़ बीं से महरूम हैं। (फ़ा66) जिनके नसीब में ईमान नहीं। (फ़ा67) यानी उन्हें अ़ज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें। (फ़ा68) आपके बाद। (फ़ा69) तुम्हारे हयात में उन पर अपना वह अ़ज़ाब

(बक़िया सफ़हा 793 का) की इमामत फ़रमाई जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए जिबरील अमीन ने अ़र्ज़ किया कि ऐ सरवरे अकरम अपने से पहले अम्बिया से दरियाफ़्त फ़रमा लीजिये कि क्या अल्लाह तआ़ला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इजाज़त दी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस सवाल की कुछ हाजत नहीं यानी इसमें कोई शक ही नहीं कि तमाम अम्बिया तौहीद की दावत देते आये सब ने मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाई। (फ़ा76) जो मूसा अ़लैहिस्सलाम की रिसालत पर दलालत करती थीं। (फ़ा77) और उनको जादू बताने लगे। (फ़ा78) यानी हर एक निशानी अपनी खुसूसियत में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी मुराद यह है कि एक से एक आला थी। (फ़ा79) कुफ़्र से ईमान की तरफ़ और यह अ़ज़ाब क़हत साली और तूफ़ान व टिड्डी वग़ैरह से किये गए यह सब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की निशानियां थीं जो उनकी नबुव्वत पर दलालत करती थीं और उन में एक से एक बुलन्द व बाला थी। (फ़ा80) अ़ज़ाब देख कर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से (फ़ा81) यह कलिमा उनके उर्फ़ और मुहावरा में बहुत ताज़ीम व तकरीम का था वह आ़लिम व माहिर व हाज़िक़ कामिल को जादूगर कहा करते थे और इसका सबब यह था कि उनकी नज़र में जादू की बहुत अ़ज़मत थी और वह उसको सिफ़ते मदह समझते थे इस लिए उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को बवक़्ते इल्तेजा इस कलिमा से निदा की कहा। (फ़ा82) वह अ़हद या तो यह है कि आपकी दुआ़ मुस्तजाब है या नबुव्वत या ईमान लाने वालों और हिदायत क़बूल करने वालों पर से अ़ज़ाब उठा लेना। (फ़ा83) ईमान लायेंगे चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की और उन पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। (फ़ा84) ईमान न लाये कुफ़्र पर मुसिर रहे। (फ़ा85) बहुत इफ़्तेख़ार के साथ। (फ़ा86) यह दरियाए नील से निकली हुई बड़ी बड़ी नहरें थीं जो फ़िरऔन के क़स्र के नीचे जारी थीं। (फ़ा87) मेरी अ़ज़मत व कुव्वत और शान व सतवत अल्लाह तआ़ला की अ़जीब शान है ख़लीफ़ा रशीद ने जब यह आयत पढ़ी और हुकूमते मिस्र पर फ़िरऔन का ग़ुरूर देखा तो कहा कि मैं वह मिस्र अपने अदना ग़ुलाम को दे दूंगा चुनान्चे उन्होंने मिस्र ख़ुसैब को दे दिया जो उनका ग़ुलाम था और वुज़ू कराने की ख़िदमत पर मामूर था (फ़ा88) यानी क्या तुम्हारे नज़दीक साबित हो गया और तुमने समझ लिया कि मैं बेहतर हूं (फ़ा89) यह उस बे ईमान मुतकब्बिर ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की शान में कहा (फ़ा90) ज़बान में गिरह होने की वजह से जो बचपन में आग मुंह में रखने से पड़ गई थी और यह उस मलऊन ने झूठ कहा क्योंकि आपकी दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने ज़बाने अक़दस की वह गिरह ज़ाइल कर दी थी लेकिन फ़िरऔनी पहले ही ख़्याल में थे आगे फिर उसी फ़िरऔन कलाम का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा91) यानी अगर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सच्चे हैं और अल्लाह तआ़ला ने उनको वाजिबुल इताअ़त सरदार बनाया है तो उन्हें सोने का कंगन क्यों नहीं पहनाया यह बात उसने अपने ज़माना के दस्तूर के मुताबिक़ कही कि उस ज़माना में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उसको सोने के कंगन और साने का तौक़ पहनाया जाता था। (फ़ा92) और उसके सिद्क़ की गवाही देते। (फ़ा93) उन जाहिलों की अ़क़्ल ख़ब्त कर दी उन्हें बहला फुसला लिया।

(बक़िया सफ़हा 794 का) करते हैं और आपको मालूम है नसारा उन दोनों को पूजते हैं और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते भी पूजे जाते हैं यानी यहूद वग़ैरह उनको पूजते हैं तो अगर यह हज़रात (मआज़ल्लाह) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मअ्बूद भी उनके साथ हों और यह कह कर कुफ़्फ़ार ख़ूब हंसे इस पर यह आयत अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाई इन्नल्लज़ी-न स-ब-क़त् लहुम्-मिन्नल्-.हुस्ना ऊलाअि-क अन्हा मुब्अ़दून और यह आयत नाज़िल हुई व लम्मा ज़ुरि-बब्नु मर्य-म अल्आयत जिसका मतलब यह है कि जब इब्ने ज़बअ़री ने अपने मअ्बूदों के लिए हज़रत ईसा बिन मरयम की मिसाल बयान की और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुजादला किया कि नसारा उन्हें पूजते हैं तो क़ुरैश उसकी इस बात पर हंसने लगे। (फ़ा97) यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम मतलब यह था कि आपके नज़दीक हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम बेहतर हैं तो अगर (मआज़ल्लाह) वह जहन्नम में हुए तो हमारे मअ्बूद यानी बुत भी हुआ करें कुछ परवाह नहीं इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा98) यह जानते हुए कि वह जो कुछ कह रहे हैं बातिल है और आयते करीमा इन्नकुम् व मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि से सिर्फ़ बुत मुराद हैं हज़रत ईसा व हज़रत उज़ैर और मलाइका कोई मुराद नहीं लिए जा सकते इब्ने ज़बअ़री अ़रब था अ़रबी ज़ाबन का जानने वाला था यह उसको ख़ूब मालूम था कि मा तअ्बुदून में जो मा है उसके माना चीज़ के हैं इससे ग़ैर ज़विलउक़ूल मुराद होते हैं लेकिन बावजूद इसके उसका ज़बाने अ़रब के उसूल से जाहिल बन कर हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और मलाइका को इसमें दाख़िल करना कठ हुज्जती और जहल परवरी है। (फ़ा99) बातिल के दरपै होने वाले अब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत इरशाद फ़रमाया जाता है (फ़ा100) नबुव्वत अ़ता फ़रमा कर (फ़ा101) अपनी क़ुदरत का कि बग़ैर बाप के पैदा किया। (फ़ा102) ऐ अहले मक्का हम तुम्हें हलाक कर देते और (फ़ा103) जो हमारी इबादत व इताअ़त करते (फ़ा104) यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान से उतरना अ़लामाते क़ियामत में से है (फ़ा105) यानी मेरी हिदायत व शरीअ़त का इत्तेबाअ़ करना (फ़ा106) शरीअ़त के इत्तेबाअ़ या क़ियामत के यक़ीन या दीने इलाही पर क़ाइम रहने से (फ़ा107) यानी मोअ्जेज़ात (फ़ा108) यानी नबुव्वत और इन्जीली अहकाम (फ़ा109) तौरेत के अहकाम में से। (फ़ा110) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का कलामे मुबारक तमाम हो चुका आगे नसरानियों के शिर्कों का बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा111) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद उनमें से किसी ने कहा कि ईसा ख़ुदा थे किसी ने कहा ख़ुदा के बेटे किसी ने कहा तीन में के तीसरे ग़रज़ नसरानी फ़िरक़े फ़िरक़े हो गए यअ्क़ूबी नस्तूरी मलकानी शमऊनी (फ़ा112) जिन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में कुफ़्र की बातें कहीं। (फ़ा113) यानी रोज़े क़ियामत के।

(बक़िया सफ़हा 795 का) बदी का हुक्म देता था नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना नहीं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो उन में से एक दूसरे को कहता है बुरा भाई बुरा दोस्त बुरा रफ़ीक़। (फ़ा115) यानी जन्नत में तुम्हारा इकराम होगा निअ्मतें दी जायेंगी ऐसे ख़ुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़ुशी के आसार नुमूदार होंगे। (फ़ा116) अनवाअ़ व अक़साम की निअ्मतें (फ़ा117) जन्नती दरख़्त समरदार सदाबहार हैं उनकी ज़ेब व ज़ीनत में फ़र्क़ नहीं आता हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उनसे एक फल लेगा तो दरख़्त में उसकी जगह दो फल नुमूदार हो जायेंगे। (फ़ा118) यानी काफ़िर। (फ़ा119) रहमत की उम्मीद भी न होगी। (फ़ा120) कि सरकशी व नाफ़रमानी करके इस हाल को पहुंचे (फ़ा121) जहन्नम के दारोग़ा को कि (फ़ा122) यानी मौत दे दे मालिक से दरख़्वास्त करेंगे कि वह अल्लाह तबारक व तआ़ला से उनके मौत की दुआ़ करे। (फ़ा123) हज़ार बरस बाद। (फ़ा124) अ़ज़ाब में हमेशा कभी इससे रिहाई न पाओगे न मौत से न और किसी तरह इसके बाद अल्लाह तआ़ला अहले मक्का से ख़िताब फ़रमाता है। (फ़ा125) अपने रसूलों की मअ्रेफ़त (फ़ा126) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का ने। (फ़ा127) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मक्र करने और फ़रेब से ईज़ा पहुंचाने का और दर हक़ीक़त ऐसा ही था कि क़ुरैश दारुन्नदवा में जमा होकर हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ईज़ा रिसानी के लिए हीले सोचते थे। (फ़ा128) उनके इस मक्र व फ़रेब का बदला जिसका अन्जाम उनकी हलाकत है।

(बक़िया सफ़हा 798 का) को मिला दें ताकि फ़िरऔ़न उस में से गुज़र न सके तो आपको हुक्म हुआ (फ़ा23) ताकि फ़िरऔ़नी उन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जायें (फ़ा24) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को इत्मीनान हो गया और फ़िरऔ़न और उसके लश्कर दरिया में ग़र्क़ हो गए और उनका तमाम माल व मताअ़ और सामान यहीं रह गया। (फ़ा25) आरास्ता पैरास्ता मुज़य्यन। (फ़ा26) ऐश करते इतराते

(बक़िया सफ़हा 799 का) किसी नये जमे हुए दरख़्त या पौदे को कहे कि इसमें से अब फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस दरख़्त से फल निकल सकता है तो उसको जाहिल क़रार दिया जाएगा और इसका इन्कार महज़ हुमुक़ या मुकाबरा होगा (फ़ा37) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का ज़ोर व क़ुव्वत में (फ़ा38) तुब्बअ़ हिमयरी बादशाहे यमन साहबे ईमान थे और उनकी क़ौम काफ़िर थी जो निहायत क़वी ज़ोर आवार और कसीरुत्तादाद थी (फ़ा39) काफ़िर उम्मतों में से (फ़ा40) उनके कुफ़्र के बाइस (फ़ा41) काफ़िर मुन्किर बअ्स (फ़ा42) अगर मरने के बाद उठना और हिसाब व सवाब न हो तो ख़ल्क़ की पैदाइश महज़ फ़ना के लिए होगी और यह अबस व लअ्ब है तो इस दलील से साबित हुआ कि इस दुनियवी ज़िन्दगी के बाद उख़रवी ज़िन्दगी ज़रूर है जिसमें हिसाब व जज़ा हो। (फ़ा43) कि ताअ़त पर सवाब दें और मअ़्सियत पर अ़ज़ाब करें (फ़ा44) कि पैदा करने की हिकमत यह है और हकीम का फ़ेअ्ल अ़बस नहीं होता (फ़ा45) यानी रोज़े क़ियामत जिसमें अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा। (फ़ा46) और क़राबत व मुहब्बत नफ़ा न देगी।

(बक़िया सफ़हा 802 का) किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और एक क़ौल यह है कि जब आयत *मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-नन्* नाज़िल हुई तो फ़िनहास यहूदी ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का रब मुहताज हो गया (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) इसको सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने तलवार खींची और उसकी तलाश में निकले हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आदमी भेजकर उन्हें वापस बुलवा लिया। (फ़ा18) यानी उनके आमाल का (फ़ा19) नेकी और बदी का सवाब और अ़ज़ाब उसके करने वाले पर है (फ़ा20) वह नेकों और बदों को उनके आमाल की जज़ा देगा (फ़ा21) यानी तौरेत। (फ़ा22) उनमें बकसरत अम्बिया पैदा करके।

(बक़िया सफ़हा 803 का) करामत पर होती है और काफ़िर की रहमत से मायूसी और नदामत पर शाने नुज़ूल मुशरिकीने मक्का की एक जमाअ़त ने मुसलमानों से कहा था कि अगर तुम्हारी बात हक़ हो और मरने के बाद उठना हो तो भी हम ही अफ़ज़ल रहेंगे जैसा कि दुनिया में हम तुम से बेहतर रहे उनकी रद में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा36) मुख़ालिफ़ सरकश मुख़्लिस फ़रमांबरदार के बराबर कैसे हो सकता है मोमिनीन जन्नाते आलियात में इज़्ज़त व करामत और ऐश व राहत पायेंगे और कुफ़्फ़ार अस्फ़लुस्साफ़लीन में ज़िल्लत व इहानत के साथ सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे। (फ़ा37) कि उसकी कुदरत व वहदानियत की दलील हो (फ़ा38) नेक नेकी का और बद बदी का इस आयत से मालूम हुआ कि इस आ़लम की पैदाइश से इज़्हारे अ़द्ल व रहमत मक़्सूद है और यह पूरी तरह क़ियामत ही में हो सकता है कि अहले हक़ और अहले बातिल में इम्तियाज़ कामिल हो मोमिन मुख़्लिस दर्जात जन्नत में हों और काफ़िर नाफ़रमान दरकाते जहन्नम में।

(बक़िया सफ़हा 804 का) उनके जवाब से आ़जिज़ होते हैं (फ़ा49) ज़िन्दा करके (फ़ा50) इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा करके उठाये जायेंगे (फ़ा51) दुनिया में बाद इसके कि तुम बेजान नुत्फ़ा थे (फ़ा52) तुम्हारी उम्रें पूरी होने के वक़्त (फ़ा53) ज़िन्दा करके तो जो परवरदिगार ऐसी क़ुदरत वाला है वह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी बिलयक़ीन क़ादिर है वह सब को ज़िन्दा करेगा (फ़ा54) उसको कि अल्लाह तआ़ला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उनका न जानना दलाइल की तरफ़ मुलतफ़त न होने और ग़ौर न करने के बाइस है (फ़ा55) यानी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा (फ़ा56) यानी हर दीन वाले (फ़ा57) और फ़रमाया जाएगा।

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ
اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ
قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ

सूरतुल अह्काफ़ि

मक्की है इसमें 35 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामीम्(1)तन्ज़ीलुल् किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् ह़कीम(2)मा ख़–लक़्नस्समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा इल्ला बिल्–ह़क़्क़ि व अ–जलिम् मुसम्मन् वल्लज़ी–न क–फ़रू अ़म्मा उन्ज़िरू मुअ़्रिज़ून(3)क़ुल् अ–रऐतुम् मा तदअ़ू–न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़–लक़ू मिनल् अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति ईतूनी बिकिताबिम् मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असा–रतिम् मिन् अ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(4)व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यदअ़ू. मिन् दूनिल्लाहि मल्ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल् क़िया–मति व हुम् अ़न् दुआइहिम् ग़ाफ़िलून(5)व इज़ा हुशि–रन्नासु कानू लहुम् अअ़्दाअंव व कानू बिअ़िबा–दतिहिम् काफ़िरीन(6)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ा–लल् लज़ी–न क–फ़रू लिल्ह़क़्क़ि

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

हामी–म्(1) यह किताब (फ़ा2) उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ़ से(2) हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है मगर हक़ के साथ (फ़ा3) और एक मुक़र्रर मीआ़द पर (फ़ा4) और काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए (फ़ा5) मुंह फेरे हैं।(3) (फ़ा6) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वह जो तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो (फ़ा7) मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा ज़र्रा बनाया या आसमान में उनका कोई हिस्सा है मेरे पास लाओ इससे पहली कोई किताब (फ़ा8) या कुछ बचा खुचा इल्म (फ़ा9) अगर तुम सच्चे हो।(4) (फ़ा10) और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजे (फ़ा11) जो क़ियामत तक उसकी न सुनें और उन्हें उनकी पूजा की ख़बर तक नहीं।(5) (फ़ा12) और जब लोगों का हश्र होगा वह उनके दुश्मन होंगे (फ़ा13) और उनसे मुन्किर हो जायेंगे।(6) (फ़ा14) और जब उन पर (फ़ा15) पढ़ी जायें हमारी रौशन आयतें तो काफ़िर अपने पास आए हुए हक़ को (फ़ा16)

(फ़ा1) सूरह अहक़ाफ़ मक्की है मगर बाज़ के नज़दीक इसकी चन्द आयतें मदनी हैं जैसे कि आयत क़ुल् अ–र–ऐतुम् और आयत फ़स्बिर् कमा स–ब–र और तीन आयतें व वस्सैनल् इन्सा–न बिवालिदैहि इस सूरत में चार रुकूअ़् और पैंतीस आयतें और 344 कलिमे और 2595 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा3) कि हमारी क़ुदरत व वहदानियत पर दलालत करें। (फ़ा4) वह मुक़र्रर मीआ़द रोज़े क़ियामत है जिसके आ जाने पर आसमान व ज़मीन फ़ना हो जायेंगे। (फ़ा5) इस चीज़ से मुराद या अ़ज़ाब है या रोज़े क़ियामत की वहशत या क़ुरआन पाक जो बअ़्स व हिसाब का ख़ौफ़ दिलाता है। (फ़ा6) कि इस पर ईमान नहीं लाते। (फ़ा7) यानी बुत जिन्हें मअ़्बूद ठहराते हो (फ़ा8) जो अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन से पहले उतारी हो मुराद यह है कि यह किताब यानी क़ुरआन मजीद तौहीद और इबताले शिर्क पर नातिक़ है और जो किताब भी इससे पहले अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आई उसमें यही बयान है तुम क़ुतुबे इलाहिया में से कोई एक किताब तो ऐसी ले आओ जिसमें तुम्हारे दीन (बुत परस्ती) की शहादत हो। (फ़ा9) पहलों का। (फ़ा10) अपने इस दावे में कि ख़ुदा का कोई शरीक है जिसकी इबादत का उसने तुम्हें हुक्म दिया है। (फ़ा11) यानी बुतों को (फ़ा12) क्योंकि वह जमाद बे जान हैं (फ़ा13) यानी बुत अपने पुजारियों के (फ़ा14) और कहेंगे कि हमने उन्हें अपनी इबादत की दावत नहीं दी दर हक़ीक़त यह अपनी ख़्वाहिशों के परिस्तार थे (फ़ा15) यानी अहले मक्का पर (फ़ा16) यानी क़ुरआन शरीफ़ को बग़ैर ग़ौर व फ़िक्र किये और अच्छी तरह सुने

لَمَّا جَآءَهُمْ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ
شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ؕ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَاۤ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَ لَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى
اِلَيَّ وَ مَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَ
اسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ؕ وَ اِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ
هٰذَاۤ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَ هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝

लम्मा जा–अहुम् हाज़ा सिह्रुम् मुबीन(7)अम् यक़ूलू–नफ़्तराहु कुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़ला तम्लिकू–न ली मि–नल्लाहि शैअन् हु–व अअ्–लमु बिमा तुफ़ीजू–न फ़ीहि कफ़ा बिही शहीदम् बैनी व बै–नकुम् व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम(8)कुल् मा कुन्तु बिदअ़म् मि–नर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ़्अलु बी व ला बिकुम् इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्–य व मा अना इल्ला नज़ीरुम् मुबीन(9)कुल् अ–रऐतुम् इन् का–न मिन् अ़िन्दिल्लाहि व क–फ़र्तुम् बिही व शहि–द शाहिदुम् मिम् बनी इस्राई–ल अ़ला मिस्लिही फ़आ–म–न वस्तक्बर्तुम् इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ा–लिमीन(10)व क़ालल् लज़ी–न क–फ़रू लिल्लज़ी–न आ–मनू लौ का–न ख़ै–रम् मा स–बक़ूना इलैहि व इज् लम् यह्–तदू बिही फ़–स–यक़ूलू–न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम(11)व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव् व रह्म–तन् व हाज़ा किताबुम् मु–सद्दिकुल् लिसानन् अ़–रबिय्यल् लियुन्ज़ि–रल् लज़ी–न ज़–लमू व बुश्रा लिल्मुह्सिनीन(12)

कहते हैं यह खुला जादू है।(7) (फ़ा17) क्या कहते हैं उन्होंने उसे जी से बनाया (फ़ा18) तुम फ़रमाओ अगर मैं ने उसे जी से बना लिया होगा तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख़्तियार नहीं रखते (फ़ा19) वह ख़ूब जानता है जिन बातों में तुम मश्ग़ूल हो (फ़ा20) और वह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह और वही बख़्शने वाला मेहरबान है।(8) (फ़ा21) तुम फ़रमाओ मैं कोई अनोखा रसूल नहीं (फ़ा22) और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या (फ़ा23) मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मुझे 'वही' होती है (फ़ा24) और मैं नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला।(9) तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर वह क़ुरआन अल्लाह के पास से हो और तुम ने इसका इन्कार किया और बनी इसराईल का एक गवाह (फ़ा25) उस पर गवाही दे चुका (फ़ा26) तो वह ईमान लाया और तुम ने तकब्बुर किया (फ़ा27) बेशक अल्लाह राह नहीं देता ज़ालिमों को।(10) (रुकूअ़ 1) और काफ़िरों ने मुसलमानों को कहा अगर इसमें (फ़ा28) कुछ भलाई होती तो यह (फ़ा29) हम से आगे उस तक न पहुंच जाते (फ़ा30) और जब उन्हें उसकी हिदायत न हुई तो अब (फ़ा31) कहेंगे कि यह पुराना बोहतान है।(11) और इससे पहले मूसा की किताब (फ़ा32) है पेशवा और मेहरबानी और यह किताब है तस्दीक़ फ़रमाती (फ़ा33) अ़रबी ज़बान में कि ज़ालिमों को डर सुनाए और नेकों को बशारत।(12)

(फ़ा17) कि उसके जादू होने में शुबहा नहीं और उससे भी बद तर बात कहते हैं जिसका आगे ज़िक्र है। (फ़ा18) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने। (फ़ा19) यानी अगर बिलफ़र्ज़ मैं दिल से बनाता और उसको अल्लाह तआ़ला का कलाम बताता तो वह अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तेरा होता और अल्लाह तबारक व तआ़ला ऐसे इफ़्तेरा करने वाले को जल्द उक़ूबत में गिरिफ़्तार करता है तुम्हें तो यह क़ुदरत नहीं कि तुम उसकी उक़ूबत से बचा सको या उसके अ़ज़ाब को दफ़ा कर सको तो किस तरह हो सकता है कि मैं तुम्हारी वजह से अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तेरा करता। (फ़ा20) और जो कुछ क़ुरआन पाक की निस्बत कहते हो (फ़ा21) यानी अगर तुम कुफ़्र से तौबा करके ईमान लाओ तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाएगा और तुम पर रहमत करेगा। (फ़ा22) मुझ से पहले भी रसूल आ चुके हैं तो तुम क्यों नबुव्वत का इन्कार करते हो। (फ़ा23) इसके माना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं एक तो यह कि क़ियामत में जो मेरे और तुम्हारे साथ किया जाएगा वह मुझे मालूम नहीं यह माना हों तो यह आयत मन्सूख़ है मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो मुशरिक ख़ुश हुए और कहने लगे कि लात व उज़्ज़ा की क़सम अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक हमारा और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का यकसाँ हाल है उन्हें हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत नहीं अगर यह क़ुरआन उनका अपना बनाया हुआ न होता **(बक़िया सफ़हा 832 पर)**

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ
سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ
إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ

इन्नल्लज़ी–न क़ालू रब्बु–नल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्–ज़नून (13) उलाइ–क अस्हाबुल् जन्नति ख़ालिदी–न फ़ीहा जज़ाअम् बिमा कानू यअ़्–मलून(14)व वस्सैनल् इन्सा–न बि–वालिदैहि इह़्सानन् ह़–म–लत्हु उम्मुहू कुरहंव् व व–ज़–अ़त्हु कुरहन् व ह़म्लुहू व फ़िसालुहू सलासू–न शहरन् ह़त्ता इज़ा ब–ल–ग़ अशुद–दहू व ब–ल–ग़ अर्–बअ़ी–न स–न–तन् क़ा–ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु–र निअ़्म–त–कल् लती अन्–अ़म्–त अ़–लय्–य व अ़ला वालिदय्–य व अन् अअ़्–म–ल सालिह़न् तर्ज़ाहु व अस्लिह़् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती इन्नी तुब्तु इलै–क व इन्नी मिनल् मुस्लिमीन(15)उलाइ–कल् लज़ी–न न–त–क़ब्बलु अ़न्हुम् अह़्–स–न मा अ़मिलू व न–तजा–वज़ु अ़न् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्हाबिल् जन्नति वअ़्दस् सिद्क़िल् लज़ी कानू यू–अ़दून(16) वल्लज़ी क़ा–ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल् लकुमा अ–तअ़िदानिनी अन् उख़्–र–ज व क़द ख़–लतिल् क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ी–सानिल्ला–ह वै–ल–क आमिन् इन्–न वअ़्दल्लाहि

बेशक वह जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर साबित क़दम रहे (फ़ा34) न उन पर ख़ौफ़ (फ़ा35) न उनको ग़म।(13) (फ़ा36) वह जन्नत वाले हैं हमेशा उसमें रहेंगे उनके आमाल का इनाम।(14) और हमने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे उसकी माँ ने उसे पेट में रखा तकलीफ़ से और जनी उसको तकलीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीना में है (फ़ा37) यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा (फ़ा38) और चालीस बरस का हुआ (फ़ा39) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी निअ़्मत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर (फ़ा40) की और मैं वह काम करूं जो तुझे पसन्द आए (फ़ा41) और मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह रख (फ़ा42) मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाया (फ़ा43) और मैं मुसलमान हूं।(15) (फ़ा44) यह हैं वह जिनकी नेकियां हम क़बूल फ़रमायेंगे (फ़ा45) और उनकी तक़्सीरों से दरगुज़र फ़रमायेंगे जन्नत वालों में सच्चा वादा जो उन्हें दिया जाता था।(16) (फ़ा46) और वह जिसने अपने माँ बाप से कहा (फ़ा47) उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे यह वादा देते हो कि फिर ज़िन्दा किया जाऊँगा हालांकि मुझ से पहले संगतें गुज़र चुकीं (फ़ा48) और वह दोनों (फ़ा49) अल्लाह से फ़रियाद करते हैं तेरी ख़राबी हो ईमान ला बेशक अल्लाह का वादा

(फ़ा34) अल्लाह तआ़ला की तौहीद और सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त पर दमे आख़िर तक (फ़ा35) क़ियामत में (फ़ा36) मौत के वक़्त (फ़ा37) मसलाः इस आयत से साबित होता है कि अक़्ल मुद्दते हमल छः माह है क्योंकि जब दूध छुड़ाने की मुद्दत दो साल हुई जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ह़ौलैनि कामिलैनि तो हमल के लिए छः माह बाक़ी रहे यही क़ौल है इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुहम्मद रहमहुमुल्लाहि तआ़ला का और हज़रत इमाम साहब रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक इस आयत से रिज़ाअ़ की मुद्दत ढाई साल साबित होती है मसला की तफ़ासील मअ़ दलाइल कुतुबे उसूल में मज़कूर हैं। (फ़ा38) और अ़क़्ल व कुव्वत मुस्तहकम हुई और यह बात तीस से चालीस साल तक की उम्र में हासिल होती है (फ़ा39) यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई आपकी उम्र सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दो साल कम थी जब हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की उम्र अट्ठारह साल की हुई तो आपने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सोहबत इख़्तियार की उस वक़्त हुज़ूर की उम्र शरीफ़ बीस साल की थी हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की हमराही में बग़र्ज़े तिजारत मुल्के शाम का सफ़र किया एक मन्ज़िल पर ठहरे वहां एक बेरी का दरख़्त था हुज़ूर सय्यदे आ़लम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम उसके साया में तशरीफ़ फ़रमा हुए क़रीब ही एक राहिब रहता था हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु उसके पास चले गए राहिब ने आपसे कहा यह कौन साहब हैं जो उस बेरी के साया में जलवा फ़रमा हैं हज़रत सिद्दीक़ **(बक़िया सफ़हा 839 पर)**

اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا

خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ

حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَاذْكُرْ

اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۲۱﴾

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

हक़्क़ुन् फ़–यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(17)उलाइ–कल् लज़ी–न हक़्–क़ अ़लैहिमुल्क़ौलु फ़ी उ–ममिन् क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहिम् मि–नलजिन्नि वल्इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन(18) व लिकुल्लिन् द–रजातुम् मिम्मा अ़मिलू व लियुवफ़्फ़ि–यहुम् अअ़्मा–लहुम् व हुम् ला युज़्लमून(19) व यौ–म युअ़्–रज़ुल् लज़ी–न क–फ़रू अ़–लन्नारि अज़्–हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फ़ी हयातिकु–मुद–दुन्या वस्तम्तअ़्तुम् बिहा फ़ल्यौ–म तुज्ज़ौ–न अ़ज़ाबल् हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू–न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ू–न(20)वज़्कुर् अख़ा आदिन् इज़् अन्ज़–र क़ौ–महू बिल्–अह्क़ाफ़ि व क़द् ख़–लतिन्नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला–ह इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(21)क़ालू अजिअ्–तना लि–तअ्फ़ि–कना अ़न् आलि–हतिना फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्–त मि–नस्–सादिक़ीन(22) क़ा–ल इन्नमल् अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व उ–बल्लिगु–कुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन्

सच्चा है (फ़ा50) तो कहता है यह तो नहीं मगर अगलों की कहानियां।(17) यह वह हैं जिन पर बात साबित हो चुकी (फ़ा51) उन गरोहों में जो उन से पहले गुज़रे जिन्न और आदमी बेशक वह ज़ियांकार थे।(18) और हर एक के लिए (फ़ा52) अपने अपने अ़मल के दर्जे हैं (फ़ा53) और ताकि अल्लाह उनके काम उन्हें पूरे भर दे। (फ़ा54) और उन पर ज़ुल्म न होगा(19) और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जायेंगे उनसे फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुनिया ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके (फ़ा55) तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उसकी कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उसकी कि हुक्म उ़दूली करते थे।(20) (फ़ा56) (रुकूअ़ 2) और याद करो आ़द के हम क़ौम (फ़ा57) को जब उसने उनको सर ज़मीने अहक़ाफ़ में डराया (फ़ा58) और बेशक उससे पहले डर सुनाने वाले गुज़र चुके और उसके बाद आए कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है।(21) बोले क्या तुम इस लिए आए कि हमें हमारे मअ़बूदों से फेर दो तो हम पर लाओ (फ़ा59) जिसका हमें वादा देते हो अगर तुम सच्चे हो।(22) (फ़ा60) उसने फ़रमाया (फ़ा61) इसकी ख़बर तो अल्लाह ही के पास है (फ़ा62) मैं तो तुम्हें अपने रब के प्याम पहुंचाता हूं हां मेरी दानिस्त में तुम निरे

(फ़ा50) मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाने का (फ़ा51) अ़ज़ाब की। (फ़ा52) मोमिन हो या काफ़िर (फ़ा53) यानी मनाज़िल व मरातिब हैं अल्लाह तआ़ला के नज़दीक रोज़े क़ियामत जन्नत के दर्जात बुलन्द होते चले जाते हैं और जहन्नम के दर्जात पस्त होते चले जाते हैं तो जिनके अ़मल अच्छे हों वह जन्नत के ऊँचे दर्जे में होंगे और जो कुफ़्र व मअ़्सियत में इन्तेहा को पहुंच गए हों वह जहन्नम के सब से नीचे दर्जे में होंगे। (फ़ा54) यानी मोमिनों और काफ़िरों को फ़रमांबरदारी और नाफ़रमानी की पूरी जज़ा दे। (फ़ा55) यानी लज़्ज़त व ऐश जो तुम्हें पाना था वह सब दुनिया में तुमने ख़त्म कर दिया अब तुम्हारे लिए आख़िरत में कुछ भी बाक़ी न रहा और बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तय्यिबात से क़ुवाए जिस्मानिया और जवानी मुराद है और माना यह हैं कि तुमने अपनी जवानी और अपनी क़ुव्वतों को दुनिया के अन्दर कुफ़्र व मअ़्सियत में ख़र्च कर दिया। (फ़ा56) इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने दुनियवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ फ़रमाई तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के असहाब ने लज़्ज़ाते दुनियविया से किनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात तक हुज़ूर के अहले बैत ने कभी जौ की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई यह भी हदीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराय अक़दस में आग न जलती थी **(बक़िया सफ़हा 839 पर)**

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ
رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّ
اَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ
اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ
وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا

तज्–हलून(23)फ़–लम्मा र–औहु आरिज़म् मुस्तक़्बि–ल औदि–यतिहिम् क़ालू हाज़ा आरिज़ुम् मुम्तिरुना बल् हु–व मस्तअ्–जल्तुम् बिही रीहुन् फ़ीहा अज़ाबुन् अलीम(24)तुदम्मिरु कुल्–ल शैइम् बिअम्रि रब्बिहा फ़–अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम् कज़ालि–क नज्ज़िल् क़ौमल् मुज्रिमीन(25) व ल–क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्मक्कन्नाकुम् फ़ीहि व ज–अल्ना लहुम् सम्अंव् व अब्सारंव् व अफ़्इ–द–तन् फ़मा अग्ना अन्हुम् सम्अुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ़्इ–दतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्–हदू–न बिआयातिल्लाहि व हा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(26)व ल–क़द् अह्–लक्ना मा हौ–लकुम् मिनल्क़ुरा व सर्रफ़्नल् आयाति ल–अल्लहुम् यरजिऊन(27)फ़लौला न–स–रहुमुल् लज़ीनत् त–ख़–ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि–ह–तन् बल् ज़ल्लू अन्हुम् व ज़ालि–क इफ़्कुहुम् व मा कानू यफ़्तरून(28)व इज़् स–रफ़्ना इलै–क न–फ़–रम् मिनल्जिन्नि यस्तमिऊ–नल् क़ुरआ–न फ़–लम्मा ह–ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ़–लम्मा क़ुज़ि–य वल्लौ

जाहिल लोग हो।(23) (फ़ा63) फिर जब उन्होंने अ़ज़ाब को देखा बादल की तरह आसमान के किनारे में फैला हुआ उनके वादियों की तरफ़ आता (फ़ा64) बोले यह बादल है कि हम पर बरसेगा (फ़ा65) बल्कि यह तो वह है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे एक आंधी है जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब।(24) हर चीज़ को तबाह कर डालती है अपने रब के हुक्म से (फ़ा66) कि सुबह रह गए कि नज़र न आते थे मगर उनके सूने मकान हम ऐसी ही सज़ा देते हैं मुजरिमों को।(25) और बेशक हमने उनहें वह मक़दूर दिये थे जो तुम को न दिये (फ़ा67) और उनके लिए कान और आँख और दिल बनाए (फ़ा68) तो उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आए जब कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अ़ज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे।(26) (रुकूअ् 3) और बेशक हमने हलाक कर दीं (फ़ा69) तुम्हारे आस पास की बस्तियां (फ़ा70) और तरह तरह की निशानियां लाए कि वह बाज़ आयें।(27) (फ़ा71) तो क्यों न मदद की उनकी (फ़ा72) जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा क़ुर्ब हासिल करने को ख़ुदा ठहर रखा था (फ़ा73) बल्कि वह उनसे गुम गए (फ़ा74) और यह उनका बोहतान व इफ़्तिरा है।(28) (फ़ा75) और जब कि हमने तुम्हारी तरफ़ कितने जिन्न फेरे (फ़ा76) कान लगा कर क़ुरआन सुनते फिर जब वहां हाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो (फ़ा77) फिर जब पढ़ना हो चुका

(फ़ा63) जो अ़ज़ाब में जल्दी करते हो और अ़ज़ाब को जानते नहीं हो कि क्या चीज़ है (फ़ा64) और मुद्दत दराज़ से उनकी सरज़मीन में बारिश न हुई थी उस काले बादल को देख कर ख़ुश हुए (फ़ा65) हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया। (फ़ा66) चुनांचे उस आंधी के अ़ज़ाब ने उनके मर्दों औरतों छोटों बड़ों को हलाक कर दिया उनके अमवाल आसमान व ज़मीन के दर्मियान उड़ते फिरते थे चीज़ें पारा पारा हो गईं हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने अपने और अपने ऊपर ईमान लाने वालों के गिर्द एक ख़त खींच दिया था हवा जब उस ख़ित्ता के अन्दर आती तो निहायत नर्म पाकीज़ा फ़रहत अंगेज़ सर्द और वही हवा क़ौम पर शदीद सख़्त मुहलिक और यह हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम का एक मोअ्जेज़ए अ़ज़ीमा था। (फ़ा67) ऐ अहले मक्का वह क़ुव्वत व माल और तूले उम्र में तुम से ज़्यादा थे। (फ़ा68) ताकि दीन के काम में लायें मगर उन्होंने सिवाए दुनिया की तलब के उन ख़ुदादाद निअ्मतों से दीन का काम ही नहीं लिया। (फ़ा69) ऐ क़ुरैश। (फ़ा70) मिस्ल समूद व आ़द व क़ौमे लूत के (फ़ा71) कुफ़्र व तुग़यान से लेकिन वह बाज़ न आये तो हमने उन्हें उनके कुफ़्र के सबब हलाक कर दिया। (फ़ा72) उन कुफ़्फ़ार की उन बुतों ने (फ़ा73) और जिनकी निस्बत यह कहा करते थे कि उन बुतों के पूजने से अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होता है। (फ़ा74) और नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त काम न आये। (फ़ा75) कि वह बुतों को मअ्बूद **(बक़िया सफ़हा 839 पर)**

إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿٢٩﴾ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾
يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾ وَمَن لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن
يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ
يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन(29)क़ालू या क़ौ–मना इन्ना समिअ्ना किताबन् उन्ज़ि–ल मिम् बअ्दि मूसा मु–सद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि यह्दी इलल्हक़्क़ि व इला तरीक़िम् मुस्तक़ीम(30)या क़ौ–मना अजीबू दाअि–यल्लाहि व आमिनू बिहि यग़्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(31)व मल्ला युजिब् दाअि–यल्लाहि फ़लै–स बिमुअ्जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै–स लहू मिन् दूनिही औलिया–उ उलाइ–क फ़ी ज़लालिम् मुबीन(32)अ–व लम् यरौ अन्नल्लाहल् लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ व लम् यअ्–य बि–ख़ल्क़िहिन्–न बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि–यल् मौता बला इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(33)व यौ–म युअ्–रज़ुल् लज़ी–न क–फ़रू अ़लन्नारि अलै–स हाज़ा बिल्हक़्क़ि क़ालू बला व रब्बिना क़ा–ल फ़ज़ूक़ुल् अ़ज़ा–ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून(34) फ़स्बिर् कमा स–ब–र उलुल् अ़ज़्मि मि–नर्रुसुलि व ला तस्तअ्जिल् लहुम् क–अन्नहुम् यौ–म यरौ–न मा यू–अ़दू–न लम् यल्बसू इल्ला सा–अ़तम् मिन् नहारिन् बलाग़ुन् फ़–हल् युह्लकु इल्लल्–क़ौमुल् फ़ासिक़ून(35)

अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते पलटे।(29) (फ़ा78) बोले ऐ हमारी क़ौम हमने एक किताब सुनी (फ़ा79) कि मूसा के बाद उतारी गई (फ़ा80) अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती।(30) ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मुनादी (फ़ा81) की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे (फ़ा82) और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।(31) और जो अल्लाह के मुनादी की बात न माने वह ज़मीन में क़ाबू से निकल कर जाने वाला नहीं (फ़ा83) और अल्लाह के सामने उसका कोई मददगार नहीं (फ़ा84) वह (फ़ा85) खुली गुमराही में हैं।(32) क्या उन्होंने (फ़ा86) न जाना कि वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और उनके बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए क्यों नहीं बेशक वह सब कुछ कर सकता है।(33) और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जायेंगे उन से फ़रमाया जाएगा क्या यह हक़ नहीं कहेंगे क्यों नहीं हमारे रब की क़सम फ़रमाया जाएगा तो अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।(34) (फ़ा87) तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया (फ़ा88) और उनके लिए जल्दी न करो (फ़ा89) गोया वह जिस दिन देखेंगे (फ़ा90) जो उन्हें वादा दिया जाता है (फ़ा91) दुनिया में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर यह पहुंचाना है (फ़ा92) तो कौन हलाक किये जायेंगे मगर बे-हुक्म लोग।(35) (फ़ा93) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा78) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाकर हुज़ूर के हुक्म से अपनी क़ौम की तरफ़ ईमान की दावत देने गए और उन्हें ईमान न लाने और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुख़ालफ़त से डराया। (फ़ा79) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा80) अ़ता ने कहा चूंकि वह जिन्न दीने यहूदियत पर थे इस लिए उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र किया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की किताब का नाम न लिया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की किताब का नाम न लेने का बाइस यह है कि इसमें सिर्फ़ मवाइज़ हैं अहकाम बहुत ही कम हैं। (फ़ा81) सय्यदे आ़लम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा82) जो इस्लाम से पहले हुए और जिनमें हक़्क़ुलइबाद नहीं। (फ़ा83) अल्लाह तआ़ला से कहीं भाग नहीं सकता और उसके अ़ज़ाब से बच नहीं सकता। (फ़ा84) जो उसे अ़ज़ाब से बचा सके। (फ़ा85) जो अल्लाह तआ़ला के मुनादी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बात न मानें। (फ़ा86) यानी मुन्किरीने बअ़्स ने। (फ़ा87) जिसके तुम दुनिया में मुरतकिब हुए थे उसके बाद अल्लाह तआ़ला **(बक़िया सफ़हा 839 पर)**

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ڎ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڔ ذٰلِكَ ڔ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝

सूरतु मुहम्मदिन्

(मक्की है इस सूरह में 38 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

अल्लज़ी–न क–फ़रू व स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अ–ज़ल्–ल अअ़्मा–लहुम्(1)वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति व आ–मनू बिमा नुज़्ज़ि–ल अ़ला मुहम्मदिंव् व हुवल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् कफ़्फ़–र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्–ल–ह़ बा–लहुम्(2)ज़ालि–क बि–अन्नल्लज़ी–न क–फ़रुत् त–बअ़ुल्बाति–ल व अन्नल्लजी–न आ–मनुत् त–बअ़ुल्–ह़क़्–क़ मिर्–रब्बिहिम् कज़ालि–क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सा–लहुम्(3)फ़–इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी–न क–फ़रू फ़–ज़र्बर् रिक़ाबि ह़त्ता इज़ा अस्ख़न्तुमू–हुम् फ़शुद्दुल् वसा–क़ फ़–इम्मा मन्नम् बअ़्दु व इम्मा फ़िदाअन् ह़त्ता त–ज़–अ़ल् ह़र्बु औज़ा–रहा ज़ालि–क व लौ यशाउल्लाहु लन्त–स–र मिन्हुम् व लाकिल् लियब्लु–व बअ़्–ज़कुम् बिबअ़्ज़िन् वल्लज़ी–न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़लंय्यु–ज़िल्–ल अअ़्मा–लहुम्(4)स–यह्दीहिम् व युस्लिहु बा–लहुम्(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका (फ़ा2) अल्लाह ने उनके अ़मल बरबाद किये।(1) (फ़ा3) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया (फ़ा4) और वही उनके रब के पास से हक़ है अल्लाह ने उनकी बुराईयां उतार दीं और उनकी हालतें संवार दीं।(2) (फ़ा5) यह इस लिए कि काफ़िर बातिल के पैरो हुए और ईमान वालों ने हक़ की पैरवी की जो उनके रब की तरफ़ से है (फ़ा6) अल्लाह लोगों से उनके अह़वाल यूंही बयान फ़रमाता है।(3) (फ़ा7) तो जब काफ़िरों से तुम्हारा सामना हो (फ़ा8) तो गर्दनें मारना है (फ़ा9) यहां तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो (फ़ा10) तो मज़बूत बांधो फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो चाहे फ़िदया ले लो (फ़ा11) यहां तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे (फ़ा12) बात यह है और अल्लाह चाहता तो आप ही उन से बदला लेता (फ़ा13) मगर इसलिए (फ़ा14) कि तुम में एक को दूसरे से जांचे (फ़ा15) और जो अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह हरगिज़ उनके अ़मल ज़ाया न फ़रमाएगा।(4) (फ़ा16) जल्द उन्हें राह देगा (फ़ा17) और उनका काम बना देगा।(5)

(फ़ा1) सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मदनी है इसमें चार रुकूअ़ और अड़तीस आयतें 558 कलिमे 2475 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी जो लोग खुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्होंने इस्लाम से रोका। (फ़ा3) जो कुछ भी उन्होंने किये हों ख़्वाह भूखों को खिलाया हो या असीरों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदे हराम यानी ख़ानए कअ़्बा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो सब बरबाद हुई आख़िरत में उसका कुछ सवाब नहीं ज़हाक का क़ौल है कि मुराद यह है कि कुफ़्फ़ार ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए जो मक्र सोचे थे और हीले बनाये थे अल्लाह तआ़ला ने उनके वह तमाम काम बातिल कर दिये। (फ़ा4) यानी क़ुरआन पाक। (फ़ा5) उमूरे दीन में तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर और दुनिया में उनके दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी मदद फ़रमा कर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उनके अय्यामे हयात में उनकी हिफ़ाज़त फ़रमा कर कि उनसे इसियान वाक़ेअ़ न हो। (फ़ा6) यानी **(बक़िया सफ़हा 839 पर)**

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
اَمْثَالُهَا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ
اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ

व युदख़िलुहुमुल् जन्न–त अर्र–फ़हा लहुम्(6)या अय्युहल् लज़ी–न आ–मनू इन् तन्सुरुल्ला–ह यन्सुर्कुम् व युसब्बित् अक़्दा मकुम्(7)वल्लज़ी–न क–फ़रू फ़–तअ्–सल् लहुम् व अ–ज़ल्–ल अअ्मा–लहुम्(8)ज़ालि–क बि–अन्नहुम् करिहू मा अन्ज़–लल्लाहु फ़–अह़्ब–त़ अअ्मा–लहुम् (9) अ–फ़–लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्जुरू कै–फ़ का–न आ़कि–बतुल् लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् दम्म–रल्लाहु अ़लैहिम् व लिल्काफ़िरी–न अम्सालुहा(10)ज़ालि–क बिअन्नल्ला–ह मौलल् लज़ी–न आ–मनू व अन्नल् काफ़िरी–न ला मौला लहुम्(11)इन्नल्ला–ह युदख़िलुल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तजरी मिन् तह़्तिहल् अन्हारु वल्लज़ी–न क–फ़रू य–त–मत्तअू–न व यअ्कुलू–न कमा तअ्कुलुल् अन्आमु वन्नारु मस्वल् लहुम्(12)व क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् हि–य अशद्दु क़ुव्वतम् मिन् क़र्–यति–कल् लती अख़्–र–जत्–क अह्–लक्नाहुम् फ़ला नासि–र लहुम्(13)अ–फ़्–मन् का–न अ़ला बय्यि–नतिम् मिर्रब्बिही क–मन् ज़ुय्यि–न लहू सूउ अ़–मलिही वत्त–बअू अह्वा–अहुम्(14)म–स़लुल् जन्नतिल् लती वुअ़िदल् मुत्तक़ू–न फ़ीहा अन्हारुम् मिम्

और उन्हें जन्नत में ले जाएगा उन्हें उसकी पहचान करा दी है।(6) (फ़ा18) ऐ ईमान वालो अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा (फ़ा19) और तुम्हारे क़दम जमा देगा।(7) (फ़ा20) और जिन्होंने कुफ़्र किया तो उन पर तबाही पड़े और अल्लाह उनके आमाल बरबाद करे।(8) यह इसलिए कि उन्हें नागवार हुआ जो अल्लाह ने उतारा (फ़ा21) तो अल्लाह ने उनका किया धरा अकारत किया।(9) तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का (फ़ा22) कैसा अंजाम हुआ अल्लाह ने उन पर तबाही डाली (फ़ा23) और उन काफ़िरों के लिए भी वैसी कितनी ही हैं।(10) (फ़ा24) यह (फ़ा25) इसलिए कि मुसलमान का मौला अल्लाह है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं।(11) (रुकूअ़ 5) बेशक अल्लाह दाख़िल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ों में जिनके नीचे नहरें रवाँ और काफ़िर बरतते हैं और खाते हैं (फ़ा26) जैसे चौपाए खायें (फ़ा27) और आग में उनका ठिकाना है।(12) और कितने ही शहर कि उस शहर से (फ़ा28) कुव्वत में ज़्यादा थे जिसने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया हम ने उन्हें हलाक फ़रमाया तो उनका कोई मददगार नहीं।(13) (फ़ा29) तो क्या जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो (फ़ा30) उस (फ़ा31) जैसा होगा जिसके बुरे अ़मल उसे भले दिखाए गए और वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चले।(14) (फ़ा32) अह़वाल उस जन्नत का जिसका वादा परहेज़गारों से है उसमें ऐसी पानी की

(फ़ा18) वह मनाज़िले जन्नत में नौ वारिद ना आशना की तरह न पहुंचेगे जो किसी मक़ाम पर जाता है तो उसको हर चीज़ के दरियाफ़्त करने की हाजत दर पेश होती है बल्कि वह वाक़िफ़ काराना दाख़िल होंगे अपने मनाज़िल और मसाकिन पहचानते होंगे अपनी ज़ौजा और ख़ुद्दाम को जानते होंगे हर चीज़ का मौक़ा उनके इल्म में होगा गोया कि वह हमेशा से यहीं के रहने बसने वाले हैं। (फ़ा19) तुम्हारे दुश्मन के मुक़ाबिल। (फ़ा20) मअ़रकए जंग में और हुज्जते इस्लाम पर और पुल सिरात पर। (फ़ा21) यानी क़ुरआन पाक इस लिए कि उसमें शह्वात व लज़्ज़ात के तर्क और ताआ़त व इबादात में मशक़्क़तें उठाने के अहकाम हैं जो नफ़्स पर शाक़ होते हैं। (फ़ा22) यानी पिछली उम्मतों का। (फ़ा23) कि उन्हें और उनकी औलाद और उनके अमवाल को सबको हलाक कर दिया। (फ़ा24) यानी अगर यह काफ़िर सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान न लायें तो उनके लिए पहले जैसी बहुत सी तबाहियां हैं। (फ़ा25) यानी मुसलमानों का मन्सूर होना और काफ़िरों का मक़हूर होना। (फ़ा26) दुनिया में चन्द रोज़ ग़फ़लत के साथ अपने अन्जाम व मआल को फ़रामोश किये **(बक़िया सफ़हा 840 पर)**

مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۗ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿15﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا
لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿16﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿17﴾
فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿18﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿19﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ

माइन् ग़ैरि आसिनिन् व अन्हारुम् मिल्–ल–बनिल् लम् य–त–ग़य्यर् तअ्मुहू व अन्हारुम् मिन् ख़म्रिल् लज़्ज़तिल् लिश्शारिबी–न व अन्हारुम् मिन् अ–सलिम् मुसफ़्फ़न् व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस् स–मराति व मग़्फ़ि–रतुम् मिर्रब्बिहिम् क–मन् हु–व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सुक़ू माअन् हमीमन् फ़–क़त्त–अ अम्आ–अहुम्(15)व मिन्हुम् मंय्यस्तमिउ इलै–क हत्ता इज़ा ख़–रजू मिन् अिन्दि–क क़ालू लिल्लज़ी–न ऊतुल् अिल्–म माज़ा क़ा–ल आनि–फ़न् उलाइ–कल्लज़ी–न त़–ब–अ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त–बऊ अह्वा–अहुम्(16)वल्लज़ीनह्–तदौ ज़ा–दहुम् हुदंव् व आताहुम् तक़्वाहुम्(17)फ़–हल् यन्ज़ुरू–न इल्लस्सा–अ़–त अन् तअ्ति–यहुम् बग़्त–तन् फ़–क़द् जा–अ अश्–रातुहा फ़–अन्ना लहुम् इज़ा जा–अत्हुम् ज़िक्राहुम्(18)फ़अ्–लम् अन्नहू ला इला–ह इल्लल्लाहु वस्तग़्फ़िर् लि–ज़म्बि–क व लिल्मुअ्मिनी–न वल्मुअ्–मिनाति वल्लाहु यअ्–लमु मु–त–क़ल्ल–बकुम् व मस्वाकुम्(19)व यक़ूलुल् लज़ी–न आ–मनू लौला नुज़्ज़ि–लत् सू–रतुन् फ़–इज़ा उन्ज़ि–लत् सू–रतुम् मुह्क–मतुंव्

नहरें हैं जो कभी न बिगड़े (फ़ा33) और ऐसे दूध की नहरें हैं जिसका मज़ा न बदला (फ़ा34) और ऐसी शराब की नहरें हैं जिसके पीने में लज़्ज़त है (फ़ा35) और ऐसी शहद की नहरें है जो साफ़ किया गया (फ़ा36) और उनके लिए उसमें हर क़िस्म के फल हैं और अपने रब की मग़फ़िरत (फ़ा37) क्या ऐसे चैन वाले उनकी बराबर हो जायेंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।(15) और उन (फ़ा38) में से बाज़ तुम्हारे इरशाद सुनते हैं (फ़ा39) यहां तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जायें (फ़ा40) इल्म वालों से कहते हैं (फ़ा41) अभी उन्होंने क्या फ़रमाया (फ़ा42) यह हैं वह जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी (फ़ा43) और अपनी ख़्वाहिशों के ताबेअ़ हुए।(16) (फ़ा44) और जिन्होंने राह पाई (फ़ा45) अल्लाह ने उनकी हिदायत (फ़ा46) और ज़्यादा फ़रमाई और उनकी परहेज़गारी उन्हें अ़ता फ़रमाई।(17) (फ़ा47) तो काहे के इन्तिज़ार में हैं (फ़ा48) मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आजाए कि उसकी अ़लामतें तो आ ही चुकी हैं (फ़ा49) फिर जब वह आ जाएगी तो कहां वह और कहां उनका समझना।(18) तो जान लो कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और ऐ महबूब अपने ख़ासों और अ़ाम मुसलमान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो (फ़ा50) और अल्लाह जानता है दिन को तुम्हारा फिरना (फ़ा51) और रात को तुम्हारा आराम लेना।(19) (फ़ा52) (रुकूअ़ 6) और मुसलमान कहते हैं कोई सूरत क्यों न उतारी गई (फ़ा53) फिर जब कोई पुख़्ता सूरत उतारी गई (फ़ा54) और उसमें

(फ़ा33) यानी ऐसा लतीफ़ कि न सड़े न उसकी बू बदले न उसके ज़ाइक़ा में फ़र्क़ आये। (फ़ा34) बख़िलाफ़ दुनिया के दूध के कि ख़राब हो जाते हैं। (फ़ा35) ख़ालिस लज़्ज़त ही लज़्ज़त न दुनिया की शराबों की तरह उसका ज़ाइक़ा ख़राब न उसमें मैल कुचैल न ख़राब चीज़ों की आमेज़िश न वह सड़ कर बनी न उसके पीने से अ़क़्ल ज़ाइल हो न सर चकराये न खुमार आये न दर्दे सर पैदा हो यह सब आफ़तें दुनिया ही की शराब में हैं वहां की शराब इन सब उयूब से पाक निहायत लज़ीज़ मुफ़र्रह ख़ुशगवार (फ़ा36) पैदाईश में यानी साफ़ ही पैदा किया गया दुनिया के शहद की तरह नहीं जो मक्खी के पेट से निकलता है और उसमें मोम वग़ैरह की आमेज़िश होती है (फ़ा37) कि वह रब उन पर एहसान फ़रमाता है और उनसे राज़ी है और उन पर से तमाम तकलीफ़ी अहकाम उठा लिये गए हैं जो चाहें खायें जितना चाहें खायें न हिसाब न इक़ाब **(बक़िया सफ़्हा 840 पर)**

وَّ ذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ

لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَمْ حَسِبَ

व ज़ुकि–र फ़ीहल्क़ितालु रऐतल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुंय्यन्ज़ुरू–न इलै–क न–ज़–रल् मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्मौति फ़औला लहुम्(20)ता–अ़तुंव् व क़ौलुम् मअ़्रूफ़ुन् फ़–इज़ा अ़–ज़–मल् अम्रु फ़लौ स़–दक़ुल्ला–ह लका–न ख़ै–रल्लहुम्(21)फ़–हल् अ़सैतुम् इन् त–वल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तु–क़त्तिअू अरहा–मकुम्(22)उलाइ–कल् लज़ी–न ल–अ़–नहुमुल्लाहु फ़–अ–स़म्महुम् व अअ़्मा अब्सा–रहुम्(23)अ–फ़ला य–त–दब्बरूनल् क़ुरआ–न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्फ़ालुहा (24)इन्नल्लज़ी–नर् तद्दू अ़ला अद्बारिहिम् मिम् बअ़्दि मा त–बय्य–न लहुमुल्हुदश् शैत़ानु सव्व–ल लहुम् व अम्ला लहुम्(25)ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी–न करिहू मा नज़्ज़–लल्लाहु सनुत़ीअ़ुकुम् फ़ी बअ़्ज़िल् अम्रि वल्लाहु यअ़्लमु इस्रा–रहुम्(26)फ़कै–फ़ इज़ा त–वफ़्फ़त्हुमुल् मलाइ–कतु यज़्रिबू–न वुजू–हहुम् व अदबा–रहुम्(27)ज़ालि–क बि–अन्नहुमुत् त–बअ़ू मा अस्–ख़त़ल्ला–ह व करिहू रिज़्वा–नहू फ़–अह्ब–त अअ़्मा–लहुम्(28)अम् ह़सिबल्

जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे उन्हें जिन के दिलों में बीमारी है (फ़ा55) कि तुम्हारी तरफ़ (फ़ा56) उसका देखना देखते हैं जिस पर मुर्दनी छाई हो तो उनके ह़क़ में बेहतर यह था कि फ़रमांबरदारी करते।(20) (फ़ा57) और अच्छी बात कहते फिर जब हुक्म नातिक़ हो चुका (फ़ा58) तो अगर अल्लाह से सच्चे रहते (फ़ा59) तो उनका भला था।(21) तो क्या तुम्हारे यह लच्छन नज़र आतें हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फेलाओ (फ़ा60) और अपने रिश्ते काट दो।(22) यह हैं वह (फ़ा61) लोग जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन्हें हक़ से बहरा कर दिया और उन की आँखें फोड़ दीं।(23) (फ़ा62) तो क्या वह कुरआन को सोचते नहीं (फ़ा63) या बाज़े दिलों पर उनके क़ुफ़्ल लगे हैं।(24) (फ़ा64) बेशक वह जो अपने पीछे पलट गए (फ़ा65) बाद इसके कि हिदायत उन पर खुल चुकी थी (फ़ा66) शैतान ने उन्हें फ़रेब दिया (फ़ा67) और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई।(25) (फ़ा68) यह इस लिए कि उन्होंने (फ़ा69) कहा उन लोगों से (फ़ा70) जिन्हें अल्लाह का उतारा हुआ (फ़ा71) नागवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे (फ़ा72) और अल्लाह उनकी छुपी हुई जानता है।(26) तो कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़ करेंगे उनके मुंह और उनकी पीठें मारते हुए।(27) (फ़ा73) यह इस लिए कि वह ऐसी बात के ताबेअ़ हुए जिस में अल्लाह की नाराज़ी है (फ़ा74) और उसकी ख़ुशी (फ़ा75) उन्हें गवारा न हुई तो उसने उनके आमाल अकारत कर दिये।(28)(रुकूअ़ 7)क्या जिन के

(फ़ा55) यानी मुनाफ़िक़ीन को। (फ़ा56) परेशान होकर (फ़ा57) अल्लाह तआ़ला और रसूल की। (फ़ा58) और जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया। (फ़ा59) ईमान व ताअ़त पर क़ाइम रह कर। (फ़ा60) रिश्वतें लो ज़ुल्म करो आपस में लड़ो एक दूसरे को क़त्ल करो (फ़ा61) मुफ़्सिद (फ़ा62) कि राहे हक़ नहीं देखते। (फ़ा63) जो हक़ को पहचानें। (फ़ा64) कुफ़्र के कि हक़ की बात उन में पहुंचने ही नहीं पाती। (फ़ा65) निफ़ाक़ से (फ़ा66) और तरीक़े हिदायत वाज़ेह हो चुका था क़तादा ने कहा कि यह कुफ़्फ़ार अहले किताब का हाल है जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पहचाना और आपकी नअ़त व सिफ़त अपनी किताब में देखी फिर बावजूद जानने पहचानने के कुफ़्र इख़्तियार किया हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा और ज़हाक व सुद्दी का क़ौल है कि इससे मुनाफ़िक़ मुराद हैं जो ईमान लाकर कुफ़्र की तरफ़ फिर गए। (फ़ा67) और बुराईयों को उनकी नज़र में ऐसा मुज़य्यन किया कि उन्हें अच्छा समझे। (फ़ा68) कि अभी बहुत उम्र पड़ी है खुब दुनिया के मज़े उठा लो और उन पर शैतान का फ़रेब चल गया। (फ़ा69) यानी अहले किताब या मुनाफ़िक़ीन ने पोशीदा तौर पर। (फ़ा70) यानी मुशरिकीन से। (फ़ा71) कुरआन और अहकामे दीन। (फ़ा72) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अ़दावत **(बक़िया सफ़हा 836 पर)**

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

लज़ी–न फ़ी कुलूबिहिम् म–रजुन् अल्–लंय्युख़्रि–जल्लाहु अज़्गा–नहुम्(29)व लौ नशाउ ल–अरैना–कहुम् फ़–ल–अ–रफ़्तहुम् बिसीमाहुम् व ल–तअ्रि–फ़न्नहुम् फ़ी लह़्निल् क़ौलि वल्लाहु यअ्लमु अअ्मा लकुम्(30)व ल–नब्लुवन् नकुम् ह़त्ता नअ्–ल–मल् मुजाहिदी–न मिन्कुम् वस्साबिरी–न व नब्लु–व अख़्बा–रकुम्(31)इन्नल् लज़ी–न क–फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि व शाक़्क़ुर्रसू–ल मिम् बअ्दि मा त–बय्य–न लहुमुल्हुदा लंय्यजुर्रुल्ला–ह शैअन् व सयुह्बितु अअ्मा–लहुम्(32)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू अतीअुल्ला–ह व अतीअुर् रसू–ल व ला तुब्तिलू अअ्मा–लकुम्(33)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि सुम्–म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़–लंय्यग़्फ़ि–रल्लाहु लहुम्(34)फ़ला तहिनू व तदअू इ–लस्सल्मि व अन्तुमुल् अअ्लौ–न वल्लाहु म–अकुम् व लंय्यति–रकुम् अअ्मा–लकुम्(35)इन्नमल् ह़यातुद्दुन्या लअिबुंव् व लह्वुन् व इन् तुअ्मिनू व तत्तकू युअ्तिकुम् उजू–रकुम् व ला यस्–अल्कुम् अम्वा–लकुम्(36)इंय्यस् अल्कुमूहा फ़युह्फ़िकुम् तब्–ख़लू व युख़्रिज् अज़्गा–नकुम्(37)हा–अन्तुम् हाउलाइ तुदऔ–न लितुन्–फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मंय्यब्–ख़लु व मंय्यब्–ख़ल् फ़–इन्नमा यब्–ख़लु अन् नफ़्सिही वल्लाहुल् ग़निय्यु व अन्तुमुल् फ़ु–क़राउ व इन् त–त–वल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ै–रकुम् सुम्–म ला यकूनू अम्सा–लकुम्(38)

दिलों में बीमारी है (फ़ा76) इस घमन्ड में हैं कि अल्लाह उनके छुपे बैर ज़ाहिर न फ़रमाएगा।(29) (फ़ा77) और अगर हम चाहें तो तुम्हें उनको दिखा दें कि तुम उनकी सूरत से पहचान लो (फ़ा78) और ज़रूर तुम उन्हें बात के उसलूब में पहचान लोगे (फ़ा79) और अल्लाह तुम्हारे अ़मल जानता है।(30) (फ़ा80) और ज़रूर हम तुम्हें जांचेंगे (फ़ा81) यहां तक कि देख लें (फ़ा82) तुम्हारे जिहाद करने वालों और साबिरों को और तुम्हारी ख़बरें आज़मा लें।(31) (फ़ा83) बेशक वह जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से (फ़ा84) रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की बाद इसके कि हिदायत उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी वह हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुंचायेंगे और बहुत जल्द अल्लाह उनका किया धरा अकारत कर देगा।(32) (फ़ा85) ऐ ईमान वालों अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो (फ़ा86) और अपने अ़मल बातिल न करो।(33) (फ़ा87) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा।(34) (फ़ा88) तो तुम सुस्ती न करो (फ़ा89) और आप सुलह की तरफ़ न बुलाओ (फ़ा90) और तुम ही ग़ालिब आओगे और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल में तुम्हें नक़सान न देगा।(35) (फ़ा91) दुनिया की ज़िन्दगी तो यही खेल कूद है (फ़ा92) और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो वह तुम को तुम्हारे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल न मांगेगा।(36) (फ़ा93) अगर उन्हें (फ़ा94) तुम से तलब करे और ज़्यादा तलब करे तुम बुख़्ल करोगे और वह (बक़िया सफ़हा 840 पर)

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝ وَيَنصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُودُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عِندَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّانِّينَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللّٰهُ

सूरतुल फ़त्हि

(मदनी है इस सूरह में 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना फ़–तह्ना ल–क फ़त्हम् मुबीनल्(1)लि–यग़्फ़ि–र लकल्लाहु मा त–क़द्–द–म मिन् ज़म्बि–क व मा त–अख़्ख़–र व युतिम्–म निअ़्म–तहू अ़लै–क व यह्दिय–क सिरातम् मुस्तक़ीमंव्(2)व यन्सु–र–कल्लाहु नस्रन् अ़ज़ीज़ा(3)हुवल्लज़ी अन्ज़–लस् सकी–न–त फ़ी क़ुलूबिल् मुअ्मिनी–न लि–यज़्दादू ईमानम् म–अ़ ईमानिहिम् व लिल्लाहि जुनूदुस् समावाति वल्अर्ज़ि व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा(4)लियुदखि़–लल्मुअ्मिनी–न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व यु–कफ़्फ़ि–र अ़न्हुम् सय्यिआति–हिम् व का–न ज़ालि–क अ़िन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमंव्(5)व यु–अ़ज़्ज़िबल् मुनाफ़िक़ी–न वल्मुना–फ़िक़ाति वल्मुश्रिकी–न वल्मुश्रि–काति ज़्ज़ान्नी–न बिल्लाहि ज़न्नस्सौइ अ़लैहिम् दाइ–रतुस्सौइ व ग़ज़िबल्लाहु

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

बेशक हमने तुम्हारे लिए रौशन फ़तह फ़रमा दी।(1) (फ़ा2) ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के (फ़ा3) और अपनी निअ़मतें तुम पर तमाम कर दे (फ़ा4) और तुम्हें सीधी राह दिखा दे।(2) (फ़ा5) और अल्लाह तुम्हारी ज़बरदस्त मदद फ़रमाए।(3) (फ़ा6) वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े (फ़ा7) और अल्लाह ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आसमानों और ज़मीन के (फ़ा8) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(4) (फ़ा9) ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहें और उनकी बुराईयाँ उनसे उतार दे और यह अल्लाह के यहां बड़ी कामयाबी है।(5) और अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को जो अल्लाह बुरा गुमान रखते हैं (फ़ा10) उन्हीं पर है बुरी गर्दिश (फ़ा11) और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया

(फ़ा1) सूरह फ़तह मदनी है इसमें चार रुकूअ़ उनतीस आयतें 568 कलिमे 2559 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः *इन्ना फ़-तह्ना* हुदैबिया से वापस होते हुए हुज़ूर पर नाज़िल हुई हुज़ूर को इसके नाज़िल होने से बहुत ख़ुशी हासिल हुई और सहाबा ने हुज़ूर को मुबारकबादें दीं (बुख़ारी व मुस्लिम व तिर्मिज़ी) हुदैबिया एक कुआँ है मक्का मुकर्रमा के नज़दीक मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर मअ़ अपने असहाब के अमन के साथ मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए कोई हलक़ किये हुए कोई क़सर किये हुए और कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए कअ़्बा की कुन्जी ली, तवाफ़ फ़रमाया उमरा किया असहाब को उस ख़्वाब की ख़बर दी सब ख़ुश हुए फिर हुज़ूर ने उमरा का क़स्द फ़रमाया और एक हज़ार चार सौ असहाब के साथ यकुम ज़ीक़अ़्दा सन् 6 हिजरी को रवाना हो गए ज़ुल-हलीफ़ा में पहुंच कर वहां मस्जिद में दो रकअ़तें पढ़ कर उमरा का एहराम बांधा और हुज़ूर के साथ अक्सर असहाब ने भी बाज़ असहाब ने हजफ़ा से एहराम बांधा राह में पानी ख़त्म हो गया असहाब ने अ़र्ज़ किया कि पानी लश्कर में बिल्कुल बाक़ी नहीं है सिवाए हुज़ूर के आफ़ताबा के कि उसमें थोड़ा सा है हुज़ूर ने आफ़ताबा में दस्ते मुबारक डाला तो अंगुश्तहाए मुबारक से चश्मे जोश मारने लगे तमाम लश्कर ने पिया वुज़ू किये जब मक़ामे उसफ़ान में पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बड़े सरो सामान के साथ जंग के लिए तैयार हैं जब हुदैबिया पर पहुंचे तो उसका पानी ख़त्म हो गया एक क़तरा न रहा गर्मी बहुत शदीद थी हुज़ूर **(बक़िया सफ़हा 841 पर)**

عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝٦ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٧ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ

شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ

اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٠ سَيَقُوْلُ

لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ

مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١١ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

अ़लैहिम् व ल–अ़–नहुम् व अ–अ़द्–द लहुम् ज–हन्न–म व साअत् मसीरा(6)व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि व का–नल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा(7)इन्ना अर्सल्ना–क शाहिदंव् व मुबश्शिरंव् व नज़ीरल्(8)लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तु–अ़ज़्ज़िरूहु व तु–वक़्क़िरूहु व तु–सब्बिहूहु बुक्–र–तंव् व असीला(9)इन्नल्लज़ी–न युबायिअू–न–क इन्नमा युबायिअू–नल्ला–ह यदुल्लाहि फ़ौ–क़ ऐदीहिम् फ़–मन् न–क–स फ़–इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही व मन् औफ़ा बिमा आ़–ह–द अ़लैहुल्ला–ह फ़–सयुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा(10)स–यक़ूलु ल–कल् मु–ख़ल्लफ़ू–न मिनल् अअ्राबि श–ग़–लत्ना अम्वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना यक़ूलू–न बि–अल्सि–नतिहिम् मा लै–स फ़ी क़ुलूबिहिम् क़ुल् फ़–मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा–द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा–द बिकुम् नफ़्अ़न् बल् का–नल्लाहु बिमा तअ्मलू–न ख़बीरा(11)बल् ज़–नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लि–बर् रसूलु वल्मुअ्मिनू–न

और उन्हें लानत की और उनके लिए जहन्नम तैयार फ़रमाया और वह क्या ही बुरा अंजाम है।(6) और अल्लाह ही की मिल्क है आसमानों और ज़मीन के सब लश्कर और अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला है।(7) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर (फ़ा12) और खुशी और डर सुनाता।(8) (फ़ा13) ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो।(9) (फ़ा14) वह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं (फ़ा15) वह तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं (फ़ा16) उनके हाथों पर (फ़ा17) अल्लाह का हाथ है तो जिसने अहद तोड़ा उसने अपने बड़े अ़हद को तोड़ा (फ़ा18) और जिसने पूरा किया वह अ़हद जो उसने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा।(10) (फ़ा19) (रुकूअ़ 9) अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे (फ़ा20) कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मश्गूल रखा (फ़ा21) अब हुजूर हमारी मग़फ़िरत चाहें (फ़ा22) अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं (फ़ा23) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वह तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(11) बल्कि तुम तो यह समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान

(फ़ा12) अपनी उम्मत के आमाल व अहवाल का ताकि रोज़े क़ियामत उनकी गवाही दो। (फ़ा13) यानी मोमिनीन मुक़रीन को जन्नत की खुशी और नाफ़रमानों को अ़ज़ाबे दोज़ख़ का डर सुनाता। (फ़ा14) सुबह की तस्बीह में नमाज़े फ़ज्र और शाम की तस्बीह में बाक़ी चारों नमाज़ें दाख़िल हैं। (फ़ा15) मुराद इस बैअ़त से बैअ़ते रिज़वान है जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुदैबिया में ली थी। (फ़ा16) क्योंकि रसूल से बैअ़त करना अल्लाह तआ़ला ही से बैअ़त करना है जैसे कि रसूल की इताअ़त अल्लाह तआ़ला की इताअ़त है। (फ़ा17) जिनसे उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बैअ़त का शरफ़ हासिल किया। (फ़ा18) इस अ़हद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। (फ़ा19) यानी हुदैबिया से तुम्हारी वापसी के वक़्त। (फ़ा20) क़बीलए ग़िफ़ार व मुज़निया व जुहनिया व अश्जअ़ व असलम के जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने साले हुदैबिया ब–नीयते उमरा मक्का मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो हवालीए मदीना को गाँव वाले और अहले बादिया बख़ौफ़े क़ुरैश आपके साथ जाने से रुके बावजूदे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उमरा का एहराम बांधा था और क़ुरबानियां साथ थीं और इससे साफ़ ज़ाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से अअ्राब पर जाना बार हुआ और वह काम का हीला करके रह गए और उनका गुमान यह था कि क़ुरैश बहुत ताक़तवर हैं मुसलमान उनसे बच कर न आयेंगे सब **(बक़िया सफ़हा 841 पर)**

إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا

لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤﴾ سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ

إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ

تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾ قُل لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ

فَإِن تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾ لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ

इला अह्लीहिम् अ–ब–दंव् व जुय्यि–न ज़ालि–क फ़ी कुलूबिकुम् व ज–नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम् बूरा(12)व मल्लम् युअ्मिम् बिल्लाहि व रसूलिही फ़इन्ना अअ्–तदना लिल्काफ़िरी–न सओ़रा(13)व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि यग्फ़िरु लि–मंय्यशाउ व यु–अ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा(14)स–यक़ूलुल् मु–ख़ल्लफ़ू–न इज़न्त–लक़्तुम् इला मग़ानि–म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्कुम् युरीदू–न अंय्यु–बद्दिलू कला–मल्लाहि कुल् लन् तत्–तबिअू़ना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़–सयक़ू.लू–न बल् तह्सुदू–नना बल् कानू ला यफ़्क़हू–न इल्ला क़लीला(15)कुल् लिल्मु–ख़ल्लफ़ी–न मिनल् अअ्राबि सतुद्औ–न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलू–नहुम् औ युस्लिमू–न फ़–इन् तुतीअू युअ्–तिकुमुल्लाहु अज्रन् ह्–स–नन् व इन् त–त–वल्लौ कमा त–वल्लैतुम् मिन् क़ब्लु यु–अ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (16)लै–स अ़–लल् अअ्मा ह्–रजुंव् व ला अ़–लल् अअ्–रजि

हरगिज़ घरों को वापस न आयेंगे (फ़ा24) और उसी को अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुमने बुरा गुमान किया (फ़ा25) और तुम हलाक होने वाले लोग थे।(12) (फ़ा26) और जो ईमान न लाए अल्लाह और उसके रसूल पर (फ़ा27) बेशक हमने काफ़िरों के लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है।(13) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे (फ़ा28) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(14) अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले (फ़ा29) जब तुम ग़नीमतें लेने चलो (फ़ा30) तो हमें भी अपने पीछे आने दो (फ़ा31) वह चाहते हैं अल्लाह का कलाम बदल दें (फ़ा32) तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूंही फ़रमा दिया है (फ़ा33) तो अब कहेंगे बल्कि तुम हम से जलते हो (फ़ा34) बल्कि वह बात न समझते थे (फ़ा35) मगर थोड़ी।(15) (फ़ा36) उन पीछे रह गए हुए गंवारों से फ़रमाओ (फ़ा37) अ़न्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे (फ़ा38) कि उनसे लड़ो या वह मुसलमान हो जायें। फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा। (फ़ा39) और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए (फ़ा40) तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।(16) अन्धे पर तंगी नहीं (फ़ा41) और न लंगड़े पर

(फ़ा24) दुश्मन इन सब का वहीं ख़ात्मा कर देंगे (फ़ा25) कुफ़्र व फ़साद के ग़लबा का और वादए इलाही के पूरा न होने का (फ़ा26) अ़ज़ाबे इलाही के मुस्तहिक़ (फ़ा27) इस आयत में एअ़्लाम है कि जो अल्लाह तआ़ला पर और उसके रसूल पर ईमान न लाए उन में से किसी एक का भी मुन्किर हो वह काफ़िर है। (फ़ा28) यह सब उसकी मशीयत व हिकमत पर है। (फ़ा29) जो हुदैबिया की हाज़िरी से क़ासिर रहे ऐ ईमान वालो। (फ़ा30) ख़ैबर की इस का वाक़िआ़ यह था कि जब मुसलमान सुलहे हुदैबिया से फ़ारिग़ होकर वापस हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उनसे फ़तहे ख़ैबर का वादा फ़रमाया और वहां की ग़नीमतें हुदैबिया में हाज़िर होने वालों के लिए मख़्सूस कर दी गईं जब मुसलमानों को ख़ैबर की तरफ़ रवाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्होंने ब-तमअ़े ग़नीमत कहा (फ़ा31) यानी हम भी ख़ैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शरीक हों अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा32) यानी अल्लाह का वादा जो अहले हुदैबिया के लिए फ़रमाया था कि ख़ैबर की ग़नीमत ख़ास उनके लिए है। (फ़ा33) यानी हमारे मदीना आने से पहले। (फ़ा34) और यह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ ग़नीमतें पायें अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा35) दीन की (फ़ा36) यानी महज़ दुनिया की हृत्ता कि उनका ज़बानी इक़रार भी दुनिया ही की ग़रज़ से था और उमूरे आख़िरत को बिल्कुल नहीं समझते थे (जुमल) (फ़ा37) ~ मुख़्तलिफ़ क़बाइल के लोग हैं और उनमें बाज़ ऐसे भी हैं जिनके ताइब **(बक़िया सफ़हा 838 पर)**

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾
لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّمَغَانِمَ
كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ
اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ

ह़–रजुंव व ला अ़–लल्मरीज़ि ह़–रजुन् व मंय्युति–अ़िल्ला–ह व रसू–लहू युद्–ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्ति–हल् अन्हारु व मंय्य–त–वल्–ल यु–अ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा(17)ल–क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल् मुअ्मिनी–न इज़् युबायिअू–न–क तह़्–तश् श–ज–रति फ़–अ़लि–म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़–अन्ज़–लस् सकी–न–त अ़लैहिम् व असा–बहुम् फ़त्ह़न् क़रीबा(18)व मग़ानि–म कसी–र–तंय्यअ्ख़ुज़ू–नहा व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा(19)व अ़–दकुमुल्लाहु मग़ानि–म कसी–र–तन् तअ्ख़ुज़ू–नहा फ़–अ़ज्ज–ल लकुम् हाज़िही व कफ़्–फ़ ऐदि–यन्नासि अ़न्कुम् व लि–तकू–न आ–यतल् लिल्मुअ्मिनी–न व यह्दि–यकुम् सिरातम् मुस्तक़ीमा(20)व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अह़ातल्लाहु बिहा व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा(210)व लौ क़ा–त–लकुमुल् लज़ी–न क–फ़रू ल–वल्लवुल् अद्बा–र सुम्–म ला यजिदू–न वलिय्यंव् व ला नसीरा(22)सुन्नतल्लाहिल् लती क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लु व लन् तजि–द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला(23)व हुवल्लज़ी

मुज़ायक़ा और न बीमार पर मुआख़ज़ा (फ़ा42) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवाँ और जो फिर जाएगा (फ़ा43) उसे दर्दनाक अ़ज़ाब फ़रमाएगा।(17) (रुकूअ़ 10) बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे (फ़ा44) तो अल्लाह ने जाना जो उनके दिलों में है (फ़ा45) तो उन पर इत्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इनाम दिया।(18) (फ़ा46) और बहुत सी ग़नीमतें (फ़ा47) जिन को लें और अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(19) और अल्लाह ने तुम से वादा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे (फ़ा48) तो तुम्हें यह जल्द अ़ता फ़रमा दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये (फ़ा49) और इस लिए कि ईमान वालों के लिए निशानी हो (फ़ा50) और तुम्हें सीधी राह दिखा दे।(20) (फ़ा51) और एक और (फ़ा52) जो तुम्हारे बल की न थी (फ़ा53) वह अल्लाह के क़ब्ज़े में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(21) और अगर काफ़िर तुम से लड़ें (फ़ा54) तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे (फ़ा55) फिर कोई हिमायती न पायेंगे न मददगार।(22) अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है (फ़ा56) और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलता न पाओगे।(23) और वही है

(फ़ा42) कि यह उज़्र ज़ाहिर हैं और जिहाद में हाज़िर न होना उन लोगों के लिए जायज़ है क्योंकि न यह लोग दुश्मन पर हमला करने की ताक़त रखते हैं न उसके हमला से बचने और भागने की उन्हीं के हुक्म में दाख़िल हैं वह बुड्ढे ज़ईफ़ जिन्हें नशिस्त व बरख़ास्त की ताक़त नहीं या जिन्हें दम्मा या खांसी है या जिनकी तिल्ली बहुत बढ़ गई है (फ़ा43) और जिन्हें चलना फिरना दुशवार है ज़ाहिर है कि यह उज़्र जिहाद से रोकने वाले हैं उनके अलावा और भी एज़ार हैं मसलन ग़ायत दर्जा की मुहताजी और सफ़र के ज़रूरी हवाइज पर क़ुदरत न रखना या ऐसे अश्ग़ाले ज़रूरिया जो सफ़र से मानेअ़ हों जैसे किसी ऐसे मरीज़ की ख़िदमत जिसकी ख़िदमत उस पर लाज़िम है और उसके सिवाए कोई उसका अन्जाम देने वाला नहीं। (फ़ा44) ताअ़त से एअ़्राज़ करेगा और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर रहेगा हुदैबिया में चूंकि उन बैअ़त करने वालों को रज़ाए इलाही की बशारत दी गई इस लिए उस बैअ़त को बैअ़ते रिज़्वाँ कहते हैं उस बैअ़त का सबब ब–अस्बाबे ज़ाहिर यह पेश आया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुदैबिया से हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अशराफ़े क़ुरैश के पास मक्का मुकर्रमा भेजा कि उन्हें ख़बर दें कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिए ब–क़स्दे उमरा तशरीफ़ लाए हैं आपका इरादा जंग का नहीं है और यह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसलमान वहां हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि मक्का मुकर्रमा अ़न्क़रीब फ़तह होगा **(बक़िया सफ़हा 841 पर)**

الَّذِیْ كَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَیْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرًا ﴿۲۴﴾ هُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْیَ مَعْكُوْفًا اَنْ یَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ لَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِیْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَیْرِ عِلْمٍ ۚ لِیُدْخِلَ اللّٰهُ فِیْ رَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَیَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِیَّةَ حَمِیَّةَ الْجَاهِلِیَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰی رَسُوْلِهٖ وَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰی وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۲۶﴾ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْیَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَ ۙ مُحَلِّقِیْنَ

कफ़्–फ़ ऐदि–यहुम् अन्कुम् व ऐदि–यकुम् अ़न्हुम् बि–बत्नि मक्क–त मिम् बअ़्दि अन् अज़्फ़–र कुम् अ़लैहिम् व कानल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न बसीरा(24)हुमुल् लज़ी–न क–फ़रू व स़ददूकुम् अनिल्मस्जिदिल् ह़रामि वल्–हद्–य मअ़्कूफ़न् अंय्यब्लु–ग़ महिल्लहू व लौला रिजालुम् मुअ्मिनू–न व निसाउम् मुअ्मिनातुल् लम् तअ़्–लमूहुम् अन् त–त़ऊहुम् फ़तुसी–बकुम् मिन्हुम् म–अ़र्रतुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् लियुदखि़–लल्लाहु फ़ी रह़्मतिही मंय्यशाउ लौ त–ज़य्यलू ल–अ़ज़्ज़ब्–नल् लज़ी–न क–फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा(25)इज़् ज–अ़–लल् लज़ी–न क–फ़रू फ़ी कुलूबिहिमुल् ह़मिय्य–त ह़मिय्य–तल् जाहिलिय्यति फ़–अन्ज़–लल्लाहु सकी–न–तहू अ़ला रसू–लिही व अ़–लल् मुअ्मिनी–न व अल्ज़–महुम् कलि–म–तत् तक़्वा व कानू अ–ह़क़्–क़ बिहा व अह्–लहा व क़ानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा(26)ल–क़द् स–द–क़ल्लाहु रसू–लहुर्रुअ्या बिल्ह़क़्क़ि ल–तद् खुलुन्नल् मस्जिदल् ह़रा–म इन्शाअल्लाहु आमिनी–न मुह़ल्लिक़ी–न

जिसने उनके हाथ (फ़ा57) तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये वादीए मक्का में (फ़ा58) बाद उसके कि तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है।(24) (फ़ा59) वह हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से (फ़ा60) रोका और कुर्बानी के जानवर रुके पड़े अपनी जगह पहुंचने से (फ़ा61) और अगर यह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औ़रतें (फ़ा62) जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं (फ़ा63) कहीं तुम उन्हें रौंद डालो (फ़ा64) तो तुम्हें उनकी तरफ़ से अन्जानी में कोई मकरूह पहुंचे तो हम तुम्हें उनकी क़िताल की इजाज़त देते उनका यह बचाव इसलिए है कि अल्लाह अपनी रहमत में दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वह जुदा हो जाते (फ़ा65) तो हम ज़रूर उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब देते।(25) (फ़ा66) जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ रखी वही ज़मानए जाहिलियत की अड़ (फ़ा67) तो अल्लाह ने अपना इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा (फ़ा68) और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया (फ़ा69) और वह उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके अहल थे (फ़ा70) और अल्लाह सब कुछ जानता है।(26) (फ़ा71) (रुकूअ़ 11) बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब (फ़ा72) बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अमन व अमान से अपने सरों के (फ़ा73)

(फ़ा57) यानी कुफ़्फ़ार के। (फ़ा58) रोज़ फ़तहे मक्का और एक क़ौल यह है कि बतने मक्का से हुदैबिया मुराद है और इसके शाने नुज़ूल में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि अहले मक्का में से अस्सी हथियारबन्द जवान जबले तनईम से मुसलमानों पर हमला करने के इरादा से उतरे मुसलमानों ने उन्हें गिरिफ़्तार करके सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया हुज़ूर ने माफ़ फ़रमाया और छोड़ दिया। (फ़ा59) कुफ़्फ़ारे मक्का। (फ़ा60) वहां पहुंचने से और उसका तवाफ़ करने से। (फ़ा61) यानी मक़ामे ज़बह से जो हरम में है। (फ़ा62) मक्का मुकर्रमा में हैं। (फ़ा63) तुम उन्हें पहचानते नहीं। (फ़ा64) कुफ़्फ़ार से क़िताल करने में। (फ़ा65) यानी मुसलमान काफ़िरों से मुमताज़ हो जाते। (फ़ा66) तुम्हारे हाथ से क़त्ल कराके और तुम्हारी क़ैद में लाकर (फ़ा67) कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के असहाब को कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा से रोका। (फ़ा68) कि उन्होंने साले आइन्दा आने पर सुलह की अगर वह भी कुफ़्फ़ारे कुरैश की तरह ज़िद करते तो ज़रूर जंग हो जाती (फ़ा69) कलिमए तक़वा से मुराद ला इला–ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्–रसूलुल्लाह है। (फ़ा70) क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने दीन और अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सोहबत से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (फ़ा71) काफ़िरों का हाल भी जानता है मुसलमानों का भी कोई चीज़ उससे मख़्फ़ी नहीं **(बक़िया सफ़हा 842 पर)**

رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۖ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۚ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

रुऊ–सकुम् व मुक़स्सिरी–न ला तख़ाफ़ू–न फ़–अ़लि–म मा लम् तअ्–लमू फ़–ज–अ़–ल मिन् दूनि ज़ालि–क फ़तहन् क़रीबा(27)हुवल्लज़ी अर्स–ल रसू–लहू बिल्हुदा व दीनिल् ह़क़्क़ि लियुज़्हि–रहू अ़–लद् दीनि कुल्लिही व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा(28)मुहम्मदुर् रसूलुल्लाहि वल्लज़ी–न म–अ़हू अशिद्दाउ अ़–लल्कुफ़्फ़ारि रु–ह़माउ बै–नहुम् तराहुम् रुक्क–अ़न् सुज्ज–दंय्यब्तग़ू–न फ़ज़्लम् मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम् मिन् अ–सरिस्सुजूदि ज़ालि–क म–सलुहुम् फ़ित्तौराति व म–सलुहुम् फ़िल् इन्जीलि क–ज़रअ़िन् अख़्–र–ज शत्–अहू फ़आ–ज़–रहू फ़स्तग़्–ल–ज़ फ़स्तवा अ़ला सूक़िही युअ्जिबुज़् ज़ुर्रा–अ़ लियग़ी–ज़ बिहिमुल् कुफ़्फ़ा–र व अ़–दल्लाहुल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिह़ाति मिन्हुम् मग़्फ़ि–र–तंव् व अज्रन् अ़ज़ीमा(29)

बाल मुंडाते या (फ़ा74) तरशवाते बेख़ौफ़ तो उसने जाना जो तुम्हें मालूम नहीं (फ़ा75) तो उस से पहले (फ़ा76) एक नज़दीक आने वाली फ़तह रखी।(27) (फ़ा77) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे (फ़ा78) और अल्लाह काफ़ी है गवाह।(28) (फ़ा79) मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और इनके साथ वाले (फ़ा80) काफ़िरों पर सख़्त हैं (फ़ा81) और आपस में नर्म दिल (फ़ा82) तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में गिरते (फ़ा83) अल्लाह का फ़ज़्ल व रज़ा चाहते इनकी अ़लामत इनके चेहरों में है सजदों के निशान से (फ़ा84) यह इनकी सिफ़त तौरेत में हैं और उनकी सिफ़त इन्जील में (फ़ा85) जैसे एक खेती उसने अपना पट्ठा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है (फ़ा86) ताकि उनसे काफ़िरों के दिल जलें अल्लाह ने वादा किया उन से जो उनमें ईमान और अच्छे कामों वाले हैं (फ़ा87) बख़्शिश और बड़े सवाब का।(29) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा74) थोड़े से (फ़ा75) यानी यह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिए यह ताख़ीर बेहतर थी कि इसके बाइस वहां के ज़ईफ़ मुसलमान पामाल होने से बच गए। (फ़ा76) यानी दुख़ूले हरम से क़ब्ल। (फ़ा77) फ़तहे ख़ैबर कि फ़तहे मौऊद के हासिल होने तक मुसलमानों के दिल इससे राहत पायें इसके बाद जब अगला साल आया तो अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर के ख़्वाब का जलवा दिख लाया और वाक़िआ़त उसके मुताबिक़ रूनुमा हुए चुनान्चे इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा78) ख़्वाह वह मुशरिकीन के दीन हों या अहले किताब के चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने यह निअ़्मत अ़ता फ़रमाई और इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़ालिब फ़रमा दिया। (फ़ा79) अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत पर जैसा कि फ़रमाता है। (फ़ा80) यानी उनके असहाब। (फ़ा81) जैसा कि शेर शिकार पर और सहाबा का तशद्दुद कुफ़्फ़ार के साथ इस हद पर था कि वह लिहाज़ रखते थे कि उनका बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उनके कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाये। (मदारिक) (फ़ा82) एक दूसरे पर मुहब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसी कि जैसे बाप बेटे में हो और यह मुहब्बत इस हद तक पहुंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे को देखे तो फ़र्ते मुहब्बत से मुसाफ़हा व मुआ़नक़ा करे। (फ़ा83) कसरत से नमाज़ें पढ़ते नमाज़ों पर मुदावमत करते। (फ़ा84) और यह अ़लामत वह नूर है जो रोज़े क़ियामत उनके चेहरों से ताबां होगा इससे पहचाने जायेंगे कि उन्होंने दुनिया में अल्लाह तआ़ला के लिए बहुत सज्दे किये हैं और यह भी कहा गया है कि उनके चेहरों में सज्दा का मक़ाम माहे शब चहार दहुम की तरह चमकता दमकता होगा अ़ता का क़ौल है कि शब की दराज़ नमाज़ों से उनके चेहरों पर नूर नुमायां होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जो रात को नमाज़ की कसरत करता है सुबह को उसका चेहरा ख़ूबसूरत हो जाता है और यह भी कहा गया है कि गर्द का निशान भी सज्दा की अ़लामत है (फ़ा85) यह मज़्कूर है कि (फ़ा86) यह मिसाल इब्तेदाए इस्लमा और उसकी तरक़्क़ी की बयान फ़रमाई गई कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तन्हा उठे फिर अल्लाह तआ़ला ने आपको आपके मुख़लिसीन असहाब से तक़वियत दी क़तादा ने कहा कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के असहाब की मिसाल इन्जील में यह लिखी है कि एक क़ौम खेती **(बक़िया सफ़हा 842 पर)**

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ

सूरतुल् हुजुराति

(मदनी है इस सूरह में 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तु– क़द्दिमू बै–न य–दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तकुल्ला–ह इन्नल्ला–ह समीअुन् अ़लीम(1)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू ला तर्–फ़अू अस्वा–तकुम् फ़ौ–क़ सौतिन् नबिय्यि व ला तज्–हरू लहू बिल्क़ौलि क–जह्रि बअ्ज़िकुम् लि–बअ्ज़िन् अन् तह्ब–त अअ्मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अुरून(2)इन्नल्लज़ी–न यगुज़्ज़ू–न अस्वा–तहुम् अ़िन्–द रसूलिल्लाहि उलाइ–कल् लज़ीनम्–त–ह्–नल्लाहु क़ुलू–बहुम् लित्तक़्वा लहुम् मग़्फ़ि–र–तुंव् व अज्रुन् अ़ज़ीम(3)इन्नल् लज़ी–न युनादू–न–क मिंव्–राइल् हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ्–क़िलून(4)व लौ अन्नहुम् स–बरू हत्ता तख़्रु–ज इलैहिम् लका–न ख़ै–रल् लहुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (5)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इन् जा–अकुम् फ़ासिक़ुम् बि–न–बइन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो (फ़ा2) और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह सुनता जानता है।(1) ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से (फ़ा3) और उनके हुजूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जायें और तुम्हें ख़बर न हो।(2) (फ़ा4) बेशक वह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास (फ़ा5) वह हैं जिनका दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए परख लिया है उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।(3) बेशक वह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें अक्सर बे–अ़क़्ल हैं।(4) (फ़ा6) और अगर वह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उनके पास तशरीफ़ लाते (फ़ा7) तो यह उनके लिए बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(5) (फ़ा8) ऐ ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो (फ़ा9)

(फ़ा1) सूरह हुजुरात मदनी है इसमें दो रुकूअ़ अट्ठारह आयतें 343 कलिमे और 1476 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी तुम्हें लाज़िम है कि अस्लन तुम से तक़दीम वाक़ेअ़ न हो न क़ौल में न फ़ेअ़ल में कि तक़दीम करना रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अदब व एहतेराम के ख़िलाफ़ है बारगाहे रिसालत में नियाज़मन्दी व आदाब लाज़िम हैं **शाने नुज़ूलः** चन्द शख़्सों ने ईदुल अज़्हा के दिन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले क़ुरबानी कर ली तो उनको हुक्म दिया गया कि दोबारा क़ुरबानी करें और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि बाज़े लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरू कर देते थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से तक़द्दुम न करो। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (फ़ा3) यानी जब हुजूर में कुछ अर्ज़ करो तो आहिस्ता पस्त आवाज़ से अर्ज़ करो यही दरबारे रिसालत का अदब व एहतेराम है। (फ़ा4) इस आयत में हुज़ूर का इजलाल व इकराम व अदब व एहतेराम तालीम फ़रमाया गया और हुक्म दिय गया कि निदा करने में अदब का पूरा लिहाज़ रखें जैसे आपस में एक दूसरे को नाम लेकर पुकारते हैं उस तरह न पुकारें बल्कि कलिमाते अदब व ताज़ीम व तौसीफ़ व तकरीम व अलक़ाबे अ़ज़मत के साथ अ़र्ज़ करो जो अ़र्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि यह आयत साबित बिन कैस बिन शम्मास के हक़ में नाज़िल हुई उन्हें सिक़ले समाअ़त था और आवाज़ उन की ऊँची थी **(बक़िया सफ़हा 842 पर)**

فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

फ़–त–बय्यनू अन् तुसीबू क़ौमम् बि–जहा–लतिन् फ़तुस्बिहू अ़ला मा फ़–अ़ल्तुम् नादिमीन(6) वअ़–लमू अन्–न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम् मिनल्–अम्रि ल–अ़नित्तुम् व लाकिन्नल्ला–ह ह़ब्ब–ब इलैकुमुल् ईमा–न व ज़य्य–नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र–ह इलैकुमुल् कुफ़्–र वल्फ़ुसू–क़ वल्अ़िस्या–न उलाइ–क हुमुर् राशिदून(7)फ़ज़्लम् मिनल्लाहि व निअ़्म–तन् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(8)व इन् ताइ–फ़तानि मिनल् मुअ्मिनी–नक़्त–तलू फ़–अस्लिहू बै–नहुमा फ़–इम् ब–ग़त् इह़्दाहुमा अ–लल्उख़्रा फ़क़ातिलुल् लती तब्ग़ी ह़त्ता तफ़ी–अ इला अम्रिल्लाहि फ़–इन् फ़ाअत् फ़–अस्लिहू बै–नहुमा बिल् अ़दलि व अक़्सितू इन्नल्ला–ह युहि़ब्बुल् मुक़्सित़ीन(9)इन्नमल् मुअ्मिनू–न इख़्वतुन् फ़–अस्लिहू बै–न अ–ख़वैकुम् वत्तकुल्ला–ह ल–अ़ल्ल–कुम् तुर्–ह़मून(10)या अय्युहल् लज़ी–न आ–मनू ला यस्ख़र् क़ौमुम् मिन् क़ौमिन् अ़सा अंय्यकूनू ख़ैरम् मिन्हुम् व ला

कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ।(6) और जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल हैं (फ़10) बहुत मुआ़मलों में अगर यह तुम्हारी खुशी करें (फ़11) तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म उदूली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं।(7) (फ़12) अल्लाह का फ़ज़्ल और एहसान और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(8) और अगर मुसलमानों के दो गरोह आपस में लड़ें तो उनमें सुलह कराओ (फ़13) फिर अगर एक दूसरे पर ज़्यादती करे (फ़14) तो उस ज़्यादती वाले से लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उनमें इस्लाह कर दो और अ़द्ल करो बेशक अ़द्ल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।(9) मुसलमान मुसलमान भाई हैं (फ़15) तो अपने दो भाईयों में सुलह करो (फ़16) और अल्लाह से डरो कि तुम पर रहमत हो।(10) (फ़17) (रुकूअ़ 13) ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें (फ़18) अ़जब नहीं कि वह उन हंसने वालों से बेहतर हों (फ़19) और न

(फ़ा10) अगर तुम झूठ बोलोगे तो अल्लाह तआ़ला के ख़बरदार करने से वह तुम्हारा इफ़शा हाल करके तुम्हें रुसवा कर देंगे। (फ़ा11) और तुम्हारी राय के मुताबिक़ हुक्म दे दें (फ़ा12) कि तरीक़े हक़ पर क़ाइम रहे। (फ़ा13) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दराज़ गोश पर सवार तशरीफ़ ले जाते थे अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुआ वहां थोड़ा सा तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय ने नाक बन्द कर ली हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हुजूर के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है हुजूर तशरीफ़ ले गए उन दोनों में बात बढ़ गई और उन दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई तक नौबत पहुंची तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ लाये और उन में सुलह करा दी इस मुआ़मला में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा14) ज़ुल्म करे और सुलह से मुन्किर हो जाये मसला बाग़ी गरोह का यही हुक्म है कि उससे क़िताल किया जाये यहां तक कि वह जंग से बाज़ आये। (फ़ा15) कि आपस में दीनी राबता और इस्लामी मुहब्बत के साथ मरबूत हैं यह रिश्ता तमाम दुनियवी रिश्तों से क़वी तर है (फ़ा16) जब कभी उनमें निज़ाअ़ वाक़ेअ़ हो (फ़ा17) क्योंकि अल्लाह तआ़ला से डरना और परहेज़गारी इख़्तियार करना मोमिनीन की बाहमी मुहब्बत व मुवद्दत का सबब है और जो अल्लाह तआ़ला से डरता है अल्लाह तआ़ला की रहमत उस पर होती है (फ़ा18) **शाने नुज़ूलः** इस आयत का नुज़ूल कई वाक़िओं में हुआ पहला वाक़िआ यह है कि साबित बिन क़ैस बिन शम्मास को सिक्ले समाअ़त था जब वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होते तो सहाबा उन्हें आगे बिठाते और उनके लिए जगह ख़ाली कर देते ताकि वह हुज़ूर के क़रीब हाज़िर रह कर कलामे मुबारक सुन सकें एक **(बक़िया सफ़हा 843 पर)**

نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ۚ وَ مَنْ
لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا یَغْتَبْ
بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۳﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ
قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا یَدْخُلِ الْاِیْمَانُ فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَا یَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَیْـًٔا ؕ

निसाउम् मिन् निसाइन् अ़सा अंय्यकुन्–न ख़ै–रम् मिन्हुन्–न व ला तल्मिज़ू अन्फु–सकुम् व ला तना–बज़ू बिल् अल्क़ाबि बिअ्स लिस्मुल् फ़ुसूक़ु बअ्–दल् ईमानि व मल्लम् यतुब् फ़उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(11)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनुज्तनिबू कसीरम् मिनज़्ज़न्नि इन्–न बअ्ज़ज़् ज़न्नि इस्मुंव् व ला त–जस्ससू व ला यग़्–तब् बअ्जुकुम् बअ्ज़न् अयुहिब्बु अ–ह़दुकुम् अंय्यअ्कु–ल लह्–म अख़ीहि मै–तन् फ़–करिह्तुमूहु वत्तकुल्ला–ह इन्नल्ला–ह तव्वाबुर् रह़ीम(12)या अय्युहन्नासु इन्ना ख़–लक़्नाकुम् मिन् ज़–करिंव् व उन्सा व ज–अ़ल्नाकुम् शुअूबंव् व क़बाइ–ल लि–तआ–रफ़ू इन्–न अक्–र–मकुम् अ़िन्दल्लाहि अत्–क़ाकुम् इन्नल्ला–ह अ़लीमुन् ख़बीर(13)क़ा–लतिल् अअ्राबु आमन्ना क़ुल् लम् तुअ्मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्–लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल् ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम् व इन् तुती–अुल्ला–ह व रसू–लहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्मालिकुम् शैअन्

औरतें औरतों से दूर नहीं कि वह उन हंसने वालियों से बेहतर हों (फ़20) और आपस में तअ़्ना न करो (फ़21) और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो (फ़22) क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना (फ़23) और जो तौबा न करें तो वही ज़ालिम है।(11) ऐ ईमान वालों बहुत गुमानों से बचो (फ़24) बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है (फ़25) और ऐब न ढूंडो (फ़26) और एक दूसरे की ग़ीबत न करो (फ़27) क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो यह तुम्हें गवारा न होगा (फ़28) और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।(12) ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द (फ़29) और एक औरत (फ़ा30) से पैदा किया (फ़ा31) और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो (फ़ा32) बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है (फ़ा33) बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है।(13) गंवार बोले हम ईमान लाए (फ़ा34) तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए (फ़ा35) हां यूं कहो कि हम मुतीअ़ हुए (फ़ा36) और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में कहां दाख़िल हुआ (फ़ा37) और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करोगे (फ़ा38) तो तुम्हारे किसी अ़मल का तुम्हें नक़सान न देगा (फ़ा39)

(फ़ा20) **शाने नुज़ूलः** यह आयत उम्मुलमोमिनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हुयई रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हक़ में नाज़िल हुई उन्हें मालूम हुआ था कि उम्मुलमोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उन्हें यहूदी की लड़की कहा इस पर उन्हें रन्ज हुआ और रोईं और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शिकायत की तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम नबी ज़ादी और नबी की बीबी हो तुम पर वह क्या फ़ख़्र करती हैं और हज़रत हफ़सा से फ़रमाया ऐ हफ़सा ख़ुदा से डरो (तिर्मिज़ी व क़ाल हसन सही ग़रीब) (फ़ा21) एक दूसरे पर ऐब न लगाओ अगर एक मोमिन ने दूसरे मोमिन पर ऐब लगाया तो गोया अपने ही आप को ऐब लगाया। (फ़ा22) जो उन्हें नागवार मालूम हों **मसाइलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अगर सिकी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली है उसको बाद तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नही में दाख़िल और ममनूअ़ है बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुअर कहना भी इसी में दाख़िल है बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि इससे वह अलक़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उसको नागवार हो लेकिन तारीफ़ के अलक़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं जैसे कि हज़रत अबू बकर का लक़ब अ़तीक़ और हज़रत उमर का फ़ारूक़ और हज़रत उसमान का ज़ुन्नूरैन और हज़रत अली का अबू तुराब और हज़रत ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और जो अलक़ाब ब–मन्ज़िला अलम हो गए और साहबे अलक़ाब को नागवार नहीं वह अलक़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि अअ़्मश अअ़्रज (फ़ा23) तो ऐ मुसलमानों किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उसको ऐब लगा कर या उसका नाम बिगाड़ कर अपने आपको **(बक़िया सफ़हा 843 पर)**

إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

इन्नल्ला–ह ग़फूरुर् रहीम(14)इन्नमल् मुअ्मिनू–नल् लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्–म लम् यर्ताबू व जा–हदू बि–अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ–क हुमुस्सादिकू़न(15)कुल् अतु–अ़ल्लिमूनल्ला–ह बिदीनिकुम् वल्लाहु यअ्–लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(16)यमुन्नू–न अ़लै–क अन् अस्लमू कुल् ला तमुन्नू अ़–लय्–य इस्ला–मकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिल्ईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (17)इन्नल्ला–ह यअ्–लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु बसीरुम् बिमा तअ्–मलून(18)

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(14) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया (फ़ा40) और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया वही सच्चे हैं।(15) (फ़ा41) तुम फ़रमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है(फ़ा42)और अल्लाह सब कुछ जानता है।(16)(फ़ा43) ऐ महबूब वह तुम पर एहसान जताते हैं कि मुसलमान हो गए तुम फ़रमाओ अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।(17)(फ़ा44)बेशक अल्लाह जानता है आसमानों और ज़मीन के सब ग़ैब और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(18)(फ़ा45)(रुकूअ् 14)

(फ़ा40) अपने दीन व ईमान में। (फ़ा41) ईमान के दावा में **शाने नुजूलः** जब यह दोनों आयतें नाज़िल हुईं तो अअ्राब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने क़स्में खाईं कि हम मोमिन मुख़लिस हैं इस पर अगली आयत नाज़िल हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब फ़रमाया गया। (फ़ा42) उससे कुछ मख़्फ़ी नहीं। (फ़ा43) मोमिन का ईमान भी और मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ भी तुम्हारे बताने और ख़बर देने की हाजत नहीं (फ़ा44) अपने दावे में (फ़ा45) उससे तुम्हारा कोई हाल छुपा नहीं न ज़ाहिर न मख़्फ़ी।

(बकि़या सफ़हा 813 का) तो उनका भेजने वाला उन्हें ज़रूर ख़बर देता कि उनके साथ क्या करेगा तो अल्लाह तआ़ला ने आयत *लि-यग़्फ़ि-र ल-कल्लाहु मा त-क़द्-द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र* नाज़िल फ़रमाई सहाबा ने अर्ज़ किया या नबीयल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुजूर को मुबारक हो आपको तो मालूम हो गया कि आपके साथ क्या किया जाएगा यह इन्तेज़ार है कि हमारे साथ क्या करेगा इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई *लियुद्-ख़ि-लल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु* और यह आयत नाज़िल हुई *बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बि-अन्न लहुम्-मिनल्लाहि फ़ज़्लन् कबीरा* तो अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमा दिया कि हुजूर के साथ क्या करेगा और मोमिनीन के साथ क्या दूसरा क़ौल आयत की तफ़सीर में यह है कि आख़िरत का हाल तो हुजूर को अपना भी मालूम है मोमिनीन का भी मुकज़्ज़िबीन का भी माना यह हैं कि दुनिया में क्या किया जाएगा यह मालूम नहीं अगर यह माना लिये जायें तो भी आयत मन्सूख़ है अल्लाह तआ़ला ने हुजूर को यह भी बता दिया *लियुज़्-हि-रहु अ़लद्-दीनि कुल्लिही* और *मा कानल्लाहु लियु-अ़ज़्ज़ि-बहुम् व अन्-त फ़ीहिम्* बहरहाल अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुजूर के साथ और हुजूर की उम्मत के साथ पेश आने वाले उमूर पर मुत्तलअ् फ़रमा दिया ख़्वाह वह दुनिया के हों या आख़िरत के और अगर दरायत बमाना इदराक बिलक़ियास यानी अ़क़्ल से जानने के माना में लिया जाए तो मज़मून और भी ज़्यादा साफ़ है और आयत का इसके बाद वाला जुमला इसका मुअय्यिद है अ़ल्लामा नीशापुरी ने इस आयत के तहत में फ़रमाया कि इसमें नफ़ी अपनी ज़ात से जानने की है मिन जहतुल वही जानने की नफ़ी नहीं (फ़ा24) यानी मैं जो कुछ जानता हूं अल्लाह तआ़ला की तालीम से जानता हूं (फ़ा25) वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाए और आपकी सेहते नबुव्वत की शहादत दी (फ़ा26) कि वह कुरआन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है (फ़ा27) और ईमान से महरूम रहे तो इसका नतीजा क्या होना है। (फ़ा28) यानी दीने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में (फ़ा29) ग़रीब लोग (फ़ा30) **शाने नुजूलः** यह आयत मुशरिकीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि अगर दीने मुहम्मदी हक़ होता तो फ़ुलां व फ़ुलां इसको हमसे पहले कैसे क़बूल कर लेते (फ़ा31) एनाद से कुरआन शरीफ़ की निस्बत (फ़ा32) तौरेत (फ़ा33) पहली किताबों की

سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌ
بَعِيْدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى
السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝
تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۝ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝

सूरतु क़ाफ़

(मक्की है इसमें 45 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

क़ाफ़् वल्कुरआनिल् मजीद(1)बल् अ़जिबू अन् जा–अहुम् मुन्ज़िरुम् मिन्हुम् फ़क़ालल् काफ़िरू–न हाज़ा शैउन् अ़जीब(2)अ–इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि–क रज्अुम् बअ़ीद(3)क़द् अ़लिम्ना मा तन्कुसुल् अर्ज़ु मिन्हुम् व अ़िन्दना किताबुन् ह़फ़ीज़(4)बल् कज़्ज़बू बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा–अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम् मरीज(5)अ–फ़–लम् यन्ज़ुरू इ–लस्समाइ फ़ौ–क़हुम् कै–फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन्फ़ुरूज(6) वल्अर्–ज़ म–दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि–य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम् बहीज(7)तब्सि–र–तंव व ज़िक्रा लिकुल्लि अ़ब्दिम् मुनीब(8)व नज़्ज़ल्ना मि–नस्समाइ माअम् मुबा–र–कन् फ़–अम्बत्ना बिही जन्नातिंव् व ह़ब्बल् ह़सीद(9)वन्नख़्–ल बासि–क़ातिल् लहा तल्अुन् नज़ीद(10)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

इज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम।(1) (फ़ा2) बल्कि उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया (फ़ा3) तो काफ़िर बोले यह तो अ़जीब बात है।(2) क्या जब हम मर जायें और मिट्टी हो जायेंगे फिर जियेंगे यह पलटना दूर है।(3) (फ़ा4) हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उनमें से घटाती है (फ़ा5) और हमारे पास एक याद रखने वाली किताब है।(4) (फ़ा6) बल्कि उन्होंने हक़ को झुठलाया (फ़ा7) जब वह उनके पास आया तो वह एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं।(5) (फ़ा8) तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को न देखा (फ़ा9) हमने उसे कैसा बनाया (फ़ा10) और संवारा (फ़ा11) और उसमें कहीं रख़्ना नहीं।(6) (फ़ा12) और ज़मीन को हमने फैलाया (फ़ा13) और उसमें लंगर डाले (फ़ा14) और उसमें हर बा–रौनक़ जोड़ा उगाया।(7) सूझ और समझ (फ़ा15) हर रुजूअ़ वाले बन्दे के लिए।(8) (फ़ा16) और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा (फ़ा17) तो उससे बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है।(9)(फ़ा18) और खजूर के लम्बे दरख़्त जिनका पक्का गाभा।(10)

(फ़ा1) सूरह क़ाफ़ मक्की है इसमें तीन रुकूअ़ पैंतालीस आयतें 375 कलिमे और 1494 हरफ़ हैं। (फ़ा2) हम जानते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान नहीं लाये (फ़ा3) जिसकी अ़दालत व अमानत और सिद्क़ व रास्त बाज़ी को वह ख़ूब जानते हैं और यह भी उनके दिल नशीन है कि ऐसे सिफ़ात का शख़्स सच्चा नासेह होता है बावजूद इसके उनका सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के अन्दाज़ से तअ़ज्जुब व इंकार करना क़ाबिले हैरत है। (फ़ा4) उनकी इस बात के रद व जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है (फ़ा5) यानी उनके जिस्म के जो हिस्से गोश्त ख़ून हड्डियां वग़ैरह ज़मीन खा जाती है उनमें से कोई चीज़ हम से छुपी नहीं तो हम उनको वैसे ही ज़िन्दा करने पर क़ादिर हैं जैसे कि वह पहले थे (फ़ा6) जिसमें उनके असमा आदाद और जो कुछ उन में से ज़मीन ने खाया सब साबित व मकतूब व महफ़ूज़ है (फ़ा7) बग़ैर सोचे समझे और हक़ से मुराद या नबुव्वत है जिसके साथ मोअ़्जेज़ात बाहिरात हैं या क़ुरआन मजीद (फ़ा8) तो कभी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को शायर कभी साहिर कभी काहिन और इसी तरह क़ुरआन पाक को शेअ़र व सेहर व कहानत कहते है। किसी एक बात पर क़रार नहीं। (फ़ा9) चश्मे बीना व नज़रे ऐतबार से कि **(बक़िया सफ़हा 843 पर)**

رِزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝ وَجَاۗءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝ وَجَاۗءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَاۗىِٕقٌ وَّشَهِيْدٌ ۝ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاۗءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ

रिज़्क़ल् लिल्अिबादि व अह्यैना बिही बल्द–तम् मैतन् कज़ालिकल् खुरूज(11)कज़्ज़–बत् क़ब्–लहुम् क़ौमु नूहिंव् व अस्हाबुर्रस्सि व समूद(12)व आदुंव् व फ़िरऔनु व इख़्वानु लूत(13)व अस्हाबुल् ऐ–कति व क़ौमु तुब्बअिन् कुल्लुन् कज़्ज़–बर् रुसु–ल फ़–हक़्–क़ वअीद(14)अ–फ़–अयीना बिल्–ख़ल्क़िल् अव्वलि बल् हुम् फ़ी लब्सिम् मिन् ख़ल्क़िन् जदीद(15)व ल–क़द् ख़–लक़्नल् इन्सा–न व नअ्–लमु मा तु–वस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक़्–रबु इलैहि मिन् हब्लिल् वरीद(16)इज़् य–त–लक़्क़ल् मु–त–लक़्क़ियानि अनिल् यमीनि व अनिश्शिमालि क़अीद(17)मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अतीद(18)व जाअत् सक्–रतुल् मौति बिल्हक़्क़ि ज़ालि–क मा कुन्–त मिन्हु तहीद(19)व नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि ज़ालि–क यौमुल् वअीद(20)व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम् म–अहा साइक़ुंव् व शहीद(21)ल–क़द् कुन्–त फ़ी ग़फ़्–लतिम् मिन् हाज़ा फ़–क–शफ़्ना अन्–क ग़िता–अ–क फ़–ब–सरुकल् यौ–म हदीद(22)व क़ा–ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल–दय्–य अतीद(23) अल्क़िया फ़ी जहन्न–म

बन्दों की रोज़ी के लिए और हम ने उस (फ़ा19) से मुर्दा शहर जिलाया (फ़ा20) यूंही क़ब्रों से तुम्हारा निकलना है।(11) (फ़ा21) इन से पहले झुठलाया (फ़ा22) नूह की क़ौम और रस वालों (फ़ा23) और समूद।(12) और आद और फ़िरऔन और लूत के हम क़ौमों।(13) और बन वालों और तुब्बअ़ की क़ौम ने (फ़ा24) उनमें हर एक ने रसूलों को झुठलाया तो मेरे अ़ज़ाब का वादा साबित हो गया।(14) (फ़ा25) तो क्या हम पहली बार बना कर थक गए (फ़ा26) बल्कि वह नए बनने से (फ़ा27) शुबहा में हैं।(15) (रुकूअ़ 15) और बेशक हमने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो वसवसा उसका नफ़्स डालता है (फ़ा28) और हम दिल की रग से भी उससे ज़्यादा नज़दीक हैं।(16) (फ़ा29) जब उससे लेते हैं दो लेने वाले (फ़ा30) एक दाहिने बैठा और एक बायें।(17) (फ़ा31) कोई बात वह ज़बान से नहीं निकालता कि उसके पास एक मुहाफ़िज़ तैयार न बैठा हो।(18) (फ़ा32) और आई मौत की सख़्ती (फ़ा33) हक़ के साथ (फ़ा34) यह है जिससे तू भागता था।(19) और सूर फूंका गया (फ़ा35) यह है वादए अ़ज़ाब का दिन।(20) (फ़ा36) और हर जान यूं हाज़िर हुई कि उसके साथ एक हांकने वाला (फ़ा37) और एक गवाह।(21) (फ़ा38) बेशक तू इससे ग़फ़लत में था (फ़ा39) तो हमने तुझ पर से पर्दा उठाया (फ़ा40) तो आज तेरी निगाह तेज़ है।(22) (फ़ा41) और उसका हमनशीन फ़रिश्ता (फ़ा42) बोला यह है (फ़ा43) जो मेरे पास हाज़िर है।(23) हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो

(फ़ा19) बारिश के पानी (फ़ा20) जिसके नबातात ख़ुश्क हो चुके थे फिर उसको सब्ज़ाज़ार कर दिया (फ़ा21) तो अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के आसार देख कर मरने के बाद फिर ज़िन्दा होने का क्यों इनकार करते हो (फ़ा22) रसूलों को (फ़ा23) रस एक कुआँ है जहां यह लोग मअ़ अपने मवेशी के मुक़ीम थे और बुतों को पूजते थे यह कुआं ज़मीन में धंस गया और उसके क़रीब की ज़मीन भी यह लोग और उनके अमवाल उसके साथ धंस गए (फ़ा24) उन सब के तज़किरे सूरह फ़ुरक़ान व हजर व दुख़ान में गुज़र चुके। (फ़ा25) इसमें क़ुरैश को तहदीद और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली है कि आप क़ुरैश के कुफ़्र से तंग दिल न हों हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाते और उनके दुश्मनों पर अ़ज़ाब करते रहे हैं इसके बाद मुन्किरीने बअ़्स के आसार का जवाब इरशाद होता है। (फ़ा26) जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो उसमें मुन्किरीने बअ़्स के कमाले जहल का इज़हार है कि बावजूद इस इक़रार के कि ख़ल्क़ अल्लाह तआ़ला ने पैदा की उसके दोबारा पैदा करने को मुहाल और मुस्तबइद समझते हैं। (फ़ा27) यानी मौत के बाद पैदा किये जाने से। (फ़ा28) हम से उसके सराइर **(बक़िया सफ़हा 843 पर)**

كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن

كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ

امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾ مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ

وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم

بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَ

कुल्–ल कफ़्फ़ारिन् अ़नीद(24)मन्नाअ़िल् लिल्ख़ैरि मुअ़्–तदिम् मुरीबि नि(25)ल्लज़ी ज–अ़–ल म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र फ़–अल्क़ियाहु फ़िल्–अ़ज़ाबिश्शदीद(26)क़ा–ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का–न फ़ी ज़लालिम् बअ़ीद(27)क़ा–ल ला तख़्–तसिमू ल–दय्–य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्वअ़ीद(28)मा युबद्–दलुल् क़ौलु ल–दय्–य व मा अना बिज़ल्लामिल् लिल्अ़बीद(29)यौ–म नक़ूलु लि–जहन्न–म हलिम्त–लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम् मज़ीद(30)व उज़्लि–फ़तिल् जन्नतु लिल्–मुत्तक़ी–न ग़ै–र बअ़ीद(31)हाज़ा मा तू–अ़दू–न लिकुल्लि अव्वाबिन् ह़फ़ीज़(32)मन् ख़शि–यर्रह़्मा–न बिल्ग़ैबि व जा–अ बि–क़ल्बिम् मुनीबि नि(33)दख़ुलूहा बि–सलामिन् ज़ालि–क यौमुल् ख़ुलूद(34)लहुम् मा यशाऊ–न फ़ीहा व लदैना मज़ीद(35)व कम् अह्–लक्ना क़ब्–लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्–शन् फ़–नक़्क़बू फ़िल्बिलादि हल् मिम् महीस़(36)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लज़िक्रा लिमन् का–न लहू क़ल्बुन् औ अल्–क़स् सम्–अ़ व हु–व शहीद(37)व ल–क़द् ख़–लक़्–नस्समावाति

हर बड़े नाशुकरे हट धरम को।(24) जो भलाई से बहुत रोकने वाला हद से बढ़ने वाला शक करने वाला।(25) (फ़ा44) जिसने अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद ठहराया तुम दोनों उसे सख़्त अ़ज़ाब में डालो।(26) उसके साथी शैतान ने कहा (फ़ा45) हमारे रब मैंने उसे सरकश न किया (फ़ा46) हां यह आप ही दूर की गुमराही में था।(27) (फ़ा47) फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो (फ़ा48) मैं तुम्हें पहले ही अ़ज़ाब का डर सुना चुका था।(28) (फ़ा49) मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं।(29) (रुकूअ़ 16) जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमायेंगे क्या तू भर गई (फ़ा50) वह अ़र्ज़ करेगी कुछ और ज़्यादा है।(30) (फ़ा51) और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के कि उनसे दूर न होगी।(31) (फ़ा52) यह है वह जिसका तुम वादा दिये जाते हो (फ़ा53) हर रुजूअ़ लाने वाले निगहदाश्त वाले के लिए।(32) (फ़ा54) जो रहमान से बे देखे डरता है और रुजूअ़ करता हुआ दिल लाया।(33) (फ़ा55) उनसे फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ (फ़ा56) यह हमेशगी का दिन है।(34) (फ़ा57) उनके लिए है उसमें जो चाहें और हमारे पास उससे भी ज़्यादा है।(35) (फ़ा58) और उन से पहले (फ़ा59) हमने कितनी संगतें हलाक फ़रमा दीं कि गिरिफ़्त में उनसे सख़्त थीं (फ़ा60) तो शहरों में काविशें कीं (फ़ा61) है कहीं भागने की जगह।(36) (फ़ा62) बेशक इसमें नसीहत है उसके लिए जो दिल रखता हो (फ़ा63) या कान लगाए (फ़ा64) और मुतवज्जह हो।(37) और बेशक हमने आसमानों

(फ़ा44) दीन में। (फ़ा45) जो दुनिया में उस पर मुसल्लत था। (फ़ा46) यह शैतान की तरफ़ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्नम में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैतान ने वरग़लाया इस पर शैतान कहेगा कि मैंने उसे गुमराह न किया (फ़ा47) मैंने इसे गुमराही की तरफ़ बुलाया इसने कबूल कर लिया इस पर इरशादे इलाही होगा अल्लाह तआ़ला। (फ़ा48) कि दारुल जज़ा और मौक़फ़े हिसाब में झगड़ा कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। (फ़ा49) अपनी किताबों में और अपने रसूलों की ज़बानों पर मैंने तुम्हारे लिए कोई हुज्जत बाक़ी न छोड़ी। (फ़ा50) अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम से वादा फ़रमाया है कि उसे जिन्नों और इन्सानों से भरेगा इस वादा की तहक़ीक़ के लिए जहन्नम से यह सवाल फ़रमाया जाएगा। (फ़ा51) इसके माना यह भी हो सकते हैं कि अब मुझमें गुन्जाइश बाक़ी नहीं मैं भर चुकी और यह भी हो सकते हैं कि अभी और भी गुन्जाइश है (फ़ा52) अर्श के दाहिनी तरफ़ जहां से अहले मौक़फ़ उसको देखेंगे और उनसे कहा जाएगा (फ़ा53) रसूलों की मअ़रेफ़त **(बक़िया सफ़हा 845 पर)**

الْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا نَحْنُ
نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ
فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव् व मा मस्सना मिल्–लुगूब(38)फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न व सब्बिह् बि–ह़म्दि रब्बि–क क़ब्–ल तुलू–अ़िश्शम्सि व क़ब्–लल्गुरूब(39)व मिनल् लैलि फ़–सब्बिह्हु व अद्बा–रस्सुजूद(40)वस्तमिअ् यौ–म युनादिल्मुनादि मिम् मकानिन् क़रीब(41)यौ–म यस्मअू–नस् सै–ह़–त बिल्ह़क़्क़ि ज़ालि–क यौमुल् ख़ुरूज(42)इन्ना नह़्नु नुह़्यी व नुमीतु व इलैनल् मसीर(43)यौ–म त–शक़्क़कुल् अर्ज़ु अ़न्हुम् सिरा–अ़न् ज़ालि–क ह़श्रुन् अ़लैना यसीर(44)नह़्नु अअ्–लमु बिमा यक़ूलू–न व मा अन्–त अ़लैहिम् बि–जब्बारिन् फ़–ज़क्किर् बिल्क़ुर्–आनि मंय्यख़ाफ़ु वअ़ीद(45)

और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाया और तकान हमारे पास न आई।(38) (फ़ा65) तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और डूबने से पहले।(39) (फ़ा66) और कुछ रात गए उसकी तस्बीह करो (फ़ा67) और नमाज़ों के बाद।(40) (फ़ा68) और कान लगा कर सुनो जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा (फ़ा69) एक पास जगह से।(41) (फ़ा70) जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे (फ़ा71) हक़ के साथ यह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का।(42) बेशक हम जिलायें और हम मारें और हमारी तरफ़ फिरना है।(43) (फ़ा72) जिस दिन ज़मीन उनसे फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे (फ़ा73) यह हश्र है हम को आसान।(44) हम ख़ूब जान रहे हैं जो वह कह रहे हैं (फ़ा74) और कुछ तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं (फ़ा75) तो क़ुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे।(45) (रुकूअ़ 17)

(फ़ा65) **शाने नुज़ूलः** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो यह कहते थे कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन और उनके दर्मियान कायनात को छः रोज़ में बनाया जिन में से पहला यकशम्बा है और पिछला जुमा फिर वह मआ़ज़ल्लाह थक गया और सनीचर को उसने अ़र्श पर लेट कर आराम लिया इस आयत में उनका रद है कि अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि थके वह क़ादिर है कि एक आन में सारा आ़लम बना दे हर चीज़ को हसबे इक़्तेज़ाए हिकमत हस्ती अ़ता फ़रमाता है शाने इलाही में यहूद का यह कलिमा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत नागवार हुआ और शिद्दते ग़ज़ब से चेहरए मुबारक पर सुर्ख़ी नुमूदार हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने आपकी तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब हुआ। (फ़ा66) यानी फ़ज्र व ज़ुहर व अस्र के वक़्त। (फ़ा67) यानी वक़्ते मग़रिब व इशा व तहज्जुद। (फ़ा68) हदीस हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तमाम नमाज़ों के बाद तस्बीह करने का हुक्म फ़रमाया। (बुख़ारी) हदीस सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हर नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्ह़ानल्लाह तैंतीस मर्तबा अल्ह़म्दु लिल्लाह तैंतीस मर्तबा अल्लाहु अक्बर और एक मर्तबा ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् ह़म्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर॰ पढ़े उसके गुनाह बख़्शे जायें चाहे समुन्दर के झागों के बराबर हों यानी बहुत ही कसीर हों (मुस्लिम शरीफ़) (फ़ा69) यानी हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम (फ़ा70) यानी सख़रए बैतुल मुक़द्दस से जो आसमान की तरफ़ ज़मीन का सब से क़रीब मक़ाम है हज़रत इसराफ़ील की निदा यह होगी ऐ गली हुई हड्डियो बिखरे हुए जोड़ो रेज़ा रेज़ा शुदा गोश्तो परागन्दा बालो अल्लाह तआ़ला तुम्हें फ़ैसला के लिए जमा होने का हुक्म देता है (फ़ा71) सब लोग मुराद इससे नफ़ख़ए सानिया है (फ़ा72) आख़िरत में (फ़ा73) मुर्दे महशर की तरफ़ (फ़ा74) यानी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश। (फ़ा75) कि उन्हें बज़ोर इस्लाम में दाख़िल करो आपका काम दावत देना और समझा देना है (व कान हाज़ा क़ब्लुल अम्र बिलक़िताल)

(बक़िया सफ़हा 821 का) और हुज़ूर के ख़िलाफ़ उनके दुश्मनों की इमदाद करने में और लोगों को जिहाद से रोकने में। (फ़ा73) लोहे के गुरज़ों से। (फ़ा74) और वह बात रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मअ़ीयत में जिहाद को जाने से रोकना और काफ़िरों की मदद करना है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह बात तौरेत के उन मज़ामीन का छुपाना है जिन में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त शरीफ़ है। (फ़ा75) ईमान व ताअ़त और मुसलमानों की मदद और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद में हाज़िर होना।

سُوۡرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرۡوًا ۙ فَالۡحٰمِلٰتِ وِقۡرًا ۙ فَالۡجٰرِيٰتِ يُسۡرًا ۙ فَالۡمُقَسِّمٰتِ اَمۡرًا ۙ اِنَّمَا تُوۡعَدُوۡنَ لَصَادِقٌ ۙ وَّاِنَّ الدِّيۡنَ لَوَاقِعٌ ؕ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الۡحُبُكِ ۙ

اِنَّكُمۡ لَفِىۡ قَوۡلٍ مُّخۡتَلِفٍ ۙ يُّؤۡفَكُ عَنۡهُ مَنۡ اُفِكَ ؕ قُتِلَ الۡخَـرّٰصُوۡنَ ۙ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ غَمۡرَةٍ سَاهُوۡنَ ۙ يَسۡـئَلُوۡنَ اَيَّانَ يَوۡمُ الدِّيۡنِ ؕ يَوۡمَ

هُمۡ عَلَى النَّارِ يُفۡتَنُوۡنَ ۙ ذُوۡقُوۡا فِتۡنَتَكُمۡ ؕ هٰذَا الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۙ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۙ اٰخِذِيۡنَ مَاۤ اٰتٰٮهُمۡ رَبُّهُمۡ ؕ اِنَّهُمۡ

كَانُوۡا قَبۡلَ ذٰلِكَ مُحۡسِنِيۡنَ ؕ كَانُوۡا قَلِيۡلًا مِّنَ الَّيۡلِ مَا يَهۡجَعُوۡنَ ۙ وَبِالۡاَسۡحَارِ هُمۡ يَسۡتَغۡفِرُوۡنَ ۙ وَفِىۡۤ اَمۡوَالِهِمۡ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالۡمَحۡرُوۡمِ ۙ وَفِى الۡاَرۡضِ

सूरतुज़् ज़ारियाति

(मक्की है इस सूरह में 60 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन्(1)फ़ल्हा–मिलाति विक्रन्(2)फ़ल्जारियाति युस्रन्(3)फ़ल्मु–क़स्सिमाति अम्रन्(4)इन्नमा तू–अ़दू–न लसादिक़ुंव्(5)व इन्नद्दी–न लवाक़िअ़(6)वस्समाइ ज़ातिल्हुबुकि (7)इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम् मुख़्तलिफ़िंय्(8)युअ्–फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक(9)क़ुति–लल् ख़र्रासून(10) अ़ल्लज़ी–न हुम् फ़ी ग़म्रतिन् साहून(11)यस्–अलू–न अय्या–न यौमुद्दीन(12)यौ–म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (13)ज़ूक़ू फ़ित्–न–तकुम् हाज़ल् लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ़्जिलून(14) इन्नल्मुत्तक़ी–न फ़ी जन्नातिंव् व अ़ुयूनिन्(15)आख़िज़ी–न मा आताहुम् रब्बुहुम् इन्नहुम् कानू क़ब्–ल ज़ालि–क मुह्सिनीन(16)कानू क़लीलम् मिनल्लैलि मा यह्–जअ़ून(17)व बिल् अस्हारि हुम् यस्तग़्फ़िरून(18)व फ़ी अम्वा–लिहिम् ह़क़्क़ुल् लिस्साइलि वल्–मह़्रूम(19)व फ़िल्अर्ज़ि

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी जो बिखेर कर उड़ाने वालियां।(1) (फ़ा2) फिर बोझ उठाने वालियां।(2) (फ़ा3) फिर नर्म चलने वालियां।(3) (फ़ा4) फिर हुक्म से बांटने वालियां।(4) (फ़ा5) बेशक जिस बात का तुम्हें वादा दिया जाता है (फ़ा6) ज़रूर सच है।(5) और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होना।(6) (फ़ा7) आराईश वाले आसमान की क़सम।(7) (फ़ा8) तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो।(8) (फ़ा9) इस क़ुरआन से वही औंधा किया जाता है जिसकी क़िस्मत ही में औंधाया जाना हो।(9) (फ़ा10) मारे जायें।(10) दिल से तराशने वाले। जो नशे में भूले हुए हैं।(11) (फ़ा11) पूछते हैं (फ़ा12) इन्साफ़ का दिन कब होगा।(12) (फ़ा13) उस दिन होगा जिस दिन वह आग पर तपाए जायेंगे।(13) (फ़ा14) और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना यह है वह जिसकी तुम्हें जल्दी थी।(14) (फ़ा15) बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में हैं।(15) (फ़ा16) अपने रब की अ़तायें लेते हुए बेशक वह इस से पहले (फ़ा17) नेकोकार थे।(16) वह रात में कम सोया करते।(17) (फ़ा18) और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।(18) (फ़ा19) और उनके मालों में हक़ था मंगता और बे नसीब का।(19) (फ़ा20) और ज़मीन में निशानियाँ

(फ़ा1) सूरह ज़ारियात मक्की है इसमें तीन रुकूअ़ साठ आयतें 360 कलिमे और 1239 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी वह हवायें जो ख़ाक वग़ैरह को उड़ाती हैं (फ़ा3) यानी वह घटाएं और बदलियां जो बारिश का पानी उठाती हैं (फ़ा4) वह कश्तियां जो पानी में ब-सहूलत चलती हैं (फ़ा5) यानी फ़रिश्तों की वह जमाअ़तें जो बहुक्मे इलाही बारिश व रिज़्क़ वग़ैरह तक़सीम करती हैं और जिनको अल्लाह तआ़ला ने मुदब्बिरातुल अमूर किया है और आ़लम में तदबीर व तसर्रुफ़ का इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह तमाम सिफ़तें हवाओं की हैं कि वह ख़ाक भी उड़ाती हैं बादलों को भी उठाये फिरती हैं फिर उन्हें लेकर ब-सहूलत चलती हैं फिर अल्लाह तआ़ला के बिलाद में उसके हुक्म से बारिश को तक़सीम करती हैं क़सम का मक़सूद असली उस चीज़ की अ़ज़मत बयान करना है जिसके साथ क़सम फ़रमाई गई क्योंकि यह चीज़ें कमाले क़ुदरते इलाही पर दलालत करने वाली हैं अरबाबे दानिश को मौक़ा दिया जाता है कि वह उनमें नज़र करके बअ़्स व जज़ा पर इस्तिदलाल करें कि जो क़ादिरे बरहक़ ऐसे उमूरे अ़जीबा पर क़ुदरत रखता है वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को फ़ना करने के बाद दोबारा हस्ती अ़ता फ़रमाने पर बेशक क़ादिर है। (फ़ा6) यानी बअ़्स व जज़ा। (फ़ा7) और हिसाब के बाद नेकी बदी का बदला **(बक़िया सफ़्हा 845 पर)**

اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَفِي السَّمَاۗءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ هَلْ

اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ

قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝

आयातुल् लिल्मूकिनीन(20)व फ़ी अन्फु–सिकुम् अ–फ़ला तुब्सिरून(21)व फ़िस्समाइ रिज़्कुकुम् व मा तू–अ़दून(22)फ़–व रब्बिस् समाइ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल–ह़क़्कुम् मिस्–ल मा अन्नकुम् तन्तिकून (23)हल् अता–क ह़दीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल् मुक्रमीन(24)इज़् द–ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन् क़ा–ल सलामुन् क़ौमुम् मुन्करून(25)फ़रा–ग़ इला अह्लिही फ़जा–अ बिअ़िज्लिन् समीन(26)फ़क़र्र–बहू इलैहिम् क़ा–ल अला तअ्कुलून(27)फ़औ–ज–स मिन्हुम् ख़ी–फ़–तन् क़ालू ला त–ख़फ़् व बश्शरूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम(28)फ़–अक़्ब–लतिम्–र अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़–सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम(29)क़ालू कज़ालिकि क़ा–ल रब्बुकि इन्नहू हुवल्–ह़कीमुल् अ़लीम(30)

हैं यक़ीन वालों को।(20) (फ़ा21) और ख़ुद तुम में (फ़ा22) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं।(21) और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है (फ़ा23) और जो तुम्हें वादा दिया जाता है।(22) (फ़ा24) तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक यह क़ुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो।(23) (रुकूअ़ 18) ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर आई।(24) (फ़ा25) जब वह उसके पास आकर बोले सलाम कहा सलाम ना- शनासा लोग हैं।(25) (फ़ा26) फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया।(26) (फ़ा27) फिर उसे उनके पास रखा (फ़ा28) कहा क्या तुम खाते नहीं।(27) तो अपने जी में उनसे डरने लगा (फ़ा29) वह बोले डरिये नहीं (फ़ा30) और उसे एक इल्म वाले लड़के की बशारत दी।(28) इसपर उसकी बीबी (फ़ा31) चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ।(29) (फ़ा32) उन्होंने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है और वही हकीम दाना है।(30)

(फ़ा21) जो अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और उसकी क़ुदरत व हिकमत पर दलालत करती हैं (फ़ा22) तुम्हारी पैदाइश में और तुम्हारे तग़य्युरात में और तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के ऐसे बेशुमार अ़जाइब व ग़राइब हैं जिससे बन्दे को उसकी शाने ख़ुदाई मालूम होती है। (फ़ा23) कि उसी तरफ़ से बारिश करके ज़मीन को पैदावार से माला माल किया जाता है। (फ़ा24) आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब का वह सब आसमान में मकतूब है। (फ़ा25) जो दस या बारह फ़रिश्ते थे। (फ़ा26) यह बात आपने अपने दिल में फ़रमाई। (फ़ा27) नफ़ीस भुना हुआ। (फ़ा28) कि खाएं और यह मेज़बान के आदाब में से है कि मेहमान के सामने खाना पेश करे जब उन फ़रिश्तों ने न खाया तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने। (फ़ा29) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि आपके दिल में बात आई कि यह फ़रिश्ते हैं और अ़ज़ाब के लिए भेजे गए हैं। (फ़ा30) हम अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए हैं। (फ़ा31) यानी हज़रत सारा (फ़ा32) जिसके कभी बच्चा नहीं हुआ और नव्वे या निन्नानवे साल की उम्र हो चुकी मतलब यह था कि ऐसी उम्र और ऐसी हालत में बच्चा होना निहायत तअ़ज्जुब की बात है।

(बक़िया सफ़हा 825 का) होने की उम्मीद की जाती है बाज़ ऐस भी हैं जो निफ़ाक़ में बहुत पुख़्ता और सख़्त हैं उन्हें आज़माइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि ताइब व ग़ैर ताइब में फ़र्क़ हो जाये इस लिए हुक्म हुआ कि उनसे फ़रमा दीजिये (फ़ा38) उस क़ौम से बनी हनीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वह मुराद हैं जिन से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जंग फ़रमाई और यह भी कहा गया है कि उनसे मुराद अहले फ़ारस व रूम हैं जिनसे जंग के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दावत दी (फ़ा39) मसला यह आयत शैख़ैन जलीलैन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के सेहते ख़िलाफ़त की दलील है कि उन हज़रात की इताअ़त पर जन्नत का और उनकी मुख़ालफ़त पर जहन्नम का वादा दिया गया। (फ़ा40) हुदैबिया के मौक़ा पर। (फ़ा41) जिहाद के रह जाने में **शाने नुज़ूलः** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो जो लोग अपाहिज व साहबे उज़्र थे उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारा क्या हाल होगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई

(बक़िया सफ़हा 814 का) रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) बिन अ़ब्दुल्लाह हैं अब्दुल मुत्तलिब के पोते राहिब ने कहा खुदा की क़सम यह नबी हैं उस बेरी के साया में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद से आज तक इनके सिवा कोई नहीं बैठा यही नबी आख़िरुज़्ज़माँ हैं राहिब की यह बात हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल में असर कर गई और नबुव्वत का यक़ीन आपके दिल में जम गया और आपने सोहबत शरीफ़ की मुलाज़मत इख़्तियार की सफ़र व हज़र में आपसे जुदा न होते जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को अपनी नबुव्वत व रिसालत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया तो हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आप पर ईमान लाये उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की उम्र अड़तीस साल की थी जब हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की उम्र चालीस साल की हुई तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ की। (फ़ा40) कि हम सब को हिदायत फ़रमाई और इस्लाम से मुशर्रफ़ किया हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वालिद का नाम अबू क़हाफ़ा और वालिदा का नाम उम्मुल ख़ैर है (फ़ा41) आपकी यह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई और अल्लाह तआ़ला ने आपको हुस्ने अ़मल की वह दौलत अ़ता फ़रमाई कि तमाम उम्मत के आमाल आपके एक अ़मल के बराबर नहीं हो सकते आपकी नेकियों में से एक यह है कि नौ मोमिन जो ईमान की वजह से सख़्त ईज़ाओं और तकलीफ़ों में मुब्तला थे उनको आपने आज़ाद किया उन्हीं में से हैं हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु और आपने यह दुआ़ की। (फ़ा42) यह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई अल्लाह तआ़ला ने आपकी औलाद में सलाह रखी आपकी तमाम औलाद मोमिन है और उनमें हज़रत उम्मुलमोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का मर्तबा किस क़दर बुलन्द व बाला है कि तमाम औरतों पर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़ज़ीलत दी है हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वालिदैन भी मुसलमान और आपके साहबज़ादे मुहम्मद और अब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान और आपकी साहबज़ादियां हज़रत आ़इशा और हज़रत असमा और आपके पोते मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान यह सब मोमिन और सब शरफ़े सहाबियत से मुशर्रफ़ सहाबा हैं आपके सिवा कोई ऐसा नहीं है जिसको यह फ़ज़ीलत हासिल हो कि उसके वालदैन भी सहाबी हों खुद भी सहाबी औलाद भी सहाबी पोते भी सहाबी चार पुश्तें शरफ़े सहाबियत से मुशर्रफ़। (फ़ा43) हर अमर में जिसमें तेरी रज़ा हो। (फ़ा44) दिल से भी और ज़बान से भी। (फ़ा45) उन पर सवाब देंगे। (फ़ा46) दुनिया में नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से। (फ़ा47) मुराद इससे कोई ख़ास शख़्स नहीं है बल्कि हर काफ़िर जो बअ़्स का मुन्किर हो और वालदैन का नाफ़रमान और उसके वालदैन उसको दीने हक़ की दावत देते हों और वह इन्कार करता हो। (फ़ा48) उन में से कोई मर कर ज़िन्दा न हुआ (फ़ा49) मां बाप।

(बक़िया सफ़हा 815 का) चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है आप फ़रमाते थे कि मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐश व राहत अपनी आख़िरत के लिए बाक़ी रखना चाहता हूं। (फ़ा57) हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम (फ़ा58) शिर्क से और अह़क़ाफ़ एक रेगिस्तानी वादी है जहां क़ौमे आ़द के लोग रहते थे। (फ़ा59) वह अ़ज़ाब। (फ़ा60) इस बात में कि अ़ज़ाब आने वाला है (फ़ा61) यानी हूद अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा62) कि अ़ज़ाब कब आएगा।

(बक़िया सफ़हा 816 का) कहते हैं और बुत परस्ती को क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ ठहराते हैं। (फ़ा76) यानी ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस वक़्त को याद कीजिये जब हमने आपकी तरफ़ जिन्नों की एक जमाअ़त को भेजा उस जमाअ़त की तादाद में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि सात जिन्न थे जिन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनकी क़ौम की तरफ़ पयाम रसाँ बनाया बाज़ रिवायात में आया है कि नौ थे उलमाए मुहक़्क़िक़ीन का इस पर इत्तफ़ाक़ है कि जिन्न सब के सब मुकल्लफ़ हैं अब उन जिन्नों का हाल इरशाद होता है कि जब आप बत्ने नख़ला में मक्का मुकर्रमा और ताइफ़ के दर्मियान मक्का मुकर्रमा को आते हुए अपने असहाब के साथ नमाज़े फ़ज्र पढ़ रहे थे उस वक़्त जिन्न (फ़ा77) ताकि अच्छी तरह हज़रत की क़िराअत सुन लें

(बक़िया सफ़हा 817 का) अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से ख़िताब फ़रमाता है। (फ़ा88) अपनी क़ौम की ईज़ा पर। (फ़ा89) अ़ज़ाब तलब करने में क्योंकि अ़ज़ाब उन पर ज़रूर नाज़िल होने वाला है। (फ़ा90) अ़ज़ाबे आख़िरत को (फ़ा91) तो उसकी दराज़ी और दवाम के सामने दुनिया में ठहरने की मुद्दत को बहुत क़लील समझेंगे और ख़्याल करेंगे कि (फ़ा92) यानी यह क़ुरआन और वह हिदायत व बय्यिनात जो इसमें हैं यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तबलीग़ है। (फ़ा93) जो ईमान व ताअ़त से ख़ारिज हैं।

(बक़िया सफ़हा 818 का) क़ुरआन शरीफ़। (फ़ा7) यानी फ़रीक़ैन के कि काफ़िरों के अ़मल अकारत और ईमानदारों की लग़ज़िशें भी मग़फ़ूर। (फ़ा8) यानी जंग हो (फ़ा9) यानी उनको क़त्ल करो (फ़ा10) यानी कसरत से क़त्ल कर चुको और बाक़ी मांदों को क़ैद करने का मौक़ा आ जाये।(फ़ा11) दोनों बातों का इख़्तियार है **मसलाः** मुश्रिकीन के असीरों का हुक्म हमारे नज़दीक यह है कि उन्हें क़त्ल किया जाये या ममलूक बना लिया जाये और एहसानन छोड़ना और फ़िदया लेना जो इस आयत में मज़कूर है वह सूरह बराअ़त की आयत उक़्तुलुल्-मुश्रिकीन से मन्सूख़ हो गया (फ़ा12) यानी जंग ख़त्म हो जाये इस तरह कि मुश्रिकीन इताअ़त क़बूल करें और इस्लाम लायें। (फ़ा13) बग़ैर क़िताल के उन्हें ज़मीन में धंसा कर या उन पर पत्थर बरसा कर और किसी तरह (फ़ा14) तुम्हें क़िताल का हुक्म दिया (फ़ा15) क़िताल में ताकि मुसलमान मक़तूल सवाब पायें और काफ़िर अ़ज़ाब। (फ़ा16) उनके आमाल का सवाब पूरा पूरा देगा **शाने नुज़ूलः** यह आयत रोज़े उहद नाज़िल हुई जबकि मुसलमान ज़्यादा मक़तूल व मजरूह हुए। (फ़ा17) दरजाते आलियात की तरफ़।

(बक़िया सफ़हा 819 का) हुए (फ़ा27) और उन्हें तमीज़ न हो कि उस खाने के बाद वह ज़बह किये जायेंगे यही हाल कुफ़्फ़ार का है जो ग़फ़लत के साथ दुनिया तलबी में मश्गूल हैं और आने वाली मुसीबतों का ख़्याल भी नहीं करते। (फ़ा28) यानी मक्का मुकर्रमा वालों से (फ़ा29) जो अ़ज़ाब व हलाक से बचा सके शाने नुज़ूलः जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा से हिजरत की और ग़ार की तरफ़ तशरीफ़ ले चले तो मक्का मुकर्रमा की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के शहरों में तू अल्लाह तआ़ला को बहुत प्यारा है अगर मुशरिकीन मुझे न निकालते तो मैं तुझ से न निकलता इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। (फ़ा30) और वह मोमिनीन हैं कि वह क़ुरआन मोअ्जिज़ और मोअ्जेज़ाते नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि की बुरहाने क़वी से अपने दीन पर यक़ीन कामिल और जज़्मे सादिक़ रखते हैं। (फ़ा31) उस काफ़िर मुशरिक। (फ़ा32) और उन्होंने कुफ़्र व बुत परस्ती इख़्तियार की हरगिज़ वह मोमिन और यह काफ़िर एक से नहीं हो सकते और उन दोनों में कुछ भी निस्बत नहीं।

(बक़िया सफ़हा 820 का) (फ़ा38) कुफ़्फ़ार (फ़ा39) खुतबा वग़ैरह में निहायत बे इल्तेफ़ाती के साथ (फ़ा40) यह मुनाफ़िक़ लोग तो (फ़ा41) यानी उलमा सहाबा से मिस्ल इब्ने मसऊद व इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मसख़्ख़रगी के तौर पर। (फ़ा42) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला उन मुनाफ़िक़ों के हक़ में फ़रमाता है (फ़ा43) यानी जब उन्होंने हक़ का इत्तेबाअ़ तर्क किया तो अल्लाह तआ़ला ने उनके क़ुलूब को मुर्दा कर दिया। (फ़ा44) और उन्होंने निफ़ाक़ इख़्तियार किया। (फ़ा45) यानी वह अहले ईमान जिन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कलाम ग़ौर से सुना और उससे नफ़ा उठाया। (फ़ा46) यानी बसीरत व इल्म व शरह सदर (फ़ा47) यानी परहेज़गारी की तौफ़ीक़ दी और उस पर मदद फ़रमाई या यह माना हैं कि उन्हें परहेज़गारी की जज़ा दी और उसका सवाब अ़ता फ़रमाया (फ़ा48) कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन (फ़ा49) जिनमें से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ्सत मुबारका और क़मर का शक़ होना है। (फ़ा50) यह इस उम्मत पर अल्लाह तआ़ला का इकराम है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया कि उनके लिए मग़फ़िरत तलब फ़रमायें और आप शफ़ीअ़ मक़बूलुश्शफ़ाअ़त हैं इसके बाद मोमिनीन व ग़ैर मोमिनीन सब से आम ख़िताब है। (फ़ा51) अपने अश्ग़ाल में और मआ़श के कामों में। (फ़ा52) यानी वह तुम्हारे तमाम अहवाल का जानने वाला है उससे कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। (फ़ा53) शाने नुज़ूलः मोमिनीन को जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह तआ़ला का बहुत ही शौक़ था वह कहते थे कि ऐसी सूरत क्यों नहीं उतरती जिसमें जिहाद का हुक्म हो ताकि हम जिहाद करें इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा54) जिसमें साफ़ ग़ैर मुहतमिल बयान हो और उसका कोई हुक्म मन्सूख़ होने वाला न हो।

(बक़िया सफ़हा 822 का) बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा।(37) हां हां यह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो (फ़ा95) तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे (फ़ा96) वह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बे नियाज़ है (फ़ा97) और तुम सब मोहताज (फ़ा98) और अगर तुम मुंह फेरो (फ़ा99) तो वह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वह तुम जैसे न होंगे।(38) (फ़ा100) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा76) निफ़ाक़ की (फ़ा77) यानी उनकी वह अ़दावतें जो वह मोमिनीन के साथ रखते हैं। (फ़ा78) हदीस हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कोई मुनाफ़िक़ मख़्फ़ी न रहा आप सब को उनकी सूरत से पहचानते थे। (फ़ा79) और वह अपने ज़मीर का हाल उनसे छुपा न सकेंगे चुनान्चे इसके बाद जो मुनाफ़िक़ लब हिलाता था हुज़ूर उसके निफ़ाक़ को उसकी बात से और उसके फ़हवाए कलाम से पहचान लेते थे फ़ायदा अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को बहुत से वुजूहे इल्म अ़ता फ़रमाए उनमें से सूरत से पहचानना भी है और बात से पहचानना भी (फ़ा80) यानी अपने बन्दों के तमाम आमाल हर एक को उसके लाइक़ जज़ा देगा। (फ़ा81) आज़माईश में डालेंगे (फ़ा82) यानी ज़ाहिर फ़रमा दें (फ़ा83) ताकि ज़ाहिर हो जाये कि ताअ़त व इख़्लास के दावे में तुम में से कौन अच्छा है (फ़ा84) उसके बन्दों को। (फ़ा85) और वह सदक़ा वग़ैरह किसी चीज़ का सवाब न पायेंगे क्योंकि जो काम अल्लाह तआ़ला के लिए न हो उसका सवाब ही क्या शाने नुज़ूल जंगे बदर के लिए जब क़ुरैश निकले तो वह साल क़हत का था लश्कर का खाना क़ुरैश के दौलतमन्दों ने नौबत ब-नौबत अपने ज़िम्मा ले लिया था मक्का मुकर्रमा से निकल कर सब से पहला खाना अबू जहल की तरफ़ से था जिसके लिए उसने दस ऊँट ज़बह किये थे फिर सफ़वान ने मक़ामे उसफ़ान में नौ ऊँट फिर सहल ने मक़ामे क़दीद में दस यहां से वह लोग समुन्दर की तरफ़ फिर गए और रस्ता गुम हो गया एक दिन ठहरे वहां शैबा की तरफ़ से खाना हुआ नौ ऊँट ज़बह हुए फिर मक़ामे अबवा में पहुंचे वहां मुक़य्यस जमही ने नौ ऊँट ज़बह किये हज़रत अ़ब्बास (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) की तरफ़ से भी दावत हुई उस वक़्त तक आप मुशर्रफ़ ब-इस्लाम न हुए थे आपकी तरफ़ से दस ऊँट ज़बह किये गए फिर हारिस की तरफ़ से नौ और अबुल बख़्तरी की तरफ़ से बद्र के चश्मे पर दस ऊँट इन खाना देने वालों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा86) यानी ईमान व ताअ़त पर क़ाइम रहो। (फ़ा87) रिया या निफ़ाक़ से शाने नुज़ूलः बाज़ लोगों का ख़्याल था कि जैसे शिर्क की वजह से तमाम नेकियां ज़ाया हो जाती हैं उसी तरह ईमान की बरकत से कोई गुनाह ज़रर नहीं करता उनके हक़ में यह आयत नाज़िल फ़रमाई गई और बताया गया कि मोमिन के लिए इताअ़ते ख़ुदा व रसूल ज़रूरी है गुनाहों से बचना लाज़िम है। मसला इस आयत में अ़मल के बातिल करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई तो आदमी जो अ़मल शुरू करे ख़्वाह वह

नफ़्ल ही हो नमाज़ या रोज़ा या और कोई लाज़िम है कि उसको बातिल न करे। (फ़ा88) शाने नुज़ूलः यह आयत अहले क़लीब के हक़ में नाज़िल हुई क़लीब बद्र में एक कुआँ है जिसमें मक़तूल कुफ़्फ़ार डाले गए थे अबू जहल और उसके साथी और हुक्मे आयत का हर काफ़िर के लिए आ़म है जो कुफ़्र पर मरा हो अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फ़िरत न फ़रमाएगा इसके बाद असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब फ़रमाया जाता है और हुक्म में तमाम मुसलमान शामिल हैं। (फ़ा89) यानी दुश्मन के मुक़ाबिल में कमज़ोरी न दिखाओ (फ़ा90) कुफ़्फ़ार को क़रतबी में है कि इस आयत के हुक्म में उलमा का इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने कहा कि यह आयत व इन् ज-नहू की नासिख़ है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के सुलह की तरफ़ माइल होने को मना फ़रमाया जबकि सुलह की हाजत न हो और बाज़ उलमा ने कहा कि यह आयत मन्सूख़ है और आयत व इन् ज-नहू इस की नासिख़ और एक क़ौल यह है कि यह आयत मुहकम है और दोनों आयतें दो मुख़्तलिफ़ वक़्तों और मुख़्तलिफ़ हालतों में नाज़िल हुई और एक क़ौल यह है कि आयत व इन् ज-नहू का हुक्म एक मुअ़य्यन क़ौम के साथ ख़ास है और यह आयत आ़म है कि कुफ़्फ़ार के साथ मुआहिदा जाइज़ नहीं मगर इन्दल ज़रूरत जबकि मुसलमान ज़ईफ़ हों और मुक़ाबला न कर सकें (फ़ा91) तुम्हें आमाल का पूरा पूरा अज्र अ़ता फ़रमाएगा (फ़ा92) निहायत जल्द गुज़रने वाली और उसमें मश्ग़ूल होना कुछ भी नाफ़ेअ़ नहीं (फ़ा93) हां राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म देगा ताकि तुम्हें इसका सवाब मिले (फ़ा94) यानी अमवाल को (फ़ा95) जहां ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है (फ़ा96) सदक़ा देने और फ़र्ज़ अदा करने में। (फ़ा97) तुम्हारे सदक़ात और ताआ़त से (फ़ा98) उसके फ़ज़्ल व रहमत के (फ़ा99) उसकी और उसके रसूल की ताअ़त से (फ़ा100) बल्कि निहायत मुतीअ़ व फ़रमांबरदार होंगे।

(बक़िया सफ़हा 823 का) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुएं में कुल्ली फ़रमाई उसकी बरकत से कुआँ पानी से भर गया सब ने पिया ऊँटों को पिलाया यहां कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरफ़ से हाल मालूम करने के लिए कई शख़्स भेजे गए सबने जाकर यही बयान किया कि हुज़ूर उमरा के लिए तशरीफ़ लाए हैं जंग का इरादा नहीं है लेकिन उन्हें यक़ीन न आया आख़िरकार उन्होंने उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी को जो ताइफ़ के बड़े सरदार और अ़रब के निहायत मुतमव्वल शख़्स थे तहक़ीक़े हाल के लिए भेजा उन्होंने आकर देखा कि हुज़ूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सहाबा तबर्रुक के लिए ग़ुसाला शरीफ़ हासिल करने के लिए टूटे पड़ते हैं अगर कभी थूकते हैं तो लोग उसके हासिल करने की कोशिश करते हैं और जिसको वह हासिल हो जाता है वह अपने चेहरों और बदन पर बरकत के लिए मलता है कोई बाल जिस्मे अक़दस का गिरने नहीं पाता अगर एहयानन जुदा हुआ तो सहाबा उसको बहुत अदब के साथ लेते और जान से ज़्यादा अ़ज़ीज़ रखते हैं जब हुज़ूर कलाम फ़रमाते हैं तो सब साकित हो जाते हैं हुज़ूर के अदब व ताज़ीम से कोई शख़्स नज़र ऊपर को नहीं उठा सकता उरवा ने क़ुरैश से जाकर यह सब हाल बयान किया और कहा कि मैं बादशाहाने फ़ारस व रूम व मिस्र के दरबारों में गया हूं मैं ने किसी बादशाह की यह अ़ज़मत नहीं देखी जो मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की उनके असहाब में है मुझे अन्देशा है कि तुम उनके मुक़ाबिल कामयाब न हो सकोगे क़ुरैश ने कहा ऐसी बात मत कहो हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे वह अगले साल आयें उरवा ने कहा कि मुझे अन्देशा है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे यह कह कर वह मअ़ अपने हमराहियों के ताइफ़ वापस चले गए और इस वाक़िआ के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मुशर्रफ़ ब-इस्लाम किया यहीं हुज़ूर ने अपने असहाब से बैअ़त ली इसको बैअ़ते रिज़वान कहते हैं बैअ़त की ख़बर से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुए और उनके अहलुर्राय ने यही मुनासिब समझा कि सुलह कर लें चुनान्चे सुलह नामा लिखा गया और साले आइन्दा हुज़ूर का तशरीफ़ लाना क़रार पाया और यह सुलह मुसलमानों के हक़ में बहुत नाफ़ेअ़ हुई बल्कि नताइज के एतेबार से फ़तह साबित हुई इसी लिए अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़तह से सुलह हुदैबिया मुराद लेते हैं और बाज़ तमाम फ़ुतूहाते इस्लाम जो आइन्दा होने वाली थीं और माज़ी के सीग़ा से ताबीर उनके यक़ीनी होने की वजह से है (ख़ाज़िन व रूहुलबयान) (फ़ा3) और तुम्हारी बदौलत उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमाए। (ख़ाज़िन व रूहुल बयान) (फ़ा4) दुनियवी भी उख़रवी भी। (फ़ा5) तबलीग़े रिसालत व इक़ामत मरासिम रियासत में (बैज़ावी) (फ़ा6) दुश्मनों पर कामिल ग़लबा अ़ता करे। (फ़ा7) और बावजूद अक़ीदए रासिख़ा के इत्मीनाने नफ़्स हासिल हो (फ़ा8) वह क़ादिर है जिससे चाहे अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मदद फ़रमाए आसमान व ज़मीन के लश्करों से या तो आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते मुराद हैं या आसमानों के फ़रिश्ते और ज़मीन के हैवानात (फ़ा9) उसने मोमिनीन के दिलों की तस्कीन और वादए फ़तह व नुसरत इस लिए फ़रमाया (फ़ा10) कि वह अपने रसूल सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उन पर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा। (फ़ा11) अ़ज़ाब व हलाक की।

(बक़िया सफ़हा 824 का) वहीं हलाक हो जायेंगे अब जबकि मददे इलाही से मुआ़मला उनके ख़्याल के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुआ तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़सोस होगा और मअ़ज़ेरत करेंगे (फ़ा21) क्योंकि औरतें और बच्चे अकेले थे और उनका कोई ख़बर गीराँ न था इस लिए हम क़ासिर रहे (फ़ा22) अल्लाह तआ़ला उनकी तकज़ीब फ़रमाता है (फ़ा23) यानी वह एतेज़ार व तलबे इस्तिग़फ़ार में झूठे हैं।

(बक़िया सफ़हा 826 का) और अल्लाह तआ़ला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा क़ुरैश इस बात पर मुत्तफ़िक़ रहे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस साल तो तशरीफ़ न लायें और हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि अगर आप कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा का तवाफ़ करना चाहें तो करें हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं हो सकता कि मैं बग़ैर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तवाफ़ करूं यहां मुसलमानों ने कहा कि

उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु बड़े ख़ुश नसीब हैं जो कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा पहुंचे और तवाफ़ से मुशर्रफ़ हुए हुज़ूर ने फ़रमाया मैं जानता हूं कि वह बग़ैर हमारे तवाफ़ न करेंगे हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा के ज़ईफ़ मुसलमानों को हस्बे हुक्म फ़तह की बशारत भी पहुंचाई फिर क़ुरैश ने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को रोक लिया यहां यह ख़बर मशहूर हो गई कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद कर दिये गए इस पर मुसलमानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल जिहाद में साबित रहने पर बैअ़त ली यह बैअ़त एक बड़े ख़ारदार दरख़्त के नीचे हुई जिसको अ़रब में समुरा कहते हैं हुज़ूर ने अपना बायां दस्ते मुबारक दाहिने दस्ते अक़दस में लिया और फ़रमाया कि यह उसमान (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) की बैअ़त है और फ़रमाया या रब उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) तेरे और तेरे रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के काम में हैं इस वाक़िआ़ से मालूम होता है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नूरे नबुव्वत से मालूम था कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद नहीं हुए जभी तो उनकी बैअ़त ली मुशरिकीन इस बैअ़त का हाल सुनकर ख़ाइफ़ हुए और उन्होंने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को भेज दिया हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी उनमें से कोई भी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा। (मुस्लिम शरीफ़) और जिस दरख़्त के नीचे बैअ़त की गई थी अल्लाह तआ़ला ने उसको नापदीद कर दिया साले आइन्दा सहाबा ने हर चन्द तलाश किया किसी को उसका पता भी न चला। (फ़ा45) सिद्क़ व इख़्लास व वफ़ा। (फ़ा46) यानी फ़तहे ख़ैबर का जो हुदैबिया से वापस होकर छः माह बाद हासिल हुई। (फ़ा47) ख़ैबर की और अहले ख़ैबर के अमवाल कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तक़सीम फ़रमाये। (फ़ा48) और तुम्हारी फ़ुतूहात होती रहेंगी (फ़ा49) कि वह ख़ाइफ़ होकर तुम्हारे अहल व अयाल को ज़रर न पहुंचा सके इसका वाक़िआ़ यह था कि जब मुसलमान जंगे ख़ैबर के लिए रवाना हुए तो अहले ख़ैबर के हलीफ़ बनी असद व ग़तफ़ान ने चाहा कि मदीना तय्येबा पर हमला करके मुसलमानों के अहल व अयाल को लूट लें अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में रोब डाला और उनके हाथ रोक दिये। (फ़ा50) यह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना। (फ़ा51) अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करना और उस पर काम मुफ़व्वज़ करने की जिस से बसीरत व यक़ीन ज़्यादा हो। (फ़ा52) फ़तह (फ़ा53) मुराद इससे या मग़ानिमे फ़ारस व रूम हैं या ख़ैबर जिसका अल्लाह तआ़ला ने पहले से वादा फ़रमाया था और मुसलमानों को उम्मीद कामयाबी थी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़तह दी और एक क़ौल यह है कि वह फ़तहे मक्का है और एक क़ौल यह है कि वह हर फ़तह है जो अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को अ़ता फ़रमाई। (फ़ा54) यानी अहले मक्का या अहले ख़ैबर के हुलफ़ा असद व ग़तफ़ान। (फ़ा55) मग़लूब होंगे और उन्हें हज़ीमत होगी (फ़ा56) कि वह मोमिनीन की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों को मक़हूर करता है।

(बक़िया सफ़हा 827 का) (फ़ा72) **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुदैबिया का क़स्द फ़रमाने से क़बल मदीना तय्येबा में ख़्वाब देखा था कि आप मअ़ असहाब के मक्का मुअ़ज़्ज़मा में ब-अमन दाख़िल हुए और असहाब ने सर के बाल मुंडाये बाज़ ने तरशवाये यह ख़्वाब आपने अपने असहाब से बयान फ़रमाया तो उन्हें ख़ुशी हुई और उन्होंने ख़्याल किया कि इसी साल वह मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होंगे जब मुसलमान हुदैबिया से बाद सुलह वापस हुए और उस साल मक्का मुकर्रमा में दाख़िला न हुआ तो मुनाफ़िक़ीन ने तमस्ख़ुर किया तअ़्न किये और कहा कि वह ख़्वाब क्या हुआ इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और उस ख़्वाब के मज़मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा चुनान्चे अगले साल ऐसा ही हुआ और मुसलमान अगले साल बड़े शान व शिकोह के साथ मक्का मुकर्रमा में फ़ातिहाना दाख़िल हुए। (फ़ा73) तमाम

(बक़िया सफ़हा 828 का) की तरह पैदा होगी वह नेकियों का हुक्म करेंगे बदियों से मना करेंगे कहा गया कि खेती हुज़ूर हैं और उसकी शाख़ें असहाब और मोमिनीन। (फ़ा87) सहाबा सब के सब साहबे ईमान व अ़मले सालेह हैं इस लिए यह वादा सभी से है।

(बक़िया सफ़हा 829 का) बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूं हुज़ूर ने हज़रत सअ़द से उनका हाल दरियारफ़्त फ़रमाया उन्होंने अ़र्ज़ किया कि वह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई फिर आकर हज़रत साबित से उसका ज़िक्र किया साबित ने कहा कि यह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सबसे ज़्यादा बुलन्द आवाज़ हूं तो मैं जहन्नमी हो गया। हज़रत सअ़द ने यह हाल ख़िदमते अक़दस में अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह अहले जन्नत से हैं (फ़ा5) बराहे अदब व ताज़ीम **शाने नुज़ूलः** आयत *या अय्यु-हल्लजी-न आ-मनू ला तर्-फ़अू अस्वा-तकुम्* के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा और बाज़ और सहाबा ने बहुत एहतियात लाज़िम कर ली और ख़िदमते अक़दस में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ मअ़रूज़ करते उन हज़रात के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा6) **शाने नुज़ूलः** यह आयत वफ़्द बनी तमीम के हक़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में दोपहर के वक़्त पहुंचे जबकि हुज़ूर आराम फ़रमा रहे थे उन लोगों ने हुजरों के बाहर से हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पुकारना शुरू किया हुज़ूर तशरीफ़ ले आए उन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और अजलाले शाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बयान फ़रमाया गया कि बारगाहे अक़दस में इस तरह पुकारना जहल व बे अक़्ली है और उन लोगों को अदब की तल्क़ीन की गई। (फ़ा7) उस वक़्त वह अ़र्ज़ करते जो उन्हें अ़र्ज़ करना था यह अदब उन पर लाज़िम था उसको बजा लाते (फ़ा8)

उनमें से उनके लिए जो तौबा करें। (फ़ा9) कि सही है या ग़लत **शाने नुज़ूलः** यह आयत वलीद बिन उक़बा के हक़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनको बनी मुस्तलक़ से सदक़ात वसूल करने भेजा था और ज़मानए जाहिलियत में इनके और उनके दर्मियान अ़दावत थी जब वलीद उनके दयार के क़रीब पहुंचे और उन्हें ख़बर हुई तो इस ख़्याल से कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के भेजे हुए हैं बहुत से लोग ताज़ीमन उनके इस्तिक़बाल के वास्ते आये वलीद ने गुमान किया कि यह पुरानी अ़दावत से मुझे क़त्ल करने आ रहे हैं यह ख़्याल करके वलीद वापस हो गए और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ कर दिया कि हुज़ूर उन लोगों ने सदक़ा को मना कर दिया और मेरे क़त्ल के दरपै हो गए हुज़ूर ने ख़ालिद बिन वलीद को तहक़ीक़े हाल के लिए भेजा हज़रत ख़ालिद ने देखा कि वह लोग अज़ानें कहते हैं नमाज़ें पढ़ते हैं और उन लोगों ने सदक़ात पेश कर दिये हज़रत ख़ालिद यह सदक़ात लेकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और वाक़िआ अर्ज़ किया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यह आयत आ़म है इस बयान में नाज़िल हुई है कि फ़ासिक़ के क़ौल पर एतेमाद न किया जाये **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि एक शख़्स अगर आदिल हो तो उसकी ख़बर मोअ़तबर है।

(बक़िया सफ़हा 830 का) रोज़ उन्हें हाज़िरी में देर हो गई और मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई उस वक़्त साबित आये और क़ाइदा यह था कि जो शख़्स ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहां होता खड़ा रहता साबित आये तो वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़रीब बैठने के लिए लोगों को हटाते हुए यह कहते चले गए कि जगह दो जगह यहां तक कि वह हुज़ूर के क़रीब पहुंच गए और उनके और हुज़ूर के दर्मियान सिर्फ़ एक शख़्स रह गया उन्होंने उससे भी कहा कि जगह दो उसने कहा तुम्हें जगह मिल गई बैठ जाओ साबित गुस्सा में आकर उसके पीछे बैठ गए और जब दिन ख़ूब रौशन हुआ तो साबित ने उसका जिस्म दबा कर कहा कि कौन उसने कहा कि मैं फ़लां शख़्स हूं साबित ने उसकी मां का नाम लेकर कहा फ़लानी का लड़का इस पर उस शख़्स ने शर्म से सर झुका लिया और उस ज़माना में ऐसा कलिमा आ़र दिलाने के लिए कहा जाता था इस पर यह आयत नाज़िल हुई। दूसरा वाक़िआ ज़हाक ने बयान किया कि यह आयत बनी तमीम के हक़ में नाज़िल हुई जो हज़रत अ़म्मार व जनाब व बिलाल व सुहैब व सलमान व सालिम वग़ैरह वग़ैरह ग़रीब सहाबा की ग़ुरबत देख कर उनके साथ तमस्ख़ुर करते थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें यानी मालदार ग़रीबों की हंसी न बनायें न आ़ली नसब ग़ैर ज़ी नसब की और न तन्दुरुस्त अपाहिज की न बीना उसकी जिसकी आंख में ऐब हो। (फ़ा19) सिद्क़ व इख़्लास में

(बक़िया सफ़हा 831 का) फ़ासिक़ न कहलाओ (फ़ा24) क्योंकि हर गुमान सही नहीं होता (फ़ा25) **मसलाः** मोमिन सालेह के साथ बुरा गुमान ममनूअ़ है इसी तरह उसका कोई कलाम सुनकर फ़ासिद माना मुराद लेना बावजूदे कि उसके दूसरे सही माना मौजूद हों और मुसलमान का हाल उनके मुवाफ़िक़ हो यह भी गुमाने बद में दाख़िल है। सुफ़ियान सौरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया गुमान दो तरह का है एक वह कि दिल में आये और ज़बान से भी कह दिया जाये यह अगर मुसलमान पर बदी के साथ है गुनाह है दूसरा यह कि दिल में आए और ज़बान से न कहा जाए यह अगरचे गुनाह नहीं मगर इससे भी दिल ख़ाली करना ज़रूर है। **मसलाः** गुमान की कई क़िस्में हैं एक वाजिब है वह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना एक मुस्तहब वह मोमिन सालेह के साथ नेक गुमान एक ममनूअ़ हराम वह अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के साथ बुरा गुमान करना और मोमिन के साथ बुरा गुमान करना एक जाइज़ वह फ़ासिक़ मुअ़लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे अफ़आ़ल उससे ज़ुहूर में आते हों (फ़ा26) यानी मुसलमानों की ऐब जूई न करो और उनके छुपे हाल की जुस्तजू में न रहो जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया हदीस शरीफ़ में है गुमान से बचो गुमान बड़ी झूठी बात है और मुसलमानों की ऐब जूई न करो उनके साथ हिर्स व हसद व बुग़्ज़ बे मुरव्वती न करो ऐ अल्लाह तआ़ला के बन्दो भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया मुसलमान मुसलमान का भाई है उस पर ज़ुल्म न करे उसको रुसवा न करे उसकी तहक़ीर न करे तक़वा यहां है तक़वा यहां है तक़वा यहां है। (और यहां के लफ़्ज़ से अपने सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाया) आदमी के लिए यह बुराई बहुत है कि अपने मुसलमान भाई को हक़ीर देखे हर मुसलमान मुसलमान पर हराम उसका ख़ून भी उसकी आबरू भी उसका माल भी अल्लाह तआ़ला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है (बुख़ारी व मुस्लिम) हदीस जो बन्दा दुनिया में दूसरे की पर्दापोशी करता है अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत उसकी पर्दापोशी फ़रमाएगा। (फ़ा27) हदीस शरीफ़ में है कि ग़ीबत यह है कि मुसलमाना भाई के पीठ पीछे ऐसी बात कही जाये जो उसे नागवार गुज़रे अगर वह बात सच्ची है तो ग़ीबत है वरना बुहतान। (फ़ा28) तो मुसलमान भाई की ग़ीबत भी गवारा न होनी चाहिए क्योंकि उसको पीठ पीछे बुरा कहना उसके मरने के बाद उसका गोश्त खाने के मिस्ल है क्योंकि जिस तरह किसी का गोश्त काटने से उसको ईज़ा होती है उसी तरह उसको बद गोई से क़लबी तकलीफ़ होती है और दर हक़ीक़त आबरू गोश्त से ज़्यादा प्यारी है शाने नुज़ूल सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब जिहाद के लिए रवाना होते और सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदारों के साथ एक ग़रीब मुसलमान को कर देते कि वह ग़रीब उनकी ख़िदमत करे वह उसे खिलायें पिलायें हर एक का काम चले उसी तरह हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु दो आदमियों के साथ किये गए थे एक रोज़ वह सो गए और खाना तैयार न कर सके तो उन दोनों ने उन्हें खाना तलब करने के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा हुज़ूर के ख़ादिमे मतबख़ हज़रत उसामा थे रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनके पास कुछ रहा न था उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यही आकर कह

दिया तो उन दोनों रफ़ीक़ों ने कहा कि ओसामा (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) ने बुख़्ल किया जब वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए फ़रमाया मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूं उन्होंने अर्ज़ किया हमने गोश्त खाया ही नहीं फ़रमाया तुमने ग़ीबत की और जो मुसलमान की ग़ीबत करे उसने मुसलमान का गोश्त ख़ाया मसला ग़ीबत बिलइत्तेफ़ाक़ कबाइर में से है ग़ीबत करने वाले को तौबा लाज़िम है एक हदीस में यह है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की है उसके लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करे मसला फ़ासिक़ मुअ़लिन के ऐब का बयान ग़ीबत नहीं हदीस शरीफ़ में है कि फ़ाजिर के ऐब बयान करो कि लोग उससे बचें **मसलाः** हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि तीन शख़्सों की हुरमत नहीं एक साहबे हवा (बद मज़हब) दूसरा फ़ासिक़ मुअ़लिन तीसरा बादशाह ज़ालिम यानी उनके उयूब बयान करना ग़ीबत नहीं। (फ़ा29) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम (फ़ा30) हज़रत हव्वा (फ़ा31) नसब के इस इन्तेहाई दर्जा पर जाकर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में तफ़ाख़ुर और तफ़ाज़ुल की कोई वजह नहीं सब बराबर हो एक जद्दे आला की औलाद (फ़ा32) और एक दूसरे का नसब जाने और कोई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की तरफ़ अपनी निस्बत न करे न यह कि नसब पर फ़ख़्र करे और दूसरों की तहक़ीर करे उसके बाद उस चीज़ का बयान फ़रमाया जाता है जो इन्सान के लिए शराफ़त व फ़ज़ीलत का सबब और जिससे उसको बारगाहे इलाही में इज़्ज़त हासिल होती है (फ़ा33) इससे मालूम हुआ कि मदार इज़्ज़त व फ़ज़ीलत का परहेज़गारी है न कि नसब **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बाज़ारे मदीना में एक हबशी ग़ुलाम मुलाहज़ा फ़रमाया जो यह कह रहा था कि जो मुझे ख़रीदे उससे मेरी यह शर्त है कि मुझे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इक़्तेदा में पांचों नमाज़ें अदा करने से मना न करे उस ग़ुलाम को एक शख़्स ने ख़रीद लिया फिर वह ग़ुलाम बीमार हो गया तो सय्यदे आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसकी अ़यादत के लिए तशरीफ़ लाये फिर उसकी वफ़ात हो गई और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके दफ़न में तशरीफ़ लाए इस पर लोगों ने कुछ कहा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा34) **शाने नुज़ूलः** यह आयत बनी असद बिन ख़ुज़ैमा की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो ख़ुश्क साली के ज़माना में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने इस्लाम का इज़्हार किया और हक़ीक़त में वह ईमान न रखते थे उन लोगों ने मदीना के रस्ता में गन्दगियां कीं और वहां के भाव गिराँ कर दिये सुबह व शाम रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर अपने इस्लाम लाने का एहसान जताते और कहते हमें कुछ दीजिये उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा35) सिद्क़ दिल से। (फ़ा36) ज़ाहिर में (फ़ा37) **मसलाः** महज़ ज़बानी इक़रार जिसके साथ क़लबी तस्दीक़ न हो मोअ़तबर नहीं इससे आदमी मोमिन नहीं होता इताअ़त व फ़रमांबरदारी इस्लाम के लुग़वी माना हैं और शरई माना में इस्लाम और ईमान एक हैं कोई फ़र्क़ नहीं। (फ़ा38) ज़ाहिरन व बातिनन सिद्क़ व इख़्लास के साथ निफ़ाक़ को छोड़ कर। (फ़ा39) तुम्हारी नेकियों का सवाब कम न करेगा

(बक़िया सफ़हा 833 का) उसकी आफ़रीनश में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायां हैं। (फ़ा10) बग़ैर सुतून के बुलन्द किया। (फ़ा11) कवाकिब के रौशन अजराम से (फ़ा12) कोई ऐब व क़ुसूर नहीं। (फ़ा13) पानी तक (फ़ा14) पहाड़ों के कि क़ाइम रहे (फ़ा15) कि उससे बीनाई व नसीहत हासिल हो (फ़ा16) जो अल्लाह तआ़ला के बदाए सनअ़त व अ़जाइबे ख़िलक़त में नज़र करके उसकी तरफ़ रुजूअ़ हो (फ़ा17) यानी बारिश जिस से हर चीज़ की ज़िन्दगी और बहुत ख़ैर व बरकत है (फ़ा18) तरह तरह का गेहूं जौ चना वग़ैरह

(बक़िया सफ़हा 834 का) व ज़माइर छुपे नहीं। (फ़ा29) यह कमाले इल्म का बयान है कि हम बन्दे के हाल को ख़ुद उससे ज़्यादा जानने वाले हैं वरीद वह रग है जिसमें ख़ून जारी होकर बदन के हर हर जुज़्व में पहुंचता है यह रग गर्दन में है माना यह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं। (फ़ा30) फ़रिश्ते और वह इन्सान का हर अ़मल और उसकी हरबात लिखने पर मामूर हैं। (फ़ा31) दाहिनी तरफ़ वाला नेकियां लिखता है और बायें तरफ़ वाला बदियां इसमें इज़्हार है कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों के लिखने से भी ग़नी है वह अख़्फ़िफ़युल ख़फ़िय्यात का जानने वाला है ख़तराते नफ़्स तक उससे छुपे नहीं फ़रिश्तों की किताबत हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत है कि रोज़े क़ियामत नामहाए आमाल हर शख़्स के उसके हाथ में दे दिये जायें (फ़ा32) ख़्वाह वह कहीं हो सिवाए वक़्त क़ज़ाए हाजत और वक़्ते जिमाअ़ के उस वक़्त यह फ़रिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं मसला इन दोनों हालतों में आदमी को बात करना जाइज़ नहीं ताकि उसके लिखने के लिए फ़रिश्तों को इस हालत में उससे करीब होने की तकलीफ़ न हो यह फ़रिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं बीमारी का कराहना तक और यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वही चीज़ें लिखते हैं जिनमें अज्र व सवाब या गिरिफ़्त व अ़ज़ाब हो इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दाहिनी तरफ़ वाला फ़रिश्ता दस लिखता है और जब बदी करता है तो दहनी तरफ़ वाला फ़रिश्ता बायें जानिब वाले फ़रिश्ते से कहता है कि अभी तवक़्क़ुफ़ कर शायद यह शख़्स इस्तिग़फ़ार करले मुन्किरीने बअ़्स का रद्द फ़रमाने और अपने क़ुदरत व इल्म से उन पर हुज्जतें क़ाइम करने के बाद उन्हें बताया जाता है कि वह जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वह अ़न्क़रीब उनकी मौत और क़ियामत के वक़्त पेश आने वाली है और सीग़ए माज़ी से उनकी आमद की ताबीर फ़रमा कर उसके क़ुर्ब का इज़्हार किया जाना है चुनान्चे इरशाद होता है (फ़ा33) जो अ़क़्ल व हवास को मुख़्तल व मुकद्दर कर देती है (फ़ा34) हक़ से मुराद या हक़ीक़त मौत है या अमरे आख़िरत जिसको इन्सान ख़ुद मुआ़इना करता है या अन्जाम कार सआ़दत व शक़ावत और सकरात की हालत में मरने वाले से कहा जाता है कि मौत (फ़ा35) बअ़्स के लिए (फ़ा36) जिसका अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से वादा फ़रमाया था। (फ़ा37) फ़रिश्ता जो उसे महशर की तरफ़

हांके (फ़ा38) जो उसके अ़मलों की गवाही दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हांकने वाला फ़रिश्ता होगा और गवाह ख़ुद उसका अपना नफ़्स ज़हाक का क़ौल है कि हांकने वाला फ़रिश्ता है और गवाह अपने आज़ाए बदन हाथ पाँव वग़ैरह हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया कि हांकने वाला भी फ़रिश्ता है और गवाह भी फ़रिश्ता (जुमल) फिर काफ़िर कहा जाएगा। (फ़ा39) दुनिया में (फ़ा40) जो तेरे दिल और कानों और आंखों पर पड़ा था। (फ़ा41) कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिनका दुनिया में इन्कार करता था। (फ़ा42) जो उसके आमाल लिखने वाला और उस पर गवाही देने वाला है (मदारिक व ख़ाज़िन)। (फ़ा43) उसका नामए आमाल (मदारिक)

(बक़िया सफ़हा 835 का) दुनिया में (फ़ा54) रुजूअ़ लाने वाले से वह मुराद है जो मअ़सियत को छोड़ कर ताअ़त इख़्तियार करे सईद बिन मुसैइब ने फ़रमाया अव्वाब वह है जो गुनाह करे फिर तौबा करे फिर उससे गुनाह सादिर हो फिर तौबा करे और निगाह दाश्त वाला वह जो अल्लाह के हुक्म का लिहाज़ रखे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया जो अपने आपको गुनाहों से महफ़ूज़ रखे और उनसे इस्तिग़फ़ार करे और यह भी कहा गया है कि जो अल्लाह तआ़ला की अमानतों और उसके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करे और यह भी बयान किया गया है कि जो ताआ़त का पाबन्द हो ख़ुदा व रसूल के हुक्म बजा लाये और अपने नफ़्स की निगहबानी करे यानी एक दम भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल न हो पासे अनफ़ास करे - अगर तू पासदारी पासे अनफ़ास + बसुल्तानी रेसानन्दत अज़ीं पास- तुरा यक पन्द बस दर हर दो आ़लम+ ज़ जानत बर नियायद बे ख़ुदा दम- (फ़ा55) यानी इख़्लास मन्द ताअ़त पज़ीर सहीहुल अ़क़ीदा दिल। (फ़ा56) बे ख़ौफ़ व ख़तर अमन व इत्मीनान के साथ न तुम्हें अ़ज़ाब हो न तुम्हारी निअ़मतें ज़ाइल हों (फ़ा57) अब न फ़ना है न मौत (फ़ा58) जो वह तलब करें और वह दीदारे इलाही व तजल्लीए रब्बानी है जिससे हर जुमा को दारे करामत में नवाज़े जायेंगे। (फ़ा59) यानी आप के ज़माना के कुफ़्फ़ार से क़ब्ल (फ़ा60) यानी वह उम्मतें उनसे क़वी और ज़बरदस्त थीं। (फ़ा61) और जुस्तजू में जा बजा फिरा किये (फ़ा62) मौत और हुक्मे इलाही से मगर कोई ऐसी जगह न पाई। (फ़ा63) दिल दाना शिबली क़ुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया कि क़ुरआनी नसाएह से फ़ैज़ हासिल करने के लिए क़ल्ब हाज़िर चाहिये जिसमें तुरफ़तुल ऐन के लिए भी ग़फ़लत न आए। (फ़ा64) क़ुरआन और नसीहत पर।

(बक़िया सफ़हा 837 का) ज़रूर मिलना। (फ़ा8) जिसको सितारों से मुज़य्यन फ़रमाया है कि ऐ अहले मक्का नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में और क़ुरआन पाक के बारे में। (फ़ा9) कभी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को साहिर कहते हो कभी शायर कभी काहिन कभी मजनून (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) इसी तरह क़ुरआने करीम को कभी सेहर बताते हो कभी शेअ़र कभी कहानत कभी अगलों की दास्तानें (फ़ा10) और जो महरूम अज़ली है उस सआ़दत से महरूम रहता है और बहकाने वालों के बहकाए में आता है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना के कुफ़्फ़ार जब किसी को देखते कि ईमान लाने का इरादा करता है तो उससे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत कहते कि उनके पास क्यों ज़ाता है वह तो शायर हैं साहिर हैं काज़िब हैं (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) और इसी तरह क़ुरआन पाक को कहते कि वह शेअ़र है सेहर है किज़्ब है (मआ़ज़ल्लाह तआ़ला) (फ़ा11) यानी नशए जहालत में आख़िरत को भूले हुए हैं (फ़ा12) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तमस्ख़ुर और तकज़ीब के तौर पर कि (फ़ा13) उनके जवाब में फ़रमाया जाता है (फ़ा14) और उन्हें अ़ज़ाब दिया जाएगा (फ़ा15) और दुनिया में तमस्ख़ुर से कहा करते थे कि वह अ़ज़ाब जल्दी लाओ जिसका वादा देते हो। (फ़ा16) यानी अपने रब की निअ़मत में हैं बाग़ों के अन्दर जिनमें लतीफ़ चश्मे जारी हैं। (फ़ा17) दुनिया में (फ़ा18) और ज़्यादा हिस्सा शब का नमाज़ में गुज़ारते (फ़ा19) यानी रात तहज्जुद और शब बेदारी में गुज़ारते हैं और बहुत थोड़ी देर सोते हैं और शब का पिछला हिस्सा इस्तिग़फ़ार में गुज़ारते हैं और इतने सो जाने को भी तक़सीर समझते हैं। (फ़ा20) मंगता तो वह जो अपनी हाजत के लिए लोगों से सवाल करे और महरूम वह कि हाजतमन्द हो और हयाअन सवाल भी न करे।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ۝ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ۝
فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا فِيْهَاۤ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝
وَفِيْ مُوْسٰۤى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝
وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۝ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ۝ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ۝ فَعَتَوْا
عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝

क़ा–ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल् मुर्–सलून(31)क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम् मुज्रिमीन(32) लिनुर्सि–ल अ़लैहिम् हिजा–र–तम् मिन् तीन(33)मुसव्व–म–तन् अ़िन्–द रब्बि–क लिल्मुस्रिफ़ीन (34)फ़–अख़्रज्ना मन् का–न फ़ीहा मिनल् मुअ्मिनीन(35)फ़मा व–जद्ना फ़ीहा ग़ै–र बैतिम् मिनल् मुस्लिमीन(36)व त–रक्ना फ़ीहा आ–यतल् लिल्लज़ी–न यख़ाफ़ू.नल् अ़ज़ाबल् अलीम(37)व फ़ी मूसा इज़् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ़–न बिसुल्तानिम् मुबीन(38)फ़–त–वल्ला बिरुक्निही व क़ा–ल साहिरुन् औ मज्नून(39)फ़–अ–ख़ज़्नाहु व जुनू–दहू फ़–न–बज़्नाहुम् फ़िल्–यम्मि व हु–व मुलीम(40)व फ़ी आ़दिन् इज़् अर्सल्ना अ़लैहिमुर् रीहल् अ़क़ीम(41)मा त–ज़रु मिन् शैइन् अ–तत् अ़लैहि इल्ला ज–अ़–लत्हु कर्रमीम(42)व फ़ी समू–द इज़् क़ी– ल लहुम् त–मत्तअू हत्ता हीन(43)फ़–अतौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुस्साअ़ि–क़तु व हुम् यन्ज़ुरून(44)

इब्राहीम ने फ़रमाया तो ऐ फ़रिश्तो तुम किस काम से आए।(31) (फ़ा33) बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं।(32) (फ़ा34) कि उन पर गारे के बनाए हुए पत्थर छोड़ें।(33) जो तुम्हारे रब के पास हृद से बढ़ने वालों के लिए निशान किये रखे हैं।(34) (फ़ा35) तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिए।(35) तो हमने वहां एक ही घर मुसलमान पाया।(36) (फ़ा36) और हमने उसमें (फ़ा37) निशानी बाक़ी रखी उनके लिए जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं।(37) (फ़ा38) और मूसा में (फ़ा39) जब हमने उसे रौशन सनद लेकर फ़िरऔ़न के पास भेजा।(38) (फ़ा40) तो अपने लश्कर समेत फिर गया (फ़ा41) और बोला जादूगर है या दीवाना।(39) तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस हाल में कि वह अपने आप को मलामत कर रहा था।(40) (फ़ा42) और आ़द में (फ़ा43) जब हमने उन पर ख़ुश्क आंधी भेजी।(41) (फ़ा44) जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोड़ती।(42) (फ़ा45) और समूद में (फ़ा46) जब उनसे फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो।(43) (फ़ा47)

(फ़ा33) यानी सिवाए इस बशारत के तुम्हारा और क्या काम है। (फ़ा34) यानी क़ौमे लूत की तरफ़ (फ़ा35) उन पत्थरों पर निशान थे जिन से मालूम होता था कि यह दुनिया के पत्थरों से नहीं हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हर एक पत्थर पर उसका नाम मकतूब था जो उससे हलाक किये जाने वाला था। (फ़ा36) यानी एक ही घर के लोग और वह हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और आप की दोनों साहबज़ादियां हैं। (फ़ा37) यानी क़ौमे लूत के उस शहर में काफ़िरों को हलाक करने के बाद। (फ़ा38) ताकि वह इबरत हासिल करें और उनके जैसे अफ़आ़ल से बाज़ रहें और वह निशानी उनके उजड़े हुए दयार थे या वह पत्थर जिन से वह हलाक किये गए या वह काला बदबूदार पानी जो उस सरज़मीन से निकला था। (फ़ा39) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ़ में भी निशानी रखी। (फ़ा40) रौशन सनद से मुराद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ्जेज़ात हैं जो आपने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों पर पेश फ़रमाये। (फ़ा41) यानी फ़िरऔ़न ने मअ़ अपनी जमाअ़त के हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाने से एअ्राज़ किया। (फ़ा42) कि क्यों वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न लाया और क्यों उन पर तअ्न किया। (फ़ा43) यानी क़ौमे आ़द के हलाक करने में भी क़ाबिले इबरत निशानियां हैं। (फ़ा44) जिसमें कुछ भी ख़ैर व बरकत न थी यह हलाक करने वाली हवा थी। (फ़ा45) ख़्वाह वह आदमी हों या जानवर या और अमवाल जिस चीज़ को छू गई उसको हलाक करके ऐसा कर दिया गोया कि वह मुद्दतों की हलाक शुदा गली हुई है (फ़ा46) यानी क़ौमे समूद के हलाक में भी निशानियां हैं (फ़ा47) यानी वक़्ते मौत तक दुनिया में ज़िन्दगानी कर लो यही ज़माना तुम्हारी मुहलत का है।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَّإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝ وَالْأَرْضَ
فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ۝ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ
اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ۝ وَّذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَا أُرِيدُ أَنْ
يُطْعِمُونِ ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

फ़–मस्तताअू. मिन् क़ियामिंव् व मा कानू मुन्तसिरीन(45)व क़ौ–म नूहिम् मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन(46)वस्समा–अ बनैनाहा बिऐदिंव् व इन्ना लमूसिअून(47)वल्अर्–ज़ फ़–रश्नाहा फ़निअ्–मल् माहिदून(48)व मिन् कुल्लि शैइन् ख़–लक़्ना ज़ौजैनि ल–अ़ल्लकुम् त–ज़क्करून(49)फ़फ़िर्रू इलल्लाहि इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम् मुबीन(50)व ला तज्–अ़लू म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम् मुबीन(51)कज़ालि–क मा अ–तल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून(52)अ–तवासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् तागून(53)फ़–त–वल्–ल अ़न्हुम् फ़मा अन्–त बि–मलूमिंव्–(54)व ज़क्किर् फ़–इन्नज़् ज़िक्रा तन्फ़अुल् मुअ्मिनीन(55)व मा ख़–लक़्तुल् जिन्–न वल्इन्–स इल्ला लि–यअ्बुदून(56)मा उरीदु मिन्हुम् मिर्रिज़्क़िंव् व मा उरीदु अंय्युत्अिमून(57)इन्नल्ला–ह हुवर्–रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्क़ुव्वतिल् मतीन(58)फ़–इन्–न लिल्लज़ी–न ज़–लमू ज़नूबम् मिस्–ल ज़नूबि अस्–हाबिहिम् फ़ला यस्तअ्जिलून(59) फ़वैलुल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू मिंय्यौमिहि–मुल् लज़ी यू–अ़दून(60)

तो उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की (फ़ा48) तो उनकी आँखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया।(44) (फ़ा49) तो वह न खड़े हो सके (फ़ा50) और न वह बदला ले सकते थे।(45) और उन से पहले क़ौमे नूह़ को हलाक फ़रमाया बेशक वह फ़ासिक़ लोग थे।(46) (रुकूअ़ 1) और आसमान को हमने हाथों से बनाया (फ़ा51) और बेशक हम वुसअ़त देने वाले हैं।(47) (फ़ा52) और ज़मीन को हमने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले।(48) और हमने हर चीज़ के दो जोड़ बनाए (फ़ा53) कि तुम ध्यान करो।(49) (फ़ा54) तो अल्लाह की तरफ़ भागो (फ़ा55) बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(50) और अल्लाह के साथ और मअ़बूद न ठहराओ बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(51) यूं ही (फ़ा56) जब इनसे अगलों के पास कोई रसूल तशरीफ़ लाया तो यही बोले कि जादूगर है या दीवाना।(52) क्या आपस में एक दूसरे को यह बात कह मरे हैं बल्कि वह सरकश लोग हैं।(53) (फ़ा57) तो ऐ महबूब तुम उनसे मुँह फेर लो तो तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं।(54) (फ़ा58) और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।(55) और मैंने जिन्न और आदमी इतने ही लिए बनाए कि मेरी बन्दगी करें।(56) (फ़ा59) मैं उनसे कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता (फ़ा60) और न यह चाहता हूं कि वह मुझे खाना दें।(57) (फ़ा61) बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ुव्वत वाला क़ुदरत वाला है।(58) (फ़ा62) तो बेशक इन ज़ालिमों के लिए (फ़ा63) अ़ज़ाब की एक बारी है (फ़ा64) जैसे इनके साथ वालों के लिए एक बारी थी (फ़ा65) तो मुझ से जल्दी न करें।(59) (फ़ा66) तो काफ़िरों की ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका वादा दिये जाते हैं।(60) (फ़ा67) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा48) और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और नाक़ा की कोचें काटीं (फ़ा49) और हौलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक कर दिये गए। (फ़ा50) वक़्ते नुज़ूले अ़ज़ाब न भाग सके (फ़ा51) अपने दस्ते क़ुदरत से (फ़ा52) उसको इतनी कि ज़मीन मअ़ अपनी फ़िज़ा के उसके अन्दर इस तरह आ जाये जैसे कि एक मैदाने वसीअ़ में गेंद पड़ी हो **(बक़िया सफ़हा 857 पर)**

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالطُّوْرِ ۙ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۗ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۘ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۗ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۚ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ

सूरतुत्तूरि

(मक्की है इसमें 49 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वत्तूर(1)व किताबिम् मस्तूरिन्(2)फ़ी रक़्क़िम् मन्शूरिंव्(3)वल्बैतिल् मअ़्मूर(4)वस्सक़्फ़िल् मर्फ़ूअ़ि(5)वल्बह़्रिल् मस्जूर(6)इन्–न अ़ज़ा–ब रब्बि–क लवाक़िउम्(7)मा लहू मिन् दाफ़िअ़िंय्–(8)यौ–म तमूरुस्समाउ मौरंव्(9)व तसीरुल् जिबालु सैरा(10)फ़वैलुंय्यौ–मइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन (11) अल्लज़ी– न हुम् फ़ी ख़ौज़िंय्यल्–अ़बून(12)यौ–म यु–दअ़्अ़ू–न इला नारि ज–हन्न–म दअ़्आ(13)हाज़िहिन्–नारुल् लती कुन्तुम् बिहा तु–कज़्ज़िबून(14)अ–फ़सिह़्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्सिरून(15)इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अ़लैकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तूर की क़सम(1) (फ़ा2) और उस नविश्ता की।(2) (फ़ा3) जो खुले दफ़्तर में लिखा है।(3) और बैते मअ़्मूर।(4) (फ़ा4) और बुलन्द छत।(5) (फ़ा5) और सुलगाए हुए समुन्दर की।(6) (फ़ा6) बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है।(7) (फ़ा7) उसे कोई टालने वाला नहीं।(8) जिस दिन आसमान हिलना सा हिलना हिलेंगे।(9) (फ़ा8) और पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे।(10) (फ़ा9) तो उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।(11) (फ़ा10) वह जो मश्ग़ला में (फ़ा11) खेल रहे हैं।(12) जिस दिन जहन्नम की तरफ़ धक्का देकर ढकेले जायेंगे।(13) (फ़ा12) यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे।(14) (फ़ा13) तो क्या यह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं।(15) (फ़ा14) उस में जाओ अब चाहे सब्र करो या न करो सब तुम पर एक सा है (फ़ा15)

(फ़ा1) सूरए तूर मक्की है इसमें दो रुकूअ़ उनचास आयतें 312 कलिमे 1500 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी उस पहाड़ की क़सम जिस पर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को शरफ़े कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (फ़ा3) इस नविश्ता से मुराद या तौरेत है या क़ुरआन या लौहे महफ़ूज़ या आमाल नवीस फ़रिश्तों के दफ़्तर। (फ़ा4) बैतुलमअ़्मूर सातवें आसमान में अ़र्श के सामने कअ़्बा शरीफ़ के बिल्कुल मुक़ाबिल है यह आसमान वालों का क़िबला है हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसमें तवाफ़ व नमाज़ के लिए हाज़िर होते हैं फिर कभी उन्हें लौटने का मौक़ा नहीं मिलता हर रोज़ नये सत्तर हज़ार हाज़िर होते हैं हदीस मेअ़्राज में बसेहत साबित हुआ है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सातवें आसमान में बैतुल मअ़्मूर को मुलाहज़ा फ़रमाया। (फ़ा5) इससे मुराद आसमान है जो ज़मीन के लिए बमन्ज़िला छत के है या अ़र्श जो जन्नत की छत है (क़ुरतबी अ़न इब्ने अ़ब्बास)। (फ़ा6) मरवी है कि अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत तमाम समुन्दरों को आग कर देगा जिससे जहन्नम की आग में और भी ज़्यादती हो जायेगी (ख़ाज़िन) (फ़ा7) जिस का कुफ़्फ़ार को वादा दिया गया है (फ़ा8) चक्की की तरह घूमेंगे और इस तरह हरकत में आयेंगे कि उनके अज्ज़ा मुख़्तलिफ़ व मुन्तशिर हो जायें। (फ़ा9) जैसे कि ग़ुबार हवा में उड़ता है यह दिन क़ियामत का दिन होगा (फ़ा10) जो रसूलों को झुठलाते थे (फ़ा11) कुफ़्र व बातिल के (फ़ा12) और जहन्नम के ख़ाज़िन काफ़िरों के हाथ गर्दनों से और पाँव पेशानियों से मिला कर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल जहन्नम में ढकेल देंगे और उनसे कहा जाएगा (फ़ा13) दुनिया में (फ़ा14) यह उनसे इस लिए कहा जाएगा कि वह दुनिया में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ सेहर की निस्बत करते थे और कहते थे कि हमारी नज़र बन्दी कर दी है। (फ़ा15) न कहीं भाग सकते हो न अ़ज़ाब से बच सकते हो और यह अ़ज़ाब

(बक़िया सफ़्हा 860 का) बैठे उसका मेवा चुन लेंगे। (फ़ा43) जन्नती बीबियां अपने शौहर से कहेंगी मुझे अपने रब के इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम जन्नत में मुझे कोई चीज़ तुझ से ज़्यादा अच्छी नहीं मालूम होती तो उस ख़ुदा की हम्द जिसने तुझे मेरा शौहर किया और मुझे तेरी बीबी बनाया।

إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّ نَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِينَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕينَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾ وَأَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوٓا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيٓ أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ

इन्नमा तुजज़ौ–न मा कुन्तुम् तअ्–मलून(16)इन्नल्–मुत्तक़ी–न फ़ी जन्नातिंव् व नअ़ीम(17) फ़ाकिही–न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अ़ज़ाबल् जहीम(18)कुलू वश्रबू हनीअम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(19)मुत्तकिई–न अ़ला सुरुरिम् मस्फ़ू–फ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् ईन(20) वल्लज़ी–न आ–मनू वत्त–ब–अत्हुम् ज़ुर्रिय्यतु–हुम् बिईमानिन् अल्–हक़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य–तहुम् व मा अ–लत्नाहुम् मिन् अ़– मलिहिम् मिन् शैइन् कुल्लुम्रिइम् बिमा क–स–ब रहीन(21)व अम्ददनाहुम् बिफ़ाकि–हतिंव् व लह्मिम् मिम्मा यश्तहून(22)य–तना–ज़ऊ–न फ़ीहा कअ्सल् ला लग़्वुन् फ़ीहा व ला तअ्सीम(23)व यतूफ़ु अ़लैहिम् ग़िल्मानुल् लहुम् क–अन्नहुम् लुअ्लुउम् मक्नून(24) व अक़्ब–ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्य–तसा–अलून(25)क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन(26)फ़–मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस् समूम(27)इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नदअूहु इन्नहू हुवल्बर्रुर्–रहीम(28)फ़–ज़क्किर् फ़मा अन्–त बिनिअ्–मति रब्बि–क बिकाहिनिंव् व ला मज्नून(29)अम् यक़ूलू–न शाअ़िरुन्

तुम्हें उसी का बदला जो तुम करते थे।(16) (फ़ा16) बेशक परहेज़गार बाग़ों और चैन में हैं।(17) अपने रब की देन पर शाद शाद (फ़ा17) और उन्हें उनके रब ने आग के अ़ज़ाब से बचा लिया।(18) (फ़ा18) खाओ और पियो ख़ुशगवारी से सिला अपने आमाल का।(19) (फ़ा19) तख़्तों पर तकिया लगाए जो क़तार लगा कर बिछे हैं और हमने उन्हें ब्याह दिया बड़ी आँखों वाली हूरों से।(20) और जो ईमान लाए और उनकी औलाद ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की हमने उनकी औलाद उनसे मिला दी (फ़ा20) और उनके अ़मल में उन्हें कुछ कमी न दी (फ़ा21) सब आदमी अपने किये में गिरिफ़्तार हैं।(21) (फ़ा22) और हमने उनकी मदद फ़रमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें।(22) (फ़ा23) एक दूसरे से लेते हैं वह जाम जिस में न बेहूदगी न गुनहगारी।(23) (फ़ा24) और उनके ख़िदमतगार लड़के उनके गिर्द फिरेंगे (फ़ा25) गोया वह मोती हैं छुपा कर रखे गए।(24) (फ़ा26) और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुँह किया पूछते हुए।(25) (फ़ा27) बोले बेशक हम इससे पहले अपने घरों में सहमे हुए थे।(26) (फ़ा28) तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया (फ़ा29) और हमें लू के अ़ज़ाब से बचा लिया।(27) (फ़ा30) बेशक हमने अपनी पहली ज़िन्दगी में (फ़ा31) उसकी इबादत की थी बेशक वही एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है।(28) (रुकूअ़ 3) तो ऐ महबूब तुम नसीहत फ़रमाओ (फ़ा32) कि तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हो न मजनून।(29) या कहते हैं (फ़ा33) यह शायर हैं

(फ़ा16) दुनिया में कुफ़्र व तकज़ीब। (फ़ा17) उसके अ़ता व निअ़्मत ख़ैर व करामत पर। (फ़ा18) और उनसे कहा जाएगा। (फ़ा19) जो तुमने दुनिया में किये कि ईमान लाए और ख़ुदा और रसूल की ताअ़त इख़्तियार की। (फ़ा20) जन्नत में अगरचे बाप दादा के दर्जे बुलन्द हों तो भी उनकी ख़ुशी के लिए उनकी औलाद उनके साथ मिला दी जाएगी और अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से उस औलाद को भी वह दर्जा अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा21) उन्हें उनके आमाल का पूरा सवाब दिया और औलाद के दर्जे अपने फ़ज़्ल व करम से बुलन्द किये। (फ़ा22) यानी हर काफ़िर अपने कुफ़्री अ़मल में दोज़ख़ के अन्दर गिरिफ़्तार है। (ख़ाज़िन) (फ़ा23) यानी अहले जन्नत को हमने अपने एहसान से दम बदम मज़ीद निअ़्मतें अ़ता फ़रमाईं। (फ़ा24) जैसा कि दुनिया की शराब में किस्म किस्म के मफ़ासिद थे क्योंकि शराबे जन्नत के पीने से न अ़क़्ल ज़ाइल होती है न ख़सलतें ख़राब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बकता है न गुनहगार होता है। (फ़ा25) ख़िदमत के लिए और उनके हुस्न व सफ़ा **(बक़िया सफ़हा 873 पर)**

نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ۝ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ۝ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

न–त–रब्बसु बिही रैबल्–मनून(30)कुल् त–रब्बसू फ़इन्नी म–अ़कुम् मिनल् मु–त–रब्बिसीन(31)अम् तअ्मुरुहुम् अह़्लामुहुम् बिहाज़ा अम् हुम् क़ौमुन् त़ागू़न(32)अम् यकू़लू–न त–क़व्व–लहू बल् ला युअ्मिनून(33)फ़ल्यअ्तू बि–हदीसिम् मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन(34)अम् ख़ुलिकू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल् ख़ालिकू़न(35)अम् ख़–लकुस् समावाति वल्अर्–ज़ बल् ला यूक़िनून(36) अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ाइनु रब्बि–क अम् हुमुल् मुसैतिरून(37)अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअू–न फ़ीहि फ़ल्यअ्ति मुस्तमिअ़ुहुम् बिसुल्त़ानिम् मुबीन(38)अम् लहुल्बनातु व लकुमुल् बनून(39)अम् तस्–अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम् मग़्–रमिम् मुस्क़लून(40)अम् अ़िन्दहुमुल् ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून(41) अम् युरीदू–न कैदन् फ़ल्लज़ी–न क–फ़रू हुमुल् मकीदून(42)अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि सुब्ह़ानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून(43)व इंय्यरौ किस्फ़म् मि–नस्समाइ साक़ितंय्यकू़लू सहाबुम् मर्कूम (44)फ़–ज़र्हुम् ह़त्ता युलाकू़ यौ–महुमुल् लज़ी फ़ीहि युस्अकू़न(45)यौ–म ला युग्नी अ़न्हुम् कैदुहुम् शैअंव् व ला हुम् युन्सरून(46)व इन्–न लिल्लज़ी–न ज़–लमू अ़ज़ाबन् दू–न ज़ालि–क व लाकिन्–न अक्स़–रहुम् ला यअ्–लमून(47)वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि–क फ़इन्न–क बि–अअ़्युनिना व सब्बिह़् बि–ह़म्दि रब्बि–क ह़ी–न तकू़म(48)व मिनल् लैलि फ़–सब्बिह़्हु व इद्बारन् नुजूम(49)

हमें उन पर हवादिसे ज़माना का इन्तेज़ार है।(30) (फ़ा34) तुम फ़रमाओ इन्तेज़ार किये जाओ (फ़ा35) मैं भी तुम्हारेइन्तेज़ार में हूं।(31) (फ़ा36) क्या उनकी अक़्लें उन्हें यही बताती हैं (फ़ा37) या वह सरकश लोग हैं।(32) (फ़ा38) या कहते हैं उन्होंने (फ़ा39) यह कुरआन बना लिया बल्कि वह ईमान नहीं रखते।(33) (फ़ा40) तो इस जैसी एक बात तो ले आयें (फ़ा41) अगर सच्चे हैं।(34) क्या वह किसी अस्ल से न बनाए गए (फ़ा42) या वही बनाने वाले हैं।(35) (फ़ा43) या आसमान और ज़मीन उन्होंने पैदा किये (फ़ा44) बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं।(36) (फ़ा45) या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं (फ़ा46) या वह कड़ोड़े हैं।(37) (फ़ा47) या उनके पास कोई ज़ीना है (फ़ा48) जिसमें चढ़ कर सुन लेते हैं (फ़ा49) तो उनका सुनने वाला कोई रौशन सनद लाए।(38) क्या उसको बेटियां और तुम को बेटे।(39) (फ़ा50) या तुम उनसे (फ़ा51) कुछ उजरत मांगते हो तो वह चट्टी के बोझ में दबे हैं।(40) (फ़ा52) या उनके पास ग़ैब हैं जिससे वह हुक्म लगाते हैं।(41) (फ़ा53) या किसी दाँव के इरादा में हैं (फ़ा54) तो काफ़िरों ही पर दाँव पड़ना है।(42) (फ़ा55) या अल्लाह के सिवा उनका कोई और ख़ुदा है (फ़ा56) अल्लाह को पाकी उनके शिर्क से।(43) और अगर आसमान से कोई टुकड़ा गिरता देखें तो कहेंगे तह–ब–तह बादल है।(44) (फ़ा57) तो तुम उन्हें छोड़ दो यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस में बेहोश होंगे।(45) (फ़ा58) जिस दिन उनका दाँव कुछ काम न देगा और न उनकी मदद हो।(46) (फ़ा59) और बेशक ज़ालिमों के लिए उससे पहले एक अ़ज़ाब है (फ़ा60) मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं।(47) (फ़ा61) और ऐ महबूब तुम अपने रब के हुक्म पर ठहरे रहो (फ़ा62) कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो **(बक़िया सफ़हा 850 का)**

سُوْرَۃُ النَّجْمِ مَکِّیَّۃٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۝١ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝٢ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝٣ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝٦ وَهُوَ
بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ۝١٠ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢
وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝١٣ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝١٤ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝١٥ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝١٦ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝١٧ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ
الْكُبْرٰى ۝١٨ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝١٩ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝٢٠ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝٢١ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝٢٢ اِنْ هِیَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ

सूरतुन्नज्मि

(मक्की है इसमें 62 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नज्मि इज़ा हवा(1)मा ज़ल्–ल साहि़बुकुम् व मा ग़वा(2)व मा यन्ति़क़ु अ़निल्हवा(3)इन् हु–व इल्ला वह़्युंय्यूहा़(4)अ़ल्ल–महू शदीदुल्क़ुवा(5)ज़ू मिर्रतिन् फ़स्तवा(6)व हु–व बिल्– उफ़ुक़िल् अअ्‌ला(7)सुम्–म दना फ़–त–दल्ला(8)फ़का–न क़ा–ब क़ौसैनि औ अद्‌ना(9)फ़औहा़ इला अ़ब्दिही मा औहा(10)मा क–ज़–बल् फ़ुआदु मा रआ(11)अ–फ़तुमारू–नहू अ़ला मा यरा(12)व ल–क़द् रआहु नज़्–ल–तन् उख़्रा(13)अ़िन्–द सिद्–रतिल् मुन्तहा(14)अ़िन्दहा जन्नतुल् मअ्‌वा (15)इज़् यग़्शस्सिद्–र–त मा यग़्शा(16)मा ज़ाग़ल् ब–स़रु व मा तग़ा(17)ल–क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल् कुब्‌रा(18)अ–फ़–रऐतुमुल्ला–त वल्अ़ुज़्ज़ा(19)व मनातस् सा़लि–स़–तल् उख़्रा(20)अ–लकुमुज़् ज़–करु व लहुल् उन्सा़(21)तिल्–क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा(22)इन् हि–य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
उस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम(1) जब यह मेअ़राज से उतरे (फ़ा2) तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले।(2) (फ़ा3) और वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते।(3) वह तो नहीं मगर 'वह़ी' जो उन्हें की जाती है।(4) (फ़ा4) उन्हें (फ़ा5) सिखाया (फ़ा6) सख़्त कुव्वतों वाले। ताक़तवर ने(5) (फ़ा7) फिर उस जलवे ने क़स्द फ़रमाया।(6) (फ़ा8) और वह आसमाने बरीं के सब से बुलन्द किनारे पर था।(7) (फ़ा9) फिर वह जलवा नज़दीक हुआ(8) (फ़ा10) फिर ख़ूब उतर आया। (फ़ा11) तो उस जलवे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उससे भी कम।(9) (फ़ा12) अब 'वह़ी' फ़रमाई अपने बन्दे को जो 'वह़ी' फ़रमाई।(10) (फ़ा13) दिल ने झूठ न कहा जो देखा।(11) (फ़ा14) तो क्या तुम उनसे उनके देखे हुए पर झगड़ते हो।(12) (फ़ा15) और उन्होंने तो वह जलवा दो बार देखा।(13) (फ़ा16) सिद्‌रतुल मुन्तहा के पास।(14) (फ़ा17) उसके पास जन्नतुल मावा है।(15) जब सिद्‌रा पर छा रहा था जो छा रहा था।(16) (फ़ा18) आँख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी।(17) (फ़ा19) बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं।(18) (फ़ा20) तो क्या तुमने देखा लात और उज़्ज़ा।(19) और उस तीसरी मनात को।(20) (फ़ा21) क्या तुम को बेटा और उसको बेटी।(21) (फ़ा22) जब तो यह सख़्त भोंडी तक़सीम है।(22) (फ़ा23) वह तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुमने और तुम्हारेबाप दादा ने रख लिये हैं (फ़ा24)

(फ़ा1) सूरह वन्नज्म मक्की है इसमें तीन रुकूअ़ बासठ आयतें 360 कलिमे 1405 हरफ़ हैं यह वह पहली सूरत है जिसका रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एलान फ़रमाया और हरम शरीफ़ में मुशरिकीन के रू बरू पढ़ी (फ़ा2) नज्म की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन के बहुत से क़ौल हैं बाज़ ने सुरय्या मुराद लिया है अगरचे सुरय्या कई तारे हैं लेकिन नज्म का इतलाक़ उन पर अ़रब की आ़दत है बाज़ ने नज्म से जिन्से नुजूम मुराद ली है बाज़ ने वह नबातात जो साक़ नहीं रखते ज़मीन पर फैलते हैं बाज़ ने नज्म से कुरआन मुराद लिया है लेकिन सबसे लज़ीज़ तफ़सीर वह है जो हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है ज़ाते गिरामी हादीए बरहक़ सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की **(बक़िया सफ़हा 873 पर)**

اٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ مَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ۞ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۞ ۖ فَلِلّٰهِ

الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۞ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْ ۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۞ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۞ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ

عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۞ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۞ وَلِلّٰهِ مَا فِى

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۞ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ

आबाउकुम् मा अन्ज़–लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् इंय्यत्तबिऊ–न इल्लज़्ज़न्–न व मा तह्वल् अन्फ़ुसु व ल–क़द् जा–अहुम् मिर्रब्बिहिमुल्हुदा(23)अम् लिल्इन्सानि मा तमन्ना(24)फ़लिल्लाहिल् आख़ि–रतु वल् ऊला (25)व कम् मिम् म–लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ा–अतुहुम् शैअन् इल्ला मिम् बअ्दि अंय्यअ्– ज़–नल्लाहु लिमंय्यशाउ व यरज़ा (26)इन्नल्लज़ी–न ला युअमिनू–न बिलआख़ि–रति लयु–सम्मूनल् मलाइ–क–त तस्मि–य–तल् उन्सा(27)व मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इंय्यत्तबिऊ–न इल्लज़्ज़न्–न व इन्नज़्ज़न्–न ला युग़्नी मिनल् हक़्क़ि शैअन्(28)फ़–अअ्रिज़् अ़म् मन् त–वल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल् हयातद्दुन्या(29)ज़ालि–क मब्–लग़ुहुम् मिनल् अ़िल्मि इन्–न रब्ब–क हु–व अअ्–लमु बिमन् ज़ल्–ल अ़न् सबीलिही व हु–व अअ्–लमु बि–मनिह्तदा(30)व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि–यज्ज़ि–यल्लज़ी–न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि–यल्लज़ी–न अह्सनू बिल्हुस्ना(31)अल्लज़ी–न यज्तनिबू–न कबाइरल् इस्मि वल्फ़वाहि–श इल्लल्ल–म–म

अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी वह तो निरे गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे हैं (फ़ा25) हालांकि बेशक उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत आई।(23) (फ़ा26) क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वह ख़्याल बांधे।(24) (फ़ा27) तो आख़िरत और दुनिया सब का मालिक अल्लाह ही है।(25) (फ़ा28) (रुकूअ़ 5) और कितने ही फ़रिश्ते हैं आसमानों में कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर जब कि अल्लाह इजाज़त दे दे जिसके लिए चाहे और पसन्द फ़रमाए।(26) (फ़ा29) बेशक वह जो आख़िरत पर ईमान रखते नहीं (फ़ा30) मलाइका का नाम औ़रतों का सा रखते हैं।(27) (फ़ा31) और उन्हें उसकी कुछ ख़बर नहीं वह तो निरे गुमान के पीछे हैं और बेशक गुमान यक़ीन की जगह कुछ काम नहीं देता।(28) (फ़ा32) तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा (फ़ा33) और उसने न चाही मगर दुनिया की ज़िन्दगी।(29) (फ़ा34) यहां तक उनके इल्म की पहुंच है (फ़ा35) बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है जिसने राह पाई।(30) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उनके किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत अच्छा सिला अ़ता फ़रमाए।(31) वह जो बड़े गुनाहों और बेहयाईयों से बचते हैं (फ़ा36) मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए (फ़ा37)

(फ़ा25) यानी उनका बुतों को पूजना अ़क़्ल व इल्म व तालीमे इलाही के ख़िलाफ़ इत्तेबाअ़े नफ़्स व हवा और वहम परस्ती की बिना पर है। (फ़ा26) यानी किताबे इलाही और ख़ुदा के रसूल जिन्होंने सराहत के साथ बार बार बताया कि बुत मअ़बूद नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला के सिवाए कोई भी इबादत का मुस्तहिक़ नहीं (फ़ा27) यानी काफ़िर जो बुतों के साथ झूठी उम्मीदें रखते हैं कि वह उनके काम आयेंगे यह उम्मीदें बातिल हैं (फ़ा28) जिसे जो चाहे दे उसी की इबादत करना और उसी को राज़ी रखना काम आएगा। (फ़ा29) यानी मलाइका बावजूदे कि बारगाहे इलाही में कुर्ब व मन्ज़िलत रखते हैं बाद अज़ाँ सिर्फ़ उसके लिए शफ़ाअ़त करेंगे जिसके लिए अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी हो यानी मोमिन मौहिद के लिए तो बुतों से शफ़ाअ़त की उम्मीद रखना निहायत बातिलहै कि न उन्हें बारगाहे हक़ में कुर्ब हासिल न कुफ़्फ़ार शफ़ाअ़त के अहल (फ़ा30) यानी कुफ़्फ़ार मुन्किरीन बअ़्स (फ़ा31) कि उन्हें ख़ुदा की बेटियां बताते हैं। (फ़ा32) अमरे वाक़ई और हक़ीक़ते हाल इल्म व यक़ीन से मालूम होती है न कि वहम व गुमान से (फ़ा33) यानी कुरआन पर ईमान से (फ़ा34) आख़िरत पर ईमान न लाया कि उसका तालिब होता (फ़ा35) यानी वह इस क़दर कम अ़क़्ल व कम इल्म हैं कि उन्होंने आख़िरत पर दुनिया को तरजीह दी है या यह (बक़िया सफ़हा 876 पर)

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ﴿٣٢﴾ أَفَرَأَيْتَ
الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾
وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾ وَأَنَّهُ
هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾ وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾
فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾ هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هَٰذَا
الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾

इन्–न रब्ब–क वासिउल् मग़्फ़ि–रति हु–व अअ्–लमु बिकुम् इज़् अन्श–अकुम् मिनल्अर्ज़ि व इज़् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् फ़ला तुज़क्कू अन्फ़–सकुम् हु–व अअ्–लमु बि–मनित्तक़ा(32)अ–फ़–रऐतल्लज़ी त–वल्ला(33)व अअ्ता क़लीलंव् व अक्दा(34)अअिन्दहू अिल्मुल् ग़ैबि फ़हु–व यरा(35)अम् लम् यु–नब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसा(36)व इब्राही–मल्लज़ी वफ़्फ़ा(37)अल्ला तज़िरु वाज़ि–रतुंव् विज़्–र उख़्रा(38)व अल्लै–स लिल्–इन्सानि इल्ला मा सआ(39)व अन्–न सअ्–यहू सौ–फ़ युरा(40)सुम्–म युज्ज़ाहुल् जज़ाअल् औफ़ा (41)व अन्–न इला रब्बिकल् मुन्तहा (42)व अन्नहू हु–व अज़्ह–क व अब्का(43)व अन्नहू हु–व अमा–त व अह्या(44)व अन्नहू ख़–ल–क़ज़् ज़ौजैनिज़् ज़–क–र वल्उन्सा(45)मिन् नुत्–फ़तिन् इज़ा तुम्ना(46)व अन्–न अ़लैहिन्नश्–अतल् उख़्रा(47)व अन्नहू हु–व अग्ना व अक़्ना(48)व अन्नहू हु–व रब्बुश्शिअ्रा(49)व अन्नहू अह्–ल–क आ़–द निल्ऊला(50)व समू–द फ़मा अब्क़ा(51)व क़ौ–म नूहिम् मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू हुम् अज़्–ल–म व अत्ग़ा(52)वल्मुअ्तफ़ि–क–त अह्वा(53)फ़–ग़श्शाहा मा ग़श्शा(54) फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बि–क त–तमारा(55)हाज़ा नज़ीरुम् मिनन् नुज़ुरिल् ऊला(56)अज़ि–फ़तिल् आज़ि–फ़तु(57)लै–स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ह(58)अ–फ़मिन् हाज़ल् हदीसि तअ्–जबून(59)व तज़्–हकू–न व ला तब्कून(60)व अन्तुम् सामिदून(61)फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्बुदू(62)

बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ् है वह तुम्हें ख़ूब जानता है (फ़ा38) तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में हमल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ (फ़ा39) वह ख़ूब जानता है जो परहेज़गार हैं।(32) (फ़ा40) (रुकूअ् 6) तो क्या तुमने देखा जो फिर गया।(33) (फ़ा41) और कुछ थोड़ा सा दिया और रोक रखा।(34) (फ़ा42) क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है तो वह देख रहा है।(35) (फ़ा43) क्या उसे उसकी ख़बर न आई जो सहीफ़ों में है मूसा के।(36) (फ़ा44) और इब्राहीम के जो अहकाम पूरे बजा लाया।(37) (फ़ा45) कि कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ नहीं उठाती।(38) (फ़ा46) और यह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश।(39) (फ़ा47) और यह कि उसकी कोशिश अ़न्क़रीब देखी जाएगी।(40) (फ़ा48) फिर उसका भरपूर बदला दिया जाएगा।(41) और यह कि बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ इन्तेहा है।(42) (फ़ा49) और यह कि वही है जिसने हंसाया और रुलाया।(43) (फ़ा50) और यह कि वही है जिसने मारा और जिलाया(44) (फ़ा51) और यह कि उसने दो जोड़े बनाए नर और मादा।(45) नुत्फ़ा से जब डाला जाए।(46) (फ़ा52) और यह कि उसी के ज़िम्मा है पिछला उठाना।(47) (फ़ा53) और यह कि उसी ने ग़िना दी और क़नाअ़त दी।(48) और यह कि वही सितारा शिअ्रा का रब है।(49) (फ़ा54) और यह कि उसी ने पहली आ़द को हलाक फ़रमाया।(50) (फ़ा55) और समूद को (फ़ा56) तो कोई बाक़ी न छोड़ा।(51) और उनसे पहले नूह की क़ौम को (फ़ा57) बेशक वह उनसे भी ज़ालिम और सरकश थे।(52) (फ़ा58) और उसने उलटने वाली बस्ती को नीचे **(बक़िया सफ़हा 876 पर)**

سُوۡرَۃُ الۡقَمَرِ مَکِّیَّۃٌ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اِقۡتَرَبَتِ السَّاعَۃُ وَ انۡشَقَّ الۡقَمَرُ ۝ وَ اِنۡ یَّرَوۡا اٰیَۃً یُّعۡرِضُوۡا وَ یَقُوۡلُوۡا سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ ۝ وَ کَذَّبُوۡا وَ اتَّبَعُوۡۤا اَہۡوَآءَہُمۡ وَ کُلُّ اَمۡرٍ مُّسۡتَقِرٌّ ۝ وَ لَقَدۡ جَآءَہُمۡ مِّنَ الۡاَنۡۢبَآءِ مَا فِیۡہِ مُزۡدَجَرٌ ۝ حِکۡمَۃٌۢ بَالِغَۃٌ فَمَا تُغۡنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنۡہُمۡ ۘ یَوۡمَ یَدۡعُ الدَّاعِ اِلٰی شَیۡءٍ نُّکُرٍ ۝ خُشَّعًا اَبۡصَارُہُمۡ یَخۡرُجُوۡنَ مِنَ الۡاَجۡدَاثِ کَاَنَّہُمۡ جَرَادٌ مُّنۡتَشِرٌ ۝ مُّہۡطِعِیۡنَ اِلَی الدَّاعِ ؕ یَقُوۡلُ الۡکٰفِرُوۡنَ ہٰذَا یَوۡمٌ عَسِرٌ ۝ کَذَّبَتۡ قَبۡلَہُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ فَکَذَّبُوۡا عَبۡدَنَا وَ قَالُوۡا مَجۡنُوۡنٌ وَّ ازۡدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّہٗۤ اَنِّیۡ مَغۡلُوۡبٌ فَانۡتَصِرۡ ۝ فَفَتَحۡنَاۤ اَبۡوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنۡہَمِرٍ ۝ۖ وَّ فَجَّرۡنَا الۡاَرۡضَ عُیُوۡنًا فَالۡتَقَی الۡمَآءُ عَلٰۤی اَمۡرٍ قَدۡ قُدِرَ ۝

सूरतुल्–क़्–मरि

(मक्की है इसमें 55 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्त–र–बतिस् सा–अ़तु वन्शक़्क़ल् क़–म–र(1)व इंय्यरौ आ–यतंय्युअ़रिज़ू व यक़ूलू सिह़्रुम् मुस्तमिर्र(2)व कज़्ज़बू वत्त–बअ़ू अह्वा–अहुम् व कुल्लु अम्रिम् मुस्तक़िर्र(3)व ल–क़द् जा–अहुम् मिनल्–अम्बाइ मा फ़ीहि मुज़्द–जर(4)हिक्–मतुम् बालि–ग़तुन् फ़मा तुग़्निन्नुज़ुर(5)फ़–त–वल्–ल अ़न्हुम् यौ–म यदअ़ुद्दाअ़ि इला शैइन् नुकुर(6)ख़ुश्श–अ़न् अब्सारुहुम् यख़्रुजू–न मिनल् अज्दासि क–अन्नहुम् जरादुम् मुन्तशिर(7)मुह्तिअ़ी–न इलद्दाअ़ि यक़ूलुल् काफ़िरू–न हाज़ा यौमुन् अ़सिर(8)कज़्ज़–बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिन् फ़–कज़्ज़बू अ़ब्–दना व क़ालू मज्नूनुंव् वज़्दुजिर(9)फ़–दआ़ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन् फ़न्तसिर(10)फ़–फ़–तह्ना अब्वाबस्–समाइ बिमाइम् मुन्–हमिरिंव्(11)व फ़ज्जर्–नल् अर्–ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्त–क़ल् माउ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर(12)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

पास आई क़ियामत और (फ़ा2) शक़ हो गया चाँद।(1) (फ़ा3) और अगर देखें (फ़ा4) कोई निशानी तो मुंह फेरते (फ़ा5) और कहते हैं यह तो जादू है चला आता।(2) और उन्होंने झुठलाया (फ़ा6) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए (फ़ा7) और हर काम क़रार पा चुका है।(3) (फ़ा8) और बेशक उनके पास वह ख़बरें आईं (फ़ा9) जिन में काफ़ी रोक थी।(4) (फ़ा10) इन्तेहा को पहुंची हुई हिकमत फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले।(5) तो तुम उनसे मुंह फेर लो (फ़ा11) जिस दिन बुलाने वाला (फ़ा12) एक सख़्त बे पहचानी बात की तरफ़ बुलाएगा।(6) (फ़ा13) नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया वह टिड्डी हैं फैली हुई।(7) (फ़ा14) बुलाने वाले की तरफ़ लपकते हुए (फ़ा15) काफ़िर कहेंगे यह दिन सख़्त है।(8) इन से (फ़ा16) पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया तो हमारे बन्दे (फ़ा17) को झूठा बताया और बोले वह मजनून है और उसे झिड़का।(9) (फ़ा18) तो उसने अपने रब से दुआ़ की कि मैं मग़लूब हूं तू मेरा बदला ले।(10) तो हम ने आसमान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के बहते पानी से।(11) (फ़ा19) और ज़मीन चश्मे करके बहा दी (फ़ा20) तो दोनों पानी (फ़ा21) मिल गए उस मिक़दार पर जो मुक़द्दर थी।(12) (फ़ा22)

(फ़ा1) सूरए क़मर मक्की है सिवाए आयत *स–युह्–ज़मुल्–जम्अ़ु* के इसमें तीन रुकूअ़ पचपन आयतें और 342 कलिमे और 1423 हरफ़ हैं (फ़ा2) उसके नज़दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोअ़जेज़ा से (फ़ा3) दो पारा होकर शक़्क़ुल क़मर जिसका इस आयत में बयान है नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोअ़जेज़ाते बाहरा में से है अहले मक्का ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से एक मोअ़जेज़ा की दरख़्वास्त की थी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँद शक़ करके दिखाया चाँद के दो हिस्से हो गए और एक हिस्सा दूसरे से जुदा हो गया और फ़रमाया गया कि गवाह रहो क़ुरैश ने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है इस पर उन्हीं के जमाअ़त के लोगों ने कहा कि अगर यह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चाँद के दो हिस्से नज़र न आए होंगे अब जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उनकी जुस्तजू रखो और मुसाफ़िरों से दरियाफ़्त करो अगर दूसरे मक़ामात से भी चाँद शक़ होना देखा गया है तो बेशक मोअ़जेज़ा है चुनान्चे सफ़र से आने वालों से दरियाफ़्त किया उन्होंने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चाँद के दो हिस्से हो गए थे मुशरिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही और वह **(बक़िया सफ़हा 877 पर)**

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿۱۳﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۵﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۷﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۱۸﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿۱۹﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿۲۰﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۲۱﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۲۲﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿۲۳﴾ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿۲۴﴾ ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿۲۵﴾ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿۲۶﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿۲۷﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿۲۸﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿۲۹﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ

व ह–मल्नाहु अ़ला ज़ाति अल्वाहिंव् व दुसुरिन्(13)तजरी बि–अअ्युनिना जज़ाअल् लिमन् का–न कुफ़िर(14)व ल–क़त्–त–रक्नाहा आ–य–तन् फ़–हल् मिम्मुद्दकिर(15)फ़कै–फ़ का–न अ़ज़ाबी व नुजुर(16)व ल–क़द यस्सर्नल् क़ुरआ–न लिज़्ज़िक्रि फ़–हल् मिम् मुद्दकिर(17)कज़्ज़–बत् आदुन् फ़कै–फ़ का–न अ़ज़ाबी व नुजुर(18)इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्–सरन् फ़ी यौमि नह्सिम् मुस्तमिर्रि(19)तन्ज़िउन्ना–स क–अन्नहुम् अअ्जाज़ु नख़्लिम् मुन्क़अिर(20)फ़कै–फ़ का–न अ़ज़ाबी व नुजुर(21)व ल–क़द यस्सर्नल् क़ुरआ–न लिज़्ज़िक्रि फ़–हल् मिम्–मुद्दकिर(22) कज़्ज़–बत् समूदु बिन्नुजुर(23)फ़क़ालू अ–ब–शरम् मिन्ना वाहि–दन् नत्तबिअ़ूहू इन्ना इज़ल्लफ़ी ज़लालिंव् व सुअुर(24)अ–उल्क़ि–यज़् ज़िक्रु अ़लैहि मिम् बैनिना बल् हु–व कज़्ज़ाबुन् अशिर(25)स–यअ्–लमू–न ग़–दम् मनिल्–कज़्ज़ाबुल् अशिर(26)इन्ना मुर्सिलुन्ना–क़ति फ़ित्–न–तल् लहुम् फ़र्–तक़िब्हुम् वस्तबिर(27)व नब्बिअ्हुम् अन्नल्मा–अ क़िस्मतुम् बै–नहुम् कुल्लु शिर्बिम् मुह्–त–ज़र(28)फ़नादौ साहि–बहुम् फ़–तआ़ता फ़–अ़–क़र(29)फ़कै–फ़ का–न अ़ज़ाबी व

और हमने नूह को सवार किया (फ़ा23) तख़्तों और कीलों वाली पर।(13) कि हमारी निगाह के रू–बरू बहती (फ़ा24) उसके सिला में (फ़ा25) जिसके साथ कुफ़्र किया गया था।(14) और हमने उसे (फ़ा26) निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला।(15) (फ़ा27) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरी धमकियां।(16) और बेशक हमने क़ुरआन याद करने के लिए आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला।(17) (फ़ा28) आ़द ने झुठलाया (फ़ा29) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान।(18) (फ़ा30) बेशक हमने उन पर एक सख़्त आंधी भेजी (फ़ा31) ऐसे दिन में जिस की नहूसत उन पर हमेशा के लिए रही।(19) (फ़ा32) लोगों को यूं दे मारती थी कि गोया वह उखड़ी हुई खजूरों के ढुंड हैं। (20) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान।(21) और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिए तो है कोई याद करने वाला।(22) (रुकूअ़ 8) समूद ने रसूलों को झुठलाया।(23) (फ़ा33) तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की ताबेअ़दारी करें (फ़ा34) जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं।(24) (फ़ा35) क्या हम सब में से उस पर (फ़ा36) ज़िक्र उतारा गया (फ़ा37) बल्कि यह सख़्त झूठा इतरौना है।(25) (फ़ा38) बहुत जल्द कल जान जायेंगे (फ़ा39) कौन था बड़ा झूठा इतरौना।(26) हम नाक़ा भेजने वाले हैं उनकी जांच को (फ़ा40) तो ऐ सालेह़ तू राह देख (फ़ा41) और सब्र कर।(27) (फ़ा42) और उन्हें ख़बर देदे कि पानी उनमें हिस्सों से है (फ़ा43) हर हिस्सा पर वह हाज़िर हो जिस की बारी है।(28) (फ़ा44) तो उन्होंने अपने साथी को (फ़ा45) पुकारा तो उसने (फ़ा46) लेकर उसकी कोचें काट दीं।(29) (फ़ा47) फिर कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और डर के

(फ़ा23) एक कश्ती (फ़ा24) हमारी हिफ़ाज़त में। (फ़ा25) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के (फ़ा26) यानी इस वाक़िआ़ को कि कुफ़्फ़ार ग़र्क़ करके हलाक कर दिये गए और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को नजात दी गई और बाज़ मुफ़स्सिरीन के नज़दीक त–रक्नाहा की ज़मीर कश्ती की तरफ़ रुजूअ़ करती है। क़तादा से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उस कश्ती को सरज़मीने जज़ीरा में और बाज़ के नज़दीक जूदी पहाड़ पर मुद्दतों बाक़ी रखा यहां तक कि हमारी उम्मत के पहले लोगों ने उसको देखा (फ़ा27) जो पन्द पज़ीर हो और इबरत हासिल करे (फ़ा28) इस आयत में क़ुरआने करीम की तालीम व तअ़ल्लुम और उसके साथ इश्तिग़ाल रखने और इसको हिफ़्ज़ करने की तरग़ीब है और यह भी मुस्तफ़ाद होता है कि **(बक़िया सफ़हा 866 पर)**

نُذُرِ ۝ إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝
إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ اٰلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنٰهُم بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝
وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنٰهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ
أُولٰٓئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهٰى وَأَمَرُّ ۝

नुज़ुर(30)इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् सै–ह़तंव् वाहि–द–तन् फ़कानू क–हशीमिल् मुह़्तज़िर(31)व ल–क़द यस्सर्नल् क़ुर्आ–न लिज़्ज़िक्रि फ़–हल् मिम् मुद्दकिर(32)कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम् बिन्नुज़ुर(33) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् ह़ासिबन् इल्ला आ–ल लूतिन् नज्जैनाहुम् बि–स–ह़रिन्(34)निअ़्–म–तम् मिन् अ़िन्दिना कज़ालि–क नज्ज़ी मन् श–कर(35)व ल–क़द अन्ज़–रहुम् बत्श–तना फ़–तमारौ बिन्नुज़ुर(36)व ल–क़द रा–वदूहु अ़न् ज़ैफ़िही फ़–त–मस्ना अअ़्यु–नहुम् फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (37)व ल–क़द सब्ब–ह़हुम् बुक्–रतन् अ़ज़ाबुम् मुस्तक़िर(38)फ़–ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर(39)व ल–क़द यस्सर्नल् क़ुर्आ–न लिज़्ज़िक्रि फ़–हल् मिम्मुद्दकिर(40)व ल–क़द जा–अ आ–ल फ़िर्औ़–नन् नुज़ुर(41)कज़्ज़बू बि–आयातिना कुल्लिहा फ़–अ–ख़ज्नाहुम् अख़्–ज़ अ़ज़ीज़िम् मुक़्तदिर(42)अकुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम् मिन् उलाइकुम् अम् लकुम् बरा–अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर(43)अम् यक़ूलू–न नह़्नु जमीअ़ुम् मुन्तसिर(44)सयुह्–ज़मुल् जम्अ़ु व युवल्लू–नद्दुबुर(45) बलिस्सा–अ़तु मौअ़िदुहुम् वस्सा–अ़तु अद्हा व अमर्र(46)

फ़रमान।(30) (फ़ा48) बेशक हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी (फ़ा49) जभी वह हो गए जैसे घेरा बनाने वाले की बची हुई घास सूखी रौंदी हुई।(31) (फ़ा50) और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिए तो है कोई याद करने वाला।(32) लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।(33) बेशक हमने उन पर (फ़ा51) पथराव भेजा (फ़ा52) सिवाए लूत के घर वालों के (फ़ा53) हम ने उन्हें पिछले पहर (फ़ा54) बचा लिया।(34) अपने पास की निअ़मत फ़रमा कर हम यूंही सिला देते हैं उसे जो शुक्र करे।(35) (फ़ा55) और बेशक उसने (फ़ा56) उन्हें हमारी गिरिफ़्त से (फ़ा57) डराया तो उन्होंने डर के फ़रमानों में शक किया।(36) (फ़ा58) उन्होंने उसे उसके मेहमानों से फुसलाना चाहा (फ़ा59) तो हमने उनकी आँखें मेट दीं (फ़ा60) फ़रमाया चखो मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान।(37) (फ़ा61) और बेशक सुबह तड़के उन पर ठहरने वाला अ़ज़ाब आया।(38) (फ़ा62) तो चखो मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान।(39) और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिए तो है कोई याद करने वाला।(40) (रुकूअ़ 9) और बेशक फ़िरऔन वालों के पास रसूल आए।(41) (फ़ा63) उन्होंने हमारी सब निशानियां झुठलाईं (फ़ा64) तो हमने उन पर (फ़ा65) गिरिफ़्त की जो एक इज़्ज़त वाले और अ़ज़ीम क़ुदरत वाले की शान थी।(42) क्या (फ़ा66) तुम्हारे काफ़िर उन से बेहतर हैं (फ़ा67) या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है।(43) (फ़ा68) या यह कहते हैं (फ़ा69) कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे।(44) (फ़ा70) अब भगाई जाती है यह जमाअ़त (फ़ा71) और पीठें फेर देंगे।(45) (फ़ा72) बल्कि उनका वादा क़ियामत पर है (फ़ा73) और क़ियामत निहायत कड़वी और सख़्त कड़वी।(46) (फ़ा74)

(फ़ा48) जो नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले मेरी तरफ़ आये थे और अपने मौक़ा पर वाक़ेअ़ हुए (फ़ा49) यानी फ़रिश्ते की हौलनाक आवाज़ (फ़ा50) यानी जिस तरह चरवाहे जंगल में अपनी बकरियों की हिफ़ाज़त के लिए घास कांटों का इहाता बना लेते हैं उसमें से कुछ घास बची रह जाती है और वह जानवरों के पाँव में रौंद कर रेज़ा रेज़ा हो जाती है यह हालत उनकी हो गई। (फ़ा51) इस तकज़ीब की सज़ा में। (फ़ा52) यानी उन पर छोटे छोटे संगरेज़े बरसाए। (फ़ा53) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और उनकी दोनों साहबज़ादियां इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहीं (फ़ा54) यानी सुबह होने से पहले (फ़ा55) अल्लाह तआ़ला की निअ़मतों का और शुक्र गुज़ार वह है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनकी इताअ़त करे **(बक़िया सफ़्हा 877 पर)**

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

इन्नल्–मुज्रिमी–न फ़ी ज़लालिंव् व सुअुर(47)यौ–म युस्हबू–न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम् ज़ूकू मस्–स स–क़र(48)इन्ना कुल्–ल शैइन् ख़–लक़्नाहु बि–क़–दर(49)व मा अम्रुना इल्ला वाहि–दतुन् क–लम्हिम् बिल्ब–सर(50)व ल–क़द् अह्–लक्ना अश्या–अ़कुम् फ़–हल् मिम्मुद्दकिर(51)व कुल्लु शैइन् फ़–अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर(52)व कुल्लु सग़ीरिंव् व व कबीरिम् मुस्ततर(53)इन्नल्–मुत्तक़ी–न फ़ी जन्नातिंव् व न–हरिन्(54)फ़ी मक्–अ़दि सिद्क़िन् अ़िन्–द मलीकिम् मुक़्तदिर(55)

बेशक मुजरिम गुमराह और दीवाने हैं।(47) (फ़ा75) जिस दिन आग में अपने मुंहों पर घसीटे जायेंगे और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आंच।(48) बेशक हमने हर चीज़ एक अन्दाज़ा से पैदा फ़रमाई।(49) (फ़ा76) और हमारा काम तो एक बात की बात है जैसे पलक मारना।(50) (फ़ा77) और बेशक हमने तुम्हारी वज़अ़ के (फ़ा78) हलाक कर दिये तो है कोई ध्यान करने वाला।(51) (फ़ा79) और उन्होंने जो कुछ किया सब किताबों में है।(52) (फ़ा80) और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है।(53) (फ़ा81) बेशक परहेज़गार बाग़ों और नहर में हैं।(54) सच की मजलिस में अ़ज़ीम क़ुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर।(55) (फ़ा82) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा75) न समझते हैं न राहयाब होते हैं (तफ़सीर कबीर) (फ़ा76) हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत शाने नुज़ूलः यह आयत क़दरियों की रद में नाज़िल हुई जो क़ुदरते इलाही के मुन्किर हैं और हवादिस को कवाकिब वग़ैरह की तरफ़ मन्सूब करते हैं। मसाइल अहादीस में उन्हें इस उम्मत का मजूस फ़रमाया गया और उनके पास बैठने और उनके साथ कलाम शुरू करने और वह बीमार हो जायें तो उनकी अ़यादत करने और मर जायें तो उनके जनाज़े में शरीक होने की मुमानअ़त फ़रमाई गई और उन्हें दज्जाल का साथी फ़रमाया गया वह बदतरीन ख़ल्क़ हैं। (फ़ा77) जिस चीज़ के पैदा करने का इरादा हो वह हुक्म के साथ ही हो जाती है। (फ़ा78) कुफ़्फ़ार पहली उम्मतों के। (फ़ा79) जो इबरत हासिल करें और पन्द पज़ीर हों (फ़ा80) यानी बन्दों के तमाम अफ़आ़ल हाफ़िज़े आमाल फ़रिश्तों के नविश्तों में हैं (फ़ा81) लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा82) यानी उसकी बारगाह के मुक़र्रब हैं।

(बक़िया सफ़हा 847 का) या यह माना हैं कि हम अपनी ख़ल्क़ पर रिज़्क़ वसीअ़ करने वाले हैं। (फ़ा53) मिस्ल आसमान और ज़मीन और सूरज और चांद और रात और दिन और ख़ुश्की व तरी और गर्मी व सर्दी और जिन्न व इन्स और रौशनी व तारीकी और कुफ़्र व ईमान और सआ़दत व शक़ावत और हक़ व बातिल और नर व मादा के। (फ़ा54) और समझो कि इन तमाम जोड़ों का पैदा करने वाला फ़र्दे वाहिद है न उसका नज़ीर है न शरीक न ज़िद न निद वही मुस्तहिक़े इबादत है। (फ़ा55) उसके मा-सिवा को छोड़ कर उसकी इबादत इख़्तियार करो। (फ़ा56) जैसे कि उन कुफ़्फ़ार ने आपकी तकज़ीब की और आपको साहिर व मजनून कहा ऐसे ही। (फ़ा57) यानी पहले कुफ़्फ़ार ने अपने पिछलों को यह वसीयत तो नहीं की कि तुम अम्बिया की तकज़ीब करना और उनकी शान में इस तरह की बातें बनाना लेकिन चूंकि सरकशी और तुग़ियान की इल्लत दोनों में है इस लिए गुमराही में एक दूसरे के मुवाफ़िक़ रहे। (फ़ा58) क्योंकि आप रिसालत की तबलीग़ फ़रमा चुके और दावत व इरशाद में जहदे बलीग़ सर्फ़ कर चुके और आपने अपनी सई में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा शाने नुज़ूलः जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़मगीन हुए और आपके असहाब को बहुत रन्ज हुआ कि जब रसूल अ़लैहिस्सलाम को एअ़राज़ करने का हुक्म हो गया तो अब वही क्यों आएगी और जब नबी ने उम्मत को तबलीग़ बतरीक़े अतम फ़रमा दी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उनसे एअ़राज़ का हुक्म मिल गया तो वक़्त आ गया कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हो इस पर वह आयते करीमा नाज़िल हुई जो इस आयत के बाद है और इसमें तस्कीन दी गई कि सिलसिलए वही मुन्क़तअ़ नहीं हुआ है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नसीहत सआ़दतमन्दों के लिए जारी रहेगी चुनान्चे इरशाद हुआ। (फ़ा59) और मेरी मअ़रेफ़त हो। (फ़ा60) कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी ख़ुद पैदा करें क्योंकि रज़्ज़ाक़ मैं हूं और सब की रोज़ी का मैं ही कफ़ील हूं (फ़ा61) मेरी ख़ल्क़ के लिए (फ़ा62) सब को वही देता वही पालता है। (फ़ा63) जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करके अपनी जानों पर ज़ुल्म किया (फ़ा64) हिस्सा है नसीब है (फ़ा65) यानी उममे साबिक़ा के कुफ़्फ़ार के लिए जो अम्बिया की तकज़ीब में उनके साथी थे उनका अ़ज़ाब व हलाक में हिस्सा था। (फ़ा66) अ़ज़ाब नाज़िल करने की। (फ़ा67) और वह रोज़े क़ियामत है।

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ

اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ وَالْحَبُّ

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ

सूरतुर्-रह़मानि

(मक्की है इसमें 78 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

अर्रह़्मानु(1)अ़ल्ल-मल् कुरआन(2)ख़-ल-क़ल् इन्सा-न(3)अ़ल्ल-महुल् बयान(4)अश्शम्सु वल्क़-मरु बिहुस्बानिंव्(5)वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान(6)वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल् मीज़ान (7)अल्ला त़त़्ग़ौ फ़िल्मीज़ान(8)व अक़ीमुल् वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल् मीज़ान(9)वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल्-अनामि(10)फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव् वन्नख़्लु ज़ातुल् अक्मामि(11)वल्ह़ब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ि वर्-रैहान(12)फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(13)ख़-ल-क़ल् इन्सा-न मिन् स़ल्स़ालिन् कल्फ़ख़्ख़ारि(14)व ख़-ल-क़ल् जान्-न मिम् मारिजिम् मिन् नार(15) फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(16)रब्बुल्-मश्रिक़ैनि व रब्बुल् मग़्रिबैनि(17)फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(18) म-र-जल्-बह़्रैनियल्तक़ियान(19)बै-नहुमा बर्ज़ख़ुल् ला यब्ग़ियान(20)फ़बि-अय्यि आलाइ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

रह़मान ने।(1) अपने महबूब को क़ुरआन सिखाया।(2) (फ़ा2) इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया।(3) मा का-न व मा यकून का बयान उन्हें सिखाया।(4) (फ़ा3) सूरज और चाँद हिसाब से हैं।(5) (फ़ा4) और सब्ज़े और पेड़ सज्दा करते हैं।(6) (फ़ा5) और आसमान को अल्लाह ने बुलन्द किया (फ़ा6) और तराजू रखी।(7) (फ़ा7) कि तराजू में बे एतेदाली न करो।(8) (फ़ा8) और इन्साफ़ के साथ तौल क़ाइम करो और वज़न न घटाओ।(9) और ज़मीन रखी मख़्लूक़ के लिए।(10) (फ़ा9) उसमें मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरें।(11) (फ़ा10) और भुस के साथ अनाज (फ़ा11) और ख़ुश्बू के फूल।(12) तो ऐ जिन्न व इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी निअ़मत झुठलाओगे।(13) (फ़ा12) उसने आदमी को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठीकरी।(14) (फ़ा13) और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के लोके से।(15) (फ़ा14) तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी निअ़मत झुठलाओगे।(16) दोनों पूरब का रब और दोनों पच्छिम का रब।(17) (फ़ा15) तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी निअ़मत झुठलाओगे।(18) उसने दो समुन्दर बहाए (फ़ा16) कि देखने में मालूम हों मिले हुए।(19) (फ़ा17) और है उनमें रोक (फ़ा18) कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता।(20) (फ़ा19) तो अपने रब की

(फ़ा1) सूरह रह़्मान मक्की है इसमें तीन रुकूअ़ और छिहत्तर या अठहत्तर आयतें 351 कलिमे और 1636 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः जब आयत उस्जुदू लिर्रह़्मानि नाज़िल हुई कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा रहमान क्या है हम नहीं जानते इस पर अल्लाह तआला ने अर्रह़्मान नाज़िल फ़रमाई कि रह़मान जिसका तुम इन्कार करते हो वही है जिसने क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया और एक क़ौल यह है कि अहले मक्का ने जब कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को कोई बशर सिखाता है तो यह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया कि रह़मान ने क़ुरआन अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सिखाया (ख़ाज़िन)। (फ़ा3) इन्सान से इस आयत में सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं और बयान से *मा का-न व मा यकू-न* का बयान क्योंकि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बर देते थे (ख़ाज़िन) (फ़ा4) कि तक़दीरे मुअ़य्यन के साथ अपने बुरूज व मनाज़िल में सैर करते हैं और उसमें ख़ल्क़ के लिए मुनाफ़ेअ़ हैं औक़ात के हिसाब सालों और महीनों की शुमार उन्हीं पर है (फ़ा5) हुक्मे इलाही के मुतीअ़ हैं **(बक़िया सफ़हा 878 पर)**

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ

اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ

نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(21)यख़्रुजु मिन्हुमल् लुअ्लुउ वल्–मर्जानु(22)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(23)व लहुल् जवारिल् मुन्शआतु फ़िल्बह़्रि कल्–अअ्लामि(24) फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(25)कुल्लु मन अ़लैहा फ़ानिंव्(26)व यब्क़ा वज्हु रब्बि–क ज़ुल्जलालि वल्–इक्रामि(27)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(28)यस्–अलुहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि कुल्–ल यौमिन् हु–व फ़ी शअ्निन्(29)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(30)स– नफ़्रुग़ु लकुम् अय्युहस्स–क़लानि(31)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(32)या मअ्श–रल् जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त–तअ्तुम् अन् तन्फ़ुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू ला तन्फ़ुज़ू–न इल्ला बिसुल्तान(33)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(34)युर्सलु अ़लैकुमा शुवाज़ुम् मिन्नारिंव् व नुहासुन् फ़ला तन्तसिरानि(35)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(36) फ़–इज़न् शक़्क़तिस् समाउ फ़कानत् वर्द–तन् कद्दिहानि(37)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(38) फ़यौ–मइज़िल्

कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(21) उनमें से मोती और मूंगा निकलता है।(22) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(23) और उसी की हैं वह चलने वालियां कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़।(24) (फ़ा20) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(25) (रुकूअ़ 11) ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है।(26) (फ़ा21) और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला।(27) (फ़ा22) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(28) उसी के मंगता हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं (फ़ा23) उसे हर दिन एक काम है।(29) (फ़ा24) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(30) जल्द सब काम निबटा कर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गरोह।(31) (फ़ा25) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(32) ऐ जिन्न व इन्सान के गरोह अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्तनत है।(33) (फ़ा26) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(34) तुम पर (फ़ा27) छोड़ी जाएगी बे धुयें की आग की लपट और बे-लपट का काला धुआं (फ़ा28) तो फिर बदला न ले सकोगे।(35) (फ़ा29) तो अपने रब की कौनसी निअ्मत झुठलाओगे।(36) फिर जब आसमान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा (फ़ा30) जैसे सुर्ख़ नरी।(37) तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुठलाओगे।(38) तो उस दिन (फ़ा31)

(फ़ा20) जिन चीज़ों से वह कश्तियां बनाई गईं वह भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा कीं और उनको तरकीब देने और क़श्ती बनाने और सन्नाई करने की अ़क़्ल भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा की और दरियाओं में उन कश्तियों का चलना और तैरना यह सब अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से है। (फ़ा21) हर जानदार वग़ैरह हलाक होने वाला है। (फ़ा22) कि वह ख़ल्क़ के फ़ना के बाद उन्हें ज़िन्दा करेगा और अबदी हयात अ़ता फ़रमाएगा और ईमानदारों पर लुत्फ़ व करम करेगा। (फ़ा23) फ़रिश्ते हों या जिन्न या इन्सान या और कोई मख़्लूक़ कोई भी उससे बेनियाज़ नहीं सब उसके फ़ज़्ल के मुहताज हैं और ज़बाने हाल व क़ाल से उसके हुज़ूर साइल। (फ़ा24) यानी वह हर वक़्त अपनी क़ुदरत के आसार ज़ाहिर फ़रमाता है किसी को रोज़ी देता है किसी को मारता है किसी को जिलाता है किसी को इज़्ज़त देता है किसी को ज़िल्लत किसी को ग़नी करता है किसी को मुहताज किसी के गुनाह बख़्शता है किसी की तकलीफ़ रफ़अ़ करता है। शाने नुज़ूलः कहा गया है कि यह आयत यहूद के **(बक़िया सफ़हा 878 पर)**

لَا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۝٣٩ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٠ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ۝٤١ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٢ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٤٣ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۝٤٤ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٥ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ
رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝٤٦ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٧ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۝٤٨ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٩ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۝٥٠ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝٥١ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۝٥٢ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٣ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝٥٤
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٥ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝٥٦ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٧ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ

ला युस्–अलु अन् ज़म्बिही इन्सुंव् व ला जान्नुन्(39)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(40) युअ्–रफुल् मुज्रिमू–न बिसीमाहुम् फ़युअ्–ख़ज़ु बिन्नवासी वल्–अक़्दामि(41)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(42)हाज़िही ज–हन्नमुल्–लती यु–कज़्ज़िबु बिहल् मुज्रिमून(43)यतूफ़ू–न बै–नहा व बै–न हमीमिन् आन(44)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(45)व लिमन् ख़ा–फ़ मक़ा–म रब्बिही जन्नतान(46)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(47)ज़वाता अफ़्नानिन्(48) फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(49)फ़ीहिमा अ़ैनानि तज्रियान(50)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज्जिबान(51)फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फ़ाकि–हतिन् ज़ौजानि(52)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(53)मुत्तकिई–न अ़ला फ़ुरुशिम् बत़ाइनुहा मिन् इस्तब्–रक़िन् व ज–नल्जन्नतैनि दान(54)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(55)फ़ीहिन्–न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत्मिस्हुन्–न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न(56)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(57)क–अन्नहुन्नल् याक़ूतु

गुनहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से।(39) (फ़ा32) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे। (40) मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जायेंगे (फ़ा33) तो माथा और पाँव पकड़ कर जहन्नम में डाले जायेंगे।(41) (फ़ा34) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(42) (फ़ा35) यह है वह जहन्नम जिसे मुजरिम झुठलाते हैं।(43) फेरे करेंगे उसमें और इन्तेहा के जलते खौलते पानी में।(44) (फ़ा36) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(45) (रुकूअ़ 12) और जो अपने रब के हुजूर खड़े होने से डरे (फ़ा37) उसके लिए दो जन्नतें हैं।(46) (फ़ा38) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(47) बहुत सी डालों वालियां।(48) (फ़ा39) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(49) उन में दो चश्मे बहते हैं।(50) (फ़ा40) तो अपने रब की कौन सी नेअ़्मत झुठलाओगे।(51) उन में हर मेवा दो दो किस्म का।(52) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(53) वेज़ ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए जिनका अस्तर क़नादीज़ का (फ़ा41) और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो।(54) (फ़ा42) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(55) उन बिछौनों पर वह औ़रतें हैं कि शौहर के सिवा किसी को आँख उठा कर नहीं देखतीं (फ़ा43) उनसे पहले उन्हें न छुआ किसी आदमी और न जिन्न ने।(56) तो अपने रब की कौन सी नेअ़्मत झुठलाओगे।(57) गोया वह लअ़्ल और मूंगा

(फ़ा32) उस रोज़ मलाइका मुजरिमीन से दरियाफ़्त न करेंगे उन की सूरतें ही देख कर पहचान लेंगे और सवाल दूसरे वक़्त होगा जबकि लोग मौक़फ़ में जमा होंगे। (फ़ा33) कि उनके मुंह काले और आंखें नीली होंगी। (फ़ा34) पाँव पीठ के पीछे से लाकर पेशानियों से मिला दिये जायेंगे और घसीट कर जहन्नम में डाले जायेंगे और यह भी कहा गया है कि बाज़े पेशानी से घसीटे जायेंगे बाज़े पाँव से (फ़ा35) और उनसे कहा जाएगा (फ़ा36) कि जब जहन्नम की आग से जल भुन कर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें जलता खौलता पानी पिलाया जाएगा और उसके अ़ज़ाब में मुब्तला किये जायेंगे ख़ुदा की नाफ़रमानी के इस अन्जाम से आगाह फ़रमा देना अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत है। (फ़ा37) यानी जिसे अपने रब के हुज़ूर रोज़े क़ियामत मौक़फ़ में हिसाब के लिए खड़े होने का डर हो और वह मआ़सी तर्क करे और फ़राइज़ बजा लाये। (फ़ा38) जन्नते अ़दन और जन्नते नईम और यह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिला और एक शह्वात तर्क करने का सिला। (फ़ा39) और हर डाली में किस्म किस्म के मेवे। (फ़ा40) एक आबे शीरीं का और एक शराब पाक का या एक तस्नीम दूसरा सलसबील। (फ़ा41) यानी संगीन रेशम का जब अस्तर का यह हाल है तो अबरा कैसा होगा सुबहानल्लाह। (फ़ा42) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि दरख़्त इतना करीब होगा कि अल्लाह तआ़ला के पयारे खड़े (बक़िया सफ़हा 848 पर)

وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُدْهَآمَّتٰنِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِیْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِیْهِنَّ خَیْرٰتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

वल्मर्जान(58)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(59)हल् जज़ाउल् इह्सानि इल्लल् इह्सानु(60)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(61)व मिन् दूनिहिमा जन्नतानि(62) फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(63)मुद्हाम्मतानि(64)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(65)फ़ीहिमा ऐनानि नज़्ज़ा–ख़तानि(66)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (67)फ़ीहिमा फ़ाकि–हतुंव् व नख़्लुंव् व रुम्मान(68)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(69) फ़ीहिन्–न ख़ैरातुन् हिसान(70)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(71)हूरुम् मक़्सूरातुन् फ़िल् ख़ियाम(72)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(73)लम् यत्मिस्हुन्–न इन्सुन् क़ब्–लहुम् व ला जान्न(74)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(75)मुत्तकिई–न अ़ला रफ़्–रफ़िन् ख़ुज़्रिंव् व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान(76)फ़बि–अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(77)तबा–र–कस्मु रब्बि–क ज़िल्जलालि वल्इक्राम(78)

और मूंगा हैं।(58) (फ़ा44) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(59) नेकी का बदला क्या है मगर नेकी।(60) (फ़ा45) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(61) और उनके सिवा दो जन्नतें और हैं(62) (फ़ा46) तो अपने रब की कौन सी निअ़्मत झुठलाओगे।(63) निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही हैं।(64) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(65) उन में दो चश्मे हैं छलकते हुए।(66) तो अपने रब की कौनसी नेअ़्मत झुठलाओगे।(67) उनमें मेवे और खजूरें और अनार हैं।(68) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(69) उनमें औरतें हैं आ़दत की नेक सूरत की अच्छी।(70)तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(71) हूरें हैं ख़ेमों में पर्दा नशीन।(72) (फ़ा47) तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(73)उनसे पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने।(74)तो अपने रब की कौनसी निअ़्मत झुठलाओगे।(75) (फ़ा48) तकिया लगाए हुए सब्ज़ बिछौनों और मुनक़्क़श ख़ूबसूरत चाँदनियों पर।(76) तो अपने रब की कौन सी निअ़्मत झुठलाओगे।(77) बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला।(78) (रुकूअ़ 13)

(फ़ा44) सफ़ाई और ख़ुशरंगी में। हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती हूरों के सफ़ाए अबदान का यह आ़लम है कि उनकी पिन्डली का मग़्ज़ इस तरह नज़र आता है जिस तरह आबगीना की सुराही में शराबे सुर्ख़। (फ़ा45) यानी जिसने दुनिया में नेकी की उसकी जज़ा आख़रत में एहसाने इलाही है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जो ला इला–ह इल्लल्लाहु का क़ाइल हो और शरीअ़ते मुहम्मदिया पर आ़मिल उसकी जज़ा जन्नत है। (फ़ा46) हदीस शरीफ़ में है कि दो जन्नतें तो ऐसी हैं जिनके ज़ुरूफ़ और सामान चाँदी के हैं और दो जन्नतें ऐसी कि जिनके ज़ुरूफ़ व अस्बाब सोने के और एक क़ौल यह भी है कि पहली दो जन्नतें सोने और चांदी की और दूसरी याक़ूत व ज़बुरजद की। (फ़ा47) कि उन ख़ेमों से बाहर नहीं निकलतीं यह उनकी शराफ़त व करामत है। हदीस शरीफ़ में है कि अगर जन्नती औरतों में से ज़मीन की तरफ़ किसी एक की झलक पड़ जाये तो आसमान ज़मीन के दर्मियान की तमाम फ़ज़ा रौशन हो जाये और ख़ुश्बू से भर जाए और उनके ख़ेमे मोती और ज़बुरजद के होंगे। (फ़ा48) और उनके शौहर जन्नत में ऐश करेंगे।

(बक़िया सफ़हा 869 का) इतना ही रोना और उतरने वाले हक़ से मुराद क़ुरआन मजीद है। (फ़ा48) यानी यहूद व नसारा के तरीक़े इख़्तियार न करें। (फ़ा49) यानी वह ज़माना जो उनके और उनके अम्बिया के दर्मियान था। (फ़ा50) और यादे इलाही के लिए नर्म न हुए दुनिया की तरफ़ माइल हो गए और मवायज़ से उन्होंने एअ़्राज़ किया।

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝

أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝

सूरतुल् वाकिअति

(मक्की है इसमें 96 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा व क़–अतिल् वाकि–अतु(1)लै–स लि–वक्अतिहा काज़ि–बतुन्(2)ख़ाफ़ि–ज़तुर्राफ़िअतुन्(3)इज़ा रुज्जतिलअर्ज़ु रज्जंव्(4)व बुस्सतिल्जिबालु बस्सन्(5)फ़कानत् हबाअम् मुम्बस्संव्(6)व कुन्तुम् अज़्वाजन् सला–स(7)फ़–अस्हाबुल् मै–मनति मा अस्हाबुल् मै–मनः(8)व अस्हाबुल् मश्–अ–मति मा अस्हाबुल् मश्–अ–मः(9)वस्साबिकू–नस्साबिकून(10)उलाइ–कल् मुक़र्रबून(11)फ़ी जन्नातिन् नअ़ीम(12)सुल्लतुम् मिनल् अव्वलीन(13)व क़लीलुम् मिनल्आख़िरीन (14)अ़ला सुरुरिम् मौज़ू–नतिम्(15)मुत्तकिई–न अ़लैहा मु–तक़ाबिलीन(16)यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम् मु–ख़ल्लदून(17)बि–अक्वाबिंव् व अबारी–क़ व कअ्सिम् मिम् मअ़ीनिल्(18)ला यु–सद्दअू–न अ़न्हा वला युन्ज़िफ़ून(19)व फ़ाकि–हतिम् मिम्मा य–तख़य्यरून(20)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब हो लेगी वह होने वाली।(1) (फ़ा2) उस वक़्त उसके होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी।(2) किसी को पस्त करने वाली (फ़ा3) किसी को बुलन्दी देने वाली।(3) (फ़ा4) जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर।(4) (फ़ा5) और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जायेंगे चूरा होकर तो हो जायेंगे।(5) जैसे रोज़न की धूप में गुबार के बारीक ज़र्रे फैले हुए।(6) और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे।(7) तो दाहिनी तरफ़ वाले (फ़ा6) कैसे दाहिनी तरफ़ वाले।(8) (फ़ा7) और बाईं तरफ़ वाले (फ़ा8) कैसे बाईं तरफ़ वाले।(9) (फ़ा9) और जो सबक़त ले गए (फ़ा10) वह तो सबक़त ही ले गए।(10) (फ़ा11) वही मुक़र्रब बारगाह है।(11) चैन के बाग़ों में।(12) अगलों में से एक गरोह।(13) और पिछलों में से थोड़े।(14) (फ़ा12) जड़ाव तख़्तों पर होंगे।(15) (फ़ा13) उन पर तकिया लगाए हुए आमने सामने।(16) (फ़ा14) उनके गिर्द लिए फिरेंगे (फ़ा15) हमेशा रहने वाले लड़के।(17) (फ़ा16) कूज़े और आफ़ताबे और जाम और आंखों के सामने बहती शराब कि उससे न उन्हें दर्दे सर हो।(18) और न होश में फ़र्क़ आए।(19) (फ़ा17) और मेवे जो पसन्द करें।(20)

(फ़ा1) सूरह वाक़िआ मक्की है सिवाए आयत अ-फ बिहाज़ल्-हदीसि और आयत *सुल्-लतुम्-मिनल् अव्वलीन* के इस सूरत में तीन रुकूअ़ और छियानवे या सत्तानवे या निन्नानवे आयतें और 378 कलिमे और 1703 हरफ़ हैं इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरह वाक़िआ को हर शब पढ़े वह फ़ाक़ा से हमेशा महफ़ूज़ रहेगा (ख़ाज़िन) (फ़ा2) यानी जब क़ियामत क़ायम हो जो ज़रूर होने वाली है। (फ़ा3) जहन्नम में गिरा कर। (फ़ा4) दुख़ूले जन्नत के साथ हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया में ऊँचे थे क़ियामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुनिया में पस्ती में थे उनके मर्तबे बुलन्द करेगी और यह भी कहा गया है कि अहले मअ़सियत को पस्त करेगी और अहले ताअ़त को बुलन्द। (फ़ा5) हत्ता कि उसकी तमाम इमारतें गिर जायेंगी। (फ़ा6) यानी जिनके नामए आमाल उनके दाहिने हाथों में दिये जायेंगे (फ़ा7) यह उनकी ताज़ीमे शान के लिए फ़रमाया वह बड़ी शान रखते हैं सईद हैं जन्नत में दाख़िल होंगे। (फ़ा8) जिनके नमाहाए आमाल बायें हाथों में दिये जायेंगे। (फ़ा9) यह उनकी तहक़ीरे शान के लिए फ़रमाया कि वह शक़ी हैं जहन्नम में दाख़िल होंगे (फ़ा10) नेकियों में (फ़ा11) दुख़ूले जन्नत में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह हिजरत में सबक़त करने वाले हैं कि आख़िरत में जन्नत की तरफ़ सबक़त करेंगे एक क़ौल यह **(बक़िया सफ़हा 878 पर)**

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝ وَحُورٌ عِينٌ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝ جَزَاءًۢ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۝ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۝ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۝

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝ لِّأَصْحَابِ

الْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝ وَظِلٍّ مِّن

يَحْمُومٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝ وَكَانُوا يَقُولُونَ أَئِذَا

व लह़्मि तैरिम् मिम्मा यश्तहून(21)व हूरुन् ई़नुन्(22)कअम्सालिल् लुअ्लुइल् मक्नून(23)जज़ाअम् बिमा कानू यअ्मलून(24)ला यस्मऊ-न फ़ीहा लग्वंव् व ला तअ्सीमा(25)इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (26)व अस्ह़ाबुल् यमीनि मा अस्ह़ाबुल् यमीन(27)फ़ी सिद्रिम् मख़्ज़ूदिंव्(28)व त़ल्ह़िम् मन्ज़ूदिंव्(29)व ज़िल्लिम् मम्दूदिंव्-(30)व माइम् मस्कूबिंव्-(31)व फ़ाकि-हतिन् कसी-रतिल्(32) ला मक़्तू-अ़तिंव् व ला मम्नू-अ़तिंव्(33)व फ़ुरुशिम् मर्फ़ूअ़ः(34)इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शाअन्(35) फ़-ज-अ़ल्नाहुन्-न अब्कारन्(36)अ़ुरुबन् अत्राबल्(37)लिअस्ह़ाबिल् यमीन(38)सुल्लतुम् मिनल् अव्वलीन(39) व सुल्लतुम् मिनल् आख़िरीन(40)व अस्ह़ाबुश् शिमालि मा अस्ह़ाबुश् शिमाल(41)फ़ी समूमिंव् व ह़मीमिंव्(42)व ज़िल्लिम् मिंय्यह़्मूमिल्(43)ला बारिदिंव् व ला करीम(44)इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुत्-रफ़ीन(45)व कानू युसिर्रू-न अ़लल्ह़िन्सिल् अ़ज़ीम(46)व कानू यक़ूलू-न अ-इज़ा

और परिन्दों का गोश्त जो चाहें।(21) (फ़ा18) और बड़ी आँख वालियां हूरें।(22) (फ़ा19) जैसे छुपे रखे हुए मोती।(23) (फ़ा20) सिला उनके आमाल का।(24) (फ़ा21) उसमें न सुनेंगे न कोई बेकार बात न गुनहगारी।(25) (फ़ा22) हां यह कहना होगा सलाम सलाम।(26) (फ़ा23) और दाहिनी तरफ़ वाले कैसे दाहिनी तरफ़ वाले।(27) (फ़ा24) बे कांटों की बेरियों में।(28) और केले के गुच्छों में।(29) (फ़ा25) और हमेशा के साए में।(30) और हमेशा जारी पानी में।(31) और बहुत से मेवों में।(32) जो न ख़त्म हों (फ़ा26) और न रोके जायें।(33) (फ़ा27) और बुलन्द बिछौनों में।(34) (फ़ा28) बेशक हमने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया।(35) तो उन्हें बनाया कुंवारियां। अपने शौहरों पर प्यारियां उन्हें प्यार दिलातियां(36) एक उम्र वालियां।(37) (फ़ा29) दाहिनी तरफ़ वालों के लिए।(38) (रुकूअ़ 14) अगलों में से एक गरोह।(39) और पिछलों में से एक गरोह।(40) (फ़ा30) और बाईं तरफ़ वाले (फ़ा31) कैसे बाईं तरफ़ वाले।(41) (फ़ा32) जलती हवा और खौलते पानी में।(42) और जलते धुयें की छाँव में।(43) (फ़ा33) जो न ठन्डी न इ़ज़्ज़त की।(44) बेशक वह इससे पहले (फ़ा34) नेअ़मतों में थे।(45) और इस बड़े गुनाह की (फ़ा35) हट रखते थे।(46) और कहते थे क्या जब हम मर जायें

(फ़ा18) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अगर जन्नती को परिन्दों के गोश्त की ख़्वाहिश होगी तो उसके हस्बे मर्ज़ी परिन्द उड़ता हुआ सामने आएगा और रकाबी में आकर सामने पेश होगा उसमें से जितना चाहेगा जन्नती खाएगा फिर वह उड़ जाएगा (ख़ाज़िन) (फ़ा19) उनके लिए होंगी (फ़ा20) यानी जैसा मोती सदफ़ में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुआ न धूप और हवा लगी उसकी सफ़ाई अपनी निहायत पर है इस तरह वह हूरें अछूती होंगी यह भी मरवी है कि हूरों के तबस्सुम से जन्नत में नूर चमकेगा और जब वह चलेंगी तो उनके हाथों और पाँव के ज़ेवरों से तक़्दीस व तमजीद की आवाज़ें आयेंगी और याक़ूती हार उनके गर्दनों के हुस्न व ख़ूबी से हंसेंगे। (फ़ा21) कि दुनिया में उन्होंने फ़रमांबरदारी की। (फ़ा22) यानी जन्नत में कोई नागवार और बातिल बात सुनने में न आएगी। (फ़ा23) जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे मलाइका अहले जन्नत को सलाम करेंगे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की तरफ़ से उनकी तरफ़ सलाम आएगा यह हाल तो साबिक़ीन मुक़र्रबीन का था इसके बाद जन्नतियों के दूसरे गरोह असहाबे यमीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है (फ़ा24) उनकी अ़जीब शान है कि अल्लाह के हुज़ूर में मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम हैं। (फ़ा25) जिनके दरख़्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे। (फ़ा26) जब कोई फल तोड़ा जाए फ़ौरन उसकी जगह वैसे ही दो मौजूद। (फ़ा27) अहले जन्नत फलों के लेने से। (फ़ा28) जो मुरस्सअ़ ऊँचे ऊँचे तख़्तों पर होंगे और यह भी कहा गया है कि बिछौनों से मुराद औरतें हैं इस तक़्दीर पर **(बक़िया सफ़हा 878 पर)**

مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿47﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿48﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿49﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ﴿50﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿51﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿52﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿53﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ
الْحَمِيْمِ ﴿54﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿55﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿56﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿57﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿58﴾ ءَاَنْتُمْ
تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿59﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿60﴾ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿61﴾
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿62﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿63﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿64﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

मित्ना व कुन्ना तुराबंव् व अ़िज़ामन् अ–इन्ना ल–मब्अूसून(47)अ–व आबाउनल् अव्वलून(48)कुल् इन्नल्–अव्वली–न वल्आख़िरी–न(49)ल–मज्मूअू–न इला मीक़ाति यौमिम् मअ्लूम(50)सुम्–म इन्नकुम् अय्यु–हज़्ज़ाल्लू–नल् मुकज़्ज़िबून(51)लआकिलू–न मिन् श–जरिम् मिन् ज़क़्क़ूम(52) फ़मालिऊ–न मिन्हल्बुतून (53)फ़शारिबू–न अ़लैहि मिनल् हमीमि(54)फ़शारिबू–न शुर्बल्हीम्(55) हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन(56)नह्नु ख़–लक़्नाकुम् फ़लौला तुसद्दिकून(57)अ–फ़–रऐतुम् मा तुम्नून(58)अ–अन्तुम् तख़्लुकू–नहू अम् नह्नुल् ख़ालिकून(59)नह्नु क़द्–दर्ना बै–नकुमुल्मौ–त व मा नह्नु बि–मस्बूक़ीन(60)अ़ला अन् नुबद्दि–ल अम्सा–लकुम् व नुन्शि–अकुम् फ़ी मा ला तअ्–लमून(61)व ल–क़द् अ़लिम्तुमुन् नश्अ–तल् ऊला फ़लौला त–ज़क्करून(62)अ–फ़– रऐतुम् मा तह्रुसून(63)अ–अन्तुम् तज़्–रअू–नहू अम् नह्नुज़्ज़ारिअून(64)लौ नशाउ ल–ज–अ़ल्नाहु हुतामन्

और हड्डियां और मिट्टी हो जायें तो क्या ज़रूर हम उठाए जायेंगे।(47) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी।(48) तुम फ़रमाओ बेशक सब अगले और पिछले।(49) ज़रूर इकट्ठे किये जायेंगे एक जाने हुए दिन की मीआ़द पर।(50) (फ़ा36) फिर बेशक तुम ऐ गुमराहो (फ़ा37) झुठलाने वालो।(51) ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे।(52) फिर उससे पेट भरोगे।(53) फिर उस पर खौलता पानी पियोगे।(54) फिर ऐसा पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊँट पियें।(55) (फ़ा38)यह उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन।(56) हम ने तुम्हें पैदा किया (फ़ा39) तो तुम क्यों नहीं सच मानते।(57) (फ़ा40) तो भला देखो तो वह मनी जो गिराते हो।(58) (फ़ा41) क्या तुम उसका आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।(59) (फ़ा42) हमने तुम में मरना ठहराया (फ़ा43) और हम उससे हारे नहीं।(60) कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वह कर दें जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।(61) (फ़ा44) और बेशक तुम जान चुके हो पहली उठान (फ़ा45) फिर क्यों नहीं सोचते।(62) (फ़ा46) तो भला बताओ तो जो बोते हो।(63) क्या तुम उसकी खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।(64) (फ़ा47) हम चाहें तो (फ़ा48) उसे रौंदन कर दें (फ़ा49)

(फ़ा36) वह रोज़े क़ियामत है। (फ़ा37) राहे हक़ से बहकने वालो और हक़ को। (फ़ा38) उनपर ऐसी भूख मुसल्लत की जाएगी कि वह मुज़्तर होकर जहन्नम का जलता थूहड़ खायेंगे फिर जब उससे पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत की जाएगी जिससे मुज़्तर होकर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आंतें काट डालेगा। (फ़ा39) नेस्त से हस्त किया। (फ़ा40) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को (फ़ा41) औरतों के रेह्म में। (फ़ा42) कि नुत्फ़ा को सूरते इन्सानी देते हैं ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाते हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना हमारी क़ुदरत से क्या बईद। (फ़ा43) हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत व मशीयत और उम्रें मुख़्तलिफ़ रखीं कोई बचपन ही में मर जाता है कोई जवान होकर कोई अधेड़ उम्र में कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है जो हम मुक़द्दर करते हैं वही होता है। (फ़ा44) यानी मस्ख़ करके बन्दर सूअर वग़ैरह की सूरत बना दें यह सब हमारी क़ुदरत में है। (फ़ा45) कि हमने तुम्हें नेस्त से हस्त किया (फ़ा46) कि जो नेस्त को हस्त कर सकता है वह बिलयक़ीन मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। (फ़ा47) इसमें शक़ नहीं कि बालें बनाना और उसमें दाने पैदा करना अल्लाह तआ़ला ही का काम है और किसी का नहीं। (फ़ा48) जो तुम बोते हो। (फ़ा49) खुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम की न रहे।

(बक़िया सफ़हा 870 का) दुनिया की कामयाबी आख़रत का ज़रीआ़ है हज़रत ज़ुन्नून रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ऐ गरोहे मुरीदीन दुनिया तलब न करो और अगर तलब करो तो उससे मुहब्बत न करो तोशा यहां से लो आरामगाह और है

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾ أَفَرَءَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَا

फ़–ज़ल्तुम् त–फ़क्कहून(65)इन्ना ल–मुग्रमून(66)बल् नह्नु मह्रूमून(67)अ–फ़–रऐतुमुल् माअल् लज़ी तश्–रबून(68)अ–अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्मुज़्नि अम् नह्नुल् मुन्ज़िलून(69)लौ नशाउ ज–अल्नाहु उजाजन् फ़लौला तश्कुरून(70)अ–फ़–रऐतुमुन् नारल्लती तूरून(71)अ–अन्तुम् अन्शअ्तुम् श–ज–र–तहा अम नह्नुल् मुन्शिऊन(72)नह्नु ज–अल्नाहा तज़्कि–र–तंव् व मताअल् लिल्मुक्वीन (73)फ़–सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल् अज़ीम(74)फ़ला उक्सिमु बि–मवाकिअिन् नुजूम(75)व इन्नहू ल–क्–समुल् लौ तअ्लमू–न अज़ीम(76)इन्नहू लकुरआनुन् करीम(77)फ़ी किताबिम् मक्नूनिल्(78) ला य–मस्सुहू इल्लल्–मुतह्–हरून(79)तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल् आ–लमीन(80)अ–फ़बिहाज़ल्–हदीसि अन्तुम् मुदहिनून(81)व तज्–अलू–न रिज़्–क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून(82)फ़लौला इज़ा ब–ल–ग़तिल्–हुल्कूम(83)व अन्तुम् ही–नइज़िन् तन्ज़ुरून(84)व नह्नु अक्–रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल् ला तुब्सिरून(85)फ़लौला

फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।(65) (फ़ा50) कि हम पर चट्टी पड़ी।(66) (फ़ा51) बल्कि हम बे नसीब रहे।(67) तो भला बताओ तो वह पानी जो पीते हो।(68) क्या तुमने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले।(69) (फ़ा52) हम चाहें तो उसे खारी कर दें (फ़ा53) फिर क्यों नहीं शुक्र करते।(70) (फ़ा54) तो भला बताओ तो वह आग जो तुम रौशन करते हो।(71) (फ़ा55) क्या तुमने उसका पेड़ पैदा किया (फ़ा56) या हम हैं पैदा करने वाले।(72) हमने उसे (फ़ा57) जहन्नम का यादगार बनाया (फ़ा58) और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाइदा।(73) (फ़ा59) तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो अपने अज़्मत वाले रब के नाम की।(74) (रुकूअ़ 15) तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहां तारे डूबते हैं।(75) (फ़ा60) और तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है।(76) बेशक यह इज़्ज़त वाला क़ुरआन है।(77) (फ़ा61) महफ़ूज़ नविश्ता में। (78) (फ़ा62) इसे न छूयें मगर बावुज़ू।(79) (फ़ा63) उतारा हुआ है सारे जहान के रब का।(80) तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते हो।(81) (फ़ा64) और अपना हिस्सा यह रखते हो कि झुठलाते हो।(82) (फ़ा65) फिर क्यों न हो जब जान गले तक पहुंचे।(83) और तुम (फ़ा66) उस वक़्त देख रहे हो।(84) और हम (फ़ा67) उसके ज़्यादा पास हैं तुमसे मगर तुम्हें निगाह नहीं।(85) (फ़ा68) तो क्यों

(फ़ा50) मुतहय्यर और नादिम व ग़मगीन। (फ़ा51) हमारा माल बेकार ज़ाया हो गया। (फ़ा52) अपनी क़ुदरते कामिला से। (फ़ा53) कि कोई पी न सके। (फ़ा54) अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत और उसके एहसान व करम का। (फ़ा55) दो तर लकड़ियों से जिनको ज़न्द व ज़न्दा कहते हैं उनके रगड़ने से आग निकलती है। (फ़ा56) मिर्ख़ व अफ़्फ़ार जिन से ज़न्द व ज़न्दा ली जाती है। (फ़ा57) यानी आग को। (फ़ा58) कि देखने वाला उसको देख कर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और अल्लाह तआ़ला से और उसके अ़ज़ाब से डरे। (फ़ा59) कि अपने सफ़रों में इससे नफ़ा उठाते हैं। (फ़ा60) कि वह मक़ाम हैं ज़ुहूरे क़ुदरत व जलाले इलाही के। (फ़ा61) जो सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाया गया क्योंकि यह कलामे इलाही और वहीए रब्बानी है। (फ़ा62) जिसमें तब्दील व तहरीफ़ मुमकिन नहीं (फ़ा63) **मसायल:** जिसको ग़ुस्ल की हाजत हो या जिसका वुज़ू न हो या हाएज़ा औरत या नफ़ास वाली इनमें से किसी को क़ुरआन मजीद का बग़ैर ग़िलाफ़ वग़ैरह किसी कपड़े के छूना जाइज़ नहीं बे वुज़ू को याद पर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है लेकिन बे ग़ुस्ल और हैज़ वाली को यह भी जाइज़ नहीं। (फ़ा64) और नहीं मानते (फ़ा65) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया वह बन्दा बड़े टोटे में है जिसका हिस्सा किताबुल्लाह की तकज़ीब हो। (फ़ा66) ऐ अहले मय्यत। (फ़ा67) अपने इल्म व क़ुदरत के साथ। (फ़ा68) तुम बसीरत नहीं रखते तुम नहीं जानते।

إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝٨٦ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝٨٧ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝٨٨ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝٨٩ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝٩٠ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝٩١ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّآلِّينَ ۝٩٢ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝٩٣ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝٩٤ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝٩٥ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝٩٦

इन् कुन्तुम् ग़ै–र मदीनीन(86)तर्जिअू–नहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(87)फ़–अम्मा इन् का–न मिनल्–मुक़र्रबीन (88)फ़रौहुंव् व रैहानुंव् व जन्नतु नअ़ीम(89)व अम्मा इन् का–न मिन् अस्हाबिल् यमीन(90)फ़–सलामुल् ल–क मिन् अस्हाबिल् यमीन(91)व अम्मा इन् का–न मिनल्–मुकज़्ज़िबीनज़्–ज़ाल्लीन(92)फ़नुज़ुलुम् मिन् हमीमिंव्(93)व तस्लि–यतु जहीम(94)इन्–न हाज़ा लहु–व हक़्क़ुल् यक़ीन(95)फ़–सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल् अ़ज़ीम(96)

न हुआ अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं।(86) (फ़ा69) कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो।(87) (फ़ा70) फिर वह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है।(88) (फ़ा71) तो राहत है और फूल (फ़ा72) और चैन के बाग़।(89) (फ़ा73) और अगर (फ़ा74) दाहिनी तरफ़ वालों से हो।(90) तो ऐ महबूब तुम पर सलाम हो दाहिनी तरफ़ वालों से।(91) (फ़ा75) और अगर (फ़ा76) झुठलाने वाले गुमराहों में से हो।(92) (फ़ा77) तो उसकी मेहमानी खौलता पानी।(93) और भड़कती आग में धंसाना।(94) (फ़ा78) यह बेशक आला दर्जा की यक़ीनी बात है।(95) तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो।(96) (फ़ा79) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा69) मरने के बाद उठ कर। (फ़ा70) कुफ़्फ़ार से फ़रमाया गया कि अगर ब-ख़्याल तुम्हारे मरने के बाद उठना और आमाल का हिसाब किया जाना और जज़ा देने वाला मअ़बूद यह कुछ भी न हो तो फिर क्या सबब है कि जब तुम्हारे प्यारों की रूह हलक़ में पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यों नहीं लाते और जब यह तुम्हारे इख़्तियार में नहीं तो समझो कि काम अल्लाह तआ़ला के इख़्तयार में है उसपर ईमान लाओ इसके बाद मख़्लूक़ के तबक़ात के अहवाल वक़्ते मौत और उनके दर्जात का बयान फ़रमाया। (फ़ा71) साबिक़ीन में से जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका तो उसके लिए। (फ़ा72) अबुल आ़लिया ने कहा कि मुक़र्रबीन से जो कोई दुनिया से मफ़ारक़त करता है उसके पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है उसकी ख़ुश्बू लेता है तब रूह क़ब्ज़ होती है। (फ़ा73) आख़रत में। (फ़ा74) मरने वाला। (फ़ा75) माना यह हैं कि ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आप उनका सलाम क़बूल फ़रमायें और उनके लिये ग़मगीन न हों वह अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से सलामत व महफ़ूज़ रहेंगे और आप उनको इसी हाल में देखेंगे जो आपको पसन्द हो (फ़ा76) मरने वाला। (फ़ा77) यानी अस्हाबे शिमाल में से। (फ़ा78) जहन्नम की और मरने वालों के अहवाल और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए। (फ़ा79) हदीस जब यह आयत नाज़िल हुई फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बि-कल्-अ़ज़ीम तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने रुकूअ़ में दाख़िल करो और जब सब्बिहिस्-म रब्बि-कल्-अअ़ला नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाख़िल करो (अबू दाऊद) मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीहात क़ुरआने करीम से माख़ूज़ हैं।

(बक़िया सफ़हा 855 का) क़ुरआन याद करने वाले की अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद होती है और इसका हिफ़्ज़ सहल व आसान फ़रमा देने ही का समरा है कि बच्चे तक इसको याद कर लेते हैं सिवाए इसके कोई मज़हबी किताब ऐसी नहीं जो याद की जाती हो और सुहूलत से याद हो जाती हो (फ़ा29) अपने नबी हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम को इस पर वह मुब्तलाए अ़ज़ाब किये गए। (फ़ा30) जो नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले आ चुके थे। (फ़ा31) बहुत तेज़ चलने वाली निहायत ठन्डी सख़्त सन्नाटे वाली (फ़ा32) हत्ता कि उनमें कोई न बचा सब हलाक हो गए और वह दिन महीने का पिछला बुध था (फ़ा33) अपने नबी हज़रत सालेह़ अ़लैहिस्सलाम की दावत का इंकार करके और उन पर ईमान न लाकर (फ़ा34) यानी हम बहुत से होकर एक आदमी के ताबेअ़ हो जायें हम ऐसा न करेंगे क्योंकि अगर ऐसा करें (फ़ा35) यह उन्होंने हज़रत सालेह़ अ़लैहिस्सलाम का कलाम लौटाया आपने उनसे फ़रमाया था कि अगर तुमने मेरा इत्तेबाअ़ न किया तो तुम गुमराह व बे अ़क़्ल हो (फ़ा36) यानी हज़रत सालेह़ अ़लैहिस्सलाम पर(फ़ा37)वही नाज़िल की गई और कोई हम में इस क़ाबिल ही न था। (फ़ा38) कि नबुव्वत का दावा करके बड़ा बनना चाहता है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है।(फ़ा39)जब अ़ज़ाब में मुब्तला किये जायेंगे (फ़ा40)यह उस पर फ़रमाया गया कि हज़रत सालेह़ अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने आप से यह कहा था कि आप पत्थर से एक नाक़ा निकाल दीजिये आपने उनके ईमान की शर्त करके यह बात मन्ज़ूर कर ली थी चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने नाक़ा भेजने का वादा फ़रमाया और हज़रत सालेह़ अ़लैहिस्सलाम से इरशाद किया। (फ़ा41) कि वह क्या करते हैं और उनके साथ क्या किया जाता है। (फ़ा42)उनकी ईज़ा पर। (फ़ा43)एक दिन उनका एक नाक़ा का। (फ़ा44) जो दिन नाक़ा का है उस दिन नाक़ा हाज़िर हो और जो दिन क़ौम का है उस दिन क़ौम पानी पर हाज़िर हो।(फ़ा45) यानी क़िदार बिन सालिफ़ को नाक़ा के क़त्ल करने के लिए (फ़ा46) तेज़ तलवार। (फ़ा47) और उसको क़त्ल कर डाला।

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ○ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○ هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ○ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ؕ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَ مَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَ هُوَ مَعَكُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ○ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ○ یُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ یُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ؕ وَ هُوَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ اٰمِنُوْا

सूरतुल् ह़दीदि

(मदनी है इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

सब्ब–ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(1)लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह़्यी व युमीतु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(2)हुवल्–अव्वलु वल् आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्बातिनु व हु–व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(3)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़–लल्अ़र्शि यअ़्–लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ़्रुजु फ़ीहा व हु–व म–अ़कुम् ऐ–न मा कुन्तुम् वल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न बसीर(4)लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्–उमूर(5)युलिजुल्लै–ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा–र फ़िल्लैलि व हु–व अ़लीमुम् बिज़ातिस्–सुदूर(6)आमिनू

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (फ़ा2) और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(1) उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है (फ़ा3) और मारता (फ़ा4) और वह सब कुछ कर सकता है।(2) वही अव्वल (फ़ा5) वही आख़िर (फ़ा6) वही ज़ाहिर (फ़ा7) वही बातिन (फ़ा8) और वही सब कुछ जानता है।(3) वही है जिसने आसमान और ज़मीन छः दिन में पैदा किये (फ़ा9) फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है (फ़ा10) और जो उससे बाहर निकलता है (फ़ा11) और जो आसमान से उतरता है (फ़ा12) और जो उसमें चढ़ता है (फ़ा13) और वह तुम्हारे साथ है (फ़ा14) तुम कहीं हो और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(4) (फ़ा15) उसी की है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़।(5) रात को दिन के हिस्से में लाता है (फ़ा16) और दिन को रात के हिस्से में लाता है (फ़ा17) और वह दिलों की जानता है।(6) (फ़ा18) अल्लाह

(फ़ा1) सूरह ह़दीद मक्की है या मदनी इसमें चार रुकूअ़ उनीस आयतें 544 कलिमे और 2476 हरफ़ हैं (फ़ा2) जानदार हो या बेजान। (फ़ा3) मख़्लूक़ को पैदा करके या यह माना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है (फ़ा4) यानी मौत देता है ज़िन्दों को (फ़ा5) क़दीम हर शय से क़ब्ल अव्वल बे इब्तेदा कि वह था और कुछ न था (फ़ा6) हर शय के हलाक व फ़ना होने के बाद रहने वाला सब फ़ना हो जायेंगे और वह हमेशा रहेगा उसके लिए इन्तेहा नहीं (फ़ा7) दलायल व बराहीन से या यह माना कि ग़ालिब हर शय पर (फ़ा8) हवास उसके इदराक से आ़जिज़ या यह माना कि हर शय का जानने वाला (फ़ा9) अय्यामे दुनिया से कि पहला उनका यकशम्बह और पिछला जुमा है हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वह अगर चाहता तो तुरफ़तुल ऐन में पैदा कर देता लेकिन उसकी हिकमत उसी को मुक़्तज़ा हुई कि छः को असल बनाए और उन पर मदार रखे। (फ़ा10) ख़्वाह वह दाना हो या क़तरा या ख़ज़ाना हो या मुर्दा (फ़ा11) ख़्वाह वह नबातात हो या धात या और कोई चीज़। (फ़ा12) रहमत व अ़ज़ाब और फ़रिश्ते और बारिश (फ़ा13) आमाल और दुआ़यें। (फ़ा14) अपने इल्म व क़ुदरत के साथ उमूमन और फ़ज़्ल व रहमत के साथ ख़ुसूसन। (फ़ा15) तो तुम्हें तुम्हारे हस्बे आमाल जज़ा देगा। (फ़ा16) इस तरह कि रात को घटाता है और दिन की मिक़दार बढ़ाता है। (फ़ा17) दिन घटा कर और रात की मिक़दार बढ़ा कर। (फ़ा18) दिल के अ़क़ीदे और क़ल्बी असरार सब को जानता है।

بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ

يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ

مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ

बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िकू मिम्मा ज–अ–लकुम् मुस्तख़्–लफ़ी–न फ़ीहि फ़ल्लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् व अन्फ़कू लहुम् अज्रुन् कबीर(7)व मा लकुम् ला तुअ्मिनू–न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्अूकुम् लितुअ्मिनू बि–रब्बिकुम् व क़द् अ–ख़–ज़ मीसा–क़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(8)हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल् लियुख़्रि–जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व इन्नल्ला–ह बिकुम् ल–रऊफ़ुर्रहीम(9)व मा लकुम् अल्ला तुन्फ़िकू.फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस् समावाति वल्अर्ज़ि ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़–क़ मिन् क़ब्लिल् फ़त्हि व क़ा–त–ल उलाइ–क अअ्–ज़मु द–र–ज–तम् मिनल्लज़ी–न अन्फ़कू.मिम् बअ्दु व क़ा–तलू व कुल्लंव् व अ–दल्लाहुल् हुस्ना वल्लाहु बिमा तअ्मलू–न ख़बीर(10)मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिजुल्ला–ह क़र्ज़न् ह–स–नन् फ़युज़ाअ़ि–फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम(11)यौ–म त–रल् मुअ्मिनी–न वल्मुअ्–मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै–न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम्

और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी राह में कुछ वह ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा–नशीन किया (फ़ा19) तो जो तुम में ईमान लाए और उसकी राह में ख़र्च किया उनके लिए बड़ा सवाब है।(7) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ हालांकि यह रसूल तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ (फ़ा20) और बेशक वह (फ़ा21) तुम से पहले ही अ़हद ले चुका है (फ़ा22) अगर तुम्हें यक़ीन हो।(8) वही है कि अपने बन्दा पर (फ़ा23) रौशन आयतें उतारता है ताकि तुम्हें अंधेरियों से (फ़ा24) उजाले की तरफ़ ले जाए (फ़ा25) और बेशक अल्लाह तुम पर ज़रूर मेहरबान रहम वाला।(9) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह की राह में ख़र्च न करो हालांकि आसमानों और ज़मीन में सबका वारिस अल्लाह ही है (फ़ा26) तुम में बराबर नहीं वह जिन्होंने फ़तहे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया (फ़ा27) वह मर्तबा में उनसे बड़े हैं जिन्होंने बादे फ़तह के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से (फ़ा28) अल्लाह जन्नत का वादा फ़रमा चुका (फ़ा29) और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(10) (रुकूअ़ 17) कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ (फ़ा30) तो वह उसके लिए दूने करे और उसको इज़्ज़त का सवाब है।(11) जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को (फ़ा31) देखोगे कि उनका नूर (फ़ा32) उनके आगे और उनके दाहिने दौड़ता है (फ़ा33)

(फ़ा19) जो तुम से पहले थे और तुम्हारा जा–नशीन करेगा तुम्हारे बाद वालों को माना यह हैं कि जो माल तुम्हारे क़ब्ज़ा में हैं सब अल्लाह तआ़ला के हैं उसने तुम्हें नफ़ा उठाने के लिए दे दिये हैं तुम हक़ीक़तन उनके मालिक नहीं हो बमन्ज़िलए नाइब व वकील के हो उन्हें राहे ख़ुदा में ख़र्च करो और जिस तरह नाइब और वकील को मालिक के हुक्म से ख़र्च करने में कोई तअम्मुल नहीं होता तो तुम्हें भी कोई तअम्मुल व तरद्दुद न हो। (फ़ा20) और बुरहानें और हुज्जतें पेश करते हैं और किताबे इलाही सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उज़्र हो सकता है। (फ़ा21) यानी अल्लाह तआ़ला। (फ़ा22) जब उसने तुम्हें पुश्ते आदम अ़लैहिस्सलाम से निकाला था कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा रब है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। (फ़ा23) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर। (फ़ा24) कुफ़्र व शिर्क की। (फ़ा25) यानी नूरे ईमान की तरफ़। (फ़ा26) तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क में रह जायेंगे और तुम्हें ख़र्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करो तो सवाब भी पाओ। (फ़ा27) जबकि मुसलमान कम और कमज़ोर थे उस वक़्त जिन्होंने ख़र्च किया और जिहाद किया वह मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीन अव्वलीन हैं उनके हक़ में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करदे तो भी उनके एक मुद के बराबर **(बक़िया सफ़हा 879 पर)**

بُشۡرٰىكُمُ الۡيَوۡمَ جَنّٰتٌ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۚ﴿۱۲﴾ يَوۡمَ يَقُوۡلُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوا انۡظُرُوۡنَا نَقۡتَبِسۡ مِنۡ نُّوۡرِكُمۡ ۚ قِيۡلَ ارۡجِعُوۡا وَرَآءَكُمۡ فَالۡتَمِسُوۡا نُوۡرًا ؕ فَضُرِبَ بَيۡنَهُمۡ بِسُوۡرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنۡ قِبَلِهِ الۡعَذَابُ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوۡنَهُمۡ اَلَمۡ نَكُنۡ مَّعَكُمۡ ؕ قَالُوۡا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمۡ فَتَنۡتُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ وَتَرَبَّصۡتُمۡ وَارۡتَبۡتُمۡ وَغَرَّتۡكُمُ الۡاَمَانِىُّ حَتّٰى جَآءَ اَمۡرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمۡ بِاللّٰهِ الۡغَرُوۡرُ ﴿۱۴﴾ فَالۡيَوۡمَ لَا يُؤۡخَذُ مِنۡكُمۡ فِدۡيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ مَاۡوٰٮكُمُ النَّارُ ؕ هِىَ مَوۡلٰٮكُمۡ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمۡ يَاۡنِ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُهُمۡ لِذِكۡرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الۡحَـقِّ ۙ وَلَا يَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلُ فَطَالَ عَلَيۡهِمُ الۡاَمَدُ فَقَسَتۡ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ

बुश्राकुमुल्यौ–म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा ज़ालि–क हुवल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(12)यौ–म यक़ूलुल्मुनाफ़िक़ू–न वल्मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी–न आ–मनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन् नूरिकुम् क़ीलर्जिअू वरा–अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन् फ़ज़ुरि–ब बै–नहुम् बिसूरिल् लहू बाबुन् बातिनुहू फ़ीहिर्रह्–मतु व ज़ाहिरुहू मिन् क़ि–बलिहिल् अ़ज़ाब(13)युनादू–नहुम् अ–लम् नकुम् म–अ़कुम् क़ालू बला वलाकिन्नकुम् फ़–तन्तुम् अन्फ़ु–सकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल् अमानिय्यु हत्ता जा–अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल् ग़रूर(14)फ़ल्यौ–म ला युअ्–ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्–यतुंव् व ला मिनल्लज़ी–न क–फ़रू मअ्वाकुमुन्नारु हि–य मौलाकुम् व बिअ्–सल्मसीर(15)अ–लम् यअ्नि लिल्लज़ी–न आ–मनू अन् तख़्शा–अ़ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न–ज़–ल मिनल्हक़्क़ि व ला यकूनू कल्लज़ी–न ऊतुलकिता–ब मिन् क़ब्लु फ़ता–ल अ़लैहिमुल् अ–मदु फ़–क़–सत् क़ुलूबुहुम्

उनसे फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़्यादा खुशी की बात वह जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें तुम उनमें हमेशा रहो यही बड़ी कामयाबी है।(12) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो कि हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें कहा जाएगा अपने पीछे लौटो (फ़ा34) वहां नूर ढूंडो वह लौटेंगे जभी उनके (फ़ा35) दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी (फ़ा36) जिस में एक दरवाज़ा है (फ़ा37) उसके अन्दर की तरफ़ रहमत (फ़ा38) और उसके बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब।(13) मुनाफ़िक़ (फ़ा39) मुसलमानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे (फ़ा40) वह कहेंगे क्यों नहीं मगर तुमने तो अपनी जानें फ़ित्ना में डालीं (फ़ा41) और मुसलमानों की बुराई तकते और शक रखते (फ़ा42) और झूठी तमअ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया (फ़ा43) यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया (फ़ा44) और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा।(14) (फ़ा45) तो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाए (फ़ा46) और न खुले काफ़िरों से तुम्हारा ठिकाना आग है वह तुम्हारी रफ़ीक़ है और क्या ही बुरा अंजाम।(15) क्या ईमान वालों को अभी वह वक़्त न आया कि उनके दिल झुक जायें अल्लाह की याद और उस हक़ के लिए जो उतरा (फ़ा47) और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई (फ़ा48) फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई (फ़ा49) तो उनके दिल सख़्त हो गए (फ़ा50)

(फ़ा34) जहां से आये थे यानी मौक़फ़ की तरफ़ जहां हमें नूर दिया गया है वहां ज़र तलब करो या यह माना हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सकते नूर की तलब के लिए पीछे लौट जाओ फिर वह नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पायेंगे तो दोबारा मोमिनीन की तरफ़ फिरेंगे। (फ़ा35) यानी मोमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के (फ़ा36) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वही एराफ़ है। (फ़ा37) इससे जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे (फ़ा38) यानी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्नत। (फ़ा39) उस दीवार के पीछे से (फ़ा40) दुनिया में नमाज़ें पढ़ते रोज़ा रखते (फ़ा41) निफ़ाक़ व कुफ़्र इख़्तियार करके (फ़ा42) दीने इस्लाम में (फ़ा43) और तुम बातिल उम्मीदों में रहे कि मुसलमानों पर हवादिस आयेंगे वह तबाह हो जायेंगे। (फ़ा44) यानी मौत। (फ़ा45) यानी शैतान ने धोखा दिया कि अल्लाह तआ़ला बड़ा हलीम है तुम पर अ़ज़ाब न करेगा और न मरने के बाद उठना न हिसाब तुम उसके इस फ़रेब में आ गए। (फ़ा46) जिसको देकर तुम अपनी जान अ़ज़ाब से छुड़ा सको बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया माना यह हैं कि आज न तुमसे ईमान क़बूल किया जाये न तौबा। (फ़ा47) **शाने नुज़ूलः** हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दौलत सराए अक़दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं फ़रमाया तुम हंसते हो अभी तक तुम्हारे रब की तरफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर यह आयत नाज़िल हुई उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस हंसी का कफ़्फ़ारा क्या है फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 861 पर)**

وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۞ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۞ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۞ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۞ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

व कसीरुम् मिन्हुम् फ़ासिकून(16)इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल् अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा क़द् बय्यन्ना लकुमुल्आयाति ल-अ़ल्लकुम् तअ्क़िलून(17)इन्नल्मुस्सद्दिक़ी-न वल्मुस्सद्दिक़ाति व अक्-रज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-नंय्युज़ा-अफु लहुम् व लहुम अज्रुन् करीम(18)वल्लज़ी-न आ-मनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीकू-न वश्शु-हदाउ अ़िन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज्रुहुम् व नूरुहुम् वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल् जहीम(19)इअ्-लमू अन्नमल् हयातुद्दुन्या लअ़िबुंव् व लह्वुंव् व ज़ी-नतुंव् व तफ़ाखुरुम् बै-नकुम् व तकासुरुन् फ़िल् अम्वालि वल्-औलादि क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-ज-बल् कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन् व फ़िल्आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् शदीदुंव् व मग़्फ़ि-रतुम् मिनल्लाहि व रिज़्वानुन् व मल्-हयातुद्दुन्या इल्ला मताअुल्-ग़ुरूर(20)साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्

और उनमें बहुत फ़ासिक़ हैं।(16) (फ़ा51) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे (फ़ा52) बेशक हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो।(17) बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वह जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया (फ़ा53) उनके दूने हैं और उनके लिए इज़्ज़त का सवाब है।(18) (फ़ा54) और वह जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लायें वही हैं कामिल सच्चे और औरों पर (फ़ा55) गवाह अपने रब के यहां उनके लिए उनका सवाब (फ़ा56) और उनका नूर है (फ़ा57) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं वह दोज़ख़ी हैं।(19) (रुकूअ् 18) जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद (फ़ा58) और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना (फ़ा59) उस मेंह की तरह जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा (फ़ा60) कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया (फ़ा61) और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है (फ़ा62) और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा (फ़ा63) और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोखे का माल।(20) (फ़ा64) बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश

(फ़ा51) दीन से ख़ारिज होने वाले। (फ़ा52) मेंह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर बाद इसके कि ख़ुश्क हो गई थी ऐसे ही दिलों को सख़्त हो जाने के बाद नर्म करता है और उन्हें इल्म व हिकमत से ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाता है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह तम्सील है ज़िक्र के दिलों में असर करने की जिस तरह बारिश से ज़मीन को ज़िन्दगी हासिल होती है ऐसे ही ज़िक्रे इलाही से दिल ज़िन्दा होते हैं (फ़ा53) यानी ख़ुश दिली और नीयते सालेहा के साथ मुस्तहिक़ीन को सदक़ा दिया और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया। (फ़ा54) और वह जन्नत है। (फ़ा55) गुज़री हुई उम्मतों में से (फ़ा56) जिस का वादा किया गया। (फ़ा57) जो हश्र में उनके साथ होगा। (फ़ा58) जिसमें वक़्त ज़ाया करने के सिवा कुछ हासिल नहीं। (फ़ा59) और उन चीज़ों में मश्ग़ूल रहना और उनसे दिल लगाना दुनिया है लेकिन ताअ़तें और इबादतें और जो चीज़ें कि ताअ़त पर मुईन हों और वह उमूर आख़रत से हैं अब उस ज़िन्दगानीए दुनिया की एक मिसाल इरशाद फ़रमाई जाती है। (फ़ा60) उसकी सब्ज़ी जाती रही पीला पड़ गया किसी आफ़ते समावी या अरज़ी से। (फ़ा61) रेज़ा रेज़ा यही हाल दुनिया की ज़िन्दगी का है जिस पर तालिबे दुनिया बहुत ख़ुश होता है और उसके साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है वह निहायत जल्द गुज़र जाती है। (फ़ा62) उसके लिए जो दुनिया का तालिब हो और ज़िन्दगी लह्व व लइब में गुज़ारे और वह आख़रत की परवाह न करे ऐसा हाल काफ़िर का होता है। (फ़ा63) जिसने दुनिया को आख़रत पर तरजीह न दी। (फ़ा64) यह उसके लिए है जो दुनिया ही का हो जाये और उस पर भरोसा कर ले और आख़रत की फ़िक्र न करे और जो शख़्स आख़रत में दुनिया का तालिब हो और असबाबे दुनियवी से भी आख़रत ही के लिए इलाक़ा रखे तो उसके लिए **(बक़िया सफ़हा 864 पर)**

مِنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾ مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्जुहा क–अ़र्ज़िस्समाइ वल्अर्ज़ि उअ़िद्दत् लिल्लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि व रुसुलिही ज़ालि–क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम(21) मा असा–ब मिम् मुसीब–बतिन् फ़िल्अर्ज़ि वला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम् मिन् क़ब्लि अन् नब्–र अहा इन्–न ज़ालि–क अ़लल्लाहि यसीरुल्(22)लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ा–तकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम् वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्–ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरि नि(23)ल्लज़ी–न यब्ख़लू–न व यअ्मुरू–नन्ना–स बिल्बुख़्लि व मंय्य–त– वल्–ल फ़इन्नल्ला–ह हुवल्–ग़निय्युल् ह़मीद (24)ल–क़द् अर्सल्ना रुसु–लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म–अ़हुमुल्किता–ब वल्मीज़ा–न लियक़ू–मन्नासु बिल्क़िस्ति व अन्ज़ल्नल् ह़दी–द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव् व मनाफ़िअु लिन्नासि व लियअ्–ल–मल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु–लहू बिल्ग़ैबि

और उस जन्नत की तरफ़ (फ़ा65) जिसकी चौड़ाई जैसे आसमान और ज़मीन का फैलाव (फ़ा66) तैयार हुई है उनके लिए जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लायें यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(21) नहीं पहुंचती कोई मुसीबत ज़मीन में (फ़ा67) और न तुम्हारी जानों में (फ़ा68) मगर वह एक किताब में है (फ़ा69) क़ब्ल इसके कि हम उसे पैदा करें (फ़ा70) बेशक यह (फ़ा71) अल्लाह को आसान है।(22) इसलिए कि ग़म न खाओ उस (फ़ा72) पर जो हाथ से जाए और खुश न हो (फ़ा73) उस पर जो तुम को दिया (फ़ा74) और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरोना बड़ाई मारने वाला।(23) वह जो आप बुख़्ल करें (फ़ा75) और औरों से बुख़्ल को कहें (फ़ा76) और जो मुंह फेरे (फ़ा77) तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(24) बेशक हम ने अपने रसूलों को दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब (फ़ा78) और अ़द्ल की तराज़ू उतारी (फ़ा79) कि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हों (फ़ा80) और हमने लोहा उतारा (फ़ा81) उसमें सख़्त आँच (फ़ा82) और लोगों के फ़ाइदे (फ़ा83) और इसलिए कि अल्लाह देखे उसको जो बे देखे उसकी (फ़ा84) और उसके रसूलों की मदद करता है

(फ़ा65) रज़ाए इलाही के तालिब बनो उसकी ताअ़त इख़्तियार करो और उसकी फ़रमांबरदारी बजा लाकर जन्नत की तरफ़ बढ़ो (फ़ा66) यानी जन्नत का अ़र्ज़ ऐसा है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनों के वरक़ बनाकर बाहम मिला दिये जायें तो जितने वह हों उतना जन्नत का अर्ज़ फिर तूल की क्या इन्तेहा (फ़ा67) क़हत की इमसाके बाराँ की अ़दम पैदावार की फलों की कमी की खेतियों के तबाह होने की। (फ़ा68) अमराज़ की और औलाद के ग़मों की (फ़ा69) लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा70) यानी ज़मीन को या जानों को या मुसीबत को। (फ़ा71) यानी उन उमूर का बावजूद कसरत के लौह में सब्त फ़रमाना। (फ़ा72) मताअ़े दुनिया। (फ़ा73) यानी न इतराओ (फ़ा74) दुनिया का माल व मताअ़ और यह समझ लो कि जो अल्लाह तआ़ला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होना है न ग़म करने से कोई ज़ाया शुदा चीज़ वापस मिल सकती है न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लाइक़ है तो चाहिए कि ख़ुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इख़्तियार करो ग़म से मुराद यहां इन्सान की वह हालत है जिसमें सब्र और रज़ा ब-क़ज़ाए इलाही और उम्मीदे सवाब बाक़ी न रहे और ख़ुशी से वह इतराना मुराद है जिस में मस्त होकर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाये और वह ग़म व रन्ज जिसमें बन्दा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह हो और उसकी रज़ा पर राज़ी हो ऐसे ही वह ख़ुशी जिस पर हक़ तआ़ला का शुक्र गुज़ार हो ममनूअ़ नहीं हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ फ़रज़न्दे आदम किसी चीज़ के फ़िक़दान पर क्यों ग़म करता है यह उसको तेरे पास वापस न लाएगा और कसी मौजूद चीज़ पर क्यों इतराता है मौत उसको तेरे हाथ में न छोड़ेगी। (फ़ा75) और राहे ख़ुदा और **(बक़िया सफ़हा 879 पर)**

اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़(25)व ल-क़द् अरसल्ना नूहंव् व इब्राही-म व ज-अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिमन् नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम् मिन्हुम् फ़ासिक़ून.(26) सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बिअ़ी-सब्नि मर्य-म व आतैनाहुल् इन्जी-ल व ज-अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल् लज़ी-नत्त-बअ़ू.हु रा-फ़-तंव् व रह्म-तन् व रह्बानिय्य-त निब्त-दअ़ूहा मा क-तब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रअ़ौहा हक़्-क़ रिआ़यतिहा फ़आतै-नल्लज़ी-न आ-मनू मिन्हुम् अज्-रहुम् व कसीरुम् मिन्हुम् फ़ासिक़ू न(27)या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रह्मतिही व यज्अ़ल् लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुल्(28)लि-अल्ला यअ्-ल-म अह्लुल् किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम् मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम(29)

बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है।(25) (फ़ा85) (रुकूअ़ 19) और बेशक हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी औलाद में नबुव्वत और किताब रखी (फ़ा86) तो उनमें (फ़ा87) कोई राह पर आया और उनमें बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।(26) फिर हमने उनके पीछे (फ़ा88) उसी राह पर अपने और रसूल भेजे और उनके पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा और उसे इन्जील अ़ता फ़रमाई और उसके पैरूओं के दिल नर्मी और रहमत रखी (फ़ा89) और वह राहिब बनना (फ़ा90) तो यह बात उन्होंने दीन में अपनी तरफ़ से निकाली हमने उन पर मुक़र्रर न की थी हां यह बिदअ़त उन्होंने अल्लाह की रज़ा चाहने को पैदा की फिर उसे न निबाहा जैसा उसके निबाहने का हक़ था (फ़ा91) तो उनके ईमान वालों को (फ़ा92) हम ने उनका सवाब अ़ता किया और उनमें से बहुतेरे (फ़ा93) फ़ासिक़ हैं।(27) ऐ ईमान वालो (फ़ा94) अल्लाह से डरो और उसके रसूल (फ़ा95) पर ईमान लाओ वह अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अ़ता फ़रमाएगा (फ़ा96) और तुम्हारे लिए नूर कर देगा (फ़ा97) जिस में चलो और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(28) यह इस लिए कि किताब वाले काफ़िर जान जायें कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर उनका कुछ क़ाबू नहीं (फ़ा98) और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है देता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(29) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा85) उसको किसी की मदद दरकार नहीं दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया यह उन्हीं लोगों के नफ़ा के लिए है (फ़ा86) यानी तौरेत व इन्जील व ज़बूर और क़ुरआन (फ़ा87) यानी उनकी ज़ुर्रियत में जिनमें नबी और किताबें भेजीं (फ़ा88) यानी हज़रत नूह व इब्राहीम अ़लैहिमुस्सलाम के बाद ता ज़मानए हज़रत ईसा अ़लैहिस्साम यके बाद दीगरे। (फ़ा89) कि वह आपस में एक दूसरे के साथ मुहब्बत व शफ़क़त रखते (फ़ा90) पहाड़ों और ग़ारों और तन्हा मकानों में ख़ल्वत नशीन होना और सौमिआ़ बनाना और अहले दुनिया से मुख़ालतत तर्क करना और इबादतों में अपने ऊपर ज़ाइद मशक़्क़तें बढ़ा लेना तारिक हो जाना निकाह न करना निहायत मोटे कपड़े पहनना अदना ग़िज़ा निहायत कम मिक़दार में खाना (फ़ा91) बल्कि उसको ज़ाया कर दिया और तसलीत व इत्तेहाद में मुब्तला हुए और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के दीन से कुफ़्र करके अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उनमें से दीने मसीही पर क़ाइम और साबित भी रहे और जब ज़मानए पाक हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पाया तो हुज़ूर पर भी ईमान लाये मसला इस आयत से मालूम हुआ कि बिदअ़त यानी दीन में किसी बात का निकालना अगर वह बात नेक हो और उससे रज़ाए इलाही मक़सूद हो तो बेहतर है इस पर सवाब मिलता है और उसको जारी रखना चाहिए ऐसी बिदअ़त को बिदअ़ते हसना कहते हैं अलबत्ता दीन में बुरी बात निकालना बिदअ़ते सइया **(बक़िया सफ़हा 879 पर)**

(बक़िया सफ़्हा 849 का) व पाकीज़गी का यह आलम है। (फ़ा26) जिन्हें कोई हाथ ही न लगा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़रमाया कि किसी जन्नती के पास ख़िदमत में दौड़ने वाले गुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर गुलाम जुदा जुदा ख़िदमत पर मुक़र्रर होगा। (फ़ा27) यानी जन्नती जन्नत में एक दूसरे से दरियाफ़्त करेंगे कि दुनिया में किस हाल में थे और क्या अमल करते थे और यह दरियाफ़्त करना निअ्मते इलाही के एतेराफ़ के लिए होगा (फ़ा28) अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से और इस अन्देशा से कि नफ़्स व शैतान ख़लले ईमान का बाइस न हों और नेकियों के रोके जाने और बदियों पर गिरिफ़्त किये जाने का भी अन्देशा था (फ़ा29) रहमत और मग़फ़िरत फ़रमा कर (फ़ा30) यानी आतिशे जहन्नम के अज़ाब से जो जिस्मों में दाख़िल होने की वजह से समूम यानी लू के नाम से मौसूम की गई (फ़ा31) यानी दुनिया में इख़्लास के साथ सिर्फ़ (फ़ा32) कुफ़्फ़ारे मक्का को और उनके काहिन और मजनून कहने की वजह से आप नसीहत से बाज़ न रहें इस लिए। (फ़ा33) यह कुफ़्फ़ारे मक्का आपकी शान में

(बक़िया सफ़्हा 850 का) (फ़ा63) और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो जब तुम खड़े हो।(48) (फ़ा64) और कुछ रात में उसकी पाकी बोलो और तारों के पीठ देते।(49) (फ़ा65) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा34) कि जैसे उन से पहले शायर मर गए और उनके जत्थे टूट गए यही हाल उनका होना है (मआ़ज़ल्लाह) और वह कुफ़्फ़ार यह भी कहते थे कि उनके वालिद की मौत जवानी में हुई है उनकी भी ऐसी ही होगी अल्लाह तआ़ला अपने हबीब से फ़रमाता है (फ़ा35) मेरी मौत का (फ़ा36) कि तुम पर अज़ाबे इलाही आये चुनांचे यह हुआ और वह कुफ़्फ़ार बद्र में क़त्ल व क़ैद के अज़ाब में गिरिफ़्तार किये गए (फ़ा37) जो वह हुज़ूर की शान में कहते हैं शायर साहिर काहिन मजनून ऐसा कहना बिल्कुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल है और तुर्रा यह कि मजनून भी कहते जायें और शायर साहिर काहिन भी और फिर अपने आक़िल होने का दावा (फ़ा38) कि इनाद में अन्धे हो रहे हैं और कुफ़्र व तुग़ियान में हद से गुज़र गए (फ़ा39) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने दिल से (फ़ा40) और दुश्मनी व ख़ुबसे नफ़्स से ऐसे तअ़्न करते हैं अल्लाह तआ़ला उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाता है कि अगर उनके ख़्याल में क़ुरआन जैसा कलाम कोई इन्सान बना सकता है। (फ़ा41) जो हुस्न व ख़ूबी और फ़साहत व बलाग़त में उसके मिस्ल हो। (फ़ा42) यानी क्या वह मां बाप से पैदा न हुए जमाद बे अ़क़्ल हैं जिन पर हुज्जत क़ायम न की जाएगी। ऐसा नहीं या यह माना हैं कि क्या वह नुत्फ़ा से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें ख़ुदा ने नहीं बनाया (फ़ा43) कि उन्होंने अपने आपको ख़ुद ही बना लिया हो यह भी मुहाल है तो ला मुहाला उन्हें इक़रार करना पड़ेगा कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया फिर क्या सबब है कि वह उसकी इबादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं। (फ़ा44) यह भी नहीं और अल्लाह तआ़ला के सिवा आसमान व ज़मीन पैदा करने के कोई क़ुदरत नहीं रखता तो क्यों उसकी इबादत नहीं करते। (फ़ा45) अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसकी क़ुदरत व ख़ालक़ियत का अगर उसका यक़ीन होता तो ज़रूर उसके नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाते। (फ़ा46) नबुव्वत और रिज़्क़ वग़ैरह के कि उन्हें इख़्तियार हो जहां चाहे ख़र्च करें और जिसे चाहें दें। (फ़ा47) ख़ुद मुख़्तार जो चाहे करें कोई पूछने वाला न हो। (फ़ा48) आसमान की तरफ़ लगा हुआ। (फ़ा49) और उन्हें मालूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किस की फ़तह होगी अगर उन्हें इसका दावा हो। (फ़ा50) यह उनकी सफ़ाहत और बेवक़ूफ़ी का बयान है कि अपने लिए तो बेटे पसन्द करते हैं और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बेटियों की निस्बत करते हैं जिनको बुरा जानते हैं (फ़ा51) दीन की तालीम पर (फ़ा52) और तावान की ज़ेर बारी के बाइस इस्लाम नहीं लाते यह भी तो नहीं है फिर इस्लाम लाने में उन्हें क्या उज़्र है (फ़ा53) कि मरने के बाद न उठेंगे और उठे भी तो अज़ाब न किये जायेंगे यह बात भी नहीं (फ़ा54) दारुन्नदवा में जमा होकर अल्लाह तआ़ला के नबी हादीए बरहक़ सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़रर व क़त्ल के मश्वरे करते हैं (फ़ा55) उनके मक्र व कैद का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा चुनांचे ऐसा ही हुआ अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनके मक्र से महफ़ूज़ रखा और उन्हें बद्र में हलाक किया। (फ़ा56) जो उन्हें रोज़ी दे और अज़ाबे इलाही से बचा सके (फ़ा57) यह जवाब है कुफ़्फ़ार के इस मक़ूला का जो कहते थे कि हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा कर अज़ाब कीजिये अल्लाह तआ़ला उसी के जवाब में फ़रमाता है कि उनका कुफ़्र व इनाद इस हद पर पहुंच गया है कि अगर उन पर ऐसा ही किया जाये कि आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाये और आसमान से उसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़्र से बाज़ न आयें और बराहे अ़नाद यही कहें कि यह तो अब्र है इससे हम सैराब होंगे (फ़ा58) मुराद इससे नफ़ख़ए औला का दिन है (फ़ा59) ग़रज़ किसी तरह अज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे (फ़ा60) उनके कुफ़्र के सबब अज़ाबे आख़िरत से पहले और वह अज़ाब या तो बद्र में क़त्ल होना है या भूख व क़हत की हफ़्त साला मुसीबत या अज़ाबे क़ब्र (फ़ा61) कि वह अज़ाब में मुब्तला होने वाले हैं। (फ़ा62) और जो मुहलत उन्हें दी गई है उस पर दिल तंग न हो। (फ़ा63) तुम्हें वह कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते (फ़ा64) नमाज़ के लिए इससे तकबीरे औला के बाद सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म पढ़ना मुराद है या यह माना हैं कि जब सोकर उठो तो अल्लाह तआ़ला की हम्द व तस्बीह किया करो या यह माना हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह बजा लाया करो। (फ़ा65) यानी तारों के छुपने के बाद मुराद यह है कि उन औक़ात में अल्लाह तआ़ला की तस्बीह व तहमीद करो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह से मुराद नमाज़ है।

(बक़िया सफ़्हा 851 का) (ख़ाज़िन) (फ़ा3) साहिबुकुम् से मुराद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं माना यह हैं कि हुज़ूरे अनवर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने कभी तरीक़े हक़ व हिदायत से उदूल न किया हमेशा अपने रब की तौहीद व इबादत में रहे आपके दामने इस्मत पर कभी किसी अमरे मकरूह की गर्द न आई और बे राह न चलने से यह मुराद है कि हुज़ूर हमेशा

रुश्द व हिदायत की आला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे एतेक़ादे फ़ासिद का शायबा भी कभी आपके हाशिया बिसात तक न पहुंच सका (फ़ा4) यह जुमला औला की दलील है कि हुज़ूर का बहकना और बे राह चलना मुमकिन व मुतसव्वर ही नहीं क्योंकि आप अपनी ख़्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं जो फ़रमाते हैं वहीए इलाही होती है और उसमें हुज़ूर के ख़ुल्के अ़ज़ीम और आपकी आला मन्ज़िलत का बयान है नफ़्स का सब से आला मर्तबा यह है कि वह अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे (कबीर) और इसमें यह भी इशारा है कि नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अल्लाह तआ़ला के ज़ात व सिफ़ात व अफ़आ़ल में फ़ना के उस आला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी न रहा तजल्लीए रब्बानी का यह इस्तीलाए ताम हुआ कि जो कुछ फ़रमाते हैं वह वहीए इलाही होती है (रूहुल बयान) (फ़ा5) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को (फ़ा6) जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ वही फ़रमाया और इस तालीम से मुराद क़ल्ब तक पहुंचा देना है (फ़ा7) बाज़ मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ गए हैं कि सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़तवर से मुराद हज़रत जिबरील हैं और सिखाने से मुराद बतालीमे इलाही सिखाना यानी वहीए इलाही का पहुंचाना है हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि शदीदुल्-क़ुवा ज़ू मिर्रतिन् से मुराद अल्लाह तआ़ला है उसने अपनी ज़ात को इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया माना यह हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने बे वास्ता तालीम फ़रमाई (तफ़सीर रूहुल बयान) (फ़ा8) आ़म मुफ़स्सिरीन ने फ़स्तवा का फ़ाइल भी हज़रत जिबरील को क़रार दिया है और यह माना लिये हैं कि हज़रत जिबरील अमीन अपनी असली सूरत पर क़ाइम हुए और इस का सबब यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें उनकी असली सूरत में मुलाहज़ा फ़रमाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी तो हज़रत जिबरील जानिबे मशरिक़ में हुज़ूर के सामने नुमूदार हुए और उनके वुजूद से मशरिक़ से मग़रिब तक भर गया यह भी कहा गया है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिवा किसी इन्सान ने हज़रत जिबरील को उनकी असली सूरत में नहीं देखा इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत जिबरील को देखना तो सही है और हदीस से साबित है लेकिन यह हदीस में नहीं है कि इस आयत में हज़रत जिबरील को देखना मुराद है बल्कि ज़ाहिर तफ़सीर में यह है कि मुराद फ़स्तवा से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मकान आ़ली मन्ज़िलत रफ़ीआ़ में इस्तिवा फ़रमाना है (तफ़सीर कबीर) तफ़सीर रूहुल बयान में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उफ़ुक़े आला यानी आसमानों के ऊपर इस्तिवा फ़रमाया और हज़रत जिबरील सिदरतुल मुन्तहा पर रुक गए आगे न बढ़ सके उन्होंने कहा कि अगर मै ज़रा भी आगे बढ़ूं तो तजल्लियाते जलाल मुझे जला डालें और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आगे बढ़ गए और मुस्तवाए अ़र्श से भी गुज़र गए और हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू का तर्जुमा इस तरफ़ मुशीर है कि इस्तिवा की असनाद हज़रत रब्बुल इ़ज़्ज़त अ़ज़्ज़ व अ़ला की तरफ़ से और यही क़ौल हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का है। (फ़ा9) यहां भी आ़म मुफ़स्सिरीन इसी तरफ़ गए हैं कि यह हाल जिबरील अमीन का है लेकिन इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर यह है कि यह हाल सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है कि आप उ.फ़ुक़े आला यानी फ़ौक़े समावात थे जिस तरह कहने वाला कहता है कि मैंने छत पर चांद देखा पहाड़ पर चांद देखा इसके यह माना नहीं होते कि चांद छत पर या पहाड़ पर था बल्कि यही माना होते हैं कि देखने वाला छत या पहाड़ पर था बल्कि यही माना होते हैं कि देखने वाला छत या पहाड़ पर था इसी तरह यहां यह माना हैं कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम फ़ौक़े समावात पर पहुंचे तो तजल्लीए रब्बानी आपकी तरफ़ मुतवज्जह हुई। (फ़ा10) इसके माना में भी मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं एक क़ौल यह है कि हज़रत जिबरील का सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़रीब होना मुराद है कि वह अपनी सूरते असली दिखा देने के बाद हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़ुर्ब में हाज़िर हुए दूसरे माना यह हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रते हक़ के क़ुर्ब से मुशर्रफ़ हुए तीसरे यह कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने क़ुर्ब की निअ़्मत से नवाज़ा और यही सही तर है (फ़ा11) इसमें भी चन्द क़ौल हैं एक तो यह कि नज़दीक होने से हुज़ूर का उरूज व वसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रुजूअ़ तो हासिल माना यह है कि हक़ तआ़ला के क़ुर्ब में बारयाब हुए फिर विसाल की निअ़्मतों से फ़ैज़याब होकर ख़ल्क़ की तरफ़ मुतवज्जह हुए दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने लुत्फ़ व रहमत के साथ अपने हबीब से क़रीब हुआ और उस क़ुर्ब में ज़्यादती फ़रमाई तीसरा क़ौल यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुक़र्रब दरगाहे रबूबियत होकर सज्दए ताअ़त अदा किया (रूहुल बयान) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़रीब हुआ जब्बार रब्बुल इ़ज़्ज़त अल्ख़ (ख़ाज़िन) (फ़ा12) यह इशारा है ताकीदे क़ुर्ब की तरफ़ कि क़ुर्ब अपने कमाल को पहुंचा और बा-अदब अहिब्बा में जो नज़दीकी मुतस्सवर हो सकती है वह अपनी ग़ायत को पहुंची (फ़ा13) अक्सर उलमा मुफ़स्सिरीन के नज़दीक इसके माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दए ख़ास हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वही फ़रमाई (जुमल) हज़रत जअ़्फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे को वही फ़रमाई जो वही फ़रमाई यह वही बे वास्ता थी कि अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब के दर्मियान कोई वास्ता न था और यह ख़ुदा और रसूल के दर्मियान के असरार हैं जिन पर उनके सिवा किसी को इत्तलाअ़ नहीं बक़ली ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने इस राज़ को तमाम ख़ल्क़ से मख़्फ़ी रखा और न बयान फ़रमाया कि अपने हबीब को क्या वही फ़रमाई और मुहिब व महबूब के दर्मियान ऐसे राज़ होते हैं जिनको उनके सिवा कोई नहीं जानता (रूहुल बयान) उलमा ने यह भी बयान किया है कि इस शब में जो आप को वही फ़रमाई गई वह कई किस्म के उलूम थे एक तो इल्मे शराएअ़ व अहकाम जिनकी सब को तबलीग़ की जाती है दूसरे मआरिफ़े इलाहिया जो ख़वास को बताये जाते हैं तीसरे हक़ाइक़ व नताइजे उलूमे ज़ौक़िया जो सिर्फ़ अख़्सुलख़वास को तलक़ीन किये जाते हैं और एक किस्म वह असरार जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के साथ ख़ास हैं कोई उनका तहम्मुल नहीं कर सकता। (रूहुल

बयान) (फ़ा14) आंख ने यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़ल्बे मुबारक ने इसकी तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा माना यह हैं कि आंख से देखा दिल से पहचाना और इस रुईत व मअ़रेफ़त में शक व तरद्दुद ने राह न पाई अब यह बात कि क्या देखा बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल यह है कि हज़रत जिबरील को देखा लेकिन मज़हब सही यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने रब तबारक व तआ़ला को देखा और यह देखना किस तरह था चश्मे सर से चश्मे दिल से इस में मुफ़स्सिरीन के दोनों क़ौल पाये जाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रब्बुल इज़्ज़त को अपने क़ल्बे मुबारक से दो बार देखा (रवाहे मुस्लिम) एक जमाअ़त उस तरफ़ गई है कि आपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल को हक़ीकतन चश्मे मुबारक से देखा यह क़ौल हज़रत अनस बिन मालिक और हसन व इकरमा का है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम को ख़िल्लत और हज़रत मूसा को कलाम और सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा (सलवातुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) कअ़ब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से दो बार कलाम फ़रमाया और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला को दो मर्तबा देखा (तिर्मिज़ी) लेकिन हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने दीदार का इन्कार किया और आयत को हज़रत जिबरील के दीदार पर महमूल किया और फ़रमाया कि जो कोई कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने रब को देखा उसने झूठ कहा और सनद में ला तुद्रिकुहुल-अब्सार तिलावत फ़रमाई यहां चन्द बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं एक यह कि हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ौल नफ़ी में है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का इस्बात में और मुसबत ही मुक़द्दम होता है क्योंकि नाफ़ी किसी चीज़ की नफ़ी इस लिए करता है कि उसने सुना नहीं और मुसबत इस्बात इस लिए करता है कि उसने सुना और जाना तो इल्म मुसबत के पास है इलावा बरीं हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह कलाम हुज़ूर से नक़ल नहीं किया बल्कि आयत से अपने इस्तिम्बात पर एतेमाद फ़रमाया यह हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की राय है और आयत में इदराक यानी इहाता की नफ़ी है न रुईत की मसला सही यह है कि हु.ज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस मरफ़ूअ़ से भी यही साबित है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जो हिबरुल उम्मत हैं वह भी इसी पर हैं मुस्लिम की हदीस है र-ऐतु रब्बी बिअ़ैनी व बि-क़ल्बी मैंने अपने रब को अपनी आंख व अपने दिल से देखा हज़रत हसन बसरी अ़लैहिर्रहमा क़सम खाते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शबे मेअ़राज अपने रब को देखा हज़रत इमाम अहमद रहमतुल्लाह अ़लैह ने फ़रमाया कि मैं हदीसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ाइल हूं हुज़ूर ने अपने रब को देखा उसको देखा उसको देखा इमाम साहब यह फ़रमाते ही रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गया। (फ़ा15) यह मुशरिकीन को ख़िताब है जो शबे मेअ़राज के वाक़िआ़त का इन्कार करते और उसमें झगड़ते थे (फ़ा16) क्योंकि तख़्फ़ीफ़ की दरख़्वास्तों के लिए चन्द बार उरूज व नुज़ूल हुआ। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रब्ब अ़ज़्ज़ व जल्ल को अपने क़ल्बे मुबारक से दो मर्तबा देखा और उन्हीं से यह भी मरवी है कि हुज़ूर ने रब्ब अ़ज़्ज़ व जल्ल को आंख से देखा (फ़ा17) सिदरतुल मुन्तहा एक दरख़्त है जिसकी असल (जड़) छटे आसमान में है और उसकी शाख़ें सातवें आसमान में फैली हैं और बुलन्दी में वह सातवें आसमान से भी गुज़र गया मलाइका और अरवाहे शोहदा व अतक़िया इससे आगे नहीं बढ़ सकते (फ़ा18) यानी मलाइका और अनवार (फ़ा19) इसमें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कमाले .कुव्वत का इज़्हार है कि उस मक़ाम में जहां अ़क़्लें हैरत-ज़दा हैं आप साबित रहे और जिस नूर का दीदार मक़सूद था उससे बहरा अन्दोज़ हुए दाहिने बायें किसी तरफ़ मुल्तफ़त न हुए न मक़सूद की दीद से आंख फेरी न हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरह बेहोश हुए बल्कि उस मक़ामे अ़ज़ीम में साबित रहे। (फ़ा20) यानी हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शबे मेअ़राज अ़जाइबे मलक व मलकूत का मुलाहज़ा फ़रमाया और आपका इल्म तमाम मालूमाते ग़ैबिया मलकूतिया पर मुहीत हो गया जैसा कि हदीस इख़्तेसाम मलाइका में वारिद हुआ है और दूसरी और अहादीस मे आया है (रूहुल बयान) (फ़ा21) लात व उज़्ज़ा और मनात बुतों के नाम हैं जिन्हें मुशरिकीन पूजते थे इस आयत में इरशाद फ़रमाया कि क्या तुमने उन बुतों को देखा यानी बनज़रे तहक़ीक़ व इन्साफ़ अगर इस तरह देखा हो तो तुम्हें मालूम हो गया होगा कि यह महज़ बे क़ुदरत है और अल्लाह तआला क़ादिरे बरहक़ को छोड़कर उन बेक़ुदरत बुतों को पूजना और उसका शरीक ठहराना किस क़दर ज़ुल्मे अ़ज़ीम और ख़िलाफ़े अ़क़्ल व दानिश है और मुशरिकीने मक्का यह कहा करते थे कि यह बुत और फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं इस पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है (फ़ा22) जो तुम्हारे नज़दीक ऐसी बुरी चीज़ है कि जब तुम में से किसी को बेटी पैदा होने की ख़बर दी जाती है तो उसका चेहरा बिगड़ जाता है और रंग तारीक हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है हत्ता कि तुम बेटियों को ज़िन्दा दर गोर कर डालते हो फिर भी अल्लाह तआ़ला की बेटियां बताते हो। (फ़ा23) कि जो चीज़ बुरी समझते हो वह ख़ुदा के लिए तजवीज़ करते हो। (फ़ा24) यानी उन बुतों का नाम इलाह और मअ़बूद तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने बिल्कुल बेजा और ग़लत तौर पर रख लिया है न यह हक़ीकत में इलाह हैं न मअ़बूद

(बक़िया सफ़हा 852 का) माना हैं कि उनके इल्म की इन्तेहा वहम व गुमान हैं जो उन्होंने बांध रखे हैं कि (मआज़ल्लाह) फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं उनकी शफ़ाअ़त करेंगे और इस वहमे बातिल पर भरोसा करके उन्होंने ईमान और क़ुरआन की परवाह न की (फ़ा36) गुनाह वह अ़मल है जिसका करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो और बाज़ अहले इल्म ने फ़रमाया कि गुनाह वह है जिसका करने वाला सवाब से महरूम हो बाज़ का क़ौल है नाजाइज़ काम करने को गुनाह कहते हैं बहरहाल गुनाह की दो क़िस्में हैं सग़ीरा और कबीरा। कबीरा वह जिस का अ़ज़ाब सख़्त हो और बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि सग़ीरा वह जिस पर वईद न हो कबीरा वह जिस पर वईद हो और फ़वाहिश वह जिन पर हद हो (फ़ा37) कि इतना तो कबाइर से बचने की बरकत है माफ़ हो जाता है

(बक़िया सफ़हा 853 का) गिराया।(53) (फ़ा59) तो उस पर छाया जो कुछ छाया।(54) (फ़ा60) तो ऐ सुनने वाले अपने रब की कौनसी निअ़मतों में शक करेगा।(55) यह (फ़ा61) एक डर सुनाने वाले हैं अगले डराने वालों की तरह।(56) (फ़ा62) पास आई पास आने वाली।(57) (फ़ा63) अल्लाह के सिवा उसका कोई खोलने वाला नहीं।(58) (फ़ा64) तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो।(59) (फ़ा65) और हंसते हो और रोते नहीं।(60) (फ़ा66) और तुम खेल में पड़े हो।(61) तो अल्लाह के लिए सजदा और उसकी बन्दगी करो।(62) (फ़ा67) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा38) शाने नुज़ूलः यह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो नेकियां करते थे और अपने अ़मलों की तारीफ़ करते थे और कहते थे हमारी नमाज़ें हमारे रोज़े हमारे हज (फ़ा39) यानी तफ़ाख़ुरन अपनी नेकियों की तारीफ़ न करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के हालात का ख़ुद जानने वाला है वह उनकी इब्तेदा हस्ती से आख़िर अय्याम के जुमला अहवाल जानता है मसला इस आयत में रिया और ख़ुद नुमाई और ख़ुद सराई की मुमानअ़त फ़रमाई गई लेकिन अगर निअ़मते इलाही के एतेराफ़ और ताअ़त व इबादत पर मुसर्रत और उसके अदाए शुक्र के लिए नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है। (फ़ा40) और उसी का जानना काफ़ी है वही जज़ा देने वाला है दूसरों पर इज़हार और नाम व नुमूद से क्या फ़ाइदा। (फ़ा41) इस्लाम से शाने नुज़ूलः यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुई जिसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दीन में इत्तेबाअ़ किया था मुशरिकों ने उसको आ़र दिलाई और कहा कि तूने बुज़ुर्गों का दीन छोड़ दिया और तू गुमराह हो गया उसने कहा मैं ने अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से ऐसा किया तो आ़र दिलाने वाले काफ़िर ने उससे कहा कि अगर तू शिर्क की तरफ़ लौट आये और इस क़दर माल मुझको दे तो तेरा अ़ज़ाब मैं अपने ज़िम्मे लेता हूं इस पर वलीद इस्लाम से मुनहरिफ़ व मुरतद होकर फिर शिर्क में मुब्तला हो गया और जिस शख़्स से माल देना ठहरा था उसने थोड़ा सा दिया और बाक़ी से मना कर दिया। (फ़ा42) बाक़ी शाने नुज़ूल यह भी कहा गया है कि यह आयत आ़स बिन वाइल सहमी के हक़ में नाज़िल हुई वह अक्सर उमूर में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताईद व मुवाफ़क़त किया करता था और यह भी कहा गया है कि यह आयत अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई कि उसने कहा था अल्लाह तआ़ला की क़सम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमें बेहतरीन अख़्लाक़ का हुक्म फ़रमाते हैं इस तक़दीर पर माना यह हैं कि थोड़ा सा इक़रार किया और हक़ लाज़िम में से क़दरे क़लील अदा किया और बाक़ी से बाज़ रहा यानी ईमान न लाया (फ़ा43) कि दूसरा शख़्स उसका बारे गुनाह उठा लेगा और उसके अ़ज़ाब को अपने ज़िम्मा लेगा। (फ़ा44) यानी अस्फ़ार तौरेत में (फ़ा45) यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की सिफ़त है कि उन्हें जो हुक्म दिया गया था वह उन्होंने पूरी तरह अदा किया इसमें बेटे का ज़बह भी है और अपना आग में डाला जाना भी और इसके इलावा और मामूरात भी इसके बाद अल्लाह तआ़ला उस मज़मून का ज़िक्र फ़रमाता है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की किताब और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के सहीफ़ों में मज़कूर फ़रमाया गया था (फ़ा46) और कोई दूसरे गुनाह पर नहीं पकड़ा जाता इसमें उस शख़्स के क़ौल का इबताल है जो वलीद बिन मुग़ीरा के अ़ज़ाब का ज़िम्मेदार बना था और उसके गुनाह अपने ज़िम्मे लेने को कहता था। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि ज़मानए हज़रत इब्राहीम से पहले लोग आदमी को दूसरे के गुनाह पर भी पकड़ लेते थे अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया होता तो बजाए उस क़ातिल के उसके बेटे या भाई या बीबी या ग़ुलाम को क़त्ल कर देते थे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ज़माना आया तो आपने उसकी मुमानअ़त फ़रमाई और अल्लाह तआ़ला का यह हुक्म पहुंचाया कि कोई किसी के बारे गुनाह में माख़ूज़ नहीं (फ़ा47) यानी अ़मल मुराद यह है कि आदमी अपनी ही नेकियों से फ़ाइदा पाता है यह मज़मून भी सुहुफ़े इब्राहीम व मूसा का है अ़लैहिमुस्सलाम और कहा गया है कि उन ही उम्मतों के लिए ख़ास था हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह हुक्म हमारी शरीअ़त में आयत अल्हक़्ना बिहिम् .ज़ुर्रि-य्य-तहुम् से मन्सूख़ हो गया हदीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि मेरी मां की वफ़ात हो गई अगर मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा दूं क्या नाफ़ेअ़ होगा फ़रमाया हां मसाइल और बकसरत अहादीस से साबित है कि मय्यत को सदक़ात व ताआ़त से जो सवाब पहुंचाया जाता है पहुंचता है और इस पर उलमाए उम्मत का इज्माअ़ है और इसी लिए मुसलमानों में मामूल है कि वह अपने अमवात को फ़ातिहा सोम चहल्लुम बरसी उर्स वग़ैरह ताआ़त व सदक़ात से सवाब पहुंचाते रहते हैं यह अ़मल अहादीस के बिल्कुल मुताबिक़ है इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि यहां इन्सान से काफ़िर मुराद है और माना यह हैं कि काफ़िर को कोई भलाई न मिलेगी बजुज़ इसके जो उसने की हो कि दुनिया ही में वुसअ़ते रिज़्क़ या तन्दुरुस्ती वग़ैरह से उसका बदला दे दिया जायेगा ताकि आख़िरत में उसका

कुछ हिस्सा बाक़ी न रहे और एक माना आयत के मुफ़स्सिरीन ने यह भी बयान किये हैं कि आदमी बमुक्तज़ाए अ़द्ल वही पाएगा जो उसने किया हो और अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से जो चाहे अ़ता फ़रमाए और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि मोमिन के लिए दूसरा मोमिन जो करता है वह नेकी ख़ुद उसी मोमिन की शुमार की जाती है जिसके लिए की गई क्योंकि उसका करने वाला मिस्ल नाइब व वकील के उसका क़ाइम मक़ाम होता है। (फ़ा48) आख़िरत में। (फ़ा49) आख़िरत में उसी की तरफ़ रुजूअ़ है वही आमाल की जज़ा देगा। (फ़ा50) जिसे चाहा खुश किया जिसे चाहा ग़मगीन किया (फ़ा51) यानी दुनिया में मौत दी और आख़िरत में ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई या यह माना कि बाप दादा को मौत दी और उनकी औलाद को ज़िन्दगी बख़्शी या यह मुराद कि काफ़िरों को मौत कुफ़्र से हलाक किया और ईमानदारों को ईमानी ज़िन्दगी बख़्शी (फ़ा52) रहम में। (फ़ा53) यानी मौत के बाद ज़िन्दा फ़रमाना। (फ़ा54) जो कि शिद्दते गरमा में जौज़ा के बाद तालेअ़ होता है अहले जाहिलियत उसकी इबादत करते थे इस आयत में बताया गया कि सब का रब अल्लाह है इस सितारा का रब भी अल्लाह ही है लिहाज़ा इसी की इबादत करो। (फ़ा55) बादे सर सर से आ़द दो हैं एक तो क़ौमे हूद उनको पहली आ़द कहते हैं और उनके बाद को दूसरी आ़द कि वह उनहें अऒक़ाब थे (फ़ा56) जो सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम थी। (फ़ा57) ग़र्क़ करके हलाक किया। (फ़ा58) कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम उन में हज़ार बरस के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा रहे मगर उन्होंने दावत क़बूल न की और उनकी सरकशी कम न हुई। (फ़ा59) मुराद इससे क़ौमे लूत की बस्तियां हैं जिन्हें हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही उठा कर औंधा डाल दिया और ज़ेर व ज़बर कर दिया (फ़ा60) यानी निशान किये हुए पत्थर बरसाए (फ़ा61) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा62) जो अपनी क़ौमों की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे (फ़ा63) यानी क़ियामत (फ़ा64) यानी वही उसको ज़ाहिर फ़रमाएगा या यह माना हैं कि उसके अह्वाल और शदाइद को अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं दफ़अ़ कर सकता और अल्लाह तआ़ला दफ़अ़ न फ़रमाएगा। (फ़ा65) यानी क़ुरआन मजीद से मुन्किर होते (फ़ा66) उसके वादा वईद सुनकर (फ़ा67) कि उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं।

(बक़िया सफ़हा 854 का) जाहिलाना तौर पर जादू ही जादू कहते रहे सिहाह की अहादीसे कसीरा में इस मोअ़्जेज़ए अ़ज़ीमा का बयान है और ख़बर इस दर्जा शोहरत को पहुंच गई है कि इसका इन्कार करना अ़क़्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है। (फ़ा4) अहले मक्का नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिद्क़ व नबुव्वत पर दलालत करने वाली। (फ़ा5) इस की तस्दीक़ और नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर ईमान लाने से। (फ़ा6) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और उन मोअ़्जेज़ात को जो अपनी आंखों से देखे (फ़ा7) उन अबातील के जो शैतान ने उनके दिल नशीन की थीं कि अगर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोअ़्जेज़ात की तस्दीक़ की तो उनकी सरदारी तमाम आ़लम में मुसल्लम हो जायेगी और क़ुरैश की कुछ भी इज़्ज़त व क़दर बाक़ी न रहेगी। (फ़ा8) वह अपने वक़्त पर होने ही वाला है कोई उसको रोकने वाला नहीं सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दीन ग़ालिब होकर रहेगा। (फ़ा9) पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों की तकज़ीब करने के सबब हलाक किये गए। (फ़ा10) कुफ़्र व तकज़ीब से और इन्तेहा दर्जा की नसीहत (फ़ा11) क्योंकि वह नसीहत व अन्दाज़ से पन्द पेज़ीर होने वाले नहीं *(व का-न हाज़ा क़ब्लल् अम्रि बिलुक़्तालि सुम्-म नुसि-ख़)* (फ़ा12) यानी हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम सख़रए बैतुल मुक़द्दस पर खड़े होकर। (फ़ा13) जिसकी मिस्ल सख़्ती कभी न देखी होगी और वह हौले क़ियामत व हिसाब है। (फ़ा14) हर तरफ़ ख़ौफ़ से हैरान नहीं जानते कहां जायें। (फ़ा15) यानी हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ की तरफ़। (फ़ा16) यानी क़ुरैश से। (फ़ा17) नूह अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा18) और धमकाया कि अगर तुम अपने पन्द व नसीहत और वअ़्ज़ व दावत से बाज़ न आये तो हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे संगसार कर डालेंगे (फ़ा19) जो चालीस रोज़ तक न थमा (फ़ा20) यानी ज़मीन से इस क़दर पानी निकला कि तमाम ज़मीन मिस्ल चश्मों के हो गई। (फ़ा21) आसमान से बरसने वाले और ज़मीन से उबलने वाले (फ़ा22) और लौहे महफ़ूज़ में मकतूब थी कि तूफ़ान इस हद तक पहुंचेगा

(बक़िया सफ़हा 856 का) (फ़ा56) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा57) हमारे अ़ज़ाब से (फ़ा58) और उनकी तस्दीक़ न की (फ़ा59) और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आप हमारे और अपने मेहमानों के दर्मियान दख़ील न हों उन्हें हमारे हवाले कर दें और यह उन्होंने नीयते फ़ासिद और ख़बीस इरादा से कहा था और मेहमान फ़रिश्ते थे उन्होंने हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आप इन्हें छोड़ दीजिये घर में आने दीजिये जभी वह घर में आये तो हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने एक दस्तक दी (फ़ा60) फ़ौरन वह अन्धे हो गए और आंखें ऐसी नापैद हो गईं कि निशान भी बाक़ी न रहा चेहरे सपाट हो गए हैरत-ज़दा मारे मारे फिरते थे दरवाज़ा हाथ न आता था हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें दरवाज़े से बाहर किया (फ़ा61) जो तुम्हें हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने सुनाये थे (फ़ा62) जो अ़ज़ाब आख़रत तक बाक़ी रहेगा (फ़ा63) हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम तो फ़िरऔ़नी उन पर ईमान न लाये (फ़ा64) जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दी गईं थीं (फ़ा65) अ़ज़ाब के साथ (फ़ा66) ऐ अहले मक्का (फ़ा67) यानी उन क़ौमों से ज़्यादा क़वी और तवाना हैं या कुफ़्र व इनाद में कुछ उन से कम से हैं (फ़ा68) कि तुम्हारे कुफ़्र की गिरिफ़्त न होगी और तुम अ़ज़ाबे इलाही से अमन में रहोगे (फ़ा69) कुफ़्फ़ारे मक्का (फ़ा70) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से। (फ़ा71) कुफ़्फ़ारे मक्का की (फ़ा72) और इस तरह भागेंगे कि एक भी क़ाइम न रहेगा **शाने नुज़ूलः** रोज़े बद्र जब अबू जहल ने कहा कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे यह आयते करीमा नाज़िल हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़िरह पहन कर यह आयत तिलावत फ़रमाई फिर ऐसा ही हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़तह हुई और कुफ़्फ़ार को हज़ीमत हुई (फ़ा73) यानी इस अ़ज़ाब के बाद उन्हें रोज़े क़ियामत के अ़ज़ाब का वादा है (फ़ा74) दुनिया के अ़ज़ाब से उसका अ़ज़ाब बहुत ज़्यादा अशद

(बक़िया सफ़हा 858 का) (फ़ा6) और अपने मलाइका का मसकन और अपने अहकाम का जाए सुदूर बनाया (फ़ा7) जिससे अशिया का वज़न किया जाये और उनकी मिक़दारें मालूम हों ताकि लेन देन में अद्ल क़ाइम रखा जाये (फ़ा8) ताकि किसी की हक़ तलफ़ी न हो (फ़ा9) जो इसमें रहती बस्ती है ताकि इसमें आराम करें और फ़ाइदे उठायें (फ़ा10) जिनमें बहुत बरकत है (फ़ा11) मिस्ल गेहूं जौ वग़ैरह के (फ़ा12) इस सूरह शरीफ़ा में यह आयत इकत्तीस बार आई है बार बार निअ्मतों का ज़िक्र फ़रमा कर यह इरशाद फ़रमाया गया है कि अपने रब की कौनसी निअ्मत को झुटलाओगे यह हिदायत व इरशाद का बेहतरीन उस्लूब है ताकि सामेअ् के नफ़्स को तम्बीह हो और उसे अपने जुर्म और ना-सपासी का हाल मालूम हो जाये कि उसने किस क़दर निअ्मतों को झुटलाया है और उसे शर्म आये और वह अदाए शुक्र व ताअ्त की तरफ़ माइल हो और यह समझ ले कि अल्लाह तआ़ला की बेशुमार निअ्मतें इस पर हैं। हदीस सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत मैं ने जिन्नात को सुनाई वह तुम से अच्छा जवाब देते थे जब मैं आयत फ़-बि-अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तु-कज़्ज़िबान पढ़ता वह कहते ऐ रब हमारे हम तेरी किसी निअ्मत को नहीं झुटलाते तुझे हम्द (तिर्मिज़ी व क़ाल ग़रीब) (फ़ा13) यानी ख़ुश्क मिट्टी से जो बजाने से बजे और कोई चीज़ खनखनाती आवाज़ दे फिर उस मिट्टी को तर किया कि वह मिस्ल गारे के हो गई फिर उसको गलाया कि वह मिस्ल सियाह कीच के हो गई। (फ़ा14) यानी ख़ालिस बे धुयें वाले शोअ्ला से (फ़ा15) दोनों पूरब और दोनों पच्छिम से मुराद आफ़ताब के तुलूअ् होने के दोनों मक़ाम हैं गर्मी के भी और जाड़े के भी इसी तरह ग़ुरूब होने के भी दोनों मक़ाम हैं। (फ़ा16) शीरीं और शोर। (फ़ा17) न उनके दर्मियान ज़ाहिर में कोई फ़ासिल न हाइल। (फ़ा18) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से (फ़ा19) हर एक अपनी हद पर रहता है और किसी का ज़ाइक़ा तब्दील नहीं होता।

(बक़िया सफ़हा 859 का) रद्द में नाज़िल हुई जो कहते थे कि अल्लाह तआ़ला सनीचर के रोज़ कोई काम नहीं करता उनके क़ौल का बुतलान ज़ाहिर फ़रमाया गया मन्क़ूल है कि एक बादशाह ने अपने वज़ीर से इस आयत के माना दरियाफ़्त किये उसने एक रोज़ की मुहलत चाही और निहायत मुतफ़क्किर व मग़मूम होकर अपने मकान पर आया उसके एक हबशी ग़ुलाम ने वज़ीर को परेशान देख कर कहा कि ऐ मेरे आक़ा आपको क्या मुसीबत पेश आई बयान कीजिये वज़ीर ने बयान किया तो ग़ुलाम ने कहा कि इसके माना बादशाह को मैं समझा दूंगा वज़ीर ने उसको बादशाह के सामने पेश किया तो ग़ुलाम ने कहा कि ऐ बादशाह अल्लाह की शान यह है कि वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में और मुर्दे से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दे से मुर्दा और बीमार को तन्दुरुस्ती देता है और तन्दुरुस्त को बीमार करता है मुसीबतज़दा को रिहाई देता है और बे ग़मों को मुसीबत में मुब्तला करता है इज़्ज़त वालों को ज़लील करता है ज़लीलों को इज़्ज़त देता है मालदारों को मुहताज करता है मुहताजों को मालदार बादशाह ने ग़ुलाम का जवाब पसन्द किया और वज़ीर को हुक्म दिया कि इस ग़ुलाम को ख़िलअ्ते वुज़ारत पहनाये ग़ुलाम ने वज़ीर से कहा ऐ आक़ा यह भी अल्लाह तआ़ला की एक शान है। (फ़ा25) जिन्न व इन्स के। (फ़ा26) तुम उससे कहीं भाग नहीं सकते (फ़ा27) रोज़े क़ियामत जब तुम क़ब्रों से निकलोगे (फ़ा28) हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया लपट में धुआँ हो तो उसके सब अजज़ा जलाने वाले न होंगे कि ज़मीन के अज्ज़ा शामिल हैं जिन से धुआँ बनता है और धुयें में लपट हो तो वह पूरा सियाह और अंधेरा न होगा कि लपट की रंगत शामिल है उन पर बे धुयें की लपट भेजी जाएगी जिसके सब अज्ज़ा जलाने वाले और बे लपट का धुआँ जो सख़्त काला अंधेरा और उसी के वजह करीम की पनाह। (फ़ा29) उस अ़ज़ाब से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे बल्कि यह लपट और धुआँ तुम्हें महशर की तरफ़ ले जायेंगे पहले से इसकी ख़बर दे देना यह भी अल्लाह तआ़ला का लुत्फ़ व करम है ताकि उसकी नाफ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आपको इस बला से बचा सको। (फ़ा30) कि जगह जगह से शक़ और रंगत का सुर्ख़ (हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू)। (फ़ा31) यानी जबकि क़ब्रों से उठाये जायेंगे और आसमान फटेगा।

(बक़िया सफ़हा 862 का) है कि वह इस्लाम की तरफ़ सबक़त करने वाले हैं और एक क़ौल यह है कि वह मुहाजिरीन व अन्सार हैं जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं। (फ़ा12) यानी साबिक़ीन अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मतें हैं ज़मानए हज़रत आदम से हमारे सरकार सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अहदे मुबारक तक की जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है लेकिन यह क़ौल निहायत ज़ईफ़ है अगरचे मुफ़स्सिरीन ने उसके वुजूहे ज़ोअ्फ़ के जवाब में बहुत सी तौजीहात भी की हैं क़ौल सही तफ़सीर में यह है कि अगलों से उम्मते मुहम्मदिया ही के पहले लोग मुहाजिरीन व अन्सार में से जो साबिक़ीन अव्वलीन हैं वह मुराद हैं और पिछलों से उनके बाद वाले अहादीस से भी इसकी ताईद होती है हदीसे मरफ़ूअ् में है कि अव्वलीन व आख़िरीन यहां इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और यह भी मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दोनों गरोह मेरी ही उम्मत के हैं। (तफ़सीर कबीर व बहरुल उलूम वग़ैरह) (फ़ा13) जिनमें लअ्ल याक़ूत मोती वग़ैरह जवाहरात जड़े होंगे। (फ़ा14) हुस्ने इशरत के साथ बा शान व शिोह एक दूसरे को देख कर मसरूर व दिलशाद होंगे। (फ़ा15) आदाबे ख़िदमत के साथ। (फ़ा16) जो न मरें न बूढ़े हों न उनमें तग़य्युर आए यह अल्लाह तआ़ला ने अहले जन्नत की ख़िदमत के लिए जन्नत में पैदा फ़रमाये। (फ़ा17) बख़िलाफ़ शराबे दुनिया के कि उसके पीने से हवास मख़्तल हो जाते हैं।

(बक़िया सफ़हा 863 का) माना यह होंगे कि औरतें फ़ज़्ल व जमाल में बुलन्द दर्जा रखती होंगी। (फ़ा29) जवान और उनके शौहर भी जवान और यह जवानी हमेशा क़ाइम रहने वाली। (फ़ा30) यह अस्हाबे यमीन के दो गरोहों का बयान है कि वह इस उम्मत के पहलों पिछलों दोनों गरोहों में से होंगे पहले गरोह तो अस्हाबे रसूलुल्लाह हैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और पिछले

उनके बाद वाले इससे पहले रुकूअ़ में साबिक़ीन मुक़र्रबीन की दो जमाअ़तों का ज़िक्र था और इस आयत में अस्हाबे यमीन के दो गरोहों का बयान है। (फ़ा31) जिनके नामए आमाल बायें हाथों में दिये जायेंगे। (फ़ा32) उनका हाल शक़ावत में अ़जीब है उनके अ़ज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वह इस हाल में होंगे। (फ़ा33) जो निहायत तारीक व सियाह होगा। (फ़ा34) दुनिया के अन्दर। (फ़ा35) यानी शिर्क की।

(बक़िया सफ़हा 868 का) न हो न निस्फ़े मुद की मुद एक पैमाना है जिससे जौ नापे जाते हैं। **शाने नुज़ूलः** कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई क्योंकि आप पहले वह शख़्स हैं जो इस्लाम लाये और पहले वह शख़्स हैं जिसने राहे ख़ुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हिमायत की। (फ़ा28) यानी पहले ख़र्च करने वालों से भी और फ़तह के बाद ख़र्च करने वालों से भी। (फ़ा29) अलबत्ता दर्जात में तफ़ावुत है क़ब्ल फ़तह ख़र्च करने वालों का दर्जा आला है। (फ़ा30) यानी ख़ुश दिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च करे इस इनफ़ाक़ को उस मुनासबत से क़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इस पर जन्नत का वादा फ़रमाया गया है। (फ़ा31) पुलसिरात पर। (फ़ा32) यानी उनके ईमान व ताअ़त का नूर। (फ़ा33) और जन्नत की तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है।

(बक़िया सफ़हा 871 का) उमूरे ख़ैर में ख़र्च न करें और हुक़ूक़े मालिया की अदा से क़ासिर रहें। (फ़ा76) इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि यह यहूद के हाल का बयान है और बुख़्ल से मुराद उनका सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उन औसाफ़ को छुपाना है जो कुतुबे साबिक़ा में मज़कूर थे। (फ़ा77) ईमान से या माल ख़र्च करने से या ख़ुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी से। (फ़ा78) अहकाम व शराअ़े की बयान करने वाली। (फ़ा79) तराज़ू से मुराद अ़द्ल है माना यह हैं कि हमने अ़द्ल का हुक्म दिया और एक क़ौल यह है कि तराज़ू से वज़न का आला ही मुराद है मरवी है कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास तराज़ू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इससे वज़न करें (फ़ा80) और कोई किसी की हक़ तलफ़ी न करे (फ़ा81) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि उतारना यहां पैदा करने के माना में है मुराद यह है कि हमने लोहा पैदा किया और लोगों के लिए मुआ़विन से निकाला और उन्हें इसकी सनअ़त का इल्म दिया और यह भी मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने चार बाबरकत चीज़ें आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतारीं, लोहा, आग, पानी, नमक (फ़ा82) और निहायत क़ुव्वत कि इससे अस्लहा और आलाते जंग बनाये जाते हैं (फ़ा83) कि सनअ़तों और हिरफ़तों में वह बहुत काम आता है ख़ुलासा यह है कि हमने रसूलों को भेजा और उनके साथ उन चीज़ों को नाज़िल फ़रमाया कि लोग हक़ व अ़द्ल का मुआमला करें (फ़ा84) यानी उसके दीन की

(बक़िया सफ़हा 872 का) कहलाता है वह ममनूअ़ और नाजाइज़ है और बिदअ़ते सइया हदीस शरीफ़ में वह बताई गई है जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो उसके निकालने से कोई सुन्नत उठ जाये इससे हज़ारहा मसाइल का फ़ैसला हो जाता है जिनमें आज कल लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़्सानी से ऐसे उमूरे ख़ैर को बिदअ़त बता कर मना करते हैं जिन से दीन की तक़वियत व ताईद होती है और मुसलमानों को उख़रवी फ़वाइद पहुंचते हैं और वह ताअ़ात व इबादात में ज़ौक़ व शौक़ के साथ मश्ग़ूल रहते हैं ऐसे उमूर को बिदअ़त बताना क़ुरआन मजीद की इस आयत के सरीह ख़िलाफ़ है। (फ़ा92) जो दीन पर क़ाइम रहे थे। (फ़ा93) जिन्होंने रहबानियत को तर्क किया और दीने हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम से मुनहरिफ़ हो गए। (फ़ा94) हज़रत मूसा व हज़रत ईसा पर अ़लैहिमस्सलाम यह ख़िताब अहले किताब को है उनसे फ़रमाया जाता है। (फ़ा95) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा96) यानी तुम्हें दूना अज्र देगा क्योंकि तुम पहली किताब और पहले नबी पर भी ईमान लाए और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और क़ुरआन पाक पर भी (फ़ा97) सिरात पर (फ़ा98) वह उसमें से कुछ नहीं पा सकते न दूना अज्र न नूर न मग़फ़िरत क्योंकि वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान न लाये तो उनका पहले अम्बिया पर ईमान लाना भी मुफ़ीद न होगा **शाने नुज़ूलः** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई और उसमें मोमिनीन अहले किताब को सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ऊपर ईमान लाने पर दूने अज्र का वादा दिया गया तो कुफ़्फ़ार अहले किताब ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लायें तो दूना अज्र मिले और अगर न लायें तो एक अज्र जब भी रहेगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उनके इस ख़्याल का अबताल कर दिया गया।

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖۗ وَ اللّٰهُ یَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ۝ اَلَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ
مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَیَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَ الَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ
ثُمَّ یَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ شَهْرَیْنِ مُتَتَابِعَیْنِ
مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّیْنَ مِسْكِیْنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ یُحَآدُّوْنَ

सूरतुल् मुजादलति

(मदनी है इसमें 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजा–दिलु–क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि वल्लाहु यस्मअु तहावु–रकुमा इन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर(1)अल्लज़ी–न युज़ाहिरू–न मिन्कुम् मिन् निसाइहिम् मा हुन्–न उम्म्हातिहिम् इन् उम्म्हातुहुम् इल्लल्लाई व–लद्नहुम् व इन्नहुम् ल–यक़ूलू–न मुन्करम् मिनल्क़ौलि वज़ूरन् व इन्नल्ला–ह ल–अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूर(2)वल्लज़ी–न युज़ाहिरू–न मिन् निसाइहिम् सुम्–म यअूदू–न लिमा क़ालू फ़–तह्रीरु र–क़–बतिम् मिन् क़ब्लि अंय्य–त–मास्सा ज़ालिकुम् तू–अ़ज़ू–न बिही वल्लाहु बिमा तअ्मलू–न ख़बीर(3)फ़–मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु–तताबिऔनि मिन् क़ब्लि अंय्य–तमास्सा फ़–मल्लम् यस्ततिअ़् फ़इत्आमु सित्ती–न मिस्कीनन् ज़ालि–क लितुअमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तिल्–क हुदूदुल्लाहि व लिल्काफ़िरी–न अ़ज़ाबुन् अलीम(4)इन्नल् लज़ी–न युहाद्दूनल्ला–ह

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

बेशक अल्लाह ने सुनी उसकी बात जो तुम से अपने शौहर के मुआ़मले में बहस करती है (फ़ा2) और अल्लाह से शिकायत करती है और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है बेशक अल्लाह सुनता देखता है।(1) वह जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कह बैठते हैं (फ़ा3) वह उनकी माँयें नहीं (फ़ा4) उनकी माँयें तो वही हैं जिनसे वह पैदा हैं (फ़ा5) और वह बेशक बुरी और निरी झूठ बात कहते हैं (फ़ा6) और बेशक अल्लाह ज़रूर माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।(2) और वह जो अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कहें (फ़ा7) फिर वही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके (फ़ा8) तो उन पर लाज़िम है (फ़ा9) एक बर्दा आज़ाद करना (फ़ा10) क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगायें (फ़ा11) यह है जो नसीहत तुम्हें की जाती है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(3) फिर जिसे बर्दा न मिले तो (फ़ा12) लगातार दो महीने के रोज़े (फ़ा13) क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगायें (फ़ा14)फिर जिससे रोज़े भी न हो सकें(फ़ा15)तो साठ मिस्कीनों का पेट भरना (फ़ा16)यह इस लिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखो (फ़ा17) और यह अल्लाह की हदें हैं (फ़ा18) और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(4) बेशक वह जो मुख़ालफ़त करते हैं

(फ़ा1) सूरह मुजादला मदनी है इसमें तीन रुकूअ़ बाईस आयतें 475 कलिमे 1792 हरफ़ हैं। (फ़ा2) वह ख़ौला बिन्त सअ़लबा थी औस बिन सामत की बीबी शाने नुज़ूल किसी बात पर औस ने उनसे कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है यह कहने के बाद औस को नदामत हुई यह कलिमा ज़मानाए जाहिलियत में तलाक़ था औस ने कहा मेरे ख़्याल में तू मुझ पर हराम हो गई ख़ौला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत मे हाज़िर होकर तमाम वाक़िआ़त अर्ज़ किये और अर्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका मां बाप गुज़र गए उम्र ज़्यादा हो गई बच्चे छोटे छोटे हैं उनके बाप के पास छोड़ूं तो हलाक हो जायें अपने साथ रखूं तो भूखे मर जायें क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शौहर के दर्मियान जुदाई न हो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तेरे बाब में मेरे पास कोई हुक्म नहीं यानी अभी तक ज़िहार के **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ

اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ

اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ

व रसू–लहू कुबितू कमा कुबि–तल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् बय्यिनातिन् व लिल्काफ़िरी–न अज़ाबुम् मुहीन(5)यौ–म यब्अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू अह्साहुल्लाहु व नसूहु वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(6)अलम् त–र अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मा यकूनु मिन् नज्वा सला–सतिन् इल्ला हु–व राबिअ़ुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु–व सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् ज़ालि–क व ला अक्स़–र इल्ला हु–व म–अ़हुम् ऐ–न मा कानू सुम्–म यु–नब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल् क़िया–मति इन्नल्ला–ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(7)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न नुहू अ़निन् नज्वा सुम्–म यअ़ूदू–न लिमा नुहू अ़न्हु व य–तनाजौ–न बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व मअ़्सि–यतिर् रसूलि व इज़ा जाऊ–क ह़य्यौ–क बिमा लम् युह़य्यि–क बिहिल्लाहु व यक़ूलू–न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौला यु–अ़ज्जिबु–नल्लाहु बिमा नक़ूलु ह़स्बुहुम् जहन्नमु यस्लौ–नहा फ़बिअ्सल् मसीर(8)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त–तनाजौ बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व मअ़्सि–यतिर् रसूलि

अल्लाह और उसके रसूल की ज़लील किये गए जैसे उनसे अगलों को ज़िल्लत दी गई (फ़ा19) और बेशक हमने रौशन आयतें उतारीं (फ़ा20) और काफ़िरों के लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब है।(5) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा (फ़ा21) फिर उन्हें उनके कोतक जता देगा (फ़ा22) अल्लाह ने उन्हें गिन रखा है और वह भूल गए (फ़ा23) और हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(6) (रुकूअ़ 1) ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा24) जहां कहीं तीन शख़्सों की सरगोशी हो (फ़ा25) तो चौथा वह मौजूद है (फ़ा26) और पांच की (फ़ा27) तो छटा वह (फ़ा28) और न उससे कम (फ़ा29) और न उससे ज़्यादा की मगर यह कि वह उनके साथ है (फ़ा30) जहां कहीं हों फिर उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा जो कुछ उन्होंने किया बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(7) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मशवरत से मना फ़रमाया गया था फिर वही करते हैं (फ़ा31) जिसकी मुमानअ़त हुई थी और आपस् में गुनाह और हद से बढ़ने (फ़ा32) और रसूल की नाफ़रमानी के मशवरे करते हैं (फ़ा33) और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे एज़ाज़ में न कहे (फ़ा34) और अपने दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अ़ज़ाब क्यों नहीं करता हमारे इस कहने पर (फ़ा35) उन्हें जहन्नम बस है उसमें धंसेंगे तो क्या ही बुरा अंजाम।(8) ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मश्वरत करो तो गुनाह और हद से बढ़ने और रसूल की नाफ़रमानी की मशवरत न करो (फ़ा36)

(फ़ा19) रसूलों की मुख़ालफ़त करने के सबब। (फ़ा20) रसूलों की सिद्क़ पर दलालत करने वाली। (फ़ा21) किसी एक को बाक़ी न छोड़ेगा (फ़ा22) रुसवा और शर्मिन्दा करने के लिए। (फ़ा23) अपने आमाल जो दुनिया में करते थे। (फ़ा24) उससे कुछ पोशीदा नहीं। (फ़ा25) और अपने राज़ आपस में गोश दर गोश कहें और अपनी मशावरत पर किसी को मुत्तलअ़ न करें। (फ़ा26) यानी अल्लाह तआ़ला उन्हें मुशाहदा करता है उनके राज़ों को जानता है। (फ़ा27) सरगोशी हो। (फ़ा28) यानी अल्लाह तआ़ला। (फ़ा29) यानी पांच और तीन से। (फ़ा30) अपने इल्म व क़ुदरत से। (फ़ा31) शाने नुज़ूलः यह आयत यहूद और मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो आपस में सरगोशियां करते और मुसलमानों की तरफ़ देखते जाते और आंखों से उनकी तरफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसलमान समझें कि उनके ख़िलाफ़ कोई पोशीदा बात है और उससे **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّیْطٰنِ لِیَحْزُنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَیْسَ بِضَآرِّهِمْ شَیْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِیْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِی الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا یَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِیْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا یَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَیْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ
عَلَیْكُمْ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ

व तनाजौ बिल्बिर्रि वत्तक़्वा वत्तक़ु–लाहल् लज़ी इलैहि तुह्शरून(9)इन्नमन्नज्वा मिनश्शैतानि लियह्–ज़ुनल् लज़ी–न आ–मनू व लै–स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बिइ–ज़्निल्लाहि व अ–लल्लाहि फ़ल्य–तवक्कलिल् मुअ्मिनून(10)या अय्युहल्–लज़ी–न आ–मनू इज़ा क़ी–ल लकुम् त–फ़स्सहू. फ़िल्–जालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् व इज़ा क़ी–लन्शुज़ू. फ़न्शुज़ू यर्–फ़अ़िल्लाहुल् लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् वल्लज़ी–न ऊतुलअ़िल्–म द–रजातिन् वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न ख़बीर(11) या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा नाजैतुमुर् रसू–ल फ़–क़द्दिमू बै–न यदै नज्वाकुम् स–द–क़–तन् ज़ालि–क ख़ैरुल् लकुम् व अत्हरु फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(12)अ–अश्फ़क़्तुम् अन् तु–क़द–दिमू बै–न यदै नज्वाकुम् स–दक़ातिन् फ़इज़् लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़–अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अतीअुल्ला–ह व रसू–लहू वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ्–मलून(13)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् मा हुम् मिन्कुम्

और नेकी और परहेज़गारी की मशवरत करो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ उठाए जाओगे।(9) वह मशवरत तो शैतान ही की तरफ़ से है (फ़ा37) इस लिए कि ईमान वालों को रंज दे और वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता बे हुक्मे खुदा के और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(10) (फ़ा38) ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दो तो जगह दो अल्लाह तुम्हें जगह देगा (फ़ा39) और जब कहा जाए उठ खड़े हो (फ़ा40) तो उठ खड़े हो अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उनके जिनको इल्म दिया गया (फ़ा41) दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(11) ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो (फ़ा42) यह तुम्हारे लिए बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हें मक़दूर न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(12) क्या तुम इससे डरे कि तुम अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़े दो (फ़ा43) फिर जब तुम ने यह न किया और अल्लाह ने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई (फ़ा44) तो नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमांबरदार रहो और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।(13) (रुकूअ़ 2) क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है (फ़ा45) वह न तुम में से

(फ़ा37) जिसमें गुनाह और हद से बढ़ना और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी हो और शैतान अपने दोस्तों को इस पर उभारता है। (फ़ा38) कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे में नहीं रहता। (फ़ा39) शाने नुज़ूलः नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बदर में हाज़िर होने वाले असहाब की इज़्ज़त करते थे एक रोज़ चन्द बद्री असहाब ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी उन्होंने हुज़ूर के सामने खड़े होकर सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर ने जवाब दिया फिर उन्होंने हाज़िरीन को सलाम किया उन्होंने जवाब दिया फिर वह इस इन्तेज़ार में खड़े रहे कि उनके लिए मजलिस में जगह की जाये मगर किसी ने जगह न दी यह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गिराँ गुज़रा तो हुज़ूर ने अपने क़रीब वालों को उठा कर उनके लिए जगह की उठने वालों को उठना शाक़ हुआ इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा40) नमाज़ के या जिहाद के या और किसी नेक काम के लिए और इसी में दाख़िल है ताज़ीम ज़िक्रे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए खड़ा होना (फ़ा41) अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त के बाइस (फ़ा42) कि इसमें बारयाबी बारगाहे रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम और फ़ुक़रा का नफ़ा है **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बारगाह में जब अग़निया ने अ़र्ज़ व मअ़रूज़ का सिलसिला **(बक़िया सफ़हा 906 पर)**

وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿14﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿15﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿16﴾ لَّن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿17﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿18﴾ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿19﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿20﴾ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿21﴾ لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿22﴾

व ला मिन्हुम् व यह्लिफ़ू–न अ़लल्कज़िबि व हुम् यअ्–लमून(14)अ–अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् इन्नहुम् सा–अ मा कानू यअ्–मलून(15)इत्त–ख़ज़ू ऐमा–नहुम् जुन्नतन् फ़–स़द्दू अ़न् सबी–लिल्लाहि फ़–लहुम् अ़ज़ाबुम् मुहीन(16)लन् तुग़्नि–य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् उलाइ–क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(17)यौ–म यब्–असुहुमुल्लाहु जमीअन् फ़–यह्लिफ़ू–न लहू कमा यह्लिफ़ू–न लकुम् व यह्सबू–न अन्नहुम् अ़ला शैइन् अला इन्नहुम् हुमुल् काज़िबून(18)इस्तह्व–ज़ अ़लैहिमुश्–शैतानु फ़–अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि उलाइ–क हिज़्बुश् शैतानि अला इन्–न हिज़्बश्शैतानि हुमुल् ख़ासिरून(19)इन्नल्लज़ी–न युहाद्दू–नल्ला–ह व रसू–लहू उलाइ–क फ़िल् अज़ल्लीन(20)क–त–बल्लाहु ल–अग़्लिबन्–न अना व रुसुली इन्नल्ला–ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़(21)ला तजिदु क़ौमंय्युअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि युवाद्दू–न मन् हाद्दल्ला–ह व रसू–लहू व लौ कानू आबा–अहुम् औ अब्ना–अहुम् औ इख़्वा–नहुम् औ अ़शी–र–तहुम् उलाइ–क क–त–ब फ़ी कुलूबिहिमुल् ईमा–न व अय्य–दहुम् बिरूहिम् मिन्हु व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु उलाइ–क हिज़्बुल्लाहि अला इन्–न हिज़्बल्लाहि हुमुल् मुफ़्लिहू–न(22)

न उनमें से (फ़ा46) वह दानिस्ता झूठी क़सम खाते हैं।(14) (फ़ा47) अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है बेशक वह बहुत ही बुरे काम करते हैं।(15) उन्होंने अपनी क़समों को (फ़ा48) ढाल बना लिया है (फ़ा49) तो अल्लाह की राह से रोका (फ़ा50) तो उनके लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब है।(16) (फ़ा51) उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न देंगे (फ़ा52) वह दोज़ख़ी हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना।(17) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा तो उस के हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खायेंगे जैसी तुम्हारे सामने खा रहे हैं (फ़ा53) और वह यह समझते हैं कि उन्होंने कुछ किया (फ़ा54) सुनते हो बेशक वही झूठे हैं।(18) (फ़ा55) उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुला दी वह शैतान के गरोह हैं सुनता है बेशक शैतान ही का गरोह हार में है।(19) (फ़ा56) बेशक वह जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वह सब से ज़्यादा ज़लीलों में हैं।(20) अल्लाह लिख चुका (फ़ा57) कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊँगा और मेरे रसूल (फ़ा58) बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है।(21) तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त की (फ़ा59) अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों (फ़ा60) यह हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की (फ़ा61) और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें अल्लाह उनसे राज़ी (फ़ा62) और वह अल्लाह से राज़ी (फ़ा63) यह अल्लाह की जमाअ़त है सुनता है अल्लाह ही की जमाअ़त कामयाब है।(22) (रुकूअ़ 3)

(फ़ा46) यानी न मुसलमान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं मुज़बज़ब (फ़ा47) शाने नुज़ूलः यह आयत **(बक़िया सफ़हा 907 पर)**

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ○ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ○ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ○ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ○ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

सूरतुल्-हश्रि

(मदनी है इसमें 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(1) हुवल्लज़ी अख़्-र-जल् लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल् किताबि मिन् दियारिहिम् लि-य अव्वलिल् ह़श्रि मा ज़-नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मा नि-अ़तुहुम् ह़ुसूनुहुम् मि-नल्लाहि फ़-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्-तसिबू व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ़्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बिऐदीहिम् व ऐदिल् मुअ्मिनी-न फ़अ्-तबिरू या उलिल् अब्सार(2)व लौला अन् क-त-बल्लाहु अ़लैहिमुल् जला-अ ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति अ़ज़ाबुन्नार(3)ज़ालि-क बिअन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसू-लहू व मंय्युशाक़्क़िल्ला-ह फ़इन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़िक़ाब(4)मा क़-तअ़्तुम् मिल्ली-नतिन् औ त-रक्तुमूहा क़ाइ-म-तन् अ़ला उसूलिहा फ़बिइज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल् फ़ासिक़ीन(5)व मा अफ़ाअल्लाहु अ़ला रसूलिही

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(1) (फ़ा2) वही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को (फ़ा3) उनके घरों से निकाला (फ़ा4) उनके पहले हश्र के लिए (फ़ा5) तुम्हें गुमान न था कि वह निकलेंगे (फ़ा6) और वह समझते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह का हुक्म उनके पास आया जहां से उनका गुमान भी न था (फ़ा7) और उस ने उनके दिलों में रोब डाला (फ़ा8) कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों (फ़ा9) और मुसलमानों के हाथों (फ़ा10) तो इबरत लो ऐ निगाह वालो।(2) और अगर न होता कि अल्लाह ने उन पर घर से उजड़ना लिख दिया था तो दुनिया ही में उन पर अ़ज़ाब फ़रमाता (फ़ा11) और उनके लिए (फ़ा12)आख़िरत में आग का अ़ज़ाब है।(3)यह इस लिए कि वह अल्लाह से और उसके रसूल से फटे रहे (फ़ा13)और जो अल्लाह और उसके रसूल से फटा रहे तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(4)जो दरख़्त तुम ने काटे या उनकी जड़ों पर क़ाइम छोड़ दिये यह सब अल्लाह की इजाज़त से था (फ़ा14) और इस लिए कि फ़ासिक़ों को रुसवा करे।(5) (फ़ा15) और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को

(फ़ा1) सूरह हश्र मदनी है इसमें तीन रुकूअ़ चौबीस आयतें 445 कलिमे एक हज़ार नौ सौ तेरह हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः यह सूरत बनी नुज़ैर के हक़ में नाज़िल हुई यह लोग यहूदी थे जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो उन्होंने हुज़ूर से इस शर्त पर सुलह की कि न आपके साथ होकर किसी से लड़ें न आप से जंग करें जब जंगे बद्र में इस्लाम की फ़तह हुई तो बनी नुज़ैर ने कहा यह वही नबी हैं जिनकी सिफ़त तौरेत में है फिर जब उहद में मुसलमानों की हज़ीमत की सूरत पेश आई तो यह शक में पड़े और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के नियाज़मन्दों के साथ अ़दावत का इज़हार किया और जो मुआ़हिदा किया था वह तोड़ दिया और उनका एक सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सवारियों को साथ लेकर मक्का मुकर्रमा पहुंचा और कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ मुआ़हिदा किया **(बक़िया सफ़हा 907 पर)**

مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً ۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ

मिन्हुम् फमा औ जफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव् व ला रिकाबिंव् व लाकिन्नल्ला–ह युसल्लितु रुसु–लहू अ़ला मंय्यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(6)मा अफ़ा–अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल्–क़ुरा फ़लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्–यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि कै ला यकू–न दू–ल–तम् बैनल् अग्नियाइ मिन्कुम् व मा आताकुमुर् रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला–ह इन्नल्ला–ह शदीदुल् अ़िक़ाब(7)लिल्फ़ु–क़राइल् मुहाजिरी–नल्लज़ी–न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वा–लिहिम् यब्तग़ू–न फ़ज़्लम् मिनल्लाहि व रिज़्वानंव् व यन्सुरू–नल्ला–ह व रसू–लहू उलाइ–क हुमुस्सादिक़ून(8)वल्लज़ी–न त–बव्–व उद्दा–र वल्ईमा–न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू–न मन् हा–ज–र इलैहिम् वला यजिदू–न फ़ी सुदूरिहिम् हा–ज–तम् मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू–न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का–न बिहिम् ख़सा–सतुन् व मंय्यू–क़ शुह्–ह नफ़्सिही फ़उलाइ–क हुमुल्मुफ़्–लिहून(9)वल्लज़ी–न जाऊ

उनसे (फ़ा16) तो तुमने उन पर न अपने घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट (फ़ा17) हां अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे (फ़ा18) और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(6) जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से (फ़ा19) वह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों (फ़ा20) और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए कि तुम्हारे अग़निया का माल न हो जाये (फ़ा21) और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमायें वह लो(फ़ा22)और जिस से मना फ़रमायें बाज़ रहो और अल्लाह से डरो (फ़ा23) बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(7) (फ़ा24) उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिए जो अपने घरों और मालों से निकाले गए (फ़ा25) अल्लाह का फ़ज़्ल (फ़ा26) और उसकी रज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल की मदद करते (फ़ा27) वही सच्चे हैं।(8) (फ़ा28) और जिन्होंने पहले से (फ़ा29) इस शहर (फ़ा30) और ईमान में घर बना लिया (फ़ा31) दोस्त रखते हैं उन्हें जो उनकी तरफ़ हिजरत करके गए (फ़ा32) और अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते(फ़ा33)उस चीज़ की जो दिये गए (फ़ा34) और अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं (फ़ा35) अगरचे उन्हें शदीद मोहताजी हो (फ़ा36) और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया (फ़ा37) तो वही कामयाब हैं।(9) और वह जो उनके

(फ़ा16) यानी यहूद बनी नुज़ैर से (फ़ा17) यानी उसके लिए तुम्हें मशक़्क़त या कोफ़्त उठाना नहीं पड़ी सिर्फ़ दो मील का फ़ासला था सब लोग प्यादा पा चले गए सिर्फ़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवार हुए। (फ़ा18) अपने दुश्मनों में से मुराद यह है कि बनी नुज़ैर से जो ग़नीमतें हासिल हुईं उनके लिए मुसलमानों को जंग करना नहीं पड़ी अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन पर मुसल्लत कर दिया तो यह माल हुज़ूर की मर्ज़ी पर है जहां चाहें ख़र्च करें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह माल मुहाजिरीन पर तक़सीम कर दिया और अन्सार में से सिर्फ़ तीन साहबे हाजत लोगों को दिया और वह अबू दोजाना समाक बिन ख़रशा और सहल बिन हनीफ़ और हारिस बिन सम्मा हैं। (फ़ा19) पहली आयत में ग़नीमत का जो हुक्म मज़कूर हुआ इस आयत में इसी की तफ़सील है और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस क़ौल की मुख़ालफ़त की और फ़रमाया कि पहली आयत अमवाल बनी नुज़ैर के बाब में नाज़िल हुई उनको अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के लिए ख़ास किया और यह आयत हर उस शहर की ग़नीमतों के बाब में है जिसको मुसलमान अपनी क़ुव्वत से हासिल करें (मदारिक) (फ़ा20) रिश्तेदारों से मुराद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अहले क़राबत हैं यानी बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब। (फ़ा21) और ग़ुरबा और फ़ुक़रा नुक़सान में रहें जैसा कि ज़मानए जाहिलियत में दस्तूर था कि ग़नीमत में से एक चहारुम तो सरदार ले लेता था बाक़ी क़ौम के लिए छोड़ देता था उसमें से मालदार लोग बहुत **(बक़िया सफ़हा 908 पर)**

مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ
وَّرَآءِ جُدُرٍ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ

मिम् बअ्दिहिम् यकूलू–न रब्ब–नग्फ़िर् लना व लिइख़्वानि–नल्लज़ी–न स–बकू़ना बिल्ईमानि व ला तज्–अल् फ़ी कुलूबिना ग़िल्लल् लिल्लज़ी–न आ–मनू रब्बना इन्न–क रऊफ़ुर् रहीम(10) अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ना–फ़कू यकूलू–न लिइख़्वानि–हिमुल् लज़ी–न क–फ़रू मिन् अहलिल्किताबि लइन् उख़्रिज्तुम् ल–नख़्रुजन्–न म–अ़कुम् व ला नुतीअु फ़ीकुम् अ–ह़–दन् अ–ब–दंव् व इन् कूतिल्तुम् ल–नन्सुरन्नकुम् वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून(11)लइन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू–न म–अ़हुम् व लइन् कूतिलू ला यन्सुरू–नहुम् व लइन् न–स़रूहुम् लयु–वल्लुन्नल् अद्बा–र सुम्–म ला युन्स़रून(12)ल–अन्तुम् अशद्दु रह्ब–तन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ौमुल् ला यफ़्क़हून(13)ला युक़ातिलू–नकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी कुरम् मुह़स़्स़–नतिन् औ मिंव्वराइ जुदुरिन् बअ्सुहुम् बै–नहुम् शदीदुन् तह्सबुहुम् जमीअंव् व कुलूबुहुम् शत्ता ज़ालि–क बिअन्नहुम् क़ौमुल् ला यअ्क़िलून(14)क–म–स़लिल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाकू वबा–ल अम्रिहिम्

बाद आए (फ़ा38) अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न रख (फ़ा39) ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है।(10) (रुकूअ़ 4) क्या तुमने मुनाफ़िक़ों को न देखा (फ़ा40) कि अपने भाईयों काफ़िर किताबियों (फ़ा41) से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए (फ़ा42) तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल जायेंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में कभी किसी की न मानेंगे (फ़ा43) और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।(11) (फ़ा44) अगर वह निकाले गए (फ़ा45) तो यह उनके साथ न निकलेंगे और उन से लड़ाई हुई तो यह उनकी मदद न करेंगे (फ़ा46) और अगर उनकी मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर (फ़ा47) मदद न पायेंगे।(12) (फ़ा48) बेशक उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा तुम्हारा डर है (फ़ा49) यह इस लिए कि वह ना–समझ लोग हैं।(13) (फ़ा50) यह सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़िला बन्द शहरों में या धुस्सों के पीछे आपस में उनकी आंच सख़्त है (फ़ा51) तुम उन्हें एक जत्था समझोगे और उनके दिल अलग अलग हैं यह इस लिए कि वह बे अक़्ल लोग हैं।(14) (फ़ा52) उनकी सी कहावत जो अभी क़रीब ज़माने में उनसे पहले थे (फ़ा53) उन्होंने अपने काम का वबाल चखा (फ़ा54)

(फ़ा38) यानी मुहाजिरीन व अन्सार के इसमें कियामत तक पैदा होने वाले मुसलमान दाख़िल हैं। (फ़ा39) यानी असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से मसला जिसके दिल में किसी सहाबी की तरफ़ से बुग़्ज़ या कदूरत हो और वह उन के लिए दुआ़ए रहमत व इस्तिग़फ़ार न करे वह मोमिनीन के अकसाम से ख़ारिज है क्योंकि यहां मोमिनीन की तीन किस्में फ़रमाई गईं, मुहाजिरीन, अन्सार उनके बाद वाले जो उनके ताबेअ़ हों और उनकी तरफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उनके लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करें तो जो सहाबा से कदूरत रखे राफ़ज़ी हो या ख़ारजी वह मुसलमानों की इन तीनों किस्मों से ख़ारिज है हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो यह दिया गया कि सहाबा के लिए इस्तिग़फ़ार करें और करते हैं यह कि गालियां देते हैं। (फ़ा40) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन अबी सलूल मुनाफ़िक़ और उसके रफ़ीक़ों को (फ़ा41) यानी यहूद बनी कुरैज़ा व बनी नुज़ैर (फ़ा42) मदीना शरीफ़ से (फ़ा43) यानी तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी का कहा न मानेंगे न मुसलमानों का न रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का (फ़ा44) यानी यहूद से मुनाफ़िक़ीन के यह सब वादे झूटे हैं उसके बाद अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ीन के हाल की ख़बर देता है। (फ़ा45) यानी यहूद (फ़ा46) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि यहूद निकाले गए और मुनाफ़िक़ीन उनके साथ न **(बक़िया सफ़हा 908 पर)**

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا
فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(15)क–म–स़लिश्–शैत़ानि इज् क़ा–ल लिल्इन्सानिक्फ़ुर् फ़–लम्मा क–फ़–र क़ा–ल इन्नी बरीउम् मिन्–क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला–ह रब्बल् आ़–लमीन(16)फ़का–न आ़क़ि–ब–तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा व ज़ालि–क जज़ाउज़्ज़ालिमीन(17)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुत् तक़ुल्ला–ह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम् मा क़द्–द–मत् लि–ग़दिन् वत्तक़ुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा तअ़्–मलून(18)व ला तकूनू कल्लज़ी–न नसुल्ला–ह फ़–अन्साहुम् अन्फ़ु–सहुम् उलाइ–क हुमुल् फ़ासिक़ून(19)ला यस्तवी अस्ह़ाबुन्नारि व अस्ह़ाबुल् जन्नति अस्ह़ाबुल् जन्नति हुमुल्फ़ाइज़ून(20) लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल् क़ुरआ–न अ़ला ज–बलिल् ल–रऐ–तहू ख़ाशिअ़म् मु–त–स़द्दिअ़म् मिन् ख़श्–यतिल्लाहि व तिल्कल् अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि ल–अ़ल्लहुम् य–त–फ़क्करून(21)हु– वल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला हु–व आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहा–दति हुवर्रह़्मानुर् रह़ीम(22)हुवल्लाहुल् लज़ी ला इला–ह इल्ला हु–व अल्मलिकुल् क़ुद्दूसुस्सलामुल् मुअ्मिनुल् मुहैमिनुल् अ़ज़ीज़ुल् जब्बारुल् मु–त–कब्बिरु सुब्ह़ा–नल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून(23)हुवल्लाहुल् ख़ालिक़ुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्माउल् ह़ुस्ना यु–सब्बिह़ु लहू मा फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व हुवल्–अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(23)

और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(15) (फ़ा55) शैतान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उसने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब।(16) (फ़ा56) तो उन दोनों का (फ़ा57) अंजाम यह हुआ कि वह दोनों आग में हैं हमेशा उसमें रहे और ज़ालिमों की यही सज़ा है।(17) (रुकूअ़ 5) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो (फ़ा58) और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा (फ़ा59) और अल्लाह से डरो (फ़ा60) बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(18) और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे (फ़ा61) तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं (फ़ा62) वही फ़ासिक़ हैं।(19) दोज़ख़ वाले (फ़ा63) और जन्नत वाले (फ़ा64) बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे।(20) अगर हम यह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते (फ़ा65) तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुआ पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से (फ़ा66) और यह मिसालें लोगों के लिए हम बयान फ़रमाते हैं कि वह सोचें।(21) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं हर निहां व अ़यां का जानने वाला (फ़ा67) वही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला।(22) वही है अल्लाह जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं बादशाह (फ़ा68) निहायत पाक (फ़ा69) सलामती देने वाला (फ़ा70) अमान बख़्शने वाला (फ़ा71) हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इ़ज़्ज़त वाला अ़ज़मत वाला तकब्बुर वाला (फ़ा72) अल्लाह को पाकी है उनके शिर्क से।(23) वही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला (फ़ा73) हर एक को सूरत देने वाला (फ़ा74) उसी के हैं सब अच्छे नाम (फ़ा75) उसकी पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(24) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा55) और मुनाफ़िक़ीन का यहूद बनी नुज़ैर के साथ सुलूक ऐसा है जैसे। (फ़ा56) ऐसे ही (बक़िया सफ़हा 908 पर)

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ○ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ○ لَنْ تَنْفَعَكُمْ
اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا

सूरतुल्–मुम्तहि़नति

(मदनी है इसमें 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया–अ तुल्कू–न इलैहिम् बिल्म–वद्दति व क़द् क–फ़रू बिमा जा–अकुम् मिनल्ह़क़्क़ि युख़रिजू–नर् रसू–ल व इय्याकुम् अन् तुअमिनू बिल्लाहि रब्बिकुम् इन् कुन्तुम् ख़–रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा–अ मरज़ाती तुसिर्रू–न इलैहिम् बिल्म–वद्दति व अना अअ़्–लमु बिमा अख़्फ़ैतुम् व मा अअ़्–लन्तुम् व मंय्यफ़्–अ़ल्हु मिन्कुम् फ़–क़द् ज़ल्–ल सवाअस् सबील(1)इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ़्दा–अंव् व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि–यहुम् व अल्सि–न–तहुम् बिस्सूइ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून(2)लन् तन्फ़–अ़कुम् अर्ह़ामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्–क़िया–मति यफ़्सिलु बै–नकुम् वल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न बसीर(3)क़द् कानत् लकुम् उस्–वतुन् ह़–स–नतुन् फ़ी इब्राही–म वल्लज़ी–न म–अ़हू इज़् क़ालू

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ (फ़ा2) तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो दोस्ती से हालांकि वह मुन्किर हैं उस हक़ के जो तुम्हारे पास आया (फ़ा3) घर से जुदा करते हैं (फ़ा4) रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा चाहने को तो उनसे दोस्ती न करो तुम उन्हें ख़ुफ़िया पयामे मुहब्बत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूं जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वह बेशक सीधी राह से बहका।(1) अगर तुम्हें पायें (फ़ा5) तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (फ़ा6) और अपनी ज़बानें (फ़ा7) बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ।(2) (फ़ा8) हरगिज़ काम न आयेंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद (फ़ा9) क़ियामत के दिन तुम्हें उनसे अलग कर देगा (फ़ा10) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(3) बेशक तुम्हारे लिए अच्छी पैरवी थी (फ़ा11) इब्राहीम और उसके साथ वालों में (फ़ा12) जब उन्होंने

(फ़ा1) सूरए मुमतहिना मदनी है इसमें दो रुकूअ़ तेरह आयतें 348 कलिमे 1510 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी कुफ़्फ़ार शाने नुजूलः बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारा मदीना तय्येबा में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुजूर में हाज़िर हुई जबकि हुजूर फ़तहे मक्का का सामान फ़रमा रहे थे हुजूर ने उससे फ़रमाया क्या तू मुसलमान होकर आई उसने कहा नहीं फ़रमाया क्या हिजरत करके आई अर्ज़ किया नहीं फ़रमाया फिर क्यों आई उसने कहा मुहताजी से तंग होकर बनी अ़ब्दुलमुत्तलिब ने उसकी इमदाद को कपड़े बनाये और सामान दिया हातिब बिन अबी बलतआ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु उससे मिले उन्होंने उसको दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त अहले मक्का के पास उसकी मअ़रेफ़त भेजा जिसका मज़मून यह था कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुम पर हमला का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो सारा यह ख़त लेकर रवाना हो गई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को इसकी ख़बर दी हुजूर ने अपने चन्द असहाब को जिनमें हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ामे रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औरत मिलेगी उसके पास हातिब बिन अबी बलतआ़ का ख़त है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है वह ख़त उससे ले लो और उसको छोड़ दो अगर इन्कार करे तो उसकी गर्दन मार दो **(बक़िया सफ़हा 909 पर)**

لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

लिक़ौमिहिम् इन्ना बु–रआउ मिन्कुम् व मिम्मा तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि क–फ़रना बिकुम् व बदा बै–नना व बै–नकुमुल् अ़दा–वतु वल्बग़्ज़ाउ अ–ब–दन् ह़त्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह़्दहू इल्ला क़ौ–ल इब्राही–म लि–अबीहि ल–अस्तग़्फ़िरन्–न ल–क व मा अम्लिकु ल–क मिनल्लाहि मिन् शैइन् रब्बना अ़लै–क त–वक्कल्ना व इलै–क अनब्ना व इलैकल् मसीर(4)रब्बना ला तज्–अ़ल्ना फ़ित्–न–तल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू वग़्फ़िर् लना रब्बना इन्न–क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(5)ल–क़द् का–न लकुम् फ़ीहिम् उस्वतुन् ह–स–नतुल् लिमन् का–न यर्जुल्ला–ह वल्यौमल् आख़ि–र व मंय्य–त–वल्–ल फ़–इन्नल्ला–ह हुवल् ग़निय्युल् ह़मीद(6)अ़–सल्लाहु अंय्यज्–अ़–ल बै–नकुम् व बै–नल्लज़ी–न आ़दैतुम् मिन्हुम् म–वद्द–तन् वल्लाहु क़दीरुन् वल्लाहु ग़फ़ूरुर् रह़ीम(7)ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी–न लम् युक़ातिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम् इन्नल्ला–ह युह़िब्बुल् मुक़्सितीन(8)इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी–न

अपनी क़ौम से कहा (फ़ा13) बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उन से जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए (फ़ा14) और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिए जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़फ़िरत चाहूंगा (फ़ा15) और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़ा का मालिक नहीं (फ़ा16) ऐ हमारे रब हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है।(4) (फ़ा17) ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़माइश में न डाल (फ़ा18) और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(5) बेशक तुम्हारे लिए (फ़ा19) उनमें अच्छी पैरवी थी (फ़ा20) उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीदवार हो (फ़ा21) और जो मुंह फेरे (फ़ा22) तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(6) (रुकूअ़ 7) क़रीब है कि अल्लाह तुम में और उनमें जो उन में से (फ़ा23) तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे (फ़ा24) और अल्लाह क़ादिर है (फ़ा25) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(7) अल्लाह तुम्हें उन से (फ़ा26) मना नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से न निकाला कि उनके साथ एहसान करो और उनसे इन्साफ़ का बरताव बरतो बेशक इंसाफ़ वाले अल्लाह को महबूब हैं।(8) अल्लाह तुम्हें उन्हीं से मना करता है जो तुम से

(फ़ा13) जो मुशरिक थी। (फ़ा14) और हमने तुम्हारे दीन की मुख़ालिफ़त इख़्तियार की। (फ़ा15) यह क़ाबिले इत्तेबाअ़ नहीं है क्योंकि वह एक वादा की बिना पर था और जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ज़ाहिर हो गया कि वह कुफ़्र पर मुस्तक़िल है तो आपने उससे बेज़ारी की लिहाज़ा यह किसी के लिए जाइज़ नहीं कि अपने बे ईमान रिश्तेदार के लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करे। (फ़ा16) अगर तू उसकी नाफ़रमानी करे और शिर्क पर क़ायम रहे। (ख़ाज़िन) (फ़ा17) यह भी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की और उन मोमिनीन की दुआ़ है जो आपके साथ और मा क़बल इस्तिस्ना के साथ मुत्तसिल है लिहाज़ा मोमिनीन को इस दुआ़ में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का इत्तेबाअ़ करना चाहिए। (फ़ा18) उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वह अपने आपको हक़ पर गुमान करने लगें। (फ़ा19) ऐ उम्मते हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा20) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके साथ वालों में (फ़ा21) अल्लाह तआ़ला की रहमत व सवाब और राहते आख़िरत का तालिब हो और अ़ज़ाबे इलाही से डरे। (फ़ा22) ईमान से और कुफ़्फ़ार से दोस्ती करे (फ़ा23) यानी कुफ़्फ़ारे मक्का में से (फ़ा24) इस तरह कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने ऐसा किया और बाद फ़तहे मक्का उनमें से कसीरुत्तादाद लोग ईमान ले आए और मोमिनीन के दोस्त और भाई **(बक़िया सफ़हा 909 पर)**

الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا
مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ
بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

का–तलूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्रजूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ा–हरू अ़ला इख़्राजिकुम् अन् तवल्लौहुम् व मंय्य–त–वल्लहुम् फ़उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(9)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा जा–अ कुमुल मुअमिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन्–न अल्लाहु अअ्–लमु बि–ईमानिहिन्–न फ़इन् अ़लिम्तुमूहुन्–न मुअमिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्–न इलल्कुफ़्फ़ारि ला हुन्–न हिल्लुल लहुम् व ला हुम् यहिल्लू–न लहुन्–न व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू व ला जुना–ह अ़लैकुम् अन् तन्किहू. हुन्–न इज़ा आतैतुमू हुन्–न उजू–रहुन्–न व ला तुम्सिकू बिअ़ि–समिल् कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्यस्–अलू मा अन्फ़क़ू ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि यह्कुमु बै–नकुम् वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(10)व इन् फ़ा–तकुम् शैउम् मिन् अज़्वाजिकुम् इलल्–कुफ़्फ़ारि फ़आ–क़ब्तुम् फ़आतुल्लज़ी–न ज़–ह–बत् अज़्वाजुहुम् मिस्–ल मा अन्फ़क़ू वत्तक़ुल्लाहल् लज़ी अन्तुम् बिही मुअमिनून(11)या अय्युहन्न–बिय्यु इज़ा जा–अकल् मुअमिनातु युबायिअ्–न–क अ़ला अल्ला युश्रिक्–न बिल्लाहि शैअंव् व ला यस्रिक्–न व ला यज़्नी–न व ला यक़्तुल्–न औला–द हुन्–न व ला यअ्ती–न बिबुह्तानिंय्यफ़्तरी–नहू बै–न ऐदीहिन्–न व अर्जुलिहिन्–न व ला यअ्सी–न–क फ़ी मअ्रूफ़िन् फ़बायिअ्हुन्–न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(12)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला त–त–वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द यइसू मिनल् आख़ि–रति कमा यइसल् कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल् क़ुबूर(13)

दीन में लड़े या तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उनसे दोस्ती करो (फ़ा27) और जो उनसे दोस्ती करे तो वही सितमगार हैं।(9) ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आयें तो उनका इम्तेहान कर लो (फ़ा28) अल्लाह उनके ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर वह तुम्हें ईमान वालियां मालूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न यह (फ़ा29) उन्हें हलाल (फ़ा30) न वह इन्हें हलाल (फ़ा31) और उनके काफ़िर शौहरों को दे दो जो उनका ख़र्च हुआ (फ़ा32) और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उनसे निकाह कर लो (फ़ा33) जब उनके महर उन्हें दो (फ़ा34) और काफ़िरनियों के निकाह पर जमे न रहो (फ़ा35) और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुआ (फ़ा36) और काफ़िर मांग लें जो उन्होंने ख़र्च किया (फ़ा37) यह अल्लाह का हुक्म है वह तुम में फ़ैसला फरमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(10) और अगर मुसलमानों के हाथ से कुछ उनकी औरतें काफ़िरों की तरफ़ निकल जायें (फ़ा38) फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो (फ़ा39) तो जिनकी औरतें जाती रही थीं (फ़ा40) ग़नीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उनका ख़र्च हुआ था (फ़ा41) और अल्लाह से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है।(11) ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि अल्लाह का शरीक कुछ न ठहरायेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी (फ़ा42) और न वह बोहतान लायेंगी जिसे अपने हाथों और पाँव के दर्मियान यानी मौज़ए विलादत में उठाईं (बक़िया सफ़हा 910 पर)

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۖ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۗ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ

सूरतुस्सफ़्फ़

(मदनी है इसमें 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

सब्ब–ह़ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(1)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू लि–म तक़ूलू–न मा ला तफ़्–अ़लून(2)कबु–र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्–अ़लून(3)इन्नल्ला–ह युह़िब्बुल्लज़ी–न युक़ातिलू–न फ़ी सबीलिही स़फ़्फ़न् क–अन्नहुम् बुन्यानुम् मर्सूस़ (4)व इज़् क़ा–ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि–म तुअ्ज़ू–ननी व क़त्तअ्लमू–न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् फ़–लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलू–बहुम् वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन(5)व इज़् क़ा–ल अ़ीसब्नु मर्–य–म या बनी इस्राई–ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल् लिमा बै–न य–दय्–य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि–रसूलिंय्यअ्ती मिम् बअ़्दिस्मुहू अह़्मदु फ़–लम्मा जा–अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह़्रुम् मुबीन(6)व मन्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(1)ऐ ईमान वालो क्यों कहते हो वह जो नहीं करते।(2)(फ़ा2)कितनी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वह बात कि वह कहो जो न करो।(3)बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उसकी राह में लड़ते हैं परा बांध कर गोया वह इमारत हैं रांगा पिलाई।(4)(फ़ा3)और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यों सताते हो (फ़ा4) हालांकि तुम जानते हो (फ़ा5) कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं (फ़ा6) फिर जब वह (फ़ा7) टेढ़े हुए अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिये (फ़ा8) और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को राह नहीं देता।(5) (फ़ा9) और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं अपने से पहली किताब तौरेत की तस्दीक़ करता हुआ (फ़ा10) और उन रसूल की बशारत सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लायेंगे उनका नाम अहमद है (फ़ा11) फिर जब अहमद उनके पास रौशन निशानियां लेकर तशरीफ़ लाए बोले यह खुला जादू है।(6) और उससे

(फ़ा1) सूरए सफ़्फ़ मक्की है और बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा व जम्हूर मुफ़स्सिरीन मदनी है इसमें दो रुकूअ़ चौदह आयतें 221 कलिमे और 900 हरफ़ हैं (फ़ा2) **शाने नुज़ूलः** सहाबा किराम की एक जमाअ़त गुफ़्तगूयें कर रही थी यह वह वक़्त था जब तक कि हुक्मे जिहाद नाज़िल नहीं हुआ था इस जमाअ़त में यह तज़्किरा था कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादा क्या अ़मल प्यारा है हमें मालूम होता तो हम वही करते चाहे इसमें हमारे माल और हमारी जानें काम आजातीं इस पर यह आयत नाज़िल हुई इस आयत की शाने नुज़ूल में और भी कई क़ौल हैं मिनजुमला उनके एक यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो मुसलमानों से मदद का झूठा वादा करते थे (फ़ा3) एक से दूसरा मिला हुआ हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुआ दुश्मन के मुक़ाबिल सब के सब मिस्ल शय वाहिद के। (फ़ा4) आयात का इन्कार करके और मेरे ऊपर झूठी तोहमतें लगार कर (फ़ा5) यक़ीन के साथ। (फ़ा6) और रसूल वाजिबुत्ताज़ीम होते हैं उनकी तौक़ीर और उनका एहतेराम लाज़िम है उन्हें ईज़ा देना सख़्त हराम और इन्तेहा दर्जा की बद नसीबी है। (फ़ा7) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ईज़ा देकर राहे हक़ से मुनहरिफ़ और। (फ़ा8) उन्हें इत्तेबाअ़े हक़ की तौफ़ीक़ से महरूम करके। (फ़ा9) जो उसके इल्म में नाफ़रमान हैं इस आयत में तम्बीह है कि रसूलों को **(बक़िया सफ़हा 911 पर)**

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ
مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

अज़्–लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि–ब व हु–व युद्आ इलल्–इस्लामि वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्–ज़ालिमीन(7)युरीदू–न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि–अफ़्वाहिहिम् वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल् काफ़िरून(8)हुवल्लज़ी अर्स–ल रसू–लहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि–रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून(9)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा–रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(10)तुअ्मिनू–न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू–न फ़ी सबीलिल्लाहि बि–अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून (11)यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू–बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु व मसाकि–न तय्यि–ब–तन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(12)व उख़्रा तुहिब्बू–नहा नस्रुम् मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन् व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन(13)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा–ल ईसब्नु मर्य–म लिल्हवारिय्यी–न मन् अन्सारी इलल्लाहि क़ालल् हवारिय्यू –न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़आ–म–नत् ताइ–फ़तुम् मिम् बनी इस्राई–ल व क–फ़–रत् ताइ–फ़तुन् फ़–अय्यद्नल्लज़ी–न आ–मनू अ़ला अ़दुव्विहिम् फ़–अस्बहू ज़ाहिरीन(14)

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा12) हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो (फ़ा13) और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता।(7) चाहते हैं कि अल्लाह का नूर (फ़ा14) अपने मुंहों से बुझा दें (फ़ा15) और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर।(8) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे (फ़ा16) पड़े बुरा मानें मुशरिक।(9) (रुकूअ़ 9) ऐ ईमान वालो (फ़ा17) क्या मैं बता दूं वह तिजारत जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।(10) (फ़ा18) ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो यह तुम्हारे लिए बेहतर है (फ़ा19) अगर तुम जानो।(11) (फ़ा20) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवाँ और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में हैं यही बड़ी कामयाबी है।(12) और एक निअ़मत तुम्हें और देगा (फ़ा21) जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़तह (फ़ा22) और ऐ महबूब मुसलमानों को ख़ुशी सुना दो।(13) (फ़ा23) ऐ ईमान वालो दीने ख़ुदा के मददगार हो जैसे (फ़ा24) ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा था कौन हैं जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करें हवारी बोले (फ़ा25) हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं तो बनी इसराईल से एक गरोह ईमान लाया (फ़ा26) और एक गरोह ने कुफ़्र किया (फ़ा27) तो हमने ईमान वालों को उनके दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए।(14) (फ़ा28) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा12) उसकी तरफ़ शरीक और वल्द की निस्बत करके और इसकी आयात को जादू बता कर (फ़ा13) जिसमें सआ़दते दारैन है (फ़ा14) यानी दीने बरहक़ इस्लाम (फ़ा15) क़ुरआन पाक को शेअ़र व सेहर व कहानत बता कर (फ़ा16) चुनांचे हर एक दीन ब–इनायते इलाही इस्लाम से मग़लूब हो गया मुजाहिद से मन्क़ूल है कि जब हज़रत ईसा (बक़िया सफ़्हा 911 पर)

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۗ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

सूरतुल् जुमुअ़ति

(मदनी है इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समा–वाति व मा फ़िल् अर्ज़िल् मलिकिल् क़ुद्दूसिल् अ़ज़ीज़िल् ह़कीम (1)हुवल्लज़ी ब–अ़–स़ फ़िल्–उम्मिय्यी–न रसूलम् मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व यु–अ़ल्लिमुहुमुल् किता–ब वल्ह़िक्म–त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् मुबीनिंव्(2) व आ–ख़री–न मिन्हुम लम्मा यल्ह़क़ू बिहिम् व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(3)ज़ालि–क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम(4)म–स़लुल्लज़ी–न हुम्मिलुत् तौरा–त सुम्–म लम् यह्मिलूहा क–म–स़लिल् हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन् बिअ्–स म–स़लुल् क़ौमिल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्–ज़ालिमीन(5)क़ुल् या अय्युहल्लज़ी–न हादू इन् ज़–अ़म्तुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़–त–मन्नवुल् मौ–त इन् कुन्तुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (फ़ा2) बादशाह कमाल पाकी वाला इ़ज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(1) वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा (फ़ा3) कि उन पर उसकी आयतें पढ़ते हैं (फ़ा4) और उन्हें पाक करते हैं (फ़ा5) और उन्हें किताब और उन्हें हिकमत का इल्म अ़ता फ़रमाते हैं (फ़ा6) और बेशक वह इससे पहले (फ़ा7) ज़रूर खुली गुमराही में थे।(2) (फ़ा8) और उनमें से (फ़ा9) औरों को (फ़ा10) पाक करते और इल्म अ़ता फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले (फ़ा11) और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(3) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(4) (फ़ा12) उनकी मिसाल जिन पर तौरेत रखी गई थी (फ़ा13) फिर उन्होंने उसकी हुक्म बरदारी न की (फ़ा14) गधे की मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए (फ़ा15) क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुठलाईं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।(5) तुम फ़रमाओ ऐ यहूदियो अगर तुम्हें यह गुमान है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं (फ़ा16) तो मरने की आरज़ू करो (फ़ा17) अगर तुम

(फ़ा1) सूरए जुमअ़ः मदनी है इस में दो रुकूअ़ ग्यारह आयतें 180 कलिमे 720 हरफ़ हैं। (फ़ा2) तस्बीह तीन तरह की है एक तस्बीहे ख़िलक़त कि हर शय की ज़ात और उसकी पैदाइश हज़रत ख़ालिके क़दीर जल्ल जलालुहू की क़ुदरत व हिकमत और उसकी वहदानियत और तन्ज़िया पर दलालत करती है दूसरी तस्बीह मअ़रेफ़त कि अल्लाह तआ़ला अपने लुत्फ़ व करम से मख़्लूक़ में अपनी मअ़रेफ़त पैदा करे तीसरी तस्बीहे ज़रूरी वह यह है कि अल्लाह तआ़ला हर एक जौहर पर अपनी तस्बीह जारी फ़रमाता है यह तस्बीहे मअ़रेफ़त पर मुरत्तब नहीं। (फ़ा3) जिसके नसब व शराफ़त को वह अच्छी तरह जानते पहचानते हैं उनका नामे पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा है सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त नबी उम्मी है इसके बहुत वजूह हैं एक इनमें से यह है कि आप उम्मते उमीय्या की तरफ़ मबऊस हुए किताबे शोयाअ् में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं उमीय्यों में एक उम्मी भेजूंगा और उस पर नबुव्वत ख़त्म कर दूंगा और एक वजह यह है कि आपकी बेअ़सत उम्मुलक़ुरा यानी मक्का मुकर्रमा में हुई और एक वजह यह **(बक़िया सफ़हा 912 पर)**

صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا
رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ِۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

सादिक़ीन(6)व ला य–त–मन्नौ–नहू अ–ब–दम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालिमीन(7)क़ुल् इन्नल्–मौतल् लज़ी तफ़िररू–न मिन्हु फ़–इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्–म तुरद्दू–न इला आ़लिमिल्–ग़ैबि वश्शहा–दति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(8)या अय्युहल्लजी–न आ–मनू इज़ा नूदि–य लिस्सलाति मिंय्यौमिल् जुमु–अ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुलबै–अ़ ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून(9)फ़–इज़ा क़ुज़ि–यतिस् सलातु फ़न्तशिरू फ़िलअर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला–ह कसीरल् ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (10)व इज़ा रऔ तिजा–र–तन् औ लह्व निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त–रकू–क क़ाइमन् क़ुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम् मिनल् लह्वि व मिनत् तिजा–रति वल्लाहु ख़ैरुर् राज़िक़ीन(11)

सच्चे हो।(6) (फ़ा18) और वह कभी उसकी आरजू न करेंगे उन कोतकों के सबब जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं (फ़ा19) और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है।(7) तुम फ़रमाओ वह मौत जिस से तुम भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है (फ़ा20) फिर उसकी तरफ़ फेरे जाआगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम ने किया था।(8) (रुकूअ़ 11) ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो जुमा के दिन (फ़ा21) तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो (फ़ा22) और ख़रीद फ़रोख़्त छोड़ दो (फ़ा23) यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।(9) फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो (फ़ा24) और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।(10) और जब उन्होंने कोई तिजारत या खेल देखा उसकी तरफ़ चल दिये (फ़ा25) और तुम्हें ख़ुतबे में खड़ा छोड़ गए (फ़ा26) तुम फ़रमाओ वह जो अल्लाह के पास है (फ़ा27) खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह का रिज़्क़ सब से अच्छा।(11) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा18) अपने इस दावे में (फ़ा19) यानी उस कुफ़्र व तकज़ीब के बाइस जो उन से सादिर हुई है (फ़ा20) किसी तरह उससे बच नहीं सकते। (फ़ा21) रोज़े जुमा उस दिन का नाम अरबी ज़बान में अ़रूबा था जुमा उसको इस लिए कहा जाता है कि नमाज़ के लिए जमाअ़तों का इज्तेमाअ़ होता है वजहे तस्मिया में और भी अक़वाल हैं सब से पहले जिस शख़्स ने उस दिन का नाम जुमा रखा वह कअ़ब बिन लुवी हैं पहला जुमा जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असहाब के साथ पढ़ा असहाबे सियर का बयान है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम जब हिजरत करके मदीना तय्येबा तशरीफ़ लाये तो बारहवीं रबीउल अव्वल रोज़ दो शम्बह को चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में इक़ामत फ़रमाई दो शम्बह सेह शम्बह चहार शम्बह पंज शम्बह यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुनियाद रखी रोज़े जुमा मदीना तय्येबा का अ़ज़्म फ़रमाया बनी सालिम बिन औफ़ के बतन वादी में जुमा का वक़्त आया उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वहां जुमा पढ़ाया और ख़ुतबा फ़रमाया जुमा का दिन सय्येदुल अय्याम है जो मोमिन इस रोज़ मरे हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला उसे शहीद का सवाब अ़ता फ़रमाता है और फ़ित्नए क़ब्र से महफ़ूज़ रखता है अज़ान से मुराद अज़ाने अव्वल है न अज़ाने सानी जो ख़ुतबा से मुत्तसिल होती है अगरचे अज़ाने अव्वल ज़माना हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु में इज़ाफ़ा की गई मगर वुजूबे सई और तर्के बैअ़ व शरा इसी से मुतअ़ल्लिक़ है (कज़ा फ़िल दुर्रे मुख़्तार) (फ़ा22) दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मक़सूद यह है कि नमाज़ के लिए तैयारी शुरू करा दे और ज़िक्रुल्लाह से जम्हूर के नज़दीक ख़ुतबा मुराद है। (फ़ा23) मसलाः इससे मालूम हुआ कि जुमा की अज़ान होते ही ख़रीद व फ़रोख़्त हराम हो जाती है और दुनिया के तमाम मशाग़िल जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत का सबब हों उसमें दाख़िल हैं अज़ान होने के बाद सब को तर्क करना लाज़िम है। मसला इस आयत से नमाज़े जुमा की फ़र्ज़ियत और बैअ़ वग़ैरह मशाग़िले दुनियविया की हुरमत और सई यानी एहतेमामे नमाज़ का वजूब साबित हुआ और ख़ुतबा भी साबित हुआ मसला जुमा मुसलमान मर्द मुकल्लफ़ आज़ाद तन्दुरुस्त मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता सेहते जुमा के लिए सात शर्तें हैं (1) शहर जहां फ़ैसला मुक़द्दमात का इख़्तियार रखने **(बक़िया सफ़हा 912 पर)**

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا جَاءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۗ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۗ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَ

सूरतुल्–मुनाफ़िकून

(मदनी है इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा–अकल्मुनाफ़िकू–न क़ालू नशहदु इन्न–क लरसूलुल्लाहि वल्लाहु यअ्–लमु इन्न–क ल–रसूलुहू वल्लाहु यशहदु इन्नल् मुनाफ़िक़ी–न लकाज़िबून(1)इत्त–ख़ज़ू ऐमा–नहुम् जुन्नतन् फ़सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि इन्नहुम् सा–अ मा कानू यअ्मलून(2)ज़ालि–क बि–अन्नहुम् आ–मनू सुम्–म क–फ़रू फ़तुबि–अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून(3)व इज़ा रऐ–तहुम् तुअ्जिबु–क अज्सामुहुम् व इंय्यक़ूलू तस्मअ् लिक़ौलिहिम् क–अन्नहुम् ख़ुशुबुम् मुसन्न–दतुन् यह्सबू–न कुल् –ल सै–हतिन् अ़लैहिम् हुमुल् अ़दुव्वु फ़ह्–ज़रहुम् क़ा–त–लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्–फ़कून(4)व

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ज़ब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं (फ़ा2) कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूठे हैं।(1) (फ़ा3) और उन्होंने अपनी क़समों को ढाल ठहरा लिया (फ़ा4) तो अल्लाह की राह से रोका (फ़ा5) बेशक वह बहुत ही बुरे काम करते हैं।(2) (फ़ा6) यह इस लिए कि वह ज़बान से ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई तो अब वह कुछ नहीं समझते।(3) और जब तू उन्हें देखे (फ़ा7) उनके जिस्म तुझे भले मालूम हों और अगर बात करें तो तू उनकी बात ग़ौर से सुने (फ़ा8) गोया वह कड़ियां हैं दीवार से टिकाई हुई (फ़ा9) हर बुलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर ले जाते हैं (फ़ा10) वह दुश्मन हैं (फ़ा11) तो उनसे बचते रहो (फ़ा12) अल्लाह उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं।(4) (फ़ा13) और

(फ़ा1) सूरए मुनाफ़िकून मदनी है इस में दो रुकूअ़ ग्यारह आयतें 180 कलिमे 976 हरफ़ हैं। (फ़ा2) तो अपने ज़मीर के ख़िलाफ़। (फ़ा3) उनका बातिन ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ नहीं जो कहते हैं उसके ख़िलाफ़ एतेक़ाद रखते हैं। (फ़ा4) कि उनके ज़रीआ़ से क़त्ल व क़ैद से महफ़ूज़ रहें। (फ़ा5) लोगों को यानी जिहाद से या सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने से तरह तरह के वसवसे और शुबहे डाल कर (फ़ा6) कि बमुक़ाबला ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करते हैं। (फ़ा7) यानी मुनाफ़िक़ीन को मिस्ले अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरह के। (फ़ा8) इब्ने उबय जसीम सबीह ख़ुबरू ख़ुश बयान आदमी था और उसके साथ वाले मुनाफ़िक़ीन क़रीब क़रीब वैसे ही थे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में जब यह लोग हाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी मालूम होतीं (फ़ा9) जिनमें बेजान तस्वीर की तरह न ईमान की रूह न अन्जाम सोचने वाली अक़्ल (फ़ा10) कोई किसी को पुकारता हो या अपनी गुमी चीज़ ढूंडता हो या लश्कर में किसी मक़सद के लिए कोई बात बुलन्द आवाज़ से कहें तो यह अपने ख़ुब्से नफ़्स और सूए ज़न से यही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें यह अन्देशा रहता है कि उनके हक़ में कोई ऐसा मज़मून नाज़िल हुआ जिससे उनके राज़ फ़ाश हो जाएं। (फ़ा11) दिल में शदीद अ़दावत रखते हैं और कुफ़्फ़ार के पास यहां की ख़बरें पहुंचाते हैं उनके जासूस हैं (फ़ा12) और उनके ज़ाहिर हाल से धोखा न खाओ। (फ़ा13) और रौशन बुरहानें क़ाइम होने के बावजूद हक़ से मुनहरिफ़ होते हैं।

إِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

इज़ा क़ी–ल लहुम् तआलौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊ–सहुम् व रऐ–तहुम् यसुद्दू–न व हुम् मुस्तक्बिरून(5)सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र्–त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम् लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम् इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन(6)हुमुल्लज़ी–न यक़ूलू–न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्–द रसूलिल्लाहि ह़त्ता यन्फ़ज़्ज़ू व लिल्लाहि ख़ज़ाइनुस् समावाति वलअर्ज़ि व ला किन्नल् मुनाफ़िक़ी–न ला यफ़्क़हून(7)यक़ूलू–न लइर् र–जअ़्ना इलल् मदी–नति लयुख़्रिजन्नल् अ–अ़ज़्ज़ु मिन्हल् अज़ल्–ल व लिल्लाहिल् अ़िज़्ज़तु व लि–रसूलिही व लिल्मुअ़्मिनी–न व लाकिन्नल् मुनाफ़िक़ी–न ला यअ़्–लमून(8)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व मंय्यफ़्–अ़ल् ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् ख़ासिरून(9)व अन्फ़िक़ू मिम् मा र–ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति–य अ–ह़–दकुमुल्मौतु फ़–यक़ू–ल रब्बि लौला अख़्ख़र्–तनी इला अ–जलिन् क़रीबिन् फ़–अस्सद्–द–क़ व अकुम् मिनस्सालिहीन(10)व लंय्यु–अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा–अ अ–जलुहा वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ़्–मलून(11)

जब उनसे कहा जाए कि आओ (फ़ा14) रसूलुल्लाह तुम्हारे लिए माफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो कि ग़ौर करते हुए मुँह फेर लेते हैं।(5) (फ़ा15) उन पर एक सा है तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अल्लाह हरगिज़ उन्हें ना बख़्शेगा (फ़ा16) बेशक अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।(6) वही हैं जो कहते हैं कि उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं यहां तक कि परेशान हो जायें और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने (फ़ा17) मगर मुनाफ़िक़ों को समझ नहीं।(7) कहते हैं हम मदीना फिर कर गए(फ़ा18) तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वह उसमें से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है (फ़ा19) और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिए है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।(8) (फ़ा20) (रुकूअ़ 13) ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे (फ़ा21) और जो ऐसा करे (फ़ा22) तो वही लोग नुक़सान में हैं।(9) (फ़ा23) और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो (फ़ा24) क़ब्ल इसके कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यों मुहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता।(10) और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मुहलत न देगा जब उसका वादा आ जाए (फ़ा25) और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(11) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा14) माफ़ी चाहने के लिए। (फ़ा15) **शाने नुज़ूलः** ग़ज़वए मरीसीअ़ से फ़ारिग़ होकर जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सरे चाह नुज़ूल फ़रमाया तो वहां यह वाक़िआ़ पेश आया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अजीर जहजा ग़ेफ़ारी और इब्ने उबय के हलीफ़ सनान बिन दबर जोहनी के दर्मियान जंग हो गई जहजाह ने मुहाजिरीन को और सनान ने अन्सार को पुकारा उस वक़्त इब्ने उबय मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में बहुत गुस्ताख़ाना और बेहूदा बातें बकीं और यह कहा कि मदीना तय्यबा पहुंच कर हम में से इज़्ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम उन्हें अपना जूठा खाना न दो तो यह तुम्हारी गर्दनों पर सवार न हों अब उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि यह मदीना से भाग जायें उसकी यह नाशाइस्ता गुफ़्तगू सुन कर ज़ैद बिन अरक़म को ताब न रही उन्होंने उससे फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम तू ही ज़लील है अपनी क़ौम में बुग़्ज़ डालने वाला और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु **(बक़िया सफ़हा 912 पर)**

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَّأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْا أَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ

सूरतुत्तग़ाबुनि

(मदनी है इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लहुल्मुल्कु व लहुल्ह़म्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(1)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् फ़मिन्कुम् काफ़िरुंव् व मिन्कुम् मुअ्मिनुन् वल्लाहु बिमा तअ्मलू–न बसीर(2)ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ बिल्ह़क़्क़ि व सव्व–रकुम् फ़–अह़्स–न सु–व–रकुम् व इलैहिल् मसीर(3)यअ्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुसिर्रू–न व मा तुअ्लिनू–न वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(4)अ–लम् यअ्तिकुम् न–बउल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ब्लु फ़ज़ाक़ू वबा–ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(5)ज़ालि–क बि–अन्नहू कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालू अ–ब–शरुंय्यह्दू–नना फ़–क–फ़रू व त–वल्लौ वस्तग़्–नल्लाहु वल्लाहु ग़निय्युन् ह़मीद(6)ज़–अ़–

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की तारीफ़ (फ़ा2) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में कोई मुसलमान (फ़ा3) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(2) उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई (फ़ा4) और उसी की तरफ़ फिरना है।(3) (फ़ा5) जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों की बात जानता है।(4) क्या तुम्हें (फ़ा6) उनकी ख़बर न आई जिन्होंने तुम से पहले कुफ़्र किया (फ़ा7) और अपने काम का वबाल चखा (फ़ा8) और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(5) (फ़ा9) यह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाते (फ़ा10) तो बोले क्या आदमी हमें राह बतायेंगे (फ़ा11) तो काफ़िर हुए (फ़ा12) और फिर गए (फ़ा13) और अल्लाह ने बेनियाज़ी को काम फ़रमाया और अल्लाह बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।(6) काफ़िरों ने

(फ़ा1) सूरह तग़ाबुन अक्सर के नज़दीक मदनी है और बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मक्की है सिवाए तीन आयतों के जो *या अय्युहल्–लज़ी–न आ–मनू इन्–न मिन् अज़्वाजिकुम्* से शुरू होती हैं इस सूरत में दो रुकूअ़ अट्ठारह आयतें दो सौ इकतालीस कलिमे 1070 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अपने मुल्क में मुतसर्रिफ़ है जो चाहता है कि जैसा चाहता है करता है न कोई शरीक न साझी सब नेअ़मतें उसी की हैं। (फ़ा3) हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआ़दत व शक़ावत फ़रिश्ता बहुक्मे इलाही उसी वक़्त लिख देता है जब कि वह अपनी मां के पेट में होता है (फ़ा4) तो लाज़िम है कि तम अपनी सीरत भी अच्छी रखो। (फ़ा5) आख़िरत में। (फ़ा6) ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का। (फ़ा7) यानी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के अहवाल मालूम नहीं जिन्होंने अम्बिया की तकज़ीब की। (फ़ा8) दुनिया में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई। (फ़ा9) आख़िरत में (फ़ा10) मोअ़जेज़े दिखाते। (फ़ा11) यानी उन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और यह कमाल बे अ़क़्ली व नाफ़हमी है फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पत्थर का ख़ुदा होना तस्लीम कर लिया। (फ़ा12) रसूलों का इन्कार करके। (फ़ा13) ईमान से

الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٠﴾ مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

मल्लज़ी–न क–फ़रू अल्लंय्युब्–असू क़ुल् बला व रब्बी लतुब्असुन्–न सुम्–म लतुनब्बउन्–न बिमा अ़मिल्तुम् व ज़ालि–क अ़लल्लाहि यसीर(7)फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न ख़बीर(8)यौ–म यज्–मअुकुम् लियौमिल् जम्अि ज़ालि–क यौमुत् तग़ाबुनि व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्यु–कफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युदख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–बदन् ज़ालिकल्फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(9)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बि–आयातिना उलाइ–क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी–न फ़ीहा व बिअ्सल्मसीर(10)मा असा–ब मिम् मुसी–बतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (11)व अ़तीअुल्ला–ह व अतीअुर् रसू–ल फ़इन् त–वल्लैतुम् फ़–इन्नमा अ़ला रसूलि–नल् बलाग़ुल् मुबीन (12)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्कलिल् मुअ्मिनून(13)या अय्युहल्लज़ी–न

बका की वह हरगिज़ न उठाए जायेंगे तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे को तक तुम्हें जता दिये जायेंगे और यह अल्लाह को आसान है।(7) तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर (फ़ा14) जो हम ने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(8) जिस दिन तुम्हें इकट्ठा करेगा सब जमा होने के दिन (फ़ा15) वह दिन है हार वालों की हार खुलने का (फ़ा16) और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उसकी बुराईयां उतार देगा और उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें कि वह हमेशा उनमें रहें यही बड़ी कामयाबी है।(9) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं वह आग वाले हैं हमेशा उसमें रहें और क्या ही बुरा अन्जाम।(10) (रुकूअ़ 15) कोई मुसीबत नहीं पहुंचती (फ़ा17) मगर अल्लाह के हुक्म से और जो अल्लाह पर ईमान लाए (फ़ा18) अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमा देगा (फ़ा19) और अल्लाह सब कुछ जानता है।(11) और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुँह फेरो (फ़ा20) तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़ सरीह पहुंचा देना है।(12) (फ़ा21) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें।(13) ऐ ईमान वालो

(फ़ा14) नूर से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है क्योंकि इसकी बदौलत गुमराही की तारीकियां दूर होती हैं और हर शय की हक़ीक़त वाज़ेह होती है। (फ़ा15) यानी रोज़े क़ियामत जिस में सब अव्वलीन व आख़िरीन जमा होंगे (फ़ा16) यानी काफ़िरों की महरूमी ज़ाहिर होने का। (फ़ा17) मौत की या मर्ज़ की या नुक़सान माल की या और कोई। (फ़ा18) और जाने कि जो कुछ होता है अल्लाह तआ़ला की मशीयत और उसके इरादे से होता है और वक़्ते मुसीबत *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़े और अल्लाह तआ़ला की अ़ता पर शुक्र और बला पर सब्र करे। (फ़ा19) कि वह और ज़्यादा नेकियों और ताअ़तों में मश्गू.ल हो। (फ़ा20) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदारी से। (फ़ा21) चुनांचे उन्होंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया और कामिल तौर पर दीन की तबलीग़ फ़रमा दी।

(बक़िया सफ़हा 904 का) तौबा क़बूल फ़मराने के बाद। (फ़ा24) इसमें कुफ़्फ़ार पर तअ़्रीज़ है कि वह दिन उनकी रुसवाई का होगा और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हुज़ूर के साथ वालों की इज़्ज़त का (फ़ा25) सिरात पर और जब मोमिन देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ गया (फ़ा26) यानी उसको बाक़ी रख कि दुख़ूल जन्नत तक बाक़ी रहे

اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾

आ–मनू इन्–न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल् लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ़्फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़–इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(14)इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्–नतुन् वल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम(15)फ़त्तकुल्ला–ह मस्त–तअ़्तुम् वस्–मअ़ू व अतीअ़ू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल् लिअन्फ़ुसिकुम् व मंय्यू–क़ शुह्–ह नफ़्सिही फ़उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहू.न(16) इन् तुक़्रिज़ुल्ला–ह क़र्ज़न् ह–स–नंय्युज़ाअ़िफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु शकूरुन् ह़लीम(17)आलिमुल्ग़ैबि वश्शहा–दतिल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(18)

तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं (फ़ा22) तो उन से एहतियात रखो (फ़ा23) और अगर माफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(14) तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं (फ़ा24) और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।(15) (फ़ा25) तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके (फ़ा26) और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो (फ़ा27) और अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपने भले को और जो अपनी जान के लालच से बचाया गया (फ़ा28) तो वही फ़लाह पाने वाले हैं।(16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे (फ़ा29) वह तुम्हारे लिए उसके दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है।(17) हर निहां और अ़यां का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला।(18) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा22) कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं। (फ़ा23) और उनके कहने में आकर नेकी से बाज़ न रहो **शाने नुज़ूलः** चन्द मुसलमानों ने मक्का मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उनकी बीबी और बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे तुम चले जाओगे हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जायेंगे यह बात उन पर असर कर गई और वह ठहर गए कुछ अर्सा बाद जब उन्होंने हिजरत की तो उन्होंने असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा कि वह दीन में बड़े माहिर और फ़क़ीह हो गए हैं यह देख कर उन्होंने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और यह क़स्द किया कि उनका ख़र्च बन्द करदें क्योंकि वही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ़ हुए थे जिसका यह नतीजा हुआ कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले असहाब इल्म व फ़िक़ह में उनसे मन्ज़िलों आगे निकल गए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपनी बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और माफ़ करने की तरग़ीब फ़रमाई गई चुनान्चे आगे इरशाद फ़रमाया जाता है। (फ़ा24) कि कभी आदमी उनकी वजह से गुनाह और मअ़सियत में मुब्तला हो जाता है और उनमें मश्ग़ूल होकर उमूरे आख़िरत के सर अंजाम से ग़ाफ़िल हो जाता है (फ़ा25) तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अमवाल व औलाद में मश्ग़ूल होकर सवाबे अ़ज़ीम खो बैठो। (फ़ा26) यानी बक़द्र अपनी वुसअ़त व ताक़त के ताअ़त व इबादत बजा लाओ यह तफ़्सीर है इत्तक़ुल्ला–ह हक़्–क़ तुक़ातिही की। (फ़ा27) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का। (फ़ा28) और उसने अपने माल को इत्मीनान के साथ हुक्मे शरीअ़त के मुताबिक़ ख़र्च किया। (फ़ा29) यानी ख़ुश दिली से नेक नीयती के साथ माल हलाल से सदक़ा दोगे। सदक़ा देने को बराहे लुत्फ़ व करम क़र्ज़ से ताबीर फ़रमाया इसमें सदक़ा की तरग़ीब है कि सदक़ा देने वाला नक़सान में नहीं है बिलयक़ीन उसकी जज़ा पाएगा।

(बक़िया सफ़्हा 900 का) वह नाशज़ा के हुक्म में है **मसलाः** जो औरत तलाक़े रजई या बाइन की इद्दत में हो उसको घर से निकलना बिल्कुल जाइज़ नहीं और जो मौत की इद्दत में हो वह हाजत पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन शब गुज़ारना उसको शौहर के घर ही में ज़रूरी है। मसला जो औरत तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उसके शौहर के दर्मियान पर्दा ज़रूरी है और ज़्यादा बेहतर यह है कि कोई और औरत उन दोनों के दर्मियान हाइल हो **मसलाः** अगर शौहर फ़ासिक़ हो या मकान बहुत तंग हो तो शौहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है। (फ़ा6) रजअ़त का। (फ़ा7) यानी इद्दत आख़िर होने के क़रीब हो। (फ़ा8) यानी तुम्हें इख़्तियार है अगर तुम उनके साथ बहुसने मुआशरत व मुराफ़क़त रहना चाहो तो रजअ़त कर लो और दिल में फिर दोबारा तलाक़ देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उनके साथ ख़ूबी से बस कर सकने की उम्मीद न हो तो महर वग़ैरह उनके हक़ अदा करके उनसे जुदाई कर लो और उन्हें ज़रर न पहुंचाओ इस तरह कि आख़िर इद्दत में रजअ़त कर लो फिर तलाक़ दे दो और इस तरह उन्हें उनकी इद्दत दराज़ करके परेशानी में डालो ऐसा न करो और ख़्वाह रजअ़त करो या फ़ुरक़त इख़्तियार करो दोनों सूरतों में दफ़ए तोहमत और रफ़ए निज़ाअ़ के लिए दोनों मुसलमानों को गवाह कर लेना मुस्तहब है चुनांचे इरशाद होता है

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ لَا تَدْرِىْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا

सूरतुत्तलाक़ि

(मदनी है इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहन्नबिय्यु इजा तल्लक़्तुमुन् निसा–अ फ़–तल्लिकू हुन्–न लिअ़िद् दतिहिन्–न व अह़्सुल अ़िद्–द–त वत्तक़ुल्ला–ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्–न मिम् बुयूतिहिन्–न व ला यख़्रुज्–न इल्ला अंय्यअ्ती–न बिफ़ाहि़–शतिम् मुबय्यि–नतिन् व तिल्–क हुदूदुल्लाहि व मंय्य–त–अ़द्–द हुदूदल्लाहि फ़–क़द् ज़–ल–म नफ़्–सहू ला तदरी ल–अ़ल्लल्ला–ह युह़्दिसु बअ्–द ज़ालि–क अम्रा(1)फ़इज़ा ब–लग्–न अ–ज–लहुन्–न फ़–अम्सिकूहुन्–न बिमअ्रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्–न बिमअ्रूफ़िंव् व अश्हिदू ज़वै अ़द्लिम् मिन्कुम् व अक़ी–

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ नबी (फ़ा2) जब तुम लोग औ़रतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इद्दत का शुमार रखो (फ़ा3) और अपने रब अल्लाह से डरो इद्दत में उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वह आप निकलें (फ़ा4) मगर यह कि कोई सरीह़ बे हयाई की बात लायें (फ़ा5) और यह अल्लाह की ह़दें हैं और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ा बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तुम्हें नहीं मालूम शायद अल्लाह इसके बाद कोई नया हुक्म भेजे।(1) (फ़ा6) तो जब वह अपनी मीआ़द तक पहुंचने को हों (फ़ा7) तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ जुदा करो (फ़ा8) और अपने में दो सिक़ह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिए

(फ़ा1) सूरह तलाक़ मदनी है इसमें दो रुकूअ़ बारह आयतें 249 कलिमे और 1060 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिये। (फ़ा3) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई उन्होंने अपनी बीबी को औरतों के अय्यामे मख़्सूसा में तलाक़ दी थी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि रजअ़त करें फिर अगर तलाक़ देना चाहें तो तुहर यानी पाकी के ज़माना में तलाक़ दें इस आयत में औरतों से मुराद मदख़ूल बिहा औरतें हैं (जो अपने शौहरों के पास गई हों) सग़ीरा हामिला और आइसा न हों (आइसा वह औरत है जिसके अय्याम बुढ़ापे की वजह से बन्द हो गए हों उनका वक़्त न रहा हो।) मसला ग़ैर मदख़ूल बिहा पर इद्दत नहीं है बाक़ी तीनों क़िस्म की औरतें जो ज़िक्र की गईं उन्हें अय्याम नहीं होते तो उनकी इद्दत हैज़ से शुमार न होगी मसला ग़ैर मदख़ूल बिहा को हैज़ में तलाक़ देना जाइज़ है आयत में जो हुक्म दिया गया उससे मुराद ऐसी मदख़ूल बिहा औरतें हैं जिनकी इद्दत हैज़ से शुमार की जाये उन्हें तलाक़ देना हो तो ऐसे तुहर में तलाक़ दें जिसमें उनसे जिमाअ़ न किया गया हो फिर इद्दत गुज़रने तक उनसे तअ़र्रुज़ न करें इसको तलाक़े अहसन कहते हैं तलाक़े हसन ग़ैर मौतूअ़ औरत यानी जिससे शौहर ने क़ुरबत न की हो उसको एक तलाक़ देना तलाक़े हसन है ख़्वाह यह तलाक़ हैज़ में हो और मौतूअ़ औरत अगर साहिबे हैज़ हो तो उसे तीन तलाक़ें ऐसे तीन तुहरों में देना जिन में उससे क़ुरबत न की हो तलाक़े हसन है और अगर मौतूअ़ साहिबे हैज़ न हो तो उसको तीन तलाक़ तीन महीनों में देना तलाक़े हसन है तलाक़ बिदई हालते हैज़ में तलाक़ देना या ऐसे तुहर में तलाक़ देना जिसमें क़ुरबत की गई हो तलाक़े बिदई है ऐसे ही एक महर में तीन या दो तलाक़ें यकबारगी या दो मर्तबा में देना तलाक़े बिदई हैं अगरचे इस तुहर में वती न की गई हो मसला तलाक़े बिदई मकरूह है मगर वाक़ेअ़ हो जाती है और ऐसी तलाक़ देने वाला गुनहगार होता है (फ़ा4) **मसलाः** औरत को इद्दत शौहर के घर पूरी करनी लाज़िम है न शौहर को जायज़ कि मुतल्लक़ा को इद्दत में घर से निकाले न उन औरतों को वहां से ख़ुद निकलना रवा (फ़ा5) उनसे कोई फ़िस्क़ ज़ाहिर सादिर हो जिस पर हद आती है मिस्ले ज़िना और चोरी के इसके लिए उन्हें निकलना ही होगा मसला अगर औरत फ़ुहश बके और घर वालों को ईज़ा दे तो उसको निकालना जाइज़ है क्योंकि **(बक़िया सफ़्हा 899 पर)**

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۖ ذٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ۝ وَالّٰٓئِیْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓئِیْ لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ

मुश्शहा–द–त लिल्लाहि ज़ालिकुम् यू–अ़जु बिही मन् का–न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व मंय्यत्तकि़ल्ला–ह यज्–अ़ल् लहू मख़्र–जंव(2)व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्–तसिबु व मंय्य–त–वक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु–व ह़स्बुहू इन्नल्ला–ह बालिग़ु अम्रिही क़द् ज–अ़–लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़दरा(3)वल्लाई य–इस्–न मिनल् महीज़ि मिन् निसाइकुम् इनिर् तब्तुम् फ़अि़–ददतुहुन्–न सला–सतु अश्हुरिंव् वल्लाई लम् यहिज़्–न व उलातुल् अह्मालि अ–जलुहुन्–न अंय्य–ज़अ़्–न ह़म्लहुन्–न व मंय्यत्त– कि़ल्ला–ह यज्–अ़ल् लहू मिन् अम्रिही युस्रा(4)ज़ालि–क अम्रुल्लाहि अन्ज़–लहू इलैकुम् व मंय्यत्तकि़ल्ला–ह यु–कफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युअ्ज़िम् लहू अज्रा(5) अस्किनूहुन्–न मिन् हैसु स–कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्–रूहुन्–न लितु–ज़य्यिक़ू अ़लैहिन्–न व इन् कुन्–न उलाति ह़म्लिन् फ़–अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्–न ह़त्ता य–ज़अ़्– न ह़म्–लहुन्–न फ़–इन् अर्ज़अ़्–न लकुम् फ़आतूहुन्–न

गवाही क़ायम करो (फ़ा9) इससे नसीहत फ़रमाई जाती है उसे जो अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो (फ़ा10) और जो अल्लाह से डरे (फ़ा11) अल्लाह उसके लिए नजात की राह निकाल देगा।(2) (फ़ा12) और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उसका गुमान न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसे काफ़ी है (फ़ा13) बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।(3) और तुम्हारी औ़रतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही (फ़ा14) अगर तुम्हें कुछ शक हो (फ़ा15) तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी जिन्हें अभी हैज़ न आया (फ़ा16) और हमल वालियों की मीआ़द यह है कि वह अपना हमल जन लें (फ़ा17) और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके काम में आसानी फ़रमा देगा। यह (फ़ा18) अल्लाह का हुक्म है कि उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा और जो अल्लाह से डरे (फ़ा19) अल्लाह उसकी बुराईयां उतार देगा।(4) और उसे बड़ा सवाब देगा।(5) औ़रतों को वहां रखो जहां ख़ुद रहते हो अपनी ताक़त भर (फ़ा20) और उन्हें ज़रर न दो कि उन पर तंगी करो (फ़ा21) और अगर (फ़ा22) हमल वालियां हों तो उन्हें नान नफ़क़ा दो यहां तक कि उनके बच्चा पैदा हो (फ़ा23) फिर अगर वह तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलायें तो

(फ़ा9) मक़सूद इससे उसकी रज़ा जूई हो और इक़ामत हक़ व तामील हुक्मे इलाही के सिवा अपनी कोई फ़ासिद ग़रज़ उस में न हो। (फ़ा10) मसलाः इससे इस्तिदलाल किया जाता है कि कुफ़्फ़ार शराए़ व अहकाम के साथ मुख़ातिब नहीं और (फ़ा11) तलाक़ दे तो तलाक़ सुन्नी दे और मुअ़्तद्दा को ज़रर न पहुंचाये न उसे मस्कन से निकाले और हस्बे हुक्मे इलाही मुसलमानों को गवाह कर ले। (फ़ा12) जिससे वह दुनिया व आख़िरत के ग़मों से ख़लास पाये और हर तंगी व परेशानी से महफ़ू.ज़ रहे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मरवी है कि जो शख़्स इस आयत को पढ़े अल्लाह तआ़ला उसके लिए शुबहाते दुनिया ग़मराते मौत व शदाइदे रोज़े क़ियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग महफ़ूज़ कर लें तो उनकी हर ज़रूरत व हाजत के लिए काफ़ी है **शाने नुज़ूलः** औ़फ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया तो औ़फ़ नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने यह भी अ़र्ज़ किया कि मेरा बेटा मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया है और उसी के साथ अपनी मुहताजी व नादारी की शिकायत की सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का डर रखो और सब्र करो और कसरत से ला हौ–ल व ला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम° पढ़ते रहो औ़फ़ ने घर आकर अपनी बीबी से यह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरू किया वह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने (बक़िया सफ़हा 913 पर)

أُجُوْرَهُنَّ ۚ وَأْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ أُخْرٰى ۞ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۖ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ
اٰتٰهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ اٰتٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۞ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۞ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۞ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ أَنْزَلَ اللّٰهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۞ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۚ قَدْ أَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۞ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۚ يَتَنَزَّلُ
الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًا ۞

उजू–रहुन्–न वअ्तमिरू बै–नकुम् बिमअ्रूफ़िन् व इन् तआसर्तुम् फ़–सतुर्ज़िअु लहू उख़्रा(6) लियुन्फ़िक् जू स–अ़तिम् मिन् स–अ़तिही व मन् कुदि–र अ़लैहि रिज़्कुहू फ़ल्युन्फ़िक् मिम्मा आताहुल्लाहु ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा स–यज्अलुल्लाहु बअ्–द अुस्रिंय्युस्रा(7) व क–अय्यिम् मिन् क़र्–यतिन् अ़–तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़–हा सब्नाहा हिसाबन् शदीदंव् व अ़ज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन् नुक्रा(8)फ़ज़ाक़त् वबा–ल अम्रिहा व का–न आ़क़ि–बतु अम्रिहा ख़ुस्रा(9)अ–अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़त्तक़ुल्ला–ह या उलिल् अल्बाबिल् लज़ी–न आ–मनू क़द् अन्ज़–लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रर्(10)रसूलंय्यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल् लियुख़्रिजल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस् सा़लिहा़ति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि व यअ्मल् सा़लिहंय्युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् क़द् अह्स–नल्लाहु लहू रिज़्क़ा(11)अल्लाहुल्लज़ी ख़–ल–क़ सब्–अ़ समावातिंव् व मिनल् अर्ज़ि मिस्लहुन्–न य–त–नज़्ज़लुल् अम्रु बै–नहुन्–न लितअ्–लमू अन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव् व अन्नल्ला–ह क़द् अहा़–त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा(12)

उन्हें उसकी उजरत दो (फ़ा24) और आपस में माकूल तौर पर मश्वरा करो (फ़ा25) फिर अगर बाहम मुज़ाएका करो (फ़ा26) तो क़रीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी मक़दूर वाला।(6) (फ़ा27) अपने मक़दूर के क़ाबिल नफ़क़ा दे और जिस पर उसका रिज़्क़ तंग किया गया वह उसमें से नफ़क़ा दे जो उसे अल्लाह ने दिया अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है कि अल्लाह दुशवारी के बाद आसानी फ़रमा देगा।(7) (फ़ा28) (रुकूअ़ 17) और कितने ही शहर थे जिन्होंने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरकशी की तो हमने उन से सख़्त हिसाब लिया (फ़ा29) और उन्हें बुरी मार दी।(8) (फ़ा30) तो उन्होंने अपने किये का वबाल चखा और उनके काम का अन्जाम घाटा हुआ।(9) अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है तो अल्लाह से डरो ऐ अ़क़्ल वालो वह जो ईमान लाए हो बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए इज़्ज़त उतारी है।(10) वह रसूल (फ़ा31) कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये (फ़ा32) अंधेरियों से (फ़ा33) उजाले की तरफ़ ले जाए और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें जिनमें हमेशा हमेशा रहें बेशक अल्लाह ने उस के लिए अच्छी रोज़ी रखी।(11) (फ़ा34) अल्लाह है जिसने सात आसमान बनाए (फ़ा35) और उन्हीं के बराबर ज़मीनें (फ़ा36) हुक्म उनके दर्मियान उतरता है (फ़ा37) ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है।(12) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा24) मसलाः बच्चा को दूध पिलाना मां पर वाजिब नहीं बाप के ज़िम्मे है कि उजरत देकर दूध पिलवाये लेकिन अगर बच्चा मां के सिवा किसी और औरत का दूध न पिये या बाप फ़क़ीर हो तो उस हालत में मां **(बक़िया सफ़हा 913 पर)**

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ
بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ

सूरतुत्तहरीमि

(मदनी है इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु लि–म तुह़र्रिमु मा अ–ह़ल्लल्लाहु ल–क तब्तग़ी मर्ज़ा–त अज़्वाजि–क वल्लाहु ग़फ़ूरुर् रहीम(1)क़द् फ़–र–ज़ल्लाहु लकुम् तहिल्ल–त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल् ह़कीम(2)व इज़् अ–सर्रन्नबिय्यु इला बअ़्ज़ि अज़्वाजिही ह़दीसन् फ़लम्मा नब्ब–अत् बिही व अज़्ह–रहुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र–फ़ बअ़्ज़हू व अअ़्र–ज़ अम् बअ़्ज़िन् फ़–लम्मा नब्ब–अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब–अ–क हाज़ा क़ा–ल नब्ब–अनियल् अ़लीमुल् ख़बीर(3)इन् ततूबा इलल्लाहि फ़–क़द् स–ग़त् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ा–हरा अ़लैहि फ़इन्नल्ला–ह हु–व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल् मुअ्मिनी–न वल्मलाइ–कतु बअ़्–द ज़ालि–क ज़हीर(4)अ़सा रब्बुहू इन् त़ल्ल–क़कुन्–न

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) तुम अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की (फ़ा2) अपनी बीबियों की मर्ज़ी चाहते हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(1) बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़स्मों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया (फ़ा3) और अल्लाह तुम्हारा मौला है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(2) और जब नबी ने अपनी एक बीबी (फ़ा4) से एक राज़ की बात फ़रमाई (फ़ा5) फिर जब वह (फ़ा6) उसका ज़िक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्म-पोशी फ़रमाई (फ़ा7) फिर जब नबी ने उसे उसकी ख़बर दी बोली (फ़ा8) हुज़ूर को किस ने बताया फ़रमाया मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया।(3) (फ़ा9) नबी की दोनों बीबियों अगर अल्लाह की तरफ़ तुम रुजूअ़ करो तो (फ़ा10) ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं (फ़ा11) और अगर उन पर ज़ोर बांधो (फ़ा12) तो बेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिबरील और नेक ईमान वाले और उसके बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं।(4) उनका रब क़रीब है अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें कि

(फ़ा1) सूरह तहरीम मदनी है इसमें दो रुकूअ़ बारह आयतें 247 कलिमे एक 1060 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत उम्मुल मोमिनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के महल में रौनक़ अफ़रोज़ हुए वह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गईं हुज़ूर ने हज़रत मारिया क़िबतिया को सरफ़राज़ ख़िदमत किया यह हज़रत हफ़सा पर गिराँ गुज़रा हुज़ूर ने उनकी दिलजूई के लिए फ़रमाया कि मैंने मारिया को अपने ऊपर हराम किया और मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं कि मेरे बाद उमूर उम्मत के मालिक अबू बकर व उमर होंगे (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) वह इससे ख़ुश हो गईं और निहायत ख़ुशी में उन्होंने यह तमाम गुफ़्तगू हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सुनाई इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए हलाल की यानी मारिया क़िबतिया आप उन्हें अपने लिए क्यों हराम किये लेते हैं अपनी बीबियों हफ़सा व आइशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) की रज़ाजूई के लिए और एक क़ौल इस आयत की शाने नुज़ूलः में यह भी कि उम्मुलमोमिनीन ज़ैनब बिन्त जहश के यहां जब हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते तो वह शहद पेश करतीं इस ज़रीआ़ से उनके यहां कुछ ज़्यादा देर तशरीफ़ फ़रमा रहते यह बात हज़रत आइशा व हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा वग़ैरहुमा को नागवार गुज़री और उन्हें रश्क हुआ उन्होंने बाहम मशवरा **(बक़िया सफ़हा 913 पर)**

اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا

يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً

نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

अंय्युब्दि–लहू अज़्वाजन् ख़ैरम् मिन्कुन्–न मुस्लिमातिम् मुअ्मिना–तिन् क़ानितातिन् ताइबातिन् आबि–दातिन् साइहातिन् सय्यिबातिंव् व अब्कारा(5)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कू अन्फु–सकुम् व अह्लीकुम् नारंव् वक़ूदुहन्नासु वल्हिजा–रतु अलैहा मलाइ–कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल ला यअ्सू–नल्ला–ह मा अ–म–रहुम् व यफ़्–अलू–न मा युअ्–मरून(6)या अय्युहल्लज़ी–न क–फ़रू ला तअ्–तज़िरुल् यौ–म इन्नमा तुज्ज़ौ–न मा कुन्तुम् तअ्–मलून(7)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू तूबू इलल्लाहि तौ–ब–तन् नसूहन् असा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि–र अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्ख़ि–लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु यौ–म ला युख़्ज़िल्लाहुन्नबिय्–य वल्लज़ी–न आ–मनू म–अहू नूरुहुम् यस्आ बै–न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् यक़ूलू–न रब्बना अत्मिम् लना नू–रना वग़्फ़िर्–लना इन्न–क अला कुल्लि शैइन् क़दीर(8)

उन्हें तुम से बेहतर बीबियां बदल दे इताअ़त वालियां ईमान वालियां अदब वालियां (फ़13) तौबा वालियां बन्दगी वालियां (फ़14) रोज़ादारें ब्याहियां और कुंवारियां।(5) (फ़15) ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ (फ़16) जिसके ईंधन आदमी (फ़17) और पत्थर हैं (फ़18) उस पर सख़्त करें फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं (फ़19) जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं।(6) (फ़20) ऐ काफ़िरो आज बहाने न बनाओ (फ़21) तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे।(7)(रुकूअ़ 19) ऐ ईमान वालो अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाए (फ़22) क़रीब है कि तुम्हारा रब (फ़23) तुम्हारी बुराईयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नहरें बहें जिस दिन अल्लाह रुसवा न करेगा नबी और उनके साथ के ईमान वालों को (फ़24) उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाहिने (फ़25) अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे(फ़26)और हमें बख़्श दे बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है।(8)

(फ़13) जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदार और उनकी रज़ाजू हों (फ़14) यानी कसीरुलइबादत। (फ़15) यह तख़्वीफ़ है अज़्वाजे मुतह्हरात को कि अगर उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आज़ुर्दा किया और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें तलाक़ दी तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला अपने लुत्फ़ व करम से और बेहतर बीबीयां अ़ता फ़रमाएगा इस तख़्वीफ़ से अज़्वाजे मुतह्हरात मुतअस्सिर हुईं और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शरफ़े ख़िदमत को हर निअ़मत से ज़्यादा समझा और हुज़ूर की दिलजूई और रज़ा तलबी मुक़द्दम जानी लिहाज़ा आपने उन्हें तलाक़ न दी। (फ़16) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी इख़्तियार करके इबादतें बजा लाकर गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त करके और उन्हें इल्म व अदब सिखा कर। (फ़17) यानी काफ़िर। (फ़18) यानी बुत वग़ैरह मुराद यह है कि जहन्नम की आग बहुत ही शदीदुल हरारत है और जिस तरह दुनिया की आग लकड़ी वग़ैरह से जलती है जहन्नम की आग उन चीज़ों से जलती है जिनका ज़िक्र किया गया। (फ़19) जो निहायत क़वी और ज़ोर आवर हैं और उनकी तबीअ़तों में रहम नहीं। (फ़20) काफ़िरों से वक़्ते दुख़ूल दोज़ख़ कहा जाएगा जबकि वह आतिशे दोज़ख़ की शिद्दत और उसका अ़ज़ाब देखेंगे। (फ़21) क्योंकि अब तुम्हारे लिए कोई जाए उज़्र बाक़ी नहीं रही न आज कोई उज़्र क़बूल किया जाये। (फ़22) यानी तौबए सादिक़ा जिसका असर तौबा करने वाले के आमाल में ज़ाहिर हो और उसकी ज़िन्दगी ताअ़तों और इबादतों से मअ़मूर हो जाये और वह गुनाहों से मुजतनिब रहे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने और दूसरे असहाब ने फ़रमाया तौबए नसूह वह है कि तौबा के बाद आदमी फिर गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुआ दूध फिर थन में वापस नहीं होता। (फ़23) **(बक़िया सफ़हा 898 पर)**

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् कुफ़्फ़ा–र वल्मुनाफ़िक़ी–न वग्लुज् अ़लैहिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु व बिअ्–सल् मसीर(9)ज़–र–बल्लाहु म–स़–लल् लिल्लज़ी–न क–फ़रुम्–र–अ–त नूहिंव् वम्–र–अ–त लूतिन् का–नता तह्–त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़ख़ा–नताहुमा फ़लम् युग्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव् व क़ीलद् ख़ुलन्ना–र म–अ़द्दाख़िलीन(10)व ज़–र–बल्लाहु म–स़–लल् लिल्लज़ी–न आ–मनुम्–र–अ–त फ़िर्औ–न इज् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द–क बैतन् फ़िल्जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ–न व अ़–मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज्–ज़ालिमीन(11)व मर्य–मब्–न–त अ़िम्रानल् लती अह्स़–नत् फ़र्जहा फ़–न–फ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व स़द्–द–क़त् बि–कलिमाति रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल् क़ानितीन(12)

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) (फ़ा27) काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर (फ़ा28) जिहाद करो और उन पर सख़्ती फ़रमाओ और उनका ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा अंजाम।(9) अल्लाह काफ़िरों की मिसाल देता है (फ़ा29) नूह की औ़रत और लूत की औरत वह हमारे बन्दों में दो सज़ावारे क़ुर्ब बन्दों के निकाह में थीं फिर उन्होंने उनसे दग़ा की (फ़ा30) तो वह अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए और फ़रमा दिया गया (फ़ा31) कि तुम दोनों औ़रतें जहन्नम में जाओ जाने वालों के साथ।(10) (फ़ा32) और अल्लाह मुसलमानों की मिसाल बयान फ़रमाता है (फ़ा33) फ़िरऔ़न की बीबी (फ़ा34) जब उसने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना (फ़ा35) और मुझे फ़िरऔ़न और उसके काम से नजात दे (फ़ा36) और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श।(11) (फ़ा37) और इमरान की बेटी मरयम जिसने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकी और उसने अपने रब की बातों (फ़ा38) और उसकी किताबों (फ़ा39) की तस्दीक़ की और फ़रमांबरदारों में हुई।(12) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा27) तलवार से (फ़ा28) क़ौल ग़लीज़ और वअ़्ज़ बलीग़ और हुज्जत क़वी से। (फ़ा29) इस बात में कि उन्हें उनके कुफ़्र और मोमिनीन की अ़दावत पर अ़ज़ाब किया जाएगा और उस कुफ़्र व अ़दावत के होते हुए उनका नसब और मोमिनीन व मुक़र्रबीन के साथ उनकी क़राबत व रिश्तेदारी उन्हें कुछ नफ़ा न देगी (फ़ा30) दीन में कि कुफ़्र इख़्तियार किया हज़रत नूह की औरत वाहिला अपनी क़ौम से हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की निस्बत कहती थी कि वह मजनून हैं और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की औरत वाइला अपना निफ़ाक़ छुपाती थी और जो मेहमान आपके यहां आते थे आग जला कर अपनी क़ौम को उनके आने से ख़बरदार करती थी। (फ़ा31) उनसे वक़्ते मौत या रोज़े क़ियामत (और ताबीर सीग़ए माज़ी से) बलिहाज़े तहक़्क़ुक़ वक़ूअ़् के है। (फ़ा32) यानी अपनी क़ौमों के कुफ़्फ़ार के साथ क्योंकि तुम्हारे और उन अम्बिया के दर्मियान तुम्हारे कुफ़्र के बाइस इलाक़ा बाक़ी न रहा। (फ़ा33) कि उन्हें दूसरे की मअ़्सियत ज़रर नहीं देती। (फ़ा34) जिनका नाम आसिया बिन्ते मज़ाहिम है जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जादूगरों को मग़लूब किया तो यह आसिया आप पर ईमान ले आईं फ़िरऔ़न को ख़बर हुई तो उसने उन पर सख़्त अ़ज़ाब किये उन्हें चौ मीख़ा किया और भारी चक्की सीना पर रखी औ र धूप में डाल दिया जब फ़िरऔ़नी उनके पास से हटते तो फ़रिश्ते उन पर साया करते। (फ़ा35) अल्लाह तआ़ला ने उनका मकान जो जन्नत में है उन पर ज़ाहिर फ़रमाया और उसकी मुसर्रत में फ़िरऔ़न की सख़्तियों की शिद्दत उन पर सहल हो गई। (फ़ा36) फ़िरऔ़न के काम से या उसका शिर्क व कुफ़्र व .ज़ुल्म मुराद है या उसका क़ुर्ब। (फ़ा37) यानी फ़िरऔ़न के दीन वालों से चुनांचे यह दुआ़ उनकी क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उनकी रूह क़ब्ज़ फ़रमाई और इब्ने कीसान ने कहा कि वह ज़िन्दा उठा कर जन्नत में दाख़िल की गईं। (फ़ा38) रब की बातों से शराअ़े व अहकाम मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए मुक़र्रर फ़रमाए (फ़ा39) किताबों से वह किताबें मुराद हैं जो अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर नाज़िल हुई थीं।

(बक़िया सफ़हा 880 का) मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्मे जदीद नाज़िल नहीं हुआ दस्तूर क़दीम यही है कि ज़िहार से औरत हराम हो जाती है औरत ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम औस ने तलाक़ का लफ़्ज़ न कहा वह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत प्यारा है इसी तरह वह बार बार अर्ज़ करती रही और जवाब हस्बे ख़्वाहिश न पाया तो आसमान की तरफ़ सर उठा कर कहने लगी या अल्लाह तआ़ला मैं तुझ से अपनी मुहताजी व बेकसी और परेशान हाली की शिकायत करती हूं अपने नबी पर मेरे हक़ में ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमा जिससे मेरी मुसीबत रफ़ा हो हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया ख़ामोश हो देख चेहरए मुबारक रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर आसारे वही ज़ाहिर हैं जब वही पूरी हो गई फ़रमाया अपने शौहर को बुला औस हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने यह आयतें पढ़कर सुनाईं। (फ़ा3) यानी ज़िहार करते हैं ज़िहार उसको कहते हैं कि अपनी बीबी को मुहर्रमात नस्बी या रज़ाई के किसी ऐसे उज़्व से तशबीह दी जाये जिसको देखना हराम है मसलन बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है या बीबी के ऐसे उज़्व को जिस से वह ताबीर की जाती हो या उसके व जुज़्व शाए को मुहर्रमात के ऐसे उज़्व से तश्बीह दे जिसको देखना हराम है मसलन यह कहे कि तेरा सर या तेरा निस्फ़ बदन मेरी मां की पीठ या उसके पेट या उस की रान या मेरी बहन या फूफी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट के मिस्ल है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है। (फ़ा4) यह कहने से वह मायें नहीं हो गईं (फ़ा5) **मसलाः** और दूध पिलाने वालियां ब-सबबे दूध पिलाने के माओं के हुक्म में हैं और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अज़्वाज मुतह्हरात ब-सबबे कमाले हुरमत मायें बल्कि माओं से आला हैं। (फ़ा6) जो बीबी को मां कहते हैं उसको किसी तरह मां के साथ तश्बीह देना ठीक नहीं (फ़ा7) यानी उनसे ज़िहार करें मसला इस आयत से मालूम हुआ कि बांदी से ज़िहार नहीं अगर इसको मुहर्रमात से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर न होगा (फ़ा8) यानी उस ज़िहार को तोड़ देना और हुरमत को उठा देना (फ़ा9) कफ़्फ़ारा ज़िहार का लिहाज़ा उन पर ज़रूरी है (फ़ा10) ख़्वाह वह मोमिन हो या काफ़िर सग़ीर हो या कबीर मर्द हो या औरत अलबत्ता मुदब्बिर और उम्मे वल्द और ऐसा मकातिब जाइज़ नहीं जिसने बदले किताबत में से कुछ अदा किया हो (फ़ा11) **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि इस कफ़्फ़ारा के देने से पहली वती और उसके दवाई हराम हैं (फ़ा12) इसका कफ़्फ़ारा (फ़ा13) मुत्तसिल इस तरह कि न इन दो महीनों के दर्मियान रमज़ान आए न उन पांच दिनों में से कोई दिन आये जिन का रोज़ा ममनूअ़ है और न किसी उज़्र से या बग़ैर उज़्र के दर्मियान से कोई रोज़ा छोड़ा जाये अगर ऐसा हुआ तो अज़ सरे नौ रोज़े रखने पड़ेंगे (फ़ा14) **मसाइलः** यानी रोज़ों से जो कफ़्फ़ारा दिया जाये उसका भी जिमाअ़ और दवाई जिमाअ़ से मुक़द्दम होना ज़रूरी है और जब तक वह रोज़े पूरे हों ख़ाविन्द बीबी में से कोई किसी को हाथ न लगाये (फ़ा15) यानी उसे रोज़े रखने की क़ुव्वत न हो बुढ़ापे या मर्ज़ वग़ैरह के बाइस या रोज़े तो रख सकता हो मगर मुतवातिर व मुत्तसिल न रख सकता हो (फ़ा16) यानी साठ मिस्कीनों को खाना देना और यह इस तरह कि हर मिस्कीन को निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ खजूर या जौ दे और अगर मिस्कीनों को इसकी क़ीमत दी या सुबह व शाम दोनों वक़्त उन्हें पेट भर कर खिला दिया जब भी जाइज़ है मसला इस कफ़्फ़ारा में यह शर्त नहीं कि एक दूसरे को हाथ लगाने से क़ब्ल हत्ता कि अगर खाना खिलाने के दर्मियान में शौहर और बीबी में क़ुरबत वाक़ेअ़ हुई तो नया कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। (फ़ा17) और ख़ुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी करो और जाहिलियत के तरीक़े छोड़ो। (फ़ा18) उनको तोड़ना और उनसे तजावुज़ करना जायज़ नहीं।

(बक़िया सफ़हा 881 का) उन्हें रन्ज हो उनकी इस हरकत से मुसलमानों को ग़म होता था और वह कहते थे कि शायद उन लोगों को हमारे उन भाईयों की निस्बत क़त्ल या हज़ीमत की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और यह उसी के मुतअ़ल्लिक़ बातें बनाते और इशारे करते हैं जब यह हरकात मुनाफ़िक़ीन के बहुत ज़्यादा हुए और मुसलमानों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में इसकी शिकायतें कीं तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सरगोशी करने वालों को मना फ़रमा दिया लेकिन वह बाज़ न आए और यह हरकत करते ही रहे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा32) गुनाह और हद से बढ़ना यह कि मक्कारी के साथ सरगोशियां करके मुसलमानों को रन्ज व ग़म में डालते हैं (फ़ा33) और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी यह कि बावजूद मुमानअ़त के बाज़ नहीं आते और यह भी कहा गया है कि उनमें एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की नाफ़रमानी करो। (फ़ा34) यहूद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आते तो अस्सामु अ़लै-क कहते साम मौत को कहते हैं नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनके जवाब में अ़लैकुम् फ़रमा देते। (फ़ा35) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर हज़रत नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआ़ला हमें अ़ज़ाब करता अल्लाह फ़रमाता है। (फ़ा36) और जो तरीक़ा यहूद और मुनाफ़िक़ीन का है उससे परहेज़ करो।

(बक़िया सफ़हा 882 का) दराज़ किया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि फ़ुक़रा को अपनी अर्ज़ पेश करने का मौक़ा कम मिलने लगा तो अर्ज़ पेश करने वालों को अर्ज़ पेश करने से पहले सदक़ा देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़मल किया एक दीनार सदक़ा करके दस मसाइल दरयाफ़्त किये अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वफ़ा क्या है फ़रमाया तौहीद और तौहीद की शहादत देना अर्ज़ किया फ़साद क्या है फ़रमाया कुफ़्र व शिर्क अर्ज़ किया हक़ क्या है फ़रमाया इस्लाम व क़ुरआन और विलायत जब तुझे मिले अर्ज़ किया हीला क्या है यानी तदबीर फ़रमाया तर्के हीला अर्ज़ किया मुझ पर क्या लाज़िम है फ़रमाया अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त अर्ज़ किया अल्लाह तआ़ला से कैसे दुआ़ मांगूं फ़रमाया सिद्क़ व यक़ीन के साथ अर्ज़ किया क्या मांगूं फ़रमाया आक़िबत अ़र्ज़ किया अपनी नजात के लिए क्या करूं फ़रमाया हलाल खा और सच बोल अर्ज़ किया सुरूर क्या है जन्नत

अर्ज़ किया। राहत क्या है फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का दीदार जब हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु इन सवालों से फ़ारिग़ हो गये तो यह हुक्म मन्सूख़ हो गया और रुख़सत नाज़िल हुई सिवए हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के और किसी को इस पर अ़मल करने का वक़्त नहीं मिला (मदारिक व ख़ाज़िन) हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया यह उसकी असल है जो मज़ारात औलिया पर तसदीक़ के लिए शीरीनी वग़ैरह ले जाते हैं। (फ़ा43) ब-सबब अपनी ग़रीबी व नादारी के। (फ़ा44) और तर्क तक़दीम सदक़ा का मुआख़ज़ा तुम पर से उठा लिया और तुमको इख़्तियार दे दिया (फ़ा45) जिन लोगों पर अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब है उनसे मुराद यहूद हैं और उनसे दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़ीन **शाने नुज़ूलः** यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने यहूद से दोस्ती की और उनकी ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसलमानों के राज़ उन से कहते

(बक़िया सफ़हा 883 का) अ़ब्दुल्लाह बिन बन्तल मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मजलिस में हाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता एक रोज़ हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दौलत सरय अक़दस में तशरीफ़ फ़रमा थे हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आएगा जिसका दिल निहायत सख़्त और शैतान की आंखों से देखता है थोड़ी ही देर बाद अ़ब्दुल्लाह बिन बन्तल आया उसकी आंखें नीली थीं हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया तू और तेरे साथी क्यों हमें गालियां देते हैं वह क़सम खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया उन्होंने भी क़सम खाई कि हमने आपको गाली नहीं दी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा48) जो झूठी हैं (फ़ा49) कि अपना जान व माल महफ़ूज़ रहे (फ़ा50) यानी मुनाफ़िक़ीन ने अपनी इस हीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोका और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि माना यह हैं कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोका। (फ़ा51) आख़िरत में। (फ़ा52) और रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से न बचा सकेंगे। (फ़ा53) कि दुनिया में मोमिन मुख़लिस थे। (फ़ा54) यानी वह अपनी उन झूठी क़स्मों को कारआमद समझते हैं। (फ़ा55) अपनी क़स्मों में और ऐसे झूठे कि दुनिया में भी झूठ बोलते रहे और आख़िरत में भी रसूल के सामने भी और ख़ुदा के सामने भी। (फ़ा56) कि जन्नत की दाइमी निअ़मतों से महरूम और जहन्नम के अबदी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार। (फ़ा57) लौहे महफ़ूज़ में। (फ़ा58) हुज्जत के साथ या तलवार के साथ। (फ़ा59) यानी मोमिनीन से यह हो ही नहीं सकता और उनकी यह शान ही नहीं और ईमान उसको गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे मसला इस आयत से मालूम हुआ कि बद दीनों और बद मज़हबों और ख़ुदा व रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी करने वालों से मवद्दत व इख़्तेलात जाइज़ नहीं। (फ़ा60) चुनांचे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने जंगे उहद में अपने बाप जर्राह को क़त्ल किया और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रोज़े बद्र अपने बेटे अब्दुर्रहमान को मुबारज़त के लिए तलब किया लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुसइब बिन उमैर ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने मामूं आ़स बिन हश्शाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र क़त्ल किया और हज़रत अली बिन अबी तालिब व हमज़ा व अबू उबैदा ने रबीआ़ के बेटों उतबा और शैबा को और वलीद बिन उतबा को बद्र में क़त्ल किया जो उनके रिश्तादार थे ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। (फ़ा61) इस रूह से या अल्लाह की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिबरील या रहमते इलाही या नूर (फ़ा62) ब-सबब उनके ईमान व इख़्लास व ताअ़त के। (फ़ा63) उसके रहमत व करम से।

(बक़िया सफ़हा 884 का) अल्लाह तआ़ला के इल्म देने से हुज़ूर इस हाल पर मुत्तलअ़ थे और बनी नुज़ैर से एक ख़ियानत और भी वाक़ेअ़ हो चुकी थी कि उन्होंने क़िला के ऊपर से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ब-इरादए फ़ासिद एक पत्थर गिराया था अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और ब-फ़ज़्लेही तआ़ला हुज़ूर महफ़ूज़ रहे ग़रज़ जब यहूद बनी नुज़ैर ने ख़ियानत की और अहद शिकनी की और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से हुज़ूर के ख़िलाफ़ अहद किया तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुसलिमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्होंने कअ़ब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया फिर हुज़ूर मअ़ लश्कर के बनी नुज़ैर की तरफ़ रवाना हुए और उनका मुहासरा कर लिया और यह मुहासरा इक्कीस रोज़ रहा इस दर्मियान में मुनाफ़िक़ीन ने यहूद से हमदर्दी व मुवाफ़क़त के बहुत मुआ़हिदे किये लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन सब को नाकाम किया यहूद के दिलों में रोब डाला आख़िरकार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जला वतन होना पड़ा और वह शाम व अरीहा व ख़ैबर की तरफ़ चले गए (फ़ा3) यानी यहूद बनी नुज़ैर को। (फ़ा4) जो मदीना तय्येबा में थे (फ़ा5) यह जला वतनी उनका पहला हश्र है और दूसरा हश्र उनका यह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उन्हें अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ैबर से शाम की तरफ़ निकाला या आख़िर हश्र रोज़े क़ियामत का हश्र है कि आग सब लोगों को सरज़मीने शाम की तरफ़ ले जाएगी और वहीं उन पर क़ियामत क़ाइम होगी उसके बाद अहले इस्लाम से ख़िताब फ़रमाया जाता है। (फ़ा6) मदीना से क्यों कि वह साहबे क़ुव्वत साहबे लश्कर थे मज़बूत किले रखते थे उनकी तादाद कसीर थी जागीरदार साहबे माल। (फ़ा7) यानी ख़तरा भी न था कि मुसलमान उन पर हमला आवर हो सकते हैं। (फ़ा8) उनके सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल से। (फ़ा9) और उनको ढाते हैं ताकि जो लकड़ी वग़ैरह उन्हें अच्छी मालूम हो वह जला वतन होते वक़्त अपने साथ ले जायें। (फ़ा10) कि उनके मकानों के जो हिस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसलमान गिरा देते थे ताकि जंगे के लिए मैदान साफ़ हो जाये (फ़ा11) और उन्हें क़त्ल व क़ैद में मुब्तला करता जैसा कि यहूद बनी क़ुरैज़ा के साथ किया (फ़ा12) हर हाल में ख़्वाह जला वतन किये जायें या क़त्ल किये जायें। (फ़ा13) यानी बर सरे मुख़ालिफ़त रहे।

(फ़ा14) **शाने नुजूलः** जब बनी नुज़ैर अपने क़िलों में पनाह गुज़ीं हुए तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके दरख़्त काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया इस पर वह दुश्मनाने ख़ुदा बहुत घबराए और रन्जीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किताब में इसका हुक्म है मुसलमान इस बाब में मुख़्तलिफ़ हो गए बाज़ ने कहा दरख़्त न काटो यह ग़नीमत है जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई बाज़ ने कहा इससे कुफ़्फ़ार को रुसवा करना और उन्हें ग़ैज़ में डालना मन्ज़ूर है इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इसमें बताया गया कि मुसलमानों में जो दरख़्त काटने वाले हैं उनका अमल भी दुरुस्त है और काटना नहीं चाहते वह भी ठीक कहते हैं क्योंकि दरख़्तों का काटना और छोड़ देना यह दोनों अल्लाह तआला के इज़्न व इजाज़त से हैं। (फ़ा15) यानी यहूद को ज़लील करे दरख़्त काटने की इजाज़त देकर।

(बक़िया सफ़हा 885 का) ज़्यादा ले लते थे और ग़रीबों के लिए बहुत ही थोड़ा बचता था इसी मामूल के मुताबिक़ लोगों ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुजूर ग़नीमत में से चहारुम लें बाक़ी हम बाहम तक़सीम कर लेंगे अल्लाह तआला ने इसका रद् फ़रमा दिया और तक़सीम का इख़्तियार नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया और इसका तरीक़ा इरशाद फ़रमाया। (फ़ा22) ग़नीमत में से क्योंकि वह तुम्हारे लिए हलाल है या यह माना हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें जो हुक्म दें उसका इत्तेबाअ़ करो क्योंकि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत हर अमर में वाजिब है। (फ़ा23) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालफ़त न करो और उनके तअ़मीले इरशाद में सुस्ती न करो। (फ़ा24) उन पर जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रामनी करें और माले ग़नीमत में जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का हक़ है ऐसा ही। (फ़ा25) और उनके घरों और मालों पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने क़ब्ज़ा कर लिया **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि कुफ़्फ़ार इस्तीला से अमवाले मुस्लिमीन के मालिक हो जाते हैं। (फ़ा26) यानी सवाबे आख़िरत। (फ़ा27) अपने जान व माल से दीन की हिमायत में। (फ़ा28) ईमान व इख़्लास में क़तादा ने फ़रमाया कि उन मुहाजिरीन ने घर और माल और कुम्बे अल्लाह तआला व रसूल की मुहब्बत में छोड़े और इस्लाम को क़बूल किया और इन तमाम शिद्दतों और सख़्तियों को गवारा किया जो इस्लाम क़बूल करने की वजह से उन्हें पेश आईं उनकी हालतें यहां तक पहुंचीं कि भूख की शिद्दत से पेट पर पत्थर बांधते थे और जाड़ों में कपड़ा न होने के बाइस गढ़ों और ग़ारों में गुज़ारा करते थे हदीस शरीफ़ में है कि फ़ुक़रा मुहाजिरीन अग़निया से चालीस साल क़ब्ल जन्नत में जायेंगे (फ़ा29) यानी मुहाजिरीन से पहले या उनकी हिजरत से पहले बल्कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले। (फ़ा30) मदीना पाक (फ़ा31) यानी मदीना पाक को वतन और ईमान को अपना मुस्तक़र बनाया और इस्लाम लाये और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाईं उनका यह हाल है कि (फ़ा32) चुनांचे अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें निस्फ़ का शरीक करते हैं। (फ़ा33) यानी उनके दिलों में कोई ख़्वाहिश व तलब नहीं पैदा होती। (फ़ा34) मुहाजिरीन यानी मुहाजिरीन को जो अमवाले ग़नीमत दिये गए अन्सार के दिल में उनकी कोई ख़्वाहिश नहीं पैदा होती रश्क तो क्या होता सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत ने कुलूब ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरीन के साथ यह सुलूक करते हैं (फ़ा35) यानी मुहाजिरीन को (फ़ा36) **शाने नुजूलः** हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक भूखा शख़्स आया हुजूर ने अज़वाजे मुतह्हरात के हुजरों पर मालूम कराया क्या खाने की कोई चीज़ है मालूम हुआ किसी बीबी साहबा के यहां कुछ भी नहीं है तब हुजूर ने असहाब से फ़रमाया जो इस शख़्स को मेहमान बनाए अल्लाह तआला उस पर रहमत फ़रमाए हज़रत अबू तलहा अन्सारी खड़े हो गए और हुजूर से इजाज़त लेकर मेहमान को अपने घर ले गए जाकर बीबी से दरियाफ़्त किया कुछ है उन्होंने कहा कुछ नहीं सिर्फ़ बच्चों के लिए थोड़ा सा खाना रखा है हज़रत अबू तलहा ने फ़रमाया बच्चों को बहला कर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि वह अच्छी तरह खा ले यह इस लिए तज्वीज़ की कि मेहमान यह न जान सके कि अहले ख़ाना उसके साथ नहीं खा रहे हैं क्योंकि उसको यह मालूम होगा तो वह इसरार करेगा और खाना कम है भूखा रह जाएगा इस तरह मेहमान को खिलाया और आप उन साहबों ने भूखे रात गुज़ारी जब सुबह हुई और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुजूरे अक़दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया रात फ़लां फ़लां लोगों में अजीब मुआमला पेश आया अल्लाह तआला उन से बहुत राज़ी है और यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा37) यानी जिस के नफ़्स को लालच से पाक किया गया

(बक़िया सफ़हा 886 का) निकले और यहूद से मुक़ातला हुआ और मुनाफ़िक़ीन ने यहूद की मदद न की (फ़ा47) जब यह मददगार भाग निकलेंगे तो मुनाफ़िक़। (फ़ा48) ऐ मुसलमानों। (फ़ा49) कि तुम्हारे सामने तो इज़हारे कुफ़्र से डरते हैं और यह जानते हुए भी कि अल्लाह तआला दिलों की छुपी बातें जानता है दिल में कुफ़्र रखते हैं। (फ़ा50) अल्लाह तआला की अज़मत को नहीं जानते वरना जैसा उससे डरने का हक़ है डरते। (फ़ा51) यानी जब वह आपस में लड़ें तो बहुत शिद्दत और कुव्वत वाले हैं लेकिन मुसलमानों के मुक़ाबिल बुज़दिल और नामर्द साबित होंगे। (फ़ा52) इसके बाद यहूद की एक मिस्ल इरशाद फ़रमाई। (फ़ा53) यानी उनका हाल मुशरिकीने मक्का का सा है कि बद्र में। (फ़ा54) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदावत रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लत व रुसवाई के साथ हलाक किये गए।

(बक़िया सफ़हा 887 का) मुनाफ़िक़ीन ने यहूद बनी नुज़ैर को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उनसे

मदद के वादे किये और जब उनके कहे से वह अहले इस्लाम से बर सरे जंग हुए तो मुनाफ़िक़ बैठ रहे उनका साथ न दिया। (फ़ा57) यानी उस शैतान व इन्सान का। (फ़ा58) और उसके हुक्म की मुख़ालफ़त न करो (फ़ा59) यानी रोज़े क़ियामत के लिए क्या आमाल किये। (फ़ा60) उसकी इताअ़त व फ़रमांबरदारी में सरगरम रहो। (फ़ा61) उसकी इताअ़त तर्क की। (फ़ा62) कि उनके लिए फ़ाइदा देने वाले और काम आने वाले अ़मल कर लेते। (फ़ा63) जिनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है। (फ़ा64) जिनके लिए ऐशे मुख़ल्लद व राहते व सरमद है। (फ़ा65) और उसको इन्सान की सी तमीज़ अ़ता करते। (फ़ा66) यानी कुरआन की अ़ज़मत व शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर इदराक होता तो वह बावजूद इतना सख़्त और मज़बूत होने के पाश पाश हो जाता इससे मालूम होता है कि कुफ़्फ़ार के दिल कितने सख़्त हैं कि ऐसे बा-अ़ज़मत कलाम से असर पिज़ीर नहीं होते। (फ़ा67) मौजूद का भी और मअ़दूम का भी दुनिया का भी और आख़िरत का भी। (फ़ा68) मुल्क व हुकूमत का हक़ीक़ी मालिक कि तमाम मौजूदात उसके तहत मुल्क व हुकूमत है और उसकी मालकियत व सल्तनत दाइमी है जिसे ज़वाल नहीं। (फ़ा69) हर ऐब से और तमाम बुराईयों से (फ़ा70) अपनी मख़्लूक़ को। (फ़ा71) अपने अ़ज़ाब से अपने फ़रमांबरदार बन्दों को। (फ़ा72) यानी अ़ज़मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में और अपनी बड़ाई का इज़हार उसी के शायाँ और लाइक़ है कि उसका हर कमाल अ़ज़ीम है और हर सिफ़ते आली मख़्लूक़ में किसी को नहीं पहुंचता कि तकब्बुर यानी अपनी बड़ाई का इज़हार करे बन्दे के लिए इज्ज़ व इन्केसार शायाँ है। (फ़ा73) नीस्त से हस्त करने वाला (फ़ा74) जैसी चाहे (फ़ा75) निन्नानवे जो हदीस में वारिद हैं।

(बक़िया सफ़हा 888 का) यह हज़रात रवाना हुए और औरत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था उससे ख़त मांगा वह इन्कार कर गई और क़सम खा गई सहाबा ने वापसी का क़स्द किया हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ब-क़सम फ़रमाया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औरत से फ़रमाया। या ख़त निकाल या गर्दन रख जब उसने देखा कि हज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त निकाला हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बुला कर फ़रमाया कि ऐ हातिब इसका क्या बाइस उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैंने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उनकी मुहब्बत न आई लेकिन वाक़िआ़ यह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उनकी क़ौम से न था मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उनके मक्का मुकर्रमा में रिश्तादार हैं जो उनके घर बार की निगरानी करते हैं मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था इस लिए मैंने यह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एहसान रख दूं ताकि वह मेरे घर वालों को न सताएँ और यह मैं यक़ीन से जानता हूं कि अल्लाह तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है मेरा ख़त उन्हें बचा न सकेगा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनका यह उज़्र क़बूल फ़रमाया और उनकी तस्दीक़ की हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उमर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) अल्लाह तआ़ला ख़बरदार है जब ही उसने अहले बद्र के हक़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया या सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के आंसू जारी हो गए और यह आयात नाज़िल हुईं (फ़ा3) यानी इस्लाम और कुरआन (फ़ा4) यानी मक्का मुकर्रमा से (फ़ा5) यानी अगर कुफ़्फ़ार तुम पर मौक़ा पा जायें (फ़ा6) ज़रब व क़त्ल के साथ (फ़ा7) सब व शितम और (फ़ा8) तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उनसे भलाई की उम्मीद रखना और उनकी अ़दावत से ग़ाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये। (फ़ा9) जिन की वजह से तुम कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मवालात करते हो। (फ़ा10) कि फ़रमांबरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर नाफ़रमान जहन्नम में (फ़ा11) हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु और दूसरे मोमिनीन को ख़िताब है और सब को हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इक़्तेदा करने का हुक्म है कि दीन के मुआ़मले में अहले क़राबत के साथ उनका तरीक़ा इख़्तियार करें। (फ़ा12) साथ वालों से अहले ईमान मुराद हैं

(बक़िया सफ़हा 889 का) बन गए और बाहमी मुहब्बतें बढ़ीं। शाने नुज़ूलः जब ऊपर की आयात नाज़िल हुईं तो मोमिनीन ने अपने अहले क़राबत की अ़दावत में तशद्दुद किया उनसे बेज़ार हो गए और इस मुआ़मला में बहुत सख़्त हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन कुफ़्फ़ार का हाल बदलने वाला है और यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा25) दिल बदलने और हाल तब्दील करने पर (फ़ा26) यानी उन काफ़िरों से। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत ख़ज़ाआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस शर्त पर सुलह की थी कि न आपसे क़िताल करेंगे न आपके मुख़ालिफ़ को मदद देंगे अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया कि यह आयत उनकी वालिदा अस्मा बिन्त अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई उनकी वालिदा मदीना तय्येबा में उनके लिए तोहफ़ा लेकर आई थीं और थीं मुशरिका तो हज़रत अस्मा ने उनके हदाया क़बूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की इजाज़त न दी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या हुक्म है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलायें उनके हदाया क़बूल करें उनके साथ अच्छा सुलूक करें।

(बक़िया सफ़हा 890 का) (फ़ा43) और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी (फ़ा44) तो उनसे बैअ़त लो और अल्लाह से उनकी मग़फ़िरत चाहो (फ़ा45) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(12) ऐ ईमान वालो उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है (फ़ा46) वह आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं (फ़ा47) जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से।(13) (फ़ा48) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा27) यानी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती ममनूअ़ है (फ़ा28) कि उनकी हिजरत ख़ालिस दीन के लिए है ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने शौहरों की अ़दावत में घर छोड़ा हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उन औरतों को क़सम दी जाये कि वह न शौहरों की अ़दावत में निकली हैं और न और किसी दुनियवी वजह से उन्होंने सिर्फ़ अपने दीन व ईमान के लिए हिजरत की है। (फ़ा29) मुसलमान औरतें (फ़ा30) यानी काफ़िरों को (फ़ा31) यानी काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों को हलाल मसला औरत मुसलमान होकर काफ़िर मर्द की ज़ौजियत से ख़ाली हो गई (फ़ा32) यानी जो महर उन्होंने उन औरतों को दिये थे वह उन्हें वापस कर दो यह हुक्म अहले ज़िम्मा के लिए है जिनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई लेकिन हरबी औरतों के महर वापस करना न वाजिब न सुन्नत (व इन् कानल् अमूरू बि-ईताअि मा अन्फ़कू लिल् वुजूबी फ़हु-व मन्सूख़ुन् व इन् का-न ल-नदु-ब कमा हु-व क़ौलुश्-शाफ़अ़ी फ़ला) मसला और यह महर देना इस सूरत में है जब कि औरत का काफ़िर शौहर उसको तलब करे और अगर न तलब करे तो उसको कुछ न दिया जाएगा मसला इसी तरह अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को महर नहीं दिया था तो भी वह कुछ न पाएगा **शाने नुज़ूलः** यह आयत सुलह हुदैबिया के बाद नाज़िल हुई सुलह में यह शर्त थी कि मक्का वालों में से जो शख़्स ईमान लाकर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो उसको अहले मक्का वापस ले सकते हैं इस आयत में यह बयान फ़रमा दिया गया कि यह शर्त सिर्फ़ मर्दों के लिए औरतों की तसरीह अहद नामा में नहीं न औरतें इस क़रारदाद में दाख़िल हो सकती है क्योंकि मुसलमान औरत काफ़िर के लिए हलाल नहीं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत हुक्मे अव्वल की नासिख़ है यह उस तक़दीर पर है कि औरतें अहदे सुलह में दाख़िल हों मगर औरतों का इस अहद में दाख़िल होना सही नहीं क्योंकि हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अहद नामा के यह अलफ़ाज़ मरवी हैं (ला या ती-क मिन्ना रजुलुन् व इन् का-न अ़ला दीनि-क इल्ला रदत्तुहू) यानी हम में से जो मर्द आपके पास पहुंचे ख़्वाह वह आपके दीन ही पर हो आप उसको वापस देंगे (फ़ा33) यानी मुहाजिरा औरतों से अगरचे दारुलहरब में उनके शौहर हों क्योंकि इस्लाम लाने से वह उन शौहरों पर हराम हो गईं और उनकी ज़ौजियत में न रहीं। **मसलाः** *व हतज़्-ज बिही अबू हनी-फ-तः अ़ला अन्न ला इद्-दतः अ़लल् मुहा-ज-रति फ-यजूज़ू ल-हत्-त-ज़व्वुजु मिन् ग़ैरि अ़िद्दतिन् ख़िलाफ़न् लहुमा* (फ़ा34) महर देने से मुराद उसको अपने ज़िम्मा लाज़िम कर लेना है अगरचे बिलफ़ेअ़ल न दिया जाये। मसला इससे यह भी साबित हुआ कि उन औरतों से निकाह करने पर नया महर वाजिब होगा उन के शौहरों को जो अदा कर दिया गया वह उसमें मुजरा व महसबू न होगा (फ़ा35) यानी जो औरतें दारुल हरब में रह गईं या मुरतदा होकर दारुल हरब चली गईं उन से ज़ौजियत का इलाक़ा न रखो चुनान्चे यह आयत नाज़िल होने के बाद असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन काफ़िरा औरतों को तलाक़ दे दी जो मक्का मुकर्रमा में थीं **मसलाः** अगर मुसलमान की औरत (मआ़ज़ल्लाह) मुरतद हो जाये तो उसके क़ैदे निकाह से बाहर न होगी (अ़लैहिल्फ़तवा ज़ज़्रन् व तैसीरन्) (फ़ा36) यानी उन औरतों को तुम ने जो महर दिये थे वह उन काफ़िरों से वसूल कर लो जिन्होंने उनसे निकाह किया। (फ़ा37) अपनी औरतों पर हिजरत करके दारुस्सलाम में चली आयें उनके मुसलमान शौहरों से जिन्होंने उनसे निकाह किया। (फ़ा38) **शाने नुज़ूलः** इस आयत के नाज़िल होने के बाद मुसलमानों ने तो मुहाजिरा औरतों के महर उनके काफ़िर शौहरों को अदा कर दिये और काफ़िरों ने मुरतदात के महर मुसलमानों को अदा करने से इन्कार किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा39) जिहाद में और उन से ग़नीमत पाओ (फ़ा40) यानी मुरतदा होकर दारुल हरब में चली गईं थीं (फ़ा41) उन औरतों के महर देने में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मोमिनीन मुहाजिरीन की औरतों में से छः औरतें ऐसी थीं जिन्होंने दारुल हरब को इख़्तियार किया और मुशरिकीन के साथ लाहिक़ हुईं और मुरतद हो गईं रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि ने उनके शौहरों को माले ग़नीमत से उनके महर अ़ता फ़रमाए फ़ाइदा इन आयतों में मुहाजरात के इम्तेहान और कुफ़्फ़ार ने जो अपनी बीवियों पर ख़र्च किया हो वह बाद हिजरत उन्हें देना और मुसलमानों ने जो अपनी बीवियों पर ख़र्च किया हो वह उनके मुरतद होकर काफ़िरों से मिल जाने के बाद उनसे मांगना और जिनकी बीवियां मुरतद होकर चली गई हों उन्होंने जो उन पर ख़र्च किया था वह उन्हें माले ग़नीमत में से देना यह तमाम अहकाम मन्सूख़ हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से क्योंकि यह अहकाम जभी तक बाक़ी रहे जब तक यह अहद रहा और जब हव अहद उठ गया तो अहकाम भी न रहे (फ़ा42) जैसा कि ज़मानए जाहिलियत में दस्तूर था कि लड़कियों को ब-ख़्याले आ़र व ब-अन्देशए नादारी ज़िन्दा दफ़न कर देते थे इससे और हर क़त्ले नाहक़ से बाज़ रहना इस अहद में शामिल है (फ़ा43) यानी पराया बच्चा लेकर शौहर को धोखा दें और उसको अपने पेट से जना हुआ बतायें जैसा कि जाहिलियत के ज़माना में दस्तूर था (फ़ा44) नेक बात अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी है (फ़ा45) मरवी है कि जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रोज़े फ़तहे मक्का मर्दों की बैअ़त लेकर फ़ारिग़ हुए तो कोहे सफ़ा पर औरतों से बैअ़त लेना शुरू की और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु नीचे खड़े हुए हुज़ूर का कलाम मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे हिन्द बिन्त उतबा अबू सुफ़ियान की बीवी ख़ौफ़ज़दा बुरक़ा पहन कर इस तरह हाज़िर

हुई कि पहचानी न जाये सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअ़त कर लेता हूं कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो हिन्द ने सर उठा कर कहा कि आप हम से वह अहद लेते हैं जो हमने आपको मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम और जिहाद पर बैअ़त ली गई थी फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और चोरी न करेंगी तो हिन्द ने अर्ज़ किया कि अबू सुफ़ियान बख़ील आदमी हैं और मैंने उनका माल ज़रूर लिया है मैं नहीं समझती मुझे हलाल हुआ या नहीं अबू सुफ़ियान हाज़िर थे उन्होंने कहा जो तूने पहले लिया और जो आइन्दा ले सब हलाल इस पर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद किया तू हिन्द बिन्द उतबा है अर्ज़ किया जी हां जी हां जो कुछ मुझ से क़ुसूर हुए हैं माफ़ फ़रमाइये फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और न बदकारी करेंगी तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औरत बदकारी करती है फिर फ़रमाया न अपनी औलाद को क़त्ल करें हिन्द ने कहा हमने छोटे छोटे पाले जब बड़े होगए तुमने उन्हें क़त्ल कर दिया तुम जानो और वह जानें उसका लड़का हन्ज़ला बिन अबू सुफ़ियान बद्र में क़त्ल कर दिया गया हिन्द की यह गुफ़्तगू सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाँव के दर्मियान कोई बुहतान न घड़ेंगी हिन्द ने कहा बख़ुदा बुहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हमको नेक बातों और बरतर ख़सलतों का हुक्म देते हैं फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाफ़रमानी न करेंगी इस पर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इस लिए हाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आपकी नाफ़रमानी का ख़्याल आने दें औरतों ने इन तमाम उमूर का इक़रार किया और चार सौ सत्तावन औरतों ने बैअ़त की इस बैअ़त में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुसाफ़ा न फ़रमाया और औरतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया बैअ़त की कैफ़ियत में यह भी बयान किया गया है कि एक क़दह पानी में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औरतों ने अपने हाथ डाले और यह भी कहा गया है बैअ़त कपड़े के वास्ते से लीग ई और बईद नहीं है कि दोनों सूरतें अ़मल में आई हों **मसाइलः** बैअ़त के वक़्त मिक़राज़ का इस्तेमाल मशाइख़ का तरीक़ा है यह भी कहा गया है कि यह हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सुन्नत है ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशाइख़ का मामूल है और कहा गया है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मन्क़ूल है औरतों की बैअ़त में अजनबिया का हाथ छूना हराम है या बैअ़त ज़बान से हो या कपड़े वग़ैरह के वास्ता से (फ़ा46) उन लोगों से मुराद यहूद हैं (फ़ा47) क्योंकि उन्हें कुतुबे साबिक़ा से मालूम हो चुका था और वह यक़ीन जानते थे कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और यहूद ने उसकी तकज़ीब की है इस लिए उन्हें अपनी मग़फ़िरत की उम्मीद नहीं (फ़ा48) फिर दुनिया में वापस आने की या यह माना हैं कि यहूद सवाबे आख़िरत से ऐसे नाउम्मीद हुए जैसे कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने हाल को जान कर सवाबे आख़िरत से बिल्कुल मायूस हैं।

(बक़िया सफ़हा 891 का) ईज़ा देना शदीद तरीन जुर्म है और उसके वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से महरूम हो जाता है। (फ़ा10) और तौरेत व दीगर कुतुबे इलाहिया का इक़रार व एतेराफ़ करता हुआ और तमाम पहले अम्बिया को मानता हुआ। (फ़ा11) हदीस रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से अस्हाबे कराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और वही रसूल हैं जिनकी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने बशारत दी अगर उमूरे सल्तनत की पाबन्दियां न होतीं तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कफ़श बरदारी की ख़िदमत बजा लाता। (अबू दाऊद) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है कि तौरेत में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त मज़कूर और यह भी कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आपके पास मदफ़ून होंगे अबू दाऊद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है (तिर्मिज़ी) हज़रत कअ़ब अहबार से मरवी है कि हवारियों ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से अर्ज़ किया या रूहुल्लाह क्या हमारे बाद और कोई उम्मत भी है फ़रमाया हां अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत वह लोग हुकमा उलमा अबरार व अतक़िया हैं और फ़िक़्ह में नाइब अम्बिया हैं अल्लाह तआ़ला से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी और अल्लाह तआ़ला उन से थोड़े अ़मल पर राज़ी

(बक़िया सफ़हा 892 का) अ़लैहिस्सलाम नुज़ूल फ़रमायेंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा। (फ़ा17) **शाने नुज़ूलः** मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआ़ला को कौनसा अ़मल बहुत पसन्द है तो हम वही करते इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में इस अ़मल को तिजारत से तअ़बीर फ़रमाया गया क्योंकि जिस तरह तिजारत से नफ़ा की उम्मीद होती है इसी तरह उन आमाल से बेहतरीन नफ़ा रज़ाए इलाही और जन्नत व नजात हासिल होती है। (फ़ा18) अब वह तिजारत बताई जाती है। (फ़ा19) जान और माल और हर एक चीज़ से। (फ़ा20) और ऐसा करो तो। (फ़ा21) इसके अलावा जल्द मिलने वाली। (फ़ा22) इस फ़तह से या फ़तहे मक्का मुराद है या बिलादे फ़ारस व रोम की फ़तह। (फ़ा23) दुनिया में फ़तह की और आख़िरत में जन्नत की। (फ़ा24) हवारियों ने दीने इलाही की मदद की थी जब कि- (फ़ा25) हवारी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के मुख़लिसीन को कहते हैं यह बारह हज़रात थे जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर अव्वल ईमान लाये उन्होंने अर्ज़ किया। (फ़ा26) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर। (फ़ा27) इन दोनों में क़िताल हुआ। (फ़ा28) ईमान वाले इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

आसमान पर उठा लिये गए तो उनकी क़ौम तीन फ़िरक़ों में मुनक़सिम हो गई एक फ़िरक़ा ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की निस्बत कहा कि वह अल्लाह था आसमान पर चला गया दूसरे फ़िरक़ा ने कहा कि वह अल्लाह तआ़ला का बेटा था उसने अपने पास बुला लिया तीसरे फ़िरक़ा ने कहा कि वह अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल थे उसने उठा लिया यह तीसरे फ़िरक़े वाले मोमिन थे उनकी उन दोनों फ़िरक़ों से जंग रही और काफ़िर गरोह उन पर ग़ालिब रहे यहां तक कि सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ुहूर फ़रमाया उस वक़्त ईमानदार गरोह उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुआ इस तक़दीर पर मतलब यह है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की हमने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्दीक़ करने से मदद फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 893 का) भी है कि हुज़ूरे अनवर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम लिखते और किताब से कुछ पढ़ते न थे और यह आपकी फ़ज़ीलत थी कि ग़ायत हुज़ूर इल्म से उसकी हाजत न थी ख़त एक सनअ़ते ज़ेहनिया है जो आलए जिस्मानिया से सादिर होती है तो जो ज़ात ऐसी हो कि क़लम आला उसके ज़ेरे फ़रमान हो उसको इस किताब की क्या हाजत फिर हुज़ूर का किताबत न फ़रमाना और किताबत का माहिर होना एक मोअ्जेज़ए अ़ज़ीमा है कातिबों को इल्मे ख़त और रस्मे किताबत की तालीम फ़रमाते और अहले हिरफ़त को हिरफ़तों की तालीम देते और हर कमाले दुनियवी व उख़रवी में अल्लाह तआ़ला ने आपको तमाम ख़ुल्क़ से आ़लम किया (फ़ा4) यानी क़ुरआन पाक सुनाते हैं (फ़ा5) अ़क़ाइदे बातिला व अख़्लाक़े रज़ीला व ख़बाइसे जाहिलियत व क़बाइहे आमाल से (फ़ा6) किताब से मुराद क़ुरआन और हिकमत से सुन्नत व फ़िक़ह है या अहकामे शरीअ़त व असरारे तरीक़त (फ़ा7) यानी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल (फ़ा8) कि शिर्क व अ़क़ाइदे बातिला व ख़बाइसे आमाल में गिरिफ़्तार थे और उन्हें मुर्शिद कामिल की शदीद हाजत थी (फ़ा9) यानी उमीय्यों में से (फ़ा10) औरों से मुराद या तो अ़जम हैं या वह तमाम लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद क़ियामत तक इस्लाम में दाख़िल हों उनको (फ़ा11) उनका ज़माना न पाया उनके बाद आये या फ़ज़्ल व शरफ़ में उनके दर्जा को न पहुंचे क्योंकि सहाबा के बाद के लोग ख़्वाह ग़ौस व क़ुतुब हो जायेंगे मगर फ़ज़ीलत सहाबियत नहीं पा सकते (फ़ा12) अपने ख़ल्क़ पर कि उसने उनकी हिदायत के लिए अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मबऊस फ़रमाया (फ़ा13) और उसके अहकाम का इत्तेबाअ़ उन पर लाज़िम किया गया था वह लोग यहूद हैं (फ़ा14) और इस पर अ़मल न किया और इसमें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त व सिफ़त देखने के बावजूद हुज़ूर पर ईमान न लाये। (फ़ा15) और बोझ के सिवा उनसे कुछ भी नफ़ा न पाए और जो उलूम उनमें हैं उनसे असलन वाक़िफ़ न हो यही हाल उनका यहूद का है जो तौरेत उठाये फिरते हैं इसके अलफ़ाज़ रटते हैं और उससे नफ़ा नहीं उठाते उसके मुताबिक़ अ़मल नहीं करते और यही मिसाल उन लोगों पर सादिक़ आती है जो क़ुरआने करीम के माना को न समझें और उस पर अ़मल न करें और उस से एराज़ करें (फ़ा16) जैसा कि तुम कहते हो कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं (फ़ा17) कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाये

(बक़िया सफ़हा 894 का) वाला कोई हाकिम मौजूद हो या फ़नाए शहर जो शहर से मुत्तसिल हो और अहले शहर उसको अपने हवाइज के काम में लाते हों (2) हाकिम (3) वक़्ते ज़ुहर (4) ख़ुतबा वक़्त के अन्दर (5) ख़ुतबा का क़ब्ल नमाज़ होना इतनी जमाअ़त में जो जुमा के लिए ज़रूरी है (6) जमाअ़त और उसकी अक़ल्ले मिक़दार तीन मर्द हैं सिवाए इमाम के (7) इज़्ने आ़म कि नमाज़ियों को मक़ामे नमाज़ में आने से रोका न जाए (फ़ा24) यानी अब तुम्हारे लिए जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या तल्बे इल्म या इयादते मरीज़ या शिरकते जनाज़ा या ज़ियारते उलमा और उसके मिस्ल कामों में मश्ग़ूल होकर नेकियां हासिल करो। (फ़ा25) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रोज़े जुमा ख़ुतबा फ़रमा रहे थे इस हाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और हस्बे दस्तूर एलान के लिए तबल बजाया गया ज़माना बहुत तंगी और गिरानी का था लोग बईं ख़्याल उसकी तरफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अजनास ख़त्म हो जायें और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा26) मसलाः इससे साबित हुआ कि ख़तीब को खड़े होकर ख़ुतबा पढ़ना चाहिए। (फ़ा27) यानी नमाज़ का अज्र व सवाब और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने की बरकत व सआ़दत।

(बक़िया सफ़हा 896 का) अ़लैहि वसल्लम के सरे मुबारक पर मेअ़राज का ताज है हज़रत रहमान ने उन्हें इज़्ज़त व क़ुव्वत दी है इब्ने उबय कहने लगा चुप मैं तो हंसी से कह रहा था ज़ैद बिन अरक़म ने यह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचाई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इब्ने उबय के क़त्ल की इजाज़त चाही सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया और इरशाद किया कि लोग कहेंगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अपने असहाब को क़त्ल करते हैं हुज़ूरे अनवर ने इब्ने उबय से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तूने यह बातें कही थीं वह मुकर गया और क़सम खा गया कि मैंने कुछ भी नहीं कहा उसके साथी जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर थे वह अर्ज़ करने लगे कि इब्ने उबय बूढ़ा बड़ा शख़्स है यह जो कहता है ठीक कहता है ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोखा हुआ हो और बात याद न रही हो फिर जब ऊपर की आयतें नाज़िल हुईं और इब्ने उबय का झूंठ ज़ाहिर हो गया तो उससे कहा गया कि जा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त कर हुज़ूर तेरे लिए अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहें तो गर्दन फेरी और कहने लगा कि तुमने कहा ईमान ला तो मैं ईमान ले आया तुम ने कहा ज़कात दे तो मैंने ज़कात दी अब यही बाक़ी रह गया है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सज्दा करूं इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा16) इस लिए कि वह निफ़ाक़ में रासेख़ और पुख़्ता हो चुके हैं। (फ़ा17) वही सब का राज़िक़ है (फ़ा18)

उस ग़ज़वा से लौट कर (फ़ा19) मुनाफ़िक़ीन ने अपने को इज़्ज़त वाला कहा और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा20) इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बाद इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ की हालत पर मर गया। (फ़ा21) पंजगाना नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से। (फ़ा22) कि दुनिया में मश्गूल होकर दीन को फ़रामोश कर दे और माल की मुहब्बत में अपने हाल की परवाह न करे और औलाद की ख़ुशी के लिए राहत आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे। (फ़ा23) कि उन्होंने दुनियाए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली निअ़मतों की परवाह न की। (फ़ा24) यानी जो सदक़ात वाजिब हैं वह अदा करो। (फ़ा25) जो लौहे महफ़ूज़ में मकतूब है।

(बक़िया सफ़हा 901 का) दरवाज़ा खटखटाया दुश्मन ग़ाफ़िल हो गया था उसने मौक़ा पाया क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया औफ़ ने ख़िदमते अक़दस में हाज़िर दरियाफ़्त किया कि क्या यह बकरियां उनके लिए हलाल हैं हुज़ूर ने इजाज़त दी और यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा13) दोनों जहान में। (फ़ा14) बूढ़ी हो जाने की वजह से कि वह सिन्ने अयास को पहुंच गई हों सिन्ने अयास एक क़ौल में है पचपन और एक क़ौल में साठ साल की उम्र है और असह यह है कि जिस उम्र में भी हैज़ मुन्क़तअ़ हो जाये वही सिन्ने अयास है (फ़ा15) इसमें कि उनका हुक्म क्या है **शाने नुज़ूलः** सहाबा ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हैज़ वाली औरतों की इद्दत तो हमें मालूम हो गई जो हैज़ वाली न हों उनकी इद्दत क्या है इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा16) यानी वह सग़ीरा हैं या उम्र तो बुलूग़ की आ गई मगर अभी हैज़ न शुरू हुआ उनकी इद्दत भी तीन माह है (फ़ा17) **मसलाः** हामिला औरतों की इद्दत वज़ए हमल है वह इद्दत तलाक़ की हो या वफ़ात की (फ़ा18) अहकाम जो मज़कूर हुए (फ़ा19) और अल्लाह तआ़ला के नाज़िल फ़रमाये हुए अहकाम पर अ़मल करे और अपने ऊपर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उन्हें बएहतियात अदा करे (फ़ा20) **मसलाः** तलाक़ दी हुई औरत को ता इद्दत रहने के लिए अपने हस्बे हैसियत मकान देना शौहर पर वाजिब है और उस ज़माना में नफ़क़ा देना भी वाजिब है। (फ़ा21) जगह में उनके मकान को घेर कर या किसी नामुवाफ़िक़ को उनके शरीके मस्कन करके या और कोई ऐसी ईज़ा देकर वह निकलने पर मजबूर हों। (फ़ा22) वह मुतल्लक़ात (फ़ा23) क्योंकि उनकी इद्दत जब ही तमाम होगी। **मसलाः** नफ़क़ा जैसा हामिला को देना वाजिब है ऐसा ही ग़ैर हामिला को भी ख़्वाह उसको तलाक़े रजई दी हो या बाइन।

(बक़िया सफ़हा 902 का) पर दूध पिलाना वाजिब हो जाता है बच्चे की मां जब तक उसके बाप के निकाह में हो या तलाक़े रजई की इद्दत में ऐसी हालत में उस को दूध पिलाने की उजरत लेना जाइज़ नहीं बाद इद्दत जाइज़ है। **मसलाः** किसी औरत को मुअ़य्यन उजरत पर दूध पिलाने के लिए मुक़र्रर करना जायज़ है। **मसलाः** ग़ैर औरत की ब-निस्बत उजरत पर दूध पिलाने की मां ज़्यादा मुस्तहिक़ है। **मसलाः** अगर मां ज़्यादा उजरत तलब करे तो फिर ग़ैर ज़्यादा ऊला। मसला दूध पिलाई पर बच्चे को नहलाना उसके कपड़े धोना उसके तेल लगाना उसकी ख़ुराक का इन्तेज़ाम रखना लाज़िम है लेकिन इन सब चीज़ों की क़ीमत उसके वालिद पर है। मसला अगर दूध पिलाई ने बच्चे को बजाए अपने बकरी का दूध पिलाया या खाने पर रखा तो वह उजरत की मुस्तहिक़ नहीं (फ़ा25) न मर्द औरत के हक़ में कोताही करे न औरत मुआ़मला में सख़्ती। (फ़ा26) मसलन मां ग़ैर औरत के बराबर उजरत पर राज़ी न हो और बाप ज़्यादा देना न चाहे। (फ़ा27) मुतल्लक़ा औरतों को और दूध पिलाने वाली औरतों को (फ़ा28) यानी तंगीए मआ़श के बाद (फ़ा29) इससे हिसाबे आख़िरत मुराद है जिसका वक़ूअ़ यक़ीनी है इस लिए सीग़ए माज़ी से उसकी ताबीर फ़रमाई गई। (फ़ा30) अ़ज़ाबे जहन्नम की या दुनिया में क़हत व क़त्ल वग़ैरह बलाओं में मुब्तला करके। (फ़ा31) यानी वह इज़्ज़ते रसूले करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा32) कुफ़्र व जहल की। (फ़ा33) ईमान व इल्म के (फ़ा34) जन्नत जिस की निअ़मतें हमेशा बाक़ी रहेंगी कभी मुन्क़तअ़ न होंगी। (फ़ा35) एक के ऊपर एक हर एक की मोटाई पांच सौ बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासला पांच सौ बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासला पांच सौ बरस की राह। (फ़ा36) यानी सात ही ज़मीनें (फ़ा37) यानी अल्लाह तआ़ला का हुक्म उन सब में जारी व नाफ़िज़ है या यह माना हैं कि जिबरील अमीन आसमान से वही लेकर ज़मीन की तरफ़ उतरते हैं।

(बक़िया सफ़हा 903 का) किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अर्ज़ किया जाये कि दहन मुबारक से मग़ाफ़ीर की बू आती है और मग़ाफ़ीर की बू हुज़ूर को नापसन्द थी चुनान्चे ऐसा किया गया हुज़ूर को उनका मन्शा मालूम था फ़रमाया मग़ाफ़ीर तो मेरे क़रीब नहीं आया ज़ैनब के यहां शहद मैंने पिया है इसको मैं अपने ऊपर हराम करता हूं मक़सूद यह कि हज़रत ज़ैनब के यहां शहद का शुग़ल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शहीद ही तर्क फ़रमाये देते हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा3) यानी कफ़्फ़ारा तो मारिया को ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाइये या शहद नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से यह मुराद है कि क़सम के बाद इन्शाअल्लाह कहा जाये ताकि उसके ख़िलाफ़ करने से हिन्स (क़सम शिकनी) न हो मक़ातिल से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मारिया की तहरीम के कफ़्फ़ारा में एक ग़ुलाम आज़ाद किया और हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया क्योंकि आप मग़फ़ूर हैं कफ़्फ़ारा का हुक्म तालीमे उम्मत के लिए है **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेना यमीन यानी क़सम है। (फ़ा4) यानी हज़रत हफ़सा (फ़ा5) मारिया को अपने ऊपर हराम कर लेने की और उसके साथ यह फ़रमाया कि इसका किसी पर इज़्हार न करना। (फ़ा6) यानी हज़रत हफ़सा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से (फ़ा7) यानी तहरीमे मारिया और ख़िलाफ़ते शैख़ैन के मुतअ़ल्लिक़ जो दो बातें फ़रमाई थीं उनमें से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुमने यह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात का ज़िक्र न फ़रमाया यह शाने करीमी थी कि गिरिफ़्त फ़रमाने में बाज़ से चश्मपोशी फ़रमाई (फ़ा8) हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा (फ़ा9) जिससे कुछ भी छुपा नहीं उसके बाद अल्लाह तआ़ला हज़रत आइशा व हफ़सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को ख़िताब फ़रमाता है (फ़ा10) यह तुम पर वाजिब है (फ़ा11) कि तुम्हें वह बात पसन्द आई जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गिराँ है यानी तहरीमे मारिया (फ़ा12) और बाहम मिल कर ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करो जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नागवार हो

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۞ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۞ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۞ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

सूरतुल् मुल्कि

(मक्की है इसमें 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा–र–कल्लज़ी बि–यदिहिल् मुल्कु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरु(1)निल्लज़ी ख़–ल–क़ल् मौ–त वल्हया–त लियब्लु–वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़–म–लन् व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ग़फ़ूर(2) अ़ल्लज़ी ख़–ल–क़ सब्–अ़ समावातिन् तिबाक़न् मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन् फ़र्जिइ़ल् ब–स–र हल् तरा मिन् फ़ुतूर(3)सुम्मर्जिइ़ल् ब–स–र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल् ब–सरु ख़ासिअंव्–व हु–व हसीर(4)व ल–क़द् ज़य्यन्नस् समाअद्दुन्या बि–मसाबी–ह् व जअ़ल्नाहा रुजूमंल् लिश्शयातीनि व अअ्तदना लहुम अ़ज़ाबस्सओ़र(5)व लिल्लज़ी–न क–फ़रू बि–रब्बिहिम् अ़ज़ाबु जहन्न–म व बिअ्सल् मसीर(6)इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव् व हि–य तफ़ूर(7) तकादु त–मय्यज़ु मिनल्ग़ैज़ि कुल्लमा उल्क़ि–य फ़ीहा फ़ौजुन् स–अ–लहुम् ख़–ज़–नतुहा अ–लम् यअ्तिकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

बड़ी बरकत वाला है वह जिसके क़ब्ज़े में सारा मुल्क (फ़ा2) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1) वह जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो (फ़ा3) तुम में किसका काम ज़्यादा अच्छा है (फ़ा4) और वही इज़्ज़त वाला बख़्शिश वाला है।(2) जिसने सात आसमान बनाए एक के ऊपर दूसरा तू रहमान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है (फ़ा5) तू निगाह उठा कर देख (फ़ा6) तुझे कोई रख़ना नज़र आता है।(3) फिर दोबारा निगाह उठा (फ़ा7) नज़र तेरी तरफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी।(4) (फ़ा8) और बेशक हमने नीचे के आसमान को (फ़ा9) चराग़ों से आरास्ता किया (फ़ा10) और उन्हें शैतानों के लिए मार किया (फ़ा11) और उनके लिए (फ़ा12) भड़कती आग का अ़ज़ाब तैयार फ़रमाया।(5) (फ़ा13) और जिन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया (फ़ा14) उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही बुरा अन्जाम।(6) जब उसमें डाले जायेंगे उसका रेंकना सुनेंगे कि जोश मारती है।(7) मालूम होता है कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गरोह उसमें डाला जाएगा उसके दारोग़ा (फ़ा15) उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला

(फ़ा1) सूरह मुल्क शफ़ाअ़त करती है (तिर्मिज़ी व अबू दाऊद) एक और हदीस में है असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक जगह ख़ेमा नसब किया वहां एक क़ब्र थी और उन्हें ख़्याल न था वह साहबे क़ब्र सूरह मुल्क पढ़ते रहे यहां तक कि तमाम की तो ख़ेमा वाले सहाबी ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया मैंने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया मुझे ख़्याल न था कि यहां क़ब्र है और थी वहां क़ब्र और साहबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहां तक कि ख़त्म किया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत मानिआ़ मुनज्जियह है अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाती है। (तिर्मिज़ी व क़ाल ग़रीब) (फ़ा2) जो चाहे करे जिसे चाहे इज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत। (फ़ा3) दुनिया की ज़िन्दगी में। (फ़ा4) यानी कौन ज़्यादा मुतीअ़ व मुख़लिस है। (फ़ा5) यानी आसमानों की पैदाइश से क़ुदरते इलाही ज़ाहिर है कि उसने कैसे मुस्तहकम उस्तवार मुस्तक़ीम मुस्तवी मुतनासिब बनाए। (फ़ा6) आसमान की तरफ़ बारे दिगर। (फ़ा7) और बार बार देख। (फ़ा8) कि बार बार की जुस्तजू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी। (फ़ा9) जो ज़मीन की तरफ़ सब से ज़्यादा ग़रीब है। (फ़ा10) यानी सितारों से (फ़ा11) कि शयातीन आसमान की तरफ़ उनकी गुफ़्तगू सुनने और बातें चुराने पहुंचें **(बक़िया सफ़्हा 943 पर)**

نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا
كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۚ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ

नज़ीर(8)क़ालू बला क़द जा–अना नज़ीरुन् फ़–कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा नज़्ज़–लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर(9)व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअु औ नअ़क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस्हा–बिस्सअ़ीर(10)फ़अ़्त–रफ़ू बि–ज़म्बिहिम् फ़सुह्क़ल् लि–अस्हाबिस् सअ़ीर(11) इन्नल्लज़ी–न यख़्शौ–न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि–र–तुंव् व अज्रुन् कबीर(12)व असिर्रू क़ौ–लकुम् अविज्हरू बिही इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस् सुदूर(13)अला यअ़्–लमु मन् ख़–ल–क़ व हुवल्लतीफ़ुल् ख़बीर(14) हुवल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल् अर्–ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही व इलैहिन्नुशूर(15)अ–अमिन्तुम् मन् फ़िस्माइ अंय्यख़्सि–फ़ बिकुमुलअर्–ज़ फ़इज़ा हि–य तमूर (16)अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समाइ अंय्युर्सि–ल अ़लैकुम् हासिबन् फ़–स–तअ़्लमू–न कै–फ़ नज़ीर(17)व ल–क़द कज़्–ज़–बल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़कै–फ़ का–न नकीर(18)अ–व–लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौ–क़हुम् साफ़्फ़ातिंव् व यक़्बिज़्–न मा युम्सिकुहुन्–न

न आया था।(8) (फ़ा16) कहेंगे क्यों नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए (फ़ा17) फिर हमने झुठलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में।(9) और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते (फ़ा18) तो दोज़ख़ वालों में न होते।(10) अब अपने गुनाह का इक़रार किया (फ़ा19) तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को।(11) बेशक वह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं (फ़ा20) उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।(12) (फ़ा21) और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वह तो दिलों की जानता है।(13) (फ़ा22) क्या वह न जाने जिसने पैदा किया (फ़ा23) और वही है हर बारीकी जानता ख़बरदार।(14) (रुकूअ़ 1) वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन राम कर दी तो उसके रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ (फ़ा24) और उसी की तरफ़ उठना है।(15) (फ़ा25) क्या तुम उससे निडर हो गए जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे (फ़ा26) जभी वह कांपती रहे।(16) (फ़ा27) या तुम निडर हो गए उससे जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम पर पथराव भेजे (फ़ा28) तो अब जानोगे (फ़ा29) कैसा था मेरा डराना।(17) और बेशक इनसे अगलों ने झुठलाया (फ़ा30) तो कैसा हुआ मेरा इंकार।(18) (फ़ा31) और क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते (फ़ा32) और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता (फ़ा33)

(फ़ा16) यानी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता। (फ़ा17) और उन्होंने अहकामे इलाही पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराया। (फ़ा18) रसूलों की हिदायत और उसको मानते मसलाः इससे मालूम हुआ तकलीफ़ का मदार अदिल्ला समइया व अक़लिया दोनों पर है और दोनों हुज्जतें मुलज़िमा हैं। (फ़ा19) कि रसूलों की तकज़ीब करते थे और उस वक़्त का इक़रार कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। (फ़ा20) और उस पर ईमान लाते हैं। (फ़ा21) उनकी नेकियों की जज़ा। (फ़ा22) इस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। शाने नुज़ूलः मुशरिकीन आपस में कहते थे चुपके चुपके बात करो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का ख़ुदा सुन न पाये इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती यह कोशिश फ़ुज़ूल है। (फ़ा23) अपनी मख़्लूक़ के अहवाल को। (फ़ा24) जो उसने तुम्हारे लिए पैदा फ़रमाई। (फ़ा25) क़ब्रों से जज़ा के लिए। (फ़ा26) जैसा क़ारून को धंसाया। (फ़ा27) ताकि तुम उसके असफ़ल में पहुंचो। (फ़ा28) जैसा लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम पर भेजा था। (फ़ा29) यानी अ़ज़ाब देख कर (फ़ा30) यानी पहली उम्मतों ने (फ़ा31) जब मैंने उन्हें हलाक किया (फ़ा32) हवा में उड़ते वक़्त (फ़ा33) पर फैलाने और समेटने की हालत में गिरने से

إِلَّا الرَّحْمٰنُ ۚ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمٰنِ ۚ إِنِ الْكٰفِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي
يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖ أَهْدٰى أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ
هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللّٰهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيٓـَٔتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهٖ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكٰفِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ آمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾

इल्लर्रह्मानु इन्नहू बिकुल्लि शैइम् बसीर(19)अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु–व जुन्दुल् लकुम् यन्सुरुकुम् मिन् दूनिर् रह्मानि इनिल् काफ़िरू–न इल्ला फ़ी गुरूर(20)अम्मन् हाज़ल्लज़ी यरज़ुकुकुम् इन् अम्स–क रिज़्कहू बल् लज्जू फ़ी अुतुव्विंव् व नुफ़ूर(21)अ–फ़–मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही अह्दा अम्यंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(22)कुल् हुवल्लज़ी अन्श–अकुम् व ज–अ–ल लकुमुस् सम्–अ वल्–अब्सा–र वल्–अफ़्इ–द–त क़लीलम् मा तश्कुरून(23)कुल् हुवल्लज़ी ज़–र–अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून(24)व यक़ूलू–न मता हाज़ल् वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (25)कुल् इन्नमल् अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व इन्नमा अना नज़ीरुम् मुबीन(26)फ़–लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़–तन् सी–अत् वुजूहुल्लज़ी–न क–फ़रू व क़ी–ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्–दअू न(27)कुल् अ–रऐतुम् इन् अह्ल–कनियल्लाहु व मम्मअ़ि–य औ रहि–मना फ़मंय्युजीरुल् काफ़िरी–न मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम(28)कुल् हुवर्रह्मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि त–वक्कल्ना फ़–स–तअ्–लमू–न मन् हु–व फ़ी ज़लालिम् मुबीन(29) कुल् अ–रऐतुम् इन् अस्ब–ह् मा–उकुम् ग़ौरन् फ़–मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम् मअ़ीन(30)

सिवा रहमान के (फ़ा34) बेशक वह सब कुछ देखता है।(19) या वह कौनसा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे (फ़ा35) काफ़िर नहीं मगर धोखे में।(20) (फ़ा36) या कौनसा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले (फ़ा37) बल्कि वह सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं।(21) (फ़ा38) तो क्या वह जो अपने मुँह के बल औंधा चले (फ़ा39) ज़्यादा राह पर है या वह जो सीधा चले (फ़ा40) सीधी राह पर।(22) (फ़ा41) तुम फ़रमाओ (फ़ा42) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए (फ़ा43) कितना कम हक़ मानते हो।(23) (फ़ा44) तुम फ़रमाओ वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे।(24) (फ़ा45) और कहते हैं (फ़ा46) यह वादा (फ़ा47) कब आएगा अगर तुम सच्चे हो।(25) तुम फ़रमाओ यह इल्म तो अल्लाह के पास है और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूं।(26) (फ़ा48) फिर जब उसे (फ़ा49) पास देखेंगे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जायेंगे (फ़ा50) और उन से फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा51) यह है जो तुम मांगते थे।(27) (फ़ा52) तुम फ़रमाओ (फ़ा53) भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को (फ़ा54) हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए (फ़ा55) तो वह कौनसा है जो काफ़िरों को दुख के अ़ज़ाब से बचा लेगा।(28) (फ़ा56) तुम फ़रमाओ वही रहमान है (फ़ा57) हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे (फ़ा58) कौन खुली गुमराही में है।(29) तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुबह को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए (फ़ा59) तो वह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता।(30) (फ़ा60) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा34) यानी बावजूदेकि परिन्दे बोझल मोटे जसीम होते हैं और शय सक़ील तबअ़न पस्ती की तरफ़ माइल होती है वह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत है कि वह ठहरे रहते हैं ऐसे ही आसमानों को जब तक वह चाहे रुके हुए हैं और वह न रोके तो गिर पड़ेंगे। (फ़ा35) अगर वह तुम्हें अ़ज़ाब करना चाहे। (फ़ा36) यानी काफ़िर शैतान के इस फ़रेब में हैं कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। (फ़ा37) यानी उसके सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं। (फ़ा38) **(बक़िया सफ़हा 925 पर)**

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝١ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝٢ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝٣ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝٤ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۝٥
بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٧ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۝١١ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۝١٧ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨

सूरतुल् क़लमि

(मक्की है इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नून् वल्क़–लमि व मा यस्तुरून(1)मा अन्–त बिनिअ्–मति रब्बि–क बि–मज्नून(2)व इन्–न ल–क ल–अज्रन् ग़ै–र मम्नून(3)व इन्न–क ल–अ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीम(4)फ़–सतुब्सिरु व युब्सिरून(5) बि–अय्यिकुमुल् मफ़्तून(6)इन्–न रब्ब–क हु–व अअ्–लमु बिमन् ज़ल्–ल अन् सबीलिही व हु–व अअ्–लमु बिल्मुह्–तदीन(7)फ़ला तुतिअ़िल् मु–कज़्ज़िबीन(8)वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून(9) वला तुतिअ् कुल्–ल हल्लाफ़िम् महीन(10)हम्माज़िम् मश्शाइम् बि–नमीमिम्(11)मन्नाअ़िल् लिल्ख़ैरि मुअ्तदिन् असीम(12)अ़ुतुल्लिम् बअ्–द ज़ालि–क ज़नीम(13)अन् का–न ज़ा मालिंव् व बनीन(14) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा–ल असातीरुल् अव्वलीन(15)स–नसिमुहू अ़लल्–ख़ुर्तूम(16)इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल् जन्नति इज् अक़्समू ल–यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन(17)व ला यस्तस्नून(18)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
क़लम (फ़ा2) और उनके लिखे कि क़सम।(1) (फ़ा3) तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं।(2) (फ़ा4) और ज़रूर तुम्हारे लिए बे इन्तिहा सवाब है।(3) (फ़ा5) और बेशक तुम्हारी ख़ू-बू बड़ी शान की है।(4) (फ़ा6) तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख लोगे और वह भी देख लेंगे।(5) (फ़ा7) कि तुम में कौन जमनून था।(6) बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है और जो उसकी राह से बहके और वह ख़ूब जानता है जो राह पर है।(7) तो झुठलाने वालों की बात न सुनना।(8) वह तो इस आरज़ू में हैं कि किसी तरह तुम नर्मी करो।(9) (फ़ा8) तो वह भी नर्म पड़ जायें और हर ऐसे कि बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला(10) (फ़ा9) ज़लील बहुत तअ़ने देने वाला।(11) बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला (फ़ा10) भलाई से बड़ा रोकने वाला। (फ़ा11) हद से बढ़ने वाला गुनहगार(12) (फ़ा12) दुरुश्त-ख़ू। (फ़ा13) उस सब पर तुर्रा यह कि उसकी अस्ल में ख़ता।(13) (फ़ा14) उस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है।(14) जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जायें (फ़ा15) कहता है कि अगलों की कहानियां हैं।(15) (फ़ा16) क़रीब है कि हम उसकी सूअर की सी थूथनी पर दाग़ लगा देंगे।(16) (फ़ा17) बेशक हमने उन्हें जांचा (फ़ा18) जैसा उस बाग़ वालों को जांचा था (फ़ा19) जब उन्होंने क़सम खाई कि ज़रूर सुबह होते उसके खेत काट लेंगे।(17) (फ़ा20) और इन्शाअल्लाह न कहा।(18) (फ़ा21)

(फ़ा1) इस सूरत का नाम सूरह नून व सूरह क़लम है यह सूरह मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बावन आयतें 300 कलिमे 1256 हरफ़ हैं। (फ़ा2) अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिनसे दीनी दुनियवी मसालेह व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आला मुराद है जो नूरी क़लम है और उसका तूल फ़ासलए ज़मीन व आसमान के बराबर है। उसने बहुक्मे इलाही लौहे महफ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। (फ़ा3) यानी आमाल बनी आदम के निगहबान फ़रिश्तों के लिखे की क़सम। (फ़ा4) उसका लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले हाल है उसने तुम पर इनाम व एहसान फ़रमाए नबुव्वत और हिकमत अ़ता की फ़साहते ताम्मा अक़्ले कामिल पाकीज़ा ख़साइल पसन्दीदा अख़्लाक़ अ़ता किये मख़्लूक़ के लिए जिस क़दर कमालात इमकान में हैं सब अ़ला वजहिल कमाल अ़ता फ़रमाए **(बक़िया सफ़्हा 943 पर)**

فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ﴿١٩﴾ فأصبحت كالصريم ﴿٢٠﴾ فتنادوا مصبحين ﴿٢١﴾ أن اغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين ﴿٢٢﴾

فانطلقوا وهم يتخافتون ﴿٢٣﴾ أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين ﴿٢٤﴾ وغدوا على حرد قادرين ﴿٢٥﴾ فلما رأوها قالوا إنا لضالون ﴿٢٦﴾ بل نحن

محرومون ﴿٢٧﴾ قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون ﴿٢٨﴾ قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ﴿٢٩﴾ فأقبل بعضهم على بعض يتلاومون ﴿٣٠﴾ قالوا

يا ويلنا إنا كنا طاغين ﴿٣١﴾ عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون ﴿٣٢﴾ كذلك العذاب ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا

يعلمون ﴿٣٣﴾ إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم ﴿٣٤﴾ أفنجعل المسلمين كالمجرمين ﴿٣٥﴾ ما لكم كيف تحكمون ﴿٣٦﴾ أم لكم كتاب فيه

फ़ता–फ़ अ़लैहा ताइफ़ुम् मिर्रब्बि–क व हुम् नाइमून(19)फ़–अस्ब–ह़त् कस्सरीम(20)फ़–तनादौ मुस्बिहीन(21)अनिग़्दू अ़ला ह़र्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन(22)फ़न्–त–लक़ू व हुम् य–तख़ा–फ़तून(23)अल्ला यद् ख़ु–लन्नहल् यौ–म अ़लैकुम् मिस्कीन(24)व ग़दौ अ़ला ह़र्दिन् क़ादिरीन(25) फ़–लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना लज़ाल्लून(26)बल् नह़्नु मह़्रूमून(27)क़ा–ल औ–सतुहुम् अ–लम् अक़ुल् लकुम् लौला तु–सब्बिहू–न(28)क़ालू सुब्ह़ा–न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(29)फ़–अक़्ब–ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्य–तला वमून(30)क़ालू या वै–लना इन्ना कुन्ना ताग़ीन(31) अ़सा रब्बुना अय्युब्दि–लना ख़ैरम् मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून(32) कज़ालिकल् अ़ज़ाबु व ल–अ़ज़ाबुल् आख़ि–रति अक्बरु लौ कानू यअ़्–लमून(33)इन्–न लिल्मुत्तक़ी–न अ़िन्–द रब्बिहिम् जन्नातिन् नअ़ीम(34)अ–फ़्–नज्–अ़लुल् मुस्लिमी–न कल्मुज्रि–मीन(35)मा लकुम् कै–फ़ तह़्कुमून (36)अम् लकुम् किताबुन् फ़ीहि

तो उस पर (फ़ा22) तेरे रब की तरफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया (फ़ा23) और वह सोते थे।(19) तो सुबह रह गया (फ़ा24) जैसे फल टूटा हुआ।(20) (फ़ा25) फिर उन्होंने सुबह होते एक दूसरे को पुकारा।(21) कि तड़के अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है।(22) तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे।(23) कि हरगिज़ आज कोई मिस्कीन तुम्हारे बाग़ में आने न पाए।(24) और तड़के चले अपने उस इरादा पर क़ुदरत समझते।(25) (फ़ा26) फिर जब उसे देखा (फ़ा27) बोले बेशक हम रास्ता बहक गए।(26) (फ़ा28) बल्कि हम बे–नसीब हुए।(27) (फ़ा29) उनमें जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नहीं कहता था कि तस्बीह क्यों नहीं करते।(28) (फ़ा30) बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे।(29) अब एक दूसरे की तरफ़ मलामत करता मुतवज्जह हुआ।(30) (फ़ा31) बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे।(31) (फ़ा32) उम्मीद है हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की तरफ़ रग़बत लाते हैं।(32) (फ़ा33) मार ऐसी होती है (फ़ा34) और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वह जानते।(33) (फ़ा35) (रुकूअ़ 3) बेशक डर वालों के लिए उनके रब के पास (फ़ा36) चैन के बाग़ हैं।(34) (फ़ा37) क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों का सा कर दें।(35) (फ़ा38) तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो।(36) (फ़ा39) क्या तुम्हारे लिए कोई किताब है उसमें

(फ़ा22) यानी बाग़ पर (फ़ा23) यानी एक बला आई बहुक्मे इलाही नाज़िल हुई और बाग़ को तबाह (फ़ा24) वह बाग़ (फ़ा25) और उन लोगों को कुछ ख़बर नहीं यह सुबह तड़के उठे। (फ़ा26) कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवा अपने क़ब्ज़ा में लायेंगे। (फ़ा27) यानी बाग़ को कि इसमें मेवा का नाम व निशान नहीं (फ़ा28) यानी किसी और बाग़ पर पहुंच गए हमारा बाग़ तो बहुत मेवादार है फिर जब ग़ौर किया और उसके दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़है तो बोले। (फ़ा29) इसके मुनाफ़ा से मिस्कीनों को न देने की नीतय करके। (फ़ा30) और इस इरादए बद से तौबा क्यों नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत का शुक्र क्यों नहीं बजा लाते। (फ़ा31) और आख़िरकार उन सब ने एतेराफ़ किया कि हम से ख़ता हुई और हम हद से मुतजाविज़ हो गए। (फ़ा32) कि हमने अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत का शुक्र न किया और बाप दादा के नेक तरीक़ा को छोड़ा। (फ़ा33) उसके उफ़्व व करम की उम्मीद रखते हैं उन लोगों ने सिद्क़ व इख़्लास से तौबा की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उसके एवज़ उससे बेहतर बाग़ अ़ता फ़रमाया जिसका नाम बाग़े हैवान था और उसमें कसरते पैदावार और लताफ़ते आबो हवा का यह आ़लम था कि उसके अंगूरों का एक ख़ोशा एक गधे पर बार किया जाता था। (फ़ा34) ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का होश में **(बक़िया सफ़हा 943 पर)**

تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۹﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿۴۰﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿۴۱﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۗ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاُمْلِيْ
لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْئَلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ
كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾ لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۵۰﴾
وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿۵۱﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۲﴾

तद्रुसून(37)इन्–न लकुम् फ़ीहि लमा त–ख़य्यरून(38)अम् लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि–ग़तुन् इला यौमिल् क़िया–मति इन्–न लकुम् लमा तह्कुमून(39)सल्हुम् अय्युहुम् बिज़ालि–क ज़ईम(40) अम् लहुम् शु–रकाउ फ़ल्यअ्तू बिशु–रकाइहिम् इन् कानू सादिक़ीन(41)यौ–म युक्–शफ़ु अ़न् साक़िंव व युद्औ–न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअू न(42)ख़ाशि–अ़तन् अब्सारुहुम् तर्–हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् व क़द् कानू युद्औ–न इलस्सुजूदि व हुम् सालिमून(43)फ़–ज़र्नी व मंय्यु–कज़्ज़िबु बिहाज़ल् ह़दीसि स–नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्–लमून (44)व उम्ली लहुम् इन्–न कैदी मतीन(45) अम् तस्–अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम् मग़्–रमिम् मुस्–क़लून(46)अम् अ़िन्–द हुमुल्ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून(47)फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि–क व ला तकुन् कसाहि़बिल् हूति इज़् नादा व हु–व मक्ज़ूम(48) लौला अन् तदा–र–कहू निअ्–मतुम् मिर्रब्बिही लनुबि–ज़ बिल् अ़राइ व हु–व मज़्मूम(49)फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़–ज–अ़–लहू मिनस्सालिहीन(50)व इंय्यकादुल् लज़ी–न क–फ़रू लयुज़् लिकू–न–क बि–अब्सारिहिम् लम्मा समिअुज़्ज़िक्–र व यक़ूलू–न इन्नहू ल–मज्नून(51)व मा हु–व इल्ला ज़िक्रुल् लिल् आ़–लमीन(52)

पढ़ते हो।(37) कि तुम्हारे लिए उसमें जो तुम पसन्द करो।(38) या तुम्हारे लिए हम पर कुछ क़समें हैं क़ियामत तक पहुंचती हुई (फ़ा40) कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दावा करते हो।(39) (फ़ा41) तुम उन से (फ़ा42) पूछो उनमें कौनसा इसका ज़ामिन है।(40) (फ़ा43) या उनके पास कुछ शरीक हैं (फ़ा44) तो अपने शरीकों को लेकर आयें अगर सच्चे हैं।(41) (फ़ा45) जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिसके माना अल्ला ही जानता है) (फ़ा46) और सज्दा को बुलाए जायेंगे (फ़ा47) तो न कर सकेंगे।(42) (फ़ा48) नीची निगाहें किये हुए (फ़ा49) उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुनिया में सजदा के लिए बुलाए जाते थे (फ़ा50) जब तन्दुरुस्त थे।(43) (फ़ा51) तो जो इस बात को (फ़ा52) झुठलाता है उसे मुझ पर छोड़ दो (फ़ा53) क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जायेंगे (फ़ा54) जहां से उन्हें ख़बर न होगी।(44) और मैं उन्हें ढील दूंगा बेशक मेरी खुफ़िया तदबीर बहुत पक्की है।(45) (फ़ा55) या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो (फ़ा56) कि वह चट्टी के बोझ में दबे हैं।(46) (फ़ा57) या उनके पास ग़ैब है (फ़ा58) कि वह लिख रहे हैं।(47) (फ़ा59) तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तेज़ार करो (फ़ा60) और उस मछली वाले की तरह न होना (फ़ा61) जब इस हाल में पुकारा कि उसका दिल घुट रहा था।(48)(फ़ा62)अगर उसके रब की नेअ्मत उसकी ख़बर को न पहुंच जाती(फ़ा63)तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुआ।(49)(फ़ा64)तो उसे उसके रब ने चुन लिया और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में कर लिया।(50) और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मालूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे जब क़ुरआन सुनते हैं (फ़ा65) और कहते हैं (फ़ा66) यह ज़रूर अ़क्ल से दूर हैं।(51) और वह (फ़ा67) तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिए।(52) (रुकूअ़ 4) (फ़ा68)

(फ़ा40) जो मुन्क़तअ़ न हों उस मज़मून की। (फ़ा41) अपने लिए अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ख़ैर व करामत का अब अल्लाह तआ़ला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब फ़रमाता है (फ़ा42) यानी कुफ़्फ़ार से **(बक़िया सफ़्हा 943 पर)**

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَآقَّةُ ۝ مَا الْحَآقَّةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ
صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ
بَاقِيَةٍ ۝ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۝
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝

सूरतुल् हाक़्क़ति

(मक्की है इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाक़्क़तु(1)मल्हाक़्क़ह(2)व मा अद्रा–क मल्हाक़्क़ह(3)कज़्ज़–बत् समूदु व आदुम् बिल्क़ारिअ़ह (4)फ़–अम्मा समूदु फ़उह्लिकू बित्ताग़ियह(5)व अम्मा आदुन् फ़उह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आति–यतिन्(6)सख़्ख़–रहा अ़लैहिम् सब्–अ़ लयालिंव् व समानि–य–त अय्यामिन् हुसूमन् फ़–त–रल् क़ौ–म फ़ीहा सर्आ क–अन्नहुम् अअ्जाज़ु नख़्लिन् ख़ावियः(7)फ़–हल् तरा लहुम् मिम्बाक़ियः(8) व जा–अ फ़िर्औनु व मन् क़ब्–लहू वल्–मुअ्तफ़िकातु बिल्ख़ातिअः(9)फ़–अ़सौ रसू–ल रब्बिहिम् फ़–अ–ख़–ज़हुम् अख़्–ज़–तर् राबियः(10)इन्ना लम्मा तग़ल्माउ ह–मल्नाकुम् फ़िल्जारियः(11) लि–नज्–अ़–लहा लकुम् तज़्कि–र–तंव् व तअि–यहा उज़ुनुव् वाअियः(12)फ़इज़ा नुफ़ि–ख़ फ़िस्सूरि नफ़्–ख़तुंव् वाहि–दतुंव्(13)व हुमि–लतिल्–अर्ज़ु वल्जिबालु फ़–दुक्कता दक्कतंव् वाहि–द–तन्(14)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

वह हक़ होने वाली।(1) (फ़ा2) कैसी वह हक़ होने वाली।(2) (फ़ा3) और तुमने क्या जाना कैसी वह हक़ होने वाली।(3) (फ़ा4) समूद और आ़द ने उस सख़्त सदमा देने वाली को झुठलाया।(4) तो समूद तो हलाक किये गए ह़द से गुज़री हुई चिंघाड़ से।(5) (फ़ा5) और रहे आ़द वह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से।(6) वह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन (फ़ा6) लगातार तो उन लोगों को उनमें (फ़ा7) देखो बिछड़े हुए (फ़ा8) गोया वह खजूर के ढुन्ड हैं गिरे हुए।(7) तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो।(8) (फ़ा9) और फ़िरऔ़न और उससे अगले (फ़ा10) और उलटने वाली बस्तियां (फ़ा11) ख़ता लाए।(9) (फ़ा12) तो उन्होंने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना (फ़ा13) तो उसने उन्हें बढ़ी चढ़ी गिरिफ़्त से पकड़ा।(10) बेशक जब पानी ने सर उठाया था (फ़ा14) हमने तुम्हें (फ़ा15) कश्ती में सवार किया।(11) (फ़ा16) कि उसे (फ़ा17) तुम्हारे लिए यादगार करें (फ़ा18) और उसे महफ़ूज़ रखे वह कान कि सुनकर महफ़ूज़ रखता हो।(12) (फ़ा19) फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम।(13) और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़अ़तन चूरा कर दिये जायें।(14)

(फ़ा1) सूरए हाक़्क़ा मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बावन आयतें 256 कलिमे 1423 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ियामत में जो हक़ व साबित है और उसका वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़तई है जिसमें कोई शक नहीं। (फ़ा3) यानी वह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है (फ़ा4) जिसके अहवाल व अहवाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का ताइर परवाज़ नहीं कर सकता (फ़ा5) यानी सख़्त हौलनाक आवाज़ से (फ़ा6) चेहार शम्बा से चेहार शम्बा तक आख़िर माह शव्वाल में निहायत तेज़ सर्दी के मौसम में (फ़ा7) यानी उन दिनों में (फ़ा8) कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया (फ़ा9) कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुबह को वह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। (फ़ा10) उससे भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार (फ़ा11) नाफ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत की बस्तियों के यह सब (फ़ा12) अफ़आ़ले क़बीहा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए। (फ़ा13) जो उनकी तरफ़ भेजे गए थे (फ़ा14) और वह दरख़्तों इमारतों पहाड़ों और हर चीज़ से बुलन्द हो गया था यह बयान तूफ़ाने नूह का है अ़लैहिस्सलाम की (फ़ा15) जबकि तुम अपने आबा के असलाब में थे हज़रत नूह **(बक़िया सफ़हा 944 पर)** **(बक़िया**

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝١٦ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝١٧ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝١٩ اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ
رَّاضِيَةٍ ۝٢١ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝٢٢ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝٢٣ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢبِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝٢٤ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ
فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝٢٥ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝٢٦ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝٢٧ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۝٢٨ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۝٢٩
خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝٣٠ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝٣١ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝٣٢ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۝٣٣ وَلَا يَحُضُّ

फ़यौ–मइज़िंव् व क़्–अतिल् वाक़िअ:(15)वन्–शक़्क़तिस् समाउ फ़हि–य यौ–मइज़िंव् वाहि–यतुंव्(16) वल्म–लकु अ़ला अर्जाइहा व यह़्मिलु अ़र्–श रब्बि–क फ़ौ–क़हुम् यौ–मइज़िन् समानिय:(17) यौ–मइज़िन् तुअ्–रज़ू–न ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़िय:(18)फ़–अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू बि–यमीनिही फ़–यक़ूलु हाउ मुक़्रऊ किताबिय:(19)इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् ह़िसाबिय:(20)फ़हु–व फ़ी अ़ी–शतिर् राज़िय:(21)फ़ी जन्नतिन् आ़लिय:(22)क़ुतूफ़ुहा दानिय:(23)कुलू वश्रबू हनीअम् बिमा अस्–लफ़्तुम् फ़िल्–अय्यामिल् ख़ालिय:(24)व अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू बिशिमालिही फ़–यक़ूलु या लै–तनी लम् ऊ–त किताबिय:(25)व लम् अदरि मा ह़िसाबिय:(26)या लै–तहा का–नतिल् क़ाज़िय:(27)मा अग़्ना अ़न्नी मालिय:(28)ह–ल–क अ़न्नी सुल्त़ानिय:(29)ख़ुज़ूहु फ़ग़ुल्लूहु(30) सुम्मल् जह़ी–म स़ल्लूहु(31)सुम्–म फ़ी सिल्सि–लतिन् ज़र्अुहा सब्ऊ़–न ज़िराअ़न् फ़स्लुकूह(32) इन्नहू का–न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल् अ़ज़ीम(33)व ला यहुज़्ज़ु

वह दिन है कि हो पड़ेगी वह होने वाली।(15) (फ़ा20) और आसमान फट जाएगा तो उस दिन उसका पतला हाल होगा।(16) (फ़ा21) और फ़रिश्ते उस के किनारों पर खड़े होंगे (फ़ा22) और उस दिन तुम्हारे रब का अ़र्श अपने ऊपर आठ फ़रिश्ते उठायेंगे।(17) (फ़ा23) उस दिन तुम सब पेश होगे (फ़ा24) कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।(18) तो वह जो अपना नामए आमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा (फ़ा25) कहेगा लो मेरे नामए आमाल पढ़ो।(19) मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा।(20) (फ़ा26) तो वह मन मानते चैन में है।(21) बुलन्द बाग़ में।(22) जिस के ख़ोशे झुके हुए।(23) (फ़ा27) खाओ और पियो रचता हुआ सिला उसका जो तुमने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।(24) (फ़ा28) और वह जो अपना नामए आमाल बायें हाथ में दिया जाएगा (फ़ा29) कहेगा हाए किसी तरह मुझे अपना नविश्ता न दिया जाता।(25) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है।(26) हाय किसी तरह मौत ही क़िस्सा चुका जाती।(27) (फ़ा30) मेरे कुछ काम न आया मेरा माल।(28) (फ़ा31) मेरा सब ज़ोर जाता रहा।(29) (फ़ा32) उसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो।(30) (फ़ा33) फिर उसे भड़कती आग में धंसाओ।(31) फिर ऐसी ज़ंजीर में जिसका नाप सत्तर हाथ है (फ़ा34) उसे पिरो दो।(32) (फ़ा35) बेशक वह अ़ज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था।(33) और मिस्कीन

(फ़ा20) यानी क़ियामत क़ाइम हो जाएगी (फ़ा21) यानी वह निहायत कमज़ोर होगा बावजूद इसके कि पहले बहुत मज़बूत व मुस्तहकम था। (फ़ा22) यानी जिन फ़रिश्तों का मस्कन आसमान है वह उसके फटने पर उसके किनारों पर खड़े होंगे फिर बहुक्मे इलाही उतर कर ज़मीन का इहाता करेंगे। (फ़ा23) हदीस शरीफ़ में है कि हामिलीने अ़र्श आजकल चार हैं रोज़े क़ियामत उनकी ताईद के लिए चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जायेंगे हज़रत इबने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि इससे मलाइका की आठ सफ़ें मुराद हैं जिनकी तादाद अल्लाह तआ़ला ही जाने। (फ़ा24) अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर हिसाब के लिए। (फ़ा25) यह समझ लेगा कि वह नजात पाने वालों में है और निहायत फ़रह व सुरूर के साथ अपनी जमाअ़त और अपने अहले व अक़ारिब से (फ़ा26) यानी मुझे दुनिया में यक़ीन था कि आख़िरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा। (फ़ा27) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ब–आसानी ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा। (फ़ा28) यानी जो आमाले सालिहा कि दुनिया में तुमने आख़िरत के लिए किये। (फ़ा29) जब अपने नामए आमाल को देखेगा और उसमें अपने बद आमाल मकतूब पाएगा तो शर्मिन्दा व रुसवा होकर (फ़ा30) और हिसाब के लिए न उठाया जाता और यह ज़िल्लत व रुसवाई पेश न आती। (फ़ा31) जो मैंने दुनिया में जमा किया था वह ज़रा भी मेरा अ़ज़ाब टाल न सका (फ़ा32) और मैं ज़लील व मुहताज रह गया। हज़रत **(बक़िया सफ़्हा 944 पर)**

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا

تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ

عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(34)फ़लै–स लहुल्यौ–म हाहुना ह़मीमुंव्(35)व ला तआ़मुन् इल्ला मिन् ग़िस्लीन(36)ला यअ्कुलुहू इल्लल्ख़ातिऊन(37)फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून(38)व मा ला तुब्सिरून(39)इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम(40)व मा हु–व बिक़ौलि शाअ़िरिन् क़लीलम् मा तुअ्मिनून (41)व ला बिक़ौलि काहिनिन् क़लीलम् मा त–ज़क्करून(42)तन्ज़ीलुम् मिंर्–रब्बिल् आ–लमीन(43) व लौ त–क़व्व–ल अ़लैना बअ्ज़ल् अक़ावीलि(44)ल–अ–ख़ज़्ना मिन्हु बिल्–यमीन(45)सुम्–म ल–क़्–तअ्ना मिन्हुल् वतीन(46)फ़मा मिन्कुम् मिन् अ–ह़दिन् अ़न्हु ह़ाजिज़ीन(47)व इन्नहू ल–ज़्कि–र–तुल् लिल्मुत्तक़ीन(48)व इन्ना ल–नअ्–लमु अन्–न मिन्कुम् मु–कज़्ज़िबीन(49)व इन्नहू ल–ह़स्–रतुन् अ़लल्काफ़िरीन(50)व इन्नहू लह़क़्क़ुल् यक़ीन(51)फ़–सब्बिह़् बिस्मि रब्बिकल् अ़ज़ीम(52)

को खाना देने की रग़बत न देता।(34) (फ़ा36) तो आज यहां (फ़ा37) उसका कोई दोस्त नहीं।(35) (फ़ा38) और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप।(36) उसे न खायेंगे मगर ख़ताकार(37) (फ़ा39) (रुकूअ़ 5) तो मुझे क़सम उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो।(38) और जिन्हें तुम नहीं देखते।(39) (फ़ा40) बेशक यह क़ुरआन एक करम वाले रसूल (फ़ा41) से बातें हैं।(40) (फ़ा42) और वह किसी शायर की बात नहीं (फ़ा43) कितना कम यक़ीन रखते हो।(41) (फ़ा44) और न किसी काहिन की बात (फ़ा45) कितना कम ध्यान करते हो।(42) (फ़ा46) उसने उतारा है जो सारे जहान का रब है।(43) और अगर वह हम पर एक बात भी बना कर कहते।(44) (फ़ा47) ज़रूर हम उनसे ब–क़ुव्वत बदला लेते।(45) फिर उनकी रगे दिल काट देते।(46)(फ़ा48)फिर तुम में कोई उनका बचाने वाला न होता।(47) और बेशक यह क़ुरआन डर वालों को नसीहत है।(48) और ज़रूर हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।(49) और बेशक वह काफ़िरों पर हसरत है।(50) (फ़ा49) और बेशक वह यक़ीनी हक़ है।(51) (फ़ा50) तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब की पाकी बोलो।(52) (फ़ा51) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा36) न अपने नफ़्स को न अपने अहल को न दूसरों को इसमें इशारा है कि वह बअ़्स का क़ाइल न था क्योंकि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदला की उम्मीद रखता ही नहीं महज़ रज़ाए इलाही व सवाबे आख़िरत की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो बअ़्स व आख़िरत पर ईमान ही नहीं रखता हो उसे मिस्कीन को खिलाने की क्या ग़रज़। (फ़ा37) यानी आख़िरत में। (फ़ा38) जो उसे कुछ नफ़ा पहुंचाए या शफ़ाअ़त करे। (फ़ा39) कुफ़्फ़ार बद अतवार। (फ़ा40) यानी तमाम मख़्लूक़ात की क़सम जो तुम्हारे देखने में आये उसकी भी जो न आये उसकी भी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मा तुब्सिरू–न से दुनिया और माला तुब्सिरून से आख़िरत मुराद है इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन के और भी कई क़ौल हैं (फ़ा41) मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा42) जो उनके रब अ़ज़्ज़ व अला ने फ़रमाईं (फ़ा43) जैसा कि कुफ़्फ़ार कहते हैं (फ़ा44) बिल्कुल बे ईमान हो इतना भी नहीं समझते कि न यह शेअ़्र है न उसमें शेअ़्रियत की कोई बात पाई जाती है (फ़ा45) जैसा कि तुम में से बाज़े काफ़िर इस किताबे इलाही की निस्बत कहते हैं (फ़ा46) न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इसकी तालीमों पर ग़ौर करते हो कि इसमें कैसी रूहानी तालीम है न इसकी फ़साहत व बलाग़त और एजाज़ बे मिसाली पर ग़ौर करते हो जो यह समझो कि यह कलाम। (फ़ा47) जो हमने न फ़रमाई होती तो (फ़ा48) जिसके काटते ही मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। (फ़ा49) कि वह रोज़े क़ियामत जब क़ुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और उसके इन्कार करने वालों और झुठलाने वालों का अ़ज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़सोस करेंगे और हसरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। (फ़ा50) कि इसमें कोई शक व शुबहा नहीं (फ़ा51) और उसका शुक्र करो कि उसने तुम्हारी तरफ़ अपने इस कलामे जलील की वही फ़रमाई।

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝ مِّنَ اللّٰهِ ذِی الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِیْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِیْلًا ۝ اِنَّهُمْ یَرَوْنَهٗ بَعِیْدًا ۝ وَّ نَرٰىهُ قَرِیْبًا ۝ یَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝ وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝ وَ لَا یَسْـَٔلُ حَمِیْمٌ حَمِیْمًا ۝ یُّبَصَّرُوْنَهُمْ یَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ یَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ یَوْمِىٕذٍۭ بِبَنِیْهِ ۝ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ اَخِیْهِ ۝ وَ فَصِیْلَتِهِ الَّتِیْ تُـْٔوِیْهِ ۝ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ثُمَّ یُنْجِیْهِ ۝ كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى ۝ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ تَوَلّٰى ۝ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ

सूरतुल् मआरिजि

(मक्की है इसमें ४४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

स–अ–ल साइलुम् बि–अ़ज़ाबिंव् वाक़िअ़िल्(1)लिल्काफ़िरी–न लै–स लहू दाफ़िउम्(2)मिनल्लाहि ज़िल्मआ़रिज(3)तअ्रुजुल् मलाइ–कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् का–न मिक़्दारुहू ख़म्सी–न अल्–फ़ स–नतिन्(4)फ़स्बिर् स़ब्रन् जमीला(5)इन्नहुम् यरौ–नहू बअ़ीदंव्(6)व नराहु क़रीबा(7) यौ–म तकूनुस् समाउ कल्मुह्लि(8)व तकूनुल् जिबालु कल्अ़िह्नि(9)व ला यस्–अलु ह़मीमुन् ह़मीमंय्(10)युबस्सरू–नहुम् यवद्दुल् मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन् अ़ज़ाबि यौमिइज़िम् बि–बनीहि(11)व स़ाहि–बतिही व अख़ीहि(12)व फ़स़ी–लतिहिल् लती तुअ्वीहि(13)व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्–म युन्जीहि(14)कल्ला इन्नहा लज़ा(15)नज़्ज़ा–अ़–तल् लिश्शवा(16)तदऊ मन् अदब–र व त–वल्ला(17)व ज–म–अ़ फ़औआ़(18)इन्नल् इन्सा–न ख़ुलि–क़

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

एक मांगने वाला वह अ़ज़ाब मांगता है।(1) जो काफ़िरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं।(2) (फ़ा2) वह होगा अल्लाह की तरफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है।(3) (फ़ा3) मलाइका और जिब्राईल (फ़ा4) उसकी बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं (फ़ा5) वह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार बरस है।(4) (फ़ा6) तो तुम अच्छी तरह सब्र करो।(5) वह उसे (फ़ा7) दूर समझ रहे हैं।(6) (फ़ा8) और हम उसे नज़दीक देख रहे हैं।(7) (फ़ा9) जिस दिन आसमान होगा जैसी गली चाँदी।(8) और पहाड़ ऐसे हलके हो जायेंगे जैसे ऊन।(9) (फ़ा10) और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा।(10) (फ़ा11) होंगे उन्हें देखते हुए (फ़ा12) मुजरिम (फ़ा13) आरज़ू करेगा काश उस दिन के अ़ज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे।(11) और अपनी जोरू और अपना भाई।(12) और अपना कुम्बा जिसमें उसकी जगह है।(13) और जितने ज़मीन में हैं सब फिर यह बदला देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं।(14) (फ़ा14) वह तो भड़कती आग है।(15) खाल उतार लेने वाली बुला रही है(16) (फ़ा15) उसको जिसने पीठ दी और मुँह फेरा।(17) (फ़ा16) और जोड़ कर सैंत रखा(18) (फ़ा17) बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा

(फ़ा1) सूरए मआ़रिज मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 44 आयतें 224 कलिमे 929 हरफ़ हैं। (फ़ा2) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब अहले मक्का को अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वह आपस में कहने लगे कि इस अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ कौन लोग हैं और यह किन पर आएगा सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछो तो उन्होंने हुज़ूर सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं और हुज़ूर से सवाल करने वाला नज़र बिन हारिस था उसने दुआ़ की थी कि या रब अगर यह कुरआन हक़ हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज इन आयतों में इरशाद फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अ़ज़ाब जो उनके लिए मुक़द्दर है ज़रूर आना है उसे कोई टाल नहीं सकता (फ़ा3) यानी आसमानों का (फ़ा4) जो फ़रिश्तों में मख़्सूस फ़ज़्ल व शरफ़ रखते हैं। (फ़ा5) यानी उस मक़ामे क़ुर्ब की तरफ़ जो आसमान में उसके अवामिर का जाये **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

هَلُوْعًا ﴿۱۹﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿۲۰﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿۲۱﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿۲۲﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَّعْلُوْمٌ ﴿۲۴﴾ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۲۷﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿۲۸﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْعٰدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾ اُولٰٓئِكَ
فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿۳۶﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿۳۷﴾ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

हलूअ़न्(19)इज़ा मस्सहुश् शर्रु जज़ूआ़(20)व इज़ा मस्सहुल् ख़ै–रु मनूआ़(21)इल्लल् मुस़ल्लीन (22)अल्लज़ी–न हुम् अ़ला स़लातिहिम् दाइमून(23)वल्लज़ी–न फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुम् मअ़्लूमुल् (24)लिस्साइलि वल्मह़रूम(25)वल्लज़ी–न यु–स़द्दिक़ू–न बियौमिद्दीनि(26)वल्लज़ी–न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून(27)इन्–न अ़ज़ा–ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून(28)वल्लज़ी–न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् ह़ाफ़िज़ून(29)इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म–ल–कत् ऐमानुहुम् फ़–इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन(30) फ़–मनिब्तग़ा वरा–अ ज़ालि–क फ़उलाइ–क हुमुल् आ़दून(31)वल्लज़ी–न हुम् लि–अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राऊन(32)वल्लज़ी–न हुम् बि–शहादातिहिम् क़ाइमून(33) वल्लज़ी–न हुम् अ़ला स़लातिहिम् युहाफ़िज़ून(34)उलाइ–क फ़ी जन्नातिम् मुक्–रमून(35) फ़मालिल्लज़ी–न क–फ़रू क़ि–ब–ल–क मुह्तिअ़ीन(36)अ़निल् यमीनि व अ़निश् शिमालि अ़िज़ीन(37)अ–यत्मअु कुल्लुम् रिइम् मिन्हुम् अंय्युद ख़–ल जन्न–त

ह़रीस़।(19) जब उसे बुराई पहुंचे (फ़ा18) तो सख़्त घबराने वाला।(20) और जब भलाई पहुंचे (फ़ा19) तो रोक रखने वाला।(21) (फ़ा20) मगर नमाज़ी।(22) जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं।(23) (फ़ा21) और वह जिनके माल में एक मालूम हक़ है।।(24) (फ़ा22) उसके लिए जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे।(25) (फ़ा23) और वह जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं।(26) (फ़ा24) और वह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डर रहे हैं।(27) बेशक उनके रब का अ़ज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं।(28) (फ़ा25) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं(29) मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि उन पर कुछ मलामत नहीं।(30) तो जो उन दो (फ़ा26) के सिवा और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं।(31) (फ़ा27) और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करते हैं।(32) (फ़ा28) और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम हैं।(33) (फ़ा29) और वह जो अपनी नमाज़ की मुहाफ़िज़त करते हैं।(34) (फ़ा30) यह हैं जिनका बाग़ों में एज़ाज़ होगा।(35) (फ़ा31) (रुकूअ़ 7) तो उन काफ़िरों को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं।(३६) (फ़ा32) दाहिने और बायें गरोह के गरोह।(37) क्या उनमें हर शख़्स यह तमअ़ करता है (फ़ा33) कि चैन के बाग़ में दाख़िल

(फ़ा18) तंगदस्ती व बीमारी वग़ैरह की। (फ़ा19) दौलतमन्दी व माल। (फ़ा20) यानी इन्सान की हालत यह है कि उसे कोई नागवार हालत पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उसको ख़र्च नहीं करता। (फ़ा21) कि फ़राइज़े पंजगाना को उनके औक़ात में पाबन्दी से अदा करते हैं यानी मोमिन हैं। (फ़ा22) मुराद इससे ज़कात है जिसकी मिक़दार मालूम है या वह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़्स पर मुअ़य्यन करे तो उसे मुअ़य्यन औक़ात में अदा किया करे। मसला इससे मालूम हुआ कि सदक़ात मुस्तहब्बा के लिए अपनी तरफ़ से वक़्त मुअ़य्यन करना शरअ़ में जाइज़ और क़ाबिले मदह है (फ़ा23) यानी दोनों क़िस्म के मुहताजों को दे उन्हें जो भी हाजत के वक़्त सवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सवाल नहीं करते और उनकी मुहताजी ज़ाहिर नहीं होती। (फ़ा24) और मरने के बाद उठने और हश्र व नश्र व जज़ा व क़ियामत सब पर ईमान रखते हैं। (फ़ा25) चाहे आदमी कितना ही नेक पारसा कसीरुत्ताअ़त वल इबादत हो मगर उसे अ़ज़ाबे इलाही से बे-ख़ौफ़ होना न चाहिये (फ़ा26) यानी ज़ौजात व ममलूकात (फ़ा27) कि हलाल से हराम की तरफ़ तजावुज़ करते हैं **मसलाः** इस आयत से मुत्तअ़, लवातत जानवरों के साथ क़ज़ाए शह्वत और हाथ से इस्तिमना की हुरमत साबित होती है (फ़ा28) शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क़ के साथ जो अहद हैं उनकी भी और हक़ के जो अहद हैं उनकी भी नज़रें और क़स्में भी इसमें दाख़िल हैं। (फ़ा29) सिद्क़ व इन्साफ़ के साथ न इसमें रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बरदस्त को **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

نَعِيْمٍ ﴿۳۸﴾ كَلَّا ۗ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿۴۰﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۴۱﴾

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۴۲﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَاشِعَةً

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۴۴﴾

नअ़ीम(38)कल्ला इन्ना ख़–लक़्नाहुम् मिम्मा यअ्लमून(39)फ़ला उक़्सिमु बि–रब्बिल्मशारिक़ि वल्मग़ारिबि इन्ना लक़ादिरून(40)अ़ला अन् नुबद्दि–ल ख़ैरम् मिन्हुम् व मा नह़्नु बिमस्बूक़ीन(41) फ़–ज़रहुम् यख़ूज़ू व यलअ़बू ह़त्ता युलाक़ू यौ–महुमुल् लज़ी यू–अ़दून(42)यौ–म यख़्रुजू–न मिनल् अज्दासि सिराअ़न् क–अन्नहुम् इला नुसुबिंय्यूफ़िज़ू न(43)ख़ाशि–अ़तन् अब्सारुहुम् तर्–हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ज़ालिकल् यौमुल्लज़ी कानू यू–अ़दून(44)

किया जाए।(38) हरगिज़ नहीं बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से बनाया जिसे जानते हैं।(39) (फ़ा34) तो मुझे क़सम है उसकी जो सब पूरबों सब पच्छिमों का मालिक है (फ़ा35) कि ज़रूर हम क़ादिर हैं।(40) कि उनसे अच्छे बदल दें (फ़ा36) और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता।(41) (फ़ा37) तो उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगियों में पड़े और खेलते हुए यहां तक कि अपने उस (फ़ा38) दिन से मिलें जिसका उन्हें वादा दिया जाता है।(42) जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे झपटते हुए (फ़ा39) गोया वह निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं।(43) (फ़ा40) आँखें नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सवार यह है उनका वह दिन (फ़ा41) जिसका उनसे वादा था।(44) (फ़ा42) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा34) यानी नुत्फ़ा से जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस सबब से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा जन्नत में दाख़िल होना ईमान पर मौक़ूफ़ है (फ़ा35) यानी आफ़ताब के हर जाए तुलूअ़ और हर जाए ग़ुरूब का या हर हर सितारा के मशरिक़ व मग़रिब का मक़सद अपनी रबूबियत की क़सम याद फ़रमाना है। (फ़ा36) इस तरह कि उन्हें हलाक करदें और बजाए उनके अपनी फ़रमांबरदार मख़्लूक़ पैदा करें। (फ़ा37) और हमारी क़ुदरत के इहाता से बाहर नहीं हो सकता। (फ़ा38) अ़ज़ाब के (फ़ा39) महशर की तरफ़। (फ़ा40) जैसे झन्डे वाले झन्डे की तरफ़ दौड़ते हैं। (फ़ा41) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा42) दुनिया में और वह उसको झुठलाते थे।

(बक़िया सफ़हा 916 का) कि हक़ से क़रीब नहीं होते उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर व मोमिन के लिए एक मिस्ल बयान फ़रमाई। (फ़ा39) न आगे देखो न पीछे न दायें न बायें। (फ़ा40) रास्ता को देखता। (फ़ा41) जो मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंचाने वाली है मक़सूद इस मसल का यह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस तरह हैरान व सरगरदाँ जाता है कि न उसे मन्ज़िल मालूम न राह पहचाने और मोमिन आंखें खोले राहे हक़ देखता पहचानता चलता है। (फ़ा42) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुशरिकीन से कि जिस ख़ुदा की तरफ़ मैं तुम्हें दावत देता हूं वह (फ़ा43) जो आलाते इल्म हैं लेकिन तुम ने उन क़ुवा से फ़ाइदा न उठाया जो सुना वह न माना जो देखा उससे इबरत हासिल न की जो समझा उसमें ग़ौर न किया। (फ़ा44) कि अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए क़ुवा और आलात इदराक से वह काम नहीं लेते जिसके लिए वह अ़ता हुए यही सबब है कि शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला होते हो (फ़ा45) रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिए (फ़ा46) मुसलमानों से तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा के तौर पर (फ़ा47) अ़ज़ाब या क़ियामत का (फ़ा48) यानी अ़ज़ाब व क़ियामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूं इतने ही का मामूर हूं इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है वक़्त का बताना मेरे ज़िम्मा नहीं (फ़ा49) यानी अ़ज़ाब मौऊद को। (फ़ा50) चेहरे सियाह पड़ जायेंगे वहशत व ग़म से सूरतें ख़राब हो जायेंगी (फ़ा51) जहन्नम के फ़रिश्ते कहेंगे (फ़ा52) और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम कहते थे कि वह अ़ज़ाब कहां है जल्दी लाओ अब देख लो यह है वह अ़ज़ाब जिसकी तुम्हें तलब थी (फ़ा53) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुफ़्फ़ारे मक्का से जो आपकी मौत की आरज़ू रखते हैं। (फ़ा54) यानी मेरे असहाब को (फ़ा55) और हमारी उम्रें दराज़ कर दे (फ़ा56) तुम्हें तो अपने कुफ़्र के सबब ज़रूर अ़ज़ाब में मुब्तला होना हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ाइदा देगी। (फ़ा57) जिसकी तरफ़ हम तुम्हें दावत देते हैं। (फ़ा58) यानी वक़्ते अ़ज़ाब। (फ़ा59) और इतनी गहराई में पहुंच जाये कि डोल वग़ैरह से हाथ न आ सके। (फ़ा60) कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यों इबादत में उस क़ादिरे बरहक़ का शरीक करते हो।

(बक़िया सफ़हा 932 का) नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा34) यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं (फ़ा35) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है सिला रहमी में और मेहमानदारी में और यह भी कहा गया कि इससे तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह माले हलाल से ख़ुश दिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाये।

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَّكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ
وَأَطِيْعُوْنِ ۝٣ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ قَالَ رَبِّ إِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ
لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝٥ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ إِلَّا فِرَارًا ۝٦ وَإِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ۝٧ ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨ ثُمَّ إِنِّيْٓ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۖ إِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ

सूरतु नूहिन्

(मक्की है इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अरसल्ना नूहन् इला कौमिही अन् अन्ज़िर् कौ–म–क मिन् कब्लि अंय्यअ्ति–यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(1)का–ल या कौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्मुबीन(2)अनिअ्बुदुल्ला–ह वत्तकूहु व अतीअू न(3)यग्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु–अख़्ख़िर् कुम् इला अ–जलिम् मुसम्मन् इन्–न अ–ज–लल्लाहि इज़ा जा–अ ला यु–अख़्ख़रु लौ कुन्तुम् तअ्लमून(4)का–ल रब्बि इन्नी दऔतु कौमी लैलंव् व नहारन्(5)फ़–लम् यज़िदहुम् दुआइ इल्ला फ़िरारा(6)व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लितग्फ़ि–र लहुम् ज–अ़लू असाबि–अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग्शौ सिया–बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा(7)सुम्–म इन्नी दऔतुहुम् जिहारन्(8)सुम्–म इन्नी अअ्लन्तु लहुम् व अस्–रर्तु लहुम् इस्रारा(9)फ़कुल्तुस्तग्फ़िरू रब्बकुम् इन्नहू का–न ग़फ़्फ़ारंय्(10)युर्सिलिस् समा–अ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

बेशक हमने नूह को उसकी कौम की तरफ़ भेजा कि उनको डरा इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अ़ज़ाब आए।(1) (फ़ा2) उसने फ़रमाया ऐ मेरी कौम मैं तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(2) कि अल्लाह की बन्दगी करो (फ़ा3) और उससे डरो (फ़ा4) और मेरा हुक्म मानो।(3) वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा (फ़ा5) और एक मुक़र्रर मीआ़द तक (फ़ा6) तुम्हें मुहलत देगा (फ़ा7) बेशक अल्लाह का वादा जब आता है हटाया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते।।(4) (फ़ा8) अ़र्ज़ की (फ़ा9) ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कौम को रात दिन बुलाया।।(5) (फ़ा10) तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना ही बढ़ा।(6) (फ़ा11) और मैंने जितनी बार उन्हें बुलाया (फ़ा12) कि तू उनको बख़्शे उन्होंने अपने कानों में उंगलियां दे लीं (फ़ा13) और अपने कपड़े ओढ़ लिए (फ़ा14) और हठ की (फ़ा15) और बड़ा ग़ुरूर किया।।(7) (फ़ा16) फिर मैंने उन्हें एलानिया बुलाया।(8) (फ़ा17) फिर मैंने उन से ब–एलान भी कहा (फ़ा18) और आहिस्ता ख़ुफ़िया भी कहा।(9) (फ़ा19) तो मैंने कहा अपने रब से माफ़ी मांगो (फ़ा20) वह बड़ा माफ़ फ़रमाने वाला है।(10) (फ़ा21) तुम पर शर्राटे का

(फ़ा1) सूरए नूह मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 28 आयतें 224 कलिमे 999 हरफ़ हैं। (फ़ा2) दुनिया व आख़िरत का। (फ़ा3) और उसका किसी को शरीक न बनाओ। (फ़ा4) नाफ़रमानियों से बचकर ताकि वह ग़ज़ब न फ़रमाये। (फ़ा5) जो तुम से वक़्ते ईमान तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ न होंगे। (फ़ा6) यानी वक़्ते मौत तक। (फ़ा7) कि इस दौरान में तुम पर अ़ज़ाब न फ़रमाएगा। (फ़ा8) इसको और ईमान ले आते (फ़ा9) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा10) ईमान व ताअ़त की तरफ़ (फ़ा11) और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरग़ीब दी गई उतनी ही उनकी सरकशी बढ़ती गई (फ़ा12) तुझ पर ईमान लाने की तरफ़ (फ़ा13) ताकि मेरी दावत को न सुनें (फ़ा14) और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्योंकि उन्हें दीने इलाही की तरफ़ नसीहत करने वाले को देखना भी गवारा न था। (फ़ा15) अपने कुफ़्र पर। (फ़ा16) और मेरी दावत को कबूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना। (फ़ा17) बबांग बुलन्द महफ़िलों में। (फ़ा18) और दावत बिल एलान की तकरार भी की। (फ़ा19) एक एक से और कोई दक़ीक़ा दावत का उठा न रखा कौम ज़मानए दराज़ तक हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब ही करती रही तो अल्लाह तआ़ला ने उनसे बारिश रोक दी **(बक़िया सफ़हा 944 पर)**

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾ وَّيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ أَنْبَتَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ
فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ
يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ
وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ إِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ أُغْرِقُوْا فَأُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْا إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

अ़लैकुम् मिद्रारंव्(11)व युम्दिद्कुम् बि–अम्वालिंव् व बनी–न व यज्अ़ल् लकुम् जन्नातिंव् व यज्अ़ल् लकुम् अन्हारा(12)मा लकुम् ला तर्जू–न लिल्लाहि वक़ारा(13)व क़द् ख़–ल–क़कुम् अत्वारा(14) अ–लम् तरौ कै–फ़ ख़–ल–क़ल्लाहु सब्–अ़ समावातिन् तिबाक़ंव्(15)व ज–अ़–लल् क़–म–र फ़ीहिन्–न नूरंव् व ज–अ़–लश् शम्–स सिराजा(16)वल्लाहु अम्ब–तकुम् मिनल्अर्ज़ि नबाता(17) सुम्–म युईदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा(18)वल्लाहु ज–अ़–ल लकुमुल् अर्–ज़ बिसाता(19)लितस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा(20)क़ा–ल नूहुर्रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त–बअू मल्लम् यज़िद्हु मालुहू व व–लदुहू इल्ला ख़सारा(21)व म–करू मक्रन् कुब्बारा(22)व क़ालू ला त–ज़रुन्–न आलि–ह–तकुम् व ला त–ज़रुन्–न वद्दंव् व ला सुवाअंव् व ला यग़ू–स व यऊ–क़ व नस्रा(23) व क़द् अज़ल्लू कसीरन् व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी–न इल्ला ज़लाला(24)मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग्रिक़ू फ़उद्ख़िलू नारन् फ़–लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा(25)व क़ा–ल नूहुर्रब्बि ला त–ज़र् अ़लल्अर्ज़ि मिनल् काफ़िरी–न दय्यारा(26)इन्न–क इन् त–ज़र्हुम् युज़िल्लू अ़िबा–द–क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा(27)रब्बिग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्–य व लिमन् द–ख़– ल बैति–य मुअमिनंव् व लिल्मुअमिनी–न वल्मुअमिनाति व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी–न इल्ला तबारा(28)

मेंह भेजेगा।(11) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा (फ़ा22) और तुम्हारे लिए बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा।(12) (फ़ा23) तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते।(13) (फ़ा24) हालांकि उसने तुम्हें तरह तरह बनाया।(14) (फ़ा25) क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने क्योंकर सात आसमान बनाए एक पर एक।(15) और उनमें चाँद को रौशनी किया (फ़ा26) और सूरज को चराग़।(16) (फ़ा27) और अल्लाह ने तुम्हें सब्ज़े की तरह ज़मीन से उगाया।(17) (फ़ा28) फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा (फ़ा29) और दोबारा निकालेगा।(18) (फ़ा30) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया।(19) कि उसके वसीअ़ रास्तों में चलो।(20) (रुकूअ़ 9) नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इन्होंने मेरी नाफ़रमानी की (फ़ा31) और (फ़ा32) ऐसे के पीछे हो लिए जिसे उसके माल और औलाद ने नुक़सान ही बढ़ाया।(21) (फ़ा33) और (फ़ा34) बहुत बड़ा दाँव खेले। (22) (फ़ा35) और बोले (फ़ा36) हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को (फ़ा37) और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और सुवाअ़ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र को।(23) (फ़ा38) और बेशक उन्होंने बहुतों को बहकाया (फ़ा39) और तू ज़ालिमों को (फ़ा40) ज़्यादा न करना मगर गुमराही।(24) (फ़ा41) अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए (फ़ा42)फिर आग में दाख़िल किये गए (फ़ा43) तो उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया।(25) (फ़ा44)और नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।(26) बेशक अगर तू उन्हें रहने देगा (फ़ा45) तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और उनकी औलाद होगी तो वह भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक्र। **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ۝ یَّهْدِیْۤ اِلَی الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ لَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ۝ وَّ اَنَّهٗ تَعٰلٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا ۙ۝ وَّ اَنَّهٗ كَانَ یَقُوْلُ سَفِیْهُنَا عَلَی اللّٰهِ شَطَطًا ۙ۝ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۙ۝ وَّ اَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ یَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ۝ وَّ اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ یَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ۝ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِیْدًا وَّ شُهُبًا ۙ۝ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ یَّسْتَمِعِ الْاٰنَ یَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ۝ وَّ اَنَّا لَا

सूरतुल् जिन्नि

(मक्की है इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्त-म-अ न-फ़रुम् मिनल् जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ्ना कुर्आनन् अ-ज-बंय्(1)यह्दी इलर्रुश्दि फ़आमन्ना बिही व लन् नुश्रि-क बि-रब्बिना अ-हदा(2)व अन्नहू तआला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-ब-तंव् व ला व-लदा(3)व अन्नहू का-न यकूलु सफ़ीहुना अ-लल्लाहि श-तता(4)व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् तकू.लल् इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा(5)व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल् इन्सि यअू.जू-न बिरिजालिम् मिनल् जिन्नि फ़ज़ादूहुम् र-ह-कंव्(6)व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़-नन्तुम् अल्लंय्यब्अ़-सल्लाहु अ-हदा(7)व अन्ना ल-मस्नस् समा-अ फ़-व-जद्नाहा मुलिअत् ह-र-सन् शदीदंव् व शुहुबंव्(8)व अन्ना कुन्ना नक्अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि फ़-मंय्यस्तमिअिल् आ-न यजिद् लहू शिहाबर् र-स-दंव्(9)व अन्ना ला

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम फ़रमाओ (फ़ा2) मुझे 'वही' हुई कि कुछ जिन्नों ने (फ़ा3) मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना (फ़ा4) तो बोले (फ़ा5) हम ने एक अ़जीब कुरआन सुना।(1) (फ़ा6) कि भलाई की राह बताता है (फ़ा7) तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे।(2) और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उसने औरत इख़्तियार की और न बच्चा।(3) (फ़ा8) और यह कि हम में का बेवकूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था।(4) (फ़ा9) और यह कि हमें ख़्याल था कि हरगिज़ आदमी और जिन्न अल्लाह पर झूठ न बांधेंगे।(5) (फ़ा10) और यह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों के पनाह लेते थे (फ़ा11) तो उससे और भी उसका तकब्बुर बढ़ा।(6) और यह कि उन्होंने (फ़ा12) गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है (फ़ा13) कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।(7) और यह कि हमने आसमान को छुआ (फ़ा14) तो उसे पाया कि (फ़ा15) सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से भर दिया गया है।(8) (फ़ा16) और यह कि हम (फ़ा17) पहले आसमान में सुनने के लिए कुछ मौक़ों पर बैठा करते थे फिर अब (फ़ा18) जो कोई सुने वह अपनी ताक में आग का लोका पाए।(9) (फ़ा19) और यह कि हमें नहीं

(फ़ा1) सूरए जिन्न मक्की है इसमें दो रुकूअ़ 28 आयतें 250 कलिमे 870 हरफ़ हैं। (फ़ा2) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (फ़ा3) नसीबैन के जिनकी तादाद मुफ़स्सिरीन ने नौ बयान की। (फ़ा4) नमाज़े फ़ज्र में ब-मक़ामे नख़ला मक्का मुकर्रमा व ताइफ़ के दर्मियान। (फ़ा5) वह जिन्न अपनी क़ौम में जाकर। (फ़ा6) जो अपनी फ़साहत व बलाग़त व ख़ूबीए मज़ामीन व उलूए माना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक़ का कोई कलाम इससे कोई निस्बत नहीं रखता उसकी यह शान है। (फ़ा7) यानी तौहीद व ईमान की। (फ़ा8) जैसा कि कुफ़्फ़ार जिन्न व इन्स कहते हैं। (फ़ा9) झूठ बोलता था बे अदबी करता था कि उसके लिए शरीक व औलाद और बीबी बताता था। (फ़ा10) और इस पर इफ़्तेरा न करेंगे इस लिए हम उनकी बातों की तस्दीक़ करते थे जो कुछ वह शाने इलाही में कहते थे और ख़ुदावन्दे आ़लम की तरफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे यहां तक कि कुरआने करीम की हिदायत से हमें उनका किज़्ब व बुहतान ज़ाहिर हो गया। (फ़ा11) जब सफ़र में किसी ख़ौफ़नाक मक़ाम पर उतरते तो कहते हम इस जगह **(बक़िया सफ़हा 928 का)**

نَدْرِیْٓ اَشَرٌّ اُرِیْدَ بِمَنْ فِی الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآىِٕقَ قِدَدًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ
نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِی الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤی اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ یُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا یَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ
وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَی الطَّرِیْقَةِ لَاَسْقَیْنٰهُمْ مَّآءً
غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِیْهِ ؕ وَمَنْ یُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ یَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ
یَدْعُوْهُ كَادُوْا یَكُوْنُوْنَ عَلَیْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّیْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ۝ قُلْ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۝ قُلْ اِنِّیْ لَنْ

नदरी अ–शर्रुन् उरी–द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा–द बिहिम् रब्बुहुम् र–शदा(10)व अन्ना मिन्नस् सालिहू–न व मिन्ना दू–न ज़ालि–क कुन्ना तराइ–क़ क़ि–ददा(11)व अन्ना ज़–नन्ना अल्लन् नुअ्जिज़ल्ला–ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि–ज़हू ह–र–बंव्(12)व अन्ना लम्मा समिअ्नल् हुदा आमन्ना बिही फ़मंय्युअ्मिम् बि–रब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव् व ला र–हक़ा(13)व अन्ना मिन्नल् मुस्लिमू–न व मिन्नल् क़ासितून फ़–मन् अस्ल–म फ़उलाइ–क त–ह़र्रौ र–शदा(14)व अम्मल् क़ासितू–न फ़कानू लि–जहन्न–म ह–त–बंव्(15)व अल्लविस्तक़ामू अ़लत्तरी–क़ति ल–अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़–दक़ल्(16)लिनफ़्ति–नहुम् फ़ीहि व मंय्युअ्रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स–अ–दंव्(17)व अन्नल् मसाजि–द लिल्लाहि फ़ला तद्अू म–अ़ल्लाहि अ–ह़दा(18)व अन्नहू लम्मा क़ा–म अ़ब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू–न अ़लैहि लि–बदा(19)क़ुल् इन्नमा अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ–ह़दा(20)क़ुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव् व ला र–शदा(21)क़ुल् इन्नी लंय्युजी–

मालूम कि (फ़ा20) ज़मीन वालों से कोई बुराई का इरादा फ़रमाया गया है या उनके रब ने कोई भलाई चाही है।(10) और यह कि हम में (फ़ा21) कुछ नेक हैं (फ़ा22) और कुछ दूसरी तरह के हैं हम कई राहें फटे हुए हैं।(11) (फ़ा23) और यह कि हम को यक़ीन हुआ कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से न निकल सकेंगे और न भाग कर उसके क़ब्ज़े से बाहर हों।(12) और यह कि हमने जब हिदायत सुनी (फ़ा24) उस पर ईमान लाए तो जो अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़ (फ़ा25) और न ज़्यादती का।(13) (फ़ा26) और यह कि हमे में कुछ मुसलमान हैं और कुछ ज़ालिम (फ़ा27) तो जो इस्लाम लाए उन्होंने भलाई सोची।(14) (फ़ा28) और रहे ज़ालिम (फ़ा29) वह जहन्नम के ईंधन हुए।(15) (फ़ा30) और फ़रमाओ कि मुझे यह 'वही' हुई है कि अगर वह (फ़ा31) राह पर सीधे रहते (फ़ा32) तो हम ज़रूर उन्हें वाफ़िर पानी देते।(16) (फ़ा33) कि उस पर उन्हें जांचें (फ़ा34) और जो अपने रब की याद से मुँह फेरे (फ़ा35) वह उसे चढ़ते अ़ज़ाब में डालेगा।(17) (फ़ा36) और यह कि मस्जिदें (फ़ा37) अल्लाह ही की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो।(18) (फ़ा38) और यह कि जब अल्लाह का बन्दा (फ़ा39) उसकी बन्दगी करने खड़ा हुआ (फ़ा40) तो क़रीब था कि वह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जायें।(19) (फ़ा41) (रुकूअ़ 11) तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब ही की बन्दगी करता हूं और किसी को उसका शरीक नहीं ठहराता।(20) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का मालिक नहीं।(21) तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे अल्लाह से कोई

(फ़ा20) हमारी इस बन्दिश और रोक से। (फ़ा21) क़ुरआने करीम सुनने के बाद। (फ़ा22) मोमिन मुख़लिस मुत्तक़ी व अबरार। (फ़ा23) फ़िरक़े फ़िरक़े मुख़्तलिफ़। (फ़ा24) यानी क़ुरआन पाक। (फ़ा25) यानी नेकियों या सवाब की कमी का (फ़ा26) बदियों की। (फ़ा27) हक़ से फिरे हुए काफ़िर। (फ़ा28) और हिदायत व राहे हक़ को अपना मक़सूद ठहराया। (फ़ा29) काफ़िर राहे हक़ से फिरने वाले (फ़ा30) इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न आतिशे जहन्नम के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जायेंगे। (फ़ा31) यानी इन्सान। (फ़ा32) यानी दीने हक़ व तरीक़ए इस्लाम पर। (फ़ा33) कसीर मुराद वुसअ़ते रिज़्क़ है और यह वाक़िआ उस वक़्त का है जबकि सात बरस तक वह बारिश से महरूम कर दिये गए थे माना यह हैं कि अगर वह लोग ईमान लाते तो हम दुनिया में उन पर रिज़्क़ वसीअ़ करते और उन्हें कसीर पानी और फ़राख़ी ऐश इनायत फ़रमाते। (फ़ा34) **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۲﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ﴿۲۳﴾ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ
رَبِّيْۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿۲۷﴾
لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾

रनी मिनल्लाहि अ़–हदुंव् व लन् अजि–द मिन् दूनिही मुल्त–हदा(22)इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालातिही व मंय्यअ़सिल्ला–ह व रसू–लहू फ़इन्–न लहू ना–र जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–बदा(23)हत्ता इज़ा रऔ मा यू–अ़दू–न फ़–स–यअ़लमू–न मन् अज़्–अ़फ़ु नासिरंव् व अक़ल्लु अ़–ददा(24)क़ुल् इन् अदरी अ–क़रीबुम् मा तू–अ़दू–न अम् यज्अ़लु लहू रब्बी अ–मदा(25) आ़लिमुल् ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ–ह–दन्(26)इल्ला मनिर्–तज़ा मिर्रसूलिन् फ़–इन्नहू यस्लुकु मिम् बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र–स–दल्(27)लियअ्–ल–म अन् क़द अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा–त़ बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्–ल शैइन् अ़–ददा(28)

न बचाएगा (फ़ा42) और हरगिज़ उसके सिवा कोई पनाह न पाऊँगा।(22)मगर अल्लाह के पयाम पहुंचाना और उसकी रिसालतें (फ़ा43) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने (फ़ा44)तो बेशक उनके लिए जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा हमेशा रहें।(23)यहां तक कि जब देखेंगे (फ़ा45) जो वादा दिया जाता है तो अब जान जायेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर और किस की गिनती कम।(24) (फ़ा46) तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता आया नज़दीक है वह जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा।(25) (फ़ा47) ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर (फ़ा48) किसी को मुसल्लत नहीं करता।(26) (फ़ा49) सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के (फ़ा50) कि उनके आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है।(27) (फ़ा51)ताकि देख ले कि उन्होंने अपने रब के पयाम पहुंचा दिये और जो कुछ उनके पास सब उसके इल्म में है और उसने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है।(28) (फ़ा52) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा42) जैसा कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था फ़मंय्-यनूसुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू (फ़ा43) यह मेरा फ़र्ज़ है जिसको अन्जाम देता हूं (फ़ा44) और उन पर ईमान न लाये। (फ़ा45) वह अ़ज़ाब। (फ़ा46) काफ़िर की या मोमिन की यानी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मोमिन की मदद अल्लाह तआ़ला और उसके अम्बिया और मलाइका सब फ़रमायेंगे। **शाने नुज़ूलः** नज़र बिन हारिस ने कहा था कि यह वादा कब पूरा होगा इसके जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। (फ़ा47) यानी वक़्ते अ़ज़ाब का इल्मे ग़ैब है जिसे अल्लाह तआ़ला ही जाने। (फ़ा48) यानी अपने ग़ैबे ख़ास पर जिसके साथ वह मुनफ़रिद है। (ख़ाज़िन व बैज़ावी वग़ैरह) (फ़ा49) यानी इत्तलाअ़ कामिल नहीं देता जिस से हक़ाइक़ का कश्फ़ ताम आला दर्जा यक़ीन के साथ हासिल हो। (फ़ा50) तो उन्हें ग़ुयूब पर मुसल्लत करता है और इत्तलाए़ कामिल और कश्फ़े ताम अ़ता फ़रमाता है और यह इल्मे ग़ैब उनके लिए मोअ़्जिज़ा होता है औलिया को भी अगरचे ग़ुयूब पर इत्तलाअ़ दी जाती है मगर अम्बिया का इल्म बऐतबारे कश्फ़ व इन्हला औलिया के इल्म से बहुत बुलन्द व बाला व अरफ़अ़ व आला है और औलिया के उलूम अम्बिया ही के वसातत और उनही के फ़ैज़ से होते हैं मोअ़्तज़ेला एक गुमराह फ़िरक़ा है वह औलिया के लिए इल्मे ग़ैब का क़ाइल नहीं इसका ख़्याल बातिल और अहादीसे कसीरा के ख़िलाफ़ है और इस आयत से उनका तमस्सुक सही नहीं बयान मज़कूरा बाला में इसका इशारा कर दिया गया है सय्यदुर्रुसल ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुर्तज़ा रसूलों में सब से आला हैं अल्लाह तआ़ला ने आपको तमाम अशिया के उलूम अ़ता फ़रमाए जैसा कि सिहाह की मोअ़्तबर अहादीस से साबित है और यह आयत हुज़ूर के और तमाम मुर्तज़ा रसूलों के लिए ग़ैब का इल्म साबित करती है। (फ़ा51) फ़रिश्तों को जो उनकी हिफ़ाज़त करते हैं (फ़ा52) इससे साबित हुआ कि जमीअ़ अशिया महदूद व महसूर व मुतनाही हैं।

(बक़िया सफ़हा 928 का) के सरदार की पनाह चाहते हैं यहां के शरीरों से (फ़ा12) यानी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने (फ़ा13) ऐ जिन्नात (फ़ा14) यानी अहले आसमान का कलाम सुनने के लिए आसमाने दुनिया पर जाना चाहा। (फ़ा15) फ़रिश्तों के। (फ़ा16) ताकि जिन्नात को अहले आसमान की बातें सुनने के लिए आसमान तक पहुंचने से रोका जाए। (फ़ा17) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत से (फ़ा18) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद। (फ़ा19) जिससे उसको मारा जाये।

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ○
اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ؕ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ○ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ○ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ○ اِنَّ لَدَيْنَاۤ
اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ○ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ○ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ○ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ

सूरतुल् मुज़म्मिल

(मक्की है इसमें 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल् मुज़्ज़म्मिलु(1)कुमिल्लै–ल इल्ला क़लीलन्(2)निस्फ़हू अविन्कुस् मिन्हु क़लीलन्(3)औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल् कुरआ–न तरतीला(4)इन्ना सनुल्क़ी अ़लै–क क़ौलन् सक़ीला(5)इन्–न नाशि–अतल् लैलि हि–य अशद्दु वत्अंव् व अक़्वमु क़ीला(6)इन्–न ल–क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला(7)वज़्कुरिस्–म रब्बि–क व त–बत्तल् इलैहि तब्तीला(8)रब्बुल् मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि ला इला–ह इल्ला हु–व फ़त्तख़िज़्हु वकीला(9)वस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू–न वह्जुर्हुम् हज्रन् जमीला(10)व ज़र्नी वल्मुकज़्ज़िबी–न उलिन्नअ़्–मति व महहिल्हुम् क़लीला(11)इन्–न लदैना अन्कालंव् व जहीमंव्(12)व तआमन् ज़ागुस्सतिंव् व अ़ज़ाबन् अलीमा(13)यौ–म तर्जुफुल् अर्–ज़ु वल्जिबालु व का–नतिल् जिबालु कसीबम् महीला(14)इन्ना अर्सल्ना इलैकुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ झुरमुट मारने वाले।(1) (फ़ा2) रात में क़ियाम फ़रमा।(2) (फ़ा3) सिवा कुछ रात के (फ़ा4) आधी रात या उससे कुछ कम करो।(3) या उस पर कुछ बढ़ाओ (फ़ा5) और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।(4) (फ़ा6) बेशक अ़न्क़रीब हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे।(5) (फ़ा7) बेशक रात का उठना (फ़ा8) वह ज़्यादा दबाव डालता है (फ़ा9) और बात ख़ूब सीधी निकलती है।(6) (फ़ा10) बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं।(7) (फ़ा11) और अपने रब का नाम याद करो (फ़ा12) और सब से टूट कर उसी के हो रहो।(8) (फ़ा13) वह पूरब का रब और पच्छिम का रब उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ।(9) (फ़ा14) और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो।(10) (फ़ा15) और मुझ पर छोड़ो उन झुठलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो।(11) (फ़ा16) बेशक हमारे पास (फ़ा17) भारी बेड़ियां हैं(12) और भड़कती आग। और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब।(13) (फ़ा18) जिस दिन थर थरायेंगे ज़मीन और पहाड़ (फ़ा19) और पहाड़ हो जायेंगे रेते का टीला बहता हुआ।(14) बेशक हमने तुम्हारी तरफ़

(फ़ा1) सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्की है इसमें दो रुकूअ़ बीस आयतें 285 कलिमे 838 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी अपने कपड़ों से लिपटने वाले इसके **शाने नुज़ूलः** में कई क़ौल हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्तेदाए ज़माना वही में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे ऐसी हालत में आपको जिबरील ने या अय्युहल्-मुज़्ज़म्मिलु कहकर निदा की एक क़ौल यह है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस हालत में आपको निदा की गई या अय्युहल् मुज़्ज़म्मिलु बहरहाल यह निदा बताती है कि महबूब की हर अदा प्यारी है और यह भी कहा गया है कि उसके माना यह हैं कि रिदाए नबुव्वत व चादर रिसालत के हामिल व लाइक़। (फ़ा3) नमाज़ और इबादत के साथ। (फ़ा4) यानी थोड़ा हिस्सा आराम के लिए हो बाक़ी शब इबादत में गुज़ारिये अब वह बाक़ी कितनी हो उसकी तफ़सील आगे इरशाद फ़रमाई जाती है। (फ़ा5) मुराद यह है कि आपको इख़्तियार दिया गया है कि ख़्वाह क़ियाम निस्फ़ शब से कम हो या निस्फ़ शब या इससे ज़्यादा हो (बैज़ावी) मुराद इस क़ियाम से तहज्जुद है जो इब्तेदाए इस्लाम में वाजिब **(बक़िया सफ़हा 935 पर)**

رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿15﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿16﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ﴿17﴾ اِۨلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿18﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿19﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ
تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ
اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿20﴾

रसूलन् शाहिदन् अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ़–न रसूला(15)फ़–अ़सा फ़िर्औ़नुर् रसू–ल फ़–अ–ख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव् वबीला(16)फ़कै–फ़ तत्तकू–न इन् क–फ़र्तुम् यौमंय्यज्–अ़लुल् विल्दा–न शी–ब नि(17)स्समाउ मुन्फ़तिरुम् बिही का–न वअ़्दुहू मफ़्अू़ला(18)इन्–न हाज़िही तज़्कि–रतुन् फ़–मन् शा–अत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही सबीला(19)इन्–न रब्ब–क यअ़्–लमु अन्न–क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु–सयिल्लैलि व निस्–फ़हू व सुलु–सहू व ताइ–फ़तुम मिनल्लज़ी–न म–अ़–क वल्लाहु यु–क़द्दिरुल् लै–ल वन्नहा–र अ़लि–म अल्लन् तुह़्सूहु फ़ता–ब अ़लैकुम् फ़क़्–रऊ मा त–यस्स–र मिनल् क़ुर्आनि अ़लि–म अन् स–यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ–ख़रू–न यज़्रिबू–न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू–न मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व आ–ख़रू–न युक़ातिलू–न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क़्रऊ मा त–यस्स–र मिन्हु व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व अक़्रिज़ुल्ला–ह क़र्–ज़न् ह़–स–नन् व मा तुक़द्दिमू लि–अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु–व ख़ैरंव् व अअ़्ज–म अज्रन् वस्तग़्फ़िरुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् रहीम(20)

एक रसूल भेजे (फ़ा20) कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं (फ़ा21) जैसे हम ने फ़िरऔ़न की तरफ़ रसूल भेजे।(15) (फ़ा22) तो फ़िरऔ़न ने उस रसूल का हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरिफ़्त से पकड़ा।(16) फिर कैसे बचोगे (फ़ा23) अगर (फ़ा24) कुफ़्र करो उस दिन से (फ़ा25) जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।(17) (फ़ा26) आसमान उसके सदमा से फट जाएगा अल्लाह का वादा होकर रहना।(18) बेशक यह नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।(19) (फ़ा27) (रुकूअ़ 13) बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअ़त तुम्हारे साथ वाली (फ़ा28) और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मालूम है कि ऐ मुसलमानों तुम से रात का शुमार न हो सकेगा (फ़ा29) तो उसने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई अब क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो (फ़ा30) उसे मालूम है कि अ़न्क़रीब कुछ तुम में से बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने (फ़ा31) और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे (फ़ा32) तो जितना क़ुरआन मुयस्सर हो पढ़ो (फ़ा33) और नमाज़ क़ाइम रखो (फ़ा34) और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो (फ़ा35) और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे और अल्लाह से बख़्शिश मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(20) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा20) सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा21) मोमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं। (फ़ा22) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा23) अ़ज़ाबे इलाही से (फ़ा24) दुनिया में (फ़ा25) यानी क़ियामत के दिन जो निहायत हौलनाक होगा। (फ़ा20) अपने शिद्दते दहशत से। (फ़ा27) ईमान व ताअ़त इख़्तियार करके। (फ़ा28) तुम्हारे असहाब की वह भी क़ियाम लैल में आपका इत्तेबाअ़ करते हैं। (फ़ा29) और ज़ब्त औक़ात न कर सकोगे (फ़ा30) यानी शब का क़ियाम माफ़ फ़रमाया मसला इस आयत से नमाज़ में मुतलक़ क़िरअत की फ़र्ज़ियत साबित हुई। मसला अक़ल दर्जा क़िराअत मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं। (फ़ा31) यानी तिजारत या तलबे इल्म के लिए (फ़ा32) उन सब पर रात का क़ियाम दुशवार होगा (फ़ा33) इससे पहला हुक्म मन्सूख़ किया गया और यह भी पंजगाना **(बक़िया सफ़हा 925 पर)**

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ قُمْ فَاَنْذِرْ ۙ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۙ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۙ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۙ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۙ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۗ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۙ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۙ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۙ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۙ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۙ كَلَّا ۗ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۗ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۗ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ نَظَرَ ۙ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۙ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۗ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَآ

सूरतुल् मुदस्सिर

(मक्की है इसमें 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल् मुद्दस्सिरु(1)कुम् फ़–अन्ज़िर्(2)व रब्ब–क फ़–कब्बिर(3)व सिया–ब–क फ़–तह्हिर्(4) वर्रुज्–ज़ फ़ह्जुर्(5)व ला तम्नुन् तस्तक्सिर(6)व लि–रब्बि–क फ़स्बिर्(7)फ़इज़ा नुक़ि–र फ़िन्नाकूरि(8)फ़ज़ालि–क यौ–मइज़िंय्यौमुन् अ़सीरुन्(9)अ़लल्काफ़िरी–न ग़ैरु यसीर(10)ज़र्नी व मन् ख़–लक़्तु वहीदंव्(11)व ज–अ़ल्तु लहू मालम् मम्दूदंव्(12)व बनी–न शुहूदंव्(13)व मह्हत्तु लहू तम्हीदा(14)सुम्–म यत्मअु अन् अज़ी–द(15)कल्ला इन्नहू का–न लिआयातिना अ़नीदा(16)सउर्हिक़ुहू सऊ़दन्(17)इन्नहू फ़क्क–र व क़द्–द–र(18)फ़क़ुति–ल कै–फ़ क़द्–द–र(19)सुम्–म क़ुति–ल कै–फ़ क़द्–द–र(20)सुम्–म न–ज़–र(21)सुम्–म अ़–ब–स व ब–स–र(22)सुम्–म अद्ब–र वस्तक्–ब–र(23)फ़क़ा–ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्युअ्–सरु(24)इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल् ब–शर(25)सउस्लीहि स–क़र(26)व मा

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले।(1) (फ़ा2) खड़े हो जाओ (फ़ा3) फिर डर सुनाओ।(2) (फ़ा4) और अपने रब ही की बड़ाई बोलो।(3) (फ़ा5) और अपने कपड़े पाक रखो।(4) (फ़ा6) और बुतों से दूर रहो।(5) और ज़्यादा लेने की नीयत से किसी पर एहसान न करो।(6) (फ़ा7) और अपने रब के लिए सब्र किये रहो।(7) (फ़ा8) फिर जब सूर फूंका जाएगा।(8) (फ़ा9) तो वह दिन कर्रा दिन है।(9) काफ़िरों पर आसान नहीं।(10) (फ़ा10) उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैंने अकेला पैदा किया।(11) (फ़ा11) और उसे वसीअ़ माल दिया।(12) (फ़ा12) और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते।(13) (फ़ा13) और मैंने उसके लिए तरह तरह की तैयारियां कीं।(14) (फ़ा14) फिर यह तमअ़ करता है कि मैं और ज़्यादा दूं।(15) (फ़ा15) हरगिज़ नहीं (फ़ा16) वह तो मेरी आयतों से अ़ेनाद रखता है।(16) क़रीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊँ।(17) बेशक वह सोचा और दिल में कुछ बात ठहराई।(18) तो उस पर लानत हो कैसी ठहराई।(19) फिर उस पर लानत हो कैसी ठहराई।(20) फिर नज़र उठा कर देखा।(21) फिर तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ा।(22) फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया।(23) फिर बोला यह तो वही जादू है अगलों से सीखा।(24) यह नहीं मगर आदमी का कलाम।(25) (फ़ा17) कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूं।(26) और तुमने

(फ़ा1) सूरह मुद्दस्सिर मक्की है इस में दो रुकूअ़ 56 आयतें 255 कलिमे 1010 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यह ख़िताब हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को है शाने नुज़ूल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं कोहे हिरा पर था कि मुझे निदा की गई या मुहम्मदु इन्न–क रसूलुल्लाह मैंने अपने दायें बायें देखा कुछ न पाया ऊपर देखा एक शख़्स आसमान ज़मीन के दर्मियान बैठा है (यानी वही फ़रिश्ता जिसने निदा की थी) यह देख कर मुझ पर रोअ़ब हुआ और मैं ख़दीजा के पास आया और मैंने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ उन्होंने उढ़ा दिया तो जिबरील आये और उन्होंने कहा या अय्युहल् मुद्दस्सिर् (फ़ा3) अपनी ख़्वाबगाह से। (फ़ा4) क़ौमको अ़ज़ाबे इलाही **(बक़िया सफ़हा 945 पर)**

اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا
هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ
يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۭ۟ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ

अद्रा–क मा स–क़र(27)ला तुब्क़ी व ला त–ज़र(28)लव्वा–ह़तुल् लिल्ब–शर(29)अलैहा तिस्–अ–त अ–शर(30)व मा ज–अल्ना अस्ह़ाबन्नारि इल्ला मलाइ–कतंव् व मा जअल्ना अिद्–द–तहुम् इल्ला फ़ित्–तल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू लि–यस्तैक़ि–नल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब व यज़्दादल् लज़ी–न आ–मनू ईमानंव् व ला यरताबल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब वल्मुअमिनू–न व लि–यक़ूलल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुंव् वल्काफ़िरू–न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म–स–लन् कज़ालि–क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ व मा यअ्–लमु जुनू–द रब्बि–क इल्ला हु–व व मा हि–य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब–शर(31) कल्ला वल्क़–मरि(32)वल्लैलि इज् अदब–र(33)वस्सुब्ह़ि इज़ा अस्फ़–र(34)इन्नहा ल–इह़्दल् कुबरि(35)नज़ीरल् लिल्ब–शर(36)लिमन् शा–अ मिन्कुम् अंय्य–त–क़द्–द–म औ य–त–अख़्ख़–र(37)कुल्लु नफ़्सिम् बिमा क–स–बत् रही–नतुन्(38)इल्ला अस्ह़ाबल् यमीन(39)फ़ी जन्नातिन् य–तसा–अलून(40)अनिल् मुज्रिमीन(41)मा स–ल–ककुम् फ़ी स–क़र(42)क़ालू लम्

क्या जाना दोज़ख़ क्या है।(27) न छोड़े न लगी रखे।(28) (फ़ा18) आदमी की खाल उतार लेती है।(29) (फ़ा19) उस पर उन्नीस दारोग़ा हैं।(30) (फ़ा20) और हमने दोज़ख़ के दारोग़ा न किये मगर फ़रिश्ते और हमने उनकी यह गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जाँच को (फ़ा21) इस लिए कि किताब वालों को यक़ीन आए (फ़ा22) और ईमान वालों का ईमान बढ़े (फ़ा23) और किताब वालों और मुसलमानों को कोई शक न रहे और दिल के रोगी (फ़ा24) और काफ़िर कहें इस अचंभे की बात में अल्लाह का क्या मतलब है यूं ही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता और वह (फ़ा25) तो नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत।(31) (रुकूअ् 15) हां हां चाँद की क़सम।(32) और रात की जब पीठ फेरे।(33) और सुबह की जब उजाला डाले।(34) (फ़ा26) बेशक दोज़ख़ बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है।(35) आदमियों को डराओ।(36) उसे जो तुम में चाहे कि आगे आए (फ़ा27) या पीछे रहे।(37) (फ़ा28) हर जान अपनी करनी में गिरवी है।(38) मगर दाहिनी तरफ़ वाले।(39) (फ़ा29) बाग़ों में पूछते हैं।(40) मुजरिमों से।(41) तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई।(42) वह बोले हम (फ़ा30)

(फ़ा20) यानी न किसी मुस्तहिके अ़ज़ाब को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त खाल लगी रहने दे बल्कि मुस्तहिके अ़ज़ाब को गिरिफ़्तार करे और गिरिफ़्तार को जलाए और जब जल जायें फिर वैसे ही कर दिये जायें (फ़ा१८) जलाकर (फ़ा२०) फ़रिश्ते एक मालिक और अट्ठारह उनके साथी। (फ़ा21) कि हिकमते इलाही पर एतेमाद न करके उस तादाद में कलाम करें और कहें उन्नीस क्यों हुए (फ़ा22) यानी यहूद को यह तादाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देख कर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़ का यक़ीन हासिल हो (फ़ा23) यानी अहले किताब में से जो ईमान लाए उनका एतेक़ाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ और ज़्यादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वह वहीए इलाही है इस लिए कुतुबे साबिक़ा से मुताबिक़ होती है। (फ़ा24) जिनके दिलों में निफ़ाक़ है। (फ़ा26) यानी जहन्नम और उसकी सिफ़त या आयाते क़ुरआन। (फ़ा२६) ख़ूब रौशन हो जाए (फ़ा27) ख़ैर या जन्नत की तरफ़ ईमान लाकर (फ़ा28) कुफ़्र इख़्तियार करके और बुराई व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो। (फ़ा29) यानी मोमिनीन वह गिरवी नहीं वह नजात पाने वाले हैं और उन्होंने नेकियां करके अपने आपको आज़ाद करा लिया है वह अपने रब की रहमत से मुन्तफ़ेअ् हैं। (फ़ा30) दुनिया में

نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝ فَمَا

تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ

مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

नकु मिनल् मुसल्लीन(43)व लम् नकु नुत्अिमुल् मिस्कीन(44)व कुन्ना नखूजु म–अल्खाइज़ीन (45)व कुन्ना नुकज्जिबु बियौमिद्दीन(46)हत्ता अतानल् यक़ीन(47)फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा–अतुश् शाफ़िअीन(48) फ़मा लहुम् अनित् तज़्कि–रति मुअ्रिज़ीन(49)क–अन्नहुम् हुमुरुम् मुस्तन्फ़िरः(50) फ़र्रत् मिन् क़स्–वरः(51)बल् युरीदु कुल्लुम्रिइम् मिन्हुम् अंय्यूअ्ता सुहुफ़म् मुनश्–श–र–तन्(52) कल्ला बल् ला यख़ाफ़ूनल् आख़िरः(53)कल्ला इन्नहू तज़्कि–रतुन्(54)फ़–मन् शा–अ ज़–क–रह(55)व मा यज़्कुरू–न इल्ला अंय्यशा–अल्लाहु हु–व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल् मग़्फ़िरः(56)

नमाज़ न पढ़ते थे।(43) और मिस्कीन को खाना न देते थे।(44) (फ़ा31) और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे।(45) और हम इन्साफ़ के दिन को (फ़ा32) झुठलाते रहे।(46) यहां तक कि हमें मौत आई।(47) तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी।(48) (फ़ा33) तो उन्हें क्या हुआ नसीहत से मुँह फेरते हैं।(49) (फ़ा34) गोया वह भड़के हुए गधे हों।(50) कि शेर से भागे हों।(51) (फ़ा35) बल्कि उनमें का हर शख़्स चाहता है कि खुले सहीफ़े उसके हाथ में दे दिये जायें।(52) (फ़ा36) हरगिज़ नहीं बल्कि उनको आख़िरत का डर नहीं।(53) (फ़ा37) हां हां बेशक वह (फ़38) नसीहत है।(54) तो जो चाहे उस से नसीहत ले।(55) और वह क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे वही है डरने के लाइक़ और उसी की शान है मग़फ़िरत फ़रमाना।(56) (रुकूअ् 16)

(फ़ा31) यानी मसाकीन पर सदक़ा न करते थे। (फ़ा32) जिसमें आमाल का हिसाब होगा और जज़ा दी जाएगी मुराद इससे रोज़े क़ियामत है। (फ़ा33) यानी अम्बिया मलाइका शोहदा सालिहीन जिन्हें अल्लाह तआला ने शाफ़ेअ् किया है वह ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे काफ़िरों की शफ़ाअत न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअत भी मुयस्सर न आएगी (फ़ा34) यानी मवाइज़े क़ुरआन से एराज़ करते हैं (फ़ा35) यानी मुशरिकीन नादानी व बेवक़ूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस तरह शेर को देख कर वह भागता है उसी तरह यह नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तिलावते क़ुरआन सुनकर भागते हैं (फ़ा36) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा था कि हम हरगिज़ आपका इत्तेबाअ् न करेंगे जब तक कि हम में हर एक के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक एक किताब न आए जिसमें लिखा हो कि यह अल्लाह तआला की किताब है फ़ुलां बिन फ़ुलां के नाम हम इसमें तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इत्तेबाअ् का हुक्म देते हैं (फ़ा37) क्योंकि अगर उन्हें आख़रत का ख़ौफ़ होता तो अदिल्ला क़ाइम होने और मोअ्जेज़ात ज़ाहिर होने के बाद इस क़िस्म की सर कुशाना हीला बाज़ियां न करते। (फ़ा38) क़ुरआन शरीफ़।

(बक़िया सफ़हा 931 का) व बक़ौले फ़र्ज़ था नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके असहाब शब को क़ियाम फ़रमाते और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वह तमाम शब क़ियाम में रहते और सुबह तक नमाज़ें पढ़ते इस अन्देशा से कि क़ियामे क़द्र वाजिब से कम न हो जाये यहां तक कि उन हज़रात के पाँव सूज जाते थे फिर यह हुक्म एक साल के बाद मन्सूख़ हो गया और इसका नासिख़ भी इसी सूरत में है फ़क़्रऊ मा त–यस्स–र–मिन्हु (फ़ा6) रिआयत वुक़ूफ़ और अदाए मख़ारिज के साथ और हुरूफ़ को मख़ारिज के साथ ता–ब इम्कान सही अदा करना नमाज़ में फ़र्ज़ है। (फ़ा7) यानी निहायत जलील व बा अज़मत मुराद इससे क़ुरआन मजीद है यह भी कहा गया है कि माना यह हैं कि हम आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमायेंगे जिसमें अवामिर नवाही और तकालीफ़ शाक़्क़ा हैं जो मुकल्लिफ़ीन पर भारी होंगे (फ़ा8) सोने के बाद (फ़ा9) ब–निस्बत दिन की नमाज़ के (फ़ा10) क्योंकि वह वक़्त सुकून व इत्मीन न का है शोर व शुग़ब से अमन होती है इख़्लास ताम व कामिल होता है रिया व नुमाइश का मौक़ा नहीं होता (फ़ा11) शब का वक़्त इबादत के लिए ख़ूब फ़राग़त का है (फ़ा12) रात व दिन के जुमला औक़ात में तस्बीह तहलील नमाज़ तिलावत क़ुरआन शरीफ़ दर्से इल्म वग़ैरह के साथ और यह भी कहा गया है कि इसके माना यह हैं कि अपनी क़िराअत की इब्तेदा में बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़ो (फ़ा13) यानी इबादत में इनक़ताअ् की सिफ़त हो कि दिल अल्लाह तआला के सिवा और किसी की तरफ़ मश्गूल न हो सब इलाक़ा क़तअ् हो जायें उसी की तरफ़ तवज्जोह रहे (फ़ा14) और अपने काम उसी की तरफ़ तफ़्वीज़ करो (फ़ा15) व हाज़ा मन्सूख़ बि–आयते क़िताल (फ़ा16) बद्र तक या रोज़े क़ियामत तक। (फ़ा17) आख़िरत में। (फ़ा18) उनके लिए जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकज़ीब की। (फ़ा19) वह क़ियामत का दिन होगा।

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝ بَلْ يُرِيْدُ
الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝
كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝
لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُوْنَ

सूरतुल् क़ियामति

(मक्की है इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बियौमिल् क़िया–मति(1)व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल् लव्वामः(2)अ–यह़्सबुल् इन्सानु अल्लन् नज्म–अ अ़िज़ामह(3)बला क़ादिरी–न अ़ला अन् नुसव्वि–य बनानह(4)बल् युरीदुल् इन्सानु लियफ़्जु–र अमा–मह(5)यस्अलु अय्या–न यौमुल् क़ियामः(6)फ़इज़ा बरिक़ल् ब–स़रु(7)व ख़–स–फ़ल् क़–मरु(8)व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़–मरु(9)यक़ूलुल् इन्सानु यौ–मइज़िन् ऐनल् म–फ़र्रु(10)कल्ला ला व–ज़र(11)इला रब्बि–क यौ–मइज़ि निल्मुस्त–क़र्र(12)युनब्बउल् इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्–द–म व अख़्ख़–र(13)बलिल् इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बस़ी–रतुंव्(14)व लौ अल्क़ा मआज़ीरह(15)ला तुह़र्रिक् बिही लिसा–न–क लितअ्–ज–ल बिही(16)इन्–न अ़लैना जम्–अ़हू व क़ुर्आ–नहू(17)फ़इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुर्आनः(18)सुम्–म इन्–न अ़लैना बयानः(19)कल्ला बल् तुह़िब्बूनल् आजि–ल–त(20)व त–ज़रूनल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं।(1) और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे।(2) (फ़ा2) क्या आदमी (फ़ा3) यह समझता है कि हम हरगिज़ उसकी हड्डियां जमा न फ़रमायेंगे।(3) क्यों नहीं हम क़ादिर हैं कि उसके पोर ठीक बना दें।(4) (फ़ा4) बल्कि आदमी चाहता है कि उसकी निगाह के सामने बदी करे।(5) (फ़ा5) पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा।(6) फिर जिस दिन आँख चुंधियाएगी।(7) (फ़ा6) और चाँद गहेगा।(8) (फ़ा7) और सूरज और चाँद मिला दिये जायेंगे।(9) (फ़ा8) उस दिन आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊँ।(10) (फ़ा9) हरगिज़ नहीं कोई पनाह नहीं।(11) उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ जाकर ठहरना है।(12) (फ़ा10) उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जता दिया जाएगा।(13) (फ़ा11) बल्कि आदमी ख़ुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है।(14) और अगर उसके पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा।(15) तुम याद करने की जल्दी में क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो।(16) (फ़ा12) बेशक उसका महफ़ूज़ करना (फ़ा13) और पढ़ना(17) (फ़ा14) हमारे ज़िम्मा है। तो जब हम उसे पढ़ चुकें (फ़ा15) उस वक़्त उस पढ़े हुए की इत्तेबाअ़ करो।(18) (फ़ा16) फिर बेशक उसकी बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है।(19) कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो तुम पाँव तले की दोस्त रखते हो।(20) (फ़ा17) और आख़रत को

(फ़ा1) सूरह क़ियामा मक्की है इसमें दो रुकूअ़ चालीस आयतें 199 कलिमे 692 हरफ़ हैं। (फ़ा2) बावजूद मुत्तक़ी व कसीरुत्ताअ़त होने के कि तुम मरने के बाद ज़रूर उठाए जाओगे। (फ़ा3) यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअ़्स है **शाने नुज़ूलः** यह आयत अ़दी बिन रबीआ़ के हक़ में नाज़िल हुई जिसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी मैं न मानूं और आप पर ईमान न लाऊँ क्या अल्लाह तआ़ला बिखरी हुई हड्डियां जमा कर देगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई जिसके माना यह हैं कि क्या उस काफ़िर का यह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेज़ा रेज़ा होकर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मक़ामात में मुन्तशिर हो **(बक़िया सफ़हा 946 पर)**

الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۢ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

आख़ि–रह(21)वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़ि–रतुन्(22)इला रब्बिहा नाज़िरः(23)व वुजूहुंय्यौमइज़िम् बासि–रतुन्(24)तज़ुन्नु अंय्युफ़्अ–ल बिहा फ़ाक़ि–रह(25)कल्ला इज़ा ब–ल–ग़तित् तराक़ि–य (26)व क़ी–ल मन् राक़िंव्(27)व ज़न्–न अन्नहुल् फ़िराक़ु(28)वल्–तफ़्फ़तिस्साक़ु बिस्साक़ि(29)इला रब्बि–क यौमइज़ि निल्मसाक़(30)फ़ला सद्–द–क़ व ला सल्ला(31)व लाकिन् कज़्ज़–ब व त– वल्ला (32)सुम्–म ज़–ह–ब इला अह्लिही य–त–मत्ता(33)औला ल–क फ़औला(34) सुम्– म औला ल–क फ़औला(35)अ–यह्सबुल् इन्सानु अंय्युत्र–क सुदा(36)अ–लम् यकु नुत्फ़–तम् मिम्–मनिय्यिंय्युम्ना(37)सुम्–म का–न अ़–ल–क़–तन् फ़–ख़–ल–क़ फ़–सव्वा(38)फ़–ज–अ़–ल मिन्हुज़् ज़ौजैनिज़् ज़–क–र वल् उन्सा(39)अलै–स ज़ालि–क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि–यल् मौता(40)

छोड़े बैठे हो।(21) कुछ मुँह उस दिन (फ़ा18) तरो ताज़ा होंगे।(22) (फ़ा19) अपने रब को देखते।(23) (फ़ा20) और कुछ मुँह उस दिन बिगड़े हुए होंगे।(24) (फ़ा21) समझते होंगे कि उनके साथ वह की जाएगी जो कमर तोड़ दे।(25) (फ़ा22) हां हां जब जान गले को पहुंच जाएगी।(26) (फ़ा23) और कहेंगे (फ़ा24) कि है कोई झाड़ फूंक करे।(27) (फ़ा25) और वह (फ़ा26) समझ लेगा कि यह जुदाई की घड़ी है।(28) (फ़ा27) और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी।(29) (फ़ा28) उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ हांकना है।(30) (फ़ा29) (रुकूअ़ 17) तो उसने (फ़ा30) न तो सच माना (फ़ा31) और न नमाज़ पढ़ी।(31) हां झुठलाया और मुँह फेरा।(32) (फ़ा32) फिर अपने घर को अकड़ता चला।(33) (फ़ा33) तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।(34) फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।(35) (फ़ा34) क्या आदमी इस घमंड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।(36) (फ़ा35) क्या वह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए।(37) (फ़ा36) फिर ख़ून की फुटक हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया (फ़ा37) फिर ठीक बनाया।(38) (फ़ा38) तो उससे (फ़ा39) दो जोड़े बनाए (फ़ा40) मर्द और औरत।(39) क्या जिस ने यह कुछ किया वह मुर्दे न जिला सकेगा।(40) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा18) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा19) अल्लाह तआ़ला के निअ़मत व करम पर मसरूर चेहरों से अनवारे ताबाँ यह मोमिनीन का हाल है। (फ़ा20) उन्हें दीदारे इलाही की निअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। मसला इस आयत से साबित हुआ कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा यही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा क़ुरआन व हदीस व इज्माअ़ के दलाइले कसीरा इस पर क़ाइम हैं और यह दीदार बे कैफ़ और बेजहत होगा। (फ़ा21) सियाह तारीक ग़मज़दा मायूस यह कुफ़्फ़ार का हाल है। (फ़ा22) यानी वह शिद्दते अ़ज़ाब और हौलनाक मसाइब में गिरिफ़्तार किये जायेंगे। (फ़ा23) वक़्ते मौत (फ़ा24) जो उसके क़रीब होंगे (फ़ा25) ताकि उसको शिफ़ा हासिल हो (फ़ा26) यानी मरने वाला (फ़ा27) कि अहले मक्का और दुनिया सब से जुदाई होती है (फ़ा28) यानी मौत की कर्ब व सख़्ती से पाँव बाहम लिपट जायेंगे या यह माना हैं कि दोनों पाँव कफ़न में लपेटे जायेंगे या यह माना हैं कि शिद्दत पर शिद्दत होगी एक दुनिया की जुदाई की सख़्ती उसके साथ मौत की कर्ब या एक मौत की सख़्ती और उसके साथ आख़िरत की सख़्तियां (फ़ा29) यानी बन्दों का रुजूअ़ उसी की तरफ़ है वही उनमें फ़ैसला फ़रमाएगा (फ़ा30) यानी इन्सान ने मुराद इससे अबू जहल है। (फ़ा31) रिसालत और क़ुरआन को। (फ़ा32) ईमान लाने से (फ़ा33) मुतकब्बिराना शान से अब उससे ख़िताब फ़रमाया जाता है (फ़ा34) जब यह आयत नाज़िल हुई नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बतहा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उससे फ़रमाया औला ल–क फ़औला सुम्–म औला ल–क फ़औला यानी तेरी ख़राबी आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी तो अबू जहल ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क्या तुम मुझे धमकाते हो तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते मक्का के पहाड़ों के दर्मियान में सब से ज़्यादा क़वी ज़ोर आवर साहब शौकत व क़ुव्वत हूं मगर क़ुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान ज़रूर पूरा होने वाला था चुनान्चे **(बक़िया सफ़हा 946 पर)**

سُورَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝ اِنَّا هَدَيْنٰهُ
السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا
يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا
وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

सूरतुद दहरि

(मक्की है इसमें 31 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता अ़–लल् इन्सानि हीनुम् मिनद् दह्रि लम् यकुन् शैअम् मज़्कूरा(1)इन्ना ख़–लक़्नल् इन्सा–न मिन् नुत्–फ़तिन् अम्शाजिन् नब्–तलीहि फ़–ज–अ़ल्नाहु समीअ़म् बसीरा(2)इन्ना हदैनाहुस् सबी–ल इम्मा शाकिरंव् व इम्मा कफ़ूरा(3)इन्ना अअ़्तदना लिल्काफ़िरी–न सलासि–ल व अग्लालंव् व सअ़ीरा(4)इन्नल् अब्रा–र यश्–रबू–न मिन् कअ्सिन् का–न मिज़ाजुहा काफ़ूरा(5) अ़ैनंय्यश्–रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू–नहा तफ़्जीरा(6)यूफ़ू–न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू–न यौमन् का–न शर्रुहू मुस्ततीरा(7)व युत्अ़िमू–नत् तआ़–म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव् व यतीमंव् व असीरा(8)इन्नमा नुत्अ़िमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव् व ला शुकूरा(9)इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्तरीरा(10)फ़–वक़ाहुमुल्लाहु शर्–र ज़ालिकल् यौमि

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
बेशक आदमी पर (फ़ा2) एक वक़्त वह गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था।(1) (फ़ा3) बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से (फ़ा4) कि वह उसे जांचें (फ़ा5) तो उसे सुनता देखता कर दिया।(2) (फ़ा6) बेशक हमने उसे राह बताई (फ़ा7) या हक़ मानता (फ़ा8) या नाशुक्री करता।(3) (फ़ा9) बेशक हमने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखी हैं ज़ंजीरें (फ़ा10) और तौक़ (फ़ा11) और भड़कती आग।(4) (फ़ा12) बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिस की मिलूनी काफ़ूर है। वह काफ़ूर क्या?एक चश्मा है(5) (फ़ा13) जिसमें से अल्लाह के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने महलों में उसे जहां चाहें बहा कर ले जायेंगे।(6) (फ़ा14) अपनी मन्नतें पूरी करते हैं (फ़ा15) और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई (फ़ा16) फैली हुई है।(7) (फ़ा17) और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर (फ़ा18) मिस्कीन और यतीम और असीर को।(8) उनसे कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिए खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।(9) बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है।(10) (फ़ा19) तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया

(फ़ा1) सूरह दहर इसका नाम सूरए इन्सान भी है मुजाहिद व क़तादा और जम्हूर के नज़दीक यह सूरत मदनी है बाज़ ने इसको मक्की कहा है इसमें दो रुकूअ़ 31 आयतें 240 कलिमे और 1054 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर नफ़ख़े रूह से पहले चालीस साल का (फ़ा3) क्योंकि वह एक मिट्टी का ख़मीर था न कहीं उसका ज़िक्र था न उसको कोई जानता था न किसी को उसकी पैदाइश की हिकमतें मालूम थीं इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उसके हमल में रहने का ज़माना (फ़ा4) मर्द व औरत की (फ़ा5) मुकल्लफ़ करके अपने अमर व नही से (फ़ा6) ताकि दलाइल का मुशाहिदा और आयात का इस्तेमाअ़ कर सके (फ़ा7) दलाइल क़ाइम करके रसूल भेज कर किताबें नाज़िल फ़रमा कर ताकि हो (फ़ा8) यानी मोमिन सईद (फ़ा9) काफ़िर शक़ी (फ़ा10) जिन्हें बांध कर दोज़ख़ की तरफ़ घसीटे जायेंगे (फ़ा11) जो गलों में डाले जायेंगे (फ़ा12) जिसमें जलाए जायेंगे (फ़ा13) जन्नत में (फ़ा14) अबरार के सवाब बयान फ़रमाने के बाद उनके आमाल का ज़िक्र फ़रमाया जाता है जो इस सवाब का सबब हुए (फ़ा15) **(बक़िया सफ़हा 947 पर)**

وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿۱۱﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿۱۲﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿۱۳﴾ وَدَانِيَةً

عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿۱۴﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿۱۵﴾ قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا

تَقْدِيْرًا ﴿۱۶﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿۱۷﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿۱۸﴾ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ

حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿۱۹﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿۲۰﴾ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْۤا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ

رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿۲۱﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۲۲﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿۲۳﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ

व लक़्क़ाहुम् नज़्–रतंव् व सुरूरा(11)व जज़ाहुम् बिमा स़–बरू जन्नतंव् व ह़रीरम्(12) मुत्तकिई–न फ़ीहा अ़लल् अराइकि ला यरौ–न फ़ीहा शम्संव् व ला ज़म्–हरीरा(13)व दानि–य–तन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लि–लत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला(14)व युत़ाफ़ु अ़लैहिम् बिआनि–यतिम् मिन् फ़िज़्ज़तिंव् व अक्वाबिन् कानत् क़वारीर(15)क़वारी–र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्–दरूहा तक़्दीरा(16)व युस्क़ौ–न फ़ीहा कअ्सन् का–न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला(17)अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्सबीला(18)व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम् मुख़ल्लदू–न इज़ा रऐ–तहुम् ह़सिब्–तहुम् लुअ्लुअम् मन्सूरा(19)व इज़ा रऐ–त सम्–म रऐ–त नअ़ीमंव् व मुल्कन् कबीरा(20)आलि–यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव् व इस्तब्–रक़ुंव् व हुल्लू असावि–र मिन् फ़िज़्ज़तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् त़हूरा(21)इन्–न हाज़ा का–न लकुम् जज़ाअंव् व का–न सअ्युकुम् मश्कूरा(22)इन्ना नह़्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल् क़ुरआ–न तन्ज़ीला(23)फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि–क व ला तुतिअ्

और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी।(11) और उनके सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये।(12) जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे न उसमें धूप देखेंगे न ठिठुर।(13) (फ़ा20) और उसके (फ़ा21) साए उन पर झुके होंगे और उसके गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे।(14) (फ़ा22) और उन पर चाँदी के बर्तनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे।(15) कैसे शीशे चाँदी के (फ़ा23) साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़ा पर रखा होगा।(16) (फ़ा24) और उसमें वह जाम पिलाए जायेंगे (फ़ा25) जिसकी मिलूनी अदरक होगी।(17) (फ़ा26) वह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सलसबील कहते हैं।(18) (फ़ा27) और उनके आसपास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के (फ़ा28) जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए।(19) (फ़ा29) और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे (फ़ा30) और बड़ी सल्तनत।(20) (फ़ा31) उनके बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े (फ़ा32) और क़नादीज़ के (फ़ा33) और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए गए (फ़ा34) और उन्हें उनके रब ने सुथरी शराब पिलाई।(21) (फ़ा35) उनसे फ़रमाया जाएगा यह तुम्हारा सिला है (फ़ा36) और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी।(22) (फ़ा37) (रुकूअ़ 19) बेशक हमने तुम पर (फ़ा38) कुरआन ब–तदरीज उतारा।(23) (फ़ा39) तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो (फ़ा40) और उनमें किसी

(फ़ा20) यानी गर्मी या सर्दी की कोई तकलीफ़ वहां न होगी (फ़ा21) यानी बहिश्ती दरख़्तों के (फ़ा22) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ख़ोशे ब–आसानी ले सकें (फ़ा23) जन्नती बर्तन चांदी के होंगे और चांदी के रंग और उसके हुस्न के साथ मिस्ले आबगीना के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उनमें जो चीज़ पी जायेगी वह बाहर से नज़र आएगी। (फ़ा24) यानी पीने वालों की रग़बत की क़दर न इससे कम न ज़्यादा यह सलीक़ा जन्नती ख़ुद्दाम के साथ ख़ास है दुनिया के साक़ियों को मुयस्सर नहीं (फ़ा25) शराबे तहूर के। (फ़ा26) इसकी आमेज़िश से शराब की लज़्ज़त और ज़्यादा हो जाएगी (फ़ा27) मुक़र्रबीन तो ख़ालिस इसी को पियेंगे और बाक़ी अहले जन्नत के शराबों में इसकी आमेज़िश होगी यह चश्मा ज़ेरे अ़र्श से जन्नते अ़दन होता हुआ तमाम जन्नतों में गुज़रता है (फ़ा28) जो न कभी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उन में कोई तग़य्युर आएगा न ख़िदमत से उकतायेंगे उनके हुस्न का यह आ़लम होगा (फ़ा29) यानी जिस तरह फ़र्शे मुसफ़्फ़ा पर गौहरे आबदार ग़लताँ हो उस हुस्न व सफ़ा के साथ जन्नती ग़िल्मान मश्ग़ूले ख़िदमत होंगे। (फ़ा30) जिसका वस्फ़ बयान में नहीं आ सकता। (फ़ा31) जिसकी हद व निहायत नहीं न उसको ज़वाल न जन्नती को वहां से इन्तेक़ाल वुसअ़त का यह आलम कि अदना मर्तबा का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता **(बक़िया सफ़हा 940 पर)**

مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ يَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा(24)वज़्कुरिस्–म रब्बि–क बुक्र–तंव् व असीला(25)व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला(26)इन्–न हाउलाइ युहिब्बूनल् आजि–ल–त व य–ज़रू–न वरा–अहुम् यौमन् सक़ीला(27)नह्नु ख़–लक़्नाहुम् व श–ददना अस्–रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सा–लहुम् तब्दीला(28)इन्–न हाज़िही तज़्कि–रतुन् फ़–मन् शाअत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही सबीला(29)व मा तशाऊ–न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु इन्नल्ला–ह का–न अलीमन् हकीमंय्–(30)–युद्ख़िलु मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही वज़्ज़ालिमी–न अ–अद्–द लहुम् अज़ाबन् अलीमा(31)

गुनहगार या नाशुक्रे की बात न सुनो।(24) (फ़ा41) और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो।(25) (फ़ा42) और कुछ रात में उसे सज्दा करो (फ़ा43) और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोलो।(26) (फ़ा44) बेशक यह लोग (फ़ा45) पाँव तले की अज़ीज़ रखते हैं (फ़ा46) और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़े बैठे हैं।(27) (फ़ा47) हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और हम जब चाहें (फ़ा48) उन जैसे और बदल दें।(28) (फ़ा49) बेशक यह नसीहत है (फ़ा50) तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।(29) (फ़ा51) और तुम क्या चाहो मगर यह कि अल्लाह चाहे (फ़ा52) बेशक वह इल्म व हिकमत वाला है।(30) अपनी रहमत में लेता है (फ़ा53) जिसे चाहे (फ़ा54) और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।(31) (फ़ा55) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा41) **शाने नुज़ूलः** उतबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन मुग़ीरा यह दोनों नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे आप इस काम से बाज़ आईये यानी दीन से उतबा ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आपको ब्याह दूं और बग़ैर महर के आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूं वलीद ने कहा कि मैं आपको इतना माल दे दूं कि आप राज़ी हो जायें इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा42) नमाज़ में सुबह के ज़िक्र से नमाज़े फ़ज्र और शाम के ज़िक्र से ज़ुहर और अ़स्र मुराद हैं (फ़ा43) यानी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो इस आयत में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया (फ़ा44) यानी फ़राइज़ के बाद नवाफ़िल पढ़ते रहो इसमें नमाज़े तहज्जुद आगई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मुराद ज़िक्रे लिसानी है मक़सूद यह है कि रोज़ा व शब के तमाम औक़ात में दिल और ज़बान से ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहो (फ़ा45) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा46) यानी मुहब्बते दुनिया में गिरिफ़्तार हैं (फ़ा47) यानी रोज़े क़ियामत को जिसके शदाइद कुफ़्फ़ार पर बहुत भारी होंगे न उस पर ईमान लाते हैं न उस दिन के लिए अ़मल करते हैं (फ़ा48) उन्हें हलाक कर दें और बजाए उनके (फ़ा49) जो इताअ़त शेआ़र हों (फ़ा50) मख़्लूक़ के लिए (फ़ा51) उसकी ताअ़त बजा लाकर और उसके रसूल का इत्तेबाअ़ करके (फ़ा52) क्योंकि जो कुछ होता है उसी की मशीयत से होता है (फ़ा53) यानी जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है। (फ़ा54) ईमान अ़ता फ़रमा कर (फ़ा55) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं।

(बक़िया सफ़हा 939 का) हो शौकत व शिकोह यह होगा कि मलाइका बे इजाज़त न आयेंगे। (फ़ा32) यानी बारीक रेशम के। (फ़ा33) यानी दबीज़ रेशम के। (फ़ा34) हज़रत इब्ने मुसैइब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे एक चांदी का एक सोन का एक मोती का। (फ़ा35) जो निहायत पाक साफ़ न उसे किसी का हाथ लगा न किसी ने छुआ न वह पीने के बाद शराबे दुनिया की तरह जिसके के अन्दर सड़ कर बोल बने बल्कि उसकी सफ़ाई का यह आ़लम है कि जिस्म के अन्दर उतर कर पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर जिस्म से निकलती है अहले जन्नत को खाने के बाद शराब पेश की जाएगी उसको पीने से उनके पेट साफ़ हो जायेंगे और जो उन्होंने खाया है वह पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर उनके जिस्मों से निकलेगा और उनकी ख़्वाहिश और रग़बतें फिर ताज़ा हो जाएंगी (फ़ा36) यानी तुम्हारी इताअ़त व फ़रमांबरदारी का। (फ़ा37) कि तुम से तुम्हारा रब राज़ी हुआ और उसने तुम्हें सवाबे अज़ीम अ़ता फ़रमाया। (फ़ा38) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़ा39) आयत आयत करके और उसमें अल्लाह तआ़ला की बड़ी हिकमतें हैं। (फ़ा40) रिसालत की तबलीग़ फ़रमा कर और उसमें मशक़्क़तें उठा कर और दुश्मनाने दीन की ईज़ायें बरदाश्त करके।

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ

सूरतुल् मुर्सलाति

(मक्की है इसमें 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्मुर्सलाति अुर्फ़न्(1)फ़ल्आसिफ़ाति अ़स्फ़न्(2)वन्नाशिराति नश्रन्(3)फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न्(4) फ़ल्मुलक़ियाति ज़िक्रन्(5)अुज़्रन् औ नुज़्रन्(6)इन्नमा तू–अ़दू–न लवाक़ि–अ(7)फ़–इज़न्नुजूमु तुमि–सत्(8)व इज़स्समाउ फ़ुरिजत्(9)व इज़ल् जिबालु नुसिफ़त्(10)व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत्(11) लिअय्यि यौमिन् उज्जिलत्(12)लियौमिल् फ़स्लि(13)व मा अद्रा–क मा यौमुल् फ़स्–ल(14) वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(15)अ–लम् नुह्लिकिल् अव्वलीन(16)सुम्–म नुत्बिअुहुमुल् आख़िरीन(17)कज़ालि–क नफ़्अ़लु बिल्मुज्रिमीन(18)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(19) अ–लम् नख़्लुक़्कुम् मिम् माइम् महीन(20)फ़–ज–अ़ल्नाहु फ़ी क़रारिम् मकीन(21)इला क़–दरिम् मअ़्लूम(22)फ़–क़–दर्ना फ़निअ़्–मल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी जो भेजी जाती हैं लगातार।(1) (फ़ा2) फिर ज़ोर से झोंका देने वालियां।(2) फिर उभार कर उठाने वालियां।(3) (फ़ा3) फिर हक़ नाहक़ को ख़ूब जुदा करने वालियां।(4) फिर उनकी क़सम जो ज़िक्र का इल्क़ा करती हैं।(5) (फ़ा4) हुज्जत तमाम करने या डराने को।(6) बेशक जिस बात का तुम वादा दिये जाते हो (फ़ा5) ज़रूर होनी है।(7) (फ़ा6) फिर जब तारे मह्व कर दिये जायें।(8) और जब आसमान में रख़ने पड़ें।(9) और जब पहाड़ ग़ुबार करके उड़ा दिये जायें।(10) और जब रसूलों का वक़्त आए।(11) (फ़ा7) किस दिन के लिए ठहराए गए थे।(12) रोज़े फ़ैसला के लिए।(13) और तू क्या जाने वह रोज़े फ़ैसला कैसा है।(14) (फ़ा8) झुठलाने वालों की उस दिन ख़राबी।(15) (फ़ा9) क्या हमने अगलों को हलाक न फ़रमाया।(16) (फ़ा10) फिर पिछलों को उनके पीछे पहुंचायेंगे।(17) (फ़ा11) मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।(18) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(19) क्या हमने तुम्हें एक बे-क़दर पानी से पैदा न फ़रमाया।(20) (फ़ा12) फिर उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा।(21) (फ़ा13) एक मालूम अन्दाज़ा तक।(22) (फ़ा14) फिर हमने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम

(फ़ा1) सूरह मुरसलात मक्की है इसमें दो रुकूअ् 50 आयतें 180 कलिमे 816 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वलमुरसलात शबे जिन में नाज़िल हुई हम सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रकाबे सआ़दत में थे जब मिना की ग़ार में पहुंचे वलमुरसलात नाज़िल हुई हम हुजूर से इसको पढ़ते थे और हुजूर उसकी तिलावत फ़रमाते थे अचानक एक सांप ने जस्त की हम उसको मारने के लिए लपके वह भाग गया हुजूर ने फ़रमाया तुम इसकी बुराई से बचाए गए वह तुम्हारी बुराई से यह ग़ार मिना में ग़ार वलमुरसलात के नामसे मशहूर है। (फ़ा2) इन आयतों में जो क़स्में मज़कूर हैं वह पांच सिफ़ात है जिनके मौसूफ़ात ज़ाहिर में मज़कूर नहीं इसी लिए मुफ़स्सिरीन ने इनकी तफ़सीर में बहुत वुजूह ज़िक्र किये हैं बाज़ ने यह पांचों सिफ़तें हवाओं की क़रार दी हैं बाज़ ने मलाइका की बाज़ ने आयाते क़ुरआन की बाज़ ने नुफ़ूसे कामिला की जो इस्तिकमाल के लिए अबदान की तरफ़ भेजे जाते हैं फिर वह रियाज़तों के झोंकों से मा सिवाए हक़ को उड़ा देते हैं फिर तमाम आज़ा में इस असर को फैलाते है। फिर हक़ बिज़्ज़ात और बातिल फ़ी नफ़सेही में फ़र्क़ करते हैं और ज़ाते इलाही के सिवा हर शय को हालक देखते हैं फिर ज़िक्र का इल्क़ा **(बक़िया सफ़हा 947 पर)**

الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً
فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ
مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا
لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ ۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

क़ादिरून(23)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(24)अ–लम् नजअलिल् अर्–ज़ किफ़ातन्(25) अह्याअंव् व अम्वातंव्(26)व जअ़ल्ना फ़ीहा रवासि–य शामिख़ातिंव् व अस्क़ैनाकुम् माअन् फ़ुराता (27)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(28)इन्तलिकू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून(29) इन्तलिकू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु–अ़बिल्(30)ला ज़लीलिंव् व ला युग़्नी मिनल्ल–हब(31) इन्नहा तरमी बि–श–ररिन् कल्क़स्रि(32)क–अन्नहू जिमा–लतुन् सुफ़्र(33)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(34)हाज़ा यौमु ला यन्तिकून(35)व ला युअ्ज़नु लहुम् फ़–यअ्–तज़िरून(36) वैलुंय्यौमइज़िल् –लिल्मु–कज़्ज़िबीन(37)हाज़ा यौमुल् फ़स्लि ज–मअ्नाकुम् वल्–अव्वलीन(38)फ़इन् का–न लकुम् कैदुन् फ़कीदून(39)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(40)इन्नलमुत्तक़ी–न फ़ी ज़िलालिंव् व अ़ुयून (41)व फ़वाकि–ह मिम्मा यश्–तहून(42)कुलू वश्–रबू हनीअम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून(43)इन्ना कज़ालि –क नज्ज़िल्मुह्सिनीन(44)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(45)कुलू व त–मत्तअू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून(46)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(47)व इज़ा क़ी–ल लहुमुर्–कअू. ला यर्–कअून(48)वैलुंय्यौमइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(49)फ़बि–अय्यि हदीसिम् बअ्–दहू युअमिनून(50)

क्या ही अच्छे क़ादिर।(23) (फ़ा15) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(24) क्या हमने ज़मीन को जमा करने वाली न किया।(25) तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की।(26) (फ़ा16) और हमने उस में ऊँचे-ऊँचे लंगर डाले (फ़ा17) और हमने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया।(27) (फ़ा18) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(28) (फ़ा19) चलो उसकी तरफ़ (फ़ा20) जिसे झुठलाते थे।(29) चलो उस धुंयें के साए की तरफ़ जिसकी तीन शाख़ें।(30) (फ़ा21) न साया दे (फ़ा22) न लपट से बचाए।(31) (फ़ा23) बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है (फ़ा24) जैसे ऊँचे महल(32) गोया वह ज़र्द रंग के ऊँट हैं।(33) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(34) यह दिन है कि वह न बोल सकेंगे।(35) (फ़ा25) और न उन्हें इजाज़त मिले कि उज़्र करें।(36) (फ़ा26) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(37) यह है फ़ैसले का दिन हमने तुम्हें जमा किया (फ़ा27) और सब अगलों को।(38) (फ़ा28) अब अगर तुम्हारा कोई दाँव हो तो मुझ पर चल लो।(39) (फ़ा29) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(40) (रुकूअ़ 21) बेशक डर वाले (फ़ा30) सायों और चश्मों में हैं।(41) और मेवों में जो उनका जी चाहे।(42) (फ़ा31) खाओ और पियो रचता हुआ (फ़ा32) अपने आमाल का सिला।(43) (फ़ा33) बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(44) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(44) (फ़ा34) कुछ दिन खालो और बरत लो (फ़ा35) ज़रूर तुम मुजरिम हो।(46) (फ़ा36) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी।(47) और जब उनसे कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते।(48) उस दिन झुठलाने वालो की ख़राबी।(49) फिर उस (फ़ा37) के बाद कौन सी बात पर ईमान लायेंगे।(50) (फ़ा38) (रुकूअ़ 22)

(फ़ा15) अन्दाज़ा फ़रमाने पर (जुमल) (फ़ा16) कि ज़िन्दे उसकी पुश्त पर जमा रहते हैं और मुर्दे उसके (बक़िया सफ़हा 947 पर)

(बक़िया सफ़हा 914 का) तो कवाकिब से शोले और चिंगारियां निकलें जिनसे उन्हें मारा जाए। (फ़ा12) यानी शयातीन के। (फ़ा13) आख़िरत में। (फ़ा14) ख़्वाह वह इन्सानों मेंसे हों या जिन्नों में से। (फ़ा15) मालिक और उनके आवान बतरीक़े तौबीख़।

(बक़िया सफ़हा 917 का) हर ऐब से ज़ाते आली सिफ़ात को पाक रखा इसमें कुफ़्फ़ार के उस मक़ूला का रद्द है जो उन्होंने कहा था या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्-ज़िक्रु इन्न-क ल-मजनून° (फ़ा5) तबलीग़े रिसालत व इज़हारे नबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देने और कुफ़्फ़ार की इन बेहूदा बातों और इफ़्तेराओं और तअ़्नों पर सब्र करने का (फ़ा6) हज़रत उम्मुलमोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से दरियाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ख़ुल्क़ कुरआन है हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने अफ़आ़ल की तकमील व ततमीम के लिए मबऊस फ़रमाया। (फ़ा7) यानी अहले मक्का भी जब उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। (फ़ा8) दीन के मुआ़मला में उनकी रिआ़यत करके (फ़ा9) कि झूठी और बातिल बातों पर क़स्में खाने में दिलेर है मुराद इस से या वलीद बिन मुग़ीरा है या असवद बिन यग़ूस या अख़नस बिन शरीक़ आगे उसकी सिफ़तों का बयान होता है (फ़ा10) ताकि लोगों के दर्मियान फ़साद डाले (फ़ा11) बख़ील न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इसके माना में यह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से मक़सूद इस्लाम से रोकना है क्योंकि वलीद बिन मुग़ीरा अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुआ तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा (फ़ा12) फ़ाजिर बदकार (फ़ा13) बद मिज़ाज बद ज़बान (फ़ा14) यानी बद गौहर तो उससे अफ़आ़ले ख़बीसा का सुदूर का क्या अ़जब मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरा ने अपनी मां से जाकर कहा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने मेरे हक़ में दस बातें फ़रमाई हैं नौ को तो मैं जानता हूं कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात असल में ख़ता होने की उसका हाल मुझे मालूम नहीं या तो मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गर्दन मार दूंगा इस पर उसकी मां ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था मुझे अन्देशा हुआ कि वह मर जाएगा तो उसका माल ग़ैर ले जायेंगे तो मैंने एक चरवाहे को बुला लिया तू उससे है फ़ाइदा वलीद ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में एक झूठा कलिमा कहा था मजनून उसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने उसके दस वाक़ई उयूब ज़ाहिर फ़रमा दिये उससे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत और शाने महबूबियत मालूम होती है। (फ़ा15) यानी कुरआन मजीद। (फ़ा16) और इससे उसकी मुराद यह होती है कि झूठ है और उसका यह कहना उसका नतीजा है कि हमने उसको माल और औलाद दी। (फ़ा17) यानी उसका चेहरा बिगाड़ देंगे और उसकी बद बातिनी की अ़लामत उसके चेहरे पर नुमूदार कर देंगे ताकि उसके लिए सबबे आ़र हो आख़िरत में तो यह सब कुछ होगा ही मगर दुनिया में भी यह ख़बर पूरी होकर रही और उसकी नाक दग़ीली हो गई कहते हैं कि ब्रद में उसकी नाक कट गई। (क़ज़ा क़ी-ल ख़ाज़िन् व मदारिक व जलालैन व एतेअ़्रा.जुनू अ़लैहि बि-अनू-न वलीदन् का-न मिनलू-मुस्तहज़िई-नलू-लज़ी-न मा तू क़बू-ल बदरिन्) (फ़ा18) यानी अहले मक्का को नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दुआ़ से जो आपने फ़रमाई थी कि या रब इन्हें ऐसी क़हत साली में मुब्तला कर जैसी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में हुई थी चुनान्चे अहले मक्का क़हत की ऐसी मुसीबत में मुब्तला किये गए कि वह भूख की शिद्दत में मुर्दार हड्डियां तक खा गए और इस तरह आज़माइश में डाले गए। (फ़ा19) उस बाग़ का नाम ज़रदान थ यह बाग़ सनआ़ए यमन से दो फ़रसंग के फ़ासला पर सरे राह था उसका मालिक एक मर्दे सालेह था जो बाग़ के मेवे कसरत से फ़ुक़रा को देता था जब बाग़ में जाता फ़ुक़रा को बुला लेता तमाम गिरे पड़े मेवे फ़ुक़रा ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वह भी फ़ुक़रा को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना हिस्सा होता इससे भी दसवाँ हिस्सा फ़ुक़रा को दे देता इसी तरह खेती काटते वक़्त भी उसने फ़ुक़रा के हुक़ूक़ बहुत ज़्यादा मुक़र्रर किये थे उसके बाद उसके तीन बेटे वारिस हुए उन्होंने बाहम मशवरा किया कि माल क़लील है कुम्बा बहुत है अगर वालिद की तरह हम भी ख़ैरात जारी रखें तो तंगदस्त हो जायेंगे आपस में मिल कर क़स्में खायें कि सुबह तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चलकर मेवे तोड़ लें चुनांचे इरशाद होता है (फ़ा20) ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो (फ़ा21) यह लोग तो क़स्में खा कर सो गए।

(बक़िया सफ़हा 918 का) आओ यह तो दुनिया की मार है। (फ़ा35) अ़ज़ाबे आख़िरत को और उससे बचने के लिए अल्लाह तआ़ला और रसूल की फ़रमांबरदारी करते। (फ़ा36) यानी आख़िरत में। (फ़ा37) **शाने नुज़ूलः** मुशरिकीन ने मुसलमानों से कहा था कि अगर मरने के बाद फिर हम उठाए भी गए तो वहां भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दर्जा बुलन्द होगा जैसे कि दुनिया में हमें आसाइश है इस पर यह आयत नाज़िल हुई जो आगे आती है (फ़ा38) और उन मुख़लिस फ़रमांबरदारों को उन मुआ़नदीन बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे हमारी निस्बत ऐसा गुमान फ़ासिद (फ़ा39) जहालत से

(बक़िया सफ़हा 919 का) (फ़ा43) कि आख़िरत में उन्हें मुसलमानों से बेहतर या उनके बराबर मिलेगा। (फ़ा44) जो इस दावे में उनकी मुवाफ़क़त करें और ज़िम्मेदार बनें (फ़ा45) हक़ीक़त में वह बातिल पर हैं न उनके पास कोई किताब जिसमें यह मज़कूर हो जो वह कहते हैं न अल्लाह तआ़ला का कोई अहद न कोई उनका ज़ामिन न मुवाफ़िक़। (फ़ा46) जम्हूर के नज़दीक कशफ़े साक़ शिद्दत व सऊबते अमर से इबारत है जो रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिए पेश आएगी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि क़ियामत में वह बड़ा सख़्त वक़्त है सल्फ़ का यही तरीक़ा है कि वह उसके माना में कलाम नहीं करते और यह फ़रमाते हैं कि हम उस पर ईमान लाते हैं और इससे जो मुराद है वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ तफ़वीज़ करते हैं (फ़ा47) यानी कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बतरीक़े इम्तेहान व तौबीख़। (फ़ा48) उनकी पुश्तें तांबे के तख़्ते की तरह सख़्त हो जायेंगी। (फ़ा49) कि उन पर ज़िल्लत व नदामत छाई हुई होगी। (फ़ा50) और अज़ानों और तक्बीरों में हय्य अलस्सलाह हय्य अलल फ़लाह

के साथ उन्हें नमाज़ व सज्दे की दावत दी जाती थी। (फ़51) बावजूद इसके सजदे न करते थे उसी का नतीजा है जो यहां सज्दे से महरूम रहे। (फ़52) यानी कुरआन मजीद को (फ़53) मैं उसको सज़ा दूंगा (फ़54) अपने अ़ज़ाब की तरफ़ इस तरह कि बावजूद मअ़सीयतों और नाफ़रमानियों के उन्हें सेहत व रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम ब-दम अ़ज़ाब क़रीब होता जाएगा। (फ़55) मेरा अ़ज़ाब शदीद है। (फ़56) रिसालत की तबलीग़ पर (फ़57) और तावान का उन पर ऐसा बारे गिराँ है जिसकी वजह से ईमान नहीं लाते (फ़58) ग़ैब से मुराद यहां लौहे महफ़ूज़ है। (फ़59) उससे जो कुछ कहते हैं (फ़60) जो वह उनके हक़ में फ़रमाए और चन्दे उनकी ईज़ाओं पर सब्र करो (क़ी-ल इन्नहू मन्सूख़ुन् बिआ-यतिस्सैफ़ि) (फ़61) क़ौम पर तअ़जील ग़ज़ब में और मछली वाले से मुराद हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम हैं (फ़62) मछली के पेट में ग़म से। (फ़63) और अल्लाह तआ़ला उनके उज़्र व दुआ़ व क़बूल फ़रमा कर उन पर इनाम न फ़रमाता (फ़64) लेकिन अल्लाह तआ़ला ने रहमत फ़रमाई। (फ़65) और बुग़्ज़ व अ़दावत की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं **शाने नुज़ूलः** मन्क़ूल है कि अरब में बाज़ लोग नज़र लगाने में शोहरए आफ़ाक़ थे और यह हालत थी कि दावा कर करके नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्होंने गज़न्द पहुंचाने के इरादे से देखा देखते ही हलाक हो गई ऐसे बहुत वाक़िआ़त उनके तजर्बा में आ चुके थे कुफ़्फ़ार ने उनसे कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नज़र लगायें तो उन लोगों ने हुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हमने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उनका किसी चीज़ को देख कर हैरत करना ही सितम होता था लेकिन उनकी यह तमाम जिद्दो जिहद कभी मिस्ल उनके और मकाइद के जो रात दिन वह करते रहते थे बेकार गई और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनके शर से महफ़ूज़ रखा और यह आयत नाज़िल हुई। हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जिसको नज़र लगे उस पर यह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। (फ़66) बराहे हसद व इनाद और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में जब आपको कुरआने करीम पढ़ते देखते हैं। (फ़67) यानी कुरआन शरीफ़ या सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (फ़68) जिन्नों के लिए भी और इन्सानों के लिए भी या ज़िक्र बमाना फ़ज़्ल व शरफ़ के है इस तक़दीर पर माना यह हैं कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम जहानों के लिए शरफ़ हैं उनकी तरफ़ जुनून की निस्बत करना कोर बातिनी है। (मदारिक)

सफ़हा 920 का) अ़लैहिस्सलाम। (फ़16) और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को और उनके साथ वालों को जो उन पर ईमान लाये थे नजात दी और बाक़ियों को ग़र्क़ किया। (फ़17) यानी मोमिनीन को नजात देने और काफ़िरों के हलाक फ़रमाने को (फ़18) कि सबबे इबरत व नसीहत हो (फ़19) काम की बातों को ताकि उनसे नफ़ा उठाये।

(बक़िया सफ़हा 921 का) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इससे उसकी मुराद यह होगी कि दुनिया में जो हुज्जतें मैं किया करता था वह सब बातिल हो गईं अब अल्लाह तआ़ला जहन्नम के ख़ाज़िनों को हुक्म देगा। (फ़33) इस तरह कि उसके हाथ उसकी गर्दन से मिला कर तौक़ में बांध दो। (फ़34) फ़रिश्तों के हाथ से। (फ़35) यानी वह ज़न्जीर उसमें इस तरह दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है। उसकी अ़ज़मत व वहदानियत का मोअ़तक़िद न था।

(बक़िया सफ़हा 923 का) नुज़ूल है (फ़6) वह रोज़े क़ियामत है जिसके शदाइद काफ़िरों की निस्बत तो इतने दराज़ होंगे और मोमिन के लिए एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी सुबुक तर होगा। (फ़7) यानी अ़ज़ाब को। (फ़8) और यह ख़्याल करते हैं कि वाक़ेअ़ होने वाला ही नहीं। (फ़9) कि ज़रूर होने वाला है। (फ़10) और हवा में उड़ते फिरेंगे (फ़11) हर एक को अपनी ही पड़ी होगी (फ़12) कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुब्तला होंगे कि न उनसे हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे। (फ़13) यानी काफ़िर। (फ़14) यह कुछ उसके काम न आएगा और किसी तरह वह अ़ज़ाब से बच न सकेगा। (फ़15) नाम ले लेकर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ ऐ मुनाफ़िक़ मेरे पास आ (फ़16) हक़ के क़बूल करने और ईमान लाने से। (फ़17) माल को और उसके हुक़ूक़े वाजिब अदा न किये।

(बक़िया सफ़हा 924 का) कमज़ोर पर तरजीह देते हैं न किसी साहबे हक़ का तलफ़े हक़ गवारा करते हैं। (फ़30) नमाज़ का ज़िक्र मुकर्रर फ़रमाया गया इसमें यह इज़्हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या यह एक जगह फ़रायज़ मुराद हैं दूसरी जगह नवाफ़िल और हिफ़ाज़त से मुराद यह है कि उस के अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहब्बात को कामिल तौर पर अदा करते हैं। (फ़31) बहिश्त के। (फ़32) **शाने नुज़ूलः** यह आयत कुफ़्फ़ार की इस जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के गिर्द हलक़े बांध कर गरोह के गरोह जमा होते थे और आपका कलामे मुबारक सुनते और उसको झुठलाते और इस्तेहज़ा करते और कहते कि अगर यह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर उन से पहले उसमें दाख़िल होंगे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आप के पास बैठते भी हैं और गर्दनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आपसे सुनते हैं उससे नफ़ा नहीं उठाते (फ़33) ईमान वालों की तरह

(बक़िया सफ़हा 926 का) और उनकी औरतों को बांझ कर दिया चालीस साल तक उनके माल हलाक हो गए जानवर मर गए जब यह हाल हुआ तो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। (फ़20) कुफ़्र व शिर्क से और ईमान लाकर मग़फ़िरत तलब करो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपनी रहमतों के दरवाज़े खोले क्योंक ताअ़ात में मश्ग़ूल होना ख़ैरो बरकत और वुसअ़ते रिज़्क़ का सबब होता है। (फ़21) तौबा करने वालों को अगर तुम ईमान लाये और तुमने तौबा की तो वह

(बक़िया सफ़हा 927 का) (27) (फ़ा46) ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को (फ़ा47) और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही।(28) (फ़ा48) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा22) माल व औलाद ब-कसरत अ़ता फ़रमाएगा। (फ़ा23) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है एक शख़्स आपके पास आया और उसने क़िल्लते बारिश की शिकायत की आपने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया दूसरा आया उसने तंगदस्ती की शिकायत की उसे भी यही हुक्म फ़रमाया फिर तीसरा आया उसने क़िल्लते नस्ल की शिकायत की उससे भी यही फ़रमाया फिर चौथा आया उसने अपनी ज़मीन की क़िल्लत पैदावार की शिकायत की उससे भी यही फ़रमाया रबीअ़ बिन सबीह जो हाज़िर थे उन्होंने अर्ज़ किया चन्द लोग आये क़िस्म क़िस्म की हाजतें उन्होंने पेश कीं आपने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो तो आपने यह आयत पढ़ी (इन हवाइज के लिए यह कुरआनी अ़मल है) (फ़ा24) इस तरह कि उस पर ईमान लाओ (फ़ा25) कभी नुत्फ़ा कभी अ़ल्क़ा कभी मुज़्ग़ा यहां तक कि तुम्हारी ख़िलक़त कामिल की उसकी आफ़रीनश में नज़र करना उसकी ख़ालक़ियत व क़ुदरत और उसकी वहदानियत पर ईमान लाने को वाजिब करता है (फ़ा26) हज़रत इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मरवी है कि आफ़ताब व माहताब के चेहरे तो आसमानों की तरफ़ हैं और हर एक की पुश्त ज़मीन की तरफ़ तो आसमानों की लताफ़त के बाइस उनकी रौशनी तमाम आसमानों में पहुंचती है अगरचे चांद आसमाने दुनिया में है (फ़ा27) कि दुनिया को रौशन करता है और उसकी रौशनी चांद के नूर से क़वी तर है और आफ़ताब चौथे आसमान में है। (फ़ा28) तुम्हारे बाप हज़रत आदम को इससे पैदा करके (फ़ा29) मौत के बाद (फ़ा30) इससे रोज़े क़ियामत (फ़ा31) और मैंने जो ईमान व इस्तिग़फ़ार का हुक्म दियाथा उसको उन्होंने न माना (फ़ा32) उनके अवाम ग़ुरबा और छोटे लोग सरकश रुऊसा और असहाबे अमवाल व औलाद के ताबेअ़ हुए। (फ़ा33) और वह ग़ुरूर माल में मस्त होकर कुफ़्र व तुग़ियान में बढ़ता रहा। (फ़ा34) वह रुऊसा। (फ़ा35) कि उन्होंने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और उन्हें और उनके मुत्तबेईन को ईज़ायें पहुंचायें। (फ़ा36) रुऊसा कुफ़्फ़ार अपने अवाम से (फ़ा37) यानी उनकी इबादत तर्क न करना। (फ़ा38) यह उनके बुतों के नाम है। जिन्हें वह पूजते थे बुत तो उनके बहुत थे मगर यह पांच उनके नज़दीक बड़ी अ़ज़मत वाले थे वद्द तो मर्द की सूरत पर था और सवाअ़ औरत की सूरत पर और यग़ूस शेर की शक्ल और यऊक़ घोड़े की और नसर करगस की यह बुत क़ौमे नूह से मुन्तक़िल होकर अ़रब में पहुंचे और मुशरिकीन के क़बाइल से एक एक ने एक एक को अपने लिए ख़ास कर लिया (फ़ा39) यानी यह बुत बहुत से लोगों के लिए गुमराही का सबब हुए या यह माना हैं कि रुऊसा क़ौम ने बुतों की इबादत का हुक्म करके बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया। (फ़ा40) जो बुतों पूजते हैं। (फ़ा41) यह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ है जब उन्हें वही से मालूम हुआ कि जो लोग ईमान ला चुके क़ौम में उनके सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आपने यह दुआ़ की। (फ़ा42) तूफ़ान में (फ़ा43) बाद ग़र्क़ होने के (फ़ा44) जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता (फ़ा45) और हलाक न फ़रमाएगा (फ़ा46) यह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को वही से मालूम हो चुका था और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपने और अपने वालदैन और मोमिनीन और मोमिनात के लिए दुआ़ फ़रमाई (फ़ा47) कि वह दोनों मोमिन थे। (फ़ा48) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उनकी क़ौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 929 का) कि वह कैसी शुक्र गुज़ारी करते हैं। (फ़ा35) कुरआन से या तौहीद या इबादत से। (फ़ा36) जिसकी शिद्दत दम बदम बढ़ेगी। (फ़ा37) यानी वह मकान जो नमाज़ के लिए बनाए गए। (फ़ा38) जैसा कि यहूद व नसारा का तरीक़ा था कि वह अपने गिरजाओं और इबादत ख़ानों में शिर्क करते थे (फ़ा39) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बतने नख़ला में वक़्ते फ़ज्र। (फ़ा40) यानी नमाज़ पढ़ने (फ़ा41) क्योंकि उन्हें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल की इबादत व तिलावत और आपके असहाब की इक़्तेदा निहायत अ़जीब और पसन्दीदा मालूम हुई इससे पहले उन्होंने कभी ऐसा मन्ज़र न देखा था और ऐसा बे मिस्ल कलाम न सुना था।

(बक़िया सफ़हा 933 का) का ईमान न लाने पर। (फ़ा5) जब यह आयत नाज़िल हुई तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाहु अक्बर फ़रमाया। हज़रत ख़दीजा ने भी हुज़ूर की तकबीर सुन कर तकबीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुआ कि वही आई। (फ़ा6) हर तरह की नजासत से क्योंकि नमाज़ के लिए तहारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या यह माना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अरबों की आ़दत है क्योंकि बहुत ज़्यादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एहतेमाल रहता है। (फ़ा7) यानी जैसे कि दुनिया में हदिये और न्योते देने का दस्तूर है कि देने वाला यह ख़्याल करता है कि जिसको मैंने दिया है वह उससे ज़्यादा मुझे दे देगा इस क़िस्म के न्योते और हदिये शरअ़न जाइज़ हैं मगर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इससे मना फ़रमाया गया क्यों कि शाने नबुव्वत बहुत अरफ़अ़ व आला है और इस मन्सबे आली के लाइक़ यही है कि जिसको जो दें वह महज़ करम हो उससे लेने या नफ़ा हासिल करने की नीयत न हो (फ़ा8) अवामिर व नवाही और उन ईज़ाओं पर जो दीन की ख़ातिर आपको बरदाश्त करनी पड़ीं। (फ़ा9) मुराद इससे बक़ौल सही नफ़ख़ए सानिया है। (फ़ा10) इसमें इशारा है कि वह दिन बफ़ज़्ले इलाही मोमिनीन पर आसान होगा (फ़ा11) उसकी मां के पेट में बग़ैर माल व औलाद के **शाने नुज़ूलः** यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा मख़ज़ूमी के हक़ में नाज़िल हुई वह अपनी क़ौम में वहीद के लक़ब से मुलक़्क़ब था (फ़ा12) खेतियां और कसीर मवेशी और

तिजारतें मुजाहिद से मन्कूल है कि वह एक लाख दीनार नक़्द की हैसियत रखता था और ताइफ़ में उसका ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फलों से ख़ाली न होता था (फ़ा13) जिनकी तादाद दस थी और चूंकि मालदार थे उन्हें कस्बे मआश के लिए सफ़र की हाजत न थी इस लिए सब बाप के सामने रहते उनमें से तीन मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हुए ख़ालिद और हिशाम और वलीद बिन वलीद (फ़ा14) जाह भी दिया और रियासत भी अ़ता फ़रमाई ऐश भी दिया और तूले उम्र भी (फ़ा15) बावजूद नाशुक्री के (फ़ा16) यह न होगा चुनान्चे इस आयत के नुज़ूल के बाद वलीद के माल व औलाद व जाह में कमी शुरू हुई यहां तक कि हलाक हो गया। (फ़ा17) **शाने नुज़ूलः** जब हाम्-मीम् तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम° नाज़िल हुई और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिद में तिलावत फ़रमाई वलीद ने सुना और उस क़ौम मजलिस में आकर उसने कहा कि खुदा की क़सम मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से अभी एक कलाम सुना न वह आदमी का न जिन्न का बखुदा उसमें अ़जीब शीरीनी और ताज़गी और फ़वाइद व दिल कशी है वह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा कुरैश को उसकी इन बातों से बहुत ग़म हुआ और उन में मशहूर हो गया कि वलीद आबाई दीन से बरगश्ता हो गया अबू जहल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उसके पास आकर बहुत ग़मज़दा सूरत बना कर बैठ गया वलीद ने कहा क्या ग़म है अबू जहल ने कह ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है क़ुरैश तेरे ख़र्च के लिए रुपया जमा करेंगे उन्हें ख़्याल है कि तूने मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के कलाम की तारीफ़ इस लिए की है कि तुझे उकने दस्तरख़्वान का बचा खाना मिल जाये इस पर उसे बहुत तैश आया और कहने लगा क्या क़ुरैश को मेरे माल व दौलत का हाल मालूम नहीं है और क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और उनके असहाब ने कभी सैर होकर खाना भी खाया है उनके दस्तरख़्वान पर क्या बचेगा फिर अबू जहल के साथ उठा और क़ौम में आकर कहने लगा तुम्हें ख़्याल है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मजनून हैं क्या तुमने उनमें कभी दीवानगी की कोई बात देखी सब ने कहा हरगिज़ नहीं कहने लगा तुम उनहें काहिन समझते हो क्या तुमने उन्हें कभी कहानत करते देखा सबने कहा नहीं कहा तुम उनहें शायर गुमान करते हो क्या तुमने कभी उन्हें शेअ़र कहते पाया सब ने कहा नहीं, कहने लगा तुम उन्हें कज़्ज़ाब कहते हो क्या तुम्हारे तजर्बा में कभी उन्होंने झूठ बोला सबने कहा नहीं और क़ुरैश में आपका सिद्क़ व दियानत ऐसा मशहूर था कि क़ुरैश आपको अमीन कहा करते थे यह सुनकर क़ुरैश ने कहा फिर बात क्या है तो वलीद सोच कर बोला कि बात ग्रह है कि वह जादूगर हैं तुमने देखा होगा कि उनकी बदौलत रिश्तेदार रिशतेदार से बाप बेटे से जुदा हो जाते हैं बस यही जादूगर का काम है और जो कुरआन वह पढ़ते हैं वह दिल में असर कर जाता है इस का बाइस यह है कि वह जादू है इस आयते करीमा में इसका ज़िक्र फ़रमाया गया

(बक़िया सफ़हा 936 का) जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उनका जमा करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है यह ख़्याले फ़ासिद उसके दिल में क्यों आया और उसने क्यों नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वह मरने के बाद दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। (फ़ा4) यानी उसकी अंगुलियां जैसी थीं बग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दीं और उनकी हड्डियां उनके मौक़ा पर पहुंचा दीं जब छोटी छोटी हड्डियां इस तरह तरतीब दे दी जायें तो बड़ी का क्या कहना। (फ़ा5) इन्सान का इन्कारे बअ़्स इश्तेबाह और अ़दमे दलील के बाइस नहीं है बल्कि हाल यह है कि वह बहाले सवाल भी अपने फ़ुजूर पर क़ाइम रहना चाहता है कि बतरीक़े इस्तेहज़ा पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा (जुमल) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इस आयत के माना में फ़रमाया कि आदमी बअ़्स व हिसाब को झुठलाता है जो उसके सामने है सईद बिन जुबैर ने कहा आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र यही कहता रहता है अब तौबा करूंगा अब अ़मल करूंगा यहां तक कि मौत आ जाती है और वह अपनी बदियों में मुब्तला होता है। (फ़ा6) और हैरत दामनगीर होगी। (फ़ा7) तारीक हो जाएगा और रौशनी ज़ाइल हो जाएगी (फ़ा8) यह मिला देना या तुलूअ़ में होगा दोनों मग़रिब से तुलूअ़ करेंगे या बे नूर होने में (फ़ा9) जो इस हाल व दहशत से रिहाई मिले (फ़ा10) तमाम ख़ल्क़ उसके हुज़ूर हाज़िर होगी हिसाब किया जाएगा जज़ा दी जाएगी जिसे चाहेगा अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा जिसे चाहेगा अपने अ़द्ल से जहन्नम में डालेगा (फ़ा11) जो उसने किया है (फ़ा12) **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिबरील अमीन के वही पहुंचा कर फ़ारिग़ होने से क़बल याद फ़रमाने की सई फ़रमाते थे और जल्द जल्द पढ़ते और ज़बाने अक़्दस को हरकत देते अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मशक़्क़त गवारा न फ़रमाई और क़ुरआने करीम का सीनए पाक में महफ़ूज़ करना और ज़बाने अक़्दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मए करम पर लिया और यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमा कर हुज़ूर को मुतमइन फ़रमा दिया (फ़ा13) आपके सीनए पाक में (फ़ा14) आपका (फ़ा15) यानी आपके पास वही आ चुके। (फ़ा16) इस आयत के नाज़िल होने के बाद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वही को बइत्मीनान सुनते और जब वही तमाम हो जाती तब पढ़ते थे। (फ़ा17) यानी तुम्हें दुनिया की चाहत है।

(बक़िया सफ़हा 937 का)ऐसा ही हुआ और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ बुरी तरह मारा गया नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत में एक फ़िरऔन होता है मेरी उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल है इस आयत में उसकी ख़राबी का ज़िक्र चार मर्तबा फ़रमाया गया पहली ख़राबी बे ईमानी की हालत में ज़िल्लत की मौत दूसरी ख़राबी क़ब्र की सख़्तियां और वहां की शिद्दतें तीसरी ख़राबी मरने के बाद उठने के वक़्त गिरिफ़्तारे मसाइब होना चौथी ख़राबी अ़ज़ाबे जहन्नम। (फ़ा35) कि न उस पर अमर व नही वग़ैरह के अहकाम न हों वह मरने के बाद उठाया जाये न उससे आमाल का हिसाब लिया जाए न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाये ऐसा नहीं। (फ़ा36) रहम में तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उसका

तकब्बुर करना इतराना और पैदा करने वाले की नाफ़रमानी करना निहायत बेजा है। (फ़37) इन्सान बनाया। (फ़38) इसके आज़ा को कामिल किया उसमें रूह डाली। (फ़39) यानी मनी से या इन्सान से। (फ़40) दो सिफ़तें पैदा कीं।

(बक़िया सफ़हा 938 का) मन्नत यह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वह किसी शर्त से अपने ऊपर वाजिब करे मसलन यह कहे कि अगर मेरा मरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफ़िर बख़ैर वापस आयते तो मैं राहे ख़ुदा में इस क़दर सदक़ा दूंगा या इतनी रकअ़तें नमाज़ पढ़ूंगा इस नज़र की वफ़ा वाजिब होती है माना यह हैं कि वह लोग ताअ़त व इबादत और शरअ़ के वाजिबात के आ़मिल हैं हत्ता कि जो ताआ़त ग़ैर वाजिबा अपने ऊपर नज़र से वाजिब कर लेते हैं उसको भी अदा करते हैं (फ़16) यानी शिद्दत और सख़्ती। (फ़17) क़तादा ने कहा कि उस दिन की शिद्दत इस क़दर फैली हुई है कि आसमान फट जायेंगे सितारे गिर पड़ेंगे चांद सूरज बे नूर हो जायेंगे पहाड़ रेज़ रेज़ा हो जायेंगे कोई इमारत बाक़ी न रहेगी इसके बाद यह बताया जाता है कि उनके आमाल रिया व नुमाइश से ख़ाली हैं। (फ़18) यानी ऐसी हालत में जबकि ख़ुद उन्हें खाने की हाजत व ख़्वाहिश हो और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसके यह माना लिये हैं कि अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में खिलाते हैं **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनकी कनीज़ फ़िज़्ज़ा के हक़ में नाज़िल हुई हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बीमार हुए उन हज़रात ने उनकी सेहत पर तीन रोज़ों की नज़र मानी अल्लाह तआ़ला ने सेहत दी नज़र की वफ़ा का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक यहूदी से तीन साअ़ (साअ़ एक पैमाना है) जौ लाए हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन एक रोज़ यतीम एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ यह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार करके अगला रोज़ा रख लिया गया। (फ़19) लिहाज़ा हम अपने अ़मल की जज़ा या शुक्र गुज़ारी तुम से नहीं चाहते यह अ़मल इस लिए है कि हम उस दिन अमन में ख़ौफ़ से रहें

(बक़िया सफ़हा 941 का) करते हैं इस तरह कि दिलों में और ज़बानों पर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र ही होता है और एक वजह यह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़तों से हवायें मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़रिश्ते इस तक़दीर पर माना यह हैं कि क़सम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झोंके देती हैं उनसे मुराद अ़ज़ाब की हवायें हैं (ख़ाज़िन व जुमल वग़ैरह) (फ़3) यानी वह रहमत की हवायें जो बादलों को उठाती हैं उसके बाद जो सिफ़तें मज़कूर हैं वह क़ौले अख़ीर पर जमाआ़त मलाइका की हैं इब्ने कसीर ने कहा कि फ़ारक़ात व मलक़ियात से जमाआ़ते मलाइका मुराद होने पर इज्माअ़ है (फ़4) अम्बिया व मुरसलीन के पास वही लाकर (फ़5) यानी बअ़्स व अ़ज़ाब और क़ियामत के आने का (फ़6) कि उसके होने में कुछ भी शक नहीं। (फ़7) कि वह उम्मतों पर गवाही देने के लिए जमा किये जायें। (फ़8) और उसके हौल व शिद्दत का क्या आ़लम है। (फ़9) जो दुनिया में तौहीद व नबुव्वत और रोज़े आख़िरत और बअ़्स व हिसाब के मुन्किर थे (फ़10) दुनिया में अ़ज़ाब नाज़िल करके जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया। (फ़11) यानी जो पहली उम्मतों के मुकज़्ज़बीन की राह इख़्तियार करके सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करते हैं उन्हें भी पहलों की तरह हलाक फ़रमायेंगे (फ़12) यानी नुत्फ़ा से (फ़13) यानी रेहम में (फ़14) वक़्ते विलादत तक जिसको अल्लाह तआ़ला जानता है।

(बक़िया सफ़हा 942 का) बतन में। (फ़17) बुलन्द पहाड़ों के (फ़18) ज़मीन में चश्मे और मम्बअ़ पैदा करके यह तमाम बातें मुर्दों को ज़िन्दा करने से ज़्यादा अ़जीब हैं। (फ़19) और रोज़े क़ियामत काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उसकी तरफ़ जाओ। (फ़20) यानी उस अ़ज़ाब की तरफ़। (फ़21) इससे जहन्नम का धुआं मुराद है जो ऊँचा होकर तीन शाख़ें हो जाएगा एक कुफ़्फ़ार के सरों पर एक उनके दायें और उनके बायें और हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उनहें इसी धुयें में रहने का हुक्म होगा जबकि अल्लाह तआ़ला के प्यारे बन्दे उसके अर्श के साया में होंगे उसके बाद जहन्नम के धुयें की शान बयान फ़रमाई जाती है कि वह ऐसा है कि (फ़22) जिससे उस दिन की गर्मी से कुछ अमन पा सकें। (फ़23) आतिशे जहन्नम की। (फ़24) इतनी इतनी बड़ी। (फ़25) न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ा होंगे बाज़ में कलाम करें बाज़ में कुछ बोल न सकेंगे (फ़26) और दर हक़ीक़त उनके पास कोई उज़्र ही न होगा क्योंकि दुनिया में हुज्जतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिए कोई जाये उज़्र बाक़ी नहीं रखी गई अलबत्ता उन्हें यह ख़्याले फ़ासिद आएगा कि कुछ हीले बहाने बनायें यह हीले पेश करने की इजाज़त न होगी जुनैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि उसको उज़्र ही क्या है जिसने निअ़्मत देने वाले से रूगरदानी की उसकी निअ़्मतों को झुठलाया उसके एहसानों की ना-सपासी की। (फ़27) ऐ सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करने वालो (फ़28) जो तुम से पहले अम्बिया की तकज़ीब करते थे तुम्हारा उनका सब का हिसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हीं सब को अ़ज़ाब किया जाएगा। (फ़29) और किसी तरह अपने आपको अ़ज़ाब से बचा सको तो बचा लो यह इन्तेहा दर्जा की तौबीख़ है क्योंकि यह तो यक़ीनी जानते होंगे कि न आज कोई मक्र चल सकता है न कोई हीला काम दे सकता है। (फ़30) जो अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ रखते थे जन्नती दरख़्तों के। (फ़31) उससे लज़्ज़त उठाते हैं इस आयत से साबित हुआ कि अहले जन्नत को उनके हस्बे मर्ज़ी निअ़्मतें मिलेंगी बख़िलाफ़ दुनिया के कि यहां आदमी को जो मुयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है और अहले जन्नत से कहा जाएगा (फ़32) लज़ीज़ ख़ालिस जिसमें ज़रा तनग्गुस का शायबा नहीं। (फ़33) उन ताआ़त का जो तुम दुनिया में बजा लाये थे। (फ़34) इसके बाद तहदीद केतौर पर कुफ़्फ़ार को ख़िताब किया जाता है कि ऐ दुनिया में तकज़ीब करने वालो तुम दुनिया में। (फ़35) अपनी मौत के वक़्त तक। (फ़36) काफ़िर हो दायमी हो अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो। (फ़37) क़ुरआन शरीफ़। (फ़38) यानी क़ुरआन शरीफ़ कुतुबे इलाहिया में सब से आख़िर किताब है और बहुत ज़ाहिर मोअ़्जेज़ा है इस पर ईमान न लाये तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं।

سورة النبا مكية

بسم الله الرحمن الرحيم ۝

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۝ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ ۝ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۝ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ۝ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝ وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝
وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝
لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝ وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ
سَرَابًا ۝ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِلطَّاغِينَ مَآبًا ۝ لَابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَاءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ

सूरतुन्नबइ

(मक्की है इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अ़म्–म य–तसा–अलून(1)अ़निन् न–बइल् अ़ज़ीम(2)अ़ल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ू–न(3)कल्ला स–यअ़्लमू–न(4)सुम्–म कल्ला स–यअ़्–लमून(5)अलम् नज्अ़लिल् अर्–ज़ मिहादंव्(6) वल्जिबा–ल औतादंव्(7)व ख़–लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्(8)व ज–अ़ल्ना नौ–मकुम् सुबातंव्(9)व ज–अ़ल्नल् लै–ल लिबासंव्(10) व ज–अ़ल्नन् नहा–र मआ़शंव्(11)व बनैना फ़ौ–क़कुम् सब्–अ़न् शिदादंव्(12)व ज–अ़ल्ना सिराजंव् वह्हाजंव्(13)व अन्ज़ल्ना मिनल् मुअ़्सिराति माअन् सज्जाजल्(14)लिनुख़्रि–ज बिही ह़ब्बंव् व नबातंव्(15) व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा(16)इन्–न यौमल्फ़स्लि का–न मीक़ातंय्(17) यौ–म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़–तअ्तू–न अफ़्वाजंव्(18)व फ़ुति–ह़तिस् समाउ फ़कानत् अब्वाबंव्(19) व सुय्यि–रतिल् जिबालु फ़कानत् सराबा(20) इन्–न जहन्न–म कानत् मिर्सादल्(21) लित्ताग़ी–न मआबल्(22)लाबिसी–न फ़ीहा अह़्क़ाबा(23)ला यज़ूक़ू–न फ़ीहा बर्दंव् व ला शराबन्(24)इल्ला ह़मीमंव् व ग़स्साक़न्(25)जज़ाअंव् विफ़ाक़ा(26)इन्नहुम् कानू ला यर्जू–न

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

यह (फ़ा2) आपस में काहे की पूछ गछ कर रहे हैं।(1) (फ़ा3) बड़ी ख़बर की।(2) (फ़ा4) जिस में वह कई राह हैं।(3) (फ़ा5) हां हां अब जान जायेंगे।(4) फिर हां हां जान जायेंगे।(5) (फ़ा6) क्या हमने ज़मीन को बिछौना न किया।(6) (फ़ा7) और पहाड़ों को मेख़ें।(7) (फ़ा8) और तुम्हें जोड़े बनाया।(8) (फ़ा9) और तुम्हारी नींद को आराम किया।(9) (फ़ा10) और रात को पर्दा पोश किया।(10) (फ़ा11) और दिन को रोज़गार के लिए बनाया।(11) (फ़ा12) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाईयां चुनीं।(12) (फ़ा13) और उनमें एक निहायत चमकता चराग़ रखा।(13) (फ़ा14) और फिर बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा।(14) कि उससे पैदा फ़रमायें अनाज और सब्ज़ा।(15) और घने बाग़।(16) (फ़ा15) बेशक फ़ैसला के दिन का (फ़ा16) ठहरा हुआ है।(17) जिस दिन सूर फूंका जाएगा (फ़ा17) तो तुम चले आओगे (फ़ा18) फ़ौजों की फ़ौजें।(18) और आसमान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा।(19) (फ़ा19) और पहाड़ चलाए जायेंगे कि हो जायेंगे जैसे चमकता रेता दूर से पानी का धोखा देता।(20) बेशक जहन्नम ताक में है।(21) सरकशों का ठिकाना।(22) उस में क़रनों (मुद्दतों) रहेंगे।(23) (फ़ा20) उसमें किसी तरह की ठंडक का मज़ा न पायेंगे और न कुछ पीने को।(24) मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप।(25) जैसे को तैसा बदला।(26) (फ़ा21) बेशक उन्हें हिसाब का

(फ़ा1) सूरए नबा इसको सूरए तसाउल और सूरह अ़म्–म य–तसा–अलू–न भी कहते हैं यह सूरत मक्की है इसमें दो रुकूअ़ चालीस या इकतालीस आयतें एक सौ तिहत्तर कलिमे नौ सौ सत्तर हरफ़ हैं। (फ़ा2) कुफ़्फ़ारे कुरैश (फ़ा3) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अहले मक्का को तौहीद की दावत दी और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और कुरआने करीम की तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उनमें बाहम गुफ़्तगूयें शुरू हुईं और एक दूसरे से पूछने लगे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या दीन लाये हैं इस आयत में उनकी गुफ़्तगूओं का बयान है और तफ़ख़ीमे शान के लिए **(बक़िया सफ़हा 979 पर)**

حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٢٩﴾ فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا

دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ

إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ﴿٤٠﴾

हिसाबंव्(27)व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा(28)व कुल्–ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन्(29) फ़ज़ूकू फ़–लन् नज़ी–दकुम् इल्ला अ़ज़ाबा(30)इन्–न लिल्–मुत्तक़ी–न मफ़ाज़न्(31)हदाइ–क़ व अअ्नाबंव्(32)व कवाअ़ि–ब अत्राबंव्(33)व कअ्सन् दिहाक़ा(34)ला यस्मअू–न फ़ीहा लग्वंव् व ला किज़्ज़ाबा(35)जज़ाअम् मिर्रब्बि–क अ़ताअन् हिसाबर्(36)रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू–न मिन्हु ख़िताबा(37)यौ–म यक़ूमुर्रूहु वल्मलाइ–कतु सफ़्फ़ल् ला य–त–कल्लमू–न इल्ला मन् अज़ि–न लहुर्रह्मानु व क़ा–ल सवाबा(38)ज़ालिकल् यौमुल्हक़्क़ु फ़–मन् शाअत् त–ख़–ज़ इला रब्बिही मआबा(39)इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबंय् यौ–म यन्ज़ुरुल् मरउ मा क़द्–द–मत् यदाहु व यक़ूलुल् काफ़िरु यालै–तनी कुन्तु तुराबा(40)

ख़ौफ़ न था।(27)(फ़ा22)और हमारी आयतें हद भर झुठलाईं।(28) और हमने (फ़ा23) हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है।(29)(फ़ा24)अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ायेंगे मगर अ़ज़ाब।(30) (रुकूअ़ 1) बेशक डर वालों को कामयाबी की जगह है।(31) (फ़ा25) बाग़ हैं (फ़ा26) और अंगूर।(32) और उठते जोबन वालियां एक उम्र की।(33) और छलकता जाम।(34) (फ़ा27) जिसमें न कोई बेहूदा बात सुनें न झुठलाना।(35) (फ़ा28)सिला तुम्हारे रब की तरफ़ से (फ़ा29) निहायत काफ़ी अ़ता।(36)वह जो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है रहमान कि उससे बात करने का इख़्तियार न रखेंगे।(37) (फ़ा30) जिस दिन जिब्राईल खड़ा होगा और सब फ़रिश्ते परा बांधे (सफ़ बनाए) कोई न बोल सकेगा (फ़ा31)मगर जिसे रहमान ने इज़्न दिया (फ़ा32) और उसने ठीक बात कही। (38) (फ़ा33)वह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह बना ले।(39) (फ़ा34) हम तुम्हें (फ़ा35) एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़दीक आ गया (फ़ा36) जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा(फ़ा37)और काफ़िर कहेगा हाय मैं किसी तरह ख़ाक हो जाता।(40) (फ़ा38) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा22) क्योंकि वह मरने के बाद उठने के मुन्किर थे (फ़ा23) लौहे महफ़ूज़ में (फ़ा24) उनके तमाम नेक व बद आमाल हमारे इल्म में हैं हम उन पर जज़ा देंगे और आख़िरत में वक़्ते अ़ज़ाब उनसे कहा जाएगा। (फ़ा25) जन्नत में जहां उन्हें अ़ज़ाब से नजात होगी और हर मुराद हासिल होगी। (फ़ा26) जिनमें क़िस्म क़िस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त (फ़ा27) शराब नफ़ीस का। (फ़ा28) यानी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी न वहां कोई किसी को झुठलाएगा। (फ़ा29) तुम्हारे आमाल का। (फ़ा30) ब-सबब उसके ख़ौफ़ के। (फ़ा31) उसके रोब व जलाल से। (फ़ा32) कलाम या शफ़ाअ़त का (फ़ा33) दुनिया में और उसी के मुताबिक़ अ़मल किया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए तय्येबा ला इला-ह इल्लल्लाह मुराद है। (फ़ा34) अ़मले सालेह करके ताकि अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे। (फ़ा35) ऐ काफ़िरो (फ़ा36) मुराद इससे अ़ज़ाबे आख़रत है। (फ़ा37) यानी हर नेकी बदी उसके नामए आमाल में दर्ज होगी जिसको वह रोज़े क़ियामत देखेगा। (फ़ा38) ताकि अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहता हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिया जाएगा अगर सींग वाले ने बे सींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिया जाएगा इसके बाद वह सब ख़ाक कर दिये जायेंगे यह देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उसके यह माना बयान किये हैं कि मोमिनीन पर अल्लाह तआ़ला के इनाम देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वह दुनिया में ख़ाक होता यानी मुतवाज़ेअ़ होता मुतकब्बिर व सरकश न होता एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि काफ़िर से मुराद इबलीस है जिसने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर तअ़्ना किया था वह मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर इफ़्तेख़ार किया था जब वह हज़रत आदम और उनकी ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आपको शिद्दते अ़ज़ाब में मुब्तला पाएगा तो कहेगा काश मैं मिट्टी होता यानी हज़रत आदम की तरह मिट्टी से पैदा किया हुआ होता।

(बक़िया सफ़हा 956 का) के क़रीब पहुंचते हैं दरवाज़ा बन्द हो जाता है बार बार ऐसा ही होता है काफ़िरों की यह हालत देख कर मुसलमान उनसे हंसी करते हैं और मुसलमानों का हाल यह है कि वह जन्नत में जवाहरात के (फ़ा39) कुफ़्फ़ार की ज़िल्लत व रुसवाई और शिद्दते अ़ज़ाब को और उस पर हंसते हैं (फ़ा40) यानी उन आमाल का जो उन्होंने दुनिया में किये थे

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ قُلُوْبٌ
يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِی الْحَافِرَةِ ؕ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰۤى اَنْ تَزَكّٰى ۙ
وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۚ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۖ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۖ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۖ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۖ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ

सूरतुन् नाज़िआति

(मक्की है इसमें 46 आयतें और 2 रुकूअ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नाज़िआति ग़रक़ंव्(1)वन्नाशिताति नश्तंव्(2)वस्साबिहाति सब्हन्(3)फ़स्साबिक़ाति सब्क़न्(4)फ़ल्मु–दब्बिराति अम्रा(5)यौ–म तर्जुफुर्राजि–फ़तु(6)तत्बअुहर् रादिफ़ः(7)कुलूबुंय् यौ–मइज़िंव् वाजि–फ़तुन् (8)अब्सारुहा ख़ाशिअः(9)यकूलू–न अ–इन्ना ल–मर्दूदू–न फ़िल् हाफ़िरः(10) अ–इज़ा कुन्ना अिज़ामन् नख़िरः(11)क़ालू तिल्–क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरः(12)फ़–इन्नमा हि–य ज़ज्–रतुंव् वाहि–दतुन्(13) फ़इज़ा हुम् बिस्साहिरः(14)हल् अता–क हदीसु मूसा(15)इज़् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल् मुक़द्दसि तुवा (16)इज़्हब् इला फ़िर्औ–न इन्नहू तग़ा(17)फ़क़ुल् हल् ल–क इला अन् त–ज़क्का(18)व अह्दि–य–क इला रब्बि–क फ़–तख़्शा(19)फ़–अराहुल् आ–य–तल् कुब्रा(20)फ़–कज़्ज़–ब व अ़सा(21)सुम्–म अद्ब–र यस्आ(22)फ़–ह–श–र फ़नादा(23) फ़क़ा–ल अना रब्बुकुमुल् अअ्ला(24)फ़–अ–ख़–ज़हुल्लाहु नकालल् आख़ि–रति

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम उनकी (फ़ा2) कि सख़्ती से जान खींचें।(1) (फ़ा3) और नर्मी से बन्द खोलें।(2) (फ़ा4) और आसानी से पैरें।(3) (फ़ा5) फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुंचें।(4) (फ़ा6) फिर काम की तदबीर करें(5) (फ़ा7) कि काफ़िरों पर ज़रूर अ़ज़ाब होगा।(6) जिस दिन थरथराएगी थरथराने वाली। (फ़ा8) उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली।(7) (फ़ा9) कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे।(8) आँख ऊपर न उठा सकेंगे।(9) (फ़ा10) काफ़िर (फ़ा11) कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाँव पलटेंगे।(10) (फ़ा12) क्या जब हम गली हड्डियां हो जायेंगे।(11) (फ़ा13) बोले यूं तो यह पलटना तो निरा नुक़सान है।(12) (फ़ा14) तो वह (फ़ा15) नहीं मगर एक झिड़की।(13)(फ़ा16)जभी वह खुले मैदान में आ पड़े होंगे।(14)(फ़ा17) क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई।(15)(फ़ा18) जब उसे उसके रब ने पाक जंगल तोवा में (फ़ा19) निदा फ़रमाई।(16) कि फ़िरऔन के पास जा उसने सर उठाया।(17) (फ़ा20) उससे कह क्या तुझे रग़बत इस तरफ़ है कि सुथरा हो।(18) (फ़ा21) और तुझे तेरे रब की तरफ़ (फ़ा22) राह बताऊँ कि तू डरे।(19) (फ़ा23) फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी दिखाई।(20) (फ़ा24) इस पर उसने झुठलाया(21) (फ़ा25) और नाफ़रमानी की। फिर पीठ दी (फ़ा26) अपनी कोशिश में लगा।(22) (फ़ा27) तो लोगों को जमा किया(23) (फ़ा28) फिर पुकारा। फिर बोला मैं तुम्हारा सब से ऊँचा रब हूं।(24) (फ़ा29) तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़रत दोनों के

(फ़ा1) सूरह वन्नाज़िआत मक्की है इसमें दो रुकूअ छियालीस आयतें 197 कलिमे 753 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी उन फ़रिश्तों की (फ़ा3) काफ़िरों की (फ़ा4) यानी मोमिनीन की जाने नर्मी के साथ क़ब्ज़ करें। (फ़ा5) जिस्म के अन्दर या आसमान व ज़मीन के दर्मियान मोमिनीन की रूहें लेकर (कमा रुवी–य अन अली रज़ियल्लाहु अन्हु) (फ़ा6) अपनी ख़िदमत पर जिसके मामूर हैं (रूहुल बयान) (फ़ा7) यानी उमूरे दुनियवीया के इन्तेज़ाम जो उनसे मुतअ़ल्लिक़ हैं उनके सर अन्जाम करें यह क़सम उस पर है। (फ़ा8) ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़ नफ़ख़ए ऊला से इज़्तेराब में आ जाएगी और तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी। (फ़ा9) यानी नफ़ख़ए सानिया होगा जिससे हर शय बइज़्ने इलाही ज़िन्दा कर दी जाएगी इन दोनों नफ़ख़ों **(बक़िया सफ़हा 974 पर)**

والاولى ﴿٢٥﴾ ان في ذلك لعبرة لمن يخشى ﴿٢٦﴾ ءانتم اشد خلقا ام السماء بنىها ﴿٢٧﴾ رفع سمكها فسوىها ﴿٢٨﴾ واغطش ليلها واخرج ضحىها ﴿٢٩﴾ والارض بعد
ذلك دحىها ﴿٣٠﴾ اخرج منها ماءها ومرعىها ﴿٣١﴾ والجبال ارسىها ﴿٣٢﴾ متاعا لكم ولانعامكم ﴿٣٣﴾ فاذا جاءت الطامة الكبرى ﴿٣٤﴾ يوم يتذكر الانسان ما سعى ﴿٣٥﴾ وبرزت الجحيم
لمن يرى ﴿٣٦﴾ فاما من طغى ﴿٣٧﴾ واثر الحيوة الدنيا ﴿٣٨﴾ فان الجحيم هي الماوى ﴿٣٩﴾ واما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى ﴿٤٠﴾ فان الجنة هي الماوى ﴿٤١﴾ يسئلونك
عن الساعة ايان مرسىها ﴿٤٢﴾ فيم انت من ذكرىها ﴿٤٣﴾ الى ربك منتهىها ﴿٤٤﴾ انما انت منذر من يخشىها ﴿٤٥﴾ كانهم يوم يرونها لم يلبثوا الا عشية او ضحىها ﴿٤٦﴾

वल्ऊला(25)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लअ़िब्–रतल् लिमंय्यख़्शा(26)अ–अन्तुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अमिस्समाउ बनाहा(27)र–फ़–अ़ सम्कहा फ़–सव्वाहा(28)व अग़्त़–श लै–लहा व अख़्र–ज ज़ुहाहा(29)वल्अर्–ज़ बअ़्–द ज़ालि–क दहाहा(30)अख़्र–ज मिन्हा मा–अहा व मर्आहा(31) वल्जिबा–ल अर्साहा(32)मताअ़ल् लकुम् व लि–अन्आ़मिकुम्(33)फ़इज़ा जा–अतित् त़ाम्मतुल् कुब्रा(34)यौ–म य–त–ज़क्करुल् इन्सानु मा सआ़(35)व बुर्रि–ज़तिल्जहीमु लिमंय्यरा(36) फ़–अम्मा मन् त़ग़ा(37)व आ–स़रल् हयातद्दुन्या(38)फ़–इन्नल् जही–म हियल् मअ्वा(39)व अम्मा मन् ख़ा–फ़ मक़ा–म रब्बिही व न–हन्नफ़्–स अ़निल् हवा(40)फ़इन्नल् जन्न–त हियल् मअ्वा(41) यस्अलू–न–क अ़निस्सा–अ़ति अय्या–न मुर्साहा(42)फ़ी–म अन्–त मिन् ज़िक्राहा(43) इला रब्बि–क मुन्तहाहा(44)इन्नमा अन्–त मुन्ज़िरु मंय्यख़्शाहा(45) क–अन्नहुम् यौ–म यरौ–नहा लम् यल्बसू इल्ला अ़शिय्य–तन् औ ज़ुहाहा(46)

अ़ज़ाब में पकड़ा।(25) (फ़ा30)बेशक इसमें सीख मिलता है उसे जो डरे।(26) (फ़ा31) (रुकूअ़ 3) क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना (फ़ा32) मुश्किल या आसमान का अल्लाह ने उसे बनाया।(27) उसकी छत ऊँची की (फ़ा33) फिर उसे ठीक किया।(28) (फ़ा34) और उसकी रात अंधेरी की और उसकी रौशनी चमकाई।(29) (फ़ा35) और उसके बाद ज़मीन फैलाई।(30) (फ़ा36) उसमें से (फ़ा37) उसका पानी और चारा निकाला।(31) (फ़ा38) और पहाड़ों को जमाया।(32) (फ़ा39) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदा को।(33) फिर जब आएगी वह आ़म मुसीबत सबसे बड़ी।(34) (फ़ा40) उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी।(35) (फ़ा41) और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी।(36) (फ़ा42) तो वह जिसने सरकशी की।(37) (फ़ा43) और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी।(38) (फ़ा44) तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना है।(39) और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा (फ़ा45) और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका।(40) (फ़ा46) तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।(41) (फ़ा47) तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वह कब के लिए ठहरी हुई है।(42) तुम्हें उसके बयान से क्या तअ़ल्लुक़।(43) (फ़ा48) तुम्हारे रब ही तक उसकी इन्तिहा है।(44) तुम तो फ़क़त उसे डराने वाले हो जो उससे डरे।(45) गोया जिस दिन वह उसे देखेंगे (फ़ा49) दुनिया में न रहे थे मगर एक शाम या उसके दिन चढ़े।(46) (रुकूअ़ 4)

(फ़ा30) दुनिया में ग़र्क़ किया और आख़िरत में दोज़ख़ दाख़िल फ़रमाएगा। (फ़ा31) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से उसके बाद मुन्किरीने बअ़्स को अ़ताब फ़रमाया जाता है (फ़ा32) तुम्हारे मरने के बाद। (फ़ा33) बग़ैर सुतून के। (फ़ा34) ऐसा कि उसमें कहीं कोई ख़लल नहीं। (फ़ा35) नूरे आफ़ताब को ज़ाहिर फ़रमा कर। (फ़ा36) जो पैदा तो आसमान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी। (फ़ा37) चश्मे जारी फ़रमा कर। (फ़ा38) जिसे जानदार खाते हैं। (फ़ा39) रूए ज़मीन पर ताकि उसको सुकून हो (फ़ा40) यानी नफ़ख़ए सानिया होगा जिसमें मुर्दे उठाए जायेंगे। (फ़ा41) दुनिया में नेक या बद (फ़ा42) और तमाम ख़ल्क़ उसको देखे (फ़ा43) हद से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया (फ़ा44) आख़िरत पर और शहवात का ताबेअ़ हुआ (फ़ा45) और उसने जाना कि उसे रोज़े क़ियामत अपने रब के हुज़ूर हिसाब के लिए हाज़िर होना है (फ़ा46) हराम चीज़ों की। (फ़ा47) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के काफ़िर (फ़ा48) और उसका वक़्त बताने से क्या ग़रज़। (फ़ा49) यानी काफ़िर क़ियामत को जिसका इन्कार करते हैं तो उसके हौल व दहशत से अपनी ज़िन्दगानी की मुद्दत भूल जायेंगे और ख़्याल करेंगे कि।

(बक़िया सफ़हा 971 का) में। (फ़ा11) इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर। (फ़ा12) यानी तमाम दीनों को छोड़ कर ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़ होकर (फ़ा13) और उनके इताअ़त व इख़्लास से (फ़ा14) और उसके करम व अ़ता से। (फ़ा15) और उसकी नाफ़रमानी से बचे।

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۙ أَنْ جَآءَهُ الْأَعْمٰى ۙ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۙ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۙ أَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۙ فَأَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۙ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكّٰى ۙ وَأَمَّا مَنْ جَآءَكَ
يَسْعٰى ۙ وَهُوَ يَخْشٰى ۙ فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۚ كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ بِأَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۙ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۗ قُتِلَ الْإِنْسَانُ
مَآ أَكْفَرَهٗ ۗ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۗ مِنْ نُّطْفَةٍ ۗ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۙ ثُمَّ أَمَاتَهٗ فَأَقْبَرَهٗ ۙ ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنْشَرَهٗ ۗ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ أَمَرَهٗ ۗ فَلْيَنْظُرِ
الْإِنْسَانُ إِلٰى طَعَامِهٖٓ ۙ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۙ فَأَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۙ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۙ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۙ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۙ وَّفَاكِهَةً وَّأَبًّا ۙ
مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۗ فَإِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۙ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيْهِ ۙ وَأُمِّهٖ وَأَبِيْهِ ۙ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۗ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيْهِ ۗ
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۙ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۚ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۙ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۗ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ

सूरतु अ़–ब–स

(मक्की है इसमें 42 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़–ब–स व त–वल्ला(1)अन् जा–अहुल् अअ़्मा(2)व मा युदरी–क ल–अ़ल्लहू यज़्ज़क्का(3)औ यज़्ज़क्करु फ़तन्फ़–अहुज़् ज़िक्रा(4)अम्मा मनिस्तग़्ना(5)फ़–अन्–त लहू त–सद्दा(6)व मा अ़लै–क अल्ला यज़्ज़क्का(7)व अम्मा मन् जाअ–क यस्आ(8)व हु–व यख़्शा(9)फ़–अन्–त अ़न्हु त–लह्हा (10)कल्ला इन्नहा तज़्कि–रतुन्(11)फ़–मन् शा–अ ज़–क–रः(12)फ़ी सुहुफ़िम् मुकर्र–मतिम् (13)मर्फ़ू–अ़तिम् मु–तह–ह–रतिम्(14)बिऐदी स–फ़–रतिन्(15)किरामिम् ब–र–रः(16)कुतिलल् इन्सानु मा अक्फ़रः(17)मिन् अय्यि शैइन् ख़–ल–क़ः(18)मिन् नुत्–फ़तिन् ख़–ल–क़हू फ़– क़द्–द –रहू(19)सुम्मस्सबी–ल यस्स–रहू(20)सुम्–म अमा–तहू फ़–अक़्ब–रहू(21)सुम्–म इज़ा शा–अ अन्शरः(22)कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ–म–रः(23)फ़ल्–यन्ज़ुरिल् इन्सानु इला तआ़मिही(24) अन्ना स–बब्नल् मा–अ सब्बन्(25)सुम्–म श–क़क़्नल् अर्–ज़ शक़्क़न्(26)फ़–अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्(27)व अ़ि–न–बंव् व क़ज़्बंव्(28)व ज़ैतूनंव् व नख़्लंव्(29) व हदाइ–क़ ग़ुल्बंव्(30) व फ़ाकि–हतंव् व अब्बम्(31)मताअ़ल् लकुम् व लि–अन्आ़मिकुम्(32)फ़इज़ा जा–अतिस् साख़्–ख़ (33)यौ–म यफ़िर्रुल् मरउ मिन् अख़ीहि(34)व उम्मिही व अबीहि(35)व साहि–बतिही व बनीह (36)लि–कुल्लिम्–रिइम् मिन्हुम् यौ–मइज़िन् शअ्नुंय्युग़्नीह(37)वुजूहुंय्यौ–मइज़िम् मुस्फ़ि–रतुन् (38)ज़ाहि–कतुम् मुस्तब्शि–रतुन्(39)व वुजूहुंय्यौ–मइज़िन् अ़लैहा ग़–ब–रतुन्(40)तर्हक़ुहा क़–त–रः(41)उलाइ–क हुमुल्–क–फ़–रतुल् फ़–ज–रः(42)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तेवरी चढ़ाई और मुँह फेरा।(1) (फ़ा2) इस पर कि उसके पास वह नाबीना हाज़िर हुआ।(2) (फ़ा3) और तुम्हें क्या मालूम शायद वह सुथरा हो।(3) (फ़ा4) या नसीहत ले तो उसे नसीहत फ़ाइदा दे।(4) वह जो बे-परवाह बनता है।(5) (फ़ा5) तुम उसके तो पीछे पड़ते हो।(6) (फ़ा6) और तुम्हारा कुछ ज़ियाँ नहीं इसमें कि वह सुथरा न हो।(7) (फ़ा7) और वह जो तुम्हारे हुज़ूर मलकता (नाज़ से दौड़ता हुआ) आया।(8) (फ़ा8) और वह डर रहा है।(9) (फ़ा9) तो उसे छोड़ कर और तरफ़ मश्गूल होते हो।(10) यूं नहीं (फ़ा10) यह तो समझाना है।(11) (फ़ा11) तो जो चाहे उसे याद करे।(12) (फ़ा12) उन सहीफ़ों में कि इज़्ज़त वाले हैं।(13) (फ़ा13) बुलन्दी वाले (फ़ा14) पाकी वाले।(14) (फ़ा15) ऐसों के हाथ लिखे हुए।(15) जो करम वाले निकोई वाले।(16) (फ़ा16) आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्र है।(17) (फ़ा17) **(बक़िया सफ़हा 970 पर)**

سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝٢ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧ وَإِذَا
الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝٨ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝٩ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۝١٤ فَلَا
أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝١٧ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝١٩ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝٢٠ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝٢١
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝٢٢ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝٢٣ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝٢٤ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝٢٥ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝٢٦ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝٢٧
لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝٢٨ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝٢٩

सूरतुत् तक्वीर

(मक्की है इस सूरह में 29 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

इज़श्शम्सु कुव्विरत्(1)व इज़न्नुजूमुन्–क–दरत्(2)व इज़ल् जिबालु सुय्यिरत्(3)व इज़ल्अ़िशारु अुत्तिलत्(4)व इज़ल्वुहूशु हुशि–रत्(5)व इज़ल्बिहारु सुज्जि–रत्(6)व इज़न्नुफूसु ज़ुव्विजत्(7)व इज़ल्मौऊ–दतु सुइलत्(8)बिअय्यि ज़म्बिन् कुतिलत्(9)व इज़स्सुहुफु नुशिरत्(10)व इज़स्समाउ कुशितत्(11)व इज़ल् जहीमु सुअ़्अ़िरत्(12)व इज़ल्जन्नतु उज़्लिफ़त्(13)अ़लिमत् नफ़्सुम् मा अह़्ज़–रत्(14)फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्(15)जवारिल्कुन्नस(16)वल्लैलि इज़ा अ़स्–अ़स(17)वस्सुब्ह़ि इज़ा त–नफ़्फ़स(18)इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीमिन्(19)ज़ी कुव्वतिन् अ़िन्–द ज़िल्अ़र्शि मकीनिम्(20)मुताअ़िन् सम्–म अमीन(21)व मा साह़िबुकुम् बि–मज्नून(22)व लक़द् रआहु बिल्उफ़ुक़िल् मुबीन(23)व मा हु–व अ़लल्ग़ैबि बि–ज़नीन(24)व मा हु–व बिक़ौलि शैतानिर्रजीम(25)फ़ऐ–न तज़्हबून(26)इन् हु–व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्आ़–लमीन(27)लिमन् शा–अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम(28)व मा तशाऊ–न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु रब्बुल् आ़–लमीन(29)

अल्लाह के नाम शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब धूप लपेटी जाए।(1) (फ़ा2) और जब तारे झड़ पड़ें।(2) (फ़ा3) और जब पहाड़ चलाए जायें।(3) (फ़ा4) और जब थलकी (गाभन) ऊँटनियां (फ़ा5) छूटी फिरें।(4) (फ़ा6) और जब वहशी जानवर जमा किये जायें।(5) (फ़ा7) और जब समुन्दर सुलगाए जायें।(6) (फ़ा8) और जब जानों के जोड़ बनें।(7) (फ़ा9) और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए।(8) (फ़ा10) किस ख़ता पर मारी गई।(9) (फ़ा11) और जब नामए आमाल खोले जायें।(10) और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए।(11) (फ़ा12) और जब जहन्नम भड़काया जाए।(12) (फ़ा13) और जब जन्नत पास लाई जाए।(13) (फ़ा14) हर जान को मालूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई।(14) (फ़ा15) तो क़सम है उन (फ़ा16) की जो उलटे फिरें।(15) सीधे चलें थम रहें।(16) (फ़ा17) और रात की जब पीठ दे।(17) (फ़ा18) और सुबह की जब दम ले।(18) (फ़ा19) बेशक यह (फ़ा20) इ़ज़्ज़त वाले रसूल (फ़ा21) का पढ़ना है।(19) जो कुव्वत वाला है मालिके अ़र्श के हुज़ूर इ़ज़्ज़त वाला।(20) वहां उसका हुक्म माना जाता है (फ़ा22) अमानतदार है।(21) (फ़ा23) और तुम्हारे साहिब (फ़ा24) मजनून नहीं।(22) (फ़ा25) और बेशक उन्होंने उसे (फ़ा26) रौशन किनारा पर देखा।(23) (फ़ा27) और यह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।(24) और कुरआन मरदूद शैतान का पढ़ा हुआ नहीं।(25) फिर किधर जाते हो।(26) (फ़ा28) वह तो नसीहत ही है सारे जहान के लिए।(27) उसके लिए जो तुम में सीधा होना चाहे।(28) (फ़ा29) और तुम क्या चाहो मगर यह कि चाहे अल्लाह सारे जहान का रब।(29) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा1) सूरह कुव्विरत मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 29 आयतें 104 कलिमे 530 हरफ़ हैं हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वह नज़र **(बक़िया सफ़हा 973 पर)**

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝ وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝ الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۝ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝ وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۝ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ ثُمَّ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝

सूरतुल् इन्फ़ितारि

(मक्की है इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

इज़स्समाउन्फ़–त–रत्(1)व इज़ल्–कवाकिबुन्–त–स–रत्(2)व इज़ल्बिहारु फ़ुज्जिरत्(3)व इज़ल्क़ुबूरु बुअ़्सिरत्(4)अलिमत् नफ़्सुम् मा क़द्–द–मत् व अख़्ख़–रत्(5)या अय्युहल् इन्सानु मा ग़र्र–क बिरब्बिकल्करीम(6)अल्लज़ी ख़–ल–क़–क फ़–सव्वा–क फ़–अ़–द–लक(7) फ़ी अय्यि सू–रतिम् मा शा–अ रक्क–बक(8)कल्ला बल् तु–कज़्ज़िबू–न बिद्दीनि(9)व इन्–न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन(10)किरामन् कातिबीन(11)यअ़्–लमू–न मा तफ़्–अ़लून(12)इन्नल् अब्रा–र लफ़ी नअ़ीम(13)व इन्नल्फ़ुज्जा–र लफ़ी जहीमिंय्(14)यस्लौ–नहा यौ–मद्दीन(15)व मा हुम् अ़न्हा बिग़ाइबीन(16)व मा अद्रा–क मा यौमुद्दीन(17)सुम्–म मा अद्रा–क मा यौमुद्दीन(18)यौ–म ला तम्लिकु नफ़्सुल् लिनफ़्सिन् शैअन् वल्अम्रु यौ–मइज़िल् लिल्लाह(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब आसमान फट पड़े।(1) और जब तारे झड़ पड़ें।(2) और जब समुन्दर बहा दिये जायें।(3) (फ़ा2) और जब क़ब्रें कुरेदी जायें।(4) (फ़ा3) हर जान, जान लेगी जो उसने आगे भेजा (फ़ा4) और जो पीछे।(5) (फ़ा5) ऐ आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से।(6) (फ़ा6) जिस ने तुझे पैदा किया (फ़ा7) फिर ठीक बनाया (फ़ा8) फिर हमवार फ़रमाया।(7) (फ़ा9) जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया।(8) (फ़ा10) कोई नहीं (फ़ा11) बल्कि तुम इन्साफ़ होने को झुठलाते हो।(9) (फ़ा12) और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं।(10) (फ़ा13) मोअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले।(11) (फ़ा14) कि जानते हैं जो कुछ तुम करो।(12) (फ़ा15) बेशक नेकोकार (फ़ा16) ज़रूर चैन में हैं।(13) (फ़ा17) और बेशक बदकार (फ़ा18) ज़रूर दोज़ख़ में हैं।(14) इन्साफ़ के दिन उसमें जायेंगे।(15) और उससे कहीं छुप न सकेंगे।(16) और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।(17) फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।(18) जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी (फ़ा19) और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है।(19) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा1) सूरए इन्फ़ितार मक्की है इस में एक रुकूअ़ 19 आयतें 80 कलिमे 327 हरफ़ हैं। (फ़ा2) और शीरीं व शोर सब मिल कर एक हो जायें। (फ़ा3) और उनके मुर्दे ज़िन्दा करके निकाले जायें। (फ़ा4) अ़मल नेक या बद (फ़ा5) छोड़ी नेकी या बदी और एक क़ौल यह है कि जो आगे भेजा उससे सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उससे मीरास। (फ़ा6) कि तूने बावजूद इसके निअ़मत व करम के उसका हक़ न पहचाना और उसकी नाफ़रमानी की। (फ़ा7) और नेस्त से हस्त किया। (फ़ा8) सालिमुल आज़ा सुनता देखता (फ़ा9) आज़ा में मुनासबत रखी। (फ़ा10) लम्बा या ठिगना ख़ूब-रू या कम-रू गोरा या काला मर्द या औरत। (फ़ा11) तुम्हें अपने रब के करम पर मग़रूर न होना चाहिए। (फ़ा12) और रोज़े जज़ा के मुन्किर हो। (फ़ा13) तुम्हारे आमाल व अक़्वाल के और वह फ़रिश्ते हैं (फ़ा14) तुम्हारे अ़मलों के। (फ़ा15) नेकी या बदी उनसे तुम्हारा कोई अमल छुपा नहीं। (फ़ा16) यानी मोमिनीन सादिक़ुल ईमान। (फ़ा17) जन्नत में (फ़ा18) काफ़िर (फ़ा19) यानी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़ा न पहुंचा सकेगा। (ख़ाज़िन)

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝١ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝٢ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝٣ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝٤ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥
يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝٧ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝٨ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝٩ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۝١١ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝١٥ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝١٦ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝١٧ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝١٨ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝١٩ كِتٰبٌ

सूरतुल् मुतफ़्फ़फ़ीन

(मक्की है इसमें 36 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल् लिल्मु–तफ़्फ़फ़ीन(1)अल्लज़ी–न इजक्तालू अ़लन्नासि यस्तौफ़ून(2)व इज़ा कालू हुम् अव्व–ज़नू हुम् युख़्सिरून(3)अला यज़ुन्नु उलाइ–क अन्नहुम् मब्अूसून(4)लियौमिन् अ़ज़ीम(5)यौ–म यकूमुन्नासु लि–रब्बिल् आ़–लमीन(6)कल्ला इन्–न किताबल् फुज्जारि लफ़ी सिज्जीन(7)व मा अद्रा–क मा सिज्जीन(8)किताबुम् मर्कूम(9)वैलुंय्यौ–मइज़िल् लिल्मु–कज़्ज़िबीन(10) अल्लज़ी–न युकज़्ज़िबू–न बियौमिद्दीन(11)व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ़्तदिन् असीम(12)इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा–ल असातीरुल् अव्वलीन(13)कल्ला बल् रा–न अ़ला कुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून(14)कल्ला इन्नहुम् अ़र्रब्बिहिम् यौ– मइज़िल् ल–मह्जूबून(15)सुम्–म इन्नहुम् लसालुल् जहीम(16)सुम्–म युक़ालु हाजल्लज़ी कुन्तुम् बिही तु–कज़्ज़िबून(17)कल्ला इन्–न किताबल् अब्रारि लफ़ी अ़िल्लिय्यीन(18)व मा अद्रा–क मा अ़िल्लिय्यून(19)किताबुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

कम तोलने वालों की ख़राबी है।(1) वह कि जब औरों से माप लें पूरा लें।(2) और जब उन्हें माप तोल कर दें कम कर दें।(3) क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें उठना है।(4) एक अ़ज़मत वाले दिन के लिए।(5) (फ़2) जिस दिन सब लोग (फ़3) रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।(6) बेशक काफ़िरों की लिखत (फ़4) सब से नीची जगह सिज्जीन में है।(7) (फ़5) और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है।(8) (फ़6) वह लिखत एक मुहर किया नविश्ता है।(9) (फ़7) उस दिन (फ़8) झुठलाने वालों की ख़राबी है।(10) जो इन्साफ़ के दिन को झुठलाते हैं।(11) (फ़9) और उसे न झुठलाएगा मगर हर सरकश गुनाहगार।(12) (फ़10) जब उस पर हामरी आयतें पढ़ी जायें कहे (फ़11) अगलों की कहानियां हैं।(13) कोई नहीं (फ़12) बल्कि उनके दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उनकी कमाइयों ने।(14) (फ़13) हां हां बेशक वह उस दिन (फ़14) अपने रब के दीदार से महरूम हैं।(15) (फ़15) फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना।(16) फिर कहा जाएगा यह है वह (फ़16) जिसे तुम झुठलाते थे।(17) (फ़17) हां हां बेशक नेकों की लिखत (फ़18) सब से ऊँचे महल इल्लीय्यीन में है।(18) (फ़19) और तू क्या जाने इल्लीय्यीन कैसी है।(19) (फ़20) वह लिखत

(फ़1) सूरह मुतफ़्फ़फ़ीन एक क़ौल में मक्की है और एक में मदनी और एक क़ौल यह है कि ज़मानए हिजरत में मक्का मुकर्रमा व मदीना तय्येबा के दर्मियान नाज़िल हुई इस सूरत में एक रुकूअ़ 36 आयतें 139 कलिमे और 730 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मदीना तय्येबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहां के लोग पैमाना में ख़ियानत करते थे बिलख़ुसूस एक शख़्स अबू जुहैना ऐसा था कि वह दो पैमाने रखता था लेने का और देने का और उन लोगों के हक़ में यह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें पैमाने में अ़द्ल करने का हुक्म दिया गया। (फ़2) यानी रोज़े क़ियामत उस रोज़ ज़र्रा ज़र्रा का हिसाब किया जाएगा (फ़3) अपनी क़ब्रों से उठ कर। (फ़4) यानी उनके आमाल नामे (फ़5) सिज्जीन सातवें ज़मीन के असफ़ल में एक मक़ाम है जो इबलीस और उसके लश्करों का महल है (फ़6) यानी वह निहायत ही हौल व हैबत का मक़ाम ! (फ़7) जो न मिट सकता है न बदल सकता है। (फ़8) जबकि वह नविश्ता **(बक़िया सफ़हा 984 पर)**

مَرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ

ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ

يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

मरक़ूमुंय़(20)यशहदुहुल् मुक़र्रबून(21)इन्नल् अब्रा-र लफ़ी नओ़म(22)अ़लल् अराइकि यन्ज़ुरून(23) तअ्रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्र-तन् नओ़म(24)युस्क़ौ-न मिर्रहीक़िम् मख़्तूम(25)ख़िताम़ुहू मिस्कुन् व फ़ी ज़ालि-क फ़ल्य-तना-फ़सिल् मु-तनाफ़िसून(26)व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम(27)अ़ैनंय्यश्रबु बिहल् मुक़र्रबून(28)इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आ-मनू यज़्-हकून(29)व इज़ा मर्रू बिहिम् य-तग़ा मज़ून(30)व इज़न्क़-लबू इला अह़्लिहिमुन्क़-लबू फ़किहीन(31)व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हाउलाइ लज़ाल्लून(32)व मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन(33)फ़ल्यौमल् लज़ी-न आ-मनू मिनल् कुफ़्फ़ारि यज़्-हकून(34)अ़लल् अराइकि यन्ज़ुरून(35)हल् सुव्विबल् कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्-अ़लून(36)

एक मुहर किया नविश्ता है।(20) (फ़ा21) कि मुक़र्रब (फ़ा22) जिसकी ज़ियारत करते हैं।(21) बेशक नेकोकार ज़रूर चैन में हैं।(22) तख़्तों पर देखते हैं।(23) (फ़ा23) तू उनके चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने।(24) (फ़ा24) निथरी शराब पिलाए जायेंगे जो मुहर की हुई रखी है।(25) (फ़ा25) उसकी मुहर मुश्क पर है और इसी पर चाहिये कि ललचायें ललचाने वाले।(26) (फ़ा26) और उसकी मिलोनी तस्नीम से है।(27) (फ़ा27) वह चश्मा जिस से मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं।(28) (फ़ा28) बेशक मुजरिम लोग (फ़ा29) ईमान वालों से (फ़ा30) हंसा करते थे।(29) और जब वह (फ़ा31) इन पर गुज़रते तो यह आपस में उन पर आँखों से इशारे करते।(30) (फ़ा32) और जब (फ़ा33) अपने घर पलटते ख़ुशियाँ करते पलटते।(31) (फ़ा34) और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक यह लोग बहके हुए हैं।(32) और यह (फ़ा35) कुछ उन पर निगहबान बना कर न भेजे गए।(33) (फ़ा36)तो आज (फ़ा37) ईमान वाले काफ़िरों से हंसते हैं।(34) (फ़ा38) तख़्तों पर बैठे देखते हैं।(35) (फ़ा39) क्यों कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का।(36) (फ़ा40) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा21) फ़रिश्ते (फ़ा22) अल्लाह तआ़ला के इकराम और उसकी निअ़मतों को जो उसने उन्हें अ़ता फ़रमाईं और अपने दुश्मनों को जो तरह तरह के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं (फ़ा23) कि वह ख़ुशी से चमकते दमकते होंगे और सुरूरे क़ल्ब के आसार उन चेहरों पर नुमायां होंगे (फ़ा24) कि अबरार ही उसकी मुहर तोड़ेंगे। (फ़ा25) ताअ़ात की तरफ़ सबक़त करके और बुराईयों से बाज़ रह कर (फ़ा26) जो जन्नत की शराबों में आला है (फ़ा27) यानी मुक़र्रबीन ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है (फ़ा28) मिस्ल अबू जहल और वलीद बिन मुग़ीरा और अ़ास बिन वाइल वग़ैरह रुऊसाए कुफ़्फ़ार के (फ़ा29) मिस्ल हज़रत अ़म्मार व ख़ब्बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरह फ़ुक़राए मोमिनीन के। (फ़ा30) मोमिनीन (फ़ा31) बतरीक़े तअ़्न व ऐब के। **शाने नुज़ूलः** मन्क़ूल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमानों की एक जमाअ़त में तशरीफ़ ले जा रहे थे मुनाफ़िक़ीन ने उन्हें देख कर आँखों से इशारे किये और मस्ख़रगी से हंसे और आपस में उन हज़रात के हक़ में बेहूदा कलिमात कहे तो इससे पहले कि अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचें यह आयतें नाज़िल हुईं। (फ़ा32) कुफ़्फ़ार (फ़ा33) यानी मुसलमानों को बुरा कह कर आपस में उनकी हंसी बनाते और ख़ुश होते हुए (फ़ा34) कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये और दुनिया की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा35) कुफ़्फ़ार (फ़ा36) कि उनके अहवाल व आमाल पर गिरिफ़्त करें बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह का हुक्म दिया गया है वह अपना हाल दुरुस्त करें दूसरों को बेवक़ूफ़ बताने और उनकी हंसी उड़ाने से क्या फ़ाइदा उठा सकते हैं (फ़ा37) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा38) जैसा काफ़िर दुनिया में मुसलमानों की गुरबत व मेहनत पर हंसते थे यहां मुआ़मला बर-अक्स है मोमिन दाइमी ऐश व राहत में हैं और काफ़िर ज़िल्लत व ख़्वारी के दाइमी अ़ज़ाब में जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है काफ़िर उससे निकलने के लिए दरवाज़े की तरफ़ दौड़ते हैं जब दरवाज़ा **(बक़िया सफ़हा 949 पर)**

سُورَةُ الْانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ
يَدْعُو ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا
وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

सूरतुल् इन्शिक़ाक़ि

(मक्की है इसमें 25 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समाउन्शक़्क़त्(1)व अज़िनत् लि–रब्बिहा व हुक़्क़त्(2)व इज़ल्अर्ज़ु मुद्दत्(3)व अल्क़त् मा फ़ीहा व त–ख़ल्लत्(4)व अज़िनत् लि–रब्बिहा व हुक़्क़त्(5)या अय्युहल् इन्सानु इन्न–क कादिहुन् इला रब्बि–क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि(6)फ़–अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू बि–यमीनिही(7) फ़सौ–फ़ युहा–सबु हिसाबंय् यसीरा(8)व यन्क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा(9)व अम्मा मन् ऊति–य किता–बहू वरा–अ ज़ह्रिही(10)फ़सौ–फ़ यद्अू सुबूरा(11)व यस्ला सऔरा(12)इन्नहू का–न फ़ी अह्लिही मस्रूरा (13)इन्नहू ज़न्–न अल्लंय्यहू–र(14)बला इन्–न रब्बहू का–न बिही बसीरा(15)फ़ला उक़्सिमु बिश्श–फ़क़ि(16)वल्लैलि व मा व–स–क़(17)वल्क़–मरि इज़त् त–स–क़(18)ल–तर् कबुन्–न त–ब–क़न् अन् त–बक़(19)फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून(20)व इज़ा कुरि–अ अ़लैहिमुल् कुरआनु ला यस्जुदून(21) बलिल्लज़ी–न क–फ़रू यु–कज़्ज़िबून(22)वल्लाहु अअ्–लमु बिमा यूअू़न(23)फ़–बश्शिर्हुम् बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(24)इल्लल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून(25)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
जब आसमान शक़ हो।(1) (फ़ा2) और अपने रब का हुक्म सुने (फ़ा3) और उसे सज़ावार ही यह है।(2) और जब ज़मीन दराज़ की जाए।(3) (फ़ा4) और जो कुछ इसमें है (फ़ा5) डाल दे और ख़ाली हो जाए।(4) और अपने रब का हुक्म सुने (फ़ा6) और उसे सज़ावार ही यह है।(5) (फ़ा7) ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की तरफ़ (फ़ा8) ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना।(6) (फ़ा9) तो वह जो अपना नामए आमाल दाहिने हाथ में दिया जाए।(7) (फ़ा10) उससे अ़न्क़रीब सह्ल हिसाब लिया जाएगा।(8) (फ़ा11) और अपने घर वालों की तरफ़ (फ़ा12) शाद शाद पलटेगा।(9) (फ़ा13) और वह जिसका नामए आमाल उसकी पीठ के पीछे दिया जाए।(10) (फ़ा14) वह अ़न्क़रीब मौत मांगेगा।(11) (फ़ा15) और भड़कती आग में जाएगा।(12) बेशक वह अपने घर में (फ़ा16) ख़ुश था।(13) (फ़ा17) वह समझा कि उसे फिरना नहीं।(14) (फ़ा18) हां क्यों नहीं (फ़ा19) बेशक उस का रब उसे देख रहा है।(15) तो मुझे क़सम है शाम के उजाले की।(16) (फ़ा20) और रात की और जो चीज़ें उसमें जमा होती हैं।(17) (फ़ा21) और चाँद कि जब पूरा हो।(18) (फ़ा22) ज़रूर तुम मंज़िल ब मंज़िल चढ़ोगे।(19) (फ़ा23) तो क्या हुआ ईमान नहीं लाते।(20) (फ़ा24) और जब कुरआन पढ़ा जाए सजदा नहीं करते।(21) (फ़ा25) बल्कि काफ़िर झुठला रहे हैं।(22) (फ़ा26) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं।(23) (फ़ा27) तो तुम उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की बशारत दो।(24) (फ़ा28) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए वह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा।(25) (रुकूअ़ 9) **(बक़िया सफ़्हा 978 पर)**

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالسَّمَاۗءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ○ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ○ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ○ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ○ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ○ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ○ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ○ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ○ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ○ اِنَّ
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ○ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ○ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ○ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ○ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ○ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ○ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ○
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ○ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ مُّحِيْطٌ ○ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ○ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ○

सूरतुल् बुरूजि

(मक्की है इसमें 22 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वस्समाइ ज़ातिल्बुरूजि(1)वल्यौमिल् मौऊदि(2)व शाहिदिंव् व मश्हूद(3)कुति–ल अस्ह़ाबुल् उख़्दूदि(4)न्नारि जातिल्वकूदि(5)इज़् हुम् अ़लैहा कुअूदुंव्(6)व हुम् अ़ला मा यफ़्अ़लू–न बिल्मुअ्मिनी–न शुहूद(7)व मा न–क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् ह़मीद(8)अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(9)इन्नल्लज़ी–न फ़–तनुल्मुअ्मिनी–न वल्मुअ्मिनाति सुम्–म लम् यतूबू फ़–लहुम् अ़ज़ाबु ज–हन्न–म व लहुम् अ़ज़ाबुल् ह़रीक़(10) इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल् अन्हारु ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् कबीर(11)इन्–न बत़्–श रब्बि–क ल–शदीद(12)इन्नहू हु–व युब्दिउ व युईद(13)व हुवल् ग़फ़ूरुल् वदूद(14)ज़ुल्अ़र्शिल् मजीद(15)फ़अ़्आ़लुल् लिमा युरीद(16)हल् अता–क ह़दीसुल् जुनूद(17) फ़िर्औ–न व समूद(18)बलिल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव्(19)वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुहीत़(20) बल् हु–व क़ुर्आनुम् मजीद(21)फ़ी लौह़िम् मह़्फ़ूज़(22)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क़सम आसमान की जिस में बुर्ज हैं।(1) (फ़ा2) और उस दिन की जिस का वादा है।(2) (फ़ा3) और उस दिन की जो गवाह है।(3) (फ़ा4) और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं(4) (फ़ा5) खाई वालों पर लानत हो।(5) (फ़ा6) उस भड़कती आग वाले। जब वह उसके किनारों पर बैठे थे।(6) (फ़ा7) और वह ख़ुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे।(7) (फ़ा8) और उन्हें मुसलमानों का क्या बुरा लगा यही न कि वह ईमान लाए अल्लाह इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे पर।(8) कि उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।(9) बेशक जिन्होंने ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को (फ़ा9) फिर तौबा न की (फ़ा10) उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है (फ़ा11) और उनके लिए आग का अ़ज़ाब।(10) (फ़ा12) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिए बाग़ है जिनके नीचे नहरें रवाँ यही बड़ी कामयाबी है।(11) बेशक तेरे रब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है।(12) (फ़ा13) बेशक वह पहले करे और फिर करे।(13) (फ़ा14) और वही बख़्शने वाला अपने नेक बन्दों पर प्यारा।(14) इज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक।(15) हमेशा जो चाहे कर लेने वाला।(16) क्या तुम्हारे पास लश्करों की बात आई।(17) (फ़ा15) वह लश्कर कौन फ़िरऔ़न और समूद।(18) (फ़ा16) बल्कि (फ़ा17) काफ़िर झुठलाने में हैं।(19) (फ़ा18) और अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है।(20) (फ़ा19) बल्कि वह कमाले शरफ़ वाला क़ुरआन है।(21) लौहे महफ़ूज़ में।(22) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा1) सूरह बुरूज मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 22 आयतें 109 कलिमे 465 हरफ़ हैं (फ़ा2) जिनकी (बक़िया सफ़हा 985 पर)

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝٣ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝٨ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝٩ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝١٠ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝١١ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝١٢ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝١٣ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝١٤ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۝١٥ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۝١٦ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝١٧

सूरतुत् तारिक़

(मक्की है इसमें 17 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिसमिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समाइ वत्तारिक़ि(1)व मा अद्रा–क मत्तारिक़ु(2)न्नज्मुस् साक़िबु(3)इन् कुल्लु नफ़्सिल् लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़(4)फ़ल्यन्ज़ुरिल् इन्सानु मिम्–म ख़ुलि–क़(5)ख़ुलि–क़ मिम् माइन् दाफ़िक़िंय्(6)यख़्रुजु मिम् बैनिस्सुल्बि वत्तराइब(7)इन्नहू अ़ला रज्इ़ही लक़ादिर(8)यौ–म तुब्–लस्सराइरु(9)फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव् व ला नासिर(10)वस्समाइ ज़ातिर् रज्इ़(11)वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्इ़(12)इन्नहू लक़ौलुन् फ़स्लुंव्(13)व मा हु–व बिल्हज़्लि(14)इन्नहुम् यकीदू–न कैदंव्(15) व अकीदु कैदन्(16)फ़–महहिलिल्काफ़िरी–न अम्हिल्हुम् रुवैदा(17)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

आसमान की क़सम और रात को आने वाले की।(1) (फ़ा2) और कुछ तुम ने जाना वह रात को आने वाला क्या है।(2) ख़ूब चमकता तारा।(3) कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो।(4) (फ़ा3) तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया।(5) (फ़ा4) जस्त करते (उछलते हुए) पानी से।(6) (फ़ा5) जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से।(7) (फ़ा6) बेशक अल्लाह उसके वापस कर देने पर (फ़ा7) क़ादिर है।(8) जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी।(9) (फ़ा8) तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न कोई मददगार।(10) (फ़ा9) आसमान की क़सम जिस से मेंह उतरता है।(11) (फ़ा10) और ज़मीन की जो उससे खिलती है।(12) (फ़ा11) बेशक क़ुरआन ज़रूर फ़ैसला की बात है।(13) (फ़ा12) और कोई हंसी की बात नहीं।(14) (फ़ा13) बेशक काफ़िर अपना सा दाँव चलते हैं।(15) (फ़ा14) और मैं अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाता हूं।(16) (फ़ा15) तो तुम काफ़िरों को ढील दो (फ़ा16) उन्हें कुछ थोड़ी मुहलत दो।(17) (फ़ा17) (रुकूअ़ 11)

(फ़ा1) सूरह अत्तारिक़ मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 17 आयतें 61 कलिमे 239 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी सितारे की जो रात को चमकता है। **शाने नुज़ूलः** एक शब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिया लाए हुज़ूर उसको तनावुल फ़रमा रहे थे उस दर्मियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़ज़ा आग से भर गई अबू तालिब घबरा कर कहने लगे यह क्या है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सितारा है जिससे शयातीन मारे जाते हैं और यह क़ुदरते इलाही की निशानियों में से है अबू तालिब को इससे तअ़ज्जुब हुआ और यह सूरत नाज़िल हुई। (फ़ा3) उसके रब की तरफ़ से जो उसके आमाल की निगहबानी करे और उसकी नेकी बदी सब लिख ले हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे फ़रिश्ते हैं। (फ़ा4) ताकि वह जाने कि उसका पैदा करने वाला उसको बाद मौत जज़ा के लिए ज़िन्दा करने पर क़ादिर है पस उसको रोज़े जज़ा के लिए अमल करना चाहिये (फ़ा5) यानी मर्द व औरत के नुत्फ़ों से जो रेहम में मिल कर एक हो जाते हैं। (फ़ा6) यानी मर्द की पुश्त से और औरत के सीना के मक़ाम से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया सीना के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और उन्हीं से मन्क़ूल है कि औरत की दोनों छातियों के दर्मियान से यह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आज़ा से बर आमद होती है और उसका ज़्यादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्सा की बहुत सी रगों में जो सीना के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है इसी लिए इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र ख़ुसूसियत से फ़रमाया गया। (फ़ा7) यानी मौत के बाद ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर (फ़ा8) छुपी बातों से मुराद अ़क़ाइद और नीयतें और वह आमाल हैं जिनको आदमी छुपाता है रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला उन सब को ज़ाहिर कर देगा (फ़ा9) यानी जो आदमी मुन्किरे बअ़्स है न उसको ऐसी क़ुव्वत होगी जिससे अ़ज़ाब को रोक सके न उसका कोई **(बक़िया सफ़हा 967 पर)**

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۙ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۙ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۙ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۙ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۙ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۙ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۧ

सूरतुल् अअ्ला

(मक्की है इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ् है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्बिहिस्–म रब्बिकल् अअ्ला(1)अल्लज़ी ख़–ल–क़ फ़सव्वा(2)वल्लज़ी क़द्–द–र फ़–हदा (3)वल्लज़ी अख़्–रजल् मरआ(4)फ़–ज–अ–लहू ग़ुसाअन् अह्वा(5)सनुक़्रिउ–क फ़ला तन्सा(6) इल्ला मा शा–अल्लाहु इन्नहू यअ्–लमुल् जह्–र व मा यख़्फ़ा(7)व नुयस्सिरु–क लिल्युस्रा(8) फ़ज़क्किर् इन् न–फ़–अतिज़् ज़िक्रा(9)स–यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा(10)व य–त–जन्नबुहल् अश्क़(11) –ल्लज़ी यस्लन्नारल् कुब्रा(12)सुम्–म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या(13)क़द् अफ़्ल–ह मन् तज़क्का(14)व ज़–करस्–म रब्बिही फ़सल्ला(15)बल् तुअ्सिरू–नल् ह़यातद् दुन्या(16)वल्आख़ि–रतु ख़ैरुंव् व अब्क़ा(17)इन्–न हाज़ा लफ़िस् सुहुफ़िल् ऊला(18)सुहुफ़ि इब्राही–म व मूसा(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है।(1) (फ़ा2) जिस ने बना कर ठीक किया।(2) (फ़ा3) और जिसने अन्दाज़ा पर रख कर राह दी।(3) (फ़ा4) और जिस ने चारा निकाला।(4) फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया।(5) अब हम तुम्हें पढ़ायेंगे कि तुम न भूलोगे।(6) (फ़ा5) मगर जो अल्लाह चाहे (फ़ा6) बेशक वह जानता है हर खुले और छुपे को।(7) और हम तुम्हारे लिए आसानी का सामान कर देंगे(8) (फ़ा7) तो तुम नसीहत फ़रमाओ (फ़ा8) अगर नसीहत काम दे।(9) (फ़ा9) अ़न्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है।(10) (फ़ा10) और इस (फ़ा11) से वह बड़ा बद-बख़्त दूर रहेगा।(11) जो सब से बड़ी आग में जाएगा।(12) (फ़ा12) फिर न उसमें मरे (फ़ा13) और न जिये।(13) (फ़ा14) बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुआ।(14) (फ़ा15) और अपने रब का नाम लेकर (फ़ा16) नमाज़ पढ़ी।(15) (फ़ा17) बल्कि तुम जीती दुनिया को तरजीह देते हो।(16) (फ़ा18) और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली।(17) बेशक यह (फ़ा19) अगले सहीफ़ों में है।(18) (फ़ा20) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।(19) (रुकूअ् 12)

(फ़ा1) सूरतुल अअ्ला मक्की है इसमें एक रुकूअ् 19 आयतें 72 कलिमे 291 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी इसका ज़िक्र अ़ज़मत व एहतेराम के साथ करो हदीस में है जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने सज्दा में दाख़िल करो यानी सज्दा में सुब्हा–न रब्बि–यल् अअ्ला कहो (अबू दाऊद) (फ़ा3) यानी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़रमाई जो पैदा करने वाले के इल्म व हिकमत पर दलालत करती है। (फ़ा4) यानी उमूर को अज़ल में मुक़द्दर किया और उसकी तरफ़ राह दी या यह माना हैं कि रोज़ियां मुक़द्दर कीं और उनके तरीक़े कस्ब की राह बताई। (फ़ा5) यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अपने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बशारत है कि आपको हिफ़्ज़े क़ुरआन की निअ्मत बे मेहनत अ़ता हुई और यह आपका मोअ्जेज़ा है कि इतनी बड़ी किताबे अ़ज़ीम बग़ैर मेहनत व मशक़्क़त और बग़ैर तकरार व दौर के आपको हिफ़्ज़ हो गई। (जुमल) (फ़ा6) मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह इस्तिसना वाक़ेअ् न हुआ और अल्लाह तआ़ला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें। (ख़ाज़िन) (फ़ा7) कि वही तुम्हें बे मेहनत याद रहेगी मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह है कि आसानी के सामान से शरीअ़ते इस्लाम मुराद है जो निहायत सहल व आसान है। (फ़ा8) इस क़ुरआन मजीद से (फ़ा9) और कुछ लोग इससे मुनतफ़ेअ् हों **(बक़िया सफ़हा 972 पर)**

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝۱ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۝۲ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝۳ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝۴ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝۵ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝۶ لَّا يُسْمِنُ
وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝۷ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۝۸ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝۹ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝۱۰ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝۱۱ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝۱۲ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝۱۳
وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝۱۴ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝۱۵ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝۱۶ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝۱۷ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝۱۸ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ
نُصِبَتْ ۝۱۹ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝۲۰ فَذَكِّرْ اِنَّمَا اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝۲۱ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝۲۲ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝۲۳ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۝۲۴
اِنَّ اِلَيْنَا اِيَابَهُمْ ۝۲۵ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝۲۶

सूरतुल् ग़ाशियति

(मक्की है इसमें 26 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता–क ह़दीसुल् ग़ाशियः(1)वुजूहुंय्यौ–मइजिन् ख़ाशि–अ़तुन्(2)आमि–लतुन् नासि–बतुन्(3) तस्ला नारन् ह़ामि–य–तन्(4)तुस्क़ा मिन् अ़ैनिन् आनियः(5)लै–स लहुम् त़आमुन् इल्ला मिन् ज़रीअ़िल्(6)ला युस्मिनु व ला युग्नी मिन् जू–अ़(7)वुजूहुंय्यौ–मइज़िन् नाअ़ि–मतुल्(8) लिसअ़्यिहा राज़ि–यतुन्(9)फ़ी जन्नतिन् आ़लि–यतिल्(10)ला तस्मअु फ़ीहा लाग़ियः(11)फ़ीहा अ़ैनुन् जारियः(12)फ़ीहा सुरुरुम् मर्फ़ूअ़तुंव्(13)व अक्वाबुम् मौजू–अ़तुंव्(14)व नमारिक़ु मस्फ़ू–फ़तुंव्(15) व ज़राबिय्यु मब्सूसः(16)अ–फ़ला यन्ज़ुरू–न इलल् इबिलि कै–फ़ ख़ुलिक़त्(17)व इलस्समाइ कै–फ़ रुफ़ि–अ़त्(18)व इलल् जिबालि कै–फ़ नुसिबत्(19)व इलल् अर्ज़ि कै–फ़ सुत़िहत्(20)फ़–ज़क्किर् इन्नमा अन्–त मुज़क्किर(21)लस्–त अ़लैहिम् बिमुसैतिरिन्(22)इल्ला मन् त–वल्ला व क–फ़र(23)फ़यु– अ़ज़्ज़ि –बुहुल्लाहुल् अ़ज़ाबल् अक्बर(24)इन्–न इलैना इया–बहुम्(25) सुम्–म इन्–न अ़लैना ह़िसा– बहुम्(26)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

बेशक तुम्हारे पास (फ़ा2) उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी।(1) (फ़ा3) कितने ही मुँह उस दिन ज़लील होंगे।(2) काम करें मशक़्क़त झेले जायें।(3) भड़कती आग में(4) (फ़ा4) निहायत जलते चश्मा का पानी पिलाए जायें।(5) उनके लिए कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे।(6) (फ़ा5) कि न फ़रबही लायें और न भूक में काम दें।(7) (फ़ा6) कितने ही मुँह उस दिन चैन में हैं।(8) (फ़ा7) अपनी कोशिश पर राज़ी।(9) (फ़ा8) बुलन्द बाग़ में।(10) कि उसमें कोई बेहूदा बात न सुनेंगे।(11) उसमें रवाँ चश्मा है।(12) उसमें बुलन्द तख़्त है।(13) और चुने हुए कूज़े।(14) (फ़ा9) और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन।(15) और फैली हुई चाँदनियां।(16) (फ़ा10) तो क्या ऊँट को नहीं देखते कैसा बनाया गया।(17) और आसमान को कैसा ऊँचा किया गया।(18) (फ़ा11) और पहाड़ों को कैसे क़ाइम किये गए।(19) और ज़मीन को कैसे बिछाई गई।(20) तो तुम नसीहत सुनाओ (फ़ा12) तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो।(21) तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा नहीं।(22) (फ़ा13) हां जो मुंह फेरे (फ़ा14) और कुफ़्र करे।(23) (फ़ा15) तो उसे अल्लाह बड़ा अ़ज़ाब देगा।(24) (फ़ा16) बेशक हमारी ही तरफ़ उनका फिरना है।(25) (फ़ा17) फिर बेशक हमारी ही तरफ़ उनका ह़िसाब है।(26) (रुकूअ़ 13)

(फ़ा1) सूरह ग़ाशियः मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 26 आयतें 92 कलिमे 381 हरफ़ हैं। (फ़ा2) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा3) ख़ल्क़ पर मुराद इससे क़ियामत है जिसके शदाइद व अहवाल हर चीज़ पर छा जायेंगे। (फ़ा4) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया इससे वह लोग मुराद हैं जो दीने इस्लाम पर न थे बुत परस्त थे या किताबी काफ़िर मिस्ल राहिबों और पुजारियों के उन्होंने मेहनतें भी उठाईं मशक़्क़तें भी झेलीं और नतीजा यह हुआ कि जहन्नम में गए। (फ़ा5) अ़ज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अ़ज़ाब दिये जायेंगे उनके बहुत तबक़े होंगे बाज़ को **(बक़िया सफ़हा 968 पर)**

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَالْفَجْرِ ۝١ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝٤ هَلْ فِیْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِیْ حِجْرٍ ۝٥ اَلَمْ تَرَ كَیْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝٦ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ
مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۝٨ وَثَمُوْدَ الَّذِیْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩ وَفِرْعَوْنَ ذِی الْاَوْتَادِ ۝١٠ الَّذِیْنَ طَغَوْا فِی الْبِلَادِ ۝١١ فَاَكْثَرُوْا فِیْهَا الْفَسَادَ ۝١٢ فَصَبَّ عَلَیْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۝١٣ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَكْرَمَنِ ۝١٥ وَاَمَّاۤ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَیْهِ رِزْقَهٗ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ
اَهَانَنِ ۝١٦ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْیَتِیْمَ ۝١٧ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ۝١٨ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝١٩ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢٠ كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ۝٢١ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢ وَجِایْٓءَ یَوْمَىِٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ یَوْمَىِٕذٍ یَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰی لَهُ الذِّكْرٰی ۝٢٣ یَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ قَدَّمْتُ لِحَیَاتِیْ ۝٢٤ فَیَوْمَىِٕذٍ لَّا یُعَذِّبُ
عَذَابَهٗۤ اَحَدٌ ۝٢٥ وَّلَا یُوْثِقُ وَثَاقَهٗۤ اَحَدٌ ۝٢٦ یٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ۝٢٧ ارْجِعِیْۤ اِلٰی رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ۝٢٨ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ۝٢٩ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ۝٣٠

सूरतुल् फ़ज्रि

(मक्की है इसमें 26 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वल्फ़ज्रि(1)व लयालिन् अ़श्रिंव्(2)वश्शफ़्अ़ि वल्वत्रि(3)वल्लैलि इज़ा यस्रि(4)हल् फ़ी ज़ालि–क क़–समुल् लिज़ी ह़िज्र(5)अलम् त–र कै–फ़ फ़–अ़–ल रब्बु–क बिआ़दिन्(6)इ–र–म ज़ातिल् अ़िमादि (7)ल्लती लम् युख़्लक़् मिस्लुहा फ़िल् बिलाद(8)व समूदल्लज़ी–न जाबुस् सख़्–र बिल्वादि(9)व फ़िर्औ़–न ज़िल्औतादि(10)–ल्लज़ी–न तग़ौ फ़िल्बिलादि(11)फ़–अक्सरू फ़ीहल्फ़साद(12) फ़–सब्–ब अ़लैहिम् रब्बु–क सौ–त अ़ज़ाब(13)इन्–न रब्ब–क लबिल् मिर्साद(14)फ़–अम्मल् इन्सानु इज़ा मब्–तलाहु रब्बुहू फ़–अक्र–महू व नअ़्–अ़–महू फ़–यक़ूलु रब्बी अक्र–मन्(15)व अम्मा इज़ा मब्–तलाहु फ़–क़्–द–र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़–यक़ूलु रब्बी अहानन्(16)कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल् यती–म(17)व ला तहाज़्ज़ू–न अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(18)व तअ्कुलू–नत्तुरा–स अक्लल् लम्मंव्(19) व तुहिब्बूनल् मा–ल हुब्बन् जम्मा(20)कल्ला इज़ा दुक्कतिल् अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्(21)व जा–अ रब्बु–क वल्म–लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा(22)व जी–अ यौ–मइज़िम् बि–जहन्न–म यौ–मइज़िंय्य–त–ज़क्करुल् इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा(23)यक़ूलु यालै–तनी क़द्दम्तु लि–हयाती(24)फ़यौ– मइज़िल् ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ा–बहू अ–हदुंव्(25)व ला यूसिक़ु व–सा–क़हू अ–हद(26)या अय्युहन् नफ़्सुल्–मुत्मइन्नतु(27)–र्जिअ़ी इला रब्बिकि राज़ि–य–तम् मर्ज़िय्यतन्(28)फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (29)वद्ख़ुली जन्नती(30)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
उस सुबह की क़सम।(1) (फ़ा2) और दस रातों की।(2) (फ़ा3) और जुफ़्त और ताक़ की।(3) (फ़ा4) और रात की जब चल दे।(4) (फ़ा5) क्यों उसमें अ़क़्लमन्द के लिए क़सम हुई।(5) (फ़ा6) क्या तुमने न देखा (फ़ा7) तुम्हारे रब ने आ़द के साथ कैसा किया।(6) वह इरम ह़द से ज़्यादा तूल वाले।(7) (फ़ा8) कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुआ।(8) (फ़ा9) और समूद जिन्होंने वादी में (फ़ा10) पत्थर की चट्टानें काटीं।(9) (फ़ा11) और फ़िरऔ़न की चौमेख़ा करता।(10) (फ़ा12) जिन्होंने शहरों में सरकशी की।(11) (फ़ा13) फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया।(12) (फ़ा14) तो उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बक़ुव्वत मारा।(13) बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं।(14) लेकिन आदमी तो जब उसे उसका रब आज़माए कि उसको जाह और निअ़्मत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी।(15) और अगर आज़माए और उसका रिज़्क़ उस पर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ख़्वार किया(16) यूं नहीं। (फ़ा15) बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते।(17) (फ़ा16) और (बक़िया सफ़्हा 988 पर)

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا
لُّبَدًا ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۝ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

सूरतुल् ब–लदि

(मक्की है इस सूरह में 20 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्ब–लदि(1)व अन्–त ह़िल्लुम् बिहाज़ल् ब–लदि(2)व वालिदिंव् व मा व–लद(3)ल–क़द् ख़–लक़्नल् इन्सा–न फ़ी क–बद(4)अ–यह़्सबु अल्लंय्यक़्दि–र अ़लैहि अ–ह़द(5) यकूलु अह्–लक्तु माल़ल् लु–बदा(6)अ–यह़्सबु अल्लम् य–रहू अ–ह़द(7)अ–लम् नजअ़ल् लहू अ़ैनैनि(8)व लिसानंव् व श–फ़तैनि(9)व हदैनाहुन् नज्दैनि(10)फ़लक़्त–ह़–मल् अ़–क़–ब–त(11)व मा अद्रा–क मल्–अ़– क़–बः(12)फ़क्कु र–क़–बतिन्(13)औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग़–बतिंय्(14) यतीमन् ज़ा मक़्र–बतिन्(15)औ मिस्कीनन् ज़ा मत्र–बः(16)सुम्–म का–न मिनल्लज़ी–न आ–मनू व तवासौ बिस्सब्रि व तवासौ बिल्मर्–ह़–मः(17)उलाइ–क अस्ह़ाबुल् मै–म–नः(18)वल्लज़ी–न क–फ़रू बिआयातिना हुम् अस्ह़ाबुल् मश्–अ–मः(19)अ़लैहिम् नारुम् मुअ्–स़–दः(20)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

मुझे इस शहर की क़सम।(1) (फ़ा2) कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।(2) (फ़ा3) और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उसकी औलाद की कि तुम हो।(3) (फ़ा4) बेशक हमने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया।(4) (फ़ा5) क्या आदमी यह समझता है कि हरगिज़ इस पर कोई क़ुदरत नहीं पाएगा।(5) (फ़ा6) कहता है मैंने ढेरों माल फ़ना कर दिया।(6) (फ़ा7) क्या आदमी यह समझता है कि उसे किसी ने न देखा।(7) (फ़ा8) क्या हमने उसकी दो आँखें न बनाईं।(8) (फ़ा9) और ज़बान (फ़ा10) और दो होंट।(9) (फ़ा11) और उसे दो उभरी चीज़ों की राह बताई।(10) (फ़ा12) फिर बे तअम्मुल घाटी में न कूदा।(11) (फ़ा13) और तूने क्या जाना वह घाटी क्या है।(12) (फ़ा14) किसी बन्दे की गर्दन छुड़ाना।(13) (फ़ा15) या भूक के दिन खाना देना।(14) (फ़ा16) रिश्तेदार यतीम को। (15) या ख़ाक नशीन मिस्कीन को।(16) (फ़ा17) फिर हुआ उनसे जो ईमान लाए (फ़ा18) और उन्होंने आपस में सब्र की वसीयतें कीं (फ़ा19) और आपस में मेहरबानी की वसीयतें कीं।(17) (फ़ा20) यह दाहिनी तरफ़ वाले हैं।(18) (फ़ा21) और जिन्होंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया वह बायें तरफ़ वाले।(19) (फ़ा22) उन पर आग है कि उसमें डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई।(20) (फ़ा23) (रुकूअ़ 15)

(फ़ा1) सूरह बलद मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 20 आयतें 82 कलिमे 320 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी मक्का मुकर्रमा की (फ़ा3) इस आयत से मालूम हुआ कि यह अ़ज़मत मक्का मुकर्रमा को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रौनक़ अफ़रोज़ी की बदौलत हासिल हुई। (फ़ा4) एक क़ौल यह भी है कि वालिद से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और औलाद से आपकी उम्मत मुराद है (हुसैनी) (फ़ा5) कि हम्ल में एक तंग व तारीक मकान में रहे विलादत के वक़्त तकलीफ़ उठाए दूध पीने दूध छोड़ने कस्बे मआ़श और हयात व मौत की मशक़्क़तों को बरदाश्त कर ले। (फ़ा6) यह आयत अबुल अशद उसैद बिन कलदा के हक़ में नाज़िल हुई वह निहायत क़वी और ज़ोर आवर था और उसकी ताक़त का यह आलम था कि चमड़ा पाँव के नीचे दबा लेता था दस दस आदमी उसको खींचते और वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उसके पाँव के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता और एक क़ौल यह है कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुई माना यह हैं कि यह काफ़िर अपनी क़ुव्वत पर मग़रूर मुसलमानों को कमज़ोर समझता है किस गुमान में है अल्लाह क़ादिर बरहक़ की **(बक़िया सफ़हा 981 पर)**

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝ وَالَّیْلِ اِذَا یَغْشٰىهَا ۝ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۝ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝
فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَاۤ ۝ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ
اللّٰهِ وَسُقْیٰهَا ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا فَدَمْدَمَ عَلَیْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝ وَلَا یَخَافُ عُقْبٰهَا ۝

सूरतुश्शम्सि

(मक्की है इस सूरह में 15 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वश्शम्सि व जुहाहा(1)वल्क़—मरि इजा तलाहा(2)वन्नहारि इजा जल्लाहा(3)वल्लैलि इज़ा यग्शाहा(4) वस्समाइ व मा बनाहा(5)वल्अर्ज़ि व मा तहाहा(6)व नफ़्सिंव् व मा सव्वाहा(7)फ़—अल्—ह—महा फुजू—रहा व तक़्वाहा(8)क़द अफ़्ल—ह मन् ज़क्काहा(9)व क़द ख़ा—ब मन् दस्साहा(10)कज़्ज़—बत् समूदु बि—तग़्वाहा(11)इजिम्ब—अ़—स अश्क़ाहा(12)फ़क़ा—ल लहुम् रसूलुल्लाहि ना—क़तल्लाहि व सुक़्याहा (13)फ़—कज्जबूहु फ़—अ़—क़रूहा फ़—दम्द—म अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़—सव्वाहा(14)व ला यख़ाफु अुक़्बाहा(15)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

सूरज और उसकी रौशनी की क़सम।(1) और चाँद की जब उसके पीछे आए।(2) (फ़ा2) और दिन की जब उसे चमकाए।(3) (फ़ा3) और रात की जब उसे छुपाए।(4) (फ़ा4) और आसमान और उसके बनाने वाले की क़सम।(5) और ज़मीन और उसके फैलाने वाले की क़सम।(6) और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया।(7) (फ़ा5) फिर उसकी बदकारी और उसकी परहेज़गारी दिल में डाली।(8) (फ़ा6) बेशक मुराद को पहुंचाया जिसने उसे (फ़ा7) सुथरा किया।(9) (फ़ा8) और नामुराद हुआ जिसने उसे मअ़सियत में छुपाया।(10) समूद ने अपनी सरकशी से झुठलाया।(11) (फ़ा9) जबकि उसका सब से बद बख़्त (फ़ा10) उठ खड़ा हुआ।(12) तो उनसे अल्लाह के रसूल (फ़ा11) ने फ़रमाया अल्लाह के नाक़ा (फ़ा12) और उसकी पीने की बारी से बचो(13) (फ़ा13) तो उन्होंने उसे झुठलाया फिर नाक़ा की कोचें काट दीं तो उन पर उनके रब ने उनके गुनाह के सबब (फ़ा14) तबाही डाल कर वह बस्ती बराबर कर दी।(14) (फ़ा15) और उसके पीछा करने का उसे ख़ौफ़ नहीं।(15) (फ़ा16) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा1) सूरह वशश्म्स मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 15 आयतें 54 कलिमे 247 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद तुलूअ़ करे यह क़मरी महीने के पहले पन्द्रह दिन में होता है। (फ़ा3) यानी आफ़ताब को ख़ूब वाज़ेह करे क्योंकि दिन नूरे आफ़ताब का नाम है तो जितना दिन ज़्यादा रौशन होगा उतना ही आफ़ताब का ज़ुहूर ज़्यादा होगा क्योंकि असर की कुव्वत और उसका कमाल मुअस्सिर के कुव्वत व कमाल पर दलालत करता है या यह माना हैं कि जब दिन दुनिया को या ज़मीन को रौशन करे या शब की तारीकी को दूर करे। (फ़ा4) यानी आफ़ताब को और आफ़ाक़ ज़ुल्मत व तारीकी से भर जायें या यह माना कि जब रात दुनिया को छुपाये। (फ़ा5) और कुवाए कसीरा अ़ता फ़रमाए नुत्क़ समअ़ बसर फ़िक्र ख़्याल इल्म फ़हम सब कुछ अ़ता फ़रमाया। (फ़ा6) ख़ैर व शर और ताअ़त व मअ़सियत से उसे बाख़बर कर दिया और नेक व बद बना दिया (फ़ा7) यानी नफ़्स को। (फ़ा8) बुराईयों से। (फ़ा9) अपने रसूल हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को। (फ़ा10) क़िदार बिन सालिफ़ इन सब की मर्ज़ी से नाक़ा की कोचें काटने के लिए। (फ़ा11) हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा12) के दर पय होने। (फ़ा13) यानी जो दिन उसके पीदे का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में तअ़र्रुज़ न करो ताकि तुम पर अ़ज़ाब न आए (फ़ा14) यानी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब और नाक़ा की कोचें काटने के सबब (फ़ा15) और सब को हलाक कर दिया उनमें से कोई न बचा (फ़ा16) जैसा बादशाहों को होता है क्योंकि वह मालिकुल मुल्क है जो चाहे करे किसी को मजाले दम ज़दन नहीं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसके माना यह भी बयान किये हैं कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को उनमें से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि नुज़ूले अ़ज़ाब के बाद उन्हें ईज़ा पहुंचा सके।

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ۝ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرٰى ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدّٰى ۝ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولٰى ۝ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝ لَا يَصْلٰهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكّٰى ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزٰى ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

सूरतुल्लैलि

(मक्की है इस सूरह में 21 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्लैलि इज़ा यग्शा(1)वन्नहारि इज़ा त-जल्ला(2)व मा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा(3) इन्-न सअ्-यकुम् ल-शत्ता(4)फ़-अम्मा मन् अअ्ता वत्तक़ा(5)व सद्-द-क़ बिल्हुस्ना(6)फ़-सनु-यस्सिरुहु लिल्युस्रा(7)व अम्मा मम् बख़ि-ल वस्तग्ना(8)व कज़्-ज-ब बिल्हुस्ना(9)फ़-सनु-यस्सिरुहू लिल् अुस्रा(10)व मा युग्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा त-रद्दा(11)इन्-न अ़लैना लल्हुदा (12)व इन्-न लना लल्-आख़ि-र-त वल्ऊला(13)फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा(14)ला यस्लाहा इल्लल् अश्क़(15)-ल्लज़ी कज़्-ज़-ब व त-वल्ला(16)व सयु-जन्नबुहल् अत्क़(17)ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-त-ज़क्का(18)व मा लि-अ-ह़दिन् अ़िन्दहू मिन् निअ्-मतिन् तुज्ज़ा(19)इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल् अअ्ला(20)व लसौ-फ़ यर्ज़ा(21)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

और रात की क़सम जब छाए।(1) (फ़ा2) और दिन की जब चमके।(2) (फ़ा3) और उस (फ़ा4) की जिसने नर व मादा बनाए।(3) (फ़ा5) बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है।(4) (फ़ा6) तो वह जिसने दिया(फ़ा7)और परहेज़गारी की।(5) (फ़ा8) और सब से अच्छी को सच माना।(6) (फ़ा9) तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे।(7) फ़ा10) और वह जिसने बुख़्ल किया (फ़ा11) और बे-परवाह बना।(8) (फ़ा12) और सब से अच्छी को झुठलाया।(9) (फ़ा13) तो बहुत जल्द हम उसे दुशवारी मुहय्या कर देंगे।(10) (फ़ा14) और उसका माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा।(11) (फ़ा15) बेशक हिदायत फ़रमाना (फ़ा16) हमारे ज़िम्मा है।(12) और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के हम ही मालिक हैं।(13) तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भड़क रही है।(14) न जाएगा उसमें (फ़ा17) मगर बड़ा बद बख़्त।(15) जिसने झुठलाया(फ़ा18)और मुँह फेरा।(16) (फ़ा19)और बहुत जल्द उससे दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।(17) जो अपना माल देता है कि सुथरा हो।(18) (फ़ा20) और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए।(19) (फ़ा22) सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है।(20) और बेशक क़रीब है कि वह राज़ी होगा।(21) (फ़ा22)(रुकूअ़ 17)

(फ़ा1) सूरह वल्लैल मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 21 आयतें 71 कलिमे 310 हरफ़ हैं (फ़ा2) जहान पर अपनी तारीकी से कि वह वक़्त है ख़ल्क़ के सुकून का हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और हरकत व इज़्तेराब से साकिन होता है और मक़बूलाने हक़ सिद्क़े नियाज़ से मश्ग़ूले मुनाजात होते हैं। (फ़ा3) और रात के अंधेरे को दूर करे कि वह वक़्त है सोतों के बेदार होने का और जानदारों के हरकत करने का और तलबे मआ़श में मश्ग़ूल होने का। (फ़ा4) क़ादिरे अ़ज़ीमुल क़ुदरत (फ़ा5) एक ही पानी से। (फ़ा6) यानी तुम्हारे आमाल जुदागाना हैं कोई ताअ़त बजा लाकर जन्नत के लिए अ़मल करता है कोई नाफ़रमानी करके जहन्नम के लिए। (फ़ा7) अपना माल राहे ख़ुदा में और अल्लाह तआ़ला के हक़ को अदा किया। (फ़ा8) ममनूआ़त व मुहर्रमात से बचा। (फ़ा9) यानी मिल्लते इस्लाम को। (फ़ा10) जन्नत के लिए और उसे ऐसी ख़सलत की तौफ़ीक़ देंगे जो उसके लिए सबबे आसानी व राहत हो और वह ऐसे अ़मल करे जिनसे उसका रब राज़ी हो। (फ़ा11) और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और अल्लाह तआ़ला के हक़ अदा न किये (फ़ा12) सवाब और निअ़मते **(बक़िया सफ़हा 982 पर)**

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

सूरतुज़्ज़ुहा

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा(1)वल्लैलि इज़ा सजा(2)मा वद्-द अ़-क रब्बु-क व मा क़ला(3)व ललआख़ि-रतु ख़ैरुल् ल-क मिनल्ऊला(4)व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़-तरज़ा(5)अ-लम् यजिद्-क यतीमन् फ़आवा (6)व व-ज-दक ज़ाल्लन् फ़-हदा(7)व व-ज-द-क आ़इलन् फ़-अग्ना(8)फ़-अम्मल् यती-म फ़ला तक़्हर्(9)व अम्मस्साइ-ल फ़ला तन्हर्(10)व अम्मा बिनिअ़्-मति रब्बि-क फ़-हद्दिस्(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

चाश्त की क़सम।(1) (फ़ा2) और रात की जब पर्दा डाले।(2) (फ़ा3) कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना।(3) और बेशक पिछली तुम्हारे लिए पहली से बेहतर है।(4) (फ़ा4) और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें (फ़ा5) इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।(5) (फ़ा6) क्या उसने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी।(6) (फ़ा7) और तुम्हें अपनी मुहब्बत में खुद-रफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी।(7) (फ़ा8) और तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर ग़नी कर दिया।(8) (फ़ा9) तो यतीम पर दबाव न डालो।(9) (फ़ा10) और मांगता को न झिड़को।(10) (फ़ा11) और अपने रब की नेअ़्मत का ख़ूब चर्चा करो।(11) (फ़ा12) (रुकूअ़ 18)

(फ़ा1) सूरह वज़्ज़ुहा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 11 आयतें 40 कलिमे 172 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** एक मर्तबा ऐसा इत्तेफ़ाक़ हुआ कि चन्द रोज़ वही न आई तो कुफ़्फ़ार ने बतरीक़े तअ़न कहा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उनके रब ने छोड़ दिया और मकरूह जाना इस पर वज़्ज़ुहा नाज़िल हुई (फ़ा2) जिस वक़्त कि आफ़ताब बुलन्द हो क्योंकि यह वक़्त वही है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और उसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे मसला चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और उसका वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से क़बल ज़वाल तक है इमाम साहब के नज़दीक चाश्त की नमाज़ दो रकअ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ज़ुहा से दिन मुराद है (फ़ा3) और उसकी तारीकी आ़म हो जाये इमाम जअ़्फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वह चाश्त है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ और शब किनाया है आपके गेसूए अम्बरीन से (रूहुल बयान) (फ़ा4) यानी आख़िरत दुनिया से बेहतर क्योंकि वहां आपके लिए मक़ामे महमूद व हौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊद और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आपकी उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आपकी शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दर्जे बुलन्द होना और बे इन्तेहा इज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने उसके यह माना भी बयान फ़रमाये हैं कि आने वाले अहवाल आपके लिए गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि हक़ तआ़ला का वादा है कि वह रोज़ बरोज़ आपके दर्जे बुलन्द करेगा और इज़्ज़त पर इज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़्यादा फ़रमाएगा और साअ़त बसाअ़त आपके मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। (फ़ा5) दुनिया व आख़िरत में (फ़ा6) अल्लाह तआ़ला का अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह वादए करीमा उन निअ़्मतों को भी शामिल है जो आपको दुनिया अ़ता फ़रमाईं कमाले नफ़्स और उलूमे अव्वलीन व आख़िरीन और ज़ुहूरे अमर और एअ़्लाए दीन और वह .फ़ुतूहात जो अहदे मुबारक में हुईं और अहदे सहाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसलमानों को होती रहेंगी और दावत का आ़म होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आपकी उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आपके वह करामात व कमालात जिनका अल्लाह ही आलिम है और आख़िरत की इज़्ज़त व तकरीम को भी शामिल है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको शफ़ाअ़त आ़म्मा व ख़ास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरह जलील लिअ़्मतें अ़ता फ़रमाईं मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के हक़ में रोकर दुआ़ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया अल्लाहुम्-म उम्मती उम्मती अल्लाह तआ़ला ने जिबरील को हुक्म दिया कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि **(बक़िया सफ़हा 989 पर)**

سُوْرَةُ الْاِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

सूरतु अ–लम् नश्रह

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् नश्रह् ल–क सद्‌र–क(1)व व–ज़अ्ना अन्–क विज़्र–क(2)ल्लज़ी अन्क़–ज़ ज़ह्‌र–क(3) व र–फ़अ्ना ल–क ज़िक्–रक(4)फ़इन्–न म–अल् अुस्रि युस्रन्(5)इन्–न म–अ़ल् अुस्रि युस्रा(6) फ़–इज़ा फ़–रग्–त फ़न्सब्(7)व इला रब्बि–क फ़र्ग़ब्(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

क्या हमने तुम्हारा सीना कुशादा न किया।(1) (फ़ा2) और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ उतार लिया।(2) जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी।(3) (फ़ा3) और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।(4) (फ़ा4) तो बेशक दुशवारी के साथ आसानी है।(5) बेशक दुशवारी के साथ आसानी है।(6) (फ़ा5) तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ़ में (फ़ा6) मेहनत करो।(7) (फ़ा7) और अपने रब ही की तरफ़ रग़बत करो।(8) (फ़ा8) (रुकूअ़ 19)

(फ़ा1) सूरह अलम नश्रह मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आतयें 27 कलिमे 103 हरफ़ हैं (फ़ा2) यानी हमने आपके सीना को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायत व मअ्रेफ़त और मौअ़ेज़त व नबुव्वत और इल्म व हिकमत के लिए यहां तक कि आलमे ग़ैब व शहादत उसकी वुसअ़त में समा गए और अ़लाइक़े जिस्मानिया अनवारे रूहानिया के लिए मानेअ् न हो सके और उलूमे लदुनिया व हुक्मे इलाहिया व मआ़रिफ़े रब्बानिया व हक़ाइक़े रहमानिया सीनए पाक में जलवा नुमा हुए और ज़ाहिरी शरहे सद्र भी बार बार हुआ इब्तेदाए उम्र शरीफ़ में और इब्तेदाए नुज़ूल वही के वक़्त और शबे मेअ्राज जैसा कि अहादीस में आया है उसकी शक्ल यह थी कि जिबरील अमीन ने सीनए पाक को चाक करके क़लबे मुबारक निकाला और ज़र्री तश्त में आबे ज़मज़म से गुस्ल दिया और नूर व हिकमत से भर कर उसको उसकी जगह रख दिया। (फ़ा3) उस बोझ से मुराद या वह ग़म है जो आपको कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से रहता था या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिसमें क़लबे मुबारक मश्ग़ूल रहता था मुराद यह है कि हमने आपको मक़्बुलुश्शफ़ाअ़त करके वह बारे ग़म दूर कर दिया। (फ़ा4) हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरील से इस आयत को दरियाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि आपके ज़िक्र की बुलन्दी यह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाये मेरे साथ आपका भी ज़िक्र किया जाये। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मुराद इससे यह है कि अज़ान में तकबीर में तशह्हुद में मिम्बरों पर खुतबों में तो अगर कोई अल्लाह तआ़ला की इबादत करे हर बात में इसकी तस्दीक़ करे और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की गवाही न दे तो यह सब बेकार वह काफ़िर ही रहेगा। क़तादा ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने आपका ज़िक्र दुनिया व आख़िरत में बुलन्द किया हर ख़तीब हर तशह्हुद पढ़ने वाला अश्–हदु अल्–ला–इला–ह इल्लल्लाहु के साथ अश्–हदु अन्–न मुहम्मदर्–रसूलुल्लाहि पुकारता है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आपके ज़िक्र की बुलन्दी यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया से आप पर ईमान लाने का अहद लिया (फ़ा5) यानी जो शिद्दत व सख़्ती कि आप कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला में बरदाश्त फ़रमा रहे हैं उसके साथ ही आसानी है कि हम आपको उन पर ग़लबा अ़ता फ़रमायेंगे (फ़ा6) यानी आख़िरत की (फ़ा7) कि दुआ़ बाद नमाज़ मक़बूल होती है इस दुआ़ से मुराद आख़िर नमाज़ की वह दुआ़ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वह दुआ़ जो सलाम के बाद हो उसमें इख़्तिलाफ़ है (फ़ा8) उसी के फ़ज़्ल के तालिब रह. और उसी पर तवक्कुल करो

(बक़िया सफ़हा 959 का) ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके (फ़ा10) जो अरज़ी पैदावार नबातात व अश्जार के लिए मिस्ल बाप के है (फ़ा11) और नबातात के लिए मिस्ल मां के है और और यह दोनों अल्लाह तआ़ला की अ़जीब नेअ्मतें हैं और उनमें कुदरते इलाही के बेशुमार आसार नुमूदार हैं जिन में ग़ौर करने से आदमी को बअ्स बादलमौत के बहुत से दलाइल मिलते हैं। (फ़ा12) कि हक़ व बातिल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर देता है (फ़ा13) जो निकम्मी और बेकार हो (फ़ा14) और दीने इलाही के मिटाने और नूरे हक़ को बुझाने और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुंचाने के लिए तरह तरह के दाँव करते हैं (फ़ा15) जिसकी उन्हें ख़बर नहीं (फ़ा16) ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा17) चन्द रोज़ की कि वह अन्क़रीब हलाक किये जायेंगे चुनांचे ऐसा ही हुआ और और बद्र में उन्हें अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ा (व नसखुल अमहाल बआयतिस्सैफ़)

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝

सूरतुत्तीन

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि(1)व तूरि सीनी–न(2)व हाज़ल् ब–लदिल् अमीन(3)ल–क़द ख़–लक़्नल् इन्सा–न फ़ी अह़्सनि तक़्वीम(4)सुम्–म र–ददनाहु अस्फ़–ल साफ़िलीन(5)इल्लल् लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़– लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून(6)फ़मा यु–कज़्ज़िबु–क बअ़्दु बिद्दीन(7) अलै–सल्लाहु बि–अह़्कमिल् ह़ाकिमीन(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

इंजीर की क़सम और ज़ैतून।(1) (फ़ा2) और तूरे सीना।(2) (फ़ा3) और इस अमान वाले शहर की।(3) (फ़ा4) बेशक हमने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।(4) फिर उसे हर नीची से नीची सी हालत की तरफ़ फेर दिया।(5) (फ़ा5) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें बेहद सवाब है।(6) (फ़ा6) तो अब (फ़ा7) क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुठलाने पर बाइस है।(7) (फ़ा8) क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं।(8) (रुकूअ़ 20)

(फ़ा1) सूरह वत्तीन मक्की है उसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें चौंतीस कलिमे 105 हरफ़ हैं (फ़ा2) इन्जीर निहायत उम्दा मेवा है जिसमें फुज़ला नहीं सरीउल हज़्म कसीरुन्नफ़ा मुलय्यन मुहल्लिल दाफ़ेअ़् रेग मुफ़्तेह सुदह जिगर बदन का फ़रबा करने वाला बलग़म को छांटने वाला ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है उस का तेल रौशनी के काम में भी लाया जाता है और बजाए सालन के भी खाया जाता है यह वस्फ़ दुनिया के किसी तेल में नहीं इसका दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों पैदा होता है जिनमें दहनियत का नाम व निशान नहीं बग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है हज़ारों बरस रहता इन चीज़ों में क़ुदरते इलाही के आसार ज़ाहिर हैं। (फ़ा3) यह वह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सीना उस जगह का नाम है जहां यह पहाड़ वाक़ेअ़ है या ब-मअ़नी ख़ुश मन्ज़र के है जहां कसरत से फलदार दरख़्त हों (फ़ा4) यानी मक्का मुकर्रमा की (फ़ा5) यानी बुढ़ापे की तरफ़ जबकि बदन ज़ईफ़ आज़ा नाकारा अक़्ल नाक़िस पुश्त ख़म बाल सफ़ेद हो जाते हैं जिल्द में झुर्रियां पड़ जाती हैं अपने ज़रूरियात अन्जाम देने में मजबूर हो जाता है या यह माना हैं कि जब उसने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्र गुज़ारी न की और नाफ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के असफ़ल तरीन दरकात को हमने उसका ठिकाना कर दिया। (फ़ा6) अगरचे ज़ोफ़े पीरी के बाइस वह जवानी की तरह कसीर ताअ़तें बजा न ला सकें और उनके अ़मल कम हो जायें लेकिन करमे इलाही से उन्हें वही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माना में अ़मल करने से मिलता था और उतने ही अमल उनके लिखे जायेंगे (फ़ा7) इस बयान क़ातेअ़ बुरहान सातेअ़ के बाद ऐ काफ़िर (फ़ा8) और तू अल्लाह तआ़ला की यह क़ुदरतें देखने के बावजूद क्यों बअ़्स व हिसाब व जज़ा का इंकार करता है।

(बक़िया सफ़हा 961 का) ज़क़ूम खाने को दिया जाएगा बाज़ को ग़िस्लीन (दोज़ख़ियों की पीप) बाज़ को आग के कांटे। (फ़ा6) यानी उनसे ग़िज़ा का नफ़ा हासिल न होगा क्योंकि ग़िज़ा के दो ही फ़ाइदे हैं एक यह कि भूख की तकलीफ़ रफ़ा करे दूसरे यह कि बदन को फ़रबा करे यह दोनों वस्फ़ जहन्नमियों के खाने में नहीं बल्कि वह शदीद अ़ज़ाब है। (फ़ा7) ऐश व ख़ुशी में और निअ़्मत व करामत में। (फ़ा8) यानी उस अ़मल व ताअ़त पर जो दुनिया में बजा लाये थे। (फ़ा9) चश्मे के किनारों पर जिन के देखने से भी लज़्ज़त हासिल हो और जब पीना चाहें तो वह भरे मिलें। (फ़ा10) इस सूरत में जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र सुनकर कुफ़्फ़ार ने तअ़ज्जुब किया और झुठलाया तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपने अ़जाइबे सनअ़त में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वह समझें कि जिस क़ादिरे हकीम ने दुनिया में ऐसी अ़जीब व ग़रीब चीज़ें पैदा की हैं उसकी क़ुदरत से जन्नती निअ़्मतों का पैदा फ़रमाना किस तरह क़ाबिले तअ़ज्जुब व लाइक़े इन्कार हो सकता है चुनांचे इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा11) बग़ैर सुतून के (फ़ा12) अल्लाह तआ़ला की निअ़्मतों और उसके दलाइले क़ुदरत बयान फ़रमा कर (फ़ा13) कि जब्र करो (हाज़िहिल् आयतु नुसिख़त् बिआयतिल् क़िताल) (फ़ा14) ईमान लाने से (फ़ा15) बाद नसीहत के (फ़ा16) आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा (फ़ा१७) बाद मौत के

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿۵﴾ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰۤى ﴿۶﴾

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿۷﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿۸﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِیْ يَنْهٰى ﴿۹﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿۱۰﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰۤى ﴿۱۱﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿۱۲﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۱۳﴾

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿۱۴﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿۱۵﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿۱۶﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿۱۷﴾ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿۱۸﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩﴿۱۹﴾

सूरतुल् अ़लक़्

(मक्की है इस सूरह में 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल् लज़ी ख़–लक़(1)ख़–ल–क़ल् इन्सा–न मिन् अ़–लक़(2)इक़्रअ् व रब्बुकल् अक्रमु (3)ल्लज़ी अ़ल्ल–म बिल्क़–लमि(4)अ़ल्ल–मल् इन्सा–न मा लम् यअ़्लम्(5)कल्ला इन्नल् इन्सा–न ल–यत्ग़ा(6)अंर्–रआहुस्तग़्ना(7)इन्–न इला रब्बिकर् रुज्आ(8)अ–रऐ–तल् लज़ी यन्हा(9) अ़ब्दन् इज़ा स़ल्ला (10)अ–रऐ–त इन् का–न अ़लल्हुदा(11)औ अ–म–र बित्तक़्वा(12)अ–रऐ–त इन् कज़्ज़–ब व त–वल्ला(13)अ–लम् यअ़्लम् बिअन्नल्ला–ह यरा(14)कल्ला लइल्लम् यन्तहि ल–नस्फ़–अ़म् बिन्नासि़–यति(15)नासि–यतिन् काज़ि–बतिन् ख़ातिअ(16)फ़ल्–यद्अु नादियः(17) स–नद्अुज़् ज़बानियः(18)कल्ला ला तुतिअ़्हु वस्जुद वक़्तरिब्(19)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

पढ़ो अपने रब के नाम से (फ़ा2) जिसने पैदा किया।(1) (फ़ा3) आदमी को ख़ून की फुटक से बनाया।(2) पढ़ो (फ़ा4) और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम।(3) जिसने क़लम से लिखना सिखाया।(4) (फ़ा5) आदमी को सिखाया जो न जानता था।(5) (फ़ा6) हां हां बेशक आदमी सरकशी करता है।(6) इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया।(7) (फ़ा7) बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ फिरना है।(8) (फ़ा8) भला देखो तो जो मना करता है।(9) बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े।(10) (फ़ा9) भला देखो तो अगर वह हिदायत पर होता।(11) या परहेज़गारी बताता तो क्या ख़ूब था।(12) भला देखो तो अगर झुठलाया (फ़ा10) और मुँह फेरा।(13) (फ़ा11) तो क्या हाल होगा क्या न जाना (फ़ा12) कि अल्लाह देख* रहा है।(14) (फ़ा13) हां हां अगर बाज़ न आया (फ़ा14) तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खीचेंगे।(15) (फ़ा15) कैसी पेशानी झूठी ख़ताकार।(16) अब पुकारे अपनी मजलिस को।(17) (फ़ा16) अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं।(18) (फ़ा17) हां हां उसकी न सुनो और सजदा करो (फ़ा18) और हम से क़रीब हो जाओ।(19) (रुकूअ़ 21)

(फ़ा1) सूरह इक़रा इसको सूरह अ़लक़ भी कहते हैं यह सूरत मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 19 आयतें 92 कलिमे 280 हरफ़ हैं अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यह सूरत सब से पहले नाज़िल हुई और इसकी पहली पांच आयतें मा लम् यअ़्लम् तक ग़ारे हिरा में नाज़िल हुईं फ़रिश्ते ने आकर हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया इक़्रअ् यानी पढ़िये फ़रमाया हम पढ़े नहीं उसने सीना से लगा कर बहुत ज़ोर से दबाया फिर छोड़ कर इक़्रअ् कहा फिर आपने वही जवाब दिया तीन मर्तबा ऐसा ही हुआ फिर उसके साथ साथ आपने मालम् यअ़्लम् तक पढ़ः (फ़ा2) यानी क़िराअत की इब्तेदा अदबन अल्लाह तआ़ला के नाम से हो इस तक़्दीर पर आयत से साबित होता है कि क़िराअत की इब्तेदा बिस्मिल्लाह के साथ मुस्तहब है (फ़ा3) तमाम ख़ल्क़ को (फ़ा4) दोबारा क़िराअत के हुक्म से मुराद यह है कि तबलीग़ और उम्मत तालीम के लिए पढ़िये (फ़ा5) इससे किताबत की फ़ज़ीलत साबित हुई और दर हक़ीक़त किताबत में बड़े मुनाफ़ा हैं किताबत ही से उलूम ज़ब्त में आते हैं गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें और उनके अहवाल और उनके कलाम महफ़ूज़ रहते हैं किताबत नहीं होती तो दीन व दुनिया के काम क़ाइम न रह सकते (फ़ा6) आदमी से मुराद यहां हज़रत आदम हैं और जो उन्हें सिखाया इससे मुराद इल्म अस्मा और एक क़ौल यह है कि इन्सान से मुराद यहां सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं कि आपको अल्लाह तआ़ला ने जमीअ़ अशिया के उलूम अ़ता फ़रमाये (मुआ़लिम व ख़ाज़िन) (फ़ा7) यानी ग़फ़लत का सबब दुनिया की मुहब्बत और माल पर तकब्बुर है यह आयतें अबू जहल **(बक़िया सफ़हा 975 पर)**

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
إِنَّا أَنْزَلْنٰهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَا أَدْرٰكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

सूरतुल् क़दरि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लै–लतिल् क़दरि(1)व मां अद्रा–क मा लै–लतुल् क़द्र(2)लै–लतुल् क़दरि ख़ैरुम् मिन् अल्फ़ि शह्र(3)त–नज़्ज़लुल् मलाइ–कतु वर्रूहु फ़ीहा बि–इज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्(4)सलामुन् हि–य ह़त्ता मत्–लअ़िल् फ़ज्रि(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

बेशक हमने इसे (फ़ा2) शबे क़द्र में उतारा।(1) (फ़ा3) और तुमने क्या जाना क्या शबे क़द्र।(2) शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।(3) (फ़ा4) उसमें फ़रिश्ते और जिब्राईल उतरते हैं (फ़ा5) अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए।(4) (फ़ा6) वह सलामती है सुबह चमकने तक।(5) (फ़ा7) (रुकूअ़ 22)

(फ़ा1) सूरतुल क़द्र मदनी व बक़ौले मक्की है इसमें एक रुकूअ़ पांच आयतें तीस कलिमे 112 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ुरआन मजीद को लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ यकबारगी (फ़ा3) शबे क़द्र शरफ़ व बरकत वाली रात है इसको शबे क़द्र इस लिए कहते हैं कि इस शब में साल भर के अहकाम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाइका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है यह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइस इसको शबे क़द्र कहते हैं और यह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आमाले सालिहा मन्क़ूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उनकी क़द्र की जाती है इस लिए इसको शबे क़द्र कहते हैं अहादीस में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जिसने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी करके इबादत की अल्लाह तआ़ला उसके साल भर के गुनाह बख़्श देता है आदमी को चाहिए कि इस शब में कसरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे साल भर में शबे क़द्र एक मर्तबा आती है और रिवायाते कसीरा से साबित है कि वह रमज़ानुल मुबारक के अ़शरए अख़ीरा में होती है और अक्सर इसकी भी ताक़ रातों में से किसी रात में बाज़ उलमा के नज़दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है यही हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है इस रात के फ़ज़ाइले अ़ज़ीमा अगली आयतों में इरशाद फ़रमाये जाते हैं (फ़ा4) जो शबे क़द्र से ख़ाली हों उस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है हदीस शरीफ़ में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था इस तरह उसने हज़ार महीने गुज़ारे थे मुसलमानों को इससे तअ़ज्जुब हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने आपको शबे क़द्र अ़ता फ़रमाई और यह आयत नाज़िल की कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (अख़रजा इब्ने जरीर अ़न तरीक़े मुजाहिद) यह अल्लाह तआ़ला का अपने हबीब पर करम है कि आपके उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो उनका सवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़्यादा हो (फ़ा5) ज़मीन की तरफ़ और जो बन्दा खड़ा या बैठा यादे इलाही में मश्गूल होता है उसको सलाम करते हैं और उसके हक़ में दुआ व इस्तिग़फ़ार करते हैं (फ़ा6) जो अल्लाह तआ़ला ने उस साल के लिए मुक़द्दर फ़रमाया (फ़ा7) बलाओं और आफ़तों से।

(बक़िया सफ़हा 970 पर) उसे काहे से बनाया।(18) पानी की बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अन्दाज़ों पर रखा।(19) (फ़ा18) फिर उसे रास्ता आसान किया।(20) (फ़ा19) फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया।(21) (फ़ा20) फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला।(22) (फ़ा21) कोई नहीं उसने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुआ था।(23) (फ़ा22) तो आदमी को चाहिये अपने खानों को देखे।(24) (फ़ा23) कि हमने अच्छी तरह पानी डाला।(25) (फ़ा24) फिर ज़मीन को ख़ूब चीरा।(26) तो उसमें उगाया अनाज।(27) और अंगूर और चारा।(28) और ज़ैतून और खजूर।(29) और घने बाग़ीचे।(30) और मेवे और दूब (घास)।(31) तुम्हारे फ़ाइदे को और तुम्हारे चौपायों के।(32) फिर जब आएगी वह कान फाड़ने वाली चिंघाड़।(33) (फ़ा25) उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई।(34) और माँ और बाप(35) और जोरू और बेटों से।(36) (फ़ा26) उनमें से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वही उसे बस है।(37) (फ़ा27) कितने मुंह उस दिन रौशन होंगे।(38) (फ़ा28) **(बक़िया सफ़हा 976 पर)**

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

सूरतुल् बय्यिनति

(मक्की है इस सूरह में 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

लम् यकुनिल् लज़ी–न क–फ़रू मिन् अह्लिल् किताबि वल्मुश्रिकी–न मुन्फ़क्की–न ह़त्ता तअ्ति–यहुमुल् बय्यिनः(1)रसूलुम् मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्–ह–र–तन्(2)फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमः(3) व मा त–फ़र्रक़ल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब इल्ला मिम् बअ़्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनः(4)व मा उमिरू इल्ला लियअ़्बुदुल्ला–ह मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न हु–नफ़ा–अ व युक़ीमुस्सला–त व यूअ्तुज़्ज़का–त व ज़ालि–क दीनुल् क़य्यिमः(5)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् अह्लिल्किताबि वल्मुश्रिकी–न फ़ी नारि जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा उलाइ–क हुम् शर्रुल् बरिय्यः(6)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ–क हुम् ख़ैरुल् बरियः(7)जज़ाउहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्ति–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ज़ालि–क लिमन् ख़शि–य रब्बः(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

किताबी काफ़िर (फ़ा2) और मुशरिक (फ़ा3) अपना दीन छोड़ने को न थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आए।(1) (फ़ा4) वह कौन वह अल्लाह का रसूल (फ़ा5) कि पाक सहीफ़े पढ़ता है।(2) (फ़ा6) उन में सीधी बातें लिखी हैं।(3) (फ़ा7) और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बाद इसके कि वह रौशन दलील (फ़ा8) उनके पास तशरीफ़ लाए।(4) (फ़ा9) और उन लोगों को तो (फ़ा10) यही हुक्म हुआ कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अ़क़ीदा लाते (फ़ा11) एक तरफ़ के होकर (फ़ा12) और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और यह सीधा दीन है।(5) बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुशरिक सब जहन्नम की आग में हैं हमेशा उसमें रहेंगे वही तमाम मख़्लूक़ में बदतर हैं।(6) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं।(7) उनका सिला उनके रब के पास बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी (फ़ा13) और वह उस से राज़ी (फ़ा14) यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे।(8) (फ़ा15) (रुकूअ़ 23)

(फ़ा1) सूरह लम यकुन् इसको सूरह बय्यिना भी कहते हैं जम्हूर के नज़दीक यह सूरत मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत यह है कि मक्की है इस सूरत में एक रुकूअ़ आठ आयतें 94 कलिमे 399 हरफ़ हैं (फ़ा2) यहूद व नसारा (फ़ा3) बुत परस्त (फ़ा4) यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हों क्योंकि हुज़ूरे अक़दस अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात की तशरीफ़ आवरी से पहले यह तमाम यही कहते थे कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वह नबी मौऊद तशरीफ़ फ़रमा न हों जिनका ज़िक्र तौरेत व इन्जील में है (फ़ा5) यानी सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा6) यानी क़ुरआन मजीद (फ़ा7) हक़ अ़द्ल की (फ़ा8) यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा9) मुराद यह है कि पहले से तो सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि जब नबी मौऊद तशरीफ़ लायें तो हम उन पर ईमान लायेंगे लेकिन जब वह नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हुए तो बाज़ तो आप पर ईमान ला[illegible] और बाज़ हसदन व इनादन कुफ़्र इख़्तियार किया (फ़ा10) तौरेत व इन्जील **(बक़िया सफ़हा 951 पर)**

سُوۡرَةُ الزِّلۡزَالِ مَدَنِيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

إِذَا زُلۡزِلَتِ الۡأَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ۝ وَأَخۡرَجَتِ الۡأَرۡضُ أَثۡقَالَهَا ۝ وَقَالَ الۡإِنۡسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوۡمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخۡبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوۡحَىٰ لَهَا ۝ يَوۡمَئِذٍ يَصۡدُرُ النَّاسُ أَشۡتَاتًا لِيُرَوۡا أَعۡمَالَهُمۡ ۝ فَمَنۡ يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَرَهُ ۝ وَمَنۡ يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

सूरतुज़् ज़िल्ज़ालि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

इज़ा ज़ुल्ज़ि–लतिल् अर्ज़ु ज़िल्ज़ा–लहा(1)व अख़्र–जतिल् अर्ज़ु अस्क़ा–लहा(2)व क़ालल् इन्सानु मा लहा(3)यौ–मइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बा–रहा(4)बि–अन्–न रब्ब–क औह़ा लहा(5) यौ–मइज़िंय्यस्दुरुन् नासु अश्तातल् लियुरौ अअ़्मा–लहुम्(6)फ़मंय्यअ़्–मल् मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यर:(7)व मंय्यअ़्मल् मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् शर्रंय्यर:(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब ज़मीन थरथरा दी जाए (फ़ा2) जैसा उसका थरथराना ठहरा है।(1) (फ़ा3) और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे।(2) (फ़ा4) और आदमी कहे इसे क्या हुआ।(3) (फ़ा5) उस दिन वह अपनी ख़बरें बताएगी।(4) (फ़ा6) इस लिए कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा।(5) (फ़ा7) उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे (फ़ा8) कई राह होकर (फ़ा9) ताकि अपना किया(6) (फ़ा10) दिखाये जायें। तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।(7) और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसेदेखेगा।(8) (फ़ा11)(रुकूअ़ 24)

(फ़ा1) सूरह इज़ाज़ुल् ज़िलत जिसको सूरए ज़लज़ला भी कहते हैं मक्की व बक़ौले मदनी है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 35 कलिमे और 139 हरफ़ हैं। (फ़ा2) क़ियामत क़ाइम होने के नज़दीक या रोज़े क़ियामत (फ़ा3) और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे हर चीज़ टूट फूट जाए (फ़ा4) यानी ख़ज़ाने और मुर्दे जो इसमें हैं वह सब निकल कर बाहर आ पड़ें (फ़ा5) कि ऐसी मुज़तरिब हुई और इतना शदीद ज़लज़ला आया कि जो कुछ उसके अन्दर था सब बाहर फेंक दिया (फ़ा6) और जो नेकी बदी इस पर की गई सब बयान करेगी हदीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औरत ने जो कुछ इस पर किया उसकी गवाही देगी कहेगी फ़लां रोज़ यह किया फ़लां रोज़ यह (तिर्मिज़ी) (फ़ा7) कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अ़मल इस पर किये गये हैं उनकी ख़बरें दें (फ़ा8) मौक़फ़ हिसाब से। (फ़ा9) कोई दहनी तरफ़ से होकर जन्नत की तरफ़ जाएगा कोई बायें जानिब से दोज़ख़ की तरफ़ (फ़ा10) यानी अपने आमाल की जज़ा (फ़ा11) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उसके नेक व बद आमाल दिखाये जायेंगे मोमिन को उसकी नेकियां और बदियां दिखा कर अल्लाह तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद् कर दी जायेंगी क्योंकि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उसको अ़ज़ाब किया जाएगा मुहम्मद बिन कअ़ब करज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वह उसकी जज़ा दुनिया ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुनिया से निकलेगा तो उसके पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुनिया में पाएगा तो आख़िरत में उसके साथ कोई बदी न होगी इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के हक़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के।

(बक़िया सफ़हा 960 का) (फ़ा10) अल्लाह तआ़ला से। (फ़ा11) पन्द व नसीहत (फ़ा12) **शाने नुज़ूलः** बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा और उतबा बिन रबीआ़ के हक़ में नाज़िल हुई (फ़ा13) कि मर कर ही अ़ज़ाब से छूट सके (फ़ा14) ऐसा जीना जिससे कुछ भी आराम पाये (फ़ा15) ईमान लाकर या यह माना हैं उसने नमाज़ के लिए तहारत की इस तक़दीर पर आयत से नमाज़ के लिए वुज़ू और गुस्ल साबित होता है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा16) यानी तकबीर इफ़्तेताह कह कर (फ़ा17) पंजगाना **मसलाः** इस आयत से तकबीरे इफ़्तेताह साबित हुई और यह भी साब्ति हुआ कि वह नमाज़ का जुज्व नहीं है क्योंकि नमाज़ का इस पर अ़तफ़ किया गया है और यह भी साबित हुआ कि इफ़्तेताह नमाज़ का अल्लाह तआ़ला के हर नाम से जाइज़ है इस आयत की तफ़सीर में यह कहा गया कि त-ज़क्का से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ता में तकबीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है (तफ़सीर मदारिक व अहमदी) (फ़ा18) आख़िरत पर इसी लिए वह अमल नहीं करते जो वहां काम आयें (फ़ा19) यानी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना (फ़ा20) जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए।

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ﴿۸﴾ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

सूरतुल् आ़दियाति

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्आ़दियाति ज़ब्हन्(1)फ़ल्मूरियाति क़दहन्(2)फ़ल्मुग़ीराति सुब्हन्(3)फ़–अ–सर्–न बिही नक्अ़न्(4)फ़–व–सत्–न बिही जम्अ़न्(5)इन्नल् इन्सा–न लि–रब्बिही ल–कनूद(6)व इन्नहू अ़ला ज़ालि–क ल–शहीद(7)व इन्नहू लिहुब्बिल् ख़ैरि ल–शदीद(8)अ–फ़ला यअ्लमु इज़ा बुअ्सि–र मा फ़िल्क़ुबूरि(9)व हुस्सि–ल मा फ़िस्सुदूरि(10)इन्–न रब्बहुम् बिहिम् यौ–मइज़िल् ल–ख़बीर(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

क़सम उनकी जो दौड़ती हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई।(1) (फ़2) फिर पत्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर।(2) (फ़3) फिर सुबह होते ताराज करते हैं।(3) (फ़4) फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं।(4) फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं।(5) बेशक आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।(6) (फ़5) और बेशक वह उस पर (फ़6) खुद गवाह है।(7) और बेशक वह माल की चाहत में ज़रूर कर्रा (तेज़) है।(8) (फ़7) तो क्या नहीं जानता जब उठाए जायेंगे (फ़8) जो क़ब्रों में हैं।(9) और खोल दी जाएगी (फ़9) जो सीनों में है।(10) बेशक उनके रब को उस दिन (फ़10) उनकी सब ख़बर है।(11) (फ़11) (रुकूअ़ 25)

(फ़1) सूरए वलआ़दियात बक़ौल हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मक्की है और बक़ौल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा मदनी इसमें एक रुकूअ़ ग्यारह आयतें 40 कलिमे 163 हरफ़ हैं। (फ़2) मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उनके सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। (फ़3) जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं (फ़4) दुश्मन को (फ़5) कि उसकी निअ़मतों से मुकर जाता है। (फ़6) अपने अ़मल से। (फ़7) निहायत क़वी व तवाना है और इबादत के लिए कमज़ोर। (फ़8) मुर्दे (फ़9) वह हक़ीक़त या वह नेकी व बदी। (फ़10) यानी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसला का दिन है (फ़11) जैसी कि हमेशा है तो उन्हें आमाले नेक व बद का बदला देगा।

(बक़िया सफ़हा 953 का) के सामने है तो चाहिए कि सूरह इ-ज़श्-शम्सु कुव्विरत् और सूरह इज़स्समाउन् फ़-तर-त् और सूरह इ-ज़स्-समाउन् शक़्क़त् पढ़े (तिर्मिज़ी) (फ़2) यानी आफ़ताब का नूर ज़ाइल हो जाये (फ़3) बारिश की तरह आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे। (फ़4) और गुबार की तरह हवा में उड़ते फिरें। (फ़5) जिनके हमल को दस महीने गुज़र चुके हों और ब्याहने का वक़्त क़रीब आ गया हो। (फ़6) न उनका कोई चराने वाला हो न निगराँ उस रोज़ की दहशत का यह आलम हो और लोग अपने हाल में ऐसे मुब्तला हों कि उनकी परवाह करने वाला कोई न हो। (फ़7) रोज़े क़ियामत बाद बअ़्स कि एक दूसरे से बदला लें फिर ख़ाक कर दिये जायें। (फ़8) फिर वह ख़ाक हो जायें (फ़9) इस तरह कि नेक नेकों के साथ हों और बद बदों के साथ या यह माना कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जायें या यह कि अपने अ़मलों से मिला दी जायें या यह कि ईमानदारों की जानें हूरों के और काफ़िरों की जानें शयातीन के साथ मिला दी जायें। (फ़10) यानी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़न की गई हो जैसा कि अरब का दस्तूर था कि ज़मानए जाहिलियत में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर देते थे। (फ़11) यह सवाल क़ातिल की तौबीख़ के लिए है ताकि वह लड़की जवाब दे कि मैं बे गुनाह मारी गई (फ़12) जैसे ज़बह की हुई बकरी के जिस्म से खाल खींच ली जाती है (फ़13) दुश्मनाने ख़ुदा के लिए (फ़14) अल्लाह तआ़ला के प्यारों के (फ़15) नेकी या बदी (फ़16) सितारों (फ़17) यह पांच सितारे हैं जिन्हें ख़मसा मुतहय्यरा कहते हैं ज़ुहल मुश्तरी मिर्रीख़ .ज़ुहरा उतारिद (कज़ा रु वीय अ़न अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु) (फ़18) और उसकी तारीकी हलकी पड़े (फ़19) और उसकी रौशनी ख़ूब फैले। (फ़20) क़ुरआन शरीफ़। (फ़21) हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम (फ़22) यानी आसमानों में फ़रिश्ते उसकी इताअ़त करते हैं। (फ़23) वहीए इलाही का (फ़24) हज़रत मुहम्म मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़25) जैसा कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहते हैं (फ़26) यानी जिबरील अमीन को उनकी असली सूरत में (फ़27) यानी आफ़ताब के जाय तुलूअ़ पर। (फ़28) और क्यों क़ुरआन से एराज़ करते हो (फ़29) यानी जिस को हक़ का इत्तेबाअ़ और उस पर क़ियाम मन्ज़ूर हो।

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿۳﴾ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿۴﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۶﴾
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿۹﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿۱۱﴾

सूरतुल् क़ारिअ़ति

(मक्की है इस सूरह में 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्क़ारि–अ़तु(1)मल्क़ारिअ़(2)व मा अद्रा–क मल्क़ारिअ़ः(3)यौ–म यकूनुन् नासु कल्फ़राशिल् मब्सूसि(4)व तकूनुल्जिबालु कल्अ़िह्निल् मन्फ़ूश(5)फ़–अम्मा मन् स़कुलत् मवाज़ीनुहू(6) फ़हु–व फ़ी अ़ी–शतिर् राज़ियः(7)व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू(8)फ़–उम्मुहू हावियः(9)व मा अद्रा–क मा हियः(10)नारुन् ह़ामियः(11)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

दिल दहलाने वाली।(1) क्या वह दहलाने वाली।(2) और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली।(3) (फ़ा2) जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतिंगे।(4) (फ़ा3) और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन।(5) (फ़ा4) तो जिस की तोलें भारी हुईं।(6) (फ़ा5) वह तो मन मानते ऐश में हैं।(7) (फ़ा6) और जिसकी तोलें हलकी पड़ें।(8) (फ़ा7) वह नीचा दिखाने वाली गोद में है।(9) (फ़ा8) और तूने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली।(10) एक आग शोले मारती।(11) (फ़ा9) (रुकूअ़ 26)

(फ़ा1) सूरए अलक़ारिअ़ा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 36 कलिमे 152 हरफ़ हैं। (फ़ा2) मुराद इससे क़ियामत है जिस की हौल व हैबत से दिल दहलेंगे और क़ारिअ़ा क़ियामत के नामों से एक नाम है। (फ़ा3) यानी जिस तरह पतिंगे शोअ़ला पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उनके लिए कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है यही हाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तेशार का होगा। (फ़ा4) जिसके अजज़ा मुतफ़र्रिक़ होकर उड़ते हैं यही हाल क़ियामत के हौल व दहशत से पहाड़ों का होगा। (फ़ा5) और वज़नदार अमल यानी नेकियां ज़्यादा हुईं। (फ़ा6) यानी जन्नत में मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जायेंगी तो अगर वह ग़ालिब हुईं तो उसके लिए जन्नत है और काफ़िर की बुराईयां बदतरीन सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जायेंगी और तौल हलकी पड़ेगी क्योंकि कुफ़्फ़ार के आमाल बातिल हैं उनका कुछ वज़न नहीं तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा (फ़ा7) बसबब इसके कि वह बातिल का इत्तेबाअ़ करता था। (फ़ा8) यानी उसका मस्कन आतिशे दोज़ख़ है (फ़ा9) जिसमें इन्तेहा की सोज़िश व तेज़ी है (अल्लाह तआ़ला उससे पनाह में रखे)।

(बक़िया सफ़हा 950 का) के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला होगा। (फ़ा10) उस दिन की हौल और दहशत से यह हाल कुफ़्फ़ार का होगा। (फ़ा11) जो मरने के बाद उठने के मुन्किर हैं जब उनसे कहा जाता है कि तुम मरने के बाद उठाये जाओगे तो (फ़ा12) यानी मौत के बाद फिर ज़िन्दगी की तरफ़ वापस किये जायेंगे। (फ़ा13) रेज़ा रेज़ा बिखरी हुई फिर भी ज़िन्दा किये जायेंगे। (फ़ा14) यानी अगर मौत के बाद ज़िन्दा किया जाना सही है और हम मरने के बाद उठाए गए तो उसमें हमारा बड़ा नुक़सान है क्योंकि हम दुनिया में उसकी तकज़ीब करते रहे यह मक़ूला उनका बतरीक़े इस्तेहज़ा था इस पर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को यह न समझो कि अल्लाह तआ़ला के लिए कुछ दुशवार है क्योंकि क़ादिरे बरहक़ पर कुछ भी दुशवार नहीं। (फ़ा15) नफ़ख़ए अख़ीरा (फ़ा16) जिससे सब जमा कर लिये जायेंगे और जब नफ़ख़ए अख़ीरा होगा। (फ़ा17) ज़िन्दा होकर। (फ़ा18) यह ख़िताब है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब क़ौम का तकज़ीब करना आपको शाक़ और नागवार गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने आपकी तस्कीन के लिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने अपनी क़ौम से बहुत तकलीफ़ें पाई थीं मुराद यह है कि अम्बिया को यह बातें पेश आती रहती हैं आप उससे ग़मगीन न हों। (फ़ा19) जो मुल्के शाम में तूर के क़रीब है (फ़ा20) और वह कुफ़्र व फ़साद में हद से गुज़र गया। (फ़ा21) कुफ़्र व शिर्क और मअ़सियत व नाफ़रमानी से (फ़ा22) यानी उसकी ज़ात व सिफ़ात की मअ़रेफ़त की तरफ़ (फ़ा23) उसके अ़ज़ाब से। (फ़ा24) यदे बैज़ा और अ़सा। (फ़ा25) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को (फ़ा26) यानी ईमान से एराज़ किया। (फ़ा27) फ़साद अंगेज़ी की। (फ़ा28) यानी जादूगरों को और अपने लश्करों को। (फ़ा29) यानी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं।

سُوۡرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُۙ حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَؕ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَۙ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَؕ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِؕ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَۙ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِۙ ثُمَّ لَتُسۡـئَلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ

सूरतुत्तकासुरि

(मक्की है इस सूरह में 17 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाकुमुत्तकासुरु(1)हत्ता ज़ुरतुमुल् मकाबिर(2)कल्ला सौ–फ तअ्–लमून(3)सुम्–म कल्ला सौ–फ तअ्–लमून(4)कल्ला लौ तअ्–लमू–न अिल्मल् यक़ीन(5)ल–त–र–वुन्नल् जहीम(6)सुम्–म ल–त–र–वुन्नहा अैनल् यक़ीन(7)सुम्–म लतुस्–अलुन्–न यौ–मइज़िन् अनिन् नअ़ीम(8)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा।(1) (फ़ा2) माल की ज़्यादा तलबी ने। (फ़ा3) यहां तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा।(2) (फ़ा4) हां हां जल्द जान जाओगे।(3) (फ़ा5) फिर हां हां जल्द जान जाओगे।(4) (फ़ा6) हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मुहब्बत न रखते।(5) (फ़ा7) बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे।(6) (फ़ा8) फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखोगे।(7) फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेअ़मतों से पुरसिश होगी।(8) (फ़ा9) (रुकूअ़ 27)

(फ़ा1) सूरह तकासुरु मक्की है इसमें एक रुकूअ़ आठ आयतें 28 कलिमे 120 हरफ़ हैं (फ़ा2) अल्लाह तआ़ला की ताअ़ात से (फ़ा3) इससे मालूम हुआ कि कसरते माल की हिर्स और इस पर मफ़ाख़रत मज़मूम है और इसमें मुब्तला होकर आदमी सआ़दते उख़रविया से महरूम रह जाता है। (फ़ा4) यानी मौत के वक़्त तक हिर्स तुम्हारे दामनगीर ख़ातिर रही हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुर्दे के साथ तीन होते हैं दो लौट आते हैं एक उस के साथ रह जाता है एक माल एक उसके अहल व अक़ारिब एक उसका अ़मल अ़मल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं। (बुख़ारी) (फ़ा5)नज़अ़ के वक़्त अपने इस हाल के नतीजए बद को (फ़ा6) क़ब्रों में (फ़ा7) और हिर्से माल में मुब्तला होकर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते (फ़ा8) मरने के बाद (फ़ा9) जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़ता फ़रमाई थीं सेहत व फ़राग़ व अमन व ऐश व माल वग़ैरह जिन से दुनिया में लज़्ज़तें उठाते थे पूछा जाएगा यह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं उनका क्या शुक्र अदा किया और तर्के शुक्र पर अज़ाब किया जाएगा।

(बक़िया सफ़हा 969 का) के हक़ में नाज़िल हुईं उसको कुछ माल हाथ आ गया था तो उस ने लिबास और सवारी और खाने पीने में तकल्लुफ़ात शुरू किये और उसका गुरूर और तकब्बुर बहुत बढ़ गया (फ़ा8) यानी इन्सान को यह बात पेशे नज़र रखनी चाहिए और समझना चाहिए कि उसे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करना है तो सरकशी व तुग़ियान और गुरूर व तकब्बुर का अन्जाम अ़ज़ाब होगा (फ़ा9) **शाने नुज़ूलः** यह आयत भी अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई उसने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ने से मना किया था और लोगों से कहा कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (मआ़ज़ल्लाह) गर्दन पाँव से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा फिर वह इसी इरादए फ़ासिदा से हुज़ूर के नमाज़ पढ़ते में आया और हुज़ूर के क़रीब पहुंच कर उलटे पाँव पीछे भागा हाथ आगे बढ़ाए हुए जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है चेहरा का रंग उड़ गया आज़ा कांपने लगे लोगों ने कहा क्या हाल है कहने लगा मेरे और मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दर्मियान एक ख़न्दक़ है जिसमें आग भरी हुई है और दहशतनाक परिन्द बाज़ू फैलाए हुए हैं सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका उज़्व उज़्व जुदा कर डालते (फ़ा10) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को (फ़ा11) ईमान लाने से (फ़ा12) अबू जहल ने (फ़ा13) उसके फ़ेअ़्ल को पस जज़ा देगा (फ़ा14) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ईज़ा और आपकी तकज़ीब से (फ़ा15) और उसको जहन्नम में डालेंगे। (फ़ा16) **शाने नुज़ूलः** जब अबू जहल ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ से मना किया तो हुज़ूर ने उसको सख़्ती से झिड़क दिया इस पर उसने कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं ख़ुदा की क़सम मैं आपके मुक़ाबिल नौजवान सवारों और पैदलों से उस जंगल को भर दूंगा आप जानते हैं कि मक्का मुकर्रमा में मुझ से ज़्यादा बड़े जत्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है। (फ़ा17) यानी अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को हदीस शरीफ़ में है कि अगर वह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़रिश्ते उसको बिलएलान गिरिफ़्तार करते (फ़ा18) यानी नमाज़ पढ़ते रहो।

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

सूरतुल् अ़स्रि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

वल्अ़स्रि(1)इन्नल्इन्सा–न लफ़ी ख़ुस्र(2)इल्लल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस़्सालिह़ाति व तवास़ौ बिल्ह़क़्क़ि व तवास़ौ बिस़्स़ब्रि(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

उस ज़मानए महबूब की क़सम।(1) (फ़2) बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है।(2) (फ़3) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की (फ़4) और एक दूसरे को सब्र की वसीयत की।(3) (फ़5) (रुकूअ़ 28)

(फ़1) सूरए वलअ़स्र जम्हूर के नज़दीक मक्की है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें चौदह कलिमे 68 हरफ़ हैं। (फ़2) अ़स्र ज़माना को कहते हैं और ज़माना चूंकि अजाइबात पर मुश्तमिल है इसमें अहवाल का तग़य्युर व तबद्दुल नाज़िर के लिए इबरत का सबब होता है और यह चीज़ें ख़ालिके हकीम की कुदरत व हिकमत और उसकी वहदानियत पर दलालत करती हैं इस लिए हो सकता है कि ज़माना की क़सम मुराद हो और अ़स्र उस वक़्त को भी कहते हैं जो गुरूब से क़बल होता है हो सकता है कि ख़ासिर के हक़ में उस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाये जैसा कि राबेह के हक़ में ज़ुहा यानी चाश्त की क़सम ज़िक्र फ़रमाई गई और एक क़ौल यह भी है कि अ़स्र से नमाज़े अ़स्र मुराद हो सकती है जो दिन की इबादतों में सब से पिछली इबादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह तफ़सीर वहीं है जो हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माना से मख़्सूस ज़माना सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुराद है जो बड़ी ख़ैर व बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़्यादा फ़ज़ीलत व शरफ़ वाला है अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि ला उक़्सिमु बि–हाज़ल् ब–लदि में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि ल–अ़म्रु–क में आपकी उमर शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और उसमें शाने महबूबियत का इज़्हार है (फ़3) कि उसकी उम्र जो उसका रासुल माल है और असल पूंजी है वह हर दम घट रही है। (फ़4) यानी ईमान व अ़मले सालेह की (फ़5) इन तकलीफ़ों और मुशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं यह लोग बफ़ज़्ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्योंकि उनकी जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअ़त में गुज़री तो वह नफ़ा पाने वाले हैं।

(बक़िया सफ़हा 970 का) हंसते ख़ुशियां मनाते।(39) (फ़29) और कितने मुँहों पर उस दिन गर्द पड़ी होगी।(40) उन पर सियाही चढ़ रही है।(41) (फ़30) यह वही हैं काफ़िर बदकार।(42) (रुकूअ़ 5)

(फ़1) सूरह अ़बस मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 42 आयतें 130 कलिमे 533 हरफ़ हैं। (फ़2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (फ़3) यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम। **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उतबा बिन रबीआ़ अबू जहल बिन हिशाम और अ़ब्बास बिन अ़ब्दुलमुत्तलिब और उबय बिन ख़लफ़ और उमैया बिन ख़लफ़ अशराफ़े कुरैश को इस्लाम की दावत फ़रमा रहे थे इस दर्मियान में अब्दुल्लाह उम्मे मकतूम नाबीना हाज़िर हुए और उन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बार बार निदा करके अ़र्ज़ किया कि जो अल्लाह तआ़ला ने आपको सिखाया है मुझे तालीम फ़रमाइये इब्ने उम्मे मकतूम ने यह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं इससे क़तअ़े कलाम होगा यह बात हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गिराँ गुज़री और आसार नागवारी चेहरए अक़दस पर नुमायां हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी दौलत सराए अक़दस की तरफ़ वापस हुए इस पर यह आयात नाज़िल हुईं और नाबीना फ़रमाने में अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम की मअ़ज़ूरी की तरफ़ इशारा है कि क़तअ़े कलाम उनसे इस वजह से वाक़ेअ़ हुआ इस आयत के नुज़ूल के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम का इकराम फ़रमाते थे। (फ़4) गुनाहों से आपका इरशाद सुन कर (फ़5) अल्लाह तआ़ला से और ईमान लाने से ब–सबब अपने माल के (फ़6) और उसके ईमान लाने की तमअ़ में उसके दरपै होते हो। (फ़7) ईमान लाकर और हिदायत पाकर क्योंकि आपके ज़िम्मा दावत देना और पयामे इलाही पहुंचा देना है (फ़8) यानी इब्ने उम्मे मकतूम (फ़9) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से (फ़10) ऐसा न कीजिये (फ़11) यानी आयाते क़ुरआन मख़्लूक़ के लिए नसीहत हैं (फ़12) और उससे पन्द पेज़ीर हो (फ़13) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (फ़14) रफ़ीउल क़द्र (फ़15) कि उन्हें पाकों के सिवा कुछ न छूए। (फ़16) अल्लाह तआ़ला के फ़रमांबरदार और वह फ़रिश्ते हैं जो उसको लौहे महफ़ूज़ से नक़ल करते हैं। (फ़17) **(बक़िया सफ़हा 977 पर)**

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ○ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهُ ۙ○ يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ○ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ○ وَمَا أَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ○ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ○ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْـِٕدَةِ ○ إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ○ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ○

सूरतुल् हु-मज़ति

(मक्की है इस सूरह में 9 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल् लिकुल्लि हु-म-ज़तिल् लु-मज़ति-नि(1)ल्लज़ी ज-म-अ़मालंव् व अद्-द-दहू(2)यह्सबु अन् न मा लहू अख़्-ल-दः(3)कल्ला लयुम्ब-ज़न्-न फ़िल्हु-त़-मति(4)व मा अद्रा-क मल्हु-त-मः(5)नारुल्लाहिल् मू-क़्-दतु(6)ल्लती तत्तलिअ़ु अ़लल् अफ़्-इदः(7)इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन्(8)फ़ी अ़-मदिम् मु-मद्-द-दः(9)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ख़राबी है उसे के लिए जो लोगों के मुँह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे।(1) (फ़ा2) जिसनें माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा।(2) क्या यह समझता है कि उसका माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा।(3) (फ़ा3) हरगिज़ नहीं ज़रूर ज़रूर वह रौंदने वाली में फेंका जाएगा।(4) (फ़ा4) और तूने क्या जाना क्या रौंदने वाली।(5) अल्लाह की आग कि भड़क रही है।(6) (फ़ा5) वह जो दिलों पर चढ़ जाएगी।(7) (फ़ा6) बेशक वह उन पर बन्द कर दी जाएगी।(8) (फ़ा7) लम्बे लम्बे सुतूनों में।(9) (फ़ा8) (रुकूअ़ 29)

(फ़ा1) सूरह हमज़ा मक्की है इसमें एक रुकूअ़ नौ आयतें तीस कलिमे 130 हरफ़ हैं (फ़ा2) यह आयतें उन कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुईं जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके असहाब पर ज़बाने तअ़्न खोलते थे और उन हज़रात की ग़ीबत करते थे मिस्ल अख़नस बिन शरीक़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिए आ़म है (फ़ा3) मरने न देगा जो वह माल की मुहब्बत में मस्त है और अ़मले सालेह की तरफ़ इल्तेफ़ात नहीं करता। (फ़ा4) यानी जहन्नम के इस दरका में जहां आग हड्डियां पसलियां तोड़ डालेगी। (फ़ा5) और कभी सर्द नहीं होती हदीस शरीफ़ में है जहन्नम की आग हज़ार बरस धूंकी गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई फिर हज़ार बरस धूंकी गई ता आंकि सफ़ेद हो गई फिर हज़ार बरस धूंकी गई हत्ता कि सियाह हो गई तो वह सियाह है अंधेरी (तिर्मिज़ी) (फ़ा6) यानी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी दिल ऐसी चीज़ हैं जिनको ज़रा सी भी गर्मी की ताब नहीं तो जब आतिशे जहन्नम का उन पर इस्तीला हेगा और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा दिलों को जलाना इस लिए है कि वह मक़ाम हैं कुफ़्र और अक़ाइदे बातिला व निय्याते फ़ासिदा के। (फ़ा7) यानी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जायेंगे। (फ़ा8) यानी दरवाज़ों की बन्दिश आतशीं लोहे के सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह माना बयान किये हैं कि दरवाज़े बन्द करके आतशीं सुतूनों से उनके हाथ पाँव बांध दिये जायेंगे।

(बक़िया सफ़हा 976 का) कि अल्लाह तआ़ला की कसीर निअ़मतों और बे निहायत एहसानों के बावजूद कुफ़्र करता है। (फ़ा18) कभी नुत्फ़ा की शक्ल में कभी अ़लक़ा की सूरत में कभी मुज़्ग़ा की शान में तकमीले आफ़रीनश तक। (फ़ा19) मां के पेट से बर-आमद होने का। (फ़ा20) कि बाद मौत बे इज़्ज़त न हो। (फ़ा21) यानी बाद मौत हिसाब व जज़ा के लिए फिर उसके वास्ते ज़िन्दगानी मुक़र्रर की। (फ़ा22) उसके रब का यानी काफ़िर ईमान लाकर हुक्मे इलाही को बजा न लाया। (फ़ा23) जिन्हें खाता है और उसकी हयात का सबब हैं कि उनमें उसके रब की क़ुदरत ज़ाहिर है किस तरह जुज़्वे बदन होते हैं और किस निज़ामे अ़जीब से काम में आते हैं और किस तरह रब्बे अ़ज़्ज़ व जल्ल अ़ता फ़रमाता है उन हिकमतों का बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा24) बादल से। (फ़ा25) यानी क़ियामत के नफ़ख़ए सानिया की हौलनाक आवाज़ जो मख़्लूक़ को बहरा कर देगी। (फ़ा26) उनमें से किसी की तरफ़ मुल्तफ़ित न होगा अपनी ही पड़ी होगी। (फ़ा27) क़ियामत का हाल और उसके अहवाल बयान फ़रमाने के बाद मुकल्लिफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वह दो क़िस्म हैं सईद और शक़ी जो सईद हैं उनका हाल इरशाद होता है। (फ़ा28) नूरे ईमान से या शब की इबादतों से या वुज़ू के आसार से। (फ़ा29) अल्लाह तआ़ला की निअ़मत व करम और उसकी रज़ा पर उसके बाद अशक़िया का हाल बयान फ़रमाया जाता है। (फ़ा30) ज़लील हाल वहशत ज़दा सूरत।

سُوۡرَةُ الۡفِیۡلِ مَکِّیَّۃٌ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ فَعَلَ رَبُّکَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِیۡلِ ○ اَلَمۡ یَجۡعَلۡ کَیۡدَهُمۡ فِیۡ تَضۡلِیۡلٍ ○ وَّ اَرۡسَلَ عَلَیۡهِمۡ طَیۡرًا اَبَابِیۡلَ ○ تَرۡمِیۡهِمۡ بِحِجَارَۃٍ مِّنۡ سِجِّیۡلٍ ○ فَجَعَلَهُمۡ کَعَصۡفٍ مَّاۡکُوۡلٍ ○

सूरतुल् फ़ीलि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम

अ-लम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिल्फ़ील(1)अ-लम् यज्-अ़ल् कै-दहुम् फ़ी तज़्लीलिंव्(2)व अर्स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील(3)तर्मीहिम् बिहिजा-रतिम् मिन् सिज्जीलिन्(4) फ़-ज-अ़-लहुम् क-अ़स्फ़िम् मअ्कूल(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ महबूब क्या तुमने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया।(1) (फ़ा2) क्या उनका दाँव तबाही में न डाला।(2) और उन पर परिन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं।(3) (फ़ा3) कि उन्हें कंकर के पत्थरों से मारते।(4) (फ़ा4) तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)(5) (फ़ा5) (रुकूअ़ 30)

(फ़ा1) सूरतुल फ़ील मक्की है इसमें एक रुकूअ़ पांच आयतें बीस कलिमे 96 हरफ़ हैं (फ़ा2) हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उसका लश्कर है अब्रहा यमन व हबशा का बादशाह था उसने सनआ़ में एक कनीसा (इबादत ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि हज करने वाले बजाए मक्का मुकर्रमा के यहीं आयें और उसी कनीसा का तवाफ़ करें अरब के लोगों को यह बात बहुत शाक़ थी क़बीला बनी कनाना के एक शख़्स ने मौक़ा पाकर उस कनीसा में क़ज़ाए हाजत की और उसको नजासत से आलूदा कर दिया इस पर अब्रहा को बहुत तैश आया और उसने कअ़बा को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर लेकर जिसमें बहुत से हाथी थे और उनका पेश रौ एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा कोहे पैकर हाथी था जिसका नाम महमूद था अब्रहा ने मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर अहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये उनमें दो सौ ऊँट अब्दुल मुत्तलिब के भी थे अब्दुल मुत्तलिब अब्रहा के पास आये थे बहुत जसीम व बा शिकोह अब्रहा ने उनकी ताज़ीम की और अपने पास बिठाया और मतलब दरियाफ़्त किया आपने फ़रमाया मेरा मतलब यह है कि मेरे ऊँट वापस किये जायें अब्रहा ने कहा मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए कअ़बा को ढाने के लिए आया हूं और वह तुम्हारा तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मुहतरम मक़ाम है तुम उसके लिए तो कुछ नहीं कहते अपने ऊँटों के लिए कहते हो आपने फ़रमाया मैं ऊँटों ही का मालिक हूं उनही के लिए कहता हूं और कअ़बा का जो मालिक है वह ख़ुद उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा अब्रहा ने आपके ऊँट वापस कर दिये अब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को हाल सुनाया और उन्हें मशवरा दिया कि वह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाहगुज़ीन हों चुनांचे क़ुरैश ने ऐसा ही किया और अब्दुल मुत्तलिब ने दरवाज़ए कअ़बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में कअ़बा की हिफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ होकर आप अपनी क़ौम की तरफ़ चले गए अब्रहा ने सुबह तड़के अपने लश्करों को तैयारी का हुक्म दिया और हाथियों को तैयार किया लेकिन महमूद हाथी न उठा और कअ़बा की तरफ़ न चला जिस तरफ़ चलाते थे चलता था जब कअ़बा की तरफ़ उसका रुख़ करते थे बैठ जाता था अल्लाह तआ़ला ने छोटे छोटे परिन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े गिराते थे जिनसे वह हलाक हो जाते थे (फ़ा3) जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज आईं हर एक के पास तीन कंकरियां थीं दो दोनों पाँवों में एक मिनक़ार में (फ़ा4) जिस पर वह परिन्द संगरेज़ा छोड़ते वह संगरेज़ा उसके ख़ौद को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में से गुज़र कर ज़मीन पर पहुंचता हर संगरेज़ा पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़ा से हलाक किया गया (फ़ा5) जिस साल यह वाक़िआ़ हुआ उसी साल इस वाक़िआ़ से पचास रोज़ के बाद सय्यदे आलम हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत हुई।

(बक़िया सफ़हा 957 का) (फ़ा1) सूरह इनशक़्क़त जिसको सूरह इन्शिक़ाक़ भी कहते हैं मक्की है इसमें एक रुकूअ़ 25 आयतें 107 कलिमात 430 हरफ़ हैं (फ़ा2) क़ियामत क़ाइम होने के वक़्त (फ़ा3) अपने शक़ होने के मुतअ़ल्लिक़ और उसकी इताअ़त करे (फ़ा4) और उस पर कोई इमारत और पहाड़ बाक़ी न रहे। (फ़ा5) यानी उसके बतन में ख़ज़ाने और मुर्दे सब को बाहर (फ़ा6) अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फेंक देने के मुतअ़ल्लिक़ और उसकी इताअ़त करे (फ़ा7) उस वक़्त इन्सान अपने अमल के नताइज देखेगा। (फ़ा8) यानी उसके हुज़ूर हाज़िरी के लिए मुराद इससे मौत है (मदारिक) (फ़ा9) और अपने अ़मल की जज़ा पाना (फ़ा10) और वह मोमिन है (फ़ा11) सहल हिसाब यह है कि इस पर उसके आमाल पेश किये जायें वह अपनी ताअ़त व मअ़सीयत को पहचाने फिर ताअ़त पर सवाब दिया जाये और मअ़सियत से तजावुज़ फ़रमाया जाये यह सहल हिसाब है न इसमें शिद्दते मुनाक़शा न यह कहा जाये कि ऐसा क्यों किया न उज़्र की **(बक़िया सफ़हा 980 पर)**

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

सूरतु कुरैशिन

(मक्की है इस सूरह में 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लिईलाफ़ि कुरैशिन्(1)ईलाफ़िहिम् रिह्‌ल–तश् शिताइ वस्सैफ़(2)फ़ल्यअ़बुदू रब्–ब हाज़ल्बैति (3)ल्लज़ी अत्–अ–महुम् मिन् जूअ़िंव् व आ–म–नहुम् मिन् ख़ौफ़(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)
इस लिए कि कुरैश को मैल दिलाया।(1) उनके जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मैल दिलाया।(2) (फ़ा2) तो उन्हें चाहिये इस घर के (फ़ा3) रब की बन्दगी करें।(3) जिसने उन्हें भूक में (फ़ा4) खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा।(4) (फ़ा5) (रुकूअ़ 31)

(फ़ा1) सूरतुल कुरैश बकौले असह मक्की है इसमें एक रुकूअ़ चार आयतें सत्तरह कलिमे तिहत्तर हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें बेशुमार हैं उनमें से एक निअ़मते ज़ाहिरा यह है कि उसने कुरैश को हर साल में दो सफ़रों की तरफ़ रग़बत दिलाई उनकी मुहब्बत उनमें डाली जाड़े के मौसम में यमन का सफ़र और गर्मी के मौसम में शाम का कि कुरैश तिजारत के लिए इन मौसमों में यह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग उन्हें अहले हरम कहते थे और उनकी इज़्ज़त व हुरमत करते थे यह अमन के साथ तिजारतें करते और फ़ाइदे उठाते और मक्का मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिए सरमाया बहम पहुंचाते जहां न खेती है न और अस्बाबे मआ़श अल्लाह तआ़ला की यह निअ़मत ज़ाहिर है और इससे फ़ाइदा उठाते हैं (फ़ा3) यानी कअ़बा शरीफ़ के (फ़ा4) जिसमें इन सफ़रों से पहले अपने वतन में खेती न होने के बाइस मुब्तला थे उन सफ़रों के ज़रीया से (फ़ा5) बसबबे हरम शरीफ़ के और ब-सबब अहले मक्का होने के कोई उनसे तअ़र्रुज़ नहीं करता बावजूदे कि अतराफ़ व हवाली में क़त्ल व ग़ारत होते रहते हैं क़ाफ़िले लुटते हैं मुसाफ़िर मारे जाते हैं या यह माना हैं कि उन्हें जज़ाम से अमन दी कि उनके शहर में उन्हें कभी जज़ाम न होगा या यह मुराद कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत से उन्हें ख़ौफ़े अ़ज़ीम से अमान अता फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 948 का) इस्तिफ़हाम के पैराया में बयान फ़रमाया यानी वह क्या अ़ज़ीमुश्शान बात है जिस में यह लोग एक दूसरे से पूछ गछ कर रहे हैं इसके बाद वह बात बयान फ़रमाई जाती है (फ़ा4) बड़ी ख़बर से मुराद या कुरआन है या सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और आपका दीन या मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का मसला। (फ़ा5) कि बाज़े तो क़त्तई इन्कार करते हैं बाज़े शक में हैं और कुरआने करीम को उन में से कोई तो सेहर कहता है कोई शेअ्‌र कोई कहानत और कोई और कुछ इसी तरह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई साहिर कहता कोई शायर कोई काहिन। (फ़ा6) इस तकज़ीब व इन्कार के नतीजा को इसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़जाइबे कुदरत में से चन्द चीज़ें ज़िक्र फ़रमाईं ताकि यह लोग उनकी दलालत से अल्लाह तआ़ला की तौहीद को जानें और यह समझें कि अल्लाह तआ़ला आलम को पैदा करने और उसके बाद उसको फ़ना करने और बाद फ़ना फिर हिसाब व जज़ा के लिए पैदा करने पर क़ादिर है। (फ़ा7) कि तुम इसमें रहो और वह तुम्हारी क़रारगाह हो (फ़ा8) जिनसे ज़मीन साबित व क़ाइम रहे (फ़ा9) मर्द व औरत (फ़ा10) तुम्हारे जिस्मों के लिए ताकि उससे कोफ़्त और तकान दूर हो और राहत हासिल हो। (फ़ा11) जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है (फ़ा12) कि तुम इसमें अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और अपनी रोज़ी तलाश करो। (फ़ा13) जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और कहंगी व बोसीदगी उन तक राह नहीं पाती मुराद उन चुनाईयों से सात आसमान हैं। (फ़ा14) यानी आफ़ताब जिसमें रौशनी भी है और गर्मी भी (फ़ा15) तो जिसने इतनी चीज़ें पैदा कर दीं वह इन्सान को मरने के बाद ज़िन्दा करे तो क्या तअ़ज्जुब नीज़ उन अशिया का पैदा करना हकीम का फ़ेअ्‌ल है और हकीम का फ़ेअ़ल हरगिज़ अ़बस और बेकार नहीं होता और मरने के बाद उठने और सज़ा व जज़ा के इन्कार से लाज़िम आता है मुन्किर के नज़दीक तमाम अफ़आ़ल अ़बस हों और अ़बस होना बातिल तो बअ़्स व जज़ा का इन्कार भी बातिल इस बुरहाने क़वी से साबित हो गया कि मरने के बाद उठना और हिसाब व जज़ा ज़रूर है इसमें शक नहीं। (फ़ा16) सवाब व अ़ज़ाब के लिए (फ़ा17) मुराद इससे नफ़ख़ए अख़ीरा है (फ़ा18) अपनी क़ब्रों से हिसाब के लिए मौक़फ़ की तरफ़ (फ़ा19) और उसमें राहें बन जायेंगी उन से मलायका उतरेंगे (फ़ा20) जिन की निहायत नहीं यानी हमेशा रहेंगे। (फ़ा21) जैसे अ़मल वैसी जज़ा यानी जैसा कुफ़्र बद तरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अ़ज़ाब उनको होगा

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝

सूरतुल् माउनि

(मक्की है इस सूरह में 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ–रऐ–तल् लजी यु–कज़िबु बिद्दीन(1)फ़–ज़लिकल् लज़ी यदुअ्–उल् यतीम(2)व ला यहुज़्जु अ़ला तआ़मिल् मिस्कीन(3)फ़वैलुल् लिल्मुसल्लीन(4)अल्लज़ी–न हुम् अ़न् सलातिहिम् साहून(5) अल्लज़ी–न हुम् युराऊ–न(6)व यम्–नऊ़नल् माऊ़न(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

भला देखो तो जो दीन को झुठलाता है।(1) (फ़ा2) फिर वह, वह है जो यतीम को धक्के देता है।(2) (फ़ा3) और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता।(3) (फ़ा4) तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है।(4) जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।(5) (फ़ा5) वह जो दिखावा करते हैं।(6) (फ़ा6) और बरतने की चीज़ (फ़ा7) मांगे नहीं देते।(7) (फ़ा8) (रुकूअ़ 32)

(फ़ा1) सूरतुल माऊन मक्की है और यह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई आ़स बिन वाइल के बारे में और निस्फ़ मदीना तय्येबा में अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में इसमें एक रुकूअ़ सात आयतें 25 कलिमे 125 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यानी हिसाब व जज़ा का इन्कार करता है बावजूद दलाइल वाज़ेह होने **शाने नुज़ूलः** यह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुईं (फ़ा3) और इस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उसका हक़ नहीं देता (फ़ा4) यानी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है इन्तेहा दर्जे का बख़ील है (फ़ा5) मुराद इससे मुनाफ़िक़ीन हैं तो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्योंकि उसके मोअ़तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आपको नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिए उठ बैठ लेते हैं और हक़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। (फ़ा6) इबादतों में आगे उनके बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है (फ़ा7) मिस्ल सूई व हांडी व प्याले के (फ़ा8) **मसलाः** उलमा ने फ़रमाया कि मुस्तहब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी हाजत से ज़्यादा रखे जिनकी हमसायों की हाजत होती है और उन्हें आ़रियतन दिया करे।

(बक़िया सफ़हा 978 का) तलब हो न उस पर हुज्जत क़ाइम की जाये क्योंकि जिससे मुतालबा किया गया उसे कोई उज़्र हाथ न आएगा और वह कोई हुज्जत न पायेगा रुसवा होगा (अल्लाह तआ़ला मुनाक़शए हिसाब से पनाह दे) (फ़ा12) घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं ख़्वाह वह हूरों में से हों या इन्सानों में से (फ़ा13) अपनी इस कामयाबी पर (फ़ा14) और वह काफ़िर है जिसका दाहिना हाथ तो उसकी गर्दन के साथ मिला कर तौक़ में बांध दिया जाएगा और बायां हाथ पसे पुश्त कर दिया जाएगा इसमें उसका नामए आमाल दिया जाएगा इस हाल को देख कर वह जान लेगा कि वह अहले नार में से है तो (फ़ा15) और या सुबूराह कहेगा सुबूर के माना हलाकत के हैं (फ़ा16) दुनिया के अन्दर (फ़ा17) अपनी ख़्वाहिशों और शहूवतों में और मुतकब्बिर व मग़रूर (फ़ा18) अपने रब की तरफ़ और वह मरने के बाद उठाया न जाएगा। (फ़ा19) ज़रूर अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करेगा और मरने के बाद उठाया जाएगा और हिसाब किया जाएगा। (फ़ा20) जो सुर्ख़ी के बाद नुमूदार होता है और जिसके ग़ाइब होने पर इमाम साहब के नज़दीक वक़्ते इशा शुरू होता है यही क़ौल है कसीर सहाबा का और बाज़ उलमा शफ़क़ से सुर्ख़ी मुराद लेते हैं। (फ़ा21) मिस्ल जानवरों के जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और शब में अपने आशियानों और ठिकानों की तरफ़ चले आते हैं और मिस्ल तारीकी के और सितारों और उनके आमाल के जो शब में किये जाते हैं मिस्ल तहज्जुद के (फ़ा22) और उसका नूर कामिल हो जाए और यह अय्यामे बैज़ यानी तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं तारीख़ों में होता है। (फ़ा23) यह ख़िताब या तो इन्सानों को है इस तक़दीर पर माना यह हैं कि तुम्हें हाल के बाद हाल पेश आएगा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि मोत के शदाइद व अहवाल फिर मरने के बाद उठना फिर मौक़िफ़ हिसाब में पेश होना और यह भी कहा गया है कि इन्सान के हालात में तदरीज है एक वक़्त दूध पीता बच्चा होता है फिर दूध छूटता है फिर लड़कपन का ज़माना आता है फिर जवान होता है फिर जवानी ढलती है फिर बूढ़ा होता है और एक क़ौल यह है कि यह ख़िताब नबीए करीम **(बक़िया सफ़हा 983 पर)**

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

सूरतुल् कौ–सरि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अअ्तैनाकल् कौसर(1)फ़–सल्लि लि–रब्बि–क वन्हर(2)इन्–न शानि–अ–क हुवल् अब्तर(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ महबूब बेशक हमने तुम्हें बेशुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं।(1) (फ़ा2) तो तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो (फ़ा3) और कुरबानी करो।(2) (फ़ा4) बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर ख़ैर से महरूम है।(3) (फ़ा5) (रुकूअ़ 33)

(फ़ा1) सूरतुल कौसर जम्हूर के नज़दीक मदनी है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें दस कलिमे बयालीस हरफ़ हैं। (फ़ा2) और फ़ज़ाइल कसीरा इनायत करके तमाम ख़ल्क़ पर अफ़ज़ल किया हुस्ने ज़ाहिर भी दिया हुस्ने बातिन भी नसब आली भी नबुव्वत भी किताब भी हिकमत भी इल्म भी शफ़ाअ़त भी हौज़े कौसर भी मक़ामे महमूद भी कसरते उम्मत भी आदाए दीन पर ग़लबा भी कसरते फ़ुतूह भी और बेशुमार निअ़मतें और फ़ज़ीलतें जिनकी निहायत नहीं। (फ़ा3) जिसने तुम्हें इज़्ज़त व शराफ़त दी (फ़ा4) उसके लिए उसके नाम पर बख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़बह करते है। इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (फ़ा5) न आप क्योंकि आपका सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा आपकी औलाद में भी कसरत होगी और आपके मुत्तबेईन से दुनिया भर जाएगी आपका ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा क़ियामत तक पैदा होने वाले आलिम और वाइज़ अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के साथ आपका ज़िक्र करते रहेंगे बे नाम व निशान और हर भलाई से महरूम तो आपके दुश्मन हैं **शाने नुज़ूलः** जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रज़न्द हज़रत क़ासिम का विसाल हआ तो कुफ़्फ़ार ने आपको अबतर यानी मुनक़तउन् नस्ल कहा और यह कहा कि अब उनकी नस्ल नहीं रही उनके बाद अब उनका ज़िक्र भी न रहेगा यह सब चर्चा ख़त्म हो जाएगा इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तकज़ीब की और उनका बालिग़ रद् फ़रमाया।

(बक़िया सफ़्हा 963 का) क़ुदरत को नहीं जानता इसके बाद उसका मक़ूला नक़्ल फ़रमाया। (फ़ा7) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अ़दावत में लोगों को रिशवतें दे देकर ताकि हुज़ूर को आज़ार पहुंचायें। (फ़ा8) यानी इसका यह गुमान है कि उसे अल्लाह तआ़ला ने नहीं देखा और अल्लाह तआ़ला उससे नहीं सवाल करेगा कि उसने यह माल कहां से हासिल किया किस काम में ख़र्च किया उसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि उसको इबरत हासिल करने का मौक़ा मिले (फ़ा9) जिनसे देखता है। (फ़ा10) जिससे बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है। (फ़ा11) जिनसे मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने और पीने और फूंकने में उनसे काम लेता है। (फ़ा12) यानी छातियों की कि पैदा होने के बाद उन से दूध पीता और ग़िज़ा हासिल करता रहा मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें ज़ाहिर व वाफ़िर हैं उनका शुक्र लाज़िम। (फ़ा13) यानी आमाल सालेहा बजा लाकर उन जलील नेअ़मतों का शुक्र अदा न किया उसको घाटी में कूदने से तअ़बीर फ़रमाया इस मुनासबत से कि उस राह में चलना नफ़्स पर शाक़ है। (अबुस्सऊद) (फ़ा14) और इसमें कूदना क्या यानी इससे उसके ज़ाहिरी मानी मुराद नहीं बल्कि उसकी तफ़सीर वह है जो अगली आयतों में इरशाद होती है। (फ़ा15) गुलामी से ख़्वाह इस तरह हो कि किसी गुलाम को आज़ाद कर दे या इस तरह कि मकातिब को इतना माल दे जिससे वह आज़ादी हासिल कर सके या किसी गुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या मदयून के रिहा कराने में इआ़नत करे और यह माना भी हो सकते हैं कि आमाले सालेहा इख़्तियार करके अपनी गर्दन अ़ज़ाबे आख़िरत से छुड़ाये (रूहुल बयान) ((फ़ा16) यानी क़हत व गिरानी के वक़्त कि उस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अ़ज़ीम का मूजिब होता है (फ़ा17) जो निहायत तंगदस्त और दरमांदा न उसके पास ओढ़ने को हो न बिछाने को हदीस शरीफ़ में है यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला जिहाद में सई करने वाले और बे तकान शब बेदारी करने वाले और मदाम रोज़ा रखने वाले की मिस्ल है। (फ़ा18) यानी यह तमाम अ़मल जब मक़बूल हैं कि अ़मल करने वाला ईमानदार हो और जब ही उसको कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं सब अ़मल बेकार (फ़ा19) मअ़सियतों से बाज़ रहने और ताअ़तों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बरदाश्त करने पर जिन में मोमिन मुब्तला हो। (फ़ा20) कि मोमिनी एक दूसरे के साथ शफ़क़त व मुहब्बत का बरताव करें (फ़ा21) जिन्हें उनके नामए आमाल दाहिने हाथ में दिये जायेंगे और अ़र्श के दाहिने जानिब से जन्नत में दाख़िल होंगे (फ़ा22) कि उन्हें उनके नामए आमाल बायें हाथ में दिये जायेंगे और अ़र्श के बायें जानिब से जहन्नम में दाख़िल किये जायेंगे (फ़ा23) कि न इसमें बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धुंआँ बाहर जा सके।

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

सूरतुल् काफ़िरून

(मक्की है इस सूरह में 6 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् या अय्युहल् काफ़िरून(1)ला अअ़्बुदु मा तअ़्बुदून(2)व ला अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ़्बुद(3)व ला अना आ़बिदुम् मा अ–बत्तुम्(4)व ला अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ़्बुद(5)लकुम् दीनुकुम् व लि–य दीन(6)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो।(1) (फ़ा2) न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो।(2) और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं।(3) और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न मैं पूजूंगा जो तुमने पूजा।(4) और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं।(5) तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन।(6) (फ़ा3) (रुकूअ़ 34)

(फ़ा1) सूरतुल काफ़िरून मक्की है इसमें एक रुकूअ़ छः आयतें 26 कलिमे 94 हरफ़ हैं शाने नुजूलः कुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि आप हमारे दीन का इत्तेबाअ़ कीजिये हम आपके दीन का इत्तेबाअ़ करेंगे एक साल आप हमारे मअ़्बूदों की इबादत करें एक साल हम आपके मअ़्बूद की इबादत करेंगे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की पनाह कि मैं उसके साथ ग़ैर को शरीक करूं कहने लगे तो आप हमारे किसी मअ़्बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आपकी तस्दीक़ कर देंगे और आपके मअ़्बूद की इबादत करेंगे इस पर यह सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए वहां कुरैश की वह जमाअ़त मौजूद थी हुजूर ने यह सूरत उन्हें पढ़कर सुनाई तो वह मायूस हो गए और हुजूर के और हुजूर के असहाब के दरपै ईज़ा हुए (फ़ा2) मुख़ातिब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इल्मे इलाही में ईमान से महरूम हैं (फ़ा3) यानी तुम्हारे लिए तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिए मेरी तौहीद और मेरा इख़्लास और मक़सूद इससे तहदीद है (व हाज़िहिल् आयतु मन्सूख़तुम बि–आयातिलक़िताल)

(बक़िया सफ़हा 965 का) आख़िरत से। (फ़ा13) यानी मिल्लते इस्लाम को (फ़ा14) यानी ऐसी ख़सलत जो उसके लिए दुशवारी व शिद्दत का सबब हो और उसे जहन्नम में पहुंचाए शाने नुजूलः यह आयतें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उमय्या बिन ख़लफ़ के हक़ में नाज़िल हुईं जिनमें से एक हज़रत सिद्दीक़े अतक़ा हैं और दूसरा उमय्या अशक़ा उमय्या बिन ख़लफ़ हज़रत बिलाल को जो उसकी मिल्क में थे दीन से मुनहरिफ़ करने के लिए तरह तरह की तकलीफ़ें देता था और इन्तेहाई ज़ुल्म और सख़्तियां करता था एक रोज़ हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि कि उमय्या ने हज़रत बिलाल को गरम ज़मीन पर डाल कर तपते हुए पत्थर उनके सीना पर रखे हैं और इस हाल में कलिमए ईमान उनकी ज़बान पर जारी है आपने उमय्या से फ़रमाया ऐ बद नसीब एक ख़ुदा परस्त पर यह सख़्तियां उसने कहा आपको इसकी तकलीफ़ नागवार हो तो ख़रीद लीजिये आपने गिराँ क़ीमत पर उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया इस पर यह सूरत नाज़िल हुई इसमें बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की कोशिश और उमय्या की और हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु रज़ाए इलाही के तालिब हैं उमय्या हक़ की दुश्मनी में अन्धा (फ़ा15) मर कर गोर में जाएगा या क़अ़रे जहन्नम में पहुंचेगा (फ़ा16) यानी हक़ और बातिल की राहों को वाज़ेह कर देना और हक़ पर दलाइल क़ाइम करना और अहकाम बयान फ़रमाना (फ़ा17) बतरीक़े लुज़ूम व दवाम (फ़ा18) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को (फ़ा19) ईमान से (फ़ा20) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यानी उसका ख़र्च करना रिया व नुमाइश से पाक है (फ़ा21) शाने नुजूलः जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत बिलाल को बहुत गिराँ क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा क्यों किया शायद बिलाल का उन पर कोई एहसान होगा जो उन्होंने इतनी गिराँ क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़ेअ़ूल महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए है किसी के एहसान का बदला नहीं और न उन पर हज़रत बिलाल वग़ैरह का कोई एहसान है हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत से लोगों को उनके इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया (फ़ा22) इस नेअ़मत व करम से जो अल्लाह तआ़ला उनको जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा।

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝

सूरतुन्नस्रि

(मक्की है इस सूरह में 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु(1)व रऐ-तन्ना-स यद्खुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा(2)फ़-सब्बिह् बि-ह़म्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर्हु इन्नहू का-न तव्वाबा(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

जब अल्लाह की मदद और फ़तह आए।(1) (फ़ा2) और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं।(2) (फ़ा3) तो अपने रब की सना करते हुए उसकी पाकी बोलो और उससे बख़्शिश चाहो (फ़ा4) बेशक वह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।(3) (फ़ा5) (रुकूअ़ 35)

(फ़ा1) सूरह नसूर मदनी है इसमें एक रुकूअ़ तीन आयतें 17 कलिमे 77 हरफ़ हैं (फ़ा2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए दुश्मनों के मुक़ाबला में इससे या आ़म फ़ुतूहाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़तहे मक्का। (फ़ा3) जैसा कि बादे फ़तहे मक्का हुआ कि लोग अक़तारे अर्ज़ से शौक़े गुलामी में चले आते थे और शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे (फ़ा4) उम्मत के लिए (फ़ा5) इस सूरत के नाज़िल होने के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व अतूबु इलैहि° की बहुत कसरत फ़रमाई हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि यह सूरत हज्जतुल विदाअ़ में ब-मक़ामे मिना नाज़िल हुई इसके बाद आयत अल्-यौमु अक्मल्तु लकुम् दी-नकुम् नाज़िल हुई इसके नाज़िल होने के बाद अस्सी रोज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ रखी फिर आयत अल्-कला-ल-तः नाज़िल हुई इसके बाद हुजूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर आयत वत्तक़ू यौमन् तुर्-जऊ-न फ़ीहि इलल्लाहि नाज़िल हुई इसके बाद हुजूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे इस सूरते मुबारका के नाज़िल होने के बाद सहाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुजूर दुनिया में ज़्यादा तशरीफ़ न रखेंगे चुनान्चे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सूरत सुनकर इसी ख़्याल से रोये इस सूरत के नाज़िल होने के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुतबा में फ़रमाया कि एक बन्दा को अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया चाहे दुनिया में रहे चाहे उसकी लिक़ा क़बूल फ़रमाए उस बन्दा ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की यह सुनकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया आप पर हमारी जानें हमारे माल हमारे आबा हमारी औलादें सब क़ुरबान।

(बक़िया सफ़हा 980 का) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है कि आप शबे मेअ़्राज एक आसमान पर तशरीफ़ ले गए फिर दूसरे पर इसी तरह दर्जा बदर्जा मर्तबए मनाज़िल क़ुर्ब में वासिल हुए बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि इस आयत में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल बयान फ़रमाया गया है माना यह हैं कि आप को मुशरिकीन पर फ़तह व ज़फ़र हासिल होगी और अन्जाम बहुत बेहतर होगा आप कुफ़्फ़ार की सरकशी और उनकी तकज़ीब से ग़मगीन न हों (फ़ा24) यानी अब ईमान लाने में क्या उज़्र है बावजूद दलाइल ज़ाहिर होने के क्यों ईमान लाते (फ़ा25) मुराद इससे सज्दए तिलावत है शाने नुज़ूलः जब सूरत इक़्रा में वस्जुद् वक़्तरिब् नाज़िल हुआ तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ कर सज्दा किया मोमिनीन ने आपके साथ सजदा किया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सजदा न किया उनके इस फ़ेअ़्ल की बुराई में यह आयत नाज़िल हुई कि कुफ़्फ़ार पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह सजदए तिलावत नहीं करते मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि सजदए तिलावत वाजिब सुनने वाले पर और हदीस से साबित है कि पढ़ने वाले सुनने वाले दोनों पर सजदा वाजिब हो जाता है क़ुरआने करीम में सजदा की चौदह आयतें हैं जिनको पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनने वाले ने सुनने का इरादा किया हो या न किया हो मसलाः सजदए तिलावत के लिए भी वही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिए मिस्ल तहारत और क़िब्ला रू होने और सतूरे औरत वग़ैरह के मसलाः सजदा के अव्वल व आख़िर अल्लाहु अकबर कहना चाहिए मसलाः इमाम ने आयते सजदा पढ़ी तो उस पर और मुक़तदियों पर और जो शख़्स नमाज़ में न हो और सुन ले उस पर सज्दा वाजिब है मसलाः सजदा की जितनी आयतें पढ़ी जायेंगी उतने ही सजदे वाजिब होंगे अगर एक ही आयत एक मजलिस में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज्दा वाजिब हुआ वत्तफ़सील फ़ी कुतबुलफ़िक़ह (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा26) क़ुरआन को और मरने के बाद उठने को (फ़ा27) कुफ़्र और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकज़ीब (फ़ा28) उनके कुफ़्र व एनाद पर।

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

सूरतुल् ल–हबि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तब्बत् यदा अबी ल–हबिंव् व तब्–ब(1)मा अग्ना अन्हु मा लुहू व मा क–सब(2)स–यस्ला नारन् जा–त ल–हबिंव्(3)वम्–र–अतुहू हम्मा–ल–तलह्–तबि(4)फ़ी जीदिहा हब्लुम् मिम् म–सद(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान व रहम वाला। (फ़ा1)
तबाह हो जायें अबू लहब के दोनों हाथ और वह तबाह हो ही गया।(1) (फ़ा2) उसे कुछ काम न आया उसका माल और न जो कमाया।(2) (फ़ा3) अब धंसता है लपट मारती आग में वह।(3) और उसकी जोरू (फ़ा4) लकड़ियों का गट्ठा सर पर उठाए।(4) उसके गले में खजूर की छाल का रस्सा।(5) (फ़ा5) (रुकूअ़ 36)

(फ़ा1) सूरह अबी लहब मक्की है इसमें एक रुकूअ् पांच आयतें 20 कलिमे 77 हरफ़ हैं **शाने नुजूलः** जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोहे सफ़ा पर अरब के लोगों को दावत दी हर तरफ़ से लोग आये और हुजूर ने उनसे अपने सिद्क़ व अमानत की शहादतें लेने के बाद फ़रमाया इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-बै-न यदय् अ़ज़ाबिन् शदीद इस पर अबू लहब ने हुजूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ क्या तुम ने हमें इस लिए जमा किया था इस पर यह सूरते शरीफ़ा नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जवाब दिया (फ़ा2) अबू लहब का नाम अब्दुल उज़्ज़ा है यह अब्दुलमुत्तलिब का बेटा और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था बहुत गोरा ख़ूबसूरत आदमी था इसी लिए उसकी कुन्नियत अबू लहब है और इसी कुन्नियत से वह मशहूर था दोनों हाथों से मुराद उसकी ज़ात है। (फ़ा3) यानी उसकी औलाद मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिए अपने माल व औलाद को फ़िदिया कर दूंगा इस आयत में इसका रद्द फ़रमाया गया कि यह ख़्याल ग़लत है उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं (फ़ा4) उम्मे जमील बिन्ते हरब बिन उमैया अबू सुफ़ियान की बहन जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निहायत अ़ेनाद व अ़दावत रखती थी और बावजूदेकि दौलतमन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अ़दावत इन्तेहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गट्ठा लाकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ता में डालती ताकि हुजूर को और हुजूर के असहाब को ईज़ा व तकलीफ़ हो और हुजूर की ईज़ा रेसानी उसका इतनी प्यारी थी कि वह उस काम में किसी दूसरे मदद लेना भी गवारा न करती थी (फ़ा5) जिससे कांटों का गट्ठा बांधती थी एक रोज़ यह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिए एक पत्थर पर बैठ गई एक फ़रिश्ते ने बहुक्मे इलाही उसके पीछे से उस गट्ठे को खींचा वह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वह मर गई

(बक़िया सफ़हा 955 का) निकाला जायेगा। (फ़ा9) और रोज़े जज़ा यानी क़ियामत के मुन्किर हैं। (फ़ा10) हद से गुज़रने वाला। (फ़ा11) उनकी निस्बत कि यह (फ़ा12) उसका कहना ग़लत है। (फ़ा13) उन मआ़सी और गुनाहों ने जो वह करते हैं यानी अपने आमाले बद की शामत से उनके दिल ज़ंग ख़ुर्दा और सियाह हो गए हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया जब बन्दा कोई गुनाह करता है उसके दिल में एक नुक़तए सियाह पैदा होता है जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वह नुक़ता बढ़ता है यहां तक कि तमाम क़ल्ब सियाह हो जाता है और यही रैन यानी वह ज़ंग है जिसका आयत में ज़िक्र हुआ। (तिर्मिज़ी) (फ़ा14) यानी रोज़े क़ियामत। (फ़ा15) जैसा कि दुनिया में उसकी तौहीद से महरूम रहे मसला इस आयत से साबित हुआ कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही की निअ़मत मुयस्सर आएगी क्योंकि महरूमी दीदार से कुफ़्फ़ार की वईद में ज़िक्र की गई और जो चीज़ कुफ़्फ़ार के लिए वईद व तहदीद हो वह मुसलमान के हक़ में साबित हो नहीं सकती तो लाज़िम आया कि मोमिनीन के हक़ में यह महरूमी साबित न हो हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब उसने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से महरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा (फ़ा16) अ़ज़ाब (फ़ा17) दुनिया में (फ़ा18) यानी मोमिनीन सादिक़ीन के आमाल नामे (फ़ा19) इल्लीईन सातवें आसमान में ज़ेरे अ़र्श है (फ़ा20) यानी उसकी शान अ़जीब अ़ज़मत वाली है इल्लीईन में उसमें उनके आमाल लिखे हैं

سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

सूरतुल् इख़्लासि

(मक्की है इस सूरह में 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् हुवल्लाहु अ-हद्(1)अल्लाहुस् स-मद(2)लम् यलिद् व लम् यूलद्(3)व लम् य-कुल् लहू कुफ़ुवन् अहद(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम फ़रमाओ वह अल्लाह है वह एक है।(1) (फ़ा2) अल्लाह बे नियाज़ है।(2) (फ़ा3) न उसकी कोई औलाद (फ़ा4) और न वह किसी से पैदा हुआ।(3) (फ़ा5) और न उसके जोड़ का कोई।(4) (फ़ा6) (रुकूअ़ 37)

(फ़ा1) सूरह इख़्लास मक्की व बक़ौले मदनी है इसमें एक रुकूअ़ चार या पांच आयतें पन्द्रह कलिमे 47 हरफ़ हैं अहादीस में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं उसको तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया है यानी तीन मर्तबा इसको पढ़ा जाये तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले एक शख़्स ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मुहब्बत है फ़रमाया इसकी मुहब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी (तिर्मिज़ी) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अज़्ज़ व उला तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ तरह तरह के सवाल किये कोई कहता था कि अल्लाह का नसब क्या है कोई कहता था कि वह सोने का है या चाँदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है किस चीज़ का है किसी ने कहा वह क्या खाता है क्या पीता है रबूबियत उसने किस से ववरसा में पाई और उसका कौन वारिस होगा उनके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मअ़रेफ़त की राह वाज़ेह की और जाहिलाना ख़्यालात व औहाम की तारीकियों को जिन में वह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ात व सिफ़ात के अनवार के बयान से मुज़महिल कर दिया। (फ़ा2) रबूबियत व उलूहियत में सिफ़ाते अ़ज़मत व कमाल के साथ मौसूफ़ है मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है उसका कोई शरीक नहीं। (फ़ा3) हर चीज़ से न खाये न पिये हमेशा से है हमेशा रहे। (फ़ा4) क्यों कि कोई उसका मजालिस नहीं। (फ़ा5) क्योंकि वह क़दीम है और पैदा होना हादिस की शान है। (फ़ा6) यानी कोई उसका हमता व अ़दील नहीं इस सूरत की चन्द आयतों में इल्मे इलाहियात के नफ़ीस व आला मतालिब बयान फ़रमा दिये गए जिनकी तफ़सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जायें।

(बक़िया सफ़हा 958 का) तादाद बारह है और उनमें अ़जाइब हिकमते इलाही नुमूदार हैं आफ़ताब माहताब और कवाकिब की सैर उनमें मुअ़य्यन अन्दाज़े पर है जिसमें इख़्तिलाफ़ नहीं होता (फ़ा3) वह रोज़े क़ियामत है (फ़ा4) मुराद इससे रोज़े जुमा है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है (फ़ा5) आदमी और फ़रिश्ते मुराद इससे रोज़े अ़रफ़ा है (फ़ा6) मरवी है कि पहले ज़माना में एक बादशाह था जब उसका जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूं बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया वह जादू सीखने लगा राह में एक राहिब रहता था उसके पास बैठने लगा और उसका कलाम उसके दिलनशीन होता गया अब आते जाते उसने राहिब की सोहबत में बैठना मुक़र्रर कर लिया एक रोज़ रास्ता में एक मुहीब जानवर मिला लड़के ने एक पत्थर हाथ में लेकर यह दुआ की कि या रब अगर राहिब तुझे प्यारा हो तो मेरे पत्थर से उस जानवर को हलाक कर दे वह जानवर उसके पत्थर से मर गया उसके बाद लड़का मुस्तजाबुद्दावात हुआ और उसकी दुआ़ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे बादशाह का एक मसाहिब नाबीना हो गया था वह आया लड़के ने दुआ की वह अच्छा हो गया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा उसने कहा तुझे किसने अच्छा किया कहा मेरे रब ने बादशाह ने कहा मेरे सिवा और भी कोई रब है यह कह कर उसने उस पर सख़्तियां शुरू कीं यहां तक कि उसने लड़के का पता बताया लड़के पर सख़्तियां कीं उसने राहिब का पता बताया राहिब पर सख़्तियां कीं और उससे कहा अपना दीन तर्क कर उसने इन्कार किया तो उसके सर पर आरा रखकर चिरवा दिया फिर मसाहिब को भी चिरवा दिया फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाये सिपाही उसको पहाड़ की चोटी पर ले गए उसने दुआ़ की पहाड़ में ज़लज़ला आया सब गिर कर हलाक हो गए लड़का सही व सलामत चला आया बादशाह ने कहा सिपाही क्या हुए कहा सब को खुदा ने हलाक कर दिया फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में ग़र्क़ करने के लिए भेजा लड़के ने दुआ़ की कश्ती डूब गई तमाम शाही आदमी डूब गए लड़का सही व सलामत बादशाह के पास आ गया बादशाह ने कहा वह आदमी क्या हुए कहा सबको अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वह काम न करे जो मैं बताऊँ कहा वह क्या लड़के **(बक़िया सफ़हा 986 पर)**

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

सूरतुल् फ़-लकि

(मक्की है इस सूरह में 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल् अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लकि(1)मिन् शर्रि मा ख़-लक़(2)व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब(3)व मिन् शर्रिन् नफ़्फ़ासाति फ़िल्-अुक़द(4)व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह-सद(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

तुम फ़रमाओ मैं उसकी पनाह लेता हूं जो सुबह का पैदा करने वाला है।(1) (फ़ा2) उसकी सब मख़्लूक़ के शर से।(2) (फ़ा3) और अंधेरी डालने वाले के शर से जब वह डूबे।(3) (फ़ा4) और उन औरतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं।(4) (फ़ा5) और हसद वाले के शर से जब वह मुझ से जले।(5) (फ़ा6) (रुकूअ़ 38)

(फ़ा1) सूरह फ़लक़ मदनी है और एक क़ौल यह है कि मक्की है (वलु-अव्वलु अ-सह्हु) इस सूरत में एक रुकूअ़ पांच आयतें 23 कलिमे 74 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** यह सूरत और सूरत अन्नास जो इसके बाद है जो उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि लुबैद बिन अअ़सम यहूदी और उसकी बेटियों ने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आज़ाए ज़ाहिरा पर इसका असर हुआ क़ल्ब व अ़क़्ल व एतेक़ाद पर कुछ असर न हुआ चन्द रोज़ के बाद जिबरील आए और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वह फलां कूंयें में एक पत्थर के नीचे दाब दिया है हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा उन्होंने कुंयें का पानी निकालने के बाद पत्थर उठाया उसके नीचे से खजूर के गाभे की थैली बरआमद हुई उसमें हुज़ूर के मूए शरीफ़ जो कंघी से बर आमद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिसमें ग्यारह गिरहें लगी थीं और एक मोम का पुतला जिसमें ग्यारह सूईयां चुभीं थीं यह सब सामान पत्थर के नीचे से निकाला और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया गया अल्लाह तआ़ला ने यह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरह फलक़ में हर एक आयत के पढ़ने के साथ एक एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए। मसला तावीज़ और अमल जिस में कोई कलिमए कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है ख़ास कर वह अमल जो आयाते क़ुरआनिया से किये जायें या अहादीस में वारिद हुए हों हदीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते अ़मीस ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जअ़फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उनके लिए अ़मल करूं हुज़ूर ने इजाज़त दी (तिर्मिज़ी)। (फ़ा2) तअ़व्वुज़ में अल्लाह तआ़ला का इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र इस लिए है कि अल्लाह तआ़ला सुबह पैदा करके शब की तारीकी दूर फ़रमाता है तो वह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन हालात से ख़ौफ़ है उनको दूर फ़रमाए नीज़ जिस तरह शबे तार में आदमी तुलूअ़े सुबह का इन्तेज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्न व राहत का मुन्तज़िर रहता है इलावा बरीं सुबह अहले इज़्तेरार व इज़्तेराब की दुआ़ओं का और उनके क़बूल होने का वक़्त है तो मुराद यह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे कर्ब व ग़म को कशाइश दी जाती है और दुआ़यें क़बूल की जाती हैं मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं एक क़ौल यह भी है कि फ़लक़ जहन्नम में एक वादी है। (फ़ा3) जानदार हो या बे जान मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद यहां ख़ास इबलीस है जिससे बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल उसकी और उसके अअ़वाने लश्करों की मदद से पूरे होते हैं। (फ़ा4) हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चांद की तरफ़ नज़र करके उनसे फ़रमाया ऐ आइशा अल्लाह की पनाह लो उसके शर से यह अंधरी डालने वाला है जब डूबे (तिर्मिज़ी) यानी आख़िर माह में जब चांद छुप जाये तो जादू के वह अमल जो बीमार करने के लिए हैं उसी वक़्त में किये जाते हैं। (फ़ा5) यानी जादूगर औरतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उनमें जादू के मन्त्र पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं जैसे कि लबीद की लड़कियां मसला गन्डे बनाना और उन पर गिरह लगाना आयाते क़ुरआन या अस्माए इलाहिया दम करना जायज़ है जम्हूर सहाबा व ताबेईन इसी पर हैं और हदीसे आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा में है कि जब हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहल में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर मऊज़ात पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते। (फ़ा6) हसद वाला वह है जो दूसरे के ज़वाले निअ़्मत की तमन्ना करे यहां हासिद से यहूद मुराद हैं जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हसद करते थे या ख़ास लबीद बिन अअ़सम यहूदी हसद बद-तरीन सिफ़त है और यही सब से पहला गुनाह है जो आसमान में इबलीस से सरज़द हुआ और ज़मीन में क़ाबील से

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

सूरतुन्नासि

(मक्की है इस सूरह में 6 आयतें और 1 रुकूअ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कुल् अऊ़ज़ु बि–रब्बिन्नासि(1)मलिकिन्नासि(2)इलाहिन्नासि(3)मिन् शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नासि(4) ल्लज़ी यु–वस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि(5)मिनल् जिन्नति वन्नास(6)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान व रहम वाला। (फ़ा1)
तुम कहो मैं उसकी पनाह में आया जो सब लोगों का रब ।(1) (फ़ा2) सब लोगों का बादशाह ।(2) (फ़ा3) सब लोगों का खुदा ।(3) (फ़ा4) उसके शर से जो दिल में बुरे ख़तरे डाले (फ़ा5) और दुबक रहे ।(4) (फ़ा6) वह जो लोगों के दिलों में वसवसे डालते हैं ।(5) जिन्न और आदमी ।(6) (फ़ा7) (रुकूअ 39)

(फ़ा1) सूरह अन्नास बक़ौले असह मदनी है इसमें एक रुकूअ छः आयतें 20 कलिमे 79 हरफ़ हैं (फ़ा2) सब का ख़ालिक मालिक ज़िक्र में इन्सानों की तख़्सीस उनकी तशरीफ़ के लिए है कि उन्हें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात किया (फ़ा3) उनके कामों की तदबीर फ़रमाने वाला (फ़ा4) कि इलाह और मअ़बूद होना उसी के साथ ख़ास है (फ़ा5) मुराद इससे शैतान है (फ़ा6) यह उसकी आ़दत ही है कि इन्सान जब ग़ाफ़िल होता है तो उसके दिल में वसवसे डालता है और जब इंसान अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान दुबक रहता है और हट जाता है (फ़ा7) यह ब्यान है वसवसे डालने वाले शैतान का कि वह जिन्नों में से भी होता है और इंसानों में से भी जैसा शयातीन जिन्न इंसानों को वसवसे में डालते हैं ऐसे ही शयातीन इन्स भी नासेह बन कर आदमी के दिल में वसवसे डालते हैं फिर अगर आदमी उन वसवसों को मानता है तो उसका सिलसिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करते हैं अगर उससे मुतनफ़्फ़िर होता है तो हट जाते हैं और दुबक रहते हैं आदमी को चाहिए कि शयातीने जिन्न के शर से भी पनाह मांगे और शयातीने इन्स के शर से भी बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शब को जब बिस्तर मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों दस्ते मुबारक जमा फ़रमा कर उनमें दम करते और सूरह क़ुल् हुवल्लाहु अहद व क़ुल् अऊज़ुबि रब्बिल् फ़लक और क़ुल् अऊज़ुबि रब्बिन्नास पढ़ कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से लेकर तमाम जिस्मे अक़्दस पर फेरते जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते यह अमल तीन मर्तबा फ़रमाते वल्लाहु तआ़ला अअ़-लमु बिमुरादिही व असरारि किताबिही व आख़िरु दअ़वाना अनिल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ-लमीन व अफ़्ज़लुस्सलातु वज़्कुरुस्सलामु अ़ला हबीबिही व सय्यिदि अम्बियाएही व रुसिलिही सय्यिदिना मुहम्मदिन् व आलिही व असहाबिही अजमअ़ीन°

(बक़िया सफ़हा 985 का) ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जमा कर और मुझे खजूर के ढुन्ड पर सूली दे फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर बिस्मिल्लाह रब्बुलगुलाम कह कर मार ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा बादशाह ने ऐसा ही किया तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा उसने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल ब-हक़ हो गया यह देख कर तमाम लोग ईमान ले आये इससे बादशाह को और ज़्यादा सदमा हुआ और उसने एक ख़न्दक़ खुदवाई और इसमें आग जलवाई और हुक्म दिया जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो लोग डाले गए यहां तक कि एक औरत आई उसकी गोद में बच्चा था वह ज़रा झिजकी बच्चा ने कहा ऐ मां सब्र कर न झिजक तू सच्चे दीन पर है वह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए यह हदीस सही है मुस्लिम ने इसकी तख़रीज की इससे औलिया की करामतें साबित होती हैं आयत में इस वाक़िआ़ का ज़िक्र है (फ़ा7) कुर्सियां बिछाए और मुसलमानों को आग में डाल रहे थे। (फ़ा8) शाही लोग बादशाह के पास आकर एक दूसरे के लिए गवाही देते थे उन्होंने तअ़मीले हुक्म में कोताही नहीं की ईमानदारों को आग में डाल दिया मरवी है कि जो मोमिन आग में डाले गए अल्लाह तआ़ला ने उनके आग में पड़ने से क़बल उनकी रूहें क़ब्ज़ फ़रमा कर उन्हें नजात दी और आग ने ख़न्दक़ के किनारों से बाहर निकल कर किनारे पर बैठे हुए कुफ़्फ़ार को जिला दिया फ़ाइदा इस वाक़िआ़ में मोमिनीन को सब्र और अहले मक्का की ईज़ा रेसानियों पर तहम्मुल करने की तरग़ीब फ़रमाई गई (फ़ा9) आग में जला कर (फ़ा10) और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए (फ़ा11) आख़िरत में बदला उनके कुफ़्र का (फ़ा12) दुनिया में कि उसी आग ने उन्हें जला डाला यह बदला है मुसलमानों को आग में डालने का (फ़ा13) जब वह ज़ालिमों को अ़ज़ाब में पकड़े। (फ़ा14) यानी पहले दुनिया में पैदा करे फिर क़ियामत में आमाल की ज़ज़ा देने के लिए मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा करे (फ़ा15) जिनको काफ़िर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मुक़ाबिल लाए (फ़ा16) जो अपने कुफ़्र के सबब हलाक किये गए। (फ़ा17) ऐ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपकी उम्मत के (फ़ा18) आपको और कुरआन पाक को [illegible]सा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था। (फ़ा19) उससे उन्हें कोई बचाने वाला नहीं।

(बक़िया सफ़हा 962 का) आपस में एक दूसरे को मिस्कीन के खिलाने की रग़बत नहीं देते।(18) और मीरास का माल हप हप खाते हो।(19) (फ़ा17) और माल की निहायत मुहब्बत रखते हो।(20) (फ़ा18) हां हां जब ज़मीन टकरा कर पाश पाश कर दी जाए।(21) (फ़ा19) और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़रिश्ते क़तार क़तार।(22) और उस दिन जहन्नम लाई जाए (फ़ा20) उस दिन आदमी सोचेगा (फ़ा21) और अब उसे सोचने का वक़्त कहां।(23) (फ़ा22) कहेगा हाय किसी तरह मैंने जीते जी नेकी आगे भेजी होती।(24) तो उस दिन उसका सा अ़ज़ाब (फ़ा23) कोई नहीं करता।(25) और उस का सा बांधना कोई नहीं बांधता।(26) ऐ इत्मीनान वाली जान।(27) (फ़ा24) अपने रब की तरफ़ वापस हो यूं कि तू उससे राज़ी वह तुझ से राज़ी।(28) फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो।(29) और मेरी जन्नत में आ।(30) (रुकूअ़ 14)

(फ़ा1) सूरह वलफ़ज्र मक्की है इस में एक रुकूअ़ 29 या 30 आयतें 139 कलिमे 597 हरफ़ हैं (फ़ा2) मुराद इससे या यकुम मुहर्रम की सुबह है जिससे साल शुरू होता है या यकुम ज़िलहिज्जा की जिस से दस रातें मिली हुई हैं या ईदुल अज़हा की सुबह और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मुराद इससे हर दिन की सुबह है क्यों कि वह रात के गुज़रने और रौशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के तलबे रिज़्क़ के लिए मुन्तशिर होने का वक़्त है और यह मुर्दों के क़ब्र से उठने के वक़्त के साथ मुशाबहत व मुनासबत रखता है (फ़ा3) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि मुराद इन से ज़िलहिज्जा की पहली दस रातें हैं क्योंकि यह ज़माना आमाले हज में मश्गूल होने का ज़माना है और हदीस शरीफ़ में इस अ़शरा की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं और यह भी मरवी है कि रमज़ान के अ़शरए अख़ीरा की रातें मुराद हैं या मुहर्रम के पहले अ़शरा की। (फ़ा4) हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के और यह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और ताक़ से मुराद अल्लाह तआ़ला है। (फ़ा5) यानी गुज़रे यह पांचवीं क़िस्म है आ़म रात की इससे पहले दस ख़ास रातों की क़िस्म ज़िक्र फ़रमाई गई बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इससे ख़ास शब मुज़दलफ़ा मुराद है जिसमें बन्दगाने ख़ुदा ताअ़ते इलाही के लिए जमा होते हैं एक क़ौल यह है कि उससे शबे क़दर मुराद है जिसमें रहमत का नुज़ूल होता है और जो कसरत सवाब के लिए मख़्सूस है। (फ़ा6) यानी यह उमूर अरबाबे अक़्ल के नज़दीक ऐसी अ़ज़मत रखते हैं कि ख़बरों को उनके साथ मुअक्किद करना शायाँ है क्योंकि यह ऐसे अ़जाइब व दलाइल पर मुश्तमिल हैं जो अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसकी रबूबियत पर दलालत करते हैं और जवाबे क़िस्म यह है कि काफ़िर ज़रूर अ़ज़ाब किये जायेंगे इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं। (फ़ा7) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा8) जिनके क़द बहुत दराज़ थे उन्हें आ़दे इरम और आ़दे औला कहते हैं मक़सूद इससे अहले मक्का को ख़ौफ़ दिलाना है कि आ़द औला जिनकी उम्रें बहुत ज़्यादा और क़द बहुत तवील और निहायत क़वी व तवाना थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया तो यह काफ़िर अपने आपको क्या समझते हैं और अ़ज़ाबे इलाही से क्यों बेख़ौफ़ हैं (फ़ा9) ज़ोर व क़ुव्वत और तूल क़ामत में आ़द के बेटों में से शद्दाद भी है जिसने दुनिया पर बादशाहत की और तमाम बादशाह उसके मुतीअ़ हो गए और उसने जन्नत का ज़िक्र सुनकर बराहे सरकशी दुनिया में जन्नत बनानी चाही और इस इरादा से एक शहर अ़ज़ीम बनाया जिसके महल सोने चांदी की ईंटों से तामीर किये गए और ज़बुरजद और याक़ूत के सुतून उसकी इमारतों में नसब हुए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रस्तों में बनाए गए संगरेज़ों की जगह आबदार मोती बिछाए गए हर महल के गिर्द जवाहरात पर नहरें जारी की गईं क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हुस्ने तज़ईन के साथ लगाए गए जब यह शहर मुकम्मल हुआ तो शद्दाद बादशाह अपने अईयाने सल्तनत के साथ उसकी तरफ़ रवाना हुआ जब एक मन्ज़िल फ़ासिला बाक़ी रहा तो आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिससे अल्लाह तआ़ला ने उन सब को हलाक कर दिया हज़रत अमीर मुआ़विया के अहद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़लाबा सहराए अ़दन में अपने गुमे हुए ऊँट को तलाश करते हुए उस शहर में पहुंचे और उसकी तमाम ज़ेब व ज़ीनत देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया थोड़े से जवाहरात वहां से लेकर चले आए यह ख़बर अमीर मुआ़विया को मालूम हुई उन्होंने उन्हें बुला कर हाल दरियाफ़्त किया उन्होंने तमाम क़िस्सा सुनाया तो अमीर मुआ़विया ने कअ़्ब अहबार को बुलाकर दरियाफ़्त किया कि दुनिया में कोई ऐसा शहर है उन्होंने फ़रमाया हां जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में भी आया है यह शहर शद्दाद बिन आ़द ने बनाया था वह सब अ़ज़ाबे इलाही से हलाक हो गए उनमें से कोई बाक़ी न रहा और आपके ज़माना में एक मुसलमान सुर्ख़ रंग कबूद चश्म क़सीरुल क़ामत जिसकी अब्रु व पर एक तिल होगा अपने ऊँट की तलाश में दाख़िल होगा फिर अब्दुल्लाह बिन क़लाबा को देख कर फ़रमाया बख़ुदा वह शख़्स यही है। (फ़ा10) यानी वादीयुल क़ुरा में (फ़ा11) और मकान बनाए उन्हें अल्लाह तआ़ला ने किस तरह हलाक किया (फ़ा12) उसको जिस पर ग़ज़बनाक होता था अब आ़द व समूद व फ़िरऔ़न उन सब की निस्बत इरशाद होता है। (फ़ा13) और मअ़सियत व गुमराही में इन्तेहा को पहुंचे और अ़ब्दियत की हद से गुज़र गए। (फ़ा14) कुफ़्र और क़त्ल और ज़ुल्म करके। (फ़ा15) यानी इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत दौलत व फ़क़्र पर नहीं यह उसकी हिकमत है कभी दुश्मन को दौलत देता है कभी बन्दए मुख़लिस को फ़क़्र में मुब्तला करता है इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत ताअ़त व मअ़सियत पर है कुफ़्फ़ार इस हक़ीक़त को नहीं समझते। (फ़ा16) और बावजूद दौलतमन्द होने के उनके साथ अच्छे सुलूक नहीं करते और उन्हें उनके हुक़ूक़ नहीं देते जिनके वह वारिस हैं मक़ातिल ने कहा कि उमय्या बिन ख़लफ़ के पास क़दामा बिन मज़ऊन यतीम थे वह उन्हें उनका हक़ नहीं देता था। (फ़ा17) और हलाल व हराम का इम्तियाज़ नहीं करते और औरतों और बच्चों को वरसा नहीं देते उनके

हिस्से ख़ुद खा जाते हो जाहिलियत में यही दस्तूर था। (फ़ा18) उसको ख़र्च करना ही नहीं चाहते (फ़ा19) और उस पर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नाम व निशानी न रहे। (फ़ा20) जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जमा होकर उसको खीचेंगे और वह जोश व ग़ज़ब में होगी यहां तक कि फ़रिश्ते उसको अ़र्श के बायें जानिब लायेंगे उस रोज़ सब नफ़सी नफ़सी कहते होंगे सिवाए हुज़ूर पुरनूर हबीबे ख़ुदा सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर या रब उम्मती उम्मती फ़रमाते होंगे जहन्नम हुज़ूर से अ़र्ज़ करेगी कि ऐ सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपका मेरा क्या वास्ता अल्लाह तआ़ला ने आपको मुझ पर हराम किया है। (जुमल) (फ़ा21) और अपनी तक़सीर को समझेगा (फ़ा22) उस वक़्त का सोचना समझना कुछ भी मुफ़ीद नहीं (फ़ा23) यानी अल्लाह का सा (फ़ा24) जो ईमान व ईक़ान पर साबित रही और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के हुज़ूर सर ताअ़ते ख़म करती रही यह मोमिन से वक़्ते मौत कहा जाएगा जब दुनिया से उसके सफ़र करने का वक़्त आएगा।

(बक़िया सफ़हा 966 का) वसल्लम) की ख़िदमत में जाकर दरियाफ़्त करो रोने का क्या सबब है बावजूदेकि अल्लाह तआ़ला दाना है जिबरील ने हस्बे हुक्म हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तमाम हाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़्हार फ़रमाया जिबरील अमीन ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया कि तेरे हबीब यह फ़रमाते हैं बावजूदेकि वह ख़ूब जानने वाला है अल्लाह तआ़ला ने जिबरील को हुक्म दिया कि जाओ और मेरे हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा कि हम आपको आपकी उम्मत के बारे में अ़न्क़रीब राज़ी करेंगे और आपको गिरां ख़ातिर न होने देंगे हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे राज़ी न हूंगा आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला वही करेगा जिसमें रसूल राज़ी हों और अहादीस शफ़ाअ़त से साबित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जायें तो आयत व अहादीस से क़तई तौर पर यह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअ़त मक़बूल और हस्बे मर्ज़ी मुबारक गुनहागाराने उम्मत बख़्शे जायेंगे सुबहानल्लाह क्या रुतबा अ़लिया है कि जिस परवरदिगार को राज़ी करने के लिए तमाम मुक़र्रबीन तकलीफ़ें बरदाश्त करते और मेहनतें उठाते हैं वह उस हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने के लिए अ़ता आम करता है उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने उन नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया जो आपके इब्तेदाए हाल से आप पर फ़रमाईं (फ़ा7) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी वालिदा माजिदा के बतन में थे हमल दो माह का था कि आपके वालिद साहब ने मदीना शरीफ़ में वफ़ात पाई और न कुछ काल छोड़ा न कोई जगह छोड़ी आपकी ख़िदमत के मुतकफ़्फ़िल आपके दादा अ़ब्दुलमुत्तलिब हुए जब आपकी शरीफ़ चार या छः साल की हुई तो वालिदा साहिबा ने भी वफ़ात पाई जब उम्र शरीफ़ आठ साल की हुई तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने भी वफ़ात पाई उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले अपने फ़रज़न्द अबू तालिब को जो आपके हक़ीक़ी चचा थे आपकी ख़िदमत व निगरानी की वसीयत की अबू तालिब आपकी ख़िदमत में सरगरम रहे यहां तक कि आपको अल्लाह तआ़ला नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया इस आयत की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन ने एक माना यह बयान किये हैं कि यतीम बमाना यकता व बे-नज़ीर के है जैसे कि कहा जाता है दुर्रे यतीमा इस तक़दीर पर आयत के माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आपको इज़्ज़ व शरफ़ में यकता व बे-नज़ीर पाया और आपो मक़ामे क़ुर्ब में जगह दी और अपनी हिफ़ाज़त में आपके दुश्मनों के अन्दर आपकी परवरिश फ़रमाई और आपको नबुव्वत व इस्तफ़ा व रिसालत के साथ मुशर्रफ़ किया (ख़ाज़िन व जुमल व रूहुल बयान) (फ़ा8) और ग़ैब के असरार पर आप खोल दिये और उलूमे माका-न व मा यकू-न अता किये अपनी ज़ात व सिफ़ात की मअ़रेफ़त में सब से बुलन्द मर्तबा इनायत किया मुफ़स्सिरीन ने एक माना इस आयत के यह भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐसा वारफ़्ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने मरातिब की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आपको आपके ज़ात व सिफ़ात और मरातिब व दर्जात की मअ़रेफ़त अ़ता फ़रमाई मसला अम्बिया अ़लैहिस्सलाम सब मअ़सूम होते हैं नबुव्वत से क़बल नबुव्वत से बाद भी और अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसके सिफ़ात के हमेशा से आरिफ़ होते हैं। (फ़ा9) दौलते क़नाअ़त अ़ता फ़रमा कर बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि तवन्गरी फ़सरते माल से हासिल नहीं होती हक़ीक़ी तवन्गरी नफ़्स का बे नियाज़ होना (फ़ा10) जैसा कि अहले जाहिलियत का तरीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उन पर ज़्यादती करते थे हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के घरों में वह बहुत अच्छा घर है जिसमें यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वह बहुत बुरा घर है जिसमें यतीम के साथ बुरा बरताव किया जाता है। (फ़ा11) या कुछ देदो या हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी के साथ उज़्र कर दो यह भी कहा गया है कि साइल से तालिबे इल्म मुराद है उसका इकराम करना चाहिए और जो उसकी हाजत हो उसको पूरा करना और उसके साथ तुर्श रूई व बद ख़ुलक़ी न करना चाहिए। (फ़ा12) नेअ़मतों से मुराद वह निअ़मतें हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अ़ता फ़रमाईं और वह भी जिनका हु.जूर से वादा फ़रमाया निअ़मतों के ज़िक्र का इस लिए हुक्म फ़रमाया कि निअ़मत का बयान करना शुक्रगुज़ारी है।

تمت بالخير

دعاء ختم القرآن اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ ط اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ ط وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً ط اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ ط وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اٰمِیْن

दुआए ख़त्मे कुरआन

अल्लाहुम्–म आनिस् वह्–शती फ़ी क़ब्री अल्लाहुम्मर्–ह़म्नी बिक़ुर्आनिल्–अज़ीम वज्अ़ल्हु ली इमामंव्–व नूरंव्–व हुदंव्–व रह़्म–तन् अल्लाहुम्–म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव–तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु ली हुज्जयतंय्या रब्बल्–आ़लमीन (आमीन)

तर्जुमा : ऐ अल्लह मेरी क़ब्र से मेरी वहशत और परेशानी को दूर फ़रमा, ख़ुदाया कुरआन अज़ीम की बरकत और रहमत से मुझे नवाज़ दे कुरआन को मेरी लिये रहनुमा और पेशवा बना और साथ ही नूर और सबबे हिदायत और रहमत बना, इलाही इसमें से जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला दे, और इसमें से जो मैं नहीं जानता वह मुझको सिखा दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत नसीब फ़रमा, और क़यामत के रोज़ इस को मेरे लिये दलील बना ऐ सारे आलम के परवरिश करने वाले–आमीन

रुमूज़े औक़ाफ़

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते हैं, ज़्यादा, और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़्ल है, कुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में वाक़ेअ़ हुई है। इसी लिए अहले इल्म ने इसके ठहरने न ठहरने की अलामतें मुक़र्रर कर दी हैं।

() जहां बात पूरी हो जाती है वहां क़ौसैन लिखा गया है। यहां पर ठहरना चाहिए।

(م) यह अ़लामत वक़्फ़े लाज़िम की है। इस पर ज़रूर ठहराना चाहिये। अगर न ठहरा जाए तो एहतेमाल है कि मतलब कुछ का कुछ जा जाए। इसकी मिसाल उर्दू में यूं समझनी चाहिये कि मसलन किसी को यह कहना हो उठो मत बैठो, जिसमें उठने के लिए कहा गया है और बैठने से मना किया गया है तो उठो पर ठहरना लाज़िम है अगर ठहरा न जाएगा तो उठो मत बैठो हो जाएगा यानी उठने के लिए मना किया गया और बैठने को कहा गया और यह क़ाएल के मतलब के ख़िलाफ़ हो जाएगा।

(ط) वक़्फ़े मुतलक़ की अ़लामत है इस पर ठहराना चाहिए मगर यह अलामत वहां होती है जहां मतलब तमाम नहीं होता और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता

है।

(ج) वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर है और न ठहरना जाइज़ है।

(ز) अ़लामत वक़्फ़ मुजव्विज़ की है यहां ठहरना बेहतर है।

(ص) अलामत वक़्फ़े मुरख़्ख़िस की है यहां मिलाकर पढ़ना चाहिए लेकिन अगर कोई पढ़कर थक कर ठहर जाए तो रूख़्सत है। मालूम रहे कि साद पर मिला कर पढ़ना है।

(ز) की निसबत तरजीह रखता है।

(صلے) अल वसले औला का इख़्तिसार है यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।

(ق) क़ील अलैहिल वक़्फ़ का ख़ुलासा है यहां ठहरना नहीं चाहिए।

(قف) यह लफ़्ज़े क़िफ़ है जिसके मानी हैं ठहर जाओ और यह अलामत वहां इस्तेमाल की जाती है जहां पढ़ने वाले के मिला कर पढ़ने का एहतेमाल हो।

(سكتة) यह सक्ता की अ़लामत है यहां किसी क़दर ठहरना चाहिए लेकिन सांस न टूट पाए।

(وقفه) लम्बे सक्ता की अलामत है यहां सक्ता की निसबत ज़्यादा ठहरना चाहिए लेकिन सांस न तोड़े। सक्ता और वक़्फ़ा में यह फ़र्क़ है कि सक्ता में कम ठहरना होता है वक़्फ़ा में ज़्यादा।

(لا) इसके मानी नहीं के हैं यह अ़लामत कहीं आयत के ऊपर होती है और कहीं इबारत के अन्दर। इबारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिए। आयत ऊपर हो तो इख़्तिलाफ़ है। बाज़ के नज़दीक ठहर जाना चाहिए बाज़ के नज़दीक न ठहरना चाहिए लेकिन ठहरा जाए या न ठहरा जाए इससे मतलब में ख़लल वाक़ेअ़ नहीं होता। वक़्फ़ उस जगह नहीं होना चाहिए जहां इबारत के अन्दर लिखा हो।

(ع) यह रूकूअ़ का निशान है।

(١) यह छोटी मद का निशान है जिस हर्फ़ पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि तीन अलिफ़ के बराबर हो।

(٢) यह बड़ी मद का निशान है जिस हर्फ़ पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि चार अलिफ़ के बराबर हो।

सूरतों की फ़ेहरिस्त